ssgcp.com
t.me/ssgcp
ssgc.gs.qa
ssghatnachakra
SamsamyikGhatna

2023-24

UGC NET / JRF

संस्कृत

व्याख्यात्मक
हल प्रश्न-पत्र

2010 से 2023-24

मुख्य आकर्षण

- नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप
- विषय से संबंधित प्रश्नों के संचित प्रमाण
- त्रुटिपूर्ण प्रश्नों के ससंदर्भ प्रामाणिक उत्तर
- संशोधित उत्तर-पत्रक के अनुसार व्याख्यात्मक हल
- प्रश्नों से संबंधित अन्य ज्ञानवर्द्धक बिंदुओं का समावेशन

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, झारखंड, उत्तराखंड, हरियाणा आदि राज्यों के असिस्टेंट प्रोफेसर (हायर) / राज्य पात्रता परीक्षाएं, जी.आई.सी. प्रवक्ता, L.T. ग्रेड एवं टी.जी.टी. / पी.जी.टी. आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रुप से उपयोगी
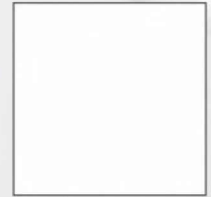
© प्रकाशकाधीन :
संस्करण - प्रथम
संस्करण वर्ष - 2023
ले.- SSGC
मूल्य : 390/-
मुद्रक - श्रीजी प्रिन्टिंग प्रेस
मुद्रण क्रम : प्रथम

संपर्क-
सम-सामयिक घटना चक्र
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन
प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002
Ph.: 0532-2465524, 2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop Website : shop.ssgcp.com

संकलन सहयोग-
- **सुधाकर तिवारी**
- **माधवश्याम तिवारी**
- **सुरेन्द्र कुमार**
- **पीयूष तिवारी**
- **संतोष तिवारी**
- **विनोद त्रिपाठी**
- **फैज़ुल इस्लाम अंसारी**
- **राजू शर्मा**

अनुक्रमणिका

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Sep. 2023
संस्कृत
व्याख्यात्मक हल सहित

1. काण्वसंहिताया भाष्यकारौ स्तः-

A. आचार्यसायणः **B.** उव्वटः

C. हलायुधः **D.** गोविन्दः

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुतंर चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) A, C केवलम्

(c) B, C केवलम् (d) A, D केवलम्

उत्तर-(b)

काण्वसंहिता के भाष्यकार आचार्य सायण और हलायुध हैं।

- आचार्य सायण के द्वारा काण्व संहिता पर भाष्य लिखा गया है। हलायुध सायण से पूर्ववर्ती आचार्य थे। इन्होंने काण्वसंहिता पर 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामक भाष्य लिखा है।

  हलायुध के द्वारा विरचित प्रमुख ग्रन्थ हैं- मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व एवं पण्डितसर्वस्व आदि।

  अनन्ताचार्य के द्वारा भी काण्वसंहिता के उत्तरार्ध पर भाष्य लिखा गया है।

प्राचीन वेदभाष्यकार			
ऋग्वेद संहिताभाष्य	**यजुर्वेद संहिताभाष्य**	**सामवेद संहिताभाष्य**	**अथर्ववेद संहिताभाष्य**
स्कन्दस्वामी	उव्वट एवं महीधर	माधव	सायण
नारायण	(माध्यन्दिन संहिता)	गुणविष्णु	
उद्गीथ	हलायुध	भरतस्वामी	
माधवभट्ट	सायण		
वेंकटमाधव	अनन्ताचार्य		
धानुष्क यज्वा	आनन्दबोध		
आनन्दतीर्थ	भट्टोपाध्याय		
आत्मानन्द	(काण्वसंहिता)		
सायण	कुण्डिन		
	भवस्वामी		
	गुहदेव		
	क्षुर		
	भट्टभास्कर		
	सायण		
	(तैत्तिरीय संहिता)		

2. भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरो भवति -

(a) इ (b) य

(c) अ (d) अः

उत्तर-(b)

भाषाविज्ञान के अनुसार य्, व् अर्धस्वर के अन्तर्गत परिगणित होते हैं-

स्पर्श व्यञ्जन

कवर्ग- क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
चवर्ग- च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
टवर्ग- ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
तवर्ग- त्, थ्, द्, ध्, न्
पवर्ग- प्, फ्, ब्, भ्, म्

लुण्ठित या प्रकम्पित-

र् , रह्

स्पर्श-संघर्षी ध्वनियां

चवर्ग- च्, छ्, ज्, झ्

नासिक्य ध्वनियां-

ङ्, ञ्, ण्, न्, म्

पार्श्विक- ल्

उत्क्षिप्त- ड़्, ढ़्

अर्धस्वर- य्, व्

3. असम्प्रज्ञातसमाधिः कतिविधः ?

(a) द्विविधः (b) चतुर्विधः

(c) त्रिविधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(a)

समाधि के दो भेद हैं- सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात।

सम्प्रज्ञात समाधि- ''वितर्कविचारानन्दास्मितानुगमान् सम्प्रज्ञातः''। वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता का अनुगम होने से सम्प्रज्ञात समाधि होती है।

असम्प्रज्ञात समाधि- ''विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः''। समस्त वृत्तियों के अस्त हो जाने पर चित्त का निरोध संस्कारमात्र शेष निरोध असम्प्रज्ञात समाधि कहलाता है।

असम्प्रज्ञात समाधि के दो भेद हैं- उपायप्रत्यय और भवप्रत्यय असम्प्रज्ञात समाधि को निर्बीज समाधि भी कहते हैं।

चित्तभूमियाँ-

- क्षिप्त
- मूढ़
- विक्षिप्त
- एकाग्र
- निरुद्ध

चित्तवृत्तियाँ-

- प्रमाण
- विपर्यय
- विकल्प
- निद्रा
- स्मृति

पञ्चक्लेश-

- अविद्या
- अस्मिता
- राग
- द्वेष
- अभिनिवेश

अष्टाङ्गयोग-

- यम
- नियम
- आसन
- प्राणायाम
- समाधि
- ध्यान
- धारणा
- प्रत्याहार

4. दशरूपकानुसारेण रूपकाणां भेदकौ स्तः-

A. वस्तु **B. अलङ्कारः**

C. छन्दः **D. नेता**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचिमुत्तरं चिनुत-

(a) A,C केवलम् (b) A,D केवलम्

(c) C,D केवलम् (d) A,B केवलम्

उत्तर-(b)

''वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः'' (रूपकों को परस्पर एक-दूसरे से अलग करने वाले तत्त्व-वस्तु (कथावस्तु), नायक और रस उनके (दशरूपकों) भेदक तत्त्व हैं।

कथावस्तु दो प्रकार की होती है- आधिकारिक और प्रासङ्गिक। आधिकारिक कथावस्तु मुख्य कथावस्तु होती है तथा प्रासङ्गिक को अङ्गरूप में जाना जाता है।'' तत्राधिकारिकं मुख्यमङ्गं प्रासङ्गिकं विदुः''।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

''अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
आरम्भ यत्न प्रात्याशा नियताप्तिफलागमाः।।''

आरम्भ- औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे।

महान फल की प्राप्ति के लिए केवल उत्सुकता का होना ही 'आरम्भ' कहा गया है।

प्रयत्न- 'प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः'।

फल के प्राप्त न होने पर उसके लिए अत्यन्त वेग के साथ कार्य प्रारम्भ कर देना ही 'प्रयत्न' है।

प्राप्त्याशा- ''उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः''।

फल प्राप्ति के उपाय तथा विध्वंसक विघ्न की शङ्का से जो फल प्राप्ति की सम्भावनामात्र होती है। वह 'प्राप्त्याशा' कही जाती है।

नियताप्ति- ''अपायाभावतः प्राप्तिनिर्यताप्तिः सुनिश्चिता''।

विघ्नों के अभाव के कारण जब फलप्राप्ति पूर्ण निश्चित हो जाती है, नियताप्ति कहलाता है।

फलागम- ''समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः''।

समस्त फल की प्राप्ति ''फलागम'' है।

5. अधस्तनेषु निरुक्तग्रन्थानुसारेण उपमार्थकौ निपातौ स्तः-

A. परि **B. नु**

C. इव **D. च**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचिमुत्तरं चिनुत-

(a) A,B केवलम् (b) B,C केवलम्

(c) C,D केवलम् (d) A,C केवलम्

उत्तर-(b)

आचार्य यास्ककृत निरुक्त के अनुसार 'इव, नु, न, चित्' ये चारों उपमार्थक निपात हैं।

निपात के तीन भेद हैं- उपमार्थक, कर्मोपसंग्रहार्थक, पादपूरणार्थक निपात।

(1) **उपमार्थक निपात-** इस अर्थ में चार निपात (इव, न, चित् , नु) हैं। 'इव' भाषा तथा वेद दोनों में उपमार्थक है। 'न' भाषा में निषेधार्थक किन्तु वेद में निषेधार्थक एवं उपमार्थक दोनों है। 'चित्' निपात अनेकार्थक है। 'नु' निपात भी अनेकार्थक होकर हेतु कथन में आता है।

(2) **'कर्मोपसंग्रहार्थक निपात'-** यह दो या दो से अधिक सामासिक पदों के मध्य में आकर कथित अर्थों या वस्तुओं की भिन्नता को सूचित करता है- इसके अन्तर्गत च, वा, अह, आ, ह, किल, हि, ननु, खलु, नूनम्, शश्वतम् इत्यादि निपात आते हैं।

(3) **पादपूरणार्थक निपात-** इनका प्रयोग छन्दोबद्ध ग्रन्थों में पादपूर्ति हेतु किया जाता है। इसके अन्तर्गत कम, इम, इत, उ, इव, त्व, त्वत् इत्यादि प्रमुख निपात है।

उपमार्थक निपात- ● इ, न, चित्, नु।

कर्मोपसंग्रहार्थक निपात- ● च,वा, आ, अह, ह, शश्वतम्, किल्, हि, ननु, नूनम्, खलु।

पादपूरणार्थक निपात- ● कम, इम, इत, उ, इव, त्व, त्वत्।

6. वीररसप्रधानौ ग्रन्थौ स्तः-

A. अभिज्ञानशाकुन्तलम् **B. मुद्राराक्षसम्**

C. वाल्मीकिरामायणम् **D. शिशुपालवधम्**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचिमुत्तरं चिनुत-

(a) A,B केवलम् (b) B,C केवलम्

(c) B,D केवलम् (d) C,D केवलम्

उत्तर-(c)

मुद्राराक्षस और शिशुपालवधम् महाकाव्य वीररस प्रधान हैं।
● शिशुपालवधम् महाकवि माघकृत 20 सर्गों का महाकाव्य है। इस ग्रन्थ का आरम्भ और अन्त 'श्री' पद से होता है। इसका उपजीव्य महाभारत है।

महाकवि माघ के लिए प्रयुक्त कुछ विशेषण-

- नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।
- क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः।
- उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
  दण्डिनः पदलालित्यम् माघे सन्ति त्रयोगुणाः।।

● महाकवि विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का राजनीति-विषयक नाटक है, इसमें मुद्रा (अंगूठी) के द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन है। तदर्थ इसका नाम मुद्राराक्षस पड़ा।

7. एषु कर्मसंज्ञाविधायके सूत्रे स्तः-

A. कर्मणि द्वितीया

B. कर्तुरीप्सिततमं कर्म

C. कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया

D. अकथितं च

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचिमुत्तरं चिनुत-

(a) A,C केवलम् (b) B,D केवलम्

(c) A,D केवलम् (d) B,D केवलम्

उत्तर-(d)

कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को सबसे अधिक प्राप्त करना चाहता है, उसकी कर्मसंज्ञा होती है।

अकथितं च- जहां अपादानादि कारक-विशेष अविवक्षित होते हैं वहां कर्मसंज्ञा होती है।

संस्कृत भाषा में सोलह धातुएं ऐसी है जिनमें वक्ता स्वतंत्र हैं। वह चाहे तो करण, सम्प्रदान इत्यादि का प्रयोग करे अथवा इनके स्थान पर कर्म का प्रयोग करे।

द्विकर्मक सोलह धातुएं इस प्रकार है-

- दुह् ● याच्
- पच् ● दण्ड्
- रुध् ● पृच्छ्
- चि ● ब्रू
- शास् ● जि
- मथ् ● मुष्
- नी ● हृ
- कृष् ● वह्

8. समुद्रगुप्तस्य प्रयागस्तम्भलेखात् ज्ञायते यत् सः आर्यावर्तस्य निम्नाङ्कितसंख्याकान् शासकान् पराजितवान् -

(a) पञ्च (b) षट्

(c) नव (d) दश

उत्तर-(c)

समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भलेख से ज्ञात होता है कि वह आर्यावर्त के नव शासकों को पराजित किया था। इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अपनी विजययात्रा का प्रारम्भ उत्तर भारत के आर्यावर्त के 9 शासकों के साथ किया जिसमें नागसेन, अच्युत, गणपति आदि थे। इन विजयों के द्वारा समुद्रगुप्त ने मध्यप्रदेश या गङ्गा-यमुना दोआब पर अपनी सत्ता स्थापित की। प्रयाग अभिलेख सम्राट समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित लेख था। इस लेख को समुद्रगुप्त द्वारा 370 ई. में कौशाम्बी से लाये गये अशोक स्तम्भ पर खुदवाया गया था। इसमें उन राज्यों का वर्णन है जिन्होंने समुद्रगुप्त से युद्ध किया तथा पराजित हो गये और उनकी अधीनता स्वीकार लिया।

9. 'अद्वैतसिद्धिः' ग्रन्थः केन विरचितः?

(a) ब्रह्मानन्दसरस्वतिना (b) मधुसूदनसरस्वतिना

(c) सदानन्दपरिव्राजकेन (d) चित्सुखाचार्येण

उत्तर-(b)

'अद्वैतसिद्धि' ग्रन्थ की रचना 'मधुसूदनसरस्वती' जी ने किया। मधुसूदन सरस्वती (1540-1640) अद्वैत वेदान्त परम्परा के भारतीय दार्शनिक एवं भगवान कृष्ण के भक्त एवं विश्वेश्वर सरस्वती तथा माधव सरस्वती के शिष्य थे। 'अद्वैतसिद्धि' ग्रन्थ में 'न्यायामृत' का पंक्ति दर पंक्ति खण्डन है। अद्वैतसिद्धि के उत्तर में द्वैतविद्वान्, व्यास रामानुजाचार्य और आनन्द भट्टारक ने न्यायमृत तरंगिनी तथा न्यायमृत कंतकोधारा को लिखा तथा मधुसूदन सरस्वती को चुनौती दी।

10. अधस्तनेषु भाषाविज्ञानदृष्ट्या संघर्षी ध्वनिः कः?

(a) ट (b) श

(c) ल (d) र

उत्तर-(b)

भाषाविज्ञान के अनुसार संघर्षी ध्वनि है- विसर्ग (:),
ह्, ख्, ग्, श्, स्, ज्, फ्, व्, ष् ।
स्पर्श-संघर्षी ध्वनियाँ हैं- चवर्ग- च्, छ्, ज्, झ् ।
उच्छिप्त ध्वनियाँ हैं- ड् , ढ् ।

11. 'पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्' इति अधोलिखितेषु कस्य कवेः उक्तिः?

(a) भासस्य (b) कालिदासस्य

(c) शूद्रकस्य (d) अश्वघोषस्य

उत्तर-(b)

''पुराणामित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यम् नवमित्यवद्यम्' यह उक्ति महाकवि कालिदास की है।
महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् के प्रारम्भ में ही सूत्रधार के माध्यम से यह कहलवाया है जिसका तात्पर्य है कि ''पुरानी होने से ही न तो सभी वस्तुएं अच्छी होती हैं और न नयी होने से

बुरी तथा हेय। विवेकशील व्यक्ति अपनी बुद्धि से परीक्षा करके श्रेष्ठकर वस्तु को अङ्गीकार कर लेते हैं तथा मूर्ख लोग दूसरों द्वारा बताने पर ग्राह्य अथवा अग्राह्य का निर्णय करते हैं।

पांच अङ्कों से सुसज्जित मालविकाग्निमित्रम् में मालवदेश की राजकुमारी मालविका तथा विदिशा के राजा अग्निमित्र का प्रेम और उनके विवाह का वर्णन है।

12. बाह्यार्थानुमेयवादी कः?

(a) सौत्रान्तिकः (b) वैभाषिकः
(c) योगाचारः (d) माध्यमिकः

उत्तर-(a)

बौद्धमत वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक बाह्यार्थ की सत्ता में विश्वास करते हैं। दोनों मतों में भेद इस मत को लेकर है कि जहां वैभाषिक बाह्यार्थ की सत्ता को प्रत्यक्षज्ञान का विषय मानते हैं, वहां सौत्रान्तिक मत के अनुसार बाह्यार्थ प्रत्यक्ष का विषय न होकर अनुमान का विषय है। इसीलिए वैभाषिक मत 'सर्वास्तिवादी' एवं सौत्रान्तिक मत 'बाह्यार्थानुमेयवादी' के नाम से विख्यात है।

- योगाचार भारतीय माहयान की उपशाखा तथा बौद्धदर्शन एवं मनोविज्ञान की एक प्रमुख शाखा है।
- माध्यमिक न्याय ने शून्यवाद को दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में अङ्गीकृत किया है। इसके अनुसार ज्ञेय तथा ज्ञान दोनों ही कल्पित हैं। पारमार्थिक तत्त्व एकमात्र शून्य ही है।

13. मनुमते दुर्गं कतिविधम्?

(a) द्विविधम् (b) पञ्चविधम्
(c) षड्विधम् (d) सप्तविधम्

उत्तर-(c)

मनुस्मृति में छह प्रकार के दुर्ग बतलाये गये हैं-

''धन्वदुर्गं महीदुर्गमऽदुर्गं वार्क्षमेव वा।
नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरम्'' ।। मनु- 07/70।।"

धन्वदुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वृक्षदुर्ग, नृदुर्ग तथा गिरिदुर्ग किलों को बनाकर राज-पुर में वास करें।

''सर्वेण तु प्रयत्नेन गिरिदुर्गं समाश्रयेत् ।
एषां हि बाहुगुण्येन गिरिदुर्गं विशिष्यते ।। 07/71 ।।

अर्थात् छः प्रकार के किलों में अनेक गुणों से युक्त ऐसा पर्वत दुर्ग ही सभी में श्रेष्ठ है, इसलिए सब प्रकार के यत्नपूर्वक राजा को उसी का आश्रय करना चाहिए।

14. यथोचितं मेलनं कुरूत -

सूची I	सूची II
A. जिघत्सति	I. यङ्लुगन्तक्रियापदम
B. नरीनृत्यते	II. नामधातुक्रियापदम्
C. राजानति	III. सन्नन्तक्रियापदम्
D. बोभवीति	IV. यङ्न्तक्रियापदम्

(a) (A)-(II),(B)-(III),(C)-(I),(D)-(IV)
(b) (A)-(I),(B)-(II),(C)-(IV),(D)-(III)
(c) (A)-(III),(B)-(IV),(C)-(II),(D)-(I)
(d) (A)-(IV),(B)-(II),(C)-(I),(D)-(III)

उत्तर-(c)

जिघत्सति - सन्नन्तक्रियापदम् ।

सः स्यार्धधातुके - सकारादि आर्धधातुक के परे होने पर सकार के स्थान पर तकार आदेश होता है। यह सूत्र वहीं पर लगता है जहाँ पर पूर्व में सकार ही हो और पर में भी सकार ही हो, किन्तु पर सकार आर्धधातुक संज्ञक हो अर्थात् सकार आदि में स्थित आर्धधातुक परे हो। घस् में स् ऐसी स्थिति में इससे तकार आदेश होता है। **जैसे-** जिघत्सति। अद् भक्षणे धातु से 'धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा' सूत्र से इच्छति अर्थ में सन् प्रत्यय होता है।

नरीनृत्यते- ''पुनः- पुनः अतिशयेन वा नृत्यते'' (बार-बार व अतिशय नृत्य करना)। यहां 'नृती गात्रविक्षेपे' धातु से पुनः पुनरतिशयेन वा नृत्यते अर्थ में नृत् से 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्' सूत्र के द्वारा यङ् प्रत्यय हुआ।

राजानति- ''राजा इव आचरति राजानति''। राजन् इस कर्त्ता प्रातिपदिक से 'सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः' इस वार्तिक से क्विप् प्रत्यय करके सर्वापहारलोप करने पर 'राजन्' बना। 'सनाद्यन्ता धातवः' सूत्र से धातुसंज्ञा हुई तथा 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति' सूत्र से 'प्रत्यक्षलक्षणेन' क्वि परे मानकर अनुनासिकान्त उपधा नकारोत्तरवर्ती अकार को दीर्घ हुआ 'राजन् ' बना।

15. वेदान्तमते सूक्ष्मशरीरे कति अवयवाः?

(a) पञ्चदश (b) षोडश
(c) सप्तदश (d) एकादश

उत्तर-(c)

वेदान्तमतानुसार सूक्ष्मशरीर में सत्रह अवयव हैं।

''सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि''

सूक्ष्मशरीर सत्रह अवयवों वाले लिङ्ग शरीर हैं।

सत्रह अवयव इस प्रकार हैं- पञ्च ज्ञानेन्द्रियां, बुद्धि, मन, पञ्चकर्मेन्द्रियां, पञ्चवायु।

- ''लिङ्गयते ज्ञाप्यते प्रत्यगात्मा एभिरिति लिङ्गानि'' पञ्चीकृत महाभूतों से स्थूलशरीर उत्पन्न होते हैं।
- लिङ्गानि च तानि शरीराणि इति लिङ्गशरीराणि' (सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं)।
- बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तः करणवृत्तिः'' अर्थात् निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति बुद्धि है।
- मनो-नाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः'' अर्थात् संकल्प-विकल्प करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति मन है।

सूक्ष्मशरीर के 17 अवयव-

- पञ्च ज्ञानेन्द्रियां (चक्षु, स्रोत, त्वक्, घ्राण, रसना)
- पञ्च कर्मेन्द्रियां (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ)
- मन
- बुद्धि
- पञ्चवायु (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान)

16. अधोनिर्दिष्टेषु 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' इति वार्त्तिकस्य उदाहरणे स्तः-

A. समेनैति **B. कन्दुकेन क्रीडति**

C. द्विचक्रिकया **D. सुखेन याति**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B,D केवलम् (b) A,C केवलम्

(c) A,D केवलम् (d) C,D केवलम्

उत्तर-(c)

''प्रकृप्तादिभ्य उपसंख्यानम्'' (वार्तिक)- प्रकृति आदि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यह यथायोग्य समस्त विभक्तियों का अपवाद है। **जैसे-** प्रकृत्या चारुः (स्वभाव से अच्छा) यहाँ सम्बन्ध अर्थ में तृतीया हुई है।

अन्य उदाहरण- प्रायेण याज्ञिकः, गोत्रेण गार्ग्यः, समेन एति, विषमेण एति, सुखेन दुःखेन वा याति।

तृतीया विभक्ति के अन्यसूत्र एवं उदाहरण-

सूत्र		उदाहरण
कर्तृकरणयोस्तृतीया	-	रामेण बाणेन हतो बालिः।
दिवः कर्म च	-	अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति।
सहयुक्तेऽप्रधाने	-	पुत्रेण सह पिता गच्छति।
येनाङ्गविकारः	-	अक्ष्णा काणः।
इत्थम्भूतलक्षणे	-	जटाभिस्तापसः।
हेतौ	-	दण्डेन घटः।

17. अत्र कथनद्वयमस्ति। एकम् अभिकथनम् (A) अपरश्च तस्य कारणम् (R) इति। अभिकथनम् : (A) आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।

कारणम् (R): बलवदपि शिक्षितानाम् आत्मन्यप्रत्ययं चेतः।

उपर्युक्तम् अभिकथनं कारणञ्चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत।

(a) **अभिकथनम् (A), कारणम् (R)** उभयं सत्यम। किन्तु **कारणम् (R), अभिकथनम्** (A)इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति।

(b) **अभिकथनम् (A), कारणम् (R)** उभयं सत्यम् किन्तु **कारणम् (R), अभिकथनम्** (A)इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति।

(c) **अभिकथनम् (A)** सत्यम् **कारणम् (R)** असत्यम् ।

(d) **अभिकथनम् (A)** असत्यम् **कारणम् (R)**सत्यम् ।

उत्तर-(a)

''आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ।।

उपर्युक्त यह पंक्ति कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रारम्भ में सूत्रधार द्वारा कथित है जिसका तात्पर्य है- कि जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाएँ, तब तक मैं अपने अभिनय-कौशल को सफल नहीं समझता। विशेष रूप से शिक्षितों का भी चित्त अपने विषय में अविश्वासयुक्त ही होता है।

इस प्रश्न का अभिकथन एवं कारण दोनों सत्य हैं, इसकी व्याख्या भी सही है।

प्रमुख सूक्तियां-

- सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।
- इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र दुःसहानि।
- न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।
- अतिस्नेहः पापशङ्की।
- अर्थो हि कन्या परकीय एव।
- किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाऽकृतीनाम्।

18. प्रभाकरमते कति पदार्थाः ?

(a) अष्टौ (b) नव

(c) दश (d) षोडश

उत्तर-(a)

प्रभाकरमिश्र के मत में आठ पदार्थ हैं- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, समवाय, शक्ति, सादृश्य, संख्या।

मीमांसा गुरुमत के संस्थापक प्रभाकर मिश्र का समय 7 वीं शती के आस-पास का है। प्रभाकर ने शबरभाष्य पर दो टीकाएं लिखी-

(1) बृहती या निबन्धन (2) लघ्वी या विवरण।

तत्त्वविचार की पुष्टि से प्रभाकर अनेकतत्त्ववादी, वास्तववादी एवं व्यवहारवादी कहे जाते हैं। न्याय-वैशेषिक दर्शन के समान प्रभाकर भी जगत् की सत्ता को वास्तविक तथा इन्द्रिय द्वारा गम्य मानते हैं।

सामान्य की सत्ता व्यक्तियों से पृथक् नहीं मानी जा सकती है, वह व्यक्तियों में ही रहता है। शक्ति भी एक स्वतन्त्र पदार्थ है- **जैसे-** अग्नि की दाहकता, जिसके रहने पर अग्नि का दहन करती है और जिसके अवरूद्ध हो जाने पर अग्नि दाह नहीं कर पाती।

19. कालक्रमेण समुचितं विकल्पं चिनुत -

A. तत्त्वचिन्तामणिः **B. शब्दशक्तिप्रकाशिका**

C. न्यायकुसुमाञ्जलिः **D. दीधितिः**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(a) (A), (C), (B), (D) (b) (C), (A), (D). (B)

(c) (D), (B), (A), (C) (d) (B), (D), (C), (A)

उत्तर-(b)

कालक्रमानुसार ग्रन्थ है- न्यायकुसुमाञ्जलिः, तत्त्वचिन्तामणिः, दीधितिः एवं शब्दशक्तिप्रकाशिका।

- न्यायकुसुमाञ्जलि, उदयनाचार्य (984 ई.) द्वारा विरचित न्यायदर्शन का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इन्होंने तर्क के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास किया है।
- गङ्गेशोपाध्याय (12 वीं शती) द्वारा विरचित तत्त्वचिन्तामणि नव्यन्याय का प्रसिद्ध ग्रन्थ है, यह न्यायखण्ड चार खण्डों में विभाजित है-
  (1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान, (3) उपमान, (4) शब्द।
- रघुनाथ शिरोमणि ने गङ्गेशोपाध्याय के तत्त्वचिन्तामणि पर 'तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः' नामक टीका लिखी। इन्होंने नव्यन्याय के दर्शन को वैश्लेषिक शक्ति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाया।
- जगदीश तर्कालङ्कार (17 वी शती) ने 'शब्दशक्तिप्रकाशिका' की रचना की। विद्वानों ने इनके ग्रन्थ को ''जगदीशस्थ सर्वस्वं शब्दशक्तिप्रकाशिका'' कहकर सम्बोधित किया।

20. अधस्तनेषु नाटकेषु विदूषको नास्ति -

A. उत्तररामचरितम् **B. मालविकाग्निमित्रम्**

C. महावीरचरितम् **D. विक्रमोर्वशीयम्**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B,D केवलम् (b) A,D केवलम्

(c) B,C केवलम् (d) A,C केवलम्

उत्तर-(d)

करूणरस के शिरोमणि कवि भवभूति द्वारा विरचित 'उत्तररामचरितम् एवं महावीरचरितम्' नाटक विदूषकरहित है।

- उत्तररामचरितम् करूणरस प्रधान सात अङ्कों का नाटक है। इसका उपजीव्य वाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97) तथा पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68) है। प्रथमाङ्क में चित्रवीथी की योजना, तृतीयाङ्क में छायाङ्क एवं सप्तम् अङ्क में गर्भनाटक की योजना है।
- महावीरचरितम् के सात अङ्कों में राम के विवाह से लेकर राम के राज्याभिषेक तक रामायण की कथा वर्णित है। यह वीररस प्रधान है। भवभूति की एक अन्य कृति मालतीमाधव भी है, जो 10 अङ्कों में विभक्त प्रकरण नाटक है, इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है, यह शृङ्गाररस प्रधान है।

21. यथोचितं मेलनं कुरूत -

सूची I	सूची II
A. दिक्	I. त्वक्
B. वायुः	II. चक्षुः
C. सूर्यः	III. रसना
D. वरुणः	IV. श्रोत्रम्

(a) (A)–(III), (B)–(IV), (C)–(I),(D)–(II)

(b) (A)–(I), (B)–(II), (C)–(III),(D)–(IV)

(c) (A)–(IV), (B)–(I), (C)–(II),(D)–(III)

(d) (A)–(II), (B)–(IV), (C)–(I),(D)–(III)

उत्तर-(c)

	इन्द्रियां	देवता	विषय
पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ	श्रोत्र	दिक्	शब्द
	त्वक्	वायु	स्पर्श
	चक्षु	सूर्य	रूप
	रसना	वरूण	रस
	घ्राण	अश्विन	गन्ध
पञ्चकर्मेन्द्रियाँ	वाक्	अग्नि	बोलना
	पाणि	इन्द्र	आदान-प्रदान
	पाद	उपेन्द्र	चलना
	पायु	यम	विसर्जन
	उपस्थ	प्रजापति	आनन्द
अन्तरिन्द्रिय	मन	चन्द्र	संकल्प-विकल्प
	बुद्धि	ब्रह्म	निश्चय
	अहङ्कार	शिव	गर्व
	चित्त	विष्णु	स्मरण

22. बौद्धदर्शनस्य प्रतीत्यसमुत्पादे परिगणितौ निदानौ स्तः–

A. उपादानम् **B. निमित्तम्**

C. विज्ञानम् **D. निदानम्**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A,D केवलम् (b) A,C केवलम्

(c) B,C केवलम् (d) C,D केवलम्

उत्तर-(b)

बौद्धदर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद के अन्तर्गत द्वादश निदान की परिगणना की जाती है, जिनके नाम क्रमशः हैं- (1) अविद्या, (2) संस्कार, (3) विज्ञान, (4) नामरूप, (5) षडायतन, (6) स्पर्श, (7) वेदना, (8) तृष्णा, (9) उपादान, (10) भव, (11) जाति, (12) जरामरण।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार जीवन और जगत् की प्रत्येक घटना एवं कार्य-कारण पर निर्भर रहते हैं। यह तीनों कालों को जोड़कर कर्मवाद की स्थापना करता है। इसके अनुसार मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके पूर्ववर्ती जीवन के कर्मो का परिणाम है तथा भविष्य का जीवन वर्तमान जीवन के कर्मों के अनुरूप होगा। अतः मानव अपने संकल्प से भविष्य जीवन को शुभ बना सकता है, संसार के समस्त प्राणी इसी से संचालित होते हैं।

23. वाल्मीकिरामायणस्य टीकाकारौ स्तः

A. नीलकण्ठः **B. रामवर्मा**

C. विमलबोधः **D. गोविन्दराजः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) A,C केवलम् (b) B,D केवलम्

(c) C,D केवलम् (d) B,C केवलम्

उत्तर-(b)

वाल्मीकीयरामायण संस्कृत का आर्षमहाकाव्य है। यह सात काण्डों में विभक्त है। इसके तीन पाठ भी प्राप्त होते हैं- (1) दाक्षिणात्य पाठ, (2) गौड़ीय पाठ, (3) पश्चिमोत्तरीय पाठ या काश्मीरिक संस्करण। रामायण मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द में हैं। इसमें 24000 श्लोक है जिस कारण इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' कहा जाता है।

रामायण की प्रमुख टीकाएं- रामानुजीयम् , सर्वार्थसार, रामायणदीपिका, बृहदविवरण, लघुविवरण, रामायणतत्त्वदीपिका– महेशतीर्थ, अमृतकतक– माधवयोगी भूषण (गोविन्दराजीय)– गोविन्दराज, वाल्मीकि हृदय– अहोबल, रामायणतिलक, रामायणशिरोमणि, मनोहर, धर्माकूतम् – त्रयम्बक मखिन्, तनिश्लोकी– पेरियार वाचाम्बिल्लै, विषमपदविवृति रामायणभूषण – प्रबलमुकुन्दसूरि।

24. मनुस्मृतौ प्रतिपादितान् एतान् विषयान् यथाक्रमं योजयत -

A. राजधर्मः **B. आपद्धर्मः**

C. संस्कारविधिः **D. प्रायश्चित्तम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(a) (B), (C), (A), (D) (b) (C), (A), (B), (D)

(c) (A), (D), (B), (C) (d) (C), (B), (D), (A)

उत्तर-(b)

मनुस्मृति में 12 अध्याय एवं 2694 श्लोक हैं।

मनुस्मृति के अध्यायों के प्रतिपाद्य विषय-

अध्याय	प्रतिपाद्य
प्रथमाध्याय	- जगत् की उत्पत्ति।
द्वितीयाध्याय	- संस्कारविधि, व्रतचर्या, उपचार।
तृतीयाध्याय	- स्नान, दाराधिगमन, विवाहलक्षण, महायज्ञ, श्राद्धकल्प।
चतुर्थाध्याय	- वृत्तिलक्षण, स्नातक व्रत।
पंचमाध्याय	- भक्ष्याभक्ष्य, शौच, अशुद्धि, स्त्रीधर्म।
षष्ठ अध्याय	- गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, मोक्ष, संन्यास।
सप्तमाध्याय	- राजधर्म।
अष्टमाध्याय	- कार्यविनिर्णय, साक्षिप्रश्नविधान।
नवम अध्याय	- स्त्रीपुंसधर्म, विभागधर्म, द्यूत, कंटकशोधन, वैश्यशूद्रोपचार।
दशम अध्याय	- संकीर्णजाति, आपद्धर्म।
एकादश अध्याय	- प्रायश्चित।
द्वादशाध्याय	- संसारगति, कर्म, कर्मगुणदोष, देशजाति, कुलधर्म, निश्रेयस।

25. अशोकशिलालेखेषु 'गिरनारशिलालेखाः' कुत्र प्राप्यन्ते?

(a) महाराष्ट्रे (b) सौराष्ट्रे

(c) बंगप्रान्ते (d) उत्कलप्रदेशे

उत्तर-(b)

अशोक के शिलालेखों में **'गिरनार शिलालेख'** सौराष्ट्र से प्राप्त हुआ है। गिरनार गुजरात में जूनागढ़ के निकट स्थित पहाड़ियां हैं। गिरनार की पहाड़ियों से पश्चिम और पूर्व दिशा में भादस, रोहजा, शतरूंजी तथा घेलों नदियां प्रवाहित होती है, इन पहाड़ियों पर मुख्यतः भील और डुबला लोगों का निवास है, इसी पहाड़ी पर मौर्य सम्राट अशोक का 'चतुर्दश शिलालेख' अंकित है।

पहाड़ियों के दूसरी ओर शकक्षत्रप रुद्रदामन का भी अभिलेख है। इस अभिलेख में मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के आदेश से वहां पर 'सुदर्शन झील' के निर्माण का उल्लेख है। रूद्रदामन के जूनागढ़ लेख से ज्ञात होता है कि सम्राट अशोक के समय 'तुशाष्प' नामक अधीनस्थ यवन राज्यपाल के रूप में सौराष्ट्र पर शासन करता था। मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त द्वारा सुदर्शन नामक झील बनाए जाने का उल्लेख भी इसी शिलालेख में मिलता है।

26. ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः' इति कस्य मतमस्ति?

(a) भट्टभास्करस्य (b) आचार्यसायणस्य

(c) दुर्गाचार्यस्य (d) अनन्ताचार्यस्य

उत्तर-(a)

''ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः'' यह भट्टभास्कर का मत है। जिसका तात्पर्य है कि कर्मकाण्ड और मन्त्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को ब्राह्मण कहते हैं।

- शबरस्वामी ने ब्राह्मणग्रन्थों के 10 प्रतिपाद्य विषय बतलाये हैं–
  ''हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
  परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।
  उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै।।
  अर्थात् (1) हेतु, (2) निर्वचन, (3) निन्दा, (4) प्रशंसा, (5) संशय, (6) विधि, (7) परक्रिया, (8) पुराकल्प, (9) व्यवधारण-कल्पना, (10) उपमान आदि विषय हैं।

- वाचस्पति मिश्र के अनुसार ब्राह्मण उन ग्रन्थों को कहते हैं जिनमें निर्वचन, मंत्रों का विविध यज्ञों में विनियोग, प्रयोजन, प्रतिष्ठान और विधि का वर्णन होता है–
''नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् ।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते ।।

27. एषु पाठकस्य अन्यतमो गुणो वर्तते -

(a) अक्षरव्यक्तिः (b) शीघ्री
(c) गीती (d) शिरःकम्पी

उत्तर-(a)

पाठक के अधम गुण–

''गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः ।।पा.शि.।।

अर्थात् गुनगुनाते हुए पढ़ने वाला, जल्दी-जल्दी पढ़ने वाला, सिर हिलाकर पढ़ने वाला, जैसा पुस्तक में लिखित है ठीक वैसा ही बिना उपयुक्त आरोह-अवरोह के पढ़ने वाला, बिना अर्थ समझे ही पढ़ने वाला तथा फंसे गले से पाठ पढ़ने वाला आदि छः गुण पाठक के अधमगुण है।

''माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठकागुणाः ।।पा.शि. 33।।

पाठक के पाठ में माधुर्य, अक्षरों की सुस्पष्टता, पदों का विच्छेदपूर्वक उच्चारण, उचित स्वर, धैर्य तथा लय या प्रवाह आवश्यक है। पाठक के पुस्तक पढ़ने की कला की ओर इसमें संकेत किया गया है।

28. 'वास्तव्यः' इत्यत्र वस्-धातोः 'तव्यत्'-प्रत्ययः कस्मिन्नर्थे भवति?

(a) भावे (b) कर्मणि
(c) स्वार्थे (d) कर्तरि

उत्तर-(d)

''तव्यत्तव्यानीयरः'' सूत्रानुसार धातु से तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होता है। ''वसेस्तव्यत् कर्तरि णिच्च। वास्तव्यः'। वास्तव्यः पद में वस् धातु तव्यत् प्रत्यय कर्त्ता के अर्थ में होता है। **केलिमर् उपसंख्यानम् -** धातुओं से केलिमर् प्रत्यय होता है। केलिमर् में ककार की लशक्वतद्धिते से और रकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होकर एलिम् शेष रहता है, कित् होने के कारण गुण निषेध हो जाता है। **जैसे-** पचेलिमा भाषाः।

29. चित्तभूमीनां विकल्पं क्रमेण योजयत–

A. निरुद्धः **B. एकाग्रः**
C. क्षिप्तम् **D. मूढः**

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(a) (B),(C),(D),(A) (b) (C),(D),(B),(A)
(c) (A),(B),(D),(C) (d) (C),(A),(D),(B)

उत्तर-(b)

''क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तमेकाग्रं, निरुद्धमिति चित्तभूमयः'' ।

क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र एवं निरुद्ध चित्त की पांच भूमियां होती हैं।

- **''प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः''** (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति इस प्रकार पांच प्रकार की चित्त की वृत्तियां होती हैं।

प्रमाण- ''प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि'' (प्रमाण वृत्ति के तीन भेद हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम)।

विपर्यय- ''विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्''

ज्ञेय वस्तु से भिन्न अर्थ में प्रतिष्ठित मिथ्याज्ञान विपर्यय कहा जाता है।

विकल्प- ''शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः'' (शब्द से उत्पन्न जो ज्ञान, उसके पीछे, चलने का जिसका स्वभाव हो और जो वस्तु की सत्ता की अपेक्षा रखता हो, विकल्प कहलाता है।

निद्रा- ''निद्रा-अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा'' (जाग्रत तथा स्वप्नावस्था की वृत्तियों के अभाव के कारणभूत तमोगुण को विषय बनाने वाली वृत्ति निद्रा कही जाती है।

स्मृति- ''अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः'' (अनुभव किए हुए विषय का फिर चित्त में तन्मात्र विषयक-ज्ञान होना 'स्मृति' कहलाता है।

30. अत्र कथनद्वयमस्ति। एकम् **अभिकथनम् (A)** अपरञ्च तस्य **कारणम् (R)** इति।

अभिकथनम् (A): उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम् इत्यत्र प्रथमा विभक्तिः जायते।

कारणम् (R): लिङ्गमात्राद्याधिक्यात्।

उपर्युक्तम् अभिकथनं कारणञ्चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत।

(a) **अभिकथनम् (A), कारणम् (R)** उभयं सत्यम् । किन्तु **कारणम् (R), अभिकथनम् (A)** इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति।
(b) **अभिकथनम् (A), कारणम् (R)** उभयं सत्यम् । किन्तु **कारणम् (R), अभिकथनम् (A)** इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति।
(c) **अभिकथनम् (A)** सत्यम, **कारणम् (R)** असत्यम् ।
(d) **अभिकथनम् (A)** असत्यम् **कारणम् (R)** सत्यम् ।

उत्तर-(a)

''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''

उच्चैः (ऊँचा), नीचैः (नीचा), कृष्णः (वासुदेव), श्रीः (लक्ष्मी) तथा ज्ञानम् (ज्ञान) इन सभी उदाहरणों में प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा विभक्ति हुई। उच्चैः, नीचैः अव्यय होने के कारण अलिङ्ग

(लिङ्ग रहित) शब्द है तथा कृष्णः (पु.) श्रीः (स्त्री.), ज्ञानम् (नपु.) नियतलिङ्ग शब्द है। अलिङ्ग एवं नियतलिङ्ग शब्द ही प्रातिपदिकार्थमात्र के उदाहरण होते हैं।

लिङ्गमात्राधिक्यात् - केवल अनियतलिङ्ग शब्द ही लिङ्गमात्राधिक्य के उदाहरण है। जैसे- तटः, तटी, तटम् । तट शब्द का तीनों लिङ्गों में रूप उपलब्ध होने के कारण अर्थात् एक लिङ्ग नियत न होने के कारण प्रातिपदिकार्थ में अन्तर्भाव नहीं हो सकता। अतएव यहां प्रातिपदिकार्थ के साथ-साथ लिङ्गमात्र अर्थ का भी बोध होता है, इस प्रकार यहां तटः में प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति से 'किनारा' अर्थ एवं पुल्लिङ्ग दोनों का बोध होता है।

31. ब्राह्मी लिपिः लिख्यते

(a) दक्षिणतो वामम् (b) वामतो दक्षिणम्
(c) ऊर्ध्वात् अधः (d) अधस्तात् ऊर्ध्वम्

उत्तर-(b)

ब्राह्मी लिपि बायें से दाएं लिखी जाती है।

यह लिपि भारत की प्राचीनतम लिपियों में से एक है। इसके प्रयोग के प्राचीन उदाहरण अशोक के अभिलेखों के रूप में उपलब्ध है।

ब्राह्मी लिपि की विशेषताएं-

- यह बाएं से दाएं लिखी जाती है।
- यह मात्रात्मक लिपि है, व्यञ्जनों पर मात्रा लगाकर लिखी जाती है।
- कुछ व्यञ्जनों के संयुक्त होने पर उनके लिए संयुक्ताक्षर का प्रयोग किया जाता है।
- वर्णों का क्रम वही है जो आधुनिक भारतीय लिपियों में है।

32. अधस्तनेषु समीचीनं कथनमस्ति-

A. याज्ञवल्क्यस्मृतौ द्वादशाध्यायाः सन्ति।
B. कौटिल्यमते नवविधाः गूढपुरुषाः भवन्ति।
C. मनुस्तृतौ अष्टादशविवादपदानि वर्णितानि।
D. 'विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' महाभारतस्य वनपर्वणि वर्णितमस्ति।
उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A,C केवलम् (b) B,C केवलम्
(c) C,D केवलम् (d) B,D केवलम्

उत्तर-(b)

कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार गुप्तचर के नव प्रकार हैं-

''कापटिकोदास्थितगृहपतिवैदेहकतापसव्यञ्जनान् सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च''

कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद एवं भिक्षुकी।

- मनुस्मृति के अनुसार विवाद के अट्ठारह प्रकार हैं-

(1) ऋणदान, (2) निक्षेप, (3) अस्वामी विक्रय, (4) संभूय समुत्थान, (5) दत्तस्य अनपाकर्म, (6) वेतन अनपाकर्म, (7) संविद का व्यतिक्रम, (8) क्रय-विक्रय का अनुशय, (9) स्वामी और पशुपालन का विवाद, (10) क्षेत्रजविवाद, (11) वाक्पारुष्य, (12) दण्डपारुष्य, (13) स्तेय, (14) साहस, (15) स्त्री संग्रहण, (16) स्त्रीपुंधर्म, (17) विभाग-दाय विभाग, (18) द्यूत और समाहृत्य

33. सामवेदेन सम्बद्धे स्तः-

A. गोपथब्राह्मणम् **B. देवताध्यायब्राह्मणम्**
C. बौधायनधर्मसूत्रम् **D. लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**
उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचिमुत्तरं चिनुत-

(a) A,C केवलम् (b) B, D केवलम्
(c) A,D केवलम् (d) C,D केवलम्

उत्तर-(b)

देवताध्याय ब्राह्मण एवं लाट्यायन श्रौतसूत्र सामवेद से सम्बन्धित

वेद	शाखा	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
ऋग्वेद	शाकल बाष्कल	ऐतरेय कौषीतकि ब्राह्मण	ऐतरेय शांखायन	ऐतरेय, कौषीतकि बाष्कल मंत्रोपनिषद्
शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन (वाजसनेयि) काण्व	शतपथ ब्राह्मण	बृहदारण्यक	ईशोपनिषद्, बृहदारण्योकपनिषद्
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय मैत्रायणीय कठ कपिष्ठल	तैत्तिरीय ब्राह्मण	तैत्तिरीयारण्यक	तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायणोपनिषद्
सामवेद	कौथुम राणायनीय जैमिनीय	तांड्य महाब्राह्मण, (पंचविंश या प्रौढ़) षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान, आर्षेय, मंत्र, देवताध्याय, वंश, संहितोपनिषद् ब्राह्मण	तलवकार	छान्दोग्य, केनोपनिषद्
अथर्ववेद	शौनक पैप्पलाद	गोपथ ब्राह्मण	कोई नहीं	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्योपनिषद्

- **वेदानुसार श्रौतसूत्रों का क्रम-**

ऋग्वेद - आश्वलायन एवं शांखायन श्रौतसूत्र
शुक्ल यजुर्वेद - कात्यायन श्रौतसूत्र

कृष्ण-यजुर्वेद	-	बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ़, वैखानस, वाराह श्रौतसूत्र।
सामवेद	-	आर्षेय (मशक), जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण श्रौतसूत्र।
अथर्ववेद	-	वैतान श्रौत सूत्र

34. पद्मपुराणे पञ्च खण्डाः सन्ति, क्रमेण योजयत -

सूची I	सूची II
A. प्रथमखण्डः	II. स्वर्गखण्डः
B. द्वितीयखण्डः	II. सृष्टिखण्डः
C. तृतीयखण्डः	III. पातालखण्डः
D. चतुर्थखण्डः	IV. भूमिखण्डः

(a) (A)–(IV),(B)–(II),(C)–(I),(D)–(III)
(b) (A)–(I),(B)–(III),(C)–(IV),(D)–(II)
(c) (A)–(II),(B)–(IV),(C)–(I),(D)–(III)
(d) (A)–(II),(B)–(I),(C)–(IV),(D)–(III)

उत्तर-(c)

पद्म पुराण में पांच खण्ड हैं- (1) सृष्टि खण्ड, (2) भूमिखण्ड, (3) स्वर्गखण्ड, (4) पातालखण्ड, (5) उत्तरखण्ड ।

पद्मपुराण में 55 हजार श्लोक हैं। केवल इसी पुराण में राधा को कृष्ण की पत्नी होने का स्पष्ट उल्लेख है। कालिदास रघुवंशमहाकाव्यम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् दोनों की कथावस्तु के लिए इस पुराण का विशेषरूप से ऋणी है।

पुराण से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- स्कन्दपुराण में पांच संहिताएं हैं- (1) सनत्कुमारीय, (2) ब्राह्मी, (3) वैष्णवी, (4) शङ्कर या अगस्त्य, (5) सौर । इस पुराण में वाराणसी और उसके आस-पास के मन्दिरों का वर्णन है। यह सर्वाधिक विशालकाय पुराण है।
  अग्निपुराण में उस समय प्रचलित सभी विद्याओं का संकलन है, इसे 'विश्वकोश' भी कहा जाता है।
- मत्स्य पुराण में आन्ध्र राजाओं की प्रामाणिक वंशावली दी गयी है, इसमें दक्षिण भारत की मूर्तिकला, वास्तुकला एवं स्थापत्यकला का सुन्दर वर्णन है।

35. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणेषु द्वे प्रकरणे स्तः-

A. दानप्रकरणम् **B. साहसप्रकरणम्**
C. स्नातकधर्मप्रकरणम् **D. ऋणादानप्रकरणम्**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) A,D केवलम् (b) A,C केवलम्
(c) B,D केवलम् (d) B,C केवलम्

उत्तर-(c)

याज्ञवल्क्यस्मृति में तीन काण्ड हैं-
(1) आचारकाण्ड, (2) व्यवहारकाण्ड, (3) प्रायश्चित्तकाण्ड।

व्यवहाराध्याय के पच्चीस प्रकरण हैं-
(1) साधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम्, (2) असाधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम् (3) ऋणादानप्रकरणम्, (4) उपनिधिप्रकरणम् , (5) साक्षिप्रकरणम्, (6) लेख्यप्रकरणम्, (7) दिव्यप्रकरणम्, (8) दायविभागप्रकरणम्, (9) सीमाविवादप्रकरणम्, (10) स्वामिपालविवादप्रकरणम्, (11) स्वामिविक्रयप्रकरणम् , (12) दत्ताप्रदानिकप्रकरणम् , (13) क्रीतानुशयप्रकरणम् , (14) अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम् , (15) संविद्व्यतिक्रमप्रकरणम् , (16) वेतनादानप्रकरणम्, (17) द्यूतसमाह्वयप्रकरणम् , (18) वाक्पारुष्यप्रकरणम् , (19) दण्डपारुष्यप्रकरणम् , (20) साहसप्रकरणम् , (21) विक्रीयासम्प्रदानप्रकरणम् , (22) सम्भूयसमुत्थानप्रकरणम् , (23) स्तेयप्रकरणम् , (24) स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम् , (25) प्रकीर्ण प्रकरणम्।

- आचारकाण्ड में तेरह एवं प्रायश्चित्तकाण्ड में छह प्रकरण हैं।

36. अधस्तनेषु निरुक्तग्रन्थानुसारेण शाकटायनस्य द्वे मते स्तः-

A. नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति।
B. इन्द्रियनित्यं वचनम् ।
C. न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुः।
D. उच्चावचा पदार्था भवन्ति।

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) A,B केवलम् (b) A,C केवलम्
(c) B,C केवलम् (d) C,D केवलम्

उत्तर-(b)

शाकटायन से सम्बन्धित क्रमशः दो मत हैं-
(1) ''न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुः''।
(2) ''नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोग द्योतका भवन्ति''।

आचार्य वार्ष्यायणि के मत-
- षड्भावविकारा भवन्ति इति।
- उच्चवचा पदार्था भवन्ति।

आचार्य औदुम्बरायण- इन्द्रियनित्यं वचनम्।
पद के चार भेद है- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात।
नाम - सत्त्वप्रधानानि नामानि।
आख्यात- भावप्रधानम् आख्यातम्।
निरुक्त के प्रमुख प्रतिपाद्य विषय- (1) वर्णागम, (2) वर्ण-विपर्यय, (3) वर्ण-विकार, (4) वर्णनाश, (5) धातुओं का अनेकार्थक में प्रयोग।
निरुक्त के प्रमुख टीकाकार- दुर्गाचार्य, स्कन्दमहेश्वर एवं वररुचि।

37. 'उत्पातेन ज्ञापिते च' इति वार्तिकस्योदाहरणमस्ति-

(a) मुक्तये हरि भजति (b) भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते

(c) वाताय कपिला विद्युत् (d) ब्राह्मणाय हितम्

उत्तर-(c)

- **उत्पातेन ज्ञापिते च (वार्तिक)-** उत्पात से जहां बात जानी जाय वहां (उसमें) चतुर्थी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- 'वाताय कपिला विद्युत्'- (भूरे रंग की बिजली आंधी की सूचना देती है)।
  यहां इस उदाहरण में भूरी बिजली के चमकने रूपी उत्पात से आंधी आने की सूचना मिल रही है अतः 'वात्' में प्रकृत वार्तिक से चतुर्थी विभक्ति हुई है।
- **तादार्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वार्तिक)-** तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है। अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है।
  उदाहरण- मुक्तये हरिं भजति (वह मुक्ति के लिए हरि को भजता है)
- **हितयोगे च (वार्तिक)-** हित शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। **उदाहरण-** ब्राह्मणाय हितम् (ब्राह्मण का हित)।
- **क्लृपि सम्पद्यमाने च (वार्तिक)-** क्लृप् अर्थ वाली धातुओं के योग में सम्पद्यमान अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है, जैसे- भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते।

38. चित्तवृत्तिषु न परिगण्येते-

A. विपर्ययः **B. तपः**

C. प्रमाणम् **D. स्वाध्यायः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A,B केवलम् (b) A,C केवलम्

(c) B,D केवलम् (d) B,C केवलम्

उत्तर-(c)

चित्त की पांच वृत्तियां होती हैं-

''प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः'' (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति)

''वह्निव्याप्यधूमवानयमिति ज्ञानं परामर्श इत्युच्यते''।

कोई व्यक्ति स्वयं ही पाकशाला में धूम और अग्नि को साथ देखकर उनके साहचर्य का निश्चय करके, पर्वत के समीप जाकर धूम रेखा को देखता है तो उसका संस्कार उद्बुद्ध हो जाता है और वह 'जहां धूम होता है वहां अग्नि होती है' इस व्याप्ति का स्मरण करता है तदन्तर यहां भी धूम है यह परामर्श करता है। इस (लिङ्गपरामर्श) से यहाँ पर्वत में भी अग्नि है।

39. संस्कृतनाटकेषु एतौ विदूषकौ स्तः-

A. माधवः **B. मैत्रेयः**

C. माधव्यः **D. चन्द्रापीडः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) B,C केवलम् (b) A,B केवलम्

(c) C,D केवलम् (d) A,C केवलम्

उत्तर-(a)

संस्कृत नाटकों में माधव्य और मैत्रेय विदूषक है।

माधव्य- अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के विदूषक का नाम 'माधव्य' है। इनका सर्वप्रथम द्वितीयाङ्क में दर्शन होता है, विदूषक अपने प्रत्येक क्रियाकलाप एवं भावभङ्गिमा से सभी को हंसाता है। विदूषक यत्र-तत्र अपनी मन्दबुद्धिता का भी परिचय देता है। माधव्य समय-समय पर राजा का मनोरञ्जन करता तथा उचित परामर्श देता है।

मैत्रेय- शूद्रकविरचित मृच्छकटिकम् नामक प्रकरणग्रन्थ में 10 अङ्क है। इसमें मैत्रेय नामक विदूषक है। तृतीय अङ्क के प्रारम्भ में वह अपना स्वयं परिचय देता है- ''यथा नागानां मध्ये डुण्डुभः तथा सर्वब्राह्मणानां मध्येऽहं ब्राह्मणः'' अर्थात् जैसे समस्त सांपों की प्रजातियों में डोड़हा (जल में रहने वाला सांप नाममात्र के लिए ही) सांप होता है, उसी प्रकार सम्पूर्ण ब्राह्मणों के बीच में मैं भी नाममात्र का ब्राह्मण हूं।

40. ऋक्प्रातिशाख्यकारः कः अस्ति?

(a) शूरवीरः (b) आगस्त्यः

(c) आचार्यः शौनकः (d) महार्षिव्यासः

उत्तर-(c)

ऋक्प्रातिशाख्यकार 'आचार्य शौनक' हैं।

आचार्य शौनक 'कात्यायन' और 'आश्वलायन' के गुरू थे। ये (शौनक) संस्कृत वैयाकरण एवं ऋग्वेदप्रातिशाख्य, बृहद्देवता, चरणव्यूह तथा ऋग्वेद की छः अनुक्रमणिकाओं के रचयिता हैं।

परपरम्परा अनुसार ऋक्प्रातिशाख्य, ऋग्वेदीय शाकल शाखा से सम्बद्ध बतलाया जाता है। यह प्रातिशाख्यों में सबसे दीर्घ है। इसमें 18 पटल (अध्याय) हैं। इसमें छह-छह पटलों के तीन अध्याय हैं। इस प्रातिशाख्य के प्रथम 1 से 15 अध्यायों में शिक्षा और व्याकरण से सम्बन्धित विषयों का प्रतिपादन है तथा अंत के तीन अध्यायों में छन्दों की चर्चा है।

41. 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते' इति कस्मिन् ग्रन्थे मूलतःप्राप्यते?

(a) दशरूपके (b) नाट्यशास्त्रे

(c) काव्यादर्शे (d) साहित्यदर्पणे

उत्तर-(b)

आचार्य भरतमुनि के नाट्याशास्त्रानुसार- ''न हि रसाद्दृते कश्चिदर्थः प्रवर्त्तते। तत्र विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः'' अर्थात् रस के बिना विभावादि अर्थ व्याख्येय रूप से वृत्ति में प्रवर्तित नहीं होते तथा रस के बिना आनन्दानुभूति रूप काव्य का अर्थ अर्थात् प्रयोजन सिद्ध नहीं होता इसलिए व्याख्याता, नट और सामाजिक तीनों को दृष्टि में रखते हुए नाट्य में इसकी ही प्रधानता सिद्ध होती है।

विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारीभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

''जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

अर्थात् नाट्य में ऋग्वेद से कथावस्तु ली गयी, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद के यज्ञ-याज्ञादि के संवादों से अभिनय एवं अथर्ववेद से रस तत्त्व को गृहीत किया गया है।

42. कौटिलीयार्थशास्त्रानुसारम् अनन्यां पृथिवी कः भुङ्क्ते?

(a) शक्तिसम्पन्नो राजा (b) विद्याविनीतो राजा

(c) तीक्ष्णदण्डो राजा (d) सचिवायत्तो राजा

उत्तर-(b)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार-

''विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रतः।

अनन्यां पृथिवीं भुङ्क्ते सर्वभूतहिते रतः ।। बृद्ध.।।

अर्थात जो विद्वान् राजा प्राणिमात्र की हितकामना में लगा रहता है और प्रजा के शासन तथा शिक्षण में तत्पर रहता है, वह चिरकाल तक पृथिवी का निर्बाध शासन करता है।

''तस्माद्दण्डमूलास्तिस्त्रो विद्याः। विनयमूलो दण्डः प्राणभृताः योगक्षेमावहः'' (आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता इन तीन विद्याओं का अस्तित्व दण्डनीति पर आधारित है। शास्त्रविहित उचित रीति से प्रयुक्त दण्ड, प्रजा के योगक्षेम का साधक होता है।

43. यथोचितं मेलनं कुरूत -

सूची I	सूची II
A. रससम्प्रदायः	I भामहः
B. रीतिसम्प्रदायः	II आनन्दवर्द्धनः
C. अलङ्कारसम्प्रदायः	III भरतमुनिः
D. ध्वनिसम्प्रदायः	IV वामनः

(a) (A)–(III), (B) –(IV), (C)–(I),(D)–(II)

(b) (A)–(II), (B) –(III), (C)–(IV),(D)–(I)

(c) (A)–(I), (B) –(II), (C)–(III),(D)–(IV)

(d) (A)–(IV), (B) –(I), (C)–(II),(D)–(III)

उत्तर-(a)

- आचार्य भरतमुनि प्रणीत् नाट्यशास्त्र में रससिद्धान्त की विवेचना की गयी है। आचार्य भरतमुनि नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति ब्रह्म से बतलाते हैं। इसमें आचार्य बतलाते हैं कि रस की निष्पत्ति विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभाव के संयोग से होती है।
- आचार्य भामह के द्वारा अलङ्कारशास्त्र पर प्रथम ग्रन्थ 'काव्यालङ्कार' लिखा गया। इनके अनुसार काव्य की परिभाषा है- ''शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्''।
- रीतिसम्प्रदाय के आचार्य वामन के द्वारा 'काव्यालङ्कारसूत्र' की रचना की गयी है, इनके अनुसार काव्य की आत्मा रीति है- ''रीतिरात्मा काव्यस्य''।
- ध्वनि सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य आनन्दवर्धन की 'ध्वन्यालोक' प्रमुख कृति है। इनके अनुसार काव्य की परिभाषा इस प्रकार है- ''काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः ...।

44. तैत्तिरीयारण्यके कति प्रपाठकाः सन्ति?

(a) 20 (b) 10

(c) 24 (d) 15

उत्तर-(b)

तैत्तिरीय आरण्यक के 10 प्रपाठक या परिच्छेद हैं।

तैत्तिरीय आरण्यक कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक ग्रन्थ है। इसके प्रत्येक प्रपाठकों का नामकरण प्रपाठकों के प्रथम पद के आधार पर किया गया है। 10 प्रपाठकों के नाम ये हैं-

(1) भद्र, (2) सह वै, (3) चिति, (4) युञ्जते, (5) देव वै, (6) परे, (7) शिक्षा, (8) ब्रह्मविद्या, (9) भृगु, (10) नारायणीय ।

प्रथम प्रपाठक का प्रारम्भ 'भद्रं कर्णेभिः०', मंत्र से होने के कारण इस प्रपाठक का नाम 'भद्र' है।

- प्रपाठक 7 से 9 तैत्तिरीयोपनिषद् है तथा प्रपाठक 10 'महानारायणीयोपनिषद्' है। इसमें पांच महायज्ञों के दैनिक अनुष्ठान का निर्देश है। इसको खिलकांड मानते हैं।
  पाँच महायज्ञ इस प्रकार है- (1) ब्रह्मयज्ञ, (2) देवयज्ञ, (3) पितृयज्ञ, (4) मनुष्ययज्ञ, (5) भूतयज्ञ ।

45. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं व्यवहारस्य चतुष्पादान् यथाक्रमं योजयत-

A. साध्यसिद्धिपादः **B. भाषापादः**

C. उत्तरपादः **D. क्रियापादः**

समुचितं विकल्प चिनुत -

(a) (C), (A), (B), (D) (b) (A), (D), (B), (C)

(c) (B), (C), (D), (A) (d) (A), (C), (B), (D)

उत्तर-(c)

याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार व्यवहार के चार पादों का क्रम क्रमशः है- ''चतुष्पादो व्यवहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः''।

(1) **भाषापादः -** प्रत्यर्थिनोऽग्रतो लेख्यं भाषापादः।

(2) **उत्तरपादः -** श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं उत्तरपादः।

(3) **क्रियापादः -** अर्थो लेखयेत्सद्यः क्रियापादः।

(4) **साध्यसिद्धिपादः -** तत्सिद्धौ सिद्धिमारप्नोति साध्यसिद्धिपादः।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

''श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं पूर्वावेदकसन्निधौ''

(वादी के वाद को सुनने के बाद प्रतिवादी द्वारा) सुने गये (विषय-अभियोग) का उत्तर पहले के आवेदक के सामने लिखना चाहिए।

''ततोऽर्थी लेखयेत्सद्यः प्रतिज्ञातार्थसाधनम्'

(प्रतिवादी का उत्तर सुनने के बाद) वादी तुरन्त प्रतिज्ञात अर्थ (लगाये गये अभियोग) का साधन (प्रमाण) लिखावे।

46. 'धातुपारायणम्' इति व्याकरणग्रन्थस्य रचयिता अस्ति -

(a) विनयसागरसूरिः (b) नागेशभट्टः

(c) कैय्यटः (d) हेमचन्द्रसूरिः

उत्तर-(d)

''धातुपारायणम् '' व्याकरणग्रन्थ के रचयिता ''हेमचन्द्रसूरि'' जी हैं। संस्कृत व्याकरण की जिस परम्परा को आचार्य पाणिनि एवं पतञ्जलि ने स्थापित एवं पुष्ट किया था, उसका विकास जैन परम्परा के वैयाकरण हेमचन्द्र के द्वारा किया गया। आचार्य हेमचन्द्र का धातुपारायण नामक ग्रन्थ पाणिनि के धातु पाठ संग्रह के समान था। इन्होंने स्वयं बनायी हुयी धातुओं को ही व्याकरण में सन्निविष्ट किया। इन धातुओं के अर्थ को स्वयं हेमचन्द्र ने विस्तृत किया तथा धातुपारायण में धातुओं के विविध रूप एवं धातुओं में से व्युत्पन्न लगभग छः हजार शब्द की सूत्रसहित चर्चा की।

47. आचार्यकौटिल्यमते दूतस्य द्वौ प्रकारौ स्तः-

A. शासनहरः **B. बुद्धिमानः**

C. परिमितार्थः **D. आहार्यबुद्धिः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) A,B केवलम् (b) A,C केवलम्

(c) B,C केवलम् (d) C,D केवलम्

उत्तर-(b)

''अमात्यसम्पदोपेतो निसृष्टार्थः, पादगुणहीनः परिमितार्थः, अर्धगुणहीनः शासनहरः। कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार दूत तीन प्रकार के होते हैं- (1) निसृष्टार्थ, (2) परिमितार्थ, (3) शासनहर।

- अमात्य के पूर्वोक्त गुणों से सम्पन्न निसृष्टार्थ उनमें एक चौथाई गुणहीन परिमितार्थ तथा आधा गुणहीन शासनहर कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

''विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रतः।

अनन्यां पृथिवीं भुङ्क्ते सर्वभूतहिते रतः।। वृद्ध ।।

अर्थात् जो विद्वान् राजा प्राणिमात्र की हितकामना में लगा रहता है तथा प्रजा के शासन एवं शिक्षण में तत्पर रहता है, वह चिरकाल तक पृथिवी का निर्बाध शासन करता है।

48. कालक्रमानुसारं निम्नलिखितग्रन्थानां क्रमं चिनुत–

A. महाभाष्यम् **B. परिभाषेन्दुशेखरः**

C. प्रौढमनोरमा **D. काशिका**

समुचितं विकल्प चिनुत -

(a) (D), (A), (B), (C) (b) (A), (C), (B), (D)

(c) (A), (D), (C), (B) (d) (B), (D), (A), (C)

उत्तर-(c)

- आचार्य पतञ्जलि ने पाणिनि की अष्टाध्यायी के कुछ चुने हुए सूत्रों पर भाष्य लिखा जिसे 'व्याकरणमहाभाष्य' नाम दिया। व्याकरणमहाभाष्य की रचना ईसा.पू. दूसरी शताब्दी के आस-पास मानी जाती है।
- जयादित्य और वामन के द्वारा **'काशिकावृत्ति'** की रचना की गयी। इसमें पाणिनिकृत अष्टाध्यायी के सूत्रों की वृत्ति लिखी गयी है।
- भट्टोजिदीक्षित ने सिद्धान्तकौमुदी पर **'प्रौढ़मनोरमा'** नामक टीका लिखी। इनके पौत्र हरिदीक्षित ने प्रौढ़मनोरमा पर **'शब्दरत्न'** नामक टीका लिखी।
- नागेशभट्ट संस्कृत के नव्यवैयाकरणों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं क्रमशः हैं- परिभाषेन्दुशेखर, लघुशब्देन्दुशेखर, बृहच्छब्देन्दुशेखर, लघुमञ्जूषा, स्फोटवाद तथा पतञ्जलिकृत महाभाष्य पर **'उद्योत'** नामक टीका आदि हैं।

49. यथोचितं मेलनं कुरूत -

सूची I	सूची II
A. विज्ञानेश्वरः	**I. वीरमित्रोदयः**
B. मित्रमिश्रः	**II. अपरार्कः**
C. अपरादित्यः	**III. मिताक्षरा**
D. शूलपाणिः	**IV. दीपकलिका**

(a) (A)–(III), (B)–(I), (C)–(II), (D)–(IV)

(b) (A)–(II), (B)–(III), (C)–(I), (D)–(IV)

(c) (A)–(III), (B)–(II), (C)–(IV), (D)–(I)

(d) (A)–(I), (B)–(II), (C)–(III), (D)–(IV)

उत्तर-(a)

- आचार्य विज्ञानेश्वर के द्वारा याज्ञवल्क्यस्मृति पर **मिताक्षरा** नामक टीका लिखी गयी। यह 11 वीं शताब्दी में लिखी गयी। विज्ञानेश्वर का जन्म कर्नाटक के गुलमर्ग के निकट मर्तूर ग्राम में हुआ था।
- अपरादित्य के द्वारा याज्ञवकल्यस्मृति पर **'अपरार्क'** नामक टीका लिखी गयी।
- आचार्य शूलपाणि बंगाल के प्रख्यात धर्मशास्त्र लेखक हैं। इनकी याज्ञवल्क्यस्मृति पर **'दीपकालिका'** नामक टीका अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- मित्रमिश्र द्वारा याज्ञवल्क्यस्मृति पर **'वीरमित्रोदय'** नामक टीका लिखी गयी। वीरमित्रोदय एक विशाल कार्य है, यह मिताक्षरा का सूक्ष्मता से अनुसरण करता है।
- विश्वरूप द्वारा याज्ञवल्क्यस्मृति पर प्रारम्भिक टीका **'बालक्रीड़ा'** लिखा गया है।

50. अत्र कथनद्वयमस्ति। एकम् **अभिकथनम् (A)** अपरञ्च तस्य **कारणम् (R)** इति।

अभिकथनम् (A): केनोपनिषदि हैमवती उमोपाख्यानं **वर्णितमस्ति।**

कारणम् (R): 'न तत्र चक्षुर्गच्छति' इति केनोपनिषद्वचनमस्ति।

उपर्युक्तम् अभिकथनं कारणञ्चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत।

(a) **अभिकथनम् (A), कारणम् (R)** उभयं सत्यम्। किन्तु **कारणम् (R) अभिकथनम् (A)** इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति।

(b) **अभिकथनम् (A), कारणम् (R)** उभयं सत्यम्। किन्तु **कारणम् (R) अभिकथनम् (A)** इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति।

(c) **अभिकथनम् (A)** सत्यम्, **कारणम् (R) असत्यम्**

(d) **अभिकथनम् (A)** असत्यम्,**कारणम् (R) सत्यम्**

उत्तर-(b)

''केनोपनिषद्'' को तलवकार एवं जैमिनीय उपनिषद् भी कहते हैं। यह चार खण्डों में विभाजित है, प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक एवं शेष दो गद्यात्मक है। तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड में 'उमा-हेमवती' का उपाख्यान वर्णित है।

केनोपनिषद् के कुछ महत्वपूर्ण मन्त्र-

''न तत्र चक्षुर्गच्छति, न वाग्गच्छति नो मनो
न विहमा न विजानीमो यथैतदनुशिष्यात् ।
अन्यदेव तद्विदितादधो अविदितादधि
इति शुश्रूम् पूर्वेषां ये नस्तद्व्याचचक्षिरे।।

अर्थात् न वहाँ चक्षु जा सकता है, न वाणी पहुँचती है तथा न मन (इसलिए उसको) न जानते हैं, न जान सकते हैं, जिससे उसका उपदेश किया जा सके। वह ज्ञात वस्तुओं से पृथक् है और अज्ञात से भिन्न है। ऐसा पूर्वाचार्यों से सुनते हैं जिन्होंने उस 'परतत्त्व' की हमारे बोध के लिए व्याख्या की है।

51. ज्ञानयज्ञभाष्यस्य कर्ता कः?

(a) आचार्यसायणः (b) भट्टभास्करमिश्रः
(c) गोविन्ददेवः (d) अनन्तदेवः

उत्तर-(b)

ज्ञानयज्ञभाष्य के कर्त्ता भट्टभास्कर मिश्र हैं।

भट्टभास्कर आचार्य सायण के पूर्ववर्ती वेदभाष्यकार थे। इन्होंने कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता, तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं तैत्तिरीयारण्यक पर भाष्य लिखा है, इन्होंने 11 वीं शती ई. में तैत्तिरीय संहिता पर 'ज्ञानयज्ञ' नामक भाष्य लिखा है, इनके मंत्रों का केवल यज्ञपरक ही अर्थ नहीं है। अपितु अध्यात्म और अधिदैव-परक अर्थ भी दिए गये हैं।

- सायण ने सर्वप्रथम अपना भाष्य तैत्तिरीय संहिता पर ही लिखा था। इसके पश्चात् ऋग्वेदादि पर भाष्य लिखा।
- माधव सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं इनके भाष्य का नाम 'विवरण' है।
- हलायुध ने काण्वसंहिता पर 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामक भाष्य लिखा है।

52. जैनदर्शने गुणस्थानानां संख्या-

(a) त्रयोदश (b) पञ्चदश
(c) चतुर्दश (d) षोडश

उत्तर-(c)

जैनदर्शन में गुणस्थानों की संख्या 14 है।

जैनदर्शन में गुणस्थान, उन चौदह चरणों के लिए प्रयोग किया गया है, जिनसे जीव आध्यात्मिक विकास के दौरान धीरे-धीरे गुजरता है, इससे पहले की वह मोक्ष प्राप्त करें। जैनदर्शनानुसार, यह पुद्गल कर्मों पर आश्रित होने से लेकर उनसे पूर्णता पृथक् होने तक आत्मा की भावदशा है।

चौदह गुणस्थान क्रमशः हैं- (1) मिथ्यादृष्टि, (2) सासादन सम्यक् दृष्टि, (3) मिश्र दृष्टि, (4) अविरत सम्यक् दृष्टि, (5) देश-विरत, (6) प्रमत्त संयत, (7) अप्रमत्त संयत, (8) अपूर्वकरण, (9) अनिवृत्तिकरण, (10) सूक्ष्म-साम्पराय, (11) उपशान्तमोह, (12) क्षीणमोह (भ्रम का विनाश), (13) सयोगकेवली (योगसहित केवल ज्ञान), (14) अयोगकेवली ।

53. व्याकरणाध्ययनस्य प्रयोजनं यथाक्रमं योजयत-

A. लघुः **B. आगमः**
C. ऊहः **D. रक्षा**

समुचित विकल्पं चिनुत-

(a) (D), (C), (B), (A) (b) (C), (D), (A), (B)
(c) (B), (C), (D), (A) (d) (A), (B), (D), (C)

उत्तर-(a)

पतञ्जलि के महाभाष्य (आह्निक 1) के अनुसार व्याकरण अध्ययन का प्रयोजन है- **''रक्षोहागमलध्वसंदेहाः प्रयोजनम्''।**

रक्षा- 'रक्षार्थं' वेदानामध्येयं व्याकरणम्'। वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

ऊह- 'ऊहः खल्वपि' निश्चय ही ऊह अर्थात् विभक्तियों का विपरिणाम भी शब्दशास्त्र के अध्ययन का प्रयोजन है।

आगम- ''आगमः खल्वपि-ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च। ब्राह्मण को बिना किसी दृष्ट कारण की अपेक्षा किए छः अङ्गों से युक्त वेद को धर्म मानकर अध्ययन और अर्थज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

लघु- ''लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम् ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः'' इति।

शब्दों के ज्ञान में सुगमता के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

ब्राह्मण को शब्दों का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

असन्देह-'असन्देहार्थं चाध्येयं व्याकरणम्' । संदेहरहितता के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

54. काव्यलक्षणविचारे 'स्ववचनविरोधादेवापास्तम्' इति धिया विश्वनाथेन कस्य मतं निराकृतम्?

(a) आनन्दवर्धनस्य (b) मम्मटस्य

(c) वामनस्य (d) भोजराजस्य

उत्तर-(a)

काव्यलक्षणविचारे 'स्ववचनविरोधादेवापास्तम्' इति धिया विश्वनाथेन 'आनन्दवर्धनस्य' मतं निराकृतम् ।

'अत्र वाच्यात्मत्वं' काव्यास्यात्मा ध्वनिः' इति स्ववचनविरोधादेवापास्तम्' ।

आचार्य विश्वनाथ कहते हैं कि जो ध्वनिकार ने कहा कि सहृदयों द्वारा प्रशंसित जो प्रतीयमान अर्थ काव्यात्मा के रूप में व्यवस्थित है उसके वाच्य एवं प्रतीयमान नाम वाले दो भेद हैं जो यहाँ वाच्यार्थ का आत्मत्त्व बताना, 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः (काव्य की आत्मा ध्वनि है) के रूप में, अपने ही वचन का विरोध होने से आपस्त (खण्डित) हो जाता है।

- आचार्य वामन के अनुसार 'काव्य की आत्मा रीति है यह असम्भव है। क्योंकि रीति के संघटना-विशेष होने के कारण एवं संघटना के भी अवयवसंस्थान रूप होने के कारण यह सम्भव नहीं है और भी यह आत्मा के भी अवयव संस्थान से भिन्न होने के कारण असम्भव है।

55. ऋग्वेदस्य भाष्यकारः कः?

(a) स्कन्दरस्वमी (b) माधवः

(c) भरतस्वामी (d) गुणविष्णुः

उत्तर-(a)

आचार्य स्कन्दस्वामी ऋग्वेद के भाष्यकार हैं।

ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी (625 ई. के लगभग) का ही प्राप्त होता है। इन्होनें सम्पूर्ण ऋग्वेद का परम्परा ढंग से संस्कृत में भाष्य किया है।

ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण तथा उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था।

स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात् ।

चक्रुः सहैकम् ऋग्भाष्यं प्रदवाक्याथगोचरम् ॥

स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक प्राप्त होता है, शेषभाग नारायण और उद्गीथ ने किया है। स्कन्दस्वामी ने यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी है।

- माधव, सामवेद के प्रथम भाष्यकार है, इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद का भाष्य लिखा है, इनके भाष्य का नाम 'विवरण' हैं।
- गुण विष्णु ने सामवेद की कौथुम शाखा पर 'छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य' लिखा है। इनके दो अन्य ग्रन्थ भी हैं- (1) मंत्र-ब्राह्मणभाष्य, (2) पारस्कर - गृह्यसूत्रभाष्य।
- भरतस्वामी ने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य किया है जो अप्रकाशित है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में दिए गए श्लोकों से इनका यह परिचय मिलता है-

  पिता-नारायण, माता-यज्ञदा, गोत्र- काश्यप। श्रीरंग मन्दिर में रहकर होयसलवंशी राजा रामनाथ के राज्यकाल में सामवेद का भाष्य किया। इन्होंने सामवेद के ब्राह्मणों पर भी भाष्य लिखा है।

56. कौटिलीयार्थशास्त्रानुसारेण राज्यस्य द्वे अङ्गे स्तः-

A. दूतः B. अमात्यः

C. कोषः D. पुरोहितः

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B, C केवलम् (b) A, B केवलम्

(c) B, D केवलम् (d) C, D केवलम्

उत्तर-(a)

कौटिलीय अर्थशास्त्रानुसार सप्ताङ्गराज्य है-

''स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्राणि प्रकृतयः''

कौटिल्य के अनुसार राज्य को स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, दण्ड तथा मित्र इन सात प्रकृतियों से युक्त माना गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

कापटिक गुप्तचर- ''परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः'' अर्थात् दूसरों के रहस्यों को जानने वाला अत्यन्त प्रगल्भ एवं विद्यार्थी की वेशभूषा में रहने वाला गुप्तचर 'कापटिक' कहलाता है।

उदास्थित गुप्तचर- ''प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तउदास्थितः'' अर्थात् बुद्धिमान् सदाचारी संन्यासी के वेश में रहने वाले गुप्तचर का नाम उदास्थित है।

गृहपतिक गुप्तचर- ''कर्षकोवृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः'' अर्थात् बुद्धिमान, पवित्र हृदय और गरीब किसान के वेश में रहने वाले गुप्तचर को 'गृहपतिक' कहते हैं।

57. अनुकरण सिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अस्ति-

(a) अरस्तू (b) लॉन्जाइनस

(c) क्रोचे (d) प्लेटो

उत्तर-(a)

अनुकरणसिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अरस्तू अस्ति अर्थात् अनुकरणसिद्धान्त के समर्थक मुख्यतया अरस्तू हैं। दैवी ईश्वरीय प्रेरणा का सिद्धान्त प्लेटो का है।प्लेटो ने सभी चीजों के नामों को प्राकृतिक या प्रकृति प्रदत्त कहा था। यह भी मत दैवी उत्पत्ति का ही एक रूप है।

58. अर्थविस्तारोदाहरणेषु एतौ शब्दौ परिगणितौ भवतः-

A. गवेषणा **B. वेदना**

C. प्रवीणः **D. भार्या**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) C, B केवलम् (b) B, A केवलम्

(c) A, C केवलम् (d) A, D केवलम्

उत्तर-(c)

अर्थविस्तार के उदाहरण में गवेषणा तथा प्रवीणः परिगणित है। सांसारिक समस्त प्रचलित ध्वनियों में परिवर्तन के साथ प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। अर्थपरिवर्तन के तीन भेद हैं- (1) अर्थविस्तार, (2) अर्थसंकोच, (3) अर्थादेश

(1) **अर्थविस्तार-** अर्थविस्तार का अर्थ है अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तार पर जाना अथवा शब्दों के मूलरूप संकुचित अर्थों में जब विस्तार हो जाय तो वह अर्थविस्तार कहलाता है। **जैसे-** प्रवीण, कुशल, गवेषणा, महराज, तैल, गोशाला, सब्जी, अधर, इतिश्री, पंडित, परसो, अभ्यास, निपुण आदि।

- प्रवीण का अर्थ है- प्रकृष्टो वीणायाम् (वीणावादन में श्रेष्ठ या पटु)। यह शब्द वीणावादन की निपुणता को छोड़कर केवल 'पटु या दक्ष' अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। इस पद में अर्थविस्तार हुआ है।
- गवेषणा पद का प्रारम्भ में अर्थ 'गाय की इच्छा या गाय की खोज ' अर्थ में था। पुनः यह 'गाय ढूंढना' अर्थ में प्रयुक्त हुआ। अब इसमें से गाय अर्थ हटाकर केवल ढूंढकर, खोज करना अर्थ रह गया है। आज यह शब्द शोधकार्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

(2) **अर्थसंकोच-** अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है, उनका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। **जैसे-** जगत् , संसार, वारिज, अम्बुज, सर्प, पर्वत, तटस्थ, मन्दिर, मृग, सभ्य, तर्पण, श्राद्ध, अनुकूल, वेदना, घृणा आदि।

(3) **अर्थादेश -** एक अर्थ के लोप होने तथा नवीन अर्थ के आ जाने अर्थादेश कहते हैं। **जैसे-** असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, गँवार, वाटिका, जंघा, दुहिता, आकाशवाणी, मुग्ध आदि।

अर्थापकर्ष- अर्थ का उन्नत से अवनत हो जाना अथोपकर्ष कहलाता है। **जैसे-** पाखंड- मूलतः संन्यासियों के एक सम्प्रदाय का नाम था। अशोक इनका बड़ा आदर करता था तथा इन्हें दान देता था। अब 'पाखंड' 'ढोंग' का वाचक है।

59. अधोलिखितान् काव्यशास्त्रकारान् क्रमेण योजयत-

A. जगन्नाथः **B. वामनः**

C. मम्मटः **D. भामहः**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (D), (C), (B), (A) (b) (A), (D), (C), (B)

(c) (D), (B), (C), (A) (d) (D), (A), (B), (C)

उत्तर-(c)

- आचार्य भामह का समय 320 ई. से 500 ई. के मध्य में ही मानना चाहिए। इसके द्वारा रचित 'काव्यालङ्कार' में छः परिच्छेद एवं 400 श्लोक हैं।
- संस्कृत काव्यशास्त्र के वाङ्मय में वामनाचार्य ही ऐसे हैं जिन्होंने काव्यात्मा के रूप में 'रीति' को शब्दशः प्रतिपादित किया। (रीतिरात्मा काव्यस्य)।
- काव्यप्रकाश के तीन अंश है- (1) कारिका, (2) वृत्ति तथा (3) उदाहरण। आचार्य मम्मटकृत 'काव्यप्रकाश' में कुल 10 उल्लास, 142 कारिकाएं। इन कारिकाओं का 212 सूत्रों में विभाजन किया गया है। एवं लगभग 600 उदाहरण श्लोक हैं। प्रथम उल्लास में काव्यहेतु, काव्यभेद का वर्णन, काव्यप्रयोजन, काव्यलक्षण एवं अन्य में रसालङ्कारों का बृहद् विवेचन है।
- आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ परवर्ती संस्कृत काव्यशास्त्र के भास्वरतम नक्षत्र हैं। पण्डितराज द्वारा विरचित प्रमुख कृतियां हैं- गङ्गालहरी, अमृतलहरी, करूणालहरी, लक्ष्मीलहरी, जगदाभरण, आसफविलास, भामिनीविलास, प्राणाभरण, यमुनावर्णनचम्पू, चित्रमीमांसाखण्डन, मनोरमाकुचमर्दिनीटीका व्याकरण पर एवं रसगङ्गाधर, सुधालहरी आदि।

60. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत।
अभिकथनम् (I) : 'व्रीहीन् अवहन्ति' इत्यत्र प्रयोगविधिरस्ति।
अभिकथनम् (II) : दध्ना जुहोति' इत्यत्र विनियोगविधिरस्ति।

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) उभये (I) & (II) कथने सत्ये स्तः।
(b) उभये (I) & (II) कथने असत्ये स्तः।
(c) प्रथमं कथनम् (I) सत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् (II) असत्यम् अस्ति।
(d) प्रथमं कथनम् (I) असत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् (II) सत्यम् अस्ति।

उत्तर-(d)

''तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः'' अर्थात्

अर्थात् अर्थ को ज्ञापित अथवा प्रकाशित कराने वाले वेदभाग को 'विधि' कहते हैं। विधि के चार भेद हैं- उत्पत्तिविधि, विनियोगविधि, अधिकारविधि एवं प्रयोगविधि।

(1) **उत्पत्तिविधि-** तत्रकर्मस्वरूपमात्र बोधको विधिरुत्पत्तिविधिः'' अर्थात् (यागादि) कर्म के स्वरूपमात्र का बोधक विधि 'उत्पत्तिविधि' कहलाता है। जैसे- अग्निहोत्रं जुहोति।

(2) **विनियोगविधि-** 'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधकोविधिर्विनियोगविधिः' (अङ्गों के साथ सम्बन्ध बोधक विधि को विनियोगविधि कहते हैं। जैसे- दध्ना जुहोति।

(3) **प्रयोगविधि-** 'प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः' (जिस विधिवाक्य से प्रयोग) को शीघ्र करने का बोध होता है। उसे प्रयोग विधि कहते है।

(4) **अधिकारविधि-** ''कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः'' कर्मजन्यफल की स्वाम्यबोधक विधि अधिकार विधि है।

विनियोगविधि के सहकारी छः प्रमाण-

- श्रुति
- लिङ्ग
- वाक्य
- प्रकरण
- स्थान
- समाख्या

प्रयोगविधि के छह प्रमाण-

- श्रुति
- अर्थ
- पाठ
- प्रवृत्ति
- मुख्य
- स्थान

श्रुति के तीन भेद

- विधात्री
- अभिधात्री
- विनियोक्त्री

61. काव्यप्रयोजनानि काव्यप्रकाशानुसारं यथाक्रमं योजयत-

A. अर्थकृते **B. यशसे**
C. व्यवहारविदे **D. शिवेतरक्षतये**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A), (C), (B), (D)
(b) (B), (A), (C), (D)
(c) (C), (D), (A), (B)
(d) (A), (C), (D), (B)

उत्तर-(b)

काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट के अनुसार छह काव्यप्रयोजन हैं- (1) यशसे, (2) अर्थकृते, (3) व्यवहारविदे, (4) शिवेतरक्षतये, (5) सद्यः परनिर्वृत्तये, (6) कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे । -

''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

शास्त्र में तीन प्रकार की उपदेश शैली प्रसिद्ध है-
(1) प्रभुसम्मित, (2) सुहृत्सम्मित, (3) कान्तासम्मित

- आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्यप्रयोजन-
''चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ।।
चूंकि न्यून बुद्धि वालों को भी धर्मार्थकाम एवं मोक्षरूप पुरूषार्थ- चतुष्टय की फलप्राप्ति सरलतापूर्वक, काव्य से ही हो जाती है।

काव्य के प्रयोजन-

- यश के लिए
- धन के लिए
- व्यवहार ज्ञान के लिए
- अमङ्गल नाश के लिए
- परमानन्द की प्राप्ति के लिए
- कान्तासम्मित उपदेश के लिए

62. अधस्तनेषु विकृतिपाठान् यथाक्रमं योजयत-

A. माला **B. शिखा**
C. जटा **D. रेखा**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A), (B), (C), (D) (b) (A), (C), (B), (D)
(c) (C), (A), (B), (D) (d) (C), (D), (A), (B)

उत्तर-(c)

अष्टविकृतियां- वेद के मन्त्रों के उच्चारण में तथा उसकी सुरक्षा में कोई अन्तर न आने पावे इसके लिए जो उपाय अपनाये गये उसे विकृतियां कहते थे। इनमें मंत्रों के पदों को घुमा-फिरा कर अनेक प्रकार से उच्चारण किया जाता था।

''जटा माला शिखा रेखा, ध्वजो दण्डो रथो घनः।

अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः, क्रमपूर्वा महर्षिभिः ।।

जटा-पाठ, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, घन के भेद से ये अष्टविकृतियाँ है। इसमें घनपाठ सबसे कठिन और बड़ा होता है।

- अष्टविकृतियों के अतिरिक्त तीन पाठ और हैं-

(1) संहितापाठ, (2) पदपाठ, (3) क्रमपाठ

संहितापाठ में मंत्र अपने मूलरूप में रहता है। पदपाठ में मंत्र के प्रत्येक पद को पृथक्-पृथक् करके पढ़ा जाता है। यदि कोई सन्धि रहती है तो उसे तोड़ दिया जाता है। इसमें प्रत्येक पद स्वतंत्र रहता है।

63. तर्कभाषायाः टीका 'तर्कभाषाप्रकाशिका' केन विरचिता?

(a) पक्षधरमिश्रेण (b) गोवर्धनमिश्रेण

(c) वाचस्पतिमिश्रेण (d) पार्थसारथिमिश्रेण

उत्तर-(b)

तर्कभाषा पर ''तर्कभाषाप्रकाशिका'' नामक टीका गोवर्धनमिश्र के द्वारा विरचित है।

तर्कभाषा न्यायप्रधान न्यायवैशेषिक प्रस्थानात्मा प्रकरण ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ न्यायसम्मत षोडश पदार्थो के निरूपण क्रम में प्रमेय के अङ्ग अर्थ के अन्तर्गत आत्मपदार्थ की विवेचना प्रस्तुत करता है तथा समन्वित प्रस्थान को पुष्ट करता है।

तर्कभाषा की टीकाएं

ग्रन्थकार	टीकाग्रन्थ	ग्रन्थकार	टीकाग्रन्थ
गोपीनाथ	उज्ज्वला	चिन्नम्भट्ट	तर्कभाषाप्रकाशिका
गणेश दीक्षित	तत्त्वप्रबोधिनी	बलभद्र	तर्कभाषाप्रकाशिका
दिनकर भट्ट	तर्ककौमुदी	माधवदेव	तर्कभाषासारमञ्जरी
गोवर्धनमिश्र	तर्कभाषाप्रकाश	विश्वकर्मा	न्यायप्रदीप
अखण्डानन्द-सरस्वती	तर्कभाषाप्रकाश	रामलिङ्ग	न्यायसंग्रह
		भाष्कर भट्ट	परिभाषादर्पण

64. यथोचितं मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
A. विवाहसूक्तम्	I. ऋग्वेदे
B. नासदीयसूक्तम्	II. शुक्लयजुर्वेदे
C. शिवसङ्कल्पसूक्तम्	III. शतपथब्राह्मणे
D. वाङ्मनस् आख्यानम्	IV. अथर्ववेदे

(a) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

(b) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

(c) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)

(d) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)

उत्तर-(b)

- नासदीयसूक्त ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 129 वां सूक्त है। इस सूक्त में वैदिक ऋषियों के प्रतिभा, ज्ञान और अलौकिक दार्शनिक चिन्तन का वर्णन है। इसमें सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उस समय न असत् था और न ही सत् था, न रात्रि था और न ही दिन था। उस समय सृष्टि का सूचक कोई चिह्न नहीं था।
- शिवसङ्कल्पसूक्त शुक्ल यजुर्वेद का 34 वां अध्याय है। इसी में 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' का उल्लेख है जिसका तात्पर्य है- हमारा मन शुभ संकल्पों एवं विचारों से युक्त हो। इस सूक्त में मन का मनोवैज्ञानिक चित्रण है।
- अथर्ववेद का सम्पूर्ण 14 वां काण्ड 'विवाह-सूक्त' के रूप में है। इसमें विवाह-संस्कार की विधियों, पति-पत्नी के कर्त्तव्य, विवाह-सम्बन्ध का अविच्छेद होना, पतिव्रता धर्मपत्नी के अधिकार एवं कर्त्तव्य आदि का विस्तृत विवेचन है।
- वाङ्मनस् आख्यान, शतपथ ब्राह्मण से सम्बन्धित है।

65. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण अधस्तनेषु सन्ध्यक्षरमस्ति-

(a) अ (b) इ

(c) ओ (d) उ

उत्तर-(c)

ऋग्वेद प्रातिशाख्य महर्षि शौनक की कृति है। इसमें 18 पटल हैं। इस प्रातिशाख्य में सञ्ज्ञा, परिभाषा, स्वर, सन्धि, उच्चारणदोष आदि का वर्णन है। इसमें मुख्यतया इन विषयों का वर्णन है- (1) पारिभाषिक शब्दों के लक्षण, (2) विभिन्न सन्धियों का विवेचन, (3) क्रमपाठ का विवरण, (4) पद-विभाग और व्यञ्जनों के स्वरूप का विचार, (5) वर्णोच्चारण त्रुटियों का उल्लेख, (6) वेद पारायण पद्धति, (7) अन्तिम तीन अध्यायों में छन्दःशास्त्र का उल्लेख।

सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञा- 'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि' (बाद के चार अक्षर सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञक होते हैं- ए, ओ, ऐ, औ ।

समानाक्षर सञ्ज्ञा- 'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः (अर्थात् प्रारम्भ के आठ अक्षर समानाक्षर सञ्ज्ञक होते हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ ।

सोष्म सञ्ज्ञा- 'युग्मौ सोष्माणौ' अर्थात् प्रत्येक वर्ग में सम वर्ण सोष्म सञ्ज्ञक होते हैं- खघ, छझ, ठढ, थध, फभ।

अघोष सञ्ज्ञा- 'अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः' अर्थात् ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष सञ्ज्ञक होते हैं- श, ष, स, अः, ⨯क, ⨯प, अं।

66. 'वाच्य एव वाक्यार्थ' इति मतं प्रतिपादयन्ति-

(a) सर्वे मीमांसकाः (b) अभिहितान्वयवादिनः

(c) कुमारिलभट्टानुयायिनः (d) अन्विताभिधानवादिनः

उत्तर-(d)

''वाच्य एव वाक्यार्थः'' यह मत अन्विताभिधानवादियों के द्वारा प्रतिपादित किया है।

पदों के द्वारा अन्वित पदार्थों की ही उपस्थिति होती है इसलिए पदार्थों का परस्पर सम्बन्धरूप वाक्यार्थ वाच्य ही होता है। तात्पर्याशक्ति से बाद को प्रतीत नहीं होता है यह अन्विताभिधानवादियों (प्रभाकर) का मत हैं।

प्रभाकर और उनके अनुयायी शालिकनाथमिश्र आदि का मत है कि पहले से अन्वित पदार्थों का ही अभिधा से बोधन होता है इसलिए इस सिद्धान्त का नाम 'अन्विताभिधानवाद' रखा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **काव्य के तीन भेद हैं-** उत्तमकाव्य, मध्यमकाव्य, अधमकाव्य।
- **संकेतित अर्थ के चार भेद हैं-** जाति, गुण, क्रिया और यदृच्छा।
  ''संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा''

67. कौटिलीयेऽर्थशास्त्रे कति अधिकरणानि?

(a) दश (b) एकादश

(c) द्वादश (d) पश्चदश

उत्तर-(d)

कौटिलीयेऽर्थशास्त्रे पञ्चदश अधिकरणानि सन्ति। अर्थात् **कौटिल्यकृत 'अर्थशास्त्र' में पन्द्रह अधिकरण हैं।**

अधिकरण का क्रम	अधिकरण का नाम
प्रथम अधिकरण	विनयाधिकारिक
द्वितीय अधिकरण	अध्यक्षप्रचार
तृतीय अधिकरण	धर्मस्थीय
चतुर्थ अधिकरण	कण्टकशोधन
पंचम अधिकरण	योगवृत्त
षष्ठ अधिकरण	मण्डलयोनि
सप्तम् अधिकरण	षाड्गुण्य
अष्टम् अधिकरण	व्यसनाधिकारिक
नवम् अधिकरण	अभियास्यत्कर्म
दशम् अधिकरण	साङ्ग्रामिक
एकादश अधिकरण	वृत्तसंघ
द्वादश अधिकरण	आबलीयस
त्रयोदश अधिकरण	दुर्गलम्भोपाय
चतुर्दश अधिकरण	औपनिषदिक
पञ्चदश अधिकरण	तन्त्रयुक्ति

68. 'गगनारविन्दं सुरभिः अरविन्दत्वात्' अत्र कः हेत्वाभासः?

(a) सत्प्रतिपक्षः (b) बाधः

(c) आश्रयासिद्धः (d) स्वरूपासिद्धः

उत्तर-(c)

''गगनारविन्दं सुरभिः अरविन्दत्त्वात्'' इस उदाहरण में 'आश्रयासिद्ध' हेत्वाभास है। हेत्वाभास के पांच भेद हैं- (1) असिद्ध, (2) विरूद्ध, (3) अनैकान्तिक, (4) प्रकरणसम, (5) कालात्ययापदिष्ट।

असिद्ध हेत्वाभास- ''लिङ्गत्वेनानिश्चितोहेतुरसिद्धः'' ''लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु 'असिद्ध हेत्वाभास' है। असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद हैं- (1) आश्रयासिद्ध, (2) स्वरूपासिद्ध, (3) व्याप्यत्त्वासिद्ध।

आश्रयासिद्ध हेत्वाभास- ''यस्य हेतोराश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः''। जिस हेतु को आश्रय का ही अभाव होता है उसे आश्रयासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। **उदाहरण-** गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्।

स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास- ''यो हेतुराश्रये नावगम्यते'' (जो हेतु आश्रय में सिद्ध नहीं होता है उसे स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। **उदाहरण-** अनित्यः शब्दः चाक्षुषत्त्वात् घटवत्।

व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास- 'यत्र हेतोर्व्याप्तिर्नावगम्यते' (जहाँ हेतु में व्याप्ति सिद्ध नहीं होती है वह व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। **उदाहरण-** शब्दः क्षणिकः सत्त्वात् क्रन्त्वन्तवर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं, हिंसात्त्वात् क्रतुबाह्यहिंसावत्।

69. यथाक्रमं भावविकारान् योजयत-

A. वर्द्धते **B. विपरिणमते**

C. अस्ति **D. जायते**

समुचितं विकल्प चिनुत-

(a) (D), (C), (B), (A) (b) (A), (B), (C), (D)

(c) (A), (B), (D), (C) (d) (B), (C), (A), (D)

उत्तर-(a)

पद के चार भेद हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात।

''चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च''

नाम- सत्त्वप्रधानानि नामानि।

आख्यात- भावप्रधानम् आख्यातम् अर्थात् जिसमें भावप्रधान होता है वह आख्यात होता है, भाव का अर्थ क्रिया है, क्रिया की उत्पत्ति

से लेकर अवसानपर्यन्त छः भावों को दर्शाते हुए यास्क ने आचार्य वार्ष्यायणि के मत का उल्लेख क्रिया है- **''षड्भावविकारा: भवन्ति इति वार्ष्यायणिः।** अर्थात् क्रिया के छः रूप हैं- (1) जन्म लेना, (2) होना, (3) बदलना, (4) बढ़ना, (5) घटना, (6) नष्ट होना। (जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्द्धते, अपक्षीयते, विनश्यति)।

70. अद्वैतवेदान्तमते अज्ञानमस्ति-

A. भावरूपम् **B. अभावरूपम्**
C. त्रिगुणात्मकम् **D. चिदात्मकम्**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) A, C केवलम् (d) A, D केवलम्

उत्तर-(c)

अद्वैतवेदान्तानुसार अज्ञान की परिभाषा-

''अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति'' अर्थात् अज्ञान ज्ञान का अभाव नहीं अपितु सत् और असत् दोनों से विलक्षण होने से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी तथा भावरूप से 'यत्किञ्चित्' ऐसा कहते हैं।

- समष्टि और व्यष्टि के भेद से अज्ञान दो प्रकार का होता है। यह अज्ञान समष्टि के अभिप्राय से एक है और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है, जैसे समष्टि के अभिप्राय से यह वन है इस प्रकार एकत्व का कथन किया जाता है, या जलबिन्दुओं की समष्टि के अभिप्राय से यह जलाशय है, इस प्रकार एकत्व का कथन किया जाता है। व्यष्टि एक का सूचक है, जेसे- जल की एक बूंद, वृक्ष आदि।
- अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियां हैं।
  - ♦ प्रमाता के सच्चिदानन्दस्वरूप को जो शक्ति ढकती है वह आवरण शक्ति है।
  - ♦ सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत् को उत्पन्न करने वाली शक्ति विक्षेप शक्ति है। यह तमोगुण प्रधान है।

71. मनुस्मृतेः टीकाकारौ स्तः-

A. विज्ञानेश्वरः **B. कुल्लूकभट्टः**
C. मेधातिथिः **D. विश्वरूपः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, C केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) A, D केवलम्

उत्तर-(b)

आचार्यमनु द्वारा रचित 'मनुस्मृति' की गणना विश्व के ऐसे ग्रन्थों में की जाती है, जिनसे मानव ने वैयक्तिक आचरण और समाज रचना के लिए प्रेरणा प्राप्त की है।

मनुस्मृति की प्रमुख टीकाएं-

(1) मेधातिथिकृत भाष्य
(2) कुल्लूकभट्टकृत मन्वर्थमुक्तावली
(3) नारायणकृत मन्वर्थविवृति
(4) राघवानन्दकृत मन्वर्थ चन्द्रिका
(5) नन्दनकृत नन्दिनी टीका
(6) गोविन्दराजकृत मन्वाशयानसारिणी टीका।

- अनेक टीकाएं ऐसी हैं जो अब विलुप्त हो गयी है- जैसे- असहाय, भर्तृयज्ञ, यज्वा, उपाध्याय ऋजु, विष्णुस्वामी, उदयकर, भारुचि, भोजदेव, धरणीधर आदि।

72. नाट्यशास्त्रानुसारं नाट्यमण्डपः कविविधः भवति?

(a) द्विविधः (b) पञ्चविधः
(c) दशविधः (d) त्रिविधः

उत्तर-(d)

नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्यमण्डप तीन प्रकार के होते हैं।

''प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिप्रकारो विधि स्मृतः।
विकृष्टश्चतुरस्त्रश्च त्र्यस्त्रश्चैव प्रयोक्तृभिः।।

प्रयोक्ताओं के द्वारा सभी प्रेक्षागृहों की विधि तीन प्रकार की बतलायी गयी है।

(1) विकृष्ट-आयताकार, (2) चतुरस्त्र-वर्गाकृति, (3) त्र्यस्त्र-त्रिभुजाकृति ।

माप की दृष्टि से भी यह तीन प्रकार का होता है-

(1) ज्येष्ठ, (2) मध्यम, (3) कनीय

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

''ततश्च विश्वकर्माणं ब्रह्मोवाच प्रयत्नतः।
कुरु लक्षणसम्पन्नं नाट्यवेश्म महामते।।

ब्रह्मा ने वास्तुविद्या तत्त्वविद् विश्वकर्मा को बुलाकर कहा कि प्रयत्नपूर्वक सर्वलक्षणसम्पन्न नाट्यगृह की रचना कर दो।

73. निरुक्तग्रन्थस्य टीकाकारौ स्तः-

A. दुर्गाचार्यः **B. गर्गः**
C. स्कन्दस्वामी **D. दररुचिः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, C केवलम् (b) A, B केवलम्
(c) B, C केवलम् (d) C, D केवलम्

उत्तर-(a)

- दुर्गाचार्य महोदय ने निरुक्त पर 'ऋज्वर्थ-वृत्ति' नामक टीका लिखी। इसमें निरुक्त के प्रत्येक शब्द को उद्धृत करके उसकी व्याख्या की गयी है।
- स्कन्दस्वामी का ऋग्वेद पर सर्वाधिक प्राचीन भाष्य प्राप्त होता है। इनका भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक प्राप्त होता है। शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने किया है।

स्कन्दस्वामी ने यास्ककृत निरुक्त पर टीका लिखी है।

- स्कन्दमहेश्वर की टीका लाहौर से प्रकाशित हुई है। ये स्कन्द ऋग्वेद के भाष्यकार भी हैं।
- वररुचि की टीका का नाम 'निरुक्त-निचय' है। इसमें 100 श्लोकों में निरुक्त के सिद्धान्तों की व्याख्या है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- निरुक्त वेद का श्रोत्र (कान) है- ''निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते''।
- निरुक्त के पांच प्रतिपाद्य विषय है- वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातु का अनेक अर्थों में प्रयोग।
- निरुक्त में चार प्रकार के पद हैं- 'नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।

74. अनन्तभट्टविरचितभाष्यस्य नाम किमस्ति?

(a) मातृवेदः (b) स्वरप्रकाशः
(c) पदार्थबोधः (d) पदार्थप्रकाशकः

उत्तर-(d)

अनन्तभट्ट विरचित भाष्य का नाम 'पदार्थप्रकाशक' है। शुक्ल-यजुर्वेद के वाजसनेयि-प्रातिशाख्य के रचयिता महर्षि कात्यायन हैं। यह आठ अध्यायों में विभक्त है। इस प्रातिशाख्य के अनेक सूत्र तथा पारिभाषिक शब्द पाणिनीय व्याकरण में यथावत् प्रयुक्त हुए हैं। इस प्रातिशाख्य पर उव्वट का मातृवेद तथा अनन्तभट्ट का पदार्थ-प्रकाशक भाष्य उपलब्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद प्रातिशाख्य पर उव्वट का भाष्य अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- पुष्पऋषि द्वारा प्रणीत् 'पुष्पसूत्र' सामवेद तथा ऋक्तन्त्र सामवेद की कौथुम शाखा का प्रातिशाख्य है।
- यजुर्वेद का प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ - व्यासशिक्षा, वासिष्ठीशिक्षा भरद्वाज शिक्षा, माण्डव्य शिक्षा।
- सामवेद का प्रमुख शिक्षाग्रन्थ - गौतमी, लोमशी, नारदीय।
- अथर्ववेद का प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ 'माण्डूकी शिक्षा' है।

75. भारतस्य सिंहमूर्तियुतस्य अशोकचिह्नस्य ग्रहणं कुतः?

(a) सारनाथाभिलेखात् (b) गिरनारशिलालेखात्
(c)सोपाराशिलालेखात् (d) ब्रह्मगिरिशिलालेखात्

उत्तर-(a)

भारतस्य सिंहमूर्तियुतस्य अशोकचिह्नस्य सारनाथ अभिलेखात् ग्रहणं। सारनाथ में अशोक ने जो स्तम्भ बनवाया था उसके शीर्ष भाग को 'सिंहचतुर्मुख' कहते हैं। इस मूर्ति में चार भारतीय सिंह पीठ सटाकर खड़े हैं। अशोक स्तम्भ अब भी अपने मूलस्थान पर स्थित है किन्तु उसका यह शीर्ष-भाग सारनाथ (वाराणसी) के संग्रहालय में रखा हुआ है। यह सिंहचतुर्मुख, स्तम्भशीर्ष ही भारत के राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके आधार के मध्यभाग में अशोकचक्र को भारत के राष्ट्रीय ध्वज में बीच की सफेद पट्टी में रखा गया है। अशोक चिह्न भारत का राजकीय प्रतीक है।

- नाला सोपारा (महाराष्ट्र) में सम्राट अशोक का तीसरी सदी में निर्मित स्तूप है। यह स्तूप भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है।
- रूद्रदामन का गिरनार शिलालेख जूनागढ़ के निकट स्थित है। जूनागढ़ शिला पर अशोक के 14 शिलालेख तथा स्कन्दगुप्त के शिलालेख भी हैं।

76. मनुमतानुसारं वर्णितेषु राज्ञः षड्गुणेषु अन्यतमो विद्यते-

(a) जयः (b) पराजयः
(c) विग्रहः (d) आचारः

उत्तर-(c)

''सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च।
द्वैधीभावं संश्रयं च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ मनुस्मृति- 7/160॥

सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव तथा संश्रय इन छः गुणों की राजा को सदैव चिन्ता करनी चाहिए। अपनी बृद्धि और शत्रु की हानि रूप कार्य को देखकर इनका प्रयोग करना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

''क्षत्रियस्य परो धर्मः प्रजानामेव पालनम् ।
निर्दिष्टफलभोक्ता हि राजा धर्मेण युज्यते ॥

प्रजाओं का पालन ही क्षत्रियों का श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि प्रजापालन द्वारा शास्त्रोक्त फल को भोगने वाला राजा धर्म से युक्त होता है।

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति ।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ॥ 7.18 ॥

दण्ड सब पर राज्य करता है, सबकी रक्षा करता है, यह न्याय के रक्षकों के सो जाने पर भी जगा रहता है। बुद्धिमान लोग इसको धर्म कहते हैं।

77. निम्नलिखितेषु शब्दप्रादुर्भावस्योदाहरणमस्ति-

(a) अनुविष्णु (b) इतिहरि
(c) अतिनिद्रम् (d) अनुरूपम्

उत्तर-(b)

इतिहरि (हरिनाम की प्रसिद्धि) यह उदाहरण 'शब्दप्रादुर्भाव' का उदाहरण है।

सामासिक पद	अर्थ	लौकिक-विग्रह	अलौकिक-विग्रह
अनुविष्णु	विष्णु के पीछे ('पश्चात्' अर्थ में प्रयुक्त हुआ है)	विष्णोः पश्चात्	विष्णु ङस् अनु
अतिनिद्रम्	निद्रा इस समय उचित नही है। ('असम्प्रति' इस समय उचित नहीं इस अर्थ में प्रयुक्त है)	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा ङस् अति

इतिहरि	हरि नाम की प्रसिद्धि 'शब्दप्रादुर्भाव' (नाम की प्रसिद्धि अर्थ में प्रयुक्त हुआ है)	हरिः शब्दस्य प्रकाशः	हरि ङस् इति
अनुरुपम्	रूप के योग्य 'यथा' के योग्यता अर्थ में समास हुआ है।	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु

78. त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो भवज्ज्वलितम् ।
आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः ॥
इत्यत्र कोऽलङ्कारः ?

(a) उत्प्रेक्षा (b) समासोक्तिः
(c) दृष्टान्तः (d) निदर्शना

उत्तर-(c)

दृष्टान्त अलङ्कार का लक्षण- ''दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्'। दृष्टान्त वह अलङ्कार है जिसमें उपमेयवाक्य और उपमानवाक्य दोनों वाक्यों में इन सब (उपमान, उपमेय तथा साधारणधर्म) का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव झलकता है। यह दो प्रकार का होता है-

(1) साधर्म्य से दृष्टान्त, (2) वैधर्म्य से दृष्टान्त ।

साधर्म्य से दृष्टान्त का उदाहरण-

''त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनोभवज्ज्वलितम् ।
आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः ॥

अर्थात् कामदेव से संतप्त उस (नायिका) का मन तुम्हारे दर्शन मात्र से शान्त हो जाता है जैसे चन्द्र को देखने मात्र से कुमुदिनी का पुष्प विकसित हो जाता है।

उपर्युक्त उदाहरण नायक- चन्द्र, नायिका-कुमुदिनी, मन-कुसुम, मनोभवसंतप्त- सूर्यकिरणदग्ध, तथा प्रसन्नता-विकास में बिम्बप्रतिबिम्ब भाव झलकता है। तथा 'आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः' रूपी दृष्टान्त कथन भी है।

79. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः इति रससूत्रे प्रयुक्तस्य 'निष्पत्ति'-शब्दस्य उत्पत्तिरित्यर्थः अधोलिखितेषु केन स्वीकृतः ?

(a) भट्टनायेकन (b) शङ्कुकेन
(c) भट्टलोल्लटेन (d) अभिनवगुप्तेन

उत्तर-(c)

''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'' भरतसूत्र में आये हुए ''निष्पत्ति'' पद का तीन अर्थ निकलता है।
आचार्य भट्टलोल्लट के अनुसार तीन अर्थ इस प्रकार हैं- विभाव के साथ स्थायीभाव का संयोग अर्थात् उत्पाद्य-उत्पादक-भाव सम्बन्ध होने पर रस की निष्पत्ति अर्थात् 'उत्पत्ति' होती है। यहाँ निष्पत्ति शब्द का अर्थ उत्पत्ति होता है। अनुभावों के साथ 'संयोग' अर्थात् गम्य-गमक-भाव-सम्बन्ध होने पर रस की 'निष्पत्ति' अर्थात् 'प्रतीति' होती है। यहाँ 'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ 'प्रतीति' होता है, व्यभिचारीभावों के साथ पोष्य-पोषक-भावसम्बन्ध होने से रस की निष्पत्ति अर्थात् 'पुष्टि' होती है। यहाँ 'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ 'पुष्टि' होता है।

80. यथोचितं मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
A. परोक्षकृताः	I. अहं धनानि संजयामि शाश्वतः।
B. प्रत्यक्षकृताः	II. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचम्।
C. आध्यात्मिक्यः	III. इन्द्राय साम गायत।
D. अथापि स्तुतिरेव भवति नाशीर्वादः	IV. कण्वा अभि प्रगायत।

(a) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
(b) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
(c) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)
(d) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)

उत्तर-(a)

ऋचाएं (मन्त्र) तीन प्रकार की होती हैं-

(1) परोक्षकृता, (2) प्रत्यक्षकृता, (3) आध्यात्मिक

(1) **परोक्षकृताः -** 'सर्वाभिः नामविभक्तिभिः युज्यन्ते, प्रथमपुरुषैश्च आख्यातस्य'। परोक्षतः कही गयी ऋचाएं नाम की सभी विभक्तियों में तथा क्रिया प्रथम (अन्य) पुरुष में रहती हैं। **जैसे-** इन्द्राय साम गायत (इन्द्र के लिए साम गाओ)।

(2) **प्रत्यक्षकृता-** 'अथ प्रत्यक्षताः मध्यमपुरूषयोगाः। त्वमिति च एतेन सर्वनाम्ना'। प्रत्यक्षतः कही गयी ऋचाएं मध्यम पुरूष में होती हैं। 'तुम' सर्वनाम से संयुक्त रहती है। जैसे- कण्वा अभि प्र-गायत (हे! कण्ववंश वाले गाओ)।

(3) **आध्यात्मिक्यः-** 'अथ आध्यात्मिक्यः उत्तमपुरूषयोगाः, अहमिति च एतेन सर्वनाम्ना'। स्वयं कही गयी ऋचाएं उत्तमपुरूष में होती हैं, 'मैं' सर्वनाम से यह संयुक्त रहती है। जैसे- 'इन्द्रो वैकुण्ठः' से आरम्भ होने वाला सूक्त है।

81. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत।
अभिकथनम् (I) : कलञ्जं न भक्षयेत् इति नित्यकर्म।
अभिकथनम् (II) : स्वर्गकामो यजेत् इति नैमित्तिककर्म।
उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) उभये (I) & (II) कथने सत्ये स्तः।
(b) उभये (I) & (II) कथने असत्ये स्तः।
(c) प्रथमं कथनम् (I) सत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् (II) असत्यम् अस्ति।
(d) प्रथमं कथनम् (I) असत्यं किन्तु द्वितीयं कथनम् (II) सत्यम् अस्ति।

उत्तर-(b)

वेदान्तसार के अनुसार अधिकारी का लक्षण- ''अधिकारी तु विधिवदधीतवेद- वेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरस्सरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तो-पासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।

- 'नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि (जिसके न करने से भविष्य में दुःख की सम्भावना हो, ऐसे सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म कहलाते हैं।
- 'नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि' (पुत्र जन्मादि के अवसर पर किए जाने वाले जातेष्टि यज्ञ आदि नैमित्तिक कर्म है)।
- 'प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि' (पाप के क्षय करने के लिए साधन बनने वाले चान्द्रायणादि व्रत प्रायश्चित्त कर्म हैं।)
- 'उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानस व्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि' सगुण ब्रह्म को विषय बनाने वाला मानसिक व्यापार ध्यान ही जिनका स्वरूप है उन शाण्डिल्यविद्या आदि को उपासनाकर्म कहते है।)

प्रश्न में दोनों कथन सत्य है।

82. न्यायमतानुसारं प्रमेयेषु परिगणितौ स्तः-

A. आत्मा   **B. संशयः**

C. तर्कः   **D. बुद्धिः**

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, D केवलम्   (b) A, B केवलम्

(c) A, C केवलम्   (d) B, C केवलम्

उत्तर-(a)

न्यायमतानुसार प्रमेय के अन्तर्गत 'आत्मा एवं बुद्धि' परिगणित होते हैं।

न्याय के अनुसार 16 पदार्थ होते हैं- (1) प्रमाण, (2) प्रमेय, (3) संशय, (4) प्रयोजन, (5) दृष्टान्त, (6) सिद्धान्त, (7) अवयव, (8) तर्क, (9) निर्णय, (10) वाद, (11) जल्प, (12) वितण्डा, (13) हेत्वाभास, (14) छल, (15) जाति, (16) निग्रहस्थान।

प्रमाण- ''प्रमाणकरणं प्रमाणम्'' (प्रमा का करण प्रमाण है)।

- **प्रमेय -** प्रमा का विषय प्रमेय होता है। जिसके ज्ञान से निश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति में सहायता प्राप्त होती है।
  प्रमेय बारह हैं- (1) आत्मा, (2) शरीर, (3) इन्द्रिय, (4) अर्थ, (5) बुद्धि, (6) मन, (7) प्रवृत्ति, (8) दोष, (9) प्रेत्यभाव, (10) फल, (11) दुःख, (12) अपवर्ग।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

प्रमा- 'प्रमाकरणं प्रमाणम् ' (प्रमा का करण प्रमाण है)।

करण - 'साधकतमं करणम्' (साधकतम को करण कहते हैं)।

कारण के तीन भेद हैं- समवायि, असमवायि, निमित्तकारण।

83. यथोचितं मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
A. प्रमाणसमुच्चयः	I. धर्मकीर्तिः
B. प्रमाणवार्त्तिकम्	II. दिङ्नागः
C. माध्यमिककारिका	III. शान्तरक्षितः
D. तत्त्वसङ्ग्रहः	IV. नागार्जुनः

(a) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(II)

(b) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

(c) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

(d) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(II)

उत्तर-(b)

- बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग द्वारा **'प्रमाणसमुच्चय'** की रचना की गयी इसका मूल संस्कृत ग्रन्थ अप्राप्य है, केवल इसका तिब्बती अनुवाद मिलता है। इस पर आचार्य जिनेन्द्रबुद्धि की टीका प्राप्त होती है।
  प्रमाणसमुच्चय में कुल छः परिच्छेद है।
- आचार्य धर्मकीर्ति भारतीय दार्शनिक तर्कशास्त्र के संस्थापकों में से प्रमुख रूप से थे। बौद्ध परमाणुवाद के मूल सिद्धान्तकारों में इनकी गणना की जाती है। इनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ **'प्रमाणवार्तिक'** है।
- नागार्जुन शून्यवाद के प्रतिष्ठापक आचार्य एवं माध्यमिक मत के प्रख्यात बौद्धाचार्य थे। इनकी प्रमुख रचना **'माध्यमिक कारिका'** है।
- शान्तरक्षित 8 वीं सदी के भारतीय बौद्ध ब्राह्मण तथा नालन्दा के मठाधीश थे। शान्तरक्षित ने योगाचार-सौतान्त्रिक- माध्यमिक दर्शन का प्रवर्तन किया, जिससे नागार्जुन के माध्यमिक सम्प्रदाय, असङ्ग के योगाचार सम्प्रदाय तथा धर्मकीर्ति के सिद्धान्तों का एकीकरण किया। इनका एकमात्र ग्रन्थ **'तत्त्वसङ्ग्रह'** उपलब्ध है।

84. यथोचितं मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
A. ज्ञानम्	I. वचनमात्रे
B. तटी	II. परिमाणमात्रे
C. द्रोणो व्रीहिः	III. लिङ्गमात्राद्याधिक्यो
D. बहवः	IV. प्रातिपदिकार्थमात्रे

(a) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(II)
(b) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)
(c) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)
(d) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

उत्तर-(b)

''प्रातिपदिकार्थलिङ्ग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा''

प्रातिपदिकार्थमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र तथा वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रातिपदिकार्थ मात्र का उदाहरण- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः तथा ज्ञानम् इन सभी उदाहरणों में प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा विभक्ति हुई। **उच्चैः और नीचैः** अव्यय होने के कारण अलिङ्ग शब्द है तथा **कृष्णः (पु.), श्रीः (स्त्री), ज्ञानम् (नपु.) नियतलिङ्ग शब्द** है। अलिङ्ग एवं नियतलिङ्ग शब्द ही प्रातिपदिकार्थमात्र के उदाहरण होते हैं।

लिङ्गमात्र का उदाहरण- केवल अनियतलिङ्ग शब्द ही लिङ्गमात्राधिक्य के उदाहरण हैं- यथा- **तटः, तटी, तटम्** ।

परिमाणमात्र का उदाहरण- 'द्रोणो व्रीहिः' (द्रोण परिमाण भर धान)- यहाँ द्रोण शब्द से परिमाण अर्थ में प्रथमा विभक्ति हुई है।

वचनमात्र का उदाहरण- वचन का अर्थ है संख्या, संख्यावाचक शब्द से संख्या अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। उदाहरण- एकः, द्वौ, बहवः ।

85. अधस्तनेषु रामायणाश्रिते महाकाव्ये स्तः-

A. सेतुबन्धः
B. किरातार्जुनीयम्
C. भट्टिकाव्यम्
D. नैषधीयचरितम्

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B, C केवलम् (b) A, D केवलम्
(c) A, C केवलम् (d) C, D केवलम्

उत्तर-(c)

- आचार्य प्रवरसेन द्वारा रचित 'सेतुबन्ध' प्राकृतभाषा का महाकाव्य है। इसका उपजीव्य वाल्मीकिकृत रामायण है। इसमें 15 आश्वास (काण्ड) है। इसका प्रारम्भ शरद ऋतु के वर्णन से हुआ है।
- भट्टिकाव्य, महाकवि भट्टि द्वारा विरचित महाकाव्य है। इसका वास्तविक नाम 'रावणवध' है। इसमें 22 सर्ग एवं 1624 श्लोक हैं। इसमें राम के जन्म से लेकर लंका-विजय तथा राम-राज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है। यह 4 भागों में विभक्त है-

(1) **प्रकीर्णकाण्ड-** इसमें रामजी के जन्म से लेकर सीताहरण तक की कथा है।
(2) **अधिकारकाण्ड-** इसमें बालि-वध, सुग्रीव-राज्याभिषेक, अशोक वनदाह, हनुमान-निग्रह आदि का वर्णन है।
(3) **प्रसन्नकाण्ड-** इसमें सीताभिज्ञान-दर्शन, विभीषण आगमन, सेतुबन्धादि का वर्णन है।
(4) **तिङन्तकाण्ड-** इसमें युद्ध, रावणवध, विभीषण राज्याभिषेक एवं राम-राज्याभिषेक का वर्णन है।

86. संस्कृतस्य 'शतम्' इति पदस्य कृते 'सतम्' इति पदं कस्यां भाषायां प्रयुज्यते?

(a) ग्रीकभाषायाम् (b) फारसीभाषायाम्
(c) ईरानीभाषायाम् (d) अवेस्ताभाषायाम्

उत्तर-(d)

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है- (1) केन्टुम् वर्ग (2) शतम् वर्ग (सतम्) 1870 में यह मत प्रो. अस्कोली ने दिया।

- भारोपीय परिवार को शतम् और केन्टुम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार विभाजित किया गया है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
भारत-ईरानी	ग्रीक
बाल्टो-स्लाविक	केल्टिक
आर्मीनी	जर्मानिक
अल्बानी	इटालिक
	हिट्टाइट
	तोखारी

87. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञा कस्य भवति?

(a) यकारस्य (b) मकारस्य
(c) चकारस्य (d) दकारस्य

उत्तर-(b)

ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसार मकार की रक्तसञ्ज्ञा होती है।

रक्तसञ्ज्ञा- 'रक्तसञ्ज्ञोऽनुनासिकः' (अनुनासिक वर्ण रक्तसञ्ज्ञक होते हैं)। उदाहरण- ङ् , ञ् , ण् , न् , म् ।

ऋग्वेदप्रातिशाख्य महर्षि शौनक की कृति है। इसमें 18 पटल हैं। इस प्रातिशाख्य में सञ्ज्ञा, परिभाषा, स्वर, सन्धि, उच्चारणदोष आदि का वर्णन है।

सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञा- 'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि' (बाद के चार अक्षर सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञक होते हैं- ए, ओ, ऐ, औ ।

समानाक्षर सञ्ज्ञा- 'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः (अर्थात् प्रारम्भ के आठ अक्षर समानाक्षर सञ्ज्ञक होते हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ ।

सोष्म सञ्ज्ञा- 'युग्मौ सोष्माणौ' अर्थात् प्रत्येक वर्ग में सम वर्ण सोष्म सञ्ज्ञक होते हैं- खघ, छझ, ठढ, थध, फभ।

अघोष सञ्ज्ञा- 'अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः' अर्थात् ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष सञ्ज्ञक होते हैं- श, ष, स, अः, ᳵ क, ᳵ प, अं ।

88. निम्नलिखितेषु कुन्तकानुसारं वक्रतायाः भेदौ न भवतः-

A. प्रकरणवक्रता

B. रसवक्रता

C. वाक्यवक्रता

D. अर्थविन्यासवक्रता

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, C केवलम् (b) B, D केवलम्

(c) C, B केवलम् (d) D, A केवलम्

उत्तर-(b)

आचार्य कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति के छः भेद हैं। इन्होंने विचित्र अभिधा को ही वक्रोक्ति माना है तथा इनकी प्रमुख कृति 'वक्रोक्तिजीवितम्' है।

वक्रोक्ति के छः भेद क्रमशः हैं-

(1) **वर्णविन्यास वक्रता-** वक्रोक्ति की इस वक्रता का सम्बन्ध वर्ण-विन्यास अर्थात् वर्णों को विशेष क्रम में रखने से है। जब एक, दो या कई वर्ण कुछ अन्तराल के पश्चात् उसी रूप में रखें जाएं तो यह वक्रता होती है।

(2) **पदपूर्वार्धवक्रता-** इस वक्रता को प्रकृति वक्रता भी कहते हैं क्योंकि पदपूर्वार्द्धवक्रता में प्रतिपादित या धातु का प्रयोग होता है। इस वक्रता में व्याकरण से सम्बन्धित प्रयोगों का चमत्कार घटित होता है।

(3) **पद-परार्द्ध वक्रता-** इसमें पदों के उत्तरार्द्ध का वैचित्र्य होता है।

(4) **वाक्य-वक्रता-** वर्ण्यवस्तु के चमत्कारपूर्ण वर्णन को वाक्यवक्रता कहते हैं।

(5) **प्रकरण-वक्रता -** प्रबन्ध के एक अंश या एक प्रसङ्ग को प्रकरण कहते हैं।

(6) **प्रबन्ध-वक्रता-** वक्रोक्ति के समस्त प्रकारों में प्रबन्ध वक्रता सर्वाधिक विशिष्ट है। इस वक्रता का सम्बन्ध सम्पूर्ण प्रबन्ध के सौन्दर्य एवं प्रभाव से होता है।
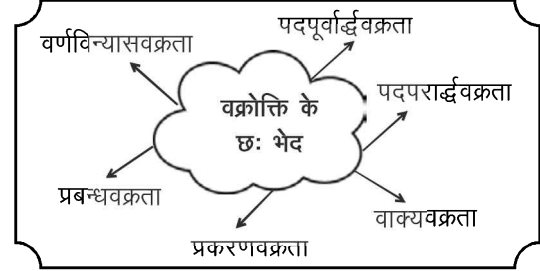
89. अधस्तनेषु समुचितसिद्धान्तौ स्तः-

A. काव्यस्य प्रयोजनं नैतिकसुधारः शिक्षा च - लॉन्जाइनस

B. काव्यस्य प्रयोजनद्वयं ज्ञानार्जनम् आनन्दश्च - अरस्तू

C. सत्यस्य पञ्चभेदाः - अरस्तू

D. उत्कृष्टाभिव्यक्तेः सशक्तमाध्यमः उत्कृष्टविचार एव - लॉन्जाइनस

उपर्युक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, D केवलम् (b) C, D केवलम्

(c) B, D केवलम् (d) A, C केवलम्

उत्तर-(c)

पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों में अरस्तू ने 'विरेचन सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया। ये सौन्दर्यवादी थे। इनके अनुसार काव्य का प्रयोजन शिक्षा या ज्ञानार्जन एवं आनन्द है। 'विरेचन सिद्धान्त' के अनुसार गम्भीर कार्यों की सफल और प्रभावशाली अनुकृति वर्णन के रूप में न होकर कार्यों के रूप में होती है, जिसमें करुणा एवं भय उत्पन्न करने वाली घटनाएँ होती है। जो इन भावों के विरेचन द्वारा एक राहत और आनन्द प्रदान करती है।

- लान्जाइनस महोदय ने अपने ग्रन्थ 'पेरिइप्सुस' में काव्य प्रयोजन के विषय में बतलाया है जिसमें उन्होंने कहा कि काव्य, वाणी का ऐसा वैशिष्ट्य है, जिससे महान कवियों को जीवन में प्रतिष्ठा और यश मिलता है, कारण यह है कि उसका सृजन पाठक को मात्र जागृत करने के लिए नहीं होता, बल्कि उसके मन में आह्लाद् उत्पन्न करने में सक्षम होता है। इन्होंने काव्य में उदात्ततत्त्व की बात की थी।

90. यथोचितं मेलनं कुरूत-

सूची I	सूची II
A. नागानन्दम्	I. आख्यायिका
B. विक्रमोर्वशीयम्	II. प्रकरणम्
C. हर्षचरितम्	III. नाटकम्
D. मृच्छकटिकम्	IV. त्रोटकम्

(a) (A)–(I),(B)–(II),(C)–(III),(D)–(IV)
(b) (A)–(III),(B)–(IV),(C)–(I),(D)–(II)
(c) (A)–(II),(B)–(I),(C)–(III),(D)–(IV)
(d) (A)–(I),(B)–(II),(C)–(IV),(D)–(III)

उत्तर-(b)

(A) ● नागानन्द पांच अङ्कों का नाटक है। इसमें जामूतवाहन नामक विद्याधर राजकुमार का अपनी बलि देकर शंखचूड़ नामक सर्प को गरुड़ से बचाने का वर्णन है।

हर्ष की अन्य प्रसिद्ध रचनाएं क्रमशः है- प्रियदर्शिका एवं रत्नावली

- महाकवि कालिदास द्वारा विरचित 'विक्रमोर्वशीयम्' नामक त्रोटक 5 अङ्कों का उपरूपक है। इस उपरूपक में राजा पुरूरवा और उर्वशी नामक अप्सरा की प्रणय-कथा वर्णित है।
- महाकवि बाणभट्ट द्वारा विरचित **'हर्षचरितम्'** नामक गद्यकाव्य ऐतिहासिक वृत्त पर आश्रित 8 उच्छ्वासों में विभक्त 'आख्यायिका' है।
- राजा शूद्रक द्वारा विरचित '**मृच्छकटिकम्**' नामक उपरूपक में 10 अङ्क है।

मृच्छकटिकम् के 10 अङ्क-

- अलङ्कारन्यास
- द्यूतकर-संवाहक
- संधिच्छेद
- मदनिका-शर्विलक
- दुर्दिन
- प्रवहण-विपर्यय
- आर्यकापहरण
- वसन्तसेना-मोटन
- व्यवहार
- संहार

हर्षचरितम् की कथावस्तु-

प्रथम उच्छ्वास - वंश परिचय
द्वितीय उच्छ्वास- ग्रीष्म की प्रखरता एवं राजद्वार का वर्णन
तृतीय उच्छ्वास- बाण के द्वारा हर्ष का चरित्र वर्णन
चतुर्थ उच्छ्वास- राजा प्रभाकरवर्धन और रानी यशोमती का स्वप्न वर्णन तथा राज्यश्री का विवाह गृहवर्मा से।
पंचम् उच्छ्वास- विजय हेतु प्रस्थान, प्रभाकर का दिवंगत होना।
षष्ठ उच्छ्वास- राज्यवर्धन का हूण विजय।
सप्तम् उच्छ्वास- सेना प्रस्थान।
अष्टम् उच्छ्वास- विन्ध्याटवी तथा दिवाकरमित्र के आश्रम का सुंदर चित्रण।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा अधस्तनप्रश्नस्य उत्तरं देयम्-

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरतिदूरम् आत्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः। इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्तेयमुपभोग-मृगतृष्णिका नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु। भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव राजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेन उपदेशगुणाः।

91. प्रकृतिः कमतिदूरम् अपहरति?

(a) शुष्कपत्रम् (b) रजः
(c) पुरुषम् (d) रजोभ्रान्तिम्

उत्तर-(c)

प्रकृतिः पुरूषम् अतिदूरम् अपहरति''
जवानी के समय रजोगुण से उत्पन्न भ्रान्ति वाली प्रकृति, पुरूष को उसी प्रकार अपनी इच्छा से अत्यन्त दूर खींच ले जाती है, जैसे- वात्या (बवंडर) सूखे पत्ते को उड़ा ले जाती है।

92. 'मधुरतराण्यापतन्ति' इत्यत्र 'आपतन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति?

(a) सलिलानि (b) विषयस्वरूपाणि
(c) मधुरतराणि (d) आस्वाद्यमानानि

उत्तर-(b)

''मधुरतराण्यापतन्ति'' इत्यत्र 'आपतन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं 'विषयस्वरूपाणि' अस्ति।
नवयौवन द्वारा परिवर्त्तित मन को जल की भाँति वे ही योग्य वस्तुएँ आस्वादित होने पर मधुर प्रतीत होता है।

93. 'दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः' इत्यत्र उन्मार्गप्रवर्तकः कः?

(a) उपदेशः (b) कालः
(c) पुरुषः (d) अत्यधिकानुरागः

उत्तर-(d)

''दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्त्तकः'' इत्यत्र उन्मार्गप्रवर्त्तकः अत्यधिकानुरागः। ''नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्त्तकः पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु''। दिग्भ्रम की तरह कुपथ पर चलाने वाली विषयों की अत्यन्त आसक्ति मनुष्य को विनष्ट कर देती है।

94. 'अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव' इत्यत्र कोऽलङ्कारो वर्तते?

(a) रूपकम् (b) यमकम्
(c) उपमा (d) दृष्टान्तः

उत्तर-(c)

''अपगतमले हि मनसि सफटिकमणाविव'' इत्यत्र उपमालङ्कारौ वर्तते। उपदेश के गुण निर्मल अन्तःकरण में उसी तरह अनायास प्रवेश करते हैं जैसे- स्फटिक मणि से सूर्य की किरणें।
उपमालङ्कार का लक्षण- ''साधर्म्यमुपमा भेदे''। जहां पर उपमान और उपमेय में भेद होने पर भी उनमें कुछ साधर्म्य (समानता) कही जाती है वह उपमा कहलाती है।

95. यौवनारम्भे यूनां दृष्टिः प्रायः कीदृशी भवति?

(a) रागयुक्ता (b) कालुष्ययुक्ता
(c) अनुज्झिता (d) धवला

उत्तर-(a)

''यौवनारम्भे यूनां दृष्टिः प्रायः रागयुक्ता भवति''।
''अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः''। युवकों की दृष्टि स्वच्छता का त्याग न करने पर भी राग से युक्त ही रहती है।

- उपर्युक्त यह परिच्छेद बाणभट्टकृत कादम्बरीकथामुखम् के 'शुकनासोपदेश' नामक प्रकरण से उद्धृत है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा अधस्तनप्रश्नस्य उत्तरं देयम्- अनुमितौ व्याप्तिज्ञानं करणं, परामर्शो व्यापारः। तथाहि येन पुरुषेण महानसादौ धूमे वह्नेर्व्याप्तिर्गृहीता, पश्चात् स एव पुरुषः कचित् पर्वतादावविच्छिन्नमूलां धूमरेखां पश्यति, तदनन्तरं 'धूमो वह्निव्याप्त' इत्येवं रूपं व्याप्तिस्मरणं तस्य भवति, पश्चाच्च वह्निव्याप्यधूमवानयमिति ज्ञानं, स एव परामर्श इत्युच्यते। तदनन्तरं पर्वतो वह्निमानित्यनुमितिर्जायते। अत्र प्राचीनास्तु व्याप्यत्वेन ज्ञायमानं लिङ्गमनुमितिकरणमिति वदन्ति, तद्दूषयति- ज्ञायमानमिति। लिङ्गस्यानुमित्यकरणत्वे युक्तिमाह-अनागतादीति। यद्यनुमितौ लिङ्गं करणं स्यात्, तदाऽनागतेन लिङ्गेन, विनष्टेन, चाऽनुमितिर्न स्यात्, अनुमितिकरणस्य लिङ्गस्य तदानीमभवादिति।

96. पर्वतो वह्निमानिति ज्ञानं कथ्यते-

(a) अनुमितिः (b) उपमितिः
(c) अनुपलब्धिः (d) व्याप्तिः

उत्तर-(a)

''पर्वतो वह्निमानिति ज्ञानं अनुमितिः''
पर्वत अग्निमान् है यह ज्ञान अनुमिति है।
जिससे अनुमिति की जाती है उसे अनुमान कहते हैं। लिङ्ग परामर्श से अनुमिति की जाती है अतः लिङ्ग परामर्श अनुमान है।
लिङ्ग परामर्श- धूमादि का ज्ञान। अग्नि का ज्ञान अनुमिति है तथा धूमादि का ज्ञान उस अनुमिति का कारण है।

97. अनुमितौ व्याप्तिज्ञानं भवति-

(a) व्यापारः (b) फलम्
(c) करणम् (d) लिङ्गम्

उत्तर-(c)

''अनुमितौ व्याप्तिज्ञानं 'करणम्', परामर्शो व्यापारः।
व्याप्तिः- साहचर्य नियमो व्याप्तिः साहचर्य साथ-साथ रहना नियम को व्याप्ति कहते हैं। जैसे- यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र वह्निः (जहां-जहां धुँआ है वहां-वहां अग्नि है।
परामर्शः- 'तस्य तृतीयज्ञानं परामर्शः' उसके (लिङ्ग) के तृतीय ज्ञान को परामर्श कहते हैं।

98. अनुमितौ कः व्यापारः?

(a) पक्षधर्मताज्ञानम् (b) व्याप्तिज्ञानम्
(c) परामर्श (d) व्याप्तिस्मरणम्

उत्तर-(c)

''अनुमितौ व्याप्तिज्ञानं 'करणम्', परामर्शो व्यापारः।
व्याप्तिः- साहचर्य नियमो व्याप्तिः। साहचर्य (साथ-साथ) रहना नियम को व्याप्ति कहते हैं। जैसे- यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र वह्निः जहां-जहां धुँआ है वहां-वहां अग्नि है।
परामर्शः- 'तस्य तृतीयज्ञानं परामर्शः' (उसके (लिङ्ग) के तृतीय ज्ञान को परामर्श कहते हैं।

99. परामर्शस्य स्वरूपमस्ति-

(a) 'वह्निव्यापकधूमवानयम्' इति ज्ञानम्
(b) 'धूमव्यापकवह्निमानयम्' इति ज्ञानम्
(c) 'वह्निव्याप्यधूमवानयम्' इति ज्ञानम्
(d) 'धूमव्याप्यवह्निमानयम्' इति ज्ञानम्

उत्तर-(c)

''वह्निव्याप्यधूमवानयमिति ज्ञानं परामर्श इप्युच्यते''।
कोई व्यक्ति स्वयं ही पाकशाला में धूम और अग्नि को साथ देखकर उनके साहचर्य का निश्चय करके, पर्वत के समीप जाकर धूम रेखा को देखता है तो उसका संस्कार उद्बुद्ध हो जाता है ओर वह 'जहां धूम होता है वहां अग्नि होती है' इस व्याप्ति का स्मरण करता है तदन्तर यहां भी धूम है यह परामर्श करता है। इस (लिङ्गपरामर्श) से यहाँ पर्वत में भी अग्नि है।

100. व्याप्तिस्मरणस्य स्वरूपं भवति-

(a) पर्वते वह्निः (b) पर्वतो वह्निमान्
(c) पर्वतो धूमवान् (d) धूमो वह्निव्याप्यः

उत्तर-(d)

''धूमो वह्निव्याप्य' इत्येव रूपं व्याप्तिस्मरणं भवति।
- व्याप्तिस्मरण का स्वरूप है- धूम वह्निव्याप्य है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Mar. 2022
संस्कृत
व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'येन स्वः स्तमितं येन नाकः' मन्त्रांशोऽयं कस्मात् सूक्तात् _____?

(a) इन्द्रसूक्तात् (b) प्रजापतिसूक्तात्
(c) विष्णुसूक्तात् (d) अग्निसूक्तात्

उत्तर-(b)

''येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

जिस हिरण्यगर्भ प्रजापति ने द्युलोक को ऊपर उठाया हुआ है तथा पृथिवी को स्थिर कर दिया है, जिसने स्वर्गलोक को ऊपर थामा हुआ है एवं सूर्य को ऊपर अन्तरिक्ष में थामा है, जो आकाश में जलों को बनाने वाला है, सुखस्वरूप अथवा 'क' संज्ञक दिव्य गुण सम्पन्न उस हिरण्यगर्भ प्रजापति का हम हवि के द्वारा पूजन करते हैं।

उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के दशवें मण्डल के 121 वें सूक्त हिरण्यगर्भ (प्रजापति सूक्त) से उद्धृत् है। इस सूक्त के देवता 'क संज्ञक प्रजापति' हैं।

2. अधोलिखितेषु किं सन्ध्यक्षरम्?

(a) इ (b) उ
(c) ओ (d) ऌ

उत्तर-(c)

सन्ध्यक्षर- चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्ताराणि (चार अक्षर सन्ध्यक्षर है- ए, ओ, ऐ औ)।

समानाक्षर- ''अष्टौ समानाक्षराण्यादितः'' (आदि के आठ अक्षर समानाक्षर होते है- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ)

''ह्रस्व स्वरस्य उच्चारणकालः - मात्रा ह्रस्वः'' (ह्रस्व स्वर का उच्चारण काल एक मात्रा काल वाला होता है। जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ।)

''दीर्घस्वरस्य उच्चारणकालः- द्वे दीर्घः''। (दीर्घ स्वर वर्ण दो मात्रा काल वाला कहा जाता है। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ, ॠ ।)

''प्लुतस्य स्वरसंज्ञा उच्चारणकालः- ''त्रिम्रः प्लुत उच्यते स्वरः'' (प्लुत स्वर वर्ण तीन मात्रा काल वाला होता है।)

संयोगसंज्ञा- ''संयोगस्तु व्यञ्जनसन्निपातः'' व्यञ्जन वर्णों का मेल सन्निपात संयोग कहलाता है। जैसे- कात्स्र्यायन।

रक्तसंज्ञा- ''रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः'', अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक होते हैं। जैसे- ङञणनमाः।

3. उदकं कस्मात् ?

(a) नदतीति सतः (b) उनत्तीति सतः
(c) उदयतीति सतः (d) उपतिष्ठतीति सतः

उत्तर-(b)

उदक- ''उदकं उनत्तीति सतः''। $\sqrt{}$ उद् धातु तथा 'क्वुन्' प्रत्यय से उदक् शब्द की निष्पत्ति होती है। यह गीला करता है इसीलिए उदक कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण शब्दों की व्युत्पत्तियां -
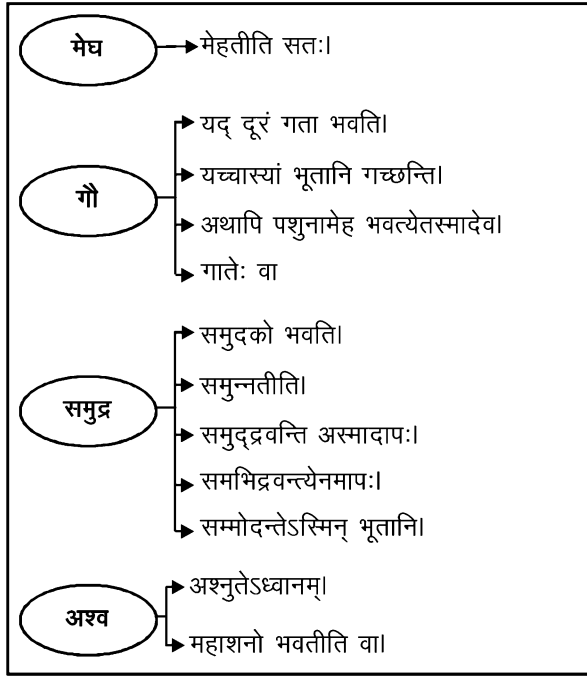
4. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं व्यञ्जनसंनिपातः' कः?

(a) सन्धिः (b) अनुनासिकः

(c) संयोगः (d) लोपः

उत्तर-(c)

''संयोगस्तु व्यञ्जनसंनिपातः''। वर्णों का मेल संयोग कहलाता है। जैसे- ''प्रप्रवस्त्रिष्टुभमिषम् ।

संयोग- संज्ञा का प्रयोजन 'स्वर' या 'अनुस्वार' से अव्यवहित बाद में आने वाले संयोग का प्रथम वर्ण द्वित्व को प्राप्त करता है।

प्रगृह्य संज्ञा- ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः, सम्बोधन (आमंत्रित) से उत्पन्न ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है।

रेफि संज्ञा- 'ऊष्मः रेफि पद्यमो नामिपूर्व' । नामि पूर्व में हो तो पद्यम 'ऊष्म' रेफिन् संज्ञक होता है।

अघोष संज्ञा- 'अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः। ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष होते हैं। यथा- श, ष, स, अः, क ᳵप ᳶ, अं।

5. कुन्तकानुसारं कविव्यापारवक्रत्वभेदाः सन्ति-

(a) चत्वारः (b) पञ्च

(c) षट् (d) अष्ट

उत्तर-(c)

वक्रोक्ति का अर्थ है- वह उक्ति जिसमें वक्रता हो।

वक्रता का शब्दिक अर्थ है- टेढ़ापन, असामान्य, विचित्र।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक आचार्य कुंतक ने वक्रता का अर्थ 'प्रसिद्ध कथन से भिन्न' अर्थात् 'असामान्य' से किया है। इन्होंने 10 वीं शताब्दी में अपने मत की स्थापना करते हुए 'वक्रोक्ति जीवितम्' की रचना की ।

आचार्य कुंतक ने वक्रोक्ति के छः भेद किये हैं- (1) वर्ण विन्यास वक्रता, (2) पदपूर्वार्द्ध वक्रता, (3) पदपरार्द्ध वक्रता, (4) वाक्य वक्रता, (5) प्रकरण वक्रता, (6) प्रबन्ध वक्रता ।

वक्रोक्ति के छः भेद
- वर्णविन्यास वक्रता
- पदपूर्वार्द्ध वक्रता
- पदपरार्द्ध वक्रता
- वाक्य वक्रता
- प्रकरण वक्रता
- प्रबन्ध वक्रता

6. शाकटायनस्य मतम् अस्ति-

(a) उच्चावचाः पदार्थाः भवन्ति।

(b) षड्भावविकाराः भवन्ति ।

(c) न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुः।

(d) छन्दोभ्यः समाहृत्य समाम्नाताः।

उत्तर-(c)

''न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुः'' इति शाकटायनः। अर्थात् स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त उपसर्ग निश्चय ही अर्थों को नहीं कहते अपितु 'नाम' तथा 'तिङन्त' पद के अर्थ सम्बन्ध के द्योतक मात्र होते हैं- ऐसा शाकटायन का मत है।

गार्ग्य- 'उच्चवचाः पदार्थाः भवन्ति'। शाकटायन के विपरीत गार्ग्य का मत यह है कि उपसर्ग विभिन्न अर्थों वाले होते हैं।
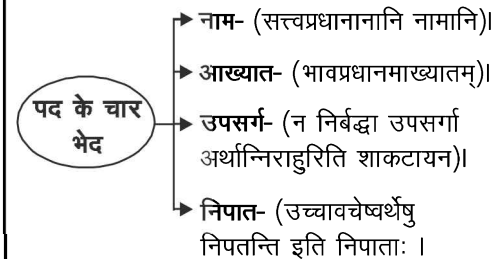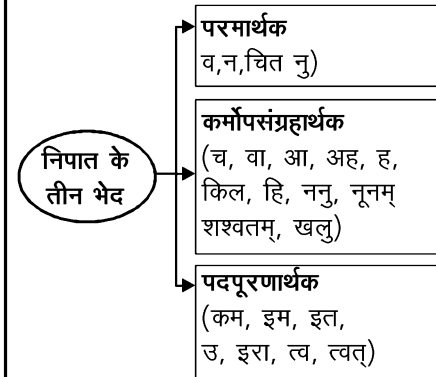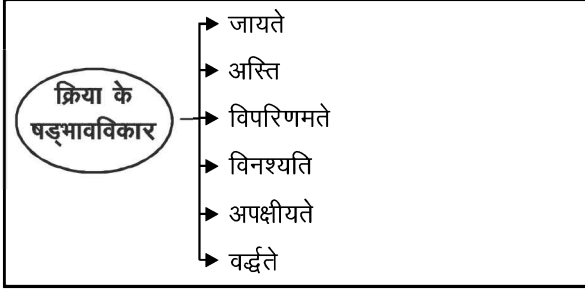
7. निरुक्ते मेघनामानि कियन्ति?

(a) विंशतिः (b) त्रिंशत्
(c) चत्वारिंशत् (d) पञ्चाशत्

उत्तर-(b)

''निरुक्ते मेघनामानि त्रिंशत्'' (निरुक्त में मेघ के तीस नाम प्राप्त होते हैं। ''मेघनामान्युत्तराणि त्रिंशत्' (निघण्टु 1/10)

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वाङ्नामान्युत्तराणि सप्तपञ्चाशत्। (सत्तावन नाम वाणी के प्राप्त होते हैं)।
- उदकनामान्युत्तराण्येकशतम्' (101 नाम जल के हैं)
- नदीनामान्युत्तराणि सप्तत्रिंशत् (निरुक्त में नदी के 37 नाम प्राप्त होते हैं)
- 'उषो नामान्युत्तराणि षोडश' (सोलह नाम उषा के हैं)।

8. अधोलिखितेषु 'मुहूर्त्तचिन्तामणिः' ग्रन्थस्य कर्ता कः?

(a) नीलकण्ठदैवज्ञः (b) गणेशदैवज्ञः
(c) रामदैवज्ञः (d) अनन्तदैवज्ञः

उत्तर-(c)

'मुहूर्तचिन्तामणिः' ग्रन्थस्य कर्त्ता 'रामदैवज्ञः' अस्ति।

'मुहूर्त्तचिन्तामणि' ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक आचार्य रामदैवज्ञ द्वारा रचित है। यह ग्रन्थ ज्योतिषशास्त्र से सम्बन्धित है। यह ग्रन्थ 1600-1601 ई. में काशी में प्रणीत हुआ, जिसका वर्णन सिद्धेश्वर के संस्कारमयूख में है।

- नीलकण्ठदैवज्ञ 16 वीं शताब्दी के ज्योतिषी एवं खगोलशास्त्री थे, इनकी रचना 'ताजिका-नीलकंठी' है।
- गणेशदैवज्ञ खगोलविद थे। इनके द्वारा रचित 'ग्रहलाघव' अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रन्थ है। बुद्धिविलासिनी टीका भी प्रसिद्ध है।

9. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम् ॥
इति श्लोकः केन वेदाङ्गेन सम्बद्धः?

(a) कल्पेन (b) शिक्षया
(c) ज्योतिषेण (d) छन्दसा

उत्तर-(c)

''यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम् ॥''
इति श्लोकः ज्योतिष वेदाङ्गेन सम्बद्धः।

अर्थात् जिस प्रकार मोरों में शिखा तथा नागों में मणि का स्थान सबसे ऊपर है, उसी प्रकार सभी वेदाङ्गशास्त्रों में गणित (ज्योतिष) का स्थान सबसे ऊपर है।

- वेदांङ्गज्योतिष काल विज्ञापक शास्त्र है। तिथि, नक्षत्र पर किये गये यज्ञादि कार्य फलदायी होते हैं।
- चारों वेदों के पृथक्-पृथक् ज्योतिष शास्त्र थे। वर्तमान में सामवेद का ज्योतिषशास्त्र अप्राप्य है, शेष तीनों वेदों के ज्योतिषशास्त्र प्राप्त होते हैं-

(1) ऋग्वेद का ज्योतिषशास्त्र - आर्चज्योतिषम् (36 पद्य)।
(2) यजुर्वेद का ज्योतिषशास्त्र - याजुषज्योतिषम् (43 पद्य)
अथर्ववेद का ज्योतिषशास्त्र- आथर्वणज्योतिषम् (162 पद्य)
इनमें ऋग्वेद एवं यजुर्वेद ज्योतिष के प्रणेता लगध आचार्य हैं।

10. 'सर्वव्यापी स भगवान् तस्मात् सर्वगतः शिवः' मन्त्रांशोऽयं कस्मात् ?

(a) कठोपनिषदः (b) श्वेताश्वतरोपनिषदः
(c) निरुक्तात् (d) यजुर्वेदात्

उत्तर-(b)

सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः।
सर्वव्यापी स भगवान् तस्मात्सर्वगतः शिवः ॥

उपर्युक्त मन्त्र 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' के तृतीयाध्याय से उद्धृत है, जिसका तात्पर्य है कि- वह परमेश्वर सर्वव्यापी और सर्वकल्याणकारी होने के कारण सभी प्राणियों की हृदय-गुहा में निवास करते हैं तथा विश्व के समस्त लोगों के मुखों, सिरों तथा ग्रीवाओं का उपयोग करते हैं।

- श्वेताश्वतरोपनिषद् में सांख्य, योग तथा वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रतिपादन है।
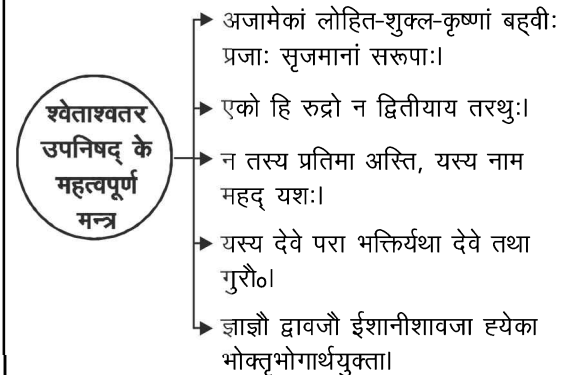
11. सूत्रात्मतैजसौ स्वप्नकाले विषयान् अनुभवतः-

(a) अज्ञानवृत्तिभिः (b) मनोवृत्तिभिः
(c) इन्द्रियवृत्तिभिः (d) स्वत एव

उत्तर-(b)

''सूत्रात्मतैजसौ स्वप्नकाले मनोवृत्तिभिः सूक्ष्मविषयाननुभवतः 'प्रविविक्तभुक्तैजस इत्यादिश्रुतेः''। अर्थात् स्वप्नावस्था में सूत्रात्मा एवं तैजस, मन अर्थात् अन्तःकरण की वृत्तियों के द्वारा सूक्ष्म विषयों का अनुभव करते हैं। तैजस सूक्ष्म विषयों का भोग करने वाला है।

सृष्टि एवं व्यष्टि में या उनसे उपहित सूत्रात्मा और तैजस में उसी भांति अभेद अर्थात् ऐक्य है, जैसे- वन एवं वन के वृक्षों में।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विज्ञानमयो ज्ञानशक्तिमान् कर्तृरूपः। (विज्ञानमयकोश ज्ञानशक्ति से युक्त एवं कर्त्तारूप है।)
- मनोमय इच्छाशक्तिमान् करणरूपः। (मनोमयकोश इच्छाशक्ति से युक्त तथा करणरूप है।)
- प्राणमयः क्रियाशक्तिमान् कार्यरूपः। (प्राणमयकोश क्रियाशक्ति से युक्त एवं कार्यरूप है।

ये तीनों कोश मिलकर सूक्ष्मशरीर कहलाते हैं।

12. 'प्रत्यक्षस्मृतिरूपज्ञानद्वयादेव अनुमितिदर्शनाद् व्याप्ति-विशिष्टवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानं न सर्वत्र कारणम्'- इति मतम् अस्ति -

(a) बौद्धानाम् (b) जैनानाम्

(c) नैयायिकानाम् (d) मीमांसकानाम्

उत्तर-(d)

'प्रत्यक्षस्मृतिरूपज्ञानद्वयादेव अनुमितिदर्शनाद् व्याप्ति-विशिष्टवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानं न सर्वत्र कारणम्'-

इति मतम् मीमांसकानाम् अस्ति।

मीमांसक विशिष्टज्ञान को अनुमिति के लिए अनिवार्य नहीं मानते हैं। इनके विचार में अनुमिति के कुछ स्थलों पर अनुमिति से पूर्व परामर्श हो जाता है, किन्तु सर्वत्र ही ऐसा नहीं होता। बहुधा केवल व्याप्तिज्ञान तथा पक्षधर्मता-ज्ञान के पृथक्-पृथक् होने पर ही अनुमिति हो जाती है। वहाँ व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मताज्ञान नहीं होता।

13. जैनदर्शने श्रुतं ज्ञानम् अस्ति-

(a) ज्ञानावरणक्षयोपशमे सति मतिजनितं स्पष्टं ज्ञानम्

(b) सम्यग्दर्शनादिगुणजनितक्षयोपशमनिमित्तम् अवच्छिन्नविषयं ज्ञानम्

(c) ईर्ष्यान्तरायज्ञानावरणक्षयोपशमे सति परमनोगतस्यार्थस्य स्फुटं परिच्छदं ज्ञानम्

(d) अन्यज्ञानासंसृष्टं ज्ञानम्

उत्तर-(a)

ज्ञानावरणक्षयोपशमे सति मतिजनितं स्पष्टं ज्ञानम् श्रुतम् । अर्थात् ज्ञान के आवरण का क्षय या उपशम हो जाने पर, मति-ज्ञान से उत्पन्न, स्पष्ट ज्ञान को 'श्रुत' कहते हैं। इसे नैयायिक लोग 'निर्विकल्पक' कहते हैं। इन्द्रियों से उत्पन्न होने के कारण स्वयं प्रत्यक्ष होने पर भी यह अतीन्द्रिय है। अर्थात् इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय नहीं है।

सम्यक् ज्ञान एवं उसके भेद- ''येन स्वभावेन जीवादयः पदार्था व्यवस्थितास्तेन स्वभावेन मोहसंशयरहितत्वेनावगमः सम्यक्ज्ञानम्। सम्यक्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलभेदेन''। अर्थात् जिस स्वभाव से जीव आदि पदार्थ व्यवस्थित हैं, उसी रूप में मोह तथा संशय से रहित होकर उन्हें जानना सम्यक् ज्ञान है। यह पांच प्रकार का होता है- (1) मति, (2) श्रुत, (3) अवधि, (4) मनःपर्याय, (5) केवल ।

14. बाधः कः?

(a) यत्र पक्षः साध्यशून्यः भवति सः

(b) यत्र पक्ष एव न भवति सः

(c) यत्र व्याप्तिः विषमा वर्तते सः

(d) यत्र विपक्षः न भवति सः

उत्तर-(a)

''यत्र पक्षः साध्यशून्यः भवति सः बाधः।'' (साध्य के अभाव पक्ष में बाध होता है।)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुसार हेत्वाभास के पांच भेद हैः-

(1) असिद्ध, (2) विरुद्ध, (3) अनैकान्तिक, (4) प्रकरणसम, (5) कालात्ययोपदिष्ट

'अनैकान्तो विरुद्धश्चाऽप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा''।

अनैकान्त हेत्वाभास-

आद्यः साधारणस्तु स्यादसाधारणकोऽपरः।
तथैवाऽनुपसंहारी त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत् ।।

(i) साधारण अनैकान्त,

(ii) असाधारण अनैकान्त,

(iii) अनुपसंहारी अनैकान्त ।

विरुद्ध हेत्वाभास- यःसाध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः।

असिद्ध हेत्वाभास-

आश्रयासिद्धिराद्या स्यात्, स्वरूपासिद्धिरप्यथ।
व्याप्यत्वासिद्धिरपरा स्यादसिद्धिरतस्त्रिधा ।।

सत्प्रतिपक्ष- विरुद्धयोः परामर्शे हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता ।

कालात्ययापदिष्ट- साध्यखून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाध उदाहृतः।

15. 'कुत्रचिद् विकल्पप्रसक्तौ अपि अनन्यगत्या प्रतिषेधाश्रयणम्' - इत्यस्य उदाहरणम् अस्ति-

(a) कलञ्जं न भक्षयेत् (b) नेक्षेतोद्यन्तमादित्यम्

(c) श्येनेनाभिचरन् यजेत (d) नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति

उत्तर-(d)

''कुत्रचिद् विकल्पप्रसक्तावप्यनन्यगत्या प्रतिषेधाश्रयणम् । यथा 'नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णातिः' त्यादौ। अर्थात् कहीं-कहीं विकल्प प्रसक्ति होने पर भी कोई अन्य उपाय न होने से प्रतिषेध का आश्रयण किया ही जाता है, जैसे- 'नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णातिः'

उपर्युक्त यह प्रकरण अर्थसंग्रह में निषेध के प्रकरण में आया है।

''अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। स च विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेधार्थवादभेदात् पञ्चविधः।''

अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं। यह विधि-मन्त्र- नामधेय-निषेध तथा अर्थवाद के भेद से पांच प्रकार का होता है।
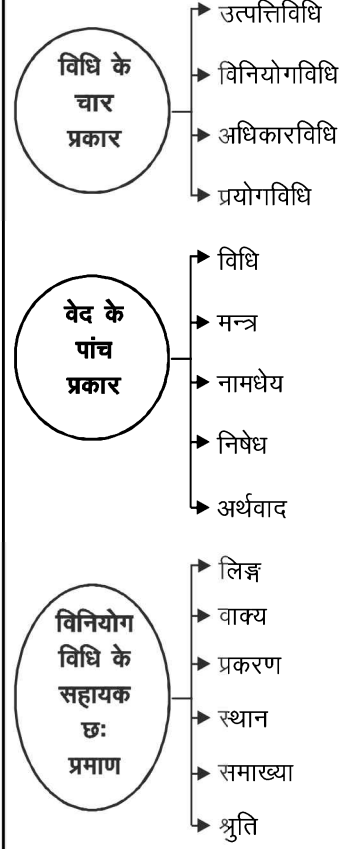
16. योगसूत्रकारस्य शब्दार्थयोः सम्बन्धमधिकृत्य मतम् अस्ति-

(a) शब्दार्थसम्बन्धः संकेतस्यैव अपरं नाम अस्ति।

(b) शब्दार्थयोः सम्बन्धः न सम्भवति।

(c) शब्दार्थसम्बन्धः नित्यः अस्ति, स ईश्वरकृतेन संकेतेन प्रकाश्यते।

(d) शब्दार्थसम्बन्धः अनित्यः वर्तते, स स्वत एव प्रकाश्यते।

उत्तर-(c)

''शब्दार्थसम्बन्धः नित्यः अस्ति, स ईश्वरकृतेन संकेतेन प्रकाश्यते। इति योगसूत्रकारस्य शब्दार्थयोः सम्बन्धमधिकृत्य मतमस्ति। योगसूत्रकार के अनुसार शब्दार्थ का जो सम्बन्ध है, वह नित्य है तथा वह ईश्वर कृत सङ्केत से प्रकाशित होता है।

''वाच्य ईश्वरः प्रणवस्य'' सङ्केतस्त्वीश्वरस्य स्थितमेवार्थमभिनयति। पुरुषविशेष ईश्वर ओङ्कार का अभिधेय अर्थ है। ईश्वर का सङ्केत पहले से स्थित अर्थ को केवल प्रकाशित करता है।

17. व्यक्ताव्यक्तयोः स्वरूपं नास्ति-

(a) सामान्यत्वम् (b) प्रसवधर्मित्वम्

(c) विषयत्वम् (d) शून्यत्वम्

उत्तर-(d)

व्यक्ताव्यक्तयोः स्वरूपं 'शून्यत्वम्' नास्ति।

व्यक्त तथा अव्यक्त का स्वरूप 'शून्य' नहीं है।

सांख्यकारिका की 11 वीं कारिका में व्यक्त तथा अव्यक्त के साधर्म्य एवं पुरुष का उससे वैधर्म्य का निरूपण है-

''त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।

व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ।।''

व्यक्त एवं अव्यक्त दोनों त्रिगुणात्मक एवं अविवेकी होते हैं, दोनों विषय अर्थात् ज्ञान के द्वारा ग्राह्य होते हैं, अचेतन अर्थात् जड़ होते हैं, सामान्य अर्थात् अनेक पुरुषों के द्वारा समानरूप से ग्राह्य होते हैं, साथ ही दोनों प्रसवधर्मी अर्थात् सरूप एवं विरूप परिणाम इनका स्वभाव होता है। पुरुष इन धर्मों के विपरीत धर्मवाला होता है तथा कुछ अंशो में इनके समान धर्म वाला भी होता है।
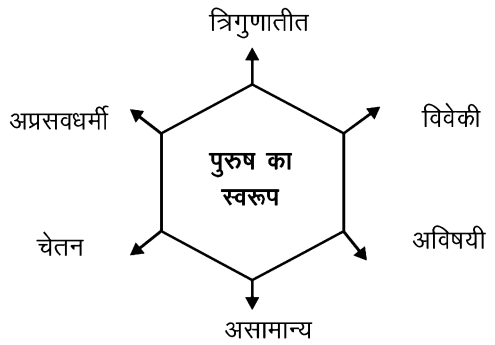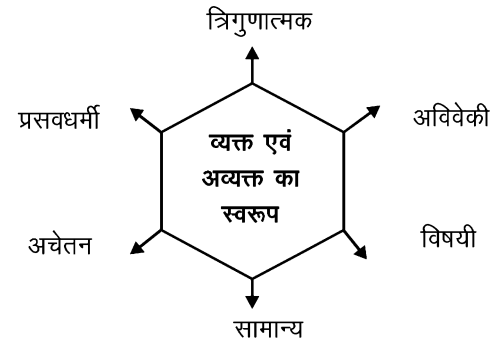
18. 'नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानाम् अवान्तरफलं पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिरस्ति' इत्यत्र प्रमाणम्-

(a) कर्मणा पितृलोकः विद्यया देवलोक इत्यादिश्रुतिः।

(b) मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद इति स्मृतिः।

(c) तमसा कल्मषं हन्ति इति स्मृतिः ।

(d) तमेतमात्मानं वेदानुवचनेन इति उपनिषद्वचनम् ।

उत्तर-(a)

''नित्यनैमित्तिकयोरुपासनानां त्वान्तरफलं पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः इत्यत्र 'कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोक' इत्यादिश्रुतेः नित्य-नैमित्तिक प्रायश्चित कर्मों का अवान्तर फल पितृलोक एवं सत्यलोक की प्राप्ति है, इसके समर्थन में वृहदारण्यक श्रुति प्रमाण रूप में है कि ''नित्य-नैमित्तिक कर्म से पितृलोक एवं विद्या (उपासना) से सत्यलोक की प्राप्ति होती है।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'एतेषां नित्यादीनां बुद्धिशुद्धिः परं प्रयोजनम्'। नित्य, नैमित्तिक तथा प्रायश्चित्त कर्मों का परमप्रयोजन चित्त की शुद्धि है।
- 'उपासनानां तु चित्तैकाग्र्यम्'। उपासना का परमप्रयोजन चित्त की एकाग्रता है।

19. 'चीनी-स्यामी-तिब्बती-सूडानी'- इत्यादयः भाषाः सन्ति-

(a) योगात्मकवर्गस्य (b) अयोगात्मकवर्गस्य

(c) स्वरविहीनाः (d) शतम् वर्गस्य

उत्तर-(b)

चीनी-स्यामी-तिब्बती-सूडानी' इत्यादयः भाषाः 'अयोगात्मकवर्गस्य' सन्ति। भाषा विज्ञान में विश्व भाषाओं का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है-

(1) आकृतिमूलक वर्गीकरण

(2) पारिवारिक वर्गीकरण

पुनः आकृतिमूलक वर्गीकरण को दो भागों में विभाजित किया जाता है-

(1) अयोगात्मक,

(2) योगात्मक

(1) **अयोगात्मक भाषाएं -** इसमें प्रत्येक शब्द स्वतंत्र होता है तथा प्रकृति-प्रत्यय का कोई संयोग नहीं होता है। इसमें शब्दक्रम एवं पदक्रम का विशेष महत्व होता है। इनमें प्रमुख रूप से चीनी, सूडानी, अनामी, बर्मी, स्यामी, तिब्बती आदि भाषाएं हैं।

(2) **योगात्मक भाषाएं-** इसमें प्रकृति एवं प्रत्यय या अर्थतत्त्व एवं सम्बन्धतत्त्व का संयोग रहता है।

योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है।

(i) अश्लिष्ट (प्रत्यय प्रधान) भाषाएं।

(ii) श्लिष्ट (विभक्ति प्रधान) भाषाएं।

(iii) प्रश्लिष्ट (समास प्रधान) भाषाएं।

20. मूलभारोपीयभाषाणां कवर्गस्य प्रकाराः सन्ति-

(a) शुद्धस्थाः, कण्ठतालव्याः, कण्ठोष्ठ्याः

(b) शुद्धदन्त्याः, दन्त्यमूर्धन्याः, अनुनासिक्याः

(c) अथ्स्वाः, अदीर्घाः, उदासीनाः

(d) संयुक्ताः, अन्तस्थाः, ऊष्माणः

उत्तर-(a)

मूलभारोपीयभाषाणां कवर्गस्य प्रकाराः 'शुद्धस्थाः, कण्ठतालव्याः, कण्ठोष्ठयाः' सन्ति।

मूलस्वर - (i) **ह्रस्व-** (अ, ए, ओ)

(ii) **दीर्घ -** (आ, ऐ, औ)

(iii) **उदासीन स्वर-** अ, (e)

संयुक्त स्वर - (अ, ए, ओ, ह्रस्व या दीर्घ + इ, उ, ऋ, ऌ, न् , म्)

अन्तःस्थ स्वर- इ, उ, ऋ, ऌ।

अन्तःस्थ व्यञ्जन- य्, व्, र्, ल्।

व्यञ्जन - स्पर्श एवं ऊष्म

(क) **स्पर्श- क वर्ग-** क्, ख्, ग्, घ् (शुद्ध-कण्ठ्य)

क्य्, ख्य्, ग्य्, घ्य् (कण्ठ- तालव्य)

क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व् (कण्ठोष्ठ्य)

तवर्ग - त्, थ्, द्, ध् (दन्त्य)

पवर्ग - प्, फ्, ब्, भ् (ओष्ठ्य)

(ख) ऊष्म - स् (ज्)।

21. पस्पशाह्निकानुसारं प्रस्कन्दनम्, प्रपतनम् इत्याद्युदाहरणेन सिद्धं भवति-

(a) करणाधिकरणयोः भिन्नेषु अपि कारकेषु ल्युट् भवतीति।

(b) प्रेरणादावपि लटः प्रयोगो भवतीति।

(c) सामान्ये नपुंसकलिङ्गं भवतीति।

(d) छन्दसु कृदन्तानां प्रयोगः अल्पीयान् एव भवतीति।

उत्तर-(a)

''पस्पशाह्निकानुसारं प्रस्कन्दनम्, प्रपतनम् इत्याद्युदाहरणेन करणाधिकरणायोः भिन्नेषु अपि कारकेषु ल्युट् सिद्धं भवति।''

वैयाकरणों के अनुसार व्याकरण शब्द का अर्थ 'शब्द' लेने पर ल्युट् प्रत्यय का अर्थ नहीं बनता है, लेकिन पस्पशाह्निकानुसार यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि करण और अधिकरण इन दो अर्थो में भी ल्युट् प्रत्यय का विधान किया है, ऐसी कोई बात नहीं। तब पुनः प्रश्न होता है कि इनका प्रयोग किन अर्थों में किया जाता है? इसका जवाब देते हुए कहते हैं- ''कृत्यल्युटो बहुलम् '' इति। तथद्या प्रस्कन्दनं प्रपतनमिति '' अर्थात् कृत्य और ल्युट् प्रत्यय सभी अर्थों में होते हैं। पाणिनि के इस सूत्रानुसार और जो दूसरे (करण अधिकरण को छोड़कर) कारक हैं, उनमें भी होते हैं, उदाहरण के लिए प्रस्कन्दनम् एवं प्रपतनम् में यह परिलक्षित होता है।
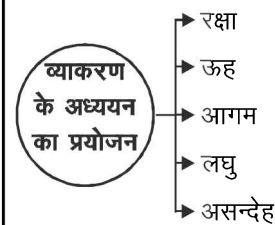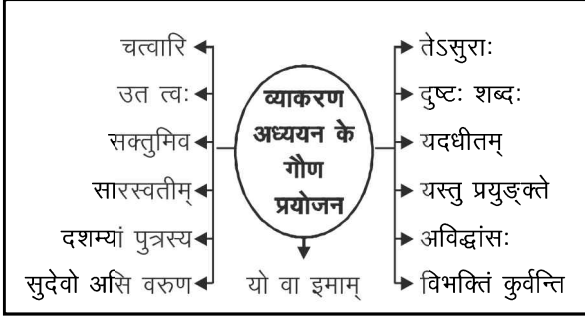
22. 'यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च'- इत्यत्र ङित्वोक्तेर्ज्ञायते-

(a) क्वचिदनुबन्धकार्येऽप्यनल्विधाविति प्रतिषेध्य इति।

(b) सम्प्रतिकाभावे भूतपूर्वगतिर्भवति इति।

(c) यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे इति।

(d) असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे इति।

उत्तर-(a)

''यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च-इत्यत्र ङित्वोक्तेर्ज्ञायते,'' क्वचिदनुबन्धकार्येऽप्यनल्विधाविति प्रतिषेध्य इति''।

लिङ् सम्बन्धी परस्मैपद को यासुट् आगम होता है और वह उदात्त ङित् होता है।

यहाँ पर ङित् की आवृत्ति इस परिभाषा पर आधारित है- 'लकाराश्रयङित्त्व मादेशानां न भवति।' अर्थात् लकार (लुङ् , लङ्, लिङ् तथा ऌङ्) में स्थित 'ङ्' लकार के स्थानिक आदेश को प्रभावित नहीं करता है। इस प्रकार यासुट् का ङित्वग्रहण व्यर्थ होकर ज्ञापन करता है-

'क्वचिद' क्वचित् अनुबन्ध कार्य में भी अनल्विधौ के निषेध की प्रवृत्ति होती है।

23. 'त्वं प्रकोष्ठे मनसा पुस्तकं पठसि'- इत्यत्र तिङ्वाच्यकारकवाचि पदम् अस्ति -

(a) त्वम् (b) मनसा

(c) पुस्तकम् (d) पठसि

उत्तर-(a)

'त्वं प्रकोष्ठे मनसा पुस्तकं पठसि'- इत्यत्र तिङ्वाच्यकारक-वाचि पदम् 'त्वम्' अस्ति ।

- पठसि में 'सिप्' प्रत्यय मध्यम पुरुष में लगा हुआ है। इस सिप् प्रत्यय के अर्थ में युष्मद् शब्द 'त्वम्' लगा है।
- मनसा-साधन, पुस्तकं-कर्म एवं पठसि-क्रिया है।

24. वर्तमानकालार्थकस्य क्तप्रत्ययस्य प्रयोगः अस्ति-

(a) राजानं श्रितः (b) राजनि गुणाः

(c) राज्ञां बुद्धः (d) राज्ञः आश्रितः

उत्तर-(c)

वर्तमानकालार्थकस्य क्तप्रत्ययस्य प्रयोगः 'राज्ञां बुद्धः' अस्ति।

''मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च'' सूत्र से विहित 'क्त' प्रत्यय का षष्ठ्यन्त सुबन्त में समास नहीं होता है।

क्तेन च पूजायाम् - पूजा अर्थ में क्त प्रत्यय पर षष्ठी समास नहीं होता है, जैसे- राज्ञां बुद्धः - यहां 'मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च' सूत्र से वर्तमान में क्त प्रत्यय होता है, अतः वर्तमान अर्थक क्त प्रत्यय के योग में 'क्तस्य च वर्तमाने' सूत्र से राजन् शब्द से षष्ठी विभक्ति में 'राज्ञाम्' रूप बना। यहां षष्ठ्यन्त रूप राज्ञाम् का सुबन्त के बुद्धः सुबन्त के साथ प्राप्त षष्ठी समास प्रकृतसूत्र से निषेध होता है। इसी प्रकार राज्ञां पूजितः में भी समास नहीं होता है।

25. अधिकरणवाचिनः क्तप्रत्ययस्य उदाहरणम् -

(a) भुक्तम् अतिथिभिः (b) राज्ञां पूजितः

(c) कूपं पतितः (d) इदमेषाम् आसितम्

उत्तर-(d)

'अधिकरणवाचिनः क्तप्रत्ययस्य उदाहरणम् 'इदमेषाम् आसितम्' अस्ति।

'अधिकरणवाचिना च' - अधिकरणवाची क्त प्रत्यय से षष्ठ्यन्त सुबन्त का समास नहीं होता है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। यहाँ अधिकरणवाची से तृतीयवचनान्त पद है तथा यह अव्यय पद है। यहाँ पर 'प्राक्कडारात्समासः, सहसुपा एवं तत्पुरुषः तीनों सूत्र अधिकृत हैं। 'षष्ठी' से 'न निर्धारणे' की अनुवृत्ति होती है। 'क्तेन च पूजायाम्' सूत्र से क्तेन पद की अनुवृत्ति हो जाती है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होता है- अधिकरणवाची, जो क्त प्रत्यय है उससे षष्ठ्यन्त सुबन्त का समास नहीं होता है। जैसे- इदमेषामासितम्' यहाँ 'आसितम्' में 'क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगति प्रत्यवसानार्थेभ्यः'' सूत्र से अधिकरण में क्त प्रत्यय होता है। 'अधिकरणवाचिनश्च' सूत्र से अधिकरणवाची क्त प्रत्यय के योग में 'एषाम्' में षष्ठी विभक्ति हुई। यहाँ एषाम् षष्ठ पद का आसितम् इस क्तप्रत्ययान्त पद के योग होने पर षष्ठी समास का प्रस्तुत सूत्र से निषेध किया गया है।

26. अधिकरणषष्ट्याः प्रयोगः वर्तते-

(a) द्विः अह्नः भुङ्क्ते

(b) शतस्य प्रतिदीव्यति

(c) अग्नये छागस्य हविषो वपायाः मेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि

(d) जगतः कर्त्ता कृष्णः

उत्तर-(a)

''द्विः अह्नः भुङ्क्ते'' इति अधिकरणषष्ट्याः प्रयोगः वर्तते।

''कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे''- कृत्वसुच् तथा इसके समानार्थ प्रत्ययान्त पदों के योग में कालवाचक अधिकरणकारक में, शेषत्व की विवक्षा में, षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे- 'द्विः अह्नः भुङ्क्ते (दिनभर में दो बार भोजन) - यहाँ कृत्वसुच् प्रत्यय का अर्थ प्रकट करने वाले सुच् प्रत्ययान्त द्विः अव्यय शब्द के

योग में कालवाची अधिकरण वाचक 'अहन' में प्रकृत सूत्र से, शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति हुई है।
कर्तृकर्मणोःकृति- कृदन्त के योग में अनभिहित कर्ता तथा कर्मकारक में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- जगतः कर्त्ता कृष्णः- यहाँ कृत् प्रत्ययान्त 'कर्त्ता' (कृ + तृच्) के योग में कर्म कारक 'जगत्' में प्रकृत सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है।
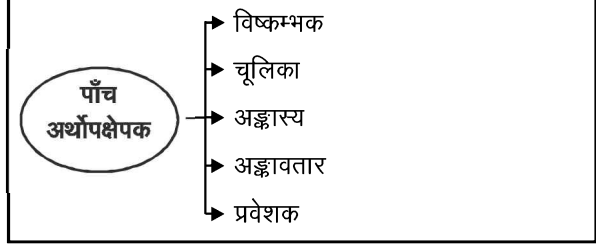
27. 'विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः।
अनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायीभावो रसःस्मृतः ॥'
- इति कस्य आचार्यस्य कथनम्?

(a) भरतस्य (b) मम्मटस्य
(c) धनञ्जयस्य (d) विश्वनाथस्य

उत्तर-(a)

'विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः।
अनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायीभावो रसःस्मृतः ॥'
- इति आचार्य 'धनञ्जयस्य' कथनम् अस्ति।

इस पद्य में रस के भेद के विषय में बतलाया गया है। विभावों, अनुभावों, व्यभिचारियों तथा सात्त्विक भावों के द्वारा आस्वादन की योग्यता को प्राप्त कराया गया (अर्थात् आस्वादन के योग्य बनाया गया) स्थायी भाव 'रस' कहलाता है।

- आचार्य धनञ्जय कृत दशरूपक चार प्रकाशों में विभाजित है।
- **अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-**
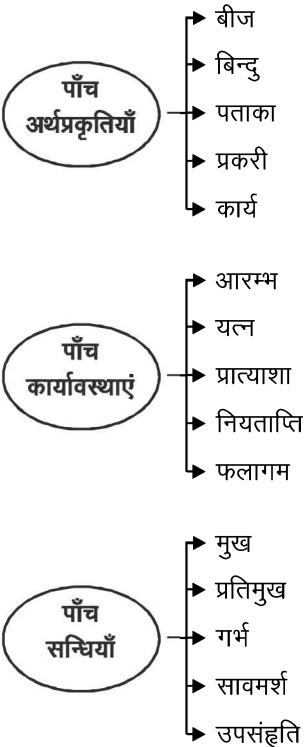
28. 'शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्' इति सूक्तिरस्ति-

(a) उत्तररामचरिते (b) नैषधीयचरिते
(c) शिशुपालवधमहाकाव्ये (d) नलचम्पूकाव्ये

उत्तर-(c)

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥
इति सूक्तिः 'शिशुपालवधमहाकाव्ये' अस्ति।

उपर्युक्त श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण, नारद से कहते हैं कि आपका दर्शन शरीर धारण करने वाले मनुष्यों के तीनों कालों की योग्यता को प्रकट करता है, क्योंकि यह वर्तमानकाल में पापों को नष्ट करता है तथा आने वाले शुभ का कारण एवं पूर्व समय में किये गये सुकृतों का फल है।

माघकृत, शिशुपालवधम् महाकाव्य की महत्वपूर्ण सूक्तियां-

- गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।
- निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव ।
- गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते।
- सदाभिमानैकधना हि मानिनः।
- विपादनीया हि सतामसाधवः
- सतीवयोषित् प्रकृतिः सुनिश्चला पुभांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।

29. 'लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति' इति काव्यपंक्तिः कस्मिन् नाटके अस्ति?

(a) स्वप्नवासवदत्ते (b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) उत्तररामचरिते (d) वेणीसंहारे

उत्तर-(c)

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोन्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।।
इति श्लोकः 'उत्तररामचरितनाटके' अस्ति ।

इस पंक्ति में वासन्ती कहती हैं कि वज्र से भी कठोर एवं फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।
'उत्तररामचरितम्, भवभूति द्वारा विरचित सात अङ्कों का नाटक है। यह करूण रस में निबद्ध है।

उत्तररामचरितम् की महत्वपूर्ण सूक्तियां-

- अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।
- तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः ।
- सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम् ।
- सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
- ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः।
- प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मो ग्लपयति।

30. 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया' इत्यस्मिन् पद्ये किं छन्दः -

(a) शिखरिणी (b) स्रग्धरा
(c) शार्दूलविक्रीडितम् (d) मन्दाक्रान्ता

उत्तर-(c)

काश्यप- यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कष्ठया।
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ॥
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः।
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः॥
इत्यस्मिन् श्लोके शार्दूलविक्रीडितम् छन्दः अस्ति।

उपर्युक्त श्लोक कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। इसमें महर्षि कण्व (काश्यप) के शकुन्तला की विदाई के समय उनकी हृदयावस्था का वर्णन है। इसमें कण्व कहते हैं- कि आज शकुन्तला विदा होगी, इसलिए मेरा हृदय दुःख से भर रहा है। आसुओं के बहने को रोकने से मेरा गला भर आया है। मेरी दृष्टि चिन्ता के कारण निश्चेष्ट हो गई है। जंगल में रहने वाले मुझको प्रेम (शकुन्तला के प्रति के कारण इस प्रकार का दुःख हो रहा है, तो गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितने अधिक दुःखित होते होगें) अर्थात् असहनीय पीड़ा होती है।

शार्दूलविक्रीडित छन्द- ''सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।'' (3/100- वृत्तरत्नाकर)

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ॥ (छन्दोमञ्जरी) अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा एक गुरू वर्ण आये, उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं। इस छन्द में सूर्य (12) तथा अश्व (7) संख्यक अक्षरों पर यति होती हैं ।

31. उत्तररामचरिते 'पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' इति केनोक्तम् ?

(a) रामभद्रेण (b) वाल्मीकिना
(c) अष्टावक्रेण (d) सूत्रधारेण

उत्तर-(d)

उत्तररामचरिते 'पदवाक्यप्रमाणज्ञो भूवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः' इति सूत्रधारेण उक्तम् ।

उत्तररामचरितम् के प्रथम अङ्क के प्रारम्भ में ही सूत्राधार कहता है-

''अलमतिविस्तरेण। अद्य खलु भगवतः कालप्रियानाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामि- एवमत्रभवन्तो विदांकुर्वन्तु। अस्ति खलु तत्र भगवान् काश्यपः श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः। (आज भगवान् कालप्रियानाथ (शिव) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं आप महानुभावों को सूचित करता हूँ कि आप लोगों को ज्ञात हो कि कश्यपगोत्रोत्पन्न, श्रीकण्ठ उपाधिधारी, व्याकरण, मीमांसा तथा न्यायशास्त्र के ज्ञाता, जतुकर्णी के पुत्र माननीय भवभूति नाम के विद्वान् हैं)।

उत्तररामचरितम् के महत्वपूर्ण तथ्य

- 'उत्तररामचरितम्' सुखान्त नाटक है, इसके सप्तम अङ्क में 'गर्भाङ्क की कल्पना' है।
- तृतीयाङ्क का आरम्भ विष्कम्भक (तमसा-मुरला नामक दो नदियों का वार्तालाप) से होता है।

32. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रथमः आंग्लानुवादः केन कृतः ?

(a) शेक्सपीयरमहोदयेन (b) गेटे-महोदयेन
(c) विलियमजोन्समहोदयेन (d) मैक्समूलरमहोदयेन

उत्तर-(c)

'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रथमः आंग्लानुवादः' 'विलियमजोन्स-महोदयेन' कृतः। अभिज्ञानशाकुन्तल का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद करने वाले - विलियमजोन्स महोदय हैं। इन्होंने "The last things' की भूमिका में कालिदास को 'भारत का शेक्सपियर' कहा है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'गेटे' महोदय ने अपने नाट्यकाव्य 'फाउस्ट' में कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्रशंसा की है।
- **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्य ग्रन्थ हैं —**
  (i) महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74अध्यायों में)
  (ii) पद्मपुराण का स्वर्गखण्ड ।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सात अंक -

(1) आश्रमप्रवेश (2) आश्रमनिवेश
(3) मिलन (4) विदा अङ्क
(5) प्रत्याख्यान (6) पश्चाताप
(7) पुनर्मिलन

33. सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः' इत्यादि पद्यं कस्य उदाहरणरूपेण ध्वन्यालोके उल्लिखितम् ?

(a) अविवक्षितवाच्यध्वनेः (b) विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनेः
(c) पर्यायोक्ति-अलङ्कारस्य (d) विशषोक्ति-अलङ्कारस्य

उत्तर-(a)

'सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥

(सुवर्ण जिसका पुष्प है, ऐसी पृथिवी का चयन (अर्थात् पृथिवीरूप लता के सुवर्णरूप पुष्पों का चयन) तीन ही पुरुष करते हैं- शूर, विद्वान् तथा जो सेवा करना जानता है।

उपर्युक्त यह उदाहरण 'अविवक्षितवाच्यध्वनि' का है।

ध्वनिकाव्य-

''यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ ।

व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।।

जहाँ अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं, उस काव्यविशेष को विद्वान् लोग 'ध्वनिकाव्य' कहते हैं।

यह सामान्यतः अविवक्षितवाच्य (लक्षणामूला) एवं विवक्षितान्यपरवाच्य (अभिधामूला) भेद से दो प्रकार का होता है।

34. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम् ।' इति पद्यमस्ति-

(a) उत्तररामचरिते (b) अभिज्ञानशाकुन्तले

(c) रघुवंशमहाकाव्ये (d) हर्षचरिते

उत्तर-(b)

''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः

सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम् ।

ममापि च क्षपयतु नीललोहितः

पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः ।।

यह पद्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भरतवाक्य' है। जिसका अर्थ है- राजा लोग प्रजा के हित के कार्यों में लगे रहें। चारों वेदों से शोभायमान भगवती श्री सरस्वती जगत् में पूजा को प्राप्त हों, अर्थात् वैदिक साहित्य, वेदमार्ग तथा चक्रसहित स्वयंभू भगवान शङ्कर मेरे पुनर्जन्म का नाश करें। अर्थात् भगवान् शिव की कृपा से मेरा जन्म-मरण रूप यह संसार बंधन सदा के लिए छूट जाए।

- भरतवाक्य में रुचिरा छन्द है। इसमें लोककल्याण के लिए भगवान शिव से प्रार्थना की गई है।

उत्तररामचरितम् का भरतवाक्य -

पाप्मभ्यश्च पुनाति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा

मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च।

तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः

शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्।।

35. अर्थशास्त्रस्य नवमम् अधिकरणं किम् ?

(a) अभियास्यत्कर्म (b) दुर्गलम्भोपायः

(c) योगवृत्तम् (d) कण्टकशोधनम्

उत्तर-(a)

चाणक्य (कौटिल्य) कृत अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण, 150 अध्याय 180 प्रकरण एवं 6000 श्लोक हैं।

क्र.सं.	अधिकरण का नाम	अधिकरण में वर्णित विषय
1.	विनयाधिकरण	राज्य एवं राजा
2.	अध्यक्षप्रचार	प्रशासन के विभाग
3.	धर्मस्थीयाधिकरण	न्यायप्रणाली (कानून एवं व्यवस्था)
4.	कंटकशोधन	न्याय प्रणाली (दण्ड व्यवस्था)
5.	वृत्ताधिकरण	शासकीय कर्मचारियों के कर्तव्य
6.	योन्यधिकरण	राज्य के सात अङ्गों की विवेचना
7.	षाड्गुण्य	षड्गुणों की विवेचना (विदेश नीति)
8.	व्यसनाधिकरण	राज्य द्वारा युद्ध : विजय एवं पराजय
9.	अभियास्यत्कर्माधिकरण	सेना, राज्य पर विपत्तियां
10.	संग्रामाधिकरण	युद्धनीति
11.	संघवृत्ताधिकरण	युद्धसम्बन्धी व्यवहार
12.	आबलीयसाधिकरण	राज्य की सुरक्षा
13.	दुर्गलम्भोपायाधिकरण	राज्य की सुरक्षा (शत्रुओं पर विजय)
14.	औपनिषदिकाधिकरण	राज्य की सुरक्षा (गुप्त व्यवस्थाएं)
15.	तंत्रयुक्त्यधिकरण	सामान्य विवेचना

कौटिल्य के अनुसार विद्या के चार प्रकार हैं-

(1) त्रयी, (2) दण्डनीति, (3) वार्ता (4) आन्वीक्षिकी

दुर्ग के चार भेद हैं-

(1) पार्वत दुर्ग, (2) वनदुर्ग, (3) धान्वकदुर्ग, (4) औदक दुर्ग

36. 'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' इति कस्मिन् ग्रन्थे वर्तते?

(a) मनुस्मृतौ (b) याज्ञवल्क्यस्मृतौ

(c) कौटिलीय-अर्थशास्त्रे (d) महाभारते

उत्तर-(a)

''अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते ।

धर्मे जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ।। (मनुस्मृति 2/13)

अर्थ एवं काम में जो आसक्त नहीं हैं उनको धर्म ज्ञान उपदेश किया जाता है तथा धर्म को जानने की इच्छा करने वालों को वेद ही उत्तम प्रमाण है।

धर्म का लक्षण-'वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम् ।।

अर्थात् वेद, स्मृति, सदाचार तथा अपनी रुचि के अनुसार करना- यह चार प्रकार का धर्म का साक्षात् लक्षण है।

- ''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः''। वेद को श्रुति तथा धर्मशास्त्र को स्मृति जानना चाहिए।

37. अष्टादशपुराणेषु न गण्यते-

(a) विष्णुपुराणम् (b) कूर्मपुराणम्

(c) ब्रह्मपुराणम् (d) नृसिंहपुराणम्

उत्तर-(d)

'अष्टादशपुराणेषु नृसिंहपुराणम् न गण्यते'। अठारह महापुराणों में नृसिंहपुराण' की गणना नहीं होती है।

पुराण का लक्षण-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।

अठारह महापुराण- (1) मत्स्य, (2) मार्कण्डेय, (3) भविष्य, (4) भागवत, (5) ब्रह्माण्ड, (6) ब्रह्मवैवर्त, (7) ब्रह्म, (8) वामन, (9) वराह, (10) विष्णु, (11) वायु (शिव), (12) अग्नि, (13) नारद, (14) पद्म, (15) लिंग, (16) गरूड़, (17) कूर्म, (18) स्कन्द ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अग्नि पुराण में समस्त विद्याओं का संकलन होने के कारण इसे 'विश्वकोश' कहा जाता है।
- मत्स्यपुराण में आन्ध्र राजाओं की प्रामाणिक वंशावली का वर्णन है।
- कूर्मपुराण में दो गीताएं हैं- (1) ईश्वरगीता, (2) व्यासगीता।
- स्कन्दपुराण में वाराणसी तथा इसके समीपवर्ती मन्दिरों का वर्णन है। यह सबसे विशालकाय पुराण है।

38. निघण्टवः कस्मात् ?

(a) एते समाहताः भवन्ति (b) एते निगमाः भवन्ति
(c) एते निगन्तारः भवन्ति (d) एते नियोगाःभवन्ति।

उत्तर : (a & b)

निघण्टवः भवन्ति

''निगमा इमे भवन्ति। छन्दोग्यः समाहृत्य- समाहृत्य समाम्नाताः। ते निगन्तण एव सन्तो निगमनात् निघण्टव उच्यन्ते इत्यौपमन्यवः। अपि वा आ हननाद् एव स्युः। समहता भवन्ति। यद् वा समाहृता भवन्ति ।

समाम्नायों में सावधानी के साथ वेदों से शब्द चुन-चुन कर इकट्ठे किये जाते हैं इसलिए इन शब्दों के अर्थ-ज्ञान के द्वारा वैदिक मन्त्रों के अर्थों का बोध होता है, अतः अर्थबोधक होने के कारण ये शब्द 'निगम' के अर्थात् अर्थ के निश्चायक होते हैं। अर्थबोधन के कारण 'निघण्टवः' (नाम से) कहे जाते हैं ऐसा औपमन्यव का विचार है। अथवा 'आहत' (मर्यादा एवं विभाग के साथ पठित) होने के कारण ही (इन शब्दों के नाम 'निघण्टव') हुए हों क्योंकि ये शब्द समाहृत (एक साथ पठित) होते हैं अथवा ये शब्द वेदों से चुने हुए होते हैं इसीलिए इनको निघण्टवः कहा जाता है।

नोट- प्रश्नोक्त विकल्पों में (a & b) दोनों सही हैं, जो कि प्रश्न में समुचित विकल्प नहीं है।

39. अधोलिखितेषु मनुस्मृतेः टीकाकारः कः?

(a) कमलाकरभट्टः (b) काशीनाथः
(c) कुल्लूकभट्टः (d) जीमूतवाहनः

उत्तर-(c)

''मनुस्मृतेः टीकाकारः कुल्लूकभट्टः अस्ति। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूकभट्ट जी हैं।

'मनुस्मृति, सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत ग्रन्थ है, इसमें समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र आदि विषयों का समावेश है। मनुस्मृति के महत्व को देखकर ही अनेक धर्मशास्त्रियों ने इस स्मृति पर टीकाएँ लिखीं, जिनमें मुख्य रुप से - मेधातिथि, गोविन्दराज एवं कुल्लूकभट्ट अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त नारायण, राघवानन्द, नन्दन तथा रामचन्द्र की टीकाएं भी उल्लेखनीय हैं।

- जीमूतवाहन विधि एवं धर्म के पण्डित थे। इन्होंने दायविभाग (दायभाग) नामक ग्रन्थ की रचना की है।

40. वाल्मीकिरामायणसुन्दरकाण्डे सर्गसङ्ख्या अस्ति-

(a) अष्टषष्टि :(68) (b) अशीतिः (80)
(c) एकसप्ततिः (71) (d) नवतिः (90)

उत्तर-(a)

वाल्मीकिरामायणसुन्दरकाण्डे अष्टषष्टिः सर्गसंख्या सन्ति। वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में 68 सर्ग एवं लगभग 2855 श्लोक हैं।

- बृहद्धर्मपुराण में श्राद्ध तथा देवकार्य में सुन्दरकाण्ड पाठ का विधान है– ''श्राद्धेषु देवकार्येषु पठेत् सुन्दरकाण्डम्''।

सुन्दरकाण्ड में वर्णित विषय- इस काण्ड में हनुमान द्वारा समुद्रलंघन करके लङ्का पहुंचना, सुरसा वृत्तान्त, लंकापुरी वर्णन, रावण के अन्तःपुर में प्रवेश, अशोकवाटिका में प्रवेश तथा सीता माता से भेंट करके उन्हें श्रीराम की मुद्रिका देना, अक्षयकुमार का वध, लंका दहन एवं लंका से वापसी का वर्णन है।

वाल्मीकिरामायण काण्ड-

(1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड,
(3) अरण्यकाण्ड, (4) किष्किन्धाकाण्ड,
(5) सुन्दरकाण्ड , (6) युद्धकाण्ड/ लंकाकाण्ड
(7) उत्तरकाण्ड।

41. रसदोषान् चिनुत-

A. पतत्प्रकर्षम्
B. व्यभिचारिभावानां शब्दवाच्यता
C. प्रतिकूलविभावादिग्रहः
D. अर्धान्तरैकवाचकम्
E. भग्नप्रक्रमम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(b)

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण-

''तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावनलकृती पुनः क्वापि ।''

इस लक्षण में तीन पद है-

(1) अदौषौ,

(2) सगुणौ तथा

(3) अनलङ्कृती पुनः क्वापि।

मम्मटानुसार दोष के तीन भेद हैं-

(1) रसदोष,

(2) अर्थदोष तथा

(3) शब्ददोष ।

रसदोष के 13 भेद होते हैं-

(1) व्यभिचारीभाव,

(2) रस,

(3) स्थायीभावों का अपने वाचक शब्द द्वारा कथन,

(4) अनुभाव,

(5) विभाव की कष्ट कल्पना द्वारा अभिव्यक्ति,

(6) रस के प्रतिकूल विभावादि का ग्रहण,

(7) रस की पुनः पुनः दीप्ति,

(8) रस का अनवसर विस्तार,

(9) अनवसर रसच्छेद,

(10) अप्रधान अथवा अङ्गरस का भी अत्यधिक विस्तार,

(11) अङ्गी अथवा प्रधान रस का त्याग,

(12) प्रकृतिविपर्यय,

(13) अनङ्ग, जो प्रकृत रस का उपकारक नहीं है, उसका कथन।

42. दशरूपकानुसारं कार्यावस्थे स्तः-

A. प्राप्त्याशा B. पताका

C. प्रकरी D. नियताप्तिः

E. बिन्दुः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) A, D केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर : (b)

आचार्य धनञ्जयकृत दशरूपक के अनुसार कार्यावस्थाओं के पाँच भेद होते हैं-

''अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः ।

आरम्भयत्नप्राप्त्याशा नियताप्तिः फलागमाः ॥

फल की इच्छावाले व्यक्तियों के द्वारा आरम्भ किये गये कार्य की पांच अवस्थाएं होती हैं- (1) आरम्भ, (2) यत्न, (3) प्राप्त्याशा, (4) नियताप्ति, (5) फलागम ।

आरम्भ- ''औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे''। (महान् फल की प्राप्ति के लिए केवल उत्सुकता का होना ही 'आरम्भ' कहलाता है)।

यत्न- ''प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः''। (फल के प्राप्त न होने पर उसके लिए अत्यन्त वेग के साथ कार्य प्रारम्भ कर देना ही 'प्रयत्न' कहलाता है)।

प्राप्त्याशा- "उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः''। (उपाय तथा फल प्राप्ति के विध्वंसक विघ्न की शंका दोनों की उपस्थिति से जो फल प्राप्ति की सम्भावना मात्र होती है, वह 'प्राप्त्याशा' कहलाती है।)

नियताप्ति - ''अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता'। (विघ्नों के अभाव के कारण प्राप्ति पूर्ण निश्चित हो जाना 'नियताप्ति' कहलाता है।)

फलागम- ''समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः''। (जैसा कि पहले कहा गया है, समग्र फल की प्राप्ति ही 'फलागम' है।)

43. अधोलिखितेषु मृच्छकटिकस्य पात्रे चिनुत-

A.चन्दनकः B मधुरिका

C. दर्दुरकः D. पाद्मिनिका

E, सानुमती

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) A, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर : (b)

महाकवि शूद्रक द्वारा विरचित 'मृच्छकटिकम्' दस अंको का प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें नायक- चारुदत्त (धीरप्रशान्त) एवं नायिका कुलजा-धूता, गणिका-वसन्तसेना हैं। इसके अन्य पात्रों में चन्दनक, राजा पालक का बलपति तथा दर्दुरक-जुआरी के रूप में वर्णित हैं।

मृच्छकटिकम् के पात्र	पात्रों का प्रकरण में अभिनय
मैत्रेय	चारुदत्त का मित्र विदूषक
शकार	राजा पालक का श्यालक, प्रतिनायक
विट	शकार का सहचर
कर्णपूरक	वसन्तसेना का भृत्य
शर्विलक	मदनिका का प्रेमी ब्राह्मण चोर
रोहसेन	चारुदत्त का पुत्र
अधिकरणिक	न्यायाधीश

44. अधोलिखितासु सूक्तिषु शुकनाशोपदेशे नियोजिते सूक्ती के ?

A. अकारणञ्च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य

B. गुणानुरोधन विना न सत्क्रिया

C. विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः

D. लोके पण्डिता अपि दाक्षिण्येनाकार्यं कुर्वन्ति

E. तपोवनानि नाम अतिथिजनस्य स्वगेहम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, E केवलम् (d) A, D केवलम्

उत्तर : (*)

- अकारणश्च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य। चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः किं वा प्रशमहेतुनापि न प्रचण्डतरीभवति। वडवानलो वारिणा- यह पंक्ति बाणभट्टकृत कादम्बरी के 'शुकनासोपदेश' नामक प्रकरण से उद्धृत है।
- निरत्ययं साम न दानवर्जितं न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम् ।
प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनीं गुणानुरोधेन बिना न सत्क्रिया ॥
~27 ॥ किरातार्जुनीयम्।
- इमामहं वेद न तावकीं धियं विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
विचिन्त्यन्त्या भवदापदं परां रूजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः
॥37॥ किरातार्जुनीयम्।
उपर्युक्त दोनों श्लोक 'किरातार्जुनीयम्' से उद्धृत हैं।
- तथाहि लोके पण्डिता अपि दाक्षिण्येनाकार्यं कुर्वन्तिऽइति।- यह पंक्ति 'दशकुमारचरितम्' से उद्धृत है।
- तपोवनानि नाम अतिथिजनस्य स्वगेहम् । यह सूक्ति महाकवि भास द्वारा विचरित 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रथमाङ्क से उद्धृत है।

नोट- प्रश्नोक्त विकल्पों में समुचित उत्तर नहीं है।

45. ध्वनिपरिवर्तनस्य दिशा अस्ति -

A. विषमीकरणम् B. सघोषीकरणम्
C. अर्थापकर्षः D. निर्द्वन्द्वता

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर-(a)

ध्वनि-परिवर्तन की दिशाएं -

(1) **समीकरण-** जब दो विषम ध्वनियां एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती है। **जैसे-** अग्नि-अग्गि, धर्म-धम्म।

(2) **विषमीकरण-** दो सम ध्वनियों में से एक ध्वनि विषम रूप धारण कर लेती है, ऐसा उच्चारण की सुविधा एवं अर्थ की स्पष्टता के लिए किया जाता है। **जैसे-** कंकण-कंगन, मुकुट-मउर, काक-काग, षष् -षट् आदि।

(3) **आगम -** इसमें उच्चारण की सुविधा के लिए शब्दों के आदि मध्य या अन्त में कुछ ध्वनियां जोड़ दी जाती हैं। जैसे- स्त्री-इस्त्री, स्टेशन-इस्टेशन, धर्म-धरम, प्रचार-परचार, कर्म-करम, गच्छत्-गच्छन्त, पत्र- पतई, हनुमत् - हनुमन्त आदि।

(4) **लोप-** इसमें मुख-सुख, प्रयत्नलाघव, स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप कर दिया जाता है। जैसे- अभ्यन्तर-भीतर, स्थाली- थाली, उपाध्याय-आ, उष्ट्र-ऊँट, स्कन्ध-कंधा, दण्डिन्, दण्डी, निम्ब-नीम, अनाज-नाज आदि ।

(5) **सघोषीकरण-** मुख-सुख के लिए अघोष ध्वनियों को घोष कर दिया जाता है। जैसे- काक-काग, एकादश-एगारह, कंकण-कंगन, शाक-साग आदि।

(6) समाक्षर लोप, (7) वर्ण-विपर्यय, (8) महाप्राणीकरण, (9) अल्पप्राणीकरण, (10) अघोषीकरण, (11) अनुनासिकीकरण, (12) ऊष्मीकरण, (13) सन्धि-कार्य, (14) मात्रा-भेद ।

46. अथर्ववेदेन सम्बद्धम्-

A. पारस्करगृह्यसूत्रम् B. प्रश्नोपनिषद्
C. छान्दोग्योपनिषद् D. मुण्डकोपनिषद्
E. सत्याषाढगृह्यसूत्रम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, D केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(b)

प्रश्नोपनिषद् एवं मुण्डकोपनिषद् अथर्ववेद से सम्बद्ध हैं।

वेद	प्रमुख उपनिषद्
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि
शुक्लयजुर्वेद	ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्
कृष्णयजुर्वेद	तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी,
	महानारायणोपनिषद्
सामवेद	छान्दोग्य, केनोपनिषद्
अथर्ववेद	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्योपनिषद्

47 ऋग्वेदस्य मन्त्रांशौ चिनुत

A. मा भतता भततरं द्विक्षन् ।
B. स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात् ।
C. यस्मिन् ऋचः साम यजूंषि ।
D. रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्य ।

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) B, D केवलम् (d) C, D केवलम्

उत्तर-(c)

- तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्॥
उपर्युक्त मंत्र ऋग्वेद के दसवें मण्डल का सूक्त है। यह नासदीय सूक्त का 5 वां मन्त्र है।
- रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्यचक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि॥
उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के यम-यमी (10/10) सूक्त से उद्धृत है। (यम ने पुनः कहा) दिन-रात में यम के लिए जो कल्पि भाग हैं,

उसे यजमान दें। सूर्य का तेज यम के लिए उदित हो। परस्पर सम्बद्ध दिन, द्युलोक तथा भूलोक यम के बन्धु हैं। यमी, यम के भतता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को धारण करें।

- मा भतता भततरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा। उपर्युक्त मन्त्र अथर्ववेद में उल्लिखित है।
- यस्मिन्नृचः साम यजुं यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः- यह मन्त्र यजुर्वेद (34.05) से सम्बद्ध है।

48. यजुर्वेदस्य भाष्यकारौ स्तः-

A. महीधरः B. मल्लिनाथः
C. उव्वटः D. शङ्कराचार्यः
E. नीलकण्ठः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) A, C केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(c)

यजुर्वेद के भाष्यकार उव्वट एवं महीधर हैं। दोनों भाष्यकार 'शुक्ल-यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता' से सम्बन्धित हैं।

(1) **उव्वट-** यजुर्वेद भाष्य के अन्त में अपना परिचय दिया है, राजा भोज के शासनकाल में इन्होंने वेदभाष्य किया। यजुर्वेद भाष्य के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थ - ऋक्प्रातिशाख्य की टीका, शुक्ल यजुः प्रातिशाख्य की टीका, ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य, ईशोपनिषद् पर भाष्य आदि हैं।

(2) **महीधर-** इन्होनें यजुर्वेद भाष्य का नाम 'वेददीप' रखा है। इन्होनें यजुर्वेद पर उव्वट के भाष्य को ही आधार बनाया है तथा उसका विस्तार किया है। इन्होंने एक तन्त्रग्रन्थ 'मन्त्रमहोदधि' भी लिखा है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हलायुध ने काण्वसंहिता पर 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामक भाष्य लिखा है।
- सायण, अनन्ताचार्य एवं आनन्दबोध भट्टोपाध्याय का भी काण्व संहिता पर भाष्य प्राप्त होता है।
- माधव, सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं, इनके भाष्य का नाम 'विवरण' है।

49. अरस्तुप्रणीते रचने स्तः

A. पोएटिक्स B. पेरीहुप्सुस
C. रिपब्लिक D. ईस्थेटिक
E. आर्स पोएतिका

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) A, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर : (*)

- 'पोएटिक्स' अरस्तू द्वारा विरचित साहित्य चिंतन एवं सिद्धान्त सम्बन्धी पुस्तक है। यह नाट्यसिद्धान्त सम्बन्धी विश्व की सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध पुस्तक है। इसमें अरस्तू ने काव्य के अर्थ में ग्रीक काव्य तथा नाटक दोनों को शामिल किया है। इन्होनें काव्य में प्रगति काव्य तथा महाकाव्य दोनों को शामिल किया है। नाटकों में इन्होनें कॉमेडी, ट्रेजडी तथा सटायर का उल्लेख किया है।
- लोंजाइनस की प्रसिद्ध रचना का नाम 'पेरीहुप्सुस' है। इसका अंग्रेजी में 'ऑन द सब्लाइम' नाम से अनुवाद किया गया। इसी को हिन्दी में 'उदात्त' की संज्ञा दी गयी।
- 'रिपब्लिक', प्लेटो द्वारा 380 ईसा पूर्व के आसपास रचित ग्रन्थ है।
- 'ईस्थेटिक', बेनेदेत्तो क्रोचे की कृति एवं 'आर्स पोएतिका' होरेस सी की कृति है।

नोट- प्रश्नोक्त विकल्पों में उचित विकल्प नहीं है।

50. तर्कभाषानुसारं पदार्थेषु परिगणिते न स्तः

A. अवयवः B. निग्रहस्थानम्
C. प्रतिश्रुतिः D. संवारः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) A, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर-(c)

तर्कभाषानुसारं पदार्थेषु प्रतिश्रुतिः संवारः च न परिगणिते स्तः।

तर्कभासानुसार पदार्थ के 16 भेद हैं-

(1) प्रमाण, (2) प्रमेय,
(3) संशय, (4) प्रयोजन,
(5) दृष्टान्त, (6) सिद्धान्त,
(7) अवयव, (8) तर्क,
(9) निर्णय, (10) वाद,
(11) जल्प (12) वितण्डा,
(13) हेत्वाभास, (14) छल,
(15) जाति, (16) निग्रहस्थान।

जबकि **वैशेषिक सात पदार्थ ही स्वीकारता है-**

(1) द्रव्य, (2) गुण,
(3) कर्म, (4) सामान्य,
(5) विशेष, (6) समवाय,
(7) अभाव

- न्याय चार प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
- वैशेषिक दो प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान
- सांख्य तीन प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

51. असिद्धहेत्वाभासस्य प्रसङ्गे असिद्धेः प्रकारः अस्ति

A. निगमनासिद्धिः B. स्वरूपासिद्धिः

C. व्याप्यत्वासिद्धिः D. साध्यासिद्धिः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर-(b)

असिद्धहेत्वाभासस्य प्रसङ्गे असिद्धेः प्रकारः आश्रयासिद्धि, स्वरूपासिद्धिः व्याप्यत्वासिद्धिः च सन्ति।

हेत्वाभास- ''असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्ययापदिष्टोभेदात् पञ्च।

असिद्ध, विरूद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट के भेद से हेत्वाभास पांच प्रकार का होता है।

असिद्ध हेत्वाभास- 'लिङ्गत्वेनानिश्चितोहेतुरसिद्धः', लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है।

असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद हैं-

(1) आश्रयासिद्ध,

(2) स्वरूपासिद्ध,

(3) व्याप्यत्वासिद्ध।

(1) **आश्रयासिद्ध हेत्वाभास-** 'यस्य हेतोराश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः', जिस हेतु के आश्रय का ही अभाव होता है उसे आश्रयासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। जैसे- गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् ।

(2) **स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास-** 'यो हेतुराश्रये नावगम्यते', जो हेतु आश्रय में सिद्ध नहीं होता है उसे स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं, जैसे- अनित्यः शब्दः चाक्षुषत्वात् घटवत् ।

(3) **व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास-** 'यत्र हेतोर्व्याप्तिर्नावगम्यते', जहां हेतु में व्याप्ति सिद्ध नहीं होती है वह व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास होता है। जैसे- शब्दः क्षणिकः सत्वात् क्रत्वन्तवर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं, हिंसात्त्वात् क्रतुवाह्यहिंसावत् ।

52. नामधेयस्य निमित्तम् अस्ति -

A. नियमविधिवाक्यम् B. मत्वर्थलक्षणाभयम्

C. पर्युदासोपसंहारौ D. तत्प्रख्यशास्त्रम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, D केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) B, C केवलम्

उत्तर-(b)

''नामधेयानां च विधेयार्थपरिच्छेदकतयार्थवत्वम्। तथा हि-उद्भिदा यजेत् पशुकामः। सम्पाद्य कर्म का (अन्यों से) व्यावर्तक होने से नामधेय सार्थक है, जैसे कि 'उद्भिदा यजेत् पशुकामः' इसमें उद्भिद् शब्द याग का नाम है।

''नामधेयत्वं च निमित्तचतुष्टयात्। मत्वर्थलक्षणाभयाद्वाक्य भेदभयात्तत्प्रख्य शास्त्रात्तद्व्यपदेशाच्चेति। नामधेयत्व चार कारणों से होता है –

(1) मत्वर्थलक्षणा के भय से (2) वाक्यभेद के भय से

(3) तत्प्रख्यशास्त्र से (4) तद्व्यपदेश से।

- उद्भिदा यजेत् पशुकामः इस वाक्य में उद्भिद् शब्द का नामधेयत्व मत्वर्थलक्षणा के भय से है।

53. अज्ञानसमष्टिः उच्यते-

A. सुषुप्तिः B. कारणशरीरम्

C. जगत्कारणम् D. ईश्वरः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B, C केवलम् (b) A, D केवलम्

(c) A, C केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर : (*)

''इयं समष्टिरूत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना। एतदुपहिंत चैतन्यं सर्वज्ञत्वसर्वेश्वरत्व - सर्वनियन्तृत्वादिगुणकं सदव्यक्तमन्तर्यामी जगत्कारणमीश्वर इति च व्यपदिश्यते सकलाज्ञानावभासकत्त्वात्। 'यः सर्वज्ञः सर्ववित् 'इति श्रुतेः। अज्ञान की यह समष्टि (माया) उत्कृष्ट (ईश्वर) उपाधि होने के कारण विशुद्धसत्त्व प्रधान से युक्त होती है। इससे उपहित हुआ चैतन्य समस्त अज्ञानराशि का प्रकाशक होने से सर्वज्ञता, सर्वेश्वरता, सर्वनियामकता आदि गुणों से युक्त, अव्यक्त, अन्तर्यामी, जगत् का कारण और ईश्वर कहा जाता है। ''यः सर्वज्ञः सर्ववित्'' इत्यादि श्रुति प्रमाण है।

वेदान्त के सृष्टिक्रम में ब्रह्म के पश्चात् ईश्वर का स्थान है। ईश्वर को जगत् का कारण होने से कारण शरीर, आनन्द की प्रचुरता के कारण आनन्दमयकोष, सभी कुछ विलीन होने के कारण सुषुप्ति एवं लयस्थान कहा गया है।

समष्टिरूप अज्ञान से उपहित चैतन्य की 'ईश्वर' संज्ञा है। व्यष्टिरूप अज्ञान से उपहित चैतन्य की 'जीव' अथवा 'प्राज्ञ' संज्ञा है। **नोट -** प्रश्नोक्त विकल्पों में चारों सही है किंतु उचित विकल्प नहीं है।

54. व्यक्तम् अस्ति-

A. नित्यम् B. अनाश्रितम्

C. हेतुमत् D. सावयवम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) C, D केवलम्
(c) B, D केवलम् (d) C, B केवलम्

उत्तर-(b)

''हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम् ॥10॥ सांख्यकारिका।
व्यक्त एवं अव्यक्त पदार्थों का सादृश्य एवं वैषम्य का निरूपण –

व्यक्त (महत् आदि कार्य)	अव्यक्त (प्रकृति)
हेतुमान्	अहेतुमान्
अनित्य	नित्य
अव्यापी	व्यापी
सक्रिय	निष्क्रिय
अनेक	एक
मूलकारण पर आश्रित	अनाश्रित
लिङ्गसहित	लिङ्गरहित
अवयवयुक्त	निरवयव
परतन्त्र	स्वतन्त्र

55. जैनदर्शने निर्जरायाः भेदः अस्ति-

A. परिष्कृतिः B. यथाकालः
C. स्थितिसंहारः D. औपक्रमिकः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) C, D केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) A, B केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर-(d)

जैनदर्शने निर्जरायाः भेदः द्विविधा स्तः।
निर्जरा - 'अर्जितस्य कर्मणस्तपः प्रभृतिभिर्निर्जरणं निर्जराख्यं तत्त्वम्'। अर्जित किए गए कर्म को अपनी तपस्या इत्यादि से नष्ट कर देना 'निर्जरा' नामक तत्व कहलाता है।
'निर्जरा द्विविधा यथाकालौपक्रमिकभेदात्'। यथाकाल तथा औपक्रमिक के भेद से निर्जरा दो प्रकार की होती है।
यथाकाल निर्जरा - 'यस्मिन्काले यत्कर्म फलप्रदत्वेनाभिमतं तस्मिन्नेव काले फलदानाद् भवन्ती निर्जरा कामादिपाकजेति च जेगीयते। जब किसी काल में कोई कर्म फलदायक समझा जाता है, तब उसी काल में फल देने के पश्चात् उत्पन्न होने वाली निर्जरा, कामनाओं की पूर्ति के बाद भी होती है। अभिप्राय यह है कि कर्म का किसी कालविशेष में फलोत्पादन के पश्चात् नष्ट हो जाना 'यथाकाल' निर्जरा है।
औपक्रमिक निर्जरा - 'यत्कर्म तपोबलात्स्वकामनयोदयावलिं प्रवेश्य प्रपद्यते सौपक्रमिकनिर्जरा', – जब तपोबल द्वारा अपनी इच्छा से उदयावस्था में कर्म को जलाकर नष्ट किया जाय वह 'औपक्रमिक' निर्जरा है।

56. 'अधि' इति उपसर्गः ब्रूते –

A. उपरिभावम् B. ऐश्वर्यम्
C. संसर्गम् D. सादृश्यापरपर्यायम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर-(a)

'अधि इति उपसर्गः उपरिभावमैश्वर्यं वा ब्रूते'। अधि उपसर्ग 'ऊपर होना' अथवा 'ऐश्वर्य' को कहता है।
उपसर्गों के अर्थ प्रदर्शन में यास्काचार्य ने अपनी शैली के अनुसार बड़े संक्षेप से कार्य किया है, यास्काचार्य ने आवश्यक क्रियाओं का भी प्रयोग नहीं करना चाहा तथा उपलक्षण के रूप में उपसर्गों के अत्यन्त प्रसिद्ध अर्थों को ही दिखाया है –
उपसर्गों के कुछ प्रधान अर्थ –

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग	अर्थ
आ	इधर के अर्थ में	नि, अव्	विनिग्रह अर्थ वाले है
प्र, परा	उधर के अर्थ में	सम्	एकत्व अर्थ में
अभि	सामुख्य अर्थ में	अनु	सादृश्य अर्थ में
प्रति	पीछे अर्थ में	अपरभाव	पीछे होना
अति, सु	आदर अर्थ में	उप	आधिक्य अर्थ में
निर्, दुर्	अनादर अर्थ में	परि	चारों ओर

57. अभ्याससम्बन्धि कार्यम् अस्ति-

A. 'अत आदेः' इत्यनेन विधीयमानं कार्यम्
B. 'कुहोश्चुः' इत्यनेन विधीयमानं कार्यम्
C. 'आत्मनेपदेष्वनतः' इत्यनेन विधीयमानं कार्यम्
D. 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' इत्यनेन विधीयमानं कार्यम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, C केवलम् (b) B, D केवलम्
(c) A, B केवलम् (d) C, D केवलम्

उत्तर-(c)

'अत आदेः' - अभ्यास में विद्यमान आदि ह्रस्व अकार को दीर्घ होता है। इस सूत्र में 'अत्रलोपोऽभ्यासस्य' से अभ्यासस्य तथा 'दीर्घःइणःकिति' से दीर्घः की अनुवृत्ति आती है। जैसे - 'आत'
'कुहोश्चुः - अभ्यास में विद्यमान कवर्ग और हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है। इस सूत्र से केवल अभ्यास में ही कार्य करने के कारण जहाँ-जहाँ द्वित्व होता है वहीं-वहीं प्रवृत्त होता है, क्योंकि जहाँ द्वित्व होता है, अभ्यास भी वहीं मिलता है।
'आत्मनेपदेष्वनतः'- ह्रस्व अकार से भिन्न वर्ण से परे आत्मनेपद के अकार के स्थान पर 'अत्' आदेश होता है। जैसे - ऐधिषत आदि में।

'लिटिधातोरनभ्यासस्य' - लिट् के परे होने पर अनभ्यास धातु के अवयव प्रथम एकाच् को द्वित्व हो जाता है लेकिन यदि धातु का पहला अक्षर अच् हो तो उस अच् से परे दूसरे एकाच् भाग को द्वित्व होता है।

58. वर्जनम् अर्थः गम्यते

A. 'अप हरेः संसारः' इत्यनेन
B. 'हरिं परि' इत्यनेन
C. 'परि हरेः संसारः' इत्यनेन
D. 'आ सकलाद् ब्रह्म' इत्यनेन

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) A, C केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर-(c)

पञ्चम्यपाङ्परिभिः - कर्मप्रवचनीय संज्ञक अप, आङ् तथा परि के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
जैसे - 'अप हरेः संसारः' - यहाँ वर्जनार्थक 'अप' शब्द की 'अपपरी वर्जने' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है तथा प्रकृत सूत्र से उसके योग में 'हरि' में पञ्चमी विभक्ति हुई।
'परि हरेः संसारः' (हरि को छोड़कर) - यहाँ भी परि 'वर्जन' अर्थ का द्योतक है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

लक्षण, हीन, अधिक आदि अर्थ द्योतित होने पर कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे - हरिं परि (हरि को लक्ष्य करके)।

59. येषाम् आम्रेडितानां शब्दानां योगे द्वितीयाविभक्तिः विहिता अस्ति तेषु न वर्तते-

A. अध्यधि B. किञ्चित्-किञ्चित्
C. पुनः पुनः D. अधोऽधः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, D केवलम् (b) A, C केवलम्
(c) B, C केवलम् (d) B, D केवलम्

उत्तर : (c)

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः इन छः अव्यय पदों का जिससे संयोग हो उसमें द्वितीया विभक्ति होती है–
''उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।'' (वार्तिक)
जैसे - उभयतः कृष्णं गोपाः (कष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं)।
सर्वतः कृष्णम्, धिक् कृष्णाभक्तम्, उपर्युपरि लोकं हरिः, अध्यधि लोकम्, तथा अधोऽधःलोकम्, पातालः आदि।

60. सत्यं कथनम् अस्ति -

A. 'अपि' शब्दः सम्भावनेऽर्थे कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञः अस्ति।
B. 'सुषिक्तं किं तवात्र' इत्यत्र पूजार्थः गम्यमानः अस्ति ।
C. 'अति देवान् कृष्णः' इत्यत्र अतिक्रमणं पूजा च गम्यमाने भवतः।
D. 'उप हरिं सुराः' इत्यनेन सामीप्यमर्थः गम्यते ।

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B, D केवलम् (b) A, B केवलम्
(c) B, C केवलम् (d) A, C केवलम्

उत्तर-(d)

'अतिरतिक्रमणे च' - 'अति' शब्द की 'अतिक्रमण' तथा 'पूजा' अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।
जैसे - 'अति देवान् कृष्णः' (कृष्ण देवताओं से बढ़कर हैं) - यहाँ 'अति' से 'अतिक्रमण' अर्थ द्योतित होने के कारण प्रकृत सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई तथा 'कर्मप्रवचनीयुक्ते द्वितीया' से 'देवान्' में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
'अपिःपदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु - 'अपि' शब्द की पदार्थ, सम्भावन, अन्ववसर्ग (कामचार अर्थात् करें या न करें), गर्हा (निन्दा) तथा समुच्चय अर्थों में कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। जैसे - सर्पिषोऽपि स्यात् (घी का बिन्दु हो सकता है)।
'उपोऽधिके च' - उप शब्द से अधिक तथा हीन अर्थ द्योतित होने पर उप की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। किन्तु उप का अर्थ 'हीन' होने पर द्वितीया विभक्ति तथा 'अधिक' होने पर सप्तमी विभक्ति होगी। जैसे - उप हरिं सुराः (देवता हरि से छोटे हैं) और अधिक अर्थ में 'उपपरार्धे हरेगुणाः' ऐसा प्रयोग होगा, न कि 'उपपरार्धम्'।

61. सत्यकथनम् अस्ति -

A. दुरः षत्वणत्वयोः उपसर्गत्वं न भवति
B. 'ङसिङसोश्च' इति सूत्रं पररूपमेकादेशं करोति
C. 'अन्तर' इति शब्दस्य अङ्प्रत्ययस्य विधाने किविधाने णत्वविधाने च उपसर्गत्वं भवति
D. 'लिङ्निमित्ते ऌङ् क्रियातिपत्तौ' इत्येतत् सूत्रं वर्तमानकालेऽर्थे प्रत्ययं विदधाति

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, D केवलम् (b) B, C केवलम्
(c) C, D केवलम् (d) A, C केवलम्

उत्तर-(d)

(अ) **दुरःषत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः ।** 'दुर्' उपसर्ग को षत्व, णत्व में निमित्त माना जाता है तो उसको (दुर् को) उपसर्ग नहीं माना जाता है। (इत्युक्ते, षत्वे, णत्वे च कर्त्तव्ये दुस् इत्यस्य, दुर् इत्यस्य च उपसर्गसंज्ञायाः प्रतिषेधः भवति।)

(ब) **अन्तश्शब्दस्य अङ्किविधिषत्वेषु उपसर्गत्वं वाच्यम्।** अन्तः शब्द को अङ प्रत्यय, कि प्रत्यय, णत्व प्रत्यय विधान हो इन सभी में उपसर्ग माना जाता है (अन्तर शब्दस्य अङ्विधिकर्त्तव्ये, किविधिकर्त्तव्ये, तथा णत्वे कर्त्तव्ये उपसर्ग संज्ञा भवति।) जैसे - अन्तर् + धा = अन्तर्धा। अन्तर् + धिः = अन्तर्धिः।

62. समाक्षरलोपस्य (HAPLOLOGY) उदाहरणम् अस्ति -

A. खरीददार - खरीदार B. वानर -बन्दर

C. नाककटा - नकटा D. प्रसाद - परसाद

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) A, C केवलम् (d) C, D केवलम्

उत्तर-(c)

खरीददार - खरीदार, नाककटा-नकटा इति समाक्षरलोपस्य उदाहरणम् अस्ति।

समाक्षरलोप - समाक्षरलोप को अक्षर-लोप एवं सम-ध्वनिलोप भी कहते हैं। जहां पर दो समान ध्वनियाँ, एक के बाद दूसरी आती हैं, वहाँ पर उच्चारण सौकर्य के लिए उनमें एक का लोप कर दिया जाता है। यह नामकरण अमेरिकन भाषाविज्ञानी प्रो. ब्लूमफील्ड ने किया था।

उदाहरण - स्वर्णगङ्गा - स्वर्गङ्गा, जहीहि - जहि

हिरण्यमय - हिरण्मय, त्रि+ऋच = तृच

समीकरण - समीकरण में दो विषम ध्वनियाँ एकत्र होकर एक ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती है। जैसे - अग्नि - अग्गि, पत्र - पत्ता, चक्र - चक्का, धर्म - धम्म, वल्कल - वक्कल, तत् + लीनः = तल्लीन आदि।

विषमीकरण - इसमें दो सम ध्वनियों में से एक ध्वनि विषम रूप धारण कर लेती है। जैसे - काक-काग, कंकण-कंगन, षष् - षट्, मुकुट - मउर, गुरू-गरू।

63. अर्थशास्त्रानुसारं पञ्चाङ्गे मन्त्रे परिगाणितम् -

A. विनयमूलो दण्डः B. द्वैधीभावः

C. पुरुषद्रव्यसंपद् D. विनिपातप्रतीकारः

E. असिद्धव्यवहारः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(c)

''कर्मणामारम्भोपायः पुरुषद्रव्यसंपद् देशकाल विभागः विनिपातप्रतीकारः कार्यसिद्धिरिति पञ्चाङ्गो मन्त्रः।

अर्थात् मन्त्र के पाँच अङ्ग होते हैं – (1) कार्यारम्भ करने का उपाय (2) पुरुष तथा द्रव्य सम्पत्ति (3) देश-काल का विभाग (4) विघ्नप्रतिकार (5) कार्यसिद्धि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मनु के अनुसार बारह अमात्य होने चाहिए (मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान् कुर्वीतेति मानवाः)।
- बृहस्पति के अनुसार सोलह मंत्री होने चाहिए (षोडशेति बार्हस्पत्याः)।
- आचार्य कौटिल्य के अनुसार कार्य करने वाले पुरूषों के सामर्थ्यानुसार ही अमात्यों की संख्या नियत होनी चाहिए। (यथासामर्थ्यमिति कौटिल्यः)।

64. मनुस्मृतौ वर्णितम् -

A. अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम् ।

B. धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ।

C. आवेदयति चेत् राज्ञे व्यवहारपदं हिं तत् ।

D. धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

E. उभयोः प्रतिभूः ग्राह्यः समर्थः कार्यनिर्णये।

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(a)

''अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।2/13।। मनु.

अर्थ एवं काम में जो आसक्त नहीं हैं उनको धर्मज्ञान उपदेश किया जाता है तथा धर्म को जानने की इच्छा करने वालों को वेद ही उत्तम प्रमाण है।

''अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।
वाक्चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता।।2/159।। मनु.

धर्म की इच्छा करने वाला मनुष्य प्राणियों को अहिंसा से ही कल्याण के लिए शिक्षा दे तथा मीठी एवं कोमल वाणी बोले।

मनुस्मृति की महत्वपूर्ण सूक्तियाँ -

- श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
- 'वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।
- 'अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्षते। कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः।।

65. याज्ञवल्क्यस्मृतेः टीकाकारौ स्तः -

A. मल्लिनाथः B. विश्वेश्वरः

C. शान्तरक्षितः D. शूलपाणिः

E. अपरादित्यः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) B, E केवलम्

उत्तर-(*)

याज्ञवल्क्यस्मृति पर प्राप्त प्रमुख टीकाएं – (1) विश्वरूप की बालक्रीडन (2) विज्ञानेश्वर कृत मिताक्षरा (3) शूलपाणिकृत दीपकलिका (4) अपरार्क, नन्दपण्डित की मिताक्षरा पर प्रमीताक्षरा (5) विश्वेश्वर भट्ट की सुबोधिनी नामक टीका (6) बालम्भट्ट कृत बालम्भट्टी टीका अत्यन्त प्रसिद्ध है।

याज्ञवल्क्य स्मृति को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है – (1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय।

नोट - प्रश्नोक्त विकल्प में उचित विकल्प नहीं है।

66. समुद्रगुप्तस्य अभिलेखः अस्ति -

A. नासिक-गुहाभिलेखः B. प्रयागस्तम्भ - अभिलेखः

C. एरणस्तम्भः अभिलेखः D. मन्दसौर- अभिलेखः

E. रुम्मिनदेई-स्तम्भ-अभिलेखः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(b)

प्रयाग एवं एरणस्तम्भलेख समुद्रगुप्त के अभिलेख हैं। प्रयाग प्रशस्ति समतट समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा विरचित लेख था। इस लेख को समुद्रगुप्त द्वारा 370 ई. में कौशाम्बी से लाए गए अशोक स्तम्भ पर खुदवाया गया था। 'एरण अभिलेख' को कनिंघम महोदय ने खोजा था। समुद्रगुप्त के इस शिलालेख में एरण को 'एरकिण' कहा गया है। यह वर्तमान में कोलकाता संग्रहालय में सुरक्षित है।

- यशोधर्मन - विष्णुवर्धन का मन्दसौर शिलालेख मध्यप्रदेश के मन्दसौर में स्थित एक शिलालेख है, जो संस्कृत भाषा एवं गुप्त लिपि में है।
- रुम्मिनदेई स्तम्भलेख या लुम्बिनी स्तम्भलेख नेपाल के लुम्बिनी में स्थित एक अशोक स्तम्भ पर ब्राह्मी लिपि में अङ्कित संदेश है। इसकी खोज दिसम्बर 1986 में अलोइस एन्टन फुहरर ने की थी।
- नासिक गुहाभिलेख से पुलुमावी के शासन के दूसरे, छठें, उन्नीसवें एवं बाइसवें वर्ष के लेख मिलते हैं। इन लेखों का प्रकाशन सर्वप्रथम 1865 ई. में आर्थर वेस्ट तथा एडवर्ड वेस्ट द्वारा 'जर्नल ऑफ द बाम्बे ब्रांच ऑफ रायल एशियाटिक सोसायटी, खण्ड 7 में करवाया गया है।

67. मन्वन्तरेषु परिगणितम् अस्ति -

A. कूर्ममन्वन्तरम् B. लोमसमन्वन्तरम्

C. तामसमन्वन्तरम् D. उत्तममन्वन्तरम्

E. वराहमन्वन्तरम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B केवलम् (b) B, C केवलम्

(c) C, D केवलम् (d) D, E केवलम्

उत्तर-(c)

मन्वन्तर हिन्दू धर्म के अनुसार, मानवता के प्रजनक की आयु होती है। यह समय मापन की खगोलीय अवधि है।

पुराणों के अनुसार मन्वन्तर चौदह प्रकार का होता है – (1) स्वायम्भुव मनु (2) स्वारोचिष मनु (3) उत्तम मनु (4) तामस मनु (5) रैवत मनु (6) चाक्षुष मनु (7) वैवस्वत मनु (8) सावर्णि मनु (9) दक्षसावर्णि मनु (10) ब्रह्मसावर्णि (11) धर्मसावर्णि (12) रुद्रसावर्णि (13) देवसावर्णि (14) इन्द्रसावर्णि।

पुराण का लक्षण -

''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।''

सर्ग - सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन।

प्रतिसर्ग - प्रलय एवं सृष्टि का पुनः प्रादुर्भाव।

मन्वन्तर - प्रत्येक मनु का काल तथा उस समय की प्रमुख घटनाएं।

वंश - देवों एवं ऋषियों की वंशावली।

वंशानुचरित - सूर्य एवं चन्द्रवंशी राजाओं का जीवन-चरित।

68. समुचितं योजयत-

सूची I	**सूची II**
A. तवलकार-ब्राह्मणम्	I. ऋग्वेदः
B. ऐतरयोपनिषद्	II. यजुर्वेदः
C. कालसूक्तम्	III. सामवेदः
D. प्रजापतिसूक्तम्	IV. अथर्ववेदः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) A-III, B-I, C-IV, D-II

(b) A-I, B-III, C-II, D-IV

(c) A-IV, B-II, C-I, D-III

(d) A-II, B-IV, C-I, D-III

उत्तर-(a)

सामवेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ - (कौथुमीय) - (1) ताण्ड्य महाब्राह्मण (पंचविंश या प्रौढ़) (2) षड्विंश ब्राह्मण (3) सामविधान (4) आर्षेय (5) मंत्र (6) देवताध्याय (7) वंश (8) संहितोपनिषद् ब्राह्मण। (जैमिनीय) शाखा - (1) जैमिनीय ब्राह्मण (2) जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण (3) जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण।

प्रमुख उपनिषद् -
ऋग्वेद - ऐतेय, कौषीतकि, बाष्कल मंत्रोपनिषद्।
शुक्ल यजुर्वेद - ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्।
कृष्ण यजुर्वेद - तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायणोपनिषद्।
सामवेद - छान्दोग्य, केनोपनिषद्।
अथर्ववेद - प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्योपनिषद्।
अथर्ववेद के महत्वपूर्ण सूक्त - कालसूक्त, पृथिवी सूक्त, ब्रह्मचर्य सूक्त, विवाह सूक्त, व्रात्य सूक्त, मधुविद्या-सूक्त, ब्रह्मविद्या सूक्त आदि।
प्रजापति सूक्त, यजुर्वेद से सम्बन्धित है।

69. यास्कानुसारं यथोचित मेलयत -

सूची I	सूची II
A. अनु इति उपसर्गः	I. सर्वतोभावं ब्रूते
B. अपि इति उपसर्गः	II. उपजनं ब्रूते
C. उप इति उपसर्गः	III. संसर्गं ब्रूते
D. परि इति उपसर्गः	IV. सादृश्यापरभावं ब्रूते

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -
(a) A-I, B-IV, C-II, D-III
(b) A-II, B-I, C-IV, D-II
(c) A-IV, B-III, C-II, D-I
(d) A-I, B-II, C-III, D-IV

उत्तर-(c)

उपसर्गों के अर्थ प्रदर्शन में यास्काचार्य ने अपनी शैली के अनुसार अत्यन्त संक्षेप में कार्य किया है, यास्काचार्य ने आवश्यक क्रियाओं का भी प्रयोग नहीं करना चाहा तथा उपलक्षण के रूप में सर्गों के प्रसिद्ध अर्थों को ही दिखलाया है।
उपसर्गों के कुछ प्रधान अर्थ –

उपसर्ग	अर्थ
अनु	सादृश्य अर्थ में
अपि	संसर्ग अर्थ में
उप	उपजन (आधिक्य) अर्थ
परि	चारों ओर होने को कहता है
आ	इधर के अर्थ में
प्र, परा	उधर के अर्थ में
अभि	सामुख्यार्थ में
प्रति	पीछे अर्थ में
अति, सु	आदर अर्थ में
निर्, दुर्	अनादर अर्थ में
नि, अव्	विनिग्रह अर्थ में
सम्	एकत्व अर्थ में
अपरभाव	पीछे होना

70. यथोचितं मेलयत -

सूची I	सूची II
A. नाममात्रेण वस्तुसंकीर्तनम्	I. निर्विकल्पकम्
B. असाधारणधर्मवचनम्	II. परीक्षा
C. लक्षितस्य लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः	III. लक्षणम्
D. नामजात्यादियोजनाविहीनं ज्ञानम्	IV. उद्देशः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत -
(a) A-III, B-I, C-IV, D-II
(b) A-II, B-IV, C-I, D-II
(c) A-I, B-II, C-III, D-IV
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

उत्तर-(d)

भगवान् आद्यशङ्कराचार्य कहते हैं कि ''शास्त्र स्वयं साक्षात् श्री भगवान् के ही अवतार स्वरूप हैं, इसलिए शास्त्र वचनों पर शङ्का नहीं करनी चाहिए, क्योंकि शास्त्र पर शङ्का का अर्थ होता है स्वयं श्री भगवान् पर शङ्का करना। इसलिए शास्त्रयुक्त कोई भी बात अकर्त्तव्य नहीं हो सकती।
त्रिविधा प्रवृत्ति - उद्देश, लक्षण एवं परीक्षा।
उद्देश - उद्देशस्तु नाममात्रेण वस्तुसङ्कीर्तनम्। (जहां पर केवल नाममात्र से वस्तु का सङ्कीर्त्तन हो उसे उद्देश कहते हैं)।
लक्षण - लक्षणं त्वसाधारणधर्मवचनम्। (असाधारण धर्मवचन लक्षण कहलाता है)। जैसे - गलकम्बल गाय का लक्षण है।
परीक्षा - लक्षितस्य लक्षणं उत्पद्यते नवेति विचारः परीक्षा। (लक्षित का लक्षण ठीक है या नहीं इसका विचार परीक्षा कहलाता है।
निर्विकल्पक - नामजात्यादियोजनाविहीनं ज्ञानम् निर्विकल्पकम्।

71. यथोचितं मेलयत -

सूची I	सूची II
A. ज्ञानपदवेदनीयस्य नीलाद्यवभासस्य चित्तस्य नीलादौ आलम्बनप्रत्ययात्	I. विषयग्रहणप्रतिनियमः भवति
B. समनन्तरप्रत्ययात्	II. आलोकात स्पष्टता भवति
C. सहकारिप्रत्ययात्	III. प्राचीनज्ञानोद्बोधरूपता भवति
D. चक्षुषोऽधिपतिप्रत्ययात्	IV. नीलाकारता भवति

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-
(a) A-IV, B-III, C-II, D-I
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-II, B-IV, C-I, D-III
(d) A-III, B-I, C-IV, D-II

उत्तर-(a)

बौद्ध दर्शन के अनुसार ज्ञान के चार कारण — ''चत्वारः प्रत्ययाः प्रसिद्धा आलम्बन - समनन्तर - सहकार्यधिपतिरूपाः।(चार कारण प्रसिद्ध हैं – (1) आलम्बन (2) समनन्तर (3) सहकारी (4) अधिपति)।

आलम्बन - ''ज्ञानपदवेदनीयस्य नीलद्यवभासस्य चित्तस्य नीलादालम्बन प्रत्ययान्नीलाकारता भवति।'' (ज्ञान शब्द से समझे जाने वाले नीलादि की प्रतीति का, जिसे चित्त भी कहते हैं, नील पदार्थ से, आलम्बन के कारण ही नील-रूप बनता है।)

समनन्तर - ''समनन्तर प्रत्ययात् प्राचीनज्ञानोद्बोधरूपता''। (समनन्तर के कारण ही पूर्वक्षण के ज्ञान से आकार-ग्रहण की शक्ति आती है।)

सहकारी - ''सहकारिप्रत्ययात् आलोकात् स्पष्टता''। (सहकारी के कारण ही प्रकाश से स्पष्टता होती है।)

अधिपति - ''चक्षुषोऽधिपतिप्रत्ययाद्विषयग्रहणप्रतिनियमः''। (अधिपति के कारण आंख द्वारा विषय के ग्रहण का नियन्त्रण होता है)।

72. यथोचितं मेलयत-

सूची I	**सूची** II
A. करभोरूः	I. औपम्यम्
B. वामोरूः	II. अनौपम्यम्
C. गौरमुखा	III. देवता
D. सूर्या	IV. सञ्ज्ञा

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-II, B-III, C-I, D-IV
(b) A-IV, B-I, C-III, D-II
(c) A-III, B-IV, C-II, D-I
(d) A-I, B-II, C-IV, D-III

उत्तर-(d)

''ऊरुत्तरपदादौपम्ये'' - जिसका पूर्वपद उपमानवाची तथा उत्तरपद ऊरू हो तो उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है। जैसे - करभोरु : - करभौ इव ऊरु यस्याः (करभ के समान जंघा वाली स्त्री)।

''संहितशफलक्षणवामादेश्च'' - संहित, शफ, लक्षण, वाम आदि में हों तथा ऊरु उत्तर पद में हों ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ऊङ् प्रत्यय होता है।
जैसे - संहितोरुः, शफोरुः, लक्षणोरुः, वामोरुः।

वामोरुः - यहाँ अनौपम्यम् (उपमा नहीं) है।

''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' - स्वाङ्गवाची नख शब्द तथा मुख शब्द अन्त में हों ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् नहीं होता।
जैसे - गौरमुखा, शूर्पणखा।

वार्तिक ''सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः'' - सूर्य प्रातिपदिक से पुंयोग में देवता, स्त्रीत्व वाच्य होने पर चाप् प्रत्यय होता है। यह पुंयोगादाख्यायाम् का अपवाद है। जैसे - सूर्यस्य स्त्री देवता सूर्या। सूर्य की स्त्री की स्त्री देवता, छाया, सन्ध्या।

73. यथोचितम् उत्सर्गापवादयोः मेलनं कुरुत -

सूची I	**सूची** II
A. अल एकहल्मध्येऽनादेशादेलिटि	I. पोरदुपघात्
B. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	II. न माङ्योगे
C. ऋहलोर्ण्यत्	III. न शशददवादिगुणानाम्
D. ष्टुना ष्टुः	IV. न पदान्ताट्टोरनाम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-IV, B-III, C-II, D-I
(b) A-III, B-II, C-I, D-IV
(c) A-II, B-I, C-III, D-II
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

उत्तर-(b)

- अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि (एकहल्मध्ये अनादेशादेः अङ्गस्य अतः एत् किति लिटि, अभ्यासलोपः च) इसका अपवाद न शशददवादिगुणानाम्' सूत्र है।

- लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः का अपवाद 'न माङ्योग' सूत्र है।

- 'ऋहलोर्ण्यत्' - ऋवर्णान्त तथा हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है। इसका अपवाद **'पोरदुपधात्'** (प वर्ग अन्त में अथवा ह्रस्व अकार उपधा में हो, ऐसे धातु से यत् प्रत्यय होता है।) सूत्र है।

- 'ष्टुना ष्टुः' - दन्त्य सकार तथा तवर्ग के स्थान पर मूर्धन्य षकार और टवर्ग का योग होने पर मूर्धन्य षकार और टवर्ग आदेश होते हैं। इस सूत्र का अपवाद **'न पदान्ताट्टोरनाम्'** (पदान्त ट वर्ग से परे नाम् के नकार को छोड़कर अन्य तवर्ग एवं सकार को ष्टुत्व नहीं होता) सूत्र है।

74. यथोचितं मेलनं कुरुत-

सूची I **(छन्दांसि)**	**सूची** II **(वर्णाः)**
A. प्रहर्षिणी	I. प्रतिपादम् एकविंशतिः वर्णाः
B. स्रग्धरा	II. प्रतिपादम् त्रयोदश वर्णाः
C. शार्दूलविक्रीडितम्	III. प्रतिपादम् सप्तदश वर्णाः
D. मन्दाक्रान्ता	IV. प्रतिपादम् एकोनविंशतिः वर्णाः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-III, B-IV, C-I, D-II
(c) A-IV, B-III, C-II, D-I
(d) A-II, B-I, C-IV, D-III

उत्तर-(d)

* **प्रहर्षिणी -** 'म्नौ ज्रौ गास्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम् ।।3/70।। (वृत्तरत्नाकर) जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, नगण, जगण, रगण तथा एक गुरु वर्ण आएं, वह प्रहर्षिणी है। इसमें प्रत्येक चरण में तीसरे एवं दसवें अक्षर पर यति होती है।

* **स्रग्धरा -** ''म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।।3/104।। (वृत्तरत्नाकर)

इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण तथा तीन यगणों से युक्त तथा तीर बार मुनि (= 7) संख्यक अक्षरों पर यति वाली छन्द रचना स्रग्धरा कही जाती है। इसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं।

* **शार्दूलविक्रीडित -** ''सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्'' ।।3/100।। वृत्तरत्नाकर। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा एक गुरू वर्ण आएं उसे शार्दूलविक्रीडित कहते हैं। इस छन्द में सूर्य (=12) तथा अश्व (=7) संख्यक अक्षरों पर यति होती है। इसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।

* **मन्दाक्रान्ता -** ''मन्दाक्रान्ता जलधिषड्गैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत् ।।3/97।। वृत्तरत्नाकर। जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा दो गुरू वर्ण आएं तथा जलधि (=4), षट् (=6) एवं अग (कुलपर्वत =7) संख्यक वर्णों पर यति हो, उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं। कालिदास-विरचित मेघदूत काव्य आद्यन्त इसी छन्द में लिखा गया है।

75. समुचितं मेलयत -

सूची I (रसाः)	सूची II (स्थायिभावाः)
A. शृङ्गारः	I. विस्मयः
B. बीभत्सः	II. हासः
C. अद्भुतम्	III. जुगुप्सा
D. हास्यम्	IV. रतिः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-IV, B-III, C-I, D-II
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-IV, B-II, C-I, D-III
(d) A-II, B-IV, C-III, D-I

उत्तर-(a)

रसभेदनिरूपण तालिका

क्र.	रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1.	शृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
2.	हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ
3.	करुण	शोक	कपोतवर्ण	यम
4.	रौद्र	क्रोध	रक्त	रुद्र
5.	वीर	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र
6.	भयानक	भय	कृष्ण	यम (काल)
7.	बीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल
8.	अद्भुत	विस्मय	पीत	गन्धर्व
9.	शान्त	शम	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण

76. समुचितं योजयत-

सूची I	सूची II
A. अहिल्याशापविमोचनमस्ति	I. रामायणस्य अरण्यकाण्डे
B. शबरीवृत्तान्तमस्ति	II. महाभारतस्य वनपर्वणि
C. दमयन्तीकथा वर्णिताऽस्ति	III.महाभारतस्य आदिपर्वणि
D. शकुन्तलोपाख्यानमस्ति	IV.रामायणस्य बालकाण्डे

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-IV, B-I, C-II, D-III
(c) A-III, B-IV, C-I, D-II
(d) A-II, B-III, C-IV, D-I

उत्तर-(b)

प्रसङ्ग	स्रोत
अहिल्याशाप विमोचन	रामायण बालकाण्ड
शबरी वृत्तान्त	रामायण अरण्यकाण्ड
दमयन्ती कथा	महाभारत वनपर्व
शकुन्तलोपाख्यान	महाभारत आदिपर्व
ताडका वध	रामायण बालकाण्ड
लवकुश-जन्म	रामायण उत्तरकाण्ड
किरातार्जुनीयम्	महाभारत वनपर्व
शिशुपालवधम्	महाभारत सभापर्व

77. समुचितं योजयत-

सूची I (मतानि)	सूची II (आचार्याः)
A. त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः	I. विशालाक्षः
B. सहध्यायिनोऽमात्यान् कुर्वीत	II. ओशनसाः
C. सहाध्यायिनोऽमात्यान् न कुर्वीत	III. भारद्वाजः
D. दण्डनीतिरेका विद्या	IV. मानवाः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-II, B-IV, C-III, D-I
(b) A-IV, B-III, C-I, D-II
(c) A-I, B-III, C-IV, D-II
(d) A-III, B-II, C-IV, D-I

उत्तर-(b)

- त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः मानवाः। त्रयीविशेषो ह्यान्वीक्षकीति। मनु संप्रदाय के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्ता एवं दण्डनीति, इन तीन विद्याओं को मानते हैं। इनके मतानुसार आन्वीक्षकी का समावेश त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है।
- दण्डनीतिरेका विद्येत्यौशनसाः। तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धा इति। शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने केवल दण्डनीति को विद्या माना है तथा इसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान एवं कारण स्वीकार किया है।
- सहाध्यायिनोऽमात्यान् कुर्वीत् दृष्ट शौचसामर्थ्यत्वात् – भारद्वाजः
- सहाध्यायिनोऽमात्यान् न कुर्वीत् – विशालाक्षः।

78. अधोलिखितानि सूक्तानि मण्डलसूक्तक्रमेण संयोजयत-

A. पुरुषसूक्तम्
B. हिरण्यगर्भसूक्तम्
C. विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्
D. नासदीयसूक्तम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B, C, D
(b) C, B, D, A
(c) D, B, C, A
(d) C, A, B, D

उत्तर-(d)

मण्डलसूक्तक्रम –

- विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त – (ऋग्वेद 3.33)।
- पुरुषसूक्त – (ऋग्वेद - 10.90)।
- हिरण्यगर्भसूक्त – (ऋग्वेद - 10.121)।
- नासदीयसूक्त – (ऋग्वेद - 10.129)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पुरुष सूक्त में समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है।
- हिरण्यगर्भ सूक्त में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए क सञ्ज्ञक प्रजापति का महत्त्व वर्णित है।
- वाक्सूक्त राष्ट्रनिर्मात्री शक्ति है।
- पुरुरवा - उर्वशी संवाद (ऋग्वेद 10.95)
- यम - यमी संवाद (ऋग्वेद 10.10)

79. ब्राह्मणानि वेदक्रमेण योजनीयानि-

A. गोपथब्राह्मणम्
B. षड्विंशब्राह्मणम्
C. ऐतरेयब्राह्मणम्
D. काण्वशतपथब्राह्मणम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B, D, A, C
(b) A, C, B, D
(c) D, A, B, C
(d) C, D, B, A

उत्तर-(d)

ब्राह्मण ग्रन्थ -

वेद	**ब्राह्मण ग्रन्थ**
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
शुक्ल-यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण
कृष्ण-यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	(कौथुमीय) ताण्ड्य महाब्राह्मण (पंचविंश या प्रौढ़), षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान, आर्षेय, मंत्र (या उपनिषद्), देवताध्याय, वंश, संहितोपनिषद् ब्राह्मण। (जैमिनीय) जैमिनीय (आर्षेय), जैमिनीय (तलवकार), जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण

80. सांख्यमतानुसारं सृष्टेः क्रमं योजयत-

A. प्रकृतिः
B. अहंकारः
C. षोडशकः गणः
D. महान्
E. पञ्चभूतानि

यथोचितेन क्रमेण योजयत-

(a) A, D, B, C, E
(b) B, C, D, A, E
(c) C, D, E, B, A
(d) E, B, D, A, C

उत्तर-(a)

''प्रकृतेर्महान् ततोऽहङ्कारः तस्मात् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि ।।22।। सां.
मूलप्रकृति से महत्तत्त्व की उत्पत्ति, महत् से अहङ्कार की उत्पत्ति, अहङ्कार से सोलह पदार्थों के समूह (पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्रा तथा मन) की उत्पत्ति होती है। पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति होती है।

- महत् को बुद्धि, प्रत्यय, महान् एवं उपलब्धि आदि नामों से भी जाना जाता है।
- सांख्य का सूक्ष्मशरीर 18 तत्त्वों से निर्मित होता है, सूक्ष्मशरीर को लिङ्ग शरीर भी कहते हैं।
- सांख्य में ज्ञान से मोक्ष होता है। ''ज्ञानेन चापवर्गः''।
- अज्ञान से बन्धन की प्राप्ति होती है। ''विपर्ययादिष्यते बन्धः''।
- वैराग्य से प्रकृतिलय होता है। ''वैराग्यात् प्रकृतिलयः''।
- प्रत्यय सर्ग (बुद्धिसर्ग) के कुल पचास भेद हैं – 5 विपर्यय + 28 अशक्ति +9 तुष्टि + 8 सिद्धि = 50 भेद प्रत्ययसर्ग।

81. भाषाविज्ञानस्य ध्वनिनियमान् यथाक्रमं योजयत -

A. मूर्धन्यनियमः
B. वर्नरनियमः
C. ग्रिमनियमः
D. ग्रासमाननियमः

यथोचितेन क्रमेण योजयत -

(a) A, B, C, D (b) B, C, D, A

(c) C, D, B, A (d) C, D, A, B

उत्तर-(c)

ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर नियम मूल भारोपीय भाषा से संबद्ध हैं। इन नियमों में मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन का वर्णन है।

1. ग्रिम नियम - प्रो. याकोब ग्रिम (1785 - 1863) के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियाँ अंग्रेजी एवं जर्मन भाषा में निम्नलिखित प्रकार की होती जाती हैं।

प्रथम को द्वितीय – क् त् प् को ख् थ् फ्

चतुर्थ को तृतीय – घ् ध् भ् को ग् थ् ब्

तृतीय को प्रथम – ग् द् ब् को क् त् प्

2. ग्रासमान नियम - जर्मन विद्वान् ग्रासमान के अनुसार मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण ध्वनियों में प्रथम महाप्राण ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि आ जाती है।

जैसे - धधामि - दधामि, भभार - बभार।

3. वर्नर नियम - जर्मन भाषाशास्त्री कार्ल वर्नर ने ग्रिम नियम में संशोधन किया। यदि मूलभाषा में क् त् प् आदि से पूर्व उदात्त स्वर होता है तो ग्रिम नियमानुसार प्रथम वर्ण परिवर्तन नियम लगता है, और यदि उदात्त स्वर क् त् प् के बाद होता है तो क् त् प् का ग् द् ब् हो जाता है।

4. तालव्य नियम को 'कालित्स-नियम' भी कहते हैं।

5. मूर्धन्य नियमानुसार मूलभाषा में र् या ल् के बाद त वर्ग होगा तो वह ट वर्ग हो जाता है। तथा यदि मूलभाषा में ऋ है और यदि वह हटता है या परिवर्तित होकर अ आदि होता है, तो परिवर्तित त वर्ग का ट वर्ग हो जाता है। जैसे - **कृट-कट, विकृत-विकट**

82. वाक्यपदीयकारिकाम् इमां यथापाठं व्यवस्थापयत-

A. यः शब्दानुगमादृते B. सर्वं शब्देन भासते

C. न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके D. अनुविद्धमिव ज्ञानम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, B, C, D (b) D, C, B, A

(c) C, A, D, B (d) B, D, A, C

उत्तर-(c)

वाक्यपदीयकारिका पाठानुसार —

''न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।। वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड-123।।

आचार्य भर्तृहरि कहते हैं कि संसार में कोई भी ऐसा ज्ञान नहीं है जो शब्द के बिना प्राप्य हो, क्योंकि शब्द के द्वारा प्रत्यायित अर्थज्ञान पांसूदकवत् संसृष्ट होकर ही प्रकाशित होता है।

वाक्यपदीय, व्याकरण दर्शन का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहते हैं, इसके प्रथम काण्ड का नाम 'ब्रह्मकाण्ड', द्वितीय काण्ड का नाम 'वाक्यकाण्ड' एवं तृतीय काण्ड का नाम 'पदकाण्ड' है। प्रथम काण्ड में शब्द की प्रकृति की व्याख्या की गई है। इसमें शब्द को ब्रह्म माना गया है।

83. अधोलिखितासु सूत्रपङ्क्तिषु - सञ्ज्ञासूत्रम्, परिभाषासूत्रम् , विधिसूत्रम्, नियमसूत्रम्, एवंक्रमेण विन्यस्तां कुरुत -

A. कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि

B. हलन्त्यम्

C. अत इञ्

D. समर्थः पदविधिः

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A, C, D, B (b) B, D, C, A

(c) D, C, A, B (d) C, A, B, D

उत्तर-(b)

'हलन्त्यम्' - उपदेश अवस्था में अन्त्य हल् इत्संज्ञक होता है। पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण किया उसे उपदेश नाम से जाना जाता है। भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासनम्, आगम, प्रत्यय तथा आदेश आदि सभी उपदेश माने जाते हैं। अन्त में उच्चारित वर्ण अन्त्य कहलाते हैं, अतः अइउण् में ण् वर्ण अन्त्य है यही अन्त्य वर्ण 'हल्' कहलाता है।

'समर्थः पदविधिः' - पाणिनीय अष्टाध्यायी में जहाँ कहीं भी पदों से सम्बन्धी कार्य कहा जाता है वहाँ कार्य समर्थ पदों के आश्रय पर होता है, असमर्थ पदों के नहीं। नियम करने के कारण यह परिभाषा सूत्र है।

'अत इञ्' - अपत्य अर्थ में ह्रस्व अकारान्त षष्ठयन्त समर्थ प्रातिपदिक से इञ् प्रत्यय होता है। यह विधि सूत्र है।

'कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि' - यह नियमसूत्र है।

84. अधोलिखितेषु काव्येषु कति सन्ति रूपकाणि, तानि कालक्रमेण नियोजयत-

A. मृच्छकटिकम् B. स्वप्नवासवदत्तम्

C. वेणीसंहारम् D. मालविकाग्निमित्रम्

E. बंग्लादेशोदयम्

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) B, D, A, C, E (b) B, D, C, A, E

(c) A, C, D, B, E (d) C, D, E, A, B

उत्तर-(a)

कालक्रमेण रूपकाणि सन्ति – स्वप्नवासवदत्तम्, मालविकाग्निमित्रम्, मृच्छकटिकम्, वेणीसंहारम्, बंग्लादेशोदयम्।

'भास' - महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् की प्रस्तावना में 'प्रथितयशसां भाससौमिल्ल:' के द्वारा भास को सादर स्मरण किया है जिससे यह पता चलता है कि भास, कालिदास से पूर्ववर्ती हैं।

भास के प्रसिद्ध नाटक - प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम, उरुभंग, दूतवाक्यम्, पञ्चरात्र, बालचरित, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, अविमारक, चारुदत्त।

'कालिदास' - अधिकांश भारतीय विद्वान् उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य को कालिदास का आश्रयदाता मानते हैं। कालक्रम के अनुसार इनकी प्रमुख रचनाएं हैं– (1) ऋतुसंहार, (2) कुमारसम्भवम् (3) मालविकाग्निमित्रम्, (4) विक्रमोर्वशीयम् (5) मेघदूतम् (6) रघुवंश, (7) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

'शूद्रक' - इनकी कृति मृच्छकटिकम् दस अङ्कों में विभाजित 'प्रकरण' ग्रन्थ है। इसका रचनाकाल प्रथम-शताब्दी ई.पू. के आस-पास माना जाता है।

'भट्टनारायण' - भट्टनारायण द्वारा रचित 'वेणीसंहारम्' नाटक में 6 अङ्क हैं।

85. याज्ञवल्क्यमतानुसारं व्यवहारविधौ अधिकृतान् एव क्रमेण योजयत-

A. चर: B. पूगा:
C. श्रेणय: D. कुलानि
E. संस्था

यथोचितेन क्रमेण योजयत-

(a) A, B, C (b) C, D, A
(c) B, C, D (d) E, B, D

उत्तर : (c)

''नृपेणाधिकृता: पूगा: श्रेणयोऽथ कुलानि च।
पूर्वं पूर्वं गुरु ज्ञेयं व्यवहारविधौ नृणाम्।।30।। याज्ञवल्क्यस्मृति

मनुष्यों के व्यवहार-दर्शन के लिए राजा द्वारा नियुक्त पूग (समूह), श्रेणी (नाना जातियों, एक जाति या एक जाति के कर्म को करने वालों का वर्ग) तथा कुल (सम्बन्धीजन का समूह) - इन चारों में क्रमश: पूर्व-पूर्व को श्रेष्ठ मानना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं पूर्वविदकसंनिधौ' (वादी के वाद को सुनने के बाद प्रतिवादी द्वारा सुने गए विषय-अभियोग का उत्तर पहले के आवेदक के सामने लिखना चाहिए)'
- 'चतुष्पाद व्यवहारोऽयं विवादेषूपदर्शित:' (विवादों में चतुष्पाद व्यवहार बताया गया है)।
- 'मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्धनं वहेत्' (मिथ्याभियोग लगाने वाला उस धन के दूना धन (दण्डस्वरूप) वहन करे।

86. अधोलिखिते कथने पठित्वा समुचितमुत्तरं चिनुत -

कथनम्- I : ''स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति'' इति नचिकेता: कथयति ।

कथनम्- II : ''प्र ते ब्रवीमि तदु मे विबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेत: प्रजानन अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धित्वमेतं निहितं गुहायाम्।।'' इति यमराज: वरं ददाति ।

उपरि उक्तकथनस्यालोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) उभये कथने सत्ये स्त: ।
(b) उभये कथने असत्ये स्त: ।
(c) प्रथमं कथनम् सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम् अस्ति ।
(d) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम् अस्ति ।

उत्तर-(a)

प्रथम वर की प्राप्ति के पश्चात् नचिकेता पुन: यमराज से कहता है- कि –

''स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति,
न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे,
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।12।।

अर्थात् स्वर्गलोक में कोई भय नहीं हैं। वहाँ न तुम (मृत्यु के देवता यमराज) हो और न कोई बुढ़ापे से ही डरता है। भूख और प्यास, दोनों को पार करके शोक का अतिक्रमण करके (प्राणी) स्वर्ग में आनन्द करता है। हे मृत्युदेव! आप स्वर्ग के साधनभूत अग्नि को जानते हैं अत: दूसरे वर के रूप में अग्नि का उपदेश करें जिसके द्वारा स्वर्गलोक के निवासी अमरता प्राप्त करते हैं।

इसके उत्तर में यमराज कहते हैं –

''प्र ते ब्रवीमि तदु में विबोध,
स्वर्ग्यमग्निं नचिकेत: प्रजानन्।
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां,
विद्धित्वमेतं निहितं गुहायाम्।।14।।

हे नचिकेता! स्वर्ग के साधनभूत अग्नि को अच्छी तरह जानता हुआ मैं अग्नि का तुम्हारे प्रति उपदेश करता हूँ। उसे तुम मुझसे अच्छी तरह समझ लो। इस अग्नि को तुम अनन्त अर्थात् नित्य-स्वर्गलोक की प्राप्ति कराने वाला, विराट् रूप से इस जगत् का आश्रय एवं विद्वानों की बुद्धि-रूपी गुहा में स्थित जानो।

87. अधोलिखिते कथने पठित्वा समुचितमुत्तरं चिनुत -

कथनम् - I : चार्वाकास्तु कथयन्ति - तत्र पृथिव्यादीनि भूतानि चत्वारि तत्त्वानि ।

कथनम् - II : वैशेषिका: उपमानं प्रमाणं वदन्ति ।

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

(a) उभये कथने सत्ये स्तः ।

(b) उभये कथने असत्ये स्तः ।

(c) प्रथमं कथनम् सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम् अस्ति ।

(d) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम् अस्ति ।

उत्तर-(c)

चार्वाकास्तु कथयन्ति - तत्र पृथिव्यादीनि भूतानि चत्वारि तत्त्वानि। (चार्वाक के मत में पृथ्वी, जल, तेज, वायु आदि चार महाभूत तत्त्व हैं।

- बृहस्पति के मत को मानने वाले, नास्तिकों के शिरोमणि चार्वाक परमेश्वर को मुक्ति प्रदान करने वाला नहीं मानते हैं। इनके मतानुसार –
  ''यावज्जीवेत् सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः।
  भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।
  अर्थात्, जब तक जीवन रहे तब तक सुखपूर्वक जीना चाहिए, ऐसा कोई नहीं जिसके पास मृत्यु न जा सके,। जब एक बार शरीर जल जाता है तब इसका पुनः आगमन कैसे हो सकता है अर्थात् पुनरागमन नहीं होता।
- वैशेषिक दर्शन केवल दो प्रमाण (प्रत्यक्ष एवं अनुमान) मानते हैं।
- न्यायदर्शन चार प्रमाण मानता है – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान शब्द।
- सांख्य एवं योगदर्शन तीन प्रमाण मानता है – प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आप्तवचन।

88. अधोलिखिते कथने पठित्वा समुचितमुत्तरं चिनुत -

कथनम्- I : 'एकविभक्ति चापूर्वनिपाते' इति सूत्रं गतिसंज्ञाविधायकम् अस्ति ।

कथनम्- II : 'पुंयोगादाख्यायाम्' इति सूत्रं स्त्रीत्वविवक्षायां टाप्प्रत्ययं करोति ।

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

(a) उभये कथने सत्ये स्तः।

(b) उभये कथने असत्ये स्तः ।

(c) प्रथमं कथनम् सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम् अस्ति ।

(d) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम् अस्ति ।

उत्तर-(b)

''एकविभक्ति चापूर्वनिपाते'' - विग्रह में जो नियत विभक्तिवाला है, उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है तथा उसका पूर्वनिपात नहीं किया जाता।

जैसे - 'अतिक्रान्तः मालाम्' में अति की 'प्रथमानिर्दिष्टं समास अपसर्जन' से उपसर्जन संज्ञा तथा इसी का पूर्वनिपात होता है। इसके बाद 'माला अम्' इस नियत विभक्ति वाले की 'एकविभक्ति चापूर्वनिपाते' से उपसर्जन संज्ञा करते हैं।

''पुंयोगादाख्यायाम्'' - पुरुष के साथ सम्बन्ध के कारण जब पुंवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त हो तो उस अदन्त शब्द से ङीष् प्रत्यय होता है।

जैसे - गोपस्य स्त्री-गोपी। यहाँ गोप शब्द अदन्त है तथा स्त्रीत्व की विवक्षा में पुरुष के साथ सम्बन्ध जोड़कर बोला जा रहा है।

''वयसि प्रथमे''- प्रथम अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। जैसे - कुमारी, किशोरी आदि।

89. अधोलिखिते कथने पठित्वा समुचितमुत्तरं चिनुत -

कथनम्- I : मुख्यां वृत्तिं परित्यज्य गुणवृत्त्यार्थदर्शनम् ।
यदुद्दिश्य फलं तत्र शब्दो नैव स्खलद्गतिः।।

कथनम्- II : लक्ष्यं न मुख्यं नाप्यत्र बाधो योगः फलेन नो।
न प्रयोजनमेतस्मिन् न च शब्दः स्खलद्गतिः ।।

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

(a) उभये कथने सत्ये स्तः ।

(b) उभये कथने असत्ये स्तः ।

(c) प्रथमं कथनम् सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम् अस्ति ।

(d) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम् अस्ति ।

उत्तर-(a)

''मुख्यां वृत्तिं परित्यज्य गुणवृत्त्यार्थदर्शनम्।
यदुद्दिश्य फलं तत्र शब्दो नैव स्खलद्गतिः।।1/20।। ध्वन्यालोक

लक्षणा स्वसामग्री (मुख्यार्थबाध) के अभाव होने से भी ध्वनि को नहीं कह सकती क्योंकि जिस व्यङ्ग्य की प्रतीति के लिए अभिधा को त्यागकर लक्षणा से लक्ष्यार्थ का बोध किया जाता है, उस व्यङ्ग्य के बोध के लिए प्रयुक्त शब्द बाधित नहीं देखा गया है, अर्थात् मुख्यार्थ का बाध ही लक्षणा की बीज है, इसके बिना लक्षणा नहीं होती, किन्तु ध्वनिस्थल में मुख्यार्थ बाध के बिना भी व्यङ्ग्य का बोध होता है, जैसे - 'गङ्गा में झोपड़ी' कहने से लक्ष्यार्थ तट की अपेक्षा ही बाध प्रतीत होता है, शैत्यपावनत्वादि व्यङ्ग्य की अपेक्षा वाच्यार्थ का बाध प्रतीत नहीं होता तथा दोनों (लक्षणा एवं व्यञ्जना) के 'तट-शैत्य पावनत्वादि' भिन्न-भिन्न विषय होने से भी पार्थक्य सिद्ध है।

''लक्ष्यं न मुख्यं, नाप्यत्र बाधो, योगः फलेन नो।
न प्रयोजनमेतस्मिन् न च शब्दः स्खलद्गतिः।।2/16।। काव्यप्रकाश

यहाँ तटरूप लक्ष्यार्थ मुख्य अर्थ नहीं है, न उसका यहाँ बाध होता है, न ही उसका शैत्यपावनत्वादि फल के साथ सम्बन्ध है तथा न इस प्रयोजन को (लक्ष्यार्थ मानने) में कोई प्रयोजन है और न (प्रयोजन के विषय में लाक्षणिक) शब्द स्खलद्गति (अर्थात् मुख्यार्थबाधादि के बिना प्रयोजन के प्रतिपादन में असमर्थ या मुख्यार्थबाध आदि के बाद ही प्रयोजन के प्रतिपादन में समर्थ) हैं।

90. अधोलिखिते कथने पठित्वा समुचितमुत्तरं चिनुत-

कथनम् - I : कृतकः स्वाभाविकश्च विनयः ।

कथनम्- II : विद्यानां तु यथास्वम् आचार्यप्रामाण्याद् विनयो नियमश्च ।

यथोचितं विकल्पं चिनुत -

(a) उभये कथने सत्ये स्तः ।

(b) उभये कथने असत्ये स्तः ।

(c) प्रथमं कथनम् सत्यं किन्तु द्वितीयम् असत्यम् अस्ति ।

(d) प्रथमं कथनम् असत्यं किन्तु द्वितीयं सत्यम् अस्ति ।

उत्तर-(a)

''कृतकः स्वाभाविकश्च विनयः द्विविधः। क्रिया हि द्रव्यं विनयति नाद्रव्यम्। शुश्रूषाश्रवणग्रहणधारणविज्ञानोहापोहतत्त्वाभिनिविष्टबुद्धिं विद्या विनयति नेतरम्''। विनय शिक्षा दो प्रकार की होती है – कृतक तथा स्वाभाविक,। शिक्षा सुपात्र को ही योग्य बना सकती है, अपात्र को नहीं। विद्या से वही योग्य हो सकते हैं, जो कि शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, विज्ञान, ऊहापोह (तर्क-वितर्क) में विवेक तथा बुद्धि से काम लेते हैं।

''विद्यानां तु यथास्वमाचार्यप्रामाण्याद् विनयो नियमश्च''। (विभिन्न विद्याओं के विभिन्न आचार्यों के मतानुसार ही शिष्य का शिक्षण तथा नियमन होना चाहिए)।

''वृत्तचौलकर्मा लिपिं संख्यानं चोपयुञ्जीत''। (मुण्डन-संस्कार के बाद वर्णमाला तथा अङ्कमाला का अभ्यास कराएं)।

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि चिनुत -

तमेकदा रहसि वसुरक्षितो नाम मन्त्रिवृद्धः पितुरस्य बहुमतः प्रगल्भवागभाषत-तात ! सर्वैवात्मसम्पत् अभिजनात्प्रभृत्यन्यूनैवात्रभवति लक्ष्यते। बुद्धिश्च निसर्गपट्वी कलासु नृत्यगीतादिषु चित्रेषु च काव्यविस्तरेषु प्राप्तविस्तरा तवेतरेभ्यः प्रतिविशिष्यते । तथाप्यसौ अप्रतिपद्यात्मसंस्कारम् अर्थशास्त्रेषु अनग्निसंशोधितेव हेमजातिर्नातिभाति बुद्धिः। बुद्धिशून्यो हि भूभृदत्युच्छ्रितोऽपि परैरध्यारूह्यमाणम् आत्मानं न चेतयेत न च शक्तः साध्यं साधनं वा विभज्य वर्तितुम् अयथावृत्तश्च कर्मसु प्रतिहन्यमानः स्वैः परैश्च परिभूयते । न चावज्ञातस्याज्ञा प्रभवति प्रजानां योगक्षेमाराधनाय।

अतिक्रान्तशासनाश्च प्रजाः यत्किंचनवादिन्यो यथाश्चिद्वर्तिन्यः सर्वाःस्थितिः संकिरेयुः। निर्मर्यादश्च लोको लोकादितोऽमुतश्च स्वामिनम् आत्मानं च भ्रंशयेत।

91. वसुरक्षितः इति कस्य नाम?

(a) राज्ञः (b) सेनापतेः

(c) मन्त्रिणः (d) राज्ञःपुत्रस्य

उत्तर-(c)

वसुरक्षितः इति 'मन्त्रिणः' नाम। अर्थात् वसुरक्षित, अनन्तवर्मा के पिता द्वारा सम्मानित एक वृद्ध मन्त्री था। वसुरक्षित, अनन्तवर्मा को एकान्त में ले जाकर राजा और प्रजाविषयक व्यवहारज्ञान को बतलाते हैं।

92. 'निसर्गपट्वी' इति कस्य विशेषणम् ?

(a) कलायाः (b) काव्यविस्तरस्य

(c) नृत्यगीतादेः (d) बुद्धेः

उत्तर-(d)

'निसर्गपट्वी' इति 'बुद्धेः' विशेषणम्। ''बुद्धिश्च निसर्गपट्वी, कलासु नृत्यगीतादिषु चित्रेषु च काव्यविस्तरेषु प्राप्तविस्तरा तवेतरेभ्यः प्रतिविशिष्यते।'' वृद्ध मन्त्री वसुरक्षित, अनन्त वर्मा से कहते हैं कि आप स्वभाव से ही बुद्धि में तीक्ष्ण हैं। अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा आप में नृत्य, गीत, काव्यकला, चित्रचातुर्य की अधिकता है।

93. 'योगक्षेमाराधनाय' इत्यत्र 'क्षेम' पदस्य कोऽर्थः?

(a) अप्राप्तप्रामणम् (b) प्राप्तस्य रक्षणम्

(c) प्राप्त्याशा (d) रक्षितवर्धनम्

उत्तर-(b)

'योगक्षेमाराधनाय' इत्यत्र 'क्षेम' पदस्य अर्थः ''प्राप्तस्य रक्षणम्'' अस्ति।

योग - 'अप्राप्तस्य लाभो योगः।' अर्थात् अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति करा देना 'योग' है।

क्षेम - 'प्राप्तस्य संरक्षणं क्षेमः।' अर्थात् प्राप्त सामग्री की रक्षा करना 'क्षेम' है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी इस पद का उल्लेख हुआ है – ''योगक्षेमं वहाम्यहम्''

94. निर्मर्यादः लोकः कं भ्रंशयते?

(a) लोकसामान्यम् (b) राजानम्

(c) मन्त्रिणम् (d) स्वामिनम् आत्मानं च

उत्तर-(d)

'निमर्यादः लोकः स्वामिनम् आत्मानं च भ्रंशयते' अर्थात् मर्यादा से हीन लोक/समाज राजा को एवं स्वयं को नष्ट कर डालता है। इसके विपरीत धर्मशास्त्ररूपी दीपक के प्रकाश में चलने से राजा-प्रजा का जीवन अत्यन्त सुख में व्यतीत होता है।

95. कः परैः अध्यारूह्यमाणम् आत्मानं न चेतयते-

(a) यो राजा अत्युच्छ्रितः सन्नपि बुद्धया विहीनो वर्तते सः

(b) यः प्रगल्भवाग् बुद्धिमान् च वर्तते सः

(c) राज्ञो बहुमतो मन्त्रिवृद्धः

(d) यस्य बुद्धिः निसर्गपट्वी वर्तते सः

उत्तर-(a)

''यो राजा अत्युच्छ्रितः सन्नपि बुद्ध्या विहीनो वर्तते सः परैः अध्यारूह्यमाणम् आत्मनं न चेतयते''। अर्थात् बुद्धिविहीन राजा कितना ही बड़ा क्यों न हो, उसके शत्रु उसे भीतर ही भीतर खोखला बना देते हैं। यद्यपि यह देखने से ज्ञात नहीं होता परन्तु जब सूक्ष्मता से देखा जाता है तो ज्ञात हो जाता है।

96. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि चिनुत-

शरीरसंयुक्तं ज्ञानकरणमतीन्द्रियम इन्द्रियम् । अतीन्द्रियम् इन्द्रियम् इति उच्यमाने कालादेः अपि इन्द्रियत्वप्रसंगः, अतः उक्तं शरीरसंयुक्तम् इति। शरीरसंयुक्त ज्ञानकरणम् इति उच्यमाने आलोकादेः इन्द्रियत्वप्रसंगः, अतः उक्तम् अतीन्द्रियम् इति। तानि च इन्द्रियाणि षट् । घ्राणरसनचक्षुस्त्वक्श्रोत्रमनांसि। तत्र गन्धोपलब्धिसाधनम् इन्द्रियं घ्राणम् नासाग्रवर्ति । तच्च पार्थिवं गन्धवत्वाद् घटवत् । गन्धवत्वञ्च गन्धग्राहकत्वात् । यदिन्द्रियं रूपादिषु पञ्चसु मध्ये यं गुणं गृह्णाति तदिन्द्रियं तद्गुणसंयुक्तं तथा चक्षूरूपग्राहकं रूपवत् । रसोपलब्धिसाधनम् इन्द्रियं रसनम्। जिह्वाग्रवर्ति। तच्चाप्यं रसवत्वात् । रसवत्वञ्चं रूपादिषु पञ्चसु मध्ये स्पर्शस्य एवं अभिव्यञ्जकत्वात् अङ्गसङ्गिसलिलशैत्याभिव्यञ्जकव्यजनवातवत् शब्दोपलब्धिसाधनम् इन्द्रियं श्रौत्रम् । तच्च कर्णशष्कुल्यवच्छिन्नम् आकाशम् एव, न द्रव्यान्तरं शब्दगुणत्वात् । तदपि शब्दग्राहकत्वात् । यदिन्द्रियं रूपादिषु पञ्चसु मध्ये यद्गुणव्यञ्जकं तत् तद्गुणसंयुक्तं यथा चक्षुरादिरूपग्राहकं रूपादियुक्तं शब्दग्राहकत्वञ्च श्रौत्रम् अतः शब्दगुणकम् ।

96. इन्द्रियसन्निकर्षोऽपि इन्द्रियकोटौ अन्तर्भूतः स्यात् यदि हि-

(a) इन्द्रियसन्निकर्षे इदम् इन्द्रियलक्षणम् अव्याप्तं स्यात् ।
(b) इन्द्रियलक्षणे 'शरीरसंयुक्तम्' इति पदं घटकं न भवेत् ।
(c) इन्द्रियाणां समेषां मनोधर्मत्वं प्रसज्येत ।
(d) इदम् इन्द्रियलक्षणम् आत्मनि अतिव्याप्तं भवेत् ।

उत्तर : (b)

इन्द्रिसन्निकर्षोऽपि इन्द्रियकोटौ अन्तर्भूतः स्यात् यदि हि इन्द्रियलक्षणे 'शरीरसंयुक्तम्' इति पदं घटकं न भवेत्।
इन्द्रिय सन्निकर्ष भी इन्द्रियकोटि में आ जाता यदि इन्द्रियलक्षण में 'शरीरसंयुक्तम्' न माना जाता। इन्द्रिय का लक्षण, ''शरीरसंयुक्तम् ज्ञानकरणमतीन्द्रियम् इन्द्रियम्'' (शरीर से संयुक्त अतीन्द्रिय ज्ञान का कारण इन्द्रिय है।)

97 'शरीरसंयुक्तं ज्ञानकरणम् इन्द्रियम्' यदि एतावदेव इन्द्रियस्य लक्षणं क्रियेत तर्हि को दोषः उपतिष्ठेत् ?

(a) तथा कृते चक्षुरिन्द्रिये इन्द्रियत्वं न प्रसज्येत।
(b) तथा कृते आलोकादिपदार्था अपि इन्द्रियाणि स्युः।
(c) तथा कृते कालादीनाम् अपि इन्द्रियत्वप्रसङ्गः स्यात् ।
(d) तथा कृते इन्द्रियलक्षणम् असम्मवदोषग्रस्तं भवेत् ।

उत्तर-(b)

'शीरसंयुक्तम् ज्ञानकरणम् इन्द्रियम्' यदि एतावदेव इन्द्रियस्य लक्षणं क्रियेत तर्हि' तथा कृते आलोकादिपदार्थापि इन्द्रियाणि स्युः इति दोषः उपतिष्ठेत्। अर्थात् जब इन्द्रिय के लक्षण में 'शरीरसंयुक्त ज्ञानकरणम् इन्द्रियम्' इतना ही कहते तो प्रकाश इत्यादि भी इन्द्रिय कहलाने लगते, इसलिए 'अतीन्द्रियम्' कहा गया है।

98. सत्यं कथनम् अस्ति -

(a) गन्धोपलब्धिसाधनत्वस्य लक्षणं पार्थिवत्वम् अस्ति ।
(b) पार्थिवं सर्वं गन्धविहीनं वस्तु भवति।
(c) यथा घटः गन्धवत्त्वस्य कारणात् पार्थिवः वर्तते तथैव गन्धवत्त्वस्य कारणात् घ्राणमपि पार्थिवम् अस्ति ।
(d) गन्धवत्त्वरूपस्य, साध्यस्य हेतुभूतपदार्थः गन्धवत्त्वं भवति।

उत्तर-(c)

''यथा घटः गन्धवत्त्वस्य कारणात् पार्थिवः वर्तते, तथैव गन्धवत्त्वस्य कारणात् घ्राणमणि पार्थिवम् अस्ति।''
जो पदार्थ गन्धयुक्त होते हैं, वे सभी पार्थिव होतें हैं।
घ्राणेन्द्रिय - ''तत्र गन्धोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं घ्राणम्।'' गन्ध की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय 'घ्राण' कहलाती है। यह नासिका के अग्रभाग में रहती है। यह पार्थिव है, क्योंकि गन्धवाली है। जैसे - घट। यहाँ पार्थिव - प्रतिज्ञा, गन्ध-हेतु तथा घट-उदाहण है।
उपर्युक्त की स्थापना की सिद्धि का अनुमान यह है — घ्राण इन्द्रिय पार्थिव है (प्रतिज्ञा), क्योंकि वह गन्ध गुण वाली है (हेतु), घट के समान (उदाहरण)।

99. रसवत्त्वरूपहेतुना साध्यते-

(a) रसनेन्द्रियस्यस्य जलीयत्वम्।
(b) रसनेन्द्रियस्य जिह्वाग्रवर्तित्वाभावत्वम्।
(c) रसनेन्द्रियस्य लालावत्त्वम्।
(d) रसनेन्द्रियस्य अनित्यत्वम्।

उत्तर-(a)

'रसनेन्द्रियस्यस्य जलीयत्वम्' अर्थात् रसनेन्द्रिय जलीय (जल से उत्पन्न होने वाली) है, यही प्रतिज्ञा (साध्य) है। 'रसयुक्त' होना हेतु है।
रसनेन्द्रिय - 'रसोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं रसनम्।' (रसों की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय रसना है।)

100. शब्दोपलब्धिसाधनभूतम् इन्द्रियं वर्तते -

(a) सर्वशरीरव्यापि रूपग्राहकं वस्तु
(b) आकाशनाम्नः द्रव्यात् अतिरिक्तम्
(c) आकाशनाम्नः द्रव्यात् अनतिरिक्तम्
(d) आकाशादन्यत् किमपि शब्दगुणकं द्रव्यम्

उत्तर-(c)

''शब्दोपलब्धिसाधनभूतम् इन्द्रियं आकाशनाम्नः द्रव्यात् अनतिरिक्तम् वर्तते।''
शब्द की उपलब्धि का साधनभूत जो इन्द्रिय है, वह 'आकाश' नामक द्रव्य से अतिरिक्त नहीं है।
श्रोत्रेन्द्रिय - ''शब्दोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं श्रोत्रम्।'' शब्द की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय श्रोत है और वह कर्ण के छिद्रों से घिरा हुआ आकाश ही है, अन्य कोई द्रव्य नहीं।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec. 2022
संस्कृत
व्याख्यात्मक हल सहित

1. **ऋग्वेदादिक्रमेण ब्राह्मणनामानि लिखत–**

   (A) कौषीतकिब्राह्मणम् (B) सामविधानब्राह्मणम्
   (C) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (D) गोपथब्राह्मणम्

   समुचितं विकल्पं चिनुतः

   (a) (D), (B), (C), (A) (b) (A), (C), (B), (D)
   (c) (B), (A), (D), (C) (d) (C), (D), (A), (B)

उत्तर–(b)

ऋग्वेदादि क्रम के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थ क्रमशः कौषीतकि- तैत्तिरीय- सामविधान एवं गोपथ ब्राह्मण है।

- **वेदों के प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थ—**

ऋग्वेद	ऐतरेय एवं कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	(कौथुमीय) (1) तांड्य ब्राह्मण (पंचविंशया प्रौढ़), (2) षड्विंश ब्राह्मण, (3) सामविधान, (4) आर्षेय, (5) मंत्र (या उपनिषद्), (6) देवताध्याय, (7) वंश, (8) संहितोपनिषद् ब्राह्मण (जैमिनीय), (1) जैमिनीय ब्राह्मण, (2) जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण (3) जैमिनीय उपनिषद् (छान्दोग्य) ब्राह्मण।
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण

- **वेदों के प्रमुख उपनिषद्—**

वेद	उपनिषद्
ऋग्वेद	(1) ऐतरेय, (2) कौषीतकि, (3) बाष्कल मंत्रोपनिषद्
शुक्ल यजुर्वेद	(1) ईशोपनिषद्, (2) बृहदारण्यक उपनिषद्
कृष्ण यजुर्वेद	(1) तैत्तिरीय, (2) कठ, (3) श्वेताश्वतर, (4) मैत्रायणी, (5) महानारायणोपनिषद्
सामवेद	(1) छान्दोग्य, (2) केन उपनिषद्
अथर्ववेद	(1) प्रश्न, (2) मुण्डक, (3) माण्डूक्य उपनिषद्

2. **विनियोगविधेः प्रमाणानि क्रमशः लिखत–**

   (A) लिङ्गम् (B) वाक्यम् (C) श्रुतिः (D) प्रकरणम्
   (E) स्थानम्

   समुचितं विकल्पं चिनुतः

   (a) (A), (B), (C), (D), (E) (b) (B), (D), (A), (C), (E)
   (c) (E), (A), (B), (D), (C) (d) (C), (A), (B), (D), (E)

उत्तर–(d)

विनियोग विधि के सहायक छः प्रमाण क्रमशः- (1) श्रुति, (2) लिङ्ग, (3) वाक्य, (4) प्रकरण, (5) स्थान, (6) समाख्या हैं।

- मीमांसार्थसङ्ग्रह में भावना के दो भेद है- शाब्दीभावना और आर्थीभावना।
- **शाब्दीभावना-** पुरूषप्रवृत्त्यनुकूलओ भावयितुर्व्यापार विशेषः शाब्दीभावना। अर्थात व्यक्ति की प्रवृत्ति का जनक अथवा सहायक प्रयोजक का व्यापार विशेष शाब्दीभावना कहलाता है।
- **आर्थीभावना-** प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना। अर्थात् स्वर्गादि उद्देश्य की इच्छा से होने वाली याग आदि क्रिया से सम्बद्ध व्यापार आर्थीभावना है।
- अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। अर्थात् पुरूष के द्वारा न रचे गये वाक्य वेद कहलाते हैं। **वेद-** विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध और अर्थवाद के भेद से पांच प्रकार का होता है।
- विधि के चार भेद हैं- (1) उत्पत्ति, (2) विनियोग, (3) अधिकार, (4) प्रयोगविधि।

(1) **उत्पत्ति विधि-** कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरूत्पत्ति विधिः। अर्थात् यागादि कर्म के केवल स्वरुप के बोधक विधि को उत्पत्ति विधि कहते हैं। जैसे- 'अग्निहोत्रं जुहोति'।

(2) **विनियोग विधि-** अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः। अर्थात् अङ्ग तथा प्रधान के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोग विधि कहते है। जैसे- दध्ना जुहोति।

(3) **अधिकार विधि-** कर्मजन्यफल स्वाम्यबोधको विधिरधिकार विधिः। अर्थात् कर्म से उत्पन्न होने वाले स्वर्गादि फल के स्वामित्व का ज्ञान कराने वाली विधि अधिकार विधि कहलाती है। जैसे- स्वर्गकामो यजेत् आदि।

(4) **प्रयोग विधि-** प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः। अर्थात् प्रयोग-कर्मसम्पादनं में शीघ्रता के भाव की ज्ञापकविधि प्रयोगविधि कहलाती है।

3. पदपूर्वार्धवक्रतायाः भेदेषु अस्ति–

(a) कारकवैचित्र्यवक्रता (b) क्रियावैचित्र्यवक्रता
(c) पुरुषवैचित्र्यवक्रता (d) संख्यावैचित्र्यवक्रता

उत्तर–(b)

पदपूर्वार्धवक्रता के भेदों में क्रियावैचित्र्यवक्रता परिगणित होता है। वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य कुन्तक ने कविव्यापार की वक्रता के मुख्यरूप से छः भेद प्रस्तुत किए हैं– (1) वर्णविन्यासवक्रता, (2) पदपूर्वार्द्धवक्रता, (3) पदपरार्द्धवक्रता, (4) वाक्यवक्रता, (5) प्रकरणवक्रता, (6) प्रबन्धवक्रता

उपर्युक्त छः भेदों के अनेक अवान्तर भेद हैं–

- **पदपूर्वार्द्धवक्रता-** आचार्य कुन्तक भी पाणिनि के अनुसार पद से अभिप्राय सुबन्त एवं तिङन्त पदों से स्वीकारते हैं।

■ पद में दो भाग होते हैं– (1) सुप् एवं तिङ् रूप परार्द्ध है।
(2) प्रकृति रूप पूर्वार्द्ध है।

इसी प्रकृति को क्रम से प्रातिपदिक और धातु कहते है। प्रातिपदिक सुबन्त होने पर पद बनता है और तिङन्त होने पर धातु बनता है। अतः जो प्रातिपदिक अथवा धातु के वैचित्र्य के कारण आने वाली रमणीयता है उसे हम पदपूर्वार्द्धवक्रता के नाम से अभिहित करते हैं।

- **पदपरार्द्धवक्रता-** प्रातिपदिक की वक्रताओं के विवेचनोपरान्त धातु की वक्रता को विवेचित करते हुए बतलाते हैं कि धातु की वक्रता का मूल क्रिया की विचित्रता है। इसी के आधार पर कुन्तक ने इसका नाम क्रियावैचित्र्यवक्रता रखा।

4. अर्थशास्त्रे तन्त्रयुक्तीनां विवेचनं कस्मिन् अधिकरणे प्राप्यते?

(a) द्वितीये (b) नवमे
(c) त्रयोदशे (d) पञ्चदशे

उत्तर–(d)

अर्थशास्त्र में तन्त्रयुक्तियों का विवेचन 15 वें अधिकरण में प्राप्त है।

- पन्द्रहवें अधिकरण को तंत्रयुक्ति कहा गया है, जिसमें राजनीतिशास्त्र सम्बन्धी युक्तियां बतायी गयी है।
- अर्थशास्त्र के प्रणेता चाणक्य या कौटिल्य या विष्णुगुप्त माने जाते हैं। इसमें 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 विषय एवं 6000 श्लोक हैं।
- कौटिल्य चार प्रकार की विद्याएं मानते हैं– आन्वीक्षकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति।
- **चार प्रकार के दुर्ग–** (1) औदक, (2) पार्वत, (3) धान्वक, (4) वनदुर्ग है।
- कौटिल्य की अर्थनीति में गुप्तचरों का स्थान महत्वपूर्ण है। समाज के आन्तरिक स्थिति के ज्ञान के लिए गुप्तचरों के दो विभाग किए गये-

प्रथम स्थायी गुप्तचर, **द्वितीय** भ्रमणशील गुप्तचर।

स्थायी गुप्तचर के नौ विभाग हैं– (1) कापटिक, (2) उदास्थिक, (3) गृहपतिक, (4) वैदेहक, (5) तापस, (6) सत्री, (7) तीक्ष्ण, (8) रसद, (9) भिक्षुकी।

- स्थायी गुप्तचर को एक स्थान पर रहकर कार्य करने के कारण 'संस्था' नाम से और भ्रमणशील गुप्तचर जो घूमघूमकर कार्य करते थे उन्हें 'संचार' नाम से अभिहित किया जाता है।

5. निरुक्ते प्रतिपादितान् भावविकारान् क्रमेण नियोजयत–

(A) अस्ति (B) वर्धते
(C) जायते (D) अपक्षीयते
(E) विपरिणमते

समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (D), (B), (E), (A), (C)
(b) (E), (A), (D), (B), (C)
(c) (C), (A), (E), (B), (D)
(d) (A), (B), (C), (D), (E)

उत्तर–(c)

निरुक्त में प्रतिपादित भावविकारों का क्रम क्रमशः ''जायते-अस्ति-विपरिणमते-वर्धते-अपक्षीयते है।

- आचार्य यास्ककृत निरुक्त में शब्दों के निर्वचन एवं व्युत्पत्ति सम्बन्धी विवेचन है। इसमें 14 अध्याय है।
- निरुक्त के पांच प्रतिपाद्य विषय बतलाये गये हैं– (1) वर्णागम-विचार, (2) वर्ण-विपर्यय-विचार, (3) वर्ण-विकार-विचार, (4) वर्णनाश-विचार, (5) धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग।
- पद के चार भेद- नाम, आख्यात (क्रिया), उपसर्ग और निपात।
- निरुक्त के प्रमुख टीकाकार- (1) **दुर्गाचार्य-** इनकी टीका का नाम ''ऋज्वर्थ- वृत्ति है। (2) **वररुचि-** इनकी टीका का नाम ''निरुक्त-निचय'' है। (3) **स्कन्द महेश्वर** - ये स्कन्द ऋग्वेद के भाष्यकार हैं।

6. आधुनिकयुगे ब्राह्मीलिपि सर्वप्रथमं कःपठितुं समर्थः अभवत् ?

(a) जेम्सप्रिंसेपमहोदयः (b) चार्ल्समैसनमहोदयः
(c) विल्सनमहोदयः (d) बी.बी.लालमहोदयः

उत्तर–(a)

आधुनिक युग में ब्राह्मीलिपि को सर्वप्रथम जेम्सप्रिंसेप ने पढ़ा था।

- ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष की प्राचीन लिपि है।
- अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1750 ईस्वी में **टी. फैन्थैलर** ने खोजा था।

अशोक के समय के अधिकतर लेख इसी लिपि में प्राप्त होते हैं।

- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 ईस्वी में कलकत्ता टकसाल के अधिकारी एवं एशियाटिक सोसायटी के सचिव जेम्सप्रिंसेप ने पढ़ा था। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था। अलेक्जेण्डर कनिंघम इनके सहायक थे। अतः हम कह सकते हैं कि इस लिपि को पढ़ने का सर्वप्रथम श्रेय जेम्स प्रिंसेप को ही है।

7. याज्ञवल्क्यानुसारं प्रत्यभियोगं केषु विवादेषु कर्तुं शक्यते?

(a) साहसेषु (b) ऋणादानेषु

(c) वेतनादानेषु (d) सम्भूयसमुन्थानेषु

उत्तर–(a)

याज्ञवल्क्य के अनुसार प्रत्यभियोग साहस के विवाद में होता है। ''कुर्यात्प्रत्यभियोगं न कलहे साहसेषु च'' अर्थात् कलह (वाक्-पारूष्य) और साहस (विष-शस्त्रादि से प्राणहरणादि) में प्रत्यभियोग (उलटा अभियोग) भी लगाया जा सकता है।

- याज्ञवल्क्यप्रणीत याज्ञवल्क्यस्मृति में तीन अध्याय हैं-

(1) आचाराध्याय, (2) व्यवहाराध्याय, (3) प्रायश्चित्ताध्याय।

- आचाराध्याय में चौदह विद्याएं धर्मोपादान, आचार के दस सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।
- व्यवहाराध्याय में प्रच्चीस प्रकरण है। यह याज्ञवल्क्यस्मृति का हृदय है। 25 प्रकरण क्रमशः (1) साधारण व्यवहारमातृक प्रकरणम्, (2) असाधारण व्यवहारमातृक प्रकरणम्, (3) ऋणादानप्रकरणम्, (4) उपनिधिप्रकरणम्, (5) साक्षिप्रकरणम्, (6) लेख्यप्रकरणम्, (7) दिव्यप्रकरणम्, (8) दाय विभाग प्रकरणम्, (9) सीमाविवाद प्रकरणम्, (10) स्वामिपाल विवाद प्रकरणम्, (11) स्वामिविक्रय प्रकरणम्, (12) दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्, (13) क्रीतानुशयप्रकरणम्, (14) अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्, (15) संविद्वयतिक्रमप्रकरणम्, (16) वेतनादानप्रकरणम्, (17) दण्डपारुष्यप्रकरणम्, (18) साहसप्रकरणम्, (19) द्यूतसमाह्वयप्रकरणम्, (20) वाक्पारुष्यप्रकरणम्, (21) विक्रीयासंप्रदानप्रकरणम्, (22) संभूयसमुत्थानप्रकरणम्, (23) स्तेयप्रकरणम्, (24) स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्, (25) प्रकीर्णप्रकरणम्,
- प्रायश्चित्ताध्याय में आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित आदि छः प्रकरण है।

8. कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखित्वदुः खित्वाद्यभिमानित्वेन इहलोकपरलोकगामी व्यावहारिकः जीवः –

(a) मनोमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा

(b) प्राणमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा

(c) विज्ञानमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा

(d) आनन्दमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा

उत्तर– (c)

विज्ञानमयकोश से अवच्छिन्न चिदात्मा ही ''मैं कर्ता हूँ, भोक्ता हूँ, सुखी हूँ, दुःखी हूँ, इत्यादि व्यवहार का अभिमान करने वाला 'जीव' कहा जाता है।

- ''इयं बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो भवति। अर्थात् यह बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों के सहित विज्ञानमयकोश कहलाती है।
- ''मनस्तु ज्ञानेन्द्रियैः सहितं सन्मनोमयकोशो भवति अर्थात् मन ज्ञानेन्द्रियों के सहित मनोमयकोश कहलाता है।
- ''एतत् प्राणादिपञ्चकमाकाशादिगतरजोंऽशेभ्यो मिलितेभ्यः उत्पद्यते। इदं प्राणादिपञ्चकं कर्मेन्द्रियैः सहितं सत्प्राणमयकोशो भवति। अर्थात् प्राणादि पञ्चवायु आकाश इत्यादि सूक्ष्मभूतों के सम्मिलित रजोगुणांश से उत्पन्न होते हैं। प्राणादि पञ्चवायुओं का यह समूह कर्मेन्द्रियों के साथ मिलकर प्राणमयकोश होता है।
- **बुद्धि-** 'बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तः करणवृत्तिः अर्थात् निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति ही बुद्धि है।
- **मन-** ''मनोनाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः। (संकल्प-विकल्प) करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति मन है।

9. रसादिध्वनौ अन्तर्भवतः–

(A) वस्तुध्वनिः (B) अलङ्कारध्वनिः

(C) रसध्वनिः (D) भावध्वनिः

समुचितमुत्तरं चिनुत–

(a) (A) एवम् (B) (b) (B) एवम् (C)

(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(c)

रसादि ध्वनि में रसध्वनि और भावध्वनि का अन्तर्भाव होता है।

- आचार्य आनन्दवर्धन ने तीन मतों को बतलाया है।

(1) अभाववादी, (2) भक्तिवादी, (3) अनिर्वचनीयतावादी

- तस्याभावम से अभाववादी मत, भाक्तम् से भक्तिवादी मत तथा 'वाचां स्थितमणिषेण शब्दों से अनिर्वचनीयतावादी मत का निर्देश किया है।
- अभाववादी ध्वनि के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते, भक्तिवादी ध्वनि को लक्षण के अन्तर्गत स्वीकार करते है तथा अनिर्वचनीयतावादियों का मत है कि ध्वनि नामक तत्त्व है तो, पर वाणी द्वारा उसका लक्षण या व्याख्या नहीं की जा सकती।
- कारिका में बुधैः पद से अभिप्राय स्फोटवादी वैयाकरण विद्वानों से है।

10. 'षड् + सन्तः = षट्त्सन्तः' इत्यत्र कः आगमो भवति?

(a) धुट् (b) तुट्

(c) दुट् (d) तुक्

उत्तर–(a)

षड् + सन्तः = षट्त्सन्तः यहां पर धुट् का आगम हुआ है।

षड् + सन्तः = षड् धुट् सन्तः → धुट् का आगम

→ षड् ध् सन्तः

→ षड् त् सन्तः

⇒ खरि च सूत्र से

→ षड् त् सन्तः

→ षट् त् सन्तः

⇒ खरि च सूत्र से

⇒ षट्त्सन्तः

न पदान्ताट्टोरनाम् → पदान्त ट वर्ग से परे नाम के नकार को छोड़कर अन्य त वर्ग एवं सकार को षटुत्व नहीं होता है।
जैसे- षट् + सन्तः = षटुना ष्टुः से षट् के टकार से परे सन्त के सकार को ष्टुत्व प्राप्त था लेकिन ''न पदान्ताट्टोरनाम्'' से पदान्त टवर्ग से परे होने पर कारण निषेध हो गया है क्योंकि षष् शब्द से प्रथमा के बहुवचन में षट् बनता है, इसकी सुप्तिङन्तं पदम् से पदसंज्ञा होती है। अतः रूप षट् सन्त ही रह गया।

11. सांख्यमतानुमतं कथनद्वयं चिनुत

(A) प्रकृतिः आत्मना आत्मानं बध्नाति

(B) प्रकृतिः आत्मना आत्मानं न बध्नाति

(C) प्रकृतिः पुरुषं बध्नाति

(D) प्रकृतिः आत्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते

समुचितमुत्तरं चिनुत –

(a) (A) एवम् (C) (b) (A) एवम् (D)

(c) (B) एवम् (C) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर– (b)

- ''प्रकृतिः आत्मना आत्मानं बध्नाति'' की कारिका -
''रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना प्रकृतिः।
सैव च पुरुषार्थं प्रति विमोचयत्येकरूपेण ।।

अर्थात् प्रकृति भोगरूप पुरूषार्थ के लिए केवल सात रूपों के द्वारा स्वयं अपने को ही बन्धन में डालती है और फिर वही प्रकृति मोक्षरूप पुरुषार्थ के लिए केवल एक तत्त्वज्ञानात्मक रूप से अपने को बन्धनमुक्त भी कर लेती है।

- ''प्रकृतिः आत्मानं प्रकाश्य विनिवर्त्तते'' की कारिका -
''रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्त्तते नर्त्तकी यथा नृत्यात्।
पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्त्तते प्रकृतिः।।

अर्थात् जिस प्रकार कोई नृत्याङ्गना रङ्गशाला में उपस्थित दर्शकवर्ग के सामने अपना प्रदर्शन करके नाचने की क्रिया से निवृत्ति हो जाती है, उसी प्रकार प्रकृति भी सृष्टिक्रिया के द्वारा पुरुष के सामने अपने को प्रदर्शित करके, उसके अनन्तर निवृत्त हो जाती है।

- प्रकृति पुरूष को बांधती नही अपितु विमोक्ष के लिए प्रवृत्त होती है।
''पुरूषस्य विमोक्षार्थं प्रवर्त्तते तद्वदव्यक्तम्''

12. यथोचितं मेलनं कुरुत–

सूची-I	सूची-II
(A) भुङ्क्ते	(I) व्यक्तवाचां समुच्चारणे
(B) भुनक्ति	(II) अभ्यवहारे
(C) सम्प्रवदन्ते	(III) पालनार्थे
(D) सम्प्रवदन्ति	(IV) अव्यक्तवाचां समुच्चारणे

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(IV)

(b) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(III)

(c) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(d) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)

उत्तर–(d)

(A) भुङ्क्ते - आत्मनेपद की क्रिया है। ''भुजोऽनवने'' सूत्र से आत्मनेपद पद होता है, पालन से भिन्न अर्थ अर्थात् खाने अर्थ में (अभ्यवहार) भुज् धातु आत्मनेपद में होती है।

(B) भुनक्ति - परस्मैपद की क्रिया है और पालन अर्थ में है।

(C) सम्प्रवदन्ते - व्यक्तवाचां समुच्चारणे (व्यक्त वाणी वालों के उच्चारण में) सम्प्रवदन्ते होता है। आत्मनेपदी में यह रूप बनता है।

(D) सम्प्रवदन्ति - परस्मैपदी (अव्यक्तवाचां समुच्चारणे का यह उदाहरण है।

- व्यक्तवाक्समुक्तौ - व्यक्तवाचां स मुक्तौ सहोक्तौ
वदेर्दो भवति। संप्रवदंते ग्राम्याः। संप्रवदन्ते साधवः।
- व्यक्तवाचाम् - सम्प्रवदन्ति कुक्कुटाः ।
- समुच्चारणे - ब्राह्मणो वदति, क्षत्रियो वदति।

13. यथोचितं मेलनं कुरुत –

सूची-I	सूची-II
(A) स्पर्श-संघर्षी	(I) द्
(B) संघर्षी	(II) च्
(C) स्पर्शः	(III) ष्
(D) अर्धस्वरः	(IV) य्

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)

(b) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)

(c) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)

(d) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

उत्तर–(b)

स्पर्श-संघर्षी - जब वायु मुख में अवरूद्ध होकर उच्चारण अवयवों से घर्षण करती हुई निकलती है तो इस प्रकार उत्पन्न होने वाली ध्वनियों को स्पर्श संघर्षी कहा जाता है। जैसे- च, क, ज, झ आदि।

संघर्षी - जब ध्वनि उच्चारण के समय ध्वनि उत्पन्न करने वाले अवयव अधिक पास आ जाते हैं तथा वायु रगड़ती हुई बाहर निकलती है तो इस प्रकार की ध्वनि को संघर्षी ध्वनि कहते हैं। जैसे- फ्, ज्, ख्, श्, ग्, स्, ष्

स्पर्शः - सघोष या अघोष होकर कंठपिटक से निकली वायु जब मुख में ओठों एवं जिह्वा के कारण थोड़ी देर पूरी तरह रुककर फिर तेजी से बाहर जाती है तो उस समय उत्पन्न होने वाली ध्वनियां स्पर्श कहलाती है। उदाहरण - चवर्ग, कवर्ग, टवर्ग, पवर्ग, तवर्ग आदि ।

अर्धस्वरः - इन ध्वनियों को स्वर तथा व्यञ्जन ध्वनियों के मध्य रखा जाता है क्योंकि इनमें दोनों के गुण पाये जाते हैं। उदाहरण- अन्तःस्थ वर्ण (य्, र्, ल्, व्) ये न पूर्णरूप से स्वर होते हैं और न ही व्यञ्जन ।

इसीलिए इन्हें अर्धस्वर कहा जाता है।

14. 'चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपम्', 'प्रतिषिद्धवस्तुधर्मा निष्क्रियः पुरुषः' 'तिष्ठति वाणः'- इत्यादिकम् उदाहरणम् अस्ति-

(a) **स्त्रमृतिवृत्तेः** (b) **प्रमाणवृत्तेः**
(c) **विकल्पवृत्तेः** (d) **विपर्ययवृत्तेः**

उत्तर– (c)

''चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपम्'', ''प्रतिषिद्धवस्तुधर्मा निष्क्रियः पुरुषः'', ''तिष्ठति बाणः'', आदि उदाहरण विकल्पवृत्ति का है।

- "शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः'' अर्थात् (विकल्प शब्दज्ञान से उत्पन्न तथा निर्वस्तुक होता है)।
- ''वस्तुशून्यत्वेऽपि शब्दज्ञानमाहात्म्यनिबन्धनो व्यवहारो दृश्यते, तद्यथा ''चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपमिति'', प्रतिषिद्धवस्तुधर्मा निष्क्रियः पुरुषः'', ''तिष्ठति बाणः''। अर्थात् वास्तविक अर्थ से रहित होने पर भी शब्दज्ञान की महिमा के कारण विकल्प का व्यवहार देखा जाता है। **जैसे–** ''चैतन्य पुरुष का स्वरूप है'', वस्तुधर्म से हीन पुरूष निष्क्रिय है,'' ''बाण स्थित है'' आदि में।
- **विपर्यय-** ''विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्'' अर्थात् ज्ञेय वस्तु से भिन्न रूप में प्रतिष्ठित मिथ्याज्ञान ''विपर्यय'' कहलाता है।
- **निद्रा -** ''अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा'' अर्थात् अभाव के कारणभूत तमोगुण को विषय बनाने वाली वृत्ति निद्रा है।
- **स्मृति-** ''अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः'' अर्थात् अनुभूतविषय की चित्त में उपस्थिति (अस्तेय) ''स्मृति'' वृत्ति कहलाती है।
- **मन की वृत्तियों का निरोध-**
  ''अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः''
  ''मन की इन प्रबल वृत्तियों का निरोध '' ''अभ्यास'' और ''वैराग्य'' है।

15. 'तस्य परमाणु समवायिकारणम्, तत्संयोगः असमवायिकारणम्, अदृष्टादि निमित्तं कारणम्'- अत्र 'तस्य' इति पदेन परामर्शः भवति-

(a) **मनसः** (b) **निर्विकल्पकबुद्धेः**
(c) **द्वयणुकस्य** (d) **कर्मणः**

उत्तर– (c)

दो परमाणु उसके समवायीकारण हैं और उन दोनों परमाणुओं का संयोग असमवायीकारण है, अदृष्ट इत्यादि निमित्त कारण है। यह द्वयणुक के विषय में है।

कारण – यत्तु कश्चिदाह कार्यानुकृतान्वयव्यतिरेकि कारणमिति तदयुक्तम्।

कारण तीन प्रकार का होता है– समवायी-असमवायी-निमित्त

समवायीकारण - ''यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम् । यथा तन्तवः पटस्य समवायि-कारणम् । (जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, जैसे- तन्तु पट के समवायीकारण है।

असमवायीकारण - ''यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम् । (जो समवायी कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायी कारण है। **जैसे-** तन्तुसंयोग पट का असमवायी कारण है।

निमित्तकारण - यन्न समवायिकारणम् , नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम् । यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम् ।

जो न समवायी कारण है, न ही असमवायी कारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है, जैसे वेमादि पट का निमित्त कारण है।

16. 'ब्रह्मावर्त' किं प्रचक्षते?

(a) **सरस्वतीदृषद्वत्योःयदन्तरम्**
(b) **सरस्वतीयमुनयोः यदन्तरम्**
(c) **गंगादृषद्वत्योः यदन्तरम्**
(d) **गंगासरस्वत्योः यदन्तरम्**

उत्तर–(a)

सरस्वती और दृषद्वती देव नदियों के मध्य का जो देवताओं का रचा हुआ देश है उसको ब्रह्मावर्त कहते हैं।

''सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते''।।''

''तस्मिन् देशे य आचारः पारंपर्यक्रमागतः ।
वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते ।।''

ब्रह्मावर्त देश में सब वर्णों और वर्णसङ्करों का जो आचार परंपरा से चला आया है वह सदाचार कहलाता है।

''वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ।।''

वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी रुचि के अनुसार कहना यह चार प्रकार का धर्म का साक्षात् लक्षण है।

''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः''

वेद को श्रुति और धर्मशास्त्र को स्मृति जानना चाहिए।

''अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्षते ।
कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः।।''

अंगूठे के जड़ के नीचे ब्राह्म तीर्थ, कनिष्ठा अंगुली के मूल में प्रजापति तीर्थ, अंगुलियों के अग्रभाग में दैवतीर्थ और अंगूठे और प्रदेशिनी के बीच में पित्र्य तीर्थ कहा है।

17. अधोलिखितेषु मीमांसादर्शनस्य आचार्यो न स्तः—

(A) मुरारिमिश्रः (B) शबरस्वामी
(C) गदाधरः (D) जगदीशः

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B) (b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(b)

मीमांसादर्शन के आचार्य गदाधर और जगदीश नहीं हैं। ये दोनों न्यायदर्शन के आचार्य हैं।

- जगदीश ने रघुनाथ की ''दीधिति'' पर ''जागदीशी'' नामक विस्तृत टीका की रचना किया था। ''तर्कामृत'' और ''शब्दशक्ति प्रकाशिका'' इनके मौलिक ग्रन्थ हैं। विद्वानों ने ''जगदीशस्य सर्वस्वं शब्दशक्तिप्रकाशिका'' कहकर इस ग्रन्थ की प्रशंसा की।
- गदाधर ने भी रघुनाथ की ''दीधिति'' पर ''गादाधरी'' नाम से विख्यात, विस्तृत एवं परिष्कृत टीका लिखी। ''व्युत्पत्तिवाद'', ''शक्तिवाद'' आदि इनके मौलिक ग्रन्थ हैं।

न्यायदर्शन के अन्य प्रमुख नैयायिक-

1. **गौतम -** न्यायशास्त्र के जन्मदाता हैं, इनका ग्रन्थ ''न्यायसूत्र'' है।
2. **वात्स्यायन -** गौतम के न्यायसूत्र पर भाष्यग्रन्थ की रचना की।
3. **उद्योतकर भारद्वाज -** न्यायभाष्य पर ''न्यायवार्तिक'' नामक ग्रन्थ की रचना की।
4. **वाचस्पति मिश्र -** ''न्यायवार्तिक, तात्पर्य टीका'' नामक ग्रन्थ लिखा।
5. **उदयनाचार्य -** ''तात्पर्यटीका'' पर ''तात्पर्यपरिशुद्धि'' की रचना की तथा ''आत्मतत्त्वविवेक'' और ''न्यायकुसुमाञ्जलि'' मौलिक ग्रन्थ है।
6. **जयन्तभट्ट -** ''न्यायमञ्जरी''
7. **गङ्गेशोपाध्याय-** ''तत्त्वचिन्तामणि''
8. **पक्षधर मिश्र -** ''तत्त्वचिन्तामणि'' पर ''आलोक'' नामक टीका
9. **रघुनाथ शिरोमणि -** ''तत्त्वचिन्तामणि'' पर ''दीक्षित'' नामक टीका
10. **मथुरानाथ तर्कवागीश -** ''तत्त्वचिन्तामणि'' पर ''रहस्य'' नामक टीका।

18. 'वास्तव-औपम्य-अतिशय-श्लेषाः' इति रूपेण अलङ्काराणां चतुर्धा विभाजनं करोति-

(a) दण्डी (b) रुद्रटः
(c) वामनः (d) हेमचन्द्रः

उत्तर–(b)

''वास्तव-औपम्य-अतिशय-श्लेष इस प्रकार अलङ्कार के चार प्रकार से विभाजन रुद्रट ने किया है। यह विभाजन अर्थालंकारों का है।

वास्तव - वस्तु के स्वरूप का कथन वास्तव है, इसमें व्यतिरेक, विषम, पर्याय आदि अलंकार आते हैं।

औपम्य - जहां प्रस्तुत वस्तु की तुलना के लिए अप्रस्तुत योजना होती है। वहां औपम्य होता है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलङ्कार इसके अन्तर्गत होते हैं।

अतिशय - अर्थ और धर्म के नियमों का इसमें विपर्यय होता है। इसमें विषम, विरोध, असंगति, विभावना आदि अलङ्कार आते हैं।

श्लेष - जहां वाक्य अनेकार्थ हो वहां श्लेष होता है। इसमें व्याजोक्ति, विरोधाभास आदि अलङ्कार आते हैं।

19. वर्गाणां पञ्चमवर्णैः युक्तो हकारो भवति -

(a) कण्ठ्यः (b) उरस्यः
(c) जिह्वामूलीयः (d) मूर्धन्यः

उत्तर–(b)

वर्गों के पांचों वर्णों से युक्त ''हकार'' उरस्य होता है।

''हकारं पञ्चमैर्युक्तमन्तःस्थाभिश्च संयुतम् ।
उरस्यं तं विजानीयात् कण्ठ्यमाहुरसंयुतम् ।।

हकार परिस्थिति विशेष में उरस्य अथवा कण्ठ्य होता है, जैसे- पञ्चम वर्णों अथवा अन्तःस्थ वर्णों के साथ संयुक्त रहने पर यह उरस्य होता है। उदाहरण- अपराह्ण बाह्य, ह्लादिनी आदि। लेकिन हरि, हर आदि स्थितियों में हकार कण्ठ्य है।

''अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा ।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ।।

वर्णों के 8 स्थान होते हैं– (1) उरस्, (2) कण्ठ, (3) शिरस् (मूर्धा), (4) जिह्वामूल, (5) दन्त, (6) नासिका, (7) ओष्ठ, (8) तालु

''ह्रस्वो दीर्घः प्लुत इति कालतो नियमादचि'' ।

काल की दृष्टि से स्वर तीन प्रकार के होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

20. अभावविषयकप्रत्यक्षप्रमायां चक्षुरिन्द्रियस्य अभावपदार्थस्य च मध्ये सन्निकर्षः

(a) समवेतसमवायः (b) संयुक्तसमवेतसमवायः
(c) समवायः (d) विशेषणविशेष्यभावः

उत्तर–(d)

''अभावविषयक प्रत्यक्ष प्रमायां चक्षुरिन्द्रियस्य अभावपदार्थस्य च मध्ये ''विशेषणविशेष्यभावः'' सन्निकर्षः।

- प्रत्यक्षज्ञान का हेतु इन्द्रिय एवं पदार्थ का सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है । (1) संयोग, (2) संयुक्तसमवाय, (3) संयुक्तसमवेतसमवाय, (4) समवाय, (5) समवेतसमवाय, (6) विशेषणविशेष्यभाव।

(1) संयोग सन्निकर्ष - ''चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः'' - चक्षु के द्वारा घट के प्रत्यक्ष ज्ञान में संयोग सन्निकर्ष होता है।

(2) संयुक्तसमवायसन्निकर्ष - ''घटरूप प्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः' - ''घट के रूप के प्रत्यक्षज्ञान में संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष होता है।

(3) संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष - ''रूपत्वसामान्य प्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः'' रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष होता है।

(4) समवाय सन्निकर्ष - ''श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः''- कर्ण के द्वारा शब्द साक्षात्कार में समवाय सन्निकर्ष होता है।

(5) समवेतसमवाय सन्निकर्ष - ''शब्दत्व साक्षात्कारे समवेत समवायः सन्निकर्षः''- शब्द जाति के प्रत्यक्ष में समवेत समवाय सन्निकर्ष होता है।

(6) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्षः - ''अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः'' - अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है। क्योंकि 'भूतल घटाभाव वाला है' इस प्रकार के ज्ञान में चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव विशेषण है।

21. 'सोऽयमात्मा चतुष्पात्' इति कस्याम् उपनिषदि वर्तते?

(a) मुण्डकोपनिषदि (b) माण्डूक्योपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) कठोपनिषदि

उत्तर–(a)

''सोऽयमात्मा चतुष्पात्'' यह सूक्तिवाक्य मुण्डकोपनिषद् का है।

''सर्वं ह्येतद् ब्रह्म अयमात्मा ब्रह्म सोऽयमात्मा चतुष्पात्'' अर्थात् यह सम्पूर्ण विश्व ''शाश्वत ब्रह्म ही है। यह आत्मा ब्रह्म है एवं चतुर्विध है'' अर्थात् इसके चार पाद हैं।

- ''जागरित स्थानो बहिष्प्रज्ञः सप्ताङ्गः एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः।''
- ''स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविशंतिमुखः प्रविविक्तभुक्तैजसो द्वितीयः पादः।''
- ''यज्ञ सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते न कञ्चन स्वप्नं पश्यति तत् सुषुप्तम् । सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः पाठः ।''
- ''एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ।"

22. महाभारते 'भारतभावदीपः' इति टीका केन रचिता?

(a) नीलकण्ठेन (b) देवबोधेन
(c) विमलबोधेन (d) नारायणभट्टेन

उत्तर–(a)

महाभारत पर ''भारतभावदीप'' नाम की टीका नीलकण्ठ ने लिखी है। नीलकण्ठ चतुर्धर का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के कर्पूरग्राम में हुआ था। ''भारतभावदीप टीका'' महाभारत के सम्पूर्ण 18 पर्वों पर उपलब्ध है।

इनकी अन्य रचनाएं - मन्त्रकाशीखण्डटीका, मन्त्र-रामायण, मन्त्र-भागवत, वेदान्तशतक, शिवताण्डव-व्याख्या, षट्तन्त्रीसार, गणेशगीता-टीका, हरिवंश-टीका, सौरपौराणिक मत समर्थन, विधुराधानविचार, आचार प्रदीप आदि हैं।

महाभारत की अन्य टीकाएं -

ज्ञानदीपिका - देवबोध
विषमश्लोकी - विमलबोध
भरतार्थप्रकाश - नारायण सर्वज्ञ
लक्षाभरण - वादिराज
भारतोपायप्रकाश- चतुर्भुजमिश्र

23. व्याकरणशब्दस्य सूत्रमिति अर्थे स्वीकृते भाष्यकारेण के द्वे विप्रतिपत्ती उपस्थापिते?

(A) भवार्थस्य असंगतिः (B) षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नता
(C) प्रोक्तार्थस्य अनिष्पन्नता (D) शब्दानामप्रतिपत्तिः

समुचितमुत्तरं चिनुत –

(a) (A) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(c)

व्याकरण महाभाष्य के पस्पशाह्नि में व्याकरण को शब्द मानने पर तीन दोष तथा सूत्र मानने पर दो दोष होते हैं।

- सूत्र को व्याकरण मानने पर दो समस्याएं - (1) षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नता और (2) शब्दानामप्रतिपत्तिः है।
- शब्द को व्याकरण मानने पर तीन समस्याएं- (1) ल्यूट् प्रत्यय के अर्थ की अनुपपत्तिः, (2) 'तत्र भवः' भव अर्थ वाले तद्धित प्रत्यय की अनुपपत्तिः, (3) प्रोक्त अर्थ वाले तद्धित प्रत्यय की अनुपपत्तिः।
- जब व्याकरण शब्द का अर्थ सूत्र माना जाता है, तब व्याकरण और सूत्र एक ही हो जाते हैं, दोनों में भेद नहीं है, अतः षष्ठ्यर्थ भेद सम्बन्ध की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
- ''व्याकरणात् शब्दान् प्रतिपद्यामहे'' अर्थात व्याकरण से शब्दों का ज्ञान करते हैं ऐसा व्यवहार होता है किन्तु इस सूत्रपक्ष में नहीं हो सकता, क्योंकि केवल सूत्र से शब्दों की प्रतिपत्ति का ज्ञान नहीं होता है। उसके लिए व्याख्यान की भी आवश्यकता पड़ती है।

24. व्यवहारस्य पादान् क्रमेण नियोजयत —

(A) उत्तरपादः (B) क्रियापादः

(C) सिद्धिपादः (D) भाषापादः

समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (D), (A), (B), (C) (b) (D), (C), (B), (A)

(c) (C), (B), (D), (A) (d) (A), (B), (C), (D)

उत्तर–(a)

व्यवहारपाद क्रमशः भाषापाद, उत्तरपाद, क्रियापाद और सिद्धिपाद है।

''स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽश्रर्षितः परैः।
आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत् ॥''

याज्ञवल्क्य ने इस श्लोक के माध्यम से व्यवहाराधाय के प्रारम्भ में स्पष्ट कहा है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों द्वारा धर्मशास्त्रीय नियमों एवं परम्पराओं के विरूद्ध तरीके से परेशान होता है और पीड़ित व्यक्ति राजा से निवेदन करे तो वह व्यवहार का विषय हो जाता है।

- याज्ञवल्क्य ने व्यवहार को चतुष्पाद बतलाया है- ''चतुष्पाद्व्यवहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः''

(1) **भाषापाद** - ''प्रत्यर्थिनोऽग्रतो लेख्यं इति भाषापादः''।
(2) **उत्तरपाद** - ''श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यम् इत्युत्तरपादो''।
(3) **क्रियापाद** - ''अर्थी लेखयेत्सद्यः इति क्रियापादः''।
(4) **सिद्धिपाद** - ''तत्सिद्धौ सिद्धिमाप्नोति इति साध्यसिद्धिपादः।''

25. सिद्धान्ते 'वैश्वदेवेन यजेत्' इत्यत्र 'वैश्वदेव' पदं यागनामधेयम् अस्ति—

(a) उत्पत्तिशिष्टगुणबलीयस्त्वात् (b) तत्प्रख्यशास्त्रात्

(c) तद्व्यपदेशात् (d) वाक्यभेदभयात्

उत्तर–(b)

सिद्धान्ते 'वैश्वदेवेन यजेत्' इत्यत्र 'वैश्वदेव' पदं यागनामधेयं- ''तत्प्रख्यशास्त्रात्'' अस्ति।

'उत्पत्ति विधि से बोधित गुण की प्रबलता भी यागनामधेय का पञ्चम् निमित्त है, ऐसा कुछ लोगों का मत है, जैसे 'वैश्वदेवेन यजेत्'' आदि वाक्यों में । इस वाक्य में उत्पत्तिविधि के द्वारा बोधित अग्नि आदि देवताओं की प्रबलता के कारण वैश्वदेव शब्द विश्वदेव नामक देवता का वाचक नहीं हो सकता, अतः कर्मविशेष का नाम कहा जाता है। लेकिन सत्य स्थिति यह है कि 'तत्प्रख्यशास्त्र' से ही इसकी कर्मनामधेयता सिद्ध हो जाती है क्योंकि वर्तमान याग में विश्वदेवरूप का बोधक वाक्य अर्थवाद वाक्य के रूप में विद्यमान है- यह अर्थवाद वाक्य है- ''यद् विश्वेदेवाः समयजन्त तद्वैश्वदेवस्य वैश्वदेवत्वम्''।

- अपौरूषेयं वाक्यं वेदः। स च विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेध-अर्थवादभेदात् पञ्चविधः। अर्थात् पुरुष के द्वारा न रचे गये वाक्य वेद हैं- यह वेद विधि-मंत्र-नामधेय- निषेध और अर्थवाद के भेद से पांच प्रकार का हैं।

नामधेय- ''नामधेयानां च विधेयार्थ परिच्छेदकतयाऽर्थवत्वम् ''। सम्पाद्य कर्म का अन्यों से व्यावर्तक होने से नामधेय सार्थक है। नामधेयत्व चार कारणों से होता है- (1) मत्वर्थलक्षणा के भय से (2) वाक्यभेद के भय से (3) तत्प्रख्यशास्त्र से (4) तद्०यपदेश से।

26. पाणिनिः यङ्प्रत्ययं विदधाति —

(A) कौटिल्येऽर्थे (B) भावगर्हायाम् अर्थे

(C) इच्छायाम् अर्थे (D) वेदनायाम् अर्थे

समुचितमुत्तरं चिनुत –

(a) (C) एवम् (D) (b) (A) एवम् (B)

(c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(b)

पाणिनि जी ने यङ्प्रत्यय का विधान ''कौटिल्येऽर्थे'' और ''भावगर्हायाम् अर्थे'' में किया है।

(1) 'नित्यं कौटिल्ये गतौ' - गत्यर्थक धातु से कुटिलगमन अर्थ द्योतित होने पर धातु से यङ् प्रत्यय होता है। जैसे- वाव्रज्यते (कुटिलं व्रजति)।
(2) ''लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो भावगर्हायाम् '' से यङ् प्रत्यय होता है।
(3) ''धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्'' - क्रिया का बार-बार होना अथवा अतिशय होना अर्थ द्योत्य होने पर एक अच् वाले हलादि धातुओं से परे यङ् प्रत्यय होता है। यङ् से ङकार इत्संज्ञक है तथा 'य' पूरा शेष रहता है। जैसे- बोभूयते।

27. 'सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति' इत्यत्र अधोरेखाङ्कितपदे केन सूत्रेण द्वितीया विभक्तिः भवति?

(a) कर्मणि द्वितीया (b) अकथितं च

(c) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया (d) उभयप्राप्तौ कर्मणि

उत्तर–(a)

''सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति'' में ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

''सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति (वह अमृत के लिए समुद्र को मथता है) यहाँ ''सुधा'' वस्तुतः सम्प्रदान है किन्तु सम्प्रदान की अविवक्षा होने के कारण **प्रकृत सूत्र -**

''दुह्याच्पच्दण्ड्रूधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथमुषाम् ।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम् ।।''

से कर्मसंज्ञा हुई और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त हुई। ''क्षीरनिधिम्'' प्रधान कर्म तथा 'सुधा' गौणकर्म है। सम्प्रदान की विवक्षा होने पर ''सुधायै क्षीरनिधिं मथ्नाति'' ही होगा।

संस्कृत भाषा की इन सोलह धातुओं का वक्ता स्वतन्त्र होता है वह चाहे तो करण, सम्प्रदान आदि का प्रयोग करे अथवा इनके स्थान

पर कर्म का प्रयोग करे। ये धातुएं द्विकर्मक होती है। (1) साधारण कर्म- यह प्रधान अथवा मुख्यकर्म होता है तथा (2) अकथित कर्म- जो वस्तुतः अपादान इत्यादि कारक होता है। लेकिन विवक्षित न होने के कारण इस सूत्र से कर्म हो जाता है।

उदाहरण- 'गां दोग्धि पयः' में दोहन क्रिया का कर्म पयस् है और पयस् से सम्बन्धित गाय है। इसलिए गाय अकथित कर्म है।

28. महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि रामोपाख्यानं वर्तते?

(a) वनपर्वणि (b) शान्तिपर्वणि

(c) भीष्मपर्वणि (d) अनुशासनपर्वणि

उत्तर–(a)

महाभारत के वनपर्व में ''रामोपाख्यान'' है।

- महाभारत में कुल 18 पर्व हैं।

(1) **आदिपर्व -** चन्द्रवंश का इतिहास और कौरव-पाण्डवों की उत्पत्ति।

(2) **सभापर्व -** द्यूतक्रीड़ा।

(3) **वनपर्व -** पाण्डवों का वनवास, नलोपाख्यान।

(4) **विराटपर्व -**पाण्डवों का अज्ञातवास।

(5) **उद्योगपर्व-** श्रीकृष्ण द्वारा सन्धि का प्रयत्न।

(6) **भीष्मपर्व -** अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का आरम्भ, भीष्म का शय्या पर पड़ना।

(7) **द्रोणपर्व -** अभिमन्यु और द्रोण का वध ।

(8) **कर्णपर्व -** कर्ण का युद्ध और वध।

(9) **शल्यपर्व -** शल्य का युद्ध और वध।

(10) **सौप्तिकपर्व-**सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध।

(11) **स्त्रीपर्व -** शोकाकुल स्त्रियों का विलाप ।

(12) **शान्तिपर्व -**युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्षसम्बन्धी सैकड़ों प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर।

(13) **अनुशासनपर्व -** धर्म और नीति की कथाएं, भीष्म का स्वर्गारोहण।

(14) **आश्वमेधिक पर्व -** युधिष्ठिर का अश्वमेघ-अनुष्ठान।

(15) **आश्रमवासिक -** धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश।

(16) **मौसलपर्व -** यादवों का पारस्परिक संघर्ष से नाश।

(17) **महाप्रस्थानिक पर्व -** पाण्डवों की हिमालय-यात्रा।

(18) **स्वर्गारोहण पर्व -** पाण्डवों का स्वर्गारोहण ।

29. 'यद्विषयकत्वेन ज्ञानस्यानुमितिविरोधित्वं तत्त्वम्' — अनेन वाक्येन कस्य लक्षणं प्रस्तूयते?

(a) उपमितिव्यापारस्य (b) हेत्वाभाससामान्यस्य

(c) वैशिष्ट्यावगाहिज्ञानस्य (d) विरुद्धार्थापत्तेः

उत्तर–(b)

''यद्विषयकत्वेन ज्ञानस्यानुमिति विरोधित्वं तत्वम् हेत्वाभाससामान्यस्य।

हेत्वाभास के भेद - ''अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्ध : प्रतिपक्षितः।

कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासाश्च पञ्चधा ।।

सात पदार्थ - द्रव्यं गुणस्तथा कर्म सामान्यं सविशेषकम् ।

समवायस्तथाऽभावः पदार्थाः सप्त कीर्त्तिताः ।।

द्रव्य के भेद - क्षित्यप्तेजोमरुद्वयोमकाला दिगदेहिनौ मनः ।

द्रव्याण्यथ गुणा रूपं रसो गन्धस्ततः परम् ।।

गुण के भेद - स्पर्शः संख्या परिमितः पृथक्त्वञ्च ततः परम् ।

संयोगश्च विभागश्च परत्वञ्चापरत्वकम् ।।

बुद्धिः सुखं दुःखमिच्छा द्वेषो यत्नो गुरुत्वकम् ।

द्रवत्वं स्नेहसंस्कारावदृष्टं शब्द एवं च ।।

कर्म के भेद - उत्क्षेपणं ततोऽवक्षेपणमाकुञ्चनं तथा ।

प्रसारणञ्च गमनं कर्माण्येतानि पञ्च च ।।

भ्रमणं रेचनं स्यन्दनोर्ध्वज्वलनमेव च ।

तिर्यग्गमनमप्यत्र गमनादेव लभ्यते ।।

सामान्य का निरूपण - 'सामान्यं द्विविधं प्रोक्तं परञ्चापरमेव च ।

द्रव्यादित्रिक - वृत्तिस्तु सत्ता परतयोच्यते।।

'परभिन्ना च या जातिःसैवाऽपरतयोच्यते।

द्रव्यत्वादिक - जातिस्तु परापरतयोच्यते।।

विशेष का निरूपण - 'व्यापकत्वात् परापि स्याद् व्याप्यत्वादपरापि च।

अन्त्यो नित्यद्रव्यवृत्तिर्विशेषः परिकीर्त्तितः।।

समवाय का निरूपण - 'घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणोः।

तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्त्तितः।।

अभाव का विभाजन - 'अभावस्तु द्विधा संसर्गान्योन्याभाव भेदतः।

प्रागभावस्तथा ध्वंसोऽप्यत्यन्ताभाव एव च।।

30. यथोचितं मेलनं कुरुत —

सूची-I	**सूची-II**
(A) चित्तभूमिः	(I) अस्तेयम्
(B) यमः	(II) रागः
(C) नियमः	(III) एकाग्रम्
(D) क्लेशः	(IV) तपः

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)

(b) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

(c) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

(d) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

उत्तर–(b)

- 'क्षिप्तमूढ़ विक्षिप्तमेकाग्रं निरुद्धमितिचित्तस्य भूमयः'। अर्थात् क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध चित्त की भूमियां हैं।
- ''अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः''। अर्थात् अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पांच क्लेश होते हैं।

- **''अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः''**। (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम कहे जाते हैं।
- **''शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः''** (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते है।)
- **''स्थिरसुखमासनम्''** (जो स्थायी और सुखद हो, वह आसन है)।
- **''तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः''** (आसन के सिद्ध होने पर श्वास और प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम है।
- **''स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः''** (इन्द्रियों का विषयों के साथ सन्निकर्ष न होने पर इन्द्रियों का चित्त के स्वरूप का अनुकरण सा कर लेना ''प्रत्याहार'' है।
- **''देशबन्धश्चित्तस्य धारणा''** (चित्त के सात्त्विक वृत्ति को किसी बाहरी या भीतरी प्रदेश में लगाना धारणा है।
- **''तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्''** (उस विषय में ज्ञान की एकतानता ही ध्यान है।
- **''तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः।''** (ध्येय अर्थमात्र को निर्भासित करने वाला अपने ज्ञानात्मक रूप से भी रहित सा ध्यान ही समाधि है।

31. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' इत्यस्मिन् वाक्ये 'विषम्' इति पदे द्वितीयाविभक्तिः केन सूत्रेण।

(a) तथायुक्तं चानीप्सितम् (b) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(c) कर्मणि द्वितीया (d) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया

उत्तर–(c)

''ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते'' इस वाक्य के 'विषम्' पद में 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई है।

- ''आदेनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते'' (वह भात खाते हुए विष खा लेता है)। यहाँ कर्त्ता का ईप्सित ओदन खाना है न कि विष का खाना। विष कर्त्ता का अनीप्सित है, लेकिन ओदन की ही भाँति विष के भी भोजन क्रिया से सटे होने के कारण ''तथायुक्तं चानीप्सितम् '' सूत्र से इसकी कर्मसंज्ञा हो जाती है और ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
  इसी तरह अन्य उदाहरण ''ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'' (वह गांव जाते हुए तिनके को छूता है) आदि है।
- **'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे'-** अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है, जैसे-मासम् अधीते।
- **''आशिषि नाथः''** - आशीर्वचन अर्थ में वर्तमान नाथ धातु के कर्म कारक में सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- सर्पिषो नाथनम् (घी सम्बन्धी इच्छा करना)
  - माणवकनाथनम् (बालक सम्बन्धी याचना)
- **''कर्तृकर्मणोः कृति''** - कृतप्रत्यान्त (कृदन्त) के योग में अनभिहित कर्त्ता और कर्म कारक में षष्ठी विभक्ति होती है, जैसे- कृष्णस्य कृतिः (कृष्ण की रचना)
  - जगतः कर्त्ता कृष्णः (संसार के सृष्टिकर्त्ता कृष्ण)।

32. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत —

कथनम् (I) : आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः

कथनम् (II) : दुष्प्रणीतः कामक्रोधाभ्यामज्ञानाद् वानप्रस्थपरिव्राजकान् अपि कोपयति।

यथोचितं विकल्पं चिनुत—

(a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये
(b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये
(c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम्
(d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम्

उत्तर–(a)

''आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः।

''दुष्प्राणीतः कामक्रोधाभ्यामज्ञानाद् वानप्रस्थपरिव्राजकान् अपि कोपयति।''

यह दोनों उक्ति सत्य है। इसको कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में बतलाया है।

- **आन्वीक्षिकी -** सांख्य, योग और लोकायत आन्वीक्षिकी विद्या के अन्तर्गत आते हैं। त्रयी आदि विद्याओं की प्रधानता, अप्रधानता को, भिन्न-भिन्न युक्तियों से निर्धारित करती हुयी आन्वीक्षकी विद्या लोक का उपकार करती है, सुख-दुःख से बुद्धि को स्थिर रखती है और सोचने, विचारने, बोलने तथा कार्य करने में सक्षम बनाती है।
- **त्रयी - ''सामऋग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी''** त्रयी के अन्तर्गत, साम्, ऋक् तथा यजु-इन वेदत्रय के साथ अथर्ववेद और इतिहास एवं वेदांग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष आते हैं।
- **वार्ता -** ''कृषिपशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता'' - कृषि, पशुपालन, व्यापार वार्ताविद्या के विषय हैं।
- **दण्डनीति-** ''आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः। तस्य नीतिर्दण्डनीतिः। (आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता विद्याओं की सुखसमृद्धि दण्ड पर आश्रित है। दण्ड-शासन को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कही जाती है।

33. षट्कसम्पत्तिषु न स्तः —

(A) मुमुक्षुत्वम् (B) तितिक्षा
(C) विषयः (D) उपरतिः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (A) एवम् (C) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(a)

षट्कसम्पत्ति- मुमुक्षुत्व और विषय नहीं है।

● वेदान्तसार में साधनचतुष्टय के चार भेद बतलाए गये हैं-

''नित्यानित्यवस्तुविवेकेहामुत्रार्थफलभोगविरागशमादिषट्कसम्पत्तिमुमुक्षुत्वानि''

(i) नित्य एवं अनित्य वस्तुविवेक, (ii) इहलौकिक एवं पारलौकिक फल को भोगने के प्रति वैराग्य, (iii) शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा आदि छः प्रकार की सम्पत्ति, (iv) मोक्षप्राप्ति के प्रति इच्छा।

शमादिषट्कसम्पत्ति

''शमादयस्तु शमदमोपरतितितिक्षासमाधानश्रद्धारूपाः''

(1) **शम -** शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः''।

(2) **दम -** ''दमोबाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्''।

(3) **उपरति-** ''निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः अथवा विहितानाम् कर्मणां विधिना परित्यागः।''

(4) **तितिक्षा-** ''तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता''।

(5) **समाधान -** ''निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्'' ।

(6) **श्रद्धा -** ''गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।

34. तर्कस्य स्वरूपम् अस्ति —

(a) व्यापकारोपेण व्याप्यारोपः

(b) समव्याप्त्यारोपेण विषमव्याप्त्यारोपः

(c) विशेषणारोपेण विशेष्यारोपः

(d) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः

उत्तर–(d)

व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः तर्क :।

व्याप्य का आरोप करने से व्यापक का आरोप होता है यही तर्क कहलाता है।

तर्कसंग्रह के अनुसार सात पदार्थ- (1) द्रव्य, (2) गुण, (3) कर्म, (4) सामान्य, (5) विशेष, (6) समवाय, (7) अभाव।

● **द्रव्य के नव भेद हैं-** ''द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवारवाकाशकाल दिगात्ममनांसि नवैव'' अर्थात् **पृथिवी- जल- तेज- वायु- आकाश- काल- दिक् - आत्मा - मन** ये नव द्रव्य हैं।

● 24 गुण हैं।

● **कर्म पांच प्रकार का है -** ''उत्क्षेपणावक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि- पञ्च कर्माणि।'' (उत्क्षेपण- अवक्षेपण- आकुञ्चन - प्रसारण - गमन)

● **सामान्य -** ''परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम्'' (पर एवं अपर दो प्रकार का सामान्य है)।

● **विशेष -** ''नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एवं'' (नित्य द्रव्यों में रहने वाले विशेष असंख्य है)।

● **समवाय -** ''समवायस्त्वेक एव'' समवाय एक प्रकार है।

● **अभाव -** ''अभावश्चतुर्विधः प्रागभावः प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ताभावोऽन्यो-न्याभावश्चेति।'' (अभाव चार प्रकार का होता है – (1) प्रागभाव, (2) प्रध्वंसाभाव, (3) अत्यन्ताभाव, (4) अन्योन्याभाव।

35. अधोलिखितेषु कः सामवेदस्य सप्तस्वरेषु न परिगण्यते?

(a) ऋषभः (b) पञ्चमः

(c) उत्तमः (d) मध्यमः

उत्तर–(c)

सामवेद के सात स्वरों में उत्तम स्वर की गणना नहीं है।

सात स्वर - षड्ज (स), ऋषभ (रे), गान्धार (ग), मध्यम (म), पंचम (प), धैवत (ध), निषाद (नि)।

ग्राम तीन हैं- मन्द्र (निम्न), मध्य (मध्यम), तीव्र (उच्च)

सामविकार के छः प्रकार - (1) स्तोभ, (2) विकार, (3) विश्लेषण, (4) विकर्षण, (5) अभ्यास, (6) विराम।

सामगान के चार भेद- (1) ग्रामगेयगान, (2) आरण्यगान, (3) ऊहगान, (4) रहस्यगान।

● तीन मूल स्वरों के आधार पर ही षड्ज आदि लौकिक स्वरों का उद्भव हुआ है।

मूल स्वर	लौकिक स्वर
(1) उदात्त	निषाद (नि), गान्धार (ग)
(2) अनुदात्त	ऋषभ (रे), धैवत (ध)
(3) स्वरित	षड्ज (स), मध्यम (म), पंचम (प)

''उदात्ते निषादगान्धारौ - अनुदात्ते ऋषभधैवतौ।
स्वरितप्रभवा ह्येते षड्जमध्यम-पंचमाः।।

36. महाभारतस्य पर्वनामानि क्रमेण लिखत —

(A) आदिपर्व (B) विराट्पर्व

(C) सभापर्व (D) वनपर्व

समुचितं विकल्पं चिनुत :

(a) (C), (B), (D), (A) (b) (B), (A), (D), (C)

(c) (A), (C), (D), (B) (d) (D), (B), (A), (C)

उत्तर–(c)

महाभारत के पर्व क्रमशः (1) आदिपर्व, (2) सभापर्व, (3) वनपर्व, (4) विराट्पर्व, (5) उद्योगपर्व, (6) भीष्मपर्व, (7) द्रोणपर्व, (8) कर्णपर्व, (9) शल्यपर्व, (10) सौप्तिक पर्व, (11) स्त्रीपर्व, (12) शान्तिपर्व, (13) अनुशासनपर्व, (14) आश्वमेधिकपर्व, (15) आश्रमवासिकपर्व, (16) मौसलपर्व, (17) महाप्रस्थानिक पर्व, (18) स्वर्गारोहण पर्व।

● महाभारत में 18 पर्व हैं। महाभारत के प्रमुख रचयिता वेदव्यास या कृष्णद्वैपायन है।

● भीष्मपर्व में अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का प्रारम्भ, भीष्म का आहत होकर शरशय्या पर पड़ना आदि है।

● शान्तिपर्व में युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्ष-सम्बन्धी सैकड़ों प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर है।

- गुप्तकाल के एक शिलालेख में महाभारत को ''शतसाहस्री संहिता'' कहा गया है।
- महाभारत की शैली पांचाली है तथा इसमें प्रमुख छन्द अनुष्टुप् है।

महाभारत पर आश्रित प्रमुख ग्रन्थ -

काव्यग्रन्थ - भारविकृत किरातार्जुनीयम्, माघकृत शिशुपालवध, क्षेमेन्द्रकृत-भारत-मंजरी, श्रीहर्षकृत-नैषधीयचरित, वामनभट्ट बाणकृत नलाभ्युदय।

नाटकग्रन्थ - भासकृत दूतघटोत्कच, दूतवाक्य, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, पंचरात्र और उरुभंग, कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम्, भट्टनारायणकृत वेणीसंहार, राजशेखरकृत बाल-भारत।

चम्पूग्रन्थ - त्रिविक्रमभट्टकृत नलचम्पू, अनन्तभट्टकृत भारत-चम्पू, नारायणभट्टकृत पांचाली स्वयंवर-चम्पू, राजचूडामणि दीक्षितकृत-भारत-चम्पू, चक्रकविकृत द्रौपदी परिणय-चम्पू ।

37. समुचितं मेलनं कुरुत -

सूची-I	सूची-II
(A) उणादिकोष :	(I) भट्टोजिदीक्षितः
(B) प्रौढमनोरमाः	(II) हेमचन्द्रः
(C) महाभाष्यदीपिका	(III) पाणिनिः
(D) हैमशब्दानुशासनम्	(IV) भर्तृहरिः

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)
(b) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
(c) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(I)
(d) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)

उत्तर–(a)

- **उणादिकोष** पाणिनि का ग्रन्थ है।
- **प्रौढमनोरमा-** भट्टोजिदीक्षित का व्याकरण ग्रन्थ है। यह टीका सिद्धान्त कौमुदी पर स्वयं ही लिखी थी।
- **महाभाष्यदीपिका-** भर्तृहरिकृत है।
- **हैमशब्दानुशासनम् -** आचार्य हेमचन्द्रकृत है।

अन्य तथ्य-

- महाभाष्य के टीकाकार भर्तृहरि ने व्याकरणदर्शन का ''वाक्यपदीय'' नामक ग्रन्थ लिखा।
- भट्टोजिदीक्षित ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'शब्दकौस्तुभ' नाम की विस्तृत व्याख्या की।
- नागेशभट्ट ने शब्दरत्न, विषमी टीका, वैयाकरण सिद्धान्त मञ्जूषा, शब्देन्दुशेखर आदि लिखा है।
- चन्द्रगोमी ने बौद्धों के लिए चान्द्रव्याकरण बनाया।
- शर्ववर्मा ने ऐन्द्र व्याकरण के आधार पर ''कातन्त्र-व्याकरण'' की रचना की।
- सारस्वत व्याकरण पर 17 वीं सदी में रामाश्रय ने सारस्वत-चन्द्रिका नामक टीका लिखी।

38. यथोचितं मेलनं कुरुत -

सूची-I	सूची-II
(A) प्रत्यक्षप्रमाणम्	(I) अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिः
(B) अनुमानम्	(II) प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलम्
(C) चित्तम्	(III) विशेषावधारणप्रधाना वृत्तिः
(D) निद्रा	(IV) सामान्यावधारणप्रधाना वृत्ति

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)
(b) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)
(c) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
(d) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(III)

उत्तर–(c)

- विशेषावधारणप्रधाना वृत्तिः - प्रत्यक्ष प्रमाणम्
- सामान्यावधारणप्रधाना वृत्तिः - अनुमानम्
- प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलम् - चित्तम्
- अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिः - निद्रा
- शब्दात्तदर्थविषया वृत्तिः श्रोतुरागमः।
- शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो - विकल्पः
- अनुभूतविषयासम्प्रमोषः- स्मृतिः
- चित्तवृत्तिनिरोधः - योगः
- मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् - विपर्ययो
- दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा - वैराग्यम्

39. अधोलिखितेषु कः ध्वनिः स्पर्शवर्गे नास्ति?

(a) प् (b) स्
(c) त् (d) क्

उत्तर–(b)

स्पर्शवर्ग के अन्तर्गत 'स्' ध्वनि नहीं आती है।

''कादयो मावसानाः स्पर्शाः''- 'क' से लेकर 'म' तक के वर्ण 'स्पर्श' वर्ण कहे जाते हैं।

''यणोऽन्तःस्था'' - यण् (य् व् र् ल्) 'अन्तःस्थ' वर्ण कहे जाते हैं।

''शल् ऊष्माणः''- ''शल्'' (श् ष् स् ह्) 'ऊष्म' वर्ण कहे जाते हैं।

''अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गो- 'अ' और 'अः' इस प्रकार किसी भी स्वर के पश्चात् आने वाली ध्वनियों को क्रमशः 'अनुस्वार' और 'विसर्ग' कहते हैं।

यत्नो द्विधा- आभ्यन्तरो बाह्यश्च। (आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न)

(1) **आभ्यन्तर प्रयत्न पांच प्रकार का होता है–** (1) स्पृष्ट, (2) ईषत्स्पृष्ट, (3) ईषद्विवृत्, (4) विवृत, (5) संवृत।

'स्पृष्ट' प्रयत्न 'स्पर्श-संज्ञक' वर्णों का होता है, ईषत्स्पृष्ट अन्तःस्थ' वर्णों का है। ''ईषद्विवृत'' ऊष्मवर्णों का है। ''विवृत'' स्वरों का तथा ''संवृत'' ह्रस्व अकार का होता है।

(2) **बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है –** (1) विवार, (2) संवार, (3) श्वास, (4) नाद, (5) घोष, (6) अघोष, (7) अल्पप्राण, (8) महाप्राण, (9) उदात्त, (10) अनुदात्त, (11) स्वरित ।

40. सम्यग्दर्शनादिगुणजनितक्षयोपशमनिमित्तमवच्छिन्नविषयं ज्ञानम्-

(a) श्रुतम् (b) मतिः
(c) अवधिः (d) मनःपर्यायः

उत्तर–(c)

सम्यक् दर्शन इत्यादि गुण से उत्पन्न जो क्षयोपशमनिमित्त अवच्छिन्न विषय का ज्ञान है वह ''अवधि'' कहलाता है।

- जैन दर्शन में ज्ञान के पांच भेद बतलाये गये हैं-

(1) **मतिज्ञान -** इन्द्रिय एवं मन के माध्यम से होने वाला ज्ञान।
(2) **श्रुतज्ञान -** शब्द, संकेत और शास्त्रादि के माध्यम से होने वाला ज्ञान।
(3) **अवधिज्ञान-**आत्मा के माध्यम से मूर्त द्रव्यों का होने वाला ज्ञान।
(4) **मनःपर्यायज्ञान-** मनोवर्गणा के माध्यम से आत्मा के द्वारा मानसिक भावना को जानने वाला ज्ञान।
(5) **केवलज्ञान-** आत्मा के द्वारा समस्त मूर्त और अमूर्त द्रव्यों एवं उनकी समस्त पर्यायों को जानने वाला ज्ञान।

उपर्युक्त पांचों ज्ञान जीव में होते हैं।

41. शब्दालङ्कारौ स्तः —

(A) यमकम् (B) रूपकम्
(C) उत्प्रेक्षा (D) अनुप्रासः

समुचितमुत्तरं चिनुत—

(a) (A) एवम् (D) (b) (C) एवम् (B)
(c) (B) एवम् (D) (d) (A) एवम् (C)

उत्तर–(a)

यमक और अनुप्रास शब्दालङ्कार है।

शब्दालङ्कार- शब्दविशेष की उपस्थिति के कारण जिन अलङ्कारों का अस्तित्व होता है वे शब्दालङ्कार कहलाते हैं।

प्रायः छः शब्दालङ्कार माने गए हैं- वक्रोक्ति, यमक, अनुप्रास, श्लेष, चित्र, पुनरुक्तवदाभास।

(1) **वक्रोक्ति -** ''यदुक्तमन्यथा वाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।
श्लेषेण काक्वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा।।''
श्लेष वक्रोक्ति और काकुवक्रोक्ति के भेद से वक्रोक्ति दो प्रकार का होता है।

(2) **अनुप्रास -** ''वर्णसाम्यमनुप्रासः'' (वर्णों की समानता को अनुप्रास कहते हैं)'' वर्णानुप्रास और पदानुप्रास के भेद से अनुप्रास के दो प्रकार है।

(3) **यमक -** ''अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः।''
यमकं पादतद्भागवृत्ति तद्यात्यनेकताम्।।
अर्थात् अर्थ होने पर भिन्नार्थक वर्णों की उसी क्रम से पुनः श्रवण नामक यमक अलङ्कार कहलाता है।

(4) **श्लेष-** ''वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
शिलष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावरादिभिरष्टधा ।।
अर्थात् अर्थभेद के कारण भिन्न-भिन्न होकर भी जहां शब्द एक उच्चारण के विषय होते हुए एकरूप प्रतीत होते हैं वह श्लेष अलङ्कार है। यह श्लेष अक्षर आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है।

(5) **पुनरुक्तवदाभास -** पुनरुक्तवदाभासो विभिन्नाकारशब्दगा।
एकार्थतेव शब्दस्य तथा शब्दार्थयोरयम् ।।
अर्थात् भिन्न-भिन्न रूप वाले सार्थक और अनर्थक शब्दों में आपाततः एकार्थता की प्रतीति होना ही पुनरुक्तवदाभास अलङ्कार कहलाता है। यह दो प्रकार का है- (1) शब्दमात्रागत, (2) शब्दार्थगत।

42. ऋग्वेदस्य उपनिषदौ स्तः

(A) तैत्तिरीयोपनिषद् (B) ऐतरेयोपनिषद्
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् (D) कौषीतकि उपनिषद्

समुचितमुत्तरं चिनुत —

(a) (B) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (A)

उत्तर– (a)

ऋग्वेद के उपनिषद् क्रमशः ऐतरेय एवं कौषीतकि है।

वेद	शाखा	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
ऋग्वेद -				
	(1) शाकल	(1) ऐतरेय	(1) ऐतरेय	(1) ऐतरेय
	(2) बाष्कल	(2) कौषीतकि	(2) शांखायन	(2) कौषीतकि
	(3) आश्वलायन			(3) बाष्कल मंत्रोपनिषद्
	(4) शांखायन			
	(5) माण्डूकायन			
शुक्ल-यजुर्वेद				
	(1) माध्यन्दिन या वाजसेनेयि-संहिता		बृहदारण्यक	(1) ईशोपनिषद् (वाजसनेयि)
	(2) काण्व			(2) बृहदारण्य कोपनिषद्
कृष्ण-यजुर्वेद				
	(1) तैत्तिरीय	तैत्तिरीय	तैत्तिरीय	(1) तैत्तिरीय
	(2) मैत्रायणीय			(2) कठ
	(3) कठ			(3) श्वेताश्वतर
	(4) कपिष्ठल			(4) मैत्रायणी
				(5) महानारायण

सामवेद		
(1) कौथुम	(1) तांड्य ब्राह्मण तलवकार	(1) छान्दोग्योपनिषद्
(2) राणायनीय	(2) षड्विंश ब्राह्मण	(2) केनोपनिषद्
(3) जैमिनोय	(3) सामविधान (सामविधि)	(3) सामविधान
	(4) आर्षेय	
	(5) देवताध्याय	
	(6) उपनिषद्/मंत्र/ छांदोग्य उपनिवद्	
	(7) संहितोपनिषद्	
	(8) वंश ब्राह्मण	
	(9) जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण	
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण ×	(1) प्रश्न
(1) पैप्पलाद		(2) मुण्डक
(2) तौद		(3) माण्डूक्य
(3) मौद		
(4) शौनकीय.......... इत्यदि		

43. 'एको रसोऽङ्गीकर्त्तव्यो वीरः शृङ्गार एव वा' इति कस्याचार्यस्योक्तिः?

(a) पण्डितराजस्य (b) धनञ्जयस्य
(c) विश्वनाथस्य (d) मम्मटस्य

उत्तर–(b)

आचार्य धनञ्जय के अनुसार-

''एको रसोऽङ्गी कर्त्तव्यो वीरः शृङ्गार एव वा ।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कुर्वान्निर्वहणेऽद्भुतम् ॥''

नाटक में वीर एवं शृङ्गार में किसी एक रस को ही अङ्गी (प्रधान) रस बनाना चाहिए। अन्य सभी रसों को अङ्ग (अप्रधान) रूप में रखना चाहिए। निर्वहण सन्धि में अद्भुत् - रस का सन्निवेश करना चाहिए।

- **नाटक का लक्षण-** ''प्रख्यातवंशो राजर्षिर्दिव्यो वा यत्र नायकः।
तत्प्रख्यातं विधातव्यं वृत्तमत्राधिकारिकम् ॥''

अर्थात् नाटक में ऐसे इतिहास-प्रसिद्ध इतिवृत्त को आधिकारिक कथा-वस्तु बनानी चाहिए, जिसमें मनोहर गुणों से युक्त, धीरोदात्त, प्रतापी, यश का अभिलाषी, महान उत्साह से सम्पन्न, वेदों का रक्षक, पृथ्वी का पालक, प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न कोई राजर्षि अथवा दिव्य नायक हो।

- **प्रकरण का लक्षण -** अथ प्रकरणे वृत्तमुत्पाद्यं लोकसंश्रयम् ।
अमात्यविप्रवणिजामेकं कुर्याच्च नायकम् ॥
धीरप्रशान्तं सापायं धर्मकामार्थतत्परम् ।
शेषं नाटकवत्सन्धिप्रवेशकरसादिकम् ॥

अर्थात् प्रकरण का इतिवृत्त कविकल्पित तथा सामान्यवर्ग की जनता के जीवन पर आधारित होना चाहिए। इसका नायक मन्त्री, ब्राह्मण तथा वणिक में से कोई होता है, जो धीर प्रशान्त, धर्मार्थ-काम में तत्पर हुआ करता है। इस नायक के कार्य विघ्नों से भरे रहते हैं। इसके अतिरिक्त प्रकरण में सन्धि, प्रवेशक तथा रस आदि नाटक के समान ही हुआ करते हैं।

44. केन यह कस्य सम्बन्धः?

सूची-I काव्यशास्त्रकृतयः	सूची-II रचनाकारः
(A) अलङ्कारसर्वस्वम्	(I) अनन्तदासः
(B) काव्यादर्शः	(II) केशवभट्टारकः
(C) चित्रमीमांसा	(III) जयरथः
(D) साहित्यदर्पणम्	(IV) धरानन्दः

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
(b) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
(c) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
(d) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)

उत्तर–(c)

- जयरथ ने ''राजानक रुय्यक'' के ''अलङ्कारसर्वस्व'' पर प्रसिद्ध टीका लिखी।
- श्री धरानन्द ने अप्ययदीक्षित विरचित ''चित्रमीमांसा'' पर ''सुधा'' नामक टीका लिखी।
- ''साहित्यदर्पण'' की 'लोचन' टीका अनन्तदास द्वारा विरचित है।
- ''काव्यादर्श'' पर केशवभट्टारक की ''रत्नीश्रा'' टीका लिखित है।
- सर्वप्रथम भामह ने ही अलङ्कार को नाट्यशास्त्र की परतन्त्रता से मुक्त कर एक स्वतन्त्र शास्त्र या सम्प्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम ''काव्यालङ्कार'' है।
- **दण्डी की प्रमुख रचनाएं-** ''काव्यादर्श'', ''दशकुमारचरित'', ''अवन्तिसुन्दरीकथा'' आदि है।
- वामन का ''काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति'' अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रन्थ है।
- आनन्दवर्द्धन ने ध्वनिसम्प्रदाय की स्थापना की। इनकी प्रसिद्धि ''ध्वन्यालोक'' नामक अमरग्रन्थ के कारण है।
- अभिनवगुप्त ने ध्वन्यालोक पर ''लोचन'' और नाट्यशास्त्र पर ''अभिनव-भारती'' नामक टीका लिखी।
- कुन्तक ''वक्रोक्ति सम्प्रदाय'' के प्रवर्त्तक है। इनकी प्रसिद्ध कृति ''वक्रोक्तिजीवितम्'' है।

45. रसविषये समुचितकथने स्तः

(A) रसः वाच्यः भवति
(B) अभिनवगुप्तमतेन रसः व्यङ्ग्यः भवति
(C) महिमभट्टमतेन रसः अनुमेयः भवति
(D) रसः लौकिकः भवति

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

उत्तर–(b)

1. रस वाच्य नहीं होता अपितु अनुभव का विषय है।
2. अभिनवगुप्त के मत में रस व्यङ्ग्य है। सही है।
3. महिमभट्ट ने रस को अनुमेय माना है, यह भी सही है।
4. रस लौकिक नहीं अपितु अलौकिक होता है।

रस विषयक सभी विशेषताओं का सारांश आचार्य विश्वनाथ ने प्रस्तुत किया-

''सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्द चिन्मयः।
वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।
लोकोत्तर चमत्कारप्राणः कैश्चित् प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः।

यहां रस का हेतु सत्वोद्रेक है।

(1) ''रस्यते इति रसः'' ''आस्वाद्यते इति रसः'' - जिसका आस्वादन हो वह रस है, रस सहृदय संवेद्य है।
(2) रस स्वप्रकाशानन्द है तथा चिन्मय भी।
(3) रस ''लोकोत्तर चमत्कार प्राण'' है। रस ऐसी चेतना है जिसमें ज्ञाता की चेतना विलीन हो जाती है। यह एक अलौकिक, अनिर्वचनीय स्थिति है।
(4) रस ब्रह्मास्वाद सहोदर है।

- भरतमुनि के प्रसिद्ध सूत्र-

''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति'' में निष्पत्ति शब्द का शब्दार्थ है- प्रकाशन, उत्पत्ति अथवा परिपक्वता।

46. वर्नरनियमेन मूलभारोपीयभाषायाः क्, त्, प् इत्येते ध्वनयः जर्मानिक-भाषासु ह्, थ्, फ्, इति कस्यां स्थितौ जायन्ते?

(a) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् उदात्तस्वरः भवति।
(b) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् अनुदात्तस्वरः भवति।
(c) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् स्वरितस्वरः भवति।
(d) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् एकश्रुतिस्वरः भवति।

उत्तर–(a)

वर्नर नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा के शब्दों के क् त् प् को जर्मानिक भाषाओं में ह् थ् फ् तभी होता है, जब मूलभाषा में अव्यवहित पूर्व कोई उदात्त स्वर होता है। यदि उदात्त स्वर क् त् प् के बाद लगेगा तो उनके स्थान पर क्रमशः ग् द् ब् होते हैं।

जैसे- भ्रा'तर् में त् से पहले उदात्त है अतः गाथिक और अंग्रेजी में Brother में (+7th) त् को थ मिलता है। ब्रॉथर को ही ब्रदर बोला जाता है।

- कार्लवर्नर (1846-1896) जर्मन भाषाशास्त्री है। इन्होंने ग्रिम नियम का संशोधन किया। ग्रिम नियम के जो अपवाद शेष रह गए उनके विषय में वर्नर ने ज्ञात किया कि ग्रिम नियम का आधार उदात्त स्वर था।

ग्रिम-नियम- यह नियम ध्वनि नियमों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसमें प्रथम वर्ण परिवर्तन का सम्बन्ध मूलभाषा-संस्कृत, ग्रीक, लैटिन से प्राचीन जर्मन अर्थात् गाथिक में हुआ है। द्वितीय वर्ण परिवर्तन निम्न जर्मन तथा उच्च जर्मन में हुआ है।

वर्ण-परिवर्तन का क्रम

क् त् प् (अघोष अल्पप्राण)
↓
ख् थ् फ् (अघोष महाप्राण)
(घोष अल्पप्राण) ग् द् ब् ←—— घ् ध् भ् (घोष महाप्राण)
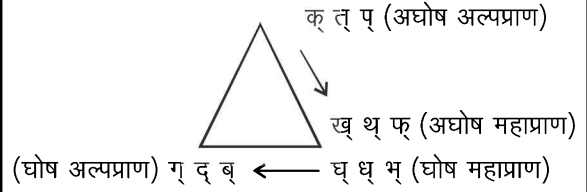
ग्रासमान-नियम- ग्रासमान भी जर्मन विद्वान है, इन्होंने ग्रिम नियम को संशोधित किया है और उसकी त्रुटियों का निराकरण किया है। निम्नलिखित उदाहरणों में हम देखते हैं कि ग्रिम-नियम के अनुसार ब् को प् और द् >त् होना चाहिए था, परन्तु गाथिक में भी ब् और द् मिलते हैं।

संस्कृत	गाथिक
बोधति	Biudan, विउदान
दभ्	Daubs, दाउब्स

संस्कृत महाप्राण ध्वनियां एकसाथ नहीं रहती उसमें प्रथम अल्पप्राण हो जाती है। **जैसे-** संस्कृत में धधामि, भभार न बनकर दधामि, बभार बनता है।

47. साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।
विजेतुं प्रयतेताऽरीन् न युद्धेन कदाचन।।
इति श्लोकः कस्माद् ग्रन्थात्?

(a) याज्ञवल्क्यस्मृतेः (b) अर्थशास्त्रात्
(c) नारदस्मृतेः (d) मनुस्मृतेः

उत्तर–(d)

''साम्नादानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक् ।
विजेतुं प्रयतेतारीनन् युद्धेन कदाचन ॥''

यह श्लोक ''मनुस्मृति'' के सातवें अध्याय में उल्लिखित है। इस श्लोक का तात्पर्य है कि साम-दान-भेद इन तीनों उपायों में से किसी एक का अथवा एक साथ ही तीनों का प्रयोग करके राजा शत्रु को जीतने का यत्न करें। लेकिन युद्ध की चेष्टा न करें।

- **क्रोध से उत्पन्न आठ दोष -**

''पशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारूष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः ।।''

अर्थात् चुगली, दुःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना आदि आठ प्रकार के क्रोधजन्य दोष है।

- **काम से उत्पन्न दस दोष -**

''मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः ।।

अर्थात् मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना आदि दस दोष कामजन्य है।

48. काव्यालङ्कारसूत्रस्य 'कविप्रिया' वृत्तेः रचयिता कः?

(a) सहदेवः (b) गोपेन्द्रः
(c) भट्टगोपालः (d) वामनः

उत्तर–(d)

''काव्यालङ्कारसूत्र पर ''आचार्य वामन'' ने स्वयं ही ''कविप्रिया वृत्ति'' की रचना की।

- आचार्य वामन के द्वारा प्रतिपादित काव्य-लक्षण को ''रीति सिद्धान्त'' कहा जाता है, ये रीति को काव्य की आत्मा मानते हैं-

''कविप्रिया'' वृत्ति के सन्दर्भ में वर्णित है-

प्रणम्य परमं ज्योतिर्वामनेन कविप्रिया।
काव्यालङ्कारसूत्राणां स्वेषां वृत्तिर्विधीयते ।।

- आचार्य धनञ्जय ने ''दशरूपक'' नामक ग्रन्थ की रचना की। ये ध्वनिविरोधी आचार्य थे।
- धनिक ने ''दशरूपक'' पर ''अवलोक'' नामक टीका लिखी।
- ''महिमभट्ट'' कश्मीर के निवासी थे। इन्होंने ध्वनिमत के खण्डन के लिए ''व्यक्तिविवेक'' नामक कृति की रचना की।
- क्षेमेन्द्र को ''औचित्य सम्प्रदाय'' का प्रवर्तक माना जाता है। इनकी तीन मुख्य कृतियां- ''औचित्यविचारचर्चा, सुवृत्ततिलक, कविकण्ठाभरण'' आदि है।
- रुय्यक का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''अलङ्कारसर्वस्व'' है। इन्होंने ''व्यक्तिविवेक'' पर टीका लिखी।
- आचार्य मम्मट के ''काव्यप्रकाश'' में ''दस उल्लास'' तथा ''विश्वनाथ'' के ''साहित्यदर्पण'' में ''दस परिच्छेद'' है।

49. तत्पुरुषसमासस्य भेदद्वयं किम्?

(A) प्रादिः
(B) उपपदम् (C) तद्गुणसंविज्ञानः
(D) इतरेतरयोगः **स मुचितमुत्तरं चिनुत—**

(a) (B) एवम् (C) (b) (C) एवम् (D)
(c) (A) एवम् (B) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(c)

तत्पुरूष समास के भेद प्रादि और उपपद हैं।

- तद्गुणसंविज्ञान - बहुव्रीहि का भेद है।
- इतरेतरयोग - द्वन्द्व का भेद है।
- अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः। (अनेक पद मिलकर एकपद होना समास है)
- समासः पञ्चधा। (समास के पांच भेद होते हैं- (1) केवल समास, (2) अव्ययीभाव समास, (3) तत्पुरूष समास, (4) बहुब्रीहि समास, (5) द्वन्द्व समास।

(1) केवल समास - विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः। (केवल समास में समास तो होता है किन्तु समास विशेष की संज्ञा नहीं होती है। जैसे- भूतपूर्वः

(2) अव्ययीभाव समास - ''प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः'' (अव्ययीभाव में पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है। इसमें पूर्व में अव्यय होता है) जैसे- उपकृष्णम् = कृष्ण के समीप

(3) तत्पुरूष समास - ''प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरूषस्तृतीयः।'' (तत्पुरूष समास में उत्तर पद प्रधान होता है। जैसे- कृष्णश्रितं = कृष्णं श्रितः। तत्पुरूष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु है।

(4) बहुव्रीहि समास - ''प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः। (इसमें पूर्व एवं पर दोनों प्रधान नहीं होते अपितु किसी अन्य पद की प्रधानता होती है। जैसे- पीताम्बरः - पीतानि अम्बराणि यस्य सः (पीले कपड़े हैं जिसके वह कृष्ण)

(5) द्वन्द्व समास - ''प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः। (उभयपदार्थ प्रधान द्वन्द्व समास होता है) जैसे- रामकृष्णौ = रामश्च कृष्णश्च

तत्पुरूष समास के भेद- (1) नञ् तत्पुरुष समास, (2) प्रादि तत्पुरूष समास, (3) गति तत्पुरूष समास, (4) उपपद तत्पुरूष समास, (5) अलुक् तत्पुरूष समास, (6) मध्यमपदलोपी तत्पुरूष समास, (7) मयूरव्यंसकादि तत्पुरूष समास।

50. यथोचितं मेलनं कुरुत —

सूची-I	सूची-II
आचार्याः	ग्रन्थाः
(A) कालिदासः	(I) छन्दसूत्रम्
(B) केदारभट्टः	(II) वृत्तरत्नाकरः
(C) क्षेमेन्द्रः	(III) श्रुतबोधः
(D) पिङ्गलः	(IV) सुवृत्ततिलकम्

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
(b) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)
(c) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
(d) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(I)

उत्तर–(c)

प्रमुख आचार्य		ग्रन्थ
कालिदास	-	ऋतुसंहार, कुमारसम्भवम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कालीस्तोत्र, गङ्गाष्टक, ज्योतिर्विदाभरण, राक्षसकाव्य, [श्रुतबोध-(छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ)]
केदारभट्ट	-	वृत्तरत्नाकर (छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ)
क्षेमेन्द्र	-	सुवृत्ततिलक (छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ)
पिङ्गल	-	छन्दसूत्रम्
गङ्गादास	-	छन्दोमञ्जरी
जयकीर्ति	-	छन्दोनुशासन
विरहांक	-	वृत्तजात समुच्चय
हेमचन्द्राचार्य	-	छन्दानुशासन
चित्रसेन	-	पिङ्गलटीका
भट्ट हलायुध	-	छन्दशास्त्र का भाष्य
जयदेव	-	जयदेव छन्द
राजेन्द्र दशावधान	-	पिङ्गलतत्त्वप्रकाशिका
लक्ष्मीनाथ	-	पिङ्गलप्रदीप
वामनाचार्य	-	पिङ्गलप्रकाश

51. औचित्य-भेदो स्तः—

(A) अभिप्रायः स्वभावश्च (B) कालः देशश्च
(C) ध्वनिः रीतिश्च (D) पदं वर्णश्च

समुचितमुत्तरं चिनुत—

(a) (B) एवम् (C) (b) (C) एवम् (D)
(c) (D) एवम् (A) (d) (A) एवम् (B)

उत्तर–(d)

अभिप्राय, स्वभाव, काल एवं देश औचित्य के भेद हैं। आचार्य क्षेमेन्द्र ने काव्य के सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म अवयव से लेकर उसके विशालतम रूप को ध्यान में रखकर औचित्य के 27 भेद बतलाए हैं-

''पदे वाक्ये प्रबन्धार्थे गुणेऽलंकरणे रसे ।
क्रियायां कारके लिङ्गे-वचने च विशेषणे ।।
उपसर्गे निपाते च काले देशे कुले व्रते ।
तत्त्वे सत्त्वेऽप्यभिप्राये स्वाभावे सारसंग्रहे ।।
प्रतिभायामवस्थायां विचारे नाम्न्यायाऽशिषि ।
काव्यास्यांगेषु च प्रादुरौचित्यं व्यापि जीवितम् ।।

उपर्युक्त पदों से स्पष्ट है कि औचित्य की व्याप्ति पद से लेकर प्रबन्ध और विचार तक हो सकती है। इन्होंने पद, वाक्य, प्रबन्ध, गुण, अलङ्कार, रस, क्रिया, कारक, लिङ्ग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात, काल, देश, कुल, व्रत, तत्त्व, सत्त्व, अभिप्राय, स्वभाव, सारसंग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचारनाम, आशीष आदि भेदों के रूप में औचित्य का संयोजन किया है।

52. यथोचितं मेलनं कुरुत —

सूची-I	सूची-II
(A) नागेशः	(I) विवरणपञ्जिका
(B) कैय्यटः	(II) प्रदीपः
(C) जिनेन्द्रबुद्धिः	(III) लघुशब्देन्दुशेखरः
(D) पतञ्जलिः	(IV) इष्टिः

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
(b) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(IV)
(c) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)
(d) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

उत्तर–(c)

वैयाकरण	व्याकरणग्रन्थ
नागेश भट्ट	- लघुशब्देन्दुशेखर, बृहच्छब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर, मञ्जूषा, स्फोटवाद, उद्योत, रसमञ्जरी आदि
कैय्यट	- पतञ्जलि के व्याकरणभाष्य पर 'प्रदीप' टीका
जिनेन्द्रबुद्धि	- काशिकाविवरणपञ्जिका
पतञ्जलि	- इष्टिः, महाभाष्य
भर्तृहरि	- वाक्यपदीयम्, महाभाष्यदीपिका
जयादित्य/वामन	- काशिकावृत्ति
कात्यायन	- वार्तिक
भट्टि	- भट्टिकाव्य
चन्द्रगोमिन्	- चान्द्रव्याकरण
विमलबुद्धि	- मुखमत्तदीपनी
हेमचन्द्राचार्य	- शब्दानुशासन
हरदत्त	- पदमञ्जरी
धर्मकीर्ति	- रूपावतार
बोपदेव	- मुग्धबोध
रामचन्द्र	- प्रक्रियाकौमुदी
विट्ठल	- प्रसाद
शेषकृष्ण	- प्रक्रियाप्रकाश
पण्डितराज जगन्नाथ	- मनोरमाकुचमर्दन
हरिदीक्षित	- शब्दरत्न

53. यथोचितं मेलनं कुरुत —

सूची-I	सूची-II
(A) प्रकृतिभावः	(I) अग्रे + अत्र
(B) सवर्णदीर्घः	(II) उप + ओषति
(C) पूर्वरूपैकादेशः	(III) अहो + ईशाः
(D) पररूपैकादेशः	(IV) यदि + इयम्

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

(b) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(c) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

(d) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

उत्तर–(d)

- **''अकः सवर्णे दीर्घः''-** अक् से सवर्ण अच् के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर दीर्घसंज्ञक एकादेश होता है।

उदाहरण- यदि + इयम् = यदीयम् दैत्य + अरिः = दैत्यारिः
इति + इव = इतीव विष्णु + उदयः = विष्णूदयः
श्री + ईशः = श्रीशः होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

- **''एङि पररुपम्''-** यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद एकारादि या ओकारादि धातु आवे तो दोनों के स्थान पर ''पररूप'' एकादेश होता है।

उदाहरण- प्र + एजते = प्रेजते
उप + ओषति = उपोषति

- **''एङः पदान्तादति''-** पदान्त एकार या ओकार के बाद यदि 'अकार' आवे तो पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश हो जाता है।

उदाहरण- अग्ने + अत्र = अग्नेऽत्र
हरे + अव = हरेऽव
विष्णो + अव = विष्णोऽव

पूर्वरूप होने पर अकार के स्थान पर 'ऽ' चिह्न को लगाते हैं। इसे 'अवग्रह' या 'खण्डाकार' कहते हैं।

- **''ओत''-** ओकारान्त निपात की प्रगृह्यसंज्ञा होती है।

उदाहरण- अहो + ईशाः - इसमें अहो की ''चादयोऽसत्त्वे'' से निपात संज्ञा हुई है तथा इसके उपरान्त 'ओत्' सूत्र लगा। ओकारान्त निपात है- अहो और इसी सूत्र से इसकी प्रगह्य संज्ञा हुई और ''प्लुतप्रगृह्य अचि नित्यम्' से अव् आदेश को बाधकर प्रकृतिभाव हो गया और रूप ''अहोईशाः'' ही रह गया।

54. आङ्गिक - वाचिक - आहार्य - सात्त्विक - रूपाः भेदाः सन्ति—

(A) अनुभावस्य (B) अभिनयस्य

(C) विभावस्य (D) सञ्चारिभावस्य

समुचितमुत्तरं चिनुत —

(a) (C) एवम् (D) (b) (A) एवम् (B)

(c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(b)

आङ्गिक-वाचिक-आहार्य-सात्त्विक ये चारों भेद अनुभाव और अभिनय के हैं।

''आङ्गिको वाचिकश्चैव ह्याहार्यः सात्त्विकस्तथा ।
चत्वारो अभिनया ह्येते विज्ञेया नाट्यसंश्रयाः ।।

- लोकवृत्तानुकरण चार प्रकार का है- (i) आङ्गिक, (ii) वाचिक, (iii) आहार्य, (iv) सात्त्विक।

(i) **आङ्गिक -** आङ्गिक शब्द का निर्वचन ही है कि अङ्ग जिसका प्रयोजन अथवा हेतु है। अनुकार्य रामादि की चेष्टाओं का सिर, हाथ, वक्ष, पार्श्व, कटि तथा पैर इन छः अङ्गों तथा नेत्र, भ्रू, नासा, अधर, कपोल तथा चिबुक इन छः उपाङ्गों के द्वारा सर्वथा परोक्ष अर्थ को भी सामाजिकों के लिए साक्षात् उपस्थित कर देना आङ्गिक अभिनय है।

(ii) **वाचिक-** आहार्य रामादि के भाव के अनुसार उनकी वाणी का अनुकरण वाचिक अभिनय कहा जाता है। इसका नाट्यप्रयोग में सम्वाद रूप में विधान होता है। भरत ने इस अभिनय को नाट्य का शरीर कहा है।

(iii) **आहार्य-** आङ्गिक, वाचिक और सात्त्विक अभिनय जहाँ साक्षात् शरीर के अङ्गों से जुड़े हैं वहाँ आहार्य अभिनय बाह्यवस्तुनिमित्तक है, जिसका प्रयोग नेपथ्य में होता है। इसका सम्बन्ध विशेष रूप से आहरणीय वेश-विन्यास आदि से है।

(iv) **सात्त्विक-** स्वरभेदादि अनुभावों का प्रदर्शन सात्त्विक अभिनय कहलाता है। सत्त्व से अभिप्राय मन की एकाग्रता से है जिसके न होने पर स्वरभेदादि का अभिनय कर पाना सम्भव नहीं होता।

भरत ने इन चारों के लिए एक विशेषण का प्रयोग किया- ''नाट्यसंश्रय'' अर्थात् ये नाट्य के आश्रित हैं।

55. 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते...' इतीयं श्रुतिः विषयवाक्यम् अस्ति —

(a) जन्माद्यधिकरणस्य (b) जिज्ञासाधिकरणस्य

(c) शास्त्रयोनित्वाधिकरणस्य (d) आनन्दमयाधिकरणस्य

उत्तर–(a)

''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते'', यह श्रुति वाक्य ''जन्माद्यधिकरण'' के प्रकरण में आया है।

ब्रह्मसूत्र में प्रथम अधिकरण में ब्रह्म की जिज्ञासा (अथातो ब्रह्मजिज्ञासा)'' की गयी है। जिज्ञासा के उपरान्त ब्रह्म के स्वरूप के विषय में बतलाया गया- **''जन्माद्यस्य यतः''** अर्थात् जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय जिससे होते हैं वह ब्रह्म है। इसी को श्रुति वाक्य ''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति । तद्विजिज्ञासस्व। तद्ब्रह्मेति।'' सिद्ध भी करता है।

- ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं।
- प्रथम अध्याय का नाम **समन्वयाध्याय** है इसमें वेदान्त वाक्यों का साक्षात् अथवा परम्परा से प्रत्यगभिन्न अद्वितीय ब्रह्म में तात्पर्य से समन्वय दिखलाया गया है।

- द्वितीयाध्याय का नाम **अविरोधाध्याय** है, इसमें स्मृति एवं तर्कादि से संभावित विरोधों का परिहार कर ब्रह्म में अविरोध दिखलाया गया है।
- तृतीयाध्याय का नाम **साधनाध्याय** है। इसमें वेदान्त सम्मत सर्वसाधनों का विचार है।
- चतुर्थाध्याय का नाम **फलाध्याय** है। इसमें सगुण और निर्गुण विद्या के फलविशेष का साङ्गोपाङ्ग निरूपण तथा जीवनमुक्ति, विदेहमुक्ति, जीव की उत्क्रान्ति, पितृयाण, देवयानमार्ग और सगुण ब्रह्म की उपासना के फलों में तारतम्यविषयक विचार हैं।

56. यथोचितं मेलनं कुरुत —

सूची-I	सूची-II
(A) निपातः	(I) कृत्तद्धितसमासाश्च
(B) नाम	(II) भावप्रधानम्
(C) आख्यातम्	(III) सत्त्वप्रधानानि
(D) प्रातिपदिकम्	(IV) उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
(b) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)
(c) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)
(d) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)

उत्तर–(c)

- उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति - निपात
- सत्त्वप्रधानानि नामानि - नाम
- भावप्रधानम् आख्यातम् - आख्यात
- कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकम् - प्रातिपदिक
- न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः।
- उच्चावचाः पदार्थाभवन्तीति गार्ग्यः।
- निपात के तीन भेद हैं-
  (1) **उपमार्थक-** इव, नु, न, चित्।
  (2) **कर्मोपसंग्रहार्थक -** च, वा, आ, अह, ह, किल, हि, ननु, खलु, शश्वतम्, नूनम्।
  (3) **पदपूरणार्थक-** कम, इम, इत, उ, इव, त्व, त्वत्।
- षड्भावविकाराः भवन्ति इति वार्ष्यायणि - (1) जायते, (2) अस्ति, (3) विपरिणमते, (4) वर्द्धते, (5) अपक्षीयते, (6) विनश्यति।

57. 'वितर्कितः पुरा बुद्ध्या कचिदर्थे निवेशितः' इत्यत्र पुरा बुद्ध्या वितर्कितः कः?

(a) ध्वनिरूपः शब्दः　(b) स्फोटरूपः बौद्धशब्दः
(c) बाह्योऽर्थः,　(d) पूर्वोक्तेषु न कोऽपि

उत्तर–(b)

''वितर्कितः पुरा बुद्ध्या क्वचिदर्थे निवेशितः।
कारणेभ्यो विवृत्तेन ध्वनिना सोऽनुगृह्यते ॥

अर्थात् ''शब्द के प्रयोग से पूर्व विवक्षाकाल में वक्ता अपनी बुद्धि से प्रथमतः अर्थसम्बन्धी शब्द की संकल्पना व अवधारणा करता है। तत्पश्चात् बुद्धि-कल्पित वह शब्द वक्ता की बुद्धि द्वारा ही किसी अर्थ विशेष में अभिन्न रूप से स्थापित किया जाता है तथा अर्थ के स्वरूप में अनुप्रवेशित किया जाता है।

इस प्रकार अर्थ से तादात्म्य को प्राप्त वह बुद्धिविषय सूक्ष्मशब्द ही कण्ठ आदि स्थानरूप उद्भव कारणों से श्रोत्रग्राह्य वर्ण आदि ध्वनि के रूप में विवृत्त व उद्भूत होता है जिसके क्रमरूप के अनुकरण से उपकृत होकर वह वर्णक्रमरूपवाला अभिव्यक्त होता है तथा जिस अर्थ से उसका तादात्म्य स्थापित है, उसी का बोध कराता है, अन्य का नहीं।

- भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय एक व्याकरणदर्शन का ग्रन्थ है। इसमें कुल तीन काण्ड है- (1) ब्रह्मकाण्ड, (2) वाक्यकाण्ड, (3) पदकाण्ड।

58. 'शिव + छाया = शिवच्छाया' इत्यत्र प्रवृत्तानाम् अधोलिखितसूत्राणाम् उचितमनुक्रमं चिनुत

(A) खरि च　(B) छे च
(C) झलां जशोऽन्ते　(D) स्तोः श्चुना श्चुः

समुचितं विकल्पं चिनुत :

(a) (A), (B), (D), (C)　(b) (B), (A), (C), (D)
(c) (B), (C), (D), (A)　(d) (D), (C), (A), (B)

उत्तर–(c)

शिवच्छाया- शिव + छाया में 'शि' के 'व' के ह्रस्व स्वर 'अ' के बाद 'छ' है अतएव 'छे च' सूत्र से 'अ' को तुक् का आगम हुआ। तुक् का 'क्' इत् है, अतएव 'तुक्' कित् है। इसलिए 'आद्यन्तौ टकितौ' से 'तुक्' का आगम 'अ' के बाद होकर 'शिव तुक् छाया' बना। 'तुक्' में उ तथा क् के इत् होने के कारण उनका लोप होने पर 'त्' शेष रहा और रूप 'शिवत् छाया' बना। अब झलां जशोऽन्ते से 'त्' का 'द' हुआ (त्रिपादी) इसके बाद 'स्तोः श्चुना श्चुः' तथा अन्तिम् में 'खरि च' सूत्र से उसी वर्ग का प्रथम वर्ण 'च' हो गया और रूप 'शिवच्छाया' बना।

'पदान्ताद्वा'- यदि 'छ' के पूर्व (आङ् उपसर्ग को तथा 'मा' के आ को छोड़कर) कोई पदान्त दीर्घ स्वर आवे, तो ऊपर वाला नियम (छे च') विकल्प से लगता है। जैसे- लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीछाया या लक्ष्मीच्छाया।

'आङ्माङोश्च'' - 'छ' के पूर्व आङ् और माङ् का आ होने पर 'च' नित्य आयेगा, जैसे- मा + छिदत् = माच्छिदत्। आ + छादयति = आच्छादयति।

59. अधोलिखितान् साहित्यकारान् कालक्रमेण योजयत -

(A) अम्बिकादत्तव्यासः (B) पण्डिताक्षमारावमहोदया

(C) श्रीधरभास्करः वर्णेकरः (D) वी. राघवन्

समुचितं विकल्पं चिनतुः

(a) (A), (B), (C), (D) (b) (A), (B), (D), (C)

(c) (A), (D), (B), (C) (d) (A), (C), (B), (D)

उत्तर–(b)

अम्बिकादत्त व्यास- (1858 ई.- 1900)- सिलावटी मुहल्ला, रावत जी का धूला, जयपुर, राजस्थान।

संस्कृत रचनाएं - शिवराजविजय (उपन्यास), सामवतम् (नाटक), रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्।

हिन्दी रचनाएं- बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द)

उपाधियां- सुकवि, घटिकाशतक, शतावधान, भारतरत्न, अभिनवबाण/आधुनिकबाण।

पण्डित क्षमाराव (1890-1954)- रचनाएं- श्रीज्ञानेश्वरचरितम् , शङ्करजीवनाख्यानीयम्, रामदासचरितम्, तुकारामचरितम्, मीरालहरी, सत्याग्रह गीता, कथामुक्तावली, कथापञ्चकम् ।

वेंकटरमण राघवन (1908-1979), संस्कृत के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत, इन्होंने संस्कृत में रवीन्द्रनाथ टैगोर के पहले नाटक, **''वाल्मीकि प्रतिभा का अनुवाद''** किया, जो वाल्मीकि के एक डाकू से कवि में परिवर्तन से सम्बन्धित है।

श्रीधरभास्कर वर्णेकर- (1918-2000) **प्रमुख रचनाएं-** इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना **'श्रीशिवराज्योदयम्'** है। **अन्य रचनाएं-** भारतरत्नशतकम्, स्वातन्त्र्यवीरशतकम् आदि।

60. मैक्समूलरमहोदयेन ऋग्वेदस्य का संहिता सम्पादिता?

(a) शाकलसंहिता (b) वाष्कलसंहिता

(c) शांखायनसंहिता (d) माण्डूकायनसंहिता

उत्तर–(a)

मैक्समूलर महोदय ने ऋग्वेद की ''शाकल संहिता'' का सम्पादन किया था।

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है।

''चरणव्यूह'' के अनुसार ऋग्वेद की पांच प्रमुख शाखाएँ हैं- (1) शाकल, (2) बाष्कल, (3) आश्वलायन, (4) शांखायन, (5) माण्डूकायन । ऋग्वेद की शाकल शाखा ही वर्तमान में उपलब्ध है।

- मैक्समूलर ने ही सर्वप्रथम सायण-भाष्य सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया। यह कार्य 27 वर्षों के घोर परिश्रम के बाद पूर्ण हुआ था।
- फ्रीड्रिश रोजेन ने सर्वप्रथम ऋग्वेद का सम्पादन प्रारम्भ किया था।
- विल्सन ने सर्वप्रथम पूरे ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद (1850) प्रकाशित किया। यह सायणभाष्य पर आश्रित है।
- ग्रासमान महोदय ने दो भागों में सम्पूर्ण ऋग्वेद का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद किया है।
- वेबर ने शुक्ल यजुर्वेद संहिता का महीधरभाष्य सहित देवनागरी अक्षरों में (1849-1852) ई. में प्रकाशित किया था।

61. अधोलिखितेषु ध्वनिपरिवर्तनस्य कारणं नास्ति —

(a) भावावेशः (b) शीघ्रभाषणम्

(c) एकान्तवार्ता (d) कृत्रिमता

उत्तर–(c)

ध्वनिपरिवर्तन का कारण ''एकान्तवार्ता'' नहीं है।

ध्वनि परिवर्तन के कारणों को दो भागों में विभक्त किया गया है-

(क) आभ्यन्तर कारण , (ख) बाह्यकारण

(1) **आभ्यन्तरकारण -** (1) प्रयत्नलाघव या मुखसुख, (2) लघूकरण की प्रवृत्ति, (3) अनुकरण की अपूर्णता, (4) अशिक्षा, (5) शीघ्र भाषण, (6) भावावेश, (7) काव्यात्मकता, (8) बलाघात, (9) कृत्रिमता, (10) भ्रामक व्युत्पत्ति।

(2) **बाह्यकारण-** (1) भौगोलिक प्रभाव, (2) सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियां, (3) काल-प्रभाव या स्वाभाविक विकास, (4) लिपि-दोष, (5) अन्य-भाषाओं का प्रभाव, (6) सादृश्य ।

- **ध्वनि-परिवर्तन की दिशाएं-** (1) समीकरण, (2) विषमीकरण, (3) आगम, (4) लोप, (5) समाक्षर-लोप, (6) वर्ण-विपर्यय, (7) महाप्राणीकरण, (8) अल्पप्राणीकरण, (9) घोषीकरण, (10) अघोषीकरण, (11) अनुनासिकीकरण, (12) ऊष्मीकरण, (13) सन्धि-कार्य, (14) मात्राभेद।

62. ऋणादाने वृद्धिः कतिविधा?

(a) द्विविधा (b) त्रिविधा

(c) चतुर्विधा (d) पञ्चविधा

उत्तर–(c)

ऋणादान में वृद्धि चार प्रकार की होती है।

याज्ञवल्क्यस्मृति के ऋणादान प्रकरण में वृद्धि की चर्चा की गयी है।

- ''अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सबन्धके। वर्णक्रमाच्छतं द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा ।। अर्थात् बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवां भाग व्याज होता है। अन्य स्थिति में (बन्धक न होने पर) वर्ण-क्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश, शूद्र क्रम) से दो, तीन, चार और पांच प्रतिशत वृद्धि होती है।
- ''कान्तारगास्तु दशकं सामुद्रा विंशकं शतमम्'' अर्थात् जो सूद पर धन लेकर अधिक कमाने के लिए जंगल में चले जायें, उनसे दश प्रतिशत, जो समुद्र में चले जायें उनसे बीस प्रतिशत ब्याज ले।

- दद्युर्वा स्वकृतां वृद्धिं सर्वे सर्वासु जातिषु'' अथवा सभी जातियों के लोगों को स्वीकृत की गयी ब्याज दे।
  ''सन्ततिस्तु पशुस्त्रीणां'' (पशु और स्त्री की वृद्धि (ब्याज) उसकी सन्तान हैं।
- रस आदि की वृद्धि स्वीकृत वृद्धि से अधिकतम आठ गुनी हो सकती है। वस्त्र, धान्य और स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि क्रमशः चौगुनी, तिगुनी या दुगुनी हो सकती है।

63. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत -

कथनम् (I) : सत्त्वं लघु प्रकाशकम् ।

कथनम् (II) : उपष्टम्भकं चलं च रजः।

यथोचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये
(b) (I) तथा (II) असत्ये
(c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्ये
(d) (I) असत्यम् (II) सत्यम्

उत्तर–(a)

''सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः ।
गुरू वरणकमेव तमः, प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ।।

सत्त्व गुण हल्का होता है अतः प्रकाशक होता है, रजोगुण चञ्चल होता है अतः उत्तेजक होता है, तमोगुण भारी होता है अतएव अवरोधक होता है। इस प्रकार तीनों गुण विरोधी स्वभाव वाले होते हुए भी दीपक के समान व्यवहार करने वाले होते हैं।

सत्त्व, रजस्, तमस् का स्वरूप- प्रीत्यप्रीति- विषादात्मकाः (सुख-दुःख-मोहात्मक)।

तीनों गुणों के कार्य - प्रकाश-प्रवृत्तिनियमार्थाः (प्रकाश-प्रवृत्त-नियमन करना है)

तीनों गुणों के स्वभाव - ''एक-दूसरे को दबाना, आश्रय बनना, आविर्भाव।

64. असमवायिकारणत्वम् एव अस्ति —

(a) द्रव्यसामान्ययोः (b) अभावसमवाययोः
(c) क्रियागुणयोः (d) विशेषसमाहारयोः

उत्तर–(c)

असमवायिकारणत्वम् एव क्रियागुणयोः अस्ति।

कारण- यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्। यथा- तन्तुवेमादिकं पटस्य कारणम् । अर्थात् जिसका कार्य से पहले होना नियत है और जो अन्यथासिद्ध नहीं होता वह कारण कहलाता है। जैसे तन्तु तथा वेमा इत्यादि पट के कारण होते हैं।

- **कारण तीन प्रकार के होते है-** (1) समवायी, (2) असमवायी, (3) निमित्त कारण।

(1) **समवायीकारण-** यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्।- यथा-तन्तवः पटस्य समवायिकारणम् (जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है वह समवायि कारण कहलाता है। तन्तु आदि पट का समवायि कारण है।

(2) **असमवायीकारण-** यत्समवायिकारण प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम् । यथा तन्तु संयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। (जो समवायी कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायी कारण होता है। तन्तुसंयोग पट का असमवायीकारण होता है।

(3) **निमित्त कारण-** यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम् । यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम् । (जो न समवायीकारण है और न ही असमवायीकारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है, वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।

65. 'रिटोरिक' इति ग्रन्थस्य कर्त्ता कः ?

(a) प्लेटोमहोदयः (b) अरस्तुमहोदयः
(c) बेनेदितो क्रोचेमहोदयः (d) होरेसमहोदयः

उत्तर–(b)

''रिटोरिक'' ग्रन्थ के कर्त्ता ''अरस्तू'' हैं।

अरस्तू की रचना ''तेखनेस रितेरिकेस'' जो भाषण कला से सम्बन्धित है। इसका अनुवाद ''भाषण कला'' (Rhetoric) किया गया।

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र (Western Poetics) का उद्भव लगभग ईसा के आठ शताब्दी पूर्व प्राप्त होता है।

अन्य पाश्चात्य लेखक और उनके प्रमुख ग्रन्थ-

प्लेटो (427-347 ई.पू.) -	Republic, लॉज, इयोन, क्रातिलुस, गोर्गीआस, फेद्रुस, फिलेबुस, विचार-गोष्ठी, पोलितेइया, नोमोई, सिंपोसियोन।
बेनेदेत्तो क्रोचे -	एस्थेटिक
लोंजाइनस / लोंगिनुस -	पेरिहुप्सुस
विलियम वर्डसवर्थ -	लिरिकल बैलेड्स (कविता-संग्रह) की भूमिका, ऐन इवनिंग वॉक ऐंड डिस्क्रिप्ट स्केचेज, द प्रिल्यूड

66. बौद्धदर्शनस्य आचार्यद्वयम् अस्ति —

(A) उमास्वातिः (B) उदयनः
(C) असङ्गः (D) धर्मकीर्तिः

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (C) (b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(b)

बौद्धदर्शन के दोनों आचार्य क्रमशः असङ्ग और धर्मकीर्ति हैं।

- उमास्वाति जैन दर्शन के आचार्य हैं तथा उदयन न्याय दर्शन के हैं।
- बौद्ध आचार्य असङ्ग, योगाचार परम्परा के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। महायान सूत्रालङ्कार जैसा प्रौढ़ ग्रन्थ लिखकर इन्होंने महायान सम्प्रदाय की नींव डाली और यह पुराने हीनयान सम्प्रदाय से किस प्रकार उच्च कोटि का है, इस पर जोर दिया।
- धर्मकीर्ति भारतीय दार्शनिक तर्कशास्त्र के संस्थापकों में से थे। बौद्ध परमाणुवाद के मूल सिद्धान्तकारों में इनकी गणना की जाती है। धर्मकीर्ति बौद्ध विज्ञानबोध के सबसे बड़े दार्शनिक दिङ्नाग के शिष्य थे।
- आचार्य उमास्वाति (उमास्वामी) मुख्य जैन ग्रन्थ, तत्त्वार्थ सूत्र के लेखक हैं। यह दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों के द्वारा पूजे जाते थे।
- उदयनाचार्य नास्तिकता के विरोध में ईश्वरसिद्धि के लिए ''न्यायकुसुमाञ्जलि'' नामक ग्रन्थ लिखा।

67. अधोलिखितानां काव्यलक्षणानां पूर्वापरक्रमं नियोजयत-

(A) शब्दार्थौ काव्यम्

(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

(C) तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि

(D) सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्

समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (C), (D), (A), (B)   (b) (B), (A), (C), (D)

(c) (D), (B), (C), (A)   (d) (A), (D), (C), (B)

उत्तर–(d)

- शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् → भामह
- तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि → मम्मट
- रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् → जगन्नाथ
- शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्नापदावली → दण्डी
- रीतिरात्मा काव्यस्य → वामन
- शब्दार्थौ काव्यम् → रुद्रट
- काव्यस्यात्मा ध्वनिः । सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम् - आनन्दवर्धन
- शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनी । बंधे व्यवस्थितौ काव्यम् तद्विदाह्लादकारिणी → कुन्तक
- वाक्यं रसात्मकं काव्यम् → विश्वनाथ

68. 'स नः पितेव सूनवेः....' इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते वर्तते?

(a) अग्निसूक्ते   (b) वरुणसूक्ते

(c) इन्द्रसूक्ते   (d) पुरुषसूक्ते

उत्तर–(a)

''स नः पितेव सूनवेः ....'' यह मन्त्रांश अग्निसूक्त का है।

''सः नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये'' ॥ 9 ॥

- यह अग्निसूक्त का अन्तिम (नौवां) मन्त्र है।
- अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम-मण्डल का प्रथम सूक्त है।
- अग्निसूक्त के ऋषि-विश्वामित्र, देवता-अग्नि तथा छन्द-गायत्री है।
- वैदिक साहित्य में पृथ्वी-स्थानीय देवताओं में अग्नि का प्रमुख स्थान है।
- अग्निसूक्त का प्रथम मन्त्र - अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
- अग्नि के प्रमुख विशेषण - ऋत्विक्, जातवेदस्, घृतपृष्ठ, शोचिषकेश, रक्तश्मश्रु, रुक्मदन्त, गृहपति, विश्वपति, दमूनस, पुरोहित, धूमकेतु, सहसपुत्र, यविष्ठय, मेध्य, कविशस्त, हत्यवाहन, वैश्वानर, नाराशंस, घृतमुख, नेता, कविक्रतु, त्र्यम्बक, पावक, हविष्यति, सत्यधर्मा, जज्ञान।

69. अधोलिखितेषु कौ द्वौ क्यप्प्रत्ययान्तौ?

(A) आदृत्यः   (B) आहत्य

(C) शप्यम्   (D) जुष्यः

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B)   (b) (B) एवम् (C)

(c) (B) एवम् (D)   (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(d)

आदृत्य और जुष्य क्यप् प्रत्ययान्त हैं।

''एति - स्तु - शास् - वृ - दृ - जुषः क्यप्''। **3/1/109**

- इण्, स्तु, शास् , वृ, दृ और जुष् धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है।
- क्यप् के ककार की लशक्वतद्धिते से इत्संज्ञा और पकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा दोनों का 'तस्यलोपः' से लोप होकर केवल 'य' बचता है। पित् करने का फल ''ह्रस्व पिति किति तुक्' से तुक् का आगम है ओर कित् करने का फल ''क्ङिति च'' से गुण का निषेध करना है।

वृत्यः, जुष्यः (आ + दृ = आदृत्यः)- में 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः से क्यप् प्रत्यय हुआ, अनुबन्धलोप होकर जुष् + य = जुष्य : बना

- आ + दृ + य में ''ह्रस्वस्य पिति किति तुक् से तुकागम् हुआ और अनुबन्धलोप होकर ''आदृष्यः'' बना।

इसी प्रकार - इत्यः, स्तुत्यः, शिष्यः आदि भी सिद्ध होता है।

70. अधोलिखितेषु वर्णेषु को सोष्माणौ स्तः?

(A) क्   (B) ख्

(C) न्   (D) ढ्

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B)   (b) (B) एवम् (C)

(c) (C) एवम् (D)   (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(d)

युग्मौ सौष्माणौ- वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण ''सोष्म'' कहलाते है।

- ''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः'' (अ, कवर्ग, ह, विसर्ग, ''कण्ठ'')
- ''इचुयशानां तालु'' (इ, चवर्ग, य,श ''तालु'')
- ''ऋटुरषाणां मूर्धा'' (ऋ, टवर्ग, र्, ष् , ''मूर्धा'')
- ''लृतुलसानां दन्ताः'' (लृ, तवर्ग, ल, स, ''दन्त'')
- ''उपूपध्मानीयानामोष्ठौ'' (उ, पवर्ग, उपध्मानीय-विसर्ग ''ओष्ठ)
- ''ञमङणनानां नासिका च'' (ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, का ''नासिक्यस्थान'')
- ''एदैतोःकण्ठतालु'' (ए और ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठ, तालु है)
- ''ओदौतोः कण्ठोष्ठम्'' (ओ, औ का उच्चारण साथ कण्ठ, ओष्ठ है)
- वकारस्य दन्तोष्ठम्'' '(वकार का दन्त-ओष्ठ स्थान है)
- ''नासिकाऽनुस्वारस्य'' (अनुस्वार का उच्चारण नासिका के सहयोग से होता है)

71. शिक्षाग्रन्थस्य प्रतिपाद्येषु बलं नाम किम् ?

(A) स्थानम् (B) प्रयत्नः
(C) स्वरः (D) व्यञ्जनम्

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B) (b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (D) (d) (A) एवम् (C)

उत्तर–(a)

''शिक्षाग्रन्थ में स्थान और प्रयत्न को बल कहा गया है।

- तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षाशास्त्र वेदाङ्ग के प्रयोजन को बतलाया गया है–
  ''अथ शिक्षा व्याख्यास्यामः - वर्णः, स्वरः, मात्रा, बलम्, साम, सन्तान, उत्युक्तः शिक्षाध्यायः'' ॥
  ''वर्णोऽकारादिः, स्वरोदात्तादिः, मात्रा ह्रस्वादिः, बलं स्थानप्रयत्नौ, सामनिषादादिः, सन्तानो विकर्षणादिः। एतदवबोधनमेव शिक्षायाः प्रयोजनम्''॥
- सायण के ऋग्वेदभाष्यभूमिका में कहा गया है-
  ''स्वरवर्णायुच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षेति''।
- पाणिनीय शिक्षायाम् उक्तम् -
  ''मैन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
  स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।''
- वर्णों के आठ स्थान होते हैं-
  ''अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा ।
  जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥
  (1) उरस्, (2) कण्ठ, (3) शिरस् (मूर्धा), (4) जिह्वामूल, (5) दन्त, (6) नासिका, (7) ओष्ठ, (8) तालु
- स्वर- ''उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः''।

72. 'नृ + पाहि = नॄँ पाहि' इत्यत्र प्रवृत्तानाम् अधोलिखितसूत्राणाम् उचितमनुक्रमं चिनुत -

(A) अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा
(B) नृन् पे
(C) विसर्जनीयस्य सः
(D) कुप्वो ≍ क ≍ पौ च

समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (A), (B), (C), (D) (b) (B), (A), (D), (C)
(c) (C), (D), (A), (B) (d) (B), (A), (C), (D)

उत्तर–(d)

नॄँ ≍ पाहि, नॄँः पाहि, नॄं ≍ पाहि, नॄंः पाहि, नृन् पाहि । मनुष्यों की रक्षा करें। नृन् + पाहि में नकार के स्थान पर 'नृन् पे' से रु आदेश, अनुबन्धलोप, नॄर् पाहि बना। नॄर्, के रु के प्रकरण में ''अत्रानुनासिक'' पूर्वस्य तु वा'' सूत्र से र् के पूर्व स्थित वर्ण को विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है। तो रुप नॄँर् पाहि, नॄंर् पाहि बनता है। पकार को खर् परे मानकर रेफ् के स्थान पर 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' से विसर्ग हो गया नॄँः पाहि, नॄंः पाहि बना। कुप्वोः ≍ क ≍ पौ च से प से पहले होने के कारण उपध्मानीय विसर्ग हुआ। नॄँ ≍ पाहि, नॄँ ≍ पाहि बना। अनुनासिक और अनुस्वार दोनों पक्ष में उपध्मानीय विसर्ग के दो रूप और विसर्जनीय के दो रूप तथा 'नॄन् पे' से रूत्व न होने के पक्ष में नॄँन् पाहि ही रहेगा।

73. 'रसः सुखदुःखात्मकः भवति' इति मान्यता अस्ति–

(a) भरतस्य (b) धनिक - धनञ्जययोः
(c) रामचन्द्र - गुणचन्द्रयोः (d) मम्मट - विश्वनाथयोः

उत्तर–(c)

रस सुखदुःखात्मक होता है ऐसी मान्यता रामचन्द्र और गुणचन्द्र की है।

- अभिनवगुप्त रस को उभयात्मक (सुखदुःखात्मक) मानते हैं।
- विश्वनाथ सभी रसों को सुखात्मक कहते हैं।
- आधुनिक भारतीय समीक्षक डॉ. नगेन्द्र —
  सभी रसों से आनन्द की अनुभूति बतलाते हैं।
- नाट्यदर्पणकार रामचन्द्र/गुणचन्द्र के मत में न तो सभी रस सुखात्मक होते हैं और न ही सभी सुखदुःखोभयात्मक होता है। इन्होने रसों का दो प्रकार से विभाजन किया। कुछ रस केवल सुखात्मक होते हैं और कुछ रस दुःखात्मक होते हैं। जैसे- शृङ्गार, हास्य, वीर, अद्‌भुत, शान्त रस केवल सुखात्मक होते हैं। जबकि करूण, रौद्र, वीभत्स, भयानक आदि चार रस सदैव दुःखात्मक होते हैं।

74. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण 'रक्तसंज्ञा' कस्य भवति ?

(a) अनुनासिकस्य (b) अनुस्वारस्य
(c) विसर्जनीयस्य (d) जिह्वामूलीयस्य

उत्तर–(a)

ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार ''रक्तसंज्ञा'' ''अनुनासिक'' की होती हैं।

ऋग्वेदप्रातिशाख्य में इस संज्ञा के विषय में कहा गया है कि अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक होते हैं- ''रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः'', ''रक्तो वचनो मुखनासिकाभ्याम्।

स्पर्श संज्ञा- प्रातिशाख्य ग्रन्थों में क से म पर्यन्त व्यञ्जनों का कथन स्पर्श रूप में किया गया है। ''कादयोमावसाना स्पर्शाः।

ऊष्म संज्ञा- ऋग्वेदप्रातिशाख्य में ऊष्म संज्ञा का विधान करते हुए कहा गया है कि अन्तःस्थ वर्णों के बाद आने वाले आठ वर्ण ''ऊष्म'' कहलाते हैं।

- उत्तरेऽष्टा ऊष्माणः जैसे- ह, श, ष, स, अः, क, प, अं ।

  अनुस्वार संज्ञा - ''अनुस्वारं स्वरो वा व्यञ्जनं वा''। अनुस्वार किसी स्वर के बाद लगता है ''स्वरमनुभवतीत्युनुस्वारः'' ।।

  अन्तःस्थ संज्ञा - स्पर्श वर्णों के बाद आने वाले चार वर्ण य, र, ल, व, अन्तःस्थ नाम से जाने जाते हैं- ''चतस्त्रोऽन्तस्थास्ततः।।

75. 'सिति च' सूत्रेण का सञ्ज्ञा विधीयते?

(a) सर्वनामसञ्ज्ञा (b) प्रगृह्यसञ्ज्ञा
(c) भमञ्ज्ञा (d) पदसञ्ज्ञा

उत्तर–(d)

''सिति च'' सूत्र से ''पदसंज्ञा'' होती है।

पद संज्ञा विधायक चार सूत्र है। -

(1) **सुप्तिङन्तं पदम् -** सुबन्त और तिङन्त पदसंज्ञक होते हैं। ''सु और जश्'' आदि 21 प्रत्यय सुप् हैं तथा ''तिप् तस् झि' आदि 18 तिङ्प्रत्यय हैं।
जैसे- देवः (सुबन्त), पठति (तिङन्त)।

(2) नः क्ये- नकारान्त शब्द की क्यच्, क्यङ् व क्यष् प्रत्यय परे रहते'' पदसञ्ज्ञा'' होती है। जैसे- राजीयति, राजायते।

(3) सिति च - सित् प्रत्यय परे रहते पूर्व की ''पदसञ्ज्ञा'' होती है। उदाहरण- भवत् + छस् = भवदीयः (यहां भवत् की पदसञ्ज्ञा हुई)

(4) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने - सर्वनामस्थान भिन्न ''सु'' आदि प्रत्ययों के परे रहते पूर्व शब्दसमुदाय की ''पदसञ्ज्ञा'' होती है। उदाहरण- राजन् +भ्याम् = राजभ्याम् (यहां राजन् की पदसञ्ज्ञा हुई)

- घिसञ्ज्ञा विधायक तीन सूत्र हैं।
  (1) शेषो ध्यसखि, (2) पतिः समास एवं (3) षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा।
- भसञ्ज्ञा विधायक तीन सूत्र - (1) यचिभम्, (2) तसौ मत्वर्थे, (3) अयस्मयादीनि छन्दसि
- उपधा सञ्ज्ञा विधायक सूत्र- अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा।
- प्रत्याहारसञ्ज्ञा विधायक सूत्र - 'आदिरन्त्येन सहेता' है।

76. अधोलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं चिनुत-

अभिकथनम् (I) : रूपकेषु नाटकं पूर्वमुच्यतेः यतः

कारणम् (II) : अन्येषां प्रकृतित्वात्, भूयः रसपरिग्रहात् सम्पूर्णलक्षणत्त्वात्

(a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये
(b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये
(c) (I) सत्यम् परन्तु (II) असत्यम्
(d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम्

उत्तर–(a)

अभिकथन (I) एवं कारण (II) दोनों सही है।

''प्रकृतित्वादथान्येषां भूयो रसपरिग्रहात् ।
सम्पूर्णलक्षणत्वाच्च पूर्वं नाटकमुच्यते ।।

सर्वप्रथम नाटक का विवेचन किया जा रहा है, क्योंकि

(1) नाटक रूपक के अन्य भेदों (प्रकरण आदि) का मूल है (क्योंकि उसी में वस्तु, नेता तथा रस के परिवर्तन करने से प्रकराणि रूपक-भेदों की सृष्टि होती है)।
(2) इसमें सभी प्रकार के रसों का आश्रय लिया जाता है (क्योंकि शृङ्गार अथवा वीर इसमें अङ्गी होता है और शेष रस अङ्गरूप में प्रयुक्त होते हैं)।
(3) इसमें रूपक के समस्त लक्षण पाये जाते हैं।

रस- ''विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः ।
आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायी भावो रसः स्मृतः।

विभावों, अनुभावों, व्यभिचारि भावों तथा सात्त्विक भावों के द्वारा आस्वादन की योग्यता को प्राप्त कराया गया स्थायी भाव ही रस कहा गया है।

77. 'चत्वारि हस्तशतानि विंशदुत्तराण्यायतेन एतावन्त्येव विस्तीर्णेन पञ्चसप्ततिहस्तानवगाढेन भेदेन निःसृतसर्वतोयं मरुधन्वकल्पमतिभृशं दुर्दर्शनमासीत्'-

इति कस्माद् अभिलेखाद् वर्तते?

(a) रुद्रदाम्नः गिरनाराभिलेखात्
(b) यशोधर्मणः मन्दसौराभिलेखात्
(c) समुद्रगुप्तस्य स्तम्भलेखात्
(d) खारवेलस्य हाथीगुम्फाभिलेखात्

उत्तर–(a)

''चत्वारि हस्तशतानि विंशदुत्तराष्यायतेन एतावन्त्येव विस्तीर्णेन पञ्चसप्ततिहस्तानवागाढेन भेदेन निःसृत सर्व तीर्थ मरूधन्वकल्प मतिभृशं दुर्दर्शनमासीत् - यह पंक्ति रूद्रदामन के गिरनार अभिलेख में उत्कीर्ण हैं।

यह अभिलेख जूनागढ़, गुजरात में स्थित है। यहां पर एक चट्टान पर मौर्य सम्राट अशोक का चतुर्दश शिलालेख अंकित है। इसी चट्टान पर दूसरी ओर शक् क्षत्रप रूद्रदामन का अभिलेख है। इसमें मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के आदेश से यहां पर सुदर्शन झील के निर्माण का उल्लेख है।

- गिरनार जैन मतावलम्बियों का भी पवित्र तीर्थ स्थान है। यहां मल्लिनाथ और नेमिनाथ के स्मारक बने हुए हैं।
- समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति स्तम्भलोख है।
- खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख है। उड़ीसा के भुवनेश्वर नामक स्थान से तीन मील दूर उदयगिरि नाम की पहाड़ी है, इसी के एक गुफा में खारवेल शिलालेख स्थित है। यह लेख प्राकृत भाषा में है।
- यशोधर्मन-विष्णुवर्धन का मन्दसौर शिलालेख मध्यप्रदेश के मन्दसौर में स्थित एक शिलालेख है, यह संस्कृत भाषा एवं गुप्त लिपि में हैं।

78. अधोलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं चिनुत-

कथनम् (I): परिसंख्या त्रिदूषणा

कथनम् (II): श्रुतहानात्

अश्रुतकल्पनात्

प्राप्तबाधात्

यथोचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये

(b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये

(c) (I) सत्यम् परन्तु (II) असत्ये

(d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम्

उत्तर–(a)

- **''उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितरव्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्याविधिः। यथा ''पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः''** अर्थात् एक ही समय में दो पदार्थों की प्राप्ति होने पर इन दोनों में एक पदार्थ की निवृत्ति कराने वाली विधि को ''परिसंख्या-विधि'' कहते हैं। जैसे- पांच नख वाले पांच जीव भक्षण के योग्य हैं।
- यह परिसंख्या विधि श्रौती एवं लाक्षणिकी भेद से दो प्रकार की होती है।

''अत्र ह्येवावपन्ती''- यहीं पर आवाप = साम प्रक्षेपण करते हैं यह श्रौती परिसंख्या का उदाहरण है। ''पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः'' लावणिकी परिसंख्या विधि का उदाहरण है। यह तीन दोषों से युक्त होती है- ''दोषत्रयं च श्रुतहानिरश्रुतकल्पना प्राप्तबाधश्चेति। तदुक्तम्-

''श्रुतार्थस्य परित्यागादश्रुतार्थस्य कल्पनात् । प्राप्तस्य बाधादित्येवं परिसंख्या त्रिदूषणा''। यह दोषत्रय श्रुतहानि, अश्रुतकल्पना तथा प्राप्तबाध है। ''श्रुत अर्थ का परित्याग करने से अश्रुत अर्थ की कल्पना करने से और राग या प्रमाणान्तर से प्राप्त अर्थ का बाध होने से परिसंख्या तीन दोषों से युक्त होती है।

79. 'घनश्यामः' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं वर्तते -

(a) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्

(b) उपमानानि सामान्यवचनैः

(c) उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे

(d) मयूरव्यंसकादयश्च

उत्तर–(b)

घनश्याम पद में समास विधायक सूत्र ''उपमानानि सामान्यवचनैः'' है।

''उपमानानि सामान्यवचनैः'' - उपमानवाचक सुबन्त का समान-विभक्तिक सामान्यवचन वाले सुबन्तों के साथ समास होता है। **जैसे-** घनश्यामः - घनः इव श्यामः = बादल की तरह श्यामवर्ण वाला ⇒ घन सु श्याम सु = दोनों पद प्रथमान्त एकवचन में है। अतः समानाधिकरण हुआ।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' - समान विभक्ति वाले भेदक-विशेषण का भेद्य-विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है। उदाहरण- नीलोत्पलम् , निर्मलगुणाः, कृष्णचतुर्दशी।

''कुगतिप्रादयः - समर्थ सुबन्त शब्दों के साथ कु-शब्द, गतिसंज्ञक शब्द, और प्र आदि का समास होता है। उदाहरण- कुपुरूषः, सुपुरूषः आदि

''उपपदमतिङ्'' - उपपदसंज्ञक सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य से समास होता है, जैसे- कुम्भकारः

80. अधोलिखितेषु के द्वे आत्मनेपदविधायकसूत्रे स्तः?

(A) पूर्ववत्सनः	(B) परेर्मृषः
(C) समवप्रविभ्यः स्थः	(D) उपाच्च

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (C)	(b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D)	(d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(a)

आत्मनेपदविधायकसूत्र ''पूर्ववत्सनः और ''समवप्रविभ्यःस्थः'' है।

''पूर्ववत्सनः''- सन् प्रत्यय से पूर्व जिस धातु से आत्मनेपद हो, सन् प्रत्यय होने के बाद भी इससे आत्मनेपद ही होता है। जैसे- आत्मनेपदी एध् धातु से सन्नन्त के बाद भी आत्मनेपद होकर एदिधिषते बनता है।

''समवप्रतिभ्यःस्थः'' - सम्, अव, प्र और वि उपसर्गों से परे स्था धातु से आत्मनेपद होता है। जैसे- सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते, वितिष्ठते आदि।

''परेर्मृषः'' - परि उपसर्ग से परे मृष् धातु से परस्मैपद होता है। जैसे- परिमृष्यति

''उपाच्च'' - उप उपसर्ग से परे रम् धातु से परस्मैपद होता है। उदाहरण- यज्ञदत्तमुपरमति ।

81. शब्दब्रह्माणः शक्तिद्वयं किम्?

(A) अर्थशक्तिः	(B) अभ्यनुज्ञा
(C) प्रतिबन्धः	(D) शब्दशक्तिः

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B)	(b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C)	(d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(c)

शब्दब्रह्म की दो शक्तियां ''अभ्यनुज्ञा और प्रतिबन्ध'' है।
''प्रतिबंधाभ्यनुज्ञाभ्यां वृत्तिर्या तस्य शास्वती।
तयाविभज्यमानोऽसौ भजते क्रमरूपताम् ।।

- ''प्रतिबन्ध'' का तात्पर्य ''निवृत्त करना'' तथा ''अभ्यनुज्ञा'' का तात्पर्य ''प्रवृत्ति होने की प्रेरणा देना'' है।
- ''कालशक्ति'' की सहकारिणी शक्तियों में प्रतिबंध शक्ति और अभ्यनुज्ञा शक्ति मुख्य है। किसी क्रिया की साधन-शक्तियों के व्यापार का विघात प्रतिबंध है और इसके विपरीत 'अभ्यनुज्ञा' है। कोई शक्ति प्रतिबन्ध करती है और कोई प्रतिबन्ध को हटाती है, ये व्यापार सर्वत्र होते हैं। एक पेड़ में पहले किसलय की अभ्यनुज्ञा और पल्लव का प्रतिबंध होता है। फिर किसलय का प्रतिबन्ध और पल्लव का प्रतिबन्ध होता है। दिन की अभ्यनुज्ञा और रात का प्रतिबन्ध होता है, फिर रात की अभ्यनुज्ञा और दिन का प्रतिबन्ध होता है। पौर्वापर्य का ज्ञान इन्हीं शक्तियों की क्रिया है।

82. 'सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये ।'
इति श्लोकांशः कस्माद् उद्धृतः?

(a) मनुस्मृतेः (b) याज्ञवल्क्यस्मृतेः
(c) नारदस्मृतेः (d) अर्थशास्त्रात्

उत्तर–(a)

''सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये'' यह श्लोकांश ''मनुस्मृति'' से उद्धृत है।
''सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः ।
सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये ।। अर्थात् पण्डित लोग साम, दाम, दंड, भेद इन चारों उपायों में से देश की वृद्धि के लिए सदा साम तथा दंड की प्रशंसा करते हैं।

- **काम से उत्पन्न हुए दश व्यसन-**
''मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।।
अर्थातः मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना ये 10 दोष कामजन्य है।
- **क्रोध से उत्पन्न आठ दोष-**
''पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम् ।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।। अर्थात् चुगली, दु:साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोधजन्य है।

83. पक्षतायाः लक्षणम् अस्ति -

(a) सिषाधयिषावत्त्वाभावः पक्षता
(b) सिषाधयिषाविरहसिद्धिः पक्षता
(c) सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्ध्यभावः पक्षता
(d) सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्धिः पक्षता

उत्तर–(c)

''सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्ध्यभावः पक्षता'' यह पक्ष- धर्मता का लक्षण है।

- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली न्यायशास्त्र (न्यायदर्शन) का ग्रन्थ है। इसे कारिकावली भी कहते हैं। इस ग्रन्थ के रचयिता श्रीविश्वनाथपञ्चानन है।
- गङ्गेश उपाध्याय के अनुसार पक्षता का लक्षण- ''सिषाधयिषाविरहसहकृतसाधक- प्रमाणाभावो यत्रास्तीति पक्षतायाः ।
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुमानखण्ड में व्याप्ति के दो लक्षण विद्यमान हैं–
(1) व्याप्ति साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः (पूर्वपक्षव्याप्ति)।
(2) हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येनहेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरूच्यते। (सिद्धान्त व्याप्ति)
- **परामर्श का लक्षण-** ''व्याप्यस्य पक्ष वृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते''।
- **हेत्वाभास -** ''अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासाश्च पञ्चधा ।।

84. ध्वनेः प्रकारद्वयं भर्तृहरिमते किम्?

(A) आहार्यम् (B) वैकृतः
(C) संस्कृतः (D) प्राकृतः

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (B) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(a)

भर्तृहरि के मत में ध्वनि के दो प्रकार ''वैकृत एवं प्राकृत'' है।
''वर्णस्य ग्रहणे हेतुः प्राकृतो ध्वनिरूच्यते।
वृत्तिभेदे निमित्तत्वं वैकृतः प्रतिपद्यते ।।
अर्थात् वर्णरूप स्फोट के ज्ञान में जो हेतु है वह प्राकृत नामक ध्वनि कहा जाता है तथा द्रुत-विलम्बित आदि वृत्ति के भेद में जो निमित्तकारण होता है वह वैकृतनामक ध्वनि है।

- वाक्यपदीय, संस्कृत व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ है, इसे त्रिकाण्डी भी कहा जाता है। इसके रचयिता भर्तृहरि है।
- वाक्यपदीय तीन काण्डों में विभाजित हैं, प्रथम- ब्रह्मकाण्ड है, इसमें 157 कारिका है। द्वितीय वाक्यकाण्ड में 493 कारिकाएं हैं। तृतीय काण्ड- पदकाण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। ब्रह्मकाण्ड में शब्द की प्रकृति की व्याख्या की गयी है। इसमें शब्द को ब्रह्म माना गया है।

वाक्यपदीयम् मङ्गलाचरण- ''अनादि-निधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।

85. प्रकृतिः उपादानम्, कालः, भागः - इत्येते प्रभेदाः भवन्ति -

(a) आभ्यन्तरतुष्टेः (b) बाह्यतुष्टेः
(c) मोहमहामोहयोः (d) अशक्तेः

उत्तर–(a)

प्रकृति, उपादान, काल और भाग्य ये चारों आभ्यन्तर तुष्टि के भेद हैं।

''आध्यात्मिक्यश्चतस्त्रः प्रकृत्युपादानकालभाग्याख्याः।
बाह्या विषयोपरमात् पञ्च च नव तुष्टयोऽभिमताः।।

अर्थात् प्रकृति, उपादान, काल और भाग्य इन चार नामों वाली आध्यात्मिक तुष्टियां हैं तथा विषयों से उपरति के कारण उत्पन्न होने वाली पांच वाह्य तुष्टियां हैं। इस प्रकार कुल नौ तुष्टियां सांख्याचार्यों को अभिमत है।

- बुद्धि के चार प्रमुख परिणाम हैं- विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि । इन्हे प्रत्ययसर्ग या बुद्धिसर्ग कहते हैं-
''एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्ति तुष्टिसिद्धयाख्यः।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत् ।।
प्रत्ययसर्ग (बुद्धिसर्ग) के कुल पचास भेद हैं। 5 विपर्यय + 28 अशक्ति + 9 तुष्टि + 8 सिद्धि = 50 प्रत्ययसर्ग
- **विपर्यय के पांच भेद -** तम, मोह, महामोह, तामिस्र, अन्धतामिस्र ।
- **तुष्टि के नौ भेद -** प्रकृति, उपादान, काल, भाग, पार, सुपार, पारापार, अनुत्तमाम्भस्, उत्तमाम्भस् ।
- **आठ प्रकार की सिद्धियां-** 1-3 त्रिदु:ख विनाश, (4) अध्ययन, (5) ऊह, (6) शब्द, (7) सुहृत्प्राप्ति, (8) दान ।

86. अलङ्कारसम्प्रदायस्य आचार्यौ स्तः -

(A) भामहः दण्डी च (B) उद्भटः रुय्यकः च
(C) रुद्रटः आनन्दवर्धनः च (D) रुय्यकः मम्मटः च

समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) एवम् (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(a)

अलङ्कार सम्प्रदाय के आचार्य- यद्यपि सर्वप्रथम भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अलङ्कार तत्त्व की समीक्षा की थी, तथापि भामह पहले आचार्य थे, जिन्होंने स्पष्टरूप से अलङ्कार के स्वरूप का विवेचन किया तथा उसको काव्य के आत्मत्रत्त्व के रूप में प्रतिष्ठित किया।

- **दण्डी** के अनुसार काव्य के शोभाकारक सभी प्रकार के धर्म अलङ्कार है- ''काव्यशोभा-करान् धर्मानलङ्कारान् प्रचक्षते।
- **उद्भट -** इन्होंने ''भामह विवरण'' नाम से भामह के ''काव्यालङ्कार'' की टीका लिखी।
- **वामन -** इन्होंने ''काव्यलङ्कार सूत्र'' की रचना की।
- **रुद्रट् -** इन्होने ''काव्यालङ्कार'' में 66 अलङ्कारों का उल्लेख किया है।
- **रुय्यक-** इन्होंने 'अलङ्कार सर्वस्य' में 6 शब्दालङ्कारों और 75 अर्थालङ्कारों की चर्चा की।

87. मन्त्रिपरिषदि यथासामर्थ्यम् अमात्यान् कुर्वीत इति कस्य मतम्?

(a) बृहस्पतेः (b) औशनसस्य
(c) कौटिल्यस्य (d) पराशरस्य

उत्तर–(c)

मन्त्रिपरिषद् में यथासामर्थ्य आमात्यों को नियुक्त कर सकते हैं यह ''कौटिल्य'' का मत है।

- कौटिल्य कहते हैं कि राजा को सुयोग्य अमात्यों के परामर्श से राजकाज चलाना चाहिए-
''सहायसाध्यं राजत्वं चक्रमेकं न वर्तते ।
कुर्वीत सचिवांस्तस्मात्तेषां च शृणुयान्मतम् ।।
- कौटिल्य ने मन्त्रिपरिषद् के प्रमुख चार सदस्य- मंत्री, पुरोहित, सेनापति तथा युवराज बताये हैं। इसके अतिरिक्त पौर, जनपद आदि भी परिषद् के सदस्य होते हैं। इसके अतिरिक्त वेतनाध्यक्ष को सन्निधाता, समाहर्ता को निर्माण कार्य एवं व्यापार कार्य देखने वाला, 'गाणनिक' को आय-व्यय का निरीक्षक, आकाराध्यक्ष को खानों का निरीक्षक, कोष्ठागार को खाद्य सामग्री का संग्रह करने वाला, कुप्याध्यक्ष को जंगल एवं पशु-पक्षियों से सम्बन्धी कार्य देखने वाला, पौतवाध्यक्ष को माप-तौल के परिमाण पर नियंत्रण रखने वाला, अन्तपाल को मार्ग- कर को लेने वाला, सूत्राध्यक्ष को वस्त्र आदि की व्यवस्था रखने वाला व नौकाध्यक्ष को जलमार्ग का निरीक्षण करने वाला बताया है।

88. अधोलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं चिनुत -

कथनम् (I) : उत्पत्तिविधौ कर्मणः करणत्वेन अन्वयः।
कारणम् (II) : उत्पत्तिविधौ कर्मणः साध्यत्वेन अन्वयः।
यथोचितं विकल्पं चिनुत -

(a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये
(b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये
(c) (I) सत्यम् परन्तु (II) असत्यम्
(d) (I) असत्यम् परन्तु (II) सत्यम्

उत्तर–(c)

उत्पत्ति विधौ कर्मणः करणत्वेन अन्वयः।

विधि चार प्रकार की होती है- (1) उत्पत्तिविधि, (2) विनियोगविधि, (3) अधिकारविधि, (4) प्रयोगविधि।

(1) **उत्पत्ति विधि-** ''तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः, यथा **''अग्निहोत्रं जुहोति''**। अर्थात् कर्म के केवल स्वरूप के बोधक विधि का उत्पत्तिविधि कहते हैं, जैसे **'अग्निहोत्रं जुहोति'** में। इस विधि में अग्निहोत्र कर्म का करण के रूप में अन्वय होता है। अतः इस वाक्य का अर्थ अग्निहोत्र नामक होम से इष्ट की भावना करनी चाहिए'' इस प्रकार होगा।

(2) **विनियोग विधि-** ''अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः - ''दध्ना जुहोति''

(3) **अधिकारविधि-** ''कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः। ''यजेत् स्वर्गकामः''

(4) **प्रयोगविधि-** ''प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः।

89. 'आर्स पोएतिका' (Ars Poetiea) इति ग्रन्थस्य कर्त्ता कः?

(a) सैमुअल टेलर कोलरिजमहोदयः

(b) मैथ्यू आर्नल्डमहोदयः

(c) ईवर आर्मस्ट्रोंग रिचर्ड्समहोदयः

(d) होरेस महोदयः

उत्तर–(d)

''आर्स पोएतिका'' (Ars Poetica) ग्रन्थ के कर्त्ता होरेस महोदय हैं। ''आर्स पोएटिका'' (Ars Poetica)- या द आर्ट ऑफ पोएट्री होरेस सी द्वारा लिखित एक कविता है। इसमें इन्होनें कवियों को कविता और नाटक लिखने की कला पर सलाह दी है।

- **सैमुअल टेलर कॉलरिज-** ये अंग्रेज कवि, दार्शनिक व रोमांस लेखक थे। इन्होंने विलियम वर्ड्सवर्थ के साथ इग्लैण्ड में रोमांस आन्दोलन की शुरूआत की तथा ''लेक पोएट्स' की स्थापना की। इनकी प्रमुख रचनाएं ''द राइम ऑफ द एन्शियंट मेरिनर'' तथा ''कुबल खान'' है।
- **मैथ्यू अर्नाल्ड की प्रमुख रचनाएं-** ''डोवर बीच'', 'दि स्कॉलर जिप्सी'', ''थाइरसिस'', ''कलचर एंड एनार्की'', ''लिटरेचर एंड डोग्मा'' है।

90. यथोचितं मेलनं कुरुत —

सूची-I	सूची-II
(A) पदमञ्जरी	(I) नागेशभट्टः
(B) सारस्वतव्याकरणम्	(II) हरदत्तमिश्रः
(C) शब्दकौस्तुभः	(III) अनुभूतिस्वरूपाचार्यः
(D) बृहच्छब्देन्दुशेखरः	(IV) भट्टोजिदीक्षितः

समुचितं विकल्पं चिनुत —

(a) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)

(b) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)

(c) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(III)

(d) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

उत्तर–(b)

(A) पदमञ्जरी – हरदत्तमिश्र

(B) सारस्वतव्याकरणम् – अनुभूतिस्वरूपाचार्य (नरेन्द्राचार्य)

(C) शब्दकौस्तुभः – भट्टोजिदीक्षित

(D) बृहच्छब्देन्दुशेखरः – नागेशभट्ट

- शब्दकौस्तुभ में पाणिनिकृत अष्टाध्यायी की विस्तृत व्याख्या की गयी है।
- नागेशभट्ट के अन्य प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ ⇒ लघुशब्देन्दु शेखर, वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा, परिभाषेन्दुशेखरादि, शब्दरत्न, विषमी टीका आदि है।
- चन्द्रगोमि ने बौद्धों के लिए चान्द्रव्याकरण बनाया।
- शर्ववर्मा ने ऐन्द्र व्याकरण के आधार पर कातन्त्र व्याकरण की रचना की।
- जयादित्य और वामन ने अष्टाध्यायी पर एक सरल एवं सर्वांगीण वृत्ति 'काशिका' लिखी।

परिच्छेद-1

अनुवाद- यह परिच्छेद ''दशकुमारचरितम्'' के ''अष्टमोच्छ्वास'' से उद्धृत है।

इसमें 'विश्रुत' 'राजवाहन' से कहते हैं कि - हे देव ! विन्ध्याटवी में इतस्ततः भ्रमण करते हुए मैनें सहसा एक कूप के समीप आठ वर्ष के बालक को देखा। क्लेशों को सहन करने में अशक्त वह मृदु बालक भूख-प्यास से पीड़ित हो रहा था। मुझे देखकर उसने भयान्वित होकर गद्गद स्वर से कहा- हे महाभाग! इस समय मैं बड़ी आपत्ति में हूँ। आप मेरी सहायता करें। मुझे प्राणायहारिणी पिपासा सता रही है, उसी के निवृत्त्यर्थ मैं इस कूप पर आया तो पानी निकालने के समय मेरे साथ का एक वृद्ध इसमें गिर पड़ा। मेरे अतिरिक्त उसका कोई सहायक भी नहीं है और मुझमें इतना पौरूष नहीं कि मैं उसे खींचकर कूप के बाहर निकाल सकूं।

तदनन्तर मैने कुछ लताओं को एकत्र करके उनकी सहायता से उस बूढ़े को खींचकर उसे कूप के बाहर निकाला तथा बांस की नलीद्वारा जल खींचकर उस बालक को पीने को दिया जिससे उसकी प्यास बुझी। इसके पश्चात् मैनें बाणों और पत्थरों की सहायता से लकुच वृक्ष से पांच-छः फल तोड़कर उन दोनों को खिलाये जिससे उन दोनों की क्षुधा निवृत्त हुई। पुनः हम सब एक वृक्ष की छाया में जा बैठे और मैनें उस वृद्ध से प्रश्न किया–

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि—

देव! मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वत्ति त्रासगद्गदमगदत - महाभाग! क्लिष्टस्य में क्रियतामार्य! साहाय्यकम्। अस्य में प्राणापहारिणकोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तम् इति। यथाहमभ्येत्य व्रत वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः फलैश्च पक्षपैः शरक्षेपोच्छितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात् पर तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तम् अब्रवम्।

'कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः 'इत्यत्र निष्कलः' शब्द कस्य अर्थस्य परामर्शकः?

91. 'क्वचित्कूपाभ्यासे' इत्यत्र अभ्यासपदस्य कः अर्थः?

(a) द्वित्त्वम्
(b) नैरन्तर्यम्
(c) सामीप्यम्
(d) प्रवृत्तिः

उत्तर–(c)

''क्वचित्कूपाभ्यासे'' में ''अभ्यास'' पद का अर्थ ''समीप'' होता है। परिच्छेद में आया है- ''मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुषा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः **''क्वचितकूपाभ्यासेऽष्टवर्षदेशीयो''** दृष्टः।

''कूप के समीप आठ वर्ष के बालक को देखा''।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि—

देव! मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वत्ति त्रासगद्गदमगदत - महाभाग! क्लिष्टस्य में क्रियतामार्य! साहाय्यकम्। अस्य में प्राणापहारिणकोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तम् इति। यथाहमभ्येत्य व्रत वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः फलैश्च पश्चपैः शरक्षेपोच्छितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात् पर तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तम् अब्रवम्।

92. **'कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः 'इत्यत्र निष्कलः' शब्द कस्य अर्थस्य परामर्शकः?**

(a) कलारहितस्य (b) विद्यारहितस्य

(c) वृद्धस्य (d) कलहरहितस्य

उत्तर–(c)

''कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः '' यहां पर ''निष्कल'' शब्द ''वृद्ध'' के अर्थ का परामर्शक है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्त्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि—

देव! मवापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वापि त्रासगद्गद्मगदत् - महाभाग! क्लिष्टस्य में क्रियतामार्य! अस्य में प्राणापहारिण कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तम् इति। यथाहमभ्येत्व क्रम वंशनालीमुखोद्धृतामिराद्भिः फलैश्च पश्चषैः शरक्षेपोच्छितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात् पर तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तम् अब्रवम्।

93. **कुमारस्य वयः किम् आसीत्?**

(a) अष्टादशवर्षीयः (b) अष्टवर्षीयः

(c) सप्तवर्षीयः (d) अष्टशतवर्षीयः

उत्तर–(b)

कुमार का वय ''आठ वर्ष'' है।

''क्वचित् कूपाभ्यासेऽष्टवर्षदेशीयो दृष्टः''

(कूप के समीप आठ वर्ष के बालक को देखा)

अधोलिखितं परिच्छेदे पठित्त्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देवानि—

देव! मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश त्रासगद्गद्मगदत् - महाभाग! क्लिष्टस्य में क्रियतामार्य ! साहाय्यकम कोऽपि निष्कलो ममैशरणभूतः पतितः । तमलमस्मि नाहमुद्धर्तम् इति वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः फलैश्च पश्चषैः शरक्षेप तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तम् अब्रवम

94. **एषः गद्यांशः कस्मिन् काव्ये प्राप्यते?**

(a) दशकुमारचरिते (b) हर्षचरिते

(c) कादम्बर्याम् (d) नलचम्पूकाव्ये

उत्तर–(a)

यह गद्यांश ''दशकुमारचरितम्'' के ''अष्टमोच्छ्वास'' से उद्धृत है। दशकुमारचरितम्, दण्डीकृत गद्यकाव्य है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि—

देव! मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वत्ति त्रासगद्गदमगदत - महाभाग! क्लिष्टस्य में क्रियतामार्य! साहाय्यकम्। अस्य में प्राणापहारिण कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तम् इति। यथाहमभ्येत्य व्रत वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः फलैश्च पश्चपैः शरक्षेपोच्छितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात् पर तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तम् अब्रवम्।

95. **'पाषाणपातितैः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिमापाद्य' इत्यस्मिन् वाक्ये कः अलङ्कारः?**

(a) छेकानुप्रासः (b) वृत्यनुप्रासः

(c) लाटानुप्रासः (d) यमकः

उत्तर–(b)

''पाषाणपातितैः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिमापाद्य'' इसमें 'प' की अनेक बार अनुवृत्ति हुई है अतः ''वृत्यनुप्रास'' है।

- वृत्यनुप्रास में एक ही वर्ण की बारम्बार आवृत्ति होती है।

<u>परिच्छेद-2</u>

अनुवाद- ''सफेद रंग की'', ''चलती हुई'', ''डित्थ'' नाम की, ''गाय'', इत्यादि वाक्य में (जाति-शब्द के रूप में गौ पद का, गुण शब्द के रूप में शुक्लः पद का, क्रिया-शब्द के रूप में चलः पद का, और यदृच्छा-शब्द के रूप में डित्थः पद का प्रयोग होने से) शब्दों की प्रवृत्ति चार प्रकार की होती है यह महाभाष्यकार ने कहा है। परम-अणु (आदि का उनके प्राणपद-धर्म होने के कारण जाति शब्द मानना उचित होने पर भी 'वैशेषिक दर्शन' में उनका) गुणों के बीच पाठ होने से परिभाषा से निर्धारित गुणत्व है।

गुण-क्रिया-यदृच्छा के एकरूप होने पर भी आश्रय के भेद से उनमें भेद-सा दिखलाई देता है (यह वास्तविक भेद नही है)। जैसे एक ही मुख का तलवार, दर्पण तथा तेल आदि आश्रयों के भेद से (प्रतिबिम्बों में भेद-सा प्रतीत होता है। वह वास्तविक नही, औपाधिक भेद है। इसी प्रकार गुणादि में प्रतीत होने वाला भेद भी केवल औपाधिक भेद है। अतः गुण आदि में संकेतग्रह मानने में ''आनन्त्य'' ''व्यभिचार'' दोषों के आने की सम्भावना नही है।

बर्फ, दूध और शंख आदि में रहने वाले वास्तव में भिन्न शुक्ल आदि गुणों में जिनके कारण शुक्लः-शुक्लः इस प्रकार का एकाकार कथन और प्रतीति की उत्पत्ति होती है वह शुक्लत्व आदि सामान्य जाति है। गुड़ और तण्डुलादि के पाकादि में भी इसी प्रकार पाकत्व आदि ''सामान्य'' रहता है। इसी प्रकार बालक, वृद्ध और तोता आदि के द्वारा उच्चारण किए जाने वाले 'डित्थ' आदि शब्दों में अथवा प्रतिक्षण विद्यमान परिवर्तन-शील-डित्थ आदि पदार्थो में डित्थत्व आदि सामान्य रहता है, इसलिए सब शब्दों का प्रवृत्ति-निर्मित केवल एक जाति ही है। जात्यादि चार को प्रवृत्ति-निमित्त न मानकर केवल जाति को ही प्रवृत्ति-निमित्त मानना चाहिए और उसी में संकेतग्रह मानना चाहिए यह मीमांसकों का सिद्धान्त है। किन्ही लोगों ने 'तद्वान्' (अर्थात् जातिविशिष्ट व्यक्ति) और ''अपोह'' (अर्थात् अतद्-व्यावृत्ति या तद्भिन्न-भिन्नत्व) शब्द का अर्थ है यह

कहा है (ये दोनों मत क्रमशः नैयायिक तथा बौद्धों के हैं) ग्रन्थ के बढ़ जाने के भय से और प्रकृत में उपयोग न होने से उनको (विस्तारपूर्वक) नही दिखलाया है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि —

'गौः शुक्लः चलो डित्थ इत्यादौ चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः' इति महाभाष्यकारः । परमाण्वादीनां तु गणपाठमध्यपाठात् पारिभाषिकं गुणत्वम् । गुणक्रियायदृच्छानां वस्तुतः एकरूपाणामप्याश्रयभेदाद् भेद एव लक्ष्यते। यथैकस्य मुखस्य खड्गमकुरतैलाद्यालम्बनभेदात् हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्ल इत्यादिरभिन्नाभिधानप्रत्यययोत्पत्तिस्तच्छुक्लत्वादि सामान्यम् । गुडतण्डुलादिपाकादिध्येवमेव पाकादित्वम् । बालवृद्धशुकाद्युदीरितेषु डित्थादिशब्देषु च प्रतिक्षणं भिद्यमानेषु डित्थाद्यर्थेषु वा डित्थादित्वमस्तीति सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये । तद्वानपोहो वा शब्दार्थः कैश्चिदुक्त इति ग्रन्थगौरवभयात् प्रकृतानुपयोगाच्च न दर्शितम् ।

96. 'सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये' इत्वस्मिन् वाक्यांशे 'अन्ये' इति शब्दः कस्य परामर्शकः अस्ति?

(a) नैयायिकानाम्　　(b) बौद्धानाम्
(c) मीमांसकानाम्　　(d) वैयाकरणानाम्

उत्तर–(c)

''सर्वेषां शब्दानां जातिरेकों प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये'' इस वाक्य में ''अन्ये'' शब्द 'मीमांसकों' का परामर्शक है।

''जात्यादि चार को प्रवृत्ति-निमित्त न मानकर केवल जाति को ही प्रवृत्ति-निमित्त मानना चाहिए और उसी में संकेतग्रह मानना चाहिए यह अन्यों (मीमांसकों) का सिद्धान्त है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि —

'गौः शुक्लः चलो डित्थ इत्यादौ चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः' इति गुणत्वम्। गुणक्रियायदृच्छानां वस्तुतः एकरूपाणामप्याश्रयभेदाद् में हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन सामान्यम् । गुडतण्डुलादिपाकादिष्वेवमेव पाकादित्वम् । बालवृद्धशवा डित्थादित्वमस्तीति सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमिल प्रकृतानुपयोगाच्च न दर्शितम्।

97. बौद्धानां सिद्धान्त कः?

(a) व्यक्तिवादः　　(b) जातिवादः
(c) अपोहवादः　　(d) जातिविशिष्टव्यक्तिवादः

उत्तर–(c)

बौद्धों का सिद्धान्त ''अपोहवाद'' है।

''तद्वान्'', नैयायिकों का और ''अपोह'' बौद्धों का सिद्धान्त हैं।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि —

गुणत्वम् । गुणक्रियायदृच्छानां वस्तुतः एकरूपाणामप्याश्रयभेदाद् भेद एवं हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्ल सामान्यम् । गुडतण्डुलादिपाकादिष्वेवमेव पाकादित्व। बालवृद्धशुकाद्यु वा डित्थादित्वमस्तीति सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये। प्रकृतानुपयोगाच्च न दर्शितम।

98. 'तद्वान्' इति पदे अभिव्यक्तसिद्धान्तस्य विषये असत्यं कथनमस्ति—

(a) अत्र 'तत्' पदांशः 'सामान्यमि'ति अर्थस्य परामर्शकः अस्ति।
(b) अत्र 'वान' इति पदांशः 'व्यक्तिः' इति अर्थस्य परामर्शकः अस्ति।
(c) अस्मिन् पदांशे 'जातिविशिष्टव्यक्तौ संकेतः गृह्यते' इति मन्यते।
(d) अयं सिद्धान्तः बौद्धानाम् अस्ति।

उत्तर–(d)

''तद्वान्'' इति पदे अभिव्यक्तसिद्धान्तस्य विषये ''अयं सिद्धान्तः बौद्धानाम् अस्ति'' असत्यं कथनमस्ति ।

- बौद्धों का सिद्धान्त ''अपोहवाद'' है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि —

'गौः शुक्लः चलो डित्थ इत्यादौ चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः' इति महाभाष्यकारः । परमाण्वादीनां तु गणपाठमध्यपाठात् पारिभाषिकं गुणत्वम् । गुणक्रियायदृच्छानां वस्तुतः एकरूपाणामप्याश्रयभेदाद् भेद एव लक्ष्यते। यथैकस्य मुखस्य खड्गमकुरतैलाद्यालम्बनभेदात् हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्ल इत्यादिरभिन्नाभिधानप्रत्यययोत्पत्तिस्तच्छुक्लत्वादि सामान्यम् । गुडतण्डुलादिपाकादिध्येवमेव पाकादित्वम् । बालवृद्धशुकाद्युदीरितेषु डित्थादिशब्देषु च प्रतिक्षणं भिद्यमानेषु डित्थाद्यर्थेषु वा डित्थादित्वमस्तीति सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये । तद्वानपोहो वा शब्दार्थः कैश्चिदुक्त इति ग्रन्थगौरवभयात् प्रकृतानुपयोगाच्च न दर्शितम् ।

99. 'हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्ल इत्यादिरभिन्नाभिधानप्रत्यययोत्पत्तिस्तच्छुक्लत्वादि सामान्यम् ।' इत्यस्मिन् गद्यांशे केषां सिद्धान्तः अस्ति?

(a) नैयायिकानाम्　　(b) बौद्धानाम्
(c) मीमांसकानाम्　　(d) वैयाकरणानाम्

उत्तर–(c)

''हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्न्येषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्ल इत्यभिन्नाभिधान प्रत्ययोत्पत्तिस्तत् शुक्लत्वादि सामान्यम्'' यह सिद्धान्त ''मीमांसकों'' का है।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि —

'गौः शुक्लः चलो डित्थ इत्यादौ चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः' इति गुणत्वम्। गुणक्रियायदृच्छानां वस्तुतः एकरूपाणामप्याश्रयभेदाद् में हिमपयः शङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन सामान्यम् । गुडतण्डुलादिपाकादिष्वेवमेव पाकादित्वम् । बालवृद्धश वा डित्थादित्वमस्तीति सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित प्रकृतानुपयोगाच्च न दर्शितम्।

100. उपर्युक्त गद्यांशे कः सिद्धान्तः वर्तते?

(a) स्फोटसिद्धान्तः　　(b) रससिद्धान्तः
(c) व्यञ्जनासिद्धान्तः　　(d) शक्तिग्रहसिद्धान्तः

उत्तर–(d)

इस गद्यांश में ''शक्तिग्रहसिद्धान्त'' है। ''संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा'' संकेतित अर्थ जाति, गुण, क्रिया तथा यदृच्छा के भेद से चार प्रकार का होता है अथवा मीमांसको के मत में केवल जाति ही संकेतित अर्थ होता है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June 2021

संस्कृत

व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'श्रूयतां महाभाग विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन् भोज वंश भूषणम्...........' इति गद्यखण्डं कस्यां रचनायां विद्यते?

(a) कादम्बर्याम् (b) दशकुमारचरिते
(c) स्वप्नवासवदत्ते (d) हर्षचरिते

उत्तर-(b)

महाकवि दण्डी प्रणीत् दशकुमारचरितम् एक गद्य काव्य है। आठ उच्छ्वासों में विभक्त इस गद्य काव्य में दश राजकुमारों का वर्णन किया गया है। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है– (1) राजवाहन, (2) सोमदत्त, (3) पुष्पोद्भव, (4) अपहारवर्मा, (5) उपहारवर्मा, (6)अर्थपाल, (7) प्रमति (8) मित्रगुप्त (9) मन्त्रगुप्त (10) विश्रुतः।
दशकुमारचरित के अष्टम् उच्छवास में विदर्भ नाम का एक देश है।इसमें भोजवंश का भूषण पुण्यवर्मा नाम का एक शासक रहता था जो धर्म का पालन करने वाला था– ''श्रूयतां महाभाग! विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन्भोजवंशभूषणम्।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की रचना है। कादम्बरी प्रमुखतः गद्यकाव्य है। यह दो भागों में विभक्त है–

(1) पूर्वभाग, (2) उत्तरभाग।

पूर्वभाग की रचना बाणभट्ट ने स्वयं की है तथा उत्तरभाग की रचना उनके पुत्र पुलिन्दभट्ट ने की है।

- स्वप्नवासवदत्तम् भास की गद्य रचना है। स्वप्नवासवदत्तम् में महाकवि भास की नाट्यकुशलता का चूडान्त निदर्शन किया गया है। इसमें राजा उदयन एवं वासवदत्ता की कथा का वर्णन किया गया है।
- हर्षचरितम् महाकवि बाणभट्ट प्रणीत् आठ उच्छ्वासों में विभक्त एक आख्यायिका ग्रन्थ है।

2. अर्थसंग्रहानुसारं देशसामान्यं स्थानम्, तच्च द्विविधं किं तत्?

(a) पाठसादेश्यम् (b) अनुष्ठानसादेश्यम्
(c) यथासंख्यसादेश्यम् (d) मीमांसासादेश्यम्

समुचितं विकल्पं चिनुत्

(a) A एवं B, (b) A एवं C,
(c) B एवं C, (d) C एवं D

उत्तर-(a)

श्री लौगाक्षिभास्करप्रणीत् अर्थसङ्ग्रह में विधि के चार प्रभेद बताए गये हैं– (1) उत्पत्ति विधि, (2) विनियोग विधि, (3) अधिकार विधि, (4) प्रयोग विधि
विनियोग विधि के षड्प्रमाण बताये गये हैं– (1) श्रुति, (2) लिङ्ग, (3) वाक्य, (4) प्रकरण, (5) स्थान, (6)समाख्या
स्थान– देश की समानता स्थान है। वह दो प्रकार की है–
(1) पाठसादेश्य, (2) अनुष्ठान सादेश्य

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

पाठसादेश्य भी दो प्रकार का होता है–
(1) यथासंख्यपाठ, (2) सन्निधिपाठ

3. अत्र कथनद्वये (a) इत्यभिकथनम् (R) इति च कारणम्
अभिकथनम् (a) : पाणिनीय अष्टाध्याया आदौ चतुर्दशसूत्रेषु वर्णोपदेशः विद्यते
कारणम् (R) : वृत्तिसमवायार्थः – अनुबन्धकरणार्थः – इष्टबुद्ध्यर्थश्च
समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) इति– अभिकथनम् तथा च (R) इति कारणम् उभयं सत्यम्
(b) इति अभिकथनम् असत्यम् (R) इति कारणम् सत्यम्
(c) इति अभिकथनम् तथा च (R) इति कारणम् उभयम् असत्यम्
(d) इति अभिकथनम् सत्यम् (R) इति कारणम् असत्यम्,

उत्तर-(d)

पाणिनीय व्याकरण में भगवान् शङ्कर की कृपा से पाणिनि मुनि को 14 माहेश्वर सूत्रों की प्राप्ति हुई है– (1) अइउण् (2) ऋलृक् (3) एओङ् (4) ऐऔच् (5) हयवरट् (6) लण् (7) ञमङणनम् (8) झभञ् (9) घढधष् (10) जबगडदश् (11) खफछठथचटतव् (12) कपय् (13) शषसर् (14) हल्। कारण– वृत्ति समवायार्थः– वृत्तये समवायो वृत्ति समवायः। वृत्यर्थो वा समवायो वृत्तिसमवायः। वृत्तिप्रयोजनो वा समवायः वृत्तिसमवायः अर्थात् शास्त्रप्रवृत्ति ही वृत्ति है और वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः=समवाय है तथा उच्चारण ही उपदेश है। इस प्रकार कथन सत्य है किन्तु कारण असत्य है।

4. सामवेदस्य ब्राह्मणग्रन्थौ कौ स्तः?

(a) ऐतरेय–ब्राह्मणम् (b) पञ्चविंश–ब्राह्मणम्
(c) शांखायन–ब्राह्मणम् (d) वंश-ब्राह्मणम्
(a) A एवं B, (b) B एवं C,
(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(c)

ब्रह्म का अर्थ है 'यज्ञ'। यज्ञ के विधि विधानों का प्रतिपादन करने वाले को ब्राह्मण कहा जाता है। वेद की जितनी शाखाएँ हैं उन सबके अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ होते हैं। जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

1. ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ– (1) ऐतरेय (2) कौषीतकि/शांखायन ब्राह्मण
2. शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ– (1) शतपथ ब्राह्मण
3. कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ– (1) तैत्तिरीय ब्राह्मण
4. सामवेद का ब्राह्मण ग्रन्थ– (1) ताण्ड्य ब्राह्मण, (2) षड्विंश पञ्चविंश ब्राह्मण, (3)वंश ब्राह्मण, (4) जैमिनि ब्राह्मण, (5) सामविधान ब्राह्मण (6) देवताध्याय, (7) उपनिषद्, (8) संहितोपनिषद्
5. अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रन्थ– गोपथ ब्राह्मण

5. अधस्तनेषु के द्वे शैवविषयक पुराणे स्तः

(a) भागवतपुराणम् (b) मत्स्यपुराणम्
(c) गरुडपुराणम् (d) ब्रह्माण्डपुराणम्
समुचितं विकल्पं चिनुत
(a) A एवं B, (b) A एवं D,
(c) B एवं C, (d) B एवं D

उत्तर-(d)

पुराण साहित्य में सर्वाधिक प्रचलित कृति भागवत पुराण है। इसका पारायण विष्णुभक्तों के द्वारा किया जाता है। इस पुराण का विभाजन 12 स्कन्धों में हुआ है। पूरे ग्रन्थ में 335 अध्याय तथा 18 सहस्र श्लोक हैं।

- **मत्स्य पुराण**– प्राचीनता तथा वर्ण्यविषय के विस्तार की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण पुराण है। पञ्चलक्षण संगति होने से इसे प्राचीन माना गया है। धार्मिक विषयों की दृष्टि से इसे शैव या वैष्णव दोनों कहा जाता है। इसमें कलियुग के राजाओं की सूची दी गयी है।
- **गरूड़ पुराण**– यह एक वैष्णव पुराण है। इस पुराण को स्वयं विष्णु ने गरुण के समक्ष सुनाया था। जिनमें क्रमशः 35 अध्याय तथा 18 सहस्र श्लोक हैं। इस पुराण में शक्तिपूजा तथा पञ्च देवों– (विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य, गणेश) की उपासना की गई है।
- **ब्रह्माण्ड पुराण**– नारदपुराण तथा मत्स्य पुराण में इसकी विषय सूची दी गई है। जिससे ज्ञात होता है कि इसमें 109 अध्याय तथा 12 सहस्र श्लोक हैं। मत्स्यपुराण के अनुसार ब्रह्माण्ड के महत्त्व का वर्णन करने के लिए जिस पुराण का उपदेश दिया गया और जिसमें भविष्य एवं कल्पों का वृत्तान्त विस्तार से दिया गया वह ब्रह्माण्ड पुराण है।

6. 'स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।
हरताऽपि तनुं यस्यशंभुना न हृतं बलम्॥'
इत्यस्मिन् पद्ये कः अलंकारो वर्त्तते?

(a) तुल्ययोगिता (b) निदर्शना
(c) विभावना (d) विशेषोक्तिः

उत्तर-(d)

आचार्य मम्मट के अनुसार विशेषोक्ति का लक्षण है– '' **विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।''**

अर्थात्– विशेषोक्ति वह अलङ्कार है जहाँ प्रसिद्ध कारणों के मिलने पर भी कार्य उत्पत्ति का कथन नहीं किया जाता। अर्थात् कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य का कथन न करना ही विशेषोक्ति अलङ्कार कहलाता है।

यह तीन प्रकार की होती है– (1) अनुक्त निमित्त (2) उक्त निमित्त (3) अचिन्त्य निमित्त

एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः– उदाहरण अचिन्त्य निमित्त विशेषोक्ति का उदाहरण है।

- **'नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता'**– अर्थात्–तुल्ययोगिता अलङ्कार वह है जहाँ केवल प्रकृत अथवा अप्रकृत वस्तुओं के साधारण धर्म का एक बार ग्रहण किया जाता है।
- **'अमवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः**– जहाँ पदार्थों या वाक्यार्थों का अनुपपद्यमान सम्बन्ध उपमा की कल्पना (आक्षेप) कर लेता है वह निदर्शना अलङ्कार कहलाता है।
- **'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।''**– विभावना अलंकार वह है जहाँ कारण का प्रतिषेध होने पर भी फल का कथन किया जाता है

7. एतयोः अलंकारयोः उपमान-उपमेयौ भवतः-

(a) रूपकम् (b) विभावना
(c) उत्प्रेक्षा (d) विशेषोक्ति
समुचितं विकल्पं चिनुत–
(a) A एवं B, (b) A एवं C,
(c) A एवं D, (d) B एवं C5

उत्तर-(b)

आचार्य मम्मट के अनुसार– (1) रूपक का लक्षण है– **'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः'**। अर्थात्– जो उपमान तथा उपमेय का अभेदारोप है, वह रूपक अलङ्कार कहलाता है।

- **विभावना– क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना** अर्थात्– विभावना अलङ्कार वह है जहाँ कारण का प्रतिषेध होने पर भी फल का कथन किया जाता है।
- **उत्प्रेक्षा– सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन् यत्** अर्थात्– जो प्रकृति वस्तु की सम् अर्थात् उपमान के साथ सम्भावना करना ही उत्प्रेक्षा अलंकार कहलाता है।

8. 'जाबालेः नास्तिकमतस्य रामेण खण्डनम्' इति विषयः रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितोऽस्ति?

(a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) किष्किन्धाकाण्डे (d) बालकाण्डे

उत्तर-(a)

रामायण में 7 काण्ड हैं– (1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड, (3)अरण्यकाण्ड, (4) किष्किन्धाकाण्ड, (5) सुन्दरकाण्ड, (6) युद्धकाण्ड, (7) उत्तरकाण्ड

अयोध्याकाण्ड में कुल 119 सर्ग हैं जिसमें (सर्ग 108-9) में जाबालि का नास्तिक मत एवं राम द्वारा उसका खण्डन किया गया है।

- अरण्य काण्ड में 75 सर्ग है। अरण्यकाण्ड में जटायु की रावण द्वारा हत्या एवं सीता और राम के संवाद का वर्णन किया गया है।
- किष्किन्धाकाण्ड में 67 सर्ग हैं इसमें राम द्वारा बालि का वध एवं चातुर्मास यापन का वर्णन किया गया है।
- बालकाण्ड में 77 सर्ग है। इसके आरम्भ के 4 सर्गों में रामायण की रचना की पूर्वपीठिका दी गयी है।

9. केन सह कस्य संबन्धः?

तालिका–I	**तालिका–II**
A. त्रिविक्रमभट्टः	**I. मृच्छकटिकम्**
B. भट्टनारायणः	**II. मुद्राराक्षसम्**
C. विशाखदत्तः	**III. वेणीसंहारम्**
D. शूद्रकः	**IV. नलचम्पू**

समुचित विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-II, C-III, D-V
(b) A-II, B-III, C-IV, D-I
(c) A-III, B-II, C-I, D-IV
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

उत्तर-(d)

त्रिविक्रमभट्ट की रचना– नलचम्पू है। इसमें सात उच्छ्वास है। इसमें राजा नल एवं दमयन्ती की कथा का वर्णन किया गया है।

- भट्टनारायण की रचना– वेणीसंहार है। इस नाटक में 6 अङ्क है। इसमें भीम के द्वारा द्रौपदी के वेणी संवारने का वर्णन है।
- विशाखदत्त की रचना– मुद्राराक्षस है। यह 7 अङ्कों का राजनीति विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा के द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन किया गया है।
- शूद्रक की रचना– मृच्छकटिक है। यह 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें (1) चारुदत्त नायक एवं कुल स्त्री धूता नायिका है तथा गणिका वसन्तसेना का वर्णन किया गया है। (2) शर्विलक एवं मदनिका के प्रेम प्रसङ्ग का भी वर्णन भी इसी में प्राप्त होता है।

10. कथनद्वयम् अधोलिखितम् – तत्र एकम् अभिकथनम् (a) अपरञ्च तस्य कारण (R) इति–

अभिकथनम् (a) : वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां तथैव जडे, न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा। भवति हि पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद् यथा,

कारण् (R) : प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः।।

उपर्युक्तं अभिकथन– कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) (a) इति सत्यं परं (R) इति असत्यम्
(b) (a) तथा (R) उभावपि असत्यम्
(c) (a) तथा (R) उभावपि सत्यम्
(d) (a) तथा (R) उभावपि सत्यम् परं (a) इत्यस्य (R) समुचितं कारणं नास्ति

उत्तर-(c)

अभिकथन (a) उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क के चौथे श्लोक में आत्रेयी के कथन से प्रस्तुत श्लोक द्रष्टव्य है– 'वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे ....।' 2/4

जिसका शाब्दिक अर्थ है– गुरू जिस प्रकार व्युत्पन्न शिष्य को उसी प्रकार मन्द बुद्धि शिष्य को भी विद्या देता है। वह उन दोनों के ज्ञान में न तो सामर्थ्य की वृद्धि करता है और न ही सामर्थ्य को नष्ट करता है। परन्तु फल में बहुत अधिक अन्तर होता है, जैसे स्वच्छ मणि प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने में समर्थ होती है मिट्टी आदि पदार्थ नहीं।

कारण- (R) वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।

भवन्ति हि पुनर्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः। 2/4

अतः कथन कारण की पुष्टि करता है इसलिए कथन एवं कारण दोनों एक दूसरे के आश्रित होने के कारण दोनों वाक्य सत्य हैं।

11. अस्मिन् श्लोके अलंकार– छन्दसोः सहितिरियम् वर्त्तते- श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं, प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्। स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः

(a) उपमा **(b) वृत्त्यनुप्रासः**
(c) मालिनी **(d) वंशस्थम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) A एवं C,
(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(c)

प्रस्तुत श्लोक किरातार्जुनीयम् के मङ्गलाचरण से सम्बद्ध है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– कुरुदेश की राजलक्ष्मी को संरक्षित करने वाले राजा दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसको नियुक्त किया था, ब्रह्मचारी के वेष को धारण करने वाला वह समस्त वृत्तान्त को जानकार द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आया। (कि. 1/1)

नोट– प्रस्तुत श्लोक में वंशस्थ छन्द एवं वृत्यनुप्रास अलंकार है। वृत्यनुप्रास का लक्षण– अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा।

- मम्मट के अनुसार उपमा का लक्षण है- **''साधर्म्यं उपमा भेदे।''**
- मालिनी छन्द का लक्षण हैं– **ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलौकैः**।
- 'वंशस्थ' छन्द का लक्षण– **जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।**

12. याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे स्तः

(a) उपनिधिप्रकरणम् **(b) उपोद्घातप्रकरणम्**
(c) साहसप्रकरणम् **(d) स्नातकधर्मप्रकरणम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) A एवं C,
(c) B एवं C, (d) C एवं D

उत्तर-(b)

आचार्य याज्ञवल्क्यकृत याज्ञवल्क्यस्मृति में प्रमुखतः तीन अध्याय है– (1) आचार अध्याय, (2) व्यवहार अध्याय, (3) प्रायश्चित अध्याय

व्यवहार अध्याय में कुल 25 प्रकरण है– (1) साधारण व्यवहारमातृकाप्रकरणम्, (2) असाधारण व्यवहार मातृका प्रकरणम्, (3) ऋणादान प्रकरणम्, (4) उपनिधिप्रकरणम्, (5) साक्षिप्रकरणम्, (6) लेख्य प्रकरणम्, (7) दिव्यप्रकरणम्, (8) दायविभाग प्रकरणम्, (9) सीमाविवाद प्रकरणम्, (10) स्वामिपाल विवाद प्रकरणम्, (11) स्वामिविक्रय प्रकरणम्, (12) दत्ताप्रदानिक प्रकरणम्, (13) क्रीतानुशय प्रकरणम्, (14) अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्, (15) संविदव्यतिक्रम प्रकरणम्, (16) वेतनादान प्रकरणम् (17) द्यूतसमाह्वय प्रकरणम्, (18) वाक्पारूष्य प्रकरणम्, (19) दण्डपारूष्यप्रकरणम्, (20)साहसप्रकरणम्, (21) विक्रीयांसप्रदानप्रकरणम्, (22) संभूयसमुत्थान प्रकरणम्, (23) स्तेय प्रकरणम् (24)स्त्रीसंग्रहप्रकरणम्, (25) प्रकीर्णप्रकरणम्

13. कौटिलीयमते धर्मोपधाशुद्धान् अमात्यान् स्थापयेत्

(a) धर्मस्थानीयेषु **(b) सन्निधातृनिचयकर्मसु**
(c) कण्टकशोधनेषु **(d) बाह्यभ्यन्तरविहररक्षासु**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) A एवं C,
(c) A एवं D, (d) B एवं C

उत्तर-(b)

आचार्य कौटिल्य ने राजा के लिए निर्देश दिया है कि वह गुप्त रीति से अमात्यों के व्यवहार की परीक्षा करें स्वामी के प्रति पवित्र हृदय एवं अपवित्र हृदय का गुप्त रीति से ज्ञान रखना ही उपधा कहलाता है। यह उपधा चार प्रकार की होती है-

(1) धर्मोपधा, (2) कामोपधा, (3) अर्थोपधा, (4) भयोपधा

- **धर्मोपधा-** ''धर्मोपधाशुद्धान धर्मस्थीयकण्टक- शोधनेषु स्थापयेत्'' अर्थात् जो अमात्य धर्मपरीक्षा में खरे उतरें उन्हें धर्मस्थीय तथा कण्टकशोधन कचहरी सम्बन्धी कार्यों में नियुक्त करना चाहिए।
- **अर्थोपधा-** 'अर्थोपधाशुद्धान् समाहर्तृसन्निधातृ-निचयकर्मसु' अर्थात् अर्थपरीक्षा में उत्तीर्ण अमात्यों को समाहर्ता तथा सन्निधाता के पदों पर रखना चाहिए।
- **कामोपधा-** ''कामोपधाशुद्धान बाह्याभ्यान्तरविहाररक्षासु' अर्थात् कामोपधा में परीक्षित अमात्यों को बाहरी विलास-स्थानों तथा भीतरी अन्तःपुर सम्बन्धी रक्षा का व्यवस्था-भार सौंपना चाहिए।
- **भयोपधा-** ''भयोपधाशुद्धानासन्नकार्येषु राज्ञः अर्थात् भय परीक्षा में उत्तीर्ण अमात्यों को राजा अपना अंगरक्षक नियुक्त करें।
- 'सर्वोपधाशुद्धान् मन्त्रिणः कुर्यात्''- जो अमात्य सभी परीक्षाओं में खरे उतरे हों उन्हें मन्त्रिपद पर नियुक्त किया जाना चाहिए।

14. अनैकान्तिकहेत्वाभासस्य कौ द्वौ प्रकारौ वर्तते तर्कभाषायाम्

(a) साधारणः **(b) सत्प्रतिपक्षः**
(c) असाधारणः **(d) आश्रयासिद्धः**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) A एवं C,
(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(b)

आचार्य केशवमिश्र रचित तर्कभाषा में हेत्वाभास के पाँच प्रकार बताए गये हैं।
हेत्वाभास का लक्षण– हेतुवद् आभासते इति हेत्वाभासः।
हेत्वाभास के भेद– ते च असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्टभेदात् पञ्चैव।।
अर्थात्– असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम और कालात्ययापदिष्ट के भेद से हेत्वाभास पाँच प्रकार का होता है।
पुनः (1) असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद होते हैं– (i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध
(2)विरुद्ध– साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः सा-यथा–शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्
(3) अनैकान्तिक हेत्वाभास के भी दो भेद होते हैं–
(i) साधारण अनैकान्तिक (ii) असाधारण अनैकान्तिक
(4) प्रकरणसम– प्रकरणसमास्तु स एव यस्य हेतोः साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते।
नोट- प्रकरणसम को ही सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास भी कहते हैं।
(5) कालात्ययापदिष्ट– पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्ट इति चोच्यते।
नोट- इसी हेत्वाभास को बाधित विषय हेत्वाभास भी कहते हैं।

15. केन सह कस्य सम्बन्धः-

तालिका–i	**तालिका–ii**
(a) कापटिकः	(i) कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः प्रशासीचयुक्तः
(b) उदास्थितः	(ii) वाणिजको वृत्तिक्षीणः
(c) गृहपतिकः	(iii) प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचमुक्तः
(d) वैदेहकः	(iv) परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-ii, B-iv, C-iii, D-i (b) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(c) A-iii, B-ii, C-iv, D-i (d) A-Iv, B-iii, C-i, D-ii

उत्तर-(d)

A– **कापटिकः–** परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः''
अर्थात्– दूसरों के रहस्यों को जानने वाला, बड़ा प्रगल्भ और विद्यार्थी की वेशभूषा में रहने वाला गुप्तचर कापटिक कहलाता है।
B– **उदास्थितः**– ''प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः उदास्थितः''
बुद्धिमान् सदाचारी, संन्यासी के वेष में रहने वाले गुप्तचर का नाम उदास्थित है।
गृहपतिकः– ''कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञा शौचयुक्तः''
बुद्धिमान् पवित्र ह्रदय और गरीब किसान के वेष में रहने वाला गुप्तचर गृहपतिक कहलाता है।
वैदेहकः– ''वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः''
बुद्धिमान् पवित्र ह्रदय गरीब, व्यापारी के वेष में रहने वाला गुप्तचर वैदेहक कहलाता है।

16. महाभारतस्य मंगलश्लोके कस्य ग्रन्थस्य निर्देशोऽस्ति?

(a) जयग्रन्थस्य (b) भारतग्रन्थस्य
(c) महाभारतग्रन्थस्य (d) विजयग्रन्थस्य

उत्तर-(a)

''नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।
अन्तर्यामी नारायणस्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण नरस्वरूप नरश्रेष्ठ अर्जुन, भगवती सरस्वती और उन लीलाओं का संकलन करने वाले महर्षि वेदव्यास को नमस्कार करके जय (महाभारत) का पाठ करना चाहिए।

ग्रन्थ का नाम	कर्त्ता	श्लोक सं.	वक्ता	श्रोता
जय	व्यास	8800	व्यास	वैशम्पायन
भारत	वैशम्पायन	24 हजार	वैशम्पायन	जनमेजय
महाभारत	सौति	1 लाख	सौति	शौनकादि

17. ग्रिमस्य नियमानुसारं ग्, द्, ब् (घोष अल्प प्राण) ध्वनीनां परिवर्तनक्रमः कः?

(a) ग्–क्; द्–ध्; ब्–फ्
(b) ग्–क्; द्–त्; ब्–प्
(c) ग्–ख्; द्–थ्; ब–फ्
(d) ग्–घ; द्–ध्; ब्–भ्

उत्तर-(b)

किसी भाषा विशेष में किसी काल विशेष में कुछ विशेष परिस्थितियों के अन्तर्गत हुए विशेष प्रकार के ध्वनि परिवर्तनों को ध्वनि नियम कहते हैं। यह नियम भाषाविज्ञान के अनुसार निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–
(1) **ग्रिम नियम–** ग्रिम नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं– (प्रथम को द्वितीय अर्थात् क् त् प् को ख् थ् फ्), (चतुर्थ की तृतीय अर्थात् घ, ध्, भ् को ग् द् ब्), (तृतीय को प्रथम अर्थात् ग् द् ब् को क् त् प्)।
(2) **ग्रासमान नियम–** मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण ध्वनियों में सामान्यतया प्रथम महाप्राण ध्वनि हट जाती है। प्रथम ध्वनि से महाप्राण हटने पर द्वितीय वर्ण में महाप्राण रहती है।
(3) **वर्नर नियम –** मूलभारोपीय भाषा के शब्दों के क् त् प् को जर्मानिक भाषाओं में ह् थ् फ् तभी होता है जब मूलभाषा में अव्यवहित पूर्व कोई उदात्त स्वर होता है। यदि उदान्त स्वर क् त् प् के बाद होगा तो इनके स्थान पर क्रमशः ग् द् ब् होते है।

18. अथर्ववेदस्यशाखे स्तः?

(a) हरिद्रवीय-संहिता **(b) शौनक-संहिता**

(c) छागलेय-संहिता **(d) पैप्पलाद-संहिता**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) A एवं D,

(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(c)

पतञ्जलि ने महाभाष्य में नवधाऽऽथर्ववाणो वेदः' कहकर 9 शाखाओं का उल्लेख किया है–

(1) पैप्पलाद (2) तौद (3) मौद (4) शौनक (5) जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवेद (8) देवदर्श (9) चारण वैद्य।

वेद	शाखाएं	आरण्यक
ऋग्वेद	शाकल, बाष्कल	ऐतरेय, शांखायन
शुक्ल-यजुर्वेद	माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व	बृहदारण्यक
कृष्ण-यजुर्वेद	तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल	तैत्तिरीय
सामवेद	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय	कोई नहीं
अथर्ववेद	शौनक, पैप्पलाद	कोई नहीं

19. अधस्तनेषु कयोर्द्वयोः सम्बन्धः?

(a) पतञ्जलिः महाभाष्यकारः

(b) कालिदासः

(c) गोनर्दीयः

(d) शबरस्वामी

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं C, (b) B एवं C,

(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(a)

पाणिनीय व्याकरण में मुनित्रय का उल्लेख है। इसमें तीन मुनि आते हैं (1) पाणिनि (2) पतञ्जलि (3) कात्यायन

पतञ्जलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर महाभाष्य नाम की व्याख्या की है। पतंजलि पुष्यमित्र (150 ई.पू.) के समय में हुए थे। ये पुष्यमित्र के अश्वमेधयज्ञ में ऋत्विज थे। अतः इनका समय 150ई.पू. के लगभग है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– (1) अष्टाध्यायी की विस्तृत महाभाष्य (2) पातंजल योगसूत्र (योगदर्शन) (3) सामवेदीय निदान-सूत्र (4) महानन्द काव्य

पतञ्जलि को गोनर्दीय भी कहा जाता था।

20. सामवेदस्य शाखे स्तः?

(a) वाधूल-संहिता (b) शाट्यायनीय-संहिता

(c) कपिष्ठल-कठ-संहिता (d) जैमिनीय-संहिता

उत्तर-(c)

पतञ्जलि ने सामवेद की एक सहस्त्र शाखाओं का उल्लेख किया है (सहस्रवर्त्मा सामवेदः)।

शौनक चरणव्यूह के अनुसार सामवेद की एक सहस्र शाखाएँ थी। किन्तु इनमें से केवल तीन आचार्यों की शाखाएँ सम्प्रति उपलब्ध हैं– (1) कौथुमीय (2) राणायनीय (3) जैमिनीय

कौथुमीय का प्रचार गुर्जर प्रदेश में, राणायनीय का महाराष्ट्र एवं जैमिनीय का कर्नाटक में अधिक हुआ है।

वेद	शाखाएं	आरण्यक
ऋग्वेद	शाकल, बाष्कल	ऐतरेय, शांखायन
शुक्ल-यजुर्वेद	माध्यन्दिन (वाजसनेवि) काण्व	बृहदारण्यक
कृष्ण-यजुर्वेद	तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल	तैत्तिरीय
सामवेद	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय	तलवकार
अथर्ववेद	शौनक, पैप्पलाद	कोई नहीं

21. संस्कृत व्याकरणानुसारं 'भवति' इत्यस्य का सञ्ज्ञा भवति?

(a) निष्ठा (b) पदम्

(c) भ (d) सर्वनामस्थानम्

उत्तर-(b)

आचार्य पाणिनि के अनुसार सुबन्त और तिङन्त की पद संज्ञा होती है अर्थात् सुप् प्रत्यय तथा तिङ् प्रत्यय जिनके अन्त में हो उन शब्दों की 'पद' संज्ञा होती है– ''सुप्तिङन्तं पदम्'' यथा=भू+तिङ् (ति) = भवति

क्तक्तवतू निष्ठा– अर्थात् क्त एव क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।

यचिभम्– सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्ययों को छोड़कर सु से लेकर कप् प्रत्यय पर्यन्त यकारादि और अजादि प्रत्यय परे रहते पूर्व की भसंज्ञा होती है।

सर्वनामस्थानम्– सु, औ, जस्, अम् और औट् पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है। **सुडनपुंसकस्य** सूत्र से।

22. स्त्रीप्रत्ययानुसारमधोऽङ्कितेषु 'ङीष्' प्रत्ययान्तः शब्दोऽस्ति–

(a) कुरुचरी (b) देवी

(c) पचन्ती (d) भवानी

उत्तर-(d)

इन्द्र– वरुण– भव– शर्व– रूद्र– मृड– हिमारण्य–यव– यवन– मातुला– चार्याणाम् आनुक्। सूत्र से ङीष् प्रत्यय एवं आनुक् का आगम होता है। यथा– भवानी में ङीष् प्रत्यय **इन्द्रवरुण................** सूत्र से हुआ है।

टिड्ढाणञ्– द्वयसज् दध्नञ् मात्रच् - तयप् ठक् - ठञ् - कञ् क्वरपः सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है।
अर्थात् अनुपसर्जन टिदन्त अकारान्त प्रातिपदिक और ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दध्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ्, क्वरप्, प्रत्ययों में अन्त होने वाले प्रातिपदिकों से ङीप् प्रत्यय होता है।
जैसे– (1) देवी (2) कुरुचरी (3) नदी (4) सौपर्णेयी (5) ऐन्द्री (6) औत्सी (7) ऊरुद्वयसी (8) ऊरुदघ्नी (9) ऊरुमात्री (10) पञ्चतयी (11) आक्षिकी (12) प्रास्थिकी इत्यादि शब्दों में ङीप् प्रत्यय होता है।
'उगितश्च ङीप्' जिसमें उक् (उ, ऋ, ऌ) की इत्संज्ञा हो गयी हो, ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप् प्रत्यय' होता है। जैसे- भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती।

23. बुद्धचरिते सर्गप्राथम्येन क्रमशः सर्गाणामुचितमुत्तरं चिनुत–

(a) संवेग-उत्पत्तिः **(b) अभिनिष्क्रमणम्**
(c) स्त्री-निवारणम् **(d) तपोवन प्रवेशः**
(E) अन्तःपुर विलाप

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, B, C, D, E (b) A, C, B, D, E
(c) B, C, D, E, A (d) C, D, E, A, B

उत्तर-(b)

बुद्धचरितम्– यह एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवन चरित तथा उनके सिद्धान्त वर्णित हैं इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है। इस महाकाव्य में 28 सर्ग हैं। चीनी और तिब्बती भाषा में इसके अनुवाद हुए हैं।
क्रम– (1) संवेग-उत्पत्ति, (2) स्त्रीनिवारण, (3) अभिनिष्क्रमण, (4) तपोवन प्रवेश, (5) अन्तःपुर विलाप
- संवेग की उत्पत्ति बुद्धचरित के तृतीय सर्ग में हुई है।
- स्त्रीनिवारण बुद्धचरित के चतुर्थ सर्ग में हुआ है।
- बुद्ध का घर से अभिनिष्क्रमण पञ्चम् सर्ग में वर्णित हैं।
- गौतम बुद्ध का तपोवन प्रवेश बुद्धचरित के सप्तम् सर्ग में हुआ है।
- अन्तःपुर में नारियों का विलाप बुद्धचरित के अष्टम् सर्ग में हुआ है।

24. 'न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः' इति मन्त्रांशे 'सुतेकरासः' इति पदस्य सायणानुसारमर्थोऽस्ति?

(a) ऋत्विजः (b) कृषकाः
(c) ब्रहमणाः (d) सुताः

उत्तर-(a)

इमे येनार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः।।
सायणभाष्य के अनुसार ''सुतेकरासः'' से तात्पर्य 'ऋत्विज्' से है। ''सोमम् सुतमभिषुतं कुर्वन्ति इति सुतेकरा ऋत्विजः''।
उपर्युक्त मन्त्र का तात्पर्य हैं- जो मनुष्य इस लोक के शास्त्र को नहीं जानते तथा न परलोकशास्त्र अर्थात् अध्यात्मशास्त्र को जानते हैं, वे न ब्राह्मण हैं, न उपासक हैं, किन्तु अज्ञानरूप पाप से युक्त हुए केवल सन्तान वंश का या अपने शरीर का ही विस्तार करते हैं।

25. 'अध्यात्मम्' अत्र कतमः समासः?

(a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः
(c) द्वन्द्वः (d) बहुब्रीहिः

उत्तर-(a)

अध्यात्मम्– (आत्मा के विषय में) आत्मनि इति इस लौकिक विग्रह में तथा आत्मनि ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में **''अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धिव्यृद्ध्यर्था भावात्ययासम्प्रतिशब्द-प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्य सम्पत्ति साकल्यान्त वचनेषु।''** सूत्र से विभक्ति अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। अधि की 'उपसर्जनसंज्ञा, पूर्वनिपात, ङि का लोप 'इकोयणचि' से इ को 'य' आदेश होकर 'अध्यात्मन्' बनता है। अनश्च से समासान्त 'टच्' प्रत्यय 'नस्तद्धिते' से अन् टि का लोप प्रातिपदिक-संज्ञा-सु प्रत्यय सु को अम् आदेश पूर्वरूप होकर अध्यात्मम् रूप सिद्ध होता है।
तत्पुरुषः– यह अधिकार सूत्र है। अर्थात् शेषो बहुव्रीहिः के पूर्व समास विधान करने वाले सूत्रों में इसका अधिकार रहेगा।
द्वन्द्वः– चार्थे द्वन्द्वः– च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का समास होता है और उसकी द्वन्द्व संज्ञा होती है।
बहुव्रीहिः– शेषो बहुव्रीहिः– शेष समास को बहुव्रीहि समास कहते हैं। यह अधिकार सूत्र है।

26. अत्र कथनद्वयं वर्तते– तत्र (a) इत्यभिकथनम्, (R) इति च तस्य कारणम्

अभिकथनम् (a) : न्याय दिशा तु न गुणगुणिनोः समकालीनं जनम्। किन्तु द्रव्यं निर्गुणमेव प्रथममुत्पद्यते, पश्चात् तत्समवेता गुणा उत्पद्यन्ते।
कारणम् (R) : समानकालोत्पत्तौ तु गुणगुणिनोः समानसामग्रीकत्वाद् भेदो न स्यात्, कारणभेदनियतत्वात् कार्यभेदस्य।
उपर्युक्तम् (a) इत्यभिकथनं (R) इति कारणं चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुतः-

(a) (a) असत्यम् तथा (R) सत्यम्।
(b) (a) तथा (R) उभयं असत्यम्।
(c) (a) तथा (R) उभयं सत्यम्।
(d) (a) तथा (R) असत्यम्।

उत्तर-(c)

आचार्य केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा के अनुसार शङ्का– गुण जब घटादि (गुणी) उत्पन्न होते हैं तभी उनमें रहने वाला गुण उत्पन्न होता है। इसलिए समानकालिक होने के कारण गुण और गुणी में पौर्वापर्य भाव सम्बन्ध उत्पन्न न होने से उनमें बायें सत्य तथा दाहिने इतर सींग के समान कार्य कारण भाव ही नहीं है। अतः घट आदि अपने में रहने वाले रूपादि गुणों के समवायी कारण नहीं हो सकते, क्योंकि समवायी कारण भी विशेष प्रकार का कारण ही है। उपर्युक्त शङ्का का समाधान करते हुए केशवमिश्र कहते हैं– गुण और गुणी की समानकाल में उत्पत्ति नहीं होती किन्तु पहिले निर्गुण ही उत्पन्न होता है। बाद में उसमें समवाय सम्बन्ध से रहने वाले गुण उत्पन्न होते हैं। यदि गुण तथा गुणी दोनों की समानकाल में उत्पत्ति होगी तो उनकी कारण सामग्री भी समान होगी। अतः उन दोनों में यह गुण है यह गुणी है इस प्रकार का भेद न होगा क्योंकि कार्य का भेद कारण के भेद से नियत है। कार्य भेद तभी होता है जब कारण भेद होता है। इसलिए प्रथम क्षण घट निर्गुण ही उत्पन्न होता है।

अतः कथन एवं कारण दोनों सत्य हैं।

27. अधोलिखितेषु द्वावेतौ सिद्धान्तरूपेण बौद्धदर्शने स्वीक्रियेते–

(a) शब्दनित्यतावादः (b) प्रतीत्यसमुत्पादः
(c) सप्तभङ्गीनयः (d) क्षणिकवादः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं C, (b) B एवं C,
(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(c)

बौद्ध दर्शन में 'प्रतीत्यसमुत्पाद– प्रतीत्यसमुत्पाद भगवान् बुद्ध के उपदेशों का आधारभूत सिद्धान्त है। प्रतीत्यसमुत्पाद कार्यकारण वाद है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के 12 अङ्ग हैं– (1) अविद्या (2) संस्कार (3) विज्ञान (4) नाम-रूप (5) षडायतन (6)स्पर्श (7) वेदना (8) तृष्णा (9) उपादान (10) भव (11) जाति (12) जरा-मरण

- **बौद्ध दर्शन में क्षणिकवाद–** हीनयान के प्रमुख सिद्धान्त क्षणभङ्गवाद/क्षणिकवाद है। इसका उद्‌घोष है– सर्वं क्षणिकम् अर्थात् सब कुछ क्षणिक है। परिवर्तन की धारा बह रही है। कोई एक वस्तु या वही पदार्थ नहीं है क्योंकि यदि धर्म को क्षणिक माना जाय तो वह क्षणिक नहीं होगा।
- वाक्यपदीयम् में शब्द को नित्य माना गया है।
- स्याद्वाद को सप्तभङ्गीनय भी कहते हैं। साधारणतया न्यायवाक्य दो प्रकार के माने जाते हैं–अन्वयी (विधानात्मक) और व्यतिरेकी (निषेधात्मक) किन्तु जैनमत नय के सात प्रकार या भङ्ग स्वीकार करते हैं जो इस प्रकार है– (1) स्यात् अस्ति, (2) स्यात् नास्ति, (3) स्यात् अस्तिचनास्ति, (4) स्यात् अवक्तव्यम्, (5) स्यात् अस्ति च अवक्तव्यम्, (6) स्यात् नास्ति च अवक्तव्यम्, (7) स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम्।

28. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्तसंज्ञोऽस्ति?

(a) अनुनासिकः (b) जिह्वामूलीयः
(c) सन्ध्यक्षरः (d) संयोगः

उत्तर-(a)

आचार्य शौनक कृत ऋक्प्रातिशाख्य में 18 पटल है जिसमें प्रथम पटल (संज्ञा पटल) में अनुनासिक का लक्षण इस प्रकार से द्रष्टव्य है–**रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः।''** अर्थात् अनुनासिक वर्णों की रक्त-संज्ञा होती है। उव्वट के अनुसार– ''यस्य वर्णस्यानुनासिक संज्ञा-विहिता तस्यानेन रक्तसंज्ञा विधीयन्ते।'' जिस वर्ण की अनुनासिक संज्ञा का विधान किया जा चुका है उसी की रक्त संज्ञा होती है।

- **सन्ध्यक्षर–** ''ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि।'' अर्थात् समानाक्षर के बाद वाले चार वर्ण सन्ध्यक्षर सञ्ज्ञक होते हैं। यथा– ए, ओ, ऐ, औ।
- **अघोष–** अन्त्याः सप्त तेषाम् अघोषाः। अर्थात् उन ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष संज्ञक हैं। उव्वट भाष्य के अनुसार– ''तेषाम् एवोष्मणाम् अन्त्याः सप्त उष्माणः अघोषसंज्ञाः वेदितव्याः।'' अर्थात् उन ऊष्म वर्णों में ही अन्त वाले सात ऊष्म वर्णों को अघोष संज्ञक जानना चाहिए जैसे– श्, ष्, स्, अः, ᳵ क, ᳵ प, अं। इसके अतिरिक्त अघोषवर्ण है– क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ।

29. सांख्यकारिकायां 'संघात परार्थत्वात्' अनेन हेतुना साध्यते–

(a) अव्यक्तम् (b) अहङ्कारः
(c) पुरुषः (d) महत्

उत्तर-(c)

आचार्य ईश्वरकृष्ण प्रणीत् सांख्यकारिका के 17वीं कारिका में पुरुष का लक्षण इस प्रकार द्रष्टव्य है–

संङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।

पुरुष या आत्मा का अस्तित्व है, क्योंकि संघात अपने से भिन्न दूसरे के लिए होते हैं। त्रिगुणत्व का अभाव भी किसी में होता है। (सुख दुःख मोहात्मक जड़वर्ग को) अधिष्ठित् करने वाला कोई अधिष्ठाता होता है। कोई भोक्ता है। जड़वर्ग से भिन्न आत्मरूप कैवल्य को प्राप्त करने के लिए महर्षियों की प्रवृत्ति होती है।

अव्यक्त–

''भेदानां परिमाणात् समन्वयाच्छक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारण कार्यविभागादविभागद्वैश्वरूप्यस्य।।

महदादिकार्यरूप भेदों का मूलकारण अव्यक्त है, क्योंकि (सृष्टि के समय) कार्य का आविर्भाव कारण से होता है, तथा प्रलय में विश्वरूप कार्य का अपने कारण में तिरोभाव हो जाता है, क्योंकि कार्य की उत्पत्ति कारण की शक्ति से होती है, कार्य परिमित होता है तथा कार्य में सुखदुःखमोहरूपता का समानरूप से समन्वय होता है।

अहङ्कार–
अभिमानोऽहंकारः तस्माद् द्विविधः प्रवर्ततेसर्गः।
एकादशकश्च गणस्तन्मात्रा पञ्चकश्चैव।।
महत्– **प्रकृतेर्महास्ततोऽहंकारस्तस्मात्गणश्च षोडशकः**

30. सांख्याचार्याणां कालक्रमो यथातथं विभावनीयः–

(a) कपिलः **(b) ईश्वरकृष्णः**
(c) आसुरिः **(d) पञ्चशिखः**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, B, D, C (b) A, C, B, D
(c) A, C, D, B (d) C, A, B, D

उत्तर-(c)

क्रम– (1) कपिल, (2) आसुरि, (3) पञ्चशिखः, (4) ईश्वर कृष्णः वाचस्पतिमिश्रप्रणीत् साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी के द्वितीय कारिका में प्रस्तुत क्रम का विवेचन किया गया है जो निम्न रूप से द्रष्टव्य है–

'कपिलाय महामुनये मुनये शिष्याय तस्य चासुरये।
पञ्चशिखाय तथेश्वरकृष्णायैते नयस्यामः।।

(मैं वाचस्पतिमिश्र और मेरे शिष्य) हम सभी कपिलनाम वाले महामुनि को, उनके शिष्य आसुरिसञ्ज्ञक मुनि को (उनके शिष्य) पञ्चशिखाचार्य को तथा उनकी शिष्यपरम्परा में साङ्ख्यकारिका की रचना करने वाले ईश्वरकृष्ण को प्रणाम करते हैं।

31. किष्किन्धाकाण्डे कौ विषयौ वर्णितो स्तः-

(a) अशोकवनिका-ध्वंसनम् (b) सीतान्वेषणम्
(c) विभीषणेन दूतवधनिषेधः (d) सम्पाति कथा

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) B एवं C,
(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(c)

रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में कुल 67 सर्ग है।
पम्पा सरोवर में वसन्त ऋतु की छटा देखकर राम का सीता के वियोग में दु:खी होना, हनुमान द्वारा राम और सुग्रीव की मैत्री कराना, हनुमान् आदि के द्वारा सीता का गहन अन्वेषण एवं सम्पाति से भेंट, सीता के स्थान की सूचना, सम्पाति की कथा जाम्बवान् द्वारा हनुमान् का उद्बोधन एवं हनुमान का सागर-लङ्घन के लिए प्रस्तुत होना ये सारे वृत्तान्त वर्णित है।

- रामायण में अशोक वाटिका विध्वंस का वर्णन सुन्दरकाण्ड में किया गया है। हनुमान द्वारा सागर पार करके अनेक विघ्नों को दूर करके लङ्का में प्रवेश पाना, अशोक वन में सीता का अन्वेषण अशोकवाटिका का ध्वंस एवं राक्षसों का वध वर्णित है।
- रामायण के युद्धकाण्ड में राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन, राम द्वारा सूर्य पूजा, सीता की अग्नि परीक्षा, विभीषण के दूतवध का निषेध इत्यादि कथा वर्णित है।

32. मनुमते उत्तरोत्तरश्रेष्ठानि मान्यस्थानानि सन्ति–

(a) बन्धुः **(b) वयः**
(c) कर्म **(d) विद्या**
(E) वित्तम्

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, D, E, B, C (b) C, D, B, A, E
(c) D, A, B, E, C (d) E, A, B, C, D

उत्तर-(d)

क्रम– (1) वित्तम्, (2) बन्धुः, (3) वयः, (4) कर्म, (5) विद्या
आचार्य मनुकृत मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय के 36वें श्लोक से प्रस्तुत क्रम द्रष्टव्य है–

''वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्।। मनु. 2/136

धन, बन्धु, आयु, कर्म और पाँचवी विद्या ये मान्यता के स्थान है। जो पीछे है वही पहले से बड़ा है। अर्थात् धन से बन्धु बड़ा है इत्यादि।

33. 'उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल् यस्य तत्' इति वचनं वर्तते–

(a) आनन्दवर्धनस्य (b) क्षेमेन्द्रस्य
(c) भामहस्य (d) विश्वनाथस्य

उत्तर-(b)

ध्वन्यालोक के लेखक आचार्य आनन्दवर्धन हैं। यह चार उद्योतों में विभक्त हैं।
क्षेमेन्द्र– कश्मीर निवासी क्षेमेन्द्र ने प्राय: 40 ग्रन्थों की रचना विविध साहित्य प्रकारों में की है। काव्यशास्त्र से सम्बद्ध इनकी तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–(1) औचित्यविचारचर्चा, (2) कविकण्ठाभरण, (3) सुवृत्ततिलक

- आचार्य क्षेमेन्द्र ने औचित्यविचारचर्चा में औचित्य के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा है-
  ''उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत् ।
  उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते ।। अर्थात् जो जिसके सदृश हो उसे आचार्य उचित कहते हैं। उचित के भाव को ही औचित्य कहते हैं।
- **भामह–** भामह का स्थान भरत के अनन्तर प्रथम आचार्य के रूप में समादृत है। इन्होंने काव्यालंकार नामक ग्रन्थ की रचना करके अलङ्कार प्रस्थान का प्रवर्तन किया।
- आचार्य विश्वनाथ कविराज संस्कृत काव्यशास्त्र में सर्वाधिक लोकप्रिय आचार्य हैं जिनका 'साहित्यदर्पण' सभी काव्यप्रेमियों को आकृष्ट करता है।

34. अथर्ववेदीय– राष्ट्राभिवर्धन-सूक्तस्य देवता का?

(a) अथर्वा (b) ब्रह्मणस्पतिः

(c) राष्ट्रम् (d) राष्ट्राभिवर्धनम्

उत्तर-(b)

राष्ट्राभिवर्धन सूक्त (अथर्ववेद) के प्रथम काण्ड का 29वाँ सूक्त है। इसके ऋषि– वसिष्ठ, देवता– ब्रह्मणस्पतिः तथा मन्त्रों की संख्या– 6 है।
प्रमुख सूक्ति– अभिवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राय वर्धय
अभीवर्तो अभिभवः सपत्नक्षयणो मणिः।
पृथ्वी सूक्त अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है इसके ऋषि अथर्वा एवं मन्त्रों की संख्या 63 है।

35. तत्पुरुषसमासस्य उदाहरणानामानि विभक्तिक्रमेण प्रदर्शयत–

(a) धान्यार्थः **(b) राजपुरुषः**

(c) सुखप्राप्तः **(d) चोरभयम्**

(E) यूपदारु

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, D, B, E, C (b) A, D, C, B, E

(c) C, A, B, D, E (d) C, A, E, D, B

उत्तर-(d)

व्याख्या–क्रम– **सुखप्राप्तः**– द्वितीया तत्पुरुष समास
धान्यार्थः– तृतीया तत्पुरुष समास
यूपदारु– चतुर्थी तत्पुरुष समास
चोरभयम्– पञ्चमी तत्पुरुष समास
राजपुरुषः– षष्ठी तत्पुरुष समास
सुखप्राप्तः– लौकिक विग्रह– सुखं प्राप्तः
द्वितीया ''श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' सूत्र से सुखप्राप्तः में द्वितीया तत्पुरुष समास हुआ है।
धान्यार्थः– लौकिक विग्रह– धान्येन अर्थः, अलौ. विग्रह– धान्य टा अर्थ सु 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से धान्य– टा सुबन्त का अर्थ सु सुबन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास हुआ है।
यूपदारु– लौकिक विग्रह-यूपाय दारुः
अलौकिक विग्रह– यूप ङे दारु सु
चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' सूत्र से यूप् शब्द का दारु शब्द के साथ चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है।
चोरभयम्– लौ.वि.- चोराद् भयम्
अलौ.वि.– चोर ङसि भय सु
'पञ्चमी भयेन सूत्र से पञ्चम्यन्त चोर शब्द का सुबन्त भय के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।
राजपुरुषः– लौ.वि.– राज्ञः पुरुषः
अलौ.वि.– राजन् ङस् पुरुष सु
'षष्ठी' सूत्र से षष्ठ्यन्त पद राजन् ङस् सुबन्त का पुरुष सु सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

36. केन सह कस्य सम्बन्ध?

तालिका–I	तालिका–II
A. संस्कृत भाषा	**I. श्लिष्ट वियोगात्मक**
B. हिन्दी भाषा	**II. अश्लिष्ट मध्ययोगात्मक**
C. तिब्बती भाषा	**III. अयोगात्मक**
D. सन्थाली भाषा	**IV. श्लिष्ट संयोगात्मक**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-II, C-IV, D-III

(b) A-II, B-IV, C-III, D-I

(c) A-III, B-II, C-IV, D-I

(d) A-IV, B-I, C-III, D-II

उत्तर-(d)

A– संस्कृत भाषा– श्लिष्ट संयोगात्मक
B– हिन्दी भाषा– श्लिष्ट वियोगात्मक
C– तिब्बती भाषा– अयोगात्मक
D– सन्थाली भाषा– अश्लिष्ट मध्य योगात्मक
***– आकृतिमूलक वर्गीकरण**
इसको निम्नलिखित वंशवृक्ष के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
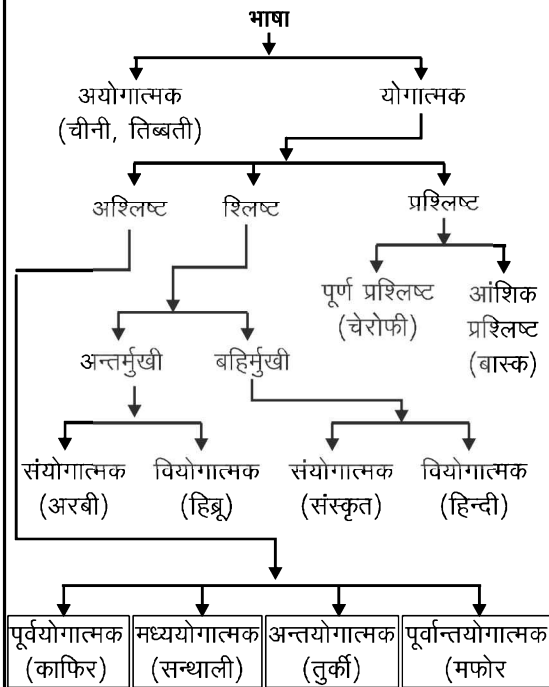
37. अधोलिखितानां रामायणस्य विषयवस्तूनाम् समुचितः क्रमोऽस्ति-

(a) ताटकावधः **(b) दशरथेन यज्ञानुष्ठानम्**

(c) मिथिला-प्रस्थानम् **(d) रामजन्म**

(E) रामद्वारा धनुर्भङ्गः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, B, C, D, E (b) A, B, D, C, E

(c) B, C, D, A, E (d) B, D, A, C, E

उत्तर-(d)

क्रम– (1) दशरथेन यज्ञानुष्ठानम्, (2) रामजन्म, (3) ताडका वध, (4)मिथिला प्रस्थान, (5) राम द्वारा धनुर्भङ्ग

बालकाण्ड के एक-एक विषय का सम्पूर्ण प्ररिप्रेक्ष्य में विस्तृत वर्णन करते हुए क्रमशः अयोध्या में दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान, पुत्र की प्राप्ति, देवताओं की प्रार्थना, रामावतार, राम की बाल्यावस्था, राम को बला अतिबला विद्या की प्राप्ति, ताड़का वध, यज्ञ रक्षा, मिथिला प्रस्थान, अहल्या का उद्धार, शिव धनुष वृत्तान्त, राम द्वारा धनुर्भङ्ग, दशरथ का मिथिला आना, राम एवं सीता के विवाह का वर्णन इत्यादि कथाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।

38. केशवमिश्रानुसारं संयुक्तसमवायसन्निकर्षस्योदाहरणमस्ति–

(a) चक्षुः– घटत्वम् **(b) चक्षुः–घटम्**

(c) चक्षुः–घटरूपम् **(d) श्रोत्रम्–शब्दत्वम्**

उत्तर-(c)

आचार्य केशव मिश्र प्रणीत तर्कभाषा में छः प्रकार के इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष बताए गए हैं-

1. **संयोग**– चक्षुरिन्द्रिय से घट का प्रत्यक्ष होने से संयोग सन्निकर्ष होता है।
2. **संयुक्त समवाय**– चक्षुरिन्द्रिय से घटरूप का प्रत्यक्ष ग्रहण होने पर संयुक्त समवाय सन्निकर्ष होता है।
3. **संयुक्तसमवेत समवाय**– जब चक्षुरिन्द्रिय से घटरूप में समवेत रूपत्व आदि जाति का ग्रहण होता है, तो इनका सन्निकर्ष संयुक्तसमवेत समवाय कहलाता है।
4. **समवाय**– जब श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय है और शब्द अर्थ है और इन दोनों का सन्निकर्ष सम्बन्ध समवाय कहलाता है।
5. **समवेत समवाय**– शब्द में समवेत शब्दत्व जाति का सम्बन्ध समवेत समवाय सन्निकर्ष कहलाता है।
6. **विशेषण विशेष्यभाव**– चक्षु से संयुक्त भूतल में घटाभाव का ग्रहण होने पर विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है।

39. 'हर्षचरितम्' इत्यस्य रचनाकारः वर्तते–

(a) बाणभट्टः (b) भारविः

(c) श्रीहर्षः (d) हर्षदेवः

उत्तर-(a)

ऐतिहासिक कथानक पर आधारित गद्यकाव्यों में यह सर्वप्रथम है। इसे स्वयं बाण ने आख्यायिका कहा है जिसमें वक्त्र छन्द और उच्छ्वासों में विभाजन की प्रविधि अपनायी गयी।

यह आठ उच्छवासों में विभक्त है। तथा इसमें दो कथानक हैं– बाण की आत्मकथा जिसमें हर्षवर्धन से उनके सम्मान पाने का वृत्तान्त है।

- भारवि का एकमात्र ग्रन्थ किरातार्जुनीयम् है।
- श्री हर्ष का प्रमुख महाकाव्य नैषधीयचरितम् है। यह 22 सर्गों में विभक्त है। तथा इसमें नल एवं दमयन्ती की आत्मकथा वर्णित है।
- हर्ष की कुल तीन रचनाएँ हैं– (1) नागानंद, (2) प्रियदर्शिका, (3) रत्नावली।

40. 'अक्षैर्मादीव्यकृषिमित् कृषस्व, वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः' अस्य मन्त्रस्य देवता का?

(a) अक्षाः (b) कवषः

(c) कृषिः (d) कितवः अक्षाश्च

उत्तर-(c)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद संहिता के अक्षसूक्त से सम्बद्ध है इस सूक्त के ऋषि ऐलूषकवषो मूजवतः एवं देवता अक्षा/कितव एवं कृषि हैं।

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व,
वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः
तत्र गावः कितव तत्र जाया
तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।। (अक्षसूक्त/13 मन्त्र)

अर्थात् पाँसो से मत खेलो, खेती ही करो, इसी को बहुत मानते हुए इसी से प्राप्त धन में रमो। वहाँ पर गाये हैं, जुआरी वहाँ तुम्हारी घरवाली है। श्रेष्ठ सविता ने यह मुझसे कहा है। अक्षा देवता है।

41. वाक्यपदीयानुसारं शब्दब्रह्मविषये के कथने उचिते स्तः?

(a) नादैराहितबीजायाम्

(b) अनादि निधनं ब्रह्म

(c) बुद्धौ शब्दोऽवधार्यते

(d) एकमेव यदाम्नातं भिन्नं शक्तिव्यपाश्रयात्

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B, (b) B एवं C,

(c) B एवं D, (d) C एवं D

उत्तर-(c)

आचार्य भर्तृहरि प्रणीत् वाक्यपदीयं नामक ग्रन्थ के ब्रह्मकाण्ड में शब्दब्रह्म की चर्चा की गयी है। जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

''अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।

विवर्ततेऽर्थ भावेन प्रक्रिया जगतो यत:।। वाक्य.१

अर्थात् आदि और अन्त से रहित अर्थात् कालकृत परिच्छेद से शून्य अथवा पूर्वा पर विभाग से हीन अर्थात् देशकृत परिच्छेद से मुक्त अकारादि अक्षरों का निमित्त होने के कारण अक्षर अर्थात् शब्दतत्त्व है।

नादैराहितबीजायामन्त्येव ध्वनिना सह।

आवृत्तपरिमाकायां बुद्धौ शब्दोऽवधार्यते।। वा. 83

एकमेव यदाम्नातं भिन्नशक्तिव्यपाश्रयात्।

अपृथक्त्वेऽपि शक्तिभ्यः पृथक्त्वेनेव वर्तते।।2।।

जो शब्द ब्रह्म परस्पर भिन्न विविध शक्तियों का आश्रय होने से एक अखण्ड रूप में ही वेद में पठित है। और जो अपनी शक्तियों से अभिन्न होने पर भी पृथक् के समान वर्तमान है।

42. याज्ञवल्क्यानुसारं सीमातिक्रमणे दण्डाः प्रोक्ताः–

(a) अधमसाहसाः (b) उत्तमसाहसाः
(c) उत्तमोत्तमसाहसाः (d) मध्यमसाहसाः

उत्तर-(b)

याज्ञवल्क्यप्रणीत् याज्ञवल्क्यस्मृति में सीमा के अतिक्रमण करने पर उत्तम साहस का प्रयोग किया जाता है–

''मर्यादायाः प्रभेदे च सीमाति क्रमणे तथा क्षेत्रस्य हरणे दण्डा अधमोत्तममध्यमाः।।155।।

मर्यादा (सीमा पेड़) को तोड़ने, सीमा को पार करने और खेत के हरण कर लेने पर क्रमशः अधम, उत्तम और मध्यम साहस को दण्ड देना चाहिए।

नोट– U.G.C. के पूछे गये प्रश्न के अनुसार A+B+D तीनों विकल्प सत्य है।

43. योदर्शनानुसारं 'संयमः' इत्यनेन कस्य निर्देश?

(a) अहिंसा-सत्य-अस्तेयानि (b) धारणा-ध्यान-समाधयः
(c) यम-नियम-प्रत्याहारः (d) शौच-संतोष-तपांसि

उत्तर-(b)

महर्षि पतञ्जलिकृत योगदर्शन के अनुसार धारणा ध्यान और समाधि तीनों एकत्र होकर संयम कहलाते हैं– तदेतद् धारणा ध्यान समाधि त्रयमेकत्र संयमः।''

त्रयमेकत्र संयमः– एक ध्येयविषयक तीनों संयम कहे जाते हैं।

एकविषयाणि त्रीणि साधनानि 'संयम' इत्युच्येत तदस्य त्रयस्य तान्त्रिकी परिभाषा संयम इति।।

योग दर्शन के अनुसार योग के आठ अङ्ग हैं–

(1) **यम–** (1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) अस्तेय, (4) ब्रह्मचर्य, (5) अपरिग्रह।

(2) **नियम–** (1) शौच, (2) संतोष, (3) तप, (4) स्वाध्याय, (5) ईश्वरप्रणिधान।

(3) आसन–

(4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान

(8) समाधि

44. अर्थसंग्रहे कतिधा वेद उच्यते-

(a) अष्टविधः (b) चतुर्विधः
(c) दशविधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(d)

लौगाक्षिभास्कर प्रणीत् – अर्थसंग्रह में मीमांसकों की दृष्टि में वेद अपौरुषेय है। शब्दसमूहात्मक होने से वे नित्य हैं। (1) विधि, (2) मन्त्र, (3) नामधेय, (4) निषेध, और

(5) अर्थवाद के भेद से वेदवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं।

(1) **विधि**– तत्राज्ञातार्थ ज्ञापको वेदभागो विधि:

अज्ञात अर्थ को ज्ञापित कराने वाले वेदभाग को 'विधि' कहा जाता है।

मन्त्र– प्रयोग समवेतार्थस्मारका मन्त्राः।

यागानुष्ठान में उपयुक्त पदार्थों को स्मारक मन्त्र कहते हैं।

नामधेय– मीमांसा में नामधेय एक पारिभाषिक शब्द है जो वस्तुतः यागनामधेय का संक्षिप्त रूप है।

निषेध– पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः पुरूष के निवर्त्तक वाक्य को निषेध कहते है उदाहरण– न कलञ्जं भक्षयेत् ।

अर्थवाद– प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः।

प्रशंसा अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं।

इसके तीन भेद हैं– गुणवाद, अनुवाद, भूतार्थवाद

45. सर्वप्राचीन रचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत्–

(a) किरातार्जुनीयम् (b) कुमारसंभवम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) रामायणम्
(E) स्वप्नवासवदत्तम्

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, B, C, D, E (b) A, B, C, E, D
(c) B, C, D, A, E (d) D, E, B, A, C

उत्तर-(d)

क्रम– (1) रामायणम्– वाल्मीकि, (2) स्वप्नवासवदत्तम्– भास, (3)कुमारसंभवम्– कालिदास, (4) किरातार्जुनीयम्– भारवि, (5) नैषधीयचरितम्– श्रीहर्ष

रामायण महर्षि वाल्मीकि की रचना है। यह सात काण्डों में विभक्त एक आर्ष महाकाव्य है।

वासवदत्ता नामक एकमात्र गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु बाणभट्ट के कुछ पूर्ववर्ती थे। सुबन्धु का समय 550-600 ई. के बीच माना जाता

है। बाण सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध हुए थे। जिन्होंने उपर्युक्त रूप से न केवल वासवदत्ता की प्रशंसा की है; अपितु कादम्बरी को बृहत्कथा और वासवदत्ता दोनों से बढ़कर बताया है।

कुमारसंभवम्– यह महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है जिसमें कवि ने शिव पार्वती के विवाह, कुमार कार्तिकेय का जन्म एवं तारकासुर का वध की कथा उपन्यस्त है। इस महाकाव्य में 17सर्ग हैं।

किरातार्जुनीयम्– इस महाकाव्य के लेखक महाकवि भारवि हैं। यह महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त है। इसका कथानक महाभारत के वनपर्व के कुछ अध्यायों पर आश्रित है।

नैषधीयचरितम्– महाकवि श्रीहर्ष रचित एकमात्र उपलब्ध काव्य के रूप में नैषधीयचरितम् भारतीय विद्वानों के बीच अत्यधिक प्रसिद्ध है। जो महाभारत के वनपर्व में संकलित है। इसमें नल-दमयन्ती के परस्पर प्रणय एवं परिणय का कथानक हैं इस कथानक को लम्बे-लम्बे 22 सर्गों में फैलाया गया है।

46. अधोऽङ्कितासु भारोपीय परिवारानुसारं कतमा भाषा शतम् वर्गेऽस्ति?

(a) आर्मीनी **(b) केल्टिक**
(c) ग्रीक **(d) तोखारी**

उत्तर-(a)

भारोपीय परिवार की भाषाओं को शतम् वर्ग के आधार पर दो वर्गों में बांटा गया है–

शतम्	केन्टुम्
(1) भारत-ईरानी	(5) ग्रीक
(2) बाल्टो	(6) केल्टिक
(3) आर्मीनी	(7) जर्मानिक
(4) अल्बानी	(8) इटालिक,
	(9) हिट्टाइट
	(10) तोखारी

47. कथनद्वयम् अधोलिखितम्– तत्र एकम् अभिकथनम् (a), अपरञ्च तस्य कारणम्, (R) इति–

अभिकथनम् (a) : 'यो वै एताम् एवं वेद, अपहत्य पाप्मनमा, अनन्ते स्वर्गलोके, ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति'

कारणम् (R) : 'यतः स जानाति - तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा, वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमापयतनम्'

उपर्युक्त– अभिकथन– कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) असत्यम्, (R) सत्यम्
(b) (a) एवम् (R) उभावपि असत्यम्
(c) (a) एवम् (R) उभावपि सत्यम्, (R) इति उचितं कारणमस्ति
(d) (a) सत्यम्, (R) असत्य

उत्तर-(c)

व्याख्या–अभिकथन (a) ''यो वै एताम् ....प्रतितिष्ठति'' कारण (R)-''यतः स जानाति ....सर्वाङ्गानि सत्यमापयतनम्।'' उपर्युक्त कथन एवं कारण दोनों सत्य है तथा कथन (a) का कारण (R) उचित है।

48. वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः।
नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मान्नैको रसः कवेः।।
इति पद्यं कस्मिन काव्ये विलसति?

(a) कादम्बर्याम् (b) दशकुमारचरिते
(c) नलचम्पू काव्ये (d) शिवराज विजये

उत्तर-(c)

महाकवि श्री त्रिविक्रम भट्ट विरचित नलचम्पू सात उच्छ्वासों में विभक्त है। जिसमें प्रथम उच्छ्वास के श्लोक संख्या 16 से प्रस्तुत सूक्ति द्रष्टव्य है–

''वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः।
नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मानैको रसः कवेः।।16।।

अर्थात् काव्य की वाणियाँ सभंगश्लेष की विशेषता से कठिन हो जाती हैं। पर उससे घबराना नहीं चाहिए क्योंकि कवि के लिए एक ही रस नहीं है।

प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप् छन्द एवं सभङ्गश्लेष अलङ्कार है।

- कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की रचना है।
- दशकुमारचरितम् महाकवि दण्डी की रचना है।
- शिवराजविजय पं. अम्बिकादत्त व्यास विरचित एक उपन्यास है।

49. मनुमते स्वयम्भूर्भगवानव्यक्तो किमिदं व्यञ्जनयन् प्रादुरासीत्?

(a) अज्ञानमिदम् (b) जगदिदम्
(c) ज्ञानमिदम् (d) तममिदम्

उत्तर-(b)

प्रस्तुत सूक्ति मनुस्मृति के प्रथम अध्याय से उद्धृत है–

''ततः स्वयंभूर्भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्निदम्।
महाभूतादि वृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः।।6।।

जो इन्द्रियों से प्रत्यक्ष न हो ऐसे, सृष्टि की रचना करने में समर्थ अपनी इच्छा से शरीर धारण करने वाले और प्रकृति के प्रेरक भगवान् आकाशादि महाभूतों को प्रकाशित करते हुए प्रकट हुए।

नोट– अतः प्रस्तुत श्लोक में जगद् की रचना का विवेचन किया गया है।

अन्य सूक्ति– आपोनारा इति प्रोक्ता आपो वैनर सूनवः

- उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्ड प्ररोहिणः।
- अपुष्पाः पुलवन्तो ये ते वनस्पतयः समृताः।
- वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले चातद्विदाम्।
- श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।

50. महाभाष्यानुसारं कयोर्द्वयोरुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

(A) दुष्टः शब्दः **(B) गुणो नाम सः**

(C) कर्मण्यण् **(D) विभक्तिं कुर्वन्ति**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B (b) A एवं C

(c) A एवं D (d) B एवं D

उत्तर-(c)

महर्षि पतञ्जलि कृत महाभाष्य में पाँच मुख्य एवं 13 गौण प्रयोजन की चर्चा की गई है। जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

पाँच मुख्य प्रयोजन– (1) रक्षा, (2) ऊह, (3) आगम, (4) लघु, (5) असन्देह

13 गौण प्रयोजन– (1) तेऽसुराः, (2) दुष्टःशब्दः, (3) यदधीतम्, (4) यस्तुप्रयुङ्क्ते, (5) अविद्वांसः (6) विभक्तिं कुर्वन्ति, (7) यो वा इमाम्, (8) चत्वारि, (9) उतत्वः, (10) सक्तुमिव, (11) सारस्वतीम् (12) दशम्यां पुत्रस्य, (13) सुदेवोऽसि वरुण

अतः दुष्टः शब्दः एवं विभक्ति कुर्वन्ति दोनों गौण प्रयोजन है।

51. तैत्तिरीय-संहितायाः भाष्यकारान् कालक्रमेण योजयत?

(A) भवस्वामी **(B) क्षुरः**

(C) कुण्डिनः **(D) सायणः**

(E) कौशिकः भट्ट– भास्कर-मिश्रः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, C, D, B, E (b) C, A, E, B, D

(c) D, C, B, A, E (d) E, B, D, C, A

उत्तर-(b)

तैत्तिरीय संहिता के भाष्यकारों का कालक्रम– (1) कुण्डिनः, (2) भवस्वामी, (3) कौशिकभट्ट–भास्कर मिश्र, (4) क्षुरः, (5) सायणः। भवस्वामी ने कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर एक भाष्य लिखा था किन्तु यह भाष्य आज उपलब्ध नहीं है।

सायण– वेदों के भाष्यकर्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सायण ने अनेक विद्वानों की सहायता से चारों वेदों पर प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण भाष्य लिखा है। उन्होने सर्वप्रथम– कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर भाष्य लिखा। तदनन्तर ऋग्वेद की शाकलसंहिता, शुक्लयजुर्वेद की काण्वसंहिता, सामवेद की कौथुमसंहिता और अथर्ववेद की शौनक संहिता पर भाष्यों की रचना की। इसके अतिरिक्त सामवेद के आठों ब्राह्मणों पर भाष्य लिखा।

इस प्रकार सायण ने पांच संहिता + 11 ब्राह्मण + दो आरण्यक पर भाष्य लिखा है।

52. एतद् नाटकद्वयं महाकवि भवभूति विचरितं नास्ति

(a) विक्रमोर्वशीयम् **(b) उत्तररामचरितम्**

(c) मृच्छकटिकम् **(d) मालतीमाधवम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B (b) A एवं C

(c) A एवं D (d) B एवं C

उत्तर-(b)

प्रस्तुत विक्रमोर्वशीयम् 'त्रोटक' कविकुलगुरु कालिदास की रचनाओं में से एक है। इसमें कवि ने यौवन की उद्याम वासना जन्य विरह में व्याकुल पुरुष को व्यथित कर देने वाले प्रेम का निरूपण किया है। वास्तव में ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण में वर्णित पुरुरवा तथा ऊर्वशी की प्रेम कथा का ही कवि ने नाटक के रूप में सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया है।

मृच्छकटिकम्– यह शूद्रक की रचना है। यह एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें 10 अङ्क है। इसमें चारूदत्त एवं वसन्त सेना, शर्विलक एवं मदनिका के प्रेम प्रसङ्ग का वर्णन सम्पूर्ण प्रकरण में दर्शाया गया है। इस प्रकरण का नायक दरिद्र चारुदत्त एवं नायिका कुलवधू धूता है। चारूदत्त के पुत्र का नाम रोहसेन है।

उत्तररामचरितम् महाकवि भवभूति विरचित सात अङ्कों का नाटक है। इसके नायक भगवान् राम एवं नायिका सीता हैं। इस नाटक में विदूषक का अभाव हैं एवं करुण रस की प्रधानता हैं।

मालतीमाधव महाकवि भवभूति विरचित दस अंकों का प्रकरण ग्रन्थ है। जिसमें विदर्भ राज के मन्त्री के पुत्र माधव तथा पद्मावती नरेश के मन्त्री की पुत्री मालती की प्रणयकथा का नाटकीय निरूपण है। इस प्रकरण में श्रृङ्गार रस की प्रधानता है।

Note– इन दोनों के अतिरिक्त वीर रस प्रधान महावीरचरितम् नाटक भी भवभूति की रचना है।

53. एते महाकविकालिदासप्रणीते महाकाव्ये स्तः-

(a) रघुवंशम् **(b) मेघदूतम्**

(c) अभिज्ञान शाकुन्तलम् **(d) कुमारसंभवम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B (b) A एवं D

(c) B एवं C (d) B एवं D

उत्तर-(b)

महाकवि कालिदास की सात रचनाएँ मुख्य रूप से संस्कृत जगत् में प्रचलित हैं। जिसमें 3- नाटक, दो महाकाव्य एवं दो खण्डकाव्य अथवा गीतिकाव्य है।

तीन नाटक– (1) मालविकाग्निमित्रम्, (2) विक्रमोर्वशीयम्, (3) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

दो महाकाव्य– (1) रघुवंशम्, (2) कुमारसंभवम्

दो खण्डकाव्य– (1) मेघदूतम्, (2) ऋतुसंहार

महाकाव्य– कुमारसंभवम्– यह महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है जिसमें कवि ने शिव-पार्वती के विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म एवं उनके द्वारा तारकासुर के वध की कथा उपन्यस्त की है। इस महाकाव्य में यद्यपि 17 सर्ग हैं किन्तु प्रथम आठ सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है। कुमारसम्भवम् के आठ सर्गों पर मल्लिनाथ ने संजीवनी नामक टीका लिखी है।
महत्त्वपूर्ण सूक्ति– (1) एको हिदोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।
(2) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।
(3) वृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं हेतुमानासम्प्रतम् ।
(4) प्रायेण गृहिणी नेत्राः कन्यार्थेषुकुटुम्बिनः।
रघुवंशमहाकाव्यम्– यह उन्नीस सर्गों का महाकाव्य हैं इसमें 1539 श्लोक हैं। इसमें सूर्यवंश के दिलीप आदि 31 राजाओं का वर्णन है। इसी वंश में राम का आविर्भाव हुआ था। दिलीप– रघु– अज– दशरथ –राम – तथा कुश का विस्तार से किन्तु अन्य राजाओं का संक्षेप से वर्णन है। अन्तिम राजा अग्निवर्ण हैं।
प्रमुख सूक्ति– (1) शैशवेऽभ्यास्तविधानां यौवने विषयैषिणाम्
(2) तथैव सोऽभूदन्वर्थो राजाप्रकृति रञ्जनात्।
(3) सञ्चारिणी दीपसिखेवरात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवराया नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभांव स, स भूमिपालः।।

54. 'अन्धं तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमः य उ सम्भूत्यां रताः।'' अत्र मन्त्रे 'असम्भूति-सम्भूति' - पदयोः अर्थौ कौ?

(A) विकृतिः	**(B) प्रकृतिः**
(C) कार्यब्रह्म	**(D) अविनाशः**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B	(b) A एवं D
(c) B एवं C	(d) C एवं D

उत्तर-(c)

प्रस्तुत मन्त्र ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखीय संहिता के 40वें अध्याय से उद्धृत है। मन्त्र-भाग का अंश होने से इसका विशेषमहत्त्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है। शुक्ल यजुर्वेद के प्रथम उनतालीस अध्यायों में कर्मकाण्ड का निरूपण हुआ है। यह उस काण्ड का अन्तिम अध्याय है और इसमें भगवत्स्वरूप ज्ञान काण्ड का निरूपण किया गया है।
प्रस्तुत मन्त्र का विवेचन निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–
अन्धतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाँ रताः।।
(ईशा. मन्त्र–9)
अर्थात्– जो मनुष्य अविद्या की उपासना करते हैं। वे अज्ञानस्वरूप घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो मनुष्य विद्या में रत हैं अर्थात् ज्ञान के मिथ्याभिमान् में मत्त हैं। वे उससे भी मानों अधिकतम अन्धकार में प्रवेश करते हैं।
अन्धं तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याँ रताः
(ईशा. मन्त्र 12)
अर्थ– जो मनुष्य विनाशशील देव पितर आदि की उपासना करते हैं। वे अज्ञान रूप घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। जो अविनाशी परमेश्वर में रत हैं। वे उनसे भी मानो अधिकतर अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

55. एतौ काव्यशास्त्रप्रणेतारौ आचायौ स्तः–

(A) वाल्मीकिः	(B) भामहः
(C) क्षेमेन्द्रः	(D) कालिदासः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B	(b) A एवं C
(c) B एवं C	(d) B एवं D

उत्तर-(c)

भामह का स्थान भरत के अनन्तर प्रथम आचार्य के रूप में समादृत है। इन्होंने काव्यालङ्कार नामक ग्रन्थ की रचना करके अलङ्कार प्रस्थान का प्रवर्तन किया था। यह ग्रन्थ शुद्ध काव्यशास्त्रीय है। (क्योंकि नाट्यशास्त्र तो मुख्यतः दृश्यकाव्य-विषयक है) काव्य का प्रथम लक्षण भामह ने ही दिया था। इन्होंने 38 अलंकारों का विवेचन किया है। उद्भट ने **भामहविवरण** नामक टीका काव्यालङ्कार पर लिखी थी।
क्षेमेन्द्र– कश्मीर निवासी क्षेमेन्द्र ने प्रायः 40 ग्रन्थों की रचना विविध साहित्य प्रकारों में की। काव्यमाला में इनके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं। काव्यशास्त्र से सम्बद्ध इनकी तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं– (1) औचित्यविचारचर्चा, (2) कविकण्ठाभरण, (3) सुवृत्ततिलक।
इनका काल प्रायः निश्चित है। बृहत्कथामञ्जरी के अनुसार इन्होंने अभिनवगुप्त से साहित्य की शिक्षा पायी थी।
भारतीय जनमानस में मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित राम की कथा का सर्वप्रथम विवरण रामायण में ही मिलता है। यह काव्य का आदि रूप है। जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। इसीलिए वाल्मीकि को आदिकवि कहा गया है।
कालिदास नाट्यकवि हैं इनकी 7 रचनाएँ हैं जिनमें तीन नाटक, दो महाकाव्य एवं दो खण्डकाव्य हैं।

56. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका–I	तालिका–II
A. भारविः	I. सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति
B. माघः	II. गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमल प्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्
C. कालिदासः	III. सहसा विदधीत न क्रियाम्
D. बाणभट्टः	IV. ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि/ नितान्तमर्थिनः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-III, B-I, C-II, D-IV
(c) A-III, B-IV, C-I, D-II
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

उत्तर-(c)

भारवि–
सहसा विदधीत् न क्रियामविवेकः परमांपदम्।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।
(किरा. 2/30)
अर्थ– किसी कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेक आपत्ति का परम पद है। विचारपूर्वक काम करने वाले को गुण की लोभी सम्पत्तियाँ स्वयं वरण करती हैं।

माघ– ''विधाय तस्यापचितिं प्रसेदुषः
प्रकाममप्रीयत यज्वनां प्रियः।
ग्रहीतुमार्यापरिचर्यया मुहुर्महानुभावा
हि नितान्तमर्थिनः।। (शिशुपा. 1/17)

अर्थ– विधिपूर्वक यज्ञ करने वालों के प्रिय प्रसन्न नारद जी की पूजा करके अत्यन्त मुदित हुए क्योंकि महात्मा लोग पूज्य व्यक्तियों को सेवा द्वारा वशीभूत करने के लिए अत्यन्त लालायित रहते हैं।
कालिदास– सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति। अहं तु तामाश्रमललाम भूतां शकुन्तलामधिकृत्यब्रवीमि। (अभि. 2 अंक राजा का कथन)
अर्थ– सभी आत्मीय जनों को सुन्दर समझते हैं। मैं तो इस आश्रम की अलंकारस्वरूप उस शकुन्तला को ही लक्ष्य में रखकर कह रहा हूँ।
बाणभट्ट– गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालन क्षममजलं स्नानम्। (शुकनासोपदेश) अर्थात् गुरु का उपदेश मनुष्यों के सम्पूर्ण मल को धोने में समर्थ जलविहीन स्नान है।

57. 'अग्निर्वै देवानां मुखम्' इति कथम्?

(a) प्रकाशन-साधनात् (b) भोजनपाचनात्
(c) वनदहनात् (d) हविर्भक्षणात्

उत्तर-(d)

''अग्निर्वै देवानां मुखम् हविभक्षणात्'' अर्थात् अग्नि समस्त जड़ देवताओं का मुख है, जो कुछ भी उत्तम पदार्थ अग्नि देवता को 'हवन' के माध्यम से समर्पित किया जाता है अग्नि देवता उसको सूक्ष्म परमाणुओं में विभक्त करके सभी देवताओं को दे देते हैं'। इसलिए वर्तमान में फैल रही गंदगियों और वातावरण को शुद्ध करने के लिए अग्निहोत्र सर्वोत्तम उपाय है।

58. 'यथा हिरण्यं शुचिधातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः' इदं वचनं कस्मिन् काव्ये विलसति?

(a) उत्तररामचरिते (b) किरातार्जुनीये
(c) बुद्धचरिते (d) मुद्राराक्षसे

उत्तर-(c)

प्रस्तुत सूक्ति महाकवि अश्वघोष विरचित बुद्धचरित के प्रथम सर्ग के 37वें श्लोक से सम्बद्ध है–
''यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।।
तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यपुत्रस्तथा ते द्विपदेषुवर्यः।। (बुद्धचरित 1/37)
जिस प्रकार धातुओं में शुद्ध स्वर्ण, पर्वत में सुमेरु, जलाशयों में समुद्र, ताराओं में चन्द्रमा तथा अग्नियों में सूर्य श्रेष्ठ है उसी प्रकार मनुष्यों में आपका पुत्र श्रेष्ठ है।
उत्तररामचरितम् महाकवि भवभूति की रचना है।
उत्तररामचरितम् की प्रमुख सूक्तियां–
(1) अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।
(2) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।
(3) वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
(4) पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करूणो रसः।
किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि की रचना है।
किरातार्जुनीयम् की प्रमुख सूक्तियां–
(1) न हि प्रियं प्रवक्तु मिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।
(2) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
(3) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।
(4) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।
(5) व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्।
मुद्राराक्षस विशाखदत्त की रचना है।
मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियां–
(1) अत्यादरः शङ्कनीयः।
(2) चीयते बालि शस्यापिसत्क्षेत्रपातिता कृषिः।
(3) नहि सर्वः सर्वं जानाति।
(4) शिरशि भरपमति दूरे तत्प्रतिकारः।
(5) पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुष गुणावज्ञानमुखी।
(6) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।

59. अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्' अत्र मन्त्रांशे आगतानां पदानामर्थं सायणमनुसृत्य मेलयत–

तालिका I		तालिका II	
A.	अहम्	I.	ईश्वरी
B.	राष्ट्री	II.	मुख्या
C.	संगमनी	III.	आम्भृणी वाक्
D.	प्रथमा	IV.	प्रापयित्री

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-IV, C-I, D-III
(c) A-III, B-I, C-IV, D-II
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

उत्तर-(c)

क्रम– **अहम्– आम्भृणी वाक्**
राष्ट्री– ईश्वरी
संगमनी– प्रापयित्री
प्रथमा– मुख्या

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद दशम् मण्डल के 125वें सूक्त वाक् सूक्त से सम्बद्ध है। इसके ऋषि– वाक्। देवता–परमात्मा। छन्द-जगती एवं त्रिष्टुप् है।

''अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवाई व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।
(वाक्सूक्तमन्त्र–3)

शब्दार्थ– जगत् की ईश्वरी, प्राप्त करने वाली (संगमनी), (वसूनां)– धनों की (चिकितुषी)– ज्ञान से सम्पन्न ब्रह्म को जानने वाली, (प्रथमा)– सबसे प्रमुख, (यज्ञियानाम्)– यजन करने योग्य व्यक्तियों में, रखा है (पुरुत्रा) विभिन्न स्थानों में अनेक रूपों में अवस्थित बहुत सी वस्तुओं को अपने अन्दर आवेशित करने वाली है।

60. सा केन सह कस्य सम्बन्धः-

तालिका–I		तालिका–II	
A.	सङ्कल्पकम्	I.	सिद्धिः
B.	नवधा	II.	मनः
C.	अष्टधा	III.	तामिस्त्रः
D.	अष्टादशधा	IV.	तुष्टिः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-III, C-II, D-IV
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-II, B-IV, C-I, D-III
(d) A-III, B-II, C-I, D-IV

उत्तर-(c)

क्रम– A– **सङ्कल्पकम्– मनः**
B– नवधा– तुष्टिः
C– अष्टधा– सिद्धिः
D– अष्टादशधा– तामिस्त्रः

आचार्य ईश्वरकृष्ण प्रणीत् सांख्यकारिका की 47वीं कारिका में प्रस्तुत कथन द्रष्टव्य है जो इस प्रकार है–

''पञ्च विपर्यय भेदा भवन्त्यशक्तिश्च करणै वैकल्यात्।
अष्टाविंशतिभेदा तुष्टिर्नवधाष्टधा सिद्धिः।। (सांख्य 47)

अनुवाद– विपर्यय (अविद्या) के पाँच भेद होते हैं। इन्द्रियों की विकलता से होने वाली अशक्ति के अट्ठाईस भेद होते हैं। तुष्टि नौ प्रकार की होती है तथा सिद्धि आठ प्रकार की होती है। इस प्रकार बुद्धि के पचास भेद होते हैं।

''भेदस्तमसोऽष्टविधो मोहान्यच दशविधो महामोहः
तामिस्रोऽष्टादशधा तथा भवत्यन्धतामिस्रः।।48।।

अनुवाद– तमस् अविद्या के आठ भेद होते हैं और मोह के भी आठ भेद होते हैं। महामोह दश प्रकार का होता है। तामिस्र अट्ठारह प्रकार का होता हैं और अन्धतामिस्र भी अट्ठारह प्रकार का होता है।

61. 'वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः'
इदं वाक्यस्वरूपं प्रतिपादितमाचार्येण अनेन–

(a) आचार्य– आनन्दवर्धनेन
(b) आचार्य– मम्मटेन
(c) आचार्य– वामनेन
(d) आचार्य– विश्वनाथेन

उत्तर-(d)

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में वाक्य का स्वरूप बताते हुए कहते हैं–
''वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः। अर्थात् योग्यता, आकांक्षा तथा आसत्ति से युक्त पद समवाय को वाक्य कहा जाता है।

योग्यता का अर्थ है– पदार्थों के पारस्परिक सम्बन्ध में बाधा का अभाव। पद समूह का इस योग्यता के अभाव में भी, वाक्यता प्राप्त करने पर वह्निना सिञ्चति अर्थात् अग्नि से सींचता है। इत्यादि भी वाक्य होगा।

आकांक्षा का अर्थ– प्रतीति का पर्यवसान (ज्ञान की समाप्ति का अभाव) वह आकांक्षा श्रोता की जिज्ञासा के रूप में होती है। यदि आकांक्षा रहित वाक्य को भी वाक्य मानें तो घोड़ा, गाय, हाथी इत्यादि भी वाक्य होने लगेंगे।

आसत्ति का अर्थ– आसत्ति का तात्पर्य बुद्धि का अविच्छेद अर्थात् अनुभव की निरन्तरता। यदि बुद्धि के विच्छेद की स्थिति में भी वाक्यता मानें तो इस समय उच्चरित किये गए 'देवदत्त' शब्द की

अगले दिन उच्चारित किये गये 'जाता है' इस पद के साथ संगति होने लगेगी। यहाँ आकांक्षा एवं योग्यता के क्रमशः आत्मा एवं अर्थ के धर्म होने पर भी उपचारतः पदसमूह का धर्म कहा गया है।

- **आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य का स्वरूप– काव्य लक्षण – काव्यस्य आत्मा ध्वनिः–** काव्य की आत्मा ध्वनि है।
- आचार्य मम्मट के अनुसार वाक्य का स्वरूप– स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्रव्यञ्जकस्त्रिधा।

62. योगदर्शनानुसारं सार्वभौमव्रतेषु कस्य गणना न भवति?

(a) अपरिग्रहस्य (b) अस्तेयस्य
(c) ईश्वरप्रणिधानस्य (d) सत्यस्य

उत्तर-(c)

महर्षिपतञ्जलि कृत योगदर्शन के अनुसार योग के आठ अङ्ग बताये गये हैं–
(1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायाम,
(5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान, (8) समाधि,
(1) यम– के पाँच भेद–
(I) अहिंसा, (II) सत्य, (III) अस्तेय, (IV) ब्रह्मचर्य, (V) अपरिग्रह
(2) नियम के पाँच भेद–
(I) शौच, (II) सन्तोष, (III) तप, (IV) स्वाध्याय, (V) ईश्वरप्रणिधान
(3) आसन– स्थिरसुरवं आसनम्
(4) प्राणायाम– तस्मिन् सति श्वासप्रश्वास योर्गतिविच्छेदः प्रणायामः।
(5) प्रत्याहार– स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुसारइवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।
(6) धारणा– देशबन्धस्चित्तस्य धारणा।
(7) ध्यान– तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।
(8) समाधि– तदेवार्थमात्रनिर्भासंस्वरूपशून्यमिव समाधिः।

63. यशोधर्मणः मन्दसौरस्तम्भलेखानुसारं यशोधर्मा कस्य देवस्य समर्चनां करोति–

(a) कृष्णस्य (b) गणेशस्य
(c) विष्णोः (d) शिवस्य

उत्तर-(d)

यशोधर्मण के मन्दसौर स्तम्भलेख के अनुसार यशोधर्मा शिव की पूजा करता था।
यशोधर्मन के मन्दसौर अभिलेख के रचनाकार वत्सभट्टि हैं। स्थान– मंदसौर, भाषा– संस्कृत,
लिपि– ब्राह्मी, काल– 532 ई.
विषय– सूर्य मन्दिर का जीर्णोद्धार, पट्टावाय श्रेणी
विष्णुवर्धन का मन्दसौर शिलालेख मध्य प्रदेश में स्थित है जो संस्कृत भाषा एवं गुप्तलिपि में है। इसका लेखन काल लगभग 532 ई. माना गया है। यह लेख 2 फुट चौड़े तथा 1.5 फुट ऊँचे एवं 2.5 इंच मोटे पत्थर पर अंकित है। यह लेख ऊँ से आरम्भ होता है; जिसके पश्चात् शिव का मंगलाचरण है।
मंदसौर प्रशस्ति यशोधर्मन् का चित्रण उत्तर भारत के चक्रवर्ती शासक के रूप में करती है मिहिरकुल की पराजय यशोधर्मन् की उपलब्धियों में से एक उपलब्धि थी।

अन्य अभिलेख–
कलिंग राज खारवेल का– हाथी गुम्फा अभिलेख।
- रूद्रदामन का– गिरनार अभिलेख।
- पुलकेशिन द्वितीय का– ऐहोल शिलालेख।

64. कथनद्वयं अधोलिखितम्-तत्र एकम् अभिकथनम् (a) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति

अभिकथनम् (a) : रामादिवत् वर्तितव्यं न रावणादिवत्
कारणम् (R) : दुश्चारित्र्यम् अपकिर्तेः कारणं भवति
उपर्युक्त– अभिकथन– कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत

(a) (a) तथा (R) उभावपि सत्यम्, (R) इति उचितं कारणमस्ति (a) इत्यस्य
(b) (a) तथा (R) उभावपि असत्यम्
(c) (a) तथा (R) उभावपि सत्यम् किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A)इत्यस्य
(d) (a) सत्यम्, (R) असत्यम्

उत्तर-(a)

आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्यदर्पण नामक ग्रन्थ के काव्य के प्रयोजन को बतलाते हुए कहते हैं–
''चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवदित्यादिकृत्याऽकृत्यप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेश द्वारेण सुप्रतीतैव।''
अर्थात्– राम आदि की भाँति आचरण करना चाहिए न कि रावण आदि की भाँति। इस प्रकार पालनीय व्यवहारों में प्रवृत्ति तथा अपालनीय व्यवहारों में निवृत्तपरक उपदेशों द्वारा अर्थ, काम, धर्म एवं मोक्षरूप चतुर्वर्ग की सिद्धि तो काव्य से होती है। यह सम्यक् अनुभूत विषय है–

''धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्य निबन्धनम् ।।

65. नियमपूर्वकविद्याध्ययने अध्यापकः किं संज्ञो भवति?

(a) अधिकरणसंज्ञः (b) अपादानसंज्ञः
(c) करणसंज्ञः (d) कर्मसंज्ञः

उत्तर-(b)

'आख्यातोपयोगे' सूत्र से नियम पूर्वक विद्याग्रहण करने में आख्याता अर्थात् वक्ता (अध्यापक, शिक्षक) आदि की अपादान संज्ञा होती है। जैसे- उपाध्यायाद् अधीते (उपाध्याय से पढ़ता है) चूंकि शिष्य गुरूजी से नियमपूर्वक विद्याग्रहण कर रहा है अतएव आख्यातोपयोगे

सूत्र के द्वारा वक्ता उपाध्याय की अपादान संज्ञा हुई तथा अपादाने पंचमी सूत्र से पञ्चमी विभक्ति का विधान होकर उपाध्यायाद् बना।
आधारोऽधिकरणम्- अधिकरण क्रिया का साक्षात् आधार न होकर कर्ता और कर्म का आधार होता है।
साधकतमं करणम्- क्रिया की सिद्धि में सर्वाधिक सहायक कारक की करण संज्ञा होती है।
कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिस पदार्थ को प्राप्त करने की सर्वाधिक इच्छा रखता है, उसकी कर्मसंज्ञा होती है।

66. 'सौत्रान्तिकमतम्', 'वैभाषिकमतम्' अनयोः सम्बन्धो वर्तते–
(a) चार्वाकदर्शनेन (b) जैनदर्शनेन
(c) न्यायदर्शनेन (d) बौद्धदर्शनेन

उत्तर-(d)

बौद्धदर्शन में सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक दो सम्प्रदाय माने गये हैं। अभिधर्मज्ञान प्रस्थान नामक ग्रन्थ की 'विभाषा' व्याख्याओं को सर्वाधिक महत्त्व देने के कारण सर्वास्तिवादी को वैभाषिक कहा जाने लगा। सूत्रपिटक के सूत्रान्तों पर विशेष आग्रह देने के कारण सौत्रान्तिक नामकरण हुआ।
वैभाषिक प्रत्यक्षवादी हैं। उनके अनुसार प्रत्यक्ष में बाह्य पदार्थों का साक्षात् ज्ञान होता है। सौत्रान्तिक बाह्यनुमेयवादी है। उनके अनुसार बाह्य पदार्थों का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता अपितु उनका अनुमान किया जाता है।
वैभाषिक 75 धर्मों को स्वीकार करते हैं। सौत्रान्तिक ने उनकी संख्या 43 तक सीमित कर दी है।
इसके अतिरिक्त भी बौद्धदर्शन के प्रमुख सिद्धान्त हैं–
(1) प्रतीत्यसमुत्पाद– यह दार्शनिक सिद्धान्त है।
(2) अनात्मवाद या नैरात्म्यवाद
(3) क्षणभङ्गवाद
चार्वाक– चार्वाक लोक में केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानते हैं। विषम तथा इन्द्रियों के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है।
जैनदर्शन– जैन दर्शन दो प्रमाण मानता है। प्रत्यक्ष तथा अनुमान।
न्यायदर्शन– (1) न्याय दर्शन 4 प्रमाण मानता है– (1)प्रत्यक्ष (2) अनुमान, (3) उपमान (4) शब्द।

67. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः सम्बन्धोऽस्ति?
(A) बभूवे **(B) नेर्विशः**
(C) समवप्रविभ्यः स्थः **(D) भावकर्मणोः**
समुचितं विकल्पं चिनुत–
(a) A एवं B (b) A एवं C
(c) A एवं D (d) B एवं C

उत्तर-(c)

भावकर्मणोः– भाव और कर्म अर्थ में लकारों का आत्मनेपद प्रत्यय होता है।
भाववाच्य और कर्मवाच्य में भी सभी धातु सदा आत्मनेपदी होंगे। जो धातु स्वतः आत्मनेपदी हैं, उनके आर्धधातुक रूपों में कर्तृवाच्य और भाववाच्य में प्रायः कोई अन्तर नहीं होता जो धातु परस्मैपदी है, उनके आर्धधातुक रूपों में प्रकृत नियम से आत्मनेपद हो जाता है। कर्तृवाच्य के रूपों से यहाँ आत्मनेपद के अतिरिक्त कोई अन्तर नहीं पड़ता है। जैसे- बभूवे– यह लिट् के प्र.पु.ए.व. का रूप है। भाववाच्य होने से लकार के स्थान में आत्मनेपद प्रत्यय हुआ।
नेर्विशः– नि उपसर्ग पूर्वक विश् धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है। विश् धातु परस्मैपदी है। नि उपसर्ग के योग में इस सूत्र से आत्मनेपद का विधान हुआ है।
समवप्रविभ्यः स्थः– सम, अव, प्र, वि, उपसर्गो से पर स्था धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है।
यथा– सतिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते, वितिष्ठते।

68. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका–I	**तालिका–II**
A. तथायुक्तंचानीप्सितम्	I. अनु हरिं सुरा
B. हीने	II. गोषु दुह्यमानासु गतः
C. कर्तृकर्मणोः कृति	III. ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति
D. यस्य च भावेन भावलक्षणम्	IV. जगतः कर्ता कृष्ण

समुचितं विकल्पं चिनुत–
(a) A-I, B-III, C-IV, D-II
(b) A-II, B-IV, C-III, D-I
(c) A-III, B-I, C-IV, D-II
(d) A-IV, B-I, C-III, D-I

उत्तर-(c)

क्रम– A –तथायुक्तंचानीप्सितम् – ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति
B– हीने – अनुहरिं सुराः
C– कर्तृकर्मणोः कृतिः – जगतः कर्ता कृष्णः
D– यस्य च भावेन भावलक्षणम्– गोषु दुह्यमानासु गतः
* **तथायुक्तंचानीप्सितम्–** जो पदार्थ कर्ता के अनीप्सित होते हुए भी ईप्सिततम पदार्थ की भाँति क्रिया से युक्त होते हैं, उनकी भी कर्मसंज्ञा होती है।
यथा– ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति–
इस वाक्य में कर्ता का ईप्सिततम पदार्थ ग्राम है। अतएव कर्तुरीप्सिततमं सूत्र से ग्राम की कर्म संज्ञा होगी तथा तिनका कर्ता का अत्यन्त अनीप्सित है किन्तु ईप्सितम् ग्राम की भाँति वह भी गमन क्रिया से सटा हुआ है। अतएव प्रकृत सूत्र से उसकी भी कर्म संज्ञा होती है और कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति का विधान होता है।

हीने– अनुशब्द से हीन अर्थ द्योतित होने पर अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।
यथा– अनुहरिंसुराः– यहाँ अनुशब्द का अर्थ हीन होने के कारण प्रकृत सूत्र से हरि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीय युक्ते द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई।
कर्तृकर्मणोः कृतिः– कृत् प्रत्ययान्त (कृदन्त के) योग में अनभिहित कर्ता और कर्म कारक में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा– जगतः कर्त्ता कृष्णः– संसार के सृष्टिकर्ता कृष्ण यहाँ कृत् प्रत्ययान्त कर्ता के योग में कर्म कारक जगत् में प्रकृत सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई।
यस्य च भावेन भावलक्षणम्– जिस एक क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित होती है उस क्रियावान् में सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे– गोषु दुह्यमानासु गतः– यहाँ गाय में रहने वाली दोहन रूप क्रिया से किसी व्यक्ति की गमन क्रिया लक्षित की जा रही है। अतः प्रकृत सूत्र से लक्षण गोषु दुह्यमानासु में सप्तमी विभक्ति हुई।

69. 'सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधामनि' अत्र स्तूयमाना देवी का?

(a) उषस् (b) भूमिः
(c) वाक् (d) सरस्वती

उत्तर-(b)

प्रस्तुत पंक्ति भूमिसूक्त से सम्बद्ध है–
''यस्या कृष्णमरूण च संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यमधि। वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधा मनि।।
अर्थात् ईश्वर नियम से जिस प्रकार दिन-रात्रि मिले हुए हैं और पृथिवी मेघमण्डल से छायी है, वैसे ही मनुष्य पृथिवी पर उत्तम बुद्धि के साथ रहकर सब स्थानों में आनन्द करें।
Note– इस सूक्त के ऋषि अथर्वा, देवता भूमिः, छन्द त्रिष्टुप्, अनुष्टुप् इत्यादि है।
उषस् सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 61वां सूक्त है। इसके ऋषि-वसिष्ठ हैं। इसमें सूक्तों की संख्या 20 हैं।
वाक्सूक्त ऋग्वेद दशम मण्डल का 125वाँ सूक्त है। इसके ऋषि - वाक् अम्भृणी एवं देवता–परमात्मा हैं।
सरस्वती विद्या की देवी एवं सारस्वत की मां हैं।

70. 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः'– इति मन्त्रांशे 'यज्ञम्' इति पदस्य भाष्यकार–सायणानुसारमर्थोऽस्ति?

(a) प्रजापतिम् (b) श्रौतयज्ञम्
(c) सद्वृत्तम् (d) हविर्यज्ञम्

उत्तर-(a)

''यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः'' इस मन्त्रांश में 'यज्ञम्' इस पद का सायणभाष्यानुसार 'प्रजापति' अर्थ है।
''यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यज्ञ पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। अर्थात् पुरातनकालीन श्रेष्ठ धर्मावलम्बी इन्द्रादि देवों ने ज्ञान-यज्ञ द्वारा यज्ञरूप विराट् का यजन किया। ये ही यज्ञीय जीवनयापन करने वाले प्राचीन काल से सिद्ध-साध्यगणों एवं देवों के निवास स्थल महिमामण्डित देवलोक को प्राप्त करते हुए प्रकाशित हो रहे है।

71. काण्वसंहितायाः भाष्यकारान् कालक्रमेण योजयत?

(a) मुरारिमिश्रः **(b) कालनाथः**
(c) आनन्दबोधः **(d) अनन्ताचार्यः**
(e) सायणः
समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, C, D, B, E (b) B, E, A, C, D
(c) C, B, A, E, D (d) D, A, B, E, C

उत्तर-(b)

क्रम– कालनाथ, सायण, मुरारिमिश्रः, आनन्दबोधः, अनन्ताचार्यः
कालनाथ– कालनाथ काण्व संहिता के प्रथम भाष्यकार है किन्तु इनका कोई भी भाष्य हमें मूल रूप में प्राप्त नहीं हो सका।
सायण– सायण ने माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य न लिखकर काण्वसंहिता पर अपना भाष्य लिखा है।
मुरारिमिश्र– मुरारि, काण्व संहिता के तृतीय भाष्यकार हैं।
आनन्दबोध– आनन्दबोध ने शुक्लयजुर्वेद की काण्व संहिता पर काण्डवेदी मंत्रभाष्यसंग्रह नामक भाष्य लिखा है किन्तु अभी तक यह प्रकाशित नहीं हो सका।
अनन्ताचार्य– अनंताचार्य काण्वशाखीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नागेशभट्ट तथा माता का नाम भागीरथी था। इन्होंने काण्वसंहिता 21-40 अध्यायों पर भावार्थ दीपिका नामक टीका लिखी है। इनका समय 18वीं शताब्दी माना जाता है।

72. कौटिलीयार्थशास्त्रानुसारं के राजनमुत्तिष्ठमानमनूत्तिष्ठन्ते?

(a) पौरजनाः (b) भृत्याः
(c) शत्रवः (d) शिष्याः

उत्तर-(b)

आचार्य कौटिल्य ने 'राजप्रणिधिः' नामक प्रकरण में राजा के कार्य-व्यापार का वर्णन करते हुए कहते हैं– कि
''राजानम् उत्तिष्ठमानमनूत्तिष्ठन्ते भृत्याः'' राजा के उन्नतिशील होने पर ही उसका सारा भृव्यवर्ग उन्नतिशील होता है।
''प्रमाघन्तमनुप्रमाद्यन्ति'' राजा के प्रमादी होने पर सारा भृत्यवर्ग प्रमाद करने लगता है।
- राजा को चाहिए कि वह स्वयं रक्षा-सम्बन्धी कार्यों का निरीक्षण करे तथा बीते हुए दिन के आय-व्यय की जांच करे–
''पूर्वे दिवसस्याष्टभागे रक्षाविधानमायव्ययौ च शृणुयात् ।।

73. केन सह कस्य सम्बन्धः

तालिका–I		तालिका–II	
A.	आगमग्रन्थाः	I.	आचार्यशङ्करः
B.	त्रिपिटकसाहित्यम्	II.	जैनदर्शनम्
C.	न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	III.	बौद्धसाहित्यम्
D.	निर्विशेषाद्वैतवादः	IV.	विश्वनाथपञ्चाननः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-II, B-III, C-IV, D-I
(c) A-III, B-I, C-II, D-IV
(d) A-III, B-I, C-II, D-IV

उत्तर-(b)

क्रम– A. आगमग्रन्थाः – जैनदर्शनम्
B. त्रिपिटिकसाहित्यम्– बौद्ध साहित्यम्
C. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली– विश्वनाथपञ्चाननः
D. निर्विशेषाद्वैतवादः– आचार्यशङ्करः

आगमग्रन्थाः– आगम शब्द का प्रयोग जैन धर्म के मूल ग्रन्थों के लिये किया जाता है। केवल ज्ञान, मनः पर्यायज्ञानी, अवधिज्ञानी, चतुर्दशपूर्व के धारक तथा दशपूर्व के धारक मुनियों को आगम कहा जाता है।

आगम शब्द का प्रयोग जैन दर्शन में साहित्य के लिए किया जाता है। श्रुत, सूत्र, सुतं, ग्रन्थ, सिद्धान्त, देशना प्रज्ञापना, उपदेश, आप्तवचन, जिनवचन, ऐतिह्य, आम्नाय आदि सभी आगम के पर्यायवाची शब्द हैं।

प्रवाचक आर्य रक्षित में शिष्यों की सुविधा के लिए विषय के आधार पर आगमों को चार भागों में वर्गीकृत किया–

(1) चरणकरणानुयोग (2) द्रव्यानुयोग
(3) गणितानुयोग (4) धर्मकथानुयोग

त्रिपिटक साहित्य– त्रिपिटक (पालि त्रिपिटक, शाब्दिक अर्थ तीन पिटारी) बौद्ध धर्म का प्रमुख ग्रन्थ है जिसे सभी बौद्ध सम्प्रदाय (महायान, थेरवाद, वज्रयान, मूलसर्वास्तिवाद आदि) मानते हैं। यह बौद्ध धर्म के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। जिसमें भगवान बुद्ध के उपदेश संगृहीत है। यह ग्रंथ पालि भाषा में लिखा गया है और विभिन्न भाषाओं में अनुवादित है।

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली– न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के लेखक विश्वनाथपञ्चानन है।

निर्विशेषाद्वैतवादः– आदि शङ्कराचार्य ने अद्वैत वेदान्त दर्शन को ठोस आधार प्रदान किया। वेदान्त का अर्थ वेदों का अन्तिम भाग होता है। महर्षि व्यास द्वारा रचित– ब्रह्मसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रन्थ है। इस दर्शन को उत्तर मीमांसा भी कहते हैं।

74. अशोकस्य शाहबाजगढ़ी– शिलालेखस्य लिपिरस्ति–

(a) खरोष्ठी (b) देवनागरी
(c) ब्राह्मी (d) शारदा

उत्तर-(a)

शाहबाजगढ़ी मौर्य सम्राट् अशोक से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। यह पाकिस्तान के उत्तरी भाग में खैबर– पख्तूनख्वा प्रान्त के मरदान जिले में स्थित एक पुरातत्त्व-स्थल है। यहाँ तीसरी शताब्दी ई.पू. काल के मौर्य राजवंश के सम्राट अशोक के शिला पर अभिलेख का सबसे प्राचीन उदाहरण मिलता है। जो खरोष्ठी लिपि में है।

शाहबाजगढ़ी अभिलेख मौर्य सम्राट अशोक ने समाज और जीव हिंसा का निषेध किया है। किन्तु यह निषेध प्रत्यक्ष रूप से न करके उसने अपनी पाकशाला में की जाने वाली जीवहिंसा के निषेध के रूप मे व्यक्त किया है।

देवनागरी लिपि– वर्तमान देवनागरी लिपि प्राचीन नागरी लिपि के पश्चिमी रूप में विकसित हुई है। इसका प्रारम्भ 1000 से 1200 ई. में हुआ है।

ब्राह्मी– ईसा पूर्व 350 से लेकर 300 ई. तक प्रयुक्त लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि रहा। इसके पश्चात् इसकी दो श्रेणियां विकसित हुई– (1) उत्तरी (2) दक्षिणी। उत्तरी के पाँच भेद– गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, प्राचीन नागरी लिपि, शारदा लिपि, बंगला लिपि।

शारदा– शारदा लिपि का प्रचार पश्चिमोत्तर भारत के कश्मीर और पंजाब में हुआ। 8वीं शती ई. तक वहाँ कुटिल लिपि थी। उसी से शारदा लिपि निकली। शारदा का सबसे प्राचीन लेख 10वीं शती का माना जाता है।

75. अधोऽङ्कितेषु भाषाविज्ञानानुसारम् अर्धस्वर स्तः–

(a) अ (b) य्
(c) इ (d) व्

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं C (b) A एवं D
(c) B एवं D (d) C एवं D

उत्तर-(c)

संस्कृत में अर्धस्वरों को अन्तःस्थ कहते हैं। य् और व् की स्थिति स्वर और व्यंजन के बीच की है। इनके उच्चारण में मुख द्वारा व्यंजनों के तुल्य न पूर्णतया बन्द होता है और न स्वरों के तुल्य खुला ही रहता है। भाषा विज्ञान के अनुसार अर्धस्वर– य् अथवा व् वर्ण आते हैं।

(1) य्– इसके उच्चारण में जिह्वाग्र कठोर– तालु की ओर उठता है और दोनों ओष्ठ फैले रहते हैं। इसके उच्चारण में जिह्वाग्र कठोर तालु को चवर्गीय स्पर्शों के तुल्य न पूरा छूता है और न तालव्य स्वरों के तुल्य दूर ही रहता है। इसको घोष तालव्य अर्धस्वर कहते हैं।

जैसे – यान , यंत्र, यातायान, यात्रा, युक्ति आदि।
(2) व्– इसके उच्चारण में जिह्वा पश्च उ के उच्चारण के तुल्य ऊपर उठता है और दोनों ओष्ठ गोलाकार होकर कुछ आगे की ओर निकलते हैं नासाद्वार बंद रहता है। स्वरतंत्री में कंपन होता है। इसको घोष-कण्ठोष्ठ्-अर्धस्वर कहते हैं। यह ध्वनि प्रायः सभी भाषाओं में मिलती है। संस्कृत और हिन्दी में यह दन्त्योष्ठ्य है। जैसे– वेद, विद्या, विविध विज्ञान आदि।
अ वर्ण– अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः- अ वर्ण का उच्चारण स्थान कण्ठ है।
इ वर्ण– इचुयशानां तालु - इ वर्ण का उच्चारण स्थान तालु है।

76. अधोऽङ्कितेषु नागेशभट्टस्य ग्रन्थो नास्ति-
(a) प्रदीपोद्योतः (b) बृहत्शब्देन्दुशेखरः
(c) माधवीयधातुवृत्तिः (d) लघुशब्देन्दुशेखरः

उत्तर-(c)

नागेशभट्ट का दूसरा नाम नागोनी भट्ट भी है। पतंजलि और भर्तृहरि के पश्चात् भाषाशास्त्रीय मौलिक चिन्तकों में नागेशभट्ट का नाम आता है। ये व्याकरण, साहित्य, अलंकार, दर्शन आदि विषयों के प्रकाण्ड विद्वान थे।
* नागेश भट्ट ने व्याकरण पर एक दर्जन से अधिक ग्रन्थ लिखे हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ ये हैं–
(1) उद्योत (महाभाष्य पर कैयट की प्रदीप टीका की टीका)।
(2) लघुशब्देन्दुशेखर (प्रौढ़मनोरमा की व्याख्या)।
(3) वृहत्शब्देन्दु शेखर (प्रौढ़मनोरमा की विस्तृत व्याख्या)।
(4) परिभाषेन्दुशेखर
(5) मंजूषा
(6) लघुमंजूषा
(7) परमलघुमंजूषा
(8) स्फोटवाद

77. योगदर्शनानुसारमधोऽङ्कितेषु वृत्तिर्वर्तते-
(a) अहिंसा (b) निद्रा
(c) ब्रह्मचर्यम् (d) हिंसा

उत्तर-(b)

पातञ्जलयोगदर्शन के अनुसार योग के आठ अङ्ग– (1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायाम, (5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान, (8) समाधि,
(1) यम के पाँच भेद–
(1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) अस्तेय, (4) ब्रह्मचर्य, (5) अपरिग्रह
योग दर्शन के अनुसार वृत्तियाँ पाँच हैं–
(1) प्रमाण– प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि
(2) विपर्यय– विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्
(3) विकल्प– शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः
(4) निद्रा– अभावप्रत्ययालम्वना वृत्तिनिद्रा
(5) स्मृति– अनुभूतविषया-सम्प्रमोषः स्मृतिः।

78. सदानन्दप्रणीते वेदान्तसारे 'तत्त्वमसि' अत्र अखण्डार्थ-बोधकेषु त्रिषु संबन्धेषु अयं नास्ति
(a) अयुतसिद्धसम्बन्धः
(b) पदयोः सामानाधिकरणण्यम्
(c) पदार्थयोर्विशेषणविशेष्यभावः
(d) प्रत्यगात्मपदार्थयोर्लक्ष्यलक्षणभावः

उत्तर-(a)

'तत्वमसि' का संबंध अयुतसिद्धसंबंध नहीं है। आचार्य सदानन्दप्रणीत् वेदान्तसार के अनुसार 'तत्त्वमसि' वाक्य तीन सम्बन्धों द्वारा अखण्ड अर्थ का बोधक होता है। तीन सम्बन्ध हैं–
(1) पदयोः सामानाधिकरणयं
(2) पदार्थयोविशेषणविशेष्यभावः
(3) प्रत्यगात्मपदार्थयोर्लक्ष्यलक्षणभावश्चेति
अर्थात्–
(1) दोनों (तत् और त्वम्) पदों का सामानाधिकरण्य
(2) दोनों पदों के वाच्यार्थ में विशेषण विशेष्य भाव
(3) तथा प्रत्यगात्मा और दोनों पदों के वाच्यार्थ में लक्ष्यलक्षण भाव।
ऐसा ही सुरेश्वराचार्य के द्वारा भी कहा गया है–
''समानाधिकरण्यं च विशेषणविशेष्यता।
लक्ष्यलक्षणसम्बन्धः पदार्थ प्रत्यगात्मनाम्।।
अयुतसिद्धसम्बन्ध–
''ययोर्मध्ये एकम् विनश्यदयराश्रितमेवावतिष्ठतेतावयुतसिद्धौ।'' अर्थात् जिन दो पदार्थों में एक अविनश्यदवस्था में एक दूसरे पर आश्रित रहता है वे दोनों ही परस्पर अयुतसिद्ध कहलाते हैं।

79. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका–I	तालिका–II
A. ऋग्वेद	I. आदित्यः
B. यजुर्वेदः	II. अङ्गिराः
C. सामवेदः	III. अग्निः
D. अथर्ववेदः	IV. वायुः

समुचितं विकल्पं चिनुत–
(a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-III, B-IV, C-I, D-II
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

उत्तर-(c)

क्रम– **ऋग्वेद– अग्नि**
यजुर्वेद– वायु
सामवेद– आदित्य
अथर्ववेद– अङ्गिरा
ऋग्वेद के देवता अग्नि हैं। ऋग्वेद के प्रारम्भ सूक्त अग्निसूक्त (1.1.1) से हमें ज्ञात होता है कि इसके देवता अग्नि ही है।

- **यजुर्वेद–** इस संहिता के मुख्य देवता वायु है। तथा आचार्य वेदव्यास के शिष्य वैशम्पायन हैं। ब्रह्म सम्प्रदाय और आदित्य सम्प्रदाय के भेद से यजुर्वेद के मुख्यतः दो विभाग हैं। जिन्हें क्रमशः कृष्णयजुर्वेद एवं शुक्लयजुर्वेद कहा जाता है।
- सामवेद के देवता सूर्य (आदित्य) हैं तथा आचार्य जैमिनि हैं। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने सहस्त्रवर्मा सामवेदः के द्वारा सामवेद की सहस्त्र शाखाओं की सत्ता स्वीकार किया है किन्तु इस समय कौथुमीय, राणायनीय, तथा जैमिनीय नामक तीन शाखाएँ ही उपलब्ध हैं।

अथर्ववेद संहिता को – ब्रह्मवेद, शिवग्वेद, ऋग्वगिरावेद अङ्गिरावेद, अथर्वागिरोवेद के नाम से जाना जाता है। इस वेद के देवता– सोम तथा आचार्य सुमन्तु हैं।

80. शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डस्य विषयौ कौ?

(a) अग्निहोत्रम् **(b) सोमयागः**
(c) राजसूयः **(d) पिण्डपितृयज्ञः**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) C एवं D

उत्तर-(b)

शतपथ ब्राह्मण-शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध ब्राह्मण है। इसमें सौ अध्याय होने के कारण इसका नाम शतपथ पड़ा है। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं– (1) काण्व, (2) माध्यन्दिन इन दोनों के ब्राह्मणों का नाम 'शतपथ' है।

शतपथ ब्राह्मण के प्रथम काण्ठ में– दर्शपूर्णमास इष्टियों का वर्णन है।

द्वितीय काण्ड में– (1) अग्निहोत्र (2) पिण्डपितृयज्ञ (3) आग्रायण (4) चातुर्मास्य का वर्णन है।

तृतीय काण्ड में– प्रकृति याग
चतुर्थकाण्ड में– विकृतियाग
पञ्चम काण्ड में– राजसूय और सोमयाग
षष्ठ से दश तक– अग्निचयन
एकादश काण्ड– दर्शपूर्णमास
द्वादश काण्ड– सौत्रामणि
त्रयोदश काण्ड– अश्वमेध, सर्वमेध इत्यादि
चतुर्दशकाण्ड– प्रवर्ग्य का वर्णन है।

सोमयाग– सोमयाग सात प्रकार का होता है। (1) अग्निष्टोम (2) अत्यग्निष्टोम (3) उक्थ (4) षोडशी (5) वाजपेय (6) अतिरात्र (7) आप्तोर्याम

राजसूय याग– राजसूय यज्ञ युद्ध की पूर्णाहुति के लिए किया जाता है।

81. पाणिनीय शिक्षानुसारम् अधमपाठकस्यद दोषोऽस्ति

(a) गीती (b) धैर्यम्
(c) माधुर्यम् (d) सुस्वर

उत्तर-(a)

महर्षि पाणिनि विरचित पाणिनीय शिक्षा में 6 प्रकार के अधमपाठक बताए गए हैं–

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।32।।

अर्थात् गानपूर्वक, शीघ्रता से शिर को हिलाते हुए, जो जैसा लिखा हो उसी रूप में अथवा अपने हाथ से लिखित स्रोत का पाठ करने वाला अर्थ को समझे बिना और अत्यन्त सङ्कुचित अर्थात् शिथिल कण्ठ से पाठ करने वाला ये छः प्रकार के पाठक अधम होते हैं। इसके अतिरिक्त उत्तम पाठक के 6 गुण बताये गये हैं–

माधुर्यमक्षरव्यक्ति पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्य लय समर्थं च षडेते पाठकागुणाः।।33।।

82. कौटिलीयमते लुब्धवर्गस्य के द्वे लक्षणे–

(a) मानकामः **(b) आमसंभावितः**
(c) व्यसनी **(d) अत्याहितव्यवहारः**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A एवं B (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) C एवं D

उत्तर-(d)

कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार 'परविषये कृत्याकृत्य-पक्षोपगृह' अध्याय के अन्तर्गत लुब्धवर्ग के विषय में बतलाया है। कुल चार भेद हैं– (1) लुब्ध वर्ग (2) मानी वर्ग (3) क्रुद्ध वर्ग (4) भीत वर्ग

(1) लुब्ध वर्ग- परीक्षीणोऽत्यात्तस्वः कदर्यो व्यसन्यत्याहिव्यवहार श्चेति। लुब्धवर्गः अर्थात् जिसका समस्त धन-वैभव नष्ट हो गया है, जो कायर, व्यसनी और अपव्ययी हो, वह 'लुब्धवर्ग' कहलाता है।

(2) मानी वर्ग- आत्मसम्भावितो मानकामः शत्रुपूजामर्षितो नीचैरूपहितस्तीक्ष्णः साहसिको भोगेनासन्तुष्ट इति मानिवर्गः। अर्थात् अपने को महान समझने वाला, आत्मश्लाघी, शत्रु के सम्मान को सहन न करने वाला, नीच लोगों के द्वारा प्रशंसित तीक्ष्णप्रकृति, साहसी तथा भोग्य-पदार्थों से कभी सन्तुष्ट न होने वाला वर्ग ही 'मानीवर्ग' कहलाता है।

(3) क्रुद्धवर्ग- शक्यमस्य प्रतिहस्तिप्रोत्साहमेनापकर्तुम् अमर्षः क्रियताम् इति क्रुद्धवर्गमुपजाययेत्।

(4) भीतवर्ग- यथा लीनः सर्पो यस्माद् भयं पश्यति तत्र विषमुत्सृजत्येवमयं राजा जातदोषाश शङ्कस्त्वयि पुरा क्रोधविषमुत्सृजति। अन्यत्र गम्यताम इति भीतवर्गमुपजापयेत्।

83. संयोगानन्तरं पञ्चसन्निकर्षणामयं क्रमः तर्कभाषायामुपलभ्यते-

(a) समवेतसमवायः **(b) विशेषणविशेष्यभाव**
(c) संयुक्तसमवेत समवायः **(d) समवायः**
(e) संयुक्त समवायः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A, C, B, E, D (b) C, A, B, D, E
(c) E, C, A, B, D (d) E, C, D, A, B

उत्तर-(d)

क्रम– संयुक्त समवायः, संयुक्त समवेतसमवाय
समवाय, समवेत समवाय, विशेषण विशेष्यभाव

तर्कभाषा के अनुसार षोढ़ा सन्निकर्ष–

(1) संयोग– तत्र यदा चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः। अनयोः सन्निकर्षः संयोग एव।

(2) संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष– यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं घटरूपमर्थः, अनयोः सन्निकर्षः संयुक्त समवाय एव।

(3) संयुक्त समवेतसमवाय सन्निकर्ष– यदा पुनश्चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिसामान्यं गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रियं रूपत्वादिसामान्यमथः अनयो सन्निकर्षः संयुक्तसमवेतसमवाय एव। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं तत्र रूपत्वस्य समवायात्।

(4) समवायसन्निकर्ष यदा श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दो गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं, शब्दोऽर्थः अनयोः सन्निकर्षः समवाय एव। कर्णशष्कुल्यवच्छिन्नं नभः श्रोत्रम् श्रोत्रस्याकाशात्मकत्वाच्छब्दस्य चाकाशगुणत्वाद गुणगुणिनोश्च समवायात्।

(5) समवेतसमवाय सन्निकर्ष– यदा पुनः शब्दसमवेतं शब्दत्वादिकं सामान्यं श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते तदा श्रोत्रमिन्द्रियं शब्दत्वादिसामान्यमर्थः। अनयोः सन्निकर्षः समवेतसमवाय एव श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वरय समवायात्

(6) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष– यदा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते 'इह भूतले घटोनास्ति, इति तदा विशेषणविशेष्यभावः सम्बन्धः।

84. अधोऽङ्कितान् वैय्याकरणान् कालक्रमेण प्रदर्शयत्–

(a) कात्यायनः **(b) नागेशभट्टः**
(c) कैय्यटः **(d) पाणिनिः**
(e) भर्तृहरिः

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) D, A, B, C, E (b) D, A, E, B, C
(c) D, E, B, C, A (d) D, E, C, B, A

उत्तर-(b)

क्रम– पाणिनिः, कात्यायनः, भर्तृहरिः, नागेशभट्टः, कैय्यटः

आचार्य पाणिनि– विश्व के सबसे बड़े वैय्याकरण हैं। इनका समय 450 ई.पू. से 400ई.पू. के मध्य है। पुष्ट प्रमाणों के कारण यह मत सर्वाधिक मान्य है।

पाणिनि की रचनाएँ–

(1) अष्टाध्यायी , (2) धातुपाठ, (3) गणपाठ, (4) उणादिसूत्र, (5) लिङ्गानुशासन, (6) जाम्बवतीविजय, (7) पातालविजय

- **कात्यायन–** पाणिनि के परवर्ती वैय्याकरणों में कात्यायन का स्थान प्रथम है। कात्यायन ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक की रचना की है।
  कात्यायन का समय– 350 ई.पू. के लगभग माना जाता है।
  भर्तृहरि– महाभाष्य के व्याख्याकारों में भर्तृहरि का नाम सर्वोत्कृष्ट है। इन्होंने महाभाष्य की महाभाष्य दीपिका नाम से टीका लिखा है। इनका जीवन चरित अप्राप्त है। इनके गुरु का नाम वसुरात था। ये विक्रमादित्य के भाई माने जाते हैं। इनका समय–340 ई. के लगभग माना जाता है।
  भर्तृहरि का दूसरा ग्रन्थ– वाक्यपदीय है। इसमें तीन काण्ड है– (1) ब्रह्मकाण्ड, (2) वाक्यकाण्ड, (3) पदकाण्ड
  नागेश भट्ट– इनका दूसरा नाम नागोज्जिभट्ट भी है।
  इनका समय– 1730-1810 ई. के मध्य माना जाता है। इनकी रचनाएँ–
  (1) उद्योत, (2) लघुशब्देन्दुशेखर, (3) वृहत्शब्देन्दुशेखर, (4) परिभाषेन्दुशेखर, (5) मंजूषा, (6) लघुमंजूषा
- **कैय्यट–** कैय्यट ने महाभाष्य की प्रदीप नाम से टीका की है। इसमें इन्होंने महाभाष्य के कठिन स्थलों का विद्वतापूर्ण स्पष्टीकरण किया है। कैय्यट के पिता का नाम जैय्यट था। ये कश्मीरी पण्डित थे। इनका समय 1035 ई. के लगभग है।

85. सांख्यकारिकायां द्विविधः सर्गः (भौतिको बौद्धिकश्च) एतन्नामाख्यो वर्तते–

(a) तन्मात्राख्यः **(b) लिङ्गाख्यः**
(c) सत्त्वरजस्-तमसाख्यः **(d) भावाख्यः**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(A) A एवं B (B) A एवं C
(C) B एवं D (D) C एवं D

उत्तर-(c)

आचार्य ईश्वरकृष्णप्रणीत् साङ्ख्यकारिका के 52वीं कारिका में द्विविध सर्ग का वर्णन किया गया है–

''न विना भावैर्लिङ्ग न विना लिङ्गेन भावनिर्वृत्तिः।
लिङ्गारुयो भावाख्यस्तस्माद् द्विविधः प्रवर्त्तते सर्गः।।52।।

अर्थात् भावों (प्रत्यय सर्ग) के बिना लिङ्ग (तन्मात्रसर्ग) की उत्पत्ति नहीं हो सकती, इसी प्रकार लिङ्ग (तन्मात्रसर्ग) के बिना भावों (प्रत्ययसर्ग) की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। इसलिए एक के बिना दूसरे का स्वरूप लाभ असम्भव होने से भाव नाम वाला प्रत्ययसर्ग और लिङ्ग नामवाला तन्मात्रसर्ग– यह दोनों प्रकार का सर्ग प्रवृत्त हो रहा है।

- सत्त्व, रजस्, तमस् सांख्य के अनुसार गुण के त्रिविध भेद बताए गये हैं।

86. ब्राह्मणग्रन्थेषु वर्णनं नोपलभ्यते?

(a) आत्मनः (b) त्रयाणां लोकानाम्
(c) पुनर्जन्मनः (d) परमाण्वस्त्रस्य

उत्तर-(d)

ब्राह्मणग्रन्थों में परमाणु वस्त्र का वर्णन नहीं है।
वैदिक संहिता के उपरान्त ब्राह्मण ग्रन्थों का स्थान है।

- ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ को समस्त देवताओं की आत्मा कहा गया है- ''यज्ञो वैश्रेष्ठतमं कर्म''
- कर्मों के अनुसार आत्मा का पुनर्जन्म होता है, ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसा उल्लिखित है।
- स्वर्ग एवं नरक सम्बन्धी वर्णन साथ ही समस्त आश्रमों की व्यवस्था एवं तीनों लोको वर्णन आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में है।

87. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका–I	**तालिका–II**
A. शैव	I. अग्निपुराणम्
B. वैष्णव	II. पद्मपुराणम्
C. ब्रह्म	III. मार्कण्डेयपुराणम्
D. आग्नेय	IV. गरुड़पुराणम्

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(a) A-I, B-III, C-II, D-IV (b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A-III, B-IV, C-II, D-I (d) A-IV, B-II, C-I, D-III

उत्तर-(c)

क्रम– A– **शैव– मार्कण्डेय पुराण**
B– वैष्णव– गरुड़ पुराण
C– ब्रह्म– पद्म पुराण
D– आग्नेय– अग्निपुराण

पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है– महापुराण तथा उपपुराण, महापुराण प्राचीनतर है जिनकी संख्या 18 है–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

उपपुराण भी संख्या में 18 हैं– सनत्कुमार, नारसिंह, स्कान्द, शिवधर्म, आश्चर्य, नारदीय, कपिल, औशनस, वारुण, कल्कि, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, सौर, पराशर, मारीच, भार्गव तथा नन्द।

- **मार्कण्डेय पुराण–** यह प्राचीनतम पुराणों में अन्यतम है। क्योंकि इसके कुछ भागों में शिव, इन्द्र, अग्नि सूर्य इत्यादि देवताओं का वर्णन किया गया है। इस पुराण में 138 अध्याय तथा सात सहस्त्र श्लोक मिलते हैं।
- **गरुड़ पुराण–** यह एक वैष्णव पुराण है। इस पुराण को स्वयं विष्णु ने गरुड के समक्ष सुनाया था। गरुड ने काश्यप के समक्ष इसका प्रवचन किया। इसमें क्रमशः 35 अध्याय तथा 18 सहस्र श्लोक हैं।
- **पद्म पुराण–** यह विशाल पुराण 641 अध्यायों तथा 55 हजार श्लोकों में विभक्त है। इसमें पाँच खण्ड हैं–

(1) सृष्टि खण्ड (2) भूमि खण्ड
(3) स्वर्ग खण्ड (4) पाताल खण्ड
(5) उत्तरखण्ड

Note– सृष्टिखण्ड में कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति और उनसे पूरे ब्रह्माण्ड की रचना का वर्णन है।

- **अग्निपुराण–** अग्नि के द्वारा वसिष्ठ को उपदेश दिये जाने के कारण इसे अग्नि पुराण कहा गया है। इसी पुराण में पुराणों के लक्षण– भूगोल, गणित, फलित, ज्योतिष, शकुनविद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्य, व्याकरण आदि पर प्रकाश डाला गया है।

88. वेदान्तसारे चतुर्विधस्थूलशरीरेषु द्वे इमे स्तः

(a) कायजम् **(b) जरायुजम्**
(c) अण्डजम् **(d) तोयजम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत–

(A) A एवं C (B) A एवं D
(C) B एवं C (D) B एवं D

उत्तर-(c)

वेदान्तसार के अनुसार पञ्चीकृत भूतों से क्रमशः ऊपर-ऊपर विद्यमान भूः भुवः स्वः महः, जनः, तपः और सत्यम्– इन नामों वाले ऊपर के लोग तथा क्रमशः नीचे-नीचे विद्यमान अतल-वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल– इन नामों वाले (नीचे के) लोक समस्त ब्रह्माण्ड उसके भीतर रहने वाले चतुर्विध स्थूल शरीर और उनके योग्य भोजन-पान उत्पन्न होते हैं।

4 प्रकार के स्थूल शरीर निम्न हैं–

(1) **जरायुज–** जरायुजानि जरायुभ्यो जातानि मनुष्यपश्वादीनि।
(2) **अण्डज–** अण्डजान्यण्डेभ्यो जातानि पक्षियन्नगादीनि।
(3) **उद्भिज–** उद्भिज्जानि भूमिमुद्भिद्य जातानिकक्षवृक्षादीनि।
(4) **स्वेदज–** स्वेदजानि स्वेदेभ्यो जातानि यूकामशकादीनि।

89. सरविलियमजोन्समहोदय : ब्राह्मीलिपिरुत्पत्तिः मन्यते–

(a) फिनिशिअनतः सेबूअन् लिपितः
(b) फिनिशिअनलिपेः अरमाइक
(c) फिनिशिअनलिपितः मिसराक्षरेभ्यः वा
(d) सेमेटिकलिपितः

उत्तर-(d)

ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति– सेमेटिक (सामी) भाषाओं से हुई है। इस मत के समर्थक–ब्यूलर , विलियम जोन्स, वेबर, टेलर आदि हैं। डॉ. डेविड डिरिंजर ने भी 'द' अल्फावेट पुस्तक में ब्यूलर का समर्थन किया है। डिरिंजर ने अपने समर्थन में 4 तर्क दिये हैं–(1) सामी और ब्राह्मी लिपियों में साम्य है।
(2) सिन्धुघाटी लिपि चित्रात्मक लिपि है।
(3) ब्राह्मी लिपि पहले दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
(4) भारत में 5वीं शती ई.पू. से पहले के लेख नहीं मिलते।
ब्राह्मी लिपि में उल्लेखनीय अभिलेख - मथुरा, कुषाण, रुद्रदामन, सातकर्णि, नासिक, पुलुमावी आदि हैं।

90. ''यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः'' इति केनोपदिष्टम्?

(a) चंद्रापीडेन (b) तारापीडेन
(c) महाश्वेतया (d) शुकनासेन

उत्तर-(d)

शुकनासोपदेश कादम्बरी के पूर्वार्ध से संगृहीत एक प्रकरणमात्र है। इसमें चन्द्रापीड के पिता तारापीड के मन्त्री शुकनास ने चन्द्रापीड के यौवराज्याभिषेक के समय उसको विविध प्रकार के उपदेश देते हुए विद्वान, पराक्रमी, कुलीन, धैर्यशील और उद्यमी पुरुष को भी दुर्जन बना देने वाली लक्ष्मी से सदा सावधान रहने के लिए विशेष रूप से समझाया है।

यौवनारम्भे .... बुद्धिः
अर्थात् युवावस्था के आरम्भ में बुद्धि शास्त्ररूपी जल से धुलकर निर्मल होने पर भी प्रायः कलुषित हो जाती है।

- **चन्द्रापीड–** चन्द्रापीड, तारापीड एवं विलासवती का पुत्र था।
- **तारापीड–** चन्द्रापीड के पिता का नाम तारापीड था।
- **महाश्वेता–** राजा शूद्रक के दरबार में शुक तोते को लेकर महाश्वेता ही आती है।

प्रश्न संख्या (91-95) : अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानामुत्तरं देयम्-

षट्सु वेदाङ्गेषु शिक्षा हि प्रथमम्। वर्णानां यथातथम् उच्चारणं शिक्षितुमावश्यकमेतदङ्गम्। येन स्वजनः श्वजनो मा भूत्। नैके दोषा वर्णोच्चारणे दृश्यन्ते। अतः 'शब्दो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्' इत्याहुराचार्याः। उपलब्धानां शिक्षाग्रन्थानां संख्या शताधिका वर्तते, तेषु 40 ग्रन्थास्तु प्रायः प्रकाशिता एव। आपिशलशिक्षा सर्वप्रथमं लाहौरतः प्रकाशिता। पाणिनीय शिक्षाया श्लोकात्मकं; सूत्रात्मकं चेति पाठद्वयमुपलभ्यते। सूत्रात्मकपाठस्तु 'वर्णोच्चारणशिक्षा' इति नाम्ना प्रकाशिता। पाणिनीयशिक्षाया लघुपाठो बृहत्पाठोऽपि लभ्यते। बौद्ध वैयाकरणस्य चन्द्रगोमिनः चान्द्रशिक्षाऽपि सुतरां प्रतिष्ठिता।

अनुवाद– छहों वेदाङ्गों में शिक्षा प्रथम (वेदाङ्ग) है। यह वेदाङ्ग वर्गों के शुद्ध उच्चारण के लिए आवश्यक है जिसमें स्वजन (आत्मीयजन) श्वजन (कुत्ता) न हो जाये।
वर्णोच्चारण में अनेक दोष दिखाई पड़ते हैं।

अतः आचार्य कहते हैं– शब्दोहीनः .... स्वरतोऽपराधात् अर्थात् स्वर उदात्तादि या वर्ण अंकारादि से हीन मिथ्याप्रयुक्त शब्द उस अर्थ को नहीं कहता है, वह (मिथ्याप्रयुक्त) शब्द वाणी रूपी वज्र (बनकर) उस यजमान को उसी तरह मार डालता है, जिस प्रकार 'इन्द्रशत्रु'' इस शब्द ने स्वर के अपराध से वृत्तासुर को मार डाला। उपलब्ध शिक्षा ग्रन्थों की संख्या सौ से अधिक है, उनमें से 40ग्रन्थ प्रायः प्रकाशित हैं। आपिशल शिक्षा सर्वप्रथम लाहौर से प्रकाशित हुई। पाणिनीय शिक्षा का श्लोकात्मक तथा सूत्रात्मक बृहत्पाठ उपलब्ध होता है। बौद्ध वैय्याकरण चन्द्रगोमिन की चान्द्रशिक्षा भी अत्यधिक प्रसिद्ध है।

91. कस्याः शिक्षायाः लघुपाठो बृहत्पाठश्च विद्यते–

(a) आपिशलि शिक्षायाः (b) चान्द्रशिक्षायाः
(c) पाणिनीयशिक्षायाः (d) वर्णोच्चारणशिक्षायाः

उत्तर-(c)

पाणिनीय शिक्षाया लघुपाठो बृहत्पाठोऽपि लभ्यते।
आपिशलशिक्षा सर्वप्रथमं लाहौरतः प्रकाशिता
बौद्ध वैयाकरणस्य चन्द्रगोमिनः चान्द्रशिक्षाऽपि सुतरां प्रतिष्ठिता।
पाणिनीय शिक्षाया श्लोकात्मकं सूत्रात्मकं चेति पाठद्वयमुपलभ्यते।
सूत्रात्मकपाठस्तु वर्णोच्चारणशिक्षा इति नाम्ना प्रकाशिता।

92. चान्द्रशिक्षायाः प्रणेता वर्तते–

(a) जैनवैयाकरणः (b) प्राकृतभाषाया वैयाकरणः
(c) बौद्धवैयाकरणः (d) शैवः

उत्तर-(c)

बौद्ध वैय्याकरणस्य चन्द्रगोमिनः चान्द्रशिक्षाऽपि सुतरां प्रतिष्ठिता।
जैनवैय्याकरण– जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी हैं।

93. कति शिक्षाग्रन्थाः प्रकाशिताः सन्ति–

(a) चत्वारिंशत् (b) त्रयः
(c) दश (d) शताधिकाः

उत्तर-(a)

- तेषु 40 (चत्वारिंशत्) ग्रन्थास्तु प्रायःप्रकाशिता एव।
- उपलब्धानां शिक्षाग्रन्थानां संख्या शताधिका वर्तते।
- त्रयः– तीन मुनियों की श्रेणी है व्याकरण जगत में– पाणिनि– कात्यायन– पतञ्जलि
- दश– वेद में 10 ब्राह्मण ग्रन्थों की चर्चा की गयी है।

94. 'वर्णोच्चारणशिक्षा' इत्यस्याः प्रणेता वर्तते–

(a) आपिशलिः (b) इन्द्रः
(c) चन्द्रगोमी (d) पाणिनिः

उत्तर-(d)

पाणिनीय शिक्षाया श्लोकात्मकं सूत्रात्मकं चेति पाठ द्वयमुपलभ्यते।
सुत्रात्मकपाठस्तु वर्णोच्चारण शिक्षा इति नाम्ना प्रकाशिता।

- आपिशल शिक्षा सर्वप्रथमं लाहौरतः प्रकाशिता
- सा वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।
- बौद्ध वैय्याकरणस्य चन्द्रगोमिनः चान्द्रशिक्षाऽपि सुतरां प्रतिष्ठिता।

95. स्वरतोऽपराधस्य किमुदाहरणमत्र वर्तते–

(a) इन्द्रशत्रुः (b) यजमानम्
(c) वाग्वज्रः (d) श्वजनः

उत्तर-(a)

स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।
मिथ्याप्रयुक्त शब्द इस अर्थ को नहीं कहता। वह मिथ्याप्रयुक्त शब्द वाणीरूपी वज्र बन कर यजमान को उसी तरह मार डालता है। जिस प्रकार 'इन्द्रशत्रु' इस शब्द ने स्वर के अपराध से वृत्रासुर को मार डाला था।

प्रश्न संख्या (96-100) : अधोलिखितं गद्य-खण्डं पठित्वा प्रश्नानां उत्तरं चिनुत्–

तात्! चन्द्रापीड! विदितवेदितव्यस्य अधीत सर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलश्च निसर्गत एव अभानुभेद्यमरत्नालोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्। अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागवे भवति यूनां दृष्टिः। भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेन उपदेशगुणाः। सरस्वती परिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम्। गुणवंतमपवित्रमिव न स्पृशति। उदारसत्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते। इति शुकनासोपदेशः श्रुत्वा राजकुमारोऽतितरां धर्जितः।

अनुवाद–वत्स चन्द्रापीड। जानने योग्य विषयों को जानने वाले एवम् समस्त शास्त्रों का अध्ययन कर चुकने वाले तुम्हें थोड़ा भी उपदेश नहीं देना है। किन्तु युवावस्था में उत्पन्न होने वाला अन्धकार स्वभाव से ही सूर्य के द्वारा विनष्ट करने योग्य नहीं होता , मणियों की प्रभा से उच्छिन्न नहीं किया, दीपक के प्रकाश से हटाया नहीं जा सकता और अत्यन्त दुर्दमनीय होता है। धन सम्पत्ति का भयंकर मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता।

युवावस्था के आरम्भ में बुद्धि शास्त्र रूपी जल से धुल कर निर्मल होने पर भी प्रायः कलुषित हो जाती है। युवकों की दृष्टि स्वच्छता का त्याग न करने पर राग से युक्त रहती है।

आप जैसे व्यक्ति ही उपदेशों के पात्र होते हैं क्योंकि उपदेश के गुण निर्मल अन्तःकरण में उसी तरह अनायास प्रवेश करते हैं जैसे स्फटिक मणि में सूर्य की किरणें।

वाग्देवी विद्वान पुरुष को मानों ईर्ष्या से आलिङ्गन नहीं करती हैं। अमंगल के समान उदारता को नहीं मानती है। इस प्रकार शुकनाश राजकुमार को धन के विषय में उपदेश सुनाया।

96. उपदेशाः कस्य मनसि सुखेन प्रविशन्ति?

(a) मलरहिते मनसि (b) राजकुमारमनसि

(c) श्रद्धालुजनस्य मनसि (d) शिष्यमनसि

उत्तर-(a)

A– अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरग भस्तयो विशन्ति सुखेन उपदेश गुणाः।
इति शुकनासोपदेशं श्रुत्वा राजकुमारोऽतितरां धर्जितः।
सर्वं श्रद्धा अस्ति श्रद्धालु जनः।
शिष्यानां मनसि शिष्यमानसि।

97. अस्मिन् गद्यखण्डे कः उपदिशति?

(a) तारापीडः (b) महाश्वेता

(c) शुकनासः (d) शूद्रकः

उत्तर-(c)

अस्मिन् गद्यखण्डे इति शुकनासः उपदिशति। अर्थात् सम्पूर्ण गद्यखण्ड में शुकनास ने चन्द्रापीड को उपदेश दिया है।
तारापीड चन्द्रापीड के पिता का नाम था। तारापीड एवं विलासवती से उत्पन्न पुत्र का नाम चन्द्रापीड था।
महाश्वेता गन्धर्वराज हंस की पुत्री थी।
कादम्बरीकथामुखम् में शूद्रक नाम के राजा की चर्चा की गयी है। जो विदिशा का राजा था।

98. एष उपदेशः कस्मै प्रदीयते?

(a) कादम्बयै (b) चन्द्रापीडाय

(c) तारापीडाय (d) शुकनासाय

उत्तर-(b)

चन्द्रापीड विदित वेदितव्यस्य अधीत सर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युप देष्टव्यमस्ति।
कादम्बरी – बाणभट्ट की रचना है।
चन्द्रापीड– चन्द्रापीड कादम्बरी का अनन्य प्रेमी था।
तारापीड– तारापीड चन्द्रापीड का पिता था।
शुकनास– शुकनास तारापीड का महामन्त्री था।

99. राजलक्ष्मीः सरस्वतीपरिगृहीतं जनं केन कारणेन न आलिङ्गति

(a) ईर्ष्यया (b) क्रोधेन

(c) लोभेन (d) स्वार्थबुद्ध्या

उत्तर- (a)

A– सरस्वती परिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम्
B– क्रोध से मनुष्य की बुद्धि नष्ट होती है।
C– लोभ से मनुष्य का सर्वस्व नाश हो जाता है।
D– स्वार्थ से किया गया कार्य कभी फलदायी नहीं होता।

100. यूनां बुद्धिः कदा कालुष्यमुपयाति?

(A) कुमारावस्थायाम् (B) यौवनारम्भे

(C) राजनीतौ (D) वार्धक्ये

उत्तर-(b)

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः अनुज्झितधवलतापि सरागवे भवति यूनां दृष्टिः।
A– मनुष्य के जीवन में तीन अवस्थाएँ आती हैं-
(1) कौमारावस्था (2) यौवनावस्था
(3) वृद्धावस्था
C– कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीतिक ग्रन्थ है।
D– वार्धक्ये चतुर्थी एकवचन का रूप है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June 2020
संस्कृत
व्याख्यात्मक हल सहित

1. बालगंगाधर-तिलकेन मृगशिरा- काले ऋग्वेदस्य अधिकांश-मन्त्राणां रचना स्वीकृतास्ति। अधोलिखितेषु मृगशिरा-कालःवर्तते?

(a) 6000-4000 वि.पू. (b) 4000-2500 वि.पू.
(c) 2500-1400 वि.पू. (d) 1400-500 वि.पू.

उत्तर–(b)

बालगङ्गाधर तिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6 हजार ई.पू. से 4 हजार ई.पू. स्वीकार किया है।
तिलक ने विभिन्न नक्षत्रों में वसन्त-संपात के आधार पर निम्न तिथियां निर्धारित की है-
1. अदिति काल- 6000-4000 ई.पू.
2. मृगशिरा काल - 4000-2500 ई.पू.
3. कृत्तिका काल - 2500-1400 ई.पू.
4. सूत्रकाल - 1400-500 ई.पू.

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार 'वेदों का उद्भव परमात्मा से सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ'।
- श्री अविनाश चन्द्रदास ने भूगर्भ को आधार मानकर ऋग्वेद का रचनाकाल 25हजार वर्ष ई.पू. माना है।
- एच.याकोबी ने ज्योतिष को विन्टरनित्स ने मितानी शिलालेख को। मैक्समूलर ने बौद्ध साहित्य और दीनानाथ शास्त्री चुलेट ने ज्योतिष को आधार मानकर वेदों का रचनाकाल स्वीकृत किया है।

2. 1846 तमे ख्रीस्ताब्दे अधोलिखितेषु कतमेन पाश्चात्य-विदुषा 'वैदिक साहित्यम् इतिहासञ्च' इति ग्रन्थः रचितः-

(a) मैक्समूलर- इत्यनेन (b) रुडोल्फ्- रॉथ -इत्यनेन
(c) विलियम-जोन्स-इत्यनेन (d) मोनियर-विलियम-इत्यनेन

उत्तर–(b)

1846 तमे ख्रीस्ताब्दे ''वैदिक साहित्य तथा इतिहास'' के रचनाकार रुडोल्फ-रॉथ थे।
रुडोल्फ रॉथ मात्र 25 वर्ष की अल्पायु में ही ''वैदिक साहित्य तथा इतिहास'' नामक जर्मन ग्रन्थ लिखकर समीक्षात्मक वैदिक अनुशीलन का प्रारम्भ किया।

- रोठ और बॉटलिंग्क ने 20 वर्ष के कठिन परिश्रमोपरान्त ''संस्कृत जर्मन महाकोश-10 हजार पृष्ठों तथा सात विशाल भागों में सेंट पीटर्सबर्ग नगर से इसे 1855-1875ई. में प्रकाशित किया।
- ग्रासमान ने ऋग्वैदिक कोश को (1873-1875) में प्रकाशित किया।
- मैकडॉनल ने वैदिक व्याकरण पर दो ग्रन्थ लिखे-(1) वैदिक ग्रामर और (2) वैदिक ग्रामर फार स्टूडेन्ट्स।
- मैक्समूलर ने History of the ancient Sanskrit Literature लिखा।

3. अधोलिखितेषु कतमेन पाश्चात्यविदुषा 'ए वैदिक कॉन्कार्डेन्स्' (A vedic Concordance) इति नामको ग्रन्थो रचितः?

(a) रुडोल्फ -रॉथ-इत्यनेन (b) कीथ- इत्यनेन
(c) विल्सन - इत्यनेन (d) ब्लूम-फील्ड-इत्यनेन

उत्तर–(d)

पाश्चात्य विद्वान ''ब्लूम-फील्ड'' के द्वारा 'ए वैदिक कॉन्कार्डेन्स्' रचित है।
Vedic Concordance (मंत्र-महासूची) नामक विशाल ग्रन्थ 1102 पृष्ठों में 1906 ई. में प्रकाशित की गयी। इसमें चारों वेदों के प्रत्येक मंत्र के प्रत्येक चरण की सूची तथा उसके पाठभेद दिए गए हैं। इनका एक अन्य ग्रन्थ Rigveda Repetition (ऋग्वेद में पुनरावृत्ति) है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ह्विट्नी 'संस्कृत व्याकरण' नामक रचना की है।
- मैक्डॉनल ने 'वैदिक ग्रामर' और 'वैदिक ग्रामर फॉर स्टूडेन्ट्स' की रचना की है।
- वेबर ने वैदिक छन्दों पर 'इण्डिशे स्टुडिएन' में विस्तृत विचार किया है।
- रुडोल्फ रोठ ने जर्मन भाषा में ''वैदिक साहित्य और उसका इतिहास'' लिखा है।
- मैक्समूलर ने History of the Ancient Sanskrit Literature लिखा।
- विन्टरनित्स ने तीन भागों में 'History of Indian Literature.' निकाला था।
- कीथ ने 'History of Sanskrit Literature' लिखा है।

4. शांखायनारण्यकः अधोनिर्दिष्टेषु केन सह सम्बद्धोऽस्ति?

(a) सामवेदेन सह (b) यजुर्वेदेन सह

(c) अथर्ववेदेन सह (d) ऋग्वेदेन सह

उत्तर–(d)

वेद	**शाखाएं**	**आरण्यक**
ऋग्वेद	शाकल, बाष्कल	ऐतरेय, शांखायन आरण्यक
शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व	बृहदारण्यक
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय, मैत्रायणीय कठ, कपिष्ठल	तैत्तिरीयाण्यक
सामवेद	कौथुम, राणायनीय जैमिनीय	उपलब्ध नहीं
अथर्ववेद	शौनक, पैप्पलाद	कोई नहीं

5. इन्द्र-सूक्ते (2,12.4) चतुर्थे मन्त्रे प्राप्तस्य 'दासं वर्णम्' इत्यस्य सायण-भाष्यानुसारम् - अधोलिखितेषु कतमः

(a) कृष्णवर्णम् (b) दुष्टवर्णम्

(c) शूद्रादिकम् (d) अन्त्यवर्णम्

उत्तर–(c)

इन्द्रसूक्त के चतुर्थ मन्त्र में 'दासं वर्णम्' इसका सायण भाष्यानुसार 'शूद्र' अर्थ होता है।

सायण ने चारों वेदों पर भाष्य लिखा है।

ऋग्वेद के चतुर्थ मन्त्र के सायण भाष्य में दास का वर्णन किया गया है-

''येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि, यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।

श्वघ्नीव यो जिगीवॉल्लक्षमादद्, अर्यःपुष्टानि स जनास इन्द्रः।।''

इन्द्र भी अग्नि के समान प्रधान देवता स्वीकार किए गये हैं। ये अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। इनकी स्तुति 250 सूक्तों में की गई है। इन्द्र ने हिलती हुई पृथ्वी को स्थिर किया तथा सभी पर्वतों को अपने-अपने स्थान पर स्थिर किया।

6. सम्पूर्णम् -इन्द्र - सूक्तम् अधोलिखितेषु कतमेन छन्दसा ग्रथितमस्ति?

(a) जगती-छन्दसा (b) अनुष्टप् - छन्दसा

(c) त्रिष्टुप् - छन्दसा (d) गायत्री-छन्दसा

उत्तर–(c)

सम्पूर्ण इन्द्र-सूक्त त्रिष्टुप् छन्द में ग्रथित है।

ऋग्वेद में इन्द्रसूक्त की संख्या 250 है। इन्द्रसूक्त के ऋषि गृत्समद है। इनके देवता स्वयं इन्द्र ही है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। अग्निसूक्त के ऋषि विश्वामित्र तथा देवता अग्नि हैं। इसमें छन्द गायत्री है।
- वरुण सूक्त के ऋषि शुनःशेप हैं तथा देवता वरुण है। इसमें गायत्री छन्द है।
- सवितृ सूक्त के ऋषि हिरण्यस्तूप है तथा देवता सविता हैं। इसमे छन्द जगती और त्रिष्टुप् है।
- विश्वेदेवा सूक्त के ऋषि वैवस्वत मनु हैं, इसमें गायत्री, उष्णिक्, बृहती और अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है।

7. दोषावस्तः इति पदस्य सायणानुसारम् अधोलिखितेषु कतम अर्थः विद्यते?

(a) गुणदोषौ (b) उदयास्तौ

(c) रात्रावहनी (d) सूर्याचन्द्रमसौ

उत्तर–(c)

सायण भाष्यानुसारम् 'दोषावस्तः' इस पद का अर्थ 'रात्रावहनी' है। अग्नि सूक्त का सातवां मंत्र - 'उपत्वाग्ने दिवे-दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् नमो भरन्त एमसि।।

यहां पर दोषावस्तः से रात्रि-दिन अर्थ निकलता है।

- **अग्नि के अन्य विशेषण-** राजन्तमध्वराणाम्, अङ्गिरः, कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः, रत्नधातमम्, गोपामृत आदि।
- अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त ही है। इनके ऋषि विश्वामित्र और देवता अग्नि हैं तथा छन्दों में गायत्री छन्द का बहुतायत प्रयोग है।

8. 'कविक्रतुः' अधोलिखितेषु कस्य विशेषणं विद्यते?

(a) इन्द्रस्य (b) बृहस्पतेः

(c) अग्नेः (d) शुक्रस्य

उत्तर–(c)

कविक्रतु विशेषण अग्नि का है।

कविक्रतु का अर्थ है- अतीत, अनागत आदि कर्मों को जानने वाला।

अग्नि सूक्त में 200 मन्त्र हैं। ये पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। इनके ऋषि मधुच्छन्दा हैं।

अग्नि के अन्य विशेषण - ऋत्विक्, जातवेदस्, घृतपृष्ठ, शोचिषकेश, रक्तश्मश्रु, रुक्मदन्त, गृहपति, विश्वपति, दमूनस, पुरोहित, धूमकेतु, वैश्वानर, नाराशंस, नेता, अङ्गिरा, पावक, सत्यधर्मा, जज्ञान, त्र्यम्बक आदि।

विष्णु का विशेषण- त्रिविक्रम, उरूक्रम, उरुगाय, भीम, कुचरः, गिरिष्ठा, गिरिजा, मातरिश्वा।

इन्द्र का विशेषण - वज्री, वज्रिन, वज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, मघवा, वृत्रहा, दस्योर्हन्ता, सोमपा, मनस्वान् , पुरन्दर।

वरुण का विशेषण - क्षत्रिय, मायावी, स्वराट, उरूशंस, धृतव्रतः, चिकित्वान्, इषिरः।

9. वैशेषिकदर्शनानुसारमधोऽङ्कितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत

(a) प्रत्यक्षानुमानोपमानानि त्रीणि प्रमाणानि

(b) प्रत्यक्षानुमाने द्वे प्रमाणे

(c) प्रत्यक्षानुमानागमैतिह्यानि चत्वारि प्रमाणानि

(d) प्रत्यक्षानुमानशब्दाः त्रीणि प्रमाणानि

उत्तर–(b)

वैशेषिक दर्शन के अनुसार दो प्रमाण प्रत्यक्ष और अनुमान होता है, अन्य प्रमाणों का इन्हीं दोनों में अन्तर्भाव किया गया है।
वैशेषिक की रूपरेखा द्रव्य आदि सात पदार्थों पर आधारित है। वैशेषिक में द्रव्यादि सात पदार्थों के साधर्म्य-वैधर्म्य के तत्त्वज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति मानी गयी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- न्याय दर्शन चार प्रमाण स्वीकरता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द ।
- सांख्यानुसार तीन प्रमाण है- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द ।
- योग भी तीन प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
- नास्तिक दर्शन चार्वाक् केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है।

10. अधोऽङ्कितेषु कोऽर्थापत्तिप्रमाणं स्वीकरोति?

(a) चार्वाकदर्शनम् (b) जैनदर्शनम्

(c) योगदर्शनम् (d) मीमांसादर्शनम्

उत्तर–(d)

अर्थापत्ति प्रमाण को मीमांसा दर्शनकार स्वीकारते हैं।
छः आस्तिक और तीन नास्तिक दर्शन हैं।
वेदों में आस्था, विश्वास रखने वाले आस्तिक कहलाते हैं तथा (वेदनिन्दकः नास्तिकः) वेद की निंदा करने वाले नास्तिक कहलाते हैं।

- सांख्य तथा योग में तीन-तीन प्रमाण हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द।
- न्याय में 4 प्रमाण हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।
- वैशेषिक दो प्रमाण -प्रत्यक्ष और अनुमान।
- पूर्वमीमांसा + उत्तरमीमांसा - छः प्रमाण मानते हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि।
- जैन दर्शन के अनुसार दो प्रमाण है - प्रत्यक्ष और परोक्ष
- चार्वाक् दर्शन केवल प्रत्यक्ष प्रमाण मानते हैं।

11. वेदानामपौरुषेयत्वमधोऽङ्कितेषु कुत्र वर्णितम् ?

(a) बौद्धदर्शने (b) मीमांसादर्शने

(c) योगदर्शने (d) सांख्यदर्शने

उत्तर–(b)

वेद को अपौरुषेय मीमांसक मानते हैं।
मीमांसा दर्शन कर्मकाण्ड अर्थात् वेदों के पूर्वभाग से सम्बन्धित है। मीमांसासूत्र के प्रारम्भ में धर्म के विषय में जिज्ञासा को सूत्रित किया गया है- **''अथातो धर्म जिज्ञासा''** यहाँ अथः से तात्पर्य है कि वेद-वेदाङ्ग का जो अध्ययन कर लिया वही इस शास्त्र का अधिकारी है। अथ शब्द आनन्तर्यवाचक है।
धर्म से तात्पर्य -यागादिरेव धर्मः। तल्लक्षणं वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म इति। यहां यागादिरेव में एव पद रखने से तात्पर्य यह है कि यागादि के अतिरिक्त किसी भी अन्य कर्म को धर्म स्वीकार नही करना है। धर्म चाहे वैदिक सम्प्रदाय में मान्य हो अथवा अवैदिक, यदि वह यागादि नहीं है तो मीमांसक उसको धर्म नही मानते है।

12. योगदर्शनानुसारेण अधोऽङ्कितेषु कस्य ग्रहणं क्रियायोगेऽस्ति?

(a) शौचस्य (b) प्राणायामस्य

(c) ध्यानस्य (d) स्वाध्यायस्य

उत्तर–(d)

योगदर्शनानुसारेण **'स्वाध्यायस्य'** यह पद क्रियायोग के अन्तर्गत समाहित है।
योगसूत्र के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं। इसमें चार पाद है-
''समाधि- साधन - विभूति - कैवल्य
''तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः''।।
तपस्या, स्वाध्याय ओर ईश्वरप्रणिधान क्रियायोग है।
योगदर्शनानुसारेण अष्टांग योग-
''यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार धारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि।''
''**योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**'' अर्थात् योग चित्तवृत्तियों का निरोध है।
अविद्या का स्वरूप- अनित्याऽशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखाऽऽत्मख्यातिरविद्या।

13. तर्कसङ्ग्रहानुसारं वाक्यार्थज्ञाने 'अग्निना सिञ्चेद्' इति वाक्यं कथं न प्रमाणम् ?

(a) योग्यताविरहात्

(b) सन्निध्याभावात्

(c) आकाङ्क्षाविरहात्

(d) पदानामविलम्बेनोच्चारणाभवात्

उत्तर–(a)

तर्कसंग्रहानुसार 'अग्निना सिञ्चेद्' में योग्यता का अभाव वाक्य दोष है।
अग्नि में सींचने की क्रिया की योग्यता नहीं है, वह्नि में जलाने की योग्यता होती है। सींचने की क्रिया में पानी का प्रयोग किया जाता है।
तर्कसंग्रह के कर्त्ता अन्नम्भट्ट हैं। यह न्याय और वैशेषिक का मिश्रित प्रकरण ग्रन्थ है।
''आकाङ्क्षायोग्यता सन्निधिश्च वाक्यार्थ ज्ञाने हेतुः।'' अर्थात् आकाङ्क्षा, योग्यता और सन्निधि ये तीन वाक्यार्थ ज्ञान के सहकारी कारण हैं। इन तीनों से रहित वाक्य प्रमाण नहीं हो सकते हैं।

- एक पद का दूसरे के बिना अन्वय-बोध न कराना आकाङ्क्षा है।
- अर्थ का बाध न होना योग्यता है।
- पदों का अविलम्ब उच्चारण करना सन्निधि है।

14. **अर्थसङ्ग्रहदिशा विधिः कतिविधः?**

(a) षड्विधः (b) पञ्चविधः

(c) चतुर्विधः (d) त्रिविधः

उत्तर–(c)

अर्थसङ्ग्रह के अनुसार विधि के चार भेद हैं-

(1) उत्पत्ति विधि (2) विनियोग विधि

(3) अधिकार विधि (4) प्रयोग विधि।

उत्पत्तिविधि – कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्ति विधिः। कर्म के स्वरूपमात्र का बोधक विधि 'उत्पत्तिविधि' होता है।

जैसे- अग्निहोत्रं जुहोति।

विनियोगविधि – अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः। अङ्गों के साथ सम्बन्ध बोधक विधि को 'विनियोग विधि' कहते हैं।

यथा-दध्ना जुहोति

अधिकारविधि – कर्मस्वाम्यबोधको विधिः 'अधिकार विधिः।' कर्मजन्य फल की स्वाम्यबोधक विधि 'अधिकार विधि' है।

प्रयोग विधि – प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः। जिसे विधिवाक्य से प्रयोग को शीघ्र करने का बोध होता है, उसे 'प्रयोग विधि' कहते हैं।

वेद के पांच भेद माने हैं-

(1) विधि (2) मन्त्र (3) नामधेय (4) निषेध (5) अर्थवाद

15. **तर्कभाषानुसारं अयुतसिद्धयोः कः सम्बन्धः?**

(a) संयोगः (b) समवायः

(c) विषय-विषयिभावः (d) आधाराधेयभावः

उत्तर–(b)

तर्कभाषानुसार अयुतसिद्ध पदार्थों में समवाय सम्बन्ध होता है।

द्विविधः सम्बन्धः संयोगः समवायश्चेति । तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः। अन्योस्तु संयोग एव।

अर्थात् सम्बन्ध दो प्रकार का होता है- संयोग और समवाय, उनमें जो दो अयुतसिद्ध अर्थात् अपृथक् सिद्ध पदार्थों का सम्बन्ध है वह समवाय कहलाता है।

अयुतसिद्ध से तात्पर्य – अपृथक्सिद्ध से है।

- ''ययोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ।'' अर्थात् दोनों पदार्थों में से एक अविनश्यदवस्था में दूसरे पर आश्रित ही रहता है वही अयुतसिद्ध कहलाता है। तन्तु और पट अवयव और अवयवी हैं, अयुतसिद्ध होने के कारण इन दोनों का सम्बन्ध समवाय है। तुरी और पट अयुतसिद्ध नहीं होने के कारण समवाय नहीं है।

16. **सांख्यकारिकानुसारं 'प्रत्ययसर्गः'इत्यस्य कोऽर्थः?**

(a) प्रत्ययो बुद्धिः , तस्य सर्गः कार्यम्

(b) प्रत्ययो मनः, तस्य सर्गः कार्यम्

(c) प्रत्ययः संसारः, तस्य सर्गः उत्पत्तिः

(d) प्रत्ययेऽहङ्कारः, तस्य सर्गः कार्यम्

उत्तर–(a)

बुद्धि के परिणाम से सृष्टि होती है।

''एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययशक्तितुष्टि सिद्ध्याख्यः।

गुण वैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत् ॥''

जिसके द्वारा विषयों की प्रतीति होती है वह प्रत्यय अर्थात् बुद्धि सर्ग कहलाता है। इस प्रत्यय या बुद्धि सर्ग के चार प्रकार के कार्य है-

विपर्यय - अशक्ति- तुष्टि - सिद्धि

- विपर्यय (अविद्या) के पांच भेद होते हैं- (अविद्या-अस्मिता-राग-द्वेष-अभिनिवेश)
- अशक्ति के 28 भेद होते हैं।
- तुष्टि के नौ भेद और सिद्धि के आठ भेद – कुल मिलाकर 50 भेद होते हैं।

17. **अधस्तनेषु पतञ्जलिप्रतिपादितेषु व्याकरण-प्रयोजनेषु नास्ति**

(a) रक्षार्थं (b) ऊहः

(c) आगमः (d) सन्देहार्थं

उत्तर–(d)

महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित व्याकरण के मुख्य प्रयोजनों में सन्देहार्थ की गणना नही की जाती है।

- महर्षि पतञ्जलि द्वारा विरचित महाभाष्य में 84 आह्निक हैं।
- व्याकरण के अध्ययन के पांच प्रयोजन हैं- ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्''

व्याकरण के त्रयोदश गौण प्रयोजन भी बताते हैं।

1.तेऽसुरा 2.दुष्टः शब्दः 3. यद्धीतम् 4. यस्तु प्रयुङ्क्ते 5. अविद्वान्सः 6. विभक्तिं कुर्वन्ति 7. यो वा इमामि 8. चत्वारि 9. उतत्वः 10. सक्तुमिव 11. सारस्वतीम् 12. दशम्यां पुत्रस्य 13. सुदेवोऽसि वरुण आदि।

18. **'बृहच्छब्देन्दुशेखरः इति ग्रन्थस्य कर्ता?'**

(a) कैय्यटः (b) नागेशभट्टः

(c) चिन्तामणिः (d) वामनः

उत्तर–(b)

बृहच्छब्देन्दुशेखरः ग्रन्थ के रचयिता नागेशभट्ट हैं।

पातञ्जल महाभाष्य पर संस्कृत में लगभग 20 टीकाएं लिखी गयी है। इन टीकाओं में कैय्यट की प्रदीप टीका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। नागेश भट्ट की सुप्रसिद्ध उद्योत व्याख्या इसी प्रदीप टीका पर है।

- महाभाष्य के प्रमुख व्याख्याकार – भर्तृहरि, कैय्यट, पुरुषोत्तमदेव, नीलकण्ठ वाजपेयी, धनेश्वर, शेषविष्णु, नारायण आदि।
- नागेशभट्ट के प्रमुख ग्रन्थ लघुशब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दु शेखर, लघुमञ्जूषा, स्फोटवाद आदि हैं।

जाम्बवतीविजय – पाणिनि भट्टिकाव्य – भट्टिकवि

स्वर्गारोहण – वररुचि महानन्दकाव्य – पतञ्जलि

19. आकृतिमूलकवर्गीकरणमाश्रित्य अधस्तनासु का भाषा योगात्मकभाषासु नास्ति?

(a) अरबी (b) संस्कृतम्

(c) चीनी (d) तुर्की

उत्तर–(c)

चीनी भाषा योगात्मक भाषा के अन्तर्गत नहीं आती है।

भाषाओं का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है- आकृतिमूलक और पारिवारिक।

आकृतिमूलक वर्गीकरण भी दो प्रकार है- अयोगात्मक और योगात्मक

- अयोगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग नहीं होता है- प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है। इसलिए इसे धातु या मूल कहते हैं। इन भाषाओं में चीनी, तिब्बती, बर्मी, आदि हैं।
- योगात्मक में सभी का संयोग होता है, इसको तीन वर्गों में विभाजित किया गया है-

(क) अश्लिष्ट (प्रत्यय प्रधान) भाषाएं।

(ख) श्लिष्ट (विभक्ति प्रधान) भाषाएं।

(ग) प्रश्लिष्ट (समास प्रधान) भाषाएं।

20. भाषावैज्ञानिकैः भाषाः कतिधा वर्गीकृताः?

(a) चतुर्धा (b) त्रिधा

(c) द्विधा (d) पश्चधा

उत्तर–(c)

भाषावैज्ञानिकों ने भाषा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया है।

आकृतिमूलक और पारिवारिक।

आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद हैं- योगात्मक और अयोगात्मक

- अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का होता है।
- योगात्मक के तीन भेद हैं- श्लिष्ट, अश्लिष्ट, प्रश्लिष्ट।
- योगात्मक की भाषाएं प्रकृति, प्रत्यय और अर्थतत्त्व तथा सम्बन्धतत्त्व के संयोग से बनी होती हैं।
- अयोगात्मक की भाषाएं – चीनी, तिब्बती, वर्मी हैं।
- योगात्मक की भाषाएं –अरबी, हिब्रू, संस्कृत, हिन्दी, चेरोफी, बास्क, काफिर, सन्थाली, तुर्की, मफोर हैं।

21. 'उपाध्यायाद् अधीते' इत्यत्र अपादानसञ्ज्ञाविधायकः पाणिनेर्नियमः कः?

(a) जनिकर्तुः प्रकृतिः (b) भुवः प्रभवः

(c) पराजेरसोढः (d) आख्यातोपयोगे

उत्तर–(d)

पाणिनि के नियमानुसार **'उपाध्यायाद् अधीते'** में अपादान सञ्ज्ञा विधायक सूत्र **''आख्यातोपयोगे''** है।

नियमपूर्वक विद्या पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होती है। 'उपाध्यायाद् अधीते' में कर्त्ता उपाध्याय से नियमपूर्वक अध्ययन करता है अतः प्रकृति सूत्र से यहां अपादान संज्ञा हुआ है तथा अपादाने पञ्चमी से पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

- **भुवः प्रभवः** का उदाहरण 'हिमवतो गङ्गा प्रभवति' है।
- **जनिकर्तुः प्रकृतिः** का उदाहरण है- ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
- **पराजेरसोढः** का उदाहरण है- अध्ययनात् पराजयते।
- **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** का उदाहरण है – मातु निलीयते कृष्णः।
- **भीत्रार्थानां भयहेतुः** का उदाहरण है- चोरात् विभेति।
- **वारणार्थानामीप्सितः** का उदाहरण है- यवेभ्यो गां वारयति।

22. 'सुडनपुंसकस्य' इति पाणिनिसूत्रेण का सञ्ज्ञा विधीयते?

(a) संहिता सञ्ज्ञा (b) उपधा सञ्ज्ञा

(c) विभाषा सञ्ज्ञा (d) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा

उत्तर–(d)

सुडनपुंसकस्य से सर्वनाम स्थान संज्ञा स्थान बोधित होती है।

सु आदि पांच वचनों की सर्वनाम संज्ञा होती है लेकिन नपुंसकलिङ्ग में नहीं। सुट् प्रत्याहार का इसमें व्यवहार है- सु- औ- जस्-अम् - औट्।

प्रथमा के एकवचन से लेकर द्वितीया के द्विवचन औट् तक को सुट् प्रत्याहार माना गया है। इसी सूत्र से सर्वनाम संज्ञा होती है। लेकिन यह संज्ञा नपुंसकलिङ्ग में नहीं होगी।

- **संहिता - परः सन्निकर्ष संहिता** (वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं।)
- **संयोग - हलोऽनन्तराः संयोगः** (अच् के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों की संयोग संज्ञा होती है।)
- **विभाषा - न वेति विभाषा** (निषेध तथा विकल्प इन दो अर्थों की विभाषा संज्ञा होती है।)
- **उपधा - अलोऽन्तस्यपूर्वउपधा** (अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की 'उपधा' संज्ञा होती है।)

23. 'ऐधेताम्' इति प्रयोगे कानि धातु-लकार-पुरुष-वचनानि?

(a) 'एध्' धातुः, लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्

(b) 'एध्' धातुः लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

(c) 'एध्' धातुः लोट्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्

(d) 'एध्' धातुः, लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, द्विवचनम्

उत्तर–(a)

ऐधेताम् लङ्लकार प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है।

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	एधते	एधेते	एधन्ते
म.पु.	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उ.पु.	एधे	एधावहे	एधामहे

लोट्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
म.पु.	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उ.पु.	एधै	एधावहै	एधामहै

लङ्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म.पु.	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ.पु.	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

आशीर्लिङ्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
म.पु.	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उ.पु.	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

लुङ्लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.पु.	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
म.पु.	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
उ.पु.	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

24. 'द्वित्राः' इत्यत्र कः समासः?

(a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः

(c) बहुव्रीहिः (d) द्वन्द्वः

उत्तर–(c)

'द्वित्राः' इस पद में बहुव्रीहि समास है।
लौकिक विग्रह- द्वौ वा त्रयो वा
अलौकिक विग्रह - द्वि औ त्रि जस्
''संख्ययाऽव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास हुआ तथा इसका लुक् आदि करने पर **द्वित्रि** रूप बनता है।
फिर **''बहुव्रीहौ संख्येये डचबहुगणात्** सूत्र से डच् प्रत्यय
द्वित्रि + डच्
लोपादि करने के बाद द्वि त्रि अ शेष बचता है।
ङित् परे होने के कारण **टेः** सूत्र से टि संज्ञक इकार का लोप और द्वित्र रूप बना।
फिर ''एकदेशविकृतमनन्यवत्'' के बल से विकृत होने पर भी प्रतिपादिक बना रहा सु का रुत्वादि विसर्ग करने पर **द्वित्राः** रूप बनता है।

25. अश्वघोषकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?

(a) हर्षचरितम् , बुद्धचरितम्

(b) बुद्धचरितम् ,सौन्दरनन्दम्

(c) विक्रमाङ्कदेवचरितम्, दशकुमारचरितम्

(d) उत्तररामचरितम्,महावीरचरितम्

उत्तर–(b)

अश्वघोषकृत रचनाओं का नाम बुद्धचरित, सौन्दरनन्द और शारिपुत्रप्रकरण है।
अश्वघोष 'अयोध्या' (साकेत) के निवासी थे। इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये बौद्धभिक्षु थे।
बुद्धचरित एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवनचरित तथा उनके सिद्धांतों का वर्णन है। इसमें 28 सर्ग है।
सौन्दरनन्द अश्वघोष का दूसरा महाकाव्य है। इसमें 18 सर्ग है।
अश्वघोष वैदर्भी रीति के कवि थे। ये कनिष्क के समकालीन थे।

- उत्तररामचरित और महावीरचरित भवभूति की रचनाएं हैं।
- किरातार्जुनीयम् - भारवि की रचना है।
- शिशुपालवधम् महाकवि माघ द्वारा विरचित है।
- श्रीहर्ष की रचना का नाम नैषधीयचरितम् है।
- राघवपाण्डवीयम् महाकाव्य कविराज की रचना है।

26. महाभारताश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति?

(a) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

(b) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्,रत्नावली

(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्

(d) बुद्धचरितम्, स्वप्नवासवदत्तम्

उत्तर–(c)

अभिज्ञानशाकुन्तल और वेणीसंहार नाटक महाभारत पर आश्रित है।
महाभारत के रचयिता वेदव्यास हैं। इसमें 18 पर्वों में कौरव-पाण्डवों का इतिहास है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भीष्मपर्व में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया गया है।
- महाभारत का अन्य नाम जय-भारत-महाभारत है।
- महाभारत को 'शतसाहस्री संहिता' भी कहा जाता है। इसकी शैली पांचाली है तथा छन्द अनुष्टुप् है।

महाभारत पर आश्रित प्रमुख ग्रन्थ-
काव्य ग्रन्थ- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, भारतमंजरी, नैषधीयचरितम्, नलाभ्युदयम् ।
नाटक ग्रन्थ - दूत-घटोत्कच, दूतवाक्य, कर्णभार, मध्यम- व्यायोग, पंचरात्र, उरूभंग, अभिज्ञानशाकुन्तल, वेणीसंहार, बालभारत।
चम्पू काव्य - नलचम्पू, भारतचम्पू।

27. 'नैषधीयचरिते' कति सर्गाः सन्ति?

(a) एकोनविंशतिः (b) विंशतिः

(c) एकविंशतिः (d) द्वाविंशतिः

उत्तर–(d)

नैषधीयचरितम् में 22 सर्ग हैं। यह रचना श्रीहर्ष द्वारा विरचित है। श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर और माता का नाम मामल्लदेवी था। कन्नौज के राजा इनके आश्रयदाता थे।

- नैषधीयचरितम् में नल-दमयन्ती का प्रणय से लेकर विवाह तक का सांगोपांग वर्णन है। नैषधीयचरितम् को विद्वानों के लिए औषधि बतायी गयी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

रघुवंश महाकाव्य में - 19 सर्ग

कुमारसम्भव में - 17 सर्ग

किरातार्जुनायम् में 18सर्ग, शिशुपालवधम् में 20 सर्ग

बुद्धचरितम् में 28 सर्ग तथा भट्टिकाव्य में 22 सर्ग हैं।

28. अधोलिखितेषु ग्रन्थेषु अम्बिकादत्तव्यासस्य रचना वर्तते-

(a) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (b) प्रतिमानटकम्

(c) शिवराजविजयम् (d) मृच्छकटिकम्

उत्तर–(c)

शिवराजविजय अम्बिकादत्त व्यास द्वारा विरचित ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें 3 विराम तथा 12 निःश्वासों में शिवाजी का जीवनचरित वर्णित है। इनके पिता का नाम दुर्गादत्त था। ये पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी त्रिप्रवर ब्राह्मण थे। इनकी बिहारी-विहार हिन्दी रचना कुण्डलिनी छन्द में था तथा पीयूष-प्रवाह नामक पत्रिका का सम्पादन किया।

इनकी प्रमुख उपाधियां हैं- शतावधान, घटिकाशतक, भारतरत्न, सुकवि, अभिनवबाण, भारतभूषण आदि।

- व्यास जी ने शिवराज विजय 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।
- शिवराजविजय वीर रस प्रधान काव्य है। विरोधाभास व्यासजी का प्रिय अलङ्कार है।

29. अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः।मणौ वज्रसंमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः।।

पद्येऽस्मिन् 'मे' इति पदं केन सम्बद्धम् ?

(a) माघेन (b) भारविणा

(c) कालिदासेन (d) श्रीहर्षेण

उत्तर–(c)

अथवा कृतवाग्द्वारे ...... यह श्लोक रघुवंश महाकाव्य के प्रथमसर्ग से लिया गया है। यहां 'मे' से तात्पर्य कालिदास से है।

''पूर्व में वर्तमान विद्वानों द्वारा वर्णन किए गए इस वंश में सूई से छेदे हुए मणि में सूत्र के समान मेरी गति है।''

रघुवंश महाकाव्य में 19 सर्ग है। इसमें मनु से लेकर सूर्यवंशी 31 राजाओं के जीवन का वर्णन हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

महाकवि कालिदास की अन्य कृतियां - ऋतुसंहारम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्।,

कालिदास की प्रशस्तियां - कविकुलगुरूः कालिदासो विलासः - **जयदेव**

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु - **बाणभट्ट**

उपमा कालिदासस्य - **उद्भट्**

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे - **मल्लिनाथ**

30. रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा सरोषहुंकारपराङ्मुखीकृताः। प्रहर्तुरेवोरगराजरज्जवो जवेन कण्ठं सभयाः प्रपेदिरे।।

शिशुपालवधस्य श्लोकेऽस्मिन् कस्य दिक्पालस्य वर्णनं कृतम् ?

(a) रावणस्य (b) वरुणस्य

(c) यमस्य (d) इन्द्रस्य

उत्तर–(b)

रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा......इस श्लोक में वरुण का वर्णन है। यह श्लोक शिशुपालवधम् से सम्बन्धित है। इसमें कहा गया है कि युद्ध के अवसर पर वरुण के नागपाश फेंकने पर रावण के हुंकार से भयभीत हो वह वरुण के ही गले में आकर लिपट गया।

शिशुपालवध महाकवि माघ का महाकाव्य है। इसकी गणना बृहत्त्रयी में की जाती है। इसमें 20 सर्ग हैं। यह महाभारत के सभापर्व से उद्धृत है। माघ का समय सातवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है। शिशुपालवध में नारद जी शिशुपाल के पूर्व जन्म का विवरण देते हैं।

31. सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला। नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।।

कस्माद् ग्रन्थादुद्धृतोऽयं श्लोकः?

(a) रामायणात् (b) उत्तररामचरितात्

(c) रघुवंशात् (d) नलचम्पोः

उत्तर–(d)

सदूषणापि निर्दोषा ......यह श्लोक नलचम्पू का है। इसमें महर्षि वाल्मीकि को नमस्कार किया गया है।

नलचम्पू - त्रिविक्रमभट्ट का चम्पूकाव्य है। त्रिविक्रमभट्ट ने नलचम्पू के प्रारम्भ में अपना परिचय दिया है। ये शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण

थे, इनके पितामह का नाम श्रीधर था तथा पिता का नाम नेमादित्य था। नलचम्पू के अतिरिक्त इनकी दूसरी रचना मदालसाचम्पू थी।

- नलचम्पू सात उच्छ्वासों में विभक्त। इसमें नल और दमयन्ती की प्रणय-कथा का विवेचन है।
- त्रिविक्रमभट्ट श्लेष प्रधान रचना के लिए प्रसिद्ध है। इनकी रचना में प्रसाद और माधुर्य गुण प्राप्त होता है।
- सदूषणापि निर्दोषा....इसमें वाल्मीकि की वन्दना करते हुए विरोधाभास और श्लेष अलङ्कार का आश्रय लिया है, विद्वानों के द्वारा यह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

32. दशरूपकानुसारं फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यस्य कति अवस्थाः भवन्ति?

(a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) अष्ट

उत्तर–(a)

फलागम आदि कार्यावस्थाएं 5 प्रकार की हैं।

''अवस्था पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
आरम्भ यत्न प्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः। ।।

अर्थात् फल की इच्छा वाले व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य की पांच अवस्थाएं हैं- आरम्भ-यत्न-प्राप्त्याशा- नियताप्ति - फलागम।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **नाटक का लक्षण -** 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यं'
- **रूपक के दश भेद हैं-** (1) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) प्रहसन (5) डिम (6) व्यायोग (7) समवकार (8) वीथी (9) अङ्क (10) ईहामृग
- पांच अर्थप्रकृतियां + पांच अवस्थाएं मिलकर **पांच सन्धियां** बनाती हैं।

33. बर्नेल - महोदयानुसारं ब्राह्मीलिपेरक्षराणामुत्पत्तिः सञ्जाता-

(a) हिमिअरेटिक - अक्षरेभ्यः (b) अरमाइक - अक्षरेभ्यः
(c) सिलोन- अक्षरेभ्यः (d) मिसर- अक्षरेभ्यः

उत्तर–(b)

बर्नेल महोदयानुसार ब्राह्मी लिपि अक्षरों की उत्पत्ति अरमाइक लिपि के अक्षरों से हुई है।

ब्राह्मी लिपि पूर्णतया भारतीय लिपि है। इसके प्राचीनतम लेख 350 ई.पू. से लेकर 300ई. तक मिलते हैं। सबसे प्राचीन लेख 'एरण' से प्राप्त सिक्का है। ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।

250 ई.पू. के लगभग अशोक के शिलालेख और स्तम्भ लेख प्राप्त होते हैं इनमें मुख्य रूप से कालसी, दिल्ली, गिरनार से प्राप्त होते हैं

ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति पाश्चात्य विद्वानों ने फोनोशी, सामी, चीनी लिपि से माना है।

उत्तरी सेमेटिक मूल के मत को डॉ बूलर ने व्यक्त किया। बर्नेल का मत है कि फिनिशियन से अरमाइक लिपि तथा इससे ब्राह्मी लिपि का जन्म हुआ।

34. कस्य मतानुसारं फिनिशिअन - लिपेः 22 अक्षरेभ्यः ब्राह्मीलिपेः 22 अक्षरणामुत्पत्तिरभवत् -

(a) बूलरमहोदयस्य
(b) आइजकटेलरमहोदयस्य
(c) लेनोर्मंट - महोदयस्य
(d) बर्नेल -महोदयस्य

उत्तर–(a)

फिनिशिअन लिपि के 22 अक्षरों से ही ब्राह्मी लिपि के 22 अक्षरों की उत्पत्ति हुयी है। ऐसा बूलर महोदय का मत है।

बूलर महोदय ने कहा है कि ब्राह्मी लिपि में प्रयुक्त 22 अक्षर उत्तरी सेमेटिक अक्षरों से निर्मित है।

सेमेटिक मुख्य रूप से तीन शाखाओं में विभाजित है-
उत्तरी सेमेटिक, दक्षिणी सेमेटिक, फिनिशिअन।

- उत्तरी सेमेटिक को व्यक्त करने का श्रेय डॉ. बूलर को जाता है।
- दक्षिणी सेमेटिक से ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति टेलर, डीक, कैनन महोदय मानते हैं।
- फिनिशिअन और ब्राह्मी लिपि के छः वर्णों में साम्यता है- जैसे- ट, थ, ठ, अ, क, और ग वर्ण समान हैं।

35. किं पुराणं महाभारतस्य परिशिष्टम् ?

(a) वायुपुराणम् (b) पद्मपुराणम्
(c) मत्स्यपुराणम् (d) हरिवंशपुराणम्

उत्तर–(d)

हरिवंश पुराण महाभारत के परिशिष्ट के रूप में वर्णित है। इसमें यादवों की कथा विस्तारपूर्वक वर्णित है।

पुराण का लक्षण-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।

सर्ग - सृष्टि की उत्पत्ति
प्रतिसर्ग - प्रलय एवं सृष्टि का पुनः प्रादुर्भाव
वंश - देवों और ऋषियों की वंशावली
मन्वन्तर - मनु के काल की मुख्य घटनाएं
वंशानुचरित - सूर्य और चन्द्रवंशीय राजाओं का जीवन चरित,
पांचों लक्षण विष्णु पुराण में प्राप्त होते हैं।
पुराणों में 18 महापुराण और 18 उपपुराण हैं,

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

मौर्य वंशावली - विष्णु पुराण गुप्त वंशावली - वायु पुराण

आन्ध्र वंशावली - मत्स्य पुराण

- अग्निपुराण को 'विश्वकोश' भी कहा जाता है।
- ब्रह्मपुराण को 'आदिपुराण' भी कहा जाता है।
- वायुपुराण को 'शिवपुराण' कहा जाता है।

36. 'ब्राह्मीलिपेराविष्कारका भारतीया आसन्' इति को मन्यते?

(a) जार्जब्यूलर -महोदयः (b) बर्नेल - महोदयः

(c) वेबर- महोदयः (d) एडवर्डथामस- महोदयः

उत्तर–(d)

एडवर्डथामस महोदयानुसार ब्राह्मी लिपि के आविष्कारक भारतीय हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति फोनोशी लिपि, सामी लिपि या चीनी लिपि से मानते हैं।

- फ्रेंच विद्वान् कुपेरी ने चीनी से ब्राह्मी की उत्पत्ति मानी है। चीनी चित्रलिपि है और ब्राह्मी ध्वनि -लिपि है।
- ग्रीक या फोनीशी लिपि के समर्थक विल्सन, प्रिंसेप, अल्फ्रेड मूलर, सेनार्ट हैं।
- सामी लिपि से ब्राह्मी की उत्पत्ति के समर्थक ब्यूलर, विलियम जोन्स, वेबर, टेलर है।
- सामी और ब्राह्मी लिपि में अत्यधिक साम्यता प्राप्त होती है। ब्राह्मी लिपि में भारतीय ध्वनियों का समावेश है। संयुक्त वर्णों को एक साथ स्पष्ट रूप में सूचित करना ब्राह्मी की विशेषता है।

37. मनुमते वेदप्रदानादाचार्यं परिचक्षते -

(a) गुरुम् (b) उपाध्यायम्

(c) पितरम् (d) गुरुतरम्

उत्तर–(c)

मनुस्मृति के अनुसार वेद का दान करने से आचार्य को पिता कहा जाता है।

''वेद प्रदानादाचार्यं पितरं परिचक्षते।

न ह्यस्मिन्नयुज्यते कर्म किञ्चिदामौञ्जिबन्धनात् ।।17।।

वेद की आज्ञानुसार ब्राह्मण का जन्म प्रथम माता से, दूसरा यज्ञोपवीत में और तीसरा यज्ञ की दीक्षा में होता है। इन तीन जन्मों में यज्ञोपवीत के चिह्नवाला जो ब्रह्मजन्म है उसमें इस ब्राह्मण की गायत्री माता और आचार्य पिता कहलाता है।

- जो ब्राह्मण वेद के एक भाग और वेदांगों को जीविका के लिए पढ़ाता है वह उपाध्याय कहा जाता है।
- जो ब्राह्मण किसी के गर्भाधान आदि कर्मों को विधिपूर्वक करता है तथा अन्न से पालन करता है वह ब्राह्मण गुरू कहलाता है।
- दश उपाध्यायों से आचार्य, सौ आचार्यों से पिता और हजार पिताओं से माता अधिक है।

38. 'कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः' इति कौटिलीयमते कस्य वैशिट्यमस्ति?

(a) वैदेहकस्य (b) तापसस्य

(c) गृहपतिकस्य (d) ब्रह्मचारिणः

उत्तर–(c)

''कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः गृहपतिव्यञ्जनः'' यह गृहपतिक गुप्तचर का लक्षण है।

अर्थशास्त्र में स्थायी गुप्तचर के नौ विभाग किए गए हैं-

(1) कापटिक (2) उदास्थिक (3) वैदेहक (4) गृहपतिक (5) तापस (6) सत्री (7) तीक्ष्ण (8) रसद (9) भिक्षुकी

- प्रगल्भ और विद्यार्थी की वेशभूषा को धारण करने वाला कापटिक गुप्तचर कहलाता है।
- बुद्धिमान, सदाचारी, संयासी की वेशभूषा- उदास्थित गुप्तचर कहलाता है।
- सिर मुंडवाकर या जटा धारण कर राजा का कार्य सम्पादन करने वाला तापस गुप्तचर कहलाता है।
- बुद्धिमान, पवित्र हृदय तथा गरीब किसान के वेश में रहने वाले गुप्तचर के गृहपतिक कहते हैं।

39. मनुमते कः द्विज- सान्वयः शूद्रत्वं प्राप्नोति अधोलिखितेषु?

(a) वेदं परित्यज्य अन्यत्र श्रमं कुर्वन्

(b) प्रातरुत्थाय स्नानमकुर्वन्

(c) ब्राह्मणग्रन्थान् वेदं स्वीकुर्वन्

(d) एकेश्वरवादं निन्दयन्

उत्तर–(a)

''जो द्विज वेदादि का परित्याग कर अन्य स्थान पर श्रम करता है वह सकुटुम्ब शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है।

- ब्राह्मण तप करता हुआ सदा वेद का ही अभ्यास करता रहे क्योंकि इस लोक में वेद का अभ्यास ही ब्राह्मण का बड़ा भारी तप कहा गया है।

''योऽनधीव्य द्विजो वेदमन्त्रय कुरुते श्रमम् ।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।

अर्थात् जो ब्राह्मण वेद को न पढ़कर और शास्त्रों में परिश्रम करता है वह जीते जी कुटुम्ब सहित शीघ्र शूद्र हो जाता है।

40. अधोऽङ्कितेषु ब्राह्मीलिपेरुद्भवसिद्धान्तेषु कतमो विदेशी-सिद्धान्तो नास्ति?

(a) फोनिशियन- उद्भवसिद्धान्तः

(b) द्रविड- उद्भवसिद्धान्तः

(c) दक्षिणी-सामीलिपि - उद्भवसिद्धान्तः

(d) उत्तरी-सामीलिपि- उद्भवसिद्धान्तः

उत्तर–(b)

ब्राह्मी लिपि के उद्भव सिद्धान्त में द्रविड़-उद्भव सिद्धान्त समाहित नहीं है। पाश्चात्य विद्वानों ने ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति फोनोशी लिपि, दक्षिणी सामी लिपि, उत्तरी सामी लिपि से माना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ग्रीक या फोनोशी लिपि से उत्पत्ति विल्सन, प्रिंसेप, अल्फ्रेड मूलर, सेनार्ट आदि मानते हैं। इनके मतानुसार सिकन्दर के आक्रमण के समय यूनानियों से सम्पर्क हुआ और इस लिपि का विकास हुआ।
- व्यूलर, विलियम जोन्स, वेबर, टेलर आदि ने ब्राह्मी की उत्पत्ति सेमेटिक भाषाओं से माना है।
- सामी लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती है, ब्राह्मी बाएं से दाएं।
- फ्रेंच विद्वान् कुपेरी ने चीनी से ब्राह्मी की उत्पत्ति मानी है।
- चीनी और ब्राह्मी पूर्णतया भिन्न है- चीनी चित्रलिपि है और ब्राह्मी ध्वनि लिपि है।

41. अधुना - प्राप्तेषु सामवेदस्य ब्राह्मणेषु द्वौ ब्राह्मणौ कौ स्तः?

(A) चरक- ब्राह्मणम्　　(B) गालव- ब्राह्मणम्
(C) संहितोपनिषद् - ब्राह्मणम्　　(D) वंशब्राह्मणम्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C)　　(b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D)　　(d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(c)

संहितोपनिषद् और वंश ब्राह्मण सामवेद का ब्राह्मण ग्रन्थ है। अन्य वेदों की अपेक्षा सामवेद के ब्राह्मणों की संख्या अधिक है। सामवेद के 8 ब्राह्मणग्रन्थ उपलब्ध हैं-
(1) तांड्य ब्राह्मण, (2) षडविंश, (3) सामविधान, (4) आर्षेय, (5) देवताध्याय, (6) उपनिषद् ब्राह्मण, (7) संहितोपनिषद्, (8) वंश ब्राह्मण।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ -ऐतरेय और कौषीतकि (शांखायन)
शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ - शतपथ ब्राह्मण
कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मणग्रन्थ - तैत्तिरीय ब्राह्मण
अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण - गोपथ ब्राह्मण है।
ऋग्वेद का आरण्यक - ऐतरेय और शांखायन आरण्यक
यजुर्वेद का आरण्यक - बृहदारण्यक और तैत्तिरीय आरण्यक
सामवेद का आरव्यक- तलवकार आरण्यक (जैमिनि शाखा) **अथर्ववेद** का कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं है।

42. अधुना तैत्तिरीय-नाम्ना प्रसिद्धौ कौ ग्रन्थौ स्तः?

(a) ब्राह्मणम्　　(b)व्याकरणम्
(c) उपनिषत्　　(d)छन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C)　　(b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D)　　(d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(a)

तैत्तिरीय के नाम से ब्राह्मण और उपनिषद् दोनों प्रसिद्ध हैं। कृष्ण यजुर्वेद संहिता के ब्राह्मण, उपनिषद् तथा आरण्यक सभी में तैत्तिरीय अत्यधिक प्रसिद्ध है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

ऋग्वेद की शाखाएं - शाकल तथा बाष्कल
शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएं - माध्यन्दिन और काण्व
कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएं - तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल
सामवेद की शाखाएं - कौथुम, राणायनीय , जैमिनीय
अथर्ववेद की शाखाएं - शौनक और पैप्पलाद
ऋग्वेद के उपनिषद् -ऐतरेय , कौषीतकि
शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद् - ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्
कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद्- तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर ,मैत्रायणी, महानारायण
सामवेद के उपनिषद् - छान्दोग्य और केनोपनिषद्
अथर्ववेद के उपनिषद् - प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्योपनिषद्

43. वेदभाष्यकारेषु कौ याज्ञिकौ भाष्यकारौ स्तः?

(A) स्वामी दयानन्दः सरस्वती　　(B) सायणः
(C) उवटः　　(D) आत्मानन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C)　　(b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D)　　(d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(d)

सायण और उव्वट वेदों का व्याख्यान याज्ञिक दृष्टि से करते हैं। आचार्य यास्क प्रथम आचार्य हैं जिसने वेदों की व्याख्या के लिए आवश्यक नियमों का निर्देश किया है। परवर्ती आचार्यों ने इन्हीं के निर्देशों का पालन किया है।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नैरुक्त- प्रक्रिया का आश्रय लेकर वेदों की नयी व्याख्या प्रस्तुत की।
- पं. मधुसूदन ओझा वैज्ञानिक व्याख्या करने वालों में अग्रगण्य हैं।
- डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल- ओझा जी व्याख्या पद्धति के अनुयायी हैं,

योगी अरविन्द- ये रहस्यवादी दृष्टिकोण के थे, इनका कहना था कि वेदों में सभी ज्ञान-विज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं।

- आत्मानन्द - इनका ऋग्वेद के 'अस्यवामीय' सूक्त पर भाष्य है।
- श्री सातवलेकर - इनको आधुनिक युग का सायण माना जाता है। इन्होनें चारों वेदों, तैत्तिरीय, मैत्रायणी , काठक, दैवत संहिता के विशुद्ध संस्करण निकाले हैं।

44. हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
''सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।''
अस्मिन् मन्त्रे को ऋषिः कश्छन्दः?

(A) हिरण्यगर्भऋषिः (B) जगती छन्दः
(C) प्रजापतिऋषिः (D) त्रिष्टुप् छन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C) (b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(b)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य ..... कस्मै देवाय हविषा विधेम– इस मन्त्र के ऋषि हिरण्यगर्भ हैं और त्रिष्टुप् छन्द है।
हिरण्यगर्भसूक्त के देवता **'क संज्ञक प्रजापति'** हैं। यह सूक्त दशवें मण्डल का है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके ऋषि मधुच्छन्दा, देवता-अग्नि और छन्द गायत्री है।
- वरुण सूक्त के ऋषि शुनः शेप, देवता-वरुण और छन्द-गायत्री है।
- इन्द्र सूक्त के ऋषि गृत्समद, देवता- इन्द्र और छन्द- त्रिष्टुप् है।
- नासदीय सूक्त के ऋषि परमेष्ठी प्रजापति और छन्द त्रिष्टुप् है।

45. 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत् कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।'
अस्य मन्त्रांशस्य को ऋषिः का च देवता?

(A) परमेष्ठी नाम प्रजापतिर्ऋषिः (B) नारायणः ऋषिः
(C) विसृष्टिः देवता (D) परमात्मा देवता

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C) (b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(b)

'को अद्धा वेद क इह प्रवोचत्' – इस मन्त्र के ऋषि परमेष्ठी प्रजापति और देवता परमात्मा हैं। यह मन्त्र नासदीय सूक्त से सम्बन्धित है। इसमें त्रिष्टुप् छन्द है। नासदीय सूक्त दशवें मण्डल का 129वां सूक्त है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सवितृ सूक्त के ऋषि हिरण्यस्तूप तथा देवता सविता हैं।
- विष्णु सूक्त के ऋषि दीर्घतमा तथा देवता विष्णु हैं। इसमें त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है।
- इन्द्र सूक्त के ऋषि गृत्समद तथा देवता इन्द्र हैं, इसमें त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है।
- उषस् सूक्त के ऋषि विश्वामित्र है, इसमें त्रिष्टुप् छन्द प्रयुक्त है।
- अश्विनौ सूक्त के ऋषि वसिष्ठ तथा देवता युगल अश्विनौ है।
- पुरुष सूक्त के ऋषि नारायण और देवता पुरुष हैं

46. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

(a) सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः
(b) धम्मपदम्
(c) त्रिरत्नानि
(d) योगदर्शनम्

अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (B) एवम (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (A) एवम् (B) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(b)

जैन दर्शन के अनुसार त्रिरत्न सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र मोक्षप्राप्ति के साधन माने जाते हैं-

''सम्यग् दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः''

- धम्म पद बौद्ध दर्शन से सम्बन्धित हैं।
- अपोहवाद बौद्ध दर्शन का सिद्धान्त है।
- सप्तभङ्गीनय जैन दर्शन का सिद्धान्त है।

47. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

(A) षोडशपदार्थाः सन्ति (B) सप्तपदार्थाः सन्ति
(C) न्यायदर्शम् सन्ति (D) जैमिनिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (D) (b) (C) एवम् (D)
(c) (A) एवम् (C) (d) (B) एवम् (C)

उत्तर–(c)

न्याय दर्शन 16 पदार्थों को स्वीकार करता है-
(1) प्रमाण (2) प्रमेय (3) संशय (4) प्रयोजन (5) दृष्टान्त (6) सिद्धांन्त (7) अवयव (8) तर्क (9) निर्णय (10) वाद (11) जल्प (12) वितण्डा (13) हेत्वाभास (14) छल (15) जाति (16) निग्रह स्थान।
इस प्रकार 16 पदार्थों का उल्लेख तर्कभाषाकार ने किया है।

- वैशेषिक दर्शन सात पदार्थ मानता है-
  'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः' सप्त पदार्था।
- द्रव्य नौ प्रकार का होता है-
  'पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकाल दिगात्ममनांसि नवैव'।
- उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण एवं गमन के भेद से पाँच प्रकार के कर्म हैं।

48. ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यानुसारं ब्रह्मणोऽस्तित्वप्रसिद्धिः कस्माद् ज्ञायते?

(a) बृहतेर्धातोरर्थानुगमात् (b) पश्चप्रयाजेभ्यः
(c) प्रकृतियागाद् (d) सर्वस्यात्मत्वाद्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(d)

'ब्राह्मणोऽस्तित्व प्रसिद्धिः सर्वस्यात्मत्वात् 'ब्रह्मशब्दस्य हि व्युत्पाद्यमानस्य नित्य शुद्धत्वादयोऽर्थाः प्रतीयन्ते',
बृहतेर्धातोरर्थानुगमात् । सर्वस्यात्मत्वाच्च ब्रह्मास्तित्वप्रसिद्धिः।
यहां बृहते के 'बुद्धं' धातु के अर्थ से बृह् के नित्यशुद्धत्वादि अर्थों की प्रतीति होती है।
ब्रह्म प्रसिद्ध है तो उसकी जिज्ञासा नहीं होनी चाहिए और यदि प्रसिद्ध नहीं है तो उसकी जिज्ञासा हो ही नहीं सकती।
''तत्पुनर्ब्रह्म प्रसिद्धम् अप्रसिद्धम् वा स्यात् । यदि प्रसिद्धं न जिज्ञासितव्यम् । अथाप्रसिद्धं नैव शक्यं जिज्ञासितुमिति। सभी में आत्मा होने से ब्रह्म प्रसिद्ध है।

49. न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीदिशा व्याप्तेर्लक्षणमस्ति-

(a) साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः
(b) व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः
(c) हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यम्
(d) सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्ध्यभावः

(a) (A) एवम (C) (b) (B) एवम् (D)
(c) (A) एवम् (D) (d) (C) एवम् (D)

उत्तर–(a)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के अनुमानखण्ड में व्याप्ति के दो लक्षण बतलाये गये हैं-
1. व्याप्ति साध्यवदनन्यस्मिन्न सम्बन्धः उदाहृतः (पूर्वपक्ष व्याप्ति)
2. अथवा हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येनहेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्ति-रुच्यते (सिद्धान्त व्याप्ति)।
'न्यायसिद्धान्तमुक्तावली' न्यायशास्त्र का प्रमुख ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचयिता श्रीविश्वनाथपञ्चानन हैं।
- **परामर्श का लक्षण -** व्याप्यस्य पक्ष वृत्तित्वधीः परामर्शः उच्यते।
- **पक्षधर्मता का लक्षण -** सिषाधयिषाविरहविशिष्ट सिद्ध्यभावः।

50. योगसूत्रानुसारेण लिखत अधोऽङ्कितेषु कयो द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

(A) अनुमानप्रमाणम् (B) यमाः
(C) चित्तभूमिः (D) चित्तवृत्तिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C) (b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(b)

प्रमाण चित्तवृत्ति के अन्तर्गत अनुमान प्रमाण स्वीकृत है।
''योगश्चित्तवृत्ति निरोधः''
पञ्चचित्तवृत्तियां - प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।
प्रमाण वृत्ति - प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि।
विपर्यय - विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् ।
विकल्प - शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः।
निद्रा- अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा।
स्मृति : - अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः।
निरोध :- अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः।
- ऐहिक और पारलौकिक विषयों से निस्पृह चित्त का वशीकार संज्ञा नामक वैराग्य होता है।

51. अधस्तनेषु मात्रिकापश्रुतेरुदाहरणे स्तः-

(A) पित्सति- पतति- पातयति (B) गेएन-गिंग-गेगांगेन
(C) गतः गमनम् - जगाम (D) कत्ल् - कातिल - मकतूल

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (A) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (C) एवम् (D)

उत्तर–(b)

ध्वनि परिवर्तन के भेदों में अपश्रुति के दो भेद होते हैं।
गुणीय अपश्रुति (2) मात्रिक अपश्रुति
मात्रिक अपश्रुति - इसमें ह्रस्व, दीर्घ आदि मात्राओं में परिवर्तन होता है। स्वर की प्रकृति समान रहती है, उसे दीर्घ, गुण आदि हो जाता है। इसका प्रमुख कारण उदात्त स्वर का होना या न होना माना जाता है।
इसके संस्कृत के उदाहरण हैं -
पित्सति पतति पातयति
गतः गमनम् जगाम
नीतः नयति नायकः
श्रुतः श्रोता श्रावयित
गुणीय अपश्रुति का उदाहरण -
अरबी - कत्ल, कातिल, मकतूल
जर्मन - गेएन, गिंग, गेगांगेन
रूसी - दार, दरीत्य, त्येच

52. के वर्णाः स्वयंप्रकाशन्ते?

(A) मूलस्वराः (B) अन्तःस्थाः

(C) संयुक्तस्वराः (D) ऊष्मवर्णाः

अत्र समीचिनं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (D)

(c) (A) एवम् (C) (d) (C) एवम् (D)

उत्तर–(c)

''स्वयं राजन्ते इति स्वराः'' (स्वर स्वयं में प्रकाशित होते हैं।)

यत्न दो प्रकार का होता है - आभ्यन्तर और बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न - स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्विवृतविवृतसंवृत भेदात् ।

बाह्य प्रयत्न - (ii) विवारः संवारः.श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो-महाप्राण उदात्तोऽनुदात्तः स्वरितश्चेति ।

खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च

हशः संवारा नादा घोषाश्च

- स्वर स्वयं में ही पूर्ण रहते हैं इनके उच्चारण के लिए किसी अन्य की आवश्यकता नहीं पड़ती है ये स्वयं में प्रकाशित होते हैं।
- व्यञ्जन का उच्चारण बिना स्वर के पूर्ण नहीं होता है।

वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः।

वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः।

53. वाक्यपदीये भर्तृहरिणा कतमौ शब्दार्थयोः सम्बन्धौः स्वीकृतौ?

(A) संयोगः (B) कार्यकारणभावः

(C) समवायः (D) योग्यता

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)

(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(d)

भर्तृहरि जी ने शब्द और अर्थ के दो सम्बन्ध बतलाये हैं- कार्यकारणभाव सम्बन्ध और योग्यता सम्बन्ध

''कार्यकारण भावेन योग्यभावेन च स्थिताः।

धर्मे ये प्रत्यये चाङ्गं सम्बन्धाः साध्वसाधुषु।।

वाक्यपदीयम् की रचना भर्तृहरि ने की है। इसमें तीन काण्ड हैं। यह व्याकरण शास्त्र का प्रमुख दार्शनिक ग्रन्थ है।

तीन काण्ड- क्रमशः हैं- ब्रह्म काण्ड- वाक्यकाण्ड- पदकाण्ड।

54. 'तनुविस्तारे' धातोः विधिलिङ्ि प्रथमपुरुषैकवचने रुपद्वयं भवति-

(A) तन्यात् (B) तनुयात्

(C) तनिषीष्ट (D) तन्वीत

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (A) एवम् (C)

(c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(d)

'तनु विस्तारे' धातु से विधिलिङ् प्रथम पु. एकवचन में तनुयात्, तन्वीत रूप बनता है।

यह धातु 'तनादिगण' की प्रमुख धातु है। यह उभयपदी भी है।

तनु विस्तारे- तनु धातु विस्तार करना अर्थ में प्रयुक्त होता है, यहां उकार स्वरित है, उकार की इत्संज्ञा होने के पश्चात् तन् अवशिष्ट रहता है। स्वरितेत् होने के कारण यह उभयपदी भी है।

विधिलिङ परस्मैपद -

तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात्
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

आत्मनेपद -

तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

55. 'चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य' इत्यत्र 'द्वे-शीर्षे' इत्यनेन महाभाष्ये पतञ्जलिना किं गृहीतम् ?

(A) नित्यशब्दः (B) शिरःस्थानम्

(C) कार्यशब्दः (D)कण्ठस्थानम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (C) (b) (A) एवम् (B)

(c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(a)

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे - यहां द्वे शीर्षे से तात्पर्य शब्द के दो स्वरूप से है- नित्य और कार्य।

महाभाष्य में पतञ्जलि ने गौण प्रयोजन के अन्तर्गत 'चत्वारि' प्रयोजन में इसके विषय में वर्णन किया है-

'चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश।''।।

- चार सींग से तात्पर्य चार प्रकार के पदसमूह (परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी) और प्रकारान्तर से सुबन्त, तिङन्त, उपसर्ग और निपात से है।
- तीन पैर का अर्थ तीनों काल से है- भूत, भविष्यत् और वर्तमान।
- दो सिर शब्द के दो स्वरूप- नित्य और कार्य हैं।
- सात हाथ-सातों विभक्तियां हैं।
- पतञ्जलि ने पांच मुख्य प्रयोजन भी बतलाये हैं-

'रक्षोहागमलघ्वसंदेहार्थम्।' (वेदों की रक्षा, विभक्तियों के परिवर्तन आगम, सुगमता तथा संशयराहित्य ये पांच व्याकरण अध्ययन के प्रयोजन हैं।

56. रससम्प्रदायस्य आचार्यौ स्तः?

(A) भरतमुनिः (B) वामनः
(C) क्षेमेन्द्रः (D) अभिनवगुप्तः
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) एवम (B) (b) (A) एवम् (C)
(c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

उत्तर–(c)

आचार्य भरत और अभिनवगुप्त रससम्प्रदाय के आचार्य हैं।
आचार्य भरत ने जिस रससूत्र की व्याख्या की थी- आगे चलकर चार प्रमुख आचार्यों ने रससूत्र की अपने-अपने मतानुसार व्याख्या किए-

- भट्टलोल्लट - मीमांसक - उत्पत्तिवाद
- शङ्कुक - नैयायिक - चित्रतुरगन्याय - अनुमितिवाद
- भट्टनायक - सांख्यशास्त्री - भावकत्व और भोजकत्व - भुक्तिवाद
- अभिनवगुप्त - वेदान्ती - शैव - अभिव्यक्तिवाद
- **अलङ्कार समप्रदाय के आचार्य है -** भामह, दण्डी , उद्भट्
- **रीति सम्प्रदाय के आचार्य हैं -** वामन
- **ध्वनि सम्प्रदाय के आचार्य हैं -** आनन्दवर्धन, मम्मट
- **वक्रोक्ति सम्प्रदाय के आचार्य हैं -** कुन्तक

57. हर्षस्य कृती इमे स्तः-

(A) रत्नावली (B) नैषधीयचरितम्
(C) कर्पूरमञ्जरी (D) प्रियदर्शिका
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(1) (A) एवम (D) (2) (B) एवम् (C)
(3) (C) एवम् (D) (4) (B) एवम् (D)

उत्तर–(a)

रत्नावली और प्रियदर्शिका हर्ष की कृतियां हैं। इसके अतिरिक्त एक अन्य नाटक 'नागानन्द' भी है।

- प्रियदर्शिका चार अङ्कों की नाटिका है, इसमें राजा उदयन और प्रियदर्शिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।
- नागानन्द पांच अङ्कों का नाटक है, इसमें जीमूतवाहन नामक विद्याधर राजकुमार को अपनी बलि देकर शंखचूड. नामक सर्प को गरुण से बचाने का वर्णन है।
- रत्नावली चार अङ्कों की नाटिका है, इसमें राजा उदयन और रत्नावली (सागरिका) के प्रणय और परिणय का वर्णन हैं।

अन्य रचनाकार एवं उनकी रचनाएं -
अश्वघोष - बुद्धचरितम् , सौन्दरानन्द।
भवभूति - उत्तररामचरितम् , महावीरचरितम्, मालतीमाधव।
अम्बिकादत्तव्यास - शिवराजविजयम् ।
भारवि - किरातार्जुनीयम् ।

58. पाश्चात्यविचारकस्य अरस्तूमहोदयस्य काव्यशास्त्रीयौ ग्रन्थौ स्तः?

(A) पेरिइप्सुस (B) भाषणशास्त्रम्
(C) सौन्दर्यशास्त्रम् (D) काव्यशास्त्रम्
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (C) एवम् (D)

उत्तर–(d)

अरस्तू का काव्यशास्त्रीय ग्रंथ सौन्दर्यशास्त्रम् और काव्यशास्त्रम् है।
पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय विचारकों में अरस्तू, क्रोञ्चे, लोगिनुस, प्लेटो आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।
होमर और हेसिओड के काव्य में पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिंतन के प्रारम्भिक बिन्दु मौजूद मिलते है।
अरस्तू सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण के थे, इन्होनें विरेचन-सिद्धान्त प्रस्तुत किया।
इनका काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ पोरिपोइएतिकेस है।
क्रोञ्चे का 'अभिव्यञ्जनावाद' प्रसिद्ध है, इनके ग्रन्थ का नाम इस्थेटिक है।
अरस्तू प्लेटो के शिष्य थे, इनका अनुकरण सिद्धान्त अत्यन्त प्रसिद्ध है।

59. काव्यप्रकाशानुसारं काव्यप्रयोजनं किमभीप्सितं भवति?

(A) शक्तिः (B) यशः
(C) व्यवहारः (D) निपुणता
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

उत्तर–(b)

काव्यप्रकाशानुसार काव्यप्रयोजन क्रमशः यश का जनक, अर्थोत्पादक, व्यवहार का बोधक, शिव अर्थात् अनिष्ट का नाशक, पढ़ने के साथ ही परमानन्द को प्रदान करने वाला और स्त्री के समान उपदेश प्रदान करने वाला होता है।

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।'
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेश युजे।।

काव्यप्रकाश आचार्य मम्मट द्वारा विरचित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। इसमें दश उल्लास है, प्रथम उल्लास में काव्यप्रयोजन, हेतु और काव्यलक्षणों का वर्णन है। नवम् एवं दशम् उल्लास में अलङ्कारों का वर्णन है।

काव्य हेतु -
'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।

काव्य के तीन भेद - उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार का बतलाया गया है।

60. आलोकविशाला मे सहसा तिमिरप्रवेशविच्छिन्ना।
उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवान्धकारेण।।
श्लोकेऽस्मिन् कः छन्दः कश्चालङ्कारः?

(A) रूपकम् (B) आर्या
(C) वसन्ततिलका (D) उत्प्रेक्षा

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (C) एवम् (D)

उत्तर–(c)

आलोकविशाला में सहसा- इस श्लोक में आर्या छन्द और उत्प्रेक्षालङ्कार है।

उत्प्रेक्षा अलङ्कार

'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्' उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना उत्प्रेक्षा कहलाती है।

आर्या छन्द की लक्षण

"यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या।।"

जिसके प्रथम चरण में तथा तृतीय चरण में भी बारह मात्राएं हो द्वितीय चरण में अठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएं हो वह आर्या है।

इन्द्रवज्रा - स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।
उपेन्द्रवज्रा - उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।
वंशस्थ - जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।
मालिनी- ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
निदर्शनालङ्कार - अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः।
समासोक्ति - परोक्ति भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।
यमक- अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः।

61. अधोङ्कितेषु वाल्मीकिरामायणं कयोः काव्ययोः उपजीव्यम्?

(A) नैषधीयचरितम् (B) सेतुबन्धः
(C) भट्टिकाव्यम् (D) किरातार्जुनीयम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

उत्तर–(b)

सेतुबन्ध और भट्टिकाव्य का उपजीव्य वाल्मीकि रामायण है। भट्टिकाव्य के लेखक महाकवि भट्टि हैं। यह 22 सर्गों में विभक्त है। सेतुबन्ध-प्रवरसेन कृत है। यह महाकाव्य 15 आश्वासों में विभक्त है।

रामायण पर आश्रित काव्य-ग्रन्थ-

कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्यम् , कुमारदासकृत - जानकीहरण, क्षेमेन्द्रकृत रामायण-मंजरी, वामनभट्ट बाणकृत -रघुनाथाभ्युदय

नाटक ग्रन्थ - भासकृत अभिषेक और प्रतिमानाटक, दिङ्नागकृत कुन्दमाला, भवभूतिकृत महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्, मुरारिकृत अनर्घराघव, राजशेखर का बालरामायण, हनुमानकृत महानाटक, जयदेव कृत प्रसन्नराघव।

चम्पू ग्रन्थ - भोजकृत रामायण-चम्पू, वेंकटाध्वरि-कृत उत्तरचम्पू

- नैषधीयचरितम् 22 सर्गों में विभक्त श्रीहर्ष का महाकाव्य ग्रन्थ है।
- किरातार्जुनीयम् 18 सर्गो में विभक्त भारवि की कृति है।

62. महाभारतस्य वनपर्वणि के उपाख्याने स्तः?

(A) शकुन्तलोपाख्यानम् (B) मत्स्योपाख्यानम्
(C) शिशुपालोपाख्यानम् (D) रामोपाख्यानम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

उत्तर–(c)

महाभारत के वनपर्व में मत्स्योपाख्यान तथा रामोपाख्यान वर्णित है। महाभारत में 18 पर्व हैं-

(1) आदि पर्व, (2) सभापर्व, (3) वनपर्व, (4) विराट् पर्व, (5) उद्योगपर्व, (6) भीष्म पर्व (अर्जुन को गीता का उपदेश), (7) द्रोण पर्व, (8) कर्णपर्व, (9) शल्य पर्व, (10) सौप्तिक पर्व, (11) स्त्री पर्व, (12) शान्ति पर्व (युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्षसमबन्धी सैकड़ों प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर), (13) अनुशासन पर्व, (14) आश्वमेधिक पर्व, (15) आश्रमवासिक पर्व, (16) मौसलपर्व, (17) महाप्रस्थानिक पर्व, (18) स्वर्गारोहण पर्व

शिशुपालोपाख्यान - महाभारत के सभापर्व में हैं।
शकुन्तलोपाख्यान - महाभारत के आदिपर्व में है।

63. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे स्तः

(a) राजधर्मप्रकरणम् (b) विवाहप्रकरणम्
(c) लेख्यप्रकरणम् (d) दिव्यप्रकरणम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

उत्तर–(c)

याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में लेख्य और दिव्य प्रकरण की चर्चा हुई है।
इसमें कुल (25) प्रकरण हैं।
(1) साधारण व्यवहारमातृक प्रकरण, (2) असाधारणव्यवहारमातृक प्रकरण, (3) ऋणादान, (4) उपनिधि, (5) साक्षि, (6) लेख्य, (7) दिव्य, (8) दाय, (9)सीमाविवाद, (10) स्वामिपालविवाद, (11) स्वामिविक्रय, (12) दत्ताप्रदानिक, (13) क्रीतानुशय, (14) अभ्युपेताशुश्रूषा, (15) संविद्व्यतिक्रम, (16) वेतनादान, (17) द्यूतसमाह्वत्य, (18) वाक्पारुष्य, (19) दण्डपारुष्य, (20) साहस, (21) विक्रीयासम्प्रदान, (22) संभूयसमुत्थान, (23) स्तेय, (24) स्त्रीसंग्रहण, (25) प्रकीर्णप्रकरण।
याज्ञवल्क्य स्मृति में तीन अध्याय हैं-
(1) आचाराध्याय (2) व्यवहाराध्याय (3) प्रायश्चित्ताध्याय
- मिथ्या अभियोग लगाने वाले पर उस धन का दूना दण्ड देना चाहिए।

64. 'अहिंसा सत्यं शौचमसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च' इति कौटिलीयमते केषां धर्मः?

(A) सर्वेषामाश्रमाणाम् (B) सर्वेषां वर्णानाम्
(C) सर्वेषां प्राणिनाम् (D) सर्वेषां सम्प्रदायानाम्
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

उत्तर–(a)

'सर्वेषामहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च' अर्थात् प्रत्येक वर्ण और आश्रम का धर्म है कि वह किसी भी प्रकार की हिंसा न करें, सत्य बोलें, पवित्र रहे, किसी से ईर्ष्या-द्वेष न करें, दयावान और क्षमाशील बना रहें।
अर्थशास्त्र के कर्त्ता कौटिल्य हैं, यह 15 अधिकरणों में विभक्त है। इसमें 150 अध्याय, 180 विषय और 6000 श्लोक है।

65. मनुमतेरनधीयानो विप्रो कीदृशो भवति?

(a) काष्ठमयो हस्ती (b) शक्तिमयो सिंहः
(c) चर्ममयो मृगः (d) गतिमयोऽश्वः
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) एवम (B) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (A) (d) (D) एवम् (B)

उत्तर–(c)

बिना पढ़ा ब्राह्मण काष्ठमय हस्ती और चमड़े के हरिण के समान है।
''यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति।।
ब्राह्मणों का ज्ञान से, क्षत्रियों का वीर्य से, वैश्यों का धनधान्य से और शूद्रों का आयु से ही बड़प्पन होता है।

- जो ब्राह्मण वेद को न पढ़कर अन्य शास्त्रों में परिश्रम करता है वह जीते जी परिवारसहित शीघ्र शूद्र हो जाता है।
- वेद की आज्ञानुसार ब्राह्मण का जन्म प्रथम माता से, दूसरा यज्ञोपवीत में और तीसरा यज्ञ की दीक्षा में होता है।
- वेद का दान करने से आचार्य को पिता कहा जाता है।
- तीनों जन्मों में यज्ञोपवीत के चिह्नवाला जो ब्रह्मजन्म है उसमें ब्राह्मण की गायत्री माता और आचार्य पिता कहलाता है।

66. अधोनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) गोपथ - ब्राह्णम् (I) कृष्णयजुर्वेदः
(b) बृहदारयण्यकम् (II) सामवेदः
(c) आर्षेय- ब्राह्मणम् (III) अथर्ववेदः
(d) तैत्तिरीय - ब्राह्मणम् (IV) शुक्लयजुर्वेदः
(a) (A)- III, (B)- IV, (C)- II, (D)- I
(b) (A)- IV, (B)- I, (C)- III, (D)- II
(c) (A)- II, (B)- III, (C)- IV, (D)- I
(d) (A)- I, (B)- II, (C)- III, (D)- IV

उत्तर–(a)

ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ हैं- ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण।
शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ हैं - शतपथ ब्राह्मण।
कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ - तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेदीय ब्राह्मण के ब्राह्मण ग्रन्थ - तांड्य या पंचविश, षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान, आर्षेय, मंत्र, देवताध्याय, वंश, संहितोपनिषद् ब्राह्मण।
जैमिनीय (आर्षेय) ब्राह्मण, जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण
अथर्ववेद - गोपथ ब्राह्मण
ऋग्वेदीय आरण्यक है - ऐतरेय, शांखायन।
कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक - तैत्तिरीयारण्यक।
सामवेद और **अथर्ववेद** का कोई आरण्यक उपलब्ध नही है।

67. अधोनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) अग्निः - सूक्तः (I) आङ्गिरस- बृहस्पतिः
(B) रुद्रसूक्तः (II) मधुच्छन्दा - ऋषिः
(C) पर्जन्यसूक्तः (III) गृत्समद - ऋषिः
(D) ज्ञानसूक्तः (IV) भौमोऽत्रि- ऋषिः
(a) (A)- II, (B)- III, (C)- IV, (D)- I
(b) (A)- I, (B)- II, (C)- III, (D)- IV
(c) (A)- II, (B)- I, (C)- IV, (D)- III
(d) (A)- III, (B)- IV, (C)- I, (D)- II

उत्तर–(a)

- अग्निसूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा है, देवता अग्नि है तथा इसमें गायत्री छन्द प्रयुक्त है।
- रुद्रसूक्त के ऋषि गृत्समद और देवता रुद्र है तथा इसमें त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है।
- पर्जन्य सूक्त के ऋषि अत्रि और देवता पर्जन्य हैं। इसमें त्रिष्टुप्, जगती और अनुष्टुप् छन्द प्रयुक्त है।
- पुरुषसूक्त के ऋषि नारायण और देवता पुरुष हैं। विभिन्न वर्णों की उत्पत्ति इसी सूक्त में बतलायी गयी है।
- हिरण्यगर्भ सूक्त के ऋषि हिरण्यगर्भ और देवता **क संज्ञक प्रजापति** है।
- इन्द्रसूक्त के ऋषि गृत्समद और इसमें त्रिष्टुप् छन्द प्रयुक्त है।
- वरुणसूक्त के ऋषि शुनःशेप और देवता वरुण है।

68. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः-

(A) पुरुषः — (I) विकृतिः

(B) वाक् — (II) प्रकृतिर्विकृतिः

(C) शब्दः — (III) प्रकृतिः

(D) मूल प्रकृतिः — (IV) न प्रकृतिर्न विकृतिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A)- IV, (B)- III, (C)- I, (D)- II

(b) (A)- IV, (B)- II, (C)- I, (D)- III

(c) (A)- IV, (B)- I, (C)- II, (D)- III

(d) (A)- III, (B)- I, (C)- IV, (D)- II

उत्तर–(c)

पुरुष न प्रकृति और न ही विकृति है, वाक् विकृति है,
शब्द प्रकृतिविकृति है और मूलप्रकृति प्रकृति है।

कारिका-

''मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।

सांख्यशास्त्र में 25 तत्त्वों का विवरण है, यह चार प्रकार का है।

प्रकृति - सम्पूर्ण सृष्टि का कारण है, किन्तु किसी का कार्य नहीं है।

प्रकृति-विकृति - महत्तत्त्व → अहङ्कार→ पंच तन्मात्राएं (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) ये सात तत्त्व प्रकृति -विकृति दोनों ही है।

विकृति - पंचमहाभूत और 11 इन्द्रियां (5 ज्ञानेन्द्रियां ,5 कर्मेन्द्रियां, मन) कुल 16 पदार्थ विकृति है।

पुरुष- यह तत्त्व निर्विकार और निर्लिप्त है, न किसी का कार्य है और न कारण, अर्थात् दोनों से परे है।

69. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः-

(A) एतान्याकाशादीनां सात्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते — (I) मनबुद्धिचित्ताहंकाराः

(B) एते पुनराकाशादिगतसात्विकांशेभ्यो मिलितेभ्ययः उत्पद्यन्ते — (II) विज्ञानमयकोशः

(C) एतानि पुनराकाशादीनां रजोंऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते — (III) ज्ञानेन्द्रियाणि

(D) बुद्धिज्ञानेन्द्रियैः सहिता भवति — (IV) कर्मेन्द्रियाणि

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A)- III, (B)- I, (C)- IV, (D)- II

(b) (A)- IV, (B)- III, (C)- II, (D)- I

(c) (A)- I, (B)- II, (C)- III, (D)- IV

(d) (A)- III, (B)- II, (C)- I, (D)- IV

उत्तर–(a)

पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं- श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण। ये ज्ञानेन्द्रियां आकाशादि सूक्ष्मभूतों के सत्वांश से अलग-अलग क्रमानुसार उत्पन्न होती हैं।

'इयं बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो भवति' अर्थात् यह बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों सहित विज्ञानमय कोश कहलाती है।

- **कर्मेन्द्रियां -** वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ - ये कर्मेन्द्रियां आकाशादि के अमिलित रजोगुण के अंश से क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होती हैं।
- **प्राण-** अपान-व्यान-उदान तथा समान ये पाँच वायु हैं।
- विज्ञानमय कोश ज्ञानशक्ति से युक्त और कर्त्तारूप में होता है।
- मनोमयकोश इच्छाशक्ति से युक्त और करणरूप में है।
- प्राणमय कोश क्रियाशक्ति से युक्त और कार्यरूप में है।

तीनों कोश संयुक्त रूप से सूक्ष्मशरीर कहलाते हैं।

70. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) वाक्यपदीयम् — (I) हरदत्तः

(b) पदमञ्जरी — (II) भर्तृहरिः

(c) अष्टाध्याय्याः मिताक्षरावृतिः — (III) नागेशभट्टः

(d) स्फोटवादः नाम ग्रन्थः — (IV) अन्नम्भट्टः

अधस्तनेषु समीचीनं तालिकां चिनुत-

(a) (A)- I, (B)- III, (C)- II, (D)- IV

(b) (A)- II, (B)- I, (C)- IV, (D)- III

(c) (A)- III, (B)- II, (C)- I, (D)- IV

(d) (A)- IV, (B)- II, (C)- III, (D)- I

उत्तर–(b)

पदमञ्जरी - हरदत्त जी का ग्रन्थ है। यह व्याकरण ग्रन्थ जयादित्य और वामन की 'काशिका' टीका पर लिखी गयी है।

वाक्यपदीयम् - यह भर्तृहरि द्वारा विरचित है। इसमें व्याकरण का दार्शनिक विवेचन हुआ है। इसमें तीन काण्ड है- **आगम-वाक्य-प्रकीर्ण**। इसमें स्फोटवाद तथा शब्द से ही संसार के विवर्तित होने का सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है। स्फोटवाद के लेखक नागेशभट्ट हैं।

- अष्टाध्यायी की मिताक्षरावृत्ति के लेखक अन्नभट्ट हैं।
- महाभाष्य पर कैय्यट ने प्रदीप नामक टीका लिखी।
- चन्द्रगोमी ने बौद्धों के लिए चान्द्रव्याकरण बनाया तथा शर्ववर्मा ने ऐन्द्रव्याकरण के आधार पर कातन्त्र व्याकरण की रचना की।

71. प्रथमां सूची द्वितीयया सह मेलयतु-

प्रथम सूची	**द्वितीय सूची**
(A) वाव्रज्यते	(I) नामधातुक्रियापदम्
(B) अजिज्ञपत्	(II) यङ्लुगन्तक्रियापदम्
(C) स्वति	(III) यङन्तक्रियापदम्
(D) बोभवीति	(IV) सन्नन्तक्रियापदम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A)- III, (B)-IV, (C)-I, (D)-II

(b) (A)- II, (B)- III, (C)-IV, (D)-I

(c) (A)- I, (B)-II, (C)- III, (D)-IV

(d) (A)-IV, (B)- III, (C)-II, (D)-I

उत्तर–(a)

यङन्तप्रक्रिया - ''धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्।

जैसे- वाव्रज्यते

क्रिया का बार-बार होना अर्थ द्योत्य होने पर एक अच् वाले हलादि धातुओं से परे यङ् प्रत्यय होता है।

सन्नन्त प्रक्रिया - ''धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा,

जो इच्छार्थक इष् धातु का कर्म हो और इष् धातु के साथ समानकर्तृक भी हो उस धातु से इच्छा अर्थ में विकल्प से सन् प्रत्यय होता है।

जैसे- अजिज्ञपत्

यङ्लुक्प्रक्रिया - 'यङोऽचि च'

अच् प्रत्यय के परे होने पर यङ् का लुक् हो जाता है। चकारात् अच् के बिना भी कहीं-कहीं इसका लुक् होता है।

यथा- बोभवीति, बोभोति

72. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) दण्डी	(I) सौन्दरनन्दम्
(B) विल्हणः	(II) हर्षचरितम्
(C) अश्वघोषः	(III) दशकुमारचरितम्
(D) बाणभट्टः	(IV) विक्रमाङ्कदेवचरितम्

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुतः

(a) (A)- II, (B)- I, (C)-IV, (D)-III

(b) (A)- III, (B)-IV, (C)- I, (D)-II

(c) (A)- I, (B)- II, (C)- III, (D)-IV

(d) (A)- IV, (B)- III, (C)- II, (D)- I

उत्तर–(b)

दण्डी की प्रमुख कृतियां- दशकुमारचरितम्, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचिति, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य हैं।

विल्हण की कृतियां- विक्रमांकदेवचरित- में 18 सर्ग हैं।

अश्वघोष की रचनाएं हैं- बुद्धचरित, सौन्दरनन्द और शारिपुत्र प्रकरण।

सौन्दरनन्द में 18 सर्ग हैं, बुद्धचरित में 28 सर्ग हैं

बाणभट्ट की रचनाएं - हर्षचरितम्, कादम्बरी, चण्डीशतक, मुकुटताडितक, पार्वतीपरिण।

बाणभट्ट हर्ष के सभापण्डित थे। हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास है।

कादम्बरी कथा है और इसमें तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।

अन्य कृतियां - क्षेमेन्द्रकृतरामायणमंजरी, भारतमंजरी, कल्हण-राजतरंगिणी, पाणिनि -जाम्बवतीविजय (पातालविजय), कात्यायन - स्वर्गारोहण

प्रवरसेन - सेतुबन्ध, पतञ्जलि - महानन्द काव्य, हरिषेण- प्रयाग प्रशस्ति।

73. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः	(I) नलचम्पूः
(B) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखी भूतः	(II) नैषधीयचरितम्
(C) अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा ब्राह्नीव दौर्जनी संसद्वन्दनीया समेखला	(III) रत्नावली
(D) अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जन दर्शनातिथिम्	(IV) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A)- II, (B)- I, (C)- III, (D)-IV

(b) (A)- I, (B)- II, (C)-IV, (D)-III

(c) (A)- III, (B)- II, (C)-IV, (D)- I

(d) (A)-IV, (B)- III, (C)- I, (D)-II

उत्तर–(d)

''शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः'
अर्थात् शान्तिप्रधान तपस्वियों में जला देने वाला गुप्त तेज रहता है, यह पंक्ति कालिदास द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में राजा दुष्यन्त सेनापति से कहते हैं।

''आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतभिमुखी भूतः'
अर्थात् अनुकूल भाग्य दूसरे से भी और दिशा के अन्तिम भाग से इष्टवस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है। यह पंक्ति हर्ष द्वारा विरचित रत्नावली नाटिका में सूत्रधार कहता है।

''अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा......
यह पंक्ति त्रिविक्रमभट्ट प्रणीत नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास में दुर्जनों के विषय में कहा गया है।

''अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम् ''
यह पंक्ति श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् से उद्धृत है, इसमें दमयन्ती के स्वप्न का वर्णन है।

74. महाभारतस्य टीकाकाराणां कया टीकया सह सम्बन्धः

(A) विमलबोधः (I) ज्ञानदीपिका
(B) देवबोधः (II) लक्षाभरणटीका
(C) नारायणः (III) विषमश्लोकी
(D) वादिराजः (IV) निगूढार्थ -पदबोधिनी

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (A)- III, (B)- I, (C)-IV, (D)- II
(b) (A)- I, (B)- III, (C)- II, (D)- IV
(c) (A)- II, (B)- I, (C)- III, (D)- IV
(d) (A)- IV, (B)- II, (C)- I, (D)- III

उत्तर–(a)

विमलबोध की विषमश्लोकी टीका- यह सम्पूर्ण महाभारत पर है।

- देवबोध की ज्ञानदीपिका टीका है।
- नारायण की निगूढार्थ- पदबोधिनी टीका है।
- वादिराज की लक्षाभरण टीका है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

महाभारत महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रणीत् है, इसमें 18 पर्वों में कौरव-पाण्डवों का इतिहास है।

इसको जय, भारत, महाभारत के नाम से विकासक्रम के रूप में जाना जाता है। इसमें 1 लाख श्लोक होने के कारण इसको 'शतसाहस्री संहिता' के नाम से भी जाना जाता है। महाभारत की शैली पांचाली है और छन्द अनुष्टुप् है।

- व्यास ने महाभारत वैशम्यापन को सुनायी, वैशम्पायन ने जनमेजय को उसके नागयज्ञ में सुनाया।

75. अधोऽङ्कितेषु केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः ?

(A) हर्षः (I) सारनाथ- बौद्धप्रतिमालेखः
(B) पुलकेशिनद्वितीयः (II) इलाहाबाद - स्तम्भलेखाः
(C) समुद्रगुप्तः (III) बांसखेडा - ताम्रपट्टाभिलेखः
(D) कनिष्कः (IV) ऐहोलशिलालेखः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (A)- I, (B)- III, (C)- II, (D)- IV
(b) (A)- II, (B)- III, (C)- I, (D)- IV
(c) (A)- IV, (B)- I, (C)- III, (D)- II
(d) (A)- III, (B)- IV, (C)- II, (D)- I

उत्तर–(d)

- हर्ष का बांसखेडा का ताम्रपत्र अभिलेख है, यह शाहजहांपुर (उ.प्र.) में है, इसकी लिपि ब्राह्मी है।
- पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख है, इसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है।
- समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख है, यह मूलतः कौशाम्बी में था बाद में इलाहाबाद लाया गया, इसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है, इसमें समुद्रगुप्त की उपलब्धियाँ और जीवन-चरित्र का वर्णन है।
- कनिष्क कालीन सारनाथ बौद्ध प्रतिमालेख है। यह वाराणसी (उ.प्र.) में स्थित है, इसकी लिपि ब्राह्मी है।

अन्य महत्वपूर्ण अभिलेख-

- रुद्रदामन - गिरनार अभिलेख,
- स्कंदगुप्त - भीतरी स्तम्भ लेख
- चन्द्रगुप्त द्वितीय - उदयगिरि अभिलेख
- राजभोज - ग्वालियर प्रशस्ति
- खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
- चन्द्रगुप्त मौर्य - महास्थान अभिलेख ।

76. अधोलिखितानां कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत -

(A) गोपथब्राह्मणम् (B) अथर्ववेदः
(C) ऐतरेयः - ब्राह्मणम् (D) ऋग्वेदः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A), (B), (C), (D)
(b) (B), (C), (D), (A)
(c) (C), (A), (B), (D)
(d) (D), (B), (C), (A)

उत्तर–(d)

वेद	शाखाएं	ब्राह्मण ग्रन्थ
ऋग्वेद	शाकल, बाष्कल	ऐतरेय, कौषीतकि ब्राह्मण
शुक्ल-यजुर्वेद	माध्यन्दिन (वाजसनेयि) काण्व	शतपथ ब्राह्मण
कृष्ण-यजुर्वेद	तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	कौथुम, राणायनीय जैमिनीय	तांड्य, षड्विंश, आर्षेय, सामविधान, मंत्र, देवताध्याय, वंश, संहितोपनिषद् ब्राह्मण
अथर्ववेद	शौनक, पैप्पलाद	गोपथ ब्राह्मण

77. अधोलिखितानां कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) उव्वट - भाष्यम् (B) दयानन्द - भाष्यम्

(C) स्कन्दस्वामी - भाष्यम् (D) सायण - भाष्यम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (A), (D), (C), (B)

(b) (D), (B), (C), (A)

(c) (C), (A), (D), (B)

(d) (B), (C), (A), (D)

उत्तर–(c)

स्कन्दस्वामी - 625ई. के लगभग ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का है।

इनका भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक मिलता है, शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने किया। स्कन्दस्वामी ने यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी है।

- **उव्वट -** यजुर्वेद भाष्य के अन्तिम में इन्होंने अपना परिचय दिया है। राजा भोज के शासनकाल में इन्होंने वेदभाष्य किया। इनका समय 11वीं शती ई. माना जाता है। यजुर्वेद भाष्य के अतिरिक्त इनका अन्य ग्रन्थ है- ऋक्प्रातिशाख्य की टीका। यजु:प्रातिशाख्य की टीका, ईशोपनिषद् पर भाष्य ।
- **सायण** - इन्होनें सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता पर भाष्य लिखा। उसके बाद ऋग्वेदादि का भाष्य लिखा। अथर्ववेद पर केवल इन्हीं का भाष्य प्राप्त होता है।
- **स्वामी दयानन्द -** इन्होनें नैरुक्त प्रक्रिया विधि से ऋग्वेद के सात मण्डलों का संस्कृत और हिन्दी में भाष्य किया है। अकाल मृत्यु के कारण यह अधूरा रहा और अवशिष्ट भाग को पं. आर्यमुनि ने पूर्ण किया।

78. वैशेषिकदर्शनानुसारं निम्नाङ्कितानां समुचितः क्रमोऽस्ति?

(A) अभावः (B) विशेषः

(C) कर्म (D) सामान्यम्

(E) समवायः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (D), (B), (C), (A) (E)

(b) (C), (D), (B), (E) (A)

(c) (A), (C), (D), (B) (E)

(d) (A), (B), (C), (D) (E)

उत्तर–(b)

वैशेषिक दर्शन सप्त पदार्थ स्वीकार करते हैं-

''द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः।

पुनः यह द्रव्य नौ प्रकार का होता है- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा तथा मन ।

पांच प्रकार के कर्म होते हैं - उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।

- परमपरं च द्विविधं सामान्यम् (पर एवं अपर के भेद से सामान्य दो प्रकार का होता है।)
- नित्य द्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव। (विशेष अनेक प्रकार के होते है)।
- समवायस्त्वेक एव (समवाय का एकमात्र प्रकार है)
- अभावश्चतुर्विधः प्रागभावः, प्रध्वंसाभावः अत्यन्ताभावः अन्योन्याभावश्चेति।
- वैशेषिक दर्शन को औलूक्य दर्शन भी कहा जाता है।

79. अधोऽङ्कितानां योगदर्शनव्यासभाष्यानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) क्षिप्तम् (b) विक्षिप्तम्

(c) निरुद्धम् (d) एकाग्रम्

(e) मूढम्

अधोङ्कितेषु समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) (A), (E), (D), (B) (C)

(b) (A), (E), (B), (D) (C)

(c) (E), (A), (D), (B) (C)

(d) (B), (D), (A), (C) (E)

उत्तर–(b)

चित्त की पांच भूमियां है- क्षिप्त - मूढ़- विक्षिप्त - एकाग्र - निरुद्ध

योगदर्शन में चार पाद हैं-

(1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्यपाद

योगदर्शन को सेश्वरसांख्य कहा जाता है। इसमें ईश्वर सहित कुल 26 तत्त्व हैं।

- 'अविद्याऽस्मिता राग द्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।'
- ''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः '' ।
- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति पांच प्रकार की वृत्तियां होती है।
- प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम आदि प्रमाण वृत्तियां है।

80. कालक्रमानुसारमधोलिखित ग्रन्थानां समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) शब्दकौस्तुभम् (B) काशिकावृत्तिः

(C) महाभाष्यम् (D) वैय्याकरणभूषणसारः

(E) शब्देन्दुशेखरः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (C), (A), (B), (E) (D)

(b) (D), (B), (A), (E) (C)

(c) (B), (A), (C), (D) (E)

(d) (C), (B), (A), (D) (E)

उत्तर–(d)

- जयादित्य और वामन ने सातवीं शताब्दी में अष्टाध्यायी पर एक टीका ''काशिका'' लिखी। इस काशिका पर उपटीकाएं- जिनेन्द्रबुद्धि द्वारा न्यास और हरदत्त द्वारा पदमंजरी लिखी गयी।
- भट्टोजिदीक्षित ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर **शब्द कौस्तुभ** और **सिद्धान्तकौमुदी** पर स्वयं **प्रौढ़मनोरमा** नाम की टीका लिखी।
- वैयाकरणभूषणसार ग्रन्थ के लेखक कौण्डभट्ट हैं।
- शब्देन्दुशेखर के लेखक नागेश भट्ट हैं। इन्होने शब्दरत्न (प्रौढ़मनोरमा की टीका) और विषमी (शब्दकौस्तुभ की टीका) वैयाकरण-सिद्धान्त मञ्जूषा और परिभाषेन्दु-शेखर की रचना की।

81. कालक्रमानुसारम् अधोलिखितवैयाकरणानां समुचितं क्रमं चिनुत-

(A) वरदराजः, भट्टोजिदीक्षितः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः

(B) भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः

(C) पतञ्जलिः, भट्टोजिदीक्षितः , भर्तृहरिः, वरदराजः

(D) पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः

अत्र समुचितं उत्तरं चिनुत-

(a) (A) (b) (B)

(c) (C) (d) (D)

उत्तर–(d)

पतञ्जलि ने व्याकरण महाभाष्य की रचना की जिसमें 84 आह्निक है: ये योगदर्शन के प्रवर्तकाचार्य भी हैं।

- भर्तृहरि का वाक्यपदीयम् व्याकरण का दार्शनिक ग्रन्थ है। इनकी अन्य रचनाएं - नीतिशतकम् , शृंगारशतकम् और वैराग्यशतकम् है।
- भट्टोजिदीक्षित ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर शब्दकौस्तुभ और अपनी सिद्धान्तकौमुदी पर स्वयं प्रौढ़मनोरमा नाम की टीका लिखी।
- वरदराज ने बालकों की सुविधा के लिए लघुसिद्धान्तकौमुदी तथा मध्य सिद्धान्तकौमुदी की रचना की।
- शर्ववर्मा ने ऐन्द्र व्याकरण के आधार पर कातन्त्र व्याकरण की रचना की।
- चन्द्रगोमी ने बौद्धों के लिए चान्द्रव्याकरण बनाया।
- नागेश उपाध्याय ने नव्य न्याय की रचना की।

82. पूर्ववर्तिनः आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशतः-

(a) विश्वनाथः (b) दण्डी

(c) धनञ्जयः (d) कुन्तकः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुतः

(a) (A), (B), (C), (D)

(b) (B), (C), (D), (A)

(c) (C), (B), (A), (D)

(d) (B), (A), (C), (D)

उत्तर–(b)

संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा -

(1) **आचार्य भरत -** नाट्यशास्त्र के प्रणेता एवं रससूत्र के अग्रणी प्रतिपादक हैं।
(2) **आचार्य भामह -** काव्यालंकार के लेखक हैं।
(3) **आचार्य दण्डी -** काव्यादर्श
(4) **आचार्य उद्भट-** अलङ्कारसार संग्रह, भामहविवरण।
(5) **आचार्य वामन -** काव्यालंकारसूत्रवृत्ति
(6) **रुद्रट -** काव्यालंकार
(7) **आनन्दवर्धन -** ध्वन्यालोक
(8) **मुकुलभट्ट -** अभिधावृत्तिमातृका
(9) **भट्टतौत -** काव्यकौतुक
(10) **भट्टनायक -** हृदयदर्पण
(11) **राजशेखर-** कर्पूरमंजरी, बालरामायण, बालभारत, विद्वशालभञ्जिका
(12) **अभिनवगुप्त -** अभिनवभारती, लोचन
(13) **कुन्तक -** वक्रोक्तिजीवित
(14) **महिमभट्ट -** व्यक्तिविवेक
(15) **भोजदेव -** सरस्वतीकण्ठाभरण
(16) **क्षेमेन्द्र -** औचित्यविचारचर्चा , कविकण्ठाभरण।

83. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) हर्षचरितम् (b) नैषधीयचरितम्

(c) रघुवंशम् (d) नलचम्पूः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) (A), (C), (B), (D)

(b) (C), (A), (D), (B)

(c) (B), (A), (D), (C)

(d) (D), (B), (C), (A)

उत्तर–(b)

- कालिदास की कृति रघुवंश महाकाव्य है। कालिदास, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समकालीन थे। इनका अनुमानित समय ई.पू. प्रथम शताब्दी माना जाता है।
- श्रीहर्ष की कृति नैषधीयचरित है, व्यूलर महोदय इनका समय 1163-1174 ई. के बीच मानते हैं (बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध) इसमें 22 सर्ग हैं।
- बाणभट्ट की रचना हर्षचरितम् है, ये हर्ष के सभा-पण्डित थे। इनका समय 7वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास है। इनकी अन्य रचनाएँ -कादम्बरी, चण्डीशतक, मुकुटताडिक, पार्वतीपरिणय है।
- त्रिविक्रमभट्ट की रचना का नाम नलचम्पू और मदालसाचम्पू है। 915ई. का इनका एक अभिलेख प्राप्त होता है। जिसके आधार पर इनका समय 10वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।
- माघ की रचना शिशुपालवधम् है। इसमें 20 सर्ग है, इनका समय सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है।
- अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे, इनकी रचनाएं-बुद्धचरित, सौन्दरनन्द, शारिपुत्रप्रकरण, सूत्रालंकार है।

84. महाभारतीय पर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(a) अनुशासनपर्व (b) अश्वमेघपर्व
(c) शान्तिपर्व (d) मौसलपर्व
(e) आश्रमवासीपर्व

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (A), (D), (B), (C), (E)
(b) (B), (C), (A), (D), (E)
(c) (C), (A), (B), (E), (D)
(d) (D), (B), (C), (A), (E)

उत्तर–(c)

महाभारत के रचयिता वेदव्यास हैं; इसमें 18 पर्वों में कौरव-पाण्डवों का इतिहास है।
महाभारत के 18 पर्व क्रमशः हैं-
(1) आदिपर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराटपर्व (5) उद्योगपर्व (6) भीष्मपर्व (7) द्रोणपर्व (8) कर्ण (9) शल्य (10) सौप्तिक (11) स्त्री (12) शान्ति (13) अनुशासन (14) आश्वमेधिक (15) आश्रमवासिक (16) मौसल (17) महाप्रस्थानिक (18) स्वर्गारोहण
- भीष्मपर्व में अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का प्रारम्भ, भीष्म का आहत होकर शय्या पर पड़ना आदि का वर्णन हैं।
- शान्तिपर्व में युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्ष-सम्बन्धी सैकड़ों प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर दिया गया है।
- महाभारत का जय-भारत-महाभारत के रूप में विकास हुआ।

85. कौटिलीय-अर्थशास्त्रस्य विनयाधिकरणे प्रकरणानां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(a) इन्द्रियजयः (b) वृद्धसंयोगः
(c) मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः (d) अमात्योत्पत्तिः
(E) विद्यासमुद्देशः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (A), (C), (D), (E), (B)
(b) (B), (A), (C), (D), (E)
(c) (C), (D), (B), (A), (E)
(d) (E), (B), (A), (D), (C)

उत्तर–(d)

अर्थशास्त्र के रचयिता आचार्य कौटिल्य हैं। इसमें 15 अधिकरण और 150 अध्याय है।
प्रथमाधिकरण में 18 प्रकरण है- (1) विद्यासमुद्देशः (2) वृद्धसंयोगः (3) इन्द्रियजयः (4) अमात्योत्पत्ति : (5) मन्त्रिपुरोहितोत्पत्ति (6) उपधाभिः -शौचाशौचज्ञानममात्यानाम् (7) गूढ़पुरुषोत्पत्तिः (8) गूढ़पुरुषप्रणिधिः (9) स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम् (10) परविषये कृत्याकृत्यपक्षोपग्रहः (11) मन्त्राधिकारः (12) दूतप्रणिधिः (13) राजपुत्ररक्षणम् (14) अवरुद्धवृत्तम् (15) अवरुद्धे च वृत्तिः (16) राजप्रणिधिः (17) निशान्तप्रणिधिः (18) आत्मरक्षितकम्।

86. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् ।

अभिकथन (A) - पारोवर्मवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति।

कारणम् (R) - यथा तेन गहनरूपेण वारम्वारं स्वाध्यायेन बहुपरिश्रमेण वेदाभ्यासः कृतोऽस्ति।

उपर्युक्ताभिकथन- कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) तथा (R) उभावपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य
(b) (A) तथा (R)उभावपि सत्यं। (R) इति उचितकारणमस्ति (A) इत्यस्य
(c) (A) सत्यं, परन्तु (R) इति असत्यम्
(d) (A) तथा (R) उभावपि असत्यम्

उत्तर–(b)

''पारोवर्मवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति। अर्थात् आचार्य परम्परया शास्त्र का श्रवण करने वाले वेदितृषु विद्वान् में भूयोविद्यः अधिक विद्यावान् प्रशस्य : भवति श्रेष्ठ गिना जाता है। ऐसा विद्वान् अस्पष्टार्थक मन्त्रों का भी सरलता से अर्थ करके दिखला देता है। उसके लिए किसी भी मन्त्र का अर्थ करने में कोई समस्या नहीं होती। जैसे- चक्षुष्मान् ऊबड़, खाबड़, सम-विषम सभी प्रकार के मार्गों को सरलता से तय कर लेता

है किन्तु अन्धा मनुष्य साफ-सुथरी सड़क पर भी ठोकर खाकर गिर पड़ता है।
कथन **(R)** - ''येन गहनरूपेण वारम्वारं स्वाध्यायेन बहुपरिश्रमेण वेदाभ्यासः कृतोऽस्ति। अर्थात् विद्वानों के द्वारा गहन रूप से बारम्बार स्वाध्याय करने से बहुत परिश्रम के द्वारा वेदों का अभ्यास किया जाता है।
इसमें दोनों कथन-कारण सत्य है।

87. अभिकथनम् (A) -तिब्बती भाषा योगात्मिका भाषा।
कारणम् (R) - प्रकृतिप्रत्यययोः संयोगात्।
उपर्युक्त अभिकथनं (A) तथा कारणं (R) चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) अभिकथनम् (A)कारणम् (R) उभयं असत्यम्
(b) अभिकथनम् (A) कारणम् (R) उभयं सत्यम्
(c) अभिकथनम् (A) सत्यम् तथा कारणम् (R) असत्यम्
(d) अभिकथनम् (A) असत्यम् तथा कारणम् (R) सत्यम्

उत्तर–(a)

विश्वभाषाओं का दो वर्गों में विभाजन किया गया है- आकृतिमूलक और पारिवारिक वर्गीकरण।
दोनों वर्गीकरण में मुख्य अन्तर यह है कि आकृतिमूलक में शब्द तत्त्व और रचनातत्त्व मुख्य हैं।
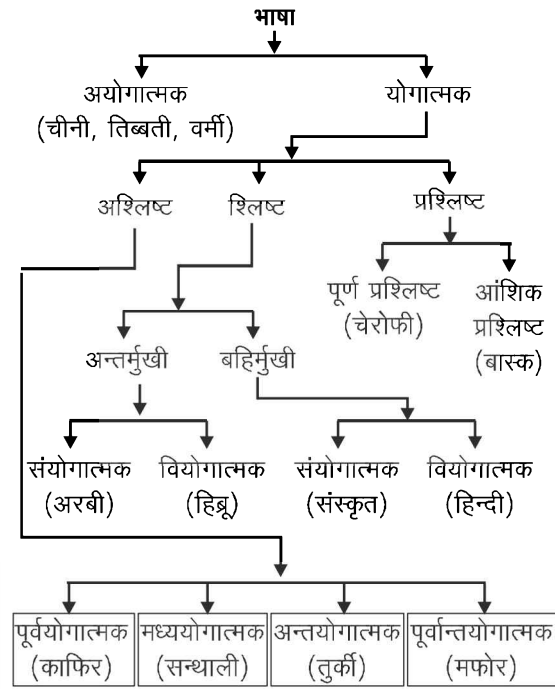
88. अत्र कथनद्वयम् -
तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति।
अभिकथनम् (A) -न्यायदर्शनरीत्या आत्मत्वसामान्यवान् आत्मा इति।
कारणम् (R) - बुद्धि-सुख-दुःखः - इच्छा-द्वेष- प्रयत्नगुणलिङ्गकत्वात् ।
उपर्युक्त अभिकथनं कारणचाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति इत्यस्य (R) इति उचितं कारणम्
(b) (A) तथा (R) उभावपि असमीचीनौ
(c) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणम् नास्ति
(d) (A) इति असमीचीनं , परं (R) इति समीचीन्

उत्तर–(a)

न्यायदर्शनानुसार आत्मजाति से युक्त ही आत्मा कहलाती है और बुद्धि-सुख-दुःख-द्वेष-प्रयत्न आदि सभी गुणलिङ्गक हैं, इन सभी के द्वारा आत्मा की सिद्धि होती है, क्योंकि इन सभी गुणों का आश्रय आत्मा ही है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

प्रमेय 12 हैं- आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख तथा अपवर्ग।
आत्मा- आत्मत्वसामान्यवानात्मा स च देहेन्द्रियादिव्यतिरिक्त प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च।
शरीर- भोगायतनमन्त्यावयवि 'शरीरम्'।

89. कथनद्वयम् अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम् अपरञ्चतस्य कारणम् (R) इति।
अभिकथनम् (A) - उत्पत्तिपरिपूताया किमस्याः पावनान्तरैः।
कारणम् (R) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।।
उपर्युक्त अभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (A) तथा (R) उभावपि असत्यं
(b) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति यतः (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणमस्ति
(c) (A) तथा (R) उभावपि सत्यं परं, (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणम् नास्ति
(d) (A) इति सत्यम्, परं (R) इति असत्यम्

उत्तर–(b)

अभिकथन **(A)** तथा **(R)** दोनों सत्य हैं तथा कारण भी सत्य है। यह कथन उत्तरामचरित के प्रथम अङ्क से है। यह भवभूति विरचित है। इसमें सात अङ्क है, तथा करुण अङ्गी रस है।
अभिकथन **(A)** - ''उत्पत्तिपरिपूरितायाः किमस्याः पावनान्तरैः।
अर्थात् जन्म से ही पवित्र इनके लिए अन्य पवित्र करने वाले उपायों से क्या प्रयोजन है?
कारण - तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।
अर्थात् तीर्थ का जल तथा अग्नि एक-दूसरे से शुद्धि नहीं प्राप्त करते हैं।
भवभूति की अन्य कृतियां - मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् है।

90. कथनद्वयमधोलिखितम् । एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् ।

अभिकथनम् (A) - मन्त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिर्वा सह मन्त्रयेत ।

कारणम् (R) - एकेनार्थकृच्छ्रेषु निश्चयं नाधिगच्छेत् । द्वाभ्यां मन्त्रयमाणो द्वाभ्यां संहताभ्यामवगृह्यते,

विगृहीताभ्यां विनाश्यते। ततः परेषु कृच्छ्रेणार्धनिश्चयो गम्यते।

उपर्युक्त अभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) तथा (R) उभावपि असत्यम्

(b) (A) तथा (R) उभावपि सत्यं (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य

(c) (A) तथा (R) उभावपि सत्यं किन्तु (A) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य

(d) (A) सत्यम्, (R) असत्यम्

उत्तर–(b)

कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र में मन्त्राधिकार के अन्तर्गत आचार्य कौटिल्य, नारद आदि के द्वारा बतायी गयी युक्तियों के अनुसार मन्त्र व्यवस्थित नहीं हो सकता उस पर अपनी अस्वीकृति प्रकट करते हुए कहते हैं कि 3 या 4 मंत्रियों को बैठाकर राजा को मन्त्रणा करनी चाहिए। एक ही मन्त्री के सलाह से राजा और मन्त्री में प्रतिस्पर्धा होने लगती है, यदि दो मन्त्री से सलाह लें तो दोनों अपने मत को स्थापित करने के लिए आपस में विवाद करने लगेंगे। यदि 4 से अधिक मंत्री की सलाह लें तो कार्य का निश्चय करना कठिन हो जाता है और इस दशा में मन्त्र की सुरक्षा में भी सन्देह होने लगता है।

परिच्छेद :- प्रश्न (91-95)

उपर उपलो मेघो भवति । उपरमन्तेऽस्मिन्निभ्राणि। उपरता आप इति वा। तेषामेषा भवति- 'देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन्' त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम् । देवानां निर्माणे प्रथमा अतिष्ठन् माध्यमिका देवगणः प्रथम इति मुख्यनाम प्रथमो भवति। कृन्तत्रमन्तरिक्षं विकर्तनं मेघानां विकर्त्तनेन मेघानामुदकं जायते। त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपाः। पर्जन्योः वायुरादित्यः शीतोष्णवर्षैरोषधीः पाचयन्तयनूपा अनुवपन्ति लोकास्वनेन स्वेन कर्म्मणा। अयमतीपरोऽनूप एतस्मादेवानूप्यत उदकेनापि वान्वाविति स्याद्यी प्रागिति तस्यानूप इति स्याद्यथा प्राचीनमिति। द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम् । उदकं बृबूकमित्युदकानाम....।

91. उपरिलिखित - परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'उपर' इति पदस्य अर्थं चिनुत-

(a) नभः (b) मेघः

(c) जलम् (d) अश्वः

उत्तर–(b)

'उपर' पद का अर्थ मेघ होता है।

'उपर उपलो मेघो भवति' उपर और उपल मेघ के बोधक हैं। क्योंकि इसमें मेघ के धुधियाले पूर्वरूप रमण करते हैं, र और ल् में कोई भेद नही होता है, अतः दोनों की व्युत्पत्ति एक जैसी है। इसमें जल स्थिर रहते हैं।

92. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'कृन्तत्रम्' इति पदस्य अर्थं चिनुत-

(a) अन्तरिक्षम् (b) विकर्तनम्

(c) उदकम् (d) मेघः

उत्तर–(a)

'कृन्तत्रम्' पद का अर्थ अन्तरिक्ष है।

अन्तरिक्ष में मेघों का कर्तन छेदन होता है, इसलिए अन्तरिक्ष को 'कृन्तत्र' कहते हैं।

93. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'त्रयस्तपन्ति' इत्यस्य वाक्यस्य अभिप्रायः कः?

(a) त्रयोतापाः पृथिवीं तपन्ति

(b) मनुष्याणां पापानि पृथिवीं तपन्ति

(c) पर्जन्यो-वायुरादित्याः पृथिवीं तपन्ति

(d) सूर्यरमश्मयः वडवानश्च पृथिवीं तपन्ति

उत्तर–(c)

उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार 'त्रयस्तन्ति' का अभिप्राय- पर्जन्य, वायु और आदित्य से है।

ये तीनों शीत, वर्षा और उष्णता से समस्त अन्नों को पका देते हैं। इन तीनों को अनूप भी कहते है क्योंकि तीनों- अपने-अपने धर्मों के माध्यम से लोकों पर अनुग्रह करते रहते हैं।

94. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'अनूपाः' इति पदं केषां विशेषणमस्ति?

(a) रवि-पृथिवी-जलानाम् (b) अपस्तेजसादित्यानाम्

(c) पृथिवी-जल-वायूनाम् (d) वायुरादित्यपर्जन्यानाम्

उत्तर–(d)

उपयुक्त परिच्छेद के अनुसार अनूप शब्द का विशेषण- वायु, आदित्य और पर्जन्य है।

पर्जन्य, वायु और आदित्य ये तीनों शीतोष्णवर्षा के माध्यम से अन्नों को फलित करते हैं इसलिए अनूप कहलाते हैं।

'अनूपाः अनूवपन्ति लोकान् स्वेन-स्वेन कर्मणा- अर्थात् ये सभी अपने-अपने धर्मों से लोकों पर अनुग्रह करते रहते हैं।'

95. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'बृबूकम्' इति पदस्यार्थं चिनुत-

(a) मेघः (b) उदकम्

(c) वायुः (d) आदित्यः

उत्तर–(b)

उपरिलिखित परिच्छेदानुसार 'बृबूकम्' पद का अर्थ 'उदक' होता है। बृबूकम् इति उदक नामः'' बृबूक जल का वाचक है।
ब्रवीतेः वा शब्दकर्मणः भ्रंशतेः वा। ब्रूञ् धातु से निर्मित है क्योंकि जल ध्वनि करता है।
या अधः पतनार्थक 'भ्रंश्' धातु से बृबूक बन जायेगा क्योंकि जल मेघ से नीचे गिरता है।

परिच्छेदः प्रश्न-(96-100)

इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णा विषवल्लीनाम् व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम् पुरःपताका सर्वाविनयानाम् उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधवेगग्राहाणाम्, आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम् उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम् प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकारिणः वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य,

लतेव विटपकानधयारोहति, गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुद्चञ्चला, पातालगुहेव तमोबहुला, हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्य हृदया, प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी, दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वमुन्नतीकरोति।

96. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु ''वल्लिनां संवर्धने कस्यापेक्षा भवति?'' इति प्रश्नस्य समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(a) अग्नेः (b) वायोः (c) जलस्य (d) काष्ठस्य

उत्तर–(c)

उपर्युक्त परिच्छेदानुसार ''वल्लीनां संवर्धने जलस्य अपेक्षा भवति।'' यह समीचीन उत्तर है।
बाणभट्ट द्वारा विरचित शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के अवगुणों की चर्चा में शकुनास ने चन्द्रापीड को बतलाया कि- ''इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम्'' अर्थात् यह लक्ष्मी तृष्णारूपी विष की लताओं को बढ़ाने वाली जलधारा है।

97. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु ''तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्'' इति गद्यांशानुसारं तिमिरोद्गतिः कुत्र भवति?

(a) कर्णे (b) हस्ते
(c) शिरसि (d) नेत्रे

उत्तर–(d)

शास्त्रदृष्टि रखने वालों के लिए 'तिमिर' नेत्र-रोग को उत्पन्न करने वाली है। तिमिर रोग से आखों के सामने अंधेरा छा जाता है और देखने की इच्छा क्षीण हो जाती है, लक्ष्मी भी इसी रोग के समान है क्योंकि यह वेद-स्मृति आदि शास्त्रों की मर्यादा नष्ट करने वाली है।
उपर्युक्त यह परिच्छेद बाणभट्ट कृत शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के अवगुण के विषय में विवेचित है।

98. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु - 'पुरः पताका सर्वाविनयानाम्' इति गद्यांशो पुरः पताका उच्यते-

(a) सरस्वती (b) चण्डी
(c) लक्ष्मीः (d) कालिका

उत्तर–(c)

'पुरः पताका सर्वाविनयानाम् लक्ष्मीः', अर्थात् यह लक्ष्मी सभी प्रकार के दुर्बुद्धियों की आगे-आगे चलने वाली अग्र पताका के समान है।
जिस प्रकार आगे-आगे चलने वाली पताका अपने पीछे चलने वाली समस्त सेनाओं के चिह्न के रूप में होती है उसी प्रकार यह चञ्चला लक्ष्मी भी अपने पीछे सभी प्रकार के अविनयों के पहचान के रूप में हैं।

99. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु-''कदलिका कामकरिणः''- इत्यत्र करिणः तुलना केन सह कृता?

(a) शुकनासेन (b) जलेन
(c) क्रोधेन (d) कामेन

उत्तर–(d)

''कदलिका कामकरिणः'' में 'करिण' की तुलना 'काम' से किया गया है। यह लक्ष्मी के दुर्गणों के विषय में वर्णित है।
जिस प्रकार केले के वन में हाथी का स्वच्छन्द विहार होता है, इसी प्रकार लक्ष्मी से युक्त व्यक्ति में कामना का निर्बाध आवागमन होता है।
''लक्ष्मी के विषय में बतलाया गया है कि जैसे-जैसे यह चञ्चला लक्ष्मी प्रकाशित होती है तब दीपक की लौ की तरह केवल कज्जल के समान मलिन कर्म को ही प्रकट करती है।

100. उपरिलिखित- परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु ''हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया ''इत्यंशे कोऽलङ्कारः?

(a) विरोधाभासः (b) विभावना
(c) श्लिष्टोपमा (d) विशेषोक्तिः

उत्तर–(c)

''हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया'' में 'श्लिष्टोपमा अलङ्कार' है। शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के अवगुण के विषय में शुकनास चन्द्रापीड से यह वाक्य कहते हैं- ''पाताल गुहेव तमोबहुला। हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्य्यहृदया । प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी।''
अर्थात् यह लक्ष्मी पाताल की गुफा के समान अत्यन्त तमोगुणजनित अज्ञान से युक्त है, हिडिम्बा नामक राक्षसी की भांति एकमात्र भयंकर साहस से हरण करने योग्य हृदय वाली है, वर्षा ऋृतु के समान क्षणिक प्रकाश उत्पन्न करने वाली है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2019
संस्कृत
व्याख्यात्मक हल सहित

1. सायणभाष्यऋग्वेदसंहितां सम्पाद्य तस्याः प्रकाशनकार्यं प्रथमं केन वैदेशिकेन कृतमस्ति?

(a) मैक्समूलरेण (b) वेबरेण
(c) जैकोबी महोदयेन (d) विण्टरनित्समहोदयेन

उत्तर-(a)

सायणभाष्य ऋग्वेदसंहिता को प्रकाशित करने का श्रेय प्रथम विदेशी विद्वान् मैक्समूलर महोदय को जाता है। इसका प्रारम्भ 1849 ई० में हुआ था और आगे चलकर यह 1875 में पूर्ण हुआ।

- वेबर महोदय ने शुक्ल यजुर्वेद संहिता का महीधर भाष्य सहित देवनागरी अक्षरों में प्रकाशन किया।
- जैकोबी महोदय ने ज्योतिष को आधार मानकर वेद की व्याख्या की। इनके अनुसार ऋग्वेद का समय 4500 ई.पू. है।
- विन्टरनित्स महोदय ने सभी के मतों को समन्वित करके अपना मत दिया। इनका समय वैदिक काल (2500-500 ई.पू.) के लगभग है।

2. ऋग्वेदसंहिताया वैशिष्ट्यमस्ति—

(a) यज्ञवर्णनम् (c) देवस्तुतिः
(b) स्मार्तकार्यम् (d) वस्तुनिर्देशः

उत्तर-(b)

ऋग्वेद संहिता का वैशिष्ट्य देवस्तुति है।
जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है उन्हें ऋक् कहते हैं।
ऋच् या ऋक् का अर्थ है - 'स्तुतिपरक मन्त्र' (ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्)। यजुर्वेद में यज्ञ के वैशिष्ट्य का वर्णन है। यजुष् के मुख्य अर्थ- (1) यजुर्यजतेः - अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं। (2) इज्यतेऽनेनेति यजुः अर्थात् जिन मन्त्रों से यज्ञ किया जाता है, उन्हें यजुष् कहते हैं। यजुर्वेद का यज्ञ के कर्मकाण्ड से साक्षात् सम्बन्ध होने के कारण इसे अध्वर्युवेद भी कहा जाता है।

- सामन् या साम का अर्थ - गीतियुक्त मन्त्र होता है। ऋग्वेद के मन्त्र जब विशिष्ट गान-पद्धति से गाये जाते हैं तो उसको सामन् (साम) कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **होता** - यह ऋग्वेद का प्रतिनिधित्व करता है और यज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है।
- **उद्गाता** - यह सामवेद का प्रतिनिधित्व करता है तथा यज्ञ के समय देवस्तुति में सामवेद के मन्त्रों का गान करता है।
- **अध्वर्यु** - यह यजुर्वेद का प्रतिनिधित्व करता है। यज्ञ के विविध कर्मों का निष्पादक भी है।
- **ब्रह्मा** - यह अथर्ववेद का प्रतिनिधित्व करता है एवं यज्ञ का अधिष्ठाता और संचालक भी होता है।

3. यजुर्वेदसंहितायां प्राधान्येन निरूपणं प्राप्यते—

(a) संवादस्य (b) यज्ञानाम्
(c) गानानाम् (d) दार्शनिकविचाराणाम्

उत्तर-(b)

यजुर्वेद संहिता में मुख्यरूप से यज्ञ का निरूपण है।
यजुष् के मुख्य अर्थ—
(1) यजुर्यजते अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।
(2) इज्यतेऽनेनेति यजुः अर्थात् जिन मन्त्रों से यज्ञ किया जाता है, उन्हें यजुष् कहते हैं। यजुर्वेद का यज्ञ के कर्मकाण्ड से साक्षात् सम्बन्ध है।

- संवाद-सूक्त का सम्बन्ध ऋग्वेद से है।

कुछ महत्वपूर्ण संवाद-सूक्त -

पुरुरवा - उर्वशी संवादसूक्त (ऋग्वेद 10/95), यम-यमी संवाद सूक्त (ऋग्. 10/10), सरमा-पणि संवाद सूक्त (ऋग्. 10/108), विश्वामित्र - नदी संवाद सूक्त (ऋग्. 3/33)।
सामवेद - सामन् या साम का अर्थ गान (गीतियुक्त मंत्र) है। महाभाष्य में पतञ्जलि ने सामवेद की एक सहस्र (सहस्रवर्त्मा सामवेदः) शाखाएं बतलाया है। सामवेद मुख्यरूप से उपासना का वेद है।

- उपनिषदों में दार्शनिक विचारों का वर्णन है। शङ्कराचार्य ने उपनिषद् का अर्थ 'ब्रह्मविद्या' माना है।

4. पुरूरवा - उर्वशीसंवादसूक्ते कियन्तो मन्त्राः सन्ति?

(a) एकादश (b) पञ्चदश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

उत्तर-(d)

पुरूरवा - उर्वशी संवाद सूक्त में अष्टादश (18) मन्त्र हैं।
इस सूक्त में राजा पुरूरवा और उर्वशी नामक अप्सरा के प्रणय सम्बन्ध का वर्णन है। उर्वशी चार वर्षों तक पुरूरवा के साथ पृथ्वी

पर रहकर उन्हें छोड़कर चली जाती है। राजा उसे खोजते हुए एक सरोवर के पास पहुंचते हैं जहाँ उर्वशी अन्य अप्सराओं के साथ क्रीड़ा कर रही थी, यहीं पर पुरूरवा और उर्वशी के मध्य संवाद होता है-

प्रमुख संवाद मन्त्र-

- कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन्। को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्।।
- पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो, मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन्। न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति, सालावृकाणां हृदयान्येता।।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- **यम-यमी संवाद (ऋग् 10/10)** - यम और यमी, भाई - बहन हैं, यमी, यम से सृष्टि याचना के लिए कहती है, यम इसे अनैतिक और अनुचित बताकर इस प्रार्थना को अस्वीकार कर देता है।

5. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।। अत्र 'अङ्ग' इति कस्मिन्नर्थे प्रयुक्तोऽयं शब्दः? सायणदिशा निर्दिश्यताम्-

(a) अभिमुखीकरणार्थे (b) शरीरार्थे
(c) अवयवार्थे (d) विषयार्थे

उत्तर-(a)

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।।
यहाँ अङ्ग पद अभिमुखी करणार्थे के प्रसङ्ग में प्रयुक्त हुआ है।
यह मन्त्र अग्निसूक्त का 6 ठवां मन्त्र है। इसके देवता 'अग्नि' और ऋषि 'मधुच्छन्दा' हैं। इसमें गायत्री छन्द प्रयुक्त है।
अग्नि के प्रमुख विशेषण — जातवेदस्,रक्तश्मश्रु, ऋत्विक्, घृतपृष्ठ, रुक्मदन्त, गृहपति, दमूनस, पुरोहित, धूमकेतु, सहसपुत्र, कविशस्त, वैश्वानर, नाराशंस, नेता, कविक्रतु, त्र्यम्बक, पावक, सत्यधर्मा, जज्ञान।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- इन्द्र 'अन्तरिक्षस्थानीय' देवता हैं। इसके ऋषि 'गृत्समद' है।
- वरुण 'द्युस्थानीय' देवता हैं तथा इनके ऋषि शुनःशेप एवं वशिष्ठ हैं।
- विष्णु 'द्युस्थानीय' देवता हैं तथा ऋषि दीर्घतमा हैं।
- अश्विनौ भी 'द्युस्थानीय' देवता हैं तथा ऋषि वशिष्ठ हैं।

6. ऋग्वेदस्य वरुणसूक्ते (1.25) कियन्तो मन्त्राः सन्ति?

(a) दश (b) द्वादश
(c) एकविंशतिः (d) द्वाविंशतिः

उत्तर-(c)

ऋग्वेद के वरुण सूक्त में एकविंशतिः (21) मन्त्र हैं।
वरुण 'द्युस्थानीय' देवता हैं। इस सूक्त के ऋषि शुनःशेप एवं वशिष्ठ हैं।
वरुणदेवता के प्रमुख विशेषण — क्षत्रिय, स्वराट्, मायावी, उरुशंस्, उरुचक्षस्, धृतव्रत, चिकित्वान, इषिर, दिवःकवि, आदित्य, मेधिर, सुक्रतु, विश्वदर्शनम्।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- इन्द्र 'अन्तरिक्षस्थानीय' देवता हैं तथा इनके ऋषि गृत्समद हैं।
  इन्द्र के प्रमुख विशेषण — वज्रिन, वज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, मनस्वान्, मघवा, वृत्रहा, दस्योर्हन्ता, शिप्री, सुशिप्र, निचित, मनस्वान्, सोमपा, पुरंदर, वसुपति, तुविष्मान्।
- उषस् 'द्युस्थानीय' देवता हैं। इसके ऋषि दीर्घतमा, वामदेव एवं वसिष्ठ है।
  उषस् के प्रमुख विशेषण — मघोनी, विश्ववारा, प्रचेता, सुभगा, रेवती, मघवती, ऋतावरी, सूनरी, ओदती, अति उज्ज्वला, विश्वोर्ध्वा, सुदृशीकसन्दृक्, मधुधा, युवति, हिरण्यवर्णा, ऋतपा।

7. ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थानुसारेण शुनःशेपस्य पितुर्नाम किमासीत्?

(a) कुक्षीवान् (b) ऐतरेयः
(c) अजीगर्तः (d) महीदासः

उत्तर-(c)

ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार शुनःशेप के पिता का नाम 'अजीगर्त' था। अजीगर्त अत्यन्त लोभी ब्रह्मण था, इसने लोभवश अपने पुत्र 'शुनःशेप' को वरुण के यज्ञ में बलि देने को तैयार हो गया था। शुनःशेप आख्यान को 'हरिश्चन्द्र उपाख्यान' भी कहते हैं।
इन्द्र का रोहित को उपदेश 'चरैवेति चरैवेति' गान विश्व-विश्रुत है। चरैवेति शिक्षा ऐतरेय ब्राह्मण की प्रमुख शिक्षा है– चरैवेति (चर- एव- इति) अर्थात् चलते रहो, चलते रहो। सदा कर्म करते रहो, सदा उद्योगशील रहो, निरन्तर कर्मठ बने रहो, कर्मनिष्ठ जीवन ही जीवन है।

- शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ के महत्त्व का वर्णन है। इसमें ब्रह्म को यज्ञ कहा गया है। वाणी की शुद्धि और मन की पवित्रता से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है, अतः वाक् और मन को यज्ञ कहा जाता है।

8. शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः कतमोऽध्यायः ईशोपनिषद्?

(a) विंशतितमः (b) षोडशतमः
(c) चत्वारिंशत्तमः (d) एकोनविंशतितमः

उत्तर-(c)

शुक्लयजुर्वेद संहिता का चालीसवां अध्याय ईशोपनिषद् है। यह उपनिषद् समस्त उपनिषदों का आधार है। इसमें 18 मन्त्र हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

ईशोपनिषद् के प्रमुख मन्त्र -

''ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च् जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

- ''विद्ययामृतमश्नुते''।
- ''अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वान्।
- केनोपनिषद् को 'तलवकार उपनिषद्' भी कहते हैं। इसमें चार खण्ड है। प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक है और शेष दो खण्ड गद्यात्मक है। यह सामवेदीय उपनिषद् है।
- कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित कठोपनिषद् है। इसमें दो अध्याय है तथा प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं। इसमें नचिकेता और यम का संवाद है।
  प्रमुख सूक्तियां - ''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।
- ''श्रेयो हि धीराऽभिप्रेयसो वृणीते, प्रेयो मन्दो योगक्षेमौ वृणीते।''
- ''न जायते म्रियते वा विपश्चित्''।

''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

''क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया''।।

9. 'इंद्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः ? स कतिविधः ?

(a) सप्तविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(c)

इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः स षड्विध एव अर्थात् इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्षज्ञान (साक्षात्कारिणी प्रमा) का निमित्त होता है वह छः प्रकार का ही है जैसे- (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषण-विशेष्य भाव सन्निकर्ष।

- परार्थानुमान के पांच अवयव है – (1) **प्रतिज्ञा -** पर्वतोऽग्निमान्, **(2) हेतु -** धूमवत्वात् **(3) उदाहरण -** यो यो धूमवान् स सोऽग्निमान्, यथा-महानसः **(4) उपनय -** तथाचाऽयम् **(5) निगमन -** तस्मात्तथा।
- **उपमान प्रमाण -** ''अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानमुपमानम्। जैसे- यथा गौस्तथा गवयः।
- **उपमिति -** संज्ञासंज्ञिसम्बन्धप्रतीतिरुपमितिः (सञ्ज्ञा और सञ्ज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति उपमिति है)।

10. साङ्ख्यदर्शनानुसारं पञ्चविंशतितत्त्वेषु गणना नास्ति–

(a) रसस्य (b) पुद्गलस्य
(c) श्रोत्रस्य (d) जलस्य

उत्तर-(b)

सांख्य दर्शनानुसार पच्चीस तत्त्वों में पुद्गल की गणना नहीं होती है। 25 तत्त्व क्रमशः - प्रकृति, पुरूष, महत्तत्त्व (बुद्धि), पञ्च ज्ञानेन्द्रियां, पञ्च कर्मेन्द्रियां, मन, पञ्च तन्मात्राएं, पञ्च महाभूत।

पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ - श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण।
पञ्च कर्मेन्द्रियाँ - वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।
पञ्च तन्मात्रायें - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।
पञ्च महाभूत- आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी।

- करण कुल तेरह है - जिसमें से तीन- आभ्यन्तरकरण, दश, बाह्यकरण है।
  आभ्यन्तरकरण - बुद्धि, अहङ्कार, मन
  बाह्यकरण - पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ।
- प्रकृति एवं पुरुष के भेद को बुद्धि प्रकट करती है। प्रधानपुरुषान्तरं सूक्ष्मं बुद्धिः।
- सांख्य का सूक्ष्मशरीर 18 तत्वों से निर्मित होता है। सूक्ष्म शरीर को 'लिङ्ग शरीर' भी कहते हैं।
- सांख्य का प्रमुख सिद्धान्त सत्कार्यवाद है - सतः सत् जायते। सत्कार्यवाद सिद्धान्त में पांच हेतु हैं - (1) असद्करणाद् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भवाभावात् (4) शक्तस्य शक्यकरणात् (5) कारणभावात्।

11. 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' इति कथनमस्ति–

(a) साङ्ख्यदर्शने (b) योगदर्शने
(c) मीमांसादर्शने (d) वैशेषिकदर्शने

उत्तर-(b)

''क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरूष विशेष ईश्वरः '' अर्थात् क्लेशकर्म, विपाक और आशय वासनाओं के परामर्श से रहित एक विशेष प्रकार का जो पुरुष है, वह ईश्वर है। यह कथन योगदर्शन का है।

- योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि हैं।
- योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः (योग चित्त वृत्तियों का निरोध है।)
- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति आदि पाँच प्रकार की चित्त वृत्तियाँ हैं।
- वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता का अनुगम होने से सम्प्रज्ञात समाधि होती है।
- असम्प्रजाति समाधि के दो प्रकार हैं-
- असम्प्रज्ञात समाधि को 'निर्वीज समाधि' कहते है।
  (1) उपाय प्रत्यय, (2) भवप्रत्यय ।
- ''भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्'' (भवप्रत्यय ''असम्प्रज्ञातसमाधि'' विदेहो तथा प्रकृतिलीनो की होती है।
- प्राणों का रेचक, पूरक, कुम्भक करने से चित्त प्रसन्न होता है।
- ''तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः अर्थात् तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान 'क्रिया योग' है।
- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश होते हैं।

12. **आर्हतदर्शनानुसारं 'सप्तभङ्गीनयः' कुत्र न स्वीकृतोऽस्ति?**
(a) स्यादस्ति च नास्ति च
(b) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः
(c) स्यादस्ति चावक्तव्यः
(d) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः

उत्तर-(b)

आर्हत दर्शनानुसार सप्तभङ्गीनय में ''स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः ''नहीं स्वीकृत है।'' जैन दर्शन में सत्ता के सापेक्ष रूप को स्वीकार करने के लिए परामर्श का सात रूप माना गया है, जिसे सप्तभङ्गीनय कहते हैं।
(1) स्यादस्ति (2) स्यान्नास्ति (3) स्यादस्ति च नास्ति च (4) स्याद् अवक्तव्यम् (5) स्यादस्ति च अवक्तव्यम् च (6) स्यान्नास्ति च अवक्तव्यं च (7) स्यादस्ति च नास्ति च अवक्तव्यं च।
- जैन दर्शन में सर्वज्ञ, रागद्वेषी के विजयी, यथार्थवादी और सिद्ध पुरुषों को अर्हत् कहा जाता है।
- जैन दर्शन में मोक्ष के तीन रूप हैं- (1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चरित्र।
- जैन दर्शन के अन्तिम तीर्थङ्कर भगवान् महावीर तथा आद्यतीर्थङ्कर 'ऋषभदेव' थे।
- जैन धर्म के प्रचारक सिद्धों को तीर्थङ्कर कहा जाता है।
- अनेकान्तवाद, जीव, पुद्गलादि दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन आगम ग्रन्थों में प्राप्त होता है।
- जैन मतानुसार जीव चैतन्य है तथा ज्ञान उसका साक्षात् लक्षण है।

13. **वेदान्तसारानुसारं 'तत्त्वमसि' इत्यत्र अखण्डार्थबोधकसम्बन्धः कतिविधः?**
(a) चतुर्विधः (b) त्रिविधः
(c) द्विविधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(b)

वेदान्तसार के अनुसार ''तत्त्वमसि'' (वह तू ही है) इत्यादि वाक्य तीन सम्बन्धों से अखण्ड अर्थ का बोध कराने वाला होता है।
- समानाधिकरण्य, विशेषणविशेष्यभाव, लक्ष्यलक्षणभाव ये तीन सम्बन्ध होते हैं।
- 'तत्त्वमसि' महावाक्य वस्तुतः उपदेशवाक्य है। यह महावाक्य ब्रह्म और जीव की एकता को बतलाता है। यहाँ लक्ष्यलक्षण सम्बन्ध को ''भागलक्षणा'' भी कहा गया है।
- चार महावाक्यों की वेदान्त दर्शन में विशेष चर्चा की गयी है-
  (1) प्रज्ञानं ब्रह्म – ऐतरेयोपनिषद् – ऋग्वेद
  (2) तत्त्वमसि – छान्दोग्योपनिषद् – सामवेद
  (3) अहं ब्रह्मास्मि – बृहदारण्यकोपनिषद् – यजुर्वेद
  (4) अयमात्मा ब्रह्म – माण्डूक्योपनिषद् – अथर्ववेद
- अहं ब्रह्मास्मि 'अनुभववाक्य' है तथा तत्त्वमसि 'उपदेशवाक्य' है।
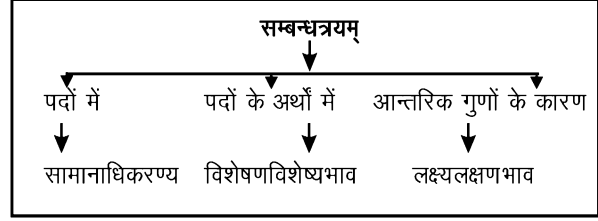
14. **'अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः। कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा।।' कस्य दार्शनिकस्य कथनमस्ति?**
(a) विश्वनाथपञ्चाननस्य (b) अन्नम्भट्टस्य
(c) सदानन्दस्य (d) केशवमिश्रस्य

उत्तर-(a)

अनैकान्तो विरूद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा।।
- हेत्वाभास के पांच भेद हैं - (1) असिद्ध (2) विरूद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम/सत्प्रतिपक्ष (5) कालात्ययापदिष्ट।
- असिद्ध के तीन भेद हैं - (1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध ''- स्वयम् असिद्धः कथं परान् साधयति'' अर्थात् जहाँ हेतु की पक्ष में विद्यमानता निश्चित नही होती वहां असिद्ध हेत्वाभास होता है।

15. **'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं' इत्यत्र शाङ्करभाष्यानुसारं भवति—**
(a) विकारः (b) अपवादः
(c) अध्यासः (d) परिणामः

उत्तर-(c)

महर्षि बादरायण व्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। इसी को वेदान्त दर्शन भी कहते हैं। अध्यासो नाम अतस्मिंस्तद्बुद्धिरित्यवोचम्। तद्यथापुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वा अहमेव विकलः सकलो वेति बाह्यधर्मानात्मन्य अध्यस्ति; तथा देह - धर्मान् स्थूलोऽहं, गौरोऽहं, तिष्ठामि, गच्छामि, लङ्घयामि चेति। कृशोऽहं यहाँ शाङ्कर भाष्य के अनुसार अध्यास होता है।
- **अपवाद** - अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तुविवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्।
- **विकार** - सतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विकारः इत्युदीरितः।
- **विवर्त-** अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्तः इत्युदाहृतः।
- **अनुबन्ध चतुष्टय** - 'तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषय सम्बन्ध प्रयोजनानि।' अर्थात्
  अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन यही चार अनुबन्ध हैं।
- **साधन चतुष्टय** - (i) नित्य एवं अनित्य वस्तु का विवेक (ii) इहलौकिक एवं पारलौकिक फल को भोगने के प्रति वैराग्य (iii) शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा आदि छः प्रकार की सम्पत्ति (iv) मोक्ष प्राप्ति की इच्छा।
- अज्ञान की दो शक्तियां हैं - आवरण और विक्षेप।
- **आवरण** - प्रमाता के सच्चिदानन्द स्वरूप को ढक लेती है।
- **विक्षेप** - सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत को उत्पन्न करने वाली शक्ति है।

16. **गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्' इत्यत्र तर्कभाषानुसारं कतमो हेत्वाभासः?**

(a) स्वरूपासिद्धः (b) विरुद्धः
(c) आश्रयासिद्धः (d) व्याप्यत्वासिद्धः

उत्तर-(c)

'गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्' इस उदाहरण में तर्कभाषा के अनुसार आश्रयासिद्ध हेत्वाभास है।

- तर्कभाषाकार के अनुसार- हेत्वाभास के पाँच भेद हैं -
  (1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्ययपदिष्ट
- असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है -
  (1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध।

(1) **आश्रयासिद्ध हेत्वाभास -** यस्य हेतोः आश्रयो नावगम्यते स आश्रयासिद्धः, यथा - गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्' सरोजारविन्दवत्।

(2) **स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास -**यो हेतुराश्रये नावगम्यते, यथा- अनित्यः शब्दः चाक्षुषत्त्वात् घटवत्।

(3) **व्याप्यत्वासिद्ध हेत्वाभास -** यत्र हेतोर्व्याप्तिर्नावगम्यते-यथा- शब्दः क्षणिकः सत्त्वात् , क्रत्त्वन्तवर्तिनी हिंसा अर्धमसाधनं।

17. **पाणिनीयशिक्षानुसारं ऌकारस्य भेदाः सम्भवन्ति-**

(a) ह्रस्वदीर्घौ (b) दीर्घप्लुतौ
(c) ह्रस्वप्लुतौ (d) ह्रस्वदीर्घप्लुताः

उत्तर-(c)

पाणिनीय शिक्षानुसार ह्रस्व और प्लुत् ऌकार के भेद हैं:
व्याकरण शास्त्र के प्रथम प्रवक्ता ब्रह्मा माने जाते हैं जिन्होंने बृहस्पति को शब्दोपदेश किया था। व्याकरणशास्त्र में दो सम्प्रदाय ऐन्द्र तथा माहेश्वर प्रसिद्ध है।

''स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च क पौ चापि पराश्रितो।
दुःस्पष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च॥5॥

कुल 21 स्वर, पच्चीस व्यञ्जन, यादि आठ, यम 4, अनुस्वार एक, विसर्ग एक, क, प दो (जिह्वामूलीय, उपध्मानीय), दुस्पृष्ट और प्लुत् ऌकार एक है।

- कादयो मावसानाः स्पर्शाः, यणोऽन्तःस्थाः + शल् ऊष्माणः।
- य र ल व श ष स ह - 8 है।
- वर्णो का 5 प्रकार स्वर, काल, स्थान, आभ्यन्तर, बाह्य प्रयत्न के आधार पर है।

18. **भाषाणां 'सतम्' वर्गे स्वीक्रियते-**

(a) लैटिन (b) ग्रीक् (c) संस्कृतम् (d) फ्रेंच

उत्तर-(c)

सतम वर्ग में 'संस्कृत भाषा' को स्वीकार किया जाता है।
भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है। केन्टुम् और शतम् (सतम्) वर्ग - इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली महोदय को जाता जाता है।

शतम् (सतम्) वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेक्टोन
फारसी - सद	केल्टिक (आयरिश) - केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रूसी - स्तो	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - स्जिम्तास	जर्मन - हुन्डर्ट
बल्गेरियन-सुतो	फ्रेन्च - केन्त
बाल्तिक-जिम्सतस	इटालियन - केन्तो

भारोपीय परिवार को केन्टुम और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बाँटा जाता है-

- **शतम् वर्ग -** भारत-ईरानी (आर्य), बाल्टो-स्लाविकी, अर्मीनी, अल्बानी (इलीरी)।
- **केन्टुम् वर्ग -** ग्रीक, केल्टिक, जर्मानिक, इटालिक, हिट्टाइट, तोखारी।
- रचना की दृष्टि से भारोपीय परिवार की भाषा 'श्लिष्ट योगात्मक' है।

19. **'मृगाक्षी' - शब्दे विद्यमानः 'मृग' इति शब्दः उदाहरणं विद्यते-**

(a) अर्थादेशस्य (b) अर्थविस्तारस्य
(c) अर्थसङ्कोचस्य (d) अर्थागमस्य

उत्तर-(c)

मृगाक्षी शब्द में विद्यमान 'मृग' शब्द अर्थसंङ्कोच का उदाहरण है।
अर्थपरिवर्तन तीन प्रकार का होता है -
(1) अर्थविस्तार (2) अर्थसंकोच (3) अर्थादेश

अर्थविस्तार - कुछ शब्द मूलरूप में किसी विशेष या संङ्कुचित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। जैसे - कुशल, प्रवीण, तैल, गोशाला, गोष्ठ, महाराज, गवेषणा, स्याही, अधर, बैल, पशु, गधा, उल्लू आदि।

अर्थसङ्कोच- अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थो में सङ्कोच हुआ, उनका विस्तृत अर्थ सङ्कुचित और सीमित हो गया है। जैसे - जगत्, वारिज, अम्बुज, सरसिज, जलद, तोयद, वारिधि, सर्प, पर्वत, तटस्थ, मन्दिर, सभ्य, श्राद्ध, तर्पण, अनुकूल, प्रतिकूल, वेदना, घृणा, मृग आदि।

'मृग' पहले केवल पशु मात्र के लिए था लेकिन अब केवल हिरन अर्थ रह गया है।

अर्थादेश - एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना अर्थादेश कहलाता है।
जैसे- असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, बौद्ध-बुद्धू, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, खाद्य-खाद, भद्र-भद्दा, मुग्ध, वाटिका- बाड़ी, कर्पट-कपड़ा।

20. 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' इत्ययं वाक्यांशः कस्य आचार्यस्य कालनिर्धारणाय विद्वद्भिः उपयुज्यते?

(a) पतञ्जलेः (b) कात्यायनस्य
(c) पाणिनेः (d) भर्तृहरेः

उत्तर-(a)

इह पुष्यमित्रं याजयामः इत्ययं वाक्यांशः पातञ्जलेः आचार्यस्य काल निर्धारणाय विद्वद्भिः उपयुज्यते। पाणिनि ने अष्टाध्यायी की रचना की है, जो 8 अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं। कात्यायन ने वार्तिक की रचना की।
भर्तृहरि ने वाक्यपदीयम् नामक व्याकरण ग्रन्थ की रचना की एवं तीन शतकों की भी रचना की है। जो कि शृंगारशतक, नीतिशतक एवं वैराग्यशतक के नाम से जाने जाते हैं।

21. 'प्रत्यर्थम्' इत्यत्र अव्ययीभाव समासो विद्यते-

(a) योग्यतार्थे (b) वीप्सार्थे
(c) पदार्थानतिवृत्तयर्थे (d) सादृश्यार्थे

उत्तर-(b)

'प्रत्यर्थम्' पद में 'वीप्सा के अर्थ' में अव्ययीभाव समास हुआ है।

- प्रत्येक अर्थ के प्रति (यथा के वीप्सा अर्थ में समास हुआ है।
  लौकिक विग्रह - अर्थम् अर्थ प्रति
  अलौकिक विग्रह - अर्थ अम् प्रति
  इसमें **''अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि - व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति - शब्द प्रादुर्भाव- पश चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्य- सादृश्य - सम्पत्ति साकल्यान्तवचनेषु''** सूत्र से समास हुआ है।
  सामासिक पद-लौकिक विग्रह - अलौकिक विग्रह - अर्थ
  अधिहरि→ हरौ इति→ हरि ङि अधि→ विभक्ति अर्थ में
  उपकृष्णम→ कृष्णस्य समीपम्→ कृष्ण ङस् उप→ समीप अर्थ में
  सुमद्रम्→मद्राणां समृद्धिः→ मद्र आम् सु→ समृद्धि अर्थ में,
  अतिनिद्रम्→ निद्रा सम्प्रति न युज्यते→ निद्रा आम् सु→ समृद्धि अर्थ में,
  अतिहिमम्→हिमस्य अत्ययः→हिम ङस् अति→ अत्यय अर्थ में,
  निर्मक्षिकम्→मक्षिकाणाम् अभावः→मक्षिका आम् निर्→अभाव अर्थ में,
  दुर्यवनम्→यवनानां वृद्धिः→ यवन् आम् दुर→ वृद्धि का अभाव अर्थ में,
  अनुविष्णु→ विष्णोः पश्चात्→ विष्णु ङस् अनु→ पश्चात् अर्थ में,
  अनुरूपम्→ रूपस्य योग्यम् →रूप ङस् अनु →(यथा के योग्याताअर्थ में)

22. 'गो + अग्रम्' इत्यत्र न सम्भवति-

(a) प्रकृतिभावः (b) पूर्वरूपम्
(c) अवङादेशः (d) संहिताया अभावः

उत्तर-(d)

यहाँ पर संहिता का अभाव नहीं क्योंकि संहिता का अभाव होने पर सन्धिकार्य नहीं होता।
प्रकृतिभाव—सर्वत्र विभाषा गोः सूत्र यहाँ पर प्रकृति भाव करता है। प्रकृतिभाव का अर्थ मूल रूप में रह जाना। उसमें कोई परिवर्तन न होना। जैसे- गौ + अग्रम् = गो अग्रम्
पूर्वरूप—एङः पदान्तादति सूत्र पूर्वरूप अर्थात् पूर्व एवं पर के स्थान पर पूर्व रूप एकादेश होता है। जैसे- गो + अग्रम् = गोऽग्रम् ।
अवङ् आदेश— अवङ्स्फोटनायस्य सूत्र से अवङ् आदेश होकर गवाग्रम रूप बनता है। जैसे- गो + अग्रम् = गवाग्रम्।

23. 'राम' शब्दस्य पञ्चम्येकवचनस्य विषये समुचितं कथनं नास्ति-

(a) 'रामात्' इति रूपम्भवति
(b) 'रामाद्' इति रूपम्भवति
(c) अवसाने खरः स्थाने चरो भवति
(d) अवसाने झलां चरो वा स्युः

उत्तर-(c)

राम शब्द के पञ्चमी एकवचन के विषय में ''अवसाने खरः स्थाने चरो भवति'' यह सूत्र नहीं प्रवृत्त होगा।

- 'अवसाने झलां चरो वा', रामाद् और रामात् यह सभी इसमें प्रवृत्त होते हैं; रामात्/रामाद् में एकवचन की विवक्षा में ङसि आया। लोपादि करने के बाद राम अस् बना।
- ङसि सम्बन्धी अस् के स्थान पर 'टाङसिङसामिनात्स्याः' से आत् आदेश हुआ- **राम आत्** बना।
- 'अकः सवर्णे दीर्घ' से रामात् पद बना।
- तकार के स्थान पर 'झलां जशोऽन्ते' से जश्त्व होकर रामाद् पद बन गया।
- दकार के स्थान पर **'वाऽवसाने'** से चर्त्व होकर तकार हो गया। रामाद् के दकार के स्थान पर अल्पप्राण की तुल्यता होने के कारण तकार आदेश हुआ - रामात् बना। चर्त्व का विधान विकल्प से है। चर्त्व न होने के पक्ष में दकार ही रह गया अतः रामाद् भी सिद्ध हो गया। इसी प्रकार श्यामात्-श्यामाद्, बालकात्-बालकाद् रूप भी बनता है।

24. अलोऽन्त्यात् पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?

(a) निष्ठा (b) उपधा
(c) गति (d) संहिता

उत्तर-(b)

उपधा सञ्ज्ञा '**अलोऽन्त्यात्पूर्व वर्णस्य उपधा सञ्ज्ञा भवति**'। अर्थात् अन्तिम अल् से पूर्व वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होती है।
जैसे–राजन् में न से पूर्व वर्ण अ (अकारोत्तरवर्ती) की उपधा सञ्ज्ञा हुयी।
निष्ठा सञ्ज्ञा क्तक्तवतू निष्ठा– अर्थात् क्त एवं क्तवतू की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है। यथा–स्नातः, स्तुतः में क्त प्रत्यय से निष्ठा सञ्ज्ञा है।
गति–गतिश्च-प्रादयःक्रियायोगे गति संज्ञाः स्युः। प्र आदि 22 उपसर्गों की क्रिया के योग मे उपसर्ग संज्ञा होती है।
संहिता–परः सन्निकर्षः संहिता–वर्णों की अत्यन्त सामीपता को संहिता सञ्ज्ञा कहते हैं। यथा–सुधी+उपास्यः

25. 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' इत्युक्ति अस्ति-

(a) दण्डिनः (b) वामनस्य
(c) अभिनवगुप्तस्य (d) भोजस्य

उत्तर-(b)

काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात् इत्युक्ति वामनस्य अस्ति। वामन काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात् सौन्दर्यमलङ्कारः आदि सूत्रों में काव्य के सौन्दर्याधायक अलङ्कारों को काव्य की ग्राह्यता एवं उपादेयता का प्रयोजक मानते हैं।

- 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह वामन का प्रसिद्ध काव्य लक्षण है।
- यह काव्यालङ्कार सूत्र में उद्घृत है।
  दण्डी के अनुसार काव्यलक्षण–शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली। अर्थात् इष्ट या मनोरम हृदयाह्लादक अर्थ से युक्त पदावली शब्द समूह अर्थात् शब्द और अर्थ दोनों मिलकर ही काव्य के शरीर हैं।

26. अनुकरणसिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अस्ति-

(a) अरस्तू (b) लॉन्जाइनस
(c) क्रोचे (d) प्लेटो

उत्तर-(a)

पाश्चात्य विद्वानों के प्रमुख सिद्धान्त-

पाश्चात्य विद्वान	सिद्धान्त/ वाद
प्लेटो	अनुकृति का सिद्धान्त, दैवी ईश्वरीय प्रेरणा का सिद्धान्त।
अरस्तू	अनुकरण का सिद्धान्त, त्रासदी, विरेचन का सिद्धान्त।
लॉन्जइनस	उदात्त का सिद्धान्त।
क्रोचे	अभिव्यञ्जनावाद का सिद्धान्त

27. महाकविकालिदासस्य प्रसिद्धौ कस्यालङ्कारस्योदाहरणरूपेण उपयोगः क्रियते-

(a) उपमालङ्कारस्य (b) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य
(c) समासोक्त्यलङ्कारस्य (d) अतिशयोक्त्यलङ्कारस्य

उत्तर-(a)

महाकवि कालिदास उपमालङ्कार के प्रयोग में प्रसिद्ध थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- कालिदास के आश्रयदाता चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य थे।
- कालिदास की प्रसिद्ध उपाधियाँ - दीपशिखा कालिदास, रघुकार, कविकुलगुरु कविता कामिनीविलास, उपमासम्राट् आदि हैं।
- उपमा कालिदासस्य - उद्भट
- मेघे माघे गतं वयः - मल्लिनाथ
- भारवि रीतिशैली के जन्मदाता थे। इनके काव्यमार्ग को विचित्रमार्ग भी कहा जाता है।
- भारवेरर्थगौरवम् - उद्भट। नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः - मल्लिनाथ
- भवभूति का प्रिय रस करुण तथा रीति गौडी थी। इनका प्रियछन्द अनुष्टुप् और शिखरिणी था। इन्होंने उत्तररामचरित में अपने को परिणतप्रज्ञ कहा है।
- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास शिवराजविजय के प्रणेता अम्बिकादत्तव्यास थे।

28. अमृतसहोदरापि कटुकविपाका .... शुकनासोपदेशे वर्णनमिदं वर्तते-

(a) सरस्वत्याः (b) कादम्बर्याः
(c) लक्ष्म्याः (d) महश्वेतायाः

उत्तर-(c)

'अमृतसहोदशपि सहोदरापि कटुविपाका' शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के अवगुण का वर्णन है। इसका तात्पर्य है कि अमृत के साथ उत्पन्न होकर भी लक्ष्मी कड़वी होती है। शुकनासोपदेश - कादम्बरी कथामुख का ही अंश है। कादम्बरी 'बाणभट्ट' की कृति है, इसमें 'पाञ्चाली' रीति है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है। इसका उपजीव्य गुणाढ्य की बृहत्कथा है। इसके नायक चन्द्रापीड और नायिका कादम्बरी है।
- **लक्ष्मी के लिए प्रयुक्त प्रमुख उपमाएँ-** गन्धर्वनगरलेखेव, हिडिम्बेव, पातालगुहेव, दीपशिखेव, लतेव, गङ्गेव, वात्येव, राहुजिह्वा, अनार्या, तमोबहुला आदि।
- **शुकनाशोपदेश की प्रमुख सूक्तियां -** (1) अतिगहनं तमो यौवन- प्रभवम्। (2) अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः (3) विह्वला हि राजप्रकृतिः। (4) चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः (5) दुरन्तेयमुपभोगतृष्णिका। (6) इयमनार्या (लक्ष्मी) लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते। (7) सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति लक्ष्मीः (8) राज्यविषविकारतन्द्रा प्रदा राजलक्ष्मीः। (9) प्रतिशब्दइव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।

29. ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः कः?

(a) अलङ्कारादिः (b) गुणादिः
(c) रसादिः (d) वृत्यादिः

उत्तर-(c)

ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीय प्रभेदः रसादिः
अर्थात् ध्वन्यालोक में तीसरा (रस ध्वनि) रसादि रूप भेद वाच्य की सामर्थ्य से आक्षिप्त होकर ही प्रकाशित है। साक्षात् शब्द व्यापार (अभिधा, लक्षणा, तात्पर्या शक्तिव्यापार) का विषय नहीं होता इसीलिए वाच्यार्थ भिन्न ही है। इस प्रकार वाच्यार्थ से भिन्न प्रतीयमान (**वस्तु ध्वनि**) के और भी भेद हो सकते हैं। दूसरा अलङ्कार ध्वनि रूप भी वाच्यार्थ से भिन्न है।
वस्तु ध्वनि का वाच्यार्थ से स्वरूपकृत / विषयकृत भेद–
कस्य वा न भवति रोषो दृष्ट्वा प्रियायाः सव्रणमधरम्।
सभ्रमरपद्माघ्रायिणि वारितवामे सहस्वेदानीम्।।

30. 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी' - अत्र 'सः' पदस्य क आशयः-

(a) शब्दः (b) व्यंग्यः
(c) लक्ष्यः (d) वाच्यः

उत्तर-(b)

''सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी'' अत्र 'सः' पदस्य व्यङ्ग्यः आशयः।

- **स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।** अर्थात् काव्य में वाचक, लाक्षणिक और व्यञ्जक तीन प्रकार के शब्द होते हैं।
- **वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः।** वाच्य-लक्ष्य व्यङ्ग्याः। वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य ये वाचक, लक्षक और व्यञ्जक शब्दों के अर्थ होते हैं।
- **तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्।** वाच्य एव वाक्यार्थ इति 'अन्विताभिधानवादिनः'।।
- साक्षात् सङ्केतिंत योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः 'अर्थात् जो साक्षात् सङ्केतित अर्थ को कहता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।
- सङ्केतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा। सङ्केतित अर्थ चार प्रकार का होता है।
- स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते। साक्षात् सङ्केतित अर्थ ही मुख्य अर्थ है, वह मुख्य अर्थ के बोधन में शब्द का जो व्यापार है, उसे अभिधा कहते हैं।
- लक्षणा तेन षड्विधा। अर्थात् लक्षणा छः प्रकार की होती है।

31. ''काव्यप्रकाशे विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः'' - अत्र क उच्यते-

(a) अनन्वितार्थः (b) लक्ष्यार्थः
(c) व्यंग्यार्थः (d) तात्पर्यार्थः

उत्तर-(d)

आकांक्षा, योग्यता, सन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्याऽर्थो विशेषवपुः पदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसीति अभिहितान्वयवादिनां मतम्। अर्थात् पदार्थों का आङ्क्षाक्षा, योग्यता तथा सन्निधि के बल से परस्पर सम्बन्ध होने पर पदों से प्रतीति होने वाला अर्थ न होने पर भी (तात्पर्यविषयीभूत अर्थ होने के कारण) **विशेष प्रकार का तात्पर्य रूप वाक्यार्थ प्रतीति होता है।**)
मीमांसक तात्पर्या शक्ति को ही मानते हैं। व्यञ्जना को नहीं।
वाच्यादस्तदर्थास्युः - वाचक, लक्षक, व्यञ्जक शब्दों के अर्थ भी तीन प्रकार के होते हैं।
(1) वाच्यार्थ **(2)** लक्ष्यार्थ **(3)** व्यङ्ग्यार्थ

32. रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषःसंवलिताविरेजिरे।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः।।
- अस्मिन् श्लोके 'तुषारमूर्ति' इति शब्दः कस्य वाचकः?

(a) सूर्यस्य (b) चन्द्रस्य
(c) श्रीकृष्णस्य (d) रथस्य

उत्तर-(b)

रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषःसंवलिताविरेजिरे।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः।। अस्मिन् श्लोके 'तुषारमूर्ति' इति शब्दः **चन्द्रस्य** वाचकः। 'तुषारमूर्ति' शब्द का वाचक चन्द्रमा है।

- नक्तं का अर्थ है- रात में
- अंशवः का अर्थ है- किरणें
- श्री कृष्ण शब्द का वाचक **'रथाङ्गपाणि'** या **'चक्रपाणि'** है।
  प्रस्तुत श्लोक शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के श्लोक संख्या 21वें से लिया गया है।
  इस श्लोक में नारद जी की कान्ति हरि (श्रीकृष्ण) जी के श्यामल किरणों से मिश्रित होने का वर्णन है।

33. भोजप्रबन्धानुसारं शिलालेख-लिपिवाचनं कथ्यते -

(a) लिपिपरीक्षा (b) शिलापरीक्षा
(c) जतुपरीक्षा (d) पाण्डुपरीक्षा

उत्तर-(c)

भोजप्रबन्ध के अनुसार शिलालेख लिपिवाचन को जतुपरीक्षा कहते थे।

- **'भोजप्रबन्ध'** - बल्लाल सेन की कृति है। इसकी रचना गद्य-पद्यात्मक कथोपकथन के रूप में है। भोजप्रबन्ध के पद्य प्रायः सुभाषित हैं। बल्लालकृत भोजप्रबन्ध के दो पाठ उपलब्ध होते हैं।
- गौडीय पाठ जो कि कलकत्ता से प्रकाशित है तथा दाक्षिणात्य। भोजप्रबन्ध पर जीवानन्द विद्यासागरकृत 'सुबोध' टीका मिलती है।
  भोजप्रबन्ध का आरम्भ 'स्वस्ति श्रीमहाराजाधिराजस्य भोजराजस्य प्रबन्ध कथ्यते' से होता है।
- ब्रह्मी भारत की अधिकांश लिपियों की जननी है। इसका प्रयोग सम्राट् अशोक के लेखों में हुआ है। यह लिपि बांयें से दायें लिखी जाती थी।
- खरोष्ठी लिपि का प्रयोग सम्राट् अशोक के शहबाजगढ़ी और मानसेहरा अभिलेखों में हुआ है। जेम्स प्रिंसेप ने पहली बार ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ा।
- देवनागरी लिपि बांयें से दायें लिखी जाती है। इससे ध्वनि एवं अक्षरों का उत्कृष्ट समन्वय होता है।

34. महाभारतस्य 'खिल' पर्व कथ्यते -

(a) मत्स्यपुराणम् (b) स्कन्दपुराणम्
(c) हरिवंशपुराणम् (d) पद्मपुराणम्

उत्तर-(c)

महाभारत के खिल पर्व को हरिवंश पुराण भी कहते हैं। जिसमें खिलपर्व के 12,000 श्लोक हैं। हरिवंश को मिलाकर वर्तमान महाभारत में 18 पर्व एवं 100 पर्वाध्याय है।

- महाभारत के रचयिता बादरायण व्यास/पराशर्य व्यास/कृष्ण द्वैपायन व्यास हैं।
- मत्स्यपुराण में आन्ध्र राजाओं की प्रमाणिक वंशावली दी गयी है एवं दक्षिण भारत की मूर्ति कला वास्तुकला, एवं स्थापत्यकला का सुन्दर वर्णन है।
- स्कन्ध पुराण में 5 संहिता है। यह सबसे विशालकाय पुराण है। इसमें भारत के सभी तीर्थों का वर्णन है।
- पद्म पुराण में भी 5 खण्ड हैं। केवल इसी पुराण में राधा को कृष्ण की पत्नी होने का स्पष्ट उल्लेख है।

35. मनुस्मृतिकारेण 'नारा' इति शब्देन किं गृहीतम्?

(a) आपः (b) मनुष्यः
(c) पशुः (d) पक्षी

उत्तर-(a)

मनुस्मृतिकार के अनुसार नारा शब्द से आप (जल) का अर्थ लिया गया है।

''आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः।। 1/10

अर्थात् जल को 'नार' कहते हैं क्योंकि जल नर रूप परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। यही जल परमात्मा का प्रथम वासस्थान है इस कारण परमात्मा को नारायण कहा गया है।

धर्म का लक्षण - वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्।। अर्थात् वेद, स्मृति सदाचार और अपनी रूचि के अनुसार करना यह चार प्रकार का धर्म का साक्षात् लक्षण है।

काम से उत्पन्न दोष-

मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।।

अर्थात् मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना ये दश दोष काम से उत्पन्न होते हैं।

क्रोध से उत्पन्न दोष -

''पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्ड च पारूष्यं क्रोधजोऽपि गणोष्टकः।।

अर्थात् चुगली, दुस्साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरण करना, कठोर वचन बोलना, और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न होते हैं;

36. संस्कृत-आलोचना-परम्परायां वाल्मीकिरामायणं कीदृशं काव्यं मन्यते?

(a) अरससिद्धकाव्यम् (b) सिद्धरसकाव्यम्
(c) असिद्धरसकाव्यम् (d) सिद्धासिद्धरसकाव्यम्

उत्तर-(b)

आलोचना परम्परा में वाल्मीकि कृत रामायण को सिद्धरस काव्यं माना जाता है और वाल्मीकि को सिद्धरस कवीश्वर कहा जाता है।

सन्ति सिद्धरसप्रख्या ये च रामायणादयः।
कथाश्रया न तैर्योज्या स्वेच्छा रसविरोधिनी ।।

- रामायण की शैली वैदर्भी और प्रिय छन्द अनुष्टुप् है।
- महर्षि वाल्मीकि को ब्रह्मा ने **''आद्यः कविरसः''** कहकर बोधित किया।
- रामायण में 'सात काण्ड' है - बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्ड। इसमें लगभग **24 हजार** श्लोक है। इसीलिए इसको **''चतुर्विंशतिसाहस्त्री''** संहिता भी कहते हैं।
- **रामायण की प्रमुख सूक्तियाँ-**

'सुलभाः पुरुषा राजन्, सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।
''उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु।
''आम्रं छित्वा कुठारेण, निम्बं परिचरेतु कः।
''न परेणाहतं भक्ष्यं, व्याघ्रः खादितुमिच्छति।

37. कौटिलीयमते प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः गूढपूरुषोऽस्ति-

(a) कापटिकः (b) गृहपतिकः
(c) वैदेहकः (d) उदास्थितः

उत्तर-(d)

कौटिल्यमते प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः उदास्थित अस्ति। अर्थात् बुद्धिमान पवित्र तथा संयासी वेष में रहने वाले गुप्तचर का नाम **उदास्थित** है।

- 'परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः' अर्थात् दूसरों के गुप्त रहस्यों को जानने वाले, बड़ा प्रगल्भ तथा छात्रों के वेश में रहने वाला **कापटिक** कहलाता है।
  'कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः' अर्थात् प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः' अर्थात् बुद्धिमान्, पवित्र हृदय तथा किसान के वेष में रहने वाला **गृहपतिक** कहलाता है।
  'वणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तो गृहपतिकव्यञ्जनः' अर्थात् बुद्धिमान् पवित्र हृदय तथा गरीब व्यापारी के वेश में रहने वाला **वैदेहक** कहलाता है।

38. ''ब्रह्मचर्य भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहारः'', इति कौटिलीयमते कस्य धर्मोऽस्ति?

(a) ब्रह्मचारिणः (b) गृहस्थस्य
(c) वानप्रस्थस्य (d) परिव्राजकस्य

उत्तर-(c)

ब्रह्मचर्य भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्याश्चहारः **वानप्रस्थस्य।**

अर्थात् वानप्रस्थ का अपना धर्म है- ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना, भूमि पर शयन करना, जटा तथा मृगचर्म आदि को धारण करना, अग्निहोत्र नित्य स्नान, देवपितर अतिथियों आदि का स्वागत/पूजा करना, कन्दमूल का आहार करना।

ब्रह्मचारी ब्रह्ममचारी का धर्म है कि वह नियमित स्वाध्याय करे, अग्निहोत्र नित्य स्नान करे, गुरू के लिए प्राण तक त्यागने को उद्यत रहे, भिक्षाटन करे, गुरू की अनुपस्थिति में गुरूपुत्र अथवा किसी समान शाखाध्यायी के निकट रहे।

गृहस्थ अपनी परम्परा के अनुकूल कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करे, अपने कुल आदि से समान और भिन्न गोत्र वाले के साथ विवाह करे।

परिव्राजक संयासी का अपना धर्म है जितेन्द्रिय होना, कामनारहित होना, किसी वस्तु पर अपना अधिकार न रखना तथा शरीर मन एवं वाणी को शुद्ध रखना।

39. याज्ञवल्क्यमते उत्तरा क्रिया कुत्र बलवतीभवति?

(a) सर्वेष्वर्थविवादेषु (b) आधौ प्रतिग्रहे
(c) सर्वेषु भूमिविवादेषु (d) दायविभागविवादेषु

उत्तर-(a)

याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार सभी प्रकार के अर्थ के विवादों में ' **उत्तर-क्रिया'** प्रबल होती है। **''सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवत्युत्तरा क्रिया''।**

- **''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः'** अर्थात् दो स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार से किया गया निर्णय बलवान् होता है।
- **'अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।'**
  सार्वकालिक प्रसिद्धि है कि अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है।
- **'प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम्'।** अर्थात् किसी भी वाद, के लिखित, उपभोग और साक्षी ये तीन प्रमाण हैं।
- ''अधौ प्रतिग्रहे क्रीते पूर्वा तु बलवत्तरा। अर्थात् अधि (बंधन), दान और क्रय में पूर्व कार्य प्रबल होता है।
- **उत्सृष्टो गृह्यते यस्तु सोऽपविद्धो भवेत्सुतः।** अर्थात् माता - पिता द्वारा त्यक्त होने पर जो पुत्र स्वीकार किया जाता है वह अपविद्ध पुत्र होता है।

40. मनुस्मृत्यानुसारं समुचितमस्ति-

(a) आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः (b) आचार्यो मूर्तिः प्रजापतेः
(c) आचार्यो मूर्तिरात्मनः (d) आचार्यः पृथिव्या मूर्तिः

उत्तर-(a)

मनुस्मृति के अनुसार आचार्य ब्राह्मण की मूर्ति है।

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्या मूर्तिस्तु, भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः।। 2/226

अर्थात् आचार्य परमात्मा की मूर्ति है, पिता ब्रह्मा की मूर्ति, माता पृथ्वी की मूर्ति और भाई अपनी ही मूर्ति है।

- **''पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताऽग्निर्दक्षिणः स्मृतः।**
  गुरुराहवनीयस्तु साऽग्नित्रेता गरीयसी।। 2/231
  अर्थात् पिता गार्हपत्य अग्नि, माता दक्षिणाग्नि, गुरू आह्वनीय अग्नि है। यह समस्त अग्नि समूह अत्यन्त श्रेष्ठ है।
- **''इमं लोकं मातृभक्त्या पितृभक्त्या तु मध्यमम्।**
  गुरू शुश्रूषया त्वेवं ब्रह्मलोकं स मश्नुते।। 2/233
  अर्थात् माता की भक्ति से इस लोक को, पिता की भक्ति से मध्यलोक को और गुरू की भक्ति से ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

41. तैत्तिरीयब्राह्मणस्य प्रथमे काण्डे के द्वे वर्णिते -

(a) उपहोमः **(b) अग्निहोत्रम्**
(c) अग्न्याधानम् **(d) गवामयनम्**

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (b) एवं (c) (b) (a) एवं (d)
(c) (c) एवं (d) (d) (a) एवं (b)

उत्तर-(c)

- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य 'तित्तिरि' हैं।
- कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा का एकमात्र यही ब्राह्मण सम्प्रति पूरा उपलब्ध है। यह काण्डों या अष्टकों में विभाजित है। प्रथम और द्वितीय काण्ड में 8-8 अध्याय या प्रपाठक हैं, तृतीय काण्ड में 12 प्रपाठक हैं।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण के प्रथम काण्ड में - अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, सोम, नक्षत्रेष्टि और राजसूय याग का वर्णन है।
  काण्ड-2 के प्रतिपाद्य विषय - अग्निहोत्र, उपहोम, सौत्रामणी, बृहस्पति सव, वैश्य सव आदि।
  काण्ड - 3 के प्रतिपाद्य विषय - नक्षत्रेष्टियाँ और पुरुषमेध।
- तांड्य ब्राह्मण को ही पंचविंश ब्राह्मण और प्रौढ़ ब्राह्मण भी कहा जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- शतपथ ब्राह्मण में 17 काण्ड, 104 अध्याय, 435 ब्राह्मण और 6806 कण्डिकाएँ हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता '**महीदास ऐतरेय'** ऋषि थे। इसमें 40 अध्याय, 8 पञ्चिकाएं, तथा 285 खण्ड हैं। चरैवेति - चरैवेति विश्वविश्रुत गान इसी का है।
- शाङ्खायन को कौषीतकि ब्राह्मण भी कहा जाता है, इसमें 30 अध्याय हैं।

42. **कल्पसाहित्ये गण्येते -**

(a) गौतमधर्मसूत्रम् **(b) वाजसनेयिप्रातिशाख्यम्**

(c) मानवशुल्वसूत्रम् **(d) निघण्टुः**

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (c) एवं (d)

(c) (a) एवं (c) (d) (b) एवं (d)

उत्तर-(c)

गौतमधर्मसूत्र और मानवशुल्ब सूत्र की गणना कल्पसूत्र के अन्तर्गत होती है कल्प - जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है- उन्हें कल्प कहते हैं।

1. ऋग्वेदीय श्रौतसूत्र - आश्वलायन, शांखायन श्रौतसूत्र
2. शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र - कात्यायन श्रौतसूत्र
3. कृष्णयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र - बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ, वाराह, वैखानस श्रौतसूत्र
4. सामवेदीय श्रौतसूत्र - आर्षेय (मशक) कल्पसूत्र, शुल्ब, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान, उपनिदान श्रौतसूत्र।
5. अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र - वैतान श्रौतसूत्र।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र - आश्वलायन, शाङ्खायन और कौषीतकि।
- शुक्लयजुर्वेदीय गृह्यसूत्र - पारस्कर गृह्यसूत्र
- कृष्ण यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र - बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस नारायणीय, वाजपेय गृह्यसूत्र।
- सामवेदीय गृह्यसूत्र - गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, गृह्यसूत्र
- अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र - कौशिक गृह्यसूत्र।
- शुक्लयजुर्वेद संहिता का शुल्बसूत्र - बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशि (सत्याषाढ़), वाराह शुल्बसूत्र।
- कृष्ण यजुर्वेद संहिता का शुल्बसूत्र शुक्ल यजुर्वेद के समान है।
- ऋग्वेदीय धर्मसूत्र - वासिष्ठ धर्मसूत्र
- कृष्ण यजुर्वेदीय धर्मसूत्र - बौधायन, आपस्तम्ब, वैखानस धर्मसूत्र।
- गौतमधर्मसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है।

43. **'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' अस्मिन् मन्त्रांशे 'शुष्मात्' पदस्य अर्थो निर्धार्यताम्-**

(a) बलात् **(b) पूजनात्**

(c) पराक्रमात् **(d) शस्त्रात्**

अधोलिखितेषु चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (c) एवं (d)

(c) (a) एवं (d) (d) (a) एवं (c)

उत्तर-(d)

''यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्'' इस मन्त्र में उल्लिखित 'शुष्मात्' पद का अर्थ **'बल'** और **'पराक्रम'** है।

- यह मन्त्रांश इन्द्रसूक्त के प्रथम मन्त्र से उल्लिखित है। इसके ऋषि **गृत्समद** और देवता **इन्द्र** हैं, इसमें त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है।

  ''यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
  यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।।
- **परि अभूषत् -** अतिक्रमण किया।
- **अभ्यसेताम् -** डरते या कांपते थे।
- **क्रतुना -** पराक्रम से।
- **शुष्मात् -** शक्ति से, बल से, पराक्रम से।
- **रोदसी -** द्युलोक और पृथ्वीलोक। **नृम्णस्य -** सेना
- **इन्द्र के प्रमुख विशेषण -** वज्री, वज्रिन, वज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, मरुत्वान्, मघवा, वृत्रहा, दस्योर्हन्ता, अच्युतच्युत, सुशिप्र, मनस्वान्, सोमपा, पुरंदर, वसुपति।
- अग्नि पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि मधुच्छन्दा हैं।

  प्रमुख विशेषण - जातवेदस, ऋत्विक्, पुरोहित, दमूनस्, त्र्यम्बक, धूमकेतु, धृतमुख, सत्यधर्मा, वैश्वानर, अङ्गिरा, गृहपति, रुक्मदन्त, रक्तश्मश्रु।

44. **'अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे' इत्यस्मिन्मत्रांशे रयिः पदस्य अर्थम् निर्दिशतु -**

(a) रात्रिः **(b) रत्नम्**

(c) धनम् **(d) वसु**

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (c) एवं (d)

(c) (b) एवं (c) (d) (a) एवं (d)

उत्तर-(b)

'अग्निना रयिमश्नवत्वपोषमेव दिवेदिवे यशसं वीरवत्तमम्' इस मन्त्रांश में 'रयि' पद का अर्थ **धन** है। यह मन्त्रांश अग्नि सूक्त से उद्धृत है। अग्नि पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि मधुच्छन्दा हैं। इसमें 200 सूक्त है।

अग्नि के प्रमुख विशेषण - सत्यधर्मा, त्रिशीर्ष, नेता, घृतमुख, नाराशंस, वैश्वानर, घृतजिह्व, कविशस्त, धूमकेतु, पुरोहित, दमूनस, विश्वपति, गृहपति, रुक्मदन्त, तीक्ष्णदंष्ट्र, रक्तश्मश्रु, शोचिषकेश, घृतपृष्ठ, जातवेदस्, ऋत्विक्।

शब्दार्थ-

रयिम् - धन को।

अशवत - प्राप्त करता है।

पोषम् - पोषण को प्राप्त होता है।

दिवे दिवे - प्रतिदिन

45. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।
एता जुषत में गिरः।।
उपर्युक्तमन्त्रे 'गिरः' पदस्य अर्थौ स्तः-
(a) पर्वतः (b) गिरिः
(c) वाणी (d) स्तुतिः
अत्र समीचीनमुत्तरं चिनुत-
(a) (b) एवं (c) (b) (a) एवं (b)
(c) (c) एवं (d) (d) (b) एवं (d)

उत्तर-(c)

दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।
एता जुषत मे गिरः।। **(1.25-18)**।।
इस मन्त्र में गिर पद का अर्थ **वाणी** और **स्तुति** होता है।
- यह मन्त्र वरुण सूक्त का है।
- वरुण सूक्त के ऋषि 'शुनःशेप' तथा देवता 'वरुण' हैं। यह गायत्री छन्द में है।
  शब्दार्थ-
  गिर - वाणी एवं स्तुति
  अधिक्षमि - भूमि पर
  जुषत् - स्वीकार कर लिया है।
  दर्शम् - देख लिया है।
- वरुण को **मायावी** कहा गया है।

46. वैशेषिकदर्शनानुसारं सप्तपदार्थेषु न गण्येते-
(a) पुरुषः (b) विशेषः
(c) गुणः (d) अहङ्कारः
समुचितं विकल्पमत्र चिनुत-
(a) (a) एवं (c) (b) (b) एवं (c)
(c) (c) एवं (d) (d) (a) एवं (d)

उत्तर-(d)

वैशेषिक दर्शन के अनुसार सप्त पदार्थ इस प्रकार है- द्रव्य, गुण, कर्म सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात ही पदार्थ हैं।
- पुरुष एवं अहंकार नामक तत्त्वों की गणना सांख्य शास्त्र में की गई है।
- वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि 'कणाद' हैं।
- सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि 'कपिल' है।

47. आधिदैविकदुःखेषु गण्येते-
(a) झञ्झावातः (b) अश्वाघातः
(c) पश्वाघातः (d) भूकम्पः
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (a) एवं (c) (b) (a) एवं (d)
(c) (c) एवं (d) (d) (b) एवं (c)

उत्तर-(b)

दुःख तीन प्रकार का होता है–
(1) आध्यात्मिक, (2) आधिभौतिक, (3) आधिदैविक।
- आधिदैविक दुःखों में यक्ष, राक्षस, किन्नर, झञ्झावात, भूकम्प, भूत-प्रेत आदि होते हैं।
- आध्यात्मिक दुःख दो प्रकार का होता है - **शारीरिक** और **मानसिक**।
- शारीरिक दुःख वात-पित्त और कफ के वैषम्य के कारण होता है।
- शारीरिक और मानसिक दुःख आन्तरिक हेतु होने के कारण आध्यात्मिक दुःख है।
- आधिभौतिक दुःख मनुष्य, पशु, मृग, पक्षी, सरीसृप और स्थावर प्राणियों के निमित्त से उत्पन्न होता है।
  साङ्ख्य के अनुसार तीन प्रमाण हैं - ''त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्''। ''दृष्ट (प्रत्यक्ष), अनुमान, आप्त।
- मूलप्रकृति का ज्ञान सामान्यतोदृष्ट अनुमान प्रमाण से होता है।
- अभाव के कारण नहीं अपितु सूक्ष्मता के कारण प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है।
- सांख्य का प्रमुख सिद्धान्त 'सत्कार्यवाद' है - **'सतःसत् जायते'**।
- सत्कार्यवाद सिद्धान्त के पांच हेतु हैं - (1) असदकरणाद् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भवाभावात् (4) शक्तस्य शक्यकरणात् (5) कारणभावात्।
- पुरूष के संयोग से जड प्रकृति चेतन के समान प्रतीत होती है।

48. अधोऽङ्कितेषु योगसूत्रानुसारं योगाङ्गेषु गण्येते-
(a) स्वाध्यायः (b) निरुद्धम्
(c) प्रत्यक्षम् (d) समाधि
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (a) एवं (d) (b) (a) एवं (b)
(c) (a) एवं (c) (d) (b) एवं (d)

उत्तर-(a)

योगसूत्रके अनुसार स्वाध्याय और समाधि की गणना योगाङ्गों में की जाती है।
- **अष्टाङ्गयोग - यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणा ध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि। (2/29)**
  अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ योग के अङ्ग हैं।
  यम - 'अहिंसासत्यास्तेयब्रहमचर्यापरिग्रहा, यमाः' (2/30)
  अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्चर्य और अपरिग्रह ये पांच यम कहे जाते हैं।
  नियम- शौचसन्तोषतयः स्वाध्यायेश्वर-प्रणि-धानानि नियमाः(2/32) शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान नियम कहे जाते हैं।
- योग को सेश्वरसांख्य भी कहा जाता है। योग में चार पाद हैं- (1) समाधिपाद (2) साधनपाद (3) विभूतिपाद (4) कैवल्यपाद
- योगदर्शन में पदार्थों की संख्या 26 है।
- वाचस्पतिमिश्र ने योगसूत्र पर **'तत्त्ववैशारदी'** और विज्ञानभिक्षु ने **'योगवार्तिक'** नामक टीका लिखी।
  चित्त की पांच वृत्तियाँ - प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।
  पञ्चक्लेश - अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।

49. अधस्तनेषु वेदान्तानुसारं षट्कसम्पत्तिषु गण्येते -

(a) श्रवणम् **(b) मननम्**
(c) श्रद्धा **(d) समाधानम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (d) (b) (b) एवं (c)
(c) (c) एवं (d) (d) (c) एवं (a)

उत्तर-(c)

सदानन्द योगिन्द्र प्रणित वेदान्तसार में 'साधनचतुष्टय' इस प्रकार है-

(1) नित्यानित्यवस्तुविवेक - नित्य और अनित्य वस्तु का विवेक।
(2) इहामुत्रार्थफलभोगविराग - इस लोक एवं परलोक विषयक भोग भोगने के प्रति वैराग्य।
(3) शमादिषट्कसम्पत्ति - शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा इन छः प्रकार की सम्पत्ति से सम्पन्न होना।
(4) मुमुक्षुत्व- मोक्ष की प्रबल इच्छा होना।

- **अनुबन्ध चार प्रकार के है-**
(1) अधिकारी, (2) विषय, (3) सम्बन्ध, (4) प्रयोजन।

50. अधस्तनेषु चित्तभूमिषु न गण्येते-

(a) चलम् **(b) मूढम्**
(c) विक्षिप्तम् **(d) अचलम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (c) (b) (a) एवं (d)
(c) (c) एवं (d) (d) (b) एवं (c)

उत्तर-(b)

चित्तभूमि के अन्तर्गत चल और अचल की गणना नहीं की जाती है।
चित्त की पाँच प्रकार की भूमियाँ हैं -
(1) क्षिप्त (2) मूढ़ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध
'अथ योगानुशासनम्' सूत्र में 'अथ' पद का अर्थ - अधिकार वाचक है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- योग का लक्षण - ''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।
- समाधि दो प्रकार की होती है - सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात।
- ''वितर्कविचारानन्दास्मितानुगमात् सम्प्रज्ञातः **(1/17)**। अर्थात् वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता का अनुगम होने से **सम्प्रज्ञात** समाधि होती है।
- ''विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः**(1/18)**। अर्थात् **सभी वृत्तियों** के अस्त हो जाने पर चित्त का निरोध संस्कारमात्र शेष निरोध - असम्प्रज्ञात समाधि है।
असम्प्रज्ञात समाधि को 'निर्बीज समाधि' भी कहते हैं।
- ईश्वर प्रणिधान से भी असम्प्रज्ञात समाधि सम्पाद्य होती है। 'ईश्वरप्रणिधानाद्वा'**(1/23)**।
ईश्वर का लक्षण - ''क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वर **(1/24)**। अर्थात् क्लेश, कर्म, विपाक और आशय वासनाओं के परामर्श से रहित एक विशेष प्रकार का पुरुष है। (प्रणव ईश्वर का वाचक है)।
- **सवितर्का, निर्वितर्का, सविचारा, निर्विचारा ये चारों समापत्तियाँ** सबीज समाधियाँ हैं।
- ऋतम्भरा प्रज्ञा तथा तज्जन्य संस्कार सबका निरोध हो जाने से **निर्बीज समाधि होती है।**

51. भर्तृहरेः कृती इमेः -

(a) दीपिका **(b) प्रदीपः**
(c) द्योतनम् **(d) वाक्यपदीयम्**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (b) एवं (c)
(c) (a) एवं (d) (d) (b) एवं (d)

उत्तर-(c)

'दीपिका' और 'वाक्यपदीय' भर्तृहरि की कृति है।

- महाभाष्य के टीकाकार भर्तृहरि ने व्याकरण का दार्शनिक विवेचन किया।
- वाक्यपदीय में तीन काण्ड है - ब्रह्मकाण्ड, वाक्यकाण्ड, पदकाण्ड।
- वाक्यपदीय के माध्यम से स्फोटवाद तथा शब्द से ही संसार के विवर्तित होने का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।
- कश्मीरी पण्डित 'कैय्यट' ने महाभाष्य पर 'प्रदीप' नामक टीका लिखी।
- चन्द्रगोमी ने पाणिनि के आधार पर बौद्धों के लिए चान्द्रव्याकरण बनाया।
- भट्टोजिदीक्षित ने 'सिद्धान्तकौमुदी' पर 'प्रौढमनोरमा' नाम की टीका लिखी तथा पाणिनि की अष्टाध्यायी पर शब्दकौस्तुभ नाम की विस्तृत व्याख्या की।
- पं राजजगन्नाथ ने प्रौढ़मनोरमा पर 'मनोरमाकुचमर्दिनी' नामक आलोचनात्मक टीका लिखी।
- नागेशभट्ट का व्याकरण ग्रन्थ शब्द-रत्न (प्रौढ़मनोरमा पर टीका), विषमी (शब्दकौस्तुभ की टीका) शब्देन्दु शेखर, परिभाषेन्दु-शेखर, वैय्याकरण सिद्धान्त मंजूषा बहुत प्रसिद्ध है।

52. पाणिनीयशिक्षानुसारं शम्भुमते मताः वर्णाः सन्ति-

(a) 61 **(b) 62**
(c) 63 **(d) 64**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (b) एवं (c)
(c) (c) एवं (d) (d) (a) एवं (d)

उत्तर-(c)

पाणिनीय शिक्षानुसार शम्भु के मत में तिरसठ-चौंसठ वर्ण होते हैं।

''त्रिषष्टिश्चतुः षष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा॥3॥
''स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥4॥
अनुस्वारो विसर्गश्च ⌓क ⌓पौ चापि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेयो ऌकारः प्लुत एव च॥5॥

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- इक्कीस स्वर, पच्चीस व्यञ्जन, यादि आठ और चार यम हैं, अनुस्वार, विसर्ग, पर के सन्निधि, में जायमान ⌓क तथा ⌓प (जिह्वामूलीय और उपध्मानीय), दुःस्पृष्ट और, प्लुत ऌकार एक जानना चाहिए।
- कादयो मावसानाः **स्पर्शाः** (क से म तक 25 वर्ण हैं)।
- यणोऽन्तःस्थाः + शल् ऊष्माणः = 8 यादि हैं।
- अष्टौ स्थानानि वर्णानामसुरः कण्ठः शिरस्तथा। जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकौष्ठौ च तालु च॥ अर्थात् वर्णों के उच्चारण स्थान आठ हैं - उरः, कण्ठः, शिरः, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु।
- ''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च। ''हशः संवारा नादा घोषाश्च।''

53. 'प्रवीणः' इतिपदं कयोः उदाहरणं वर्तते-

(a) अर्थसङ्कोचस्य **(b) अर्थपरिवर्तनस्य**
(c) अर्थविस्तारस्य **(d) अर्थहानेः**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (b) एवं (c)
(c) (c) एवं (d) (d) (a) एवं (c)

उत्तर-(b)

'प्रवीण' पद **अर्थविस्तार** और **अर्थपरिवर्तन** का उदाहरण है।

- प्रवीण का अर्थ - प्रकृष्टो वीणायाम् (वीणा वादन में श्रेष्ठ या निपुण)
- वर्तमान में प्रवीण शब्द वीणा वादन की निपुणता को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों में इस शब्द का प्रयोग होने लगा है।
- अर्थपरिवर्तन को विकास सिद्धान्त की दृष्टि से अर्थ विकास भी कहा जाता है।

अर्थपरिवर्तन तीन प्रकार का होता है - (1) अर्थविस्तार (2) अर्थसङ्कोच (3) अर्थादेश

(1) **अर्थविस्तार -** मूलरूप में सङ्कुचित अर्थों का विस्तार हुआ - जैसे - कुशल, तैल, गोशाला, गोष्ठ, महाराज, गवेषणा, स्याही, अधर, बैल, पशु, गधा, उल्लू आदि।

(2) **अर्थसङ्कोच -** अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में सङ्कोच हुआ।
जैसे - जगत्, वारिज, जलद, वारिधि, सर्प, पर्वत, तटस्थ, मन्दिर, मृग, सभ्य, तर्पण, श्राद्ध, अनुकूल, वेदना, घृणा, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, विशेषण आदि।

(3) **अर्थादेश** - एक अर्थ के स्थान पर अन्य अर्थ का आ जाना अर्थादेश कहलाता है। जैसे- असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, बौद्ध, पाषाण, आकाशवाणी, साहस, मुग्ध आदि।

54. 'हरी + एतौ' इत्यत्र भवतः -

(a) यण् - सन्धिः **(b) पररूपम्**
(c) प्रगृह्यसञ्ज्ञा **(d) प्रकृतिभावः**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (b) एवं (c)
(c) (c) एवं (d) (d) (a) एवं (d)

उत्तर-(c)

हरी + एतौ यहाँ प्रकृतिभाव और प्रगृह्यसञ्ज्ञा है।

- **प्रगृह्यसञ्ज्ञा** - ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् - दीर्घ ईकारान्त, दीर्घ ऊकारान्त तथा दीर्घ एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्यसञ्ज्ञा होती है। जैसे - हरी + एतौ, विष्णू + इमौ, गङ्गे + अमू।
- **आदसो मात् -** ''अदस् शब्द के मकार से परे 'ईत् तथा 'ऊत्' प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।
जैसे - अमी ईशाः, अमू आसाते, अमी अश्वाः।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- दाधा ध्वधाप - 'दा' रूप वाले तथा 'धा' रूप वाले धातुओं की 'घु' सञ्ज्ञा होती है।
दाप्लवने और दैप शोधने धातुओं को छोड़कर। जैसे - दाम्, दाण, घेट् आदि।
- **तरप्तमपौ घः** - तरप् तथा तमप् ये दो प्रत्यय 'घ' सञ्ज्ञक होते हैं। जैसे- कुमारितरा/तमा
- **शिसर्वनामस्थानम्-** शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। वनानि, दधीनि, मधूनि।
- यण्-सन्धि सूत्र-इकोयणऽचि - अच् स्वर परे रहने पर इक् के स्थान पर 'यण्' सन्धि होती है।
जैसे - अति + उत्तम = अत्युत्तमः, इति + अत्र = इत्यत्र यदि + अपि = यद्यपि, प्रति + एकम् = प्रत्येकम् सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः।
- **सूत्र- 'एङि पररूपम'-** अकारान्त उपसर्ग के बाद एङ स्वर जिनके प्रारम्भ में हो ऐसी धातु आए तो दोनों स्वरों के स्थान पर पररूप एकादेश हो जाता है। जैसे - प्र + एजते = प्रेजते

55. 'पैलः' इति पदं विद्यते-

(a) गणविशेषस्यादिमः शब्दः (b) पैले भवा

(c) पीलाया गोत्रापत्यम् (d) पैलस्य इयम्

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (c) एवं (d)

(c) (a) एवं (c) (d) (b) एवं (d)

उत्तर-(c)

सूत्र 'पैलादिभ्यश्च' (2.4.59) सूत्रानुसार पैलादि गण आकृति गण हैं। इसमें सम्मिलित होने वाले शब्दों की कोई सीमा नहीं है।

- पीलाया गोत्रापत्यम् - इसमें पीला शब्द से गोत्रापत्य अर्थ में अण् प्रत्यय हुआ है। अतः पैलः शब्द निर्मित हुआ।
- पैले भवा - '**तत्र भव**': सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ है।
- ''पैलस्य इयम्'' - '**तस्येदम्**' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ है।
- **'पैले भवा'** और **'पैलस्य इयम्'** के **'भवा'** और **'इयम्'** इन दोनों विग्रहवाक्यों में स्त्रीलिङ्ग होने पर **'पैली'** बन जाता है।

56. भवभूतिकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?

(a) महावीरचरितम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्

(b) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्

(d) मृच्छकटिकम्, महावीरचरितम्

उत्तर-(b)

भवभूतिकृत रचनाएं - उत्तररामचरित, महावीरचरित और मालतीमाधव है।

- भवभूति का दार्शनिक नाम उदुम्बर था तथा उपाधि 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' था।
- भवभूति का प्रियछन्द अनुष्टुप् और शिखरिणी, रीति गौणी और प्रियरस करुण था।
- सप्तम अङ्क में गर्भनाटक की योजना तथा प्रथम अङ्क में चित्रवीथी की योजना की गयी है।
- 'उत्तररामचरितम्' विदूषक रहित नाटक है, इसके तृतीय अङ्क में छायाङ्क की योजना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- 'महावीरचरितम्' में भवभूति अपने आप को **'वश्यवाक्'** और उत्तरामचरितम् में **'परिणतप्रज्ञ'** कहा है। इनके नाटकों में अभिधावृत्ति मुख्य है।
- महाकवि कालिदास की प्रमुख रचनाएं - (1) ऋतुसंहार (2) कुमारसम्भवम् (3) मेघदूतम् (4) मालविकाग्निमित्रम्, (5) विक्रमोर्वशीयम् (6) रघुवंशम् (7) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
- विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस में सात अङ्क हैं।

57. रामायणाश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति?

(1) मालविकाग्निमित्रम्, रत्नावली

(2) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्

(3) प्रतिमानाटकम्, वेणीसंहारम्

(4) मालविकाग्निमित्रम्, स्वप्नवासवदत्तम्

उत्तर-(b)

रामायण पर आश्रित 'भवभूति' की **उत्तररामचरितम्** एवं महावीरचरितम् दोनों ग्रन्थ हैं। उत्तररामचरितम् 7 अङ्कों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। महावीरचरितम् में भी 7 अङ्कों में राम के विवाह से लेकर रामराज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है।

- वेणीसंहार भट्टनारायण द्वारा विरचित 6 अङ्कों का महाभारत पर आश्रित नाटक है।
- स्वप्नवासवदत्तम् भास विरचित 6 अङ्कों का 'उदयनमूलक' नाटक है।
- 'मालविकाग्निमित्रम्' 5 अङ्कों का मालविका एवं अग्निमित्र के प्रेम प्रणय पर आश्रित ग्रन्थ है। रत्नावली श्री हर्ष की 4 अङ्कों की उदयन एवं रत्नावली (सागरिका) के प्रणय एवं प्रेम का वर्णन है।

58. दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज वालो रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा शशाङ्कः।।
- श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः कश्चात्र अलङ्कारः?

(a) मालिनीवृत्तम्, परिकरालङ्कारः

(b) आर्यावृत्तम्, उत्प्रेक्षालङ्कारः

(c) उपजातिवृत्तम्, उपमालङ्कारः

(d) वंशस्थवृत्तम्, रूपकालङ्कारः

उत्तर-(c)

'भगवत्प्रसूति' नामक प्रथम सर्ग में बुद्ध के विषय में कहा गया है-
''दीप्त्या च धैर्येण च यो रराज बालो
रविर्भूमिमिवावतीर्णः।
तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंसि यथा शशाङ्कः ।।1/12।।
उपर्युक्त पंक्ति अश्वघोषकृत बुद्धचरितम् का है।
इसमें 'उपजातिवृत्त' और 'उपमालङ्कार' है।
उपजाति वृत्त-''अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः। अर्थात् जिस छन्द के दो चरण इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के लक्षण से युक्त हों, उपजाति छन्द कहलाते हैं।

- उपमालङ्कार- 'साधर्म्यमुपमा भेदे'
  अर्थात् उपमान और उपमेय का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है।
  इस उदाहरण में बुद्ध उपमेय, बालसूर्य उपमान, तेज साधारण धर्म तथा इव उपमावाचक शब्द है। इस प्रकार यह उपमालङ्कार हुआ।

59. नाट्यशास्त्रानुसारं रसानां वर्णाः सन्ति-

(a) शृङ्गारः श्यामः हास्यः कपोतः

(b) हास्यः सितः शृङ्गारः श्यामः

(c) हास्यः सितः शृङ्गारः कपोतः

(d) करुणः कपोतः शृङ्गारः श्यामः

समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(a) (a) एवं (b)　　(b) (b) एवं (d)

(c) (c) एवं (d)　　(d) (a) एवं (d)

उत्तर-(b)

नाट्यशास्त्रानुसार श्यामवर्ण शृङ्गार रस का, हास्यरस का सितवर्ण, कपोतवर्ण करुण रस का, रक्तवर्ण रौद्र रस का, गौरवर्ण वीर रस का, कृष्णवर्ण भयानक रस का, नीलवर्ण बीभत्स रस का एवं पीत वर्ण अद्भुत रस का होता है।

''श्यामो भवति शृङ्गारः सितो हास्यः प्रकीर्त्तितः।
कपोतः करुणश्चैव रक्तो रौद्रः प्रकीर्त्तितः॥42॥
गौरो वीरस्तु विज्ञेयः कृष्णश्चैव भयानकः।
नीलवर्णस्तु वीभत्सः पीतश्चैवाद्भुतः स्मृतः॥43॥

- रसों के देवता- शृङ्गार रस के देवता विष्णु, हास्य रस के प्रमथ (भगवान् शिव के गण), रौद्र रस के अधिष्ठाता साक्षात् रुद्र हैं। करुण रस के देवता-यम, वीभत्स रस के देवता महाकाल, भयानक रस के देवता कालदेव, वीर रस के देवता महेन्द्र तथा अद्भुत रस के देवता ब्रह्मा माने गए हैं।

शृङ्गारो विष्णुदैवत्यो हास्यः प्रमथदैवतः।
रौद्रो रुद्राधिदैवत्यः करुणो यमदैवतः॥44॥
बीभत्सस्य महाकालः कालदेवो भयानकः।
वीरो महेन्द्रदेवः स्यादद्भुतो ब्रह्मदैवतः॥45॥

- ''न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्त्तते।
  तत्र विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।''
- रससूत्र के व्याख्याकार - (1) भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद सिद्धान्त।

(2) शङ्कुक का अनुमितिवाद (3) भट्टनायक का भुक्तिवाद (4) अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद सिद्धान्त है।

60. नाट्यशास्त्रे विश्वकर्मणा प्रेक्षागृहस्य त्रैविध्ये वर्णितम्-

(a) विकृष्टम्　　**(b) त्र्यस्त्रम्**

(c) चतुरस्त्रम्　　**(d) अष्टास्त्रम्**

उपर्युक्तेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(a) (a) एवं (b)　　(b) (a) एवं (d)

(c) (b) एवं (d)　　(d) (c) एवं (d)

उत्तर-(a)

नाट्यशास्त्र में विश्वकर्मा ने प्रेक्षागृह को तीन प्रकार से वर्णित किया है।

(1) विकृष्ट (आयताकार)
(2) चतुरस्त्र (वर्गाकृति)
(3) त्र्यस्त्र (त्रिभुजाकृति)

''प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिप्रकारो विधिः स्मृतः।
विकृष्टश्चतुरस्त्रश्च त्र्यस्त्रश्चैव प्रयोक्तृभिः॥
त्र्यस्त्रं त्रिकोणं कर्तव्यं नाट्यवेश्म प्रयोक्तृभिः॥

प्रमाण की दृष्टि से भी नाट्यमण्डप तीन प्रकार के होते है-(1) ज्येष्ठ, (2) मध्य और (3) कनीय।

- **नान्दी की परिभाषा -** आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते। देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति सञ्ज्ञिता॥

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- चन्द्रमा को नाट्यगृह के मण्डप की रक्षा का भार दिया गया था।
- नेपथ्यभूमि का भार मित्र को,आकाश का भार वरुण को, रङ्ग वेदिका की रक्षा का भार तीक्ष्ण अधिष्ठाता अग्नि को नियुक्त किया गया।
- स्तम्भों के मध्यवर्ती प्रदेश की रक्षा का भार द्वादश आदित्य, एकादश रुद्र को सौंपा गया।

61. महाभारताश्रितं भासविरचितं नाटकमस्ति-

(a) दूतवाक्यम्　　**(b) प्रतिमानाटकम्**

(c) मध्यमव्यायोगम्　　**(d) बालभारतम्**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b)　　(b) (b) एवं (d)

(c) (a) एवं (c)　　(d) (b) एवं (c)

उत्तर-(c)

महाभारत आश्रित भास के नाटकों की शृंखला में निम्न नाटक है– उरुभङ्गम्,दूतवाक्यम्, पञ्चरात्रम्, बालचरितम्, दूतघटोत्कचम्, कर्णभारम् मध्यमव्यायोग। भास ने कुल 13 नाटकों की रचना की है। जिसमें कुछ रामायणमूलक एवं कुछ उदयनमूलक तथा कुछ कल्पनामूलक भी है।

- रामायणमूलक–प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक
- उदयनमूलक–प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्
- कल्पनामूलक–अविमारक, चारुदत्त।

62. महाभारताश्रितं भासविरचितं ग्रन्थद्वयं किमस्ति?

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम्　　**(b) उरुभङ्गम्**

(c) स्वप्नवासवदत्तम्　　**(d) दूतघटोत्कचम्**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (d)　　(b) (b) एवं (c)

(c) (c) एवं (d)　　(d) (b) एवं (d)

उत्तर-(d)

महाकवि भास ने कुल तेरह (13) नाटक की रचना की है। कालिदास भी भास को मालविकाग्निमित्रम् में भास को सादर प्रणाम किया है। अतः नाटककार के रूप में कालिदास ने भास को मान्यता दी है।

महाभारतमूलक भास के नाटक–उरुभङ्गम्, दूतवाक्यम्, दूतघटोत्कचम्, पञ्चरात्रम्, बालचरितम्, कर्णभारम्, मध्यमव्यायोग।
रामायणमूलक–प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक।
उदयनमूलक–प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्।
कल्पनामूलक–अविमारक, चारुदत्तम्।

63. अशोकस्य गिरनार-अभिलेखानां सन्दर्भे समुचितं कथनमस्ति-

(a) अभिलेखानां भाषा संस्कृतमस्ति।

(b) अभिलेखानां भाषा प्राकृतम् (पालिः) अस्ति।

(c) अभिलेखानां लिपिः देवनागरी अस्ति।

(d) अभिलेखानां लिपिः ब्राह्मी अस्ति।

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (b) एवं (c)

(c) (c) एवं (d) (d) (b) एवं (d)

उत्तर-(d)

अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत तथा लिपि ब्राह्मी है। अशोक के शिलालेखों में प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि का बहुतायत मात्रा में प्रयोग है। शहबाजगढ़ी एवं मनसेहरा अभिलेख को छोड़कर सभी लेख प्राकृत भाषा में हैं। शहबाजगढ़ी एवं मानसेहरा अभिलेख खरोष्ठी लिपि में है। अशोक कालीन 14 शिलालेख प्राप्त हुए हैं। गिरनार गुजरात जनपद में स्थित है। गिरनार शिलालेख अशोक का प्रथम शिलालेख है। अशोक के अभिलेख को तीन श्रेणी में बाटा गया है।

1. स्तम्भलेख 2. शिलालेख 3. गुफा अभिलेख

64. निम्नाङ्कितेषु समुचितः सम्बन्धो वर्तते-

(a) हर्षस्य बांसखेड़ा - ताम्र - अभिलेखः

(b) पुलकेशिन द्वितीयस्य मन्दसौर - अभिलेखः

(c) यशोधर्मणः इलाहाबाद - अभिलेखः

(d) रुद्रदाम्नः गिरनार - अभिलेखः

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (b) एवं (c)

(c) (c) एवं (d) (d) (a) एवं (d)

उत्तर-(d)

हर्ष का बांसखेड़ा अभिलेख संस्कृत भाषा के ब्राह्मी लिपि में है। इसमें हर्ष की वंशावली दी हुयी है। बाँसखेड़ा शाहजहाँपुर में स्थित है। हर्ष ने इस अभिलेख को (628) में वर्धमान कोटिसेना से प्रसारित किया था।

- रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख साहित्यिक, काव्यात्मक एवम् ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह शिलालेख मौर्यों के प्रान्तीय प्रशासन पर प्रकाश डालता है। इसकी भाषा प्राकृत है तथा लिपि ब्राह्मी है।

  पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख संस्कृत भाषा के दक्षिणी ब्राह्मी लिपि में है।

65. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य विषयोऽस्ति-

(a) ऋणादानप्रकरणम् **(b) दानप्रकरणम्**

(c) गृहस्थधर्मप्रकरणम् **(d) साक्षिप्रकरणम्**

अधस्तनेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (a) एवं (b) (b) (a) एवं (d)

(c) (b) एवं (d) (d) (c) एवं (b)

उत्तर-(b)

याज्ञवल्क्य स्मृति में ऋणदान प्रकरण एवं साक्षिप्रकरण व्यवहाराध्याय के अन्तर्गत आते हैं। ये निम्न हैं–

1. साधारणव्यवहारमातृकप्रकरणम् 2. असाधारणव्यवहारमात्रिकप्रकरण
3. ऋणादानप्रकरणम् 4. उपनिधिप्रकरणम्
5. साक्षिप्रकरणम् 6. लेख्यप्रकरणम्
7. दिव्यप्रकरणम् 8. दायभागप्रकरणम्
9. सीमाविवादप्रकरणम् 10. स्वामिपालविवादप्रकरण
11. स्वामिविक्रयप्रकरणम् 12. दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्
13. क्रीतानुशयप्रकरणम् 14. अभ्युपेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्
15. संविद्व्यतिक्रमप्रकरणम् 16. वेतनादानप्रकरणम्
17. द्यूतसमहाह्वयप्रकरणम् 18. वाक्यपारुष्यप्रकरणम्
19. दण्डपारुष्यप्रकरणम् 20. साहसप्रकरणम्
21. विक्रीसम्प्रदानप्रकरणम् 22. सभूयसमुत्थानप्रकरणम्
23. स्तेयप्रकरणम् 24. स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्
25. प्रकीर्णप्रकरणम्।

66. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) शिक्षा	**(i) पादव्यवस्था**
(b) कल्पः	**(ii) शब्दानुशासनम्**
(c) व्याकरणम्	**(iii) यज्ञविधानविमर्शः**
(d) छन्दः	**(iv) वर्णस्वरमात्रादिविमर्शः**

समुचितां तालिकां चिनुत-

(a) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

(b) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

(c) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)

(d) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

उत्तर-(b)

शिक्षा का अर्थ है–**वर्णोच्चारण की शिक्षा देना। सायण ने भी कहा** है–स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्रशिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा।

- कल्प का अर्थ है–याज्ञिक विधियों का समर्थन एवं प्रतिपादन।

  कल्प के 4 भेद है–

  1. श्रौतसूत्र, 2. गृह्यसूत्र, 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र।

  'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'–व्याकरण को शब्दानुशासन कहते हैं।

  व्याकरण के 5 प्रयोजन हैं–

  1. रक्षा, 2. ऊह, 3. आगम, 5.लघु, 5. असन्देह।

  यास्क ने छन्दस् का निर्वचन छद् धातु से किया है।

  छद् (ढकना) का अर्थ ढकना है छन्दांसि छादनात् अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके समष्टि रूप प्रदान करते हैं।

67. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) आख्यातम्	**(i) अदः**
(b) नाम	**(ii) भवति**
(c) निपात	**(iii) परि**
(d) उपसर्ग	**(iv) नु**

समुचितां तालिकां चिनुत-

(a) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iv)

(b) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)

(c) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)

(d) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)

उत्तर-(d)

पद के चार भेद होते हैं—नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात। जिसमें भाव प्रधान होते हैं, उसे आख्यात कहते हैं। जिसमें सत्त्व (सिद्ध क्रिया) प्रधान हो उसे नाम कहते हैं। यास्क ने कहा है ''भाव प्रधानम् आख्यातम्, सत्त्वप्रधानानि नामानि''। निपात विभिन्न अर्थों में आते हैं। ''उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति''निपात तीन प्रकार के होते हैं- उपमार्थक, कर्मोपसंग्रहार्थक पाद-पूरणार्थक। यहाँ नु निपात उपमार्थक है। इव, न, नु, चित् ये 4 निपात उपमार्थक के अर्न्तगत है आते हैं।

ना निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः।

68. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्	**(i) जैनाः**
(b) सप्तभङ्गिनयः	**(ii) साङ्ख्यदर्शनम्**
(c) हेत्वाभासाः	**(iii) चार्वाकाः**
(d) सत्कार्यवादः	**(iv) नैयायिकाः**

अत्र समुचितां विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(ii)

(B) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

(C) (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(i)

(D) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)

उत्तर-(b)

चार्वाक केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानते हैं। सप्तभङ्गीनय जैनों का मत है—ये सात भङ्ग इस प्रकार हैं- (1) स्यात् अस्ति, (2) स्यात् नास्ति, (3) स्यात् अस्ति नास्ति, (4) स्यात् अवक्तव्यम्, (5) स्यात् अस्ति च अवक्तव्यम्, (6) स्यात् नास्ति च अवक्तव्यम् (7) स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम्

- हेत्वाभास पाँच प्रकार के हैं—1. असिद्ध 2, विरुद्ध 3. अनैकान्तिक 4. प्रकरणसम 5. कालात्ययापदिष्ट।
- सत्कार्यवाद् सांख्यशास्त्र का प्रमुख सिद्धान्त है। प्रधान की सिद्धि के लिए सत्कार्यवाद के 5 हेतु हैं।
  1. असदकरणात् 2. उपादानग्रहणात् 3. सर्वसम्भवाभावात् 4. शक्तस्य शक्यकरणात् 5. कारणभावात्।

69. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) माध्यमिकाः	**(i) बाह्यार्थशून्यम्**
(b) योगाचाराः	**(ii) बाह्यार्थप्रत्यक्षम्**
(c) सौत्रान्तिकाः	**(iii) सर्वं शून्यम्**
(d) वैभाषिकाः	**(iv) बाह्यार्थानुमेयम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

(b) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

(c) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

(d) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)

उत्तर-(a)

बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय हैं -

(1) वैभाषिक (2) सौत्रान्तिक (3) योगाचार (4) माध्यमिक।

- वैभाषिक - बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्,योगाचार - ब्राह्यार्थशून्यम्
- सौत्रान्तिक - बाह्यार्थानुमेयत्वम्,माध्यमिक - सर्वशून्यत्वम्।
- हीनयान - सौत्रान्तिक + वैभाषिक
- महायान - माध्यमिक + योगाचार
- बौद्ध धर्म के तीन रत्न - प्रज्ञा, शील, समाधि
- बौद्ध मत में दो प्रमाण हैं - प्रत्यक्ष और अनुमान
- बौद्ध धर्म की विशेषताएं - अनीश्वरवादी, अनात्मवादी, नास्तिक, वेद-विरोधी, पुनर्जन्म में विश्वास, जन्म का कारण ईश्वर नहीं।
- त्रिपिटक - सुत्तपिटक - बुद्ध के उपदेश
  विनय पिटक - आचार सम्बन्धी ग्रन्थ
  अभिधम्म पिटक - दार्शनिक विषयों का विवेचन
- **चार आर्य सत्य -**
  (1) दु:ख (2) दु:ख समुदाय (3) दु:ख निरोध (4) दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपत्।

70. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) भट्टोजिदीक्षितः	**(i) काशिका**
(b) नरेन्द्राचार्यः	**(ii) शब्दकौस्तुभः**
(c) वामनः	**(iii) लघुमञ्जूषा**
(d) नागेशः	**(iv) सारस्वतव्याकरणम्**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

(B) (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(ii)

(C) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iv)

(D) (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(iii)

उत्तर-(d)

भट्टोजिदीक्षित की कृति सिद्धान्त कौमुदी है, इन्होंने इस पर स्वयं 'प्रौढमनोरमा' नाम की टीका लिखी तथा पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'शब्दकौस्तुभ' नाम की विस्तृत व्याख्या की।

- नागेशभट्ट की टीका शब्दरत्न (प्रौढमनोरमा पर), विषमी (शब्दकौस्तुभ की टीका) वैय्याकरण लघुमञ्जूषा, शब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दु-शेखर प्रसिद्ध है।
- सातवीं शताब्दी में जयादित्य और वामन द्वारा अष्टाध्यायी पर सरल एवं सर्वाङ्गीण वृत्ति 'काशिका' लिखी।
- सारस्वत व्याकरण के रचयिता नरेन्द्राचार्य हैं।

71. सूत्रोदाहरणयोः युग्मं यथोचितं मेलयतु-

(a) तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्	**(i) पठितुं प्रवीणः**
(b) समानकर्तृकेषु तुमुन्	**(ii) वेला भोक्तुम्**
(c) पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु	**(iii) ज्ञातुम् इच्छामि**
(d) कालसमयवेलासु तुमुन्	**(iv) कृष्णं दर्शको याति**

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(ii)

(B) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)

(C) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)

(D) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)

उत्तर-(b)

सूत्र- तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियाऽर्थायाम् (3.3.10)
अर्थात् क्रियार्थ क्रिया उपपद रहते धातु से भाव अर्थ में तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय हो यथा - कृष्णं द्रष्टुं याति अथवा कृष्णं दर्शको याति।
सूत्र- कालसमयवेलासु तुमुन् (**3.3.167**) अर्थात् काल, समय और वेला उपपद रहते धातु से तुमुन् प्रत्यय हो। यथा–वेला भोक्तुम्,।
सूत्र- समानकर्तृकेषु तुमुन् (**3.3.158**) अर्थात् कर्त्ता समान होने पर तुमुन् प्रत्यय होता है।

72. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(a) श्रीहर्ष	**(i) हर्षचरितम्**
(b) दण्डी	**(ii) मुद्राराक्षसम्**
(c) बाणभट्टः	**(iii) नैषधीयचरितम्**
(d) विशाखदत्तः	**(iv) दशकुमारचरितम्**

समुचितां तालिका चिनुत-

(A) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)

(B) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)

(C) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)

(D) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

उत्तर-(b)

श्रीहर्ष का नैषधीयचरित 22 सर्गों का एक महाकाव्य है। इसमें नल एवं दमयन्ती की प्रेम एवं प्रणय कथा का वर्णन है। श्री हर्ष के पिता 'श्रीहीर' एवं माता **'मामल्ल देवी'** थी। दण्डी के दशकुमारचरितम् में 8 उच्छ्वास हैं। दशकुमारचरितम् के पूर्व पीठिका में 5 उच्छ्वास हैं। दण्डी वैदर्भी शैली के कवि थे। कादम्बरी बाण की अन्तिम एवं प्रौढ कृति है परन्तु हर्षचरितम् बाण की प्रथम रचना है। हर्षचरितम् आख्यायिका है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं। इसमें प्रथम 2 उच्छ्वासों में हर्ष ने अपने वंश का वर्णन किया है। आगे के छः उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन है।

- 'मुद्राराक्षस' विशाखदत्त की रचना है। यह 7 अङ्कों का राजनीति विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा के द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन है। इसीलिए इसका नाम मुद्राराक्षस पड़ा।

73. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) हर्षः	**(i) मुद्राराक्षसम्**
(b) भवभूति	**(ii) कर्णभारम्**
(c) विशाखदत्तः	**(iii) उत्तररामचरितम्**
(d) भासः	**(iv) रत्नावली**

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)

(B) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)

(C) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)

(D) (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(iii)

उत्तर-(b)

हर्ष की तीन रचना है–प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द। प्रियदर्शिका 4 अङ्कों की नाटिका एवं रत्नावली भी 4 अङ्कों की नाटिका है। नागानन्द 5 अङ्कों का नाटक है। भवभूति के तीन ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं–उत्तररामचरितम्, मालतीमाधव एवं महावीरचरितम्।
उत्तररामचरितम् के सातों अङ्कों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। विशाखदत्त की मुद्राराक्षस 7 अङ्कों की राजनीति विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा के द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन है।
कर्णभार भास के 13 नाटको में से एक अङ्क का एकाङ्की है। इसमें कर्ण की दानशीलता का वर्णन है।

74. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्ध?

(a) द्यूतक्रीड़ा	**(i) भीष्मपर्व**
(b) गीता-उपदेशः	**(ii) महाप्रस्थानिकपर्व**
(c) अभिमन्यु-वधः	**(iii) सभापर्व**
(d) पाण्डवानां हिमालययात्रा	**(iv) द्रोणपर्व**

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(ii)

(B) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)

(C) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)

(D) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

उत्तर-(d)

द्यूतक्रीड़ा-सभापर्व, गीता उपदेश-भीष्मपर्व.अभिमन्यु वध-द्रोणपर्व, पाण्डवों का हिमालय यात्रा-महाप्रस्थानिकपर्व महाभारत के रचनाकार वेदव्यास/कृष्णद्वैपायन हैं। भीष्मपर्व अर्जुन को गीता का उपदेश, द्रोणपर्व - द्रोण एवं अभिमन्यु का वध, कर्णपर्व-कर्ण और शल्य का युद्ध । शल्य पर्व-शल्य का युद्ध एवं वध सौप्तिकपर्व - सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध, स्त्रीपर्व - शोकाकुल स्त्रियों का विलाप, शान्ति पर्व - युधिष्ठिर राज धर्म एवं मोक्ष सम्बन्धी प्रश्न, अनुशासनपर्व - धर्म एवं नीति की कथाएं, आश्वमेधिक पर्व - युधिष्ठिर का अश्वमेध अनुष्ठान, आश्रमवासिक पर्व - धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ आश्रम, प्रवेश, मौसल पर्व - यादवों का पारस्परिक संघर्ष से नाश, महाप्रस्थानिक पर्व पाण्डवों का हिमालय यात्रा, स्वर्गारोहण पर्व - पाण्डवों का स्वर्गारोहण।

75. मनुस्मृतेः टीकाकाराणां केन सह कस्य सम्बन्धः

(a) गोविन्दराजः	**(i) मनुभाष्यम्**
(b) कुल्लूकभट्टः	**(ii) मन्वाशयानुसारिणी-मनुटीका**
(c) सर्वज्ञनारायणः	**(iii) मन्वर्थमुक्तावली**
(d) मेधातिथिः	**(iv) मन्वर्थविवृत्ति**

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(A) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)

(B) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)

(C) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iii)

(D) (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(ii)

उत्तर-(b)

मनुस्मृति की प्रमुख टीकाएं -

टीकाकार	टीका	काल
गोविन्दराज	मन्वाशयानुसारिणी मनुटीका	1050-1140 ई .
कुल्लूकभट्ट	मन्वर्थमुक्तावली	1150-1300 ई .
सर्वज्ञनारायण	मन्वर्थवृत्ति	1400 ई .
मेधातिथि	मनुभाष्य	824-900 ई .

76. वैदिकसाहित्ये अधोलिखितानां सुनिश्चितक्रमो लेख्यः

(i) ब्राह्मणम्	**(ii) उपनिषद्**
(iii) शुक्लयजुर्वेदः	**(iv) सूत्रसाहित्यम्**

अधोलिखितेषु उचितक्रमं चिनुत-

(A) (ii), (i), (iv), (iii) (B) (iii), (i), (ii), (iv)

(C) (i), (ii), (iii), (iv) (D) (iv), (i), (ii), (iii)

उत्तर-(b)

वैदिक साहित्य में सर्वप्रथम वेदों का वर्णन है तदुपरान्त ब्राह्मण फिर आरण्यक उसके बाद उपनिषद् आते हैं।

वेद के चार भाग हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवम् अथर्ववेद। प्रत्येक वेद के विभिन्न आरण्यक ग्रन्थ होते हैं। प्रत्येक वेद के भिन्न-भिन्न उपनिषद् एवं ब्राह्मण ग्रन्थ भी होते हैं।

वेद शब्द विद् धातु (विद् ज्ञाने) से घञ् (अ) प्रत्यय से बना है। इसका अर्थ 'ज्ञान' है। वेदों को 'निगम' भी कहते हैं।

ब्राह्मण का अर्थ मन्त्र है। अतः मन्त्रों की व्याख्या एवं विनियोग प्रस्तुत करने के कारण इन्हें ब्राह्मण कहते हैं। ब्राह्मण का अर्थ रहस्य भी होता है।

उपनिषद् - उप और नि उपसर्ग पूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय लगकर बना है।

उपनिषद् के तीन अर्थ है- 1. विशरण 2. गति 3. अवसादन। वेदाङ्गो' में कल्पसूत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

कल्प सूत्रों के 4 भाग हैं-

1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र।

77. निरुक्तकारेण केन क्रमेण पदजातानि वर्णितानि?

(i) आख्यातम्	**(ii) उपसर्गाः**
(iii) निपाताः	**(iv) नाम**

अत्र कः क्रमः? स्पष्टयत

(A) (iv), (i), (ii), (iii) (B) (i), (iii), (ii), (iv)

(C) (ii), (i), (iii), (iv) (D) (iii), (ii), (iv), (i)

उत्तर-(a)

निरुक्तकार यास्क ने पद के चार भेद बतलाये हैं, जो इस प्रकार है— नाम - आख्यात - उपसर्ग - निपात ''चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च''।

- यास्ककृत निरुक्त में परिशिष्ट सहित 14 अध्याय हैं।
- निरुक्त के टीकाकार - दुर्गाचार्य की ऋज्वर्थ-वृत्ति, निरुक्त-निघण्टु टीका अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- यास्क सभी नाम को धातुज मानते हैं। शाकटायन भी इसी मत को स्वीकारते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- तत्र नामानि- आख्यातजानि शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च।
- भावप्रधानम् आख्यातम्। सत्त्वप्रधानानि नामानि।
- इन्द्रिय नित्यं वचनम् औदुम्बरायणः।
- षड्भाव विकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।
- न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुः इति शाकटायनः।

78. बौद्धदर्शनानुसारं चतुर्णाम् आर्यसत्यानाम् उचितः क्रमोऽस्ति-

(a) दुःखम्, समुदायः, निरोधः, मार्गः

(b) मार्गः, दुःखम्, निरोधः, समुदायः

(c) समुदायः, दुःखम्, मार्गः, निरोधः

(d) निरोधः, मार्गः, दुःखम्, समुदायः

उत्तर-(a)

बौद्ध दर्शन के अनुसार चार आर्य सत्य का क्रम—दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध एवं दुःख मुक्ति का मार्ग है। बुद्ध ने दुःख के कारण और उसकी निवृत्ति के लिए चार आर्य सत्य का प्रवचन किया है। 1. दुःख को आर्यसत्य बताकर उसको जन्म जरा व्याधि और अभाव का कारण बताया 2- दुःख समुदाय को आर्य सत्य बताकर उसको तृष्णा को उत्पन्न करने का कारण बताया। दुःख निरोध को आर्य सत्य बताकर उन्होंने उसको अनेक विधि कारणों को खोज निकाला।

79. जैनमतानुसारं सप्ततत्त्वानां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(a) आस्रवः, संवरः, बन्धः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः

(b) बन्धः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः

(c) जीवः, अजीवः, आस्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः

(d) बन्धः, जीवः, अजीवः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः

उत्तर-(c)

जैन दर्शन के अनुसार सात तत्त्वों का समुचित क्रम - जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष है। इन्हीं सात तत्त्वों से जगत् की समस्त वस्तुओं का परिणाम होता है।

- मोक्षोपयोगी तीन साधनों को जैन दर्शन में रत्नत्रय कहा जाता है–
  (1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चरित्र

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- जैनदर्शन का प्रधान सिद्धान्त स्याद्वाद है। सप्तभङ्गीनय सात हैं–
  (1) स्यादस्ति (2) स्यान्नास्ति (3) स्यादस्ति च नास्ति च (4) स्याद् अवक्तव्यम् (5) स्यादस्ति च अवक्तव्यम् च (6) स्यान्नास्ति च अवक्तव्यं च (7) स्यादस्ति च नास्ति च अवक्तव्यं च।
- जैनमतानुसार जीव चैतन्य है तथा ज्ञान इसका साक्षात् लक्षण है;
- जैन दर्शन में सर्वज्ञ, रागद्वेषी के विजयी, यथार्थवादी, त्रैलोक्यपूजित, सामर्थ्यवान्, सिद्ध पुरुषों को अर्हत् कहा जाता है।
- चेतन द्रव्य को जीव कहते हैं - ''चैतन्यलक्षणो जीवः''।
- जैन दर्शन में पुद्गल शब्द का प्रयोग सामान्य भूत के लिए किया जाता है।
- पुद्गल की निष्पत्ति- ''पूरयन्ति गलन्ति च''। इसके दो रूप हैं- अणु और संघात्।

80. अधोलिखितानां ग्रन्थानां रचनाकालदृष्ट्या समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) काशिका, वाक्यपदीयम्, सारस्वतव्याकरणम्, प्रदीपः
(b) वाक्यपदीयम्, काशिका, सारस्वतव्याकरणम्, प्रदीपः
(c) वाक्यपदीयम्, काशिका, प्रदीपः, सारस्वतव्याकरणम्
(d) वाक्यपदीयम्, प्रदीपः, काशिका, सारस्वतव्याकरणम्

उत्तर-(c)

रचनाकाल की दृष्टि से समुचित क्रम वाक्यपदीयम्, काशिका, प्रदीप और सारस्वतव्याकरण हैं।

- वाक्यपदीय व्याकरण शृंखला का मुख्य दार्शनिक ग्रन्थ है, इसमें तीन काण्ड है।
  (1) आगम (2) वाक्य (3) प्रकीर्ण
- सतवीं शताब्दी के आसपास जयादित्य और वामन ने अष्टाध्यायी पर सरल और सर्वाङ्गीण **'काशिका'** वृत्ति लिखी। इस काशिका पर उपटीकाएं जिनेन्द्रबुद्धि का **'न्यास'** और हरदत्त की पदमञ्जरी लिखी गयी।
- महाभाष्य पर कश्मीरी पण्डित कैयट ने 1100 ई. के लगभग 'प्रदीप' नामक टीका लिखी।
- नागेशभट्ट ने प्रौढमनोरमा और शब्दकौस्तुभ पर विषमी टीका लिखी।
- गङ्गेश उपाध्याय 'नव्यन्याय' के प्रवर्तक थे।
- चन्द्रगोमी ने पाणिनि के आधार पर कातन्त्रव्याकरण की रचना की।
- सारस्वतव्याकरण, बोपदेव का मुक्तबोध 13वीं शताब्दी में लिखी गयी।

81. सिद्धान्तकौमुदीमाश्रित्य प्रकरणानां समीचीनं क्रमं चिनुत-

(a) कारकम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः, तद्धितम्
(b) कारकम्, तद्धितम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः
(c) परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः, तद्धितम्, कारकम्
(d) परस्मैपदप्रक्रिया, कारकम्, तद्धितम्, कृदन्तः

उत्तर-(b)

सिद्धान्तकौमुदी पर आश्रित प्रकरणों का समीचीन क्रम - कारक, तद्धित, परस्मैपद और कृदन्त हैं।

- सिद्धान्तकौमुदी के रचनाकार भट्टोजिदीक्षित थे।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी तथा मध्यसिद्धान्तकौमुदी के रचनाकार वरदाचार्य हैं।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी तथा मध्यसिद्धान्तकौमुदी के रचनाकार वरदराजाचार्य हैं।
- कारक का अर्थ ऐसी वस्तु से लिया जाता है जो क्रिया के सम्पादन में उपयोगी होता है। संस्कृत के प्रातिपदिकों में सात विभक्तियाँ होती हैं।
- प्रातिपदिकों (सञ्ज्ञा, सर्वनाम, विशेषणादि) में जिन प्रत्ययों को जोड़कर अन्य अर्थ निकाला जाता है उन प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं।
- धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर सञ्ज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय बनता है, उसको कृदन्त प्रत्यय कहते हैं।
  जैसे कृ धातु से तृच् प्रत्यय जोड़कर कर्तृ शब्द बना। यहाँ तृच् कृत् प्रत्यय है और कर्तृ कृदन्त है।
- जब दो या अधिक शब्द एक साथ जोड़ दिये जाते हैं तब उसको समास कहते हैं
  जैसे प्रति + अर्थ = प्रत्यर्थम्। स + हरि = सहरि

82. पूर्ववर्ती आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशत-

(a) क्षेमेन्द्रः **(b) अभिनवगुप्तः**
(c) भरतः **(d) रुय्यकः**

एषु क्रमं चिनुत -

(A) (d) (c) (b) (a) (B) (c) (b) (a) (d)
(C) (a) (d) (b) (c) (D) (b) (d) (c) (a)

उत्तर-(b)

- सामान्यतः नाट्यशास्त्र को समय प्रथम शताब्दी में रखना समीचीन लगता है।
- अभिनवगुप्त की स्थितिकाल अठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में है। इन्होंने 'विभीषणी' नामक टीका लिखी है। अभिनवगुप्त ध्वनि समर्थक आचार्य आनन्दवर्धन की परम्परा में हुए। ये काश्मीरी विद्वान् थे।
- क्षेमेन्द्र का समय 11वीं शताब्दी मालूम पड़ता है। इनके प्रमुख ग्रन्थ 'औचित्यविचारचर्चा', कविकण्ठाभरण एवं सुवृत्ततिलक, बृहत्कथामंजरी, भारतमञ्जरी एवं रामायणमञ्जरी है। राजानक रुय्यक का समय 12वीं शताब्दी का प्रथम भाग निश्चित है।

83. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) बुद्धचरितम्

(b) नैषधीयचरितम्

(c) स्वप्नवासवदत्तम्

(d) मुद्राराक्षसम्

एषु क्रमं चिनुत-

(A) (a) (d) (b) (c) (B) (d) (c) (a) (b)

(C) (c) (b) (a) (d) (D) (c) (a) (d) (b)

उत्तर-(d)

सर्वप्राचीन कालक्रमानुसार 'स्वप्नवासवदत्तम्' भास की प्रथम रचना है क्योंकि राजशेखर, अभिनवगुप्त एवं भोजदेव ने 'स्वप्नवासवदत्तम्' को सर्वश्रेष्ठ नाटक माना है। भास का समय 450 ई.पू. है। 'बुद्धचरितम्' अश्वघोष का 28 सर्गों में महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवन चरित एवं सिद्धान्तों का वर्णन है। 'मुद्राराक्षसम्' विशाखदत्त की 7 अङ्कों की राजनीतिप्रधान एवं नायिकाविहीन नाटक है। विशाखदत्त प्रगतिवादी नाटककार है। नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष का 22 सर्गों का महाकाव्य है। इसमें राजा नल एवं दमयन्ती के प्रणय एवं प्रेम कथा का वर्णन है।

84. रामायणस्य बालकाण्डस्य सर्गानुसारम् उपाख्यानानां समुचितः क्रमोऽस्ति -

(A) शुनःशेपाख्यानम् - ऋष्यशृङ्गाख्यानम् - क्रौञ्चवधाख्यानम् - अहिल्योद्धाराख्यानम्

(B) क्रौञ्चवधाख्यानम् - ऋष्यशृङ्गाख्यानम् - अहिल्योद्धाराख्यानम् - शुनःशेपाख्यानम्

(C) क्रौञ्चवधाख्यानम् - शुनःशेपाख्यानम् - अहिल्योद्धाराख्यानम् ऋष्यशृङ्गाख्यानम्

(D) ऋष्यशृङ्गाख्यानम् - शुनःशेपाख्यानम् - अहिल्योद्धाराख्यानम् - क्रौञ्चवधाख्यानम्

उत्तर-(b)

रामायण बालकाण्ड के सर्गानुसार उपाख्यानों का समुचित क्रम - क्रौञ्चवधाख्यानम्, ऋष्यशृङ्गाख्यानम्, अहिल्योद्धाराख्यानम्, शुनः शेपाख्यानम्। बालकाण्ड में इक्ष्वाकु-वंश का वर्णन, दशरथ, की सन्तानहीनता, पुत्रेष्टियज्ञ, चार पुत्रों का जन्म, बालचरित, ताड़कावध, सीताजन्म, सीता स्वयंवर, रामविवाह आदि का वर्णन है।
- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है, इसमें रामकथा अद्योपान्त वर्णित है। इसमें सात काण्ड और 24 हजार श्लोक हैं, 24 हजार श्लोक के कारण इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री' संहिता भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द में विभक्त हैं।
- महर्षि वाल्मीकि को ब्रह्मा ने 'आद्यः कविरस' कहकर सम्बोधित किया।
- तमसा नदी के तट पर व्याध द्वारा हत नर क्रौञ्च पक्षी को देखकर उनके मुख से श्लोक निकला - 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
  यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।'
- रामायण में करुण रस और वैदर्भी शैली है।

85. याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्याये प्रकरणानां समुचितं क्रमोऽस्ति-

(A) ऋणादान - उपनिधि - साक्षि - लेख्य - दिव्य - सीमाविवाद - दायविभागप्रकरणम्

(B) दिव्य - लेख्य - साक्षि - उपनिधि - ऋणादान - सीमाविवाद - दायविभागप्रकरणम्

(C) ऋणादान - उपनिधि - साक्षि - लेख्य - दिव्य - दायविभाग - सीमाविवादप्रकरणम्

(D) साक्षि - लेख्य - दिव्य - उपनिधि - ऋणादान - सीमाविवाद - दायविभागप्रकरणम्

उत्तर-(c)

याज्ञवल्क्य स्मृति के व्यवहाराध्याय में 25 विषयों का वर्णन है–

1. साधारणव्यवहारमातृकप्रकरण 2. आसाधारणमातृकप्रकरण

3. ऋणादानप्रकरणम् 4. उपनिधिप्रकरणम् 5.साक्षिप्रकरणम्

6 लेख्यप्रकरणम् 7. दिव्यप्रकरणम् 8. दायविभागप्रकरणम्

9. सीमाविवादप्रकरणम् 10. स्वामिपालकविवादप्रकरणम्

11. स्वामिविक्रयप्रकरणम् 12. दत्ताप्रदानिकप्रकरणम्

13. क्रीतानुशयप्रकरणम् 14. अभ्युयेत्याशुश्रूषाप्रकरणम्

15. संविद्वयतिक्रमप्रकरणम् 16. वेतनादानप्रकरणम्

17. द्यूतसमादृत्प्रकरणम् 18. वाक्यपारुष्यप्रकरणम्

19. दण्डपारुष्यप्रकरणम् 20. साहसप्रकरणम्

21. विक्रीयासम्प्रदानप्रकरणम् 22. संभूयसमुत्थानप्रकरणम्

23. स्तेयप्रकरणम् 24. स्त्रीसंग्रहणप्रकरणम्

25. प्रकीर्णविप्रकरणम्

86. अत्र द्वौ कथनांशौ स्तः -

(a) : पशुपादप्रकृतिः प्रभागपादः

(b) : पशुः चतुष्पादयुक्ता भवन्ति। तेषामियं प्रकृतिर्भवति। अतः छन्दस्सु चत्वारः पादा भवन्ति। पद्यो चत्वारः पादाः छन्दनिरूपणे गण्यन्ते।

एतेषु - उचितमत्तरं लिखत् -

(A) (a) तथा (b) उभये सत्यकथने, (b) (a) अंशस्य उचितमुदाहरणम्

(B) (a) कथनं सत्यम् (b) कथनं तथा न निर्दिशति (a) स्वरूपम्

(C) (a) कथनमसत्यम् (b) कथनं सत्यमस्ति

(D) (a) सत्यमस्ति (b) परिभाषां न प्रस्तौति

उत्तर-(a)

दोनों कथन सत्य हैं।

- पशुपाद प्रकृति प्रभाग पाद है, यह पद सही है,
- पशु चार पैरों से युक्त होते हैं, यह पशु की प्राकृतिक अवस्था है। इसी के आधार पर छन्दों में चार पाद होते हैं।
- छन्द शब्द छद् (ढ़कना) धातु से बना है - ''छन्दांसि छादनात्''।
- वेदों में मात्रिक छन्दों का अभाव है, वैदिक छन्द वृत्तात्मक होते हैं।
- छन्दों में एक अक्षर का कम होना 'निचृत्' तथा एक अक्षर अधिक 'भूरिक्' होता है।
- दो अक्षर का कम होना 'विराट्' तथा दो अक्षर अधिक - स्वराट्' कहलाता है।
- छन्दों में पद के अन्त के साथ शब्द का भी अन्त हो जाता है।
- ए और ओ के बाद पूर्वरूप हुए अ (ऽ) को आवश्यकतानुसार फिर अ पढ़ा जाता है - नोऽव को नो अव।

87. कथनद्वयमधोलिखितम् - एकम् अभिकथनम् (A) अपरश्च कारणम् (R)

अभिकथनम् (A) : साङ्ख्यकारिकायां पुरुषस्य सत्ता स्वीक्रियते।

कारणम् (R) : सङ्घातपरार्थत्वात्।

अत्र समुचितमुत्तरं चिनुत -

(a) (A) असत्यम् (R) सत्यम्

(b) (A) तथा (R) उभे सत्ये स्तः

(c) (A) तथा (R) उभे असत्ये स्तः

(d) (A) सत्यम् (R) असत्यम्

उत्तर-(b)

दोनों कथन सत्य हैं।

पुरुष की सत्ता सिद्धि- संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्। पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।

(1) संघातपरार्थत्वात् (संघातों का दूसरों के लिए होना)

(2) त्रिगुणादिविपर्ययात् (त्रिगुणादि से विपरीत स्वभाव वाला होने से)

(3) अधिष्ठानात् (त्रिगुण समूह का अधिष्ठाता होने से)

(4) भोक्तृभावात् (भोग्य एवं भोक्ताभाव से)

(5) कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः (मोक्ष के लिए प्रवृत्ति देने जाने)

- पुरुषबहुत्व की सत्ता सिद्ध करने वाले तीन हेतु हैं -
  (1) जननमरणकरणानां
  (2) अयुगपद्प्रवृत्तेः
  (3) त्रैगुण्यविपर्ययात्।
- सत्त्व, रजस् और तमस् गुण - सुख-दु:ख - मोहात्मक होता है। तीनों गुण विपरीत स्वभाव वाला होते हुए भी ''दीपक'' के समान व्यवहार करते हैं।
- सत्त्वगुण और तमोगुण निष्क्रिय होते हैं, रजोगुण ही इन्हें क्रियाशील बनाता है।
- सांख्य की सृष्टि 'पङ्ग्वन्धवत्' अर्थात् लगड़ा (पुरुष) और अन्धी प्रकृति के समान है।
- सूक्ष्मता के कारण प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है।
- सत्कार्यवाद साङ्ख्य का प्रमुख सिद्धान्त है।

88. कथनद्वयम् अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरश्च तस्य कारणम् (R) इति।

अभिकथनम् (A) : एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः ओङ्कार। ओङ्कारस्य युवापत्यसज्ञा भवति।

कारणम् (R) : 'जीवति तु वंश्ये युवा' इति विधानात्।

उपर्युक्त अभिकथन-कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत्-

(1) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति, (A) इत्यस्य (R) उचितं कारणमस्ति

(2) (A) तथा (R) उभावपि असमीचीनौ

(3) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणं नास्ति

(4) (A) इति असमीचीनं परं (R) इति समीचीनम्

उत्तर-(a)

दोनों कथन सत्य हैं।

- एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः ओङ्कारः। यहाँ ओङ्कार की 'जीवति तु वंश्ये युवा' **(4.1.163)** सूत्र से युवापत्य सञ्ज्ञा होती है।
- 'जीवति तु वंश्ये युवा' **(4.1.163)** - वंश्ये पित्रादौ जीवति पौत्रादेर्यदपत्यं चतुर्थादि तद्युवसञ्ज्ञमेव स्यात्। अर्थात् वंश में

होने वाले पिता - पितामह आदि के जीवित रहते पौत्रादि का अपत्य चतुर्थ आदि पीढ़ी स्थित हो, तो उसकी युवन् (युवा) सञ्ज्ञा अर्थात् युवा सञ्ज्ञा होती है।
युवापत्य विवक्षित होने पर गोत्रप्रत्ययान्त से ही प्रत्यय होता है लेकिन स्त्रीलिङ्ग में युवासञ्ज्ञा नहीं होती है।
गोत्रार्थ में तदन्त से युवापत्य अर्थ में तद्धित सञ्ज्ञक फक् प्रत्यय होता है।
गार्ग्यायणः - गर्गस्य गोत्रापत्यम् (गर्ग का गोत्रापत्य)।

- स्त्रीभ्यो ढक् **(4.1.120)**- अपत्य अर्थ में स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों से ढक् प्रत्यय होता है - वैनतेयः, कौन्तेयः
- शिवादिभ्योऽण् **(4.1.112)**- अपत्यार्थ में शिवादिगण पठित शब्दों से तद्धितसञ्ज्ञक अण् प्रत्यय होता है - शैवः
- **सूत्र-** ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च **(4.1.114)**- ऋषिवाचकों तथा अन्धक, वृष्णि, कुरू इन तीनों वंशों में उत्पन्न व्यक्ति के वाचक शब्दों से अपत्य अर्थ में तद्धिकसञ्ज्ञक अण् प्रत्यय होता है। -
जैसे - वासिष्ठः, वैश्वामित्रः, वासुदेवः, नाकुलः, श्वाफल्कः।

89. (A) 'स किं सखा साधु न शास्ति यो नृपम्'। इयं पंक्तिः भारवेः किरातार्जुनीयादुद्धृतोऽस्ति।
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति दुर्योधनस्य सत्यं वृत्तान्तमवबोधयितुं वदति।
अधोलिखितेषु उचितं कारणं लिखत -
(a) (A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणीकरोति, (R) कथन वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति
(b) (A) कथने नृपस्य स्वरूपं वर्णितमस्ति, (R) कथने दुर्योधनं प्रति वनेचरस्य सहृदयता ज्ञायते
(c) (A) कथने 'सः' पदेन वनेचरः 'नृपम्' पदेन सुयोधनं कथितमस्ति, (R) कथनेन सुयोधनं प्रति सेवाभावोऽस्ति
(d) (A) कथने 'सखा' वनेचर अस्ति, (R) वनेचरः युधिष्ठिरं सत्यं वृत्तान्तं न कथयति

उत्तर-(a)

- स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं **(1/5)**- यह पंक्ति भारविकृत किरातार्जुनीयम् का है यह पंक्ति मित्र की साधुशीलता को प्रमाणित करती है। कथन भी सत्य है क्योंकि वनेचर स्वामी के प्रति वञ्चना का निषेध करता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम में 18 सर्ग हैं, इसमें पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण है।
- इनके काव्यमार्ग को विचित्रमार्ग कहा जाता है, ये रीतिशैली के जन्मदाता थे।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के किरातार्जुनीयम् पर ''घण्टापथ'' नाम की टीका लिखी। तथा इनकी कविता की उपमा नारिकेलफल से करते हैं ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''।
- भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' का प्रारम्भ श्री शब्द से तथा सर्ग की समाप्ति लक्ष्मी शब्द से हुई है।
प्रमुख सूक्तियाँ - **किरातार्जुनीयम् की** हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।**(1/4)**
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्। **(1/12)**
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।**(1/8)**
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता। **(1/43)**
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। **(1/37)**
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।

90. कथनद्वयमधोलिखितम् तत्र एकम अभिकथन (A) अपरञ्च तस्य (R) इति कारणम्।
अभिकथनम् (A) : वाल्मीके रामः सीता - वियोगे कारुण्य - आनृशंस्य शोके - मदनरूप - चतुर्मुखी - सन्तापेन सन्तप्तो भवति।
कारणम् (R) : सर्वेऽपि पुरुषा भार्या-वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति।
उपर्युक्तानुसारं समीचीनं विकल्पं चिनुत -
(A) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम्। (R) इति समुचितं कारणमस्ति
(B) इत्यस्य (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य
(C) (A) इति सत्यम् (R) इति असत्यम्
(D) (A) तथा (R) उभौ अपि असत्यम्

उत्तर-(b)
वाल्मीकिकृत रामायण में सीता-राम के वियोग से पत्थर भी रो पड़ा था।
''अपिग्रावाऽपि रोदिति दलति वज्रस्य हृदयम्''।

- वाल्मीकिकृत रामायण में प्रायः सभी रस प्राप्त होते हैं, लेकिन इन सभी में करुण रस अङ्गी है और अन्य रस अङ्ग है।
- रस परिपाक के कारण ही ब्रह्मा ने इन्हें रससिद्ध कवीश्वर कहा।
- वाल्मीकि का प्रिय छन्द अनुष्टुप् और वैदर्भी शैली है।
- रामायण पर आश्रित प्रमुख काव्यग्रन्थ - कालिदासकृत - रघुवंश, प्रवरसेनकृत - सेतुबन्ध, कुमारदासकृत - जानकीहरण, भट्टिकृत - रावणवध, क्षेमेन्द्रकृत - रामायणमञ्जरी
नाटक ग्रन्थ - भासकृत-अभिषेकनाटक और प्रतिमानाटक, दिङ्नागकृत - कुन्दमाला, भवभूतिकृत - महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्, मुरारिकृत-अनर्घराघव। राजशेखर कृत - बालरामायण, हनुमानकृत - महानाटक, जयदेवकृत - प्रसन्नराघव।
चम्पूग्रन्थ - भोजकृत - रामायणचम्पू, वेंकटाध्वरिकृत - उत्तरचम्पू।

91. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
अत्र श्लोके केषां वर्णनं प्राप्यते -

(a) आरण्यकानाम् (b) उपनिषदाम्
(c) वेदाङ्गानाम् (d) वेदानाम्

उत्तर-(c)

वेदाङ्ग का अर्थ है—वेदस्य अङ्गानि,वेद के अङ्ग/अङ्ग का अर्थ है—अङ्‌यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि, अर्थात् वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।

- सर्वप्रथम वेदाङ्ग का उल्लेख मुण्डक उपनिषद् में हुआ है। **वेदाङ्ग की संख्या 6 है—** (1) शिक्षा, (2) व्याकरण, (3) छन्द, (4) निरुक्त, (5) ज्योतिष, (6) कल्प ।
- **शिक्षा नासिका है-**
शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा । कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।
शिक्षा का अर्थ है—वर्णोच्चारण की शिक्षा देना।
पाणिनीय शिक्षा में वेद-पुरुष के छः अङ्गों के रूप में छः वेदाङ्गों का वर्णन है-
छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौकल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोतमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। (पा.शिक्षा श्लोक-41, 42)
व्याकरण को मुख माना गया है 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' छन्द को 'पैर' माना जाता है। निरुक्त 'श्रोत' (कर्ण), ज्योतिष को 'नेत्र' माना जाता है।

92. चत्वारो वेदाः जगति प्रसिद्धाः सन्ति। एते ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च। एतेषां मन्त्राणामर्थख्यापनाय बहवः आचार्याः प्रयत्नं कृतवन्तः। तत्र ऋग्वेदस्य प्रथमो भाष्यकारः स्कन्दस्वामी आसीत्। विस्तारपूर्वकं यज्ञपद्धतेः प्रथमं भाष्यं आचार्यसायणेन कृतम्। स एव कृष्णयजुर्वेदस्य भाष्यं प्रथमतया विरचितवान्। आनन्दतीर्थः, दयानन्दश्च वेदभाष्यं रचितवन्तौ।
उपर्युक्तेषु ऋग्वेदस्य प्रथमभाष्यकारः क आसीत्?

(a) सायणः (b) स्कन्दस्वामी
(c) आनन्दतीर्थः (d) दयानन्दः

उत्तर-(b)

ऋग्वेद के सबसे प्राचीन भाष्यकार 'स्कन्दस्वामी' हैं।
वेंकट माधव - इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य लिखा। इनका भाष्य डा. लक्ष्मणस्वरूप ने सम्पादित कर चार भागों में प्रकाशित किया।

- **उव्वट-** इन्होंने शुक्ल यजुर्वेद पर भाष्य लिखा।
- **हलायुध** - इनके भाष्य का नाम **ब्राह्मणसर्वस्व** था, इन्होंने काण्वसंहिता पर भाष्य लिखा।
- **कुण्डिन** - इन्होंने तैत्तिरीय संहिता पर वृत्ति लिखी है।
- **'सायण'** ने सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता पर वृत्ति लिखी है।
- **'सायण'** ने सर्वप्रथम अपना भाष्य तैत्तिरीय संहिता पर लिखा था। इसके पश्चात् ऋग्वेदादि का भाष्य लिखा।
- **माधव** सर्वप्रथम **सामवेद** पर भाष्य लिखे। इनके भाष्य का नाम **''विवरण''** है।
- **अथर्ववेद** पर केवल **सायण** का ही भाष्य प्राप्त होता है।
- **आचार्य सायण** ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का परम्परागत ढंग से संस्कृत में भाष्य किया है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नैरुक्त प्रक्रिया विधि से ऋग्वेद का संस्कृत और हिन्दी में भाष्य किया है।
- सामवेद का सम्पूर्ण भाष्य भी **सायण** ने लिखा है।

93. 'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्/यथा-तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। तन्तुसंयोगस्य गुणस्य पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणिषु समवेतत्वेन समवायिकारणे प्रत्यासन्नत्वात्। अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्च।'
इति सिद्धान्तानुसारेण 'तन्तुसंयोगः पटस्य कीदृशं कारणम् भवति?

(a) असमवायिकारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) संयोगकारणम् (d) निमित्तकारणम्

उत्तर-(a)

कारणं त्रिविधं—समवायि, असमवायि, निमित्ति भेदात्।
अर्थात् कारण तीन प्रकार का होता है-
(1) समवायीकारण (2) असमवायीकारण (3) निमित्तकारण

- **समवायीकारण-** यत्समवेतं कामुत्पद्यते तत्समवायिकारम् । यथा—तन्तवः पटस्य समवायि कारणं। अर्थात् जिससे समवेत होकर कार्य उत्पन्न होता है उसे समवायी कारण कहते हैं। **जैसे-** तन्तु ही पट का समवायीकारण है, तुरी आदि नहीं।
- **असमवायीकारण-** यत्समवायिकारण प्रत्यासन्नमवधृत सामर्थ्यं तद्समवायिकारणम्। यथा तन्तु संयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। अर्थात् जो समवयि कारण में रहता है और कार्योत्पादन में जिसकी सामर्थ्य निश्चित हो उसको असमवायीकारण कहते हैं। जैसे- तन्तु रूप पटरूप का असमवायीकारण है।
यन्न समवायिकारणं, नाप्यसमवायीकारण, अथ च कारणं तन्निमित्त-कारणम्। यथा वेमादिकं पटस्य निमित्ति कारणं।
सम्बन्धः द्विविधः **संयोगः** समवायश्चेति। तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः। अन्योस्तु संयोग एव।

94. 'ननु तन्तुसम्बन्ध एंव तुर्यादिसम्बन्धोऽपि पटस्य विद्यते, तत्कथं तन्तुष्वेव पटः समवेतो जायते, न तुर्यादिषु? सत्यम्, द्विविधः सम्बन्धः संयोगः समवायश्चेति। तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः, अन्ययोस्तु संयोग एवं'।
अत्र उचितमुत्तरं चिनुत-
(a) तन्तुः पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(b) न तन्तुः पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(c) तन्तुः पटस्य असमवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्
(d) तुर्यादि पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्

उत्तर-(a)

कारण त्रिविध होते हैं—**समवायीकारण, असमवायीकारण निमित्तकारण।** तन्तु पट के समवायीकारण है। क्योंकि तन्तुओं में समवाय सम्बन्ध से पट पैदा होता है। तुरी आदि में नहीं। सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं—1. सयोग 2. समवाय। उसमें दो अयुतसिद्ध पदार्थों का सम्बन्ध समवाय होता है एवं अन्यों का सम्बन्ध तो संयोग ही होता है।
अयुतसिद्ध—जिन दो में से एक अविनश्यतावस्था में दूसरे के आश्रित ही रहता है, वे दोनों ही परस्पर अयुतसिद्ध कहलाते हैं।

95. 'आत्मा बुद्ध्या' समेत्यर्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्।
उपर्युक्तेन श्लोकेन उपदिश्यते -
(a) वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया (b) वर्णानां स्थानम्
(c) वर्णनां प्रयत्नः (d) वर्णानां उच्चारणकालः

उत्तर-(a)

उपर्युक्त श्लोक 'वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया' का है।
- वर्णों के उच्चारण स्थान आठ प्रकार के हैं। **उरः, कण्ठ, मूर्धा, तालु, जिह्वामूल, नासिका, अधर** और **दाँत।**
पाणिनीय शिक्षा में स्वर- 21, स्पर्शवर्ण- 25, यादि- 8, यम-4, विसर्ग- 1, जिह्वामूल और उपध्मानीय-2 हैं।
प्रयत्न 2 प्रकार के होते हैं—
1. आभ्यन्तर प्रयत्न 2. बाह्य प्रयत्न
आभ्यन्तर प्रयत्न के 5 भेद हैं—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत, इषत्विवृत, संवृत।
बाह्य प्रयत्न के 11 भेद—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।

96. 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन्।।'
अस्याः कारिकायाः सम्बन्धः केन सिद्धान्तेन सह भवितुमर्हति?
(a) ध्वनिवादः (b) स्फोटवादः
(c) व्यञ्जनावादः (d) लक्षणवादः

उत्तर-(b)

अस्याः कारिकायाः सम्बन्ध स्फोटवादः सिद्धान्तेन सह भवितुमर्हति।
- भर्तृहरि प्रणीत 'वाक्यपदीयम्' व्याकरणशास्त्र का एक दार्शनिक ग्रन्थ है।
- वाक्य पदीयम् तीन काण्डों में विभक्त है-
(1) ब्रह्मकाण्ड
(2) वाक्यकाण्ड
(3) प्रविर्णकाण्ड/पदकाण्ड
- ब्रह्मकाण्ड में शब्दरूप तथा स्फोट का विवेचन किया गया है।
'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च ।
वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन् ।।' (1/73)।।
अर्थात् वर्णों में अवयवों के समान पद में वर्णों की सत्ता नहीं होती औरवाक्य से पदों का कोई अत्यन्त पार्थक्य नहीं है। इस प्रकार वर्ण और पद के भेद से रहित एक अनवयव वाक्यरूप शब्दात्मा है, ऐसा अखण्ड वाक्य **'स्फोटवादी'** मानते हैं।
- शब्दब्रह्म की दो शक्तियाँ हैं- (1) प्रतिबन्ध, (2) अभ्यनुज्ञा
- वाक्यपदीयकार ध्वनि के दो भेद स्वीकार करते हैं-
(1) प्राकृतध्वनि
(2) वैकृत ध्वनि
स्फोटवाद वैयाकरणों का प्रमुख सिद्धान्त है। स्फोट शब्द की व्युत्पत्ति '**स्फुटति अर्थः यस्यात् सः स्फोटः**' इस प्रकार की जाती है। यह स्फोट पद स्फोट, वर्ण स्फोट आदि के भेद से 8 प्रकार का होता है।

97. न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्ममानम्
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्।
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते -
(a) युधिष्ठिरस्य (b) वनेचरस्य
(c) दुर्योधनस्य (d) अर्जुनस्य

उत्तर-(c)

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ।। (1/21)
- किरातार्जुनीयम् के महत्त्वपूर्ण सूक्ति वाक्य—
- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता- **(1/23)**
- प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ।। **(1/25)**।।
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ।।**(1/8)**।।

दुर्योधन के मित्र राजाओं के विषय में वनेचर प्रशंसा कर रहा है कि दुर्योधन को अपनी आज्ञा का पालन करवाने में कोई कठिनाई नहीं होती प्रत्युत में शक्तिशाली राजा लोग उसके गुणों से प्रभावित होकर स्वतः उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं।

भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में दो ही वक्ता हैं। प्रथम 25 श्लोक का वक्ता वनेचर है शेष श्लोक द्रोपदी कही है। प्रथम सर्ग में 46 श्लोक है। 44 श्लोक तक वंशस्थ छन्द है। 45वें **श्लोक में पुष्पिताग्रा** एवं 46वें श्लोक में **मालिनी** छन्द है।

98. यथा हिरण्यं शुचिधातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।
तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः।।
.... श्लोकेऽस्मिन् कस्य पुत्रस्य वर्णनमस्ति -

(a) दशरथस्य (b) दुष्यन्तस्य
(c) दुर्योधनस्य (d) शुद्धोदनस्य

उत्तर-(d)

यथा हिरण्यं शुचिधातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।
तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्ताते द्विपदेषु वर्मः।। (1/37)
उपर्युक्त पंक्ति में शुद्धोदन के पुत्र का वर्णन है; इसमें कहा गया है कि जिस प्रकार धातुओं में स्वर्ण, पर्वतों में सुमेरु, जलाशयों में समुद्र, ताराओं में चन्द्रमा तथा तपाने वालों में सूर्य श्रेष्ठ है, उसी प्रकार मनुष्यों में आपका (शुद्धोदन) पुत्र श्रेष्ठ है।
यह पंक्ति अश्वघोष द्वारा विरचित बुद्धचरित महाकाव्य का है। इसमें 28 सर्ग हैं।

- विशाखदत्त – मुद्राराक्षस - 7 अङ्क
- शूद्रक – मृच्छकटिकम् - 10 अङ्क
- श्रीहर्ष – नैषधीयचरितम् - 22 सर्ग
- भट्टनारायण – वेणीसंहारम् - 6 अङ्क
- भास – स्वप्नवासवदत्तम् - 6 अङ्क
- नारायण पण्डित – हितोपदेश
- विल्हण – विक्रमाङ्कदेवचरितम्

99. नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
दैवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्।।
उपर्युक्तश्लोकेन सम्बन्धोऽस्ति -

(a) वाल्मीकिरामायणस्य (b) महाभारतस्य
(c) जयपुराणस्य (d) भारतविजयस्य

उत्तर-(b)

उपर्युक्त श्लोक महाभारत के **''आदि पर्व में 62/20''** उल्लिखित है। महाभारत की कथा में जय, भारत, महाभारत तीन वाक्य आये हैं। विद्वानों के अनुसार कृष्णद्वैपायन ने जिस कथा को कहा उसका नाम 'जय' था। 'जय' यह नाम ऐतिहासिक है। जय नाम ऐतिहासिकोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा-महाभारत आदि पर्व। पाण्डवों की विजय के कारण इसका नाम 'जय' पड़ा था। 'जय' नामक ग्रन्थ में **8800 श्लोक** थे। वैशम्पायन ने जिस कथा को कहा उसका नाम भारत था और इसमें श्लोक संख्या बढ़कर 24000 हो गयी। किन्तु अन्त में सौति ने जिस कथा को सुनाया उसमें हरिवंश पर्व को भी जोड़कर महाभारत हो गया।

100. याज्ञवल्क्यस्मृतेरनुसारं 'लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति' किम्?

(a) प्रमाणम् (b) प्रकरणम्
(c) अनुमानम् (d) साधनम्

उत्तर-(a)

याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार किसी भी वाद के लिखित, उपभोग और साक्षी ये **तीन प्रमाण** होते हैं।
'प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम्।
एषामन्यतमाभावे दिव्यान्यतममुच्यते **।। याज्ञवल्क्य-2/22 ।।**

- **'सर्वेष्वर्थ विवादेषु बलवत्युत्तरा क्रिया' ।। याज्ञवल्क्य-2/23 ।।** अर्थात्, सभी प्रकार के अर्थ के विवादों में उत्तर-क्रिया प्रबल होती है।
- **'आधौ प्रतिग्रहे क्रीते पूर्वा तु बलवत्तरा' ।। याज्ञवल्क्य-2/23 ।।** अर्थात् आधि, दान और क्रय में पूर्व कार्य प्रबल होता है।
- **'स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।' ।। याज्ञवल्क्य-2/21 ।।** (स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार से किया गया निर्णय बलवान् होता है।
- **'अर्थशास्त्रातु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।' ।। याज्ञवल्क्य-2/22 ।।**(अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है।
- **'उत्सृष्टो गृह्यते यस्तु सोऽपविद्धो भवेत्सुतः।' ।। याज्ञवल्क्य-2/132 ।।** (माता-पिता द्वारा व्यक्त होने पर जो पुत्र स्वीकार किया जाता है वह 'अपविद्ध' पुत्र होता है।
- **'मिथ्याभियोगी द्विगुणमियोगद्धनं वहेत्' ।। याज्ञवल्क्य-2/11 ।।** (मिथ्याभियोग लगाने वाला धन के दूना धन वहन करे अर्थात् दे।
- **'अभियोगेऽथ साक्ष्ये वा दुष्टः स परिकीर्तितः।'** (मन, वाणी और कर्म की विकृतियाँ जिसमें स्वभाव से हो वही साक्ष्य और अभियोग में दुष्ट है'।
- **'चतुष्पाद्व्यवहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः।' ।। याज्ञवल्क्य-2/8 ।।** विवादों में चतुष्पाद व्यवहार बताया गया है।
- **'श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं पूर्वावेदकसंन्निधौ।' ।। याज्ञवल्क्य-2/7 ।।** (वादी के वाद को सुनने के बाद प्रतिवादी द्वारा सुने गये विषय-अभियोग का उत्तर-पहले के वादी के सामने लिखना चाहिए।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2019

संस्कृत

व्याख्यात्मक हल सहित

1. निम्नलिखितेषु कतमं ब्राह्मणं सामवेदीयं नास्ति?

(a) ताण्ड्यब्राह्मणम् (B) शतपथब्राह्मणम्

(C) षड्-विंशब्राह्मणम् (D) छान्दोग्यब्राह्मणम्

उत्तर-(b)

शतपथ ब्राह्मण सामवेद के अन्तर्गत नहीं आता अपितु यह शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण है।

सामवेदीय ब्राह्मण के अन्तर्गत 8 ब्राह्मण ही उपलब्ध हैं।

1. तांड्य ब्राह्मण (इसे प्रौढ़ या पंचविंश के नाम से भी जाना जाता है)।
2. षड्विंश ब्राह्मण 3. सामविधान ब्राह्मण 4. आर्षेय ब्राह्मण 5. देवताध्याय 6. उपनिषद् या मंत्र ब्राह्मण 7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण

जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध तीन ब्राह्मण हैं– 1. जैमिनीय ब्राह्मण 2. जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण 3. जैमिनीय उपनिषद् (छान्दोग्य) ब्राह्मण

ऋग्वेद के ब्राह्मण–1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. कौषीतकि या शांखायन ब्राह्मण

शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण – शतपथ ब्राह्मण

कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण – तैत्तिरीय ब्राह्मण

अथर्ववेदीय ब्राह्मण – गोपथ ब्राह्मण

2. निम्नलिखितेषु केन ज्योतिशशास्त्रमाधृत्य ऋग्वेदस्य कालो निर्धारितः?

(a) वेबरमहोदयेन

(b) मैक्डानलमहोदयेन

(c) बालगंगाधरतिलकमहोदयेन

(d) विल्सनमहोदयेन

उत्तर-(c)

बालगंगाधर तिलक महोदय ने ज्योतिषशास्त्र को आधार मानकर ऋग्वेद का काल निर्धारित किया है।

अन्य विद्वानों में–स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद-मंत्र को, मैक्समूलर ने बौद्ध साहित्य को, विन्टरनित्स ने मितानी शिलालेख को, एच.याकोबी ने ज्योतिष को, अविनाशचन्द्र दास ने भूगर्भ को, दीनानाथ शास्त्री चुलेट ने ज्योतिष को आधार मानकर वेदों का काल निर्धारण किया।

3. 'काण्वशतपथब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति?

(a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन

(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर-(c)

काण्व शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से सम्बद्ध है।

इसमें 17 काण्ड, 104 अध्याय, 435 ब्राह्मण और 6806 कंण्डिकाएं हैं

यजुर्वेद–कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद दो भागों में विभाजित है

शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं–माध्यन्दिन और काण्व हैं।

ऋग्वेद के 'ऐतरेय और कौषीतकि' दो ब्राह्मण हैं।

अथर्ववेद का एक मात्र ब्राह्मण 'गोपथ' है।

4. कौषीतकिब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

(a) शुक्लयजुर्वेदेन (B) कृष्णयजुर्वेदेन

(c) ऋग्वेदेन (D) सामवेदेन

उत्तर-(c)

कौषीतकि ब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित है।

यह ऋग्वेद का द्वितीय ब्राह्मण है इसको शांखायन भी कहते हैं और शांखायन ऋषि इसके रचयिता भी हैं।

शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण शतपथ (माध्यन्दिन) है।

कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण तैत्तिरीय, मैत्रायणी और कठ है।

अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है।

सामवेद का षड्विंश, सामविधान, प्रौढ़ (तांड्य ब्राह्मण), आर्षेय, संहितोपनिषद्, जैमिनीय, वंश और उपनिषद् ब्राह्मण प्राप्त होते हैं।

5. दुर्गेण कस्मिन् ग्रन्थे टीका लिखिता?

(a) बृहद्देवतायाम् (b) बौधायनगृह्यसूत्रे

(c) कात्यायनशुल्बसूत्रे (d) निरुक्ते

उत्तर-(d)

दुर्गासिंह अथवा दुर्गाचार्य के द्वारा निरुक्त पर टीका लिखी गयी इनकी टीका का नाम 'ऋज्वर्थ वृत्ति' है।

निरुक्त के उपलब्ध व्याख्याकारों में ये सर्वप्रथम माने जाते हैं।

डॉ0 लक्ष्मण स्वरूप ने निरुक्त का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

स्कन्दस्वामी तथा माहेश्वर ने भी निरुक्त पर टीका लिखी।

प्रो0 राय ने जर्मन भाषा में निरुक्त का अनुवाद किया जिसका अंग्रेजी अनुवाद प्रो0 मेकीशान ने किया।

आचार्य शौनक ने बृहद्देवता की रचना की जो निरुक्त की आलोचनात्मक व्याख्या के रूप में हैं।

6. ऋग्वेदसंहितायाः पदपाठकारो निम्नलिखितेषु कोऽस्ति?

(a) गार्ग्यः (b) शाकल्यः
(c) शौनकः (d) यास्कः

उत्तर-(b)

आचार्य शाकल्य ने ऋग्वेद का पदपाठ किया है।
ब्रह्माण्ड पुराण में इन्हें प्रथम शाखाप्रवर्तक कहा गया है,
इनके साथ रथीतर, बाष्कलि और भरद्वाज को भी शाखाप्रवर्तक कहा गया है।
'रावण' के द्वारा भी ऋग्वेद का पदपाठ किया गया है तथा ऋग्वेद पर भाष्य भी किया है।
'आत्रेय' ने तैत्तिरीय संहिता का पदपाठ किया है।
'गार्ग्य' ने सामवेद का पदपाठ किया है।
स्कन्दस्वामी— ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य इन्हीं का उपलब्ध है।

7. यजुर्वेदस्य निम्नलिखितभाष्यकारेषु कोऽर्वाचीनतमः?

(a) स्वामिदयानन्दः (b) रावणः
(c) उव्वटः (d) महीधरः

उत्तर-(a)

स्वामी दयानन्द सरस्वती यजुर्वेद के अर्वाचीन भाष्यकार हैं।
स्वामी दयानन्द ने शुक्ल यजुर्वेद सम्पूर्ण की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की।
आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं।
इन्होंने नैरुक्त प्रक्रिया का आश्रय लेकर वेदों की नवीनतम व्याख्या प्रस्तुत की।
महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदों को अपौरुषेय मानते हैं

8. निम्नलिखितेषु ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः कोऽस्ति?

(a) वेङ्कटमाधवः (b) सायणः
(c) उव्वटः (d) स्कन्दस्वामी

उत्तर-(d)

स्कन्दस्वामी ऋग्वेद के प्राचीनतम भाष्यकार हैं। सबसे प्राचीन उपलब्ध भाष्य स्कन्दस्वामी का ही प्राप्त होता है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया है।
सायण ने भी 14वीं शती ई0 में ऋग्वेद सहित 5 वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थों और 2 आरण्यकों पर पाण्डित्यपूर्ण भाष्य लिखा है।
शुक्ल यजुर्वेद के माध्यन्दिन संहिता के दो भाष्यकार—उव्वट और महीधर हैं तथा **काण्व संहिता-भाष्य** के भाष्यकार हलायुध, सायण और अनन्ताचार्य हैं।
सामवेद के प्रथम भाष्यकार माधव हैं।
अथर्ववेद पर केवल सायण का भाष्य प्राप्त होता है।

9. माध्यन्दिनशाखायाः अपरनाम किं प्रचलितमस्ति?

(a) कैथुमशाखा (b) बौधायनीशाखा
(c) वाजसनेयिशाखा (d) मैत्रायणीशाखा

उत्तर-(c)

माध्यन्दिन शाखा का अन्य नाम वाजसनेयि शाखा है। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं—माध्यन्दिन (वाजसनेयि) और काण्व संहिता।
वाजसनेयि में 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं
वाजसनेयि संहिता के ऋषि याज्ञवल्क्य हैं।
ऋग्वेद की शाखाएं—1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन
सामवेद की प्रमुख शाखाएं क्रमशः —कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय आदि है।
महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है—1. पैप्पलाद 2. तौद 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद, 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य
इन सभी में शौनकीय और पैप्पलाद ही उपलब्ध है।

10. बाष्कलशाखा कस्य वेदस्य विद्यते?

(a) ऋग्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर-(a)

बाष्कल शाखा ऋग्वेद की एक प्रमुख शाखा है। पतञ्जलि के महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया गया है जिनमें से प्रमुख 5 शाखा ही उपलब्ध है।
'चरणव्यूह' के अनुसार ये प्रमुख 5 शाखाएं क्रमशः 1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन है।
यजुर्वेद की कुल छः शाखाएं उपलब्ध है।
दो शुक्ल यजुर्वेद—माध्यन्दिन या वाजसनेयि और काण्व संहिता
चार कृष्ण यजुर्वेद—तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, कपिष्ठल
सामवेद की प्रमुख शाखाएं—कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय है।
अथर्ववेद की शौनकीय और पैप्पलाद शाखा प्राप्त होती है।

11. ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1.2) ऋषिः कः?

(a) शुनःशेपः (b) मधुच्छन्दाः
(c) हिरण्यस्तूपः (d) गौतमः

उत्तर-(a)

ऋग्वेद के वरुण सूक्त के ऋषि शुनःशेप हैं।
वरुण सूक्त ऋग्वेद के पहले मण्डल का 25वां सूक्त है।
इसके देवता वरुण हैं तथा ऋषि शुनःशेप हैं, इसमें गायत्री छन्द का प्रयोग किया गया है।
ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का पहला सूक्त **अग्नि सूक्त** है जिसके ऋषि मधुच्छन्दा और देवता अग्नि हैं।
इन्द्र सूक्त के ऋषि गृत्समद और देवता इन्द्र हैं।
विष्णु सूक्त के ऋषि दीर्घतमा और देवता विष्णु हैं।
पुरुष सूक्त के ऋषि नारायण और देवता पुरुष हैं।
हिरण्यगर्भ सूक्त के ऋषि हिरण्यगर्भ और देवता कसंज्ञक प्रजापति हैं।

12. 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य विद्यते?

(a) सूर्यसूक्तस्य (b) वरुणसूक्तस्य
(c) अग्निसूक्तस्य (d) इन्द्रसूक्तस्य

उत्तर-(d)

''यो जात एव प्रथमो मनस्वान् .....'' यह सूक्त ऋग्वेदीय इन्द्रसूक्त से सम्बन्धित है, इस सूत्र के देवता इन्द्र एवं ऋषि गृत्समद हैं। इन्द्रसूक्त मे त्रिष्टुप् छन्द का प्रमुखतया से प्रयोग किया गया है। यह सूक्त द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त के रूप में उद्धृत हैं। उपर्युक्त मन्त्र में यह बतलाया गया है कि इन्द्र देवता ही समस्त देवताओं में परम मनस्वी, दिव्य गुणों से ओत-प्रोत यज्ञ से तथा वृत्रादि के हननादि कर्मों से समस्त देवताओं को अलङ्कृत किया। इन्द्र ने ही कांपती हुई पृथ्वी को स्थिर किया। ऋग्वेद के अन्य सूक्त क्रमशः अग्नि सूक्त (1.1), वरुण सूक्त (1.25), सवितृ सूक्त (1.35), पुरुष सूक्त (10.90), हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121), वाक् सूक्त (10.125), नासदीय सूक्त हैं।

13. 'सत्यं वृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिववीं धारयन्ति' मन्त्रांशोऽयं कस्मिन् वेदे विद्यते?

(a) ऋग्वेदे (b) यजुर्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

उत्तर-(d)

'सत्यं वृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति'' यह मन्त्र अथर्ववेद से सम्बन्धित है, अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त से यह मन्त्र उद्धृत है। इस मन्त्र के माध्यम से यह बतलाया गया है कि ''सत्य, वृहत्, ऋत, उग्र, दीक्षा, तप, ब्रह्मा और यज्ञ सभी पृथिवी को धारण करते हैं।

पृथ्वी सूक्त, अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में वर्णित है। अथर्ववेद–वैदिक परम्परा में सबसे बाद का है और इसमें दैनिक क्रियाकलाप, मोचन, जादू-टोना आदि का वर्णन प्राप्त है। महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में ''नवधाऽऽथर्वणो वेदः'' कहकर अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है। ये प्रमुख रूप से पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य आदि हैं।

14. दर्शयज्ञः कस्यां तिथौ क्रियते?

(a) पौर्णमास्याम् (b) अमावस्याम्
(c) अष्टम्याम् (d) चतुर्दश्याम्

उत्तर-(b)

दर्शयज्ञ अमावस्या को किया जाता है, इस यज्ञ में अग्नि के लिए पुरोडाश तथा इन्द्र के लिए दूध और दही के बने द्रव्य की आहुतियां दी जाती हैं। पौर्णमास यज्ञ पूर्णिमा को किया जाता है। पौर्णमास यज्ञ में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश की आहुति दी जाती है।

ऐतरेय ब्राह्मण में यज्ञों को पांच भागों में विभाजित किया गया है– (1) अग्निहोत्रयज्ञ (2) दर्शपौर्णमास यज्ञ (3) चातुर्मास्य यज्ञ (4) पशु यज्ञ (5) सोमयज्ञ, दर्शयज्ञ; दर्शपौर्णमास यज्ञ के अन्तर्गत आता है।

15. पञ्चमहायज्ञेषु किं न गण्यते?

(a) देवयज्ञः (b) पितृयज्ञः (c) ब्रह्मयज्ञः (d) विष्णुयज्ञः

उत्तर-(d)

पञ्चयज्ञों के अन्तर्गत विष्णुयज्ञ की गणना नहीं की जाती है।

'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।3/70

वेद का पठन-पाठन, ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, पितरों का तर्पण, होम करना, दैवयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ (पकाए हुए) भोजन में से कुछ अंश पशु-पक्षियों आदि के लिए निकालना और कुछ अंश अग्नि में डालना। (अन्न की बलि देना), नृयज्ञ (अतिथि का आदर-सत्कार) करना आदि ये सभी महायज्ञ के अन्तर्गत समाहित है।

हमारे वैदिक परम्परा में 16 संस्कारों की गणना की गयी है।

16. 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' अत्र 'जिजीविषेत्' पदस्य कोऽर्थः?

(a) जीवितुमिच्छेत् (b) जेतुमिच्छेत्
(c) ज्ञातुमिच्छेत् (d) प्राप्तुमिच्छेत्

उत्तर-(a)

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' यहां ''जिजीविषेत्' का अर्थ ''जीवित रहने की इच्छा'' से है।

इस मन्त्र के माध्यम से यह बतलाया गया है कि इस लोक में शास्त्रविहित कर्मों को भगवत्प्रीत्यर्थ करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करें। इस प्रकार कर्मों को करते रहने से मनुष्य में कर्म लिप्त नहीं होता है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं है जिससे चलते हुए व्यक्ति में शुभ और अशुभ कर्म लिप्त न हो। यह मन्त्र ईशावास्योपनिषद् का दूसरा मन्त्र है जो शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है।

17. 'भवाति' रूपमिदं कस्य लकारस्य विद्यते?

(a) लोट्लकारस्य (b) विधिलिङ्लकारस्य
(c) लेट्लकारस्य (d) लुट्लकारस्य

उत्तर-(c)

'भवाति' रूप का प्रयोग लेट् लकार में होता है।

वैदिक संस्कृत में लेट् लकार का प्रयोग अधिक हुआ है। लेट् लकार का प्रयोग प्रायः भूतकाल में हुआ है–जैसे पताति, भवाति, ईशै तारिषत् आदि।

वैदिक संस्कृत में धातुओं के परस्मैपद और आत्मनेपद होने के सम्बन्ध में विशेष नियम नहीं है।

वैदिक भाषा में लङ्लकार का प्रयोग किसी भी काल में हो सकता है। जबकि लौकिक संस्कृत में भूतकाल में होता है।

वैदिक भाषा में प्रत्ययों की विविधता भी दृष्टिगोचर होती है।

तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में इस प्रत्यय के अतिरिक्त से, सेन्, असेन्, क्से, क्सेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, शध्यैन्, तवै, तवैङ्, तवेन् ये 15 प्रत्यय किये जाते हैं।

18. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षराणां का संख्या?

(a) षड्   (b) अष्टौ

(c) पञ्च   (d) सप्त

उत्तर-(b)

ऋक्प्रातिशाख्यानुसार समानाक्षर की संख्या आठ है।
''अष्टौ समानाक्षराण्यादितः''
अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ
चार अक्षर सन्ध्यक्षर है–ए, ऐ, ओ, औ
''रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः''–अनुनासिक वर्ग रक्तसंज्ञक कहलाते हैं
ङ, ञ, ण, न, म
शाखायां शाखायां प्रतिशाखम्–अर्थात् प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध होने के कारण ये प्रातिशाख्य कहलाते हैं।
संस्कृत वाङ्मय में ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत आदि उच्चारण काल को और मात्रा को प्रदर्शित करते हैं।
जैसे–अ-ह्रस्व
आ-दीर्घ

19. 'षड् भावविकारा भवन्ति' मतमिदं कस्य विद्यते?

(a) वार्ष्यायणेः   (b) शाकपूणेः

(c) शाकटायनस्य   (d) यास्कस्य

उत्तर-(a)

षड् भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः अर्थात् छः प्रकार के भाव विकार होते हैं। जायते-अस्ति- विपरिणमते-वर्धते-अपक्षीयते-विनश्यति।
यह विचार वार्ष्यायणि ने दिया था।

- भाव प्रधानम् आख्यातम्।
- सत्त्व प्रधानानि नामानि।
- उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः।
- अनर्थका हि मन्त्राः कौत्सः।
- न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः।
- इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः।

20. अभिनिहितस्वरितो भेदोऽस्ति–

(a) आश्रितस्वरितस्य   (b) जात्यस्वरितस्य

(c) तैरोविरामस्वरितस्य   (d) स्वतन्त्रस्वरितस्य

उत्तर-(d)

अभिनिहित स्वरित-स्वतन्त्र स्वरित का भेद है।
स्वर के मुख्यतः तीन भेद है।
उदात्त अनुदात्त-स्वरित
उदात्त-उच्चैरुदात्तः
अनुदात्त-नीचैरनुदात्तः
स्वरित-समाहार स्वरितः अर्थात् उदात्त और अनुदात्त के संयोग को स्वरित कहते हैं।
यह स्वरित दो प्रकार का होता है–
स्वतन्त्र और आश्रित
पुनः स्वतन्त्र के दो भेद हुए–नित्य और संधिज
इसी संधिज के तीन भेदों में अभिनिहित सन्निहित हैं।
वैदिक परम्परा में मन्त्रों के उच्चारण और अर्थबोध के लिए स्वरों का अत्यन्त महत्व था। शुद्ध उच्चारण से ही इन स्वरों का विकास हुआ।

21. वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः किं कथ्यते?

(a) ईश्वरस्य स्वरूपम्   (b) अनन्तसत्ता

(c) अनादितत्त्वम्   (d) विवर्तः

उत्तर-(d)

वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः विवर्तः कथ्यते।
जब कोई वस्तु अपने स्वरूप का बिना यथार्थतः त्याग किए अन्य रूप में प्रतीत होने लगती है तो वह मूल का विवर्त कहलाती है।
जैसे–रस्सी का स्वरूप सर्प के रूप में मिथ्या प्रतीति।
यहां हम देखते हैं कि रस्सी अपने स्वरूप का परित्याग किए बिना ही अन्य रूप को धारण कर लेती है जो कि यह क्षणिक मिथ्या प्रतीति है।
इसी प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड ही ब्रह्म का विवर्त है।
''अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा ''विवर्त'' इत्युदाहृतः।''
सतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा 'विकार' इत्युदीरितः अर्थात् अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग करके अन्य रूप को ग्रहण कर ले तो वह विकार कहलाता है। जैसे–दूध का दही होना।

22. तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कस्य कारणम्?

(a) अनुमानस्य   (b) प्रत्यक्षस्य

(c) उपमानस्य   (d) इन्द्रियस्य

उत्तर-(b)

तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः प्रत्यक्षस्य कारणम्।
साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम् अर्थात् साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता है।
प्रत्यक्ष 'सविकल्पक और निर्विकल्पक' के भेद से दो प्रकार का होता है।
तथा इसके तीन करण है।

- कभी इन्द्रिय जनित
- कभी इन्द्रियार्थ-सन्निकर्ष
- कभी ज्ञान के रूप में

द्वितीय करण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष के विषय में कहते हैं ''यदा निर्विकल्पकानन्तरं सविकल्पं नाम जात्यादियोजनात्मकं डित्थोऽयं, ब्राह्मणोऽयं, श्यामोऽयमेति विशेषणविशेष्यावगाहि ज्ञानमुत्पद्यते, तदेन्द्रियार्थ सन्निकर्षः करणम्।
प्रत्यक्ष ज्ञान का निमित्त षोढ़ा सन्निकर्ष–संयोग-संयुक्तसमवाय-संयुक्तसमवेतसमवाय-समवाय-समवेत समवाय-विशेष्यविशेषण भाव।

23. निम्नलिखितेषु को हेत्वाभासो नास्ति?

(a) असिद्धः (b) विरुद्धः

(c) अनैकान्तिकः (d) असत्प्रतिपक्षः

उत्तर-(d)

असत्प्रतिपक्ष हेत्वाभासों में परिगणित नहीं होता है।

असिद्ध-विरुद्ध-अनैकान्तिक-प्रकरणसम-कालात्ययापदिष्ट भेदात् पञ्चैव।

अर्थात् असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट भेद से हेत्वाभास के पाँच भेद होते हैं।

- **असिद्ध हेत्वाभास—** इसके तीन भेद हैं- आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध और व्याप्यत्वासिद्ध। **आश्रयासिद्धो** यथा—गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्। **स्वरूपोसिद्धो** यथा, सामान्यमनित्यं कृतकत्वात्
- **व्याप्यत्वा सिद्धस्तु द्विविधः।**

विरुद्ध— शब्दः नित्यः कृतकत्वात् दात्मवत्।

एकः साध्येनासहचरितः.अपरस्तु, सोपाधिक साध्यसम्बंधी तंत्र प्राथमों यथा- 'यत् सत् तत्' क्षणिकं यथा जलधराः.संश्च विवादास्वदीभूतः शब्दादि इति।

अनैकान्तिक—शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्।

प्रकरणसम्—शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मानुपलब्धेः।

कालात्ययापदिष्ट अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत्।

24. तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कति सन्ति?

(a) सप्त (b) षोडश (c) नव (d) दश

उत्तर-(a)

तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थों की संख्या सात है।

''द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः।

अर्थात् द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभाव इस प्रकार सात भेद हैं

- द्रव्य की संख्या नव है—पृथ्वी-जल-तेज—वायु-आकाश-काल-दिक्-आत्मा और मन।
- गुणों की संख्या 24 है।
- पांच प्रकार के कर्म हैं—उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।
- परमपरं च द्विविधं सामान्यम्।
- नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।
- समवायस्त्वेक एव।
- अभावश्चतुर्विधः—प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभावश्चेति।

25. चार्वाकदर्शनस्य कृते किम् अपरनाम प्रचलितमस्ति?

(a) ब्रह्मदर्शनम् (b) परलोकदर्शनम्

(c) ऐहलौकिकदर्शनम् (d) लोकायतदर्शनम्

उत्तर-(d)

चार्वाक दर्शन को लोकायत दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार करता है। चार्वाक दर्शन भौतिक सुख-सुविधाओं को अत्यधिक महत्व देता है इनकी विचारधारा थी कि जब तक जिएं सुख से जिएं चाहे उसके लिए ऋण ही लेना पड़े।

चार्वाक दर्शन ईश्वर को नहीं मानता है। अपितु इहलोक की भौतिक वस्तुओं को महत्व देते हैं जिस कारण इसका नाम लोकायत पड़ा।

26. निम्नलिखितेषु दर्शनेषु किं दर्शनं परमात्मनः सृष्टिकर्तृत्वं न मन्यते?

(a) आर्हतदर्शनम् (b) न्यायदर्शनम्

(c) वेदान्तदर्शनम् (d) योगदर्शनम्

उत्तर-(a)

आर्हतदर्शन या जैन दर्शन परमात्मा को सृष्टि का कर्ता नहीं मानती है।

आर्हतदर्शन ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है।

इनके अनुसार कर्म ही प्रमुख फल का कारण होती है।

भारतीय दार्शनिक वाङ्मय में प्रमुख रूप से छः आस्तिक और तीन नास्तिक दर्शन स्वीकार किए गए हैं, यहां आस्तिक और नास्तिक से तात्पर्य वेदों में विश्वास और अविश्वास से है।

जैन दर्शन त्रिरत्न को स्वीकार करता है—सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् संकल्प या चरित्र।

स्यादवाद् की विचारधारा भी जैन दर्शन की है।

- प्रमुख आस्तिक दर्शन—सांख्य-योग
  न्याय-वैशेषिक
  पूर्व मीमांसा-उत्तर मीमांसा
- प्रमुख नास्तिक दर्शन—बौद्ध-जैन-चार्वाक

27. जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे कस्मिन् दर्शने मन्येते?

(a) बौद्धदर्शने (b) सांख्यदर्शने

(c) वेदान्तदर्शने (d) जैनदर्शने

उत्तर-(d)

जीव और अजीव इन दो तत्त्वों को जैनदर्शन स्वीकार करता है।

जैन दर्शन को आर्हत्दर्शन भी कहा जाता है।

जैन दर्शन के त्रिरत्न—सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र है। यही मोक्षप्राप्ति के मार्ग स्वीकार किए गये हैं। जैन दर्शन ''जिन'' शब्द से बना है जिसका तात्पर्य रागद्वेषादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है।

जैन दर्शन में तीर्थंकरों की परम्परा थी, पहले तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ थे तथा 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।

28. अधोऽङ्कितेषु योगदर्शनानुसारेण समुचितः क्रमोऽस्ति—

(a) अस्तेय-अपरिग्रह-सत्य-ब्रह्मचर्य-अहिंसाः

(b) अपरिग्रह-ब्रह्मचर्य-सत्य-अस्तेय-अहिंसाः

(c) अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

(d) सत्य-अहिंसा-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

उत्तर-(c)

योगदर्शन के अनुसार समुचित क्रम—अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह है।
पातञ्जल योग दर्शन पतञ्जलि के द्वारा प्रणीत है। इसमें चार पाद हैं—समाधि-साधन-विभूति और कैवल्य पाद
अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह ये पांच यम है।

- अहिंसा—अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।
- सत्य—सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्।
- अस्तेय—अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्।
- ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः।
- अपरिग्रह—अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथान्तासम्बोधः।

29. कर्मकाण्डस्य प्रधानता कस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यते?

(a) न्यायदर्शने (b) चार्वाकदर्शने

(c) मीमांसादर्शने (d) योगदर्शने

उत्तर-(c)

कर्मकाण्ड की प्रधानता मीमांसा दर्शन में प्राप्त होता है।
मीमांसा कर्मकाण्ड वेदों के पूर्व भाग से सम्बन्धित है।
मीमांसा दर्शन के प्रणेता जैमिनि थे।
मीमांसा—मान् धातु से सन् प्रत्यय और स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्ययों के संयोग से 'मीमांसा' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।
मीमांसा दर्शन का एक प्रमुख ग्रन्थ 'अर्थसंग्रह' है जिसकी रचना लौगाक्षिभास्कर ने किया।
भारतीय दार्शनिक वाङ्मय में छः आस्तिक और 3 नास्तिक दर्शन माने गए हैं—
आस्तिक दर्शनों में—सांख्य-योग-न्याय- वैशेषिक-पूर्वमीमांसा -उत्तरमीमांसा तथा नास्तिक दर्शनों में क्रमशः—बौद्ध-जैन-चार्वाक हैं।

30. 'श्लोकवार्तिकम्' कस्य दर्शनस्य ग्रन्थोऽस्ति?

(a) मीमांसादर्शनस्य (b) वेदान्तदर्शनस्य

(c) न्यायदर्शनस्य (d) सांख्यदर्शनस्य

उत्तर-(a)

श्लोकवार्तिक 'मीमांसादर्शन' का ग्रन्थ है।
महर्षि जैमिनि को 'मीमांसासूत्र' का प्रणेता कहा जाता है।
मीमांसा ग्रन्थों में कर्मकाण्ड की प्रधानता है।
मीमांसा दर्शन के प्रमुख मीमांसाकार कुमारिल भट्ट एवं प्रभाकर गुरु माने जाते हैं।
शबरभाष्य के प्रमुख व्याख्याकार कुमारिलभट्ट का प्रथम पाद पर लिखी गयी टीका का नाम **'श्लोकवार्तिक'** है।

- कुमारिलभट्ट के अन्य ग्रन्थ—**'तंत्रवार्तिक** और **टुप्टीका** है।
- अर्थसंग्रह भी प्रमुख मीमांसा ग्रन्थों में समाहित है जिसकी रचना लौगाक्षिभास्कर ने किया है।
- लौगाक्षिभास्कर का वैशेषिक दर्शन पर एक अन्य ग्रन्थ 'तर्ककौमुदी'' है।
- जयन्त भट्ट की 'न्यायमञ्जरी' रचना है।
- मध्वाचार्य की 'जैमिनीय न्यायमाला' है।

31. बौद्धदर्शने पञ्चविधस्कन्धेषु परिगणितो नास्ति—

(a) विज्ञानम् (b) वेदना

(c) संज्ञा (d) विशेषणम्

उत्तर-(d)

बौद्धदर्शन के पञ्चस्कन्धों में 'विशेषणम्' की गणना नहीं की जाती है।
'सोऽयं चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो रूप-विज्ञान-वेदना-सञ्ज्ञा-संस्कार सञ्जकः ''अर्थात् चित्त और चित्तविकारों में यह स्कन्ध पांच प्रकार का होता है—रूप-विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्कार।

- बौद्ध दर्शन में चित्त और उसके विकारों को **पञ्चस्कन्ध** के नाम से अभिहित किया जाता है।

(1) रूपस्कन्ध—विषयों के साथ इन्द्रियों का नाम हैं।
(2) विज्ञान स्कन्ध—आलय और प्रवृत्तिविज्ञान का प्रवाह है।
(3) वेदना स्कन्ध—रूप और विज्ञान स्कन्द के सम्बन्ध से उत्पन्न सुख-दुःख की प्रतीति वेदना है।
(4) संज्ञा स्कन्ध—नामों को व्यक्त करने वाला।
(5) संस्कार स्कन्ध—वेदना पर आधारित धर्म-अधर्म को संस्कार स्कन्ध कहते हैं।

32. अधोलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं चिनुत—

(a) काम्यकर्माणि स्वर्गादीष्टसाधनानि

(b) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि

(c) नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि

(d) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादिसाधनानि

उत्तर-(c)

वेदान्तसार के द्वारा अभिहित छः कर्मों में ''नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि'' यह समाहित नहीं हैं।
वेदान्त दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ ''ब्रह्मसूत्र'' है।
छः कर्म—1. ''काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि''
2. ''निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि''
3. ''नित्यान्करणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि''
4. ''नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि''
5. ''प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि
6. ''उपासनानि सगुण ब्रह्म विषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्य-विद्यादीनि
वेदान्त दर्शन में चार प्रकार के अनुबन्ध बताये गये हैं—
नामाधिकारि-विषय-सम्बन्ध-प्रयोजनानि।

33. अनुमितिज्ञाने व्यापार उच्यते

(a) करणम् (b) परामर्शः
(c) व्याप्तिः (d) हेतुः

उत्तर-(b)

अनुमिति ज्ञान के व्यापार को ''परामर्श'' कहते हैं।
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में विश्वनाथपञ्चानन भट्टाचार्य अनुमिति का लक्षण करते हैं कि अनुमिति में व्याप्ति का ज्ञान ही करण होता है और परामर्श व्यापार के रूप में होते हैं। जैसे पुरुष रसोईघर में धुएं से आग की व्याप्ति का ग्रहण किया है। उस पुरुष के द्वारा धुएं और वह्नि के व्यभिचार रहित सम्बन्ध को जान लिया गया है, बाद में वही व्यक्ति कहीं पर्वत आदि पर धुएं को देख लेता है तो व्याप्य और व्याप्ति के स्मरण द्वारा वहां भी अग्नि की कल्पना करता है कि वह्नि से व्याप्त यह पर्वत है इसी ज्ञान को परामर्श कहा जाता है, पर्वत अग्नि से युक्त है, ऐसी अनुमिति हो जाती है।

34. सवितर्का समापत्तिः उच्यते—

(a) शब्दार्थज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा
(b) स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा
(c) श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया
(d) उक्तेषु त्रिषु न कापि

उत्तर-(a)

शब्दार्थज्ञान विकल्पैः सङ्कीर्णा सवितर्का समापत्तिः कही जाती है।
शब्द-अर्थ और ज्ञान के विकल्पों से मिली-जुली हुई समापत्ति सवितर्का कही जाती है।
'क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्ति'' अर्थात् श्रेष्ठ मणि के समान क्षीणवृत्तियों वाले तथा 'ग्रहीता', 'ग्रहण' और 'ग्राह्य' में स्थित होने वाले चित्त का उनके आकार को ग्रहण कर लेना समापत्ति है।
''स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूप शून्येवार्थमात्र निर्भासा निर्वितर्का
अर्थात् स्मृति की निवृत्ति हो जाने पर अपने ज्ञानात्मक रूप से शून्य जैसी केवल अर्थ को ही प्रकाशित करने वाली निर्वितर्का समापत्ति होती है।

35. वेदान्तसारमतेन कर्मेन्द्रियाणामुत्पत्तिः भवति—

(a) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्यः समस्तेभ्यः
(b) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(c) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(d) आकाशदीनां सत्त्वांशेभ्यो समस्तेभ्यः

उत्तर-(b)

वेदान्तसार के अनुसार कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति आकाश आदि के रजो अंश के सामूहिक अंश से अलग-अलग होती है।
''कर्मेन्द्रियाणि वाक्पाणिपादपायुपस्थाख्यानि। एतानि पुनराकाशादीनां रजोंऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक्-पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते।
वाणी-हाथ-पैर-वायु और उपस्थ ये कर्मेन्द्रियां हैं तथा ये कर्मेन्द्रियां आकाशादि सूक्ष्मभूतों के अमिलित रजोगुण के अंश से क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होती हैं।
प्राण-अपान-व्यान-उदान-समान ये पञ्चवायु बतलाये गए हैं।
पञ्चीकरण की प्रवृत्ति वेदान्तसार की देन है।
विज्ञानमय, मनोमय और प्राणमय कोश मिलकर सूक्ष्मशरीर का निर्माण करते हैं।

36. 'उद्भिदा यजेत् पशुकामः' इत्यत्र 'उद्भिद्' शब्दो यागस्य नामधेयो भवति—

(a) मत्त्वर्थलक्षणाभयात् (b) वाक्यभेदभयात्
(c) तत्प्रख्यशास्त्रात् (d) तद्व्यपदेशात्

उत्तर-(a)

'उद्भिदा यजेत् पशुकामः' यहाँ उद्भिद् शब्द के याग का नामधेय 'मत्त्वर्थलक्षणा' है।

मीमांसा दर्शन के प्रणेता महर्षि जैमिनि हैं, मीमांसा दर्शन का ही प्रकरण ग्रन्थ 'अर्थसंग्रह' हैं, जिसके कर्त्ता लौगाक्षिभास्कर हैं।

श्लोकवार्तिक, जयन्तभट्ट कृत न्यायमञ्जरी और मध्वाचार्य की 'जैमिनीयन्यायमाला' आदि प्रमुख मीमांसा ग्रन्थ हैं।

- 'उद्भिदा यजेत् पशुकामः' यहाँ मत्वर्थलक्षणा के भय से 'उद्भिद्' शब्द को याग का नामधेय माना जाता है।
- मीमांसा दर्शन कर्मकाण्ड प्राधान्य है।
- भावना—शाब्दी और आर्थी के भेद से दो प्रकार की होती है।
- अपौरुषेयं वाक्यं वेदः 'स च विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेधार्थवादभेदात् पञ्चविधः'

37. भावनायां लिङ्गादिज्ञानं करणं भवति

(a) भावनोत्पादकत्वेन
(b) शब्दभावनानिवर्तकत्वेन
(c) आर्थीभावनोत्पादकत्वेन
(d) शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन

उत्तर-(d)

भावना में लिंगादि ज्ञान करण में 'शब्दभावनाभाव्यनिर्वर्तकत्वेन' है।

- मीमांसा दर्शन के प्रणेता महर्षि जैमिनि हैं।
- मीमांसा दर्शन का ही एक प्रकरण ग्रन्थ लौगाक्षिभास्करकृत ''अर्थसंग्रह'' है।

अर्थसंग्रह में भावना का लक्षण किया गया है—
''भावनानामभवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः',
यह भावना पुनः शाब्दी और आर्थी के भेद से दो प्रकार की होती है।
शाब्दी भावना—''तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दीभावना''।
आर्थी भावना—''प्रयोजनेच्छाजनित क्रियाविषयव्यापार आर्थी भावना''

शाब्दी भावना के तीन अङ्ग हैं—साध्य-साधन-इतिकर्त्तव्यता, साधन की आकांक्षा होने पर लिङ्गादि का ज्ञान करण के रूप में अन्वित होता है, किन्तु उसका कारणत्व भावनोत्पादक के रूप में नहीं है क्योंकि उसके लिङ्गादिज्ञान के पहले भी शब्द में उसकी सत्ता रहती है किन्तु भावना का प्रकाशक होने से लिङ्गादिज्ञान शाब्दीभावना का हेतु है।

38. चक्षुषा घटरूपत्वग्रहणे कः सन्निकर्षः

(a) समवायः (b) संयुक्तसमवायः

(c) संयुक्तसमवेतसमवायः (d) विशेषणविशेष्यभावः

उत्तर-(c)

चक्षु से घटरूपत्व में संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष होता है।

रूपत्व-सामान्य प्रत्यक्षे संयुक्त समवेतसमवाय सन्निकर्षः।

चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः। घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्त-समवाय सन्निकर्षः। चक्षु संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात्।

प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय और इन्द्रियार्थ का सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है—

संयोग-संयुक्तसमवाय-संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय-समवेतसमवाय-विशेषण विशेष्यभाव रूप

संयुक्त समवेत समवाय—रूपत्व सामान्य प्रत्यक्षे संयुक्त समवेत समवायः सन्निकर्षः। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेतं, तत्र रूपत्वस्य समवायात्।

39. सत्कार्यवादस्य समर्थने हेतुर्नास्ति—

(a) असदकरणम् (b) सर्वसम्भवाभावः

(c) शक्तस्य शक्यकरणम् (d) सर्वसम्भव-भावः

उत्तर-(d)

सत्कार्यवाद के पांच हेतुओं में ''सर्वसम्भव भावः'' की गणना नहीं की जाती है।

सत्कार्यवाद—''असदकरणात् उपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्य करणात् कारण भावाच्च सत्कार्यम्।।''

ईश्वरकृष्ण विरचित सांख्यकारिका की नवीं कारिका में इसका उल्लेख है।

कारणव्यापार से पूर्व भी कार्य सत् होता है अर्थात् कारण में ही विद्यमान रहता है।

सांख्य-प्रकृति और पुरुष की सत्ता स्वीकार करता है।

सांख्य-तीन प्रमाण मानता है-प्रत्यक्ष-अनुमान-आप्त

प्रधान की सिद्धि के लिए ही सत्कार्यवाद का प्रतिपादन हुआ है।

पांच हेतुओं से पुरुष (आत्मा) के अस्तित्व की सिद्धि।

अन्तःकरण के तीन और बाह्यकरण के दश भेदों का निरुपण है।

प्रत्यय सर्ग के चार भेद-विपर्यय-अशक्ति-तुष्टि और सिद्धि

40. आर्हत्दर्शने चतुर्विधबन्धेषु परिगणितो नास्ति—

(a) प्रकृतिबन्धः (b) विषयबन्धः

(c) स्थितिबन्धः (d) प्रदेशबन्धः

उत्तर-(b)

आर्हत् दर्शन के चार प्रकार के बन्धनों में विषयबन्ध की गणना नहीं की जाती है।

''बन्ध के चार प्रकार ''प्रकृतिबन्ध-स्थितिबन्ध-अनुभवबन्ध तथा प्रदेशबन्ध हैं।

बन्ध की परिभाषा -

''मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषायवशाद्योगवशाच्चात्मा-
सूक्ष्मैकक्षेत्राव-गहिनामनन्तप्रदेशानां पुद्गलानां कर्मबन्ध-योग्यानामादान मुपश्लेषणं यत्करोति स बन्धः

प्रकृतिबन्ध—इसके आठ भेद हैं। द्रव्यों के धर्म और अधर्म के अनुसार इसमें अन्तर भेद भी होता है।

स्थितबन्ध—स्वभाव में अपरिवर्तन ही स्थितबन्ध है।

अनुभवबन्ध—कर्म पुद्गलों की अपने कार्य करने की विशेष सामर्थ्य उत्पन्न होती है।

41. पाणिनीयशिक्षायाम् अक्षमपाठकेषु को न परिगणितः?

(a) गीती (b) लिखितपाठकः

(c) पदानि विच्छिद्य पाठकः (d) शीघ्री

उत्तर-(c)

पाणिनीय शिक्षानुसार अधम पाठकों में ''पदानि विच्छिद्य पाठक'' की गणना नहीं की जाती है।

अधम पाठकों का लक्षण—गीती शीघ्री सिरः कम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।

अर्थात्-गाकर पढ़ने वाला, शीघ्रता से पढ़ने वाला, शिर हिलाकर पढ़ने वाला, अनभ्यस्त, अकण्ठस्थीकृत, वेदादिशास्त्र को लेखन के आधार पर पढ़ने वाला, अर्थज्ञान के बिना पढ़ने वाला और शुष्क कण्ठत्व-न्यूनप्राणत्वादि दोषरूप में पढ़ने वाले ये छः प्रकार के अधम पाठक है।

उत्तम पाठक के लक्षण—माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यः लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः।

मधुरता, स्पष्टता, पदविभाग, सुस्वरता, लययुक्तता इस प्रकार के पाठक उत्तम पाठक कहलाते हैं।

42. अधोलिखितेषु केन्टुमवर्गे नास्ति

(a) जर्मनभाषा (b) रूसीभाषा

(c) फ्रेंचभाषा (d) ग्रीकभाषा

उत्तर-(b)

केन्टुम् वर्ग के अन्तर्गत रूसी भाषा परिगणित नहीं होती है।

भारोपीय भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है—केन्टुम् और शतम्

इस विभाजन का श्रेय प्रो0 अस्कोली को जाता है।

भारोपीय परिवार का विभाजन–सौ के लिए विभिन्न भाषाओं में उसका विकास

शतम् वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत-शतम्	लैटिन-केन्टुम्
अवेस्ता-सतम्	ग्रीक-हेकटोन
फारसी-सद्	तोखारी-कन्ध
हिन्दी-सौ	गाथिक-हुन्ड
रुसी-स्तो	जर्मन-हुन्डर्ट
लिथुआनियन-स्जिम्तास	फ्रेन्च-सं
	इटालियन-केन्तो

43. अधोलिखितेषु खकारस्य बाह्यप्रयत्नविषयकम् उपयुक्ततमं विकल्पं चिनुत

(a) विवारः, श्वासः, अघोषः, अल्पप्राणः
(b) संवारः, नादः, घोषः, अल्पप्राणः
(c) विवारः, श्वासः, अघोषः, महाप्राणः
(d) संवारः, नादः, घोषः, महाप्राणः

उत्तर-(c)

खकार का बाह्य प्रयत्न उच्चारण विवार, श्वास, अघोष, महाप्राण है।
यत्नो द्विधा-आभ्यन्तरो बाह्यश्च
पांच प्रकार के आभ्यन्तर प्रयत्न
स्पृष्ट-ईषत्स्पृष्ट-विवृत-ईषत्विवृत-संवृत
बाह्य प्रयत्न के 11 भेद हैं–
विवार-संवार-श्वास-नाद-घोष-अघोष-अल्पप्राण-महाप्राण
उदात्त-अनुदात्त-स्वरित
''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च''
''हशः संवारा नादा घोषाश्च''
''वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः''
वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः''
कादयो मावसानाः स्पर्शाः'
''यणोऽन्तःस्थाः'' 'शल् ऊष्माणः' 'अचः स्वराः'

44. आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दीभाषा मन्यते

(A) प्रश्लिष्ट-बहिर्मुखी
(B) श्लिष्टबहिर्मुखी वियोगात्मिका
(C) श्लिष्टबहिर्मुखी संयोगात्मिका
(D) श्लिष्टान्तर्मुखी वियोगात्मिका

उत्तर-(b)

आकृतिमूलक वर्गीकरण में हिन्दी भाषा ''श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मिका'' के अन्तर्गत सम्मिलित है।
विश्व की भाषाओं के दो भेद–आकृतिमूलक और पारिवारिक मूलक है।
आकृतिमूलक को निम्न चार्ट से हम समझ सकते हैं।
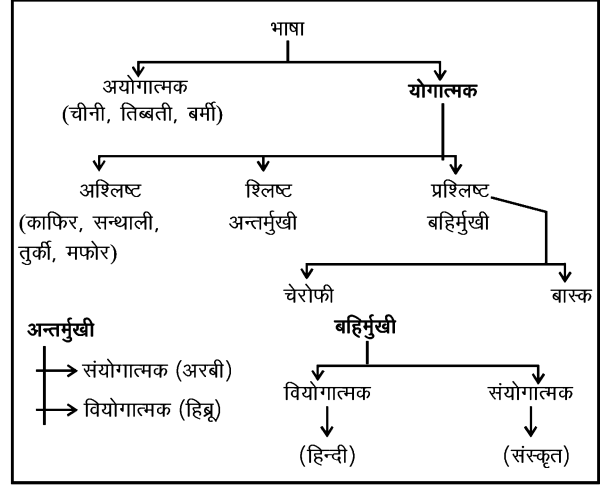
45. अधस्तनीयानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

तालिका-I	**तालिका-II**
(A) पाणिनिः	(i) वृत्तिः
(B) कात्यायनः	(ii) सूत्रम्
(C) पतञ्जलिः	(iii) वार्तिकम्
(D) जयादित्यः	(iv) इष्ठिः

(a) (A)-(i); (B)-(ii); (C)-(iii); (D)-(iv)
(b) (A)-(i); (B)-(iii); (C)-(ii); (D)-(iv)
(c) (A)-(iii); (B)-(ii); (C)-(iv); (D)-(i)
(d) (A)-(ii); (B)-(iii); (C)-(iv); (D)-(i)

उत्तर-(d)

पाणिनि के ग्रन्थों को सूत्र के नाम से अभिहित किया जाता है। पाणिनि व्याकरण सूत्रोबद्ध है।
पाणिनि के व्याकरण पर महर्षि कात्यायन ने वार्तिकों की रचना की। जो भी कमियाँ दिखी और अध्ययन हेतु जो भी सुगम सूत्र रहा उसको कात्यायन ने अपने वार्तिकों में समाहित किया यही कारण है कि पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन इसके बिना अधूरा रहता है।
कात्यायन के वार्तिक पर पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना की जिसमें शब्दानुशासन के विषय में विस्तृत विवेचन है।
पाणिनि के लगभग 1250 सूत्रों पर कात्यायन ने 4000 वार्तिकों की रचना की।
सातवीं शताब्दी में जयादित्य और वामन ने अष्टाध्यायी पर सरल वृत्ति 'काशिका' लिखी।
चन्द्रगोमी पाणिनि के आधार पर बौद्धों के लिए 'चान्द्रव्याकरण' बनाया। भर्तृहरि ने वाक्यपदीय की रचना की जो महाभाष्य की टीका है।

46. अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति

(a) गवेषणा (b) तैलम्
(c) प्रवीणः (d) श्राद्धः

उत्तर-(d)

अर्थविस्तार का उदाहरण 'श्राद्ध' नहीं है।
अर्थपरिवर्तन की प्रमुखतः तीन दिशाएं हैं–
अर्थविस्तार, अर्थसंकोच, अर्थादेश
अर्थविस्तार–कुशल, प्रवीण, तैल, गोशाला, महाराज, गवेषणा, बैल, पशु, गधा, उल्लू आदि शब्दों का अर्थविस्तार हुआ है। आज लौकिक जगत में लोग इसका प्रयोग एक से अधिक वस्तुओं के रूप में करने लगे हैं।
अर्थसंकोच–जगत्, वारिज, तोयद्, अम्बुद्, वारिधि, अम्बुधि, सर्प, पर्वत, मध्यस्थ, उदासीन, मन्दिर, मृग, सभ्य, श्राद्ध, तर्पण, घृणा, वेदना, अनुकूल, प्रतिकूल आदि शब्दों का अर्थसंकोच हुआ है।
अर्थादेश–असुर, वर, सह, मौन, देवानां प्रियः, पाषण्ड, आकाशवाणी, साहस, मुग्ध, वाटिका-बाड़ी, कर्पट आदि के अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का प्रयोग होने लगा है।

47. अधोलिखितेषु का वैदिकभाषायाः विशेषता नास्ति
(a) सानुनासिकस्वराणां प्रयोगः
(b) 'लेट्' लकारस्य प्रयोगः
(c) तुमुन्नर्थे तवैप्रत्ययस्य प्रयोगः
(d) क्त्वार्थे तवेङ्प्रत्ययस्य प्रयोगः

उत्तर-(d)

वैदिक संस्कृत में 'क्त्वार्थे तवेङ्' इस प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता है।
वैदिक शब्दों में स्वरों का उच्चारण संगीतात्मक होता है।
वेदों में लृ स्वर का प्रचुर प्रयोग है।
वैदिक भाषा में दो अतिरिक्त व्यञ्जन 'ल' और 'लह' है। इसका प्रयोग ड् और ढ् के स्थान पर किया गया है।
वैदिक संस्कृत में स्वराघात का बहुत महत्त्व है।
तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में से, सेन्, असेन्, क्से, क्सेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन, शध्यैन्, तवै, तवैङ्, तवेन् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
वैदिक संस्कृत में लेट्लकार का प्रयोग होता है।
वैदिक संस्कृत में सन्धि के प्रायः वही नियम हैं जो लौकिक संस्कृत में है।

48. पाणिनीयशिक्षानुसारं कस्य प्राणिनः ध्वनिः एकमात्रिकवर्णतुल्यः भवति
(a) नकुलस्य (b) शिखिनः
(c) वायसस्य (d) चाषस्य

उत्तर-(d)

पाणिनीय शिक्षानुसार एक मात्रिक बोलने वाला चाषस्य (नीलकण्ठ) है।
''चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं चैव वायसः।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम्।।
अर्थात् नीलकण्ठ पक्षी एक मात्रिक है, कौआ दो मात्रा (दीर्घ), मयूर तीन मात्रा (प्लुत्) तथा नकुल अर्द्धमात्रा का उच्चारण करता है।
पाणिनीय शिक्षा ऋग्वेद का प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ है।
हृदय पर हाथ रखकर अनुदात्त, मूर्धा पर उदात्त, कर्णमूल में स्वरित तथा सभी के मुख पर हाथ रखकर प्रचय का उच्चारण करना चाहिए।
पाणिनीय शिक्षा में ही पाठक के छः अधम और उत्तम गुण बताये गए हैं।

49. अधोलिखितेषु वैदिकभाषादृशा साधुप्रयोगो मन्यते
(a) देवेभिः (b) विश्वा
(c) एमसि (d) उक्ताः सर्वेऽपि साधवः

उत्तर-(d)

वैदिक भाषा के अनुसार देवेभिः, विश्वा, एमसि तीनों साधु शब्द हैं।
वैदिक भाषा में स्वरों का उच्चारण संगीतात्मक है।
स्वरों का प्रयोग सानुनासिक होता है।
वैदिक और लौकिक संस्कृत में सन्धि के नियम प्रायः एक जैसे हैं।
वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृत की अपेक्षा धातुरुपों की दृष्टि से बहुत अधिक सम्पन्न है।
अग्नि सूक्त के मन्त्रों में देवेभिः, विश्वा, एमसि का प्रयोग दिखता है–
'अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः
देवो देवेभिरा गमत्।15।।
''उप त्वाग्ने दिवे-दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।।7।।

50. ग्रिमनियमानुसारेण तवर्गीयध्वनीनां परिवर्तनक्रमोऽस्ति
(a) द > ध,ध > थ, थ > त
(b) त > थ, द > ध, ध > त
(c) थ > ध, त > द, ध > द
(d) त > थ, ध > द, द > त

उत्तर-(d)

ग्रिम नियमानुसार तवर्गीय ध्वनि क्रम परिवर्तन त > थ, ध > द, द > त है।
ग्रिमनियम- प्रो. याकोबी ग्रिम (1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध हैं।
ग्रिम नियम- प्रथम वर्ण परिवर्तन का प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेज, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है।
अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है।
द्वितीय वर्ण परिवर्तन–जर्मन भाषा के ही दो रूपों ''उच्च और निम्न'' में हुआ है।
निम्न जर्मन की प्रतिनिधि भाषा अंग्रेजी है।

51. अधोलिखितेषु भर्तृहरिमतेन ध्वनेः भेदद्वयं चिनुत
(a) पश्यन्ती, वैखरी (b) प्राकृतः वैखरी
(c) प्राकृतः, वैकृतः (d) बैखरी, वैकृतः

उत्तर-(c)

भर्तृहरि ने ध्वनि के प्राकृतः, वैकृतः दो भेद माने हैं।
'प्राकृतो वैकृतश्चेति द्विविधो ध्वनिः'
प्राकृत ध्वनि के बिना स्फोट की प्रतीति सम्भव नहीं है इसलिए प्राकृत ध्वनि को स्फोट का स्वरूप स्वीकार करते हैं।
वैकृत ध्वनि केवल प्राकृत ध्वनि को ही प्रतिस्थापित करती हैं।
अतः स्फोट के रूप में यह नहीं स्वीकृत है।
'वाक्यपदीयम्' नामक व्याकरण ग्रन्थ भर्तृहरि प्रणीत हैं।
इसमें तीन काण्ड है–ब्रह्मकाण्ड (156) कारिका
वाक्य काण्ड (486) कारिका
पदकाण्ड (1218) कारिका
प्राकृत और वैकृत नामक ध्वनि के भेदों को वाक्यपदीय के ब्रह्मकाण्ड में बतलाया गया है।

52. 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन भवति

(a) पूर्वसवर्णदीर्घः (b) पूर्वसवर्णदीर्घस्य निषेधः
(c) वृद्धिः एकादेशः (d) गुणादेशस्याभावः

उत्तर-(b)

'दीर्घाज्जसि च'' सूत्र से पूर्व सवर्ण दीर्घ का निषेध होता है।
दीर्घ से जस् और इच् परे रहने पर पूर्णसवर्ण दीर्घ नहीं होता है। ''दीर्घाज्जसि इचि च परे पूर्वसवर्णदीर्घो न स्यात्''।
जैसे–विश्वपा से औ, वृद्धिरेचि से वृद्धि प्राप्त हुआ लेकिन उसे बाधकर प्रथमयोः पूर्वसवर्णः से पूर्वसवर्णदीर्घ प्राप्त होता है लेकिन इसका भी 'दीर्घाज्जसि'' से निषेध होने पर पुनः वृद्धिरेचि से वृद्धि होकर 'विश्वपौ' रूप सिद्ध हुआ।
इसी प्रकार कुमारी जस् (अस्)-यण् प्राप्त हुआ था लेकिन प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ने यण् का बाध कर दिया, लेकिन ''दीर्घाज्जसि च'' सूत्र के द्वारा पूर्व सवर्ण का दीर्घ निषेध होकर ''कुमार्यः'' बना।

53. 'प्र + एजते = प्रेजते' इत्यत्र एकारो भवति

(a) 'आदगुणः' सूत्रेण गुणत्वात्
(b) 'वृद्धिरेचि' सूत्रेण वृद्धित्वात्
(c) 'एङि पररूपम्' सूत्रेण पररूपत्वात्
(d) 'एङः पदान्तादति' सूत्रेण पूर्वरूपत्वात्

उत्तर-(c)

प्र+एजते में एकार 'एङि पररूपम्' से पररूप हुआ है।
अवर्णान्त उपसर्ग से एङादि धातु के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है।
'प्र+एजते' में आद्गुणः से गुण की प्राप्ति होती है उसे बाधकर वृद्धिरेचि से वृद्धि प्राप्त हुई और इसे भी बाधकर-''एङि पररूपम्' सूत्र लगा। नियमानुसार वर्ण सम्मेलन होकर पररूप सन्धि से प्रेजते रूप सिद्ध होता है।
उपोषति में भी एङि पररूपम् से पररूप होकर उप् + ओ + षति बना। वर्ण सम्मेलन होकर उपोषति सिद्ध होता है।

54. 'मालामतिक्रान्तः—अतिमालः' इत्यत्र समासविधायकं वर्तते

(a) अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया
(b) अत्यादयः कुष्ठाद्यर्थे द्वितीयया
(c) कुगतिप्रादयः
(d) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

उत्तर-(a)

''मालामतिक्रान्तः अतिमालः'' में समास विधायक सूत्र ''अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया' है। यह वार्तिक सूत्र है।
क्रान्त अर्थात् पार गया हुआ, पारगामी आदि अर्थों में वर्तमान अति आदि निपातों का द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है इसे ही तत्पुरुष समास कहते हैं।
अतिमालः-मालाम् अतिक्रान्तः
माला अम् अति अलौकिक विग्रह के साथ अति प्रादि निपात का माला अम् सुबन्त के साथ अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया से समास हुआ–प्रातिपदिक संज्ञा, सुपादि का लुक् करके तथा उपसर्जन संज्ञा होकर पूर्व प्रयोग होकर ह्रस्व करने के लिए ''गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य'' से उपसर्जन माला को ह्रस्व होकर अतिमाल बना, रुत्व विसर्गादि करके अतिमालः रूप बना।

55. शब्दे व्याकरणे स्वीकारे महाभाष्ये का शङ्का नोत्थापिता

(a) ल्युडर्थस्य अनुपपन्नतायाः
(b) 'तत्र भव' इत्यस्य अनुपपन्नतायाः
(c) प्रोक्तादीनां तद्धितार्थानाम् अनुपपन्नतायाः
(d) षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नतायाः

उत्तर-(d)

व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर षष्ठ्यर्थ अनुपपन्नता के विषय में महाभाष्यानुसार शंका नहीं होती है।
व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर तीन दोष निम्नलिखित हैं–
1. ल्युट् प्रत्यय के अर्थ की अनुपपत्ति–'शब्द पक्ष में व्याक्रियन्ते शब्दा अनेन इस व्युत्पत्ति में वि+आङ्+कृ+ल्युट् = अन् यहाँ करण अर्थ में ल्युट् प्रत्यय होता है। किन्तु व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर यह अर्थ उत्पन्न नहीं हो सकता क्योंकि व्याकरण-शब्द के द्वारा किसी की व्युत्पत्ति नहीं की जाती है। इसके विपरीत शब्द की ही व्यत्पुत्ति की जाती है।
तत्र भवः शब्द अर्थ में कोई योग नहीं होता–एक सूत्र में ही कहीं-कहीं दूसरा योग सूत्र कल्पित कर लिया जाता है।
प्रोक्त अर्थ वाले का शब्द मानने पर ये प्रत्यय नहीं हो सकते हैं पाणिनि के द्वारा प्रोक्त शब्द नहीं अपितु सूत्र ही प्रोक्त हैं।

56. 'सर्पिषो नाथनम्' इह षष्ठी विभक्तिर्भवति

(a) कर्मणः शेषत्वेन विवक्षायाम्
(b) करणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्
(c) सम्बन्धस्य सम्बन्धत्वेन विवक्षायाम्
(d) अधिकरणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्

उत्तर-(a)

''सर्पिषो नाथनम्' में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग कर्म के शेषत्व की विवक्षा में हुआ है।

आशिषि नाथ : (2/3/55)–आशीर्वचन अर्थ में वर्तमान नाथ धातु के कर्म कारक में, सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। यहां आशिषि शब्द से इच्छा का ग्रहण होता है।

सर्पिषो नाथनम् (घी सम्बन्धी इच्छा करना)–इसमें नाथ् धातु के आशीरर्थक (इच्छार्थक) होने के कारण कर्म 'सर्पिः' में शेषत्व की विवक्षा होने पर 'आशिषि नाथः' सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है।

माणवकनाथनम् भी इसी सूत्र से षष्ठी के अन्तर्गत परिगणित है। इस सूत्र आशिषि का प्रयोजन यह है कि नाथ् धातु का आशिषि से भिन्न याचना के अर्थ में उसके कर्म में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।

57. 'रुदति प्राव्राजीत्' अत्र रुदति पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति

(a) निर्धारणे

(b) सामीप्ये अधिकरणे

(c) अनादराधिक्ये भावलक्षणे

(d) कर्मप्रवचनीयस्य योगे

उत्तर-(c)

'रुदति प्राव्राजीत्' यहां रुदति पद में सप्तमी विभक्ति 'अनादराधिक्ये भावलक्षणे' सूत्र से हुआ है।

षष्ठी चानादरे (2/3/38)

अनादराधिक्ये भावलक्षणे षष्ठीसप्तम्यौ स्तः। रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्। जहां एक क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित हो और उसमें अनादर का भाव विद्यमान हो तो वहाँ जिसका अनादर या अपमान किया जाता है उसमें षष्ठी/सप्तमी विभक्ति होती है।

रुदति रुदतो वा पुत्रं प्राव्राजीत् ''रोते हुए पुत्रादि सगे-सम्बन्धियों को छोड़कर संन्यास धारण कर लिया। यहाँ रोने की क्रिया से संन्यासी की जाने की क्रिया भी बोधित हो रही है तथा सगे-सम्बन्धियों का शुभेच्छा किए बिना ही चले जाने के कारण अनादर भी गम्यमान है। अतः **षष्ठी च अनादरे** सूत्र से 'रुदति में सप्तमी' और 'रुदतः में षष्ठी' विभक्ति हुई है।

58. 'यस्य हलः' इत्यत्र 'यस्य' इत्यनेन ग्रहणं भवति

(a) केवलं यकारस्य

(b) अकारसहितं यकारस्य

(c) यत् प्रातिपदिकेन निष्पन्नस्य षष्ठ्यन्तस्य

(d) उक्तेषु न कस्यापि

उत्तर-(b)

'यस्य हलः' सूत्र में यस्य पद से अकार सहित यकार का ग्रहण किया गया है।

अतो लोपः से लोप की अनुवृत्ति आती है। 'यस्य हलः' इस सूत्र में यस्य से तात्पर्य-अकार सहित यकार है।

– हल् से परे य का लोप होता है। यदि आर्धधातुक परे हो तब।

जैसे–वाव्रजाञ्चक्रे –यङ्द्वित्व आदि होने के बाद वाव्रज्य धातु बना है। इससे लिट् में कास्यनेकाच आम् वक्तव्यो लिटि से आम्, इसका लुक्, लिट् सहित कृ का अनुप्रयोग करके वाव्रज्य + कृ + लिट् बना। यकार का यस्य हलः से लोप तथा अकार का अतो लोपः से लोप करने पर वाव्रज् बना। आगे चक्रे बनाने की प्रक्रिया पूर्ववत् है।

आर्धधातुक के परे सर्वत्र यकार और अकार का लोप किया जाता है।

59. 'एध्-वृद्धौ' इत्यस्माद् धातोः 'ऐधिष्ठ' इति रूपं निष्पद्यते

(a) विधिलिङ्लकारे (b) लुङ्लकारे

(c) आशीर्लिङ्लकारे (d) लङ्लकारे

उत्तर-(b)

'एध् - वृद्धौ' धातु से 'ऐधिष्ट' रूप लुङ् लकार प्रथम पु. एकवचन में बनता है।

लुङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु0	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	एधिषत
मध्यम पु0	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम	ऐधिढ्वम्
उत्तम पु0	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

लट्लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु0	एधते	एधेते	एधन्ते
मध्यम पु0	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उत्तम पु0	एधे	एधावहे	एधामहे

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु0	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
मध्यम पु0	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उत्तम पु0	एधै	एधावहै	एधामहै

आशीर्लिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु0	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम	एधिषीरन्
मध्यम पु0	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तम पु0	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहिं

60. 'कुरुचरः' इत्यत्र 'चरेष्टः' सूत्रेण 'ट' प्रत्ययो विधीयते–

(a) अधिकरणे उपपदे (b) कर्मण्युपपदे

(c) सुबन्ते उपपदे (d) उपसर्गे उपपदे

उत्तर-(a)

कुरुचरः मे 'चरेष्टः' सूत्र से 'ट' प्रत्यय का विधान अधिकरण उपपद में हुआ है।

अधिकरण के उपपद होने पर चर् धातु से ट प्रत्यय होता है।

कुरुचर :–कुरु देश में विचरण करने वाला।

कुरुषु अधिकरण उपपद में हैं। चर् धातु से ट प्रत्यय

होकर अनुबन्ध लोप करके उपपदमतिङ् से उपपद समास होकर सुप् विभक्ति का सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से लुक् होकर कुरुचर + अ बना, वर्णसम्मेलन करने के बाद कुरुचर रूप बना
रुत्व विसर्गादि करके कुरुचरः सिद्ध हुआ।
इसी तरह निशाचरः, खेचरः रूप भी सिद्ध होगा।

61. शारिपुत्रप्रकरणमस्ति

(a) माघप्रणीतम् (b) श्रीहर्षप्रणीतम्
(c) अश्वघोषप्रणीतम् (d) बिल्हणप्रणीतम्

उत्तर-(c)

शारिपुत्रप्रकरण के लेखक अश्वघोष हैं।
अश्वघोष प्रथम बौद्ध नाटककार हैं।
सम्राट कनिष्क के राजगुरु और आश्रित राजकवि थे।
शारिपुत्रप्रकरण नाटक है। इसमें 9 अंक शारिपुत्रप्रकरण में मौद्गलायन और शारिपुत्र नामक दो युवकों के, बुद्ध के उपदेश से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म में दीक्षित होने का वर्णन है। इस नाटक में नाट्यशास्त्रीय नियमों का पालन हुआ है।
रंगमंच पर बुद्ध का प्रवेश दिखलाया गया है।
अश्वघोष की अन्य रचनाएं बुद्धचरित और सौन्दरनन्द है।
बुद्धचरित 28 सर्गों का महाकाव्य है।
सौन्दरनन्द–18 सर्गों का पूर्णतः उपलब्ध संस्कृत महाकाव्य है।
- मुरारि की रचना अनर्घराघव है।
- माघ की रचना शिशुपालवधम् है।
- श्री हर्ष की नैषधीयचरितम् है।
- विल्हण का विक्रमाङ्कदेवचरित है।

62. 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखमिति' केनोक्तम्?

(a) बाणभट्टेन (b) माघेन
(c) शूद्रकेण (d) भारविणा

उत्तर-(c)

'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्' यह शूद्रक द्वारा विरचित मृच्छकटिक नामक प्रकरण ग्रन्थ से लिया गया है। गरीबी के विषय में वर्णन करते हुए चारुदत्त कहते हैं कि–
''द्रारिद्र्ययान्मरणाद्वा मरणं मम् रोचते न दारिद्र्ययम्।
अल्पक्लेशं मरणं, दारिद्र्ययमनन्तकं दुःखम्।
गरीबी और मृत्यु में मृत्यु श्रेष्ठ है निर्धनता नहीं, मृत्यु में अल्पकालिक कष्ट है लेकिन निर्धनता कभी न समाप्त होने वाला दुःख है।
मृच्छकटिक 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है।
इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त का वसन्तसेना नामक गणिका से प्रेम का वर्णन है।
प्रथम अङ्क का नाम अलङ्कारन्यास है तथा पांचवे अङ्क का नाम दुर्दिन है।
ग्रन्थ का नाम छठे अङ्क ''प्रवहण विपर्यय'' के नाम पर पड़ा है।

63. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' इति केनोक्तम्?

(a) विशाखदत्तेन (b) दण्डिना
(c) भासेन (d) भारविणा

उत्तर-(d)

''न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभः'' यह सूक्ति भारवि द्वारा विरचित किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है।
''क्रियासु युक्तैर्नृप चार चक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।14।।
किरातार्जुनीयम्–18 सर्गों में विभक्त महाकाव्य है।
यह वृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित होता है।
प्रथम सर्ग में वनेचर 'दुर्योधन' के प्रजाविषयक समस्त विषयों को जानकर द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर के समक्ष वर्णन करता है।
अन्य सूक्तियाँ–हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।
- अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।

64. कस्य वचः नारिकेलफलसम्मितं कल्पितम्?

(a) विशाखदत्तस्य (b) भारवेः
(c) दण्डिनः (d) बाणभट्टस्य

उत्तर-(b)

'नारिकेल फलसम्मितं वचो'' यह प्रशस्ति भारवि के लिए मल्लिनाथ ने दिया था।
किरातार्जुनीयम् महाकाव्य भारवि की रचना है।
इसके प्रथम तीन सर्ग को पाषाणत्रय कहा जाता है।
संस्कृत साहित्य में भारवि को रीतिकाल का जन्मदाता माना जाता है।
भारवि का उपनाम 'आतपत्र भारवि' है।
भारवि का जन्म कुशिक गोत्र में हुआ था।
भारवि शैवमतानुयायी थे
किरातार्जुनीयम् में 18 सर्ग है तथा प्रस्थानत्रयी में सर्वप्रथम है।
भारवि विष्णुवर्धन के सभापण्डित थे।
भारवि के पिता का नाम श्रीधर तथा माता का नाम सुशीला था।
इनकी पत्नी का नाम रसिकवती था।
भारवि का वास्तविक नाम दामोदर था तथा भारवि इनकी उपाधि थी।

65. अधोलिखितेषु उपन्यासकारं चिनुत

(a) बाणभट्टः (b) बिल्हणः
(c) दण्डी (d) अम्बिकादत्तव्यासः

उत्तर-(d)

अम्बिकादत्तव्यास उपन्यासकार हैं। इनकी रचना ''शिवराजविजयम्'' प्रथम उपन्यास माना जाता है।
1870 में शिवराजविजय की रचना हुई तथा यह काशी से 1901 में प्रकाशित हुई।

एक घड़ी में 100 श्लोकों की रचना करने के कारण इनको ''घटिकाशतक'' की उपाधि दी गयी।
सौ प्रश्नों को सुनकर उन सभी का उत्तर उसी क्रम में देने के कारण उन्हें ''शतावधान' की भी उपाधि दी गयी थी।
ऐतिहासिक उपन्यास का सूर्योदय वर्णन से प्रारम्भ होता है।
काशी में इनको 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया।
शिवराजविजय 3 विराम तथा 12 निःश्वासों में विभक्त है।

66. 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते' इति केनोक्तम्?

(a) भामहेन (b) भरतेन
(c) विश्वनाथेन (d) मम्मटेन

उत्तर-(b)

''न हि रसादृते कश्चिदर्थः'' प्रवर्तते इति भरतेन उक्तम्।
नाट्यशास्त्र के छठे अङ्क में यह वर्णन प्राप्त होता है–
''तत्र रसानेव तावदादवभिव्याख्यास्यामः
न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।''
तत्र विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।
इसमें भाव और रस दोनों तत्त्वों का विवेचन है।
'नाट्यशास्त्र' ''भरतमुनि'' द्वारा प्रणीत है।
नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं। श्लोक 6000 हैं।
नाट्यशास्त्र को 'षट्साहस्रीसंहिता' के नाम से अभिहित किया जाता है।
प्रथम अध्याय में नाट्यशास्त्र की दिव्य उत्पत्ति का विशद वर्णन है।
द्वितीय अध्याय में नाट्य-मण्डप के भेदोपभेदों का निरूपण विकृष्ट, चतुरस्त्र और त्र्यस्त्र संज्ञक प्रेक्षागृहों की रचना का विधान, रंगशाला का भूमि विभाग और उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग का सम्यक् निरूपण है।
षष्ठ अध्याय में रस विषयक वर्णन है।

67. अलङ्कारसम्प्रदायस्य प्रवर्तकाचार्यः कः?

(a) वामनः (b) भरतः
(c) भामहः (d) रुद्रटः

उत्तर-(c)

अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तकाचार्य भामह हैं।
भामह का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'काव्यालङ्कार' है।
अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य–भामह (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
रस सम्प्रदाय–भरत (प्रवर्तक), भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
रीति सम्प्रदाय–वामन (प्रवर्तक) रीतिरात्मा काव्यस्य
ध्वनि सम्प्रदाय–आनन्दवर्धन (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
औचित्य सम्प्रदाय–क्षेमेन्द्र (प्रवर्तक)
वक्रोक्ति सम्प्रदाय–कुन्तक (प्रवर्तक) वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्

68. अधस्तनेषु 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इत्यनेन कोऽभिप्रायः?

(a) व्यञ्जकशब्दार्थौ (b) व्यञ्जनाशक्तिः
(c) व्यङ्ग्यार्थः (d) व्यङ्गयकाव्यम्

उत्तर-(c)

'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इसका अभिप्राय व्यङ्ग्यार्थ से है।
ध्वन्यालोक–आनन्दवर्धन द्वारा प्रणीत है। इसमें ध्वनिकाव्य के लक्षण को प्रतिपादित किया गया है।
आनन्दवर्धन के मत में–वाच्य-वाचक-व्यङ्ग्यार्थ-व्यञ्जनाव्यापार-काव्यपद से व्यवहार्य काव्य इन पांच पदों को ध्वनि कहते हैं।
''ध्वन्यते अनेन इति ध्वनिः' इस व्युत्पत्ति से वाच्य शब्द और वाच्यार्थ को बताते हैं।
''ध्वन्यते इति ध्वनि'' व्यङ्ग्यार्थ को बतलाता है।
''ध्वननं ध्वनि'' व्यञ्जना व्यापार को बतलाता है।
''ध्वन्यतेऽस्मिन्नति ध्वनिः'' इससे उपरोक्त ध्वनि चतुष्टय काव्य को ध्वनि कहते हैं।
''काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति''

69. अरस्तूविरचितं पुस्तकमस्ति

(a) दि रिपब्लिक (b) ऑन द सब्लाइम
(c) पॉएटिक्स (d) टेल ऑफ टू सिटीज़

उत्तर-(c)

अरस्तू द्वारा रचित पुस्तक का नाम ''पॉएटिक्स'' है।
यह नाट्यसम्बन्धी सर्वाधिक प्राचीन पुस्तक है।
इसमें काव्य के अर्थ में ग्रीक काव्य और नाटक दोनों को शामिल किया गया है
अरस्तू के अन्य पुस्तक–हिस्ट्री ऑफ एनिमल्स, प्रोब्लेम्स, ऑन मेमोरी, ऑन स्लीप, मेटाफिजिक्स, आन दि यूनिवर्स आदि।
प्लेटो की पुस्तक का नाम 'रिपब्लिक' है।
अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त –प्लेटो के अनुकरण सिद्धान्त की प्रतिक्रिया है।
अरस्तू यूनानी दार्शनिक थे। यह प्लेटो के शिष्य थे।
लान्जाइनस–अंग्रेजी-ग्रीक परम्परा से काव्य में 'उदात्त तत्त्व' नामक कृति के रचनाकार माने जाते हैं।
लान्जाइनस-यूनानी काव्यालोचन के शिक्षक थे।

70. ऑन दि सब्लाइम (On the Sublime) ग्रन्थस्य प्रणेता वर्तते

(a) अरस्तु (b) क्रोश्चे
(c) प्लेटो (d) लान्जाइनस

उत्तर-(d)

'ऑन दि सब्लाइम' ग्रन्थ के प्रणेता 'लान्जाइनस' है।
लान्जाइनस महान समीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं।
परम्परागत रूप से काव्य में **''उदात्त तत्त्व''** (On the sublime) नामक कृति का रचनाकार माना जाता है।
प्लेटो ने अनुकरण को साहित्य का मूल तत्त्व माना, इनका अनुकरण अरस्तू ने भी किया और विवेचन को साहित्य का उद्देश्य स्वीकार किया है, इसी प्रकार लान्जाइनस का उदात्त सिद्धान्त है।
लान्जाइनस के ग्रन्थ का नाम-पेरिइप्सुस है।
इसका अर्थ है (उदात्त के विषय में) अंग्रेजी में इसका अर्थ सब्लाइम होता है।

71. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।' इत्यत्र 'अल्पविषया मतिः' इति कस्य कृते प्रयुक्तम्?

(a) विशाखदत्तस्य (b) भासस्य
(c) कालिदासस्य (d) बाणभट्टस्य

उत्तर-(c)

''क्व सूर्य प्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः'' मे 'अल्पविषया मतिः' कालिदास के लिए प्रयुक्त है।
कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्यम् के द्वितीय श्लोक से ही उद्धृत है।
''कालिदास की अन्य रचनाएं–मालविकाग्निमित्रम्, कुमारसम्भव, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, विक्रमोर्वशीयम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् है।
कालिदास की उपाधि दीपशिखा, रघुकार, कविकुलगुरु, कविताकामिनीविलास, उपमासम्राट्

पञ्चतन्त्र–विष्णुशर्मा	सूक्तिमुक्तावली-जल्हण
हितोपदेश-नारायण पण्डित	गाथासप्तशती-हाल
त्रिपुरडाह-वत्सराज,	प्रतिज्ञायौगन्धरायण-भास
अविमारक-भास	शारिपुत्रप्रकरण-अश्वघोष

72. 'यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते' इति केन उद्घोषितम्

(a) भवभूतिना (b) भासेन
(c) माघेन (d) भट्टनारायणेन

उत्तर-(a)

''यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते'' यह वाक्य भवभूति के लिए प्रयुक्त हुआ है।
यह पंक्ति उत्तररामचरितम में सूत्रधार भवभूति का परिचय देते हुए कहता है ''यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते।।
उत्तररामचरित भवभूतिकृत नाटक है। इसमें 7 अङ्क है।
यह नाटक करुण रस प्रधान है।
इसके सप्तम अङ्क में गर्भनाटक की योजना है।
यह विदूषक रहित नाटक है।
प्रथम अङ्क में चित्रवीथी की योजना है।
तृतीय अङ्क का नाम छायाङ्क है।
उत्तररामचरित में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
क्षेमेन्द्र ने भवभूति की प्रशंसा में उसे निर्गलततरङ्गिणी कहा है।

73. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत

तालिका-I	**तालिका-II**
(A) भारविः	(i) बुद्धचरितम्
(B) कालिदासः	(ii) रघुवंशम्
(C) अश्वघोषः	(iii) किरातार्जुनीयम्
(D) शूद्रकः	(iv) मृच्छकटिकम्

(a) (A)-(iii); (B)-(ii); (C)-(i); (D)-(iv)
(b) (A)-(ii); (B)-(i); (C)-(iv); (D)-(iii)
(c) (A)-(i); (B)-(ii); (C)-(iii); (D)-(iv)
(d) (A)-(iv); (B)-(iii); (D)-(ii); (D)-(i)

उत्तर-(a)

भारवि की रचना-किरातार्जुनीयम् (महाकाव्य) है।
भारवि का मूल नाम-दामोदर था। इनका जन्म नासिक प्रदेश के अचलपुर में हुआ था। इनके गोत्र का नाम कुशिक था।
भारवि अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं।
मल्लिनाथ ने किरातार्जुनीयम् पर ''घण्टापथ'' टीका लिखी है।
कालिदासकृत ''रघुवंश महाकव्य'' है। इसमें कुल 19 सर्ग है, शूद्रक कृत ''मृच्छकटिक'' नामक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें 10 अङ्क है।
प्रधान रस शृंगार है। इसका उपजीव्य काव्य-भासकृत दरिद्रचारुदत्त है।
अश्वघोष की रचना का नाम बुद्धचरित है।
संस्कृत वाङ्मय का पहला ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजयम्' है।
डॉ0 कीथ ने मेघदूत को ''शोकगीत' कहा था।
मेघदूतम् का जर्मन भाषा में अनुवाद मैक्समूलर ने किया।

74. मुद्राराक्षसस्य तृतीयाङ्कस्य नाम अस्ति

(a) मुद्राप्राप्तिः (b) भूषणविक्रयः
(c) प्रलोभनम् (d) कृतककलहः

उत्तर-(d)

मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क का नाम 'कृतककलहः' है।
मुद्राराक्षस-विशाखदत्त की प्रमुख कृति है। इसमें सात अङ्क है।
विशाखदत्त चन्द्रगुप्त II के समकालीन थे।
विशाखदत्त के पिता का नाम भास्करदत्त था।
सात अङ्क क्रमशः–

1. मुद्रालाभ	2. राक्षस विचार
3. कृतक-कलह	4. राक्षस उद्योग
5. राक्षस निकार	6. राक्षस निर्वेद
7. राक्षस निग्रह	

इसके नायक चाणक्य तथा प्रतिनायक राक्षस हैं।
यह नायिकाविहीन नाटक है। इसमें मुख्यरस वीर है।
इसका उपजीव्य विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण है।

75. त्रिविक्रमभट्टप्रणीतं चम्पूकाव्यमस्ति

(a) नलचम्पू (b) राजचम्पू

(c) रामायणचम्पू (d) जीवन्धरचम्पू

उत्तर-(a)

त्रिविक्रमभट्ट प्रणीत चम्पूकाव्य ''नलचम्पू'' है।
इनकी दो रचनाएं प्रसिद्ध हैं–नलचम्पू और मदालसाचम्पू त्रिविक्रमभट्ट श्लेष-प्रधान रचना के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी रचना में प्रसाद और माधुर्य गुण मिलते है। नलचम्पू सात उच्छ्वासों में विभक्त है, इसमें नल और दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है।

- अन्य चम्पूकाव्य–भारतचम्पू और भागवतचम्पू-अनन्तभट्ट
- जीवन्धरचम्पू-हरिश्चन्द्र
- रामायण चम्पू-राजाभोज
- यशस्तिलकचम्पू-सोमदेव सूरि
- भरतेश्वराभ्युदयचम्पू-आशाधर सूरि
- पुरुदेवचम्पू-अर्हदास

76. वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनि कोलाहलं शृण्वन्त्याः।
गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्गानि।।
काव्यप्रकाशानुसारम् उपर्युक्तमुदाहरणं कस्य?

(a) काकाक्षिप्तगुणीभुतव्यंग्यस्य

(b) असुन्दरगुणीभूतव्यंग्यस्य

(c) अस्फुटगुणीभूतव्यंग्यस्य

(d) सन्दिग्धप्राधान्यगुणीभूतव्यंग्यस्य

उत्तर-(b)

''वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनि' यह 'असुन्दरगुणीभूतव्यंग्य' का उदाहरण है।
काव्यप्रकाश आचार्य मम्मट द्वारा विरचित है।
'इदुमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्येवाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।
'अतादृशिगुणीभूत व्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।
इस गुणीभूत व्यङ्ग्य के आठ भेद है जिसमें आठवां भेद असुन्दर व्यङ्ग्य है और इसी का उदाहरण 'वानीरकुञ्ज.... है।
मम्मट के अनुसार काव्यलक्षण–'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनःक्वापि।
विश्वनाथ के अनुसार काव्यलक्षण–''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्''
काव्य प्रयोजन–''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

77. स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः।।
इत्यस्मिन् मंगलाचरणे ग्रन्थकारेण इष्टदेवस्य कस्य रसाभिव्यञ्जकस्वरूपस्य स्मरणं कृतम्

(a) शृंगाररसाभिव्यञ्जकस्य (b) वीररसाभिव्यञ्जकस्य

(c) शान्तरसाभिव्यञ्जकस्य (d) करुणरसाभिव्यञ्जकस्य

उत्तर-(b)

स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छ .... इस मंगलाचरण में ग्रन्थकार ने विघ्नों के नाश और उनपर विजय प्राप्ति के लिए वीररस के स्थायिभाव उत्साह की विशेष उपयोगिता की दृष्टि से ग्रन्थकार ने इष्टदेव के वीररसाभिव्यञ्जक स्वरूप का स्मरण किया।
इस मंगलाचरण में नृसिंह रुपी विष्णु की स्तुति हुई है।
यह आनन्दवर्धनकृत ''ध्वन्यालोक' का मङ्गलाचरण है।

- ध्वन्यालोक में ध्वनिकाव्य के विषय में वर्णन है। ''काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति'
- मम्मट के अनुसार काव्यलक्षण–तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनःक्वापि
- विश्वनाथ-वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
- वामन–रीतिरात्मा काव्यस्य
- दण्डी–शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्नापदावली।

78. कुन्तकानुसारम् अधस्तनेषु सुकुमारमार्गस्य प्रथमो गुणः वर्तते

(a) माधुर्यम् (b) सौन्दर्यम्

(c) स्वाभाविकम् (d) लावण्यम्

उत्तर-(a)

कुन्तकानुसार सुकुमारमार्ग का प्रथम गुण 'माधुर्य' है।
'माधुर्यं सुकुमारस्य मार्गस्य प्रथमो गुणः'।
कुन्तक की एकमात्र कृति 'वक्रोक्तिजीवितम् है।
वक्रोक्तिजीवित में चार उन्मेष हैं।
कुन्तक काव्य की वक्रता के छः भेद मानते हैं–

1. पदपूर्वार्द्ध वक्रता 2. वर्णविन्यासवक्रता
3. प्रत्ययाश्रितवक्रता 4. वाक्य वक्रता
5. प्रकरणवक्रता 6. प्रबन्धवक्रता

- प्रसाद गुण–'अक्लेश व्यञ्जिताकूटं झगित्यर्थसमर्पणम्। रसवक्रोक्तिविषयं यत्प्रसादः स कथ्यते।।
- लावण्य गुण–'वर्णविन्यासविच्छित्ति पदसंधान संपदा। स्वल्पया बन्धसौन्दर्यं लावण्यमभिधीयते।।

79. काव्यप्रकाशस्य कस्मिन्नुल्लासे व्यञ्जनायाः स्थापना अभवत्

(a) सप्तमोल्लासे (b) अष्टमोल्लासे

(c) पञ्चमोल्लासे (d) प्रथमोल्लासे

उत्तर-(c)

काव्यप्रकाश के पांचवे उल्लास में व्यञ्जना का निरुपण किया गया है। मम्मट द्वारा विरचित काव्यप्रकाश एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। इसमें दस उल्लास है।

- प्रथमोल्लास में प्रयोजन, हेतु, काव्यलक्षण, काव्यभेद आदि का निरूपण है।
- द्वितीय उल्लास में शब्द और अर्थ के क्रमशः तीन-तीन भेद हैं।
- तृतीयोल्लास में आर्थी व्यञ्जना के भेद का वर्णन है।
- चतुर्थ उल्लास में रसनिरूपण है।

- पञ्चमोल्लास में गुणीभूत व्यङ्ग्यम् के आठ भेद, व्यञ्जना की अनिवार्यता, आदि का वर्णन है।
- षष्ठ उल्लास में शब्दार्थ चित्र का निरूपण है।
- नवम उल्लास में शब्दालङ्कार का विवेचन है।
- दशमोल्लास में अर्थालंकार का वर्णन है।
- मम्मट के अनुसार 6 काव्यप्रयोजन है।
- काव्यलक्षण–तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनःक्वापि।

80. विश्वनाथकविराजेन प्रतिपादितं काव्यस्वरूपं किम्?

(a) रीतिरात्मा काव्यस्य
(b) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(c) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दो काव्यम्
(d) काव्यस्यात्मा ध्वनिः

उत्तर-(b)

आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण में काव्य का लक्षण 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' है।
साहित्यदर्पण में 10 परिच्छेद है।
आचार्य विश्वनाथ के अनुसार रस ही काव्य की आत्मा है।
''रस्यते इति रस'' अर्थात् जो आस्वादित किया जाता है वही रस होता है।
साहित्यदर्पणकार वाक्य का स्वरूप बतलाते हुए कहते हैं–
''वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः''
योग्यता, आकांक्षा तथा आसक्ति से युक्त पदसमवाय को वाक्य कहा जाता है।
शब्द की तीन शक्तियां–अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना है।

- लोल्लट का उत्पत्तिवाद सिद्धान्त–रस अनुकार्य है।
- शङ्कुक का अनुमितिवाद सिद्धान्त–चित्रतुरगन्याय
- भट्टनायक का भुक्तिवाद सिद्धान्त–भावकत्व और भोजकत्व
- अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद सिद्धान्त

काव्यप्रकाशकार के अनुसार काव्य लक्षण–तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृतीपुनः क्वापि

- ध्वन्यालोक के अनुसार ''काव्यस्यात्मा ध्वनिः''
- वामन के अनुसार–'रीतिरात्मा काव्यस्य'
- भामह के अनुसार–'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'
- पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार-'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'
- वक्रोक्तिकार के अनुसार–'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्।'

81. अधस्तनेषु वाल्मीकि रामायणस्य काण्डानां समुचितक्रमोऽस्ति

(a) बाल-अयोध्या-सुन्दर-अरण्य-किष्किन्धा-युद्ध-उत्तराणि
(b) बाल-अयोध्या-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(c) अयोध्या-बाल-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(d) बाल-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि

उत्तर-(d)

रामायण के सातों काण्डों का नाम क्रमशः बालकाण्ड-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड है।
रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमें 24000 श्लोक हैं। इसलिए इसे ''चतुर्विंशति-साहस्री संहिता'' भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् श्लोकों में वर्णित है।
महर्षि वाल्मीकि को ब्रह्मा ने ''आद्यः कविरसि'' कहकर सम्बोधित किया था। रामायण की शैली वैदर्भी है।
रस परिपाक के कारण वाल्मीकि को रससिद्ध कवीश्वर कहा जाता है।
तमसा नदी के तट पर व्याध द्वारा हत नर क्रौंच पक्षी को देखकर उनके मुख से निम्न श्लोक निकला–
''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।''

82. अधस्तनयुग्मानां वाल्मीकिरामायणस्योपजीविग्रन्थेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितां तालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(A) रामायणमञ्जरी	(i) विलोमकाव्यम्
(B) यादवराघवीयम्	(ii) चित्रकाव्यम्
(C) अनर्घराघवम्	(iii) महाकाव्यम्
(D) रामलीलामृतम्	(iv) नाटकम्

(a) (A)-(iii); (B)-(i); (C)-(iv); (D)-(ii)
(b) (A)-(iii); (B)-(iv); (C)-(i); (D)-(ii)
(c) (A)-(ii); (B)-(iv); (C)-(iii); (D)-(i)
(d) (A)-(iv); (B)-(ii); (C)-(i); (D)-(iii)

उत्तर-(a)

रामायणमञ्जरी-महाकाव्यम्
यादवराघवीयम्-विलोमकाव्यम्
अनर्घराघवम्-नाटवम्
रामलीलामृतम्-चित्रकाव्यम् है।
रामायणमञ्जरी रामायण पर प्रमुख काव्य ग्रन्थ है इसके कर्त्ता क्षेमेन्द्र हैं।
मुरारिकृत अनर्घराघव-रामायण पर आश्रित नाटक है। इसमें 7 अङ्क है।
यादवराघवीयम् वेंकटाध्वरी द्वारा विरचित है। इसमें विलोमपद्धति से राम और कृष्ण दोनों का एकत्र वर्णन किया गया है।
रामलीलामृतम्–यह चित्रकाव्य है।
रामायण पर आश्रित अन्य काव्य ग्रन्थ–रघुवंश महाकाव्य,
प्रवरसेन कृत सेतुबन्ध, कुमारदास कृत जानकीहरण, भट्टिकृत रावणवध
चम्पूग्रन्थों में भोजकृत रामायणचम्पू, वेंकटाध्वरिकृत उत्तरचम्पू

83. महाभारतोपजीविकाव्यं नास्ति

(a) बृहत्कथामंजरी (b) शिशुपालवधम्
(c) मध्यमव्यायोगः (d) भारतमंजरी

उत्तर-(a)

शिशुपालवध, मध्यमव्यायोग तथा भारतमञ्जरी महाभारत पर आश्रित है। जबकि बृहत्कथामञ्जरी महाभारत पर आश्रित नहीं है।
महाभारत के रचयिता वेदव्यास (कृष्णद्वैपायन) हैं। यह 18 पर्वों में विभक्त है।
गीता का उपदेश छठें पर्व (भीष्मपर्व) में है।
मूलरूप में महाभारत का नाम 'जयकाव्य' था
महाभारत में एक लाख श्लोक है।
महाभारत की शैली पाञ्चाली है।
महाभारत में प्रमुख छन्द अनुष्टुप् है। वीर रस अङ्गीरस है।
महाभारत पर आश्रित अन्य प्रमुख ग्रन्थ—
भारविकृत किरातार्जुनीयम्, श्रीहर्षकृत नैषधीयचरित, भासकृत-दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार, पंचरात्र, उरुभंग अभिज्ञानशाकुन्तलम् त्रिविक्रमभट्ट कृत-नलचम्पू, अनन्तभट्टकृत-भारतचम्पू

84. अधस्तनानां महाभारतीयपर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति

(a) शान्तपर्व,स्त्रीपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(b) स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(c) अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, आश्वमेधिकपर्व, शान्तिपर्व
(d) आर्श्वमेधिकपर्व, अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व

उत्तर-(b)

महाभारत के पर्वों का क्रम क्रमशः—(1) आदिपर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराट् (5) उद्योग (6) भीष्म (7) द्रोण (8) कर्ण (9) शल्य (10) सौप्तिक (11) स्त्री (12) शान्तिपर्व (13) अनुशासनपर्व (14) आश्वमेधिक पर्व(15) आश्रमवासिक (16) मौसल (17) महाप्रस्थानिक(18) स्वर्गारोहण।
महाभारत के रचयिता वेदव्यास हैं। इसमें 1 लाख श्लोक है इसको शतसाहस्त्री संहिता के नाम से भी जाना जाता है। अर्जुन को गीता का उपदेश भीष्म पर्व में है। इसी पर्व में युद्ध का प्रारम्भ होता है तथा भीष्म का आहत होकर शैय्या पर पड़ना भी इसी पर्व में है। युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्षसम्बन्धी प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर शान्तिपर्व में हैं।

85. पुराणसन्दर्भे सप्तद्वीपेषु गणना नास्ति

(a) कुशद्वीपः (b) प्लक्षद्वीपः
(c) शाकद्वीपः (d) आम्रद्वीपः

उत्तर-(d)

पुराण के सन्दर्भ में सप्तद्वीपों में आम्रद्वीप की गणना नहीं होती है। सात द्वीप क्रमशः—जम्बूद्वीप-प्लक्षद्वीप-शाल्मलिद्वीप-कुशद्वीप-क्रौञ्चद्वीप-शाकद्वीप-पुष्करद्वीप है।
प्रत्येक द्वीप में सात नदियां और सात पर्वत होते हैं।
विष्णु पुराण के अनुसार पुराण का लक्षण—
''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।
पुराण तथा उपपुराण दोनों की संख्या (18) है।
विष्णु पुराण के रचयिता पराशर है।
भागवत पुराण में 12 स्कन्ध तथा 18 हजार श्लोक हैं।
अग्निपुराण में समस्त विद्याओं का संकलन होने के कारण विश्वकोश कहा जाता है।
मत्स्य पुराण में आन्ध्र राजाओं की वंशावली दी गयी है।
ब्रह्म पुराण को आदिपुराण भी कहते हैं, इसमें उड़ीसा के तीर्थों का माहात्म्य वर्णित हैं।

86. अधस्तनेषु पुराणस्य पञ्चलक्षणेषु नास्ति

(a) वंशः (b) मन्वन्तराणि
(c) संसर्गः (d) प्रतिसर्गः

उत्तर-(c) संसर्गः

पुराण के पञ्चलक्षणों में संसर्ग नहीं समाहित है।
पुराण का लक्षण—''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।''

- सर्ग अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन
- प्रतिसर्ग-प्रलय एवं सृष्टि का पुनः प्रादुर्भाव
- वंश-देवों और ऋषियों की वंशावली
- मन्वन्तर-प्रत्येक मनु का काल और उस समय की घटनाएं,
- वंशानुचरित-सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओं का जीवन-चरित।
- यह पांच लक्षण विष्णुपुराण में परिलक्षित होता है।
- पुराण तथा उपपुराण दोनों की संख्या 18 है।
- कूर्मपुराण में दो गीता पायी जाती है—ईश्वरगीता और व्यासगीता वायुपुराण को शिवपुराण भी कहा जाता है।

87. मनुस्मृतिः कति अध्यायेषु विभक्तोऽस्ति?

(a) दशाध्यायेषु (b) एकादशाध्ययेषु
(c) त्रयोदशाध्यायेषु (d) द्वादशाध्यायेषु

उत्तर-(d)

मनुस्मृति में 12 अध्याय तथा 2694 श्लोक है।
मनुस्मृति को मानवधर्मशास्त्र, मनुसंहिता आदि के नाम से भी जाना जाता है।
मनुस्मृति हिन्दू धर्म का एक प्राचीन धर्मशास्त्र ग्रन्थ है।
इसमें चारों पुरुषार्थों का विशद् वर्णन किया गया है।
मनुस्मृति की सबसे प्राचीन टीका मेधातिथि की है जिसका समय 900 ई0 है।
मनुस्मृति में चारों आश्रमों, वर्णों, सोलह संस्कार आदि का वर्णन है।

मनुस्मृति की टीकाएं—कुल्लूकभट्टकृत मन्वर्थमुक्तावली टीका
– नारायणकृत मन्वर्थविवृत्ति टीका
– नन्दनकृत नन्दिनी टीका
– राघवानन्दकृत मन्वर्थचन्द्रिका टीका
''अङ्गुमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थे प्रचक्षते।
कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः।
अर्थात् अंगूठे के मूल में ब्रह्मतीर्थ, कनिष्ठिका के मूल में प्रजापति तीर्थ, अंगुलियों के अग्रभाग में दैव तीर्थ तथा अंगूठे और प्रदेशिनी के मध्य में पितृतीर्थ कहा जाता है।

88. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायः कतमोऽस्ति

(a) प्रथमः (b) द्वितीयः
(c) तृतीयः (d) चतुर्थः

उत्तर-(b)

याज्ञवल्क्य स्मृति के द्वितीय अध्याय का नाम 'व्यवहाराध्याय' है।
व्यवहाराध्याय में 25 प्रकरण है।
याज्ञवल्क्यस्मृति तीन अध्यायों में विभक्त है–
1. आचाराध्याय 2. व्यवहाराध्याय 3. प्रायश्चित्ताध्याय
आचाराध्याय में 14 विद्याएं, धर्मोपादान, आचार के दश सिद्धान्त आदि तेरह प्रकरण हैं।
प्रायश्चित्ताध्याय में आपद्धर्म, यतिधर्म, प्रायश्चित्त आदि छः प्रकरण है।
याज्ञवल्क्य स्मृति की प्रमुख टीकाएं–
विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा टीका
विश्वरूप की बालक्रीडा नामक की टीका
शूलपाणि की दीपकलिका नामक टीका
तीनों अध्यायों में व्यवहाराध्याय ही महत्त्वपूर्ण होने के कारण पाठ्यक्रम में समाहित है।

89. कौटिलीय-अर्थशास्त्रं कति अधिकरणेषु विभक्तमस्ति?

(a) अष्टादशाधिकरणेषु (b) द्वादशाधिकरणेषु
(c) दशाधिकरणेषु (d) पञ्चदशाधिकरणेषु

उत्तर-(d)

कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण है।
(1) विनयाधिकारिक (2) अध्यक्ष (3) धर्मस्थानीय (4) कण्टकशोधन (5) योगवृत्त (6) मण्डलयोनि (7) षाड्गुण्य (8) व्यसनाधिकारिकम् (9) अभियास्यत्कर्म (10) साङ्ग्रामिक (11) संघवृत्तम् (12) आबलीयसं (13) दुर्गलम्भोपायः (14) औपनिषदं (15) तन्त्रयुक्ति का निरुपण

- दूत के तीन प्रकार–निसृष्टार्थ-परिमितार्थ-शासनहर
- दुर्ग के चार प्रकार–औदक, पार्वत, धान्वन, वन दुर्ग
- गुप्तचर–कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस
- कोशक्षय के आठ प्रकार हैं।

कौटिल्यानुसार विवाह के आठ प्रकार होते हैं
लेखक की छः योग्यताएं–1. अर्थक्रम 2. सम्बन्ध 3. परिपूर्णता 4. माधुर्य 5. औदार्य 6. स्पष्टता
उपाय के चार भेद–सामदामदण्डभेदश्च।

90. अशोकस्य शाहबाजगढीलेखः कस्यां लिप्यां प्राप्यते

(a) ब्राह्मी (b) खरोष्ठी
(c) शारदा (d) पुष्करी

उत्तर-(b)

अशोक का शाहबाजगढ़ी लेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।
अशोक के शिलालेख ब्राह्मी, खरोष्ठी और अरामाइक लिपि में है।
स्तम्भलेख और गुहालेख में ब्राह्मी लिपि प्रयुक्त है।
शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा अभिलेख खरोष्ठी लिपि में है।
लघमान और तक्षशिला अभिलेख अरामाइक लिपि में है।
कान्धार का अभिलेख द्विभाषिक लिपि में है।
इनके अभिलेखों की भाषा प्राकृत थी, क्योंकि उस समय यह जनसामान्य की सामान्य बोलचाल की भाषा थी। शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा की स्थिति पाकिस्तान में थी, कालसी-देहरादून, सोपारा-महाराष्ट्र में, एर्रगुडि आन्ध्र प्रदेश के कर्नूल जिला में स्थित था।

91. 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्' पंक्तिरियं कस्याः विद्यायाः सन्दर्भेऽस्ति

(a) त्रय्याः (b) आन्वीक्षिक्याः
(c) वार्तायाः (d) दण्डनीतेः

उत्तर-(b)

''प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः 'सर्वकर्मणाम्'' यह आन्वीक्षिकी का लक्षण है।

''प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता।।

त्रयी– ''सामऋग्यजुर्वेदास्त्रयस्त्रयी'' (साम, यजु तथा ऋक् इन तीनों वेदों का नाम ही त्रयी है।)
वार्ता– 'कृषि पशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता' (कृषि, पशुपालन और व्यापार में वार्ता-विद्या के विषय है।
दण्डनीति–''आन्वीक्षिकी त्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः तस्य नीतिर्दण्डनीतिः।
(आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता इन विद्याओं की सुख-समृद्धि आदि दण्ड पर ही आधारित है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती हैं।

92. 'कौटिल्यमते कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या' इति विषयाः सन्ति

(a) त्रय्याः (b) दण्डनीतेः
(c) वार्तायाः (d) अन्वीक्षक्याः

उत्तर-(c)

''कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता'' यह वार्ता का लक्षण है।
आन्वीक्षिकी का लक्षण–प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता।।''
त्रयी का लक्षण–'सामऋग्यजुर्वेदस्त्रयस्त्रयी'

दण्डनीति का लक्षण–''आन्वीक्षिकी त्रयी वार्तानां योगक्षेम साधनों दण्ड:तस्य नीतिर्दण्डनीति:
आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति ये चार प्रकार की विद्याएं होती हैं,
कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में दुर्ग के पांच भेद बतलाए हैं–
कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस
निसृष्टार्थ, परिमितार्थ-शासनहर-यह तीन प्रकार के दूत हैं।
साम-दाम-दण्ड-भेद : चार प्रकार के उपाय है।
अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण हैं।

93. मनुमते अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चाऽस्ति?

(a) अविद्या (b) अतिभोजनम्
(c) उच्छिष्टभोजनम् (d) अवशिष्टभोजनम्

उत्तर-(b)

मनुस्मृति के अनुसार–''अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं'' का कारण अति भोजन है।

''अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।
अपुण्यं लोक विद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्।।

अर्थात् अधिक भोजन करना, आरोग्य, आयु, स्वर्ग और पुण्य का नाशक और निन्दित है, इसलिए शीघ्रातिशीघ्र इसका त्याग कर देना चाहिए।

'अगुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्षते।।
कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरध:।।

अंगूठे के मूल में ब्रह्म तीर्थ, कनिष्ठिका के मूल में प्रजापति तीर्थ अंगुलियों के अग्रभाग में दैवतीर्थ तथा अंगूठे तथा प्रदेशिनी के मध्य में पित्र्य तीर्थ बतलाया गया है।

94. मनुस्मृत्यनुसारं कति पाकयज्ञा:

(a) चत्वार: (b) पञ्च
(c) षट् (d) दश

उत्तर-(a)

मनुस्मृति के अनुसार चार पाकयज्ञ है।
1. वैश्वदेव 2. होम 3. बलि कर्म नित्यश्राद्ध 4. अतिथि भोजन
मनुस्मृति के अनुसार ग्यारह इन्द्रियां हैं।

- कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नाक, गुदा, लिंग, हाथ, पैर, वाणी और मन
- दुष्ट मनुष्य को वेद, दान, यज्ञ, नियम और तप ये सभी सिद्धियां नहीं प्राप्त होती हैं।
- धन-बन्धु-आयु-कर्म और विद्या मान्यता के स्थान हैं।
- जो ब्राह्मण शिष्य का यज्ञोपवीत कर उसे यज्ञविद्या और उपनिषद् युक्त वेद पढ़ाता है उसे आचार्य कहते हैं।
- जो ब्राह्मण वेद के एक भाग अथवा वेदांगों को जीविका के लिए पढ़ाता है वह उपाध्याय कहलाता है।
- जो ब्राह्मण किसी के गर्भाधान आदि कर्मों को विधिपूर्वक करता है और अन्न से पालन करता है, वह ब्राह्मण गुरु कहलाता है।

95. 'विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।' इति कस्य ग्रन्थस्य वचनमस्ति

(a) मनुस्मृत्या: (b) याज्ञवल्क्यस्मृत्या:
(c) पाराशरस्मृत्या: (d) नारदस्मृत्या:

उत्तर-(b)

''विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्'' यह पंक्ति याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय से उद्धृत है।
दायविभाग के विषय में याज्ञवल्क्य बतलाते है कि ''यदि पिता सम्पत्ति को बांट रहे हों तो अपनी इच्छानुसार ही वितरित करें– ज्येष्ठपुत्र को श्रेष्ठभाग, मझले को मध्यम और जो सबसे छोटा हो उसे छोटा भाग देकर सभी को बराबर हिस्सा दें।
पिता द्वारा किया गया विभाजन धर्मानुसार रहेगा तो वह अपरिवर्तनीय रहेगा।
माता-पिता के मृत्योपरान्त सभी पुत्र पिता की सम्पत्ति और ऋणों को समान रूप से विभाजित कर लें।
माता का धन माता का ऋण चुकाने के बाद पुत्रियां बांट लें।
यदि पुत्रियां न हो तब पुत्र ले ले।
धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र औरस कहलाता है।
निम्न जाति के पुरुष से प्रच्छन्न रूप से उत्पन्न पुरुष गूढ़ज माना जाता है।
कन्यावस्था में अविवाहित होने पर पितृगृह में जो पुत्र होता है वह कानीन होता है।

96. 'नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानां। ऐरेण महाराजेन....।' इति वाक्यं कस्मिन्नभिलेखे प्राप्यते?

(a) इलाहाबाद-लेखे (b) ऐहोल-शिलालेखे
(c) गिरनार-लेखे (d) हाथीगुम्फा-लेखे

उत्तर-(d)

''नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानां ऐरेण महाराजेन' यह वाक्य हाथीगुम्फा अभिलेख में प्राप्त होता हैं।
यह अभिलेख खारवेल के जीवन की क्रमिक घटनाओं को उत्कीर्ण किया है। यह भुवनेश्वर के समीप उदयगिरि पहाड़ी के पास स्थित है।
इसको पढ़ने का श्रेय जेंम्स प्रिंसेप और कनिंघम को जाता है।
ऐहोल अभिलेख पुलकेशिन II से सम्बन्धित है। इसकी लिपि ब्राह्मी तथा भाषा संस्कृत है।
इलाहाबाद लेख–इसको समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के नाम से भी अभिहित किया जाता है। यह कौशाम्बी से इलाहाबाद लाया गया।
समुद्रगुप्त के जीवन की प्रमुख घटनाओं और उपलब्धियों का इस पर अङ्कन है।
गिरनार अभिलेख–रुद्रदामन से सम्बन्धित है।

97. अधस्तनानां केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(A) रुद्रदाम्नः	(i) हाथीगुम्फा
(B) खारवेलस्य	(ii) मन्दसौरः
(C) यशोधर्मणः	(iii) ऐहोलः
(D) पुलकेशिनः	(iv) गिरनारः

(a) (A)-(iv); (B)-(i); (C)-(ii); (D)-(iii)
(b) (A)-(i); (B)-(ii); (C)-(iii); (D)-(iv)
(c) (A)-(iv); (B)-(iii); (C)-(ii); (D)-(i)
(d) (A)-(iii); (B)-(i); (C)-(iv); (D)-(ii)

उत्तर-(a)

रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख पश्चिमी क्षत्रप नरेश रुद्रदामन द्वारा लिखवाया गया है।
यह अभिलेख संस्कृत गद्य का स्वरूप प्रकट करता है।
ऐहोल अभिलेख पुलकेशिन II का है। यह स्थान कर्नाटक के बागलकोट जिले में है। इसकी भाषा संस्कृत है।
हाथीगुम्फा अभिलेख खारवेल का है। उड़ीसा के उदयगिरि नामक पहाड़ी की गुफा से यह शिलालेख प्राप्त हुआ। इस लेख की भाषा प्राकृत है।
यशोधर्मन का मन्दसौर अभिलेख है। इसके दो अभिलेख प्राप्त होते हैं; इसने उत्तर भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उपलक्ष्य में यह विजय स्तम्भ स्थापित किया।
गिरनार अभिलेख रुद्रदामन का था।
उदयगिरि अभिलेख चन्द्रगुप्त II का था।
महास्थान अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य का था।

98. सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखस्य भाषाऽस्ति

(a) संस्कृतम् (b) प्राकृतम् (c) पालिः (d) अपभ्रंशः

उत्तर-(b)

सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख की भाषा प्राकृत थी।
ज्ञानप्राप्ति के पश्चात् भगवान् बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं दिया था।
इसे ही धर्मचक्रप्रवर्तन का नाम दिया गया है।
सारनाथ उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिला में स्थित है।
इसकी भाषा प्राकृत है तथा लिपि ब्राह्मी है।
सारनाथ बौद्धप्रतिमाभिलेख कनिष्क प्रथम के काल का है।
रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख संस्कृत में है।
पुलकेशिन II का ऐहोल अभिलेख संस्कृत में है।
समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख भी संस्कृत में है।
रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख प्राकृत में है। तथा इसकी लिपि ब्राह्मी है।
हाथीगुम्फा अभिलेख की भाषा प्राकृत है।
अशोक का शाहबाजगढी अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।

99. यशोधर्मणः मन्दसौर-स्तम्भलेखस्य लिपिरस्ति

(a) देवनागरी (b) ब्राह्मी
(c) खरोष्ठी (d) शारदा

उत्तर-(b)

यशोधर्मन के मन्दसौर स्तम्भलेख की लिपि ब्राह्मी है।
यह मध्यप्रदेश के मन्दसौर में स्थित है।
यह शिलालेख संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में है।
यह लेख ॐ से प्रारम्भ होता है।
यशोधर्मन् छठी शताब्दी के आस-पास मालवा के राजा थे।
अभिलेखों में इनको **'औलिकर वंश'** का बतलाया गया है।
रुम्मिनदेई स्तम्भ लेख की लिपि भी ब्राह्मी है।
अशोक के पश्चिमी क्षेत्रों के शिलालेखों में खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया है।
शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में है।
लघमान और तक्षशिला अभिलेख अरामाइक लिपि में हैं।
कन्धार का अभिलेख द्विभाषिक लिपि में हैं।
ऐहोल अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है।
अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा।

100. अशोकस्य शाहबाजगढ़ी-अभिलेखः कुत्र प्राप्यते

(a) जूनागढ़-गुजरातप्रान्ते (b) पेशावर-पाकिस्तानदेशे
(c) गुजर्रा-मध्यप्रदेशे (d) भाबू-राजस्थानप्रदेशे

उत्तर-(b)

अशोक का शाहबाजगढ़ी अभिलेख पाकिस्तान के पेशावर जिला से प्राप्त हुआ है।

तीसरी शताब्दी ई0 काल के मौर्य राजवंश के सम्राट अशोक के विषय में जानने का अभिलेख है। यह खरोष्ठी लिपि में है। इस अभिलेख में अशोक ने समाज और जीव हिंसा का निषेध किया है। आठवें शिलालेख के शाहबाजगढ़ी, कालसी, मानसेहरा के पाठ से ''देवानांप्रियः'' और गिरनार पाठ में ''राजानो' समान भाव से प्रयुक्त हुआ है।

शाहबाजगढ़ी के अतिरिक्त अशोक के अन्य शिलालेख–

मानसेहरा-पाकिस्तान	सोपारा-महाराष्ट्र
कालसी-देहरादून	धौली-उड़ीसा
गिरनार-गुजरात	जूगढ़-उड़ीसा

लघु शिलालेख-अफगानिस्तान और कंधार के निकट से प्राप्त हुआ है।
स्तम्भ लेख-दिल्ली, इलाहाबाद (प्रयागराज), लौरिया-नन्दनगढ़ और रामपुरवा से मिले हैं।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2018
संस्कृत
व्याख्यात्मक हल सहित

1. शांखायन - शाखायाःसम्बन्धः वर्तते-

(a) अथर्ववेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर–(b)

शांखायन शाखा का सम्बन्ध ऋग्वेद से है।
भारतीय वाङ्मय में चार वेद हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

- ऋग्वेद की शाखाएं- शाकल, बाष्कल, शांखायन, आश्वलायन, माण्डूकायन।
- यजुर्वेद की शाखाएं- (शुक्ल यजुर्वेद) - माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व शाखा।
- कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएं- तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल
- सामवेद की शाखाएं - कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय
- अथर्ववेद की शाखाएं - पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पातञ्जलमहाभाष्य में भी अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख है-''नवधाऽऽथर्वणो वेदः''
- ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं, मौलिक अंश में 2 से 7 मण्डल ही आते हैं। नवम मण्डल की अपनी विशेषता है, इसमें पवमान सोम से सम्बद्ध सभी मन्त्रों का संकलन है।

2. 'द्राह्यायणश्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य विद्यते?

(a) अथर्ववेदस्य (b) कृष्णयजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) सामवेदस्य

उत्तर–(d)

द्राह्यायाण श्रौतसूत्र का सम्बन्ध 'सामवेद' से है।
जिन ग्रन्थों में यज्ञ सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

कल्पसूत्रों के चार भेद हैं- (1) श्रौतसूत्र, (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र

ऋग्वेदीय श्रौतसूत्र - आश्वलायन, शांखायन

ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र - आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि

- शुक्ल यजुर्वेदीय श्रौतसूत्र - कात्यायन
- शुक्ल यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र - पारस्कर
- शुक्ल यजुर्वेदीय शुल्बसूत्र - बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशि, वाराह।
- कृष्ण यजुर्वेदीय श्रौतसूत्र - बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ़, वाराह, वैखानस।
- कृष्ण यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र - बौधायन, मानव,भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानश, चारायणीय, बैजवाप।
- कृष्ण यजुर्वेद का शुल्बसूत्र - बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशि, वाराह।
- सामवेद का श्रौतसूत्र - आर्षेय या मशक्, क्षुद्र, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, श्रौतसूत्र, निदान, उपनिदान।
- सामवेद का गृह्यसूत्र - गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय,
- अथर्ववेद का श्रौतसूत्र - वैतानश्रौतसूत्र
- अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र - कौशिक गृह्यसूत्र

3. 'एतद्वचो जरितर्मापिमृष्ठा आयत्तेघोषानुत्तरा युगानि' इति मन्त्रांशो वर्तते-

(a) पुरूरवा - उर्वशीसूक्ते
(b) सरमा - पणिसूक्ते
(c) विश्वामित्र - नदीसूक्ते
(d) यम-यमीसूक्ते

उत्तर–(c)

''एतद्वचो जरितर्मापिमृष्ठा आयत्तेघोषानुत्तरा युगानि'' यह मन्त्रांश विश्वामित्र - नदीसूक्त से उद्धृत है।
यह संवाद सूक्त ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 33वां सूक्त है। इसके ऋषि विश्वामित्र तथा देवता नदी हैं। इसमें विपाशा और शुतुद्री नदियों का भी वर्णन आया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

पुरुरवा - उर्वशी संवाद सूक्त में राजा पुरुरवा और उर्वशी नामक अप्सरा के प्रणय- सम्बन्ध का वर्णन है।
''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति, सालावृकाणां हृदयान्येता।
– यम-यमी संवाद सूक्त में यमी -यम से सृष्टि के लिए प्रणय-याचना करती है, यम इसे अनैतिक और अनुचित बताकर इस प्रार्थना को अस्वीकार कर देता है- ''पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्''।
– सरमा-पणि संवाद सूक्त में पणि इन्द्र की गायों को चुरा लिया था। इन्द्र दूत के रूप में सरमा (देवशुनी कुतिया) को भेजते हैं। सरमा गायों का पता लगा लेती है।
''बृहस्पतिर्या अविन्दन् निगूढ़ाः
सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः।
इन्द्र मरुत् संवाद सूक्त - ऋग्वेद - 1.165

4. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-

(a) 'यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य' - इन्द्रदेवता।

(b) 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवम् - विष्णुसूक्तम् ।

(c) 'विश्वं प्रतीची सप्रथः उदस्थात् ' - सवितृसूक्तम् ।

(d) 'अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्' - रुद्रदेवता।

उत्तर–(a)

''यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।'' यह मन्त्र इन्द्र सूक्त का छठां मन्त्र है।
– ''राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्'' - यह अग्निसूक्त का आठवां मन्त्र है।
''विश्वं प्रतीची सप्रथः उदस्थात्''– यह ऋग्वेद के सप्तम मण्डल से उद्धृत है
''अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्'' – यह वाक्सूक्त का सातवां मन्त्र है, इस प्रकार उपर्युक्त विकल्पों में पहला ही सुमेलित है

5. 'यो वाघते ददाति सूनरं वसु' - अत्र 'वाघते' पदस्य कोऽर्थः-

(a) यज्ञकर्त्रे (b) राज्ञे

(c) बाधकाय (d) सूर्याय

उत्तर–(a)

यो वाघते ददाति सूनरं वसु- यहाँ वाघते से तात्पर्य यज्ञकर्त्रे (ऋत्विज्) से है। यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का चालीसवां सूक्त है, यह बृहस्पति देवता की प्रशंसा में कण्व ऋषि ने कहा है। अतः विकल्प (a) सही है।

6. नामाख्याताभ्यां वियुक्ता अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति कः मन्यते-

(a) वार्ष्यायणिः (b) शाकटायनः

(c) गार्ग्यः (d) कौत्सः

उत्तर–(c)

''नामाख्याताभ्यां वियुक्ता अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति'' यह मन्तव्य गार्ग्य का है। गार्ग्य का मानना है कि उपसर्ग भी नाम और आख्यात के समान 'पद' हैं तथा उनके भी अपने - अपने विविध अर्थ होते हैं, द्योतक नहीं और दूसरी बात यह है कि उपसर्ग नाम और आख्यात पदों के ही अर्थों में विकार उत्पन्न कर देते हैं। नाम और आख्यात पदों में उपसर्गों के संयोग और वियोग से जो परिवर्तन होता है उसे अन्वय-व्यतिरेक के नियमानुसार उपसर्गों का ही अर्थ मानना चाहिए।

7. वेदेष्वेव प्रयुज्यते प्रत्ययः -

(a) अध्यै (b) तुमुन्

(c) क्त्वा (d) क्त

उत्तर–(a)

अध्यै प्रत्यय का प्रयोग वेदों में किया जाता है। वैदिक भाषा में प्रत्ययों की विविधता परिलक्षित होती है।
तुमुन् प्रत्ययार्थ इस प्रत्यय से इतर- से, सेन, असेन्, क्से, क्सेन्, अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, शध्यैन्, तवै, तवैङ्, त्वेन् आदि 15 प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। 'अध्यै' प्रत्यय का प्रयोग आचरण करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

8. 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' - इत्यत्र 'यस्मात्' पदेन कः गृह्यते-

(a) विष्णुः (b) रुद्रः

(c) इन्द्रः (d) वरुणः

उत्तर–(c)

यस्मान्न ऋते विजयन्ते यहां ''यस्मात्'' पद से तात्पर्य ''इन्द्र'' से है,
इस सूक्त को भगवान इन्द्र की स्तुति करते हुए गृत्समद ऋषि ने उच्चारित किया कि इन्द्र के बिना मनुष्य विजय को प्राप्त नहीं कर सकता, युद्ध के दौरान अपने रक्षणार्थ सैनिक जिसका आह्वान करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत् का अगुवा है और क्षयरहित पर्वतों का विनाश करने वाला है वह और कोई नहीं इन्द्र देवता है।

9. ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले - 'विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्' विद्यते-

(a) द्वितीये (b) दशमे

(c) तृतीये (d) अष्टमे

उत्तर–(c)

''विश्वामित्र-नदी संवादसूक्त '' ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में उद्धृत है।
यह संवाद सूक्त तृतीय मण्डल के 33वें सूक्त के रूप में है।
अन्य प्रमुख संवाद सूक्त - पुरुरवा- उर्वशी संवाद (ऋग्वेद - 10.95)
यम -यमी संवाद - 10.10, सरमा-पणि संवाद- 10.108

10. परिशिष्टभागमतिरिच्य निरुक्ते कति अध्यायाः सन्ति-

(a) सप्त (b) द्वादश

(c) पञ्च (d) चतर्दुश

उत्तर–(b)

यास्ककृत निरुक्त में द्वादश अध्याय हैं। अन्त के दो अध्याय निरुक्त के परिशिष्ट के रूप में माने जाते हैं। कुल 14 अध्यायों में यह विभक्त है।
प्रथम अध्याय में पदों के चार प्रकारों के लक्षण और उदाहरण, शब्दनित्यता, षड्भावविकार, उपसर्गों का विवेचन, सभी नाम धातुज, मंत्रों की सार्थकता आदि का प्रतिपादन है,
द्वितीय और तृतीय अध्याय में निर्वचन और वर्णपरिवर्तन का वर्णन है, इसको नैघण्टुक काण्ड के नाम से भी जाना जाता है।
– अध्याय 4 से 6 तक नैगम काण्ड कहलाता है।
– अध्याय 7 से 12 तक दैवत काण्ड कहलाता है।
– अध्याय 13 और 14 परिशिष्ट के रूप में है।

11. 'प्रचोदयात्' इति कस्मिन् लकारे रुपमस्ति-

(a) लिङ् (b) लोट्

(c) लृट् (d) लेट्

उत्तर–(d)

प्रचोदयात् में लेट् लकार का प्रयोग हुआ है।
ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 62वें सूक्त में सवितृ देवता के पूजार्थ ऋषि विश्वामित्र इस मन्त्र का उल्लेख करते हैं।
''ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।''
सायणभाष्य में प्रचोदयात् के संदर्भ में कहा गया है कि - प्रचोदयात् चोदयतेर्लेटि आडागमः यद्वत्तयोगादनिघातः आगम स्यानुदात्तत्वे णिचः स्वरः।

12. 'स जातो अत्यरिच्यत' - इत्यत्र 'सः' पदेन कः गृह्यते-

(a) इन्द्रः (b) पुरुषः
(c) प्रजापतिः (d) विष्णुः

उत्तर–(b)

''स जातो अत्यरिच्यत'' इस पद में ''सः'' पद से पुरुष का ग्रहण हुआ है
पुरुषसूक्त का यह 5वां मन्त्र है।
सायणभाष्य में उद्धृत है कि - ''स जातो विराट्पुरुषोऽत्यरिच्यत अतिरिक्तोऽभूत्'' यहाँ सः पद विराट्पुरुष का सूचक है।
विराट् पुरुष से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ है।

13. "Vedic Grammar" इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य प्रणेता वैदेशिको विद्वान् कः-

(a) एच.टी.कोलब्रुक् (b) एफ. मैक्समूलरः
(c) ए. मैक्डानलः (d) एच.विल्सनः

उत्तर–(c)

"Vedic Grammer" ग्रन्थ के प्रणेता ए.मैक्डॉनल हैं। ए. मैक्डॉनल विदेशी विद्वान् थे, इन्होनें वैदिक व्याकरण पर दो ग्रन्थ लिखे हैं-
1. Vedic Grammer 2. Vedic Grammer for student
इनको वैदिक संस्कृत का पाणिनि भी कहा जाता है।

14. सामवेदीयाः षड्ज- मध्यम- पञ्चमस्वराः कतमे त्रैस्वर्यस्वरे अन्तर्भवन्ति-

(a) अनुदात्ते (b) स्वरिते
(c) प्रचये (d) उदात्ते

उत्तर–(b)

सामवेदीयाः षड्ज- मध्यम– पञ्चमस्वराः स्वरिते त्रैस्वर्यस्वरे अन्तर्भवन्ति।
ऋग्वैदिक काल से ही स्वरों के मुख्यतः तीन भेद हैं-
उदात्त - अनुदात्त- स्वरित।
उदात्त स्वर उच्चध्वनि या तीव्रस्वर, अनुदात्त निम्नध्वनि,
तथा स्वरित इन दोनों के मध्यगत स्वर के लिए था।
इन तीनों मौलिक स्वरों के आधारभूत लौकिक स्वरों का उद्भव हुआ।
नारदीय और पाणिनीय शिक्षानुसार उदात्तादि से षड्जादि लौकिक स्वरों का विकास हुआ है।
''उदात्ते निषादगान्धारौ - अनुदात्ते ऋषभधैवतो।
स्वरित प्रभवा ह्येते, षड्जमध्यम - पंचमाः।।

मूल स्वर	लौकिक स्वर
1. उदात्त	निषाद (नि) गान्धार (ग)
2. अनुदात्त	.ऋषभ (रे), धैवत (ध)
3. स्वरित	षड्ज (स), मध्यम (म), पंचम़ (प)

15. 'बृहती'- छन्दसि अक्षराणां संख्या विद्यते-

(a) 48 (b) 28
(c) 36 (d) 32

उत्तर–(c)

''बृहती'' छन्द में 36 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद में 20 छन्दों का उल्लेख है किन्तु इनमें से 7 छन्द ही मुख्य रूप से प्रयोग किए जाते हैं।
1. गायत्री - (24 वर्ण, 8,8।8)
2. उष्णिक् - (28 वर्ण, 8.8.।12)
3. अनुष्टुप् - (32 वर्ण, 8,8 ।8.8)
4. बृहती - (36 वर्ण, 8,8।12.8)
5. पंक्ति (40 वर्ण, 8.8।8,8,8)
6. त्रिष्टुप् - (44 वर्ण, 11,11।11,11)
7. जगती - (48 वर्ण, 12.12/12.12)

16. दर्शपौर्णमासेष्टियागे अनुयाजानां संख्या विद्यते-

(a) पञ्च (b) त्रयः
(c) एकादश (d) अष्ट

उत्तर–(b)

दर्शपौर्णमास याग में तीन अनुयाजों की संख्या प्राप्त होती है।
यह याग अमावस्या और पूर्णिमा को किए जाने वाला विशेष यज्ञ है। अमावस्या को किए जाने वाले यज्ञ में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दही तथा दूध के बने द्रव्य की आहुतियां दी जाती हैं, पूर्णिमा को किए जाने वाले यज्ञ में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश की आहुति दी जाती है।
दर्शपौर्णमास याग जीवनपर्यन्त करना चाहिए।

17. 'वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः' इत्यत्र 'नु' विद्यते-

(a) उपमार्थीयः (b) हेत्वपदेशार्थीयः
(c) अनुप्रश्नार्थीयः (d) अवकुत्सार्थीयः

उत्तर–(a)

''वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः'' यहाँ ''नु'' उपमार्थक है।
वाक्य का तात्पर्य है कि ''हे इन्द्र! वृक्ष की शाखाओं की भाँति तेरी कचाएँ चारों ओर फैली है। यहाँ पर नु का तात्पर्य उपमार्थक ही प्रयुक्त हुआ है। निरुक्तकार आचार्य यास्क ने निपात के विषय में कहा है- ''उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति। अप्युपमार्थे । अपि कर्मोसंग्रहार्थे। अपि पादपूरणाः।

18. **'नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति' - इति कथनं वर्तते-**

(a) शाकटायनस्य (b) औदुम्बरायणस्य
(c) गार्ग्यस्य (d) कौत्सस्य

उत्तर–(d)

''नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति'' यह कथन कौत्स का है। कौत्स ने निरुक्तशास्त्र के प्रयोजन के विषय में प्रत्युत्तर करते हुए कहते हैं कि यह निरुक्त यदि मन्त्रों के अर्थ ज्ञान के लिए है तो वह अनर्थक है, क्योंकि मन्त्र अनर्थक है- ''अनर्थका हि मन्त्राः''। इसके प्रत्युत्तर में तर्क देते हुए कौत्स ने कहा कि मन्त्र निश्चित शब्दों की रचना करने वाले और निश्चित क्रम वाले होते हैं-
''नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति''।

19. **ऋक्संहितायाः समुपलब्धभाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः विद्यते-**

(a) सायणः (b) आनन्दतीर्थः
(c) स्कन्दस्वामी (d) वेङ्कटमाधवः

उत्तर–(c)

ऋग्वेद संहिता के उपलब्ध भाष्यों में सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का है। स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक मिलता है। स्कन्दस्वामी का समय लगभग 625ई. के आस-पास का है। इन्होनें यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी है।

20. **ऋक्प्रातिशाख्यस्य पटलसंख्या कियती-**

(a) 16 (b) 14 (c) 12 (d) 18

उत्तर–(d)

ऋक्प्रातिशाख्य में 18 पटल हैं। ऋक्प्रातिशाख्य के रचयिता शौनक हैं। इसमें तीन अध्याय है तथा प्रत्येक अध्याय में 6 पटल है, इस प्रकार कुल 18 पटल है।

21. **अथर्ववेदेन सम्बद्धा शिक्षा का वर्तते-**

(a) लोमशी शिक्षा (b) माण्डूकी शिक्षा
(c) गौतमी शिक्षा (d) केशवी शिक्षा

उत्तर–(b)

माण्डूकी शिक्षा अथर्ववेद से सम्बद्ध है।
अन्य प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ
– पाणिनीय शिक्षा - (ऋग्वेद) -यह अत्यन्त प्रसिद्ध शिक्षा ग्रन्थ है।
– याज्ञवल्क्य शिक्षा - (शुक्ल यजुर्वेद) है। इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।
– नारदीय शिक्षा - (सामवेद) - इसमें सामवेद के स्वरों का विवेचन है।

22. **'शिवसंकल्पसूक्तम्' माध्यन्दिनसंहितायां कस्मिन् अध्याये समुपलभ्यते-**

(a) षोडशे (b) चतुस्त्रिंशे
(c) एकत्रिंशे (d) चत्वारिंशे

उत्तर–(b)

शिवसंकल्पसूक्त माध्यन्दिन संहिता के चतुस्त्रिंशे (34) अध्याय में है। इस अध्याय के प्रथम छः मन्त्र को ''शिवसंकल्प उपनिषद् '' भी कहा जाता है। इसमें ''तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'' दिया गया है जिसका तात्पर्य है कि हमारा मन शुभ विचारों वाला हो। यह अध्याय मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

23. **भर्तृहरिदिशा को ब्रह्मामृतमश्नुते?**

(a) शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञः
(b) पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः
(c) प्रमाणादिषोडशपदार्थनिष्णातः
(d) याज्ञिकः

उत्तर–(a)

आचार्य भर्तृहरि वाक्यपदीयम् के ब्रह्मकाण्ड के 133वीं कारिका में कहते हैं:
''तस्माद्यः शब्दसंस्कारः सा सिद्धिः परमात्मनः।
तस्य प्रवृत्तितत्त्वज्ञ तद्ब्रह्मामृतमश्नुते''।।
अर्थात शब्द का सम्यक् ज्ञान ही ब्रह्म प्राप्ति का साधन है।
शब्द की प्रवृत्ति को भलीभांति जानने वाला उपनिषद् में वर्णित अमृत ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।
इससे यह स्पष्ट होता है कि शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञ, ब्रह्मामृत को प्राप्त करता है।

24. **परेषामसमाख्येयं मणिरूप्यादिविज्ञानं भर्तृहरिदिशा कस्माज्जायते?**

(a) शब्दात् (b) अनुमानाद्
(c) अभ्यासाद् (d) उपमानात्

उत्तर–(c)

मणिरूप्यादि का मूल्यज्ञान आदि भर्तृहरि के मत मे 'अभ्यास' नामक प्रमाण होता है।
वाक्यपदीयकार भर्तृहरि अपने पञ्चप्रमाणों में 'अभ्यास' नामक प्रमाण को पृथक् मानते हैं क्योंकि मणि आदि के मूल्यों के तारतम्य का जो ज्ञान है वह दूसरों को बताया नही जा सकता किन्तु अभ्यास से होता है-
''परेषामसमाख्येयमभ्यासादेव जायते।
मणिरूप्यादि विज्ञानं तद्विदां नानुमानिकम् ।।

25. **'एध्' धातोः लुङ्लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने कः प्रयोगः?**

(a) ऐधन्त (b) ऐधिष्ट
(c) ऐधिषत (d) ऐधत

उत्तर–(c)

''एध्'' धातु का लुङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में ''एधिषत'' रूप बनता है।
एध् धातु लुङ्लकार का रूप -

पुरुष	**एक.**	**द्वि.**	**बहु.**
प्र.पु.	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
म.पु.	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम	ऐधिध्वम्
उ.पु.	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

26. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रप्रवृत्तिः कस्मिन् प्रयोगे जाता?

(a) अभवः (b) भवाम

(c) भवेताम् (d) अभविष्यत्

उत्तर–(b)

''लोटो लङ्वत्'' सूत्र का प्रयोग ''भवाम'' रूप के प्रयोग में होता है, ''लोटो लङ्वत्'' सूत्रानुसार लोट् लकार लङ् के समान होता है। लङ् लकार में ङकार की इत् संज्ञा होने से वह ङित् है। लोट् लकार स्वतः ङित् नही टित् है। लोट्लकार को भी लङ् के समान ङित् लकार के लिए पाणिनि ने इस सूत्र को बनाया जिससे ङित् को मानकर होने वाले कार्य हो जाएं।

27. महद् यशो यस्य सः' इति विग्रहे बहुव्रीहिसमासे कः प्रयोगः?

(a) महायशः (b) महायशसः

(c) महायशाः (d) महायशष्कः

उत्तर–(c)

''महद् यशो यस्य सः'' बहुव्रीहि समास का यह विग्रह ''महायशाः'' पद का है। महायशाः से तात्पर्य ''बड़े यश वाले व्यक्ति'' से है।
लौकिक विग्रह महद् यशः यस्य यह तथा
अलौकिक विग्रह महत् सु + यशस् सु में ''अनेकमन्यपदार्थे'' से समास तथा प्रातिपदिक संज्ञा हुई और ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' से दोनो सु का लोप होकर ''महत् +यशस्'' बना। ''आन्महतःसमानाधिकरण-जातीययोः'' से महत् के तकार के स्थान पर आकार आदेश होकर मह + आ में सवर्ण दीर्घ करके महायशस् बना। कप् न होने के पक्ष में महायशस्+ स् हुआ। सु के सकार का-
''हल्ङयाब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्'' से लोप। ''अत्वसन्तस्य चाधातोः'' से उपधा दीर्घ करके महायशास् बना, सकार का रुत्व विसर्ग करके महायशाः रूप बना।

28. 'कुगतिप्रादयः' इति समासविधायकसूत्रस्य किमुदाहरणम् नास्ति?

(a) पटपटाकृत्य (b) कुम्भकारः

(c) सुपुरुषः (d) हस्तेकृत्य

उत्तर–(b)

''कुगतिप्रादयः'' इस समास विधायक सूत्र से ''कुम्भकारः'' शब्द की निरुपपत्ति नहीं होती है।
कुम्भकारः में ''उपपदमतिङ्' सूत्र से' उपपद तत्पुरुष समास होता है।
''कुगतिप्रादयः'' सूत्र कहता है कि समर्थ सुबन्त शब्दों के साथ ''कु शब्द, गतिसंज्ञक शब्द और प्र'' आदि का समास होता है। इस सूत्र के द्वारा किए गए समास को ''गति समास'' या ''प्रादि तत्पुरुष समास'' कहा जाता है।

29. 'प्रगृह्यम्' इत्यत्र कः कृत्यप्रत्ययः?

(a) ण्यत् (b) यत्

(c) क्यप् (d) तव्यत्

उत्तर–(c)

प्रगृह्यम् में ''क्यप् '' नामक कृत्य प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। प्रगृह्यम् में प्र उपसर्ग तथा गृह धातु का प्रयोग हुआ है तथा ''पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च'' से क्यप् प्रत्यय का आगमन हुआ है।

30. 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन्' इति विग्रहे को मत्वर्थीयः प्रयोगः?

(a) विद्वद्वान् (b) विदुष्मान्

(c) विद्वत्वान् (d) विद्वन्मान्

उत्तर–(b)

''विद्वांसः सन्ति अस्मिन्'' इस विग्रह में मत्वर्थीय तद्धित प्रत्यय का प्रयोग हुआ है जिससे ''विदुष्मान्'' शब्द निष्पन्न हुआ है। विदुष्मान् से तात्पर्य ''विद्वान हैं जिसके ऐसा वंश'' से है। विद्वस्जस् इस अलौकिक विग्रह में ''तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'' से मतुप् प्रत्यय तथा अनुबन्धलोपादि करके विद्वस् +मत् रूप बना।
विद्वस् + मत् में 'वसोः सम्प्रसारणम्'' से वकार को सम्प्रसारण और आदेश प्रत्ययोः से सकार का षकार होकर विदुष्मत् बना। सु, नुम्, नान्तोपधादीर्घ सुलोप, संयोगान्तलोप करके ''विदुष्मान्'' रूप सिद्ध हुआ है।

31. या स्वयमेवाध्यापिका सा किमुच्यते?

(a) उपाध्यायानी (b) उपाध्याया

(c) आचार्यानी (d) आचार्याणी

उत्तर–(b)

या स्वमेवाध्यापिका सा ''उपाध्याया'' होगा।
इन्द्र- वरुण - भव-शर्व - रुद्र-मृड-हिमारण्य- यव- यवन- मातुलाचार्या णामानुक् सूत्र से पुंयोग के अभाव में ङीष् प्रत्यय तथा आनुक् का आगम होने से इन्द्राणी, वरुणानी आदि रूप बनता है।
इसी सूत्र में कात्यायन का एक वार्तिक है ''मातुलोपाध्याययोरानुँग्वा'' अर्थात् मातुल् और उपाध्याय इन दो प्रातिपदिकों से पुंयोग में स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय तो नित्य होता है लेकिन ''आनुक्'' का आगम विकल्प से होता है।
– आनुक् न होकर ''अजाद्यतष्टाप् '' से टाप् प्रत्यय होगा-
उपाध्याय + टाप् = उपाध्याया ।

32. 'वृत्तिसर्गायतनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदविधायकसूत्रस्य सर्गार्थक - 'क्रम्' धातोरुदाहरणं चिनुत।

(a) अध्ययनाय क्रमते (b) ऋचि क्रमते बुद्धिः

(c) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि (d) आक्रमते सूर्यः

उत्तर–(a)

वृत्तिसर्गायतनेषु क्रमः '' सूत्र से सर्ग अर्थ में आत्मनेपद का विधान ''अध्ययनाय क्रमते'' उदाहरण में किया गया है।
वृत्तिसर्गायतनेषु क्रमः अर्थात् वृत्ति, सर्ग और तायन अर्थ गम्यमान होने पर क्रम धातु से आत्मनेपद होता है।
अध्ययनाय क्रमते अर्थात् पढ़ने के लिए सदा उत्साहित रहता है, यहाँ उत्साह का तात्पर्य सर्ग से ग्रहण किया गया है। सर्ग अर्थ गम्यमान होने के कारण क्रम धातु से ''वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः'' सूत्र से आत्मनेपद होकर क्रमते सिद्ध हुआ।

33. 'बोधयति पदम्' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं किमस्ति पाणिनिसूत्रम् ?

(a) विभाषाऽकर्मकात्

(b) निगरणचलनार्थेभ्यश्च

(c) बुध्-युध्-नश्-जनेङ् - प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः

(d) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्

उत्तर–(c)

''बोधयति पद्म'' में पाणिनि का परस्मैपद विधायक सूत्र ''बुध्-युध्-नश्-जनेङ् प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः'' प्रयुक्त हुआ है
जैसे- पद्मं बोधयति अर्थात् कमल को खिलाता है।

34. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) अपवर्गे तृतीया — (i) ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते

(b) तथायुक्तं चाऽनीप्सितम् — (ii) प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।

(c) धारेरुत्तमर्णः — (iii) क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः

(d) प्रतिनिधि-प्रतिदाने च यस्मात् — (iv) भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(b)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

उत्तर–(a)

- समीचीन तालिका a सही है।
- अपवर्गे तृतीया का उदाहरण ''क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः'' है। यहाँ अपवर्ग से तात्पर्य क्रिया की समाप्ति पर फल प्राप्ति से है और उदाहरण में कोश भर में अनुवाद पढ़ लिया गया है अर्थात् फल प्राप्ति को दर्शाया गया है।
- तथायुक्तं चानीप्सितम् का उदाहरण ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते है।

यहां कर्त्ता के द्वारा न चाहा जाने वाला पदार्थ भी क्रिया के साथ संयुक्त होने के कारण कर्म संज्ञा हुआ है।

— **धारेरुत्तमर्ण** :भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः

— **प्रतिनिधि** - प्रतिदाने च यस्मात् - प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।

35. ''पराजेरसोढः'' इत्यनेन सूत्रेण कतमं कारकं भवति?

(a) अधिकरणम् (b) सम्प्रदानम्

(c) अपादानम् (d) करणम्

उत्तर–(c)

''पराजेरसोढः'' यह सूत्र ''अपादान कारक'' से सम्बन्धित है। परा उपसर्ग पूर्वक जि धातु के योग में जो असह्य होता है। उसकी अपादान संज्ञा होती है।
जैसे- ''अध्ययनात् पराजयते''- अर्थात् वह पढ़ाई से भागता है। अध्ययन कार्य उसको असह्य और कष्टप्रद प्रतीत होता है। यहाँ असह्य में ''अपादाने पञ्चमी'' से पञ्चमी विभक्ति है।

36. 'प्रातिपदिकम्' इति संज्ञा केन सूत्रेण विधीयते?

(a) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

(b) प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च।

(c) ङ्याप्प्रातिपदिकात्

(d) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

उत्तर–(d)

''प्रातिपदिक'' संज्ञा ''अर्थवदधातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकम्'' से होती है। धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर जो अर्थवान् हो वह प्रातिपदिक संज्ञक होता है, जैसे- राम

37. निम्नाङ्कितेषु 'प्रगृह्यम्' इति संज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(a) ओत् (b) तरप्तमपौ घः

(c) तृतीयासमासे (d) आद्यन्तवदेकस्मिन्

उत्तर–(a)

प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र ''ओत्'' है।
ओत्- ओकारान्त निपात की प्रगृह्य संज्ञा होती है जैसे- अहो ईशाः - अहो ! ये स्वामी हैं। यहाँ 'अहो' की चादयोऽसत्वे से निपात संज्ञा हुई है। इसके बाद सूत्र 'ओत्' का प्रयोग हुआ। ओकारान्त निपात् है, अहो! इसकी इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हो गयी और ''प्लुतप्रगृह्य अचि नित्यम्'' से अव् आदेश को बाधकर प्रकृति भाव हो गया और अहो ईशाः इसी रूप में रह गया।

38. 'ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः' कथनमिदं पतञ्जलिना कस्य व्याकरणप्रयोजनस्य विषये कृतम्?

(a) रक्षाविषये (b) ऊहविषये

(c) आगमविषये (d) लघुविषये

उत्तर–(d)

''ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः'' यह वचन व्याकरण प्रयोजन में ''लघु पदार्थ निरूपण'' के विषय में कहा गया है।
''लध्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम् '' ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः अर्थात् ब्राह्मण को अध्यापनवृत्ति हेतु शब्दों का ज्ञान अवश्य करना चाहिए। व्याकरण के अध्ययन के बिना अन्य किसी भी सुगम रीति से शब्दज्ञान समर्थ नहीं है। इसीलिए लघुता हेतु व्याकरण का अध्ययन परमावश्यक है।

39. पतञ्जलिमतानुसारं शब्दः कः?

(a) अर्थरूपम् (b) यद् इङ्गितं चेष्टितम्

(c) यद् भिन्नेष्वभिन्नं, छिन्नेष्वच्छिनम्

(d) प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः

उत्तर–(d)

महर्षि पतञ्जलि के मतानुसार शब्द का लक्षण है– ''प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः।''।
गौः इत्यत्र कः शब्दः में ''शब्द'' क्या है? जब इसकी जिज्ञासा होती है तब कहते हैं कि ''येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुद-खुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति, सः शब्दः'' अर्थात् सास्ना, पूंछ, ककुद, खुर और विषाण से युक्त गोरूप पशु का जो सम्यक् ज्ञान होता है, वह स्फोट रूप प्रतीतपदार्थ के रूप में शब्द ही है।

40. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वराणां संख्या का?

(a) विंशतिः (b) एकविंशतिः
(c) अष्टादश (d) पञ्चविंशतिः

उत्तर–(b)

पाणिनीय शिक्षानुसार स्वरों की संख्या एकविंशतिः (21) है।
पाणिनीय शिक्षा ऋग्वेद का महत्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ है।
''स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः अर्थात् स्वरों की संख्या 21 और स्पर्श व्यञ्जनों की संख्या 25 है।
21 स्वर, 25 व्यञ्जन, 8 यादि, 4 यम, 1 अनुस्वार, 1 विसर्ग, 2 जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, 1 दुस्पृष्ट और 1 प्लुत् ऌकार मिलकर कुल 63 वर्ण है।

41. 'समीकरणम्' कस्य दिशा वर्तते?

(a) ध्वनिपरिवर्तनस्य (b) रुपपरिवर्तनस्य
(c) अर्थपरिवर्तनस्य (d) वाक्यपरिवर्तनस्य

उत्तर–(a)

'समीकरण' ''ध्वनिपरिवर्तन'' का भेद है।
ध्वनि परिवर्तन की कुछ प्रमुख दिशाएं है- आगम, लोप, विपर्यय, समीकरण, विषमीकरण, मात्राभेद, सघोषीकरण, अघोषीकरण, महाप्राणीकरण अल्पप्राणीकरण, ऊष्मीकरण, अनुनासिकीकरण, सन्धि और भ्रामक व्युत्पत्ति। **समीकरण-** शब्द में जब साथ-साथ विद्यमान दो अलग-अलग ध्वनियों में से एक अधिक बलवान होने के कारण दूसरी को अपने समान परिवर्तित कर लेती है तब यह दो ध्वनियों का समीकरण कहलाता है- जैसे- अग्नि का अग्गि तथा वल्कल का वक्कल।
यह समीकरण स्वर और व्यञ्जन की दृष्टि से दो प्रकार का होता है, जहां पूर्व ध्वनि बाद वाली ध्वनि को अपने समान बना ले उसे 'पुरोगामी' कहा जाता है तथा जहां बाद वाली ध्वनि पहले वाली ध्वनि को अपने अनुसार बना ले उसे पश्चगामी समीकरण कहते हैं। इस प्रकार दोनों स्वर-व्यञ्जन के भेद से चार प्रकार का होता है।

42. हिब्रू -भाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषाऽस्ति?

(a) चीनीपरिवारस्य (b) भारोपीयपरिवारस्य
(c) सूडानीपरिवारस्य (d) सामी-हामीपरिवारस्य

उत्तर–(d)

हिब्रू भाषा सामी - हामी परिवारस्य भाषाऽस्ति।
हिब्रू भाषा, सामी-हामी भाषा परिवार की सामी शाखा में आने वाली एक भाषा है। यह इस्राइल की मुख्य और राष्ट्रभाषा है।
सामी परिवार का क्षेत्र, अरब, इराक, सीरिया, फिलीस्तीन, मिस्त्र, इथियोपिया अल्जीरिया, मोरक्को, इस्राइल, दक्षिण प. एशिया, अरबी एशिया, अफ्रीका के उत्तरी भाग में फैली है। इसकी प्रमुख भाषाएं- कनानित, अरमाइक, अरबी, एबीसीनियन और हिब्रू है।

43. संस्कृतभाषायाः यूरोपीयभाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं केनोद्घाटितः?

(a) मैक्समूलरमहोदयेन (b) विन्टरनित्ज महोदयेन
(c) सर-विलियम-जोन्स महोदयेन (d) वेबरमहोदयेन

उत्तर–(c)

''संस्कृत भाषायाः यूरोपीय भाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं विलियम जोन्स महोदयेन उद्घाटितः'' अर्थात् सर्वप्रथम संस्कृत भाषा का यूरोपीय भाषा से सम्बन्ध विलियम जोन्स ने बतलाया। विलियम जोन्स को यह ज्ञान 1786 में संस्कृत, लैटिन ,ग्रीक के तुलनात्मक अध्ययन से हुआ। विलियम जोन्स ने 1786 में'' रायल एशियाटिक सोसायटी'' की स्थापना की तथा इसी समय संस्कृत भाषा की महनीयता को बतलाते हुए कहा था कि यह ''ग्रीक से अधिक पूर्ण, लैटिन से अधिक विस्तृत एवं दोनों से अधिक परिमार्जित है।''
विलियम जोन्स तुलनात्मक भाषाविज्ञान के प्रणेता के रूप में विश्वविश्रुत हैं।

44. बन्तूपरिवारः कस्य खण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति?

(a) यूरेशियाखण्डस्य (b) अफ्रीकाखण्डस्य
(c) प्रशान्तमहासागरीयखण्डस्य (d) अमेरिकाखण्डस्य

उत्तर–(b)

बन्तूपरिवारः अफ्रीकाखण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति। अर्थात् बन्तू परिवार अफ्रीका भूखण्ड का हिस्सा है।
विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण में अत्यन्त मतभेद है, भारतीय विद्वानों द्वारा इसके 18 भेद स्वीकार किए गए है।
1. यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत 10 भाषा परिवार समाहित है।
2.अफ्रीका भूखण्ड के अन्तर्गत **तीन परिवार-**
1. सूडानी 2. बन्तू, 3.होतेन्तोत बुशमैनी परिवार
3. प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड के अन्तर्गत 4 परिवार
4. अमेरिका भूखण्ड के अन्तर्गत 1 भाषा परिवार
इस प्रकार कुल 18 भेद है

45. अर्थसंग्रहे प्रत्ययस्य लिङ्गशेन कीदृशी भावना प्रोक्ता?

(a) शाब्दी (b) आर्थी
(c) शाब्दी आर्थी च (d) स्वर्गभावना

उत्तर–(a)

अर्थसंग्रहे प्रत्ययस्य लिङ्गशेन शाब्दी भावना प्रोक्ता। अर्थात् लिङ्ग अंश के द्वारा शाब्दी भावना ज्ञात होती है। अर्थसंग्रह एक प्रकरण ग्रन्थ है जिसके प्रणेता लौगाक्षिभाष्कर हैं। भावना दो प्रकार की होती है- शाब्दी भावना और आर्थी भावना
शाब्दी भावना- तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दी भावना। सा च लिङ्गशेनोच्यते। अर्थात् पुरुष की प्रवृत्ति का जनक अथवा सहायक प्रयोजक का व्यापारविशेष शाब्दी भावना है, यह शाब्दीभावना प्रत्यय के लिङ्ग अंश से व्यक्त होती है, क्योंकि लिङ्ग का श्रवण होने पर निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि मुझे यह प्रेरित कर रहा है।

46. अर्थसङ्ग्रहानुसारं 'शब्दसामर्थ्यम्' इत्यनेन कतमं प्रमाणं लक्षितम् ?

(a) श्रुतिः (b) प्रकरणम्
(c) लिङ्गम् (d) वाक्यम्

उत्तर–(c)

अर्थसंग्रहानुसार ''शब्दसामर्थ्यम्'' पद ''लिङ्ग'' प्रमाण को लक्षित करता है।
विनियोग विधि के छः प्रमाणों में लिङ्ग प्रमाण का लक्षण है कि ''शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम्'' अर्थात् शब्द की अभिधान शक्ति लिङ्ग है।

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं स्पर्शानुमेयः कः पदार्थः?

(a) आकाशम् (b) मनः
(c) आत्मा (d) वायुः

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रहदीपिकानुसार स्पर्शानुमेय पदार्थ वायु है।
अन्नमभट्ट ने तर्कसंग्रहदीपिका में पृथ्वी, जलादि नौ द्रव्यों का लक्षण उल्लिखित किया है जिसमें वायु के लक्षण में लिखा कि ''स्पर्शानुमेयो वायुः'' अर्थात् वायु का स्पर्श से अनुमान होता है। हम लोग देखते हैं जब वायु चलती है तो हम लोग अपने नेत्रों से उसे देख नहीं सकते अपितु स्पर्श होने पर चीजें विचलित होती हैं तो हम यह अनुमान लगाते हैं कि वायु चल रही है।

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्मनो विशेषगुणः कः?

(a) वेगसंस्कारः (b) स्थितिस्थापकसंस्कारः
(c) प्रयत्नः (d) शब्दः

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रह के अनुसार ''शब्द'' आत्मा का विशेष गुण है।
तर्कसंग्रह में गुणों को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है-
(i) सामान्य गुण तथा **(ii)** विशेष गुण
विशेष गुण के अन्तर्गत- बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, स्नेह, सांसिद्धिक द्रवत्व, धर्म-अधर्म, भावना तथा ''शब्द'' नामक विशेष गुण है।

49. तर्कभाषानुसारम् आत्मा कीदृशः?

(a) सर्वस्मिन् एकोऽणुश्च (b) विभुरनित्यश्च
(c) देहेन्द्रियाद्यनतिरिक्तः (d) प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च

उत्तर–(d)

तर्कभाषा के अनुसार आत्मा ''प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च'' होता है।
तर्कभाषाकार 12 प्रमेयों का वर्णन करते हुए कहते हैं, कि ''आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनः प्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफल दुःखापवर्गास्तु प्रमेय, अर्थात् आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मनस्, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव फल, दुःख तथा अपवर्ग इस प्रकार 12 प्रमेय हैं। स च देहेन्द्रियादिव्यतिरिक्तः प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च''।
अर्थात् आत्मत्व जाति जिसमें रहती है वह आत्मा है, वह देह, इन्द्रिय से भिन्न है। प्रत्येक शरीर में अलग-अलग है, शाश्वत और नित्य है।

50. साध्यशून्यो यत्र पक्षः सः कीदृशो हेत्वाभासः?

(a) बाधः (b) आश्रयासिद्धः
(c) असाधारणोऽनैकान्तिकः (d) विरुद्धः

उत्तर–(a)

साध्यशून्यो यत्र पक्षः सः बाधः हेत्वाभासः। अर्थात् जहां प्रमाणों के द्वारा पक्ष में साध्य का अभाव निश्चित हो वह बाधितविषय हो जाता है और बाध हेत्वाभास कहलाता है।
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में भी बाध हेत्वाभास की चर्चा करते हुए कहा गया है कि ''साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाधःउदाहृतः। उत्पत्तिकालीनघटे गन्धादिर्यत्र साध्यते।
बाधित हेत्वाभास को ''कालात्ययापदिष्ट'' भी कहा जाता है।

51. तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

(a) संयोगः (b) संयुक्तसमवायः
(c) विशेषण-विशेष्यभावः (d) संयुक्तसमवेतसमवायः

उत्तर–(b)

तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः 'संयुक्तसमवायः''।
अर्थात् समवाय का प्रत्यक्ष ग्रहण संयुक्तसमवायसन्निकर्ष द्वारा होता है।
जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूपादि का ग्रहण होता है कि घट में श्यामरूप है, तब चक्षु इन्द्रिय है और घट का रूप विषय है तथा दोनों का सन्निकर्ष संयुक्तसमवाय है। तर्कभाषाकार ने षड्विध सन्निकर्ष के विषय में बतलाया है—
(1) संयोग, (2) संयुक्तसमवाय, (3) संयुक्तसमवेत समवाय, (4) समवाय, (5) समवेतसमवाय और (6) विशेष्यविशेषण भाव।

52. वेदान्तसारानुसारं 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि' कर्माणि निम्नलिखितेषु कानि भवन्ति?

(a) काम्यकर्माणि (b) नित्यकर्माणि
(c) उपासनाकर्माणि (d) साध्यकर्माणि

उत्तर–(c)

सगुण ब्रह्म विषयक मानसिक व्यापार रूप शाण्डिल्य-विद्या आदि 'उपासना' कर्म कहे जाते हैं। वेदान्तसार प्रकरण ग्रन्थ है तथा इस ग्रन्थ के अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत कर्मों के विषय में ग्रन्थकर्त्ता ने कहा है कि ''काम्यानि स्वर्गादीष्ट साधनानि ज्योतिष्टोम्यादीनि। निषिद्धानि नरकाद्यनिष्ट साधनानि ब्राह्मणहननादीनि...........उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररुपाणि शाण्डिल्य- विद्यादीनि। नित्य कर्मोपासना से बुद्धि की शुद्धि तथा उपासना से चित्त एकाग्र होता है। – श्रुतिवाक्य उपासना कर्मों का गौणफल पितृलोक और सत्यलोक की प्राप्ति बतलाते हैं।

53. 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्' इत्ययम् अनुबन्धः कतमः?

(a) अधिकारी (b) विषयः
(c) सम्बन्धः (d) प्रयोजनम्

उत्तर–(b)

''जीवब्रह्मैक्यं शुद्ध चैतन्यं प्रमेयम् यह विषयानुबन्ध का लक्षण है। वेदान्तसार में चार अनुबन्ध है- ''नामाधिकारि- विषय- सम्बन्ध- प्रयोजनानि'' अर्थात् अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन।
विषयानुबन्ध के लक्षण में बतलाते हैं कि ''विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्ध चैतन्यं प्रमेयम् , तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्''।
जीव और ब्रह्म की एकता जो शुद्ध चैतन्य स्वरूप में है और वेदान्तसार का प्रमेय है तथा इसका तात्पर्य जीव और ब्रह्म आत्यन्तिक एकता है।

54. समष्ट्यज्ञानोपहितं चैतन्यं किं भवति?

(a) जीवः (b) ईश्वरः
(c) ब्रह्म (d) प्राज्ञः

उत्तर–(b)

समष्ट्यज्ञानोपहितं चैतन्यं ईश्वरः भवति। अर्थात् समष्ट्यज्ञान से उपहित चैतन्य ईश्वर कहलाता है। समष्टि उत्कृष्ट उपाधि होने के कारण विशुद्ध सत्त्व की प्रधानता से युक्त होता है। इससे विशिष्ट चैतन्य समस्त अज्ञानराशि का प्रकाशक होने से सर्वज्ञता, सर्वेश्वरता, सर्व-नियामकता आदि गुणों से युक्त अव्यक्त, अन्तर्यामी जगत् का कारण और 'ईश्वर' कहलाता है।

55 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा' किमुच्यते?

(a) विकारः (b) विवर्तः
(c) शब्दः (d) अनुपहितचैतन्यम्

उत्तर–(b)

अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा 'विवर्तः' इत्युदाहृतः।
वेदान्तसार में अध्यारोप विषयक सिद्धान्त के प्रतिपादन के पश्चात् द्वितीय पक्ष 'अपवाद' को स्पष्ट करते हुए इसका उल्लेख करते है। 1. मूलरूप का परित्याग करके दूसरे रूप में प्रकट होना 'विकार' कहा गया है जैसे- दूध का दही रूप में परिवर्तन।
2. मिथ्यारूप से अर्थात् अपने स्वरूप को त्यागे बिना अन्य वस्तु की मिथ्या प्रतीति ''विवर्त'' कहलाता है।
जैसे- रज्जु का सर्प के रूप में प्रतीत होना।

56. 'ब्रह्मसूत्रम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कोऽस्ति?

(a) बादरायणः (b) पाराशरः
(c) शङ्कराचार्यः (d) जैमिनिः

उत्तर–(a)

बह्मसूत्र के रचयिता महर्षि 'बादरायण' है। ब्रह्मसूत्र को 'न्यायसूत्र' भी कहा जाता है। ब्रह्मसूत्र की गणना प्रस्थानत्रयी के अन्तर्गत की जाती है। महर्षि बादरायण को वेदान्त दर्शन का प्रणेता आचार्य भी कहा जाता है। ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय हैं तथा इन अध्यायों के 16 पाद हैं। इसमें 192 अधिकरण तथा 555 सूत्रों में इसकी व्याख्या की गयी है। ब्रह्मसूत्र को उत्तरमीमांसा, व्याससूत्र तथा शारीरक सूत्र के नाम से भी जाना जाता है।

57. 'शारीरकम्' इति नाम्ना किं भाष्यं प्रसिद्धमस्ति?

(a) सांख्यकारिकाभाष्यम् (b) मीमांसाभाष्यम्
(c) ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (d) उपनिषद्भाष्यम्

उत्तर–(c)

शारीरक नामक प्रसिद्ध भाष्य ''ब्रह्मसूत्र'' पर है। शारीरक भाष्य भगवान शङ्कराचार्य द्वारा रचित है। ब्रह्मसूत्र के समस्त भाष्यों में शारीरक भाष्य सर्वोत्कृष्ट है। ब्रह्मसूत्र पर शारीरक भाष्य के अतिरिक्त, भास्कर द्वारा रचित ''भास्करभाष्य,'' रामानुज का ''श्रीभाष्य,'' मध्व का 'पूर्वप्रज्ञभाष्य', निम्बार्क का 'वेदान्तपारिजात' अदि भाष्य है। सभी भाष्यों में उपनिषद् वाक्यों का समन्वय एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म में दिखलाया है।

58. 'दृष्टवदानुश्रविकः' इत्यस्मिन् सांख्यकारिकाप्रयोगे 'आनुश्रविकः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

(a) श्रुतिः (b) स्मृतिः
(c) वेदाङ्गम् (d) पुराणम्

उत्तर–(a)

सांख्यकारिका में प्रयुक्त ''दृष्टवदानुश्रविकः' पद में 'आनुश्रविकः' का अर्थ 'श्रुति' है। श्रुति को वेद भी कहा जाता है।
आचार्य ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में दृष्ट उपायों की भांति आनुश्रविक, (श्रुति, वैदिक) उपायों को भी दुःखत्रय के ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति में असमर्थ बताया -
''दृष्टवदानुश्रविकः सहयविशुद्धिक्षयाति शययुक्तः।
तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्त विज्ञानात्।''
अर्थात् बैदिक उपाय भी दृष्ट के उपाय से समान है क्योंकि वह अविशुद्धिदोष क्षयदोष और अतिशयदोषसे युक्त होता है। अतः वैदिक उपाय की अपेक्षा उससे विपरीत उपाय प्रशस्थतर है, क्योंकि वह व्यक्त, अव्यक्त और ज्ञ के विवेकज्ञान से होता है।

59. अव्यक्तं कीदृशं भवति?

(a) सक्रियम् (b)निष्क्रियम्
(c) आश्रितम् (d) सावयवम्

उत्तर–(b)

अव्यक्त का लक्षण- निष्क्रिय होता है। निष्क्रिय अर्थात् क्रियारहित होना। अव्यक्त - प्रकृति का लक्षण है। यह अव्यक्त कारणरहित, नित्य, व्यापक, निष्क्रिय, एक, अनाश्रित, लिङ्गावयरहित स्वतन्त्र होती है तथा अव्यक्त प्रकृति में प्रसवधर्मिता के लक्षण पाये जाते हैं:–
''हेतुमदनित्यम व्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम् ।
सावयवं परतन्त्रम् व्यक्तं विपरीतम् अव्यक्तम् ।।
अर्थात् जो व्यक्त है वह कारणवान, विनाशी, अव्यापक, क्रियावान, अनेक, आश्रित, लिङ्ग, सावयव तथा परतन्त्र है एवं इसके विपरीत अव्यक्त (मूल प्रकृति) है।

60. व्यक्तस्य च प्रधानस्य च कः समानधर्मः?

(a) त्रिगुणत्वम् (b) सक्रियत्वम्
(c) हेतुमत्त्वम् (d) लिङ्गत्वम्

उत्तर–(a)

व्यक्तस्य च प्रधानस्य च ''त्रिगुणत्वम्'' समान धर्मः। अर्थात् व्यक्त और प्रधान दोनों में त्रिगुणता का समान धर्म है। सांख्य में तीन गुण (सत्त्व, रजस्, तमस्) हैं तथा तीनों गुणों के तीन धर्म है- सुख, दु:ख और मोह।
सांख्यकारिका में व्यक्त और प्रधान के समान धर्म को बतलाते हुए कहा गया है कि-
''त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।।''
अर्थात् व्यक्त और प्रधान में त्रिगुणात्मक, अविवेकी, विषय, अचेतन और प्रसवधर्मिता के गुण में एकदयता है।

61. सांख्यदर्शनानुसारं ''त्रैगुण्यविपर्ययात्'' किं सिध्यति?

(a) अव्यक्तस्य नित्यत्वम् (b) पुरुषबहुत्वम्
(c) व्यक्तस्य त्रिगुणात्मकत्वम् (d) अव्यक्तस्य कारणत्वम्

उत्तर–(b)

सांख्यदर्शनानुसारं ''त्रैगुण्यविपर्ययात्'' ''पुरुषबहुत्वं'' सिध्यति। सांख्यदर्शनानुसार प्राणियों में तीनों गुणों की असमान स्थिति होने से पुरुषों का अनेकत्व सिद्ध होता है। स्वाभाविक सी बात है कि संसार में भिन्न-भिन्न स्वभाव के लोग हैं और उनमें त्रैगुण्य (सत्व, रजस् और तमस्) का न्यूनाधिक्य भी होता है जिस कारण पुरुषों के स्वरूप में भिन्नता परिलक्षित होती है इस प्रकार त्रैगुण्यविपर्ययात् पुरुष की अनेकता को सिद्ध करता है।

62. अधस्तनानां केन सह कस्य सम्बन्धः?
समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् (i) स्वाध्यायात्
(b) इष्टदेवतासम्प्रयोगः (ii) यमाः
(c) अनुभूतविषयासम्प्रमोषः (iii) विपर्ययः
(d) सार्वभौमा महाव्रतम् (iv) स्मृतिः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(b)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

उत्तर–(a)

कोई भी वस्तु जब अपने वास्तविक स्वरूप को त्यागकर मिथ्या प्रतीति को आभाषित करे तो वह विपर्यय कहलाता है - ''विपर्ययो मिथ्याज्ञानम्-तद्रूपप्रतिष्ठम्।
पूर्वानुभव विषय का चित्त में बारम्बार उपस्थिति 'स्मृति' नामक वृत्ति कहलाती है। - अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः।
– स्वाध्यायादिष्ट देवतासम्प्रयोगः अर्थात् स्वाध्याय के स्थायित्व की अवस्था में इष्ट देवताओं का सम्पर्क होता है।
– जातिदेशकाल समयावच्छिन्ना सार्वभौमा महाव्रतम् ।
इन चारों में विपर्यय और स्मृति 'वृत्तियों' के भेद हैं।

63. 'यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तमनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्तो तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः.......।'

एषा व्याख्या कस्य योगाङ्गस्य, व्यासभाष्यानुसारेण?

(a) प्रत्याहारस्य (b) धारणायाः
(c) ध्यानस्य (d) ब्रह्मचर्यस्य

उत्तर–(a)

व्यासभाष्य के अनुसार ''प्रत्याहार'' योगाङ्ग के विषय में यह पंक्ति कथित है।
योगसूत्रकार ने अष्टाङ्ग योग की चर्चा की है-
''यमनियमासन प्राणायाम, प्रत्याहार-धारणा, ध्यान और समाधि।
प्रत्याहार - स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः
इस सूत्र की व्याख्या में व्यासभाष्यकार कहते हैं कि -
''यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तम् अनूत्पतन्ति, निविशमानमनु-निविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषुः प्रत्याहारः।
अर्थात् जिस प्रकार मधुमक्खियाँ अपने अगुवा (नेता) का पग-पग पर अनुगमन करती हैं, उनके बैठने, उड़ने आदि की प्रत्येक क्रिया के अनुसार ही कार्य करती है- इसी प्रकार इन्द्रियाँ भी, चित्त का निरोध होने पर निरुद्ध हो जाती हैं, यही प्रत्याहार कहलाता है।

64. योगदर्शनस्य व्यासभाष्यानुसारेण चित्तभूमीनां समुचितः क्रमोऽस्ति-

(a) क्षिप्तम्, विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, निरुद्धम् ।
(b) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम् ।
(c) विक्षिप्तिम्, मूढम्, एकाग्रम्, क्षिप्तम्, निरुद्धम् ।
(d) निरुद्धम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, क्षिप्तम्, एकाग्रम् ।

उत्तर–(b)

योगदर्शन व्यासभाष्यानुसार चित्त की पाँच भूमियाँ है, जिनका क्रम क्रमशः 1. क्षिप्त 2. मूढ़, 3. विक्षिप्त 4. एकाग्र और 5. निरुद्ध है।

1. **क्षिप्तम्-** रजषा विषयेष्वेव वृत्तिमत् - अर्थात् रजोगुण के उद्रेक के फलस्वरूप विषयों में ही आसक्त रहने वाली चित्तावस्था क्षिप्त भूमि है।
2. **मूढ़म्-** तमसानिद्रादिवृत्तिमत्– अर्थात् तमोगुण के उद्रेक के फलस्वरूप निद्रा (मूर्च्छादि) की स्थिति मूढ़ भूमि कहलाती है।
3. **विक्षिप्तम्-** क्षिप्तादिविशिष्टं विक्षिप्तं सत्वाधिक्येन समादधदपि चित्तं रजोमात्रयाऽन्तराऽन्तरा विषयान्तरवृत्तिमद्।
4. **एकाग्रम्-** एकस्मिन्नेव विषयेऽग्रं शिखा यस्य चित्त दीपस्येत्येकाग्रं
5. **निरुद्धम् -** निरुद्धं च निरुद्धसकलवृत्तिकं संस्कारमात्रशेषम् इत्यर्थः।

65. जैनदर्शनानुसारेण निम्नाङ्कितस्य सप्तभङ्गिन्यायस्य समुचितः क्रमः कोऽस्ति?

(a) स्यादस्ति च नास्ति च, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति चावक्तव्य; स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

(b) स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

(c) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति।

(d) स्यादस्ति, स्याद्वक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

उत्तर–(b)

जैनदर्शनानुसार सप्तभङ्गिन्याय का समुचित क्रम-
1. स्याद् अस्ति 2. स्याद् नास्ति
3. स्याद् अस्ति च नास्ति च 4. स्याद् अवक्तव्यम्
5. स्याद् अस्ति च अवक्तव्यम् 6. स्याद् नास्ति च अवक्तव्यम्
7. स्याद् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम् - इस प्रकार है।
यहां वाक्य के पूर्व में स्यात् शब्द का प्रयोग ज्ञान की सापेक्षतया के प्रकाशन हेतु किया गया है।
– जैनदर्शन में इसे स्याद्वाद कहा गया है।

66. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) माध्यमिकाः (i) बाह्यार्थानुमेयत्वम्
(b) योगाचाराः (ii) सर्वशून्यत्वम्
(c) सौत्रान्तिकाः (iii) बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्
(d) वैभाषिकाः (iv) बाह्यार्थशून्यत्वम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)

उत्तर–(c)

बौद्धानुयायी चार प्रकार की भावना से परमपुरुषार्थ को बतलाते है-
1. माध्यमिक 2. योगाचार 3. सौत्रान्तिक 4. वैभाषिक
— 'माध्यमिक' का अन्य नाम 'शून्यवाद' है, जिसको नागार्जुन ने अपना प्रमुख मत स्वीकार किया है, माध्यमिक संसार को शून्य मानता है।
— योगाचार के अनुसार बाह्यार्थ तो शून्य है लेकिन चित्त सभी वस्तुओं का ज्ञाता है । इसलिए इनका सिद्धान्त ''बाह्यार्थशून्यत्वम्'कहलाया।
— सौत्रान्तिक और वैभाषिक महायान के अङ्ग हैं।
— सौत्रान्तिक चार अनुमेय-विषय, चित्त, इन्द्रियों तथा सहायक तत्त्वों को स्वीकारते हैं तथा वैभाषिक बाह्यार्थप्रत्यक्ष को स्वीकारते हैं।

67. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) हर्षचरितम् (i) शूद्रकः
(b) मुद्राराक्षसम् (ii) दण्डी
(c) दशकुमारचरितम् (iii) विशाखदत्तः
(d) मृच्छकटिकम् (iv) बाणभट्टः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

उत्तर–(a)

- हर्षचरितम् बाणभट्ट की ऐतिहासिक कृति है। यह गद्य काव्य का भेद 'आख्यायिका' है, इसमें आठ उच्छ्वास हैं।
- मुद्राराक्षस विशाखदत्त की रचना है। यह सात अङ्कों का नाटक है, इसमें अंगूठी के माध्यम से राक्षस को वश में करने की कहानी है।
- मृच्छकटिकम् शूद्रक की रचना है। इसमें 10 अङ्क है तथा यह प्रकरण ग्रन्थ के अन्तर्गत आता है। इसमें चारुदत्त और वसन्तसेना की कहानी है।
- दशकुमारचरितम् दण्डी द्वारा रचित है। इसमें 10 राजकुमारों के अपने-अपने पर्यटनादि का वर्णन है।

68. अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः कुत्र गतः?

(a) काशीतीर्थम् (b) प्रयागतीर्थम्
(c) काञ्चीतीर्थम् (d) सोमतीर्थम्

उत्तर–(d)

'अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः सोमतीर्थम् गतः' अर्थात् शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य को शान्त करने के लिए महर्षि कण्व सोमतीर्थ गए हैं। यह उक्ति वैखानस-राजा दुष्यन्त से कहता है।
– अभिज्ञानशाकुन्तलम् कविकुलगुरू कालिदास द्वारा रचित विश्वप्रसिद्ध नाटक है। इसमें सात अङ्क है तथा इसमें राजा दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रणयकथा का वर्णन है।

69. 'उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी' - अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिर्भवति-

(a) मारीचस्य (b) शारद्वतस्य
(c) कण्वस्य (d) शार्ङ्गरवस्य

उत्तर–(b)

''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् में यह उक्ति शारद्वत राजा दुष्यन्त से प्रत्युत्तर करते हुए कहते हैं।

''तदेषा भवतः कान्ता व्यजवैनां गृहाण वा।
उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोन्मुखी ।।

अर्थात् यह शकुन्तला आपकी पत्नी है, आप चाहे इनका त्याग करिए या अपने पास रखिए क्योंकि पत्नी पर उसके पति का सम्पूर्ण अधिकार होता है।

70. मेघदूते अस्याः नद्याः उल्लेखो नास्ति-

(a) तुङ्गभद्रा (b) रेवा
(c) गन्धवती (d) गम्भीरा

उत्तर–(a)

मेघदूतम् में तुङ्गभद्रा नदी का उल्लेख नहीं हुआ है।

मेघदूत कालिदास द्वारा विरचित वियोग शृंगार का खण्डकाव्य है। इसे दो भागों में विभाजित किया गया है-

1. पूर्वमेघ 2. उत्तरमेघ

मेघदूत में अपने कर्तव्यों से च्युत यक्ष और यक्षिणी की कहानी है इसमें आषाढ़ के प्रथम दिवस पर मेघ को देखने के बाद यक्ष की कामभावना जाग्रत हो जाती है, तो वह मेघ को ही दूत के रूप में स्वीकार कर अपना सम्पूर्ण समाचार यक्षिणी के पास ले जाने के लिए कहता है।

— मेघदूत में प्रधान रस विप्रलम्भ शृंङ्गार और छन्द मन्दाक्रान्ता है।

71. 'सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः'।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।।''
एषा उक्तिः कं लक्षयति?

(a) चाणक्यम् (b) राक्षसम्
(c) चन्दनदासम् (d) भागुरायणम्

उत्तर–(c)

उपर्युक्त कथन चन्दनदास को लक्षित कर कहा गया है। यह उक्ति विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षस से उद्धृत है। चाणक्य द्वारा चन्दनदास से बारम्बार अनुग्रह करना कि राक्षस का परिवार हमें दे दो तो चन्दनदास द्वारा मना कर दिया जाता है; इसके प्रत्युत्तर में चाणक्य कहते हैं कि -

''सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना बिना''।।

अर्थात् पराये व्यक्ति की वस्तु दे देने पर अर्थ की प्राप्ति आसान होने पर इस कलियुग में राजा शिवि के शिवाय कौन सा प्राणी इस दुर्गम कार्य को कर सकता है, इस प्रकार राक्षस की प्रशंसा करते हैं।

72. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम भवति-

(a) आर्यकः (b) मैत्रेयः
(c) शर्विलकः (d) संस्थानकः

उत्तर–(b)

मृच्छकटिक ग्रन्थ के विदूषक का नाम ''मैत्रेय'' है।
– मृच्छकटिकम् 10 अङ्को का प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें नायक चारुदत्त और नायिका वसन्तसेना की कहानी है। नायक चारुदत्त निर्धन ब्राह्मण था तथा नायिका वसन्तसेना गणिका थी। दोनों की प्रणय कथा का शूद्रक ने 10अङ्कों में विशद वर्णन किया है। शकार जो मृच्छकटिकम् में प्रतिनायक के रूप में है, यथावसर अपनी वाणी से सबको आह्लादित करता रहता है।

73. ''निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।''- इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?

(a) दुष्यन्तस्य (b) रघोः
(c) रामचन्द्रस्य (d) नलस्य

उत्तर–(d)

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि''
इस सूक्ति में राजा नल की कथा का विशद विवेचन है। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित ''नैषधीयचरितम्'' महाकाव्य में नल और दमयन्ती की प्रणयकथा का वर्णन है। यह महाकाव्य श्रीहर्ष द्वारा विरचित है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

– महाभारत का ''नलोपाख्यान'' इस महाकाव्य का मूलाधार है। इसमें कुल 22 सर्ग है।
– बृहत्त्रयी के अन्तर्गत ''किरातार्जुनीयम् (18), शिशुपालवधम् (20) और नैषधीयचरितम् (22) निहित है।

74. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति-

(a) शृङ्गारः (b) वीरः (c) शान्तः (d) अद्भुतः

उत्तर–(b)

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य वीररस प्रधान है।
यह महाकाव्य महाकवि भारवि द्वारा रचित है तथा इसमें 18सर्ग है। महाभारत का वनपर्व इस ग्रन्थ उपजीव्य है। इसमें किरातवेशधारी शिव, सुयोधन के समस्त राजवृत्तान्त को अच्छी तरह से जानकर द्वैत वन में जाकर युधिष्ठिर के समक्ष बतलाता है।

75. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी भवति-

(a) विनयन्धरः (b) जयन्धरः
(c) रुधिरप्रियः (d) सुन्दरकः

उत्तर–(a)

वेणीसंहार में दुर्योधन का कञ्चुकी विनयन्धर है।
वेणीसंहार- यह महाभारत का उपजीव्य नाटक है तथा वीर रस प्रधान है। वेणीसंहार की रचना भट्टनारायण ने किया है। इस नाटक में कुल 6 अङ्क है। वेणीसंहार के नायक भीम धीरोद्धत प्रकृति के नायक तथा नायिका द्रौपदी हैं। दुर्योधन प्रतिनायक के रूप में इस नाटक में विद्यमान है।

**76. ''अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा........।।''
- साहित्यदर्पणानुसारतः रिक्तस्थानं पूरयत।**

(a) लक्षण-लक्षणा (b) उपादानलक्षणा
(c) सारोपा लक्षणा (d) साध्यवसाना लक्षणा

उत्तर–(a)

अर्पणं स्वस्यवाक्यार्थे परस्यान्वयसिद्धये।
उपलक्षणहेतुत्वादेषा ''लक्षण लक्षणा'।।
अर्थात् वाक्यार्थ में मुख्यार्थ से अलग अर्थ के अन्वय बोध के लिए जहाँ कोई भी शब्द अपने स्वरूप को समर्पित कर दे उसको ''लक्षणलक्षणा'' कहते हैं। उदाहरण स्वरूप ''गङ्गायां घोषः'' में तट के अन्वय को सिद्ध करने के लिए गङ्गाशब्द अपने स्वरूप का त्याग कर देती है।
लक्षणा के भेद- उपादान लक्षणा और लक्षण लक्षणा के भेद से लक्षणा दो प्रकार की होती है।

77. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(a) आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम् — (i) रत्नावली
(b) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्य-मनन्तकं दुःखम् — (ii) मुद्राराक्षसम्
(c) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः। — (iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(d) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः — (iv) मृच्छकटिकम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(b)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

उत्तर–(b)

- **आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम् -** यह राजा दुष्यन्त प्रियंवदा के प्रत्युत्तर में स्वयं से ही कहते हैं कि मै जिसके अग्नि होने की आशंका कर रहा था वह तो स्पर्शयोग्य रत्न है।
- **अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् -** यह विदूषक के द्वारा चारूदत्त से पूछने पर कि आपको मृत्यु और निर्धनता में क्या अच्छा लगता है तो चारुदत्त जवाब देते हुए कहते हैं कि मृत्यु अल्प कष्टदायक है लेकिन निर्धनता कभी न समाप्त होने वाली पीड़ा है।
- **गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्चप्रायः सीदन्ति दुःखिताः** यह मुद्राराक्षस की सूक्ति है।
- **आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।** यह रत्नावली के प्रथमाध्याय से उद्धृत है। इसमें सूत्रधार, नटी से कहता है कि 'अनुकूल भाग्य दूसरे द्वीप से की जा रही जलनिधि के बीच से तथा दिशाओं के अन्तिम छोर से इष्टवस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है'।

78. ''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः''- इति हर्षचरिते कस्य मनसि समजायत?

(a) राज्यवर्धनस्य (b) प्रभाकरवर्धनस्य
(c) कुरङ्गकस्य (d) हर्षवर्धनस्य

उत्तर–(d)

''लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः''
हर्षवर्धन के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि दुनिया में स्नेह के बन्धनपाश लोहे से अधिक कठोर होते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

हर्षचरितम् बाणभट्ट द्वारा रचित आख्यायिका ग्रन्थ है। इसमें आठ उच्छ्वास है। हर्षचरितम् के अतिरिक्त बाणभट्ट की अन्य रचनाएँ- कादम्बरी, पार्वतीपरिणय, और मुकुटताडितक है।

79. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् ''- इति वार्ता केन सम्बद्धा?

(a) माघेन (b) भारविणा
(c) श्रीहर्षेण (d) कालिदासेन

उत्तर–(c)

''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम् '' यह वार्ता श्रीहर्ष से सम्बन्धित है। यह पंक्ति नैषधीयचरितम् से उद्धृत है जिसके रचनाकार श्री हर्ष है। इस पंक्ति के माध्यम से श्रीहर्ष अपने जन्म तथा माता-पिता के वृतान्त के साथ प्रथम सर्ग का अन्त करते हुए कहते हैं कि

श्री हर्षं कविराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं

श्रीहरिः सुषवे जितेन्द्रियचयं मामल्ल-देवी च यम् अर्थात् कविराज समूह के मुकुट के आभूषण रूप हीरे श्रीहीर तथा मामल्लदेवी ने इन्द्रियों के समूह को जीतने वाले श्रीहर्ष नामक पुत्र को जन्म दिया।

80. ''स बाल आसीद् वपुषा चतुर्भुजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।'' इति शिशुपालवधस्य पद्यांशः केन सम्बद्धः?

(a) शिशुपालेन (b) श्रीकृष्णेन
(c) नारदेन (d) रावणेन

उत्तर–(a)

स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भजो मुखेन पूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः''

शिशुपालवधम् के इस पद्यांश से शिशुपाल का सम्बन्ध है।
इस पद्यांश में नारदमुनि, श्रीकृष्ण को शिशुपाल के बारे में बतलाते हैं।
— शिशुपाल वधम् महाकवि माघ द्वारा प्रणीत 20 सर्गों में का महाकाव्य है। महाकवि माघ को ''घण्टामाघ'' भी कहा जाता है। संस्कृत -साहित्य की एक प्रसिद्ध सूक्ति है।
''उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम् , दण्डिनः पदलालित्यं , माघे सन्ति त्रयोः गुणाः।।''

81. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' - रघुवंशस्य अस्मिन् पद्यांशे वैदिहिबन्धुः भवति-

(a) लक्ष्मणः (b) भरतः
(c) रामः (d) रघुः

उत्तर–(c)

''वैदेहिबन्धोहृदयं विदद्रे'' रघुवंशमहाकाव्यम् के इस पद्य में प्रयुक्त ''वैदेहिबन्धु'' से तात्पर्य राम से है। रघुवंशमहाकाव्यम् कालिदास द्वारा विरचित 19 सर्गों का महाकाव्य है। भगवान् श्रीराम जब भद्रमुख नामक अपने गुप्तचर से पूछते हैं कि राज्य की जनता हमारे विषय में क्या कहती है, इस प्रकार बारम्बार पूछे जाने पर भद्रमुख सीता सम्बन्धित लोकापवाद को बताता है- यह सुनते ही भगवान श्रीराम का हृदय उसी प्रकार विदीर्ण हो जाता है जैसे घन की चोट से तप्त हुआ लोहा फट जाता है।

82. काव्यमीमांसोक्तकथानुसारं पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती कुत्र तपस्यामास?

(a) विन्ध्यगिरौ (b) तुषारगिरौ
(c) सह्यगिरौ (d) मेरूगिरौ

उत्तर–(b)

काव्यमीमांसोक्तकथानुसारं पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती 'तुषारगिरौ' तपस्यामास अर्थात् देवी सरस्वती पुत्री प्राप्ति की आकांक्षा से तुषारगिरि पर तपस्या की। काव्यमीमांसा के ग्रन्थकर्ता राजशेखर जी हैं। ''काव्यपुरुषोत्पत्ति नामक तृतीय अध्याय में ''सरस्वती-पुत्र और काव्य-पुरुष की उत्पत्ति के सबंध में वर्णन करते हुए यह कहा गया है।

83. जगन्नाथमते काव्यं कतिविधं भवति-

(a) द्विविधम् (b) त्रिविधम्
(c) चतुर्विधम् (d) पञ्चविधम्

उत्तर–(c)

जगन्नाथमते काव्यं चतुर्विधम् भवति अर्थात् पण्डितराज जगन्नाथ के मतानुसार काव्य के चार भेद होते हैं।

''तच्चोत्तमोत्तमोत्तममध्यमाधमभेदाच्चतुर्धा'' अर्थात् उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम और अधम इस प्रकार काव्य के चार भेद है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

पण्डितराज जगन्नाथ का काव्यशास्त्रीय प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रसगङ्गाधर' है।

- व्यञ्जनावृत्ति में उत्तमोत्तम काव्य है।

– काव्य में व्यङ्ग्य अप्रधान होकर भी चमत्कार का कारण बने तो उत्तम काव्य कहलाता है।
—वाच्यार्थ का चमत्कार यदि व्यङ्ग्यार्थ के चमत्कार अधिकरण में जब न रहे तब मध्यम काव्य कहलाता है।
— वाच्यार्थ के चमत्कार प्रधान होने पर अधम काव्य कहलाता है।

84. ''त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः'' - इति काव्यप्रकाशे प्रथमे उल्लासे किम् अधिकृत्य उल्लिखितम् ?

(a) काव्यलक्षणम् (b) काव्यभेदम्
(c) काव्य-हेतुम् (d) काव्यफलम्

उत्तर–(c)

''त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः'' - काव्यप्रकाश के प्रथमोल्लास में यह 'काव्यहेतु' के प्रसङ्ग में उल्लिखित है।

काव्य प्रकाश- मम्मट द्वारा विचरित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।
काव्यहेतु के विषय में आचार्य मम्मट कहते हैं कि

''शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।

अर्थात् लोकव्यवहार, शक्ति और काव्य की विवेचना के मर्मज्ञ गुरु के शिक्षानुसार अभ्यासादि ये तीनों काव्योत्कर्ष के कारण है। इन्हीं तीनों के पर्यालोचन से उत्पन्न व्युत्पत्ति तथा काव्य के गुण-दोषों के जानने वाले विद्वानों के शिक्षानुसार अभ्यासादि की समष्टिरूप से काव्य-निर्माण की अर्हता प्राप्त करने का हेतु माना जाता है।

85. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः अभेदे अयमलङ्कारः भवति-

(a) रूपकम् (b) उपमा
(c) उत्प्रेक्षा (d) श्लेषः

उत्तर–(a)

काव्यप्रकाश के अनुसार उपमानोपमेय सादृश्य से जो अभेद वर्णन होता है रूपकालङ्कार कहलाता है।

काव्यप्रकाश आचार्य मम्मट द्वारा विचरित वह काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

है। इसमें अलङ्कारों का विशद वर्णन हुआ है। काव्यप्रकाश में कुल 67 अलङ्कारों का वर्णन है।

रूपकालङ्कार- तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः अर्थात् अत्यन्त सादृश्यता के कारण और प्रसिद्ध भेद वाले उपमानोपमेय का अभेदवर्णन रुपकालङ्कार कहलाता है।

– आचार्य मम्मट ने पाँच शब्दालङ्कार, 61 अर्थालंङ्कार और एक उभयालङ्कार , उस प्रकार अलङ्कार कुल मिलाकर 67 अलङ्कारों का निरूपण किया है।

86. आसु का नाट्यवृत्तिर्न भवति-

(a) अभिधा (b) आरभटी
(c) सात्वती (d) भारती

उत्तर–(a)

'अभिधा' नाट्यवृत्ति न होकर शब्दशक्ति है।

- अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना तीन प्रकार की शब्द शक्तियाँ है।
- अभिधा मुख्यार्थ को बोधित कराता है।
- लक्षणा शक्ति से लक्ष्यार्थ बताने वाला शब्द 'लाक्षणिक' कहलाता है।
- व्यञ्जना - व्यङ्ग्य अर्थ का प्रकाशक व्यञ्जक कहलाता है।
- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में चार प्रकार की वृत्तियों को बतलाया है- 1. कैशिकी, 2. सात्वती 3. आरभटी और 4. भारती।

87. ''भम धम्मिअ- '' इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्योते अस्य उदाहरणं भवति-

(a) वाच्ये प्रतिषेधे विधिरूपस्य
(b) वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य
(c) वाच्ये विधिरूपेऽनुभयरूपस्य
(d) वाच्ये प्रतिषेधेऽनुभयरूपस्य

उत्तर–(b)

''भम धम्मिअ'' यह ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में ''वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरुपस्य'' का उदाहरण है।

यह उद्धरण ध्वन्यालोक से उद्धृत है। आचार्य आनन्दवर्धन प्रतीयमानार्थ के 5 भेद बतलाए हैं। भम धम्मिअ पालि में प्रयुक्त होता है। संस्कृत में इसे भ्रम धार्मिक कहते हैं।

''भ्रम धार्मिक विस्त्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।
गोदानदी कच्छकुञ्जवासिना दृप्तसिंहेन ।।

अर्थात हे ब्राह्मण! सुना है कि गोदावरी के छोर पर कुञ्ज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने आज उस कुत्ते को मार डाला है अब आप निश्चिन्त होकर विचरण कीजिए। यहां वाच्यार्थ तो विधिरूप में है कि निश्चिन्त होकर विचरण करिए लेकिन प्रतीयमानार्थ वस्तुतः निषेधात्मक है कि आगे आप यहां पुनः न आना नही तो सिंह की मुलाकात आपसे भी हो जाएगी।

88. दशरूपकतः रिक्तस्थानं पूरयत-

''आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः।
योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः........।।''

(a) काव्यपराङ्मुखाय (b) नाट्यपराङ्मुखाय
(c) शास्त्रपराङ्मुखाय (d) स्वादुपराङ्मुखाय

उत्तर–(d)

''आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः।
योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः स्वादुपराङ्मुखाय।।

दशरूपककार इस पद्य के माध्यम से नाटकादि दश भेदों के फल के विषय में बतलाते हैं कि अल्प बुद्धि वाले सज्जन व्यक्ति आनन्द को प्रवाहित करने वाले रूपकों (अध्ययन या उनके अभिनय के दर्शन) का फल भी इतिहासादि ग्रन्थों के अध्ययन के समान एकमात्र धर्मादि ज्ञान ही बतलाते हैं। रसास्वाद से विमुख सुधीजनों को प्रणाम है। यहां यह दिखलाने का प्रयास किया गया कि सहृदय व्यक्तियों के द्वारा स्वयं अनुभव किया जाने वाला परमानन्द स्वरूप रसास्वादन दशरूपकों का फल है।

89. ''कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम् ।'' इत्युक्तिः एषु कस्मिन् अलङ्कारग्रन्थेऽस्ति-

(a) साहित्यदर्पणे (b) वक्रोक्तिजीविते
(c) रसगङ्गाधरे (d) काव्यप्रकाशे

उत्तर–(b)

''कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम् '' यह उक्ति ''वक्रोक्तिजीवितम्'' नामक अलङ्कारशास्त्र ग्रन्थ से है। वक्रोक्तिजीवितम् आचार्य कुन्तक की रचना है। इसमें चार उन्मेष है।

उपर्युक्त उक्ति ''चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम् '' इसकी व्याख्या में कही गयी है कि ''शास्त्र कड़वी औषधि के समान अविद्यारूपी व्याधि का नाश करने वाला होता है।

90. एषु किं काण्डं रामायणे नास्ति?

(a) किष्किन्ध्याकाण्डम् (b) सीताकाण्डम्
(c) बालकाण्डम् (d) युद्धकाण्डम्

उत्तर–(b)

रामायण में सीताकाण्ड का उल्लेख नहीं है।

रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमें 24000 श्लोक है जिस कारण इसे ''चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता'' भी कहते है।

रामायण में सात काण्ड हैं- 1. बालकाण्ड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किन्धाकाण्ड 5. सुन्दरकाण्ड 6. युद्धकाण्ड 7. उत्तरकाण्ड।

– रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है। रामायण को आदिकाव्य की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है।
– रामायण परकालीन कवियों, गद्यलेखकों और नाटककारों के उपजीव्य काव्य के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ।

91. अस्य महापुराणेषु गणनं नास्ति-

(a) पद्मपुराणस्य (b) ब्रह्मपुराणस्य
(c) विष्णुपुराणस्य (d) आदित्यपुराणस्य

उत्तर–(d)

'आदित्यपुराण' की गणना महापुराण के अन्तर्गत नही की जाती है। पुराण से तात्पर्य - प्राचीन है। भारतीय वाङ्यम में कुल 18 महापुराण है। विष्णुपुराण के अनुसार पुराण का लक्षण -
''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।
18 महापुराण निम्न है- 1. मत्स्य 2. मार्कण्डेय, 3. भविष्य 4. भागवत 5. ब्रह्माण्ड 6. ब्रह्मवैवर्त 7. ब्रह्म 8. वामन 9. वराह 10. विष्णु 11. वायु 12. अग्नि 13. नारद 14. पद्म 15. लिङ्ग 16. गरुड़ 17. कूर्म 18. स्कन्द पुराण। इन 18 महापुराणों में आदित्य पुराण नहीं है। अतः आदित्य पुराण सही उत्तर है।

92. एषु किम् उपपुराणं न भवति?

(a) कूर्मपुराणम् (b) साम्बपुराणम्
(c) नृसिंहपुराणम् (d) एकाम्रपुराणम्

उत्तर–(a)

कूर्मपुराणम् उपपुराणं न भवति - अर्थात् कूर्मपुराण उपपुराण नहीं होता है। इसकी गणना महापुराण के अन्तर्गत की जाती है। गरुड़पुराण के अनुसार 18 उपपुराणों की संख्या अग्रलिखित है-

1. सनत्कुमार 2. नारसिंह 3. स्कान्द 4. शिवधर्म 5. आश्चर्य 6. नारदीय 7. कापिल 8. वामन 9. औशनस 10. ब्राह्माण्ड 11. वारुण 12. कालिका 13. माहेश्वर 14. साम्ब 15. सौर 16. पाराशर 17. मारीच 18. भार्गव । इस प्रकार हम देखते हैं कि उपपुराण के अन्तर्गत कूर्म पुराण की गणना नहीं की जाती है।

93. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति-

(a) मौसलपर्व (b) कुन्तीपर्व
(c) शान्तिपर्व (d) उद्योगपर्व

उत्तर–(b)

कुन्तीपर्व महाभारते नास्ति। अर्थात् कुन्तीपर्व महाभारत में नहीं है। महाभारत के रचनाकार कृष्णद्वैपायन वेदव्यास हैं। इनके पिता का नाम पाराशर तथा माता का नाम सत्यवती था। लौकिक साहित्याकाश में रामायण के बाद महाभारत का ही स्थान है। महाभारत के 18 पर्वों में कौरव और पाण्डवों का इतिहास है। 18 पर्वों के नाम अग्रलिखित है- 1. आदिपर्व 2. सभापर्व 3. वन 4. विराट 5. उद्योगपर्व 6. भीष्म 7. द्रोण 8. कर्ण 9. शल्य 10. सौप्तिक 11. स्त्रीपर्व 12. शान्ति 13. अनुशासन 14. आश्वमेधिक 15. आश्रमवासिक 16. मौसल 17. महाप्रस्थानिक 18. स्वर्गारोहण। महाभारत को ''जय'' ''भारत' और ''शतसाहस्री संहिता'' भी कहते हैं।

94. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणामाश्रयः भवति-

(a) आन्वीक्षिकी (b) त्रयी
(c) वार्ता (d) दण्डनीतिः

उत्तर–(a)

''कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः, सर्वधर्माणामाश्रयः आन्वीक्षिकी भवति''।

यह कौटिल्यकृत के अर्थशास्त्र के चार विद्याओं में आन्वीक्षिकी का लक्षण है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

– कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण, 150 अध्याय तथा छः हजार श्लोक हैं।
– कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार 4 विद्याएं क्रमशः 1. आन्वीक्षिकी 2. त्रयी 3. वार्ता और 4. दण्डनीति है।
– आन्वीक्षिकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं के प्रदीप स्वरूप, समस्त कार्यों का साधन और धर्मों का आश्रय स्वीकार किया गया है।

95. मनुसंहितानुसारं राज्ञः सचिवानां संख्या भवति-

(a) 10-12 (b) 7-8
(c) 3-4 (d) 5-6

उत्तर–(b)

मुनसंहितानुसारं राज्ञः सचिवानां संख्या 7-8 भवति, अर्थात् मनुसंहिता के अनुसार राजसचिवों की संख्या 7-8 होती है। मनु के मतानुसार ये सचिव वंशानुक्रमागत, शास्त्र विद्यादि में कुशल, शास्त्रज्ञाता, अनुभवी, दूरदर्शी दृष्टिवाला, शूरवीर और भलीभांति आवश्यकतानुसार परीक्षा लेकर ही नियुक्त किए जाएं -
''मौलाञ्छास्त्रविदः शूरॉल्लँब्धलक्षान् कुलोद्भवान् ।
सचिवानाम् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् ।।

96. ''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तः संज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥''
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम् ?

(a) उद्भिदेन (b) अण्डजेन
(c) जरायुजेन (d) स्वेदजेन

उत्तर–(a)

''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तः संज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥''
इति मनुवचनं उद्भिदेन सम्बद्धम् ।
मनुस्मृति के सृष्टि उत्पत्ति के अन्तर्गत उद्भिज, अण्डज, जरायुज और स्वेदज प्राणियों के सम्बन्ध में चर्चा है।
उद्भिज्ज- बीज से भूमि को फोड़कर या टहनी लगाने से जो वृक्ष उगते हैं उद्भिज्ज कहलाते हैं।
अण्डज- सर्प, पक्षी, जलीय जीव आदि अण्डज होते हैं।
जरायुज- मृग, मुख में ऊपर-नीचे दोनों तरफ के दांत वाले, मनुष्यादि सब जरायुज है।
स्वेदज- मच्छर, खटमल, मक्खी, जूं आदि जो गर्मी और पसीने से उत्पन्न होते हैं स्वेदज कहलाते हैं।

97. श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगः कतमोऽध्यायः ?

(a) द्वितीयोऽध्यायः (b) तृतीयोऽध्यायः
(c) चतुर्थोऽध्यायः (d) पञ्चमोऽध्यायः

उत्तर–(b)

''श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगः तृतीयोऽध्यायः। अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय का नाम कर्मयोग है। महाभारत के भीष्मपर्व में उल्लिखित श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दू सनातन धर्म का पवित्र ग्रन्थ है।
श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 18 अध्याय है जो निम्नलिखित है-
1. अर्जुनविषादयोग 2. सांख्ययोग 3. कर्मयोग 4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग
5. कर्मसंन्यासयोग 6. आत्मसंयमयोग 7. ज्ञानविज्ञानयोग 8. अक्षरब्रह्मयोग 9. राजविद्याराजगुह्ययोग 10. विभूतियोग 11. विश्वरुपदर्शनयोग 12. भक्तियोग 13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग 14. गुणत्रयविभागयोग 15. पुरुषोत्तमयोग 16. देवासुरसम्पद्विभागयोग 17. श्रद्धात्रयविभागयोग 18. मोक्षसंन्यास योग-गीता का सबसे बड़ा 18वां अध्याय है तथा सबसे छोटा 12वां और 15वां है। गीता में कुल 700 श्लोक हैं।

98. ''एपिग्रेफिया इंडिका'' इति पत्रिकायाः प्रकाशनम् केन प्रारब्धम् ?

(a) जेम्स प्रिंसेपमहोदयेन
(b) सर विलियमजोंसमहोदयेन
(c) जे.बर्जेसमहोदयेन
(d) कीलहार्नमहोदयेन

उत्तर–(c)

''एपिग्रेफिया इंडिका'' इति पत्रिकायाः प्रकाशनम् ''जेम्स बर्जेसमहोदयेन प्रारब्धम्। ''अर्थात् एपिग्रेफिया इंडिका पत्रिका का प्रकाशन जेम्स बर्जेस द्वारा प्रारम्भ किया गया। इस पत्रिका को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा 1882-1977 प्रकाशित किया गया।
पहला संस्करण 1882 में बर्जेस महोदय द्वारा प्रकाशित किया गया। 1892 से लेकर 1920 तक यह प्रत्येक त्रैमासिक में एक बार ''द इण्डियन एण्टीक्वरी'' के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित होती रही।

99. 'धम्मलिपि' नाम कस्य लेखेषु प्राप्यते?

(a) अशोकस्य (b) समुद्रगुप्तस्य
(c) खारवेलस्य (d) कनिष्कस्य

उत्तर–(a)

''धम्मलिपि'' नाम अशोकस्य लेखेषु प्राप्यते । अर्थात् धम्मलिपि नाम अशोक के लेखों में प्राप्त होता है। मौर्य सम्राट अशोक के देश के विभिन्न भागों से लगभग 14 अभिलेख प्राप्त हुए है। इसे अशोक ''इयं धम्मलिपि'' के नाम से सम्बोधित किया था। इनके प्रथम शिलालेख में ''इयं धम्मलिपि देवानां पियेना पियदससिना लेखिता'' इस प्रकार उत्कीर्ण हुआ प्राप्त हुआ था।
समुद्रगुप्त के अन्य अभिलेखों में प्रयाग प्रशस्ति का स्तम्भलेख है।

100. भारतवर्षे दानलेखानाम् उत्कीर्णनं बाहुल्येन कस्मिन् धातौ कृतम् ?

(a) लौहधातौ (b) ताम्रधातौ
(c) रजतधातौ (d) स्वर्णधातौ

उत्तर–(b)

भारतवर्षे दानलेखानाम् उत्कीर्णनं बाहुल्येन ताम्रधातौ कृतम् ।'' अर्थात् भारतवर्ष के दानलेखों में ताम्रधातु से अधिकाधिक अंकन प्राप्त होता है। पाषाणयुग के नवपाषाण युग के अन्त के बाद धीरे-धीरे धातुओं का प्रचलन शुरू हो गया था। नवपाषाण काल के बाद ताम्रपाषाणिक युग का आरम्भ होता है। इस काल में तांबा तथा प्रस्तर के हथियार ही प्रयुक्त होते थे। ताम्र के अतिरिक्त अन्य किसी भी धातु का प्रचलन नही था। प्राचीनकाल में राजा-महाराजाओं के द्वारा अनवरत दान दिया जाता था और इस दान को ताम्रधातु पर उत्कीर्ण कर दिया जाता था। उदाहरण के रूप मे हम देखते हैं कि ''हर्ष का बांसखेड़ा का लेख, ''प्रभावती गुप्ता का पुणे का अभिलेख'' तथा ''स्कन्दगुप्त का इन्दौर का अभिलेख'' ताम्रपपत्र में ही लिखा गया है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Jan. 2017

संस्कृत (पेपर-2)

व्याख्यात्मक हल सहित

1. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत–

(a) द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते....।–अग्निदेवता

(b) यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्तय सोमः....।–सोमसूक्तम्

(c) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्....।–रुद्रदेवता

(d) ता वां वस्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।–विष्णुसूक्तम्

उत्तर–(d)

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर् यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः

(ऋ. इन्द्रसूक्त 2.12.13)

अर्थ– इस इन्द्र के लिए द्युलोक और पृथ्वीलोक भी प्रणाम करने के लिए स्वयं झुक जाते हैं। इसके बल से पर्वत भी भय खाते हैं। जो इन्द्र सोम रस का पान करने वाला है, दृढ़ अङ्गों वाला है, वज्र के समान कठोर भुजाओं वाला है और जो हाथ में वज्र को धारण किये हुए है, हे असुरों ! वही इन्द्र है।

विशेष–प्रस्तुत मंत्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त के 13वें मंत्र के रूप में उद्धृत है।
इसके ऋषि गृत्समद, देवता इन्द्र, छन्द त्रिष्टुप् हैं।

2. यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः।।

(इन्द्रसूक्त 2.12.14)

अर्थ–जो सोम का रस निकालने वाले यजमान की रक्षा करता है, जो पुरोडाश आदि हवियों को पकाने वाले यजमान की रक्षा करता है, जो रक्षा करने के लिए स्तुति करने वाले यजमान की रक्षा करता है, जो स्तोत्र पढ़ने वाले या यज्ञ करने वाले यजमान की रक्षा करता है, वृद्धि करने वाले ब्रह्म नामक स्तोत्र जिसको बढ़ाते हैं, सोम रस जिसका बढ़ाने वाला है, वह सब पुरोडाश आदि अन्न जिसके हैं, हे असुरों! वही इन्द्र है।

3. राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे।। (अग्निसूक्त 1.1.8)

अर्थ–प्रकाशमान होते हुये , हिंसारहित यज्ञों के रक्षक, सत्य कर्मफलों को पुनः पुनः प्रकाशित करने वाले और अपने गृह यज्ञशाला में बढ़ने वाले अग्नि के समीप हम जाते हैं।

विशेष–प्रस्तुत मंत्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के 8वें मंत्र के रूप में उद्धृत है। इसके ऋषि मधुच्छन्दा, देवता अग्नि, छन्द गायत्री है।

4. ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि।।

(विष्णुसूक्त (क्र. (1.154.6)

अर्थ–हे यजमान और हे उसकी पत्नी! जहाँ बड़े-बड़े ऊंचे सींगों वाली गौयें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं या अत्यधिक प्रकाश से युक्त हैं, तुम दोनों के उस निवास योग्य स्थानों या लोकों पर जाने के लिए हम कामना करते हैं।

विशेष–प्रस्तुत मंत्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 154 वें सूक्त के 6वें मंत्र के रूप में उद्धृत है। इसके ऋषि-दीर्घतमा, देवता-विष्णु तथा छन्द-त्रिष्टुप् है।

2. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(a) पुराणी देवि युवति पुरन्धिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे.....
(i) इन्द्रसूक्तम्

(b) स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव....
(ii) विष्णुसूक्तम्

(c) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् ....
(iii) उषस्सूक्तम्

(d) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति.....
(iv) अग्निसूक्तम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(b)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)

उत्तर–(a)

A. उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे।।

(उषस् सूक्त-3.61.1)

अर्थ–अन्न से अन्नवती हुई और धन से सम्पन्न हे उषा देवी! तुम प्रकृष्ट ज्ञान वाली होती हुई स्तुति करने वाले के स्तोत्र को ग्रहण करो। सम्पूर्ण विश्व के द्वारा वरणीय, दिव्य गुणों से

सम्पन्न हे उषा देवी! तुम पुरातनी युवती के समान हो अथवा सनातन काल से युवती ही बनी हुई हो, बहुत अधिक बुद्धिशालिनी हो और तुम हमारे यज्ञ आदि नियम व्रत को लक्ष्य करके विचरण करती हो।

विशेष–प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 61वें सूक्त के पहले मंत्र के रूप में उद्धृत है।

इसमें ऋषि-विश्वामित्र, देवता-उषस् , छन्द-त्रिष्टुप् है।

B. स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।। (अग्निसूक्त 1.1.9)

अर्थ–हे अग्नि! तुम हमारे लिए सुप्राप्य बनो, जैसे पिता अपने पुत्र के लिए तथा हमारे कल्याण के लिए हमसे संसक्त रहते हैं।

C. यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्
यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात् ।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो
यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः।। (इन्द्र सूक्त 2.12.2)

अर्थ–जिसने डगमगाती हुई पृथिवी को दृढ़ किया, जिसने विक्षुब्ध पर्वतों को स्थिर किया, जिसने अतिविस्तृत अन्तरिक्ष को नाप लिया, जिसने द्युलोक को स्थिर कर दिया हे लोगों! वह इन्द्र ही है।

D. ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि।।

अर्थ– हे यजमान और हे उसकी पत्नी! जहाँ बड़े बड़े ऊंचे सींगों वाली गौयें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं या अत्यधिक प्रकाश से युक्त हैं, तुम दोनों के उन निवास योग्य स्थानों या लोकों पर जाने के लिये हम कामना करते हैं। यहाँ निश्चय ही महान् जनों से या बहुतों से स्तुति किये जाने वाले और कामनाओं को पूरा करने वाले विष्णु देव का परमपद या सर्वोत्कृष्ट अन्तरिक्ष-लोक अत्यधिक रूप से प्रकाशित हो रहा है।

3. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुराङ्गिरसश्च घोराः'' इति मन्त्रांशो वर्तते–

(a) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (b) सरमा-पणिसूक्ते
(c) यम-यमीसूक्ते (d) पुरूरवा-उर्वशीसूक्ते

उत्तर–(b)

सरमापणि सूक्ते

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुराङ्गिरसश्च घोराः
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः।।
(* 10.18.10)

अर्थ–सरमा ने कहा–मैं न तो भ्रातृत्व को जानती हूँ न स्वसृत्व को, इन्द्र तथा भयानक अङ्गिरस इसको जानते हैं। जब मैं आई (तब) वे गायों की इच्छा करने वाले मालूम पड़े। अतः हे पणियों! किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ)।

विशेष–प्रस्तुत मंत्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 108 वें सूक्त का दसवाँ मंत्र है।

इस मंत्र के देवता सरमा एवं ऋषि सरमा पणि है।

1. विश्वामित्र- नदी सूक्त, ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 33 वें सूक्त के रूप में वर्णित है। जिसके ऋषि विश्वामित्र एवं देवता विपाट् शुतुद्री (नदियां) है। इस सूक्त के मंत्रों में त्रिष्टुप् एवं अनुष्टुप् छन्द है।

2. यम यमी सूक्त, ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 10वें सूक्त के रूप में वर्णित है। जिसके ऋषि **यमयमी** हैं। यम वैवस्वत तथा देवता यम वैवश्वती हैं। छन्द त्रिष्टुप्, स्वर **धैवत** है, मंत्रों की संख्या–14 है।

D. पुरूरवा-उर्वशी सूक्त, ऋग्वेद के दशवें मण्डल के 9वें सूक्त के रूप में वर्णित है। इसके ऋषि पुरूरवा ऐल् और उर्वशी तथा देवता–उर्वशी और पुरूरवा ऐल् हैं। छन्द त्रिष्टुप् स्वर धैवत् है।

4. ''को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्'' इति मंत्रांशो वर्तते–

(a) सरमा-पणिसूक्ते (b) विश्वामित्र-नदीसूक्ते
(c) पुरूरवा-उर्वशीसूक्ते (d) यम-यमीसूक्ते

उत्तर–(c)

पुरूरवा–उर्वशीसूक्ते

– कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन्।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्।।

अर्थ–पुरूरवा ने कहा– हे उर्वशी! तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा! वह मेरे पास आकर रोयेगा। पारस्परिक प्रेम के बन्धन को कौन सद्गृहस्थ तोड़ना स्वीकार करेगा। तुम्हारे श्वसुर के घर में श्रेष्ठ आलोक जगमगा उठा है।

पुरूरवा–उर्वशी सूक्त ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 95वाँ सूक्त है। जिसमें कुल 18 मंत्र हैं। इसके ऋषि ऐल् और उर्वशी, देवता-उर्वशी और पुरूरवा ऐल्, छन्द-त्रिष्टुप् , स्वर-धैवत हैं।

1. सरमा-पणि सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का 108 वाँ सूक्त है। इसमें कुल 11 मंत्र हैं।
इसके ऋषि–पणि-सरमा
देवता–सरमा-पणि
छन्द–त्रिष्टुप्
स्वर–धैवत्

2. विश्वामित्र-नदी (संवाद) ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 33वाँ सूक्त है, जिसमें कुल 13 मंत्र हैं।

इसके ऋषि –विश्वामित्र
देवता–नदियाँ (विपाट् शुतुद्री)
छन्द–पंक्ति, त्रिष्टुप् , उष्णिक्
स्वर–धैवत्

3. यम-यमी-सूक्त ऋग्वेद के दशम् मण्डल का दसवाँ सूक्त है जिसमें कुल 14 मंत्र हैं।
इसके ऋषि–यमी वैवस्वती, यम वैवस्वत
देवता–यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती
छन्द–त्रिष्टुप्
स्वर–धैवत्

5. अधस्तनेषु सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति–

(a) शांखायनब्राह्मणम् (b) कौषीतकिब्राह्मणम्
(c) षड्विंशब्राह्मणम् (d) तैत्तिरीयब्राह्मणम्

उत्तर–(c)

षड्विंशब्राह्मणम्

– सामवेदीय ब्राह्मण–**(कौथुमीय)**

1. तांड्य ब्राह्मण (पंचविंश या प्रौढ)
2. षड्विंश ब्राह्मण (एवं अद्भुत् ब्राह्मण)
3. सामविधान
4. आर्षेय
5. मंत्र (या उपनिषद्)
6. देवताध्याय
7. वंश
8. संहितोपनिषद् ब्राह्मण।

(जैमिनीय)–

1. जैमिनीय (ब्राह्मण)
2. जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण
3. जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण

1. ऋग्वेद के ब्राह्मण–

1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. शांखायन (कौषीतकि) ब्राह्मण

2. शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण–

शतपथ ब्राह्मण

4. कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण–

तैत्तिरीय ब्राह्मण

विशेष–अथर्ववेद के ब्राह्मण–

गोपथ ब्राह्मण

6. ''अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते/ततो भूय इव ते तमो ये उ विद्यायां रताः'' सन्दर्भोऽयं वर्तते–

(a) कठोपनिषदि (b) ईशोपनिषदि
(c) श्वेताश्वतरोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर–(b)

ईशोपनिषदि

– ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का चालीसवाँ अध्याय है। ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मंत्र हैं।

ईशावास्योपनिषद् के प्रमुख मंत्र–

– अन्धंतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततोभूय इव ते तमो या उ विद्यायां ँ रताः।।9।।
जो मनुष्य, अविद्या की उपासना करते हैं, (वे) अज्ञानस्वरूप घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं, (और) जो मनुष्य विद्या में रत् हैं अर्थात् ज्ञान के मिथ्याभिमान में मत्त हैं, वे उससे भी मानों अधिकतम अन्धकार मे प्रवेश करते हैं।

1. कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित उपनिषद् है जिसमें दो अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली है।

3. श्वेताश्वतरोपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है। इसकी वर्णन शैली अतिमनोरम् है। इसमें सांख्य, योग और वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रतिपादन है।
शिव (रूद्र) का परम पुरुष के रूप में वर्णन हैं।

4. बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् तीनों में इसकी चर्चा होती है।
अमृतत्वस्य तु नाऽऽशास्ति वित्तेन (4.5.3)
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो (4.5.6)
असतो मा सद्गमय! तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

7. ''सृष्ट्युत्पत्तिकाल एव वेदानामुत्पत्तिकालः'' इति कः स्वीकरोति?

(a) मेक्डानलः (b) मैक्समूलरः
(c) एम. विन्टरनिट्जः (d) महर्षिदयानन्दः

उत्तर–(d)

महर्षिदयानन्दः–आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामीदयानन्दसरस्वती (1824-1883) आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज-सुधारक एवं आर्य समाज के संस्थापक थे। इनके अनुसार वेदों का उद्भव परमात्मा से सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ।

– सायण के बाद वेदों के भाष्यकारों में महर्षि दयानन्द का नाम प्रमुख है। ऋषि दयानन्द ने वेदों की व्याख्या में प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा को नहीं माना बल्कि आधुनिक परम्परा को माना है।
– वेद के मंत्रों के अर्थों का परिचय देने के लिए सबसे पहले ऋग्वेदभाष्यभूमिका नामक पुस्तक लिखी तथा इसके अतिरिक्त शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा पर भी भाष्य लिखा था।
– वेद अपौरूषेय है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है,।

2. मैक्समूलर, वेदों की तिथि को निश्चित करने की दिशा में सर्वप्रथम मैक्समूलर ने ही प्रयास किया। उन्होंने बुद्ध को अपने काल का आधार माना है। उन्होंने वैदिक साहित्य को 4 भागों में विभाजित है–

छन्दकाल–1200 ई.पू.–1000ई.पू.

मंत्रकाल–1000 ई.पू.—800 ई.पू.

ब्राह्मण काल–800 ई.पू.–600 ई.पू.

सूत्रकाल–600 ई.पू.–400 ई.पू.

3. एम. विन्टरनिट्ज सभी मंत्रों की विस्तृत आलोचना के बाद अपना समन्वयात्मक मत दिया। इन्होंने वेदों का रचना काल 2500 ई.पू. का माना है।

8. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(a) कात्यायनशुल्बसूत्रम् (i) व्याकरणम्

(b) त्रिमुनि (ii) कृष्णयजुर्वेदः

(c) ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्यम् (iii) शुक्लयजुर्वेदः

(d) आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् (iv) सामवेदः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

उत्तर–(b)

कात्यायन शुल्ब सूत्र का सम्बन्ध **शुक्लयजुर्वेद** से है। यह शुक्ल यजुर्वेद का एकमात्र शुल्बसूत्र है।

– 'शुल्ब' का तात्पर्य रस्सी (रज्जु) होता है। इस प्रकार रस्सी द्वारा मापी गई यज्ञवेदी की रचना से सम्बद्ध सूत्रग्रन्थ ही शुल्ब सूत्र कहे जाते हैं।

– अन्य शुल्बसूत्र–कृष्णयजुर्वेद पर–बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, मैत्रायणी, वाराह एवं वाधूल इस प्रकार कृष्ण यजुर्वेद में कुल 6 शुल्बसूत्र पाये जाते हैं।

B. त्रिमुनि के अन्तर्गत पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि आते हैं। पाणिनि ने अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ की रचना की इसी अष्टाध्यायी पर कात्यायन ने वार्तिक लिखा तथा इन दोनों पर पतञ्जलि नें महाभाष्य की रचना की इन सबका सम्बन्ध **व्याकरण** से है।

C. प्रातिशाख्यों के द्वारा वेद के बाहय स्वरूप को निर्दिष्ट किया गया है। भिन्न-भिन्न संहिताओं व शाखाओं से सम्बद्ध भिन्न-भिन्न प्रातिशाख्य ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।

जैसे–ऋग्वेद पर–ऋक्प्रातिशाख्य या ऋक्लक्षण

यजुर्वेद पर–तैत्तिरीय प्रातिशाख्य एवं कात्यायनकृत वाजसनेयि प्रातिशाख्य,

सामवेद पर–**ऋक्तंत्रप्रातिशाख्य** एवं पुष्पसूत्र

तथा अथर्ववेद पर–अथर्ववेद-प्रातिशाख्य एवं शौनिकीया चतुरध्यायिकाप्रातिशाख्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

D. आपस्तम्बगृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है ? यह आपस्तम्ब कल्पसूत्र का एक अंश है।

कृष्णयजुर्वेद के अन्य गृह्यसूत्र–बौधायन, मानव, भरद्वाज काठक, आग्निवेश्य , हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस,।

9. वेदानां विकृतिपाठः कतिविधः ?

(a) त्रिविधः (b) पञ्चविधः

(c) अष्टविधः (d) नवविधः

उत्तर–(c)

वेदानां विकृतिपाठः अष्टविधः

– जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन पाठ के भेद से विकृति पाठों के मुख्य 8 भेद पाये जाते हैं–

जटा माला शिखा रेखा, ध्वजो दण्डो रथो घनः।

अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः, क्रमपूर्वा महर्षिभिः।।

–मधुशिक्षा के अनुसार 'जटापाठ' के द्रष्टा ऋषि व्याडि, मालापाठ के वशिष्ठ, शिखापाठ के भृगु, रेखापाठ के अष्टावक्र, ध्वजपाठ के विश्वामित्र, दण्डपाठ के पराशर हैं।

10. द्विविधो विभाजनक्रमो वर्तते–

(a) अथर्ववेदस्य (b) ऋग्वेदस्य

(c) ईशोपनिषदः (d) कठोपनिषदः

उत्तर–(b)

ऋग्वेदस्य

–ऋग्वेद संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया गया है।

(1) अष्टक क्रम (2) मण्डल क्रम

–अष्टक क्रम में 8 अष्टक, 64अध्याय, 2024 वर्ग और 10,552 मंत्र हैं। इसमें बालखिल्य सूक्तों सहित 1028 सूक्त हैं और 3,97,256 अक्षर हैं।

–मण्डल क्रम–मण्डलक्रम में ऋग्वेद के 10 मण्डलों की गणना की गई है–**इसमें -85 अनुवाक, 1028 सूक्त और 10552 मंत्र है।**

मंडल – ऋषि

1–मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य

2–गृत्समद एवं उनके वंशज

3–विश्वामित्र

4–वामदेव

5–अत्रि

6–भरद्वाज

7–वशिष्ठ

8–कण्व, भृगु, अङ्गिरस्

9–पवमान सोम

10–त्रित, विमद, इन्द्र, श्रद्धा कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी आदि।

1. अथर्ववेद–अथर्ववेद की नौ शाखाओं में केवल 2 ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं–(1) शौनकीय शाखा (2) पैप्पलाद शाखा

3. ईशोपनिषद् –ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है। इसमें मन्त्रों की कुल संख्या 18 है। इस उपनिषद् में सम्भूति-असम्भूति, विद्या-अविद्या का वर्णन है।

4. कठोपनिषद्–कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है। इसमें दो अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली हैं। इसमें यम-नचिकेता के संवाद का वर्णन है।

रथपाठ के कश्यप, तथा घनपाठ के द्रष्टा ऋषि अत्रि हैं।

1. अष्टविकृतियों के अतिरिक्त **त्रिविध** पाठ भी है–

(1) संहिता पाठ

(2) पदपाठ

(3) क्रमपाठ

2. महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में व्याकरण के अध्ययन के पांच मुख्य प्रयोजन बताये हैं–रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम् ।

रक्षा–वेदों की रक्षा के लिए

ऊह–तर्क या विभक्ति परिवर्तन

आगम–ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढना चाहिए

लघु–सहज ढंग से शब्द ज्ञान

असन्देह–शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

4. महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में अथर्ववेद की नौ शाखाओं का वर्णन किया है–नवधाऽऽथर्वणो वेदः।

अथर्ववेद की कुल नौ शाखाओं का उल्लेख किया है। पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद देवदर्श, चारण वैद्या। परन्तु इनमें से दो ही शाखा प्राप्त होती है–शौनकीय शाखा, पैप्पलाद शाखा

11. शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः समुपलभ्यन्ते?

(a) 4 (b) 3

(c) 5 (d) 2

उत्तर–(d)

शुक्लयजुर्वेद की मुख्यतः 2 शाखाएँ हैं–

(1) माध्यन्दिन (वाजसनेयि)

(2) काण्व

– माध्यन्दिन संहिता में 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं। अतएव यजुर्वेद के सम्बन्ध में केवल दो संख्याएँ रहती हैं–एक अध्याय की और दूसरी मंत्र की जैसे ईशावास्यम्. (यजु.40.1) 40 वें अध्याय का दूसरा मंत्र है।

– काण्व संहिता–इसमें भी 40 अध्याय हैं और मंत्रों की संख्या 2086है तथा अनुवाक 328 है।

– ऋग्वेद की शाखा–महर्षि पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद में 21 शाखाओं का उल्लेख किया गया है। किन्तु चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की केवल 5 शाखाएँ प्राप्त होती है–(1) शाकल शाखा (2) बाष्कल शाखा (3) आश्वलायन शाखा (4) शांखायन शाखा (5) माण्डूकायन शाखा

– सामवेद के अनुसार तीन शाखा है–(1) कौथुम शाखा (2) राणायनीय शाखा (3) जैमिनीय शाखा

अथर्ववेद में 9 शाखाएँ प्राप्त होती हैं। अथर्ववेद की केवल दो शाखाएं उपलब्ध हैं- (1) शौनक, (2) पैप्पलाद

12. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(a) पिङ्गलः (i) ज्योतिषम्

(b) शुल्बसूत्राणि (ii) निरुक्तम्

(c) लगधः (iii)छन्दः शास्त्रम्

(d) तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्नर्यं स्वार्थसाधकञ्च (iv) कल्पः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(b)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

उत्तर–(d)

पिङ्गल–छन्द शास्त्रम् वेदांग का प्रतिनिधि ग्रन्थ आचार्य पिंगल प्रणीत 'छन्दसूत्र' है जो संस्कृत साहित्य का पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रंथ में प्रतिपादित समस्त छन्दोविचार 'यमाताराजभानसलगाम्' इस सूत्र में निहित है। सूत्र शैली में निबद्ध यह सम्पूर्ण ग्रन्थ अध्यायों एवं सूत्रों में विभक्त है। जिसमें प्रथम अध्याय से लेकर चौथे अध्याय के 7वें सूत्रपर्यन्त वैदिक छन्दों के लक्षण तथा उसके बाद लौकिक छन्दों के लक्षण दिये गये है।

B. शुल्बसूत्राणि–कल्प सूत्र के 4 भेद होते हैं–

(1) श्रौतसूत्र

(2) धर्म सूत्र

(3) गृह्यसूत्र

(4) शुल्बसूत्र–जिनमें शुल्बसूत्र चतुर्थ भेद के अन्तर्गत आता है। इसमें वेदियों के निर्माण की विधि है।

C. लगध–आचार्य लगध प्रणीत् ज्योतिषशास्त्र वेदाङ्ग का एक प्रतिनिधि ग्रन्थ माना गया है।

D. ''तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च'' यह निरुक्तशास्त्र व्याकरण का पूरक ग्रन्थ है। क्योंकि शब्द के परिज्ञान द्वारा स्वर संस्कार के विधान में व्याकरण की सहायता करता है।

13. महत् किमस्ति?

(a) प्रकृतिः (b) विकृतिः

(c) प्रकृतिविकृती (d) न प्रकृतिः न विकृतिः

उत्तर–(c)

सांख्य कारिकाकार ईश्वरकृष्ण ने पदार्थों का वर्णन इस प्रकार किया है–

''मूल प्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुष ः।।3।।''

अर्थ–कारणरूपा प्रकृति किसी की विकृति (कार्य) नहीं है। महत् इत्यादि सात तत्त्व (महत्तत्व, अहंकार तथा शब्द, स्पर्श, रूप,रस,गन्ध पाँच तन्मात्राएँ) प्रकृति भी है। अर्थात् किसी का कारण एवं कार्य दोनों हैं।
(मन, पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्मेन्द्रियां तथा पाँच महाभूत-इन) सोलह तत्त्वों का समूह (समुदाय) केवल विकार (कार्य) है।
अर्थात् वह किसी का कारण नहीं है। पुरुष न प्रकृति है और न ही विकृति है (अर्थात् न किसी का कारण है न किसी का कार्य है।

* **प्रकृति**–मूल प्रकृत (अविकृति) = 1
* **विकृति**–(विकार) पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच कर्मेन्द्रियां, पाँच महाभूत, मन = 16
* **प्रकृति विकृति**–महत्, अहंकार, पाँच तन्मात्रा = 7
* **पाँच ज्ञानेन्द्रियां**– श्रोत,नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना
* **पाँच कर्मेन्द्रियां**– वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ
* **पाँच महाभूत**– आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी
* **पाँच तन्मात्रा**– शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध

14. 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्' लक्षणमिदं कस्य विद्यते?

(a) शब्दप्रमाणस्य (b) अनुमानप्रमाणस्य
(c) प्रत्यक्षप्रमाणस्य (d) उपमानप्रमाणस्य

उत्तर–(b)

– ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका में प्रमाण का वर्णन इस प्रकार किया है–

प्रतिविषयऽध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् आप्तश्रुतिराप्तवचनं तु।।5।।

अर्थ–विषय के साथ जुड़ी हुई इन्द्रिय पर आश्रित जो बुद्धि का व्यापारात्मक ज्ञान है, वह **प्रत्यक्ष** प्रमाण है। व्याप्य व्यापक भाव तथा पक्षधर्मता के ज्ञानपूर्वक जो ज्ञान होता है। उसे **अनुमान** प्रमाण कहते हैं। वह (पूर्ववत्, शेषवत्, और सामान्यतो दृष्ट) के भेद से तीन प्रकार का होता है। समीचीन (दोषहीन) वाक्य से उत्पन्न होने वाला वाक्यार्थज्ञान **आप्तवचन** होता है।

1. **शब्दप्रमाण का लक्षण–'आप्तश्रुतिराप्तवचनं तु इति'**–आगम प्रमाण युक्त श्रुति अर्थात् वाक्य से उत्पन्न जो वस्तु जैसी है उसको वैसी ही बताने वाला पुरुष आप्त कहलाता है तथा श्रुति का अर्थ–वाक्य से उत्पन्न होने वाला अर्थात् आप्तव्यक्ति द्वारा कहे गये वाक्य से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ही श्रुति है।
2. **अनुमान प्रमाण का लक्षण–तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्'**
अनुमान प्रमाण लिङ्ग और लिङ्गी के ज्ञान पूर्वक होता है। लिङ्ग है व्याप्य (धूमादि हेतु), और लिङ्गी है व्यापक (वह्नयादि)साध्य।
प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण–''प्रतिविषयाऽध्यवसायो दृष्टम्'' विषय के साथ जुड़ी हुई इन्द्रिय पर आश्रित जो बुद्धि व्यापारात्मक ज्ञान है, वह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

15. व्यक्तं कीदृग् न भवति?

(a) हेतुमत् (b) अव्यापि
(c) अनाश्रितम् (d) सावयवम्

उत्तर–(c)

सांख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण के अनुसार व्यक्त और अव्यक्त का लक्षण निम्नवत है–

'हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम् ।।10।।

व्यक्त पदार्थ के गुण–हेतुमद्, अनित्य, अव्यापि, सक्रिय अनेक, आश्रित, लिङ्ग, सावयव तथा परतंत्र होते हैं।
अव्यक्त पदार्थ–इसके विपरीत होते हैं–अहेतुमद्, नित्य, व्यापि, असक्रिय (निष्क्रिय), एक, अनाश्रित, अलिङ्ग, निरवयव, स्वत्रंत होते हैं।

16. ''तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः वेदान्तसारानुसारं लक्षणमिदं कस्यास्ति?

(a) अधिकारिणः (b) विषयस्य
(c) सम्बन्धस्य (d) प्रयोजनस्य

उत्तर–(b)

श्रीमत्सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत् वेदान्तसार में अनुबन्धों की संख्या 4 है–अधिकारी, विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन।

1. अधिकारी–''अधिकारी, तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वे-नापाततोऽधि ..... नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।।''

अर्थ–जिसने इस जन्म में अथवा इससे पूर्व के किसी जन्म में वेदों और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करके समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्य रूप से समझ लिया है तथा काम्य और निषिद्ध कर्मो का परित्याग करके, नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित और उपासना कर्मों का अनुष्ठान करने से, समस्त कल्मषों के दूर हो जाने के कारण, जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया, और जो साधनचतुष्टय सम्पन्न है, ऐसा प्रमाता (प्रमाणों के द्वारा व्यवहार करने में समर्थ) पुरुष (इस ब्रह्मविद्या का) अधिकारी है।

2. विषय–''विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं, तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।
जीव और ब्रह्म की एकता (Complete identity) अर्थात् अभेद (Non-distinclion) ही वेदान्त का विषय है।

सम्बन्ध–''सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः।''
जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्यबोधक भाव ही इस शास्त्र का 'सम्बन्ध' है।
प्रयोजन–''प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।
जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय के विषय में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना और अपने वास्तविक स्वरूप 'आनन्द' की प्राप्ति होना इस ग्रन्थ का प्रयोजन है।

17. 'समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति' उक्तिरियं वेदान्तसारे कस्य सन्दर्भेऽस्ति?

(a) विद्यायाः (b) अज्ञानस्य
(c) अध्यारोपस्य (d) समाधेः

उत्तर–(b)

अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं।''
अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक ज्ञान का विरोधी, भावरूप कुछ है। ऐसा वृद्धजन कहते हैं।

– इस अज्ञान के दो भेद हैं–''इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्य भिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवह्रियते।' यह अज्ञान समष्टि के अभिप्राय से एक और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक कहा जाता है।
– इस अज्ञान की दो शक्तियाँ हैं–(1) आवरण (2) विक्षेप

1. **विद्यायाः**–शुक्लयजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् है। इसके मंत्र संख्या 11 में विद्या और अविद्या की चर्चा इस प्रकार की गई है–
''विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते (ईश. मंत्र।।)
3. **अध्यारोप**–''असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।
कभी भी सर्पभाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान वस्तु पर अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है।
वस्तु है–सच्चिदानन्द अद्वितीय ब्रह्म और अज्ञान से प्रारम्भ होने वाले समस्त जड़पदार्थों का समूह अवस्तु है।
4. **समाधि**–वेदान्तसार में समाधि के दो भेद हैं–
(1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक

* निर्विकल्पक समाधि के 8 भेद हैं–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
* निर्विकल्पक समाधि के 4 विघ्न हैं–लय, विक्षेप, कषाय और रसास्वाद।

18. अज्ञानोपहितं चैतन्यं कीदृशं कारणं भवति?

(a) निमित्तकारणम्
(b) उपादानकारणम्
(c) निमित्तकारणम् उपादानकारणम् च
(d) कीदृशमपि कारणम् न

उत्तर–(c)

अज्ञान की आवरण और विक्षेप नाम की दो शक्तियाँ हैं। इस अज्ञान की उपाधि से उपहित हुआ ईश्वर नाम का चैतन्य समस्त जगत् का कारण है। अब प्रश्न यह उठता है कि ईश्वर जगत् का केवल निमित्त कारण है अथवा निमित्त उपादान दोनों। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए सदानन्द कहते हैं–

''शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधि प्रधानतयोपादानं च भवति।

यथा लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्रधानतया निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति।।17।।

अर्थात्– अपनी आवरण और विक्षेप नाम वाली दो शक्तियों से सम्पन्न अज्ञान से उपहित चैतन्य (अर्थात् ईश्वर) अपनी प्रधानता से (जगत् का) निमित्तकारण और अपनी उपाधि की प्रधानता से उपादान कारण होता है। जिस प्रकार मकड़ी जाले रूपी कार्य के प्रति, अपनी (चैतन्य की) प्रधानता से निमित्त और शरीर की प्रधानता से उपादान कारण होती है।

19. वेदान्तसारानुसारं सूक्ष्मशरीराणि कति-अवयवानि भवन्ति?

(a) षोडशावयवानि (b) पञ्चदशावयवानि
(c) सप्तदशावयवानि (d) त्रयोदशावयवानि

उत्तर–(c)

सूक्ष्मशरीर सत्रह अवयवों वाले लिङ्गशरीर हैं। ये अवयव हैं–

* **पाँच ज्ञानेन्द्रियां**–श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण = 5
* **पाँच कर्मेन्द्रियां**–वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ = 5
* **पञ्च वायु**–प्राण,अपान, व्यान, उदान, समान = 5
बुद्धि + मन = 2

1. तर्कभाषा के अनुसार पदार्थो की संख्या 16 है–प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रह स्थान
नोट–सांख्य के अनुसार सूक्ष्मशरीर/ लिङ्गशरीर की संख्या = 18 है।

20. तर्कसङ्ग्रहानुसारं रूपं कतिविधम्?

(a) पञ्चविधम् (b) सप्तविधम्
(c) षड्विधम् (d) नवविधम्

उत्तर–(b)

अन्नम्भट्टप्रणीत् 'तर्कसंग्रह' न्यायवैशेषिक का प्रकरण ग्रन्थ है।

* तर्कसंग्रह के अनुसार रूप का लक्षण है–
''**चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्**'' अर्थात् चक्षु से ग्राह्य प्रत्यक्ष ही रूप है वह शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश और चित्र के भेद से 7 प्रकार का होता है।
* यह रूप पृथ्वी, जल एवं तेज नामक द्रव्यों में पाया जाता है। पृथ्वी में शुक्लादि सातों प्रकार का रूप पाया जाता है। जल में अभास्वरशुक्ल तथा तेज में भास्वरशुक्ल होता है।

1. **पञ्चविधम्**–तर्कसंग्रह के अनुसार कुल पाँच कर्म हैं–
(1) उत्क्षेपण (ऊपर की ओर फेंकना)
(2) अपक्षेपण (नीचे की ओर फेंकना)
(3) आकुञ्चन (सिकोड़ना या समेटना)
(4) प्रसरण (फैलाना)
(5) गमन (चलना)

3. **षड्विधम्**–तर्कसंग्रह के अनुसार रसों की संख्या 6 है जिसका लक्षण है–**'रसना ग्राह्यो गुणो रसः।'**
अर्थात् रसना इन्द्रिय से जिस गुण का प्रत्यक्ष होता है उसे रस कहते हैं, यह –मधुर, अम्लीय, लवण, कटु, कषाय तथा तिक्त के भेद से 6 प्रकार का होता है।

4. **नवविधम्**–तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्यों की संख्या नव है–
पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।

21. 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' त्यादिपदसमुदायः प्रमाणं कथं न भवति?

(a) योग्यताविरहात् (b) आकाङ्क्षाविरहात्
(c) सान्निध्याभावात् (d) पदसमूहाभावात्

उत्तर–(b)

तर्कभाषाकार केशवमिश्र प्रमाण विवेचन के क्रम में शब्द प्रमाण का लक्षण करते हैं–**आप्तवाक्यं शब्दः'**–अर्थात् आप्त पुरुष के वाक्य को शब्द कहते हैं। अर्थात् जो पदार्थ जैसा है वैसा ही उपदेश करने वाला पुरुष ही आप्त कहा जाता है। इसी क्रम में वाक्य का लक्षण है–'**वाक्यं त्वाकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः'।** आकाङ्क्षा, योग्यता तथा सन्निधि (आसत्ति) वाले पदों का समूह वाक्य होता है–इसलिए गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती ये पद (पदसमूह) वाक्य नहीं है। क्योंकि इनमें परस्पर आकाङ्क्षा का अभाव (विरह) है।

1. इसी प्रकार 'वह्निना सिञ्चति' यह भी वाक्य नही हैं क्योंकि इसमें अग्नि द्वारा सिञ्चन् का कार्य नहीं हो सकता अतः इसमें **योग्यता** का अभाव है। इसलिए यह शब्द भी वाक्य नहीं है।

2. इसी प्रकार प्रहर-प्रहर में एक साथ उच्चरित न किए गये 'गाय को लाओ' इत्यादि पदसमूह वाक्य नहीं होते, क्योंकि वहाँ परस्पर **सन्निधि** का अभाव है।

22. असाधारणधर्मः कस्य लक्षणम्?

(a) लक्षणस्य (b) उद्देशस्य
(c) परीक्षायाः (d) आत्मनः

उत्तर–(a)

तर्कभाषाकार केशवमिश्र के अनुसार न्यायशास्त्र में त्रिविध प्रवृत्ति बतलाई है–
(1) उद्देश्य (2) लक्षण (3) परीक्षा (4) विभाग

1. **उद्देश्य**–'उद्देश्यस्तु नाममात्रेण वस्तुसङ्कीर्तनम्' अर्थात् नाममात्र से पदार्थ का कथन उद्देश्य है।

2. **लक्षण**–'लक्षणन्त्वसाधारणधर्मवचनम्' अर्थात् असाधारण धर्म का कथन लक्षण कहा जाता है, जैसे–**'गोः सास्नादिमत्त्वम्'** अर्थात् गल कम्बल आदि वाली होना ही गौः का लक्षण है।

3. **परीक्षा–लक्षितस्य लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः परीक्षा।'** अर्थात् जिसका लक्षण किया गया है (लक्षित) उसका यह लक्षण ठीक है या नहीं, इस प्रकार विचार करना परीक्षा है।

4. विभाग- न्यावार्तिक के अनुसार इसका अन्तभवि उद्देश्य में ही हो जाता है।

23. तर्कभाषायां 'प्रकरणसम' हेत्वाभासस्य काऽपरा सञ्ज्ञा?

(a) बाधितविषयः (b) सत्प्रतिपक्षः
(c) सव्यभिचारः (d) अनुपसंहारी

उत्तर–(b)

तर्कभाषा केशवमिश्र ने तीन हेतु (अन्वयव्यतिरेकी, केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकि) से भिन्न हेत्वाभास को परिभाषित किया है–
(1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम् (5) कालात्ययापदिष्ट के भेद से यह पाँच प्रकार का होता है।

1. **असिद्ध हेत्वाभास**–असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है–
(i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध

2. **विरुद्ध हेत्वाभास**–'साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः अर्थात् साध्य के अभाव (विपर्यय) से व्याप्त हेतु विरुद्ध हेत्वाभास कहलाता है। जैसे–शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्

3. **सव्यभिचारि (अनैकान्तिक हेत्वाभास)**–'सत्यभिचारोऽनैकान्तिकः।'' अर्थात् सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक (हेत्वाभास) कहलाता है। वह दो प्रकार का होता है–
(1) साधारण अनैकान्तिक
(2) असाधारण अनैकान्तिक

4. **प्रकरणसम**–'प्रकरणसमस्तु स एव यस्य हेतोः साध्य विपरीतसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते।'' अर्थात् जिस हेतु के साध्य के विपरीत अर्थ का साधक दूसरा हेतु विद्यमान होता है। वह प्रकरणसम हेत्वाभास कहलाता है। इसी प्रकरणसम को ही सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास भी कहते हैं।

(5) **बाधितविषय या कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास**–'पक्षे प्रमाणान्तरावधृसाध्याभावों हेतुर्बाधित विषयः कालात्ययापदिष्ट इति चोच्यते।
अर्थात् पक्ष में जिसके साध्य का अभाव अन्य प्रमाण से निश्चित कर दिया जाता है वह हेतु बाधितविषय तथा कालात्ययापदिष्ट कहलाता है।

24. तर्कभाषानुसारं समवायिकारणं किम्भवति?

(a) गुणः (b) द्रव्यम्
(c) कर्म (d) सामान्यम्

उत्तर–(b)

तर्कभाषा के अनुसार कारण तीन प्रकार का होता है–
(1) समवायी कारण (2) असमवायि कारण (3) निमित्तकारण
समवायिकारण–'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्'–
अर्थात जिसमें समवेत कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है उसे ही समवायि कारण कहते हैं। जैसे तन्तु में पट समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, तुरी आदि में नहीं।
पूर्व पक्ष का खण्डन करते हुए केशवमिश्र कहते हैं कि गुणों का आश्रय न होने के कारण (घटादि में) द्रव्यत्व का अभाव होने लगेगा, क्योंकि समवायी कारण द्रव्य होता है–
'समवायिकारणं द्रव्यमिति द्रव्यलक्षणयोगात्'। अर्थात् 'गुणाश्रयो द्रव्यम्' यही द्रव्य का लक्षण माना जाय तो भी कोई दोष नहीं है क्योंकि वह (प्रथम क्षण का घट) योग्यता से गुणों का आश्रय ही है। गुणों की अत्यन्ताभाव का अभाव नहीं है। अतः द्रव्य ही समवायी कारण है।

1. **गुण**–तर्कभाषा के अनुसार गुणों की संख्या 24 है।
2. **कर्म**–चलनात्मकं कर्म–अर्थात् कर्म का स्वरूप है क्रिया। यह 5 प्रकार का होता है।
4. **सामान्य**–अनुवृत्तिप्रत्ययहेतुः सामान्यम् अर्थात समानाकारक प्रतीति का हेतु सामान्य जाति है। वह द्रव्य आदि तीन (द्रव्य गुण, कर्म) में रहती है।

असमवायि कारण–यत्समवायिकारणप्रत्यासन्न मवधृतसामर्थ्यं तदसमवयिकारणम् अर्थात् जो समवायी कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायी कारण है। जैसे–तन्तुसंयोग।
निमित्त कारण–'निमित्तकारणं तदुच्यते यन्नसमवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्।'
अर्थात् जो न समवायी कारण है, न ही असमवायी कारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है। जैसे–वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।

25. 'पठति' इति क्रियापदं कीदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति?

(a) अयोगात्मिकायाः (b) प्रश्लिष्टयोगात्मिकायाः
(c) श्लिष्टयोगात्मिकायाः (d) अश्लिष्टयोगात्मिकायाः

उत्तर–(c)

आकृतिमूलक वर्गीकरण को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया गया है–(i) अयोगात्मक (ii) योगात्मक

(i) **अयोगात्मक** उन भाषाओं को कहते हैं जिसमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थ तत्त्व और सम्बधतत्त्व का संयोग नहीं होता।
(ii) **योगात्मक** भाषाएँ उनको कहते हैं जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग बना रहता है।
अतः योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है–
(1) अश्लिष्ट (प्रत्यय प्रधान) भाषाएँ
(2) श्लिष्ट (विभक्ति-प्रधान) भाषाएँ
(3) प्रश्लिष्ट (समास प्रधान) भाषाएँ
अतः पठति शब्द श्लिष्टयोगात्मक के अन्तर्गत आती है क्योंकि श्लिष्ट योगात्मक की मुख्य भाषा संस्कृत है।

26. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा अस्ति?

(a) भारोपीय-परिवारस्य (b) सेमेटिक-परिवारस्य
(c) सूडानी-परिवारस्य (d) काकेशी-परिवारस्य

उत्तर–(a)

विश्व के भाषा-परिवारों में भारोपीय परिवार का सबसे अधिक महत्व है। भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है। यह Indo-European का अनुवाद है।
यूरोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो वर्गों में विभक्त किया गया है–
(1) शतम् वर्ग (2) केन्तुम् वर्ग

भारोपीय परिवार का विभाजन	
शतम् वर्ग	**केन्तुम् वर्ग**
(1) भारत-ईरानी (आर्य)	(5) ग्रीक
(2) वाल्टो-स्लाविक	(6) केल्टिक
(3) आर्मीनी	(7) जर्मानिक (ट्यूटानिक)
(4) अल्बानी (इलीरी)	(8) इटालिक
	(9) हिट्टाइट
	(10) तोखारी

अतः ग्रीक भाषा भारोपीय परिवार के केन्टुम् वर्ग के अन्तर्गत आती है।

2. विश्व-भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गए हैं।

(1) **यूरेशिया खण्ड**–(1) द्रविण (2) भारोपीय (3) काकेशी (4) बुरुशस्की (5) यूराल-अल्ताई (6) बास्क (7) चीनी (8) अत्युत्तरी (9) जापानी-कोरियाई (10) सामी-हामी (सेमेटिक, हैमेटिक) (10 परिवार)।

(2) **अफ्रीका खण्ड**–(11) सूडानी (12) होतेन्तोत बुशमैनी (13) बान्तू (सामी और हामी भी)–(3 परिवार)

प्रशान्त महासागरीय खण्ड में–(14)–मलय-बहुद्वीपीय (15) पापुई (16) आस्ट्रेलियन (17) दक्षिण पूर्व एशियन; यही 4 परिवार हैं।

अमेरिकाखण्ड–(18) अमेरिकी परिवार

अतः–सेमेटिक परिवार यूरेशिया खण्ड की भाषा है।

3. सुडानी-परिवार, अफ्रीका खण्ड की भाषा है।
4. काकेशी परिवार, यूरेशिया खण्ड की भाषा है।

27. निम्नलिखितासु भाषासु का भाषा 'सतम्' वर्गस्य नास्ति?

(a) संस्कृतभाषा (b) ईरानीभाषा
(c) ग्रीकभाषा (d) फारसीभाषा

उत्तर–(c)

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो वर्गों में बांटा गया है–

(1) शतम् (सतम्) (2) केन्तुम्

इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली-महोदय को है। उन्होंने 1870 ई. में यह मत प्रस्तुत किया कि मूल भारोपीय भाषा की कंठ्य ध्वनियाँ कुछ भाषाओं में कण्ठ्य रह गईं और कुछ भाषाओं में संघर्षी (ऊष्म श् स् ज्) हो गई हैं। इसको स्पष्ट करने के लिए दो प्रतिनिधि भाषाएँ लैटिन और अवेस्ता ली गईं। उदा. के लिए 100 संख्यावाचक शब्द लिया गया। लैटिन भाषा **सौ** को केन्टुम् कहते हैं और अवेस्ता में **सप्तम्,** संस्कृत में शतम्

सभी भारोपीय भाषाओं को इन दो भागों में विभक्त किया गया। उपर्युक्त 10 परिवारों में प्रथम 4 'शतम् वर्ग' और 6 'केन्टुम्' वर्ग में आते हैं–

ईरानी–भारती चैव, बाल्टी-सुस्लाविकी तथा।
अर्मीनी अल्बानी चैताः, शतम्-वर्गे समाश्रिताः।।1।।

इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक केल्टिकी तथा।
हित्ती तोखारिकी चैताः, केन्टुम्-वर्गे प्रकीर्तिताः।।2।।

भारोपीय भाषा

शतम् वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत – शतम्	लैटिन – केन्टुम्
अवेस्ता (ईरानी) – सतम्	ग्रीक – हेक्टोन
फारसी – सद	केल्टिक – केत्
हिन्दी – सौ	तोखारी – कन्ध
रूसी – स्त्रो	गथिक – हुन्ड
लिथुआनियम – स्जिम्तास	जर्मन – हुन्डर्ट
	फ्रेञ्च – से./सेन्ट
	इटालियन – केन्तो

स्पष्टीकरण–उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि शतम् वर्ग की भाषा–संस्कृत, ईरानी (अवेस्ता), फारसी है। जबकि ग्रीक् भाषा केन्तुम् वर्ग की है।

28. अंग्रेजी-भाषायाः सम्बन्धः कया भाषाशाखया अस्ति?

(a) कैल्टिकशाखया (b) जर्मनिकशाखया
(c) इटैलिकशाखया (d) ग्रीकशाखया

उत्तर–(b)

जर्मनिक या ट्यूटॉनिक-का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है–**पूर्वी क्षेत्र**–गाथिक

उत्तरी क्षेत्र–आइसलैण्डिक (आइसलैण्ड में)
नार्वेजियन (नार्वे में)
डेनिश (डेनमार्क)
स्वीडिश (स्वीडन में)

पश्चिमी क्षेत्र–अंग्रेजी (इंग्लैण्ड में)
उच्च जर्मन (दक्षिणी जर्मनी में)
निम्न जर्मन (उत्तरी जर्मनी में)
डच (हालैण्ड में)
फ्लेमिश (बेल्जियम में)

यह भारोपीय परिवार की सबसे अधिक विस्तृत भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा है। इसकी शाखा अंग्रेजी विश्व में फैली हुई है। जर्मन और डच भाषा का साहित्य भी उच्च कोटि का है।

1. **कैल्टिक भाषा**–लगभग 2 हजार वर्ष पहले यूरोप के बहुत बड़े भू-भाग में बोली जाती थी।
3. इटैलिक या रोमान्स वर्ग का क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है–
(1) इटालियन– (इटली, सिसली, कोर्सिका में)
फ्रेंच – फ्रांस
स्पेनिस – स्पेन
रूमानियन – रूमानिया
पुर्तगाली – पुर्तगाल
4. ग्रीक भाषा का क्षेत्र दक्षिणी अल्बानिया और यूगोस्लाविया, बल्गोरिया-टर्की साइप्रस का कुछ भाग है।

29. संस्कृतभाषायां निम्नलिखितेषु स्वरेषु कस्य स्वरस्य दीर्घो नास्ति?

(a) ऋकारस्य (b) अकारस्य
(c) इकारस्य (d) ऌकारस्य

उत्तर–(d)

श्री वरदराजाचार्य ने अपने लघुसिद्धान्त कौमुदी के संज्ञा प्रकरण में स्वरों की चर्चा की है–

अ-इ-उ-ऋ ''एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादश भेदाः''

इस प्रकार अ, इ, उ, ऋ इन 4 वर्गों के 18-18 भेद हुए ''ऌवर्णस्य द्वादश, तस्य दीर्घाभावात्'' ऌ के दीर्घ न होने से 12 भेद होते हैं। ''एचामपि द्वादश, तेषां ह्रस्वाभावात्'' एचो का ह्रस्व नहीं होता इसलिए 12 भेद होते हैं।

स्पष्टीकरण–अतः संस्कृत भाषा के स्वरों में ऌ का दीर्घ नहीं होता।

Note—संस्कृत भाषा के स्वरों में एच-ए, ओ, ऐ, औ का ह्रस्व नहीं होता।

30. अन्त्यादलः पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?

(a) अपृक्तसञ्ज्ञा (b) उपधा-सञ्ज्ञा
(c) टि-सञ्ज्ञा (d) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा

उत्तर–(b)

''अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा''। (1.1.65)
वर्णों के समुदाय में जो अन्तिम वर्ण हो, उससे पूर्व के वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।
यथा–सख् अन् यहाँ अन्त्य अल् नकार है, उससे पूर्व वर्ण अकार है, उसकी उपधा संज्ञा हुई है।

1. **अपृक्त संज्ञा–''अपृक्त एकाल् प्रत्यय :'' (1.2.41)**
 एक अल् रूप जो प्रत्यय, वह अपृक्त संज्ञक हो अर्थात् उसकी अपृक्त संज्ञा होती है।
 यथा–'सखान् स्' यहाँ 'स्' यह प्रत्यय है, और एक अल् रूप है, अतः इसकी अपृक्त संज्ञा हुई।
3. **टि संज्ञा–''अचोऽन्त्यादि टि''। (1.1.64)**
 अचों में जो अन्त्य, वह है आदि में जिस वर्ण के उस समुदाय की टि संज्ञा होती है।
 यथा–मनस् में अन्त्य अच् है नकारोत्तरवर्ती अकार, वह आदि में है 'अस्' इस समुदाय के इसलिए 'अस्' की टि् संज्ञा हुई।
4. **सर्वनामस्थान संज्ञा–''सुड् अनपुंस्कस्य'' (1.1.53)**
 सु, औ, जस, अम्, और औट पाँच वचनों की सर्व सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है, नपुंसक लिङ्ग को छोड़कर।

31. निषेध-विकल्पयोः सञ्ज्ञा का?

(a) अपृक्तसञ्ज्ञा (b) विभाषासञ्ज्ञा
(c) उपधासञ्ज्ञा (d) प्रगृह्यसञ्ज्ञा

उत्तर–(b)

''न वेति विभाषा'' (1.1.43) न का अर्थ है निषेध तथा वा का अर्थ है निषेध तथा विकल्प–इन दो अर्थों की विभाषा संज्ञा होती है।

4. **प्रगृह्य संज्ञा–**
1. **'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृहृयम्' (1.1.11)**
 ईकारान्त, ऊकारान्त, और एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है।
 उदा.–हरी + एतौ = हरी एतौ
2. **'अदसो मात्' (1.1.12)**
 मकारान्त अदस् शब्द से परे ईकार और ऊकार की प्रगृह्य संज्ञा होती है।
 उदा.–अमी + ईशाः = अमी ईशाः
3. **'निपात एकाजनाड्.'**
 आड्. को छोड़कर एक अच् रूप निपात प्रगृह्य संज्ञक् होता है।
 उदा.– इ + इन्द्रः = इ इन्द्रः

32. 'सुडनपुंसकस्ये' ति सूत्रेण का सञ्ज्ञा क्रियते?

(a) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा (b) निष्ठा सञ्ज्ञा
(c) प्रातिपदिकसञ्ज्ञा (d) पदसञ्ज्ञा

उत्तर–(a)

नपुसंकलिङ्ग से भिन्न सु, औ, जस्, अम्, औट्–पाँच वचनों की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

जैसे–राजा में सु राजानाम् में अम्
राजानौ में औ राजानौ में औट्
राजानः में जस् की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

2. **निष्ठा संज्ञा–क्तक्तवतू निष्ठा (1.126)–**
 क्त तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।
 उदा.–मुक्तः में क्त प्रत्यय, भुक्तवान् में क्तवतु प्रत्यय है।
3. **प्रातिपदिक सञ्ज्ञा–**''अर्थवद् अधातुर् अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्'' (1.2.45)
 धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् सार्थक शब्द स्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।
 उदा.–राम शब्द अर्थवान् है, अतः उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई है।
- **कृत्तद्धितसमासाश्र' (1.2.46)**–प्रातिपदिक संज्ञा सूत्र कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितयुक्त और समास की भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है।
 उदा. कृदन्त–कर्ता, हर्ता, कारकः, पाचकः। तद्धित–औपगवः, नाडायनः। समास–राजपुरुषः, चित्रगुः।
4. **पदसंज्ञा–**'सुप्तिङन्तं पदम्' (1.414) सुबन्त् और तिङन्त् की पद संज्ञा होती है।
 उदा.–देवः सुबन्तः तथा पठति तिङन्त
 2. नः क्ये (1.4.15)–पद संज्ञा सूत्र
 3. सिति च (1.4.16) पद संज्ञा सूत्र
 4. स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (1.4.17) पद संज्ञा सूत्र

33. 'अनुविष्णु' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि' इत्यादिसूत्रेण कस्मिन् अर्थेऽव्ययीभावसमासः?

(a) समीपार्थे (b) असम्प्रत्यर्थे
(c) पश्चादर्थे (d) आनुपूर्व्यार्थे

उत्तर–(c)

अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाऽभावाऽत्यया सम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद् यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-संपत्ति-साकल्याऽन्त-वचनेषु। (2.1.6)
1. विभक्ति, 2. समीप, 3. समृद्धि, 4. समृद्धि का नाश, 5. अभाव, 6. नाश, 7. अनुचित, 8. शब्द की अभिव्यक्ति, 9. पश्चात्, 10. यथा, 11. क्रमशः, 12. एकदम, 13. समानता, 14. संपत्ति, 15. सम्पूर्णता और 16. अन्त तक

इन 16 अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।

सामासिक पद		अर्थ
अधिहरि	–	विभक्ति अर्थ में
अधिगोपम्	–	विभक्ति अर्थ में
उपकृष्णम्	–	समीप अर्थ में
सुमद्रम्	–	समृद्धि अर्थ में
दुर्यवनम्	–	अभाव अर्थ में
निर्मक्षिकम्	–	अभाव अर्थ में
अतिहिमम्	–	नाश अर्थ में
अतिनिद्रम्	–	समय उचित नहीं है।
इतिहरि	–	विभक्ति अर्थ में
अनुविष्णु	–	पश्चात् अर्थ में
अनुरूपम्	–	योग्यता अर्थ में
प्रत्यर्थम्	–	वीप्सा अर्थ में
यथाशक्ति	–	उल्लंघन न करना
सहरि	–	सदृश अर्थ में
अनुज्येष्ठम्	–	आनुपूर्व्य अर्थ में
सचक्रम्	–	यौगपद्य अर्थ में
ससखि	–	सादृश्य अर्थ में
सक्षत्रम्	–	सम्पत्ति अर्थ में
सतृणम्	–	सम्पूर्ण अर्थ में
साग्नि	–	अन्त (तक) अर्थ में

स्पष्टीकरण–उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुविष्णु 'पश्चात्' अर्थ में प्रयोग हुआ है।

34. 'व्यूढोरस्कः' इत्यत्र कीदृशः समासः?

(a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः

(c) द्वन्द्वः (d) बहुव्रीहिः

उत्तर–(d)

व्यूढोरस्कः – (विशाल वक्षस्थल वाला)

लौकिक विग्रह – व्यूढम् उरो यस्य

अलौकिक विग्रह – व्यूढ सु उरस् सु

'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से 'व्यूढ सु' सुबन्त का 'उरस् सु' सुबन्त के साथ अन्य पद के अर्थ में बहुव्रीहि समास हुआ है।

आद्गुणः' सूत्र से गुण ओ होकर 'व्यूढोरस्' बना। इस बहुव्रीहि समास के अन्त में 'उरस्' है अतः **'उरः प्रभृतिभ्यः कप्'** सूत्र से समासान्त कप् (क) प्रत्यय होकर व्यढोरस् + क बना। **स्वादिष्वसर्वनामस्थाने'** सूत्र से इसकी पद संज्ञा हुई **'ससजुषोरुः'** सूत्र से स् को रु आदेश होकर 'व्यूढोर रु क' बना। **खरवसानयोर्विसर्जनीयः** से रेफ का विसर्ग होकर-व्यूढोरः क बना **'सोऽपदादौ'** सूत्र से विसर्ग को 'स्' होकर **व्यूढोरस्कः बना।**

1. **अव्ययीभावः**–अव्ययी भावः इस सूत्र का 925 तत्पुरुषः इस आगे आने वाले सूत्र से पूर्व के सूत्रों तक अधिकार है अर्थात् 'तत्पुरुषः' के पूर्व जितने सूत्र समास करते हैं उन सबमें यह सूत्र पहुंचता है। अतः यह **अव्ययीभावाधिकार सूत्र** है।
2. **तत्पुरुषः**–(अधिकार सूत्र)–**'शेषो बहुव्रीहिः' (2.2.23)** इस सूत्र से पहले तक है अर्थात् बहुव्रीहि के पूर्व समास विधान करने वाले सूत्रों में इसका अधिकार है, उनसे जो समास होता है, वह तत्पुरुष होता है।
3. **द्वन्द्वः**–**'चाऽर्थे द्वन्द्वः' (द्वन्द्व समास विधिसूत्रम्)** च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का समास होता है और उसकी द्वन्द्व संज्ञा होती है।

35. 'सर्पिषोऽपि स्याद्' इत्यत्र 'अपि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञा कस्मिन् अर्थे भवति?

(a) सम्भावनाद्योतकतायाम् (b) अन्ववसर्गद्योतकतायाम्

(c) समुच्चयद्योतकतायाम् (d) पदार्थद्योतकतायाम्

उत्तर–(d)

अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु (1.4.96)

अर्थ–पदार्थ (पद का अर्थ) सम्भावना, अन्ववसर्ग, गर्हा, समुच्चय इन अर्थों को द्योतित करने में 'अपि' की कर्म प्रवचनीय संज्ञा होती है।

सर्पिषोऽपि स्यात्–इस उदा. में अपि पदार्थ............ इस नियम में अपि की **पदार्थ अर्थ** में कर्म प्रवचनीय संज्ञा हुई है।

1. **अपि** स्तुयाद् विष्णुम् (वह विष्णु की स्तुति कर सकता है) यहाँ पर अपि शब्द **सम्भावना** अर्थ में द्योतित हुआ है।
2. **अपि स्तुति**–(चाहे स्तुति करो या न करो) यहाँ पर **अन्ववसर्ग** के अर्थ में अपि की कर्म प्रवचीय संज्ञा हुई है।
3. **अपिसिञ्च अपि स्तुहि** (सींचों भी और स्तुति भी करो) यहाँ अपि **समुच्चय** अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है।

Note–धिग् देवदत्तम् अपि स्तुयाद् वृषलम् (निन्दा या तिरस्कार)। यहाँ पर अपि का प्रयोग गर्हा अर्थ में हुआ है।

36. 'अधिकरणवाचिनश्चे' ति सूत्रस्योदाहरणं किं भवति?

(a) राज्ञां मतः

(b) द्विरह्नो भोजनम्

(c) शब्दानामनुशासनमाचार्यस्य

(d) इदम् एषाम् आसितम्

उत्तर–(d)

''इदमेषामासितंशयितं गतं भुक्तं वा''–प्रस्तुत उदा. में आसितं (आस्यते अस्मिन् इति आसितम्) शयितं (शेते अस्मिन् इति शयितम्) इत्यादि में क्त प्रत्यय अधिकरण में हुआ है। इसलिए इनके योग में 'एषाम्' में 'अधिकरण' से षष्ठी-विभक्ति हुई है।

1. **राज्ञां मतः**–क्तस्य च वर्तमाने 2/3/67 सूत्र से वर्तमान अर्थ में कहे हुए 'क्त' प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति का विधान होता है।

37. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(a) भासः (i) मालतीमाधवम्
(b) कालिदासः (ii) मृच्छकटिकम्
(c) भवभूतिः (iii) मालविकाग्निमित्रम्
(d) शूद्रकः (iv) पञ्चरात्रम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

उत्तर–(a)

A. महाकवि भास के द्वारा रचित नाटकों को ट्रावनकोर राज्य से सन् 1909 ई. में महामहोपाध्याय श्री टी. गणपति शास्त्री ने प्राप्त कर उसे प्रकाशित कराया–जिनकी संख्या 13 है–

(क) उदयन कथामूलक–
(1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण
(2) स्वप्नवासवदत्तम्

(ख) महाभारत मूलक–
(3) उरुभंग (4) दूतवाक्य (5) पञ्चरात्र (6) बालचरित्
(7) दूतघटोत्कच (8) कर्णभार (9) मध्यमव्यायोग

(ग) रामायण मूलक–
(10) प्रतिमानाटक (11) अभिषेक नाटक

(घ) कल्पना मूलक–
(12) अविमारक (13) चारुदत्त

B. कालिदास–कालिदास द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या 7 है जिनमें से दो महाकाव्य, दो गीतिकाव्य या खण्डकाव्य, तीन नाटक।

महाकाव्य–रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्
गीतिकाव्य–ऋतुसंहार, मेघदूतम्
नाटक– मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्

C. भवभूति–भवभूति द्वारा रचित तीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं।
(1) मालतीमाधवम्
(2) महावीरचरितम्
(3) उत्तररामचरितम्

D. शूद्रक–शूद्रक द्वारा रचित केवल एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है जो कि प्रकरण है। जिसका नाम मृच्छकटिकम् है। यह 10 अङ्कों में विभक्त है।

38. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम भवति–

(a) श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् (b) नारदगुणकीर्तनम्
(c) कृष्णनारदसम्भाषणम् (d) नारदावतरणम्

उत्तर–(c)

महाकवि माघ द्वारा विरचित शिशुपालवध महाकाव्य में कुल 20 सर्ग है। इसकी गणना वृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है। इसके नायक–श्रीकृष्ण, प्रतिनायक-शिशुपाल हैं।

प्रथम सर्ग में वंशस्थ छन्द तथा 75 श्लोक है।

शिशुपालवध के 20 सर्गों के नाम
प्रथम सर्ग – कृष्ण नारद सम्भाषण
द्वितीय सर्ग – श्री कृष्ण-बलराम और उद्धव मन्त्रणा
तृतीय सर्ग – द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान
चतुर्थ सर्ग – रैवतक पर्वत का वर्णन
पञ्चम् सर्ग – रैवतक पर्वत पर सैन्य शिविर का संस्थापन
षष्ठ सर्ग – षड्ऋतु वर्णन
सप्तम् सर्ग – वन-विहार वर्णन
अष्टम् सर्ग – जलक्रीड़ा वर्णन
नवम् सर्ग – सायंकाल चन्द्रोदय
दशम् सर्ग – पानगोष्ठी वर्णन
एकादश सर्ग – प्रभातवर्णन
द्वादश सर्ग – यमुना नदी वर्णन
त्रयोदश सर्ग – कृष्ण और पाण्डवों का मिलन
चतुर्दश सर्ग – युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का वर्णन
पञ्चदश सर्ग – श्रीकृष्ण की पूजा में शिशुपाल का कोपाग्नि
षोडश सर्ग – शिशुपाल द्वारा प्रेषित दूत का कृष्ण से संवाद
सप्तदश सर्ग – यदुवंश क्षोभवर्णन
अष्टादश सर्ग – संकुलयुद्ध वर्णन
एकोनविंशति सर्ग – द्वन्द्वयुद्ध वर्णन
विंशति सर्ग – शिशुपाल वर्णन

39. सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति?

(a) सप्तमे (b) षष्ठे

(c) पञ्चमे (d) चतुर्थे

उत्तर–(b)

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक कालिदास प्रणीत् 7 अंकों में विभक्त है। यह नाटक महाभारत के आदिपर्व से लिया गया है। इसमें शिव की अष्टमूर्ति की वन्दना की गई है। इसमें अष्टापदी नान्दी है। यह शृङ्गार रस प्रधान है। इसमें दुष्यन्त एवं शकुन्तला के प्रणयकथा का वर्णन किया गया है।

- षष्ठ अंक में ही धीवर वृतान्त का वर्णन मिलता है।
- षष्ठ अंक में प्रवेशक का प्रयोग किया गया है।
- **षष्ठ अंक में वर्णित सानुमती के प्रमुख कथन–**

(1) उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः। गुरुणा कारणेन भवितव्यम्। अर्थ– मनुष्य उत्सव प्रिय होते हैं। अतः (इसे रोकने में) कोई बड़ा कारण होगा।

- **नन्वीद्रशानि तपस्विन्या भागधेयानि।**

अर्थ–उस बेचारी का भाग्य ही ऐसा है।

- **लतासंश्रिता द्रक्ष्यामि तावत् सख्याः प्रतिकृतिम्।**
ततोऽस्याः भर्तुर्बहुमुखमनुरागं निवेदयिष्यामि।।

अर्थ–मैने लता का सहारा लेकर अपनी सखी का चित्र देखती हूँ। तत्पश्चात् उसके पति के विविध प्रकार से प्रकट हुए प्रेम को उसे बताऊँगी।

- **सप्तम अंङ्क** में, राजा का दानवों पर विजय। हेमकूट पर्वत का वर्णन। हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि के आश्रम का वर्णन। दुष्यन्त, शकुन्तला और सर्वदमन तीनों का मारीच ऋषि के आश्रम में एक साथ मिलने का वर्णन है।
- **पञ्चम अंक में** शार्ङ्गरव, शारद्वत और गौतम का शकुन्तला को लेकर हस्तिनापुर में प्रवेश, यज्ञ में विघ्न, शकुन्तला का गर्भिणी होने का वर्णन किया गया है। अंगूठी का मिलना। शचीतीर्थ में अंगूठी के गिरने का पता चलना।
- **चतुर्थ अंक में**–दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को शाप, कण्व का सोमतीर्थ से आगमन, विदाई।

40. आसु कस्याः उल्लेखो मेघदूते नास्ति–

(a) रेवायाः (b) शिप्रायाः

(c) तुङ्गभद्रायाः (d) गन्धवत्याः

उत्तर–(c)

मेघदूत महाकवि कालिदासप्रणीत् खण्डकाव्य है। यह दो भागों में विभक्त है–(१) पूर्वमेघ (2) उत्तरमेघ। पूर्वमेघ में 66 तथा उत्तरमेघ में कुल 55 श्लोक हैं। मेघदूत में मन्दाक्रान्ता छन्द है एवं विप्रलम्भ शृङ्गार रस है। वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण किया गया है।

मेघदूत में प्रमुख नदी–गन्धवती, गम्भीरा, चर्मण्वती, जाह्नवी, निर्विन्ध्या, यमुना, रेखा, वेत्रवती, शिप्रा, सरस्वती।

1. **स्थित्वा तस्मिन् वचनरवधूभुक्तकुञ्जे मुहुर्तुं**
तोयात्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विध्यपादे विशीर्णा
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य।।19।।

वन में विचरण करने वालों की स्त्रियों द्वारा उपभुक्त कुञ्जों वाले उस (आम्रकूट पर्वत) पर क्षणभर ठहरकर जल की वर्षा कर देने से अत्यन्त तीव्र गति वाला होकर उससे आगे के मार्ग को पारकर, पत्थरों के कारण ऊबड़-खाबड़ विन्ध्यांचल की तलहटी में फैली नर्मदा नदी को, हाथी के शरीर पर चित्रकारी को रेखाओं के प्रकारों से बनायी गयी शृङ्गार रेखा के समान देखोगे।

अतः प्रस्तुत श्लोक में रेवा नदी का वर्णन किया गया है।

2. **शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः।** (पूर्व मेघ–32)

शिप्रा नदी का पावन (रति) याचना से मीठे वचन बोलने वाले प्रियतम् के समान, स्त्रियों की सम्भोग की थकान को दूर करता है। अतः प्रस्तुत श्लोक में शिप्रा नदी का वर्णन किया गया है।

4. **भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः सादरं वीक्ष्यमाणः............**
स्नानतिक्तैर्मरुद्भिः (पूर्वमघ-36)

अर्थात् स्वामी के कण्ठ के समान कान्ति वाला है, इस विचार से गुणों द्वारा आदरपूर्वक देखा जाता है। तीनों लोकों के गुरु पार्वती के पति शिव के पवित्र स्थान जाना, कमल पराग से सुगन्धित जल क्रीड़ा में लगी हुई युवतियों के स्नान से सुवासित गन्धवती नदी के वायुओं से कम्पित उद्यान वाला है।

41. मृच्छकटिकम् इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(a) नाटकस्य (b) प्रकरणस्य

(c) व्यायोगस्य (d) समवकारस्य

उत्तर–(b)

शूद्रकप्रणीत् मृच्छकटिकम् रूपक का एक भेद प्रकरण ग्रन्थ हैं। जिसमें 10 अंक हैं। चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक तथा गणिका वसन्तसेना एवं कुलवधू धूता नायिका है। प्रमुख रस शृङ्गार है।

प्रकरण का लक्षण–'भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वर्णिक्
सापाय धर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः।।225।।
अर्थात् 'प्रकरण' वह रूपक विशेष है जिसका वृत्त लौकिक वा कल्पित हुआ करता है। जिसमें शृङ्गार की अभिव्यञ्जना अङ्गी रस के समान हुआ करती है। जिसका नायक विप्र, अमात्य, और वणिक श्रेणी में से कोई एक हो सकता है और जिसमें नायक को 'धीरप्रशान्त' प्रकृति तथा विपरीत परिस्थिति में पड़े रहने पर भी धर्म-अर्थ और काम-परायण रूप में चित्रित किया जाया करता है।

1. **नाटक–''नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धि समन्वितम्।**
नाटक की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध होती है। नाटक के इतिवृत्ति में पाँच सन्धियाँ होती हैं। इसका नायक किसी प्रसिद्ध राजवंश का कोई राजर्षि हो सकता है। इसका नायक धीरोदात्त होता है। इसमें न्यूनतम् अङ्कों की संख्या 5 तथा अधिकतम 10 होती है। नाटक का मुख्य रस शृंगार या वीर होता है, जैसे–अभिज्ञानशाकुन्तलम् स्वप्नवासवदात्तम्

3. **व्यायोग–ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः।**
व्यायोग का कथानक प्रख्यात हुआ करता है। इसमें स्त्री पात्रों की संख्या कम तथा पुरुष पात्रों की संख्या अधिक होती है। इसका नायक कोई प्रसिद्ध पुरुष हुआ करता है। इसमें धीरोदात्त प्रकृति का नायक अपेक्षित है। जैसे–सौगन्धिकाहरण।

4. **समवकार–वृत्तं समवकारे तु ख्यातं देवासुराश्रयम्।**
सन्धयो निर्विशर्शास्तु त्रयोऽङ्कास्तत्र चादिमे।।234
समवकार का कथानक प्रख्यात् अर्थात् पुराणप्रसिद्ध हुआ करता है। इसमें विमर्शसन्धि को छोड़कर सम्पूर्ण सन्धियां हुआ करती है। इसकी रचना तीन अङ्कों में सम्पूर्ण हुआ करती हैं। इसका नायक देवता विषयक धीरोदात्त होता है। जैसे–समुद्रमन्थन–

42. कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति?
(a) प्रथमे (b) द्वितीये
(c) तृतीये (d) चतुर्थे

उत्तर–(c)

मुद्राराक्षस-विशाखदत्त की सर्वाधिक विख्यात व अमर कृति एकमात्र नाटक है। यह 7 अंकों में विभक्त है। इस नाटक का कथानक ऐतिहासिक है। इस नाटक में विदूषक एवं नायिका का सर्वथा अभाव है। नाटक का नायक चाणक्य, जो धीरोदात्तप्रकृति का है। कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को इसका नायक मानते हैं। इस नाटक में मुद्रा (अंगूठी) के द्वारा राक्षस को पराजित करने का उल्लेख कवि ने किया है।

नाटक के सात अंङ्कों का नाम इस प्रकार है–
प्रथम अंङ्क – मुद्रालाभ – 27 श्लोक
द्वितीय अंङ्क – राक्षस विचार – 23 श्लोक
तृतीय अंङ्क – कृतक कलह – 33 श्लोक
चतुर्थ अंङ्क – राक्षस उद्योग – 22 श्लोक
पञ्चम् अंङ्क – राक्षस निकार – 24 श्लोक
षष्ठ अंङ्क – राक्षस निर्वेद – 21 श्लोक
सप्तम अंङ्क – राक्षस निग्रह– 19 श्लोक
Note–तृतीय अंक में ही कौमुदीमहोत्सव का वर्णन भी मिलता है।

43. कालानुसारेण तालिकां चिनुत–
(a) भारविः
(b) भासः
(c) कालिदासः
(d) साहित्यदर्पणकारः विश्वनाथः

(a)	(A)	(B)	(C)	(D)
(b)	(B)	(A)	(C)	(D)
(c)	(C)	(A)	(B)	(D)
(d)	(B)	(C)	(A)	(D)

उत्तर–(d)

ग्रन्थकार– कालक्रम के अनुसार समय
- भास – पंचम् शती या चतुर्थ शती ई.पू.
- कालिदास – प्रथम शताब्दी ई.पू.
- भारवि – पंचम् शती का मध्यकाल
- विश्वनाथ–14वीं शताब्दी

रचनाएँ–भास–प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्, उरुभंग, दूतवाक्यम्, पञ्चरात्रम्, बालचरित, दूतघटोत्कच्, कर्णभार, मध्यमव्यायोग, प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, अविमारक, चारूदत्तम्
कालिदास–रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमेवशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
भारवि–एकमात्र कृति–किरातार्जुनीयम् महाकाव्य।
विश्वनाथ–साहित्यदर्पण, राघवविलास, कुवलयाचरित।

44. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?
(a) चतुर्विधम् (b) पञ्चविधम्
(c) षड्विधम् (d) द्विविधम्

उत्तर–(c)

आचार्य विश्वनाथ अपने साहित्यदर्पण नामक ग्रन्थ के तृतीय परिच्छेद में रसों की संख्या का वर्णन करते हैं–
''शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः
वीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मतः।।3.182।।
हास्य रस–''विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत्।
हास्यो हासस्थायिभावः श्वेतः प्रमथ दैवतः।।3.124।।''

अर्थात् हास्यरस वह रस है जिसमें **'हास'** स्थायिभाव का अभिव्यञ्जन कहा जाया करता है। इसका वर्ण **सफेद है** तथा देवता **प्रमथ है।**
''ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च।
[illegible] ~3.227।।
(1) उत्तम प्रकृतिगत 'स्मित' हास्य
(2) उत्तम प्रकृतिगत 'हसित' हास्य
(3) मध्यम प्रकृतिगत 'विहसित' हास्य
(4) मध्यम प्रकृतिगत 'अवहसित' हास्य
(5) अधम प्रकृतिगत 'अपहसित' हास्य
(6) अद्यम प्रकृतिगत 'अतिहसित' हास्य

1. साहित्यदर्पण के अनुसार वीररस के चार भेद हैं–
(1) दानवीर (2) धर्मवीर
(3) युद्धवीर (4) दयावीर

4. शृङ्गार रस के 2 भेद हैं–
(1) विप्रलम्भ शृङ्गार (2) सम्भोग शृङ्गार
विप्रलम्भ के 4 भेद–
(1) पूर्वराग (2) मान
(3) प्रवास (4) करुण

45. काव्यलक्षणविचारे ''स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्'' इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?
(a) आनन्दवर्धनस्य (b) वामनस्य
(c) मम्मटस्य (d) व्यक्तिविवेककारस्य

उत्तर–(a)

आनन्दवर्द्धन के अनुसार ''काव्यस्यात्मा ध्वनिः'' अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है और उस ध्वनि के वाच्य एवं प्रतीयमान नामक दो भेद होते हैं–
''योऽर्थः सहृदयश्लाघ्यः काव्यात्मा यो व्यवस्थितः।
वाचयप्रतीयमानाख्यौ तस्य भेदावुभौस्मृतौ।।ध्व. 1/2।।
अर्थात् सहृदयों द्वारा जो अर्थ काव्य के आत्मारूप में प्रतिष्ठित है उसके वाच्य और प्रतीयमान दो भेद होते हैं जिसमें वाच्यरूप अर्थ काव्य का आत्मतत्त्व है जिसको ध्वनिकार ने स्वयं ध्वनि के रूप में स्वीकार किया है। अर्थात् प्रतीयमान का अर्थ भी व्यङ्ग्य और ध्वनि का अर्थ भी व्यङ्ग्य ये दोनों बातें परस्पर विरुद्ध कथन के रूप में प्रतिस्थापित हो रही हैं। फिर क्यों ये दोनों बातें काव्य स्वरूप के निरूपण में प्रमाण होने लगा। अतः ध्वनिकार ने जो ध्वनि के दो भेद दिये हैं वह उनका वदतो व्याघात स्ववचन विरोध है।

46. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?
(a) रौद्रः (b) वीरः
(c) भयानकः (d) बीभत्सः

उत्तर–(d)

विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में 10 रस माने हैं–शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत, शान्त, वात्सल्य।
शृङ्गार रस–'स्थायिभावो रतिः श्यामवर्णोऽयं विष्णुदैवतः।
(सा.द. 3.185)
अर्थात् रति जिसका स्थायी भाव है वह शृङ्गार रस है। यह श्याम वर्ण का है। इसके देवता विष्णु हैं।
हास्य–''हास्यो हास स्थायिभावः श्वेतः प्रमथ दैवतः।
(सा.द. 3.214)
अर्थात् हास्य रस का स्थायी भाव-हास्य है।
इसका वर्ण श्वेत (सफेद) तथा देवता प्रमथ हैं।
करुण–धीरैः कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः।
(सा.द. 3.22)
करुण रस का स्थायी भाव शोक, वर्ण-कपोत एवं देवता यम हैं।
रौद्र रस–रौद्रः क्रोधस्थायिभावो रक्तो रूद्राधिदैवतः।
(सा.द. 3.227)
रौद्र रस का स्थायीभाव क्रोध है। इसका वर्ण रक्त एवं देवता रूद्र हैं।
वीर रस–'महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः। (सा.द. 3.32)
वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है।
इसका वर्ण स्वर्ण एवं देवता महेन्द्र हैं।
भयानक–भयानको भयस्थायिभावो भूतादि दैवतः।
(सा.द. 3.235)
भयानक रस का स्थायीभाव भय है। इसका वर्ण कृष्ण है और इसके देवता काल हैं।
वीभत्स–'नीलवर्णो महाकालदैवतोऽयमुदाहृतः
(सा.द. 3.239)
वीभत्स रस का स्थायीभाव जुगुप्सा है।
इसका वर्ण नील है। इसके देवता महाकाल हैं।
अद्‌भुत–अद्‌भुतो विस्मयस्थायिभावो गन्धर्वदैवतः।
पीतवर्णो वस्तु लोकातिगमालम्बनं मतम्।। (सा. दा. 3.242)
अद्‌भुत रस का स्थायी भाव विस्मय, वर्ण पीत, देवता गन्धर्व हैं।
शान्त–शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः।
कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः श्रीनारायणदैवतः।। (सा. द. 3.245)
शान्त रस का स्थायी भाव शम, वर्ण कुन्द पुष्पवत्, देवता श्री नारायण हैं।
वात्सल्य रस–वत्सल का अर्थ प्रेम होता है–**स्थायी वत्सलता स्नेहः पुत्राद्यालम्बनमतम्** (सा.द. 3.51)

47. जतुकर्णीपुत्रः भवति–
(a) भवभूतिः (b) कालिदासः
(c) माघः (d) श्रीहर्षः

उत्तर–(a)

अस्ति खलु तत्रभवान् काश्यपः श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्रः।''

अर्थात् कश्यपगोत्रोत्पन्न श्रीकण्ठ उपाधिधारी, व्याकरण, मीमांसा और न्यायशास्त्र के ज्ञाता, जतुकर्णी के पुत्र माननीय भवभूति नाम के एक महान विद्वान् हैं।

भवभूतिप्रणीत् उत्तररामचरितम् सात अङ्कों का नाटक है। इसमें करूण रस प्रधान है तथा इस नाटक में 12 पदों वाली नान्दी का प्रयोग किया गया है।

2. कालिदास के माता-पिता का नाम अज्ञात है।
3. माघ-प्रभावकचरित् के अनुसार माघ के पिता का नाम दत्तक, पितामह सुप्रभदेव तथा माता का नाम ब्राह्मी था।
   महाकवि की एकमात्र कृति शिशुपालवधम् महाकाव्य हैं, जो बीस सर्गों में विभक्त है।
4. श्रीहर्ष–नैषधीयचरितम् के लेखक श्रीहर्ष अपने ग्रन्थ के सर्गान्त में अपना परिचय देते हुए कहते हैं–
   श्रीहर्ष कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं
   श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्।
   तच्चिन्तामणिमन्त्रचिन्तनकाले शृङ्गारभंग्या महा-
   काव्येचारूणि नैषधीयचरिते सर्गोऽयमादिर्गतः।।नैषध.1/145

48. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत् ?

(a) भरतः (b) सर्वदमनः
(c) गौतमः (d) वातायनः

उत्तर–(b)

अभिज्ञानशाकुन्तल के सातवें अङ्क में मारीच ऋषि दुष्यन्त के पुत्र का जातकर्म संस्कार करने के बाद उसका नामकरण करते हुए कहते हैं–

''रथेनानुद्घातस्तिमितगतिना तीर्णजलधिः
पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधामप्रतिरथः।
इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः।
पुनर्यास्यत्याख्यां भरत इति लोकस्य भरणात्।।''(अभि. 7.33)

अद्वितीय महारथी वह अस्खलित और शान्त गति वाले रथ (विमान) से समुद्रों को पार करके भविष्य में सात द्वीपों से युक्त इस पृथ्वी की विजय करेगा। यहाँ पर जीवों को बलात् वश में करने के कारण इसका नाम **सर्वदमन्** पड़ा था। भविष्य में यह संसार का पालन करेगा, अतः इसका **भरत** नाम पड़ेगा।

3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व के शिष्य का नाम गौतम था।
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वातायन (कंचुकी) राजा का भृत्य था।

49. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति–

(a) समवकारस्य (b) नाटिकायाः
(c) प्रकरणस्य (d) प्रहसनस्य

उत्तर–(b)

आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण के षष्ठ परिच्छेद में रूपकों की गणना करते हुए कहते हैं–

''नाटकमथप्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्क वीथ्य प्रहसनमिति रूपकाणि दश।।6.3।।

अर्थात्–(1) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) व्यायोग (5) समवकार (6) डिम (7) ईहामृग (8) अङ्क (9) वीथी (10) प्रहसन

इसी क्रम में नाट्यविदों ने 10 रूपक के अतिरिक्त 18 उपरूपक की भी गणना की है जो इस प्रकार हैं–

(1) नाटिका (2) त्रोटक (3) गोष्ठी (4) सट्टक (5) नाट्यरासक (6) प्रस्थान (7) उल्लाप्य (8) काव्य (9) प्रेङ्खण (10) रासक (11) संलापक (12) श्रीगादित (13) शिल्पक (14) विलासिका (15) दुर्मल्लिका (16) प्रकरण (17) हल्लीशक (18) भाणिका।

अतः नाटिका की गणना उपरूपक में होती है।

50. एषु गतिसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(a) ऊर्यादिच्विडाचश्च (b) कुगतिप्रादयः
(c) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (d) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

उत्तर–(a)

उर्यादिच्विडाचश्च (1.4.61) गति संज्ञा सूत्र है।
अर्थात् ऊरी आदि, च्विप्रत्ययाऽन्त और डाच्-प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गति संज्ञक होते हैं।
जैसे–ऊरीकृत्य, शुक्लीकृत्य, पटपटाकृत्य

2. **कुगति प्रादयः (2.2.18)** प्राऽऽदि समास सूत्र
   कुशब्द गतिसंज्ञक और प्रआदि समास का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।
   जैसे–कुः-पुरुषः (कुत्सितः पुरुषः) यहां कु शब्द अव्यय का समर्थ सुबन्त पुरुष के साथ समास हुआ है।
3. **तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (3.1.91)** उपपद संज्ञा सूत्र सप्तम्यन्त पद 'कर्मणि' इत्यादि में वाच्यरूप से स्थित जो कुम्भ आदि उसके वाचक पद की उपपद संज्ञा होती है। जैसे–कुम्भकारः (कुम्भं करोतीति कुम्भकारः)
4. **एक विभक्ति चापूर्वनिपाते (1.2.44)** उपर्सजन संज्ञा सूत्र विग्रह में जो नियत विभक्ति हो अर्थात् जिससे एक ही विभक्ति आती हो, उसकी उपसर्जन संज्ञा हो परन्तु उसका पूर्व निपात न हो।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Jan-2017
संस्कृत
पेपर-3

व्याख्यात्मक हल सहित

1. निरुक्तानुसारेण ''अति'' इत्यस्य उपसर्गस्य कोऽर्थः?

(a) निषेधः (b) एकीभावः
(c) पूजा (d) अनादरः

उत्तर-(c)

आचार्य यास्ककृत निरुक्त के प्रथम अध्याय में उपसर्गों की संख्या 22 है। (1) प्र (2) परा (3) अप् (4) सम् (5) अनु (6) अव (7) निस् (8) निर् (9) दुस् (10) दुर् (11) वि (12) आङ् (13) नि (14) अधि (15) अपि (16) अति (17) सु (18) उत् (19) अभि (20) प्रति (21) परि (22) उप्

जिनमें से 'अति' 'सु' **'इत्यभिपूजितार्थे'** अर्थात् अति तथा सु (ये दोनों) उपसर्ग प्रशंसा अथवा अभिपूजित (पूजा) अर्थ में आते हैं।

अन्य प्रमुख उपसर्गों का अर्थ–

(1) अभि = आभिमुख्य या सम्मुख ओर अर्थ में
(2) प्रति = अभि के विपरीत अर्थ में
(3) निर्, दुर् = अति एवं सु के विपरीत अर्थ को कहता है/बाहर
(4) नि, अव = विनिग्रह अर्थ में
[अर्थात् अभिपूजित अर्थ में नीचे, दूर अर्थ में]
(5) उद् = नि, अव के विपरीत अर्थ में/ऊपर अर्थ में
(6) सम् = एकीभाव अर्थ में/अच्छी तरह
(7) वि, अप = सम् के विपरीत अर्थ को कहता है
वि = बिना /अलग अप् = दूर अर्थ में
(8) अनु = सादृश्य तथा पश्चात् (अपरभाव) अर्थ में
(9) अपि = संसर्ग अर्थ में/निकट अर्थ में
(10) उप = वृद्धि अर्थ में/निकट अर्थ में
(11) परि = सर्वतोभाव अर्थ में/चारों ओर अर्थ में
(12) अधि = उपरिभाव अर्थ को बताता है।

2. निरुक्तानुसारेण ''चित्' इत्यस्य निपातस्य अर्थो नास्ति–

(a) प्रतिषेधः (b) उपमा
(c) पूजा (d) अवकुत्सितः

उत्तर-(a)

आचार्य यास्ककृत निरुक्त में निपातों की संख्या तीन (3) हैं–(1) उपमार्थक (2) कर्मोपसंग्रहार्थक (3) पादपूरणार्थक

जिसमें उपमार्थक निपात के चार अर्थ होते हैं–(1) इव (2) न (3) चित् (4) नु

चित् का अर्थ–अनेकार्थक है।

जैसे–(1) आचार्य श्चिदिदं ब्रूयात्–यहां पर चित् का अर्थ पूजा है।
(2) दधिचित् (दही के समान) यहाँ पर चित् का अर्थ उपमा अर्थ में है।
(3) कुल्माषांश्चिदाहर इत्यवकुत्सिते–यहां पर कुल्मांष का अर्थ अवकुत्सित है।

अतः चित्–निपात–उपमा, पूजा, अवकुत्सित तीनों अर्थों में होता है।

3. निरुक्ते अधोलिखितेषु उपधाविकारस्य उदाहरणमस्ति–

(a) प्रत्तम् (b) स्तः
(c) गत्वा (d) राजा

उत्तर-(d)

यास्ककृत निरुक्त के द्वितीय अध्याय के प्रथम पाद में उपधाविकार की चर्चा की गई है।

अर्थ विभक्ति के अनुसार–विभक्तियों में परिवर्तन होता है–

जैसे–

(क) प्रत्तम्, अवत्तम् आदि प्रयोग में धातु का आदि भाग ही शेष रह जाता है।
(ख) आदिलोप–स्तः सन्ति
(ग) अन्तलोप–गत्वा, गत्तम्
(घ) उपधालोप–जग्मतुः, जग्मुः।
(ङ) अथाप्युपधाविकारो भवति–राजा, दण्डी आदि।

अर्थात्–अर्थ परिवर्तन होने के कारण उपधाविकार में–राजा एवं दण्डी दो पदों की चर्चा की गई है।

1. 'प्रत्तम्' शब्द का प्रयोग धातु के आदिभाग के रूप में किया गया है।
2. 'स्तः' शब्द आदिलोप के अन्तर्गत आता है।
3. 'गत्त्वा' शब्द अन्तलोप के अन्तर्गत आता है।

4. ब्राह्मणग्रन्थानां विषयो नास्ति–

(a) छन्दोविवेचनम् (b) पुराकल्पः
(c) विधिः (d) निर्वचनम्

उत्तर-(a)

मीमांसा दर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों की संख्या दस बताई है।

''हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै।।
मीमांसासूत्र, शबरभाष्य 2.18

दस विषय—

1. हेतु = यज्ञ में कार्यों का कारण बतलाना
2. निर्वचन = शब्दों की निरुक्ति बताना
3. निन्दा = यज्ञ में निषिद्ध कर्मों की निन्दा
4. प्रशंसा = यज्ञ में विहित कार्यों की प्रशंसा करना
5. संशय = किसी यज्ञिय कर्म के विषय में उत्पन्न के सन्देह का निवारण
6. विधि = यज्ञीय क्रिया कलाप की विधियों का विशद निरूपण
7. परक्रिया = परार्थक क्रिया, परहित या परोपकार वाले कर्त्तव्यों का विर्णन। इसमें इष्टापूर्त का समावेश है। इष्ट का अर्थ है- विविध याग आदि तथा पूर्त का अर्थ है- धर्मार्थ कार्य । जैसे कूप, तड़ाग धर्मशाला अनाथालय आदि का निर्माण।
8. पुराकल्प = यज्ञ की विभिन्न विधियों के समर्थन में किसी प्राचीन अथवा अर्वाचीन घटनाओं का वर्णन करना।
9. कल्पना = परिस्थिति के अनुसार कार्यों की व्यवस्था करना
10. उपमान = कोई उपमा या उदाहरण देकर वर्ण्य विषय की पुष्टि करना

विशेषः

अतः छन्दोविवेचन की गणना वेदाङ्ग के अन्तर्गत होती है न कि ब्राह्मण ग्रन्थ में।

5. शिक्षावेदाङ्गे गणना नास्ति—

(a) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य (b) ऋक्तन्त्रस्य
(c) पारस्करगृह्यसूत्रस्य (d) नारदशिक्षायाः

उत्तर-(c)

शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं वाजसनेयि और काण्व का यही पारस्कर गृह्यसूत्र ही एकमात्र गृह्यसूत्र है। इसमें 3 काण्ड हैं। प्रत्येक काण्ड का विभाजन कण्डिकाओं में हुआ है। तीनों काण्डों में 51 कण्डिकाएं हैं।

काण्ड 1—होम के सामान्य नियम, विवाह-विधि, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन आदि कर्म किए जाते हैं।

काण्ड 2—चूड़ाकर्म, उपनयन, समावर्तन, पांच महायज्ञ, उपाकर्म अनध्याय, इन्द्रयज्ञ, सीतायज्ञ की गणना की गई है।

काण्ड 3—आग्रहायणी कर्म इत्यादि की गणना की गई है।

1. तैत्तिरीय प्रातिशाख्य कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीय संहिता से सम्बद्ध है। इसके दोनों अध्यायों (खण्डों) में 12-12 अध्याय हैं। इस प्रकार पूरे ग्रन्थ में 24 अध्याय हैं।
2. ऋक्तन्त्र सामवेद की कौथुम शाखा का प्रातिशाख्य है। इसका दूसरा नाम ऋक्तन्त्र व्याकरण भी है। इसमें 5 प्रपाठक और 280 सूत्र हैं।
3. नारदीय शिक्षा का सामवेद के स्वरों में विवेचन किया गया है।

6. ऐतेरेयब्राह्मणस्य शुनः शेपाख्याने शुनःशेपस्य पितुर्नाम अस्ति—

(a) वाजश्रवाः (b) अजीगर्तः
(c) कण्वः (d) सौयवासी

उत्तर-(b)

शुनःशेप एक ऋग्वैदिक व्यक्ति विशेष का नाम है।

इसे हरिश्चन्द्र-उपाख्यान भी कहते हैं।

शुनःशेप ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 7 सूक्तों (24-30) के द्रष्टा हैं।

संक्षिप्त कथा—राजा हरिश्चन्द्र के कोई पुत्र नहीं था। वरुण की उपासना से उसे पुत्र प्राप्त हुआ, परन्तु शर्त यह थी कि वे वरुणदेव को यह पुत्र समर्पित कर देंगे। पुत्र का नाम रोहित रखा गया। राजा वरुण को दिए समर्पण की बात टालते गए। वरुण के शाप से राजा को जलोदर रोग हो गया। बड़ा होने पर पुत्र रोहित वन में चला गया। रोहित घर लौटना चाहता है, परन्तु इन्द्र उसे रोक लेता है। वह 6 वर्ष तक वन में रहा। उसने वरुण-हेतु बलि देने के लिए एक निर्धन एवं लोभी ब्राह्मण अजीगर्त को अपना मध्यम पुत्र शुनःशेप को देने के लिए पटा लिया। वह लोभी अजीगर्त वरुण के यज्ञ में स्वयं अपने पुत्र शुनःशेप की बलि देने के लिए तैयार हो जाता है। शुनःशेप मृत्यु से बचने के लिए वरुण की स्तुति करता है और मृत्यु से बच जाता है।

1. वाजश्रवा—यजुर्वेद कठशाखा से निबद्ध कठोपनिषद् में यम के पिता का नाम वाजश्रवा है।

7. 'वाङ्मनस्' इत्याख्यानं वर्तते

(a) कौषीतकिब्राह्मणे (b) ऐतरेयब्राह्मणे
(c) षड्विंशब्राह्मणे (d) शतपथब्राह्मणे

उत्तर-(d)

शतपथ ब्राह्मण (1/4/5/8-13) में वाणी और मन के संवाद को अत्यन्त ललित शैली में प्रस्तुत किया गया है।

वाङ्मनस् आख्यान की प्रमुख सूक्ति—

1. अथातो मनश्चैव वाचश्च
2. अहमेव त्वच्छ्रेयोऽस्मि न वैमया त्वं किञ्च नानभिगतं वदनि।
3. अहमेव त्वच्छ्रेयस्यास्मि।

4. यंद्वैत्वं वेत्थाहं तद्विज्ञापयाम्यहं संज्ञापयामिति।
1. कौषीतकि ब्राह्मण में ऋत्विजों की गणना की गई है।
2. ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेद से लिया गया है। इसमें मुख्य रूप से सोमयाग का वर्णन किया गया है तथा इसके अन्तर्गत **शुनःशेप आख्यान** का वर्णन किया गया है।
3. षड्विंश ब्राह्मण, सामवेद के कौथुम शाखा से लिया गया है। इसमें इन्द्र अहल्या आख्यान का वर्णन किया गया है।

8. ''यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्'' कठोपनिषदि इदं कथनम् अस्ति–

(a) कण्वस्य (b) यमस्य
(c) नचिकेतसः (d) इन्द्रस्य

उत्तर-(b)

''सर्वे वेदा यत् पदमामनन्ति
तपा मि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्॥'' कठोपनिषद् 2.15

अर्थ–सम्पूर्ण वेद जिस परम पद का बारम्बार प्रतिपादन करते हैं और सम्पूर्ण तप जिस पद का लक्ष्य कराते हैं, अर्थात् वे जिसके साधन हैं, जिसको चाहने वाले साधकगण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह पद तुम्हें संक्षेप से बतलाता हूँ (वह है) ओम्। यह एक अक्षर है।

विशेष–प्रस्तुत मन्त्र में यमराज के मुख से ब्रह्मतत्त्व का वर्णन किया गया है।

1. यजुर्वेद के माध्यन्दिन शाखा के ऋषि कण्व हैं।
2. नचिकेता वाजश्रवा के पुत्र हैं।
3. ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 12वें सूक्त का नाम इन्द्रसूक्त है। जिसमें इन्द्र देवता की स्तुति की गई है।

9. ''तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्'' इत्युद्धरणं वर्तते–

(a) तैत्तिरीयोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि.

उत्तर-(c)

प्रस्तुत मन्त्र केनोपनिषद् के चतुर्थ खण्ड का आठवां मन्त्र है।
केनोपनिषद्–यह उपनिषद् सामवेद के तलवकार ब्राह्मण के अन्तर्गत है। तलवकार उपनिषद् को जैमिनीय उपनिषद् भी कहते हैं। इसमें गुरु-शिष्य संवाद के तत्त्व का विवेचन किया गया है।
यह उपनिषद् 4 खण्डों में विभक्त है।
''तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्'' (केन. 4.8)

अर्थ–उस रहस्यमयी ब्रह्मविद्या की तपस्या, मन-इन्द्रिय का नियन्त्रण, कर्तव्यपालन ये तीनों आधार हैं। वेद उस विद्या के सम्पूर्ण अङ्ग हैं। अर्थात् वेद में उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

प्रमुख सूक्ति–
(1) विद्यया विन्दतेऽमृतम् (केन. 2.4)
(2) अविज्ञातं विजानतां विज्ञामविजानताम् (केन. 2.3)
(3) ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः (केन. 1.1)

1. तैत्तिरीयोपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक के दस अध्याय हैं। उनमें से 7वें, 8वें और 9वें अध्याय को तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है।
2. कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद के कठ शाखा से सम्बन्धित है। इसमें दो अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में 3-3 वल्ली है।
4. वृहदारण्यकोपनिषद् ।

10. अधस्तनेषु स्वरितस्वरस्य भेदोऽस्ति–

(a) क्षैप्रः (b) सन्नतरः
(c) निघातः (d) सन्नतमः

उत्तर-(a)

शौनककृत ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् के तृतीय पटल (स्वर पटल) में स्वरों की गणना की गई है। स्वर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं– (1) उदात्त (2) अनुदात्त (3) स्वरित।

''उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च त्रयः स्वराः।
आयामविश्रम्भाक्षेपैरत उच्यन्ते॥1॥

उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ये तीन स्वर हैं। उदात्तादि स्वर अक्षर पर आश्रित होते हैं तथा पूर्व वाले (दो उदात्त और अनुदात्त) का एक अक्षर में समावेश होने पर स्वरित स्वर (निष्पन्न होता है)। किन्तु अनुदात्त बाद में होने पर और स्वरित पूर्व में होने पर (संधिज अक्षर) स्वरित होता है।

इकारयोश्च प्रश्लेषे क्षैप्राभिनिहितेषु च।
उदात्तपूर्वरूपेषु शाकल्यस्यैवमाचरेत् (ऋक् प्रातिशाख्य 3.13)

अर्थात् दो इकारों की 'प्रश्लिष्ट' सन्धि में 'क्षैप्र' और अभिनिहित में, उदात्त पूर्व में होने पर (और अनुदात्त बाद में होने पर), शाकल्य के मत से ऐसा स्वरित करना चाहिए।
अतः क्षैप्र, प्रश्लिष्ट, अभिनिहित, स्वरित के 3 भेद होते हैं।

11. ऋग्वेदीयशाकलसंहितायां उदात्तस्वरः केन प्रकारेण प्रदर्श्यते?

(a) अ̲ (b) अ।
(c) अ^3 (d) अ [अ चिह्नितम्]

उत्तर-(d)

स्वराङ्कन को भारतीय पद्धति के अनुसार इस प्रकार बांटा गया है–
(1) उदात्त–(कोई चिह्न नहीं)
(2) अनुदात्त-(अक्षर के नीचे पड़ी रेखा (-)
(3) स्वरित–(अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा (।)
लुङ्, लङ्,ऌङ् लकारों में धातु से पहले आने वाले अ और आ उदात्त होते हैं।
उदात्त और अनुदात्त की सन्धि होने पर उदात्त होगा।

12. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञका वर्णा भवन्ति–

(a) अनुनासिकवर्णाः (b) सोष्मवर्णाः
(c) अघोषवर्णाः (d) समानाक्षरवर्णाः

उत्तर-(a)

रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः।।त्रक्प्रातिशाख्य 1.36।।
अनुनासिक (वर्ण) रक्तसंज्ञक होता है।
जैसे–प्रत्येक वर्ग का अन्तिम वर्ण अनुनासिक (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) होता है।
रक्त (अनुनासिक) ह्रस्व स्वर वर्ण को दीर्घ कर देता है।
रक्त वर्ण का व्यञ्जनों के साथ संयोग होने पर स्वरों की अनुनासिकता (रागः) कर दी जाती है।
2. 'युग्मौ सोष्माणौ' (ऋक् 1.13) प्रत्येक वर्ग में सम वर्ण सोष्मवर्ण कहलाते हैं, जैसे-खघ, छझ, ठढ, थध, फभ।
सोष्म संज्ञा प्रत्येक वर्ग के द्वितीय तथा चतुर्थ वर्ण की होती है।
3. 'अन्त्याः' सप्त तेषामघोषाः (ऋक् 1.11)
उन (ऊष्म वर्णों) में अन्तिम सात वर्ण अघोष वर्ण कहलाते हैं।
जैसे–श, ष,स, अः ⨯ क, ⨯ प, अं इति।
4. अष्टौ समानाक्षराण्यादितः (ऋक् 1.1) अ आदि 8 वर्ण समानाक्षर कहलाते हैं।
जैसे–अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ,

13. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत–

(a) ऊ (i) अघोषः
(b) क (ii) सन्ध्यक्षरम्
(c) घ (iii) समानाक्षरम्
(d) ए (iv) सोष्म

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(iv)	(i)
(b)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(c)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

उत्तर-(c)

A. उ, वर्ण समानाक्षर होता है। अष्टौ समानाक्षराण्यादितः आदि में आठ वर्ण समानाक्षर होते हैं। जैसे–अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ।
B. वर्गे वर्गे च प्रथमावघोषौः (ऋक्प्रातिशाख्य 1.12)
प्रत्येक वर्ग में प्रथम दो वर्ण अघोष संज्ञक होते हैं। जैसे-कख, चछ, टठ, तथ, पफ।
C. घ, वर्ण सोष्म होता है। जैसे–खघ,छझ, ठढ, थध,फभ
D. ए, वर्ण सन्ध्यक्षर होता है–''ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि'' (ऋक् 1.2) तत्पश्चात् आगे वाले चार अक्षर सन्ध्यक्षर होते हैं। जैसे-ए, ओ, ऐ, औ। ये 4 वर्ण सन्ध्यक्षर होते हैं।

14. सर्वादौ वेदस्य अंग्रेजीभाषायाम् अनुवादः केन कृतः?

(a) ए वेबरेण (b) विल्सनेन
(c) ब्लूमफिल्डेन (d) ओल्डनबर्गेण

उत्तर-(b)

ऋग्वेद के व्याख्याताओं में अंग्रेज विद्वान् डॉ. विल्सन महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने सम्पूर्ण वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इन्होंने ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद किया, जिसका प्रकाशन 1850 ई. में हुआ। इस अनुवाद में विल्सन ने सायण के भाष्य को प्रमाण माना है।
(4) ओल्डनबर्ग का समय 1854-1920 ई. माना जाता है। मैक्समूलर के समान ओल्डनबर्ग ने भी बौद्ध साहित्य, वेद तथा सूत्र ग्रन्थ जैसे अनेक क्षेत्र में काम किया है। ओल्डनबर्ग का विश्वास था कि वैदिक धर्म अनिवार्यतया भारतीय धर्म है।

15. माध्यन्दिनसंहिताया हिन्दीभाषायाम् अनुवादः सर्वादौ केन कृतः?

(a) अरविन्देन
(b) महर्षिदयानन्देन
(c) श्रीपाददामोदरसातवलेकरेण
(d) स्वामी-विवेकानन्देन

उत्तर-(b)

(3) आर्यसमाजी विद्वान् श्रीपादसातवलेकर ने विभिन्न संहिताओं का सुन्दर संस्करण तथा चारों वेदों का हिन्दी में सुबोधभाष्य दयानन्द विधि से स्वयं प्रकाशित किए।
(1) योगिराज अरविन्द ने वेदों की आध्यात्मिक विधि से रचना की है। दयानन्द सरस्वती एकेश्वरवाद के समर्थक थे। दयानन्द सरस्वती ने माध्यन्दिनसंहिता का तथा ऋग्वेद के सप्तममण्डल के कुछ सूक्तों का भाष्य संस्कृत-हिन्दी में लिखा था। योगिराज अरविन्द ने वेदों पर 'वेद रहस्य' नामक पुस्तक लिखी और इसी पुस्तक पर पं. कपालि शास्त्री ने **सिद्धाञ्जन भाष्य** लिखा।
(2) आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों के मन्त्रभाग को ही वेद कहा है।
(4) स्वामी विवेकानन्द बहुत बड़े दार्शनिक कवि हैं।

16. **अधोनिर्दिष्टेषु 'मनोः स्त्री' इति विग्रहे स्त्रीलिङ्गे अशुद्धः प्रयोगः कः?**

(a) मनायी (b) मनावी
(c) मन्वी (d) मनुः

उत्तर-(c)

मनोरौ वा (4/1/38) मनु शब्द से स्त्रीत्व द्योत्य रहते विकल्प से औकार आदेश (पक्ष में उदात्त 'ऐ' आदेश) तथा ङीप् होते हैं– मनावी-मनायी-मनुः
विशेष–मनु शब्द से स्त्रीत्व द्योत्य रहते विशेष विधान किया जा रहा है। मनु शब्द से ङीप् प्रत्यय होने पर उसके अन्तिम वर्ण के स्थान पर पाक्षिक 'औ' तथा 'ऐ' का आदेश होता है, जैसे– मनु + ऐ, मनु + आय् (यहां पर 'नु' का 'उ' अनुदात्त है) तथा विद्यमान उदात्त 'ऐ' आदेश से प्रभावित होने के कारण मनाय् + ई = मनायी बना। इसी प्रकार मनावी और मनुः शब्द भी सिद्ध होगा। अतः मनोःस्त्री का विग्रह करने पर स्त्री में केवल तीन ही रूप बनता है।

17. **'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायको नियमः कः?**

(a) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्
(b) विभाषाऽकर्मकात्
(c) निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(d) बुध्-युध्-नश्-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्त्रुभ्यो णेः

उत्तर-(d)

बुध्, युध्, नश्, जन्, प्र, द्रु, इत्यादि धातुओं का परस्मैपद बनाने पर निम्न रूप बनता है–
बुध् + परस्मै = बोधयति
युध् + परस्मै = योधयति/युध्यते
नश् + परस्मै = नाशयति
जन् + परस्मै = जनयति
प्र + परस्मै = प्रेरयति
द्रु + परस्मै = द्रुहयति आदि
अकर्मक धातुओं से पश्नम्यन्त अर्थ में पश्नमी विभक्ति के अर्थ में आत्मने पद प्रत्यय होता है।

18. **'वच्' धातोरशब्दसञ्ज्ञायां ण्यत्प्रत्ययान्तं किं रूपम्?**

(a) वाच्यम् (b) वाक्यम्
(c) वच्यम् (d) उच्यम्

उत्तर-(a)

'वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्'–इस धातु के अधिकार में असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग अर्थात् सामान्यसूत्र का बाधक विकल्प से हो। **'स्त्रियां क्तिन्'** इस सूत्र के 'स्त्रियाम्' अधिकार में बताए गए प्रत्ययों को छोड़कर।
इसीलिए 'अचोयत्', ऋहलोर्ण्यत् इत्यादि अपवादों के विषय में सामान्यतव्यत आदि प्रत्यय भी होते हैं–कार्यम्, कर्तव्यम्, करणीयम्, वाच्यम्, वक्तव्यम्, वचनीयम् आदि।
तव्यत् आदि सामान्य प्रत्ययों का व्यत् आदि अपवाद अस्रूप है, अर्थात् भिन्न रूप है। इसलिए वच् धातु से ण्यत् प्रत्यय होकर वाच्यम् बना है।
(2) वच् धातु से क्यप् प्रत्यय लगाने पर = वाक्यम् रूप बनता है।

19. **'एध्' धातोः आशीर्लिङि उत्तमपुरुषैकवचने किं रूपम्?**

(a) एधेय (b) एधिषीय
(c) एधिताहे (d) ऐधिषि

उत्तर-(b)

एधिषीय रूप–एध् धातु आशीर्लिङ्गलकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में बनता है।

आशीर्लिङ्गलकार	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिषीष्ट	एधिषियास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यम पुरुष	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तम पुरुष	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

1. एधेय–एध् धातु विधि लिङ्लकार उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है-

एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
एधेथाः	ऐधेयाथाम्	एधेध्वम्
एधेय	एधेवहि	एधेमहि

3. एधिताहे–एध् धातु लुट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है-

एधिता	एधितारौ	एधितारः
एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

4. ऐधेषि–एध् धातु लुङ्लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है-

ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्
ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

20. **क्रियामात्रविषयं व्यापारनियतञ्च किम्भवति?**

(a) हेतुः (b) करणम्
(c) अधिकरणम् (d) सम्बन्धः

उत्तर-(b)

हेतौ (2/3/23) हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। हेतु और करण में अन्तर यह है कि हेतु द्रव्य आदि (द्रव्य, गुण, क्रिया) सभी कार्यों का साधक होता है तथा व्यापार रहित व व्यापारयुक्त, दोनों प्रकार का होता है।
जबकि करण केवल क्रिया-विषयक होता है तथा केवल व्यापार कारणों में ही होता है।

1. हेतु–द्रव्य, गुण एवं क्रिया तीनों का साधक होता है तथा वह क्रियाविहीन एवं क्रियायुक्त दोनों होता है।
2. करण–कारक होने के नाते यह केवल क्रिया का साधक होता है।
3. सम्बन्ध–'षष्ठी' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है।
4. अधिकरण–सप्तमी विभक्ति होती है।

21. 'लोमन्' शब्दस्य मत्वर्थीयः शुद्धप्रयोगः कः?

(a) लोमनः (b) लोमिकः
(c) लोमिलः (d) लोमशः

उत्तर-(d)

लोमाऽऽदि-पामाऽऽदि-पिच्छाऽऽदिभ्यः शनेलचः (5.2.100)
अर्थात् लोमन् आदियों से श प्रत्यय, पामन् आदियों से न और पिच्छ आदि से इलच् प्रत्यय मत्वर्थ में विकल्प से होता है।
जैसे–लोमशः (लोम वाला लोमानि अस्य सन्ति) यहाँ प्रथमान्त लोमन् शब्द से मत्वर्थ में श प्रत्यय प्रकृतसूत्र से हुआ। तव नकार का **'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य'** से लोप होने पर लोमशः रूप सिद्ध होता है।
नोट–पक्ष में मनुत प्रत्यय होकर–लोमवान् बनता है।

22. 'शास्त्रपूर्वके प्रयोगेऽभ्युदयः.....'–अत्र महाभाष्यानुसारं रिक्तस्थानं पूरयत।

(a) कूपखननन्यायेन (b) तत्तुल्यं वेदशब्देन
(c) स्नातानुलिप्तप्रकारेण (d) पांसूदकन्यायेन

उत्तर-(b)

प्रस्तुत सूक्ति महाभाष्य के प्रथम आह्निक से उद्धृत है–
''शास्त्रपूर्वके प्रयोगेऽभ्युदयस्तत्तुल्यं वेदशब्देन।''
अर्थात्–शास्त्रज्ञानपूर्वक प्रयोग से अभ्युदय होता है। यह वेद शब्द (स्वतः) प्रमाण के समान है। जो व्यक्ति शास्त्र के अनुसार शब्दों का प्रयोग करता है, उसका अभ्युदय होता है। यह बात वेद के समान ही है।
जैसे–**योऽग्निष्टोमेन यजते य उ चैनमेवं वेद'।**
दूसरा, **'तत्तुल्यं वेदशब्देन'** का अर्थ है कि जिस प्रकार वेदवाक्यों का नियमपूर्वक अध्ययन करने वालों को फल प्राप्त होता है, उसी प्रकार जो पुरुष शास्त्रपूर्वक शब्दों का प्रयोग करता है, वह अभ्युदय से युक्त होता है।
1. **'कूपखानकवदेतद्भविष्यति'** कुआं खोदने वाले के समान यह अपशब्द ज्ञान होगा, जैसे कुआं खोदने वाला व्यक्ति कीचड़ और धूल से ढँक जाता है तो भी वह कुएं से बाहर निकलने के बाद उसी कुएं के जल से नहा-धोकर निर्मल होता है। उसी प्रकार शब्द भी शब्दज्ञानी को निर्मल कर देता है।

23. एषु पाठकगुणेषु कः गण्यते?

(a) अक्षरव्यक्तिः (b) गीती
(c) लिखितपाठकः (d) शीघ्री

उत्तर-(a)

पाणिनीय शिक्षा के अनुसार पाठक के छः गुण होते हैं–
''माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः।।पा.शि. 33।।
अर्थात् मधुरता वर्णोच्चारण की सुस्पष्टता, पदों का विभाग, सुस्वरता अथवा उदात्तादि स्वरों का यथावत् उच्चारण, गाम्भीर्य अथवा मन्दगतित्व और लययुक्तता–ये छः पाठक के गुण हैं।
नोट–बाकी तीनों विकल्प अधम पाठक के गुण हैं–
गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।पा.शि. 32।।
अर्थात् गानपूर्वक, शीघ्रता से, शिर को हिलाते हुए, जो जैसा लिखा हो उसे उसी रूप में अथवा हाथ से लिखित स्तोत्र का पाठ करने वाला अर्थ को समझे बिना और अत्यन्त सङ्कुचित शिथिल कण्ठ से पाठ करने वाला छः प्रकार का पाठक अधम पाठक कहलाता है।

24. निम्नलिखितेषु अन्तःस्थेषु को ध्वनिः न गण्यते?

(a) ट् (b) र्
(c) ल् (d) य्

उत्तर-(a)

ट् वर्ण प्रथमतः स्पर्शसंज्ञक होता है तथा इसका उच्चारण स्थान मूर्धा होता है–'ऋटुरषाणां मूर्धा' ऋकार, टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण,ष) ये 9 वर्ण मूर्धा होते हैं।
यणोऽन्तःस्थाः–यणों की अन्तःस्थ संज्ञा होती है। इसके अन्तर्गत– य, र, ल, व ये 4 वर्ण आते हैं।
य, र, ल, व स्वर और व्यञ्जन के बीच होते हैं।
अंग्रेजी में इनको अर्धस्वर कहा जाता है।

25. निम्नलिखितेषु विषमीकरणस्य उदाहरणम् किम् अस्ति?

(a) बभूव (b) ससार
(c) गमिष्यति (d) पपाठ

उत्तर-(a)

विषमीकरण भाषाविज्ञान में ध्वनिपरिवर्तन की दिशाओं के अन्तर्गत आता है। यह समीकरण का उलटा होता है। इसमें दो सम ध्वनियों में से एक ध्वनि विषमरूप धारण करती है। उच्चारण सुविधा और अर्थ की स्पष्टता के लिए ऐसा किया जाता है। जैसे–**ककार–चकार, भुभूषति-बुभूषति, भभूव-बभूव आदि।**
ससार–शब्द भी अल्पप्राणीकरण का उदाहरण है।
गमिष्यति–गम् धातु लृट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप है।
पपाठ–अल्पप्राणीकरण का उदाहरण है।

26. चीनी भाषा कीदृशी भवति?

(a) योगात्मिका (b) अयोगात्मिका
(c) प्रश्लिष्टयोगात्मिका (d) श्लिष्टयोगात्मिका

उत्तर-(b)

अयोगात्मक भाषा उसको कहते हैं, जिसमें अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का कोई संयोग नहीं होता है। इसमें प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। शब्दों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है।
अयोग का अर्थ है–अ (नहीं) और योग का अर्थ–मिलना, जुड़ना अर्थात् जिस भाषा में प्रकृति प्रत्यय आदि का कोई मेल न हो।
इस वर्ग की मुख्य प्रतिनिधि भाषा–चीनी है। इसके अतिरिक्त स्यामी, तिब्बती, बर्मी, अनामी, सूडानी आदि भाषाएं आती हैं।
अयोगात्मक भाषा में व्याकरण नहीं होता। इसमें शब्दक्रम या पदक्रम का विशेष महत्त्व होता है।
1. योगात्मक–योगात्मक भाषाएं उनको कहते हैं, जिनमें प्रकृति प्रत्यय का विशेष प्रयोग होता है यह तीन वर्गों में विभक्त होती है–
(1) अश्लिष्ट (प्रत्यय प्रधान) (2) श्लिष्ट (विभक्ति प्रधान)
(3) प्रश्लिष्ट (समास प्रधान)

27. अर्थसङ्ग्रहे 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे 'वेदप्रतिपाद्यः' इति पदं किमर्थं गृहीतम् ?

(a) द्यूतक्रीडादावतिव्याप्तिवारणाय
(b) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय
(c) श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय
(d) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय

उत्तर-(d)

श्रीलौगाक्षिभास्करप्रणीत् अर्थसङ्ग्रह के धर्मलक्षण प्रकरण में प्रस्तुत वाक्य द्रष्टव्य है–
धर्म का लक्षण–यागादिरेव धर्मः–अर्थात् यागादि क्रियाएं ही धर्म हैं। उसका लक्षण है–
'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' अर्थात् जो वेद द्वारा प्रतिपाद्य हो, प्रयोजन वाला हो और सार्थक हो वह धर्म है। यहां पर धर्म के लक्षण प्रयोजन में अतिव्याप्ति निवारणार्थ वेद प्रतिपाद्य यह पद तथा अनर्थफल वाला होने के कारण अनर्थभूत श्येन आदि भागों में अतिव्याप्ति के निवारण के लिए 'अर्थ' पद लिया गया है।
अतः विकल्प (d) सही है–भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय
(3) अर्थ के निवारण के लिए श्येनयाग किया जाता है।

28. शाब्दीभावनायाःसाध्यं किम्भवति?

(a) लिङ्गादिज्ञानम् (b) अर्थवादज्ञाप्यप्राशस्त्यम्
(c) स्वर्गादिफलम् (d) आर्थीभावना

उत्तर-(d)

शाब्दी भावना–'तत्र पुरुषप्रवृत्यानुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः शाब्दीभावना' अर्थात् पुरुष में प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाला जो व्यापार होता है वही शाब्दीभावना है और यह भावना तीन अंगों–साध्य, साधन और इतिकर्तव्यता की अपेक्षा रखती है। साध्य की आकांक्षा होने पर शाब्दी और आर्थी दोनों के एक ही प्रत्यय(त) से जन्म होने के कारण आगे कहे जाने वाले तीन अंशों से युक्त आर्थीभावना साध्य रूप में अन्वित होती है।
(1) लिङ्ग–विनियोग विधि के छः सहकारी प्रमाणों में से एक है। जिसका लक्षण है–'शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम्'।
(2) अर्थवाद–प्रशंसा अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं–''प्राशस्त्यनिन्दातरपरं वाक्यमर्थवादः।''
इसके तीन भेद होते हैं–
1. गुणवाद 2. अनुवाद 3. भूतार्थवाद

29. तर्कसङ्ग्रहदीपिकादिशा एषु गोर्लक्षणेषु कस्मिन् अतिव्याप्तिदोषः सङ्घटते ?

(a) शृङ्गित्वम् (b) एकशफत्वम्
(c) कपिलत्वम् (d) सास्नादिमत्त्वम्

उत्तर-(a)

शास्त्र की तीन प्रवृत्तियां होती हैं–(1) उद्देश्य (2) लक्षण (3) परीक्षा तथा ये तीनों प्रवृत्तियां तीन प्रकार के दोषों से युक्त होती हैं–(1) असम्भव (2) अव्याप्ति (3) अतिव्याप्ति
तीसरा दोष अतिव्याप्ति है–**अलक्ष्यवृत्तित्वम् अतिव्याप्तिः।** यदि कोई कहे–**'शृङ्गित्वं गोर्लक्षणम्'** सींग वाली होना गाय का लक्षण है यह कथन अतिव्याप्ति दोष से दूषित होने के कारण लक्षण न होगा। यद्यपि गाय के सींग होती हैं। (अतः यहाँ असम्भव दोष नहीं है) सभी गायों के सींग होते हैं, (अतः यहाँ अव्याप्ति दोष नहीं है) तथापि गाय से भिन्न जो भैंस आदि हैं उनके भी तो सींग होती है। यहाँ केवल गौ ही लक्ष्य है, भैंस आदि तो लक्ष्य नहीं है, वे लक्ष्य से भिन्न अलक्ष्य हैं। उनमें भी 'शृङ्गित्व' धर्म विद्यमान है। अतः यहाँ अतिव्याप्ति नामक लक्षण दोष है।
(2) 'एकशफत्वम् गोर्लक्षणम्' यह वाक्य असम्भव नामक दोष से युक्त है।
(3) 'कृष्णत्वम् गोर्लक्षणम्' यह वाक्य अव्याप्ति नामक दोष से युक्त है।
(4) 'सास्नादिमत्त्वम्' यह तीनों दोषों से रहित गौ का असाधारण धर्म का लक्षण है।

30. 'तन्तुसंयोगः पटस्य' कीदृशं कारणम्?

(a) असमवायिकारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) समवाय्यसमवायिकारणम् (d) निमित्तकारणम्

उत्तर-(a)

केशवमिश्र प्रणीत 'तर्कभाषा' के अनुसार कारण तीन प्रकार का होता है–

(1) समवायी (2) असमवायी (3) निमित्त

असमवायि कारण का लक्षण–यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमव धृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा–तन्तुसंयोगः पटस्य असमवायि कारणम्। अर्थात् जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी कार्य के प्रति सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायि कारण है, जैसे–'तन्तुसंयोग' पट का असमवायी कारण है।

(2) 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्' अर्थात् जिनमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है उसे समवायीकारण कहते हैं। जैसे–तन्तु और पट।

(3) निमित्त कारण–यन्न समवायिकारणं, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्। यथा–वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्। अर्थात् जो न समवायीकारण हो न असमवायी कारण हो वही कारण निमित्त कारण कहलाता है।

31. न्यायसिद्धान्तदृशा व्याप्तिः का?

(a) साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्धः
(b) व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः
(c) सिषाधयिषाविरहसहकृतसिद्ध्यभावः
(d) साध्यवत्त्वेन पक्षस्य वचनम्

उत्तर-(a)

श्रीविश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यप्रणीत 'न्यायसिद्धान्त-मुक्तावली' के अनुमान खण्ड में व्याप्ति का लक्षण किया गया है–

''व्याप्तिः साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः'' (का. 68)

साध्य (जो हेतु के द्वारा अनुमेय है, जैसे वह्नि आदि) से युक्त भिन्न वस्तु में हेतु का सम्बन्ध न होना व्याप्ति कहा जाता है।

(2) 'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः परामर्श उच्यते' यह परामर्श का लक्षण है।

(3) सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न विद्यते।
स पक्षस्तत्र वृत्तित्वज्ञानादनुमितिर्भवेत्।। का. 70।।

अर्थात् साधन करने की इच्छा से शून्य सिद्धि जहाँ नहीं है, वह पक्ष कहलाता है। उसमें वृत्तित्व के ज्ञान से अनुमिति होती है।

32. योगसूत्रभाष्ये निर्बीजः समाधिः क उक्तः?

(a) सम्प्रज्ञातसमाधिः (b) असम्प्रज्ञातसमाधिः
(c) सवितर्कसमाधिः (d) सविचारसमाधिः

उत्तर-(b)

(1) योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः (यो.सू. 1/2) चित्तवृत्ति का निरोध ही योग कहलाता है।

(3) निर्बीज समाधि का लक्षण–तस्यापिनिरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः। (समाधि पाद-51)

(2) अर्थात् चित्तवृत्तिनिरोध ही समाधि है यह 2 प्रकार की होती है–(1)सम्प्रज्ञातसमाधि (सबीज) (2) असम्प्रज्ञातसमाधि (निर्बीज)

सम्प्रज्ञातसमाधि के 4 भेद–वितर्कानुगत, विचारानुगत, आनन्दानुगत, अस्मितानुगत

असम्प्रज्ञातसमाधि के 2 भेद–भव प्रत्यय, उपाय प्रत्यय

अतः असम्प्रज्ञातसमाधि को ही निर्बीज समाधि कहते हैं।

33. 'तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्' इति व्यासभाष्येण किं लक्षितम्?

(a) सन्तोषः (b) तपः
(c) स्वाध्यायः (d) ईश्वरप्रणिधानम्

उत्तर-(d)

परम गुरु ईश्वर के प्रति सभी कर्मों का अर्पण करना ही ईश्वर प्रणिधान है। शय्या या आसन पर स्थित या फिर मार्ग पर चलते हुए आत्मनिष्ठ संशयादिवितर्कजालरहित तथा संसार के मूलकारण अज्ञान के नाश पर दृष्टि लगाए हुए योगी अक्षय आनन्द का अनुभविता एवं नित्यमुक्त हो जाता है। उस प्रणवनय तथा ईश्वरप्रणिधान से जीवात्मा के स्वरूप का बोध तथा विघ्नों का निराकरण होता है।

(1) ''सन्तोषः सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा।'' विद्यमान साधनों से अधिक साधनों का संग्रह करने की इच्छा ही सन्तोष है।

(2) तपोद्वन्द्वसहनम्–द्वन्द्वों को सहना ही तप है।

(3) मोक्षशास्त्रों का अध्ययन अथवा ओङ्कार का जप ही स्वाध्याय है- ''स्वाध्यायोमोक्षशास्त्राणामध्ययनम् प्रणवजयो वा''।

34. वाक्यपदीयानुसारं 'स्फोटनादयोः' सम्बन्धः कीदृशो भवति?

(a) तरङ्गप्रतिबिम्बवत् (b) कार्यकारणवत्
(c) स्वाध्यायः (d) धूमाग्निवत्

उत्तर-(a)

वाक्यपदीय संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसे त्रिकांडी भी कहते हैं। वाक्यपदीय, व्याकरण शृंखला का मुख्य ग्रन्थ है। इसके रचयिता नीतिशतक के रचयिता महावैय्याकरण तथा योगिराज भर्तृहरि हैं।

''प्रतिबिम्बं यथान्यत्र स्थितं तोयक्रियावशात्।
तत्प्रवृत्ति इन्वान्वेति स धर्मः स्फोटनादयोः।।''

अर्थात् नाद का स्वभाव तोय क्रिया की भांति अस्थिर है, जबकि स्फोट का स्वभाव तोय (जल) में पड़ने वाले प्रतिबिम्ब की भांति अपने रूप-गुण में अविचाली है।

(2) **कार्यकारण भावेन योग्यभावेन च स्थिताः।**
धर्मे ये प्रत्यये चाङ्गं सम्बन्धाः साध्वसाधुषु।।

अर्थात् धर्म के अङ्ग बनकर या प्रत्यय के अङ्ग बनकर ये सम्बन्ध साधु और असाधु शब्दों में समान रूप से स्थित रहते हैं।

35. वाक्यपदीयानुसारं स्फोटः कीदृशो भवति?

(a) सक्रमः (b) भेदवान्

(c) अक्रमः (d) वर्णानुपूर्वी

उत्तर-(c)

नादस्य क्रमजातत्वान्न पूर्वो न परश्च सः।
अक्रमः क्रमरूपेण भेदवानिव जायते।।
नाद के क्रम से उत्पन्न होने के कारण उसके पूर्वापर की स्थिति को अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। परन्तु अक्रम शब्द ही क्रम रूप में उत्पन्न होने के कारण भेदवान जैसा प्रतीत होता है। बुद्धिस्थ, क्रमरहित स्फोट अक्रम होता है। स्फोटात्मक शब्द कालकृत परिच्छरहित होता है। अतः नित्य है, अक्रम है।
(2) स्फोट भेदवान् प्रतीत होता है—नादस्य क्रम जन्मत्वाद्।
(4) वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः' (महाभाष्य) वर्णो को किसी विशेष क्रम में रखना है अनुपूर्वा अर्थात् समवाय है।

36. 'आनन्दमयोऽभ्यासात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'मयट्' प्रत्यय कस्मिन्नर्थे वर्तते?

(a) विकारार्थे (b) जनकार्थे

(c) कारणार्थे (d) प्राचुर्यार्थे

उत्तर-(d)

ब्रह्मसूत्र वेदान्त दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ है। इसके रचयिता बादरायण हैं। इसे वेदान्तसूत्र, उत्तरमीमांसासूत्र, शारीरक सूत्र और भिक्षुसूत्र आदि अनेक नामों से जाना जाता है।
विकारशब्दन्नेति चेन्न प्राचुर्यात्।।'3।।
सूत्रार्थ—विकार शब्दात् मयट् प्रत्यय विकारार्थ का वाचक है अतः (न) ब्रह्म आनन्दमय शब्द का अर्थ नहीं है। ऐसा कहा जाए तो ठीक नहीं है, अतः प्राचुर्यार्थ कारण कि प्राचुयार्थ में मयट् प्रत्यय का विधान है, अतः आनन्दमय परमात्मा ही है।

37. 'शास्त्रयोनित्वात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'योनिः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः?

(a) जन्म (b) कारणम्

(c) कार्यम् (d) व्याख्या

उत्तर-(b)

ब्रह्मसूत्र अध्याय 1 पाद 1 का तीसरा सूत्र है 'शास्त्रयोनित्वात्' अर्थात् शास्त्र की योनि होने के कारण ब्रह्म सर्वज्ञ है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद इन वेदों के कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड पुराण आदि का मूल कारण ब्रह्म ही है।
शास्त्रंयोनिप्रमाणं यस्मिन् तस्य भावः शास्त्रयोनित्वं तस्मात् शास्त्रयोनित्वात्।''
योनि—कारण, प्रमाण
योनि से यहां कारण अर्थ लिया गया है।
ब्रह्म प्रत्यक्षादि प्रमाणों में नहीं अपितु प्रमाणगम्य हैं।
(1) **जन्माद्यस्य यतः—**अर्थात् जन्म आदि उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय इस जगत् के जिससे होते हैं वह ब्रह्म है। जन्म का अर्थ यहां पर उत्पत्ति से लिया गया है।
(3) **तत्तु समन्वयात्—**अर्थात् जगत् की उत्पत्ति आदि कार्य ब्रह्म ही करता है। अनुमानादि प्रमाणों से इसकी पुष्टि होती है।

38. हेमचन्द्रसूरिः कस्य दर्शनस्य आचार्योऽस्ति?

(a) बौद्धदर्शनस्य (b) जैनदर्शनस्य

(c) चार्वाकदर्शनस्य (d) सांख्यदर्शनस्य

उत्तर-(b)

जैन दर्शन प्राचीन भारतीय दर्शन है। इसमें अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जैन धर्म की मान्यता अनुसार 24 तीर्थंकर समय-समय पर संसार चक्र में फंसे जीवों के कल्याण के लिए उपदेश देने इस धरती पर आते हैं। लगभग छठी शताब्दी ई.पू. के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के द्वारा जैन का पुनरावरण हुआ।
जैन दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त—स्याद्वाद है। प्रमाणों की संख्या जैन दर्शन में 3 मानी गई है—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द।
जैन दर्शन में अपरोक्ष ज्ञान को हेमचन्द्राचार्य ने आत्मा के आविर्भाव की संज्ञा दी है।
(1) बौद्ध दर्शन के प्रमुख आचार्य गौतमबुद्ध को ही मान लिया गया है। इसमें अनात्मवाद सिद्धान्त की प्रतिष्ठा की गई है। इसका प्रमुख सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद है।
(3) चार्वाक—चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को श्रेष्ठ मानता है। इसके आचार्य बृहस्पति हैं।
(4) सांख्यदर्शन के आचार्य कपिलमुनि हैं।

39. सांख्यकारिकानुसारं किं तत्त्वं प्रधानपुरुषयोः अन्तरं विशिनष्टि?

(a) मनः (b) बुद्धिः

(c) अहङ्कारः (d) ज्ञः

उत्तर-(b)

सांख्यकारिका के लेखक ईश्वरकृष्ण के अनुसार बुद्धि का लक्षण है-
अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्त्विकमेतद् रूपं तामसमस्माद विपर्यस्तम्।। (सांख्यकारिका, कारिका-23)
अर्थात् बुद्धि अध्यवसायरूपा है। धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य ये 4 इस बुद्धि के सात्त्विक धर्म हैं और इन सात्विक धर्मों के विरोधी अधर्म, अज्ञान, विषयानुराग और अनैश्वर्य इसके तामस (तमोगुण प्रधान) धर्म हैं।

(1) उभयात्मकमत्र–मनः अर्थात् ग्यारह इन्द्रियों में से मन उभयात्मक है। ज्ञानेन्द्रियों का प्रवर्तक होने से ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय का प्रवर्तक होने से कर्मेन्द्रिय है। अतः यह मन संकल्प करने वाला है।
(3) अभिमानोऽहङ्कारस्तस्माद्–अभिमान ही अहंकार है।
(4) 'न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः' अर्थात् पुरुष न तो प्रकृति है और न ही विकृति है, इसलिए इसे 'ज्ञ' कहा गया है।

40. सांख्यकारिकानुसारं करणम् कतिविधम्

(a) षोडश (b) चतुर्दश
(c) सप्तदश (d) त्रयोदश

उत्तर-(d)

करणं त्रयोदशविधं तदाहरणधारणप्रकाशकम्।
कार्यं च तस्य दशधाहार्यं धार्यं प्रकाश्यं च।।32
अर्थ–करण तेरह प्रकार के हैं। वे अपने-अपने विषय का आहरण, ग्रहण, धारण और प्रकाश करने वाले हैं। उसके द्वारा आहरण किये जाने योग्य और प्रकाशित किए जाने योग्य कार्य दस-दस प्रकार के होते हैं।
(1) तर्कभाषा में पदार्थों की संख्या षोडश बताई गई है।
(3) वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर सप्तदश अवयवों से मिलकर बनती है–
5 ज्ञानेन्द्रिय, 5 कर्मेन्द्रिय, 5 वायु, 1 बुद्धि + 1 मन = 17

41. 'तज्ज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन' उक्तिरियं केन दर्शनेन सम्बद्धा अस्ति?

(a) आर्हतदर्शनेन (b) बौद्धदर्शनेन
(c) रामानुजदर्शनेन (d) न्यायदर्शनेन

उत्तर-(a)

जैन दर्शन के अनुसार मोक्षमार्गसाधनानि त्रिरत्नानि–(1) **सम्यक् दर्शन** (2) **सम्यक् ज्ञान** (3) **सम्यक् चरित्र**। में सम्यक् ज्ञान के अन्तर्गत–मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्याय,कैवल्य ज्ञान इन भेदों की गणना की गई है।
1. मति–मन और इन्द्रिय से सम्बन्धित ज्ञान ही मति है।
2. श्रुति–श्रुतज्ञान के दो भेद हैं–(1) अंगबाह्य (2) श्रुतांगों का समावेश। श्रुतज्ञान को ही निर्विकल्पक ज्ञान भी कहते हैं।
3. अवधि–अवधिज्ञान को सविकल्पक ज्ञान भी कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–(1) परमावधि (2) देशावधि (3) सर्वावधि।
4. मनः पर्याय
5. केवल ज्ञान–यह सर्वश्रेष्ठ और तत्त्वज्ञान कहलाता है।
(2) बौद्ध दर्शन में चित्त के पांच स्कन्ध हैं–(1) रूप (2) विज्ञान (3) वेदना (4) संज्ञा (5) संस्कार
(3) रामानुज विशिष्टाद्वैत वेदान्तदर्शन के प्रवर्तक हैं। ये वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते हैं।
(4) न्याय दर्शन के अनुसार हेत्वाभास के पांच प्रकार हैं–(1) सव्यभिचार (2) विरुद्ध (3) सत्प्रतिपक्ष प्रकरणसम (4) असिद्ध (5) कालात्ययापदिष्ट

42. वेदान्तसारानुसारं निर्विकल्पकस्य समाधेः कति विघ्नाः भवन्ति?

(a) त्रयः (b) पञ्च
(c) चत्वारः (d) षट्

उत्तर-(c)

आचार्य सदानन्दप्रणीत् वेदान्तसार में समाधि के दो भेद होते हैं–
(1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक
निर्विकल्पक समाधि के आठ अङ्ग होते हैं–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
निर्विकल्पक समाधि के 4 विघ्न हैं–
(1) लय–चित्तवृत्तेर्निद्रा
(2) विक्षेप–अन्यावलम्बनम्
(3) कषाय–रागादिवासनया स्तब्धीभावः
(4) रसास्वाद–सविकल्पकानन्दास्वादनम्

43. रुद्रदाम्नः शिलालेखः कुत्र विद्यते?

(a) प्रयागे (b) जूनागढ़े
(c) तक्षशिलायाम् (d) पाटलिपुत्रे

उत्तर-(b)

रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख जूनागढ़ (गुजरात) प्रान्त में अवस्थित है। इसकी भाषा–संस्कृत, लिपि–ब्राह्मी है।
जूनागढ़ अभिलेख में सुदर्शन झील के निर्माण का उल्लेख किया गया है।
सुदर्शन झील के निर्माता 'पुष्यमित्र' हैं।
(1) प्रयाग प्रशस्ति–समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ-लेख है जो कि वर्तमान प्रयागराज में अवस्थित है।
(4) पाटलिपुत्र में आचार्य पाणिनि ने शिक्षा ग्रहण किया था, जो वर्तमान बिहार की राजधानी पटना है।

44. इलाहाबादशिलालेखे अस्य नाम नास्ति–

(a) रुद्रदेवः (b) शशाङ्कः
(c) चन्द्रवर्मा (d) नागदत्तः

उत्तर-(b)

इलाहाबाद शिलालेख मौर्य वंश के सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था। जेम्स प्रिंसेप ने सर्वप्रथम इन शिलालेख को पढ़ा था। स्तम्भ १ से ६ तक के स्तम्भ शिलालेख अशोक के हैं। बाद के शिलालेख जिसे प्रयाग प्रशस्ति के नाम से जाना जाता है। वह चौथी शताब्दी ई.पू. का समुद्रगुप्त का था। पंक्ति २२ में लिखा है कि आर्यावर्त के कई राजाओं जैसे रुद्रदेव, मतिला, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग नागसिन, अच्युत नंदिन और बलवर्मन का जबरन विनाश कर राजाओं को अपना दास बना लिया।

45. खरोष्ठ्यां लिप्यां कस्य अभिलेखाः उपलभ्यन्ते?

(a) अशोकस्य (b) समुद्रगुप्तस्य
(c) कनिष्कस्य (d) खारवेलस्य

उत्तर-(a)

अशोक के अभिलेख में मुख्यतः दो लिपियों का प्रयोग हुआ है–(1) ब्राह्मी (2) खरोष्ठी
अशोक का सम्पूर्ण अभिलेख ब्राह्मी लिपि में ही लिखा गया है, केवल दो को छोड़कर–(1) शाहबाजगढ़ी (2) मानसेहरा
शाहबाजगढ़ी एवं मानसेहरा (पाकिस्तान) के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण हैं।
सर्वप्रथम 1837 ईस्वी में जेम्स प्रिंसेप नामक विद्वान् ने अशोक के अभिलेख को पढ़ने में सफलता हासिल की थी।
(2) समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ-लेख ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
(3) कनिष्क
(4) खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।

46. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(a) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतरा; खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः — (i) रत्नावली
(b) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः — (ii) हर्षचरितम्
(c) श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी — (iii) मुद्राराक्षसम्
(d) गजेन्द्रश्च नरेन्द्रश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः — (iv) किरातार्जुनीयम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

उत्तर-(b)

लोके हि लोहेभ्यः कठिनतायाः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः यदाकृष्टास्तिर्यञ्चोऽप्येवमा चरन्ति इति। (हर्षचरितः पञ्चम् उच्छ्वास)
अर्थ–संसार में लौह पदार्थ से भी बढ़कर कठिन स्नेह का बन्धन होता है, जिसके प्रभाव से आकृष्ट होकर ये पशु-पक्षीगण भी इस प्रकार का आचरण कर डालते हैं।
(B) तथापि जिह्मः सभवज्जिगीषया। तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।
समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्वरं विरोधोऽपिसमंमहात्मभिः।। (किरात. 1/8)

अनुवाद–फिर भी कुटिल स्वभाव वाला वह आपको जीतने की इच्छा से गुणसम्पत्ति के द्वारा निर्मल यश को फैला रहा है। ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला महापुरुषों के साथ विरोध भी दुष्टों के साथ मैत्री सम्बन्ध से कुछ अच्छा ही होता है।
(C) श्रीहर्षनिपुणः कविः परिषदप्येषा गुणग्राहिणी-रत्नावली (रत्नावली)
(D) स्वयमावृत्य भुञ्जाना बलिनोऽपि स्वभावतः।
गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः।। (मुद्राराक्षस 1/16)

47. एषु किं रामायणाश्रितं भवति–

(a) नैषधीचरितम् (b) किरातार्जुनीयम्
(c) शिशुपालवधम् (d) रघुवंशम्

उत्तर-(d)

महाकवि कालिदासप्रणीत् रघुवंशमहाकाव्य 19 सर्गों में विभक्त है। इसमें दिलीप-सुदक्षिणा एवं नन्दिनी नामक गाय का विवेचन किया गया है।
यह महाकाव्य मूलतः रामायण पर आश्रित है।
रामायण आश्रित प्रमुख ग्रन्थ–रावणवध, रामचरित, रामायणमंजरी, रघुवंश, जानकीहरण, महावीरचरित, उत्तररामचरित, बालरामायण, कुन्दमाला आदि।
(1) श्रीहर्षप्रणीत् नैषधीयचरितम् महाभारत के वनपर्व पर आश्रित एक महाकाव्य है, जो कि 22 सर्गों में विभक्त है।
(2) किरातार्जुनीयम् महाकाव्य भारविप्रणीत् महाभारत के वनपर्व पर आश्रित 18 सर्गों में विभक्त एक महाकाव्य है।
(3) महाकवि माघप्रणीत् शिशुपालवध महाकाव्य महाभारत के सभापर्व पर आश्रित है। इसमें 20 सर्ग हैं।

48. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति–

(a) द्रोणपर्व (b) भीष्मपर्व
(c) युधिष्ठिरपर्व (d) शल्यपर्व

उत्तर-(c)

व्यास प्रणीत् महाभारत में कुल 18 पर्व हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं–(1) आदि पर्व, (2) सभा पर्व, (3) वन पर्व, (4) विराट पर्व, (5) उद्योग पर्व, (6) भीष्म पर्व, (7) द्रोण पर्व, (8) कर्ण पर्व (9) शल्य पर्व (10) सौप्तिक पर्व, (11) स्त्री पर्व, (12) शान्ति पर्व, (13) अनुशासन पर्व, (14) आश्वमेधिक पर्व, (15) आश्रमवासिक पर्व, (16) मौसल पर्व (17) महाप्रस्थानिक पर्व, (18) स्वर्गारोहण पर्व

49. महाभारताश्रितं न भवति–

(a) वेणीसंहारम् (b) दूतवाक्यम्
(c) मध्यमव्यायोगः (d) अभिषेकनाटकम्

उत्तर-(d)

अभिषेकनाटक भासप्रणीत् एक रामायण आश्रित नाटक है। महाभारत आश्रित भासकृत नाटक–(1) दूतघटोत्कच (2) दूतवाक्य (3) कर्णभार (4) मध्यमव्यायोग (5) पञ्चरात्र और ऊरुभंग
महाभारत आश्रित भट्टनारायणकृत–वेणीसंहार
महाभारत आश्रित राजशेखरकृत–बालभारत

50. 'ज्ञानविज्ञानयोगः' श्रीमद्भगवद्गीतायाः कतमोऽध्यायः–

(a) द्वितीयऽध्यायः (b) तृतीयोऽध्यायः
(c) पञ्चमोऽध्यायः (d) सप्तमोऽध्यायः

उत्तर-(d)

व्यासप्रणीत् श्रीमद्भागवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व पर आश्रित तथा 18 अध्यायों में विभक्त है–
प्रथम अध्याय–अर्जुनविषाद योग
द्वितीय अध्याय–सांख्ययोग
तृतीय अध्याय–कर्मयोग
चतुर्थ अध्याय–ज्ञानकर्मसंन्यासयोग
पञ्चम् अध्याय–कर्मसंन्यासयोग
षष्ठ अध्याय–आत्मसंयमयोग
सप्तम् अध्याय–ज्ञानविज्ञानयोग
अष्टम् अध्याय–अक्षरब्रह्मयोग
नवम् अध्याय–राजविद्याराजगुह्ययोग
दशम् अध्याय–विभूतियोग
एकादश अध्याय–विश्वरूपदर्शनयोग
द्वादश अध्याय–भक्तियोग
त्रयोदश अध्याय–क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग
चतुर्दश अध्याय–गुणत्रयविभागयोग
पञ्चदश अध्याय–पुरुषोत्तमयोग
षोडश अध्याय–दैवासुरसम्पद्विभागयोग
सप्तदश अध्याय–श्रद्धात्रयविभागयोग
अष्टादश अध्याय–मोक्षसंन्यासयोग

51. एषु कस्य महापुराणेषु अन्तर्भावो नास्ति–

(a) मत्स्यपुराणस्य (b) ब्रह्मपुराणस्य
(c) अग्निपुराणस्य (d) साम्बपुराणस्य

उत्तर-(d)

महापुराणों की संख्या 18 है–(1) मत्स्यपुराण (2) मार्कण्डेयपुराण (3) भविष्यपुराण (4) भागवतपुराण (5) ब्रह्माण्डपुराण (6) ब्रह्मवैवर्तपुराण (7) ब्रह्मपुराण (8) वामनपुराण (9) वराहपुराण (10) विष्णुपुराण (11) वायुपुराण (12) अग्निपुराण (13) नारदपुराण (14) पद्मपुराण (15) लिंगपुराण (16) गरुडपुराण (17) कूर्मपुराण (18) स्कन्दपुराण
अतः साम्बपुराण की गणना उपपुराणों में होती है।

52. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः'– नैषधीयचरिते इयमुक्तिर्भवति–

(a) नलस्य (v) दमयन्त्याः
(c) हंसपत्न्याः (d) हंसस्य

उत्तर-(d)

फलेन मूलेन च वारिभूरुहां
मुनेरिवेत्थं मम् यस्य वृत्तयः।
त्वयाद्य तस्मिन्नपि दण्डधारिणा
कथं न पत्या धरणी ह्णीयते।।
अनुवाद–जिस मेरी मुनि के समान जलभूमि में उत्पन्न अर्थात् कमलों के फल तथा मूल इस प्रकार जीविका होती है उसके ऊपर भी दण्ड धारण करने वाले तुम्हारे ऐसे पति से आज पृथ्वी क्यों नही लज्जित होती है?
अतः प्रस्तुत श्लोक में हंस का कथन है तथा उपमालंकार है।
(1) नल नैषधीयचरितम् के नायक हैं।
(2) दमयन्ती नैषधीयचरितम् की नायिका हैं।

53. 'पौरेषु सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्। सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।।' रघुवंशे कस्येमुक्तिः?

(a) लक्ष्मणस्य (b) रामस्य
(c) भरतस्य (d) शत्रुघ्नस्य

उत्तर-(b)

प्रस्तुत श्लोक कालिदास प्रणीत् रघुवंश के चतुर्दशसर्ग से उद्धृत किया गया है।
सीताविषयक लोकापवाद से दु:खित राम कहते हैं कि जिस प्रकार पानी के तरङ्गों के ऊपर तेल की बूंदें फैल जाती हैं उसी प्रकार इस समय घर-घर मेरी निन्दा फैल रही है। इस सर्वप्रथम अपयश को उसी प्रकार सहने में असमर्थ हूं जिस प्रकार गजराज पहले-पहल बांधने वाले खूंटों को सहने में असमर्थ होता है।

54. 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।'- शिशुपालवधे अस्मिन् पद्यांशे अनूरुसारथिः भवति–

(a) अग्निः (b) सूर्यः
(c) चन्द्रः (d) विद्युत्

उत्तर-(b)

गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः
प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।
पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः
किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः।। (शिशु. 1.2)
अर्थ–सूर्य की गति तिरछी प्रसिद्ध है और अग्नि का ऊपर की ओर जाना प्रसिद्ध है। किन्तु सब ओर से फैलने वाला यह तेज नीचे आ

रहा है। यह क्या है–इस प्रकार लोगों ने व्यग्रतापूर्वक देखा।
व्याकरणात्मक टिप्पणी–
अनूरुसारथेः–सूर्य–(अविद्यमानौ उरु यस्य सः-ब.स.)
गतम्–गति, चाल
तिरश्चीन–तिरछी
हविर्भुजः–अग्नि
कृतोपवीतं हिमशुभ्रमुच्चकैः
र्घनं घनान्ते ताडितां गणैरिव। (शिशु. 1.7)
यहाँ पर ताडितां का अर्थ 'विद्युत' है।

(3) **रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे।**
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः।।
(शिशु. 1.21)

अर्थ–चक्रपाणि (कृष्ण) के कान्तिपुञ्ज से मिली हुई मुनि की किरणें रात्रि में हिलते-डुलते पत्ती के बीच में पड़ने वाली चन्द्रकिरणों की तरह सुशोभित हुई।
प्रस्तुत श्लोक में तुषार का अर्थ 'चन्द्रमा' है।

(4) **कृतोपवीतं हिमशुभ्रमुच्चकैर्धनं**
घनान्ते ताडितां गणैरिव।। (शिशु. 1/7)

श्लोक में ताडितां शब्द का प्रयोग विद्युत के अर्थ में किया गया है।

55. ''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः''–उत्तररामचरिते इयमुक्तिभवेति–

(a) सीतायाः (b) मुरलायाः
(c) तमसायाः (d) लक्ष्मणस्य

उत्तर-(b)

प्रस्तुत श्लोक भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में मुरला के द्वारा उच्चरित कथन है–

''ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः।
यत्रोपकरणीभावमायात्येवंविधो जनः।।''
(उत्तररामचरितम्-3/3)

अनुवाद–ऐसे व्यक्तियों की दुरावस्था भी अत्यन्त आश्चर्यजनक होती है, जिसमें ऐसे (पृथ्वी और गंगा जैसे) लोग सहायक होते हैं।
(1) सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा भवन्ति–सीता का कथन
अहमेवैतस्य हृदयं जानामि–सीता का कथन
ईदृशो जीवलोकस्य परिणामः संवृतः–सीता का कथन
(3) उचितमेव दाक्षिण्यं स्नेहस्य–तमसा का कथन
प्रिया शोको जीवं कुसुममिव घर्मोग्लपयति–तमसा का कथन
(4) अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्–लक्ष्मण का कथन

56. मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः केन निषिद्धः?

(a) राक्षसेन (b) चन्द्रगुप्तेन
(c) चाणक्येन (d) मलयकेतुना

उत्तर-(c)

'प्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवरमणीयतरं कुसुमपुमवलोकयितुमि-च्छामि' अर्थात् मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क में कौमुदीमहोत्सव के निषेध का वर्णन किया गया है।
देवस्य चन्द्रगुप्तस्य कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः–चन्द्रगुप्त (चाणक्य) के कौमुदीमहोत्सव को मना किये जाने का वर्णन है।
(1) राक्षस नन्द का महामात्य, चाणक्य का प्रतिद्वन्द्वी, राजनीतिज्ञ खलनायक।
(2) चन्द्रगुप्त मौर्य साम्राज्य का संस्थापक एवं चाणक्य का परमभक्त था।
(4) मलयकेतु, महाराज पर्वतक का पुत्र, राक्षस का सहायक तथा चन्द्रगुप्त का प्रतिद्वन्द्वी था।

57. ''स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु
संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः।।''
अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिः कस्य?

(a) शाङ्र्गरवस्य (b) शारद्वतस्य
(c) दुष्यन्तस्य (d) सोमरातस्य

उत्तर-(c)

महाकवि कालिदासप्रणीत् अभिज्ञानशाकुन्तल के पञ्चम् अङ्क से उद्धृत है–
''स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु
संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः।
प्रागन्तरिक्षगमनात् स्वमपत्यजात-
मन्यैर्द्विजैः परभृताः खलु पोषयन्ति।। (अभि. 5/22)
अनुवाद–स्त्रियों में जो मनुष्य जाति से भिन्न स्त्रियां हैं, उनमें भी बिना शिक्षा के चतुरता देखी जाती है। जो ज्ञानसम्पन्न हैं, उनका तो कहना ही क्या? कोयल आकाश में उड़ने की सामर्थ्य होने तक अपने बच्चे का अन्य पक्षियों से ही पालन करवाती है।
प्रस्तुत श्लोक में अर्थान्तरन्यास अलंकार है तथा दुष्यन्त का कथन है।
(1) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शार्ङ्गरव कण्व के शिष्य का नाम है।
(2) शारद्वत् कण्व के शिष्य का नाम है।
(4) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सोमरात दुष्यन्त का पुरोहित है।

58. हर्षचरिते पञ्चमे उच्छ्वासे–'विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा'–इत्युक्तिर्भवति–

(a) हर्षवर्धनस्य (b) प्रभाकरवर्धनस्य
(c) यशोमत्याः (d) कुरङ्गकस्य

उत्तर-(c)

महाकवि बाणभट्ट द्वारा लिखित हर्षचरितम् एक आदर्श आख्यायिका है, जो आठ उच्छ्वासों में विभक्त है। 'विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा' यह उक्ति यशोमती का है। अन्य प्रमुख सूक्तियां–

(१) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धुपाशाः।
(२) अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी।
(३) प्रजाभिस्तु बन्धुमतो राजानः, न ज्ञातिभिः।
(४) कामं स्वयं न भवति न तु श्रावयत्यप्रियं वचनमरतिकरमितर इवाभिजातो जनः।
(५) दुःखदग्धानां च भूतिरमङ्गला चाप्रशस्ता च निरूपभोगा च भवति।

59. ''सूरिभिः कथितः' इति विद्वदुपज्ञेयमुक्तिः।''अत्र विषये के तावत् आनन्दवर्धनमते प्रथमे विद्वांसः?

(a) मीमांसकाः (b) तार्किकाः
(c) कवयः (d) वैयाकरणाः

उत्तर-(d)

आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में ध्वनि विवेचन प्रसङ्ग में प्रस्तुत कारिका उद्धृत है–

''यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।।13।।

अर्थात् जहां अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं, उस काव्यविशेष को विद्वान् (वैय्याकरण) लोकध्वनि कहते हैं।
(1) काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास में अभिहितान्वयवादी (कुमारिलभट्ट) तथा अन्विताभिधानवादी (प्रभाकर मिश्र) का उल्लेख किया गया है।
(3) कवि शब्द के षष्ठी एकवचन में कवयः रूप बनता है।

60. ''क्रियायाःप्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः...।'' काव्यप्रकाशानुसारेण कस्यालङ्कारस्य लक्षणमिदम् –

(a) उपमालङ्कारस्य (b) निदर्शनालङ्कारस्य
(c) विभावनालङ्कारस्य (d) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य

उत्तर-(c)

आचार्य मम्मटकृत काव्यप्रकाश के दशम् उल्लास अर्थालंकार निरूपण प्रसङ्ग में विभावना का उल्लेख किया गया है, जिसका लक्षण है–
''क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना''
अर्थात् हेतुरूप क्रिया अर्थात् कारण का निषेध अथवा अभाव होने पर भी फल की उत्पत्ति विभावना अलङ्कार कहलाता है।
(1) उपमा का लक्षण–साधर्म्युपमा भेदे पूर्णा लुप्ता च साऽग्रिमा।
श्रौत्यार्थी च भवेद्वाक्ये समासे तद्धिते तथा।।
(2) निदर्शना का लक्षण–अभवन् वस्तुसम्बन्धः उपमापरिकल्पकः।
(4) उत्प्रेक्षा का लक्षण–सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।।

61. ''ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्।
पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया।।'' काव्यप्रकाशे प्रथमोल्लासे श्लोकोऽयं कस्य काव्य-भेदस्य उदाहरणरूपेण उल्लिखितः?

(a) ध्वनिकाव्यस्य (b) गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्यस्य
(c) शब्दचित्रकाव्यस्य (d) वाच्यचित्रकाव्यस्य

उत्तर-(b)

काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य के तीन भेद बताए गए हैं–
(1) उत्तमकाव्य (ध्वनिकाव्य) (2) मध्यमकाव्य (गुणीभूतव्यंग्यकाव्य)
(3) चित्रकाव्य
'अतादृशिगुणीभूतव्यंग्यं व्यंग्ये तु मध्यमम्'।।
जहां पर वाच्यार्थ से अधिक व्यंग्यार्थ न हो वहां पर मध्यम काव्य होता है।
(1) वाच्यार्थ की अपेक्षा जहां पर व्यङ्ग्यार्थ अधिक चमत्कार युक्त होता है वह उत्तमकाव्य कहलाता है और विद्वानों ने उसे ध्वनिकाव्य कहा है।
(3 + 4) जिसमें व्यंग्यार्थ नहीं होता है वह अवरकाव्य कहलाता है। उसे ही विद्वानों ने शब्दचित्र और अर्थचित्र द्विविध चित्रकाव्य कहा है, जिसका लक्षण है–
शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।

62. दशरूपकानुसारेण–
'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति।
फलावसानं यच्चैव...।' तत् किम् अभिधीयते?

(a) बीजम् (b) बिन्दुः
(c) पताका (d) प्रकरी

उत्तर-(a)

दशरूपक के अनुसार बीज का लक्षण है–
''स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्हेतुर्बीजं विस्तार्यनेकधा।
अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति।।
रूपक के आरम्भ में अल्परूप में संकेतित वह तत्त्व जो रूपक के फल का कारण है तथा इतिवृत्त में अनेक रूप में पल्लवित होता है वह बीज कहलाता है।
(2) अवान्तर कथा की समाप्तिपर्यन्त तक प्रधान कथा के साथ सम्बन्ध रखने वाला बिन्दु कहलाता है ''अवान्तरार्थविच्छेदेबिन्दुरच्छेदकारणम्''
(3 + 4) बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य, ये पांच अर्थ प्रकृतियां हैं। ये पांचों काव्य के प्रयोजन की सिद्धि में कारण होती हैं।

63. दशरूपकमतानुसारं दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति–

(a) मुखसन्धिः (b) गर्भसन्धिः
(c) प्रतिमुखसन्धिः (d) निर्वहणसन्धिः

उत्तर-(b)

दशरूपक के अनुसार सन्धियों की संख्या पांच है–(1) मुख सन्धि (2) प्रतिमुख सन्धि (3) गर्भ सन्धि (4) अवमर्श सन्धि (5) निर्वहण सन्धि

(1) मुखसन्धि का लक्षण–

मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससम्भवाः।

अङ्गानि द्वादशैतस्य बीजारम्भसमन्वयात्।।

(2) प्रतिमुखसन्धि का लक्षण–

लक्ष्यालक्ष्यतयोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत्।

बिन्दुप्रयत्नानुगमादङ्गान्यस्य त्रयोदश।।

(3) गर्भसन्धि का लक्षण–

गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः।

द्वादशाङ्गः पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्तिसम्भवः।।

(4) अवमर्श सन्धि का लक्षण–

क्रोधेनावमृशेद्यत्र व्यसनाद्वा विलोभनात्।

गर्भनिर्भिन्न बीजार्थः सोऽवमर्श इति स्मृतः।।

(5) निर्वहण सन्धि–

बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णायथायथम्

एकार्थ्यनमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्।।

64. आसु कस्याः वक्रतामध्ये गणनं नास्ति?

(a) वर्णविन्यासवक्रतायाः (b) समासवक्रतायाः

(c) पदपूर्वार्द्धवक्रतायाः (d) प्रकरणवक्रतायाः

उत्तर-(b)

आचार्य कुन्तककृत वक्रोक्तिजीवितम् में षट्वक्रता की गणना की गयी है, जो इस प्रकार है–(1) वर्णवक्रता (2) पदपूर्वार्द्धवक्रता (3) प्रत्ययवक्रता (4) वाक्यवक्रता (5) प्रकरणवक्रता (6) बन्धनवक्रता

यथा–**कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः सम्भवन्तिषट्**

प्रत्येकं बहवो भेदास्तेषां विच्छित्तिशोभिनः।।1/18

65. राजशेखरेण काव्यमीमांसायां दोषाधिकरण-विषये कस्य ग्रन्थकारस्य नाम उल्लिखितम्?

(a) सुवर्णनाभस्य (b) शेषस्य

(c) धिषणस्य (d) भरतस्य

उत्तर-(c)

अठारह अधिकरणों में विभक्त काव्यविद्या का उपदेश दिव्य विद्या स्नातकों को दिया गया जिससे प्रेरित होकर सहस्राक्ष = 'इन्द्र' ने कवि रहस्य की रचना की।

उक्तगर्भ ने औक्तिक = उक्ति विशेष से सम्बन्धित रचना की

(1) सुवर्णनाभ ने रीतिनिर्णय = काव्यरीति का विधान करने वाले अंश की रचना की

प्रचेता ने = अनुप्रास की

यम ने = यमक की

चित्रांगद ने = चित्रकाव्य की

(2) शेष ने = शब्द श्लेष की

पलस्त्य ने = स्वाभावोक्ति की

पराशर ने = अतिशयोक्ति की

उथथ्य ने = अर्थश्लेष की

कुबेर ने = उभयकथा की

कामदेव ने = विनोदरहस्य की

(4) भरतमुनि ने = नाट्यशास्त्र की

नन्दिकेश्वर ने = रस की

(3) धिषण ने = काव्यगतदोष की

उपमन्यु ने = काव्यगुण की

कुचुमार = औपनिषद् की

66. ''दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।

......लोके नाट्यमेतद्भविष्यति।।''

नाट्यशास्त्रतः रिक्तस्थानं पूरयत–

(a) मोक्षप्रदायकम् (b) ज्ञानप्रदायकम्

(c) आह्लादजननम् (d) विश्रामजननम्

उत्तर-(d)

भरतमुनिप्रणीत् नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय से प्रस्तुत सूक्ति उद्धृत है–

''दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।

विश्रान्तिजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति।।

(नाट्यशास्त्र 1/114)

अर्थात् मेरे द्वारा रचित यह नाट्य प्रेक्षकों को व्याधिआदिकृत दुःख से अध्वक्लेशादि जन्य श्रम से, बन्धुभार्या आदि के शोक से पीड़ित लौकिक जनों एवं अनवरत कृच्छ चान्द्रायण आदि के आचरण से दुर्बल तथा अतिशय परिखिन्न हृदय वाले तपस्वियों के दुःख का विघातक होगा।

67. ''मित्रात्रिपुत्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे।

गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्राते ते नमो नमः।।''

रसङ्गगाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयम् उदाहरणं भवति–

(a) उत्तमकाव्यस्य (b) अधमकाव्यस्य

(c) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (d) मध्यमकाव्यस्य

उत्तर-(b)

पं. राजजगन्नाथकृत 'रसगङ्गाधर' के प्रथम आनन में काव्यभेदों की गणना की गई है।
जगन्नाथ के अनुसार काव्य भेदों की संख्या चार है–(1) उत्तम काव्य (2) उत्तमोत्तम काव्य (3) मध्यम काव्य (4) अधम काव्य
अधम काव्य का लक्षण–
यत्रार्थचमत्कृत्युपस्कृता
शब्दचमत्कृतिः प्रधानं, तदधमं चतुर्थम्।
अर्थात् जिस काव्य में वाच्य अर्थ के चमत्कार से परिपोषित होकर शब्द का चमत्कार प्रधान हो उसको अधम काव्य कहते हैं।
उदाहरण–मित्रात्रिपुत्रनेत्राय ...।

68. ''यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणम्'' जगन्नाथमते तत् भवति–

(a) मध्यमकाव्यम् (b) उत्तमोत्तमकाव्यम्
(c) उत्तमकाव्यम् (d) अधमकाव्यम्

उत्तर-(c)

पं. राजजगन्नाथकृत 'रसगङ्गाधर' में काव्य के 4 भेद बताए गए हैं–(1) उत्तमकाव्य (2) उत्तमोत्तमकाव्य (3) मध्यम काव्य तथा (4) अधमकाव्य। इनके लक्षण इस प्रकार से प्रस्तुत ग्रन्थ में द्रष्टव्य हैं–

(1) उत्तम काव्य का लक्षण–शब्दार्थौ यत्र गुणीभावितात्मानौ कमप्यर्थमभिव्यङ्क्तस्तदाद्यम्।। 1/2
उदाहरण–शयिता सविधेऽप्यनीश्वरासकलीकर्तुमहोमनोरथान्
दयिता दयिताननाम्बुजंद्वयमीलन्नयना निरीक्षते।।

(2) उत्तमोत्तम काव्य का लक्षण–यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद् द्वितीयम्।
उदाहरण–राघवविरहज्वाला सन्तापितसहाशैलशिखरेषु।
शिशिरे सुखं शयानः कपयः कुप्यति पवनतनयाय।।

(3) मध्यमकाव्य का लक्षण–यत्र व्यङ्ग्यचमत्कारासमानाधिकरणो वाच्यचमत्कारस्तत्ततृतीयम्।।
उदाहरण–यमुना वर्णन।

(4) अधमकाव्य का लक्षण–यत्रार्थचमत्कृत्युपस्कृता शब्दचमत्कृतिः प्रधानं, तदधमं चतुर्थम्।
उदाहरण–मित्रात्रिपुत्रनेत्राय त्रयीशात्रवशत्रवे।
गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्रात्रे ते नमो नमः।।

69. कौटिल्यार्थशास्त्रोल्लेखानुसारं एषु कः कोपात् विननाश इति उल्लिखितः?

(a) अजबिन्दुः (b) रावणः
(c) करालः (d) जनमेजयः

उत्तर-(d)

अर्थशास्त्र के रचयिता कौटिल्य हैं। इसमें 15 अधिकरण हैं।
प्रस्तुत वाक्य कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रथम अधिकरण के तृतीय प्रकरण इन्द्रिय-जयः अरिषड्वर्गत्यागः से उद्धृत है। कामक्रोधादि छह शत्रुओं का परित्याग करना ही अरिषड्वर्ग कहलाता है। शास्त्रविहित कर्तव्यों के विपरीत आचरण करने वाले इन्द्रियलोलुप राजा सारी पृथिवी का अधिपति होता हुआ भी शीघ्र नष्ट हो गया।
जैसे–कोपाज्जननमेजयो ब्राह्मणेषु–अर्थात् कोपवश/क्रोधवश राजा जनमेजय भी ब्राह्मणों से कलह कर बैठा और वह भी उनके शाप से नष्ट हो गया।

(1) सौवीरश्राजबिन्दुः–यही हाल सौवीर देश के राजा अजबिन्दु का भी हुआ।
(2) मानाद्रावण परदारानप्रपच्छन्–अभिमानी रावण परपत्नी के अपहरण के अपराध से नष्ट हुआ।
(3) करालश्च वैदेहः–यही गति विदेह देश के राजा कराल की भी हुई।

70. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः, सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः का विद्या प्रोक्ता?

(a) आन्वीक्षिकी (b) त्रयी
(c) वार्ता (d) दण्डनीतिः

उत्तर-(a)

कौटिल्य के अनुसार, अन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता तथा दण्डनीति चार प्रकार की विद्याएं होती हैं।

(1) अन्वीक्षिकी–अन्वीक्षिकी विद्या सर्वदा ही सब विद्याओं का प्रदीप, सभी कार्यों का साधन और सब धर्मों का आश्रय मानी गई है–
''प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता।।''

(2) मनु के अनुयायी आचार्य त्रयी, वार्ता तथा दण्डनीति को मानते हैं। उनके अनुसार अन्वीक्षिकी का अन्तर्भाव त्रयी के अन्तर्गत हो जाता है।

(3) आचार्य बृहस्पति के अनुयायी विद्वान् केवल दो ही विद्याएं मानते हैं–वार्ता तथा दण्डनीति। उनके मतानुसार त्रयी तो दुनियादार (लोकयात्राविद्) लोगों की आजीविका का साधन मात्र है।

(4) शुक्राचार्य के अनुयायी विद्वानों ने तो केवल दण्डनीति को ही विद्या माना है और उसी को सम्पूर्ण विद्याओं का स्थान स्वीकार किया है।

71. कौटिलीयार्थशास्त्रे एतत् वैश्यस्य स्वधर्मो न भवति–

(a) याजनम् (b) दानम्

(c) अध्ययनम् (d) यजनम्

उत्तर-(a)

साम, ऋक् तथा यजु इन तीनों वेदों का समन्वित नाम ही त्रयी है। त्रयी में निरूपित यह धर्म, चारों वर्णों और चारों आश्रमों को अपने-अपने धर्म में स्थिर रखने के कारण लोक का बहुत ही उपकारक है। चारों वर्ण इस प्रकार हैं–

ब्राह्मण धर्म–स्वधर्मो ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति।

क्षत्रिय धर्म–क्षत्रियस्याध्ययनं यजनं दानं शास्त्रजीवो भूतरक्षणम्।

वैश्य धर्म–वैश्यस्याध्ययनं यजनं दानं, कृषिपशुपाल्ये वणिज्या च। अर्थात पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, कृषिकार्य एवं पशुपालन और व्यापार करना।

शूद्रधर्म–शूद्रस्य द्विजातिशुश्रूषा वार्ता कारुकुशीलवकर्म च।

72. याज्ञवल्क्यमते गृहीतवेतनः कर्म त्यजन्–

(a) चतुर्गुणमावहेत् (b) त्रिगुणमावहेत्

(c) पञ्चगुणमावहेत् (d) द्विगुणमावहेत्

उत्तर-(d)

श्रीमद्योगीश्वरमहर्षियाज्ञवल्क्यप्रणीत् याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में कुल 25 प्रकरण हैं जिसमें 16वें प्रकरण में वेतनादानप्रकरण में गृहीतवेतनकर्म की चर्चा की गई है, जो इस प्रकार है–

''गृहीतवेतनः कर्म त्यजन्द्विगुणमावहेत्।

अगृहीते समं दाप्यो भृत्यै रक्ष्य उपस्करः।।

(व्यवहाराध्याय 1/16/193)

अर्थ–अर्थात् वेतन लेकर कर्म का त्याग करने वाले से वेतन का दुगुना धन दिलावे। यदि वेतन नहीं लिया हो तो उसके बराबर दे। नौकर, उपस्करों की यत्नपूर्वक रक्षा करें।

73. स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।

अर्थशास्त्रात्तु बलवद्.....इति स्थितिः।।

–याज्ञवल्क्यसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत।

(a) राजादेशः (b) धर्मशास्त्रम्

(c) नृपस्येच्छा (d) नीतिशास्त्रम्

उत्तर-(b)

याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय प्रकरण असाधारण व्यवहार मातृकाप्रकरणम् में प्रस्तुत श्लोक द्रष्टव्य है–

''स्मृत्यार्विरोधेन्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः

अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।।21।।

अर्थात् दो स्मृतियों के विरोध होने पर व्यवहार से किया निर्णय बलवान् होता है, किन्तु सार्वकालिक व्यवस्था यह है कि अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है।

74. मनुसंहितानुसारं एषु कस्य क्रोधजव्यसने गणनं न भवति–

(a) दिवास्वप्नस्य (b) वाक्पारुष्यस्य

(c) साहसस्य (d) दण्डपारुष्यस्य

उत्तर-(a)

आचार्य मनुप्रणीत मनुस्मृति के सप्तमाध्याय में दो प्रकार के गुणों के दोष बताए गए हैं–(1) कामज गुण के दोष (2) क्रोधज गुण के दोष

1. कामज गुण के दश दोष–

मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।

तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गुणाः।।

मनु. 7/47।।

अर्थात् मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना, ये दश दोष काम के बताए गए हैं।

2. क्रोधज गुण के आठ दोष–

पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।

वागदण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गुणोऽष्टकः।।

(मनु. 7/47)

अर्थात्–चुगली, दुःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न होते हैं।

75. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत–

वेदः स्मृतिः .... स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

(a) उपकारः (b) अपकारः

(c) सदाचारः (d) परम्परा

उत्तर-(c)

मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में 4 प्रकार के धर्म बताए गए हैं–

''वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

(मनु. 2/12)

अर्थात्–वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी रुचि के अनुसार कार्य करना–यह चार प्रकार के धर्म का साक्षात् लक्षण बतलाया गया है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Nov. 2017
संस्कृत (पेपर-2)
व्याख्यात्मक हल सहित

1. ऋग्वेदे प्रथमसूक्तस्य द्रष्टा कः?

(a) कण्वः (b) विश्वामित्रः
(c) मधुच्छन्दाः (d) गृत्समदः

उत्तर-(c)

ऋग्वेद में प्रमुखतः 10 मण्डल हैं तथा प्रत्येक मण्डल में अलग-अलग ऋषि एवं सूक्त हैं। जिसका वर्णन इस प्रकार है–

मण्डल	ऋषि	सूक्त संख्या
प्रथम मण्डल	मधुच्छन्दा	191
द्वितीय मण्डल	गृत्समद	43
तृतीय मण्डल	विश्वामित्र	62
चतुर्थ मण्डल	वामदेव	58
पञ्चम् मण्डल	अत्रि	87
षष्ठ मण्डल	भरद्वाज	75
सप्तम् मण्डल	वसिष्ठ	104
अष्टम् मण्डल	वैवश्वतमनु (कण्व)/ भृगु, अंगिरस	103
नवम् मण्डल	सोम (पवमान)	114
दशम् मण्डल	त्रित, विभद, इन्द्र, श्रद्धा कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी आदि।	191

2. सायणाचार्येण कस्य वेदस्य व्याख्यानं सर्वान्ते कृतम्?

(a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर-(d)

सायण ने चारों वेदों पर भाष्य लिखे थे। ऋग्वेद की शाकल संहिता पर, शुक्लयजुर्वेद की काण्व संहिता पर, कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर, सामवेद की कौथुम संहिता पर और अथर्ववेद की शौनक संहिता पर सायण के भाष्य उपलब्ध होते हैं। चारों वेदों पर भाष्य लिखने के अतिरिक्त सायण ने अनेक ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों पर भी भाष्य लिखे थे।

3. 'स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्'-इति कुत्र वर्णितम्?

(a) इन्द्रसूक्ते (b) पितृसूक्ते
(c) हिरण्यगर्भसूक्ते (d) नासदीयसूक्ते

उत्तर-(d)

प्रस्तुत मन्त्र नासदीयसूक्त से उद्धृत है। इस सूक्त के ऋषि, परमेष्ठी प्रजापति तथा देवता-सृष्टि स्थिति प्रलयकर्ता परमात्मा हैं तथा छन्द त्रिष्टुप् है।

''तिरश्चीनो विवतो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्।।5।।

(नासदीयसूक्त-5)

अर्थ–इन तीनों कारणों का सूर्य की किरणों के समान बहुत अधिक व्यापकता का भाव बहुत विस्तृत था। वह सब स्थानों में समान भाव से उत्पन्न हुआ था। इस प्रकार उत्पन्न हुए जगत् में कुछ पदार्थ बीज रूप कर्म को धारण करने वाले जीवरूप में थे और कुछ पदार्थ आकाश आदि महान रूप में प्रकृति रूप थे।

(1) इन्द्र सूक्त ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल में 12 सूक्त हैं। इस सूक्त के ऋषि–गृत्समद्, देवता-इन्द्र, छन्द-त्रिष्टुप् है।
(2) पितृसूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल में 15 सूक्त हैं। इसके ऋषि-शङ्ख, देवता-पितर, छन्द-त्रिष्टुप् है।
(3) हिरण्यगर्भ सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल में 121सूक्त हैं। इसके ऋषि-हिरण्यगर्भ तथा देवता-कसंज्ञक प्रजापति हैं।

4. ऋग्वेदे 'रुशद्वत्सा' इति कस्या विशेषणम्?

(a) सरस्वत्याः (b) उषसः
(c) नद्याः (d) रात्र्याः

उत्तर-(b)

उषस् सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में 61सूक्त हैं। इसके ऋषि–विश्वामित्र, देवता-उषस्, छन्द-त्रिष्टुप् है।
उषस् का अन्य विशेषण–मघोनी, विश्ववारा, प्रचेताः, सुभगाः, रेवती, ऋतावरी, पुरण्यवती, मघवती, अमर्त्या, विश्वोर्ध्वा, सूनरी, ओदती, वाजिनी आदि।

(1) सरस्वती शब्द का प्रयोग वेदों में नदी के लिए आया है।
(2) 'नद्याः' नदी शब्द का पंचमी, षष्ठी एकवचन का रूप है।
(3) 'रात्र्याः' रात्रि शब्द का पंचमी, षष्ठी एकवचन का रूप है।

5. सपत्नक्षयणो मणिः कस्मिन् सूक्ते उपदिश्यते?

(a) पृथिवीसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्ते (d)सोमसूक्ते

उत्तर-(c)

राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्त अथर्ववेद के प्रथम काण्ड का 129वां सूक्त है। इसके ऋषि वसिष्ठ हैं, इसमें मन्त्रों की संख्या 6 है।

''सपत्नक्षयणो वृषाभिरष्ट्रो विषासहिः।
यथाहमेषां वीराणां विराजानि जनस्य च''।।6।।

(2) पृथिवीसूक्त अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है। इसके ऋषि अथर्वा तथा मन्त्रों की संख्या 63 है।

(4) सोमसूक्त ऋग्वेद के अष्टम् मण्डल में 48 सूक्त है। इसके ऋषि कण्वपुत्र प्रगाथ है। देवता-सोम, छन्द्-त्रिष्टुप् एवं जगती है।

6. 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम्'–इत्यत्र उवटमतेन 'दैवम्' पदस्य कोऽर्थः?

(a) देवो विज्ञानात्मा सोऽनेन गृह्यत इति दैवम्
(b) देवो ज्ञानकर्त्ता सोऽनेन ज्ञानी इति दैवम्
(c) देवो यज्ञे एवं दीप्यते तद् द्रव्यम् दैवम्
(d) देवो गृहे गृहे निर्मलीकरोति तज्जलं दैवम्

उत्तर-(a)

शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनवाजसनेयि संहिता के 34वें अध्याय के प्रथम काण्ड का छठवां सूक्त शिवसङ्कल्पसूक्त कहलाता है। इस सूक्त के ऋषि-याज्ञवल्क्य, देवता-मन, छन्द-त्रिष्टुप् है तथा पूरे सूक्त में कुल 6 मन्त्र हैं, जिसमें से यह पंक्ति प्रथम मन्त्र के रूप में उद्धृत है–

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

अर्थ–जागते हुए का जो दिव्य मन दूर चला जाता है तथा सोते हुए का वही मन उसी प्रकार पुनः चला आता है। दूरगामी प्रकाशों में अद्वितीय प्रकाशरूप मेरा वह मन शुभ सङ्कल्पों वाला हो।
उ०वटभाष्यम्-(a) में उव्वट ऋषि ने दैवम् का अर्थ 'देवो विज्ञानात्मा सोऽनेनगह्यत इति दैवम्' किया है तथा उकार का अर्थ सम्मुच्चयार्थीयः के रूप में ग्रहण किया है।

7. निम्नाङ्कितेषु प्रकृतिपाठः कः?

(a) मालापाठः (b) रेखापाठः
(c) पदपाठः (d) दण्डपाठः

उत्तर-(c)

संहितापाठ, पदपाठ तथा क्रमपाठ के भेद से 'प्रकृतिपाठ' के तीन रूप होते हैं। इनमें 'संहितापाठ' ही वेद का मूलरूप है। जिस सूक्त अथवा मन्त्र के 'संहितापाठ'का जिस ऋषि ने साक्षात्कार किया है, वह उसका द्रष्टा कहा जाता है। मन्त्रों के विनियोग में आज भी इन ऋषियों का स्मरण किया जाता है। 'संहितापाठ' के आदि- द्रष्टा परमेश्वर ही हैं। तदनन्तर उस परमेश्वर की कृपा से भिन्न-भिन्न ऋषियों ने वेद के भिन्न-भिन्न अंशों का साक्षात्कार किया। इसी प्रकार 'पदपाठ' के आदि द्रष्टा 'रावण' तथा 'क्रमपाठ' के आदि द्रष्टा के रूप में 'वाभ्रव्य' नाम लिया जाता है। मधुशिक्षा में जैसे कहा गया है–

''भगवान् संहितां प्राह, पदपाठं तुरावणः।
वाभ्रत्यर्षि क्रमं प्राह, जटां व्याडिवोचत्।।

विकृतिपाठ के अन्तर्गत जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, घन के भेद से 8 उपवर्गों में बांटा गया है।

8. निचृद्गायत्रीच्छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति पिङ्गलदिशा?

(a) 22 (b) 23
(c) 24 (d) 25

उत्तर-(b)

ऋग्वेद में मुख्य रूप से 7 छन्दों का उपयोग किया गया है-(a) गायत्री (2) उष्णिक् (3) अनुष्टुप् (4) त्रिष्टुप् (5) बृहती (6) जगती (7) पंक्ति
सामान्यतः इन सात छन्दों के प्रथम पाद में वर्णों की संख्या–(गायत्री) = 8, उष्णिक् = 8, अनुष्टुप् = 8, त्रिष्टुप् = 11, बृहती = 8, जगती = 12, पंक्ति = 8 निर्धारित की गई है, परन्तु कभी-कभी ये वर्ण कम या अधिक भी हो सकते हैं, जिससे छन्द के अवान्तर भेद हो जाते हैं। यदि छन्द में एक वर्ण कम हो जाए तो उसे 'निचृद्', दो वर्ण कम होने पर 'विराट्' कहते हैं। इसी प्रकार एक वर्ण अधिक होने पर 'भूरिक्' तथा दो वर्ण अधिक होने पर 'स्वराट्' कहते हैं।
उदाहरणस्वरूप गायत्री छन्द में 24 वर्ण होते हैं। यदि इसमें से एक वर्ण कम हो जाए अर्थात् 23 वर्ण होने पर निचृद् गायत्री होगा।

(1) दो वर्ण कम होने पर अर्थात् 22 वर्ण होने पर विराट् गायत्री होगा।

(4) गायत्री छन्द में एक वर्ण अधिक होने पर अर्थात् 25 वर्ण होने पर भूरिक्गायत्री कहलाएगा तथा 2 वर्ण अधिक अर्थात् 26 वर्ण होने पर स्वराट् गायत्री कहलाएगा।

9. 'रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्य'–इति कुत्र वर्णितम्?

(a) सूर्यसूक्ते (b) यमयमीसूक्ते
(c) रात्रिसूक्ते (d) कालसूक्ते

उत्तर-(b)

यम-यमी सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का दशवां सूक्त है। इसके ऋषि यमी वैवश्वती यम वैवश्वत हैं। देवता यम वैवश्वत, यमी वैवश्वती हैं। छन्द त्रिष्टुप् है तथा मन्त्रों की संख्या 14 है। जिसमें से प्रस्तुत सूक्ति ९वें मन्त्र के रूप में उद्धृत है–

**''रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत सूर्यस्यचक्षुर्मुहुरुन्मिमीयत्।
दिव्या पृथिव्य मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विभृयादजामि।।9।।**

अनुवाद–दिन-रात में यम के लिए जो कल्पित भाग हैं, उसे यजमान दें। सूर्य का तेज यम के लिए उदित हो। परस्पर सम्बद्ध दिन द्युलोक और भूलोक यम के बन्धु हैं। यमी, यम भ्राता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को धारण करे।

(1) सूर्य सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 125वां सूक्त है। इसके ऋषि 'कुत्स' तथा मन्त्रों की संख्या 21 है।
(2) कालसूक्त ऋग्वेद 10वें मण्डल का 53वां सूक्त है। इसके ऋषि भृगु तथा मन्त्रों की संख्या 10 है।

10. कठारण्यकं केन वेदेन सम्बद्धं वर्तते?

(a) ऋग्वेदेन (b) शुक्लयजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर-(d)

यजुर्वेद मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है–
(1) शुक्ल यजुर्वेद (2) कृष्ण यजुर्वेद

शुक्ल यजुर्वेद की मुख्यतः दो शाखाएं हैं–
(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा
(2) काण्व शाखा

कृष्णयजुर्वेद की केवल 4 शाखाएं हैं–
(1) तैत्तिरीय शाखा (2) मैत्रायणी शाखा
(3) काठक या कठ शाखा (4) कपिष्ठल शाखा

चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की 5 प्रमुख शाखाएं हैं–
(1) शाकल (2) बाष्कल
(3) आश्वलायन (4) शांखायन
(5) माण्डूकायन

सामवेद की मुख्यतः तीन शाखाएं उपलब्ध हैं–
(1) कौथुमीय (2) राणायनीय
(3) जैमिनीय

अथर्ववेद की मुख्यतः 9 शाखाएं उपलब्ध हैं-
''नवधाऽऽथर्वणो वेद''-
(1) पैप्पलाद (2) तौद,
(3) मौद, (4) शौनकीय,
(5) जाजल, (6) जलद,
(7) ब्रह्मवद, (8) देवदर्श तथा
(9) चारणवैद्य।

11. 'इदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च'–इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?

(a) पाणिनीयशिक्षायाम् (b) निरुक्ते
(c) ऋक्प्रातिशाख्ये (d) सिद्धान्तकौमुद्याम्

उत्तर-(b)

यास्क प्रणीत् निरुक्त में 12 अध्याय हैं, जो तीन काण्डों में विभक्त हैं–
(1) नैघटुंक काण्ड
(2) नैगमकाण्ड
(3) दैवतकाण्ड। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट के रूप में अन्तिम दो अध्याय और भी संलग्न हैं। इस प्रकार निरुक्त में कुल 14 अध्याय हैं।

प्रथम अध्याय में कुल 6 पाद हैं, जिसमें से षष्ठपाद में निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन बतलाए गए हैं जो इस प्रकार द्रष्टव्य हैं–
अर्थापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्थप्रत्ययो न विद्यते। अर्थमप्रति यतो नात्यन्तं स्वरसंस्कारोद्देशः। तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्न्यं स्वार्थसाधकं च।
निरुक्त के बिना मन्त्रों में अर्थों का ज्ञान नहीं हो सकता है। अर्थ के जाने बिना स्वर तथा संस्कार का निरूपण नहीं हो सकता। इसलिए यह निरुक्तशास्त्र व्याकरण का पूरक भी है और अर्थ का साधक भी है।
आचार्य शौनककृत ऋक्प्रातिशाख्य में कुल 18 पटल हैं।
सिद्धान्तकौमुदी भट्टोजिदीक्षित की रचना है। इसमें मुख्य रूप से कारक प्रकरण का विवेचन किया गया है।

12. 'ओरायन'–ग्रन्थस्य लेखकः कः?

(a) शङ्करपाण्डुरङ्गपण्डितः (b) बालगङ्गाधरतिलकः
(c) शङ्करबालकृष्णदीक्षितः (d) विन्टरनित्सः

उत्तर-(b)

श्री बालगङ्गाधरतिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6 हजार ई.पू. स्वीकार किया है।
श्री तिलक और श्री शंकरबालकृष्णदीक्षित की गणना का आधार एक ही है।
बालगङ्गाधरतिलक की प्रमुख दो रचनाएं हैं-(a) Arctic home in the Vedas (2) Orion (ओरायन)
शंकरपांडुरंगपण्डित ने ऋग्वेद की व्याख्या 'वेदार्थयत्न' (तृतीय मण्डल) तक मराठी और अंग्रेजी में किया।
विन्टरनित्स ने आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का संस्करण किया है तथा भारतीय साहित्य का इतिहास नामक पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

13. 'दमूना' इति कस्य देवस्य विशेषणम्?

(a) इन्द्रस्य (b) अग्नेः
(c) वरुणस्य (d) रुद्रस्य

उत्तर-(b)

अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके ऋषि मधुच्छन्दा तथा देवता अग्नि हैं।

देवता	विशेषण
(1) **अग्नि -**	ऋत्विक्, जातवेदस्, घृतपृष्ठ, शोचिषकेश, रक्तश्मश्रु, दमूनस्, पावक, कविक्रतु, वैश्वानर, अङ्गिरा आदि।
(2) **इन्द्र-**	शक्र, वज्री, बज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, दस्योर्हन्ता, तुविस्मान् आदि।
(3) **वरुण -**	क्षत्रिय, स्वराट्, मायावी, उरुशंश, ऋतावधो, उरूचक्षस्, भ्राजमस, धृतव्रतः, चिकित्वान्।
(4) **रुद्रस्य -**	अधृष्म, द्रुतगामी, प्रचेतस्, उग्र, इणास, शर्व, नीलोदर (इत्यादि)

14. 'य एक इद्धव्यः चर्षणीनामिन्द्रम्'-मन्त्रेऽस्मिन् कस्यार्थम्?

(a) भरद्वाजस्य (b) वामदेवस्य

(c) अत्रेः (d) कण्वस्य

उत्तर-(a)

ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल के ऋषि भरद्वाज हैं।

(2) ऋग्वेद चतुर्थ मण्डल के ऋषि वामदेव हैं। इसके मुख्य सूक्त के देवता बृहस्पति हैं। बृहस्पति देवता पृथ्वी स्थानीय देव हैं।

(3) ऋग्वेद के पञ्चम् मण्डल के ऋषि-अत्रि, देवता-पर्जन्य सूक्त-83 है तथा छन्द-त्रिष्टुप् है।

(4) रुद्र देवता का वर्णन ऋग्वेद में बहुत नहीं मिलता। कुछ ही ऋचाओं में इसका उल्लेख मिलता है। रुद्र को अत्यधिक शक्तिशाली देवता के रूप में देखा गया है।

15. धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वार्थवच्छब्दस्वरूपं किम्भवति?

(a) पदसञ्ज्ञम् (b) प्रातिपदिकसञ्ज्ञम्

(c)संहितासञ्ज्ञम् (d)'घी' सञ्ज्ञम्

उत्तर-(b)

अर्थवद् अधातुर अप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (112/45) की वृत्ति–''धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वा अर्थवच्छब्द स्वरूपं प्रातिपदिक सञ्ज्ञां स्यात्।''

अर्थात् धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपादिक सञ्ज्ञा होती है।

(1) सुप्तिङतं पदम्–(111/14) सुबन्त (अर्थात् सुप् प्रत्यय जिसके अन्त में हो) तिङन्त (तिङ् प्रत्यय जिसके अन्त में हो उसकी पद सञ्ज्ञा होती है)।

(3) 'परः सन्निकर्षः संहिता' वर्णों की अत्यन्त समीपता की संहिता सञ्ज्ञा होती है।

(4) शेषो ध्यसखि (1/4/7) नदी संज्ञक भिन्न ह्रस्व इकार, उकार सखि शब्द को छोड़कर घि संज्ञक होते हैं।

16. 'द्रोणो व्रीहिः' इत्यत्र 'द्रोण' शब्दोत्तरप्रथमा विभक्तिः कस्मिन्नर्थे भवति?

(a) प्रातिपदिकार्थमात्रे (b) लिङ्गमात्राधिक्ये

(c) परिमाणमात्राधिक्ये (d) वचनमात्रे

उत्तर-(c)

प्रातिपदिकमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र तथा वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रातिपदिकार्थ पांच प्रकार का होता है–जाति, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या, कारक।

(1) प्रातिपदिकमात्र का उदाहरण–उच्चैः, नीचैः,कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्, इन सभी उदाहरणों में प्रातिपदिकमात्र में प्रथमा विभक्ति हुई है।

(2) लिङ्गमात्र का उदाहरण–केवल अनियतलिङ्ग शब्द ही लिङ्गमात्र के उदाहरण हैं। यथा–तटः, तटी, तटम्।

(3) परिमाणमात्र का उदाहरण–'द्रोणो व्रीहिः' यहाँ 'द्रोण' शब्द से परिमाण अर्थ में प्रथमा विभक्ति हुई है।

(4) वचनमात्र का उदाहरण–वचन का अर्थ संख्या है। संख्यात्मक शब्द से संख्या अर्थ में प्रथमा विभक्ति होती है।

17. 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ' इति सूत्रस्य प्रत्यवसानार्थे किमुदाहरणम्?

(a) आशयच्चामृतं देवान् (b) वेदमध्यापयद्विधिम्

(c)आसयत् सलिले पृथ्वीम् (d) वेदार्थं स्वानवेदयत्

उत्तर-(a)

गति, बुद्धि, प्रत्यवसान अर्थ वाली धातुएं, जिनका कर्म कोई शब्द हो, ऐसी धातुएं यथा–पठ्, उच्चारण (बोलना) तथा अकर्मक धातुओं का जो अणिजन्त अवस्था का कर्ता होता है, वह णिजन्त अवस्था में कर्मसंज्ञक हो जाता है।

जैसे-(a) गत्यर्थक धातु का उदाहरण–शत्रून् अगमयत् स्वर्गम्। इसका अणिजन्त रूप–'शत्रवः स्वर्गम्' अगच्छन् होगा।

(2) बुद्ध्यर्थक् धातु का उदाहरण–

णिजन्त	**अणिजन्त**
स्वान् वेदार्थं अवेदयत्	स्वेवेदार्थम् अविदुः

(3) प्रत्यवसानार्थक धातु का उदाहरण–

णिजन्त	**अणिजन्त**
आसयच्चामृतं देवान्	देवा अमृतम् आश्नन्

(4) शब्दकर्म का उदाहरण–

णिजन्त	**अणिजन्त**
विधिम् वेदम् अध्यापयद्	विधिः वेदम् अध्यैत

18. 'नमस्कुर्मो नृसिंहाय' इत्यत्र अप्रयुज्यमानस्य तुमुनः कर्मणि चतुर्थीविधायकम् अनुशासनं किमस्ति?

(a) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या

(b) तुमर्थाच्च भाववचनात्

(c) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः

(d) नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च

उत्तर-(c)

क्रिया के लिए जो क्रिया वह हो उपपद जिसका ऐसे अप्रयुज्यमान तुमुन् प्रत्ययान्त क्रिया के कर्मकारक में चतुर्थी विभक्ति होती है, अर्थात् तुमुन् प्रत्ययान्त क्रिया का प्रयोग परोक्ष होने पर उसके कर्म में चतुर्थी होती है।

उदाहरण-(a) फलेभ्यो याति (2) नमस्कुर्मो नृसिंहाय

(1) तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है, अर्थात् जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। **जैसे-** मुक्तये हरि भजति, शिशुः मोदकाय रोदिति।

(2) क्रियार्थ क्रिया के उपपद होने पर भविष्यत् काल में धातु से भाववचन प्रत्यय भी होता है।

उदाहरण–यागाय याति

(3) नमः स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट्, इन अव्यय पदों के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है।

19. अष्टौ च दश चेति विग्रहे 'अष्टादश' इति प्रयोगे आकारान्तादेशः केन विधीयते?

(a) 'आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः' इत्यनेन

(b) 'अष्टनः कपाले हविषि' इत्यनेन

(c) विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम्' इत्यनेन

(d) 'द्वयष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः' इत्यनेन

उत्तर-(d)

अष्टादश–लौ. विग्रह–अष्टौ च दश च
अलौकिक विग्रह–अष्टन् जस् दशन् जस्
'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से अष्टन् जस् सुबन्त का दशन् जस् सुबन्त के साथ इतरेतर द्वन्द्व समास हुआ।
'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अष्टन् जस्' की उपसर्जन संज्ञा हुई और ''संख्यायाः अल्पीयस्याः पूर्वनिपातो वक्तव्यः'' इस वार्तिक से छोटी संख्या 'अष्टन् जस्' का पूर्वनिपात होकर 'अष्टन् जस्' बना ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' सूत्र से अष्टन् जस् दशन् जस् की प्रातिपदिक संज्ञा हुई और सुपोधातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुप् जस् का लोप् हुआ, अष्टन् दशन् बना ''द्वयष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्य शीत्योः'' सूत्र से अष्टन् के नकार को आ आदेश होकर अष्टादशन् बना। 'नलोपः प्रातिपदिकस्य' सूत्र से न का लोप होकर–'अष्टादश' बना।
(1) महत् शब्द को आकार अन्तादेश हो यदि बाद में समानाधिकरण उत्तरपद और जातीय प्रत्यय हो तो वहां पर आत्महतः समानाधिकरण जातीय सूत्र से आकार आदेश होता है।

20. 'परार्थाभिधानं वृत्तिरि' ति वृत्तिलक्षणं कस्मिन् प्रयोगे न प्रवर्तते?

(a) विद्यते (b) कुम्भकारः

(c) औपगवः (d) पीताम्बरः

उत्तर-(a)

परार्थाभिधानं वृत्तिः कृत् तद्धित–समास-एकशेष-सनाद्यन्त धातु रूपाः पञ्च वृत्तयः।
परार्थ के बोधन कराने को वृत्ति कहते हैं। ये वृत्तियां पांच प्रकार की होती हैं–

(1) कृत्	उदाहरण–कुम्भकारः
(2) तद्धित्	उदाहरण–औपगवः
(3) समास	उदाहरण–पीताम्बरः
(4) एकशेष	उदाहरण–भूतपूर्वः
(5) सनाद्यन्त	नाम धातु प्रकरण में आती है।

21. 'हरि-शब्दस्य प्रकाशः' 'इतिहरि' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ती' त्यादिना कस्मिन्नर्थेऽव्ययीभावः?

(a) विभक्त्यर्थे (b) शब्दप्रादुर्भावे

(c) यौगपद्ये (d) अर्थाभावे

उत्तर-(b)

इति हरि–लौकिक विग्रह–हरि-शब्दस्य प्रकाशः
अलौकिक विग्रह–हरि ङस् इति
'अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धि' सूत्र से 'शब्दप्रादुर्भाव' के अर्थ में 'इति' अव्यय का 'हरि ङस्' सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।
(1) अधिहरि–लौकिक विग्रह–हरौ इति
अलौकिक विग्रह–हरि ङि अधि
'अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धि' सूत्र से सप्तमी विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का हरि ङि समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।
(3) सचक्रम्–लौकिक विग्रह–चक्रेण युगपत्
अलौकिक विग्रह–चक्र टा सह
'अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धि' सूत्र से यौगपद्य के अर्थ में सह अव्यय का चक्र टा सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ।
(4) निर्मक्षिकम्–लौकिक विग्रह–मक्षिकाणाम् अभावः
अलौकिक विग्रह–मक्षिका आम् निर्
अव्ययं-विभक्ति-समीप.–सूत्र से अर्थाभाव के अर्थ में 'निर्' अव्यय का मक्षिका आम् सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ।

22.. 'यतश्च निर्धारणम्' इति सूत्रेण जातिविशिष्टसमुदायादेकस्य निर्धारणे विहितायाः षष्ठ्याः किमुदाहरणम् ?

(a) गवां कृष्णा बहुक्षीरा (b) गच्छतां धावन् शीघ्रः

(c) नृणां द्विजः श्रेष्ठः (d) छात्राणां मैत्रः पटुः

उत्तर-(c)

जाति, गुण, क्रिया और संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से एक देश को पृथक् करना निर्धारण कहलाता है, जिससे निर्धारण होता है उसमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे–
(1) नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः
(2) गवां गोषु वा कृष्णाः बहुक्षीरा
(3) गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः
(4) छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः
नृणां द्विजः श्रेष्ठः (मनुष्यो में ब्राह्मण श्रेष्ठ है) यहाँ मनुष्य समुदाय से जाति के आधार पर द्विज को श्रेष्ठ बताकर पृथक् किया गया है। अतः 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से समुदाय वाचक 'नृ' में षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति हुई है।
(1) **'गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा'** में काली गाय को गुण के आधार पर पृथक् किया गया है। इसलिए गो में प्रकृत सूत्र से षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हुई है।
(2) **'गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः'** में क्रिया के आधार पर गच्छत् में प्रकृत सूत्र से षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हुई है।
(4) **'छात्राणां मैत्रः पटुः'** में संज्ञा के आधार पर छात्र में प्रकृतसूत्र से षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हुई है।

23. चीनीभाषा निम्नलिखितेषु कस्मिन् वर्गे वर्तते?

(a) श्लिष्टयोगात्मके (b) अश्लिष्टयोगात्मके

(c) प्रश्लिष्टयोगात्मके (d) अयोगात्मके

उत्तर-(d)

आकृतिमूलक वर्गीकरण के मुख्यतः दो भेद होते हैं-

(a) अयोगात्मक (2) योगात्मक।

अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व का संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। प्रत्येक शब्द की स्वतन्त्र या अलग सत्ता होने से इसे Isolating कहते हैं। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है, अतः इसे Root Language कहते हैं। इन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय जैसी चीज नहीं होती।

अयोगात्मक वर्ग की भाषा—इस वर्ग की मुख्य भाषा चीनी है। इसके अतिरिक्त स्यामी, तिब्बती, बर्मी, अनामी, सूडानी आदि भाषाएं आती हैं।

(2) योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में बांटा गया है—

(1) अश्लिष्ट (प्रत्यय प्रधान) भाषा

(2) श्लिष्ट (विभक्ति प्रधान) भाषा

(3) प्रश्लिष्ट (समास प्रधान) भाषा

24. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा वर्तते?

(a) सामीपरिवारस्य (b) हामीपरिवारस्य

(c) भारोपीयपरिवारस्य (d) बान्तूपरिवारस्य

उत्तर-(c)

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो वर्गों में बांटा जाता है-(a) शतम् (2) केन्टुम्

शतम् वर्ग की भाषाएं	**केन्टुम् वर्ग की भाषाएं**
(1) भारत-ईरानी (आर्य)	(5) ग्रीक
(2) वाल्टो-स्लाविक	(6) केल्टिक्
(3) अर्मीनी	(7) जर्मनिक
(4) अल्बानी	(8) इटालिक
	(9) हिट्टाइट
	(10) तोखारी

(1) सामी परिवार की भाषाएं दक्षिण-पश्चिमी एशिया में फैली हुई हैं। इस परिवार की मुख्य भाषा अरबी एशिया के अतिरिक्त उत्तरी अफ्रीका में फैली हुई है।

(2) हामी परिवार की भाषाएं उत्तरी अफ्रीका के लीबिया, सोमालीलैण्ड और इथियोपिया के प्रदेशों में फैली हुई हैं।

(3) बान्तू परिवार में कुल 150 भाषाएं हैं, जो तीन वर्गों में विभक्त हैं-(a) पूर्वी वर्ग—जुलू, काफिर, स्वाहिली (2) मध्य वर्ग—सेसुतो (3) पश्चिम वर्ग—हेरेरो, कांगो आदि।

25. निम्नलिखिताषु का भाषा 'केन्तुम्' वर्गस्य नास्ति?

(a) ग्रीकभाषा (b) केल्टिकभाषा

(c) जर्मनभाषा (d) रूसीभाषा

उत्तर-(d)

रूसी भाषा 'केन्तुम्' वर्ग में नहीं है। यह शतम् वर्ग की भाषा है। भारोपीय का कमतोम् (शतम्)

शतम् वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत	लैटिन
अवेस्ता	ग्रीक
फारसी	केल्टिक
हिन्दी	तोखारी
	गाथिक
रूसी	जर्मन
लिथुआनिया	फ्रेन्च
	इटालियन

26. 'अश्वः' इत्यस्य शब्दस्य 'अवेस्ता' भाषायां किं रूपं विद्यते?

(a) अश्बः (b) अश्बो

(c) अश्पः (d) अस्पो

उत्तर-(d)

ईरान की प्राचीन भाषा 'अवेस्ता' है। ईरानियों के धर्मग्रन्थ का नाम 'अवेस्ता' है। इनकी भाषा को अवेस्ता ही कहते हैं। अवेस्ता संस्कृत अवस्था का अपभ्रंश है। इसका अर्थ है—व्यवस्थित, परिनिष्ठित रूप। अतः अवेस्ता शब्द धर्मग्रन्थ का वाचक है।

संस्कृत और अवेस्ता में अन्तर—

संस्कृत	अवेस्ता
अश्वः	अस्पो
नभः	नबो
अप्	अप
यज्	यज्

27. सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः किमुच्यते न्यायनये?

(a) अनुमितिः (b) उपमितिः

(c) प्रत्यक्षम् (d) शब्दः

उत्तर-(b)

न्यायदर्शन के चतुर्थ प्रमाण प्रसंग में तर्कभाषाकार आचार्य केशव मिश्र 'उपमिति' का स्वरूप बतलाते हुए कहते हैं— संज्ञासंज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः। अर्थात् किसी वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं।

यथा—'गो सादृश्य विशिष्ट पिण्ड' में गवय (नीलगाय) शब्द संज्ञा है, जो पशु-विशेष वन में देखा गया वह संज्ञी है। अतः इन दोनों संज्ञा एवं संज्ञी का विशिष्ट ज्ञान ही उपमिति कहलाता है।

(1) लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्। लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है तथा धूमादिज्ञानमनुमिति, धूमादि का ज्ञान अनुमिति है।

(3) साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। अर्थात् साक्षात्कार करने वाली प्रमा ही प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाती है।

(4) **आप्तवाक्यं शब्दः** आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण कहलाता है। जैसा पदार्थ है वैसा ही उपदेश करने वाला पुरुष आप्त कहा जाता है।

28. तुरी-वेमादिकं न्यायनये पटस्य कीदृशं कारणं मन्यते?

(a) निमित्तकारणम् (b) समवायिकारणम्

(c) समवाय्यसमवायिकारणम् (d) असमवायिकारणम्

उत्तर-(a)

जो न समवायी कारण है न ही असमवायी कारण है, किन्तु कारण है वह निमित्तकारण कहलाता है। जैसे—वेमा आदि पट का निमित्तकारण है।

(1) समवायी कारण वह है जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है। जैसे—तन्तु पट का समवायी कारण है क्योंकि तन्तुओं में पट समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है।

(2) जो समवायी कारण में प्रत्यासन्न होता है और जिसकी सामर्थ्य निश्चित होती है वह असमवायी कारण है, जैसे—तन्तुसंयोग।

29. तर्कसङ्ग्रहदिशा अन्वय-व्यतिरेकदृष्टान्तरहितो हेत्वाभासः कः?

(a) अनुपसंहारी (b) साधारणः

(c) असाधारणः (d) विरुद्धः

उत्तर-(a)

अन्नमभट्ट प्रणीत् तर्कसंग्रह में पांच प्रकार के हेत्वाभास गिनाए गए हैं—

(1) सव्यभिचार (2) विरुद्ध

(3) सत्प्रतिपक्ष (4) असिद्ध

(5) बाधित

सव्यभिचार के तीन भेद होते हैं—

(i) साधारण (ii) असाधारण

(iii) अनुपसंहारी।

अन्वय और व्यतिरेक दृष्टान्त से रहित हेतु को अनुपसंहारी हेत्वाभास कहते हैं, जैसे—सर्वंनित्यम् प्रमेयत्वादिति। सबकुछ अनित्य है प्रमेय होने के कारण। यहाँ पक्ष सर्व में अनित्यत्व रूप साध्य की सिद्धि के लिए प्रमेयत्व हेतु है और पक्ष सभी पदार्थ हैं, उसके अतिरिक्त कुछ भी पदार्थ नहीं हैं अतः दृष्टान्त के न होने पर यह अनुपसंहारी नामक हेत्वाभास बन जाता है।

(2) जो हेतु साध्य के अभाव वाली जगह पर रहता है उसे साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास कहते हैं। जैसे—पर्वतो वह्निमान्प्रमेयत्वात्

(3) जो हेतु समस्त सपक्ष और विपक्ष में न रहकर केवल पक्षमात्र में रहता है, वह असाधारण हेत्वाभास कहलाता है, जैसे—शब्दो नित्यः शब्दत्वादिति।

(4) साध्य के अभाव में व्याप्त हेतु को विरुद्ध नामक हेत्वाभास कहते हैं, जैसे—शब्दो नित्यः कृतकत्वात्।

नोट—साधारण, असाधारण एवं अनुपसंहारी ये तीनों भेद सव्यभिचार हेत्वाभास के अन्तर्गत आते हैं।

30. 'वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात्' इत्युदाहरणं कस्य हेत्वाभासस्य?

(a) आश्रयासिद्धहेत्वाभासस्य (b) व्याप्यत्वासिद्धहेत्वाभासस्य

(c) स्वरूपासिद्धहेत्वाभासस्य (d) बाधितहेत्वाभासस्य

उत्तर-(d)

यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः स बाधितः—जिस हेतु का साध्याभाव अन्य प्रमाण से पक्ष में निश्चित है, उसे बाधित हेत्वाभास कहते हैं। जैसे—वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वाज्जलवत्।
अग्नि उष्ण नहीं है, द्रव्य होने के कारण। यहां पर अनुष्णत्व साध्य है, उसका अभाव स्पार्शन प्रत्यक्ष से जाना ही जाता है। अतः उक्त हेतु बाधित हेत्वाभास से ग्रस्त है।
आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध एवं व्याप्यत्वासिद्ध ये तीनों असिद्ध हेत्वाभास के उदाहरण हैं।

31. वेदान्तसारानुसारं 'नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपसनानां त्ववान्तरफलम्' किम्?

(a) स्वर्गलोकप्राप्तिः (b) पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः

(c) शरीरशुद्धिः (d) पापकर्मफलविनाशः

उत्तर-(b)

नित्य, नैमित्तिक और प्रायश्चित कर्मों का परम प्रयोजन चित्त की शुद्धि है, परन्तु उपासना का परम प्रयोजन चित्त की एकाग्रता है। नित्य नैमित्तिक कर्मों का अवान्तर फल पितृलोक की प्राप्ति तथा उपासना का अवान्तरफल सत्यलोक की प्राप्ति है। कर्म से पितृलोक और विद्या से सत्यलोक प्राप्त होता है।
(1) कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोक—कर्म से पितृलोक और विद्या से स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।

32. वेदान्तसारस्य 'विद्वन्मनोरंजनी' इति नाम्न्याः टीकायाः रचयिता कोऽस्ति?

(a) सदानन्दः (b) नृसिंह सरस्वती

(c) रामतीर्थः (d) कृष्णतीर्थः

उत्तर-(c)

विद्वन्मनोरंजनी टीका के कर्ता कृष्णतीर्थ के शिष्य प्रसिद्ध विद्वान् रामतीर्थयति हैं। महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज ने इन्हें मधुसूदनसरस्वती का समकालीन माना है। रामतीर्थ का समय 17वीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध माना जा सकता है। वेदान्तसार की यह सर्वोत्तम टीका है।

(1) सदानन्दयोगीन्द्र का वेदान्तसार अद्वैतवेदान्त का एक सङ्क्षिप्त प्रकरण ग्रन्थ है।
(2) वेदान्तसार पर उपलब्ध नृसिंहसरस्वती की प्राचीन टीका 'सुबोधिनी' है। यह वेदान्तसार की सबसे प्राचीन टीका है।
(3) रामतीर्थ के गुरु का नाम कृष्णतीर्थ था।

33. विज्ञानमयकोशः किं भवति?

(a) निर्गुणं ब्रह्म (b) सगुणं ब्रह्म
(c) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धिः (d) ज्ञानेन्द्रियसहितं मनः

उत्तर-(c)

इयं बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो भवति–यह बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों सहित विज्ञानमयकोश कहलाती है। यह विज्ञानमयकोशावच्छिन्न चिदात्मा ही व्यावहारिक जीव कहा जाता है। मैं कर्त्ता हूँ, भोक्ता हूँ, सुखी हूँ, दुःखी हूँ। इस प्रकार अभिमान रखने के कारण यही 'इहलोक' और परलोक में गमन करता है।

बुद्धि + 5 ज्ञानेन्द्रिय (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) = विज्ञानमयकोश

(4) मनस्तु ज्ञानेन्द्रियैः सहितं सन्मनोमयकोशो भवति–मन, ज्ञानेन्द्रियों के साथ मिलकर मनोमयकोश कहलाता है। मन + 5 कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) = मनोमयकोश

34. 'अखण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा' स्थितिरियं समाधेः कीदृशो विघ्नः?

(a) विक्षेपः (b) कषायः
(c) लयः (d) रसास्वादः

उत्तर-(c)

आठ अङ्गों वाली निर्विकल्पक समाधि में लय, विक्षेप, कषाय और रसास्वाद ये चार विघ्न सम्भव होते हैं।

अखण्ड वस्तु का अवलम्बन न करने के कारण चित्तवृत्ति का सो जाना अर्थात् निद्रा ही लय है।

अखण्ड वस्तु का अवलम्बन न करने के कारण चित्तवृत्ति का अन्य वस्तुओं का अवलम्बन करना विक्षेप है।

लय और विक्षेप का अभाव होने पर भी रागादि वासनाओं के कारण चित्तवृत्ति के स्तब्ध हो जाने से अखण्ड वस्तु का अवलम्बन न करना 'कषाय' है।

अखण्ड वस्तु का अवलम्बन न करने पर भी चित्तवृत्ति का सविकल्पक समाधि के आनन्द का आस्वादन करने लगना ही रसास्वाद है।

35. सांख्यकारिकानुसारं सृष्टेरुत्पत्तिः कस्माद् भवति?

(a) असतः (b) सतः
(c) नासतः न सतः (d) पुरुषात्

उत्तर-(b)

सांख्यकारिका के अनुसार कारणव्यापार से पहले कार्य सत् होता है–

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत् कार्यम्।।

कार्य सत् होता है अर्थात् कारण में वर्तमान होता है क्योंकि जो असत् है, उसे उत्पन्न नहीं किया जा सकता, उपादान कारण का ही ग्रहण किया जाता है। सभी कार्य सभी कारणों से उत्पन्न होते हैं। जिस कार्य को उत्पन्न करने में जो कारण शक्त है उसी शक्त कारण से सत् कार्य की उत्पत्ति होती है।

अतः कारणव्यापार से पहले कार्य सत् होता है।

(1) **असतः सत् जायते**–कुछ दार्शनिकों के अनुसार, ''असत् से सत् की उत्पत्ति होती है।''
(2) **सतः असत् जायते**–सत् से असत् की उत्पत्ति होती है
(3) पुरुष या आत्मा का अस्तित्व है, क्योंकि सङ्घात अपने से भिन्न दूसरे के लिए होते हैं। पुरुष भोक्ता होता है। पुरुष प्रकृति से भिन्न होता है।
सांख्य के अनुसार पुरुष अनेक होता है।

36. पुरुषस्य सत्ता कस्मात् सिद्ध्यति?

(a) कारणभावात् (b) कार्यभावात्
(c) भोक्तृभावात् (d) उत्पत्तिभावात्

उत्तर-(c)

सांख्य के अनुसार पुरुष की सत्ता निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

''सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्,
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावाऽत् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।''

(सांख्य. 17)

पुरुष या आत्मा का अस्तित्व है, क्योंकि सङ्घात अपने से भिन्न दूसरे के लिए होते हैं। त्रिगुणत्व का अभाव भी किसी अन्य में होता है। अधिष्ठित करने वाला कोई अधिष्ठाता भी होता है, कोई भोक्ता होता है। क्योंकि कैवल्य प्राप्त करने के लिए प्रवृत्ति होती है।

37. सांख्यदर्शनानुसारं करणं कतिविधं वर्तते?

(a) चतुर्दशविधम् (b) षोडशविधम्
(c) एकादशविधम् (d) त्रयोदशविधम्

उत्तर-(d)

आचार्य ईश्वरकृष्णप्रणीत् सांख्यकारिका में तेरह प्रकार के करण बताए गए हैं–

''करणं त्रयोदशविधं तदाहरणधारणप्रकाशकरम्।
कार्यं च तस्य दशधाऽऽहार्यं धार्यं प्रकाश्यंच।।

(सांख्य का. 32)

अर्थ– करण तेरह प्रकार के हैं। वे आहरण, धारण और प्रकाश करने वाले हैं। उनके द्वारा आहरण किए जाने योग्य धारण किए

जाने योग्य और प्रकाशित किए जाने योग्य कार्य दस-दस प्रकार के होते हैं।

5 ज्ञानेन्द्रियां + कर्मेन्द्रियां + मन + बुद्धि + अहंकार = 13 करण

(2) सांख्य के अनुसार 16 तत्त्वों का समुदाय विकार्य (कार्य) कहलाता है।

16 कार्य = (5 ज्ञानेन्द्रियां + 5 कर्मेन्द्रियां + 5 महाभूत + मन)

(3) वैकृत सत्त्वगुणविशिष्ट अहंकार से एकादश इन्द्रियों का सात्त्विक गुण प्रादुर्भाव होता है।

38. 'स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्य सैषा भवत्यसामान्या' इत्यस्यां पङ्क्तौ 'त्रय' इत्यनेन पदेन किमभिधीयते?

(a) बुद्धिर् अहङ्कारः मनश्च
(b) मनः, ज्ञानेन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि च
(c) पञ्चतन्मात्राणि, पञ्चमहाभूतानि पञ्चप्राणाश्च
(d) पुरुषः, अव्यक्तम् व्यक्तम् च

उत्तर-(a)

अन्तःकरणत्रयस्य वृत्तिमाह–''स्वालक्षण्यम्'' अर्थात् त्रिविध (बुद्धि, अहंकार और मन) अन्तःकरण के व्यापार को स्वालक्षण कहते हैं जो इस कारिका के द्वारा प्रस्तुतव्य है–

''स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्य सैषा भवत्यसामान्या।
सामान्यकरणवृत्तिः प्राणाद्या वायवः पञ्च।। सां.का. 29।।

अर्थात्–तीनों अन्तःकरणों के अपने-अपने असाधारण लक्षण ही उनके व्यापार हैं और ये व्यापार उनके असाधारण व्यापार हैं। त्रिविध अन्तःकरण का असाधारण व्यापार–प्राणापानादि पांच वायु हैं।

(2) मन + 5 ज्ञानेन्द्रियों + 5 कर्मेन्द्रियों का समुदाय मनोमयकोश कहलाता है।

(3) पञ्चतन्मात्रा
5 महाभूत–पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश।
5 प्राण–प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान।

(4) पुरुष–न प्रकृति है न विकृति है।
(अव्यक्त) प्रकृति–केवल कारण रूप है।
कार्य (व्यक्त)–16 तत्त्वों का समुदाय व्यक्त कहलाता है।

39. समीचीनां तालिकां चिनुत–

(a) मेघदूतम्	(i) भट्टनारायणः
(b) रत्नावली	(ii) अश्वघोषः
(c) वेणीसंहारः	(iii) कालिदासः
(d) बुद्धचरितम्	(iv) हर्षः

(a) (iv) (iii) (ii) (i) (b) (iii) (i) (ii) (iv)
(c) (iii) (iv) (i) (ii) (d) (iii) (iv) (ii) (i)

उत्तर-(c)

(A) 'मेघदूत' कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत कृति है। इसमें कवि की प्रौढ़ कल्पना, उदात्त भावना, परिष्कृत शैली एवं कोमलकान्त पदावली का सामंजस्य मिलता है। यह कवि की कल्पना का मनोरम प्रसून है। अतएव विश्व के सभी सहृदयों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।
इसमें 115 पद्य हैं। यह दो भागों में विभक्त है–पूर्वमेघ और उत्तरमेघ। पूर्वमेघ में 63 श्लोक और उत्तरमेघ में 52 श्लोक हैं। मल्लिनाथ ने अपनी टीका में 121 श्लोक स्वीकार किए हैं। किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त मानते हुए 115 को ही प्रामाणिक माना है।

(B) नाटककार के रूप में हर्ष को प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानन्द का रचयिता माना जाता है।
रत्नावली 4 अंकों की नाटिका है। इसमें राजा उदयन और सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका) के प्रणय और परिणय का वर्णन है।

(C) भट्टनारायण का केवल एक ही ग्रन्थ वेणीसंहार नाटक प्राप्त होता है। शास्त्रीय दृष्टि से रत्नावली के बाद इसी का अत्यधिक महत्त्व है। इस नाटक में 6 अंक हैं। इसमें भीम के द्वारा द्रौपदी के वेणीसंहार (वेणी को संवारने या बांधने) का वर्णन है।

(D) बुद्धचरित अश्वघोष की रचना है। यह एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवनचरित तथा उनके सिद्धान्त वर्णित हैं। इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है। यह महाकाव्य मूलरूप में 28 सर्गों में विभक्त है।

40. बुद्धचरिते सिद्धार्थस्य हृदि संवेगोत्पत्तौ प्रथमं कारणं किं वर्णितम्?

(a) रुग्णस्य दर्शनम् (b) वृद्धस्य दर्शनम्
(c) मृतस्य दर्शनम् (d) उद्यानस्य दर्शनम्

उत्तर-(b)

बुद्धचरित के तृतीय सर्ग में सिद्धार्थ को वृद्ध पुरुष को देखकर शोक उत्पन्न हुआ–

''एवं जरा हन्ति च निर्विशेषं स्मृतिं च रूपं च पराक्रमं च न चैव संवेगमुपैति लोकः प्रत्यक्षतोऽपीदृशमीक्षमाणः।**।3/36।।**

अर्थ–स्मृति, रूप एवं पराक्रम को निःशेष रूप वृद्धावस्था नष्ट करती है तथा प्रत्यक्ष ऐसा देखते हुए भी लोग संवेग को प्राप्त नहीं होते।

(1) द्वितीय कारण बुद्ध का शोक उत्पन्न करना–**''रुग्णस्य दर्शनम्''** है। उनके अनुसार रोग दुःख का कारण होता है।

(3) बुद्ध के दुःख का तृतीय कारण–**''मृतस्य दर्शनम्''** है। अर्थात् मृत व्यक्ति को देखने के बाद संसार को नश्वर समझकर महात्मा बुद्ध गृह को त्यागकर सन्यासी हो गए।

41. दशकुमारचरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति–

(a) राजवाहनचरिते (b) अपहारवर्मचरिते

(c) पुष्पोद्भवचरिते (d) उपहारवर्मचरिते

उत्तर-(a)

'दशकुमारचरित' एक सुन्दर गद्यकाव्य है। इसमें पूर्वपीठिका, चरित और उत्तरपीठिका तीन भाग हैं। पांच उच्छ्वासों की पूर्वपीठिका है। आठ उच्छ्वासों का चरित भाग है। उत्तरपीठिका केवल अष्टम् उच्छ्वास की उपसंहार मात्र है। इस काव्य की भाषा ललित तथा मधुर है और साथ ही बाणभट्ट एवं सुबन्धु कवि की भाषाओं से सरल भी है। यह काव्य श्लेषालंकारहीन है। दशकुमारचरित के 10 कुमार-(a) राजवाहन, (2) सोमदत्त, (3) पुष्पोद्भव, (4) अपहारवर्मा, (5) उपहारवर्मा, (6) अर्थपाल, (7) प्रमतिः, (8) मित्रगुप्त, (9) मन्त्रगुप्त, (10) विश्रुत।

42. शिशुपालवधस्य सर्गसंख्या भवति–

(a) ऊनविंशतिः (b) विंशतिः

(c) एकविंशतिः (d) द्वाविंशतिः

उत्तर-(b)

महाकवि माघ प्रणीत् शिशुपालवधम् में सर्गों की संख्या 20 है, जिसमें प्रथम सर्ग कृष्ण-नारद सम्भाषण से प्रारम्भ होता है, जो कि पाठ्यक्रम के लिए अतिमहत्वपूर्ण है।

शिशुपालवधम् के अनुसार 20 सर्गों का नाम निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

प्रथम सर्ग–देवर्षि नारद का आगमन

द्वितीय सर्ग–बलराम और उद्धव की गुप्तमन्त्रणा

तृतीय सर्ग–द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान

चतुर्थ सर्ग–रैवतक पर्वत का वर्णन

पञ्चम् सर्ग–सैन्य शिविर का संस्थापन

षष्ठ सर्ग–षड्ऋतु वर्णन

सप्तम् सर्ग–वन-विहार वर्णन

अष्टम् सर्ग–जलक्रीड़ा वर्णन

नवम् सर्ग–सायंकाल चन्द्रोदय

दशम् सर्ग–पानगोष्ठी

एकादश सर्ग–प्रभात वर्णन

द्वादश सर्ग–यमुना नदी का वर्णन

त्रयोदश सर्ग–श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलन

चतुर्दश सर्ग–युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा और भीष्म द्वारा उनकी स्तुति।

पञ्चदश सर्ग–शिशुपाल का क्रुद्ध होना

षोडश सर्ग–शिशुपाल के दूत का श्रीकृष्ण की सभा में उभयार्थक

सप्तदश सर्ग–श्रीकृष्णपक्षीय राजाओं का अभ्यन्त क्रुद्ध होना

अष्टादश सर्ग–दोनों सेनाओं का साक्षात्कार और घोर युद्ध

नवदश सर्ग–चित्रालंकार निरूपण

विंशति सर्ग–श्रीकृष्ण-शिशुपाल शस्त्र युद्ध वर्णन

(1) 'रघुवंश' में सर्गों की संख्या 19 है।

(4) 'नैषधीयचरितम्' में सर्गों की संख्या 22 है।

43. एषु किं खण्डकाव्यं भवति?

(a) मेघदूतम् (b) शिशुपालवधम्

(c) कादम्बरी (d) किरातार्जुनीयम्

उत्तर-(a)

महाकवि कालिदास प्रणीत् मेघदूत एक खण्डकाव्य/गीतिकाव्य है। इसी को दूतकाव्य भी कहते हैं। इसमें मुख्य छन्द मन्दाक्रान्ता है।

(2) महाकवि माघ प्रणीत् 'शिशुपालवधम्' बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आने वाला एक महाकाव्य है।

(3) महाकवि बाणभट्ट प्रणीत् 'कादम्बरी' गद्यकाव्य है। इसी को कथा भी कहते हैं।

(4) महाकवि भारवि प्रणीत् 'किरातार्जुनीयम्' बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आने वाला एक महाकाव्य है।

44. अभिज्ञानशाकुन्तले धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणम्?

(a) प्रवेशकस्य (b) विष्कम्भकस्य

(c) अङ्कावतारस्य (d) अङ्कमुखस्य

उत्तर-(a)

विष्कम्भक के तुल्य यह भी भूत और भावी घटना का सूचक होता है। इसके पात्र निम्नकोटि के व्यक्ति होते हैं और उनकी भाषा प्राकृत होती है। इसका लक्षण है–

''प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।

अंकद्वयान्तर्विज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा।। (सा.द. 6-57)

अतः अभिज्ञानशाकुन्तल के धीवर प्रसंग में पुरुष, जानुक, श्याल, कोतवाल इत्यादि निम्नकोटि के पात्र हैं, इसलिए यह उदाहरण प्रवेशक के अन्तर्गत आता है।

(2) विष्कम्भक भूत और भावी घटना का सूचक होता है। इसमें एक या दो मध्यमपात्र होते हैं। इसकी भाषा संस्कृत होती है।

(3) अवच्छिन्न रूप से पूर्व अङ्क के क्रम में दूसरे अङ्क की वस्तु का अवतारणा ही अङ्कावतार है।

(4) अङ्क समाप्ति के अवसर पर छूटे हुए अर्थ की सूचना देना अङ्कास्य कहलाता है।

45. मृच्छकटिके चारुदत्तस्य पुत्रः अस्ति–

(a) चन्दनकः (b) राहितः

(c) रोहसेनः (d) आर्यकः

उत्तर-(c)

महाकविशूद्रक प्रणीत् मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसके नायक चारुदत्त और नायिका धूता एवं गणिका वसन्तसेना है। यह 10 अङ्कों में विभक्त है।
चारुदत्त और धूता का पुत्र रोहसेन है।
(1) मृच्छकटिकम् में चन्दनक, नगर का रक्षक है।
(4) मृच्छकटिकम् में आर्यक गोपालक, राजा पालक का बन्दी पश्चात् राजा था।
(5) रोहित हरिश्चन्द्र का पुत्र है।

46. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' इति कस्य कवेः विषये प्रोक्तम्?
(a) माघस्य (b) भारवेः
(c) कालिदासस्य (d) श्रीहर्षस्य

उत्तर-(b)

महाकवि भारवि संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान रत्नों में से एक हैं। उनका महाकाव्य बृहत्त्रयी का प्रथम रत्न है। इनका काव्य-सौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है, जो बाहर से कठोर, किन्तु अन्दर से अत्यन्त मधुर है।
भारवि की अन्य प्रशस्तियां—
(1) भारवेरर्थगौरवम्
(2) भा रवेरिव भारवेः
(3) प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।
(1) माघ की प्रशस्तियां—
(1) तावद् भारवेर्भातियावन्माघस्य नोदयः
(2) माघेन विघ्नतोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे
(3) माघेनेव च माघेनकम्पः कस्य न जायते।
(3) कालिदास की प्रशस्तियां—
(1) उपमा कालिदासस्य।
(4) श्रीहर्ष की प्रशस्तियां—
(1) नैषधेपदलालित्यं
(2) नैषधं विद्वदौषधम्।

47. साहित्यदर्पणानुसारेण एतेषु कस्य रूपकमध्ये गणना नास्ति?
(a) प्रकरणस्य (b) त्रोटकस्य
(c) व्यायोगस्य (d) भाणस्य

उत्तर-(b)

आचार्य विश्वनाथ प्रणीत् साहित्य-दर्पण में रूपकों की संख्या दस है जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है-(a) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) प्रहसन (5) डिम (6) व्यायोग (7) समवकार (8) वीथी (9) अङ्क (10) ईहामृग।
जबकि त्रोटक उपरूपक के 18 भेदों में से एक है। उपरूपक के 18 भेद निम्न प्रकार से हैं-(a) नाटिका (2) त्रोटक (3) गोष्ठी (4) सट्टक (5) नाट्यरासक (6) प्रस्थान (7) उल्लाप्य (8) काव्य (9) प्रेखण (10) रासक (11) संलापक (12) श्रीगदिक (13) शिल्पक (14) विलासिका (15) दुर्मल्लिका (16) प्रकरणी (17) हल्लीश (18) भणिका।

48. साहित्यदर्पणे ''कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः'' इति कस्य रसस्य वर्णः वर्णितः?
(a) वीरस्य (b) हास्यस्य
(c) शृङ्गारस्य (d) शान्तस्य

उत्तर-(d)

शान्त वह रस है जो कि शम रूप स्थायीभाव का आस्वाद हुआ करता है। इसके आश्रय उत्तम प्रकृति के व्यक्ति हैं। इसका वर्ण कुन्द-श्वेत अथवा चन्द्रश्वेत है। इसके देवता भगवान् नारायण हैं—
''शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः।
कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः श्रीनारायणदैवतः।। सा. 3/245
(1) वीर रस वह है जिसे उत्साह रूपी स्थायी भाव का आस्वाद कहा गया है।
(2) शृङ्गार रस कामोद्भेद से प्रादुर्भूत होता है।
(3) हास्यरस का वर्ण श्वेत एवं देवता प्रमथ हैं। इसका आविर्भाव आकार-विकृति, वाग्विकृति, वेषविकृति एवं चेष्टा से होता है।

49. साहित्यदर्पणे साकल्येन कतिप्रकारा लक्षणा प्रोक्ता?
(a) अशीतिः (b) षोडश
(c) द्वात्रिंशत् (d) अष्ट

उत्तर-(a)

पदवाक्यगातत्वेन प्रत्येकं ता अपि द्विधा।
यहां कारिका में ताः पद से उन लक्षणाओं का अभिप्राय है जो 40 प्रकार की लक्षणाओं के पदगत एवं वाक्यगत होने के कारण 80 प्रकार की होती हैं।
नोट—आचार्य मम्मट के अनुसार लक्षणा के षड् भेद माने गए हैं।

50. साहित्यदर्पणानुसारेण रिक्तं स्थानं पूरयत—
.... स्याद् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।
(a) लक्षणा (b) अभिधा
(c) व्यञ्जना (d) वाक्यम्

उत्तर-(d)

वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।
अर्थ—वाक्य ऐसे पदों का समूह है जिसमें योग्यता, आकाङ्क्षा और आसत्ति का रहना अनिवार्य है।
वाक्य के दो भेद होते हैं-(a) वाक्य (2) महावाक्य
शब्द की तीन शक्तियां होती हैं-(1) अभिधा (2) लक्षणा (3) व्यञ्जना
अभिधा का लक्षण—तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा।
लक्षणा का लक्षण—मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।
व्यञ्जना का लक्षण—विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Nov. 2017
संस्कृत पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' इति कस्य ऋग्वेदीयसूक्तस्य अंशः?

(a) अग्निसूक्तस्य (b) वाक्सूक्तस्य
(c) इन्द्रसूक्तस्य (d) नासदीयसूक्तस्य

उत्तर–(b)

वाक्सूक्तम्, ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 125वां सूक्त है। इसके ऋषि-वाक्, देवता–वाक् अथवा परमात्मा, छन्द त्रिष्टुप् है।
प्रस्तुत सूक्तिवाक्य वाक्सूक्त से उद्धृत है–

''मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।''

अर्थात्–जो अन्न को खाता है, जो देखता है, जो सांस लेता है और जो कही हुई बात को सुनता है, वह मेरे द्वारा अर्थात् मेरे कारण ही वैसा करने में समर्थ होता है। मुझे न मानने वाले जो लोग हैं, वे विनष्ट हो जाते हैं। हे विद्वान् मित्र ! सुनो मैं तुम्हें श्रद्धा के योग्य बात बतलाती हूँ।
टिप्पणी–प्राणिति–प्र + अन् धातु, लट् लकार, प्र.पु.,ए.व.
शृणोति–श्रु + लट् प्र.पु.ए.व.

- अग्निसूक्त, ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके ऋषि मधुच्छन्दा हैं।
- इन्द्रसूक्त द्वितीय मण्डल का 12वां सूक्त है। इसके ऋषि गृत्समद् हैं।

2. 'हिरण्यगर्भसूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले आयाति?

(a) प्रथमे (b) अष्टमे
(c) नवमे (d) दशमे

उत्तर–(d)

हिरण्यगर्भ सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का 121वां सूक्त है। इसके ऋषि हिरण्यगर्भ एवं देवता क संज्ञक प्रजापति हैं तथा छन्द त्रिष्टुप् है।

- ऋग्वेद में दश मण्डल हैं तथा दशों मण्डल के अलग-अलग सूक्त हैं जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य हैं–

मण्डल	सूक्त
प्रथम मण्डल	अग्निसूक्त
द्वितीय मण्डल	इन्द्रसूक्त, रुद्रसूक्त
तृतीय मण्डल	उषस् सूक्त, मित्र सूक्त, नद्यः सूक्त
चतुर्थ मण्डल	सविता सूक्त
पंचम् मण्डल	पर्जन्य सूक्त
षष्ठ मण्डल	पूषा सूक्त
सप्तम् मण्डल	वरुण सूक्त, मित्रावरुण सूक्त
अष्टम् मण्डल	विश्वेदेवाः सूक्त
नवम् मण्डल	सोम, सूक्त पवमान
दशम् मण्डल	हिरण्यगर्भ सूक्त, वाक् सूक्त, पुरुष सूक्त, नासदीय सूक्त इत्यादि।

3. ऋग्वेदस्य भाष्यकारः कः?

(a) महीधरः (b) स्कन्दस्वामी
(c) हलायुधः (d) भट्टभास्करः

उत्तर–(b)

स्कन्दस्वामी : ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद् का भाष्य किया था।

''स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात् ।
चक्रुः सहैकम् ऋग्भाष्यं, पदवाक्यार्थगोचरम् ।।''

स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक मिलता है। शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने किया है। स्कन्दस्वामी ने यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी है।

- **महीधर :**–ये काशी निवासी नागर ब्राह्मण थे। इन्होंने यजुर्वेद भाष्य का नाम 'वेददीप' रखा है।
- **हलायुध :**–सायण से पूर्ववर्ती हलायुध ने काण्व संहिता पर अपना भाष्य लिखा है। इस भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्व'है। इसके अतिरिक्त मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व आदि भाष्य भी इन्होंने लिखा।
- **भट्टभास्कर :**–इन्होंने तैत्तिरीय संहिता पर 'ज्ञानयज्ञ' नामक भाष्य लिखा है।

4. 'व्रात्यकाण्डम्' कस्मिन् वेदे प्राप्यते?

(a) अथर्ववेदे (b) सामवेदे
(c) ऋग्वेदे (d) यजुर्वेदे

उत्तर–(a)

महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार–अथर्ववेद की कुल नौ शाखाएं एवं 20 काण्ड हैं।
इस संहिता के प्रारम्भिक 12 काण्डों का विषय मारण-मोचन-

उच्चाटनादि है। तेरहवां काण्ड आध्यात्मिक है। चौदहवें काण्ड में प्रधान रूप से विवाह का वर्णन है। 15वां काण्ड **व्रात्यकाण्ड** है, जिसमें व्रात्यों के यज्ञ-सम्पादन का आध्यात्मिक वर्णन है। सोलहवां काण्ड दु:स्वप्ननाशक तथा 17वें काण्ड में अभ्युदय-प्राप्ति के निमित्त भव्य प्रार्थना की गई है। अट्ठारहवें काण्ड को श्राद्ध-काण्ड के नाम से जाना जाता है। 19वें काण्ड को, भैसज्य, राष्ट्रवृद्धि कहते हैं। 20वां काण्ड आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

- **सामवेद में तीन संहिताएं हैं—**
  (i) कौथुमीय, (ii) राणायनीय,
  (iii) जैमिनीय
- **ऋग्वेद में 5 संहिताएं हैं—**
  (i) शाकल, (ii) बाष्कल,
  (iii) आश्वलायन, (iv) शांखायन,
  (v) माण्डूकायन
- **यजुर्वेद के दो भाग हैं—**
  (i) कृष्ण यजुर्वेद, (ii) शुक्ल यजुर्वेद

5. शुनः शेपस्य आख्यानं कुत्र प्राप्यते?

(a) ऐतरेयब्राह्मणे (b) तैत्तिरीयब्राह्मणे
(c) शतपथब्राह्मणे (d) ताण्ड्यब्राह्मणे

उत्तर—(a)

शुनः शेप आख्यान ऋग्वेद के ऐतरेयब्राह्मण में प्राप्त होता है। इस आख्यान को **हरिश्चन्द्र उपाख्यान** भी कहते हैं। इसका **चरैवेति** गान विश्व-विश्रुत है। शुन:शेप ऋषि ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के सात सूक्तों (24-30) के द्रष्टा हैं।

- तैत्तिरीयब्राह्मण, यजुर्वेद के कठशाखा से सम्बन्धित है।
- शतपथब्राह्मण, शुक्ल यजुर्वेद वाजसनेयि संहिता से सम्बन्धित है।
- ताण्ड्यब्राह्मण, सामवेद से सम्बन्धित है।

6. वेदस्य नासिकास्थानीयमङ्गं किमस्ति?

(a) शिक्षा (b) ज्योतिषम्
(c) निरुक्तम् (d) व्याकरणम्

उत्तर—(a)

वेदों के अर्थज्ञान में तथा वैदिक कर्मकाण्ड-विषयक अनुष्ठानों के प्रतिपादन में भरपूर सहायता प्रदान करने में जो सक्षम और सार्थक शास्त्र हैं, उन्हें ही विद्वानों के द्वारा वेदाङ्ग की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

वेदों का अर्थ जानने के लिए जिन शास्त्रों का प्रयोग किया जाता है उन्हें वेदाङ्ग कहा जाता है। यह-
(i) शिक्षा (ii) कल्प (iii) व्याकरण (iv) निरुक्त (v) छन्द और (vi) ज्योतिष के भेद से 6 प्रकार का होता है।

- **शिक्षा—शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य**—शिक्षा को वेदरूपी पुरुष की नासिका कहा जाता है।
- **कल्प—हस्तौ कल्पोऽथपठ्यते—**कल्प को वेदरूपी पुरुष का हाथ कहा गया है।
- **व्याकरण—मुखं व्याकरणं स्मृतम्—**व्याकरण को वेदरूपी पुरुष का मुख कहा जाता है।
- **निरुक्त—निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते—**निरुक्त को वेदरूपी पुरुष का श्रोत्र कहा गया है।
- **छन्द-** छन्दः पादौ तु वेदस्य-छन्द:, वैदरूपी पुरूष का पैर है
- **ज्योतिष—ज्योतिषामयनं—**ज्योतिष वेदांग को वेदरूपी पुरुष का नेत्र कहा गया है।

7. 'यज्ञस्य देवमृत्विजम्'—इत्यत्र देवम् इति पदं कीदृशमस्ति?

(a) आद्युदात्तम् (b) मध्योदात्तम्
(c) अन्तोदात्तम् (d) सर्वानुदात्तम्

उत्तर—(c)

प्रस्तुत सूक्ति ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र के रूप में ही उद्धृत है—

''अग्निमीले पुरोहितम्, यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

अर्थ—यज्ञ के पुरोहित प्रकाशयुक्त देवताओं को यज्ञ में बुलाने वाले ऋत्विक् तथा रत्नों के सर्वाधिक दाता अग्नि को मैं पूजता हूँ।

पदपाठ—

अग्निम्। ईळे। पुरःऽहितम्। यज्ञस्य। देवम्। ऋत्विजम्। होतारम्। रत्नऽधातमम्॥

8. स्वरितपरे अनुदात्ताः किमुच्यन्ते?

(a) उदात्ताः (b) स्वरिताः
(c) प्रचयाः (d) अनुदात्ताः

उत्तर—(c)

स्वरित के पर अनुदात्त को 'प्रचय' कहा जाता है। **स्वर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं—**

(1) उदात्त, (2) अनुदात्त,
(3) स्वरित

लौकिक पद्धति :

उदात्त स्वर—जिस स्वर पर बल देकर ऊँचा उच्चारण किया जाता है, उसे उदात्त कहते हैं।

अनुदात्त स्वर—जो कण्ठ के निचले भाग से बोला जाता है, उसे अनुदात्त कहते हैं।

स्वरित स्वर—समान स्वर को स्वरित कहते हैं।

प्रचय—अनङ्कित होता है।

वैदिक पद्धति में :

उदात्त—कोई चिह्न नहीं।

अनुदात्त—अक्षर के नीचे पड़ी रेखा (-)

स्वरित—अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा (।)

प्रचय—अनङ्कित होता है।

9. **'भवाति' इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति?**

(a) लेट् (b) लोट्
(c) लङ् (d) लुङ्

उत्तर–(a)

भवाति शब्द 'भू' धातु लेट् लकार प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप है। इसका प्रयोग वैदिक संस्कृत अर्थात् वेदों में होता है। लौकिक संस्कृत में 10 लकारों का प्रयोग होता है, परन्तु वैदिक संस्कृत में लेट् लकार अधिक मात्रा में पाया जाता है।

लेट् लकार का प्रयोग प्रायः भूतकाल में हुआ है। यथा–सविता धर्मं साविषत् । तारिषत्, जोषिषत्, पताति, जीवाति, भवाति, ईशै आदि क्रियाओं का प्रयोग वेदों में ही मिलता है। परन्तु अन्य अर्थों में भी लेट् लकार हो सकता है। पाणिनि ने लिङ् के अर्थ में लेट् का विधान किया है।

- **'भू'** धातु लोट्लकार, प्रथम पुरुष के तीनों वचनों में भवतु, भवताम्, भवन्तु रूप बनता है।
- **'भू'** धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष के तीनों वचनों में अभवत्, अभवताम्, अभवन् रूप बनता है।
- **'भू'** धातु लुङ्लकार, प्रथम पुरुष के तीनों वचनों में अभूत्, अभूताम्, अभूवन् रूप बनता है।

10. **सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति–**

(a) गोपथब्राह्मणम् (b) शांखायनब्राह्मणम्
(c) संहितोपनिषद्ब्राह्मणम् (d) शतपथब्राह्मणम्

उत्तर–(c)

सामगान की शास्त्रीय विधि के ज्ञान के लिए यह ब्राह्मण अतिमहत्वपूर्ण है। टीकाकार द्विजराज भट्ट का कथन है कि साम ब्रह्म के रसज्ञों को ब्राह्मण शास्त्रीय ज्ञान का शुद्ध रूप बताता है। इस संहितोपनिषद् ब्राह्मण के अतिरिक्त भी सामवेद के ब्राह्मण हैं, जो इस प्रकार द्रष्टव्य हैं–

(1) ताण्ड्यब्राह्मण (2) षड्विंशब्राह्मण
(3) सामविधानब्राह्मण (4) आर्षेयब्राह्मण
(5) देवताध्यायब्राह्मण
(6) मन्त्रब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण
(7) वंशब्राह्मण (8) जैमिनीय (आर्षेय) ब्राह्मण
(9) जैमिनीय तलवकार ब्राह्मण (10) जैमिनीय उपनिषद्ब्राह्मण

- गोपथ ब्राह्मण, अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण है।
- शांखायन ब्राह्मण, ऋग्वेद के अन्तर्गत आता है। ऋग्वेद के प्रमुखतः दो ब्राह्मण हैं–
  (i) ऐतरेय ब्राह्मण
  (ii) कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण।
- शुक्लयजुर्वेद का एकमात्र ब्राह्मण **'शतपथब्राह्मण'** है। इसमें 14 काण्ड, 100 अध्याय एवं 438 ब्राह्मण हैं।

11. **बृहदारण्यकम् केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?**

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर–(b)

बृहदारण्यक शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक है। इस आरण्यक में आत्मतत्त्व का विशद् विवेचन किया गया है।

अन्य वेदों में उपलब्ध आरण्यक ग्रन्थ :

1. **ऋग्वेद :** ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यक ग्रन्थ हैं–
   (i) ऐतरेय आरण्यक
   (ii) शांखायन आरण्यक
2. **शुक्लयजुर्वेदीय :** शुक्लयजुर्वेद से प्राप्त बृहदारण्यक है। यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्य है।
3. **कृष्णयजुर्वेदीय :** कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय और काठक शाखाओं का एक आरण्यक तैत्तिरीयारण्यक है।
4. **सामवेदीय :** सामवेद की जैमिनि शाखा का तलवकार आरण्यक है। इसको जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं।
5. **अथर्ववेदीय :** अथर्ववेद का कोई पृथक् आरण्यक नहीं है।

12. **'अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः'–इत्युक्तिः कुत्र विद्यते?**

(a) मुण्डकोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) छान्दोग्योपनिषदि

उत्तर–(a)

यह उपनिषद् अथर्ववेद की शौनक शाखा में उपलब्ध है।

प्रस्तुत मन्त्र मुण्डकोपनिषद् के द्वितीयखण्ड के 6वें मन्त्र के रूप में द्रष्टव्य है–

''अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः
स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः
ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं
स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात्।।6।।

अर्थात्–रथ की नाभि में जुड़े हुए अरों की भांति जिसमें समस्त देहव्यापिनी नाड़ियां एकत्र स्थित हैं, वह बहुत प्रकार से उत्पन्न होने वाला यह मध्यभाग में रहता है। इस सर्वात्मा परमात्मा का ओम् इस नाम के द्वारा ही ध्यान करो। अज्ञानमय अन्धकार से अतीत तथा भवसागर में अन्तिम तटरूप पुरुषोत्तम की प्राप्ति के लिए तुम लोगों का कल्याण हो।

- कठोपनिषद्, कृष्णयजुर्वेद के कठशाखा से सम्बन्धित है। इसमें यम- नचिकेता के संवाद का विवेचन किया गया है।
- बृहदारण्यकोपनिषद्, शुक्लयजुर्वेद के माध्यन्दिन संहिता में उपलब्ध है। इसमें याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद का विवेचन किया गया है।
- छान्दोग्योपनिषद्, सामवेद से सम्बन्धित है।

13. अतिमुक्तिः कुत्र वर्णिता?

(a) ईशावास्योपनिषदि (b) ऐतरेयोपनिषदि

(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) प्रश्नोपनिषदि

उत्तर–(c)

बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् तीनों में इसकी चर्चा होती है। यह आकार में ही विशाल नहीं अपितु तत्त्वज्ञान में भी अग्रगण्य है। इसके विवेचन गम्भीर उदात्त और प्रामाणिक हैं। इसमें मूलतः 6 अध्याय हैं।

बृहदारण्यकोपनिषद् की प्रमुख सूक्तियाँ —

- आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो निदिध्यासितव्यो
- अमृतत्वस्य तु नाऽऽशास्ति वित्तेन
- आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति
- असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय–

इस उपनिषद् के सर्वोत्तम उपदेशों में से यह एक है- हे परमात्मन् ! हमें असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से बचाकर अमरत्व की ओर ले चलो। अर्थात् हम असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व अर्थात् अतिमुक्ति की ओर चलें।

- ऐतरेयोपनिषद् ऐतरेय आरण्यक का एक अंश है। इसके द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम ऐतरेय उपनिषद् है।
- प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेदीय उपनिषद् है।

14. 'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्'–इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?

(a) ईशावास्योपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि

(c) ऐतरेयोपनिषदि (d) मुण्डकोपनिषदि

उत्तर–(c)

''आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् । नान्यत् किञ्चत् मिषत् । स ईक्षत् लोकान्नु सृजा इति ।। अर्थात् आरम्भ में (जगत् के) केवल परमात्म चैतन्य था। इसके अतिरिक्त कोई भी स्पंदन करने वाला नहीं था। उसने विचार किया कि मैं लोकों की सृष्टि करूं । (**1-1-1 ऐत.**)

- शुक्लयजुर्वेद की काण्व एवं वाजसनेयी संहिता का चालीसवां अध्याय ईशावास्योपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध है।
- तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध तैत्तिरीय ब्राह्मण का अन्तिम भाग तैत्तिरीय आरण्यक है। तैत्तिरीय आरण्यक के 10 प्रपाठकों में सप्तम्, अष्टम् एवं नवम् प्रपाठकों को तैत्तिरीयोपनिषद् कहते हैं।
- **मुण्डकोपनिषद्**–यह अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बद्ध उपनिषद् है। इसका मुण्डक नाम इसलिए पड़ा कि सम्भवतः इस सम्प्रदाय के लोग शिर मुण्डित रखते थे।

15. 'अन्नं बहु कुर्वीत'-अयमुपदेशः कुत्र प्राप्यते?

(a) ईशावास्योपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि

(c) छान्दोग्योपनिषदि (d) प्रश्नोपनिषदि

उत्तर–(b)

कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक में 10 प्रपाठक हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। यह उपनिषद् तीन वल्लियों में विभक्त है–

(1) शिक्षावल्ली (2) ब्रह्मानन्दवल्ली

(3) भृगुवल्ली ।

प्रस्तुत पंक्ति ब्रह्मानन्दवल्ली के नवम् अनुवाक से उद्धृत है–

अन्नं बहु कुर्वीत। तद् व्रतम्। पृथिवी वा अन्नम्। आकाशोऽन्नादः। अर्थात् तुम अन्नवृद्धि एवं अन्न संचय करोगे। वह सभी तुम्हारे श्रम का व्रत है, वस्तुतः पृथ्वी अन्न है तथा आकाश अन्न का भोक्ता है। आकाश पृथिवी पर प्रतिष्ठित है तथा पृथिवी आकाश पर प्रतिष्ठित है। इन सभी का अन्न पर प्रतिस्थापना है तथा उनके परिणामस्वरूप फल को बतलाया गया है।

- ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद काण्वशाखीय संहिता का 40वां अध्याय है। मन्त्र भाग का अंग होने के कारण इसका विशेष महत्व है। इसी को सबसे पहला उपनिषद् माना जाता है।
- छान्दोग्योपनिषद् सामवेदीय उपनिषद् है।
- प्रश्नोपनिषद्, अथर्ववेद के पैप्पलाद शाखीय ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत है। इस उपनिषद् में पिप्पलाद ऋषि ने सुकेशा आदि छः ऋषियों के छः प्रश्नों का क्रम से उत्तर दिया है, इसलिए इसका नाम प्रश्नोपनिषद् हो गया।

16. 'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा' इत्यत्र 'न' कीदृशः?

(a) उपमार्थीयः (b) प्रतिषेधार्थीयः

(c) विचिकित्सार्थीयः (d) समुच्चयार्थः

उत्तर–(a)

प्रस्तुत मन्त्र विष्णुसूक्त (क्र. 1/154) से सम्बन्धित है। इसके ऋषि दीर्घतमा, देवता विष्णु, छन्द त्रिष्टुप् है।

प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

(विष्णुसूक्त 2)

अर्थात्–भयंकर दुर्गम स्थलों में भ्रमण करने वाले तथा पर्वत पर रहने वाले पशु के समान भयंकर, सर्वत्र विचरण करने वाला तथा उन्नत लोकों में निवास करने वाला यह विष्णु अपने वीरतापूर्ण कार्यों के द्वारा स्तुत किया जाता है।

व्याकरण–'न'–वेद में 'न' निषेध तथा उपमा दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है। किन्तु यहां पर 'न' शब्द का प्रयोग 'उपमा' अर्थ में हुआ है।

कुचरः–कुÖचर् + ट

प्रतिषेधार्थीय, विचिकित्सार्थीय एवं समुच्चयार्थ का प्रयोग निरुक्त के निपातों का अर्थ बतलाने के लिये किया गया है।

17. 'पुरुषः' इति पदस्य निर्वचने किं नास्ति?

(a) पुरुषादः (b) परुषः

(c) पुरिशयः (d) पूरयतेः

उत्तर–(b)

यास्क कृत निरुक्त के द्वितीय अध्याय के निर्वचन प्रकरण से प्रस्तुत वाक्य उद्धृत है जिसका विवेचन इस प्रकार है–

''राज्ञः पुरुषो राजपुरुषः। राजा राजते। पुरुषः पुरिषादः पुरुशियः। पूरयतेर्वा, पूरयत्यन्तरित्यन्तरपुरुष मभिप्रेत्य।''

राजा का पुरुष राजपुरुष है, [यह 'राजपुरुषः' इसे षष्ठी-तत्पुरुष समास का निर्वचन हुआ। अब उसके पदों का निर्वचन करते हैं।– राजा पद राज् धातु से 'राजृदीप्तौ' से बना है। पुरुष पद 'पुर' अर्थात् शरीर में बैठने वाला, अर्थात् अन्तर्यामी पूरणार्थक धातु से बना है। परमात्मा सर्वत्र पूर्ण है, इसके लिए प्रमाण देते हैं।

18. 'धर्मसूत्रम्' केन वेदाङ्गेन सह सम्बद्धमस्ति?

(a) शिक्षावेदाङ्गेन (b) कल्पवेदाङ्गेन

(c) व्याकरणवेदाङ्गेन (d) निरुक्तवेदाङ्गेन

उत्तर–(b)

षड्वेदांगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) में से दूसरा वेदांग कल्प वेदाङ्ग के नाम से जाना जाता है।

जिसमें यज्ञ की विधियों तथा वेदविहित कर्मों का प्रतिपादन किया गया हो उसे 'कल्पवेदाङ्ग' के नाम से जाना जाता है।

- **कल्पसूत्र को चार भागों में बांटा गया है–**

  (1) श्रौतसूत्र, (2) गृह्यसूत्र,

  (3) धर्मसूत्र, (4) शुल्बसूत्र
- धर्मसूत्र में धर्म, रीति, नीति, वर्ण, आश्रम, इत्यादि सामाजिक नियमों का विवेचन किया गया है।
- ऋग्वेद में वशिष्ठ धर्मसूत्र, विष्णुधर्मसूत्र प्राप्त होते हैं।
- **शुक्लयजुर्वेद पर–**हारीत एवं शंखधर्मसूत्र प्राप्त होता है।
- **कृष्णयजुर्वेद पर–**बौधायन, आपस्तम्ब, मानव धर्मसूत्र प्राप्त होते हैं।
- **सामवेद में–**केवल गौतमधर्मसूत्र प्राप्त होता है।
- **अथर्ववेद में–**कोई भी धर्मसूत्र प्राप्त नहीं होता।
- **तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा के 6 अङ्गों का उल्लेख मिलता है–**

  (1) वर्ण (2) स्वर

  (3) मात्रा (4) बल

  (5) साम (6) सन्तान
- **पतञ्जलि के महाभाष्य में व्याकरण के 5 प्रमुख अंग बताए गए हैं–**

  (1) रक्षा (2) ऊह

  (3) आगम (4) लघु

  (5) असन्देह
- **निरुक्त के 5 प्रतिपाद्य विषय हैं–**

  (1) वर्णागम (2) वर्णविपर्यय

  (3) वर्णविकार (4) वर्णनाश

  (5) धातु का अनेक अर्थों में प्रयोग

19. निरुक्तदिशा पदजातानि कति सन्ति?

(a) त्रीणि (b) चत्वारि

(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर–(b)

''चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च।''

- **यास्क कृत निरुक्त में पदों की संख्या 4 है–**

  (1) नाम (2) आख्यात

  (3) उपसर्ग (4) निपात

  नाम–सत्त्वप्रधानानि नामानि–अर्थात् जिसमें सत्त्व/द्रव्य की प्रधानता होती है। वह पद नाम कहलाता है।

  आख्यात–भावप्रधानमाख्यातम्–अर्थात् जिसमें क्रिया/भाव की प्रधानता होती है उसे आख्यात कहते हैं।

  उपसर्ग–न निर्बद्धा उपसर्ग अर्थान्निराहुरिति शाकटायनो नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंग्रहद्योतका भवन्ति।
- **निरुक्त में उपसर्गों की संख्या 22 बताई गई है–**

  प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव्, निस्, निर्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि तथा उप्। इन 22 की उपसर्ग संज्ञा होती है।

  निपात-अथ निपाताः। उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति।

  अप्युपमार्थे अपि कर्मोपसंग्रहार्थे, अपि पदपूरणाः॥

अर्थात् भिन्न-भिन्न अर्थों का ज्ञान कराने वाले शब्दों को निपात कहते हैं। इनकी संख्या तीन है–

(1) उपमार्थक

(2) कर्मोपसंग्रहार्थक

(3) पादपूरणार्थक

20. अथर्ववेदस्य किं गृह्यसूत्रम् अस्ति?

(a) खादिरगृह्यसूत्रम् (b) कात्यायनगृह्यसूत्रम्

(c) कौशिकगृह्यसूत्रम् (d) वैखानसगृह्यसूक्तम्

उत्तर–(c)

कौशिकगृह्यसूत्र अथर्ववेद का एकमात्र गृह्यसूत्र है। यह गृह्यसूत्र कई दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अथर्ववेद में वर्णित शान्तिकर्म और अभिचार कर्मों का इसमें विशद विवेचन है। इस गृह्यसूत्र में 14 अध्याय एवं 141 कण्डिका हैं।

- खादिर गृह्यसूत्र सामवेद के राणायनीय शाखा से सम्बद्ध है। इसके अतिरिक्त सामवेद के अन्य गृह्यसूत्र भी उपलब्ध हैं–

  (1) गोभिल गृह्यसूत्र (2) द्राह्यायण गृह्यसूत्र

  (3) जैमिनीय गृह्यसूत्र (4) कौथुम गृह्यसूत्र।

- वैखानसगृह्यसूत्र–इसका सम्बन्ध तैत्तिरीय शाखा से है। इसके रचयिता विखनस् मुनि हैं। इसके अतिरिक्त अन्य गृह्यसूत्र भी उपलब्ध हैं–

(1) बौधायन गृह्यसूत्र	(2) मानव गृह्यसूत्र
(3) भारद्वाज गृह्यसूत्र	(4) आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
(5) काठक गृह्यसूत्र	(6) अग्निवेश्य गृह्यसूत्र
(7) हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र	(8) वराह गृह्यसूत्र
(9) वैखानस गृह्यसूत्र	

21. ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रवक्ता कः अस्ति?

(a) शौनकः (b) उवटः
(c) कात्यायनः (d) अनन्तभट्टः

उत्तर–(a)

ऋक्प्रातिशाख्य के रचयिता महर्षि शौनक हैं। षड्गुरुशिष्य के अनुसार शौनक ने ऋग्वेद की रक्षा के लिए दशग्रन्थों का निर्माण किया है। वे दशग्रन्थ हैं– आर्षानुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी, सूक्तानुक्रमणी, सूक्तानुक्रमणी, ऋग्विधान, पादविधान, वृहद्देवता, शौनकस्मृति और ऋक्प्रातिशाख्य। इस प्रकार ज्ञात होता है कि शौनक ने अनेक ग्रन्थों के साथ-साथ ऋक्प्रातिशाख्य की भी रचना की है।

- ऋक्प्रातिशाख्य पर उव्वटभाष्य मिलता है।
- षड्गुरुशिष्य के अनुसार आश्वलायन और कात्यायन शौनक के शिष्य थे।

22. 'स्वरान्तरे व्यञ्जनानि' कस्याङ्गं भवन्ति ऋक्प्रातिशाख्यमते?

(a) पूर्वस्य (b) उत्तरस्य
(c) अपूर्वस्य (d) मध्यस्य

उत्तर–(b)

प्रस्तुत वाक्य आचार्य शौनक कृत ऋक्प्रातिशाख्य के प्रथम पटल (संज्ञा परिभाषा पटल) से उद्धृत है जिसका विवेचन निम्न प्रकार से दृष्टव्य है–**स्वरान्तरे व्यञ्जनान्युत्तरस्य॥23॥**

अर्थात् दो स्वर वर्णों के मध्य में वर्तमान व्यञ्जन बाद वाले उत्तरवर्ती स्वर वर्ण के अङ्ग होते हैं।

(1) 'पूर्वस्य'–पूर्वस्यानुस्वारविसर्जनीयौ॥24॥

अर्थात् अनुस्वार और विसर्जनीय पूर्ववर्ती स्वर के अङ्ग होते हैं।

23. ऋक्प्रातिशाख्यदिशा व्यञ्जनानामाद्याः किं भवन्ति?

(a) अन्तः स्थाः (b) ऊष्माणः
(c) सन्ध्यक्षराणि (d) स्पर्शाः

उत्तर–(d)

सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव। तेषामाद्या स्पर्शाः॥ अर्थात् शेष सब वर्ण व्यञ्जन ही हैं। उन व्यञ्जनों में आदि वाले वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। इन स्पर्शों का आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट होता है। 'क' से लेकर 'म' तक के वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। स्पर्श संज्ञा का प्रयोजन है–स्पर्श पूर्व में और व्यञ्जन बाद में हों तो अवशंगम सन्धि होती है।

(1) स्पर्श वर्ण के बाद वाले चार वर्ण अन्तःस्थ कहलाते हैं। अन्तःस्थ वर्ण–य्, व्, र्, ल् हैं।

(2) अन्तःस्थ के बाद वाले आठ वर्ण ऊष्मन् कहलाते हैं। ऊष्मवर्ण– ह्, श्, ष्, स्, अः, ᳵक, ᳵप, अं।

(3) सन्ध्यक्षर वर्ण 4 प्रकार के हैं, यथा–ए, ओ ऐ, औ

24. ऋक्प्रातिशाख्यमतेन वक्ष्यमाणेषु सोष्मवर्णः कः?

(a) ह (b) श
(c) ष (d) झ

उत्तर–(d)

'युग्मौ सोष्माणौ'–प्रत्येक वर्ग में सम वर्ण सोष्म कहलाते हैं। यहां पर युग्मौ का अर्थ–द्वितीय और चतुर्थ वर्ण से है तथा सोष्माणौ का अर्थ–मुख से निकलने वाली वायु से उच्चरित वर्ण है।

सोष्म वर्ण हैं–खघ, छझ, ठढ, थध, फभ।

- ह्, श्, ष् ये तीनों वर्ण अन्तःस्थ संज्ञक वर्ण के अन्तर्गत आते हैं।

25. 'आर्ष्टिषेण' इत्यत्र कियान् स्वरभक्तिकालः?

(a) एकमात्राकालः (b) अर्धमात्राकालः
(c) पादमात्राकालः (d) द्विमात्राकालः

उत्तर–(c)

स्वर-वर्ण पूर्व में हो और व्यञ्जन वर्ण बाद में हो तो रेफ से ऋणात्मक स्वर भक्ति उत्पन्न होती है।

ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार स्वर भक्ति दो प्रकार की होती है–

(1) दीर्घस्वरभक्ति (2) ह्रस्वस्वरभक्ति

दीर्घस्वरभक्ति– अर्धमात्रा कालिक होती है। यथा–प्रत्यु अदर्शि, कर्हि, वनस्पते शतवन्शः दीर्घस्वरभक्ति अर्धमात्राकालिक होती है।

ह्रस्वस्वरभक्ति– यह भक्ति आधे से कम अर्थात् अर्धोनमात्रा कालिक (चौथाई मात्रा) वाली होती है। यथा–आर्ष्टिषेणः, वर्ष्यान्

26. पाणिनीयशिक्षानुसारंस्वरितस्वरोच्चारणकाले हस्तप्रदर्शनविधिः कुत्र विधातव्यः?

(a) कर्णमूले (b) हृदि
(c) मूर्ध्नि (d) सर्वास्ये

उत्तर–(a)

पाणिनि विरचित पाणिनीय शिक्षा में स्वरों के उच्चारण स्थान को बतलाया गया है–

''अनुदात्तो हृदि ज्ञेयो मूर्ध्न्युदात्त उदाहृतः।
स्वरितः कर्णमूलीयः सर्वास्ये प्रचयः स्मृतः।। पा. 48।।

- अनुदात्त स्वर का उच्चारण करते समय हाथ का हृदय भाग में संचारण करना चाहिए।
- उदात्त स्वर का उच्चारण करते समय मूर्धा प्रदेश में सञ्चारण करना चाहिए।
- स्वरित का उच्चारण करते समय नासाग्र भाग में हाथ का सञ्चारण करना चाहिए।

अनुदात्त = हृदि
उदात्त = मूर्ध्नि
स्वरित = कर्णमूले
प्रचय = सर्वस्व

27. कथं ज्ञायते महाभाष्यदृष्ट्या 'सिद्धःशब्दोऽर्थः सम्बन्धश्चेति'?

(a) अर्थक्रियार्थिभ्यः (b) लोकतः
(c) शास्त्रतः (d) कोशतः

उत्तर–(b)

महाभाष्य पस्पशाह्निक में शब्द के नित्यता और अनित्यता पर विचार किया गया है–
शब्द का अर्थ के साथ जो सम्बन्ध है उसके नियत रहने पर (सिद्धे शब्दे अर्थसम्बन्धे चेति) यह विग्रह शब्दों का अर्थों के साथ उसके नित्यता को सिद्ध करता है।
शब्द, अर्थ और उनके सम्बन्ध सिद्ध हैं। क्योंकि लोक में अर्थ का विषय बनाकर ही प्रयोग करने वाले शब्दों का प्रयोग करते हैं। इन शब्दों की निष्पत्ति के निमित्त से कोई यत्न नहीं करते किन्तु जो पदार्थ उत्पाद्य होते हैं उनकी निष्पत्ति में यत्न करना पड़ता है। जैसे–घड़े से किसी काम को करने वाला होता है तो वह कुम्हारों के परिवार के निकट जाकर कहता है कि एक घड़ा बना दो इस घड़े से मैं अमुक कार्य करूंगा। उसी प्रकार शब्द प्रयोग की इच्छा रखने वाला वैय्याकरणों के कुल में जाकर यह नहीं कहता है कि शब्दों को बना दो, मैं प्रयोग करूंगा। वैय्याकरण के कुल में गए बिना ही बुद्धि द्वारा पदार्थ को पकड़ कर लोग शब्दों का प्रयोग करते हैं।

- लोकव्यवहार से अर्थ द्वारा स्वरूप बोधन के लिए शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसमें शास्त्र से केवल धर्म नियम किया जाता है।

28. 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।
वाक्यात् पदानामत्यतं प्रविवेको न कश्चन।।'–अनया कारिकया भर्तृहरिः किं बोधितवान्?

(a) वर्णानां सत्यत्वम् (b) पदानां सत्यत्वम्
(c) वाक्यस्य सत्यत्वम् (d) सर्वेषां सत्यत्वम्

उत्तर–(c)

वाक्यपदीय, संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहते हैं। वाक्यपदीय व्याकरण शृंखला का मुख्य दार्शनिक ग्रन्थ है। इसके रचयिता भर्तृहरि हैं। प्रश्नगत श्लोक का तात्पर्य है कि जैसे (ऋकार, औकार आदि) वर्णों में जो अवयव के सदृश रेफ और अ, उ आदि प्रतीत होते हैं वे अवयव नहीं हैं, वैसे पदों में जो वर्णों की प्रतीति होती है वह भी भ्रम है, क्योंकि वाक्यों से पृथक् पदों की कोई सत्ता ही नहीं है।

29. 'एध्' धातोः लुङि उत्तमपुरुषैकवचने कः प्रयोगः?

(a) एधिषि (b) एधिषीय
(c) एधिष्ये (d) ऐधे

उत्तर–(a)

आचार्य वरदराज ने लघुसिद्धान्त के तिङ्न्त प्रकरण में एध् धातु को निम्न प्रकार से बतलाया है–

एध् धातु, लुङ्लकार–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
मध्यम पुरुष	ऐधिष्ठाः	ऐधियाथाम्	ऐधिढ्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

एधिषीय आशीर्लिङ् लकार का रूप है–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यम पुरुष	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तम पुरुष	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

'ऐधे' लङ्लकार का रूप है–

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	ऐधत्	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यम पुरुष	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

30. 'भवती' त्यर्थे 'यत्' प्रत्ययान्तः कः प्रयोगः?

(a) भव्यम् (b) भव्यः
(c) भाव्यम् (d) भाव्यः

उत्तर–(b)

जैसे–

- भू + यत् = भव्यः
- चि + यत् = चेयम् (नपु.)
- गो + यत् = गव्यम् (नपु.)
- ने + यत् = नव्यम् (नपु.)

'भव्यम्' भू धातु से अजन्त् होने के कारण यत् प्रत्यय हुआ। यत् के आर्धधातुक होने से उसके परे रहते सार्वधातुकाऽऽर्धधातुकयोः सूत्र से गुण होने पर भव्यम् बना।

31. एषु 'मतुप्' प्रत्ययान्तोऽशुद्धः प्रयोगोऽन्वेष्टव्यः–

(a) यववान् (b) ज्ञानवान्

(c) विद्यावान् (d) लक्ष्मीवान्

उत्तर–(a)

तद् अस्याऽस्ति, अस्मिन्, इति मतुप् (5/2/94)
तद् अस्य अस्ति वह इसका है। 'तद् अस्मिन् अस्ति' वह इसमें है। अर्थात् प्रथमा से सप्तमी (अस्मिन्' तक मतुप् प्रत्यय होता है। समानाधिकरण अर्थात् सत्ता अर्थ में।
जैसे–गोमान्, रूपवान्, ज्ञानवान्, विद्यावान्, लक्ष्मीवान्, शिखावान् इत्यादि। किन्तु, मादुपधायाश्रमतोर्वोऽपवादिभ्यः सूत्र से उपधा अर्थ में भी मतुप् प्रत्यय होता है–
जैसे–(1) किंवान् (2) ज्ञानवान् (3) विद्यावान् (4) लक्ष्मीवान् (5) यशस्वान् (6) भास्वान् आदि।

32. स्त्रियां 'सीमन्' शब्दस्य प्रथमायां कः प्रयोगो भवति?

(a) सीमन् (b) सीम्नी

(c) सीमा (d) सीमना

उत्तर–(c)

मनः (4.1.11) सूत्र से सीमा शब्द बनता है।
मन् है अन्त में जिसके, ऐसे प्रातिपदिक से परे ङीप् नहीं होता है, स्त्रीत्व की विवक्षा में।
मन चाहे सार्थक हो अथवा निरर्थक दोनों का यहां ग्रहण होता है।
उदाहरण–सीमा–सीमन् स्त्रियाम् के अधिकार में।
'ऋन्नेभ्यो ङीप्'से ङीप् प्रत्यय की प्राप्ति हुई किन्तु मनःसूत्र से उसका निषेध होकर ड़ाप् प्रत्यय में–सीमा–सीमानौ-सीमानः रूप बना।

- सीमन् शब्द सीमा का मूल प्रातिपदिक शब्द है।
- सीम्नी पुष्कलको हतः–यहां पर सीम्नी का अर्थ चमणा होता है।

33. 'वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते' इत्यत्रात्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?

(a) भावकर्मणोः (b) अकर्मकाच्च

(c) कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि (d) भुजोऽनवने

उत्तर–(d)

भुज् धातु से 'पालन' से भिन्न अर्थात् 'भोजन करना' अर्थ में आत्मने पद होता है।
जैसे–ओदनं भुङ्क्ते, दुःखशतानि भुङ्क्ते आदि।
(1) भाववाचक शब्द में कर्म अर्थ में 'भू' को इट् का आगम होता है। जैसे–भविता-भवितारौ-भवितारः
(2) अकर्मक ज्ञा धातु से आत्मने पद होता है।
जैसे–सर्पिषो जानीते–यहां ज्ञा धातु का अर्थ प्रवृत्ति है। इस अर्थ में यह अकर्मक है। इसलिए यहां जानीते में आत्मनेपद हुआ है।

34. 'आख्यातोपयोगे' इत्यत्र प्रयुक्तस्योपयोगशब्दस्य कोऽर्थः?

(a) वक्ता

(b) नियमपूर्वकविद्यास्वीकारः

(c) नियतकालं भृत्या स्वीकरणम्

(d) अन्यकर्तृकोऽभिलाषः

उत्तर–(b)

भट्टोजिदीक्षितकृत सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) में कारक एवं विभक्ति की चर्चा की गई है। **'आख्यातोपयोगे'** पञ्चमी विभक्ति का सूत्र है जिसका अर्थ निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–**वृत्ति-नियमपूर्वकविद्यास्वीकारः वक्ता प्राक्संज्ञः स्यात्।**
अर्थात् नियमपूर्वक विद्या पढ़ने में आख्याता की अपादान संज्ञा होती है। जैसे–**उपाध्यायाद् अधीते**–यहां कर्ता उपाध्याय से नियमविशेषपूर्वक अध्ययन करता है, अतः प्रकृतसूत्र से उपाध्याय की अपादान संज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति होकर उपाध्यायाद् बना।

35. 'अरबी' भाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?

(a) सामीपरिवारस्य (b) हामीपरिवारस्य

(c) काकेशीपरिवारस्य (d) हित्तीपरिवारस्य

उत्तर–(a)

भारोपीय भाषा परिवार के मुख्य 18 भाषाओं में सामी भी एक भाषा है। जिसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

- **सामी परिवार**–एशिया में अरब, ईराक, फिलिस्तीन, सीरिया; अफ्रीका में मिस्र, इथियोपिया, ट्यूनीसिया, अल्जीरिया, मोरक्को इत्यादि में सामी परिवार की बोली जाने वाली भाषा है।
  सामी परिवार में 3 प्रकार के व्यञ्जनों वाली धातुएं होती हैं। सामी में धातु के अन्दर स्वर-परिवर्तन से रूपभेद और अर्थ-भेद होता है।
- **हामी परिवार**–लीबिया, सोमालीलैण्ड, इथियोपिया इत्यादि में बोली जाने वाली भाषा है।
- काकेशी परिवार का क्षेत्र काकेशस पर्वत का समीपस्थ भाग है। यह क्षेत्र काला सागर-कैस्पियन के मध्य में है। इसकी प्रमुख भाषा है जॉर्जियन, मिग्रेलियन, लासिश, स्वानिश आदि।
- हित्ती परिवार की प्रमुख भाषाएं लैटिन, संस्कृत इत्यादि हैं। इस भाषा में बोगजकोई के प्राचीन अभिलेख को साक्ष्य माना गया है।

36. कलिङ्गराजखारवेलस्य उल्लेखः कस्मिन्नभिलेखे वर्तते?

(a) एहोले-शिलालेखे (b) हाथीगुम्फालेखे

(c) गिरनारलेखे (d) जूनागढलेखे

उत्तर–(b)

हाथीगुम्फा अभिलेख उड़ीसा राज्य के भुवनेश्वर नामक स्थान से तीन मील दूर उदयगिरि नाम की पहाड़ी की एक गुफा में अवस्थित है।
इसकी लिपि 'ब्राह्मी' तथा भाषा संस्कृत प्रभावित 'प्राकृत' है।
विषय—कलिङ्गनरेश खारवेल का जीवनवृत्त, चेदिराज वंशवृद्धि महाराज महामेघवाहन का वर्णन खारवेल जैन धर्मावलम्बी था।

- पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख है। इसकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- रुद्रदामन का दूसरा शिलालेख गिरनार का है, जो वर्तमान (गुजरात) जूनागढ़ में अवस्थित है।

37. निम्नलिखितेषु कस्यैकोऽभिलेखो यूनानीलिप्यां वर्तते?

(a) समुद्रगुप्तस्य (b) पुलकेशिनः
(c) अशोकस्य (d) रुद्रदाम्नः

उत्तर—(c)

भारतीय संस्कृति में मिस्र, बेबीलोन, यूनान का उल्लेख आता है। इन तीनों संस्कृतियों ने महत्वपूर्ण लिपियों का जनन किया था। भिन्न-भिन्न स्तरों पर ये संस्कृतियां धर्म की दिशा में बहुदेववादपरक रही हैं। मिस्र में हॉयरोग्लीफिक; हॉयरेटिक एवं डेमोटिक लिपियों का विकास हुआ था। इसमें सन्देह नहीं कि मिस्रवासी अपनी लिपि के प्रति श्रद्धालु थे।
इस प्रकार अशोक का सम्बन्ध यूनानी सभ्यता से होने के कारण इनके समस्त अभिलेखों को यूनानी लिपि सभ्यता अभिलेख कहा गया है।

- समुद्रगुप्त का इलाहाबाद-प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख है। जो ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है।
- पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख उपलब्ध है। इसकी भाषा संस्कृत एवं लिपि दक्षिणी ब्राह्मी है।
- रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है।

38. अधोलिखितानां 'केन सह कस्य सम्बन्ध' इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) नैयायिकाः (i) प्रामाण्यं स्वतोऽप्रामाण्यं परतः
(b) पूर्वमीमांसकाः (ii) प्रामाण्याप्रामाण्ये परतः
(c) जैनाः (iii) अप्रामाण्यं स्वतः प्रामाण्यं परतः
(d) बौद्धाः (iv) प्रामाण्याप्रामाण्ये स्वतः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(2)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(3)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(4)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

उत्तर—(a)

'प्रमाकरणं प्रमाणम्' इस लक्षण के अनुसार प्रमा (यथार्थ अनुभव) का करण प्रमाण कहलाता है। किन्तु प्रमाण शब्द का यथार्थ ज्ञान के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है। 'प्रामाण्यवाद' शब्द में प्रमाण का अर्थ है—यथार्थ ज्ञान। इस प्रमाण का भाव प्रमाणत्व या प्रामाण्य कहलाता है। अतः प्रामाण्य का अर्थ है—ज्ञान की यथार्थता। ज्ञानस्य यथार्थ्यलक्षणं प्रामाण्यम् = तर्कभाषा। ज्ञान की यथार्थता ही उसका प्रामाण्य है। इस प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य विषयक विचार (वाद) को ही प्रामाण्यवाद कहा जाता है—प्रामाण्यसम्बन्धी वादः प्रामाण्यवादः इस वाद को विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने अनुसार मत दिए हैं—
(A) नैयायिकाः—प्रामाण्याप्रामाण्ये परतः
(B) पूर्वमीमांसकाः—प्रामाण्यं स्वतोऽप्रामाण्यं परतः
(C) जैनाः—प्रामाण्याप्रामाण्ये स्वतः
(D) बौद्धाः—अप्रामाण्यं स्वतः प्रामाण्यं परतः

39. तर्कसङ्ग्रहदीपिकायामीश्वरस्य लक्षणं किमुक्तम्?

(a) ज्ञानाधिकरणत्वम् (b) नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्
(c) प्रत्यक्षग्राह्यत्वम् (d) सुखादिमत्वम्

उत्तर—(b)

''तर्कसङ्ग्रहदीपिका के अनुसार ईश्वर का लक्षण है—''नित्यज्ञानाधिकरणत्वं ईश्वरत्वम्'' अर्थात् नित्य ज्ञान का आश्रय ईश्वर है। ''सकलपरमाण्वादिसूक्ष्मदर्शिलात् सर्वज्ञत्वम्। यः सर्वज्ञः स सर्ववित् इत्यागमोऽपिप्रमाणम्। अर्थात् परमाणु आदि सभी सूक्ष्म वस्तुओं को देखने वाला होने के कारण ईश्वर सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ ईश्वर के अस्तित्व में यः सर्वज्ञः स सर्ववित् यह वेदवाक्य प्रमाण है।

40. न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीरीत्याऽनुमितौ व्याप्तिज्ञानं किम्भवति?

(a) व्यापारः (b) परामर्शः
(c) पक्षः (d) करणम्

उत्तर—(d)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीरीत्याऽनुमितौ व्याप्तिज्ञानं करणं, परामर्शो व्यापारः। अनुमिति में व्याप्ति का ज्ञान करण होता है तथा परामर्श व्यापार होता है। जैसे कि जिस पुरूष ने महानस आदि में धुएं में अग्नि की व्याप्ति का ग्रहण किया है बाद में वही पुरूष कहीं पर्वत आदि में मूल से विच्छेद न हुए धुएं की रेखा को देख लेता है, उसके बाद धुंआ, अग्नि से व्याप्त है, इस प्रकार की व्याप्ति का स्मरण उसको हो जाता है और बाद में यह वह्नि से व्याप्त धुएं वाला है ऐसा ज्ञान हो जाता है यही ज्ञान परामर्श कहलाता है।

41. 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे लौगाक्षिभास्करेण 'अर्थ'' पदोपादानं किमर्थम्?

(a) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय
(b) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय
(c) श्येनादावतिव्याप्तिवारणाया
(d) हस्तप्रक्षालनादावतिव्याप्तिवारणाय

उत्तर—(c)

लौगाक्षिभास्करकृत अर्थसंग्रह में धर्म का लक्षण निम्न प्रकार से किया गया है–

''यागादिरेव धर्मः। तल्लक्षणं वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः इति। प्रयोजनेऽतिव्याप्तिवाष्णाय प्रयोजनवदिति। भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय वेदप्रतिपाद्य इति। अनर्थफलकत्वादनर्थभूते श्येनादावतिव्याप्तिवारणायार्थ इति।

अर्थात् याग आदि ही धर्म है। धर्म का लक्षण है– ''वेद के प्रतिपादन का विषय प्रयोजनयुक्त अर्थ धर्म है''। लोग धर्म को ही प्रयोजन न समझने लगे इसीलिए प्रयोजन में अतिव्याप्ति का निवारण करने के लिए लक्षण में प्रयोजन पद का प्रयोग न करके ''प्रयोजनवत्' इस पद का प्रयोग किया गया। भोजनादि स्वभाव प्राप्त विषयों में अतिव्याप्ति का वारण करने के लिए लक्षण में 'वेदप्रतिपाद्यः' पद का सन्निवेश किया गया है। अनर्थफलदायक होने से अनर्थस्वरूप श्येनादि कर्मों में अतिव्याप्ति की निवृत्ति हेतु ''अर्थ'' पद का प्रयोग किया गया है।

42. बौद्धानां कति प्रस्थानानि प्रसिद्धानि सन्ति?

(a) चत्वारि (b) त्रीणि

(c) पञ्च (d) षड्

उत्तर–(a)

बौद्धदर्शन के अनुसार भावनाचतुष्टय–

भगवान् बुद्ध के अनन्तर बौद्धों की अनेक शाखाएं उत्पन्न हुए, जिनमें से कुछ प्रमुख है–

(1) **वैभाषिक–** सर्वास्तिवाद, बाह्यार्थप्रत्यक्षवाद–सर्वं क्षणिकं क्षणिकम्।

(2) **योगाचार–** विज्ञानवाद, बाह्यार्थशून्यवाद–सर्वं स्वलक्षणं स्वलक्षणम्।

(3) **सौत्रान्तिक–** बाह्यार्थानुमेयवाद–सर्वं दुःख दुःखम्

(4) **माध्यमिक– शून्यवाद, नागार्जुन–**सर्वं शून्यं सर्वं शून्यम्

वैभाषिक– क्षणिक बाह्यार्थ इनके अनुसार समस्त बाह्य पदार्थ क्षणिक हैं।

योगाचार– इनके अनुसार बुद्धि ही आकार के साथ है। अर्थात् बुद्धि में बाह्यार्थ चले आते हैं। मुख्य रूप से इनकी दो सत्ता है–(1) पारमार्थिक (2) व्यावहारिक

सौत्रान्तिक– ये बाह्यार्थ को अनुमेय मानते हैं।

माध्यमिक– न तो बाह्य पदार्थ है न ही आन्तरिक विज्ञान।

43. बौद्धदर्शनानुसारं चित्तस्कन्धः कतिविधः?

(a) चतुर्विधः (b) पञ्चविधः

(c) षड्विधः (d) सप्तविधः

उत्तर–(b)

बौद्धदर्शनानुसार चित्तस्कन्ध के पांच भेद है–

(1) रूपस्कन्ध, (2) विज्ञानस्कन्ध, (3) वेदनास्कन्ध, (4) संज्ञास्कन्ध, (5) संस्कारस्कन्ध।

- **रूपस्कन्ध–** विषयों के साथ इन्द्रियों का नाम रूपस्कन्ध कहलाता है।
- **विज्ञानस्कन्ध–** आलयविज्ञान तथा प्रवृत्तिविज्ञान का प्रवाह विज्ञानस्कन्ध है।
- **वेदनास्कन्ध–** रूपस्कन्ध तथा विज्ञानस्कन्ध के सम्बन्ध से उत्पन्न सुख-दुःख आदि प्रतीतियों का प्रवाह (परम्परा) वेदनास्कन्ध है।
- **संज्ञास्कन्ध–** ''गौ'' इत्यादि शब्दों को व्यक्त करने वाले ज्ञानों का प्रवाह संज्ञास्कन्ध है।
- **संस्कारस्कन्ध–** वेदनास्कन्ध पर आधारित रागद्वेषादि क्लेश, मद-मानादि उपक्लेश तथा धर्म-अधर्म को संस्कारस्कन्ध कहते हैं।

44. 'ईक्षतेर्नाशब्दम्' इत्यस्मिन् सूत्रे निम्नलिखितेषु शाङ्करभाष्यानुसारं किं मतं निरस्यते?

(a) ब्रह्म जगतः कारणमस्ति

(b) प्रधानं जगतः कारणमस्ति

(c) ब्रह्म सर्वज्ञमस्ति सर्वकारणात्

(d) ईक्षणशक्तिर्ब्रह्मणि नास्ति

उत्तर–(b)

प्रस्तुत सूत्र आचार्य बादरायण प्रणीत् ब्रह्मसूत्र का 5वां सूत्र है।

ईक्षतेर्नाशब्दम्–पदच्छेद = ईक्षते न अशब्दम्।

अर्थात् श्रुति प्रतिपादित होने के कारण-प्रधान जगत् का कारण नहीं है। क्योंकि तदैक्षत श्रुति में जगत् का कारण ईक्षण् कर्ता कहा गया है। जड़ प्रधान में ईक्षणकर्तृत्व नहीं है।

सांख्य परिकल्पित अचेतन प्रधान जगत् का कारण वेदान्त में नहीं माना जा सकता, क्योंकि वह श्रुति सिद्ध नहीं है। उसमें ईक्षण कर्तृत्व नहीं है। आरम्भ में यह एकमात्र अद्वितीय सत्य ही था। इदम् शब्द वाच्य नामरूप से अभिव्यक्त जगत् का उत्पत्ति के पूर्व सद्रूप से निश्चय कर उसी प्रकृत सत् शब्द वाच्य ब्रह्म में ईक्षणपूर्वक तेजादि का स्त्रष्ट्रत्व दिखलाती है।

45. 'तद् ब्रह्म सर्वज्ञं सर्वशक्तिजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणम्' इत्यवबोधः शाङ्करभाष्यानुसारं कस्माद् भवति?

(a) प्रत्यक्षदर्शनात् (b) वेदान्तशास्त्रात्

(c) जगद्वैचित्र्यात् (d) कारणकार्यभावात्

उत्तर–(b)

प्रस्तुतसूक्ति वाक्य बादरायणकृत ब्रह्मसूत्रशाङ्कर भाष्य के चतुर्थ सूत्र तत्तु समन्वयात् की (अधि. 4 सूत्र 4) सूत्र की वृत्ति है।

अर्थात् चतुर्थ सूत्र के निराकरण के लिए वृत्ति का प्रयोग किया गया है। अर्थात् सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा जगत् की उत्पत्ति, स्थिति तथा लय का कारणभूत, वह वेदान्त वाक्यों से ही अवगत है। कैसे? समन्वय से। क्योंकि आत्मा मायारूप उपाधि से बहुत रूपों को प्राप्त हुआ जो ब्रह्म है, एतद् अपूर्व कारण रहित है।

अतः वाक्यों की सार्थकता को जो स्पष्ट करता है वह हेतु है 'समन्वय' अर्थात् सम्पूर्ण वेदान्तशास्त्र समन्वित तात्पर्य से सिद्ध वेदान्तशास्त्र का ज्ञान कराते हैं।

46. 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता' इतिलक्षणं योगसूत्रे कस्य विद्यते?

(a) अविद्यायाः (b) अभिनिवेशस्य
(c) अस्मितायाः (d) रागस्य

उत्तर–(c)

प्रस्तुत सूत्र महर्षि पतञ्जलिमुनि प्रणीत् पातञ्जलयोगदर्शन के 6वें सूत्र के रूप में उद्धृत है, जिसका मूल अर्थ निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–
दृक्शक्ति (पुरुष) और दर्शनशक्ति (बुद्धि) की प्रतीयमान एकात्मता 'अस्मिता' कहलाती है।
पुरुष दृक्शक्ति है। बुद्धि दर्शनशक्ति है। इन दोनों तत्त्वों की अभिन्नाकारता की प्रतीति अस्मिता नामक क्लेश है। एक-दूसरे से बिल्कुल अलग अर्थात् अमिश्रित भोक्तृशक्ति पुरुष तथा भोग्यशक्ति बुद्धि की अभिन्नरूपता की प्रतीति होने पर ही भोगों का अनुभव होता है। स्वकीय रूपों के बोध होने पर तो दोनों की केवलता ही हो जाती है।
अविद्या का ही दूसरा रूप अस्मिता है।

- अनित्य, अपवित्र, दुःखमय और अनात्म पदार्थों में नित्य, पवित्र, सुखमय और आत्मा का ज्ञान होना ही अविद्या है।

47. वेदान्तसारानुसारं अनुबन्धे किं न गण्यते?

(a) अधिकारी (b) विषयः
(c) साधनानि (d) सम्बन्धः

उत्तर–(c)

श्रीमत्सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में 4 प्रकार के अनुबन्ध बताए गए हैं–
(i) अधिकारी (ii) विषय
(iii) सम्बन्ध (iv) प्रयोजन।
इसी क्रम में साधनचतुष्टयसम्पन्न प्रमाता ही वेदान्त का अधिकारी होता है। अब वे साधन कौन-कौन से हैं, उसका निरूपण किया जा रहा है–साधनानि (अर्थात् साधन 4 हैं)–
(i) नित्यानित्यवस्तुविवेक (ii) इहामुत्रार्थफलभोगविराग
(iii) शमादिषट्कसम्पत्ति (iv) मुमुक्षुत्व।

48. वेदान्तदर्शनानुसारं व्यष्ट्युपहितं चैतन्यं किमुच्यते?

(a) ईश्वरः (b) प्राज्ञः
(c) आत्मा (d) ब्रह्म

उत्तर–(b)

अज्ञान के दो भेद होते हैं–
(1) समष्टि (2) व्यष्टि
व्यष्टि–जिस प्रकार वन की व्यष्टियों के अभिप्राय से ये वृक्ष हैं, ऐसा अनेकत्व का कथन किया जाता है, अथवा जैसे जलाशय की व्यष्टियों के अभिप्राय से ये पानी की बूंदें हैं। इस अनेकत्व का कथन किया जाता है। उसी प्रकार जीवगत अज्ञानों की सृष्टि के अभिप्राय से अज्ञान के अनेकत्व का कथन किया जाता है।
अज्ञान की सृष्टि में मलिन सत्त्वगुण की प्रधानता होती है। इस व्यष्टि ज्ञान से उपहित चैतन्य केवल एक अज्ञान का प्रकाशक होने से अल्पज्ञता और अनीश्वरता आदि गुणों से युक्त प्राज्ञ कहा जाता है।

- वेदान्त के अनुसार जिस प्रकार वन और वन के वृक्षों में अभेद होता है अथवा जलाशय और जलबिन्दुओं में अभेद होता है। इनमें (अज्ञान की समष्टि और व्यष्टि) से उपहित ईश्वर और प्राज्ञ में अभेद होता है।
- वस्तु सच्चिदानन्दाद्वयं ब्रह्म–वस्तु है सच्चिदानन्द अद्वितीय ब्रह्म।

49. 'पुद्गलः' इति शब्दः कस्य दर्शनस्य वर्तते?

(1) बौद्धदर्शनस्य (2) जैनदर्शनस्य
(3) सांख्यदर्शनस्य (4) वेदान्तदर्शनस्य

उत्तर–(b)

माधवाचार्य कृत सर्वदर्शनसंग्रह के जैनदर्शन प्रसंग में पुद्गल का विवेचन किया गया है–
स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः (त.सू. 5/24)
अर्थ–स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण से युक्त पदार्थ पुद्गल होते हैं। वे दो प्रकार के हैं–(1) अणु (2) स्कन्ध
अणु–अणुओं का उपभोग नहीं किया जा सकता।
स्कन्ध–द्वयणुक से आरम्भ करके स्कन्ध होते हैं। द्वयणुक आदि स्कन्धों का विश्लेषण करने पर अणु आदि उत्पन्न होते हैं। अणु आदि के समूह से द्वयणुक आदि होते हैं। कभी-कभी स्कन्ध की उत्पत्ति विश्लेषण और संघात दोनों के प्रयोग से होती है। इसलिए भरने या पृथक्-पृथक् होने के कारण इन्हें पुद्गल कहते हैं।

- बौद्ध दर्शन का मुख्य सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद है। बौद्ध दर्शन में चित्त और विकार के पांच स्कन्ध बताए गए हैं–रूप, विज्ञान, वेदना, संज्ञा, संस्कार
- ईश्वरकृष्णप्रणीत् सांख्यदर्शन का मुख्य ग्रन्थ सांख्यकारिका है। इसका मुख्य सिद्धान्त सत्कार्यवाद है।
- सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत् वेदान्तसार नामक ग्रन्थ में 'ब्रह्म' के अनिर्वचनीयता का वर्णन किया गया है।

50. जिनदत्तसूरिमते जिनः को भवितुमर्हति?

(a) वेदवेदाङ्गविद् (b) अष्टादशदोषेभ्यो मुक्तः
(c) तत्त्वज्ञानी (d) जैनदर्शने दीक्षितः

उत्तर–(b)

जिनदत्त सूरि ने जैन मत को '18 दोषों से मुक्त' इस प्रकार व्यक्त किया है–
(1-5) बल, भोग, उपभोग, दान तथा लाभ के अन्तराय, (6) निद्रा, (7) भय, (8) अज्ञान, (9) घृणा, (10) हिंसा, (11) रति, (12) अरति, (13) राग, (14) द्वेष, (15) अविरति, (16) काम, (17) शोक, (18) मिथ्यात्व–ये अठारह दोष जिनके पास नहीं हैं, वह

देवतास्वरूप हम लोगों का जिन (जितेन्द्रिय) गुरु सम्यक्रूप से तत्त्वज्ञान का उपदेशक है।

- ज्ञान, दर्शन और चरित्र ये अपवर्ग के मार्ग हैं।
- वेद और वेदाङ्गों का जो ज्ञाता होता है, उसे वेदाङ्गविद् कहते हैं।
- जो तत्त्वों का ज्ञाता हो उसे तत्त्वज्ञानी कहते हैं।
- जिसने जैनदर्शन का अथवा जैनमतावलम्बियों से दीक्षा ग्रहण किया हो उसे जैनदीक्षित कहते हैं।

51. एषु किं रामायणाश्रितं न भवति?

(a) पञ्चरात्रम् (b) उत्तररामचरितम्

(c) महानाटकम् (d) रघुवंशम्

उत्तर–(a)

भास के तेरह नाटकों में पञ्चरात्रम् नाटक (समवकार) भी है। यह नाटक महाभारत आश्रित है। इसमें यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा मांगी कि पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन ने कहा कि यदि पांच रात्रि के अन्दर पाण्डव मिल जाएंगे तो ऐसा कर दूंगा। द्रोण के प्रयत्न से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।

पञ्चरात्रम् नाटक तीन अङ्कों में विभक्त है।

- भवभूति प्रणीत् उत्तररामचरितम् 7 अंकों में विभक्त करुण रस प्रधान नाटक है। यह नाटक रामायण कथा पर आश्रित है।
- कालिदास प्रणीत् रघुवंश महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त महाकाव्य है, जो रामायण कथा पर आश्रित है।

52. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति?

(a) सभापर्व (b) भीमपर्व

(c) वनपर्व (d) शल्यपर्व

उत्तर–(b)

'भीमपर्व' महाभारत में नहीं है।

वेदव्यास प्रणीत् महाभारत में कुल 18 पर्व हैं, जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य हैं–

(1) आदिपर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराटपर्व (5) उद्योगपर्व (6) भीष्मपर्व (7) द्रोणपर्व (8) कर्णपर्व (9) शल्यपर्व (10) सौप्तिकपर्व (11) स्त्रीपर्व (12) शान्तिपर्व (13) अनुशासनपर्व (14) आश्वमेधिकपर्व (15) आश्रमवासिकपर्व (16) मौसलपर्व (17) महाप्रस्थानिक पर्व (18) स्वर्गारोहण पर्व।

53. एषु किं महापुराणम् अस्ति?

(a) कूर्मपुराणम् (b)साम्बपुराणम्

(c)एकाम्रपुराणम् (d)आदित्यपुराणम्

उत्तर–(a)

महापुराण 18 हैं तथा उपपुराण भी 18 माने गए हैं। एक प्रसिद्ध श्लोक में 18 पुराणों के प्रथम अक्षर लेकर उनकी गणना की गई है–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि, पुराणानि प्रचक्षते।।

18 पुराणों का उल्लेख निम्न प्रकार से है–

(1) मत्स्य (2) मार्कण्डेय (3) भविष्य (4) भागवत (5) ब्रह्माण्ड (6) ब्रह्मवैवर्त (7) ब्रह्म (8) वामन (9) वराह (10) विष्णु (11) वायु (शिव) (12) अग्नि (13) नारद (14) पद्म (15) लिंग (16) गरुड (17) कूर्म (18) स्कन्द।

18 उपपुराण–(1) सनत्कुमार (2) नारसिंह (3) स्कान्द (4) शिवधर्म (5) आश्चर्य (6) नारदीय (7) कापिल (8) वामन (9) औशनस् (10) ब्रह्माण्ड (11) वारुण (12) कालिका (13) माहेश्वर (14) साम्ब (15) सौर (16) पाराशर (17) मारीच (18) भार्गव।

54. काव्यमीमांसायां प्रथमेऽध्याये रीतिनिर्णयविषये अस्य नाम अस्ति–

(a) सुवर्णनाभः (b) चित्राङ्गदः

(c) प्रचेतायनः (d) भरतः

उत्तर–(a)

आचार्य राजशेखर प्रणीत् काव्यमीमांसा में कुल पांच अध्याय हैं, जिसमें प्रथम अध्याय का नाम शास्त्रसङ्ग्रह है। अतः भूः भुवः स्वः तीनों लोकों में रहने वाली प्रजा के कल्याणार्थ काव्यविद्या के उपदेश के निमित्त इस अध्याय को 18 अधिकरणों में विभक्त किया गया है। जिसका विवेचन निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

लेखक	रचना
(1) इन्द्र	कविरहस्य
(2) औक्तिक	उक्ति विशेष
(3) रीतिनिर्णय	सुवर्णनाभः
(4) प्राचेतस्	आनुप्रासिकः
(5) यम	यमक
(6) चित्रांगत	चित्र
(7) शब्दश्लेष	श्लेष
(8) पुलत्स्य	स्वाभावोक्ति
(9) औपकायन	उपमा
(10) पाराशर	अतिशय
(11) उतथ्य	अर्थश्लेष
(12) कुबेर	उभयालङ्कार
(13) कामदेव	वैनोदिक
(14) भरत	रूपक
(15) नन्दिकेश्वर	रस
(16) धिषण	दोषाधिकरण
(17) उपमन्यु	गुण
(18) कुचुमार	उपनिषद्

55. 'त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम् । आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः।।'–अत्र मनसः प्रतिबिम्बनं केन सह वर्तते?

(a) हिमांशुना सह (b) कुसुमेन सह
(c) कुमुद्वत्या सह (d)मनोभवेन सह

उत्तर–(b)

आचार्य मम्मट प्रणीत् काव्यप्रकाश में कुल दस उल्लास हैं। इसमें नवम् एवं दशम् उल्लास में अलंकार निरूपण की चर्चा की गई है। नवम् अध्याय में शब्दालंकार और दशम् उल्लास में अर्थालंकार का विवेचन किया गया है। अतः प्रस्तुत उदाहरण दशम् उल्लास में अर्थालंकार के दृष्टान्त अलंकार का है।

दृष्टान्त अलंकार :

लक्षण–दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्।

अर्थ–उपमान, उपमेय, उनके विशेषण और साधारण धर्म आदि का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होने पर दृष्टान्त अलंकार होता है।

उदाहरण–त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्।
आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः।।

यहाँ नायक तथा चन्द्रमा का, नायिका तथा कुमुदिनी का, मन तथा कुसुम का, मनोभवसन्तप्तत्व तथा सूर्यसन्तप्तत्व का, निर्वाण तथा विकास का बिम्ब-प्रतिबिम्बभाव होने से दृष्टान्त अलङ्कार होता है।

56. 'राघवविरहज्वालासन्तापितसह्यशैलशिखरेषु। शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय।।'–रसगङ्गाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयमुदाहरणं भवति–

(a) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (b) उत्तमकाव्यस्य
(c) मध्यमकाव्यस्य (d) अधमकाव्यस्य

उत्तर–(b)

पण्डितराजजगन्नाथविरचित रसगङ्गाधर में काव्य के चार भेद बताए गए हैं–(1) उत्तमोत्तम (2) उत्तम (3) मध्यम (4) अधम

- उत्तम काव्य का लक्षण है–'यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकरणं तद् द्वितीयम्।'
  अर्थात् जिस काव्य में व्यंग्य अप्रधान होकर ही चमत्कार का कारण हो, वह द्वितीय उत्तम काव्य कहलाता है।
- **उत्तमोत्तमकाव्य–**जिसमें शब्द और अर्थ दोनों अपने को गौण बनाकर किसी अर्थ को अभिव्यक्त करें, व्यञ्जना वृत्ति के द्वारा उसे उत्तमोत्तम काव्य कहते हैं।
- **मध्यमकाव्य–**जिस काव्य में व्यंग्य अर्थ का चमत्कार लघु अंश में रहकर भी व्यापक वाच्य अर्थ के चमत्कार में अन्तर्मुक्त हो जाने से स्पष्टतया अनुभूत न हो, वह मध्यम काव्य कहलाता है।
- **अधमकाव्य–** जिस काव्य में वाच्य अर्थ चमत्कार प्रधान हो, उसको अधमकाव्य कहते हैं।

57. 'सुवर्णपुष्पं पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः'–इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्योते कस्य उदाहरणं भवति?

(a) अविवक्षितवाच्यस्य (b) विवक्षितान्यपरवाच्यस्य
(c) आक्षेपाङ्कारस्य (d) विशेषोक्त्यलङ्कारस्य

उत्तर–(a)

आचार्य आनन्दवर्द्धन प्रणीत् ध्वन्यालोक में ध्वनि के दो मुख्य भेद बताए गए हैं–(1) अविवक्षितवाच्य (2) विवक्षित वाच्य

(1) **अविवक्षितवाच्य–** अविवक्षितवाच्य को लक्षणामूला-ध्वनि भी कहते हैं।
उदाहरण–सुवर्णपुष्पं पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्।।
अर्थात् सुवर्ण जिसका पुष्प है ऐसी पृथ्वी का चयन तीन ही पुरुष करते हैं–शूर, विद्वान् और जो सेवा करना जानता है।

(2) **विवक्षितवाच्य–** विवक्षितवाच्य को अभिधामूलक ध्वनि कहते हैं।
शिखरिणी क्व नु नाम कियच्चिरं किमभिधानमसावकरोत्तपः।
सुमुखि! येन तवाधरपाटलं दशति बिम्बफलं शुकशावकः।।

- व्यंग्यविशेष का आक्षेप करने वाला वाक्य चारुत्व ही आक्षेप अलंकार है।
- उक्त, अनुक्त और अचिन्त्य तीनों भेदों से युक्त वाक्य ही विशेषोक्ति अलंकार कहलाता है।

58. दशरूपकमते मुखसन्धेः अङ्गानि भवन्ति–

(a) एकादश (b) द्वादश
(c) त्रयोदश (d) चतुर्दश

उत्तर–(b)

मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थ रससम्भवा।
अङ्गानि द्वादशैतस्य बीजारम्भ समन्वयात्।।

जहां अनेक प्रकार के प्रयोजन और रस को निष्पन्न करने वाली बीजोत्पत्ति होती है। वह मुखसन्धि है। बीज और समन्वय के आरम्भ में इसके बारह अङ्ग होते हैं–(1) उपक्षेप (2) परिकर (3) परिन्यास (4) विलोभन (5) युक्ति (6) प्राप्ति (7) समाधान (8) विधान (9) परिभावना (10) उद्भेद (11) भेद (12) करण।

- प्रतिमुख सन्धि के 13 भेद होते हैं।
- निर्वहण सन्धि के 14 भेद होते हैं।

नोट– दशरूपक के अनुसार सन्धि के 5 मुख्य भेद हैं–
(1) मुख (2) प्रतिमुख
(3) गर्भ (4) अवमर्श/विमर्ष
(5) निर्वहण

59. धनञ्जयमते भूयसे फललाभाय औत्सुक्यमात्रं भवति–

(a) आरम्भः (b) यत्नः
(c) प्राप्त्याशा (d) फलागमः

उत्तर–(a)

आचार्य धनञ्जय विरचित दशरूपक में अवस्था के 5 भेद बताए गए हैं–

(1) आरम्भ (2) यत्न/प्रयत्न
(3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति
(5) फलागम

(1) **आरम्भ का लक्षण– औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे।** प्रचुर फल की प्राप्ति के लिए उत्सुकता मात्र का होना ही आरम्भ कहलाता है।
(2) फल के प्राप्त न होने पर अत्यन्त वेगपूर्वक उद्योग करना ही प्रयत्न/यत्न कहलाता है।
(3) उपाय के होने पर विघ्न की शङ्का होने से जो फलप्राप्ति की सम्भावना होती है वही प्राप्त्याशा है।
(4) विघ्नों के अभाव से फल की निश्चित रूप से प्राप्ति ही नियताप्ति कहलाती है।
(5) पूर्णरूप से फल की प्राप्ति ही फलागम है।

60. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत–

(a) जगन्नाथः (b) भरतः
(c) विश्वनाथ-कविराजः (d) मम्मटः

(A) (b), (d), (c), (a)
(B) (b), (d), (a), (c)
(C) (b), (a), (c), (d)
(D) (a) (b), (c), (d)

उत्तर–(a)

(A) भरत–साहित्यशास्त्र का सबसे प्राचीनतम् ग्रन्थ भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र माना जाता है। इस प्रकार नाट्यशास्त्र का समय 200 ई.पू. से 300 ई.पू. तक के मध्य दोलायमान है। अतः इस आधार पर इनका समय दूसरी शताब्दी ई.पू. माना जाता है।

(B) मम्मट–आचार्य मम्मट का आविर्भाव (तृतीय युग) अर्थात् 11-12वीं शताब्दी के आस-पास का समय माना गया है।

(C) विश्वनाथ कविराज–आचार्य विश्वनाथ का समय विद्वानों ने 14वीं शताब्दी का मध्यभाग स्वीकार किया है।

(D) जगन्नाथ–पं. राजजगन्नाथ को पं. राज की उपाधि शाहजहां ने दी थी। इनका समय 17वीं शताब्दी के लगभग माना जाता है। अतः इसी आधार पर पंडित राजजगन्नाथ का समय भी 17वीं शताब्दी माना गया है।

61. 'धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयह्लादकारकः॥'
–अत्र कुन्तकेन किं प्रतिपादितम्?

(a) काव्यलक्षणम् (b) काव्यहेतुः
(c) काव्यप्रयोजनम् (d) काव्यवैविध्यम्

उत्तर–(c)

आचार्य कुन्तक प्रणीत् 'वक्रोक्तिजीवितम्'के काव्यप्रयोजन का लक्षण– धर्मादि.........।

अर्थात् कोमलपरिपाटी से कहा गया महाकाव्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधन का उपाय है तथा अभिजात (कुलीन) राजपुत्रों आदि के हृदय को आह्लादित करने वाला होता है।

काव्यलक्षण का प्रयोजन– धर्मादिवर्गचतुष्टय के फल के आनन्द को छोड़कर काव्यरूपी अमृतरस में काव्य तत्त्वज्ञों के हृदय को जो चमत्कार फैलाया जाता है वही काव्यचतुष्टय ही काव्यलक्षण का मुख्य प्रयोजन है।

(1) काव्यलक्षण–शास्त्रादि प्रसिद्ध शब्द तथा अर्थ के उपनिबन्धन से भिन्न कवि-व्यापार से शोभित काव्यतत्त्वज्ञों को आनन्दित करने वाले काव्य में विशेष रूप से स्थित सहभाव से युक्त शब्द तथा अर्थ दोनों मिलकर काव्य कहलाते हैं।

62. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत–

(a) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः। (i) मृच्छकटिकम्
(b) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः। (ii) कर्णभारम्
(c) हृदये गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्। (iii)रघुवंशम्
(d) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति। (iv) मुद्राराक्षसम्

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(B)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(C)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(D)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

उत्तर–(d)

(A) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।
न शीलेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गणमपेक्षते॥ (मुद्राराक्षस 1/3)
अर्थ–मूर्ख किसान की भी उर्वरा भूमि में की गई खेती लहलहा उठती है, क्योंकि धान्य का गुच्छों के रूप में उपजना, बीज बोने वाले व्यक्ति के गुणों की अपेक्षा नहीं करता है।

(B) आसीत् स दोलाचल चित्तवृत्तिः। (रघुवंश)

(C) आलाने गृह्यते हस्ती बाजी वल्गासु गृह्यते।
हृदये गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्॥ (मृच्छकटिकम् 1/50)
अर्थ–विट का कथन–हाथी खम्भे में बांधकर वश में किया जा सकता है। घोड़ा लगाम से वश में किया जाता है और स्त्री हृदय से वश में की जाती है। यदि हृदय नहीं है तो जाइए।

(D) शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात् सुबद्धमूला निपतन्ति पादपाः।
जलं जलस्थानगतं च शुष्यति हुतं च दन्तं च तदैव तिष्ठति।। (कर्णभारम् 1/22)

अर्थ–समय बीतने पर उपार्जित विद्या भी नष्ट हो जाती है और मजबूत जड़ वाले वृक्ष गिर जाते हैं। जल भी सरोवर में जाकर सूख जाता है किन्तु जो हवनादि किया हुआ पदार्थ या दान में दिया हुआ है, वह ज्यों का त्यों बना रहता है। अर्थात् पुण्य का नाश नहीं होता।

63. 'ह्रतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः'– शिशुपालवधे महाकाव्ये इयं वर्णना केन सम्बद्धा?

(a) यमवाहनमहिषेण (b) वरुणेन
(c) कुबेरेण (d) इन्द्रेण

उत्तर–(a)

परेतभर्तुर्महिषोऽमुना धनुः
र्विधातुमुत्खातविषाणमण्डलः।
ह्रतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरा
दुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः।। (शिशु. 1/57)

अर्थात्–उस रावण ने धनुष बनाने के लिए उखाड़े गए सींगों के मण्डल वाला यमराज का भैंसा सींग का भार दूर कर दिए जाने पर भी लज्जा के महान् भार से अत्यन्त झुके हुए सिर को कष्ट में ढो पाता था।

अतः प्रस्तुत श्लोक में रावण द्वारा यमराज पर विजय वर्णित है।

(2) रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा (शिशु. 1/56) में प्रचेतस् का अर्थ 'वरुण' होता है।

(3) धनाधिपति कुबेर के शंख नामक निधि को रावण ने पुष्पक विमान बनाया था।

(4) रावण के द्वारा भगाये गए इन्द्र ने ऐरावत की लीलायुक्त गति की प्रशंसा नहीं की तो रावण ने इन्द्र के ऊपर अपना अधिकार जताया।

64. अभिज्ञानशाकुन्तले दुष्यन्तस्य पुरोहितः भवति–

(a) वातायनः (b) सोमरातः
(c) गालवः (d) मारीचः

उत्तर–(b)

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सोमरात महाराजा दुष्यन्त का पुरोहित था तथा राजा दुष्यन्त का उपदेशक भी था। पञ्चम् अङ्क में जब शकुन्तला को शिष्यों सहित महर्षि कण्व हस्तिनापुर भेजते हैं। तब दुष्यन्त शकुन्तला को अपनाने से मना करता है। तत्पश्चात् शिष्य शार्ङ्गरव उल्टी-सीधी बातें बकने लगता है उसी समय दुष्यन्त अपने पुरोहित सोमरात से कहते हैं–

''मूढ़ स्यामहमेषा वा वदेन्मिथ्येति संशये।
दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांशुलः।। (अभि. 5/29)

अर्थात्, हे पुरोहित! इस समय मेरी मति भ्रष्ट हो रही है अथवा यह स्त्री झूठ बोल रही है। इस सन्देह में मैं स्त्री परित्यागी होऊं या पर-स्त्री के स्पर्श से दूषित होऊं।

पुरोहित का कथन–
तं साधुभिरादिष्टपूर्वः प्रथमेव चक्रवर्तिनं पुत्र जनयिष्यसीती।
अद्भुतं खलु संवृतम् बाहूत्क्षेपं क्रन्दितुं च प्रवृत्ता।।

- वातायान को अभिज्ञानशाकुन्तल में कञ्चुकी कहा गया है। यह राजा दुष्यन्त का भृत्य/नौकर था।
- गालव ऋषि मारीच का शिष्य था।
- मारीच (कश्यप) एक महर्षि–देवों और राक्षसों के पिता तथा प्रजापति हैं।

65. मुद्राराक्षसे चन्द्रगुप्तस्य अन्तःपुरचरः कञ्चुकी भवति–

(a) सिद्धार्थकः (b) चन्दनदासः
(c) वैहीनरिः (d) भागुरायणः

उत्तर–(c)

विशाखदत्त प्रणीत् 'मुद्राराक्षस' में वैहीनरि मौर्य साम्राज्य का कञ्चुकी था।

- **सिद्धार्थक–** यह चाणक्य का सर्वाधिक विश्वासपात्र, स्पष्टवादी, कुशल तथा बुद्धिमान गुप्तचर है। अपनी भावनाओं का हनन करके भी चाणक्य की महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने में अपने को अर्पण कर देता है।
- **चन्दनदास–** राक्षस का परममित्र कुसुमपुर का प्रतिष्ठित जौहरी, लक्ष्मी का वरदपुत्र स्वर्णकार (वैश्य) है।
- भागुरायण गुप्तसाम्राज्य का प्रमुख योद्धा तथा सेनापति सिंहबल का छोटा भाई एवं चाणक्य का विश्वासपात्र गुप्तचर है। यह अत्यधिक स्वामिभक्त, वीर, साहसी व्यक्ति है।

66. दशकुमारचरिते अष्टमे उच्छ्वासे विदर्भदेशस्य भोजवंशभूषणस्य कस्य राज्ञः वर्णनमस्ति?

(a) पुण्यवर्मणः (b) मानसारस्य
(c) राजहंसस्य (d) प्रहारवर्मणः

उत्तर–(a)

महाकवि दण्डी प्रणीत् दशकुमारचरितम् में कुल 8 उच्छ्वास हैं। अष्टम् उच्छ्वास में विदर्भ नाम का एक देश है। उसमें भोज वंश का भूषण पुण्यवर्मा नाम का एक शासक रहता था।

''विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन्भोजवंशभूषणम्'।

जो धर्म का अवतार, सत्यवादी, अप्रमेय बलिष्ठ, विनयभावसम्पन्न, दानी एवं प्रजापालक था। राजा पुण्यवर्मा सन्धि, विग्रह, यान, आसन, आश्रय, द्वैधीभाव इन छहों गुणों का विधिवत् पालन करता था। मनुस्मृति के अनुसार–चारों वर्णों के तथा चारों आश्रमों के

धर्मों का पालन प्रजा से करवाता था। उसकी पवित्र कीर्ति समस्त भूतल पर छायी हुई है।

- मानसार राजा हंस का अमात्य था।
- राजहंस, राजवाहन के पिता एवं दशकुमारचरित के नायक थे।
- प्रहारवर्मा मिथिला का राजा था।

67. 'तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः'–रघुवंशेऽयं पद्यांशः केन सम्बद्धः?

(a) श्रीरामेण (b) रघुणा
(c) अजेन (d) दिलीपेन

उत्तर–(d)

प्रस्तुत श्लोक कालिदास प्रणीत् रघुवंश के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

''तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।।'' 1/12

अर्थ–वैवश्वत मनु के उस पवित्र वंश में अतिपवित्र दिलीप नामक श्रेष्ठ राजा क्षीरसागर में चन्द्रमा के समान उत्पन्न हुए।

रघुवंशी राजाओं का क्रम–
दिलीप®रघु®अज®दशरथ®राम.......

68. 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा'–नैषधचरिते इयमुक्तिर्भवति–

(a) दमयन्त्याः (b) हंसस्य
(c) भीमस्य (d) नलस्य

उत्तर–(b)

प्रस्तुत श्लोक श्रीहर्ष प्रणीत् नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग से उद्धृत है–

मदेकपुत्रा जननी जरातुरा
नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी।
गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दय-
न्नहो विधे त्वां करुणा रुणद्धि ना।। (1/135)

प्रस्तुत श्लोक में हंस करुण वाणी राजा को सुनाता है–
हाय, माता मैं ही जिसका इकलौता पुत्र हूँ, हंस वृद्धावस्था से पीड़ित है और हंसी नवीन प्रसव वाली तथा पतिव्रता है। यह जन (अर्थात् मैं) उन दोनों का सहारा हूं। उसे (मुझे) सताते हुए हे विधाता क्या तुम्हें करुणा नहीं रोकती।

- दमयन्ती–राजा नल की पत्नी तथा इस महाकाव्य की नायिका एवं भीम की पुत्री है।
- भीम–विदर्भ देश के राजा एवं दमयन्ती के पिता हैं।
- प्रथम सर्ग के आधार पर नैषधीयचरितम् महाकाव्य के नायक महाराज नल हैं। प्रमुखतः ये निषधा देश के राजा हैं तथा दमयन्ती के पति भी हैं।

69. 'हर्षचरितम्' कतिषु उच्छ्वासेषु रचितमस्ति?

(a) त्रिषु (b) पञ्चसु
(c) सप्तसु (d) अष्टसु

उत्तर–(d)

संस्कृत साहित्य में यह सबसे पुरानी उपलब्ध आख्यायिका है। ओजः समासभयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्। अष्ट उच्छ्वासों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार द्रष्टव्य है–

प्रथम उच्छ्वास में बाणभट्ट का वंशपरिचय वर्णित है।
द्वितीय उच्छ्वास में हर्ष के भाई कृष्ण का लेखहारक वर्णन।
तृतीय उच्छ्वास में बाणभट्ट का घर-वापसी वर्णित है।
चतुर्थ उच्छ्वास में वंश का संक्षिप्त वर्णन है।
पञ्चम् उच्छ्वास में राजकुमारों की विजयगाथा वर्णित है।
षष्ठ उच्छ्वास में राज्यवर्धन की घर-वापसी एवं पिता द्वारा राजा बनाया जाना वर्णित है।
सप्तम् उच्छ्वास में श्रीहर्ष का दिग्विजय वर्णित है।
अष्टम् उच्छ्वास में शबर युवक की सहायता से भगिनी की खोज का वर्णन है।

70. उत्तररामचरिते 'मैत्रावरुणिः' पदं कस्य कृते प्रयुक्तम्?

(a) विश्वामित्रस्य कृते (b) वसिष्ठस्य कृते
(c) अष्टावक्रस्य कृते (d) ऋष्यशृङ्गस्य कृते

उत्तर –(b)

वसिष्ठ महर्षि हैं तथा रघुकुल (राम इत्यादि) के कुलगुरु भी हैं। उत्तररामचरितम् में 'मैत्रावरुणि'' पद भगवान् वशिष्ठ के लिए प्रयुक्त है–

रामः- यथा समादिशति भगवान् मैत्रावरुणिः।
''स्नेहं दया च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।**12**।।
भगवान राम कहते हैं कि भगवान वशिष्ठ जैसी आज्ञा देगें वैसा हम करेगें। प्रजा के अनुरंजन के लिए प्रेम, दया, सुख अथवा जानकी को भी छोड़ते हुए मुझे कष्ट नहीं होगा।

- अष्टावक्र उत्तररामचरितम् में विकृत अंगों वाले एक मुनि हैं। ये सीता को वीरप्रसविनी होने का आशीर्वाद देते हैं।
- ऋष्यशृङ्ग मुनि उत्तररामचरितम् में शान्ता के पति एवं राम के जीजा हैं।

71. 'अलब्धलाभार्था लब्धपरिरक्षिणी' इत्यादि–विशेषणानि कौटिलीयार्थशास्त्रे कां लक्षयन्ति?

(a) भेदनीतिम् (b) दण्डनीतिम्
(c) वार्ताम् (d) आन्वीक्षिकीम्

उत्तर–(b)

आचार्य कौटिल्य के अनुसार 4 प्रकार की विद्याएं मानी गई हैं–(1) आन्वीक्षिकी (2) त्रयी (3) वार्ता (4) दण्डनीति

''आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानांयोगक्षेमसाधनो दण्डः। तस्य नीतिर्दण्डनीतिः। अलब्धलाभार्थाः, लब्धपरिरक्षिणी रक्षितविवर्धनी वृद्धस्य तीर्थेषु प्रतिपादिनी च।'' अर्थात् आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दण्डनीति कहलाती है। वही अप्राप्त वस्तुओं को प्राप्त कराती है, प्राप्त वस्तुओं की रक्षा करती है, रक्षित वस्तुओं की वृद्धि करती है और संवर्द्धित वस्तुओं को समुचित कार्यों में लगाने का निर्देश करती है। उसी पर संसार की सारी लोकयात्रा निर्भर है। इसलिए लोक को समुचित मार्ग पर ले चलने की इच्छा रखने वाला राजा सदा ही उद्यतदण्ड रहे।

72. 'संख्यातार्थेषु कर्मसु नियुक्ता ये यथादिष्टमर्थं सविशेषं वा कुर्युः तानमात्यान् कुर्वीत'–कौटिलीयार्थशास्त्रे उल्लिखितमेतत् मतं भवति–

(a) भारद्वाजस्य (b) विशालाक्षस्य
(c) बाहुदन्तीपुत्रस्य (d) पिशुनस्य

उत्तर–(d)

कौटिल्य अर्थशास्त्र के तृतीय प्रकरण अध्याय-7 में अमात्यों की नियुक्ति की चर्चा की गई है। जिसमें आचार्य पिशुन इसको भक्ति कहते हैं। उनका कहना है कि प्राणों की चिन्ता न करके राजा की सहायता करना ही भक्ति है, सेवाधर्म है। यह बुद्धि का प्रमाण नहीं, जो कि अमात्य का सर्वोच्च गुण है। इसलिए अमात्यपद पर उन्हें नियुक्त करना चाहिए जो कि विशिष्ट राजकीय कार्यों पर नियुक्त होकर अपने कार्यों को विशेष योग्यता के साथ सम्पन्न करके दिखा दें, क्योंकि इस ढंग पर उनके बुद्धि वैशिष्ट्य की परीक्षा होती है।

(1) भारद्वाज के अनुसार, अपने विश्वासपात्र व्यक्ति को अमात्य नियुक्त करना चाहिए।
(2) विशालाक्ष के अनुसार, जो गुप्तकार्यों में राजा का साथ दे उनको अमात्य बनाना चाहिए।
(3) बाहुदन्ती पुत्र के अनुसार, कुलीन, बुद्धिमान, विश्वासपात्र, वीर और राजभक्त को अमात्य बनाना चाहिए।

73. याज्ञवल्क्यमते पैतामहे द्रव्ये अनेकपितृकपुत्राणां भागविभागः कथं भवति?

(a) पितृतः (b) कामतः
(c) समभावतः (d) ज्येष्ठकनिष्ठभावतः

उत्तर–(a)

याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय प्रकरण में पिता-पुत्र के धर्म की चर्चा की गई है–

''अनेकपितृकाणां तु पितृतो भागकल्पना ।

पितामह के धन में पिता के भाग के अनुसार ही पौत्र के भाग का निर्धारण होता है।

''भूर्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा ।
तत्र स्यात्सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य चैव हि ॥

जो भूमि पितामह द्वारा अर्जित है जो निबन्ध तथा द्रव्य पितामह द्वारा अर्जित है उसमें भी पिता के समान अर्थात् अंशानुसार पौत्र का भाग होगा। (व्यवहार अध्याय 1/121)

74. मनुमते वैश्यस्य मेखला कीदृशी कार्या?

(a) मुञ्जमयी (b) मूर्वामयी
(c) शणतान्तवी (d) कुशमयी

उत्तर–(c)

आचार्य मनु प्रणीत् मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में चारों वर्णों की मेखला की चर्चा की गई है–

मौञ्जी त्रिवृत्समा श्लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला।
क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतान्तवी।। मनु. 2/42

अर्थात्–

- **ब्राह्मण–** ब्राह्मण की मेखला मूंज से बनी तीन लड़ से युक्त होनी चाहिए ।
- **क्षत्रिय–** क्षत्रिय की मेखला मूर्वा नाम की लकड़ी की जिसकी धनुष की प्रत्यञ्चा बनती है, उसकी होती है।
- **वैश्य–** वैश्य की मेखला सन के सूत की बनी होती है।

75. मनुमते एतेषां कस्य मात्रा नृपस्य निर्माणे न गृहीता?

(a) इन्द्रस्य (b) चन्द्रस्य
(c) अश्विनोः (d) अनिलस्य

उत्तर–(c)

मनुस्मृति के सप्तम् अध्याय में मनु ने इन्द्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा और कुबेर इन आठ दिग्पालों के नित्य अंश से ईश्वर ने राजा को बनाया है–

इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः ॥ (मनु. 7/4)

विशेष–राजा इन्द्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा और कुबेर का सारभूत अंश होता है, अतएव इसमें उक्त देवताओं की दीप्ति विद्यमान रहती है। इसलिए वह इन्द्र के समान सामर्थ्यशाली, वायु के समान सबको प्रिय, यमराज के समान निष्पक्ष न्यायकर्त्ता सूर्य के समान तेजस्वी, अग्नि के समान दुष्टविनाशक, वरूण के समान अन्यामी को बांधने वाला, कुबेर के समान धन-धान्य से सम्पन्न एवं चन्द्रमा के समान आह्लादक होता है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Jan-2016

संस्कृत

पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति?

(a) मैक्समूलरः (b) बालगंगाधर तिलकः
(c) एम. विन्टरनित्जः (d) ए. वेबरः

उत्तर–(b)

नक्षत्रों में वसन्त-संपात के आधार पर श्री बालगंगाधर तिलक ने वेदों का काल निर्धारित किया। तिलक ने ज्योतिष-गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचना काल 6 हज़ार ई.पू. से 4 हज़ार ई.पू. माना है। इन्होंने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है–

(1) अदिति काल – 6000 - 4000 ई.पू.
(2) मृगशिरा काल – 4000 - 2500 ई.पू.
(3) कृत्तिका काल – 2500 - 1400 ई.पू.
(4) सूत्रकाल – 1400 - 500 ई.पू.

- आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के रचनाकाल का आधार वेद-मन्त्र को माना है। उनके अनुसार वेदों का उद्भव परमात्मा से सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ।
- अविनाशचन्द्र दास ने वेदों के रचनाकाल का आधार भूगर्भ, एच. याकोबी ने ज्योतिष, विन्टरनित्स ने मितानी शिलालेख,
- मैक्समूलर ने बौद्ध साहित्य और दीनानाथ शास्त्री चुलेट ने ज्योतिष को आधार माना है।

2. कौशिकगृह्यसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?

(a) अथर्ववेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(a)

कौशिक गृह्यसूत्र अथर्ववेद से सम्बन्धित है। वेदों की चार संहिताएं हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद संहिता।

- ऋग्वेद संहिता के कल्पसूत्र–(1) श्रौत सूत्र–आश्वलायन एवं शांखायन श्रौतसूत्र; (2) गृह्यसूत्र–आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि गृह्यसूत्र
- शुक्ल यजुर्वेद संहिता के कल्पसूत्र–(1) श्रौतसूत्र–कात्यायन श्रौतसूत्र
  गृह्यसूत्र–पारस्कर गृह्यसूत्र
  शुल्बसूत्र–बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशि, वाराह शुल्बसूत्र
- कृष्ण यजुर्वेद संहिता के कल्पसूत्र–(1) श्रौतसूत्र–बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, काठक, आपस्तम्ब, सत्याषाढ़, वाराह, वैखानस श्रौतसूत्र।
  गृह्यसूत्र–बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस।
- सामवेदीय कल्पसूत्र–श्रौतसूत्र–आर्षेय या मशककल्प, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण श्रौतसूत्र

गृह्यसूत्र–गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय गृह्यसूत्र।

3. ''यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।''........ अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति?

(a) वरुणः (b) इन्द्रः
(c) अग्निः (d) विष्णुः

उत्तर–(b)

''यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते'' इस मन्त्र के देवता इन्द्र हैं। इस मन्त्र में इन्द्र की विशेषता बतलाते हुए कहते हैं कि जिस इन्द्र के बिना मनुष्य विजय को प्राप्त नहीं करते तथा युद्ध करते हुए सैनिक अपनी रक्षा के लिए जिसका आह्वान करते हैं, वह इन्द्र ही है।

– इन्द्र सूक्त ऋग्वेद के दूसरे मण्डल का 12वां सूक्त है। इसके ऋषि गृत्समद हैं तथा इसमें त्रिष्टुप् छन्द है।

– इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं।

इन्द्र के प्रमुख विशेषण–वज्री, वज्रिन, वज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, मरुत्वान्, मघवा, वृत्रहा, वृत्रहन्, दस्योर्हन्ता, अच्युतच्युत्, हरिदश्व, मनस्वान्, सोमपा, पुरन्दर, वसुपति, तुविष्मान् हैं।

— अग्नि पृथ्वीस्थानीय देवता हैं तथा इनके ऋषि मधुच्छन्दा हैं।

— वरुण द्युस्थानीय देवता हैं। इनके ऋषि शुनःशेप एवं वशिष्ठ हैं।

4. प्रश्नोपनिषद् केन वेदेन सह सम्बद्धा अस्ति?

(a) अथर्ववेदेन (b) सामवेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर–(a)

प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद से सम्बन्धित है।

– ऋग्वेद से सम्बन्धित उपनिषद्–(1) ऐतरेय (2) कौषीतकि (3) बाष्कल मन्त्रोपनिषद्

– शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद्–(1) ईशोपनिषद् (2) बृहदारण्यकोपनिषद्

– कृष्ण यजुर्वेदीय उपनिषद्–(1) तैत्तिरीय (2) कठोपनिषद् (3) श्वेताश्वतरोपनिषद् (4) मैत्रायणी उपनिषद्

(5) महानारायणोपनिषद्
– सामवेदीय उपनिषद्–(1) छान्दोग्योपनिषद् (2) केनोपनिषद्
अथर्ववेदीय उपनिषद्–(1) प्रश्न (2) मुण्डक (3) माण्डूक्योपनिषद्
– ऋग्वेद संहिता के आरण्यक–ऐतरेय और शांखायन
– शुक्ल यजुर्वेदीय आरण्यक–बृहदारण्यक
– कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक–तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणीय आरण्यक
- सामवेदीय आरण्यक–तलवकार आरण्यक
- अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक प्राप्त नहीं होता है।

वेदों के संरक्षण की अष्टविकृतियां–(1) जटा (2) माला (3) शिखा (4) रेखा (5) ध्वज (6) दण्ड (7) रथ (8) घन।

5. पञ्चविंशब्राह्मणस्य अपरं नाम अस्ति

(a) ताण्ड्यमहाब्राह्मणम् (b)आर्षेयब्राह्मणम्
(c) सामविधानब्राह्मणम् (d) देवताध्यायब्राह्मणम्

उत्तर–(a)

पञ्चविंश ब्राह्मण का अपर नाम ताण्ड्यमहाब्राह्मण है। पञ्चविंश ब्राह्मण सामवेदीय ब्राह्मण है। इसको प्रौढ़ ब्राह्मण के भी नाम से जाना जाता है।

- सामवेद के आठ ब्राह्मण उपलब्ध हैं–(1) ताण्ड्यब्राह्मण (2) षड्विंश (3) सामविधान (4) आर्षेय (5) देवताध्याय (6) मन्त्रब्राह्मण व छान्दोग्योपनिषद् (7) संहितोपनिषद् (8) वंशब्राह्मण।
  जैमिनीय शाखा से सम्बन्धित तीन ब्राह्मण हैं–जैमिनीय ब्राह्मण, जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण, जैमिनीय उपनिषद् (छान्दोग्य) ब्राह्मण।
- ऋग्वेद संहिता के ब्राह्मण–ऐतरेय और कौषीतकि हैं।
- शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण– शतपथ और कृष्ण यजुर्वेदीय ब्राह्मण-तैत्तिरीय ब्राह्मण हैं।
- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ है।
- ऋग्वेद संहिता की शाकल और बाष्कल दो शाखाएं हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व शाखाएं हैं।
- कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ और कपिष्ठल शाखा है।
- सामवेद संहिता की कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय शाखा है।
- अथर्ववेद संहिता की शाखाएं शौनक और पैप्पलाद हैं।

6. कस्य वेदस्य आरण्यकं न प्राप्यते?

(a) सामवेदस्य (b) अथर्ववेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

उत्तर–(b)

अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं प्राप्त होता है।

- ऋग्वेद संहिता का आरण्यक–ऐतरेय और शांखायन।
- शुक्ल यजुर्वेद संहिता का आरण्यक –बृहदारण्यक।
- कृष्ण यजुर्वेद संहिता का आरण्यक–तैत्तिरीय आरण्यक।
- ऋग्वेदीय उपनिषद्–ऐतरेय, कौषीतकि, बाष्कल मन्त्रोपनिषद्।
- शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद्–ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्।
- कृष्णयजुर्वेदीय उपनिषद्–तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायणोपनिषद्।
- सामवेदीय उपनिषद्–छान्दोग्य और केनोपनिषद्।
- अथर्ववेद संहिता के उपनिषद्–प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्योपनिषद्।

— चारों वेदों के चार उपवेद भी हैं।
ऋग्वेद–आयुर्वेद, यजुर्वेद–धनुर्वेद, सामवेद–गान्धर्ववेद, अथर्ववेद–इतिहास, पुराण, स्थापत्य, सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद।

7. 'सरमा-पणि' सूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(a) 11 (2) 12
(c) 13 (d) 14

उत्तर–(a)

सरमा-पणि सूक्त में 11 मन्त्र हैं। सरमा-पणि संवाद ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 108वां सूक्त है। इसमें पणि (कृपण व्यापारी) और सरमा (देवशुनी, कुतिया) का संवाद है।

पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त–ऋग्वेद (10/95)–इस सूक्त में पुरुरवा और उर्वशी नामक अप्सरा के प्रणय-सम्बन्ध का वर्णन है। इसमें कहा गया है कि स्त्रियों का प्रेम चिरस्थायी नहीं होता है, वे कठोर हृदय की होती हैं–''न वै सख्यानि स्त्रैणानि सन्ति, सालावृकाणां हृदयान्येता।''

यम-यमी संवाद (ऋग्वेद 10/10)–यम-यमी भाई-बहन हैं। यमी यम से सृष्टि के लिए प्रणय-याचना करती है। यम इसे अनैतिक और अनुचित बताकर इस प्रार्थना को अस्वीकार कर देता है।

- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त (ऋग्वेद 3/33)।
- इन्द्र-मरुत संवाद सूक्त (ऋग्वेद 1/165)।
- इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋग्वेद 10/86)

8. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलन तालिकां चिनुतः

(a) छन्दःशास्त्रम् (i) ऋग्वेदः
(b) कौषीतकिब्राह्मणम् (ii) सामवेदः
(c) तैत्तिरीयोपनिषद् (iii) पिङ्गलः
(d) केनोपनिषद् (iv) यजुर्वेदः

(a) (iii) (ii) (i) (iv) (b) (iii) (iv) (i) (ii)
(c) (iii) (i) (iv) (ii) (d) (iii) (ii) (iv) (i)

उत्तर–(c)

छन्दःशास्त्रम् ग्रन्थ पिङ्गल प्रणीत है। वैदिक छन्द वृत्तात्मक है, वेदों में मात्रिक छन्दों का अभाव है।

''छन्दः पादौ तु वेदस्य'' छन्द वेद का पैर है। यह साहित्य को स्थिरता प्रदान करता है। छन्द में 1 अक्षर का कम होना–निचृत तथा 1 अक्षर अधिक–भूरिक् कहलाता है। 2 अक्षरों का कम होना–विराट् तथा 2 अक्षरों का अधिक होना–स्वराट् कहलाता है।

- ऐतरेय और कौषीतकि ब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित हैं।
- तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायणोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित हैं।
- छान्दोग्य और केनोपनिषद् सामवेद के उपनिषद् हैं।

ईशोपनिषद् समस्त उपनिषदों का आधार है। यह यजुर्वेद का 40वां अध्याय है। इसमें 18 मन्त्र हैं।

केनोपनिषद् को तलवकार उपनिषद् भी कहा जाता है। इसमें 4 खण्ड हैं। प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक और शेष दोनों गद्यात्मक हैं।

कठोपनिषद् में 2 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन वल्ली हैं।

9. अधस्तनेषु कल्प-वेदाङ्गान्तर्गतं किमस्ति?

(a) मानवशुल्बसूत्रम् (b) पिङ्गलछन्दः शास्त्रम्
(c) शौनकप्रातिशाख्यम् (d) प्रश्नोपनिषद्

उत्तर–(a)

कल्प वेदाङ्ग के अन्तर्गत मानवशुल्बसूत्र सम्मिलित है।

आचार्य सायण ने कल्प का अर्थ बतलाते हुए कहा है कि जिन ग्रन्थों में यज्ञ सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें कल्प कहा जाता है।

कल्पसूत्र के चार भेद हैं–(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र

- शुल्बसूत्र शुद्ध रूप से गणित शास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ है।

  'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते'। कल्प को वेद का हाथ बतलाया गया है।

  शुल्ब सूत्र का शास्त्रीय महत्व के कारण विशेष महत्व है। शुल्ब का सामान्य अर्थ 'रस्सी' है। भूमि आदि के नाप के लिए जो रस्सी प्रयोग में आती थी, उसके आधार पर इस शास्त्र का नाम 'शुल्बसूत्र' पड़ा।
- बौधायन शुल्बसूत्र कृष्ण-यजुर्वेद से सम्बन्धित है। यह सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र है।

  आपस्तम्ब शुल्बसूत्र का भी सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है।
- कात्यायन शुल्बसूत्र शुक्ल-यजुर्वेद से सम्बन्धित है।
- मानव शुल्बसूत्र गद्य-पद्य मिश्रित एक छोटा ग्रन्थ है। इसमें अनेक नवीन वेदियों का वर्णन है।

  दो अन्य शुल्बसूत्र भी प्राप्त होते हैं–मैत्रायणी शुल्बसूत्र (यह मानव शुल्बसूत्र का ही रूपान्तर है)। (2) वाराह शुल्बसूत्र।

10. अधोऽङ्कितेषु को ग्रन्थो वेदाङ्गान्तर्गतो नास्ति?

(a) हिरण्यकेशिधर्मसूत्रम् (b) महाभाष्यम्
(c) ईशोपनिषद् (d) अष्टाध्यायी

उत्तर–(c)

ईशोपनिषद् की गणना वेदाङ्ग के अन्तर्गत नहीं होती है। वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है उन्हें वेदाङ्ग कहते हैं। पाणिनीय शिक्षा में छः वेदाङ्गों को वेदपुरुष के छः अङ्गों के रूप में बतलाया गया है।

''छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।''

प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ –अष्टाध्यायी–पाणिनि कृत है।

- अष्टाध्यायी के सूत्रों पर 'वार्तिक' कात्यायन ने लिखा है।
- महाभाष्य पतञ्जलि कृत् व्याकरण ग्रन्थ है। भर्तृहरि कृत 'वाक्यपदीय' व्याकरणदर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।

11. 'तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्‍न्‍र्यं स्वार्थसाधकं च' इत्यनेन कस्य निर्देशो भवति?

(a) महाभाष्यस्य (b) वाक्यपदीयस्य
(c) निरुक्तस्य (d) ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य

उत्तर–(c)

''तदिदं विद्यास्थानम् व्याकरणस्य कात्स्‍न्‍र्यं स्वार्थसाधकं च'' इस वाक्य में निरुक्त वेदाङ्ग के विषय में बतलाया गया है। पाणिनीय शिक्षा में छः वेदाङ्ग और इनके छः अङ्गों का निरूपण किया गया है।

- छन्द वेदपुरुष के पैर हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र हैं,निरुक्त कान हैं, शिक्षा नाक है और व्याकरण मुख है।

  उपर्युक्त निरुक्त की पंक्ति में कहा गया है कि ''निरुक्त शास्त्र के बिना वेदमन्त्रों का अर्थज्ञान नहीं होता। यह निरुक्तशास्त्र व्याकरण का पूरक है और अव्युत्पन्न शब्दों के अर्थज्ञान का साधन है।''
- निरुक्त में 12 अध्याय और 2 परिशिष्ट अध्यायों को मिलाकर कुल 14 अध्याय हैं।
- निरुक्त में पद के चार भेद हैं–नाम, आख्यात,उपसर्ग और निपात।
- तत्र नामानि आख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च।
- भावप्रधानम् आख्यातम्, सत्त्वप्रधानानि नामानि।
- भाव के छः प्रकार–षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।

  जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।

12. अन्त्यादलः पूर्व-वर्णस्य का सञ्ज्ञाभवति?

(a) गतिसञ्ज्ञा (b) उपधासञ्ज्ञा
(c) प्रगृह्यसञ्ज्ञा (d) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा

उत्तर–(b)

वर्णों के समुदाय में से जो अन्तिम अल् हो उससे पूर्व के वर्ण की यह उपधा सञ्ज्ञा होती है। जैसे—राम में अन्त्यवर्ण मकार है और उसके बाद अकार और उससे पूर्व वर्ण मकार है। अतः मकार की उपधा सञ्ज्ञा हो जाएगी। लेकिन मकार की उपधा सञ्ज्ञा करने का कोई फल नहीं है। अतः इसकी इत्संज्ञा नहीं होगी।

अपृक्त एकाल् प्रत्यय—एक अल् रूप जो प्रत्यय होता है वह अपृक्त संज्ञक होता है। जैसे—सु प्रत्यय में स् तथा दो अल् थे किन्तु उकार की संज्ञा और लोप हो जाने के कारण केवल स् बचा हुआ है। इसलिए सु का सकार एकमात्र अल् है अतः उसकी अपृक्तसंज्ञा होती है।

सर्वनामस्थाने—सर्वनाम संज्ञक प्रत्यय के परे रहने पर नकारान्त उपधासंज्ञक वर्ण को दीर्घ आदेश होता है।

13. अधोलिखितेषु निरनुबन्धकः कः प्रत्ययः अपृक्तसञ्ज्ञको भवति?

(a) भ्याम् (b)ङमुट्

(c) अनङ् (d) सु

उत्तर—(d)

सु प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा होती है।

- **अपृक्त एकाल् प्रत्ययः**—एक अल् रूप जो प्रत्यय होता है वह अपृक्त संज्ञक होता है जैसे—सु प्रत्यय में स् तथा उ दो अल् थे किन्तु उकार की इत्संज्ञा और लोप हो जाने पर केवल स् बचता है, इसलिए सु का सकार एकमात्र अल् है। अतः इसकी अपृक्त संज्ञा हो गई।
- **तरप्तमपौ घः**—तरप् और तमप् प्रत्यय घ संज्ञक होता है।—जैसे- कुमारितरा
- **दाधाघ्वदाप्**—दा तथा धा रूप वाले धातुओं की घु संज्ञा होती है। इसमें दाप् लवने और दैप शोधने धातुओं को नहीं लिया जाता है।
- **सुडनपुंसकस्य**—नपुंसकलिङ्ग से भिन्न सुट् (सु, औ, जस्, अम्, औट्) इन पांच प्रत्ययों की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है, जैसे—वनानि, मधूनि, दधीनि।
- **शेषोध्यसखि**—जिनकी नदी संज्ञा नहीं है, ऐसे ह्रस्व इकार, उकार हैं जिनके अन्त में उन सभी की 'घि' संज्ञा होती है, सखि शब्द को छोड़कर। जैसे—हरिः, भानुः, वारि, मधु।

14. 'प्रासादात् प्रेक्षते' इत्यत्र पञ्चमी-विभक्तिविधायकनियमः कः?

(a) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च

(b) आख्यातोपयोगे

(c) पराजेरसोढः

(d) जनिकर्तुः प्रभवः

उत्तर—(a)

'प्रासादात् प्रेक्षते' इस उदाहरण में पञ्चमी विभक्ति विधायक 'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च'' नियम लगा है। ल्यप् और क्त्वा प्रत्ययान्त क्रिया का वाक्य में लोप होने पर उसके कर्म और अधिकरण कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—आसनात् प्रेक्षते, श्वसुरात् जिह्वेति।

आख्यातोपयोगे—उपयोग और नियमपूर्वक विद्या पढ़ने में आख्याता की अपादान संज्ञा होती है। जैसे—उपाध्यायाद् अधीते।

जनिकर्तुः प्रकृतिः—जन् धातु के कर्त्ता के कारण की अपादान संज्ञा होती है। जैसे—ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।

भुवः प्रभवश्च— भू धातु का जो कर्त्ता, उसका प्रभव (प्रथम प्रकाशन का स्थान) अपादान संज्ञक होता है। जैसे—हिमवतो गङ्गा प्रभवति।

पराजेरसोढः—यदि जि धातु के पूर्व परा उपसर्ग लगा हो तो जो असह्य पदार्थ होता है। उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे- अध्ययनात् पराजयते

15. 'अभ्याशादागतः' इत्यत्र तत्पुरुष-समासविधायको नियमः कः?

(a) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः

(b) पञ्चमी भयेन

(c) स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन

(d) पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे

उत्तर—(c)

अभ्याशादागतः इस तत्पुरुष विधायक उदाहरण में ''स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणिक्तेन' सूत्र का प्रयोग हुआ है।

स्तोकार्थक, अन्तिकार्थक, दूरार्थक, कृच्छ्रशब्द पञ्चम्य सुबन्तों क्त प्रत्ययान्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है यह तत्पुरुष समास कहलाता है। जैसे—स्तोकान्मुक्तः, अन्तिकादागतः, अभ्याशादागतः दूरादागतः।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः''—चतुर्थ्यन्त शब्द का चतुर्थ्यन्त के लिए जो वस्तु, तद्वाचक शब्द के साथ तथा अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित शब्दों के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे—यूपायदारु—तदार्थ में प्रयुक्त है। द्विजार्थः, भूतबलिः, गोहितम् आदि।

द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः—द्वितीया विभक्ति से युक्त समर्थ सुबन्त का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त तथा आपन्न ऐसी प्रकृति है जिनकी ऐसे समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक कहलाता है। उदाहरण-

कृष्णश्रितः, अरण्यातीतः, कूपपतितः, ग्रामगतः, सुखप्राप्तः, दुःखापन्नः।

16. 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' इति सूत्रस्य तूर्याङ्गवाचकपदस्य कस्मिन् उदाहरणे सङ्घटनं भवति?

(a) रथिकाश्वारोहम् (b) त्वक्-स्रजम्

(c)पाणिपादम् (d) मार्दङ्गिकवैणविकम्

उत्तर—(d)

'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' इस सूत्र में 'तूर्याङ्गवाचक पद ''मार्दङ्गिकवैणविकम्'' उदाहरण में समाहित है।
प्राणी के अङ्ग, वाद्य के अङ्ग और सेना के अङ्गों में यदि द्वन्द्वसमास हो तो उनमें समाहार एकवचन होता है। जैसे–पाणिपादम् में चार्थे द्वन्द्वः से समास करने के बाद द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् से एकवचन का विधान हुआ।
अल्पाच्तरम्–द्वन्द्व समास के सभी शब्दों में जो शब्द अत्यन्त कम अच् वाला होता है, उसका ही पूर्व प्रयोग होता है। जैसे–शिवकेशवौ।
द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्–च वर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हकारान्त द्वन्द्व से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। जैसे–वाक्त्वचम्, त्वक्स्रजम्, शमीदृषदम्, छत्रोपाहनम्।

17. 'प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्ये' यत्र षष्ठी-विभक्तिप्रयोगे को हेतुर्दर्शितो भट्टोजि दीक्षितेन?

(a) 'नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलंवषड्योगाच्चे' इति सूत्रनिर्देशः
(b) 'तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः' इति सूत्रनिर्देशः
(c) 'स एषां ग्रामणीः' इति सूत्रनिर्देशः
(d) 'अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्' इति विवरणम्

उत्तर–(b)

नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषड्योगाच्च। से चतुर्थी तथा ''तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होता है। ''प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्ये''–प्रभु इत्यादि शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग भी साधु ही है। ''तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः तथा स एषां ग्रामणी में क्रमशः प्रभवति के योग में चतुर्थी (तस्मै) तथा 'समर्थ' के योग में षष्ठी का प्रयोग हुआ है। अतः प्रभुः बभूषः भुवनत्रयस्य में प्रभु के योग में भुवनत्रय में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्–सूत्रस्थ 'अलम्' पद से सामर्थ्य अर्थ के वाचक प्रभु, प्रभवति, समर्थ, शक्त इत्यादि का ग्रहण होता है।
- नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् इन अव्यय पदों के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है।

18. 'षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन' इति सूत्रस्योदाहरणं किम् भवति?

(a) दक्षिणेन ग्रामस्य (b) ग्रामस्य दक्षिणतः
(c) ग्रामस्य दूरम् (d) अन्नस्य हेतोर्वसति

उत्तर–(b)

'षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन' इस सूत्र का उदाहरण 'ग्रामस्य दक्षिणतः' है। अतसुच्तस् प्रत्ययान्त शब्दों तथा इसी अर्थ वाले अन्य प्रत्ययान्त (अस्ताति, आति, आच् तथा आहि प्रत्ययान्त) शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-ग्रामस्य दक्षिणतः। यहां दिक् शब्द 'दक्षिणतः' के योग में 'अन्यारादि' से ग्राम में पञ्चमी विभक्ति प्राप्त होती है। किन्तु दक्षिणतः के अतसुच् प्रत्ययान्त होने के कारण उसको बाधित कर प्रकृत सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है।

''अन्नस्य हेतोर्वसति–यहां निवास करने का कारण अन्न है तथा हेतु शब्द का प्रयोग भी किया गया है। अतः उसमें तथा हेतु शब्द में प्रकृत सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है।
'एनपा द्वितीया'–एनप् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में द्वितीया या षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा। उत्तरेण ग्रामं ग्रामस्य वा।
'सर्वनाम्नस्तृतीया च'–यदि हेतु शब्द के साथ किसी सर्वनाम का प्रयोग हो तथा वे हेतु अर्थ प्रकट करते हों, तो हेतु शब्द और सर्वनाम दोनों में ही तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–केन हेतुना, कस्मात् हेतोः वसति वसति–कस्य हेतोः वसति।

19. 'जगत् सृष्ट्वा' इत्यत्र 'जगत्' शब्दे कृदन्त 'सृष्ट्वा' शब्दप्रयोगेऽपि षष्ठी कथं न भवति?

(a) 'न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनामि' इति सूत्रेण लादेशे षष्ठीनिषेधात्
(b) 'न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनामि' इति सूत्रेण उकञ्-प्रत्ययान्तप्रयोगे षष्ठीनिषेधात्
(c) 'न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनामि' इति सूत्रेण कृदव्यययोगे षष्ठीनिषेधात्
(d) 'अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः' इत्यनेन षष्ठीनिषेधात्

उत्तर–(c)

''जगत् सृष्ट्वा'' इसमें सृष्ट्वा इस अव्यय कृदन्त के योग में प्रकृत सूत्र से कर्म जगत् में ''न लोकाव्ययनिष्ठा-खलर्थतृनामि इति'' सूत्र से कृद् अव्यय के योग में षष्ठी का निषेध होता है। अनुक्त होने के कारण इसमें द्वितीया विभक्ति होती है।
सुखं कर्त्तुम्–इसमें भी तुमुन् प्रत्ययान्त 'कर्त्तुम्' पद अव्यय है। अतएव इसके योग में कर्म 'सुख' में षष्ठी विभक्ति का निषेध प्रकृत सूत्र से हो गया है। अतः इसमें द्वितीया विभक्ति हुई।
विष्णुना हता : दैत्याः–यहां निष्ठा प्रत्ययान्त हताः कृदन्त के योग में प्रकृत सूत्र से कर्म 'दैत्य' में षष्ठी विभक्ति का निषेध हो गया। हन् धातु से कर्म अर्थ में क्त प्रत्यय होने के कारण कर्म के अभिहित होने से उसमें प्रथमा विभक्ति हुई।
दैत्यान् हतवान् विष्णुः–यहां निष्ठाप्रत्ययान्त 'हतवान्'कृदन्त के योग में प्रकृत सूत्र से कर्म 'दैत्य' में षष्ठी विभक्ति का निषेध हो गया। कर्म के अनुक्त होने पर द्वितीया विभक्ति हुई।

20. को वर्णः अन्तःस्थेषु न गण्यते?

(a) च् (b) य्
(c) व् (d) ल्

उत्तर–(a)

अन्तःस्थ ध्वनियां चार हैं–य्, र्, ल्, व्।
मूल स्वर–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ ऌ।
संयुक्त स्वर–ए, ऐ, ओ, औ।
कादयोमावशानास्पर्शाः–क से लेकर म तक स्पर्श ध्वनियां हैं।

ऊष्म-संघर्षी स्थानीय ध्वनियां है–श, ष, स, ह, विसर्ग (:), जिह्वामूलीय (ᳵ) उपध्मानीय (ᳶ)।
अनुनासिक–अनुस्वार (ᳶ)।

- पाणिनीय शिक्षानुसार उच्चारण स्थान के आठ भेद हैं–
  अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।
  जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।।
- वकारस्य दन्तोष्ठम्, ओदौतोः कण्ठोष्ठम्, एदैतोः कण्ठतालुः। ञमङणनानां नासिका च।

21. विषमीकरणस्य उदाहरणं किम् अस्ति?

(a) गच्छति (b) चलति
(c) अधावत् (d) बभूव

उत्तर–(d)

बभूव विषमीकरण का उदाहरण है। ध्वनि-परिवर्तन की प्रमुख दिशाएं–

1. समीकरण–जब दो विषम ध्वनियां एकत्र होकर एक ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती है तो यह समीकरण कहलाता है। जैसे- रषाभ्यां नो णः समानपदे, ष्टुना ष्टुः आदि सूत्र समीकरण प्रस्तुत करते हैं–
विष् + नुः = विष्णुः, पुष् + तः = पुष्टः, चक्र > चक्का, अग्नि > अग्गि, पत्र > पत्ता
पश्चगामी समीकरण का उदाहरण– शर्करा–शक्कर, धर्म–धम्म, सप्त–सत्त, वल्कल–वक्कल, तत् + लीन = तल्लीन, गल्प–गप्प

2. विषमीकरण–समीकरण के विपरीत इसमें समान ध्वनियां विषम रूप धारण कर लेती हैं– जैसे- काक–काग, कंकण–कंगन, षष्–षट्, ककार > चकार, मुकुट–मउर, गुरु–गरु, किकीर्षति > चिकीर्षति

3. आगम–स्त्री–इस्त्री, स्कूल–इस्कूल, ओष्ठ–ओठ, उल्लास–हुलास, स्टेशन–इस्टेशन।

4. लोप–आभ्यन्तर–भीतर, ऊँट–उष्ट्र, स्कन्ध–कन्धा, निम्ब–नीम, उपाध्याय–झा, दण्डिन्–दण्डी।

22. ध्वनिपरिवर्तने बलाघातस्य महत्त्वं केन प्रतिपादितम्?

(a) ग्रिमेण (b) ग्रासमानेन
(c) वर्नरेण (d) स्मिथेन

उत्तर–(b)

ध्वनिपरिवर्तन में बलाघात का महत्त्व ग्रासमान महोदय ने प्रतिपादित किया है। संस्कृत और ग्रीक भाषाओं में दो अव्यवहित ध्वनियों में से सामान्यतया प्रथम ऊष्म ध्वनि निकल जाती है। जहाँ पर द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलती है, वहाँ पर प्रथम वर्ण में ऊष्म ध्वनि आ जाती है।
धा > धधामि > दधामि, पहले ध् को द्, ह् ध्वनि हट गई।
भृ > भभार > बभार, पहले भ् को ब्, ह् ध्वनि हट गई।
बुध् > भुट्, बुधौ, भुत्सु
दुह > धुक्,. दुहौ, धुग्भ्याम्, धुक्षु
इसी प्रकार बुध्-भुध्, दभ् > धभ्।

23. का भाषा अयोगात्मिकायाः भाषायाः उदाहरणम् अस्ति?

(a) संस्कृतम् (b) तुर्की
(c) चेरोकी (d) चीनी

उत्तर–(d)

चीनी भाषा अयोगात्मक भाषा का उदाहरण है।
भाषाविज्ञान में विश्वभाषाओं के दो प्रकार से वर्गीकरण किए गए हैं–(1) आकृतिमूलक वर्गीकरण (2) पारिवारिक मूलक वर्गीकरण।
आकृतिमूलक वर्गीकरण–अयोगात्मक (चीनी, तिब्बती)

- योगात्मक (अश्लिष्ट, श्लिष्ट, प्रश्लिष्ट)
- आकृतिमूलक वर्गीकरण में शब्द प्रधान और रचना-तत्त्व प्रमुख रूप से हैं।
- पारिवारिक मूलक वर्गीकरण में अर्थ प्रधान, रचना-तत्त्व + अर्थतत्त्व प्रमुख हैं।

24. का भाषा 'सतम्' वर्गे न विद्यते?

(a) संस्कृतम् (b) फारसी
(c) लैटिनम् (d) ईरानी

उत्तर–(c)

लैटिन भाषा सतम् वर्ग में नहीं विद्यमान है। भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है–केन्टुम् और शतम् वर्ग। इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली महोदय को जाता है।

शतम् (सतम्) वर्ग	**केन्टुम् वर्ग**
संस्कृत-शतम्	लैटिन-केन्टुम्
अवेस्ता-सतम्	ग्रीक-हेक्टोन्
फारसी-सद्	केल्टिक-केट्
हिन्दी-सौ	तोखारी-कन्ध
रूसी-स्तो	गाथिक-हुन्ड
लिथुआनियन-स्जिम्तास	जर्मन-हुन्डर्ट
	फ्रेन्च-सं
	इटालियन-केन्तो

25. संस्कृतस्य 'सोमम्' इति अयं शब्दः ईरानी-भाषायां कथं परिवर्तितः?

(a) जोमम् (b) खोमम्
(c) हओमम् (d) कोमम्

उत्तर–(b)

संस्कृत के सोमम् शब्द का ईरानी भाषा के खोमम् में परिवर्तन होता है। भारोपीय परिवार की दस शाखाएँ हैं–

शतम वर्ग (4)	**केन्टुम् वर्ग (6)**
1. भारत-ईरानी	5. ग्रीक
2. बाल्टो-स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जर्मानिक
4. अल्बानी	8. इटालिक
	9. हिट्टाइट
	10. तोखारी

शतम् और केन्टुम् वर्ग के विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली महोदय को जाता है।
– मूल भारोपीय शब्द–KMTOM (शतम्)।
संस्कृत-शतम्, अवेस्ता-सतम्, फारसी-सद्, हिन्दी-सौ, रूसी-स्तो, लैटिन-केन्टुम्, ग्रीक-हेक्टोन, आयरिश-केट्, तोखारी-कन्ध, गाथिक-हुन्ड, जर्मन-हुण्डर्ट, फ्रेन्च-सं, इटालियन-केन्टो।

26. 'यथार्थानुभवः प्रमा' इत्यत्र 'अनुभव' पद-ग्रहणेन कस्य निरासः?

(a) स्मृतेः (b) प्रत्यक्षस्य
(c) अनुमानस्य (d) शब्दप्रमाणस्य

उत्तर–(a)

'यथार्थानुभवः प्रमा' यहां अनुभव इस पद के द्वारा स्मृति का निराकरण किया गया है।
''यथार्थानुभवः प्रमा। यथार्थ, इत्यर्थानां संशयविपर्ययतर्क ज्ञानानां निरासः। अनुभव इति स्मृतेर्निरासः।
– यथार्थ अनुभव प्रमा है। यहाँ यथार्थ पद से संशय, भ्रान्ति, तर्क इन अयथार्थ अनुभवों का निराकरण किया गया है।

- ज्ञात विषयं ज्ञानं स्मृतिः। (अनुभवोनाम स्मृति व्यतिरिक्त ज्ञानम्। प्रमाकरणं प्रमाणं (प्रमा का करण प्रमाण है)।
  प्रमाण चार प्रकार के हैं–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द।
- साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। इस प्रत्यक्ष का साक्षात्कार षड्विध रूप में होता है–(1) संयोग (2)संयुक्तसमवाय (3) संयुक्त समवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेष्यविशेषणभाव।
- लिङ्ग परामर्शोऽनुमानम् (लिङ्ग परामर्श ही अनुमान है)।
- अतिदेशवाक्यार्थस्मरण सहकृतं गोसादृश्यविशिष्ट पिण्डज्ञानमुपमानम्।
- आप्तवाक्यं शब्दः (आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण कहलाता है)।

27. व्याप्तिबलेनार्थगमकं किमुच्यते?

(a) परामर्शः (b) पक्षः (c) लिङ्गम् (d) साध्यम्

उत्तर–(c)

व्याप्ति के बल से अर्थ का बोध कराने वाला लिङ्ग कहलाता है।
''व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्।''–धूम अग्नि का लिङ्ग है।
तर्कभाषा में प्रमाण के चार भेद बतलाए गए हैं–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।
अनुमान–लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम् (लिङ्ग परामर्श ही अनुमान है)।
व्याप्तिः– साहचर्य नियमो व्याप्तिः।

- हेत्वाभास के पाँच भेद हैं– असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट।
  असिद्ध हेत्वाभास–लिङ्गत्वेनानिश्चितोहेतुरसिद्धः यह असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है–(क) आश्रयासिद्ध (ख) स्वरूपासिद्ध (ग) व्याप्यत्वासिद्ध।
  विरुद्ध–साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः–जैसे–शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्।
  अनैकान्तिक–सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः।
  प्रकरणसम–साध्यविपरीतसाधकं हेत्वन्तरं। जैसे–शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मरहितत्वात्।
  कालात्यापदिष्ट–पक्षे प्रमाणान्तरावधृतसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः कालात्ययापदिष्टः जैसे–अग्निरनुष्णः कृतकत्वाज्जलवत्।

28. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पदार्थाः कतिविधाः?

(a) षोडश (b) नव
(c) चतुर्विंशातिः (d) सप्त

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रहानुसार पदार्थ के सात भेद हैं–

- ''द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावा सप्त पदार्थाः।''–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव आदि सात पदार्थ हैं।
- द्रव्य के नौ भेद हैं–पृथिव्यप्तेजोवाय्याकाशकालदिगात्ममनांसि चैव।
- गुण के चौबीस भेद हैं। ये सभी गुण समवाय सम्बन्ध से द्रव्यों में ही रहते हैं।
- पांच प्रकार के कर्म हैं -उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन।
- परमपरं च द्विविधं सामान्यम् पर-अपर के भेद से सामान्य दो प्रकार का है।
- नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।
- समवायस्त्वेक एव। (समवाय पदार्थ एक प्रकार का होता है।)
- अभाव के चार भेद हैं–प्राग्भाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव तथा अन्योन्याभाव।

29. आकरजं सुवर्णादि तर्कसङ्ग्रहे कस्मिन् परिगणितम्?

(a) पृथिव्याम् (b) तेजसि
(c) गुणेषु (d) व्योम्नि

उत्तर–(b)

तर्कसंग्रहानुसार सुवर्ण इत्यादि खनिज धातुएं आकरज तेज हैं। द्रव्य नौ प्रकार का है–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।

- तत्र गन्धवती पृथिवी। सा द्विधा-नित्या अनित्या च। शीतस्पर्शवत्य आपः। उष्णस्पर्शवत् तेजः। रूपरहितस्पर्शवान् वायुः। शब्दगुणकमाकाशम्। अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः। प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्।
- ज्ञानाधिकरणमात्मा। सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः।

— चौबीस गुण हैं।
चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्– रूप के सात प्रकार हैं–शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश और चितकबरा।

रसनाग्राह्योगुणोरसः–मीठा, नमकीन, खट्टा, कड़वा, कसैला, तीखा छः भेद हैं।
घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः–यह सुरभि, असुरभि के भेद से दो प्रकार का है।
त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुणो स्पर्शः यह शीत, ऊष्ण और अनुष्णातीत के भेद से तीन प्रकार का होता है।
- परिमाण के चार भेद हैं–अणु, महत्, दीर्घ, ह्रस्व।

— श्रोतग्राह्यो गुणः शब्दः–यह आकाश का विशेष गुण है। इसके दो भेद–ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक हैं।

30. अधोलिखितेषु परार्थानुमानस्य पञ्चावयवेषु कस्य परिगणनं नास्ति?

(a) प्रतिज्ञायाः (b) हेतोः
(c) संशयस्य (d) निगमनस्य

उत्तर–(c)

पञ्चावयवों में 'संशय' की परिगणना नहीं की जाती है।
''प्रतिज्ञाहेतुउदाहरणोपनयनिगमनानि पञ्चावयवाः।'' प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन आदि ये पाँच अवयव हैं।)
– पर्वत वह्निमान है–यह प्रतिज्ञा है।
– धूमवाला होने के कारण यह हेतु है।
– जो-जो धूमवाला है, वह सभी वह्निवाला भी है। जैसे–रसोईघर– यह उदाहरण है।
– यह पर्वत वह्निव्याप्य धूम वाला है–यह उपनय है।
– अतः वह्निव्याप्य धूमवाला होने से यह वह्निवाला भी है।–यह निगमन है।
- लिङ्ग तीन प्रकार का होता है अन्वयव्यतिरेकि, केवलान्वयि, केवलव्यतिरेकि।
- पाँच प्रकार के हेत्वाभास हैं-सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध, बाधित।

31. मनोद्रव्यं कीदृशं भवति तर्कसङ्ग्रहरीत्या?

(a) परमाणुरूपम् अनित्यञ्च
(b) विभु अनित्यञ्च
(c) विभु नित्यञ्च
(d) परमाणुरूपं नित्यञ्च

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रहानुसार मन नामक द्रव्य परमाणुरूप तथा नित्य है।
''सुखदुःखद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः। तच्च प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च। अर्थात् सुख, दुःख इत्यादि आन्तरिक गुणों को उपलब्धि के साधन-भूत अतःकरण को 'मन' कहते हैं। प्रत्येक आत्मा में नियत होने से अनन्त, परमाणुरूप अर्थात् सूक्ष्म तथा नित्य है।
- ज्ञानाधिकरणमात्मा। सः द्विविधः, जीवात्मा परमात्मा चेति।
- प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्। सा चैका नित्या विभू च।
- अतीतादिव्यवहार हेतुः कालः। स चैको विभुर्नित्यश्च
- शब्दगुणकमाकाशम्, तच्चैकं विभु नित्यं च।
- रूपरहितस्पर्शवान् वायुः। उष्णस्पर्शवत् तेजः। शीतस्पर्शवत्य आपः।
- अभावश्चतुर्विधः–प्राग्भावः, प्रध्वंसाभावः, अत्यन्ताभावः, अन्योन्याभावश्चेति।

32. कार्यत्वलक्षणं किमात्मकमस्ति?

(a) अनन्यथासिद्धनियतपश्चाद्भावित्वम्
(b) अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वम्
(c) अन्यथासिद्धपूर्वभावित्वम्
(d) अन्यथासिद्धपश्चाद्भावित्वम्

उत्तर–(a)

अनन्यथासिद्ध न होकर नियतरूप से कारण के पश्चात् होना ही कार्य का स्वरूप कार्यत्व है।
''अनन्यथासिद्ध नियत्पश्चाद्भावित्वं कार्यत्वम्।''
अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वं कारणत्वम्।''
— यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्।
कारण के तीन भेद हैं–समवायी, असमवायी, निमित्त।
समवायिकारण/असमवायिक कारण– ''यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्।''–तन्तु पट का समवायीकारण है।
''यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिका-रणम्''– तन्तु संयोग पट का असमवायी कारण है।
निमित्तकारण ''यन्न समवायिकारणम् नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्।'' जैसे–वेमा आदि पट का निमित्त कारण है।

33. तर्कसङ्ग्रहे संस्कारः कतिविधः प्रोक्तः?

(a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) त्रिविधः

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रहानुसार संस्कार के तीन भेद हैं–''संस्कारस्त्रिविधः, वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति।''
वेग, भावना तथा स्थितिस्थापक के भेद से संस्कार तीन प्रकार का होता है। वेग नामक संस्कार पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा मन में रहता है। जो अनुभव से उत्पन्न होकर स्मृति को उत्पन्न करता है, वह 'भावना' नामक संस्कार है। यह संस्कार केवल आत्मा में रहता है। अन्य अवस्था को प्राप्त पदार्थ को पहले की स्थिति प्राप्त कराने वाला संस्कार 'स्थितिस्थापक' नामक संस्कार कहलाता है।
- विहितकर्मजन्यो धर्मः। निषिद्ध कर्मजन्यस्त्वधर्मः।–वेद विहित कर्म से उत्पन्न गुण-विशेष को धर्म कहते हैं। वेद निषिद्ध कर्म से उत्पन्न गुण-विशेष को अधर्म कहते हैं।

34. दुःखत्रयाभिघाते सांख्यसिद्धान्तः कस्मात् श्रेयान् हेतुः?

(a) आर्षसिद्धान्तात् (b) नित्यवात्

(c) व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात् (d) ब्रह्मज्ञानपरकात्

उत्तर–(c)

दुःखत्रयाभिघाते सांख्यसिद्धान्तः व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात् श्रेयान् हेतुः।
''मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदद्याः प्रकृतिविकृतयःसप्त।
षोडकश्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिर्पुरुषः।।''
– सांख्य में पच्चीस तत्त्व हैं।
सत्कार्यवाद–''असद्करणादुपादानग्रहणाद् सर्वसम्भवाभावात्।शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।'

- प्रकृति त्रिगुणात्मिका, अविवेकी, विषय, सामान्य, अचेतन तथा प्रसवधर्मीत्व है।

''त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।।
– पुरुष–संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।
— सांख्याभिमत प्रमाण–''दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणासिद्धत्वात्।

35. व्यक्तं कीदृशं न भवति?

(a) परतन्त्रम् (b) अनाश्रितम्

(c) सावयवम् (d) सक्रियम्

उत्तर–(b)

व्यक्त अनाश्रित नहीं होता अपितु आश्रित होता है।
''हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।। अर्थात्
व्यक्त कारणवान्, विनाशी, अव्यापक, क्रियावान, अनेक,आश्रित, लिङ्ग, सावयव तथा परतन्त्र है। अव्यक्त (मूलप्रकृति) इसके विपरीत है।

- सत्त्व, रजस् और तमस् गुण क्रमशः प्रीत्यात्मक (सुखरूप), अप्रीत्यात्मक (दुखरूप), विषादात्मक (मोहरूप) होते हैं। सत्वगुण का प्रयोजन प्रकाश करना, रजोगुण का प्रयोजन प्रवृत्ति करना है तथा तमोगुण का प्रयोजन नियमन करना होता। इसकी वृत्तियां एक-दूसरे को अभिभूत करना, आश्रय और सहकारी बनना, एक-दूसरे के साथ सदृश परिणाम को प्राप्त करना तथा एक-दूसरे के साथ जोड़ी बनाना और बनना है।
- सत्त्व और लघु होने से प्रकाशक है। रजोगुण चल तथा उत्तोजक है और तमस् गुण भारी और नियमन करने वाला माना गया है।

36. भिन्नधर्माणां गुणानां वृत्तिः कीदृशी भवति?

(a) जलवत् (b) वायुवत्

(c) अग्निवत् (d) प्रदीपवत्

उत्तर–(d)

सत्त्व, रजस्, तमस् भिन्न धर्मों वाला होकर ये तीनों गुण प्रदीप (दीपक) के समान हैं।
''सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।।''
सत्त्व गुण लघु तथा प्रकाशक, रजोगुण चल और उत्तेजित तथा तमोगुण भारी और नियमन करने वाला है। परमपुरुषार्थ की सिद्धि के लिए तीनों दीपक के समान व्यवहार करते हैं।
पुरुष का स्वरूप–''सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।''
– तीनों गुणों के लक्षण–''प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाश-प्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योऽन्याभिभवाऽऽयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।।''

- सूक्ष्म होने के कारण प्रकृति की अनुपलब्धि रहती है।
- मूल प्रकृति किसी का कार्य नहीं है। पुरुष न प्रकृति है और न ही विकृति है।

37. कस्माद् हेतोः पुरुषस्य सिद्धिर्भवति?

(a) सक्रियत्वात् (b) गुणवत्वात्

(c) भोक्तृभावात् (d) प्रवृत्तिभावात्

उत्तर–(c)

भोक्तृभावात् हेतु से पुरुष की सिद्धि होती है।
पुरुष की सिद्धि हेतु कारिका–
''सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।''
— सांख्य का पुरुष त्रिगुणरहित होता है तथा सभी शरीरों का अधिष्ठाता होता है।
— पुरुष के संयोग से जड़ प्रकृति चेतन के समान प्रतीत होती है। पुरुष और प्रकृति के संयोग का प्रमुख प्रयोजन–(1) प्रकृति का दर्शन और (2) पुरुष को कैवल्य की प्राप्ति है।
— ''अध्यवसायो बुद्धिः'' (निश्चय करने वाला तत्त्व बुद्धि है।)
— सांख्य का सूक्ष्म शरीर 18 तत्त्वों से निर्मित होता है। इसको लिङ्ग शरीर भी कहते हैं।

38. 'समष्टिव्यष्टि-अभिप्रायेण एकमनेकमिति व्यवहार' इदं लक्षणं कस्य घटते?

(a) भ्रमस्य (b) अध्यारोपस्य

(c) तत्त्वज्ञानस्य (d) अज्ञानस्य

उत्तर–(d)

अज्ञान समष्टि और व्यष्टि की दृष्टि से क्रमशः एक और अनेक कहे जाते हैं।
''अज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवह्रियते।''
अध्यारोपः–असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।
वस्तु–वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म।
अवस्तु–अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।
अज्ञान–अज्ञानं तु सद्सदभ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति। अज्ञान के दो भेद–समष्टि और व्यष्टि हैं।
— समष्टि अज्ञान एक है और व्यष्टि के अभिप्राय से अनेक हैं। वेदान्तदर्शन में समष्टि का अर्थ माया तथा व्यष्टि के लिए अविद्या का प्रयोग किया जाता है।
— समष्टिरूप अज्ञान से उपहित चैतन्य की संज्ञा ईश्वर है तथा व्यष्टिरूप अज्ञानों से उपहित चैतन्य की जीव अथवा प्राज्ञ संज्ञा है।

39. विक्षेपः कस्य शक्तिरस्ति?

(a) अज्ञानस्य (b) ईश्वरस्य
(c) प्राज्ञस्य (d) उपाधेः

उत्तर–(a)

अज्ञान की दो शक्तियाँ हैं–आवरण और विक्षेप।
''अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।
प्रमाता के सच्चिदानन्दस्वरूप को जो शक्ति ढक लेती है, वह आवरण शक्ति है।
– सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत् को उत्पन्न करने वाली विक्षेप शक्ति है। यह तमोगुण प्रधान वाली होती है।
— आवरण और विक्षेप सम्पूर्ण जगत् का उपादान और निमित्त है। मकड़ी अपने शरीर के चैतन्य की प्रधानता के कारण निमित्त

- कारण और शरीर से निकलने वाले लारवे की प्रधानता की दृष्टि से उपादानकारण भी है।
- सूक्ष्म शरीर को लिङ्ग शरीर भी कहते हैं। इसमें सत्रह अवयव हैं।
- बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तः करणवृत्तिः।
- मनोनाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तः करणवृत्तिः।
- स्थूल शरीर के चार भेद हैं–जरायुज, अण्डज, उद्भिज्, स्वेदज।
- अहं ब्रह्मास्मि' अनुभववाक्य है। तत्त्वमसि 'उपदेशवाक्य' है।

40. 'एको रसःकरुण एव निमित्तभेदात् ....' उत्तररामचरिते कस्येयमुक्तिः?

(a) सीतायाः (b) तमसायाः
(c) वासन्त्याः (d) मुरलायाः

उत्तर–(b)

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः–उत्तररामचरित में यह उक्ति तमसा कहती है।
उत्तररामचरित भवभूति कृत नाटक हैं जो करुण रस में है। इसमें 7 अङ्क हैं।
तृतीय अङ्क के अन्त में करुण रस का उद्घोष तमसा करती है–एको रसः करुण एव...।
– तृतीयाङ्क का आरम्भ 'विष्कम्भक' से होता है।
उत्तररामचरितम् की प्रमुख सूक्तियां प्रमुख सूक्तियाँ–

1. लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
   ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।
2. पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।
3. अपिग्रावाऽपि रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।
4. सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।
5. सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
6. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
7. करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।
8. इयं गेहे लक्ष्मीरियमृतवर्तिर्नयनयोः।

41. मृच्छकटिकस्य तृतीयाङ्कस्य नाम किम्?

(a) अलङ्कार-न्यासः (b) सन्धिच्छेदः
(c) प्रवहण-विपर्ययः (d) व्यवहारः

उत्तर–(b)

मृच्छकटिक के तृतीयाङ्क का नाम सन्धिच्छेद है। मृच्छकटिक प्रकरण है। इसमें 10 अङ्क हैं। इसके रचयिता शूद्रक हैं। **दश अङ्क क्रमशः–** (१) अलङ्कारन्यास, (2) द्यूतकर-संवाहक (3) सन्धिच्छेद (4) मदनिका-शर्विलक (5) दुर्दिन (6) प्रवहणविपर्यय (7) आर्यकापहरण (8) वसन्तसेना-मोटन (9) व्यवहार (10) संहार।
दुर्दिन सर्वश्रेष्ठ अंङ्क है। इसमें वर्षा ऋतु का वर्णन है।
मृत्त्कटिकम् की प्रमुख सूक्तियां–(1) शून्यमपुत्रस्य गृहं, चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।
(2) मूर्खस्य दिशः शून्यः सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।।
(3) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्रयमनन्तकं दुःखम्।
(4) भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति च।
(5) अहो निर्धनता सर्वपदामास्पदम्।
(6) मन्ये निर्धनता प्रकाममपरं षष्ठं महापातकम्।
(7) बहुदोषा हि शर्वरी।
(8) शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापा दरिद्रता।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलन तालिकां चिनुतः

(a) गतं तिरश्चीनमनूरुसारथे	**(i) उत्तररामचरितम्**
(b) न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः	**(ii) नैषधीयचरितम्**
(c) निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां	**(iii) शिशुपालवधम्**
(d) अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं	**(iv) किरातार्जुनीयम्**

(a) (iii) (iv) (i) (ii) (b) (ii) (iii) (iv) (i)
(c) (iii) (iv) (ii) (i) (d) (i) (ii) (iii) (iv)

उत्तर–(c)

गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेप्रसिद्ध-मूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः यह शिशुपालवध की सूक्ति है। शिशुपालवध माघकृत महाकाव्य है।
शिशुपालवधम् की प्रमुख सूक्तियां– (1)''गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः
(2) सदाभिमानैक धना हि मानिनः।
(3) सतीवयोषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।
— न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। यह पंक्ति भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की है।
किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की प्रमुख सूक्तियां–
(1) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(2) स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्।
(3) अहो दुरन्ताबलवद्विरोधिता।
(4) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।

● अद्वैतं सुखदुःखयोनुगतं, सर्वास्ववस्थासु यद्। यह पंक्ति भवभूति कृत उत्तररामचरितम की है। उत्तररामचरितम करुण रस का नाटक है। इसमें सात अङ्क हैं।

उत्तररामचरितम् नाटक की प्रमुख सूक्तियां–

(1) ''अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।

(2) लौकिकानां साधूनामर्थं वागनुवर्तते। (3) वितरति गुरु प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे।

● निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां–यह पंक्ति श्रीहर्ष कृत नैषधीयचरितम् की है।

43. ''दोषास्तस्यापकर्षकाः'' इत्यत्र 'तस्य' इत्यनेन सह साहित्यदर्पणमते कस्य बोधः?

(a) रसस्य (b) अलङ्कारस्य

(c) गुणस्य (d) सङ्केतस्य

उत्तर–(a)

''दोषास्तस्यापकर्षकाः। यहां 'साहित्यदर्पणकार' ने 'तस्य' से तात्पर्य रस से किया है।

दोष रस के अपकर्षक हैं। आचार्य विश्वनाथ दोषों को काव्य का अपकर्षक मानते हैं।

● काव्यलक्षण–वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।

● उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालङ्काररीतयः। (गुण, अलंकार तथा रीति काव्य के उत्कर्ष के हेतु कहे गए हैं। गुण शौर्यादि (आत्मा) की भांति, अलंकार भुजबन्द एवं कुण्डल की भांति तथा रीतियां शरीर के विशिष्ट अवयव-संस्थान की भांति होती हैं।

वाक्यस्वरूप–''वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्ति युक्तः पदोच्चयः।

योग्यता–पदार्थानां परस्पर सम्बन्धे बाधाभावः।

आकांक्षा–प्रतीतिपर्यवसान विरहः।

आसत्ति–बुद्धिः विच्छेदः।

(1) तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा। संकेतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च।

(2) मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते। रूढे; प्रयोजनद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।

(3) विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः। सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।।

44. 'यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति ....' इति कः?

(a) विप्रलम्भः (b) संभोगः

(c) करुणः (d) वीरः

उत्तर–(a)

''यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ।'' अर्थात् जिस शृङ्गार में रति उत्कृष्ट होकर भी अभीष्ट नायक और नायिका को प्राप्त नहीं करती है, उसे विप्रलम्भ शृङ्गार कहते हैं।

साहित्यदर्पणकार ने शान्त को भी रस माना है।

शृङ्गाररस–''शृङ्गं हि मन्मथोद्भेदस्तदागमनहेतुकः।

उत्तम प्रकृतिप्रायो रसः शृङ्गार इष्यते।।''

● शृङ्गार के विप्रलम्भ और सम्भोग दो भेद हैं।

● विप्रलम्भ शृङ्गार के चार भेद हैं–पूर्वराग, मान, प्रवास और करुण।

45. शान्तरसस्य वर्णः कः?

(a) नीलवर्णः (b) पीतवर्णः

(c) कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः (d) रक्तवर्णः

उत्तर–(c)

शान्तरस का वर्ण कुन्देन्दुसुन्दरच्छाया है।

शान्तरस का स्थायी भाव निर्वेद है।

शान्तोऽपि नवमो रसः।

रस के चार अङ्ग हैं–(1) स्थायीभाव (2) विभाव (3) अनुभाव (4) संचारी भाव।

प्रमुख रस और उसके स्थायी भाव–

शृङ्गार रस–रति (प्रेम)	रौद्र–क्रोध	वीभत्स–जुगुप्सा
हास्य–हास	वीर–उत्साह	अद्भुद्–विस्मय
करुण–शोक	भयानक–भय	शान्त–निर्वेद

सात्विक अनुभाव के 8 भेद हैं। संचारी भाव के 33 भेद हैं। स्थायी भाव के नौ भेद हैं।

46. अभिज्ञानशाकुन्तले वायोः विभिन्नस्तरेषु परिभ्रमणं कस्मिन्नङ्के वर्त्तते?

(a) चतुर्थे (b) पञ्चमे

(c) षष्ठे (d) सप्तमे

उत्तर–(b)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वायु पञ्चम् अङ्क में विभिन्न स्तरों में बहती है।

''भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति।

सदैववाहितभूमिभारः षष्ठांशवृत्तेरपिः धर्मः एषः।''

● अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक कालिदास कृत सात अङ्कों में विभक्त है।

● अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक 'माढव्य'' दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र है।

● अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शाप का प्रभाव पञ्चम अङ्क में दिखता है। शाप की कल्पना का कारण प्रेम के आदर्श स्वरूप की स्थापना है।

● राजा दुष्यन्त के पश्चाताप का वर्णन षष्ठ अङ्क में है। पुनर्मिलन सातवें अङ्क में है।

● अभिज्ञान का भरत वाक्य–''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः...'' है।

● चतुर्थाङ्क का आरम्भ विष्कम्भक से होता हैं

● महर्षि कण्व का आश्रम मालिनी नदी, विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी और मारीचि ऋषि का आश्रम हेमकूट पर्वत पर था।

47. **मृच्छकटिकम् कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?**

(a) प्रकरणस्य (b) नाटकस्य
(c) प्रहसनस्य (d) भाणस्य

उत्तर–(a)

मृच्छकटिकम् 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें चारुदत्त — वसन्तसेना के प्रणय का वर्णन है। चारुदत्त जन्मना द्विज है। वसन्तसेना उज्जयिनी की गणिका है। विदूषक का नाम मैत्रेय है। दस अङ्क क्रमशः–(1)अलंकारन्यास (2) द्यूतकर-संवाहक (3) सन्धिच्छेद (4) मदनिका-शर्विलक (5) दुर्दिन (6) प्रवहण-विपर्यय (7) आर्यकापहरण (8) वसन्तसेना-मोटन (9) व्यवहार (10) संहार।

मृच्छकटिकम् की प्रमुख सूक्तियां–

– बहुदोषा हि शर्वरी
– शङ्कनीया हि लोकेस्मिन् निष्प्रपाता दरिद्रता।
– मन्ये निर्धनता प्रकाममपरं षष्ठं महापातकम्।
– अहो निर्धनता सर्वपदामास्पदम्।
– अल्पक्लेशं मरणं दारिद्रयमनन्तकं दुःखम्।
– सर्वं शून्यं दरिद्रस्य।
– भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति च।

48. **अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकस्य नाम भवति**

(a) मधुसेनः (b) माढव्यः
(c) गौतमः (d) शारद्वतः

उत्तर–(b)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक का नाम माढव्य है। ये दुष्यन्त के विनोदप्रिय मित्र थे।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात अङ्क हैं। चतुर्थ अङ्क के चार श्लोक प्रसिद्ध हैं।
- मङ्गलाचरण में स्रग्धरा छन्द है जिसमें अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की गई है।

– उपमा कालिदासस्य–उद्भट
– पुरा कवीनां गणना प्रसङ्गे–मल्लिनाथ
– मेघे माघे गतं वयः–मल्लिनाथ

अभिज्ञान शाकुन्तलम् की प्रमुख सूक्तियां–

(1) न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।
(2) कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।
(3) रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।
(4) को नामोष्णोदकेन नवमालिका सिञ्चति।
(5) को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते।
(6) गुर्वपिविरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।
(7) अतिस्नेहः पापशङ्की भवेत्।
(8) अर्थो हि कन्या परकीय एव।

49. **स्वप्नवासवदत्ते वर्णितपात्रेषु उदयनस्य सेनापतिः कः आसीत्?**

(a) आरुणिः (b) रुमण्वान्
(c) यौगन्धरायणः (d) प्रद्योतः

उत्तर–(b)

स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में उदयन के सेनापति का नाम रुमण्वान् है।
– स्वप्नवासवदत्तम् में छः अङ्क हैं तथा इसके लेखक भास हैं।
इसमें विदूषक का नाम वसन्तक था।
— उदयन धीरललित कोटि का नायक है।
उदयन — वासवदत्ता की प्रणय कथा इसमें वर्णित है।

स्वपनवासवदत्तम् की प्रमुख सूक्तियां–

(1) ''अनिर्ज्ञातानि देवतान्यवधून्यते।''
(2) ''कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना, चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।''
(3) सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।
(4) तपोवनानि नामातिथिजनस्य स्वगेहम्।
(5) प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।
(6) अनतिक्रमणीयो हि विधिः।

50. **योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः भवति**

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) वाक्यम् (d) महावाक्यम्

उत्तर–(c)

योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति से युक्त पदों का समूह वाक्य कहलाता है।

— वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।

- **योग्यता** पदार्थानां परस्परसम्बन्धे बाधाभावः। पदोच्चयस्यैतदभावेऽपि वाक्यत्वे ''वह्निनासिञ्चति' इत्याद्यपि वाक्यं स्यात्।
  वह अग्नि से खेत सींचता है। इस वाक्य में अग्नि से सींचने की क्रिया सम्भव नहीं है। अग्नि का धर्म जलाना होता है।
- **आकांक्षा-** समभिव्याहृतपदस्मारित पदार्थ जिज्ञासा आकांक्षा। जैसे–गौः, अश्वः, हस्ती। इसमें प्रत्येक शब्द के उच्चारण के बाद कोई जिज्ञासा शेष नहीं बचती और उच्चारणमात्र से परितोष हो जाता है। अर्थात् आगे और कुछ जानने की आकांक्षा नहीं रहती। इसलिए इसको हम वाक्य नहीं कह सकते हैं।
- आसत्ति अर्थात् बुद्धि का अविच्छेद। जिस पदबुद्धि के अनन्तर, बिना किसी व्यवधान के दूसरी पदबुद्धि उत्पन्न हो, उसी के साथ दूसरे पद की आसत्ति मानी जाती है। जैसे–रामः गच्छति में राम विषयक बुद्धि तथा गच्छति विषयक बुद्धि में कोई व्यवधान नहीं है। अतः यहां आसत्ति है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Jan. 2016

संस्कृत

पेपर-3

व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इत्युद्धरणं कस्मिन् स्थले वर्तते?

(a) ऋग्वेदस्य हिरण्यगर्भसूक्ते (10.121)

(b) ऐतरेयब्राह्मणस्य शुनः शेप-इति-आख्याने

(c) ऋग्वेदस्य वाक्सूक्ते (10.125)

(d) अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते (12.1)

उत्तर-(d)

अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते इयं उद्धरयं वर्तते।

''माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'' यह उद्धरण अथर्ववेद के पृथिवीसूक्त में है। पृथिवीसूक्त को 'भूमिसूक्त' भी कहा जाता है, इस सूक्ति के 63 मंत्रों में पृथिवी को माता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पृथ्वी को रत्नों की खान, पालक, रक्षक और समग्र ऐश्वर्य को प्रदान करने वाली बताया गया है। पृथ्वी के आधारभूत तत्त्व- सत्य, ऋत, दीक्षा (अनुशासन) तप, (तपोमय जीवन), ब्रह्म एवं यज्ञ आदि है। इस सूक्त में भाषाभेद, धर्मभेद, विचारभेद होने पर भी मानवमात्र को एक परिवार के तुल्य पृथ्वी पालती है।

पृथिवीसूक्त के अन्य मन्त्र-सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो।

ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।।

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं

नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।।

ब्रह्मचर्य सूक्त, काल सूक्त, विवाह सूक्त, व्रात्य सूक्त, मधुविद्या सूक्त और ब्रह्मविद्या सूक्त आदि सभी अथर्ववेद के सूक्त हैं।

2. अथर्ववेदीय-पृथिवीसूक्तस्य (12.1) देवता वर्तते

(a) अपः (b) सरस्वतीः

(c) भूमिः (d) ब्रह्माः

उत्तर-(c)

अथर्ववेदीय पृथिवीसूक्त के देवता भूमि हैं।

वेद	सूक्त	ऋषि	देवता	मन्त्रसंख्या
ऋग्वेद	अग्निसूक्त	मधुच्छन्दा	अग्नि	09
ऋग्वेद	उषस् सूक्त	विश्वामित्र	उषस्	07
ऋग्वेद	इन्द्रसूक्त	गृत्समद	इन्द्र	15
यजुर्वेद	शिवसंकल्पसूक्त	याज्ञवल्क्य	मनस्	06
यजुर्वेद	प्रजापतिसूक्त	प्रजापति	परमेश्वर	05
अथर्ववेद	राष्ट्रसूक्त	वशिष्ठ	अभीवर्तमणि	06
अथर्ववेद	कालसूक्त	भृगु	काल	10
अथर्ववेद	पृथिवीसूक्त	अथर्वा	भूमि	63
ऋग्वेद	पुरुषसूक्त	नारायण	पुरुष	90

3. 'अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।' इत्युद्धरणमस्ति-

(a) ऋग्वेदे वाक्सूक्ते (10.125)

(b) अथर्ववेदे पृथिवीसूक्ते (12.1)

(c) शुनःशेप-आख्याने

(d) ऋग्वेदे अग्निसूक्ते (1.1)

उत्तर-(a)

- अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्' यह उदाहरण ऋग्वेद के वाक्सूक्त का है।
- वाक्सूक्त के 8 मंत्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, शब्दतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है।
- वाक्तत्त्व अग्नि, इन्द्र, सोम, वरुण, मित्र आदि देवताओं के ऊर्जा का स्रोत है।
- वाक्तत्त्व राष्ट्रनिर्मात्री शक्ति है तथा प्रतिभा है। यही सृष्टि की निर्माता है।
- वाक्तत्त्व वायु के तुल्य सर्वत्र गतिशील है।

ऋग्वेद के अन्य महत्वपूर्ण सूक्त

पुरुषसूक्त—इसमें विश्व की सृष्टि का वर्णन है चारों वेदों की उत्पत्ति भी इसी में है

''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद् वैश्यः, पद्भ्यां शूद्रो अजायत्।।

नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, अस्य वामीय सूक्त, श्रद्धा सूक्त, वाक् सूक्त, संज्ञान सूक्त, दानस्तुति सूक्त, अक्ष सूक्त, विवाह सूक्त आदि- सभी ऋग्वेद के सूक्त हैं।

4. 'वाङ्मनस्' इत्याख्यानमुपलभ्यते

(a) कौषीतकिब्राह्मणग्रन्थे (b) शतपथब्राह्मणग्रन्थे

(c) ऐतरेय-आरण्यकग्रन्थे (d) ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थे

उत्तर-(b)

वाङ्मनस् आख्यान शतपथ ब्राह्मण का आख्यान है।

इस आख्यान में छः मन्त्र हैं। इसमें मन और वाणी के संवाद को अति मनोहर व ललित शैली में प्रस्तुत किया गया है।

मन और वाणी ने अपने-अपने महत्व को प्रदर्शित कर विवाद को जन्म दिया।

- शुनःशेप आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण से सम्बन्धित है। इस आख्यान को हरिश्चन्द्र-उपाख्यान भी कहते हैं। इसका चरैवेति-चरैवेति (निरन्तर चलते रहो) गान विश्व-विश्रुत है।
- शतपथ ब्राह्मण के प्रमुख आख्यान- मनु और श्रद्धा, जलप्लावन की कथा, इन्द्र-वृत्र-युद्ध तथा इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व का आख्यान, पुरुरवा-उर्वशी संवाद, नमुचि और वृत्र का आख्यान।

5. ऋग्वेदस्य आङ्ग्लभाषायां प्रथमोऽनुवादः केन कृतः?

(a) कोलब्रकेण (b) विल्सनेन

(c) वेबरेण (d) मैक्समूलरेण

उत्तर-(b)

'विल्सन' ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का सर्वप्रथम अंग्रेजी में अनुवाद 1850 ई0 में प्रकाशित किया। यह अनुवाद सायण भाष्य पर आधारित है।

- ''ग्रासमान'' ने दो भागों में सम्पूर्ण ऋग्वेद का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद किया है जो 1876-77 ई. में प्रकाशित हुआ। ग्रासमान का भाषा-विज्ञान पर ग्रासमान-नियम प्रसिद्ध है।
- प्रो0 ग्रिफिथ ने सायण भाष्य का समुचित उपयोग करते हुए सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया है।
- प्रो0 ओल्डेनबर्ग ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का महाभाष्य जर्मन भाषा में दो भागों में प्रकाशित किया।
- डा0 कीथ ने ऐतरेय और कौषीतकि दोनों ब्राह्मणों का अंग्रेजी में अनुवाद 1930 में प्रकाशित किया।
- वेबर ने शतपथ ब्राह्मण का 1855 ई. में सर्वप्रथम आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित किया।
- रोठ और ह्विटनी ने अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम सम्पादन किया।

6. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीणं क्रमः चीयताम्।

(a) याज्ञवल्क्य-गार्गी संवादः **(i) ईशोपनिषद्**

(b) मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। **(ii) कठोपनिषद्**

(c) हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापि हितं मुखम् **(iii) बृहदारण्यकोपनिषद्**

(d) न वित्तेन तर्पणीयोमनुष्यः **(iv) तैत्तिरीयोपनिषद्**

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(a)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

उत्तर-(d)

याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् का संवाद है। बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित है।

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव यह तैत्तिरीयोपनिषद् का दीक्षान्त प्रवचन है।

तैत्तिरीयोपनिषद् में तीन वल्लियाँ है–शिक्षा वल्ली, ब्रह्मानन्द वल्ली, भृगु-वल्ली,

'न वित्तेन तर्पणीयोमनुष्यः', यह कठोपनिषद् का मन्त्र है।

कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है। इसमें नचिकेता और यम का संवाद है।

- ''हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापि हितं मुखम्''- यह ईशोपनिषद् का मन्त्र है। यह उपनिषद् समस्त उपनिषदों का आधार है। यह शुक्ल यजुर्वेद का 40वां अध्याय है। इसमें 18 मंत्र है।

''ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधःकस्यस्विद् धनम्।।

7. 'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।' इत्युद्धरणं कुत्र वर्तते?

(a) कठोपनिषदि (b) बृहदारण्यकोपनिषदि

(c) इशोपनिषदि (d) केनोपनिषदि

उत्तर-(b)

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्माऽमृतं गमय। यह उद्धरण बृहदारण्यकोपनिषद् का है। इस मन्त्र का तात्पर्य है कि हे परमात्मन्ः ! हमें असत्य से सत्य की ओर लो अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से बचाकर अमरत्व की ओर ले चलो। बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। इसी में याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को उपदेश दिया कि आत्मा का ही दर्शन, श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना चाहिए। आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन और ध्यान से संसार की सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है

8. **A ईशोपनिषद् शुक्लयजुर्वेदीया अस्ति।**
B 'अणोरणीयान्महतो महीयान्'
अस्यामेव उपनिषदि वर्तते।
अनयोः कथनयोर्विषये उचितं युग्मं चिनुत।
(a) A-सत्यम्/B-असत्यम् (b) AB उभे सत्ये स्तः
(c) A-असत्यम्/B-सत्यम् (d) AB उभे असत्ये स्तः

उत्तर-(b)

ईशोपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का 40वां अध्याय है। यह समस्त उपनिषदों का आधार है, इसमें 18 मन्त्र हैं।
ईशावास्योपनिषद् के प्रमुख मन्त्र
- ''ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
  तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।''
- ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''
- ''अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते''
- ''अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वायुवानि विद्वान्''
- ''अणोरणीयान्महतो महीयान्, आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः।''

यह मन्त्र श्वेताश्वरोपनिषद् का हैं। इस उपनिषद् में सांख्य, योग और वेदान्त के सिद्धान्तों का प्रतिपादन है।

9. **अधोऽङ्कितेषु एकमसत्यमस्ति**
(a) ''अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये के चात्महनो जनाः'' इत्युद्धरणम् ईशोपनिषदि वर्तते।
(b) ईशोपनिषदि दशमन्त्राः सन्ति।
(c) नचिकेतसः कथा कठोपनिषदि वर्तते।
(d) नचिकेताः त्रीन् वरान् अयाचत।

उत्तर-(b)

ईशावास्योपनिषद् में 10 मन्त्र नहीं है अपितु उसमें 18 मन्त्र है, ईशोपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयि संहिता का चालीसवां अध्याय है। यह उपनिषद् एकमात्र वैदिक संहिता का भाग है, बाकी सभी ब्राह्मण ग्रन्थों के भाग हैं।
इस उपनिषद् का नाम प्रथम मन्त्र के आधार पर ही रखा गया है,
''ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्''
सामवेद के जैमिनीय-ब्राह्मण का नवम् अध्याय केनोपनिषद् है। इसका नाम भी 'केनेषितं पतति प्रेषितं मनः' के आधार पर है।
कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का अंश है, इसमें दो अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियां है।
प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद की पैप्पलाद-संहिता के ब्राह्मण-ग्रन्थ का भाग है।
मुण्डकोपनिषद् अथर्ववेद की शौनक शाखा के ब्राह्मण का अंश है।
आकार की दृष्टि से सबसे छोटा उपनिषद् माण्डूक्योपनिषद् है।

10. **''नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुनाश्रुतेन'' इति कथनमस्ति**
(a) ईशोपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

उत्तर-(c)

''नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुनाश्रुतेन'' यह कथन कठोपनिषद् का है। इसमें आत्मा के विषय में बताते हुए कहा गया है कि–
यह आत्मा न तो प्रवचन से, न मेधा से या धारण शक्ति से और न बहुत श्रवण से ही प्राप्त होने योग्य है।
कठोपनिषद् के अन्य मन्त्र–अजोनित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
- आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
- न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।
- मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति।
- स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति।
- सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
- योगो हि प्रभवाप्ययौ।

11. **निम्नलिखितेषु को ग्रन्थः शिक्षावेदाङ्गस्य विद्यते?**
(a) छान्दोग्योपनिषद् (b) ऋक्प्रातिशाख्यम्
(c) पारस्करगृह्यसूत्रम् (d) कात्यायनश्रौतसूत्रम्

उत्तर-(b)

ऋक्प्रातिशाख्य ग्रन्थ शिक्षा वेदाङ्ग के अन्तर्गत परिगणित होता है। वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थो को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हें 'वेदाङ्ग' कहते हैं।
वेदाङ्गों की संख्या 6 है–शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प।
शिक्षा वेदाङ्ग–वर्णोच्चारण की शिक्षा देना।
''स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा।
उपलब्ध शिक्षा ग्रन्थ 35 हैं। कुछ उल्लेखनीय शिक्षा ग्रन्थ अग्रलिखित हैं–
(1) पाणिनीय शिक्षा–इसमें वर्णों की संख्या, उच्चारण प्रक्रिया का ध्वनि शास्त्रीय वर्णन, स्थान और प्रयत्न का विवरण आदि वर्णित है। पाठक के छः दोष भी इसी में है–
गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।
(2) भरद्वाज शिक्षा
(3) प्रातिशाख्य-प्रदीप शिक्षा
(4) नारदीय शिक्षा
(5) याज्ञवल्क्य शिक्षा

12. निम्नलिखितेषु निरुक्तस्य विषयः कः नास्ति?

(a) वर्णविकारः (b) वर्णागमः

(c) वर्णोच्चारणम् (d) निर्वचनम्

उत्तर-(c)

वर्णोच्चारण निरुक्त का विषय नहीं है, अपितु शिक्षा का विषय है।

- **निरुक्त के प्रतिपाद्य विषय—**

  वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च, द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।

  धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्।।

- शिक्षा का प्रतिपाद्य विषय—''स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा।''
- यास्ककृत निरुक्त में 12 अध्याय हैं । अन्त में परिशिष्ट के रूप में दो अध्याय हैं इस प्रकार यह 14 अध्यायों में विभक्त है। यह निरुक्त वस्तुतः निघण्टु ग्रन्थ की व्याख्या या भाष्य है। निघण्टु वैदिक शब्द - कोश है, इसमें 5 अध्याय हैं।
- निरुक्त पर दुर्गाचार्य कृत सर्वाधिक प्राचीन टीका ''ऋज्वर्थ-वृत्ति'' है।
- **निरुक्त में पद के चार भेद हैं-**चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च। - (1) नाम, (2) आख्यात, (3) उपसर्ग और (4) निपात ।

13. श्रौतसूत्राणाम् प्रतिपाद्यम् किम् अस्ति?

(a) श्रौतयज्ञाः (b) गृह्ययज्ञाः

(c) श्रौतार्थनिर्णयः (d) श्रौतवेदीनिर्माणम्

उत्तर-(a)

श्रौतसूत्र में श्रौतयज्ञ का प्रतिपादन है।

आचार्य सायण के अनुसार कल्प में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का सम्पादन और प्रतिपादन किया जाता है।

कल्पसूत्र के चार भेद हैं—(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्रों में वेदों में वर्णित बड़े यज्ञ-याग-इष्टियों का विस्तृत विवेचन है।

विशिष्ट यागों में मुख्य हैं - दर्श-पूर्णमास, सोमयाग, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, सौत्रामणी आदि ।

गृह्य सूत्रों में गृहस्थ से सम्बद्ध 16 संस्कारों, 5 महायज्ञ, 7 पाकयज्ञ, गृहनिर्माण, गृह-प्रवेश, पशुपालन और कृषि कर्म आदि से सम्बद्ध यज्ञों की विधियां हैं।

धर्मसूत्र— ये आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ है। इनमें वर्णाश्रम के कर्त्तव्यों, आचार-विचार, मान्यताओं और सामाजिक जीवन के कर्त्तव्य-अकर्त्तव्यों का विशद वर्णन है।

''**शुल्बसूत्र—**यह शुद्धरूप से गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ है।

14. वैदिकपदानां शब्दकोशः कोऽस्ति?

(a) बौधायनश्रौतसूत्रम् (b) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम्

(c) कात्यायनश्रौतसूत्रम् (d) निघण्टुः

उत्तर-(d)

निघण्टु वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें पांच अध्याय है। निघण्टु ग्रन्थ की व्याख्या यास्ककृत निरुक्त है। निरुक्त में 12 अध्याय तथा 2 परिशिष्ट अध्याय मिलाकर कुल 14 अध्याय हैं।

- **अध्याय-1** में निघण्टु, नाम, आख्यात आदि चार पद विभागादि का वर्णन है।
- **अध्याय 2 और 3**—नैघण्टुक काण्ड में निर्वचन और वर्ण-परिवर्तन आदि से सम्बद्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन है।
- **अध्याय 4 और 6**—नैगम या एकपदिक काण्ड में कठिन शब्दों की सोदाहरण व्याख्या है।
- **अध्याय 7 से 12**—दैवतकाण्ड में देवतावाचक शब्दों की विस्तृत व्याख्या है।
- **अध्याय 13 और 14**—इसमें निर्वचन प्रक्रिया, सृष्टि उत्पत्ति आदि विषय हैं।

15. निम्नलिखितेषु किं शब्दरूपं निरुक्तानुसारं निपातः अस्ति?

(a) प्र (b) च

(c) उप (d) सम्

उत्तर-(b)

'च' कर्मोपसंग्रहार्थक निपात है।

'च' इति समुच्चयार्थ उभाभ्यां सम्प्रयुज्यते। जैसे—अहं च त्वं च वृत्रहन्।

निपात्—उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति इति निपाताः। (अनेकार्थक होने के कारण इन्हें निपात कहते हैं। नि उपसर्ग + पत् धातु = निपात

निपात के तीन भेद हैं—(1) उपमार्थक (2) कर्मोपसंग्रहार्थक (3) पादपूरणार्थक

(1) **उपमार्थक**—इस अर्थ में मुख्यतः चार निपात आते हैं—इव, नु, न, चित्।

(2) **कर्मोपसंग्रहार्थक**—ये निपात दो या दो से अधिक सामासिक पदों के मध्य मे आकर कथित अर्थो की भिन्नता को निश्चित रूप से प्रकट करते हैं, इसके अन्तर्गत च, वा, आ, अह, ह, किल्, हि, ननु, खलु, शश्वतम्, नूनम् आदि हैं।

(3) **पादपूरणार्थक**—इनका प्रयोग छन्दोबद्ध ग्रन्थों में पादपूर्ति हेतु किया जाता है। इसके अन्तर्गत कम्, इत्, इम्, उ, इव, त्व, त्वत् आदि हैं।

16. चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश।।
—अत्र मन्त्रे प्रयुक्तस्य 'त्रयो अस्य पादा' इत्यस्य कीदृशं विवरणं प्रदत्तं महाभाष्यकृता?

(a) उदात्तानुदात्तस्वरिताः (b) प्रथम-मध्यमोत्तमपुरुषाः
(c) एक-द्वि-बहुवचनानि (d) भूत-भविष्यद्-वर्तमानकालाः

उत्तर-(d)

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश।।
इस मन्त्र में प्रयुक्त 'त्रयो अस्य पादा' से तात्पर्य तीन काल-भूत-भविष्यत्-वर्तमान से है।
'चत्वारि शृङ्गा' से तात्पर्य चार प्रकार के पद समूह (परा, पश्यन्ती, मध्यमा, बैखरी) और प्रकारान्तर से सुबन्त, तिङ्न्त, उपसर्ग और निपात से है।
'द्वे शीर्षे' से तात्पर्य शब्द के दो स्वरूप-नित्य और कार्य से हैं।
'सप्त हस्तासो' से तात्पर्य सात हाथ (सातों विभक्तियां) हैं।
पतञ्जलिकृत महाभाष्य में व्याकरण अध्ययन के पांच प्रयोजन बतलाये गए हैं—
''रक्षोहागमलध्वसंदेहाः प्रयोजनम्।
13.गौण प्रयोजन— तेऽसुराः, दुष्टः, शब्दः, यदधीतम्, यस्तु प्रयुङ्क्ते। अविद्वांसः, विभक्तिं कुर्वन्ति, यो वा इमामि, चत्वारि, उत त्वः, सक्तुमिव, सारस्वतीम्, दशम्यां पुत्रस्य, सुदेवो असि वरुण।

17. 'अर्णांसि सन्ति अस्मिन्' इति विग्रहे 'अर्णसो लोपश्च' इति वार्तिकनियमेन मत्वर्थीयप्रयोगः को भवति?

(a) अर्णमान् (b) अर्णस्वान्
(c) अर्णवः (d) अर्णद्वान्

उत्तर-(c)

'अर्णांसि सन्ति अस्मिन्' इस विग्रह में अर्णसो लोपश्च इस वार्तिक नियम से मत्वर्थीय प्रयोग करके अर्णवः शब्द निष्पन्न होता है।
'अर्णसो लोपश्च' वार्तिक—अर्णस् शब्द से मत्वर्थ में 'व' प्रत्यय होता है साथ ही 'अर्णस्' के अन्त्य अल् का लोप भी होता है।
जैसे—अर्णवः (बहुत जल है ऐसा समुद्र)। प्रभूतम् अर्णोऽस्यास्तीति। अर्णस् सु से **अर्णसो लोपश्च वार्तिक** से व प्रत्यय और अर्णस के अन्त्य वर्ण सकार का लोप हो गया—अर्णव रूप सिद्ध हुआ।

- **दन्त उन्नत उरच्**—दांतों का उन्नत होना अर्थ गम्यमान हो तो प्रथमान्त 'दन्त' शब्द से मत्वर्थ में 'उरच्' प्रत्यय होता है। जैसे दन्तुरः में।
- अत इनिठनौ ह्रस्व अकारान्त प्रथमान्त प्रातिपदिक से इनि और ठन् प्रत्यय होते हैं।
  जैसे—दण्डी और दण्डिकः में

18. 'गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ' इति कारकसूत्रस्य अकर्मकधातोरुदाहरणमस्ति

(a) हरिर्वेदमध्यापयद् विधिम्
(b) हरिरासयत् सलिले पृथ्वीम्
(c) हरिरमृतमाशयद् देवान्
(d) हरि शत्रून् स्वर्गमगमयत्

उत्तर-(b)

'गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता स णौ' इस कारक सूत्र से अकर्मक धातु का उदाहरण 'हरिरासयत् सलिले पृथ्वीम्' है।
गति (जाना), बुद्धि (जानना), प्रत्यवसान (खाना) अर्थ वाली धातुएं, जिनका कर्म कोई शब्द हो ऐसी धातुएं जैसे पठ् (पढ़ना), उच्चर (बोलना) तथा अकर्मक धातुओं का जो अणिजन्त अवस्था का कर्त्ता होता है; वह णिजन्त अवस्था में कर्मसञ्ज्ञक हो जाता है।

- गत्यर्थक धातु का उदाहरण—शत्रून् अगमयत् स्वर्गम्।
- बुद्ध्यर्थक धातु का उदाहरण—वेदार्थं स्वान् अवेदयत्।
- प्रत्यवसानार्थक धातु का उदाहरण-आशयत् च अमृतं देवान्।
- शब्दकर्मक धातु का उदाहरण—वेदम् अध्यापयद् विधिम्।
- अकर्मक धातु का उदाहरण—हरिरासयत् सलिले पृथ्वीम्।
- आदिखाद्योर्न (वा0)—अद् और खाद् धातुओं के अणिजन्त कर्त्ता की णिजन्त अवस्था में कर्म संज्ञा नहीं होगी, अतएव वे करणसंज्ञक हो जाते हैं।
  जैसे—आदयति खादयति वा अन्नं वटुना।

19. समीकरणम् कस्य परिवर्तनदिशा भवति?

(a) अर्थस्य (b) ध्वनेः
(c) प्रत्ययस्य (d) रूपस्य

उत्तर-(b)

'समीकरण' ध्वनि परिवर्तन की दिशा है।
ध्वनि परिवर्तन की दिशाएं—(1) **समीकरण**—जब दो विषम ध्वनियां एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती हैं। यह समीकरण दो प्रकार का होता है—

(क) **पुरोगामी समीकरण**—इसमें पूर्ववर्ती ध्वनि आगे की ध्वनि को अपने सदृश बना लेती है, जैसे—विष् + नु = विष्णुः, चक्र > चक्का, अग्नि > अग्गि
(ख) **पश्चगामी समीकरण**—इसमें परवर्ती ध्वनि पूर्ववर्ती ध्वनि को अपने सदृश बना लेती हैं—शर्करा-शक्कर, वल्कल-वक्कल, धर्म-धम्म, सप्त-सत्त
(2) **विषमीकरण**—समीकरण के विपरीत यह विषम रूप धारण करती है।
जैसे—काक-काग, कंकण-कंगन, मुकुट-मउर, षष्-षट्
(3) आगम (4) लोप (5) समाक्षर लोप (6) वर्णविपर्यय (7) महाप्राणीकरण (8) अल्पप्राणीकरण (9) घोषीकरण (10) अघोषीकरण (11) अनुनासिकीकरण (12) ऊष्मीकरण (13) सन्धि-कार्य (14) मात्रा भेद।

20. मिथ्यासादृश्यस्य उदाहरणम् किमस्ति?

(a) अग्गिरस्स (b) रामस्य

(c) मुरारेः (d) हरये

उत्तर-(a)

'अग्गिरस्स' मिथ्यासादृश्य का उदाहरण है।
अग्गिरस्स में पूर्ववर्ती ध्वनि परवर्ती ध्वनि को अपने सदृश बनाती है।
'रषाभ्यां नो णः समानपदे', रदाभ्यां निष्ठातो नः, ष्टुना ष्टुः आदि **सूत्र-**
मिथ्या सादृश्य को प्रदर्शित करते हैं।
अन्य उदाहरणों में जैसे–धम्म-धर्म का सादृश्य है।
वल्कल का वक्कल होना, तत्+लीन = तल्लीन, सप्त-सत्त आदि।

- सादृश्य के विपरीत शब्दों में वैषम्यता भी होती है–
  जैसे–काक का काग, कंकण का कंगन, षष् का षट् होना आदि।
- ध्वनि परिवर्तन में कभी-कभी मुख-सुख, प्रयत्नलाघव, उच्चारण में शीघ्रता, स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है।
  जैसे–आभ्यन्तर का भीतर, उपाध्याय का झा : स्कन्ध का कन्धा होना आदि।
- ब्लूमफील्ड ने समाक्षर लोप का वर्णन किया, समान ध्वनियों के होने पर उनमें से एक का लोप कर दिया जाता है।
  जैसे– नाककटा का नकटा होना

21. सांख्यकारिकानुसारं तन्मात्राः कस्मात् उत्पद्यन्ते?

(a) पञ्चमहाभूतेभ्यः (b) अहङ्कारात्

(c) प्रधानात् (d) पुरुषात्

उत्तर-(b)

सांख्यकारिकानुसार तमोगुण प्रधान अहङ्कार से पञ्च तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है।
महत् की उत्पत्ति मूलप्रकृति से होती है। अहङ्कार की उत्पत्ति महत् से होती है।
सोलह पदार्थों के समूह (पञ्चज्ञानेन्द्रियां, पञ्चकर्मेन्द्रियां, पञ्चतन्मात्रा, मन) की उत्पत्ति अहङ्कार से होती है।

- पुरुष की सत्ता सिद्ध करने वाले पांच हेतु - संघातपरार्थत्वात्, त्रिगुणादिविपर्ययात्, अधिष्ठानात्, भोक्तृभावात्, कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः। पुरुष के संयोग से जड़ प्रकृति चेतन के समान प्रतीत होती है। यह गुणरहित एवं अपरिणामी होने के कारण वस्तुतः कर्ता नहीं होता बल्कि उसमें कर्त्तापन की प्रतीति भ्रान्तिमात्र है।
- तीनों गुण (सत्त्व, रजस्, तमस्) विरोधी स्वभाव वाले होते हुए भी दीपक के समान व्यवहार करते हैं।
- सत्त्व और तमोगुण दोनों गुण निष्क्रिय होते हैं। रजोगुण ही उन्हें क्रियाशील बनाता है।
- सूक्ष्मशरीर 18 तत्त्वों से निर्मित है, इसे लिङ्ग शरीर भी कहते हैं।

22. वेदान्तसारानुसारं पृथिव्यां कस्य अभिव्यक्तिः भवति?

(a) केवलं गन्धस्य

(b) रसस्य च गन्धस्य च

(c) रूपस्य च गन्धस्य च

(d) शब्दस्पर्शरूपरसगन्धानाम्

उत्तर-(a)

गन्धवती पृथ्वी (पृथिवी गन्धवती है)।

- यह नित्या (परमाणुरूपा) और अनित्या (कार्यरूपा) है।
- अनित्यारूपा फिर **शरीर-इन्द्रिय-विषय** के भेद से तीन प्रकार की होती है।
- पृथिवी के अतिरिक्त गन्ध अन्य कहीं नहीं प्राप्त होती है।
- शीतस्पर्शवत्य आपः (शीतस्पर्श से युक्त जल है)
- उष्णस्पर्शवत्तेजः (गर्मस्पर्श वाला तेज है)
- रूपरहितस्पर्शवान वायुः (रूप से रहित और स्पर्शयुक्त वायु है।)
- शब्दगुणकमाकाशम् (शब्द गुण से युक्त आकाश है।)
- अतीतादिव्यवहार हेतुः कालः (अतीतादि व्यवहार का हेतु काल है।)
- प्राच्यादिव्यवहार हेतुर्दिक (प्राची आदि के व्यवहार का हेतु दिशा है।)
- ज्ञानाधिकरण आत्मा (ज्ञान का अधिकरण आत्मा है।)
- सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः (सुख आदि की उपलब्धि का साधन मन है)
- चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्। (नेत्र मात्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण रूप है)

23. 'अग्निहोत्रं जुहोती' त्यत्र 'अग्निहोत्र' शब्दस्य कर्मनामधेयत्वं कस्मान्निमित्तात्?

(a) तत्प्रख्यशास्त्रात् (b) मत्वर्थलक्षणाभयात्

(c) वाक्यभेदात् (d) तद्व्यपदेशात्

उत्तर-(a)

तत्प्रख्यन्यायसे नामधेयत्व है।
'अग्निहोत्रं जुहोति' यहां अग्निहोत्र शब्द में तत्प्रख्यन्याय से नामधेयत्व है।

- सोमेन यजेत् में भी संसर्ग अर्थ में मत्वर्थ लक्षणा अभीष्ट है।
- **भावना**–भावना नाम भवितुर्भावनानुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः। सा च द्विधा-शाब्दी भावना, आर्थी भावना
- **शाब्दीभावना**–पुरुषप्रवृत्यनुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः शाब्दीभावना।
  सा च लिङ्शेनोच्यते।
- **आर्थी भावना**–प्रयोजनेच्छाजनितक्रिया विषयव्यापार आर्थीभवना। सा चाख्यातत्त्वांशेनोच्यते, आख्यातसामान्यस्य व्यापार वाचित्वत्वात्।
- तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः।

24. अर्थसङ्ग्रहे 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे 'अर्थ' पदोपादानं किमर्थम्?

(a) प्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणार्थम्

(b) भोजनादावतिव्याप्तिवारणार्थम्

(c) अनर्थफलकत्वात् श्येनादावतिव्याप्तिवारणार्थम्

(d) अनृतव्यावृत्त्यर्थम्

उत्तर-(c)

''यागादिरेव धर्मः (यागादि हि धर्म है)।

लक्षण–''वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म इति। (वेद के प्रतिपादन का विषय प्रयोजनयुक्त धर्म अर्थ है।

- व्यक्ति धर्म को ही प्रयोजन न समझने लगे इसलिए प्रयोजन में अतिव्याप्ति का निवारण करने के लिए 'प्रयोजनवत्' पद का ग्रहण है।
- भोजानादि स्वाभाविक विषयों में अतिव्याप्ति का निवारण करने के लिए 'वेदप्रतिपाद्यः' पद का सन्निवेश किया गया है।
  अनर्थ फलदायक होने से अनर्थस्वरूप श्येन आदि कर्मों में अतिव्याप्ति की निवृत्ति हेतु अर्थ पद का ग्रहण है।
  ''अनर्थफलकत्वात् श्येनादवतिव्याप्तिवारणार्थम्।
- प्रेरक विधि से लक्षित अर्थ धर्म है.'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः।

25. उत्पत्तिविधिः क उच्यते?

(a) अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिः

(b) प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः

(c) कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिः

(d) कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिः

उत्तर-(d)

वेद–अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। (अपौरुषेयं वाक्य वेद कहलाता है।) यह वेद विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध और अर्थवाद के भेद से पांच प्रकार का है।

- विधि–तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः।
- विधि के चार भेद हैं–उत्पत्तिविधि, विनियोग विधि, अधिकारविधि, प्रयोगविधि

(1) **उत्पत्तिविधि**–कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः जैसे–अग्निहोत्रं जुहोति।
(कर्म के केवल स्वरूप के बोधक विधि को उत्पत्ति विधि कहते हैं।

(2) **विनियोगविधि**–अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः यथा-'दध्ना-जुहोति' (अङ्ग तथा प्रधान के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोगविधि कहते हैं।
विनियोग विधि के सहायक **छः प्रमाण**-श्रुति-लिङ्ग-वाक्य-प्रकरण-स्थान-समाख्या।

(3) **अधिकार विधि**–कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः। यजेत् स्वर्गकामः (यागादि कर्म से उत्पन्न होने वाले स्वर्गादि फल के स्वामित्व का ज्ञान कराने वाली विधि अधिकार विधि है।

(4) **प्रयोगविधि**–प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः। जिस विधि वाक्य से प्रयोग को शीघ्र करने का बोध होता है उसे प्रयोग विधि कहते है।

26. वाल्मीकिरामायणानुसारं सुग्रीवस्य पत्न्याः नाम आसीत्

(a) तारा (b) अहल्या

(c) रूमा (d) सुलोचना

उत्तर-(c)

वाल्मीकि रामायण के अनुसार सुग्रीव की पत्नी का नाम रूमा है

- बालि की पत्नी का नाम तारा था।
- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।
- रामायण में सात काण्ड हैं–(1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) युद्धकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड
- रामायण में 24 हजार श्लोक हैं। इसे चतुर्विंशति-साहस्री संहिता भी कहा जाता है। इसमें अनुष्टुप् श्लोक है।

27. वाल्मीकिरामायणमाश्रित्य कथा नास्ति यत्र

(a) रघुवंशम् (b) कुन्दमाला

(c) मालतीमाधवम् (d) जानकीहरणम्

उत्तर-(c)

मालतीमाधव–वाल्मीकि रामायण पर आधारित नहीं है।

- रामायण पर आश्रित प्रमुख ग्रन्थ

काव्य ग्रन्थ–कालिदास कृत-रघुवंशमहाकाव्य, प्रवरसेन कृत-सेतुबन्ध, कुमारदास कृत-जानकीहरण, भट्टिकृत-रावणवध, क्षेमेन्द्र कृत रामायण मंजरी

नाटक–भासकृत-अभिषेक नाटक और प्रतिमा नाटक,

दिङ्नागकृत–कुन्दमाला, भवभूतिकृत-महावीरचरित, उत्तररामचरित मुरारिकृत-अनर्घराघव, राजशेखरकृत-बालरामायण, हनुमानकृत-महानाटक, जयदेवकृत-प्रसन्नराघव।

चम्पूग्रन्थ–भोजकृत-रामायण चम्पू, वेंकटाध्वरिकृत-उत्तर चम्पू रामायण पर ही अश्रित बौद्धों का ग्रन्थ दशरथ-जातक तथा जैन कवि विमलसूरि कृत पउमचरित्र भी है।

- **रामायण** में 24 हजार श्लोक हैं। इसीलिए इसको 'चतुर्विंशति-साहस्री संहिता' भी कहते हैं।

28. महाभारतानुसारं वेदव्यासस्य मातुः नाम आसीत्

(a) सरस्वती (b) सत्यवती

(c) गङ्गा (d) सत्यभामा

उत्तर-(b)

महाभारत के अनुसार कृष्णद्वैपायन वेदव्यास के माता-पिता का नाम सत्यवती और पाराशर है।
वेदव्यास महाभारत के प्रमुख रचयिता हैं। इसमें 18 पर्व हैं।
(1) आदिपर्व (2) सभा (3) वन (4) विराट् (5) उद्योग (6) भीष्म (7) द्रोण (8) कर्ण (9) शल्य (10) सौप्तिक (11) स्त्री (12) शान्ति (13) अनुशासन (14) आश्वमेधिक (15) आश्रमवासिक (16) मौसल (17) महाप्रस्थानिक (18) स्वर्गारोहण।

- भीष्मपर्व में अर्जुन को गीता का उपदेश तथा भीष्म का आहत होकर शय्या पर गिरना है।
- शान्तिपर्व में युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्षसम्बन्धी सैकड़ों प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर दिया गया है।

29. शतसाहस्रीसंहितायाः अपरं नामास्ति

(a) सुश्रुतसंहिता (b) बृहदसंहिता
(c) महाभारतम् (d) विष्णु-पुराणम्

उत्तर-(c)

महाभारत को 'शतसाहस्री संहिता' कहा जाता है।
महाभारत की शैली पांचाली है।
महाभारत मूलरूप में जयकाव्य था, वेदव्यास ने यह रचना वैशम्पायन को सुनाई थी, दूसरे चरण में भारत और तृतीय चरण में महाभारत हो गया। इसमें श्लोक 1 लाख हो गया था।
महाभारत पर आश्रित प्रमुख ग्रन्थ
काव्यग्रन्थ–भारविकृत-किरातार्जुनीयम्, माघकृत-शिशुपालवधम् क्षेमेन्द्रकृत–भारतमंजरी, श्रीहर्षकृत–नैषधीयचरित, वामनभट्ट कृत-नलाभ्युदय
नाटक–भासकृत-दूतघटोत्कच, दूतवाक्य, कर्णभार, मध्यम व्यायोग, पञ्चरात्र, उरुभंग, अभिज्ञानशाकुन्तल, भट्टनारायणकृत-वेणीसंहार, राजशेखर-बालभारत
चम्पू ग्रन्थ–त्रिविक्रमभट्ट कृत-नलचम्पू, अनन्तभट्ट कृत-भारत चम्पू
नारायणभट्ट कृत- पाञ्चाली स्वयंवर चम्पू, राजचूडामणि दीक्षित कृत भारत-चम्पू , चक्रकविकृत-द्रौपदी परिणय चम्पू

30. 'रासपञ्चाध्यायी' कस्मिन् पुराणे विद्यते?

(a) शिवपुराणे (b) भागवतपुराणे
(c) लिङ्गपुराणे (d) अग्निपुराणे

उत्तर-(b)

रासपंचाध्यायी-श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के 29वें अध्याय से तैंतीसवें अध्याय तक के पांच अध्यायों को रास पंचाध्यायी कहा जाता है।

- भागवतपुराण वैष्णवों का प्रिय महापुराण है, इसमें 12 स्कन्ध और 18 हजार श्लोक हैं। कृष्ण की रासलीला तथा क्रीडाओं का वर्णन रासपंचाध्यायी कहा जाता है। इसमें कृष्ण को अवतार मानकर उनकी लीलाओं का वर्णन हैं :
- **पुराण का लक्षण**–''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।
- महापुराण 18 है तथा उपपुराण भी 18 है।
- मौर्यवंशावली–विष्णुपुराण, आन्ध्रवंशावली, मत्स्यपुराण, गुप्तवंशावली- वायुपुराण में प्राप्त होती है। वायुपुराण को शिवपुराण भी कहते हैं।

31. अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत' इति मतं कस्य?

(a) कौणपदन्तस्य (b) वातव्याधेः
(c) बाहुदन्तीपुत्रस्य (d) कौटिल्यस्य

उत्तर-(a)

अर्थशास्त्र में उद्धृत 'पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत' यह मत अमात्यनियुक्ति के संदर्भ में आचार्य कौणपदन्त का है।
''पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत , दृष्टापदानत्वात् ते ह्येनमपचरन्तमपि न त्यजन्ति, सगन्धत्वात्। अर्थात् अमात्य पद जिनको वंश परम्परा से उपलब्ध रहा हो, उन्हीं को इस पद पर नियुक्त करना चाहिए। वे ही उसकी सम्पूर्ण रीति- नीति से सुपरिचित होते हैं। यही कारण है कि वे अपना अपकार होने पर भी, परम्परागत सम्बन्ध होने के कारण राजा को नहीं छोड़ते। यह बात पशु-पक्षियों तक में देखी जाती है। गाय, अपरिचित गोष्ठ को छोड़कर परिचित गोष्ठ में ही जाकर ठहरती है।

32. अर्थशास्त्रे उद्धृतं 'सहाध्यायिनोऽमात्यान्कुर्वीत' इति मतं कस्य?

(a) विशालाक्षस्य (b) भारद्वाजस्य
(c) पराशरस्य (d) पिशुनस्य

उत्तर-(b)

अर्थशास्त्र में उद्धृत 'सहाध्यायिनोऽमात्यान्कुर्वीत' यह मत 'अमात्यनियुक्ति' के सन्दर्भ में आचार्य भारद्वाज का है।
''सहाध्यायिनोऽमात्यान् कुर्वीत , दृष्टशौच-सामर्थ्यत्वादिति भारद्वाजः। ते ह्यस्य विश्वास्या भवन्ति इति । आचार्य भारद्वाज के मतानुसार 'राजा' अपने सहपाठियों को अमात्य पद पर नियुक्त करे, क्योंकि उनके हृदय की पवित्रता से वह सुपरिचित होता है' उनकी कार्यक्षमता को भी वह जान चुका होता है। ऐसे ही अमात्य राजा के विश्वास पात्र होते हैं।

33. कामाद् ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानः कः विननाश-

(a) करालः (b) जनमेजयः
(c) दाण्डक्योनामभोजः (d) रावणः

उत्तर-(c)

''शास्त्रार्थानुष्ठानं वा । कृत्स्नं हि शास्त्रमिदमिन्द्रियजयः। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति। यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मणकन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश।

शास्त्रों में प्रतिपादित कर्त्तव्यों के सम्यक् अनुष्ठान को ही इन्द्रियजय कहते हैं। समस्त शास्त्रों का मूलकारण इन्द्रियजय है। शास्त्रविहित कर्त्तव्यों के विपरीत आचरण करने वाला इन्द्रिय- लोलुप राजा समस्त पृथिवी पर अधिपति होता हुआ भी शीघ्र नष्ट हो जाता है। उदाहरणस्वरूप भोजवंशीय दाण्डक्य नामक राजा कामवश ब्राह्मणकन्या का अपहरण करने के अपराध में उसके पिता के शाप से सपरिवार एवं सराष्ट्र विनष्ट हो गया। यही गति विदेह देश के राजा कराल की भी हुई।

34. मनुसंहितानुसारं कामजव्यसनं कतिविधम् भवति?

(a) दशविधम् (b) अष्टविधम्
(c) पञ्चविधम् (d) त्रिविधम्

उत्तर-(a)

मनुस्मृति के अनुसार राजा को कामजन्य दश और क्रोधजन्य आठ दोषों से रहित होना चाहिए।

दश कामजन्य व्यसन–

''मृगयाऽक्षो दिवा स्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।।

मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना और वृथा घूमना ये दश काम से उत्पन्न होते हैं।

आठ क्रोध से उत्पन्न दोष–

''पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोष्टकः।।

चुगली, दुस्साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरों की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न होते हैं।

35. ''अग्निदानाञ्च ये लोका ये च स्त्रीबालघातिनाम् स तान् सर्वानवाप्नोति-'' इति याज्ञवल्क्यवचनं येन सम्बद्धम् तत्–

(a) वाक्पारुष्यम् (b) दण्डपारुष्यम्
(c) मिथ्यासाक्ष्यम् (d) सुरापानम्

उत्तर-(c)

अग्निदानां च ये लोका ये च स्त्रीबालघातिनाम्।
स तान् सर्वान् वाप्नोति यः साक्ष्यमनृतं वदेत्।
याज्ञवल्क्यस्मृति में यह मिथ्यासाक्ष्यम् से सम्बन्धित है।

''तपस्विनो दानशीलाः कुलीनाः सत्यवादिनः।
धर्मप्रधाना ऋजवः पुत्रवन्तो धनान्विताः।।
त्र्यवराः साक्षिणो ज्ञेयाः श्रौतस्मार्त क्रिया पराः।
यथा जातियथावर्ण सर्वे सर्वेषु वा स्मृताः।।

- तपस्वी, दानशील, कुलीन, सत्यवादी, धर्मप्रधान, सरल स्वभाव, पुत्रवान्, धनयुक्त, तथा श्रौत स्मार्त क्रिया में रत कम से तीन साक्षी होने चाहिए।
  ''स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽधर्षितः परैः। आवेदयति चेद्राज्ञे व्यवहारपदं हि तत्।
  जो दूसरों के द्वारा स्मृतिनियमों और आचार तथा रुढ़ियों के विरोध में पीड़ित किया जाता है, वह राजा को सूचित करता है तो इसे व्यवहारपद कहते हैं।

36. शिशुपालवधे-
''विभिन्नशङ्खः कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः''- कस्य वर्णना इयम्?

(a) इन्द्रस्य (b) कुबेरस्य
(c) वरुणस्य (d) गणेशस्य

उत्तर-(b)

विभिन्नशङ्ख कलुषीभवन्मुहुर्मदेन दन्तीव मनुष्यधर्मणः–यह कुबेर की शंख नामक निधि के विषय में वर्णन है।

- जनस्तुषाराञ्जनपर्वताविव–कृष्ण/नारद की उपमा की गयी है। प्रमुख सूक्तियां–धराधरेन्द्रव्रततीततीरिव
- गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।
- ग्रहीतुर्मायान्परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमार्थिनः।
- तपोधनाभ्यागमसम्भवा मुदः।
- शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।
- सदाभिमानैक धना हि मानिनः।
- सतीवयोषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।
- ऋतेरवे क्षालयितुं क्षमेत कः क्षयातमस्काण्डमलीमसं नभः।

37. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां मेलनतालिकां चिनुतः

(A) सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति। — **(i) शिशुपालवधम्**
(B) अदृष्टमप्यर्थम दृष्टवैभवात् करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम् — **(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
(C) हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। — **(iii) उत्तररामचरितम्**
(D) तपेन वर्षाः शरदा हिमागमो वसन्तलक्ष्म्या शिशिरः समेत्य च। — **(iv) नैषधीयचरितम्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

उत्तर-(d)

सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति। यह सूक्ति भवभूति कृत सात अङ्कों के नाटक उत्तररामचरित की है।

उत्तररामचरित की अन्य सूक्तियां–अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।

- सन्तापकारिणो बन्धुजन विप्रयोगे भवन्ति।
- गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
- वितरति गुरु प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे।
- 'अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात् करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम्' यह नैषधीयचरित की सूक्ति है।
- नैषधीयचरित की अन्य सूक्तियां–क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः। त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्।
- ''हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्राः वर्जयत्यपः' यह अभिज्ञानशाकुन्तल की सूक्ति है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् की अन्य सूक्तियां–किमिव हि मधुराणां मण्डनं न आकृतीनाम्।
- न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।
- भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।
- सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः।
- अहो कामी स्वतां पश्यति।
- अतिस्नेहः पापशङ्की भवति।
- अर्थो हि कन्या परकीय एव।

38. दशकुमारचरिते ''अथ सोऽप्याचचक्षे - देव, मयापि परिभ्रमता कोऽपि कुमारः .... दृष्टः'' इत्यादिषु कस्य परिभ्रमणमुल्लिखितम्?

(a) राजवाहनस्य (b) विश्रुतस्य
(c) अपहारवर्मणः (d) उपहारवर्मणः

उत्तर-(b)

दशकुमारचरित में ''अथ सोऽप्याचचक्षे-देव मयापि परिभ्रमता कोऽपि कुमारः .....दृष्टः'' इसमें विश्रुत के पर्यटन का अनुभव है।

- दशकुमारचरित और काव्यादर्श दण्डी की कृति है।
- यह रचना गद्यविधा है इसमें दशकुमारों के चरित का संकलन है।
- 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह दण्डी की प्रशंसा में कहा गया है।
- इसमें चार प्रकार की राजविद्याएं है–त्रयी, वार्ता, आन्वीक्षिकी, दण्डनीति।
- हर्षचरित और कादम्बरी गद्य काव्य बाणभट्ट की कृति है।
- हर्षचरित संस्कृत साहित्य में सबसे प्राचीन उपलब्ध आख्यायिका है।
- कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है।
- 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वं' यह बाणभट्ट को चरितार्थ करती है।

39. काव्यप्रकाशे ''वाक्ये एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्।''– कस्यालङ्कारस्य परिभाषेयम्?

(a) श्लेषस्य (b) रूपकस्य
(c) उपमायाः (d) विभावनायाः

उत्तर-(a)

''वाक्ये एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्'' यह श्लेषालङ्कार की परिभाषा है।

उदाहरण– पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनंदेव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।

इसमें एक अर्थ राजा और दूसरा गरीब के घर का वर्णन है।

सभङ्ग और अभङ्ग श्लेष के भेद से श्लेष दो प्रकार का होता है।

सभङ्ग श्लेष के आठ प्रकार– (1) वर्णश्लेष (2) पदश्लेष (3) लिंगश्लेष (4) भाषाश्लेष (5) प्रकृतिश्लेष (6) प्रत्यय श्लेष (7) विभक्तिश्लेष (8) वचनश्लेष।

- **वक्रोक्ति अलङ्कार**–''यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते। श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथाद्विधा।।
  उदाहरण–नारीणामनुकूलमाचरसि चेज्जानासि कश्चेतनो... वामानां प्रियमादाधाति.....।
- **उत्प्रेक्षा**
- सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।
  उदाहरण–लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।
- **समासोक्ति**–परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टै : समासोक्तिः।
  उदाहरण–लब्ध्वा तव बाहुस्पर्श यस्याः स कोऽप्युल्लासः। जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा।।

40. ''तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये''- इत्युक्तिः कुत्र उपलभ्यते?

(a) काव्यप्रकाशे (b) ध्वन्यालोके
(c) रसगङ्गाधरे (d) काव्यादर्शे

उत्तर-(b)

तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये ..... यह उक्ति ध्वन्यालोक की है। ''काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वस्तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
केचिद्वाचां स्थितमविषये तत्वमूचुस्तदीयं तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।।

तस्याभावम् से अभाववादी मत, भाक्तम् से भक्तिवादी मत तथा **वाचांस्थितमविषये से अनिर्वचनीयतावादी** मत का निर्देश है।

ध्वनि की परिभाषा–

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृत् स्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।।

41. अभिज्ञाशाकुन्तले दुर्वाससः शापः कस्य उदाहरणं भवति?

(a) प्रवेशकस्य (b) चूलिकायाः

(c) विष्कम्भकस्य (d) अङ्कावतारस्य

उत्तर-(c)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुर्वासा का शाप विष्कम्भक का उदाहरण है।

- इसमें स्रग्धरा छन्द है तथा पत्रावली नान्दी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विदूषक माढव्य है।
- मङ्गलाचरण में अष्टमूर्ति शिव की स्तुति की गयी है।
- शाप की कल्पना का कारण-प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना है। शाप का प्रभाव पञ्चम अङ्क में है तथा पश्चाताप षष्ठाङ्क मे है।
- भरत वाक्य–प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
- महर्षि कण्व का आश्रम मालिनी नदी के तट पर, विश्वामित्र का आश्रम गौतमी नदी तथा मारीचि का आश्रम हेमकूट पर्वत पर था।
- दुष्यन्त का सेनापति भद्रसेन और पुरोहित सोमरात है। कञ्चुकी वातायन है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चारों प्रसिद्ध श्लोक महर्षि कण्व ने कहा है।

42. 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।'
उत्तररामचरिते कस्येयमुक्तिः?

(a) तमसायाः (b) मुरलायाः

(c) वासन्त्याः (d) सीतायाः

उत्तर-(b)

''पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'' उत्तररामचरित की इस उक्ति को मुरला ने कहा है।

- उत्तररामचरित भवभूतिकृत 7 अङ्कों का नाटक है।

प्रमुख उक्ति और उसके वक्ता

- लक्ष्मण–अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।
- राम–इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।
- राम–तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।
- तमसा–एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
- अरुन्धती–गुणाः पूजास्थानम् गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।
- वासन्ती–वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
- वनदेवता–सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।

43. ''सुलभेब्दर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इह दुष्करं कुर्प्यादिदानीं शिविना विना।।''
मुद्राराक्षसे इयमुक्तिर्भवति-

(a) राक्षसस्य (b) चाणक्यस्य

(c) चन्दनदासस्य (d) भागुरावणस्य

उत्तर-(b)

''सुलभेब्दर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इह दुष्करं कुर्प्यादिदानीं शिविना विना।।

मुद्राराक्षस में यह उक्ति चाणक्य द्वारा कथित है।

मुद्राराक्षस–विशाखदत्त की रचना है। इनकी तीन कृतियों का नाम–देवीचन्द्रगुप्तम्, अभिसारवंचितकम्, मुद्राराक्षसम् है।

- मुद्राराक्षस में सात अङ्क है।
- प्रमुख सूक्तियां–अत्यादर शङ्कनीयः।
- नहि सर्वः सर्वं जानाति।
- भव्यं रक्षति भवितव्यता
- प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्यविघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
- अनुभूयतां चिरं विचित्रो राजप्रसादः।
- दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनाशो न पुरुष दोषेण।

44. आसु का नाट्यवृत्तिर्न भवति-

(a) कैशिकी (b) आरभटी

(c) अभिधा (d) भारती

उत्तर-(a)

आसु कैशिकी नाट्यवृत्तिर्न भवति।

कैशिकी–गीतनृत्यविलासाद्यैर्मृदुः शृंगारचेष्टितैः।

सात्वती–विशोका सात्वती सत्वशौर्यत्यागदयार्जवैः।
संलापोत्थापकावस्यां साङ्घात्यः परिवर्तकः।।

भारती–भारती संस्कृत प्रायो वाग्व्यापारो नटाश्रयः।
भेदैः प्ररोचना युक्तैर्वीथीप्रहसनामुखैः।।

आरभटी–मायेन्द्रजालसंग्रामक्रोधोद्भ्रान्तादिचेष्टितैः।

''शृङ्गारे कैशिकी, वीरे सात्वत्यारभटी पुनः।
रसे रौद्रे च बीभत्से, वृत्तिः सर्वत्र भारती।।

शृङ्गार में कैशिकी, वीररस में सात्वती, रौद्र तथा बीभत्स रस में आरभटी का प्रयोग होता है। **भारती वृत्ति** का प्रयोग सभी रसों में होता है।

45. दशरूपकानुसारं प्रहसनं भवति-

(a) द्विविधम् (b) त्रिविधम्

(c) चतुर्विधम् (d) पञ्चविधम्

उत्तर-(b)

दशरूपक के अनुसार प्रहसन के तीन भेद हैं।
''प्रहसन भी भाण की तरह ही होता है अर्थात् इसमें चतुर तथा बुद्धिमान विट अपने द्वारा अनुभूत धूर्तचरित का वर्णन करता है। यह आकाशभाषित के द्वारा सम्बोधन तथा उत्तर-प्रत्युत्तर करता है।
प्रहसन के तीन भेद हैं—शुद्ध, वैकृत और सङ्कर
- **शुद्ध प्रहसन**—पाखण्डिविप्र भृतिचेट चेटी विटाकुलम् ।
चेष्टितं वेषभाषाभिः शुद्धं हास्यवचोन्वितम्।
- **वैकृत प्रहसन**—कामुकादिवचोवेषैः षष्ढकञ्चुकितापसैः।
- **सङ्कर प्रहसन**—सङ्कराद्वीथ्या सङ्कीर्णं धूर्तसङ्कुलम्।

46. 'अनुमितिप्रतिबन्धकयथार्थज्ञानविषयत्वम्' इति कस्य लक्षणम्?
(a) पक्षस्य (b) विपक्षस्य
(c) हेत्वाभासस्य (d) केवलव्यतिरिकिलिङ्गस्य

उत्तर-(c)

''अनुमितिप्रतिबन्धकयथार्थज्ञानविषयत्वं हेत्वाभासत्वम्।
- सव्यभिचार-विरुद्ध-सत्प्रतिपक्ष-असिद्ध-बाधिता पञ्च हेत्वाभासा।
- सव्यभिचारी अनैकान्तिक है- यह तीन प्रकार का है—
साधारण, असाधारण, अनुपसंहारी
- विरुद्ध हेत्वाभास—साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः।
- सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास—यस्य साध्य—अभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः।
- असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद हैं—आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध, व्याप्यत्वासिद्ध।
- असिद्ध—स्वयम् असिद्धः कथं परान् साधयति।
- बाधित—यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः सः बाधितः।

47. तन्तुसंयोगः पटस्य कीदृशं कारणमुच्यते?
(a) समवायिकारणम् (b) असमवायिकारणम्
(c) निमित्तकारणम् (d) तादात्म्यकारणम्

उत्तर-(b)

तन्तु संयोग पट का असमवायी कारण है।
- **कारण**—यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्।
कारण—समवायी, असमवायी और निमित्तभेद से तीन प्रकार का होता है।
- **समवायी कारण**—यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्।
यथा—तन्तवः पटस्य समवायि कारणम्।
- **असमवायी कारण**—यत्समवायिकारण प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्।
यथा—तन्तु संयोगः पटस्यासमवायिकारणम्।
- **निमित्त कारण**—यन्न समवायिकारणम् नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्।
यथा—वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्।

48. तर्कभाषायामर्थापत्तिः कुत्रान्तर्भाविता?
(a) प्रत्यक्षप्रमाणे (b) अनुमानप्रमाणे
(c) उपमानप्रमाणे (d) शब्दप्रमाणे

उत्तर-(b)

तर्कभाषा में अर्थापत्ति अनुमान प्रमाण के अन्तर्गत अन्तर्निहित है।
''अनुपपद्यमानार्थ दर्शनार्थ तदुपपादकी भूतार्थान्तरकल्पनम् अर्थापत्तिः। (अनुपपद्यमान अर्थ को जानकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति है।
जैसे—पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते। इसमें केवल व्यतिरेकी अनुमान से ही रात्रि भोजन की प्रतीति हो जाने से अर्थापत्ति को पृथक् प्रमाण नहीं मानते हैं। अपितु अनुमान में ही अन्तर्निहित हो जाता है।
- वाक्य—''वाक्यं त्वाकांक्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः।
- **आंकाक्षा**—एक पद का दूसरे के बिना अन्वय बोध न करा सकना।
- **योग्यता**—पदार्थों के पारस्परिक सम्बन्ध में बाधा न होना।
- **सन्निधि**—पदों का अविलम्ब उच्चारण किया जाना।

49. 'साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकः' इति कस्य लक्षणम्?
(a) स्वरूपासिद्धहेत्वाभासस्य
(b) उपाधेः
(c) आश्रयासिद्धस्य
(d) कालात्ययापदिष्टस्य

उत्तर-(b)

साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकः।
यह उपाधि का लक्षण है। जैसे—श्रोत्रेन्द्रियग्रहणार्हत्वमेव उपाधित्वेन गृह्यते।
- **हेतु के तीन भेद है—** अन्वयव्यतिरेकि, केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी।
- अन्वयव्यतिरेकी—अन्वयेन व्यतिरेतेण च व्याप्तिमत्वात् अन्वयव्यतिरेकी।
यथा-वह्नौ साध्ये धूमवत्वम्।
- अन्वयव्याप्ति—यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र वह्निः-यथा महानस
- व्यतिरेकिव्याप्ति—यत्र वह्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति-यथा-जलाशय
- केवलान्वयी—'अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि—यथा-घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् पटवत्।

केवलव्यतिरेकी—'व्यतिरेकमात्रं व्याप्तिकं केवलव्यतिरेकी-यथा-जलम्।
पक्ष—'सन्दिग्धसाध्यवान् पक्षः।
सपक्ष—निश्चितसाध्यवान् सपक्षः।
विपक्ष—निश्चित साध्याऽभाववान् विपक्षः।

50. सञ्ज्ञासंज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः किमुच्यते?

(a) अनुमितिः (b) प्रत्यक्षम्
(c) उपमितिः (d) शब्दः

उत्तर-(c)

'सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः उपमितिः।
उपमान–अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्ट पिण्डज्ञानमुपमानम्।
यथा गौस्तथा गवयः। (जैसे गाय वैसे ही नीलगाय)

51. 'ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक्' इतिमन्त्रांशो वर्तते–

(a) उषस्सूक्ते (b) वरुणसुक्ते
(c) पर्जन्यसूक्ते (d) कालसूक्ते

उत्तर-(a)

ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक् यह मन्त्र उषस्सूक्त का है।

- उषस् सूक्त के ऋषि विश्वामित्र हैं तथा देवता उषस् हैं।
  अग्निसूक्त के प्रमुख मन्त्र–अग्निमीले पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।
- राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
- स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव।
- विष्णु सूक्त के प्रमुख मन्त्र–यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
- प्रविष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरूगायाय वृष्णे
- पुरुष सूक्त के प्रमुख मन्त्र–सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
- तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
  छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।
- ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
  उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।
- चन्द्रमा मनसो जातश् चक्षोः सूर्यो अजायत।
  मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।।

52. यजुर्वेदीय शिवसंकल्पमन्त्राणां कः ऋषिः?

(a) शिवसंकल्पः (b) मनस्
(c) गौतमः (d) विश्वामित्रः

उत्तर-(c)

यजुर्वेदीय शिवसंकल्पसूक्त के ऋषि गौतम हैं और देवता मनस् हैं।

- अग्नि सूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा हैं तथा यह पृथ्वीस्थानीय देवता हैं।
- इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि गृत्समद हैं।
- विष्णु द्युस्थानीय देवता तथा दीर्घतमा ऋषि हैं।
- रूद्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता तथा गृत्समद ऋषि हैं।
- सोम पृथ्वीस्थानीय देवता तथा कण्व ऋषि हैं।
- पुरुष सूक्त के ऋषि नारायण तथा देवता पुरुष हैं।

53. ब्राह्मणग्रन्थानां विषयो नास्ति-

(a) छन्दोविवेचनम् (b) पुराकल्प
(c) विधिः (d) प्रशंसा

उत्तर-(a)

छन्द का विवेचन ब्राह्मण ग्रन्थों का विषय नहीं है।

- ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मंत्राणां व्याख्यानग्रन्थः।
  मीमांसा दर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने ब्राह्मणग्रन्थों के 10 प्रतिपाद्य विषय बतलाये हैं–''हेतुर्निर्वचनम् निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।।

परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै।।

ब्राह्मण ग्रन्थ के प्रयोजन–

नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।।

- **ऋग्वेदीय ब्राह्मण**–ऐतरेय और शांखायन
- **शुक्ल यजुर्वेद**–शतपथ ब्राह्मण
- **कृष्ण यजुर्वेद**–तैत्तिरीय ब्राह्मण
- **समवेदीय**–पंचविंश (तांड्य ब्राह्मण), षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, देवताध्याय, मंत्रोपनिषद् ब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण, वंश, जैमिनीय (तलवकार), आर्षेय, छान्दोग्य ब्राह्मण।
- **अथर्ववेदीय ब्राह्मण**–गोपथ ब्राह्मण

54. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं निम्नाङ्कितेषु समानाक्षरं नास्ति-

(a) ऊ (b) ऋ
(c) ए (d) आ

उत्तर-(c)

ऋग्वेद प्रातिशाख्यानुसार ए समानाक्षर नहीं है।

- समानाक्षर–अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ ।
- सन्ध्यक्षर–ए ओ, ऐ औ
- स्पर्श–कादयोः मावसाना (क से म तक)
- अन्तःस्थ–य र ल व
- सोष्म–श ष स ह
- अनुस्वार–विसर्ग

55. 'अथ आकारचिन्तनं देवतानाम्' इति कथनम् अस्ति–

(a) कौषीतकिब्राह्मणग्रन्थे (b) ऋक्प्रातिशाख्ये
(c) निरुक्ते (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

उत्तर-(c)

'अथ आकारचिन्तनं देवतानाम्। पुरुषविद्याः स्युरित्येकम्। यह निरुक्त का कथन है।

- निरुक्त से तात्पर्य–निर्वचन, व्युत्पत्ति है।
- यास्ककृत निरुक्त में 12 अध्याय है। इसमें 2 परिशिष्ट अध्याय है।

- निघण्टु वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें पांच अध्याय हैं।
- दुर्गाचार्य ने ऋज्वर्थवृत्ति नाम की टीका लिखी। वररुचि की टीका का नाम **निरुक्त-निचय** है।
- यास्कानुसार सारे नाम धातुज हैं।
- भावप्रधानम् आख्यातम्। सत्त्वप्रधानानि नामानि
- न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान् निराहुः इति शाकटायनः।
- इन्द्रिय नित्यं वचनम् ओदुम्बरायणः।

56. शब्दब्रह्मणः अनुकारः कः अस्ति?

(a) वेदः (b) सगुणब्रह्म
(c) अक्षरम् (d) स्फोटः

उत्तर-(a)

शब्द ब्रह्मणः अनुकारः वेदः अस्ति।

वेद—विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः।

आचार्य सायण के अनुसार वेद ''इष्टप्राप्त्यनिष्ट-परिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।

- वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
- ब्रह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।
- **वैदिक साहित्य का विभाजन—**संहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद्।
- वेदों के संरक्षण के उपाय की अष्टविकृतियां
  जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजो, दण्डो रथो घनः।
  अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः।
- अनर्थकाः हि मन्त्राः कौत्सः।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नैरुक्त प्रक्रिया विधि से ऋग्वेद के सात मण्डलों का संस्कृत और हिन्दी में भाष्य किया है।

57. शब्दस्य ग्राह्यत्वशक्तिः का भवति?

(a) ययाशब्दस्य स्वरूपं प्रकाश्यते
(b) ययाशब्दः भिन्नान् अर्थान् बोधयति
(c) ययाशब्देन अर्थबोधो भवति
(d) ययाधर्मस्य प्राप्तिर्भवति

उत्तर-(d)

यथा धर्मस्य प्राप्तिर्भवति सैव शब्दस्य ग्राहत्वशक्तिः भवति।

58. 'अनुगङ्गम् वाराणसी' इत्यत्र 'अनुगङ्गम्' इति समस्तपदे अव्ययीभावसमासविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(a) अनुर्यत्समया
(b) सह सुपा
(c) लक्षणेनाभिप्रती अभिमुख्ये
(d) यस्य चायामः

उत्तर-(d)

'अनुगङ्गम् वाराणसी' यहां अनुगङ्गम् इस समस्त पद में अव्ययीभाव समास'यस्य चायामः' सूत्र है।

- गङ्गायाः अनु इत्यनुगङ्गम् वाराणसी, अत्र 'यस्य चायामः' इति समासे प्रातिपदिक संज्ञायाम् प्रथमानिर्दिष्टम् इत्यनेन 'अनु इत्यस्योपसर्जनसंज्ञायाम् 'उपसर्जन पूर्वम्' इति पूर्व प्रयोगे 'अव्ययीभावश्च' इति नपुंसकसंज्ञायां 'ह्रस्वो नपुंसके-ह्रस्वत्वे एकदेशविकृतन्यायेन समुदायात् सौ 'अव्ययीभावश्च' इत्यव्ययसंज्ञायां नाव्ययीभावादतोऽम्त्व पञ्चम्याः' इति सोरभि पूर्वरुपे 'अनुगङ्गम् वाराणसी' इति।।

59. 'आक्रमते सूर्यः' इत्यत्रात्मनेपदविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(a) वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः (b) आङ् उद्गमने
(c) वेः पादविहरणे (d) आङो यमहनः

उत्तर-(b)

''आक्रमते सूर्यः'' इत्यत्रात्मनेपदविधायकं सूत्रं 'आङ् उद्गमने' अस्ति।

'आङ् उद्गमने'- ऊपर उठना अर्थ गम्यमान होने पर आङ् उपसर्ग से परे क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है।

जैसे- 'आक्रमते सूर्यः -सूर्य ऊपर उठता है। उदित होता है। यहाँ पर आङ्पूर्वक क्रम धातु है और ऊपर उठना अर्थ भी है। अतः 'आङ् उद्गमने' सूत्र से आत्मनेपद का विधान हुआ।

60. वेदस्य घ्राणं किमुच्यते?

(a) शिक्षा (b) छन्दः
(c) कल्पः (d) निरुक्तम्

उत्तर-(a)

शिक्षा वेद की नासिका (घ्राण) है।

षड् वेदाङ्गों को वेद रूपी पुरुष के छः अङ्गों के रूप में बतलाया गया है-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

शिक्षा—वर्णोच्चारण की शिक्षा देना—(स्वरवर्णादुच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा)

व्याकरण—व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्।

छन्द—यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः।

निरुक्त—यह निर्वचन, व्युत्पत्तिशास्त्र है।

ज्योतिष—सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पदार्थों की गणना से सम्बद्ध विज्ञान ज्योतिष है।

कल्प—यज्ञ सम्बन्धी विधियों का प्रतिपादन किया जाता है।

61. व्यासभाष्यानुसारं चित्तभूमयः कति सन्ति?

(a) पञ्च (b) चतस्रः
(c) षट् (d) सप्त

उत्तर-(a)

व्यास भाष्यानुसार चित्त की पांच भूमियां है।

- क्षिप्त-मूढ़-विक्षिप्त-निरुद्ध-एकाग्र।
- योगसूत्र में चार पाद हैं–समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद
- अथयोगानुशासनम् सूत्र में अथ पद का अर्थ–अधिकार-वाचक है।
- योग का लक्षण–अथयोगानुशासनम्
- चित्त की वृत्तियां भी पांच प्रकार की होती हैं– ''प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।
- पञ्चक्लेश–अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।
- समाधि दो प्रकार की होती है–सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात।
- वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता का अनुगम होने से सम्प्रज्ञात समाधि होती है।
- असम्प्रज्ञात समाधि–विराम प्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कार शेषोऽन्यः।
- भव प्रत्ययो विदेह प्रकृतिलयानाम्।
- ईश्वर का लक्षण–क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।
- प्रणव ईश्वर का वाचक है।

62. ''शारीरकभाष्यम्' इति नाम्ना प्रसिद्धं भाष्यं कं ग्रन्थं अधिकृत्य वर्तते?

(a) चरकसंहिताम् (b) भावप्रकाशम्
(c) ब्रह्मसूत्रम् (d) माण्डूक्योपनिषदम्

उत्तर-(c)

शारीरक भाष्य आचार्य शङ्कर का ब्रह्मसूत्र पर भाष्य है।

ब्रह्मसूत्र पर लिखित अन्य भाष्य और भाष्यकार

- भास्कर–भास्करभाष्य–(भेदाभेद)
- रामानुज–श्रीभाष्य–(विशिष्टाद्वैत)
- मध्व–पूर्णप्रज्ञभाष्य–(द्वैतवाद)
- निम्बार्क–वेदान्तपारिजात–(द्वैताद्वैत)
- श्रीकण्ठ-शैवभाष्य-शैवविशिष्टाद्वैत
- श्रीपति–श्रीकरभाष्य–(वीरशैवविशिष्टाद्वैत)
- वल्लभ–श्रीकरभाष्य–(वीरशैवविशिष्टाद्वैत)
- वल्लभ–अणुभाष्य–(शुद्धाद्वैत)
- विज्ञानभिक्षु–विज्ञानामृत–(अविभागाद्वैत)
- बलदेव–गोविन्दभाष्य–(अचिन्त्यभेदाभेद।)
- ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं।

63. 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिकोऽभावः' को भवति?

(a) अन्योन्याभावः (b) प्रागभावः
(c) प्रध्वंसाभावः (d) अत्यन्ताभावः

उत्तर-(a)

तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिकोऽभावः अन्योन्याभावः भवति।
वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ हैं–
द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभाव

- **अभाव–**प्रतियोगिज्ञानाधीनज्ञान विषयत्वम् अभावत्वम्।
- अभाव के चार भेद–प्राग्भाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव।
- प्राग्भाव–अनादिः सान्तः प्राग्भावः। उत्पत्तेः पूर्वं कार्यस्य।
- प्रध्वंसाभाव–सादिरनन्तः प्रध्वंसः।उत्पत्यनन्तरं कार्यस्य।
- अत्यन्ताभाव–त्रैकालिक संसर्गावच्छिन्न प्रतियोगिताकोऽत्यन्ताभावः। यथा–भूतले घटो नास्ति
- – अन्योन्याभाव–तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताकोऽन्योन्याभावः। यथा, घटः पटः न इति।

वैशेषिक दर्शन प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण स्वीकारता है।

64. सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न तिष्ठति, स किमुच्यते?

(a) व्याप्तिः (b) पक्षः
(c) परामर्शः (d) सपक्षः

उत्तर-(b)

सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न तिष्ठति, स पक्षः।

- सिषाधयिषा–साध्यं साधयितुम् इच्छा' धूमवत्त्वे हेतौ पर्वतः।
- व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता।
- निश्चित साध्यवान् सपक्षः। रसोईघर।
- निश्चितसाध्याऽभाववान् विपक्षः–महासरोवर
- परार्थानुमान का बोध पञ्चावय वाक्य द्वारा होता है

(1) प्रतिज्ञा–पर्वतो वह्निमान् (पर्वत वह्निमान है)
(2) हेतु–धूमत्वात् (क्योंकि वह धूमवान् है)
(3) उदाहरण–यो-यो धूमवान् स स वह्निमान् यथा महानसः
(4) उपनय–तथा चाऽयम् (उसी प्रकार यह है)
(5) निगमन–तस्मात् तथा इति (अतः इसमें भी वैसी ही अग्नि है। इस प्रकार पञ्चावयव वाक्य के द्वारा प्रतिपादित लिङ्ग से दूसरा व्यक्ति भी पर्वत पर अग्नि का अनुमान कर लेता है।

65. जैनदर्शनं कं सिद्धान्तं न मन्यते?

(a) कर्मवासनासिद्धान्तम्
(b) कर्मफलस्यक्रमजन्यता-सिद्धान्तम्
(c) कर्मफलनाशसिद्धान्तम्
(d) आत्मनो नित्यतासिद्धान्तम्

उत्तर-(d)

जैनदर्शनं आत्मनो नित्यता सिद्धान्तं न मन्यते।

- जैन दर्शन में अहिंसा का सर्वोच्च स्थान है।
- जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हुए जिसमें प्रथम ऋषभदेव तथा अन्तिम महावीर स्वामी हुए।
- जैन दर्शन में कर्म के आठ मुख्य भेद बताए गये हैं। ज्ञानवरण, दर्शनवरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अन्तराय। कर्म के मुख्यतया दो भेद–घातीय (नाशवान
- अघातीय (जो नाशवान नहीं है)।
- जैन दर्शनानुसार कर्म पुद्गल का जीव सत्ता में प्रवेश करने को आस्त्रव कहते हैं। आस्त्रव जीव के बन्धन का कारण है।
- जैन दर्शन के तीन रत्न हैं–सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चरित्र।
- पांच अणुव्रत–अहिंसा-सत्य-अस्तेय-अपरिग्रह-ब्रह्मचर्य।

66. ''प्रयोजनेन सहितं लक्षणीयं न युज्यते''–इत्युक्तिः केन सम्बद्धा?

(a) व्यञ्जनायाः पृथग्वृत्तित्वस्वीकारेण
(b) अभिधायाः प्राथम्येन
(c) लक्षणायाः गौणत्वस्वीकारेण
(d) तात्पर्यार्थस्वीकारेण

उत्तर-(c)

''प्रयोजनेन सहितं लक्षणीयं न युज्यते'' यह उक्ति प्रयोजन विशिष्ट में लक्षणा के गौणत्व को स्वीकार किया गया है।
प्रयोजन के सहित लक्ष्यार्थ मानना सङ्गत है।

- **अभिधामूला व्यञ्जना–**

अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते।
संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद् व्यापृतिरञ्जनम्।।

(संयोग आदि के द्वारा अनेकार्थक शब्दों के वाचकत्व के एक अर्थ में नियन्त्रित हो जाने पर उससे भिन्न अवाच्य अर्थ की प्रतीति कराने वाला शब्द का व्यापार अभिधामूला व्यञ्जना कहलाता है।
काव्य-प्रयोजन–''काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे।।

- काव्य लक्षण–''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।
- भामह का काव्य लक्षण–शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यम् पद्यं च तद् द्विधा।
- दण्डी का काव्य लक्षण–शरीरं तावदिष्टार्थ–व्यवच्छिना पदावली
- विश्वनाथ के अनुसार काव्य-लक्षण–वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।

67. काव्यप्रकाशे ''परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः'' इति कस्यालङ्कारस्य लक्षणम्?

(a) श्लेषस्य (b) उपमायाः
(c) समासोक्तेः (d) वक्रोक्तेः

उत्तर-(c)

''परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः।

- श्लेषयुक्त विशेषणों द्वारा अप्रकृत के व्यवहार का कथन दो अर्थों का संक्षेप से कथन होने के कारण समासोक्ति अलङ्कार कहलाता है।

जैसे– लब्ध्वा तव बाहुस्पर्शं यस्याः स कोऽप्युल्लासः।
जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा।।

निदर्शना–अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः।
जैसे– क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तीतीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।

अर्थान्तरन्यास अलङ्कार–

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यास साधर्म्येणेतरेण वा।।

उदाहरण–निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।
पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्।
प्रतिवस्तूपमा–सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः।
उदाहरण–''देवीभावं भवि परिवादपदं कथं भजत्वेषा
न खलु परिभोग योग्यं दैवतरूपाङ्कितं रत्नम्।

68. पण्डितराजश्रीजगन्नाथमतानुसारं- रमणीयार्थप्रतिपादकस्य कस्य काव्यत्वं भवति?

(a) रसस्य (b) अर्थस्य
(c) अलङ्कारस्य (d) शब्दस्य

उत्तर-(d)

पण्डितराज जगन्नाथ के मतानुसार ''रमणीयार्थप्रतिपादकस्य शब्दः काव्यम्।।

- भामह का काव्य लक्षण–''शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद् द्विधा।
- दण्डी का काव्य-लक्षण–शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली।
- वामन का काव्य लक्षण–रीतिरात्मा काव्यस्य
- आनन्दवर्धन का मत–''काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैःयः समाम्नातपूर्वः।
- राजशेखर का काव्य लक्षण–'शब्दार्थौ ते शरीरं, संस्कृतं मुखं, प्राकृतः बाहुः।
- **कुन्तक के अनुसार काव्य लक्षण–**

''शब्दार्थौ सहितौ वक्र कविव्यापार शालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।।

- विश्वनाथ का काव्य-लक्षण–''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'

69. ''धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥''
काव्यफलविषये श्लोकोऽयमस्ति-

(a) रसगङ्गाधरे (b) काव्यप्रकाशे
(c) वक्रोक्तिजीविते (d) काव्यादर्शे

उत्तर-(c)

''धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥
यह कुन्तक द्वारा प्रतिपादित काव्य प्रयोजन है जिसका उल्लेख वक्रोक्तिजीवतम् में किया है।

भामह प्रतिपादित काव्य-प्रयोजन—
धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्॥

वामनाभिमत काव्य के प्रयोजन—काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थे प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्।

- **मम्मट के द्वारा प्रतिपादितकाव्य-प्रयोजन—**
''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥
- **उपदेश की त्रिविध शैली**—शब्दप्रधान, अर्थप्रधान तथा रसप्रधान।

ये तीनों शैली क्रमशः—प्रभुसम्मित, सुहृत्सम्मित तथा कान्तासम्मित पदों से निर्दिष्ट है।

- **भरतमुनि का प्रयोजन—**
उत्तमाधममध्यानां नराणां कर्मसंश्रयम्।
हितोपदेशजननं धृति-क्रीडा-सुखादिकृत॥...

70. शब्दरीतिनिर्णयविषये कस्य ग्रन्थकारस्य नाम राजशेखरेण काव्यमीमांसायां प्रथमेऽध्याये उल्लिखितम्?

(a) प्रचेतसः (b) चित्राङ्गदस्य
(c) पराशरस्य (d) सुवर्णनाभस्य

उत्तर-(d)

राजशेखर ने काव्यमीमांसा के प्रथमाध्याय में 'शब्दरीति निर्णय' के विषय में सुवर्णनाभ का उल्लेख किया है।
राजशेखर ने अन्य ग्रन्थकारों का भी उल्लेख किया है–
प्रचेता जो अनुप्रास के विवेचक अंश की रचना की, यम ने यमक पर ग्रन्थ रचा, चित्राङ्गद नामक आचार्य ने चित्रकाव्यों का विवेचन किया।

- आचार्य शेष ने शब्द-श्लेष से सम्बद्ध ग्रन्थ की रचना की, औपकायन नामक आचार्य ने उपमालंकार का विवेचन किया। पाराशर ने अतिशयोक्ति अलंकार पर ग्रन्थ निर्मित किया। उतथ्य ने अर्थश्लेष पर ग्रन्थ लिखा।
- कुबेर ने उभयालंकार पर ग्रन्थ लिखा। कामदेव ने विनोद पर ग्रन्थ लिखा
- नन्दिकेश्वर ने रस-विषयक ग्रन्थ की रचना की।
- काव्यमीमांसा में अठारह अध्याय हैं।
- प्रथमाध्याय का नाम शास्त्रसंग्रह है। इसके अनुसार शिव ने ब्रह्म को काव्योपदेश दिया था। ब्रह्म के शिष्य काव्यपुरुष ने 18 शिष्यों को 18 विषय पढ़ाये, प्रत्येक ने अपने-अपने विषय का ग्रन्थ लिखा। सभी का संग्रह संक्षेप में राजशेखर ने काव्यमीमांसा के 18 अधिकरणों में किया।

71. प्राचीनाभिलेखेषु 'प्रियदर्शी' इत्युपाधिरस्ति-

(a) कनिष्कस्य (b) अशोकस्य
(c) हर्षस्य (d) समुद्रगुप्तस्य

उत्तर-(b)

प्रियदर्शी उपाधि अशोक के प्रथम शिलालेख में ही प्राप्त होता है—
''इयं धम्मलिपि देवानां पियेना पियदसिला लेखिता''
मौर्य सम्राट अशोक के ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामेइक और यूनानी लिपियों में अंकित अभिलेख देश के विभिन्न भागों से 14 अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

- धम्मलिपि देवानांप्रिय (देवताओं में प्रिय) अशोक द्वारा लिखवाई गयी।
- गुजरात की गिरनार पहाड़ियों में प्राप्त अशोक के 14 शिलालेखों में से प्रथम शिलालेख पर राजा जीवों पर दया की भावना से पशुयज्ञ और पशु-मांस भक्षण की निषेधाज्ञा जारी की गयी है।
- अशोक के अभिलेख प्राकृत भाषा में है तथा ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण किये गये हैं।
- 13वें शिलालेख में कलिंग विजय का वर्णन है।

72. हरिषेणेन रचितः अस्ति-

(a) महरौली-लौह-स्तम्भ-अभिलेखः
(b) स्कन्दगुप्तस्य गिरनार-शिलालेखः
(c) चन्द्रगुप्तस्य मथुरा-अभिलेखः
(d) समुद्रगुप्तस्य अलाहाबाद-स्तम्भलेखः

उत्तर-(d)

हरिषेण विरचित समुद्रगुप्त का इलाहाबाद शिलालेख अथवा प्रयाग स्तम्भ लेख है। यह मूलतः कौशाम्बी में था जहाँ से इसे इलाहाबाद किले में लाया गया। इसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के प्रमुख अभिलेख–मथुरा स्तम्भलेख, उदयगिरि का प्रथम और द्वितीय गुहालेख, गढ़वा का प्रथम शिलालेख, सांची शिलालेख, मेहरौली प्रशस्ति।

स्कन्दगुप्त के अभिलेख-जूनागढ़ प्रशस्ति, इन्दौर ताम्रलेख, भितरी स्तम्भ लेख, कहांव स्तम्भ लेख, सुपिया स्तम्भलेख।

- भानुगुप्त का एरण स्तम्भलेख
- मेहरौली का लौहस्तम्भ दिल्ली में कुतुबमीनार के पास स्थित है।
- सबसे प्राचीन अभिलेख बोगजकोई अभिलेख है। इसका निर्माण मितन्वी शासकों द्वारा किया गया था।
- खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख भुवनेश्वर में है।
- रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख को गिरनार अभिलेख भी कहा जाता है।

73. भारतवर्षस्य यत्र उल्लेखोऽस्ति-

(a) खारवेलस्य हाथी-गुम्फा-अभिलेखः
(b) चन्द्रगुप्तस्य मथुरा-अभिलेखः
(c) स्कन्दगुप्तस्य भितरी-अभिलेखः
(d) कुमारगुप्तस्य बिलसद-स्तम्भलेखः

उत्तर-(a)

भारतवर्ष का उल्लेख सर्वप्रथम खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में प्राप्त होता है।

- हाथीगुम्फा अभिलेख भुवनेश्वर से 4-5 मील दूर एक पहाड़ी में स्थित है।
- खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था। इस शिलालेख में चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमङ्गल के कार्यों का उल्लेख है।
- स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्रपत्र अभिलेख उ0प्र0 के बुलंदशहर से पाया गया।

  हर्षवर्धन का बांसखेड़ा ताम्रपत्र लेख उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले से प्राप्त हुआ। इस ताम्रपत्र में उन गांवों का विवरण है जो अग्रहार दान के लिए इस प्रतापी राजा ने ब्राह्मणों को दिया।
- कनिष्क का सारनाथ बौद्ध प्रतिमालेख है। इसकी लिपि ब्राह्मी है।

- अशोक के 14 दीर्घ शिलालेख प्राप्त हुए हैं–धौली, शहबाजगढ़ी, कालसी, मानसेहरा, जौगढ़, सोपारा, एर्रागुडि, गिरनार।

  लघुशिलालेख–रूपनाथ, गुर्जरा, भाब्रू, मास्की, सहसाराम, महास्थान, आदि।

74. भारतस्य प्राचीनतमा लिपिः-

(a) देवनागरी (b) शारदा
(c) ब्राह्मी (d) खरोष्ठी

उत्तर-(c)

भारत की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी है।

सर्वप्रथम इस लिपि के लेख अशोक के समय से प्राप्त हुए किन्तु कुछ वर्ष पूर्व इस लिपि के दो छोटे-छोटे लेख प्राप्त हुए जिनमें से एक पिपरहवा के स्तूप से और बर्ली गांव से प्राप्त हुआ।

- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1750 में टी.फैन्थेलर ने खोजा था।
- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 में कलकत्ता टकसाल के अधिकारी एवं एशियाटिक सोसायटी के सचिव **जेम्स प्रिंसेप** ने पढ़ा था। इन्होंने दिल्ली-टोपरा अभिलेख को पढ़ा था। इस समय अलेक्जेंडर कनिंघम इनके सहायक थे।

75. वत्सभट्टिरचितः अभिलेखः अस्ति-

(a) चन्द्रगुप्तस्य मथुरा-अभिलेखः
(b) तन्तुवायश्रेण्याः मन्दसौर-अभिलेखः
(c) स्कन्दगुप्तस्य गिरनार- अभिलेखः
(d) प्रभावतीगुप्तायाः पूना-ताम्रपट्ट-अभिलेखः

उत्तर-(b)

मंदसौर अभिलेख संस्कृत विद्वान् वत्सभट्टि द्वारा रचित अभिलेख में कुमारगुप्त के राज्यपाल तन्तुवर्मा और सूर्य मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। यह म0प्र0 के दशपुर में स्थित है।

भीतरी अभिलेख–इसमें स्कन्दगुप्त द्वारा हूणों की पराजय तथा पुष्यमित्रों के साथ हुए युद्ध का वर्णन मिलता है। यह (गाजीपुर) उ0प्र0 में स्थित है।

जूनागढ़ अभिलेख–इसमें गुप्तसम्वत् का उल्लेख है। यह स्कन्दगुप्त का महत्वपूर्ण अभिलेख है।इसमें हूण आक्रमण की सूचना मिलती है।

एरण अभिलेख–यह भानुगुप्त का अभिलेख है। इसमें सबसे पहले सती प्रथा का अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है।

प्रयाग प्रशस्ति–कवि हरिषेण द्वारा रचित इस प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की दिग्विजय और उनकी महत्ता का वर्णन मिलता है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-July-2016
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. वाजसनेयिमाध्यन्दिन संहिता सम्बन्धिता अस्ति–

(a) कृष्णयजुर्वेदेन (b) शुक्लयजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर–(b)

वाजसनेयिमाध्यन्दिन संहिता शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित है।
ऋग्वेद की शाखाएं–शाकल और बाष्कल।
शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएं–माध्यन्दिन (वाजसनेयि) और काण्व
कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएं–तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल
सामवेद की शाखाएं–कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय
अथर्ववेद की शाखाएं–शौनक और पैप्पलाद
शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मणग्रन्थ-शतपथ ब्राह्मण है। आरण्यक ग्रन्थ-बृहदारण्यक है। उपनिषद् ग्रन्थ-ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् है।

- कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण तैत्तिरीय-ब्राह्मण, आरण्यक-तैत्तिरीय आरण्यक, उपनिषद्-तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायणोपनिषद् है।
- सामवेद और अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं पाया जाता है। अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ है।

2. वेदा अपौरुषेयाः सन्तीति मतमस्ति–

(a) महर्षिदयानन्दस्य (b) ए. वेबरस्य
(c) मैक्समूलरस्य (d) विन्टरनिट्जस्य

उत्तर–(a)

महर्षि दयानन्द ने वेद को अपौरुषेय कहा है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं। इन्होनें नैरुक्त प्रक्रिया का आश्रय लेकर वेदों की नवीनतम व्याख्या प्रस्तुत की है। सम्पूर्ण शुक्ल यजुर्वेद का संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या किया है। महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। वेदों में नित्य इतिहास है, लौकिक इतिहास नहीं। इनके अनुसार वेद केवल यज्ञविषयक नहीं हैं अपितु इनके अनेक प्रयोग हैं।
आचार्य सायण ने वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों की व्याख्या की है। सायण ने परम्परागत शैली को अपनाया तथा यज्ञ-प्रक्रिया को सर्वत्र प्रधानता दी है।

- वेदों की व्याख्या के लिए आवश्यक नियमों का निर्देश आचार्य यास्क ने दिया।

3. वैतानश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति–

(a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर–(c)

वैतान श्रौतसूत्र 'अथर्ववेद' से सम्बन्धित है।
अथर्ववेद का गृह्यसूत्र कौशिक सूत्र है।
ऋग्वेद का श्रौतसूत्र आश्वलायन और शांखायन है।

- शुक्ल यजुर्वेद का श्रौतसूत्र कात्यायन श्रौतसूत्र है।
- कृष्ण यजुर्वेद का श्रौतसूत्र बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, सत्याषाढ, वाराह, वैखानस श्रौतसूत्र।
- सामवेद का श्रौतसूत्र आर्षेय या मशक, कल्पसूत्र या हिरण्यकेशी, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान सूत्र, उपनिदान सूत्र हैं।
- अथर्ववेद की शाखाएं शौनकीय और पैप्पलाद हैं।
- अथर्ववेद का ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है। इसका कोई भी आरण्यक नहीं पाया जाता है।
  उपनिषद्–प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्योपनिषद् हैं।

**4. 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥' अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति?**

(a) रुद्रः (b) अग्निः
(c) सोमः (d) सविता

उत्तर–(b)

'स नः पितेव सूनवे...' इस मन्त्र के देवता 'अग्नि' हैं।
अग्निसूत्र ऋग्वेद का पहला ही मन्त्र है।
इसके देवता अग्नि और ऋषि मधुच्छन्दा है।

- ''यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, यो रन्ध्रस्य चोदिता यः'' इन्द्र सूक्त का मन्त्र है।
- ''आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो''–सवितृ सूक्त
- चन्द्रमा मनसो जातश- पुरुषसूक्त
- सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष; (पुरुषसूक्त का मन्त्र है।)
- छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्
- राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्
- अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
- अग्निसूक्त का मन्त्र है।
- यस्य त्री पूर्णा मधुना
- मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः- विष्णुसूक्त का मन्त्र है।

5. मुण्डकोपनिषत्केन वेदेन सह सम्बद्धा अस्ति?

(a) यजुर्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(b)

मुण्डकोपनिषद् का सम्बन्ध अथर्ववेद संहिता से है।
अथर्ववेद के अन्य उपनिषद्–प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्य हैं।
ऋग्वेद से सम्बन्धित उपनिषद्–ऐतरेय,कौषीतकि, बाष्कल मन्त्रोपनिषद्।
शुक्ल यजुर्वेद संहिता के उपनिषद्–ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्
कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद्–तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायणोपिनिषद्।
सामवेद संहिता के उपनिषद्–छान्दोग्य और केनोपनिषद्
अथर्ववेद संहिता के कोई भी आरण्यक ग्रन्थ नहीं हैं।
अथर्ववेद की शाखाएं–शौनक और पैप्पलाद
अथर्ववेद का श्रौतसूत्र–वैतान श्रौत सूत्र और गृह्यसूत्र कौशिक है।
ऋग्वेद संहिता की शाखाएं–शाकल और बाष्कल
शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएं–माध्यन्दिन या वाजसनेयि और काण्व संहिता
कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएं–तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल
सामवेद की शाखाएं–कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय है।

6. 'षड्विंशब्राह्मणम्' इति ग्रन्थः केन वेदेन सह सम्बद्धोऽस्ति?

(a) यजुर्वेदेन (b) ऋग्वेदेन (c) अथर्ववेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(d)

''षड्विंशब्राह्मण'' का सम्बन्ध सामवेद से है।
सामवेद के अन्य ब्राह्मण–तांड्यमहाब्राह्मण, सामविधान, आर्षेय, मन्त्र ब्राह्मण या उपनिषद् ब्राह्मण, देवताध्याय, वंश ब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण।
ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ–ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ–शतपथ
कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मणग्रन्थ–तैत्तिरीय ब्राह्मण
अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है।
ऋग्वेद संहिता का आरण्यक–ऐतरेय, शांखायन आरण्यक
शुक्ल यजुर्वेद का आरण्यक–बृहदारण्यक
कृष्ण यजुर्वेद का आरण्यक–तैत्तिरीय आरण्यक है।
सामवेद का आरण्यक तलवकार है। और अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं है।

7. 'तलवकार-आरण्यकम्' केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(d)

तलवकार आरण्यक सामवेद से सम्बन्धित है।
यह सामवेद की जैमिनीय शाखा का आरण्यक है, इसको जैमिनीयोपनिषद् भी कहते हैं, इसमें चार अध्याय हैं।
इसमें वर्णन है कि सृष्टि प्रक्रिया का प्रारम्भ वेदों से हुआ है।
वेद और उनसे सम्बन्धित आरण्यक–
ऋग्वेद–ऐतरेय और शांखायन आरण्यक
शुक्ल यजुर्वेद–बृहदारण्यक
कृष्ण यजुर्वेद–तैत्तिरीय और मैत्रायणी आरण्यक (मत्रायणीय उपनिषद्)
सामवेद–तलवकार आरण्यक (जैमिनीय उपनिषद्)
अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं है।

8. 'विश्वामित्र-नदी' सूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?

(a) वसिष्ठः (b) विश्वामित्रः
(c) मधुच्छन्दाः (d) दीर्घतमाः

उत्तर–(b)

विश्वामित्रः–नदी सूक्त के ऋषि विश्वामित्र हैं, इसमें 13 मन्त्र हैं, यह तीसरे मण्डल का 33वां सूक्त है, इसके देवता नदी है।
पुरुष सूक्त (10.90)–इसके ऋषि नारायण और देवता पुरुष है।
यम-यमी (10.10)–इसके देवता यमो वैवश्वत हैं।
पुरुरवा-उर्वशी (10.95)–इसके ऋषि पुरुरवा ऐल और उर्वशी ऋषिका है।
सरमा-पणि (10.108)–इसमें 11 मन्त्र हैं।
नासदीयसूक्त के ऋषि देवता परमेष्ठी प्रजापति हैं।
वाक्सूक्त के ऋषि स्वयं वाक् हैं।
अग्निसूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा हैं।
विष्णुसूक्त के ऋषि दीर्घतमा हैं।
हिरण्यगर्भ के देवता-कसंज्ञक प्रजापति और ऋषि-हिरण्यगर्भ हैं।

9. 'पुरुरवा-उर्वशी' सूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(a) 17 (b) 18 (c) 19 (d) 20

उत्तर–(b)

पुरुरवा-उर्वशी में 18 मन्त्र हैं।
यह दशवें मण्डल का 95वां सूक्त है।
विश्वामित्र-नदी संवादसूक्त तीसरे मण्डल का 33वां सूक्त है। इसमें 13 मन्त्र हैं।
सरमा-पणि संवादसूक्त में 11 मन्त्र हैं, यह दशवें मण्डल का सूक्त है।
यम-यमी दशवें मण्डल का सूक्त है, इसमें 14 मन्त्र हैं।
इन्द्रसूक्त में 15 मन्त्र, हिरण्यगर्भ में 121 मन्त्र
पुरुषसूक्त 90 मन्त्र, रुद्र सूक्त में 15मन्त्र
अग्निसूक्त में 9 मन्त्र, पर्जन्यसूक्त में 10मन्त्र
सवितृ सूक्त में 11 मन्त्र हैं।
मरुत् सूक्त में 12 मन्त्र हैं।

10. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः–

(a) यम-यमी संवादसूक्तम् (i) यजुर्वेदः
(b) कठोपनिषद् (ii) सामवेदः
(c) लाट्यायनश्रौतसूत्रम् (iii) ऋग्वेदः
(d) माण्डूक्योपनिषद् (iv) अथर्ववेदः

(a) (iii) (iv) (ii) (i) (b) (iii) (ii) (iv) (i)
(c) (iii) (iv) (i) (ii) (d) (iii) (i) (ii) (iv)

उत्तर–(d)

यम-यमी संवाद (10.10) ऋग्वेद से, कठोपनिषद् यजुर्वेद से (कृष्ण यजुर्वेद), लाट्यायन श्रौतसूत्र सामवेद से और माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद से सम्बन्धित है।
संवादसूक्त–पुरुरवा-उर्वशी (10.95)
सरमा-पणि (10.108) यह सभी ऋग्वेद के संवादसूक्त है।
विश्वामित्र-नदी (3.33)
ऋग्वेद के उपनिषद्–ऐतरेय, कौषीतकि
शुक्ल यजुर्वेद–ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्
कृष्ण यजुर्वेद–तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्तरोपनिषद्, मैत्रायणी
सामवेद–छान्दोग्य और केनोपनिषद्
अथर्ववेद से सम्बन्धित उपनिषद् प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्योपनिषद् हैं।
सामवेद के श्रौतसूत्र-जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण

11. अधस्तनेषु को ग्रन्थः कल्पवेदाङ्गान्तर्गतोऽस्ति?

(a) पारस्करगृह्यसूत्रम् (b) काशकृत्स्नव्याकरणम्
(c) ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् (d) पाणिनीयशिक्षा

उत्तर–(a)

''पारस्करगृह्यसूत्र'' 'कल्पवेदाङ्ग' के अन्तर्गत परिगणित होता है। शुक्ल यजुर्वेद की दोनों शाखाओं, वाजसनेयि और काण्व का यही एकमात्र गृह्यसूत्र है। इसमें 3 काण्ड हैं, प्रत्येक काण्ड का विभाजन कंडिकाओं में हुआ है, तीनों काण्डों में 51 कंडिकाएं हैं।
छः वेदाङ्ग के अन्तर्गत् कल्प की परिगणना होती है।
कल्प चार प्रकार के हैं–
श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र
ऋग्वेद का गृह्यसूत्र–आश्वलायन, शांखायन और कौषीतकि है।
शुक्लयजुर्वेद का एकमात्र पारस्कर गृह्यसूत्र है।
कृष्ण यजुर्वेद का बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस गृह्यसूत्र
सामवेद का गोभिल, खादिर, कौथुम, द्राह्यायण, जैमिनीय गृह्यसूत्र
अथर्ववेद का गृह्यसूत्र कौशिक गृह्यसूत्र है।

12. अधोऽङ्कितेषु वेदाङ्गमस्ति–

(a) ईशोपनिषद् (b) ऐतरेयारण्यकम्
(c) मानवशुल्बसूत्रम् (d) शतपथब्राह्मणम्

उत्तर–(c)

मानवशुल्बसूत्र वेदाङ्ग के अन्तर्गत परिगणित होता है।

- ऋग्वेद का कोई भी शुल्बसूत्र नहीं प्राप्त होता है।
- शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन शुल्बसूत्र प्राप्त होता है।
- इसके अतिरिक्त दो अन्य शुल्बसूत्र कृष्ण यजुर्वेद का बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, मैत्रायणीय और वाराह शुल्बसूत्र प्राप्त होता है।
- सामवेद अैर अथर्ववेद का कोई भी शुल्बसूत्र नहीं प्राप्त होता है।

मानव शुल्बसूत्र गद्य-पद्य मिश्रित एक छोटा ग्रन्थ है, इसमें नवीन वेदियों का वर्णन मिलता है जो अन्य शुल्बसूत्रों में नहीं प्राप्त होता है। वेदाङ्गों की संख्या छः है–(1) शिक्षा (2) कल्प (3) व्याकरण (4) निरुक्त (5) छन्द (6) ज्योतिष
कल्प के चार भेद हैं–(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र
ईशोपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का एक प्रमुख उपनिषद् है।
ऐतरेयारण्यक ऋग्वेद का आरण्यक है।

13. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इत्यत्र कर्मसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(a) उपान्वध्याङ्वसः (b) अधि-शीङ्स्थाऽऽसां कर्म
(c) अधिरीश्वरे (d) अधिपरी अनर्थकौ

उत्तर–(a)

''अधिवसति वैकुण्ठं हरिः'' इसमें कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र **''उपान्वध्याङ्वसः''** लगा है। उप, अनु, अधि, आङ् पूर्वक वस् धातु के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। इस उदाहरण में वस् धातु के पहले क्रमशः उप, अनु, अधि और आ उपसर्ग होने के कारण प्रकृत सूत्र से आधार 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा हुई और ''कर्मणिद्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
''अन्तराऽन्तरेण युक्ते'' अर्थात् अन्तरा और अन्तरेण इन दोनों पदों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। ''अन्तरा त्वां मां हरिः''।
''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' अर्थात् शी, स्था और आस् धातुओं के पहले अधि लगने पर क्रिया के आधाार की कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे–अधिशेते वैकुण्ठं हरि।
''अभिनिविश्च''अर्थात् विश् धातु के पूर्व अभि और नि ये दोनों उपसर्ग लगे हों तो क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे–अभिनिविशते सन्मार्गम्।

14. 'इत्थम्भूतलक्षणे' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्भवति?

(a) जटाभिस्तापसः
(b) जपमनु प्रावर्षत्
(c) मासं कल्याणी
(d) लक्षणेत्थ्भूताख्यानभागवीप्सासू प्रतिपर्यनयः

उत्तर–(a)

'इत्थंभूतलक्षणे' इस सूत्र का उदाहरण ''जटाभिस्तापसः'' है। किसी धर्म-विशेष को प्राप्त हुए व्यक्ति अथवा वस्तु के ज्ञापक चिह्न से तृतीया विभक्ति होती है।
''जटाभिः तापसः'' इसमें मनुष्य सामान्य है। इसमें तापसत्व धर्म को प्राप्त हुआ मनुष्य इत्थंभूत है। इस इत्थंभूत 'तपस्विता' का लक्षण जटा है। जटा से ही तापस लक्षित किया जा रहा है, अतः प्रकृत सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है।
''येनाङ्गविकारः'' जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकास लक्षित हो उस अवयववाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है- यथा अक्ष्णा काणः
''कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे'' अर्थात् अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है।
जैसे–मासं कल्याणी, मासम् अधीते, क्रोशं कुटिला नदी
''जपमनु प्रावर्षत्'' में **'अनुर्लक्षणे सूत्र'** से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है।

15. 'अधिगोपम्' इत्यत्राव्ययीभावसमासः कस्मिन्नर्थे भवति?

(a) समीपार्थे (b) अत्ययार्थे
(c) विभक्त्यर्थे (d) साकल्यार्थे

उत्तर–(c)

''अधिगोपम्'' इसमें विभक्ति के अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ है। ''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-वृद्ध्यर्थाभावव्ययाऽ-सम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु।
इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में वर्तमान जो अव्यय है उसका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और यही अव्ययीभावसञ्ज्ञक समास होता है।
अधिगोपम्, अधिहरि–विभक्ति अर्थ में प्रयुक्त है।
उपकृष्णम्–समीपार्थे, सुमद्रम्–मद्राणां समृद्धि अर्थ में प्रयुक्त है।
दुर्यवनम्–व्यृद्धि अर्थ, निर्मक्षिकम्–अभाव अर्थ, अतिहिमम्–अत्ययार्थे
अतिनिद्रम्–असम्प्रति अर्थ में, अनुविष्णु–पश्चात् अर्थ में
अनुरूपम्–योग्यता अर्थ में, प्रत्यर्थम–वीप्सार्थे, सहरि–सादृश्यार्थे
सचक्रम–यौगपद्यार्थे, ससखि-सादृश्यार्थे, सक्षत्रम्-सम्पत्ति अर्थ में।
साग्नि अर्थात् प्रारम्भ से अन्त तक की अवस्था के अर्थ में प्रयोग होता है।

16. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासे किं ज्ञापकम्?

(a) 'अनेकमन्यपदार्थे' इत्यत्र 'अनेक' ग्रहणम्
(b) 'हलदन्तात् सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम्' इत्यत्र 'सञ्ज्ञायाम्' इत्यस्य ग्रहणम्
(c) 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' इत्यत्र 'सप्तमी' त्यस्य ग्रहणम्
(d) 'शेषो बहुव्रीहिः' इत्यत्र 'शेष' ग्रहणम्

उत्तर–(c)

सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ–बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त शब्द और विशेषण शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।
''कण्ठेकालः''–कण्ठे कालो यस्य सः (कण्ठ में नील वर्ण है जिसके)
यहां ज्ञापक के माध्यम से ही व्यधिकरण बहुव्रीहि समास हुआ है। सप्तम्यन्त पद कण्ठ ङि का 'सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ' से पूर्व प्रयोग होकर ''कण्ठेकालः'' बना है।
कभी-कभी बहुव्रीहि समास में भिन्न-भिन्न विभक्ति वाले पदों का भी समास होता है, केवल समानाधिकरण की ही बहुव्रीहि समास में समास नहीं होता है अपितु व्यधिकरण विभक्ति वाले पदों का भी बहुव्रीहि समास होता है।

17. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः को भवति?

(a) 'घि' सञ्ज्ञः (b) उपधासञ्ज्ञः
(c) निष्ठासञ्ज्ञः (d) संहितासञ्ज्ञः

उत्तर–(d)

''वर्णानामतिशयितः सन्निधिः'' को 'संहिता' संज्ञा कहा जाता है।
''वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहिता संज्ञः स्यात्''। अर्थात् वर्णों के अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं, अत्यधिक समीपता से अभिप्राय ''व्यवधान रहित उच्चारण'' से है।
जैसे–सुधी + उपास्यः में ईकार के बाद बिना किसी व्यवधान के 'उ' आया है अत; ई + उ इन दोनों की सामीप्यता होने से संहिता संज्ञा होती है।
''क्तक्तवतू निष्ठा''–क्त और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।
क्त में ककार तथा क्तवतु में ककार व उकार की इत्संज्ञा होकर क्रमशः ''त और तवत्''रूप शेष रहता है।
''घि संज्ञक शेषोध्यसखि'' सखि शब्द को छोड़कर नदी संज्ञक भिन्न ह्रस्व इकारान्त, उकारान्त शब्दों की घि संज्ञा होती है, जैसे-भानु, विष्णु, हरि आदि।

18. अधोलिखित कस्य सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा भवति?

(a) 'टा' इत्यस्य (b) 'ङे' इत्यस्य
(c) 'शि' इत्यस्य (d) 'ङि' इत्यस्य

उत्तर–(c)

''शि सर्वनामस्थानम्'' अर्थात् 'शि' सर्वनामस्थान संज्ञक है।
''जशशसोः शिः'' से जस् व शस् के स्थान पर होने वाले शि पद के द्वारा इसी आदेश का ग्रहण होता है। मधूनि, दधीनि आदि।
जैसे वनानि में वन + जस्-इस दशा में शि आदेश और सर्वनामस्थान संज्ञा, फिर अनुबन्ध लोप होकर ''नपुंसकस्य झलचः'' सूत्र के द्वारा नुम् आगम वन शि फिर वन इ इसके नुम् का आगम–वन न् इ सूत्र ''सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ'' से दीर्घ होकर वनानि रूप बना।

''ङे प्रथमयोरम्'' युष्मद् और अस्मद् शब्दों से परे ङे तथा प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के स्थान पर अम् आदेश होता है। हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होकर उसका न विभक्तौ तुस्माः से निषेध होकर रूप बनता है।
''जश्शसोः शिः''-नपुंसकलिङ्ग वाले शब्द से परे जस् और शस् विभक्ति के स्थान पर शि आदेश होता है।

19. 'निमित्तात् कर्मयोगे' इत्यत्र 'योग' शब्दस्य भट्टोजिदीक्षितमते कोऽर्थः?

(a) चित्तवृत्तिनिरोधः (b) संयोगसम्बन्धः केवलम्
(c) संयोग-समवायसम्बन्धो (d) स्वरूपसम्बन्धः

उत्तर–(c)

''निमित्तात् कर्मयोगे'' इस वार्तिक में योग का अर्थ ''संयोग तथा समवाय'' सम्बन्ध है।
इस वार्तिक का तात्पर्य–निमित्तवाची शब्दों से सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त कर्म से युक्त हो।
इस वार्तिक में निमित् से तात्पर्य ''फल'' से है तथा योग का अर्थ–संयोग और समवाय सम्बन्ध होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण वार्तिक का अर्थ हुआ ''जिस फल की प्राप्ति के लिए कोई क्रिया की जाती है, उस निमित्त का यदि क्रिया के कर्म के साथ संयोग और समवाय सम्बन्ध हो तो निमित्त में सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे–चर्मणि द्वीपिनं हन्ति (चर्म के लिए गैण्डे को मारता है) इसमें देखते हैं कि चर्म की प्राप्ति के लिए हनन हो रहा है अतः हनन का फल चर्म है और कर्म द्वीपी।

20. 'अधि रामे भूः' इत्यत्र 'अधि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीय-सञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

(a) अधिरीश्वरे (b) उपोऽधिके च
(c) अधि-परी अनर्थकौ (d) हीने

उत्तर–(a)

''अधि रामे भूः'' में अधि शब्द की ''अधिरीश्वरे''सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है। यहां स्वामीवाचक राम शब्द में **''यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी''** सूत्र से सप्तमी विभक्ति करने पर रामे रूप की निष्पत्ति हुई।
''अधि रामे भूः'' इस उदाहरण में स्ववाचक ''भू'' तथा स्वामिवाचक 'राम' शब्द में प्रयुक्त सप्तमी विभक्ति का अर्थ स्व-स्वामिभान है। अतः किसी एक में ही प्रयुक्त सप्तमी विभक्ति से अन्य में स्थित सम्बन्ध का भी बोध हो जाता है, इसलिए ''स्व अथवा स्वामी'' में से किसी एक ही में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।
''अधि भुवि रामः'' (पृथिवी के स्वामी राम हैं) यहाँ अधि का ऐश्वर्य अर्थ होने के कारण ''अधिरीश्वरे'' सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और उसके योग में स्ववाची भू शब्द में प्रकृत सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई।

21. को ध्वनिः अघोषमहाप्राणःअस्ति?

(a) घ् (b) छ् (c) ज् (d) ढ्

उत्तर–(b)

छ् वर्ण अघोष तथा महाप्राण ध्वनि है।
(खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च) खर् वर्ण का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होता है।
(हशः संवारा नादा घोषाश्च) हश् वर्ण अर्थात् (ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द' का बाह्यप्रत्यन संवार, नाद और घोष होता है। (वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः) वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और श ष स ह् महाप्राणयत्न वाले होते हैं।
(वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणाः) वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम तथा यण् अल्पप्राण प्रयत्न कहलाते हैं।
आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार के होते हैं–स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत, संवृत
बाह्यप्रयत्न 11 प्रकार के होते हैं–विवार, संवार, नाद, घोष, अघोष, श्वास, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

22. ग्रिमनियमानुसारं संस्कृतस्य 'क्, त्,प्' इति ध्वनयः जर्मनभाषायां केषु ध्वनिषु परिवर्तिताः?

(a) च्, छ्, ज् (b) ख्, थ्, फ्,
(c) ग्, द्,ब् (d) ऊष्मसु

उत्तर–(b)

ग्रिमनियमानुसार क् त् प् ध्वनि का जर्मन भाषा में ख् थ् फ् में परिवर्तन हो जाता है।
वर्ण परिवर्तन का क्रम–
प्रथम वर्ण परिवर्तन

क् त् प् (अघोष अल्पप्राण)
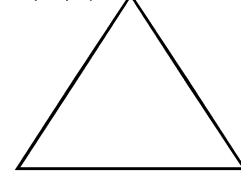
ग् द् ब् (घोष अल्पप्राण) ख् थ् फ् (महाप्राण)

क् त् प् (अघोष अल्पप्राण)
(घोष अल्पप्राण) ग् द् ब् ख् थ् फ् (महाप्राण) प्रथम वर्ण परिवर्तन का प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेजी, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है। भारोपीय मूलभाषा की व्यञ्जन ध्वनियां संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि में सुरक्षित है। अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है अतः इसके द्वारा संस्कृत और अंग्रेजी की तुलना से यह परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है।
ध्वनि नियम– ग्रिम, ग्रासमान और वर्नर का प्रसिद्ध है।
ग्रासमान– दो महाप्राण ध्वनियों में प्रथम महाप्राण ध्वनि हट जाती है।
वर्नर–यह ग्रिम नियम का संशोधन है।

23. संस्कृतभाषा कीदृशी अस्ति?

(a) शिलष्टयोगात्मिका (b) प्रश्लिष्टयोगात्मिका
(c) अयोगात्मिका (d) अश्लिष्टयोगात्मिका

उत्तर–(a)

संस्कृत भाषा शिलष्टयोगात्मिका है।
विश्वभाषाओं का वर्गीकरण 2 प्रकार से किया गया है–आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार पदों और वाक्यों की रचना है।
आकृतिमूलक का वंशवृक्ष–
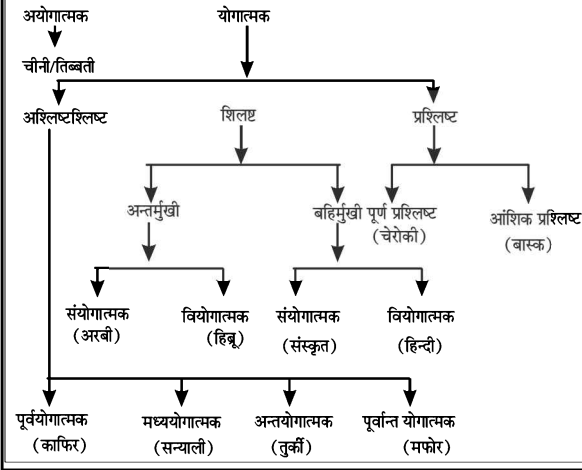
24. ग्रीष्कभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?

(a) सैमेटिक-परिवारस्य (b) बान्टू परिवारस्य
(c) भारोपीय-परिवारस्य (d) काकेशी-परिवारस्य

उत्तर–(c)

''ग्रीकभाषा'' भारोपीय परिवार के अन्तर्गत सम्मिलित है।
भारोपीय परिवार विभाजन (केन्टुम् और शतम् वर्ग)

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
भारत-ईरानी	ग्रीक
बाल्टो-स्लाविक	केल्टिक
आर्मीनी	जर्मानिक
अल्बानी	इटालिक
	हिट्टाइट
	तोखारी

रचना की दृष्टि से यह परिवार शिलष्ट योगात्मक है।
बान्टू परिवार अफ्रीका भूखण्ड के अन्तर्गत आता है।

25. संस्कृतस्य 'शतम्' इत्यस्य कृते 'केन्तुम्' इत्ययं शब्दः कस्यां भाषायां विद्यते?

(a) लैटिनभाषायाम् (b) ग्रीकभाषायाम्
(c) जर्मनभाषायाम् (d) ईरानीभाषायाम्

उत्तर–(a)

संस्कृत के शतम् शब्द को लैटिन भाषा में केन्टुम् कहा जाता है।

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत-शतम्	लैटिन-केन्टुम्
अवेस्ता-सहम	ग्रीक-हेक्टोन
फारसी-सद	केल्टिक-आयरिश
हिन्दी-सौ	गाथिक-हुन्द
रूसी-स्तो	तोखारी-कन्ध
लिथुआनियन-स्जिम्तास	जर्मन-हुण्डर्ट
	फ्रेन्च-सं
	इटालियन-केन्तो

सौ के लिए मूल भारोपीय भाषा का क्मतोम् माना जाता है।

26. सिन्धीभाषायाः विकासः कस्याः प्राकृतभाषायाः अभवत्?

(a) शौरसेनी-प्राकृतात् (b) पैशाची-प्राकृतात्
(c) मागधी-प्राकृतात् (d) अर्धमागधी-प्राकृतात्

उत्तर–(b)

सिन्धी भाषा का विकास पैशाची प्राकृत से हुआ है। आधुनिक भारतीय भाषा का विकास मध्यकालीन अपभ्रंश भाषाओं से हुआ है। प्राचीनप्राकृतों से पांच अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ है। इन पांच अपभ्रंशों के साथ ही ब्राचड़ एवं खास दो अपभ्रंशों को भी लिया जाता है। इस प्रकार अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास माना जाता है।

अपभ्रंश से विकसित वर्तमान भाषाएं–

अपभ्रंश	भाषाएं
महाराष्ट्री	मराठी
अर्धमागधी	पूर्वी हिन्दी
पैशाची	लहंदा
ब्राचड़	सिन्धी और पंजाबी
खश	पहाड़ी
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती

27. सत्कार्यवादस्य सिद्धिः कस्माद् हेतोः न भवति?

(a) असदकरणात् (b) सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्
(c) शक्तस्य शक्यकरणात् (d) कारणभावात्

उत्तर–(b)

सत्कार्यवाद की सिद्धि में सर्वस्मात् सर्वसम्भवात् हेतु नहीं है।
कारिका–सत्कार्यवाद की सिद्धि के पांच हेतु–(1) असदकरणात् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भवाभावात् (4) शक्तस्य शक्यकरणात् (5) कारणभावात्।
''असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाऽभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।
सत्त्व, रजस्, तमस् का लक्षण–
''प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योऽन्याभिभवाऽऽश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।
अर्थात् ये त्रिगुण प्रीत्यात्मक (सुखरूप), अप्रीत्यात्मक (दुःखरूप) और विषादात्मक (मोहरूप) होते हैं।
सत्त्वगुण का प्रयोजन प्रकाश करना, रजोगुण का प्रवृत्ति करना तथा तमोगुण का प्रयोजन नियमन करना है।

28. प्रधानपुरुषयोः को धर्मः समानः?

(a) त्रिगुणत्वम् (b) अहेतुत्वम्
(c) सामान्यत्वम् (d) अचेतनत्वम्

उत्तर–(b)

प्रधान और पुरुष में ''अहेतुत्वम्'' धर्म समान है।
''हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्।
व्यक्त का अव्यक्त (मूलप्रकृति) से भेद–

व्यक्त	अव्यक्त (मूल प्रकृति)
हेतुमत्	अहेतुमत्
अनित्य	नित्य
अव्यापी	व्यापक
सक्रिय	निष्क्रिय
अनेक	एक
आश्रित	अनाश्रित
लिङ्ग सहित	लिङ्ग रहित

व्यक्त और अव्यक्त दोनों त्रिगुणात्मक होते हैं। अविवेकी, विषय द्वारा ग्राह्य सामान्य अर्थात् अनेक पुरुषों द्वारा ग्राह्य, अचेतन, प्रसवधर्मी होते हैं। इन सभी गुणों से पुरुष विपरीत धर्म वाला होता है।

29. अव्यक्तं कस्माद् हेतोः कारणं भवति?

(a) नित्यत्वात् (b) परिमाणवत्त्वात्
(c) चैतन्यात् (d) निष्क्रियत्वात्

उत्तर–(b)

अव्यक्त मूलप्रकृति का प्रथम परिणाम व्यक्त पदार्थ है, अतः परिमाणवत्वात् अव्यक्त 23 व्यक्त पदार्थों का हेतु है। त्रिगुण की साम्यावस्था का नाम ही मूल प्रकृति है।
सृष्टि प्रक्रिया में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त पदार्थ महत्तत्त्वादि की उत्पत्ति होती है।
''भेदानां परिमाणात् समन्वयाच्छक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य।।
कारणमस्यव्यक्तं, प्रवर्त्तते त्रिगुणतः समुदयाच्च।
परिणामतः सलिलवत् प्रतिप्रतिगुणाश्रविशेषात्।।
महादादि कार्य रूप भेदों का मूलकारण अव्यक्त है, क्योंकि सृष्टि के समय कार्य का आविर्भाव कारण से होता है और प्रलय में विश्वरूप कार्य का अपने कारण में तिरोभाव हो जाता है, क्योंकि कार्य की प्रवृत्ति कारण की शक्ति से होती है, क्योंकि कार्य परिमित होता है, कार्य में सुख-दुःख मोहरूपता का समान रूप से समन्वय होता है।

30. प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धःकीदृशो भवति?

(a) जलाग्निवत् (b) कार्यकारणवत्
(c) मातृपुत्रवत् (d) पङ्ग्वन्धवद्

उत्तर–(d)

प्रकृति और पुरुष का सम्बन्ध पङ्ग्वन्धवत् (लंगड़े-अन्धे) के समान है।
''पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्याऽर्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।।
पुरुष के द्वारा प्रकृति के दर्शन के लिए तथा प्रकृति के द्वारा पुरुष के कैवल्य के लिए, गमनशक्तिविहीन पङ्गु और दर्शनशक्तिविहीन अन्धे के समान, दोनों प्रधान और पुरुष का भी संयोग होता है और इसी संयोग से सृष्टि होती है।
सांख्य में तीन प्रमाण अभीष्ट हैं–प्रत्यक्ष, अनुमान और आप्तवचन प्रमेय की सिद्धि प्रमाण से होती है।
प्रतिविषयाध्यवसायः दृष्टम्।
लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् अनुमानम् (त्रिविधिमनुमानम्)
आप्तश्रुतिराप्तवचनं।

31. अध्यारोपः किम् भवति?

(a) मिथ्याज्ञानम् (b) अस्पष्टे ज्ञानम्
(c) यथार्थज्ञानम् (d) वस्तुनि अवस्त्वारोपः

उत्तर–(d)

वस्तुनि अवस्त्वारोपः अध्यारोपः अर्थात् वस्तु में अवस्तु (मिथ्या) का आरोप अध्यारोप कहलाता है।
जैसे–असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।
सर्प की सत्ता से रहित रस्सी में सर्प के समान वस्तु में अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है।
''वेदान्तोनामोपनिषद्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरकसूत्रादीनि च।
अनुबन्ध चार हैं–अधिकारी, सम्बन्ध, विषय, प्रयोजन।
अज्ञान की परिभाषा–अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति।
वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म।
अज्ञानादिसकलजड़समूहोऽवस्तु।
अज्ञान के दो भेद हैं–आवरण और विक्षेप।

32. आवरणम् कस्य शक्तिरस्ति?

(a) रजोगुणस्य (b) अज्ञानस्य
(c) जीवस्य (d) चैतन्यस्य

उत्तर–(b)

अज्ञान के दो भेद हैं–आवरण और विक्षेप।
''अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।''
आत्मा के वास्तविक स्वरूप को ढक लेने के कारण, इस शक्ति को आवरण शक्ति कहते हैं और जिस शक्ति के माध्यम से इसकी भिन्न रूप में सम्भावना होती है वह अज्ञान की विक्षेप शक्ति कहलाती है।
अज्ञान की आवरण शक्ति से आच्छन्न आत्मा में कर्त्ता होने, भोक्ता होने तथा सुख-दुःख-मोहरूप तुच्छ संसार से युक्त होने की सम्भावना हो जाती है। विक्षेप शक्ति में–विक्षेपशक्ति सूक्ष्मशरीर से लेकर ब्रह्माण्डपर्यन्त समस्त जगत् की सृष्टि कर देती है।
''शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति। यथा लूता तन्तुकार्यं प्रति स्वप्रधानतया निमित्तं स्वशरीरप्रधानतयोपादानं च भवति।

33. वेदान्तसारानुसारं लिङ्गशरीरे कस्य गणना न भवति?

(a) बुद्धेः (b) मनसः

(c) प्राणस्य (d) आकाशस्य

उत्तर–(d)

वेदान्तसार के अनुसार लिङ्ग शरीर में आकाश की गणना नहीं होती है। सूक्ष्मशरीर सत्रह अवयवों वाला लिङ्ग शरीर है–
पांच ज्ञानेन्द्रियां, बुद्धि, मन, पांच कर्मेन्द्रियां तथा पांच वायु।
पांच ज्ञानेन्द्रियां–श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण
''बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः।
मनो नाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः।।''
बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों सहित विज्ञानमय कोश कहलाती है।
मन ज्ञानेन्द्रियों के सहित मनोमय कोश कहलाती है।
इन कोशों के मध्य में विज्ञानमय कोश ज्ञानशक्ति से युक्त और कर्तारूप है।
मनोमयकोश इच्छाशक्ति से युक्त और करणरूप है।
प्राणमय कोश क्रियाशक्ति से युक्त और कार्यरूप है।
ये तीनों कोश सम्मिलितरूप से सूक्ष्म शरीर कहलाते हैं।

34. गौतमसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु कस्य पदार्थस्य निम्नाङ्कितेषु ग्रहणं नास्ति?

(a) 'संशय' पदार्थस्य (b) 'विशेष' पदार्थस्य

(c) 'अवयव' पदार्थस्य (d) 'निर्णय' पदार्थस्य

उत्तर–(b)

गौतमसूत्रोक्त 16 पदार्थों में विशेष की गणना नहीं की जाती है।
प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-छल-जाति-निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानानिः श्रेयसाधिगमः।
इन प्रमाणादि 16 पदार्थों के तत्त्वज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।
''प्रमाकरणं प्रमाणं'', यथार्थानुभवः प्रमा, ''ज्ञातविषयं ज्ञानं स्मृति।''
कारण–अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वं कारणत्वम्।
कार्य-अनन्यथासिद्ध नियतपश्चाद्भावित्वं कार्यत्वम्।
कारण के तीन भेद–
(1) समवायिकारण–यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्–यथा तन्तु पट का समवायी कारण है। **(2)** असमवायिकारण–यत्समवायिकारण-प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्।
(3) निमित्त कारण–यन्न समवायिकारणम्, नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम्
तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः।

35. 'मृत्पिण्डः' घटस्य कीदृशं कारणमुच्यते?

(a) निमित्तकारणम् (b) समवायिकारणम्

(c) असमवायिकारणम् (d) समवाय्यसमवायिकारणम्

उत्तर–(b)

तर्कभाषाकार ने कारण के तीन भेद बतलाए हैं–
समवयि-असमवायि-निमित्त
समवायिकारण–यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्।
तन्तुओं के साथ पट का समवाय सम्बन्ध है
मिट्टी का पिण्ड भी घट का समवायि कारण है तथा घट अपने में स्थित रूप आदि का समवायि कारण है।
''तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः।
ययोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौः।
असमवायिकारण–यत्समवायिकारण प्रत्यासन्नमवधृतसमर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। तन्तु संयोग पट का असमवायि कारण है।
निमित्तकारण–यन्न समवायिकारणम् नाप्यसमवायिकारणम् अथ च कारणम् यथा तुरी वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्।

36. यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्चते तदाऽनयोरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

(a) संयोगः (b) समवायः

(c) संयुक्तसमवायः (d) समवेतसमवायः

उत्तर–(c)

घटगत रूपादि में ''संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष'' है।
इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्ष ज्ञान का निमित्त होता है। वह छः प्रकार का होता है–(1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्त समवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेष्य विशेषण भाव
(1) संयोग सन्निकर्ष–चक्षुरिन्द्रिय से घट का ज्ञान
(2) संयुक्तसमवाय-चक्षुरिन्द्रिय द्वारा घटरूप का ज्ञान
(3) संयुक्त समवेत समवाय–घटरूपत्व आदि का बोध होता है।
(4) समवाय–श्रोत्र से समवाय सन्निकर्ष द्वारा शब्द का ग्रहण होता है।
(5) समवेत समवाय–समवाय सम्बन्ध से शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है।
(6) विशेष्यविशेषण भाव–भूतले घटाभाव

37. 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' इत्यत्र 'प्राणादिमत्त्वम्' कोदृशो हेतुः?

(a) केवलान्वयी (b) केवलव्यतिरेकी

(c) अन्यय-व्यतिरेकी (d) असद्धेतुः

उत्तर–(b)

''जीवच्छशरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात् में ''प्राणादिमत्वम्'' में ''केवलव्यतिरेकी'' हेतु है।
''तच्चानुमानं द्विविधम्, स्वार्थं परार्थं चेति''।
परार्थानुमान में पञ्चावयववाक्य का प्रयोग किया जाता है–(1) प्रतिज्ञा (2) हेतु (3) उदाहरण (4) उपनय (5) निगमन
इन पञ्चावयव में तीन प्रकार के हेतु हैं–(1) अन्वयव्यतिरेकि (2) केवलव्यतिरेकि (3) केवलान्वयी

अन्वयव्यतिरेकी-''यत्राग्निर्नास्ति तत्र धूमोऽपि नास्ति, यथा महाह्रद– जहां अग्नि नहीं होती, वहां धूम भी नहीं होता, जैसे-जलाशय में व्यतिरेकव्याप्ति है।
केवल व्यतिरेकी इसमें केवल व्यतिरेकव्याप्ति है अन्वयव्याप्ति नहीं बन पाती। उदाहरण–''जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्वात्''
केवलान्वयी–इसमें केवल अन्वयव्याप्ति ही उपलब्ध होती है।

38. 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः' हेत्वाभासोऽन्नम्भट्टेन केन नाम्ना प्रोक्तः?

(a) 'सत्प्रतिपक्ष' नाम्ना (b) 'असिद्ध' नाम्ना
(c) 'सव्यभिचार' नाम्ना (d) 'विरुद्ध' नाम्ना

उत्तर–(a)

''साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः'' यह लक्षण सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का है।
''सव्यभिचारविरुद्धसत्प्रतिपक्षऽसिद्धबाधिताः पञ्च हेत्वाभासाः।''
सव्यभिचार के तीन भेद हैं–साधारण, असाधारण और अनुपसंहारी।
विरुद्ध हेत्वाभास–साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः
सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास–यस्य साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः।
असिद्ध हेत्वाभास-असिद्धस्त्रिविधः-आश्रयासिद्धः, स्वरूपासिद्धः, व्याप्यात्वासिद्धश्चेति।
आश्रयासिद्ध का उदाहरण–गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्।
स्वरूपासिद्ध का उदाहरण–शब्दो गुणश्चाक्षुषत्वात् रूपवत्।
व्याप्यत्वासिद्ध का उदाहरण–पर्वतो धूमवान् वह्निमत्वात् इत्यत्राद्रेन्धनसंयोग उपाधिः।
बाधित हेत्वाभास–वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वादिति।

39. तर्कसङ्ग्रहे तर्कलक्षणं किमुक्तम्?

(a) मिथ्याज्ञानम्
(b) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः
(c) सन्निकृष्टसंयोगहेतुः
(d) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्ध-नानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानम्

उत्तर–(b)

तर्कसंग्रहानुसार तर्क का लक्षण ''व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः'' है।
''व्याप्यारोपेण व्यापकारोपस्तर्कः। यथा 'यदि वह्निर्नस्यात् तर्हि धूमोऽपि न स्यात्।'
व्याप्य के आरोप से व्यापक के आरोप को 'तर्क' कहते हैं।
जैसे–यदि वह्नि नहीं होगा तो धूम भी नहीं होगा, यहां वह्न्यभाव व्याप्य और धूमाभाव व्यापक है।
स्मृति के दो भेद हैं-यथार्थ और अयथार्थ
तर्कसंग्रहानुसार सप्त पदार्थ–द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभाव।
गुण 24 हैं।
कर्म पांच हैं–उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण तथा गमन।
द्रव्य के नौ भेद–पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश-काल-दिक्-आत्मा-मन
परमपरं च द्विविधं सामान्यम्।
विशेष असंख्य हैं।
समवायस्त्वेक एव।
अभाव चतुर्विधः–प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव।

40. अभावप्रत्यक्षेऽन्नम्भट्टानुसारं कः सन्निकर्षोऽङ्गीकृतः?

(a) विशेषण-विशेष्यभावः (b) समवायः
(c) संयुक्तसमवेत-समवायः (d) संयोग

उत्तर–(a)

अभाव प्रत्यक्ष में ''विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष''है।
प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियार्थसन्निकर्ष छः प्रकार का होता है– (1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्त समवेत समवाय (4) समवाय (5)समवेतसमवाय (6) विशेषण विशेष्यभाव
संयोग–चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्ष।
संयुक्तसमवाय–घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्त समवायः सन्निकर्षः।
संयुक्त समवेत समवाय–रूपतव-सामान्यप्रत्यक्षे संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्षः।
चक्षुः संयुक्ते घटं रूपं समवेतं, तत्र रूपत्वस्य समवायात्।
समवाय–श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सम्बन्धः।
विशेषण-विशेष्यभाव–अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः।

41. गन्धवत्वे कस्य लक्षणम्?

(a) अपः (b) पृथिव्याः (c) वायोः (d) अग्नेः

उत्तर–(b)

गन्धत्वं 'पृथिवी' का लक्षण है।
तत्र गन्धवती पृथिवी। सा द्विधा-नित्या-अनित्या च।
नित्या परमाणुरूपा, अनित्यकार्यरूपा। सा पुनस्त्रिविधा–शरीर-इन्द्रिय-विषय भेदात्। शरीरमस्मदादीनाम्। इन्द्रियं गन्धग्राहकं घ्राणं नासाग्रवर्ति। विषयो मृत्पाषाणादिः।
द्रव्यों की संख्या नव है–पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, आत्मा, दिक्, मन।
आपः–शीतस्पर्शवत्य आपः।
तेजः–उष्णस्पर्शवत् तेजः।
वायु–रूपरहितस्पर्शवान् वायुः।
आकाश–शब्दगुणकमाकाशम्।
काल–अतीतादिव्यवहारहेतुःकालः।
दिक्–प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक।
आत्मा–ज्ञानाधिकरणमात्मा।
मन–सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः।

42. **कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ?**

(a) भासस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) दण्डिनः (d) भारवेः

उत्तर–(b)

श्रीहीर और मामल्लदेवी श्रीहर्ष के माता-पिता हैं।
श्रीहर्ष कविराजराजिमुकुटालंकारहीरः सुतं।
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियन्चयं मामल्लदेवी च यम्।।
श्रीहर्ष की कृति का नाम नैषधीयचरित है। इसमें 22 सर्ग हैं। श्रीहर्ष कन्नौज के राजा के आश्रित थे-
''ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।
इसमें नल और दमयन्ती की प्रणय से लेकर, परिणय तक का सांगोपांग वर्णन है।
नैषधीयचरितम् में अंगीरस श्रृंगार है।
श्रीहर्ष की भाषा सालंकार है।

43. **अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत–**

(a) श्रीहर्षः (i) हर्षचरितम्
(b) दण्डी (ii) मुद्राराक्षसम्
(c) बाणभट्टः (iii) नैषधीयचरितम्
(d) विशाखदत्तः (iv) दशकुमारचरितम्

(a) (i) (iii) (iv) (ii) (b) (iii) (iv) (i) (ii)
(c) (ii) (iii) (iv) (i) (d) (iv) (iii) (ii) (i)

उत्तर–(b)

श्रीहर्ष की रचना नैषधीयचरित है, इसमें 22 सर्ग हैं।
दण्डी की कृति दशकुमारचरित है। यह 8 उच्छ्वासों में विभक्त है।
बाणभट्ट की रचना कादम्बरी और हर्षचरितम् है।
कादम्बरी कथा खण्डों में विभाजित है।
हर्षचरित 8 उच्छ्वासों में विभक्त हैं।
विशाखदत्त की रचना मुद्राराक्षस है। इसमें सात अङ्क है।
किरातार्जुनीयम्–भारवि–18 सर्ग
रघुवंश महाकाव्य–कालिदास–19 सर्ग
बुद्धचरित–अश्वघोष–28 सर्ग
शिशुपालवध–माघ–20 सर्ग
रावणवध–भट्टि
जानकीहरण–कुमारदास
राघवपाण्डवीय–कविराज
स्वर्गारोहण–कात्यायन
हरविजय–रत्नाकर
धर्मशर्माभ्युदय–हरिश्चन्द्र
जाम्बवतीविजय–पाणिनि
महानन्दकाव्य–पतञ्जलि

44. **दशकुमारचरितस्य नायकः कः?**

(a) राजहंसः (b) उपहारवर्मा
(c) राजवाहनः (d) अपहारवर्मा

उत्तर–(c)

दशकुमारचरितम् के नायक राजवाहन हैं और नायिका अवन्तिसुन्दरी हैं। यह कृति दण्डी की है। दण्डी 'वीरदत्त और गौरी' के पुत्र थे। दण्डी भारवि के प्रपौत्र थे।
दण्डी की प्रमुख कृतियां–दशकुमारचरितम्, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचिति, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य।
रघुवंश महाकाव्य में नायक राम और नायिका सीता हैं।
भारवि कृत किरातार्जुनीयम् में नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी है। इसमें 18 सर्ग है।
कालिदासकृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में नायक दुष्यन्त और नायिका शकुन्तला हैं। इसमें सात अङ्क है।
नैषधीयचरितम् में नायक नल और नायिका दमयन्ती हैं।

45. **विश्वनाथमतानुसारं वीररसः कतिविधः?**

(a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) पञ्चविधः (d) चतुर्विधः

उत्तर–(d)

विश्वनाथमतानुसारं वीररसः चतुर्विधः।
''उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः।
महेन्द्रदैवतौ हेमवर्णोऽयं समुद्राहृतः।।
उत्तमपात्रों में वीररस होता है, स्थायीभाव उत्साह है।
देवता महेन्द्र और रंग सुवर्ण है।
वीररस चार प्रकार का होता है–
(1) दानवीर (2) धर्मवीर (3) दयावीर (4) युद्धवीर
हास्यरस–ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च।
नीचानामपहसितं तथातिहसितं तदेष षड्भेदः।
हास्यरस के छः भेद हैं–(1) स्मित (2) हसित (3) विहसित (4) अवहसित (5) अपहसित (6) अतिहसित
यह छः भेद तीनों वर्गों में विभाजित हैं–उत्तम, मध्यम, अधम।
उत्तम श्रेणी के लोगों में स्मित और हसित हास्यरस होता है।
मध्यम श्रेणी के लोगों में विहसित, अवहसित होते हैं।
अधम श्रेणी के लोगों में अपहसित और अतिहसित रस होता है।

46. **बृहत्त्रय्यां न गण्यते?**

(a) नैषधीयचरितम् (b) रघुवंशम्
(c) किरातार्जुनीयम् (d) शिशुपालवधम्

उत्तर–(b)

बृहत्त्रयी के अन्तर्गत रघुवंश महाकाव्य नहीं आता है।
बृहत्त्रयी के अन्तर्गत किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् और नैषधीयचरितम् सम्मिलित हैं।
किरातार्जुनीयम् भारवि की कृति है। इसमें 18 सर्ग हैं। इसके नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी हैं।
शिशुपालवधम् माघ की रचना है। इसमें 20 सर्ग हैं।
नैषधीयरितम् श्रीहर्ष की कृति है, इसमें 22 सर्ग हैं। इसमें नल और दमयन्ती की कथा है।
लघुत्रयी–रघुवंशम्–कुमारसम्भवम्–मेघदूतम्
गद्यत्रयी–वासवदत्ता–कादम्बरी–दशकुमारचरितम्

47. गद्य-काव्यं नास्ति–

(a) कादम्बरी (b) दशकुमारचरितम्
(c) बुद्धचरितम् (d) हर्षचरितम्

उत्तर–(c)

गद्यकाव्य 'बुद्धचरित' नहीं है। यह एक महाकाव्य है।
इसमें 28 सर्ग हैं। इसमें बुद्धचरित तथा उनके सिद्धान्तों का वर्णन है। इसमें उनके जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है। यह अश्वघोष की रचना है। बुद्धचरित के अतिरिक्त अन्य कृतियां– सौन्दरनन्द (महाकाव्य), शारिपुत्रप्रकरण (नाटक), सूत्रालंकार।
सौन्दरनन्द में 18 सर्ग हैं।
अश्वघोष वैदर्भी शैली के कवि हैं।
गद्यकाव्य–कादम्बरी, वासवदत्ता
आख्यायिका–दशकुमारचरितम्, हर्षचरितम्
महाकाव्य–रघुवंशम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्
चम्पू–नलचम्पू, मदालसाचम्पू
प्रकरण–मृच्छकटिकम्
नाटिका–रत्नावली
नाटक–उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम् आदि।

48. केन कविना बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि लिखितानि?

(a) कालिदासेन (b) माघेन
(c) अश्वघोषेण (d) भवभूतिना

उत्तर–(c)

बौद्धधर्म का प्रचार करते हुए 'अश्वघोष' ने काव्यग्रन्थों को लिखा। अश्वघोष बौद्धभिक्षु थे। बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर उसने सुदूर प्रदेशों तक यात्रा की और बौद्ध धर्म का प्रचार किया। यह कनिष्ककालीन आयोजित चतुर्थ बौद्ध-महासमिति का संचालक एवं कार्याध्यक्ष थे। इसने अभिधम्म की 'विभाषा' नामक व्याख्या की। अश्वघोष साकेत के निवासी थे। इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। शिशुपालवधम् माघ की कृति है। माघ का समय सातवीं शताब्दी का अन्तिम चरण है। शिशुपालवध में 20 सर्ग हैं।
'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।
शिशुपालवध का अंगीरस वीर है।
कालिदास शैव सम्प्रदाय के थे। इनकी 7 कृतियां प्रसिद्ध हैं।
भवभूति 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' थे।

49. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?

(a) एकोनविंशतिः (b) द्वाविंशतिः
(c) अष्टाविंशतिः (d) चतुर्विंशतिः

उत्तर–(b)

नैषधीयचरितम् में 22 सर्ग हैं।
विल्हण के विक्रमांकदेवचरित में 18 सर्ग हैं।
पद्यचूड़ामणि में 10 सर्ग हैं।

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	सर्ग
धनेश्वर सूरि	शत्रुंजय	14
श्रीहर्ष	नैषधीयचरित	22
	रघुवंशम्	19
कालिदास	कुमारसंभवम्	19
अश्वघोष	बुद्धचरित	28
भट्टि	भट्टिकाव्य	22
रत्नाकर	हरविजय	50 सर्ग–सबसे बड़ा महाकाव्य
अश्वघोष	सौन्दरनन्द	18 सर्ग
भारवि	किरातार्जुनीयम्	18 सर्ग
माघ	शिशुपालवधम्	20 सर्ग

50. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्?

(a) महाभारतस्य आदिपर्वतः (b) महाभारतस्य भीष्मपर्वतः
(c) महाभारतस्य वनपर्वतः (d) रामायणमहाकाव्यात्

उत्तर–(c)

किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु 'महाभारत के वनपर्व' से ली गई है। यह भारवि की कृति है। इसमें 18 सर्ग है। भारवि दण्डी के प्रपितामह थे।
भारवि का जन्म कुशिक गोत्र में हुआ था। ये शैव मतानुयायी थे। भारवि का उपनाम 'आतपत्र भारवि' था। किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम् ये तीनों बृहत्त्रयी ग्रन्थ हैं। भारवि के वैदुष्य के कारण इनको 'भारवेरर्थगौरवम्' से विभूषित किया गया है। मल्लिनाथ ने इन्हें ''नारिकेलफलसम्मितो वचो' यह कहकर प्रशंसित किया है। प्रथत तीन सर्ग में चित्रकाव्य की रचना है।
संस्कृत साहित्य में भारवि को रीतिकाल का जन्मदाता कहा जाता है। शिशुपालवधम् महाभारत के सभापर्व से लिया गया है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2015
संस्कृत
पेपर-2
व्याख्यात्मक हल सहित

1. श्वेताश्वतरोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?
(a) अथर्ववेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(c)

यजुर्वेद के मुख्यतः दो भाग हैं–
(1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद।
शुक्लयजुर्वेद के अन्तर्गत दो उपनिषद्–
(1) ईशोपनिषद् (2) बृहदारण्यकोपनिषद् हैं।
कृष्णयजुर्वेद के अन्तर्गत तीन उपनिषद् है–
(1) तैत्तिरीयोपनिषद् (2) कठोपनिषद् (3) श्वेताश्वतरोपनिषद्।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

वेद	प्रमुख उपनिषद्
ऋग्वेद	ऐतरेयोपनिषद्, कौषीतकि उपनिषद् ।
सामवेद	छान्दोग्योपनिषद्, केनोपनिषद्।
अथर्ववेद	मुण्डकोपनिषद् , माण्डूक्योपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्।

2. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इति कुत्र उपदिष्टम्?
(a) ईशावास्योपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) आपस्तम्बधर्मसूत्रे (d) माण्डूक्योपनिषदि

उत्तर–(b)

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' यह सूक्तिवाक्य कठोपनिषद् में उपदिष्ट है।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधता।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।'
अर्थात् हे मनुष्यों उठो, जागो, सावधान हो जाओ और श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो क्योंकि त्रिकालज्ञ ज्ञानीजन उस तत्त्वज्ञ के मार्ग को छूरे की तीक्ष्ण की हुई दुस्तर धार के सदृश कठिन बतलाते हैं।

3. 'मण्डलक्रमः' केन वेदेन सम्बद्धः?
(a) अथर्ववेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(b)

ऋग्वेद के मुख्यतः दो भाग हैं–
(1) अष्टक क्रम (2) मण्डल क्रम।
ऋग्वेद के मण्डलक्रम को दस मण्डलों में विभक्त किया गया है। ऋग्वेद के 10मण्डलों में 2 से 6 तक के मण्डलों में प्रत्येक में एक ही ऋषि एवं उनके वंशजों का वर्णन है। अष्टम् मण्डल में कण्व एवं उनके परिवार का वर्णन है। प्रथम, नवम एवं दशम मण्डल के प्रत्येक सूक्त में भिन्न-भिन्न ऋषि एवं उनके वंशज हैं।
अथर्ववेद को 20 काण्डों में विभक्त किया गया है।
यजुर्वेद के दो भाग हैं- (1) शुक्ल यजुर्वेद, (2) कृष्ण यजुर्वेद

4. अथर्ववेदीयं ब्राह्मणं किम्?
(a) शतपथब्राह्मणम् (b) गोपथब्राह्मणम्
(c) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (d) ऐतरेयब्राह्मणम्

उत्तर–(b)

अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथब्राह्मण है।

अन्य महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रन्थ

संहिता	ब्राह्मण ग्रन्थ
ऋग्वेद	(1) ऐतरेय, (2) कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
शुक्ल यजुर्वेद	शपपथ ब्राह्मण
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	(कौथुमीय) (1) ताण्ड्य महाब्राह्मण (पंचविंश या प्रौढ़), (2) षड्विंश, (3) सामविधान, (4) आर्षेय, (5) मंत्र, (6) देवताध्याय, (7) वंश, (8) संहितोपनिषद् ब्राह्मण।
	जैमिनीय (1) जैमिनीय (आर्षेय), (2) जैमिनीय तलवकार, (3)जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण।

5. ''स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा,
अप ते गवां सुभगे भजामा।''
इति मन्त्रांशः कुतः उद्धृतः?
(a) पुरुरवा-उर्वशी-संवादात् (b) यम-यमी-संवादात्
(c) सरमा-पणि-संवादात् (d) विश्वामित्र-नदी-संवादात्

उत्तर–(c)

प्रस्तुत मन्त्र 'सरमा-पणि' संवाद सूक्त से सम्बन्धित है। इसके देवता–सरमा-पणि, ऋषि-पणि-सरमा, छन्द-त्रिष्टुप् है। प्रस्तुत मन्त्र इस प्रकार से द्रष्टव्य है।
''एवा च त्वं सरमा आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैत्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजामा।।''
अर्थात् पणियों ने कहा, ''हे सरमा इस प्रकार यदि तुम देवताओं की शक्ति से पीड़ित की गई हो, तो हम तुम्हें बहन बनाते हैं। फिर मत जाओ। हे सौभाग्यवती ! हम तुम्हें गायों का अलग हिस्सा देंगे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पुरुरवा-उर्वशी संवाद ऋग्वेद के दशम् मण्डल के 95वें (10/95) सूक्त से सम्बद्ध है। इसमें पुरुरवा एवं उर्वशी की प्रेम कहानी वर्णित है।
- यम-यमी संवाद ऋग्वेद (10/10) से सम्बन्धित है।
- विश्वामित्र-नदी संवाद ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के 33वें सूक्त से सम्बन्धित है।

6. अन्तरिक्षस्थानीया देवता का?

(a) रुद्रः (b) सोमः
(c) अग्निः (d) बृहस्पतिः

उत्तर–(a)

पृथिवीस्थानीय देवता	द्युस्थानीय देवता	अन्तरिक्ष-स्थानीय देवता
अग्नि	विष्णु	इन्द्र
बृहस्पति	सवितृ	रूद्र
सोम	अश्विनौ	
	वरूण	
	उषस्	

7. 'प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु' किम्?

(a) कल्पः (b) छन्दः
(c) शिक्षा (d) व्याकरणम्

उत्तर–(d)

''प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्'' अर्थात् वेद के छः अङ्गों में मुख्य अङ्ग 'व्याकरण' है। महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में आगम प्रयोजन को बतलाते हुए कहते है कि -

''ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गने वेदोध्येयो ज्ञेयश्च'' ''प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्'' अर्थात् ब्राह्मण को बिना किसी फल की अपेक्षा किये छः अङ्गों से युक्त वेद का धर्म मानकर अध्ययन और अर्थज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वेद के छः अङ्गों में मुख्य अङ्ग व्याकरण ही है। और मुख्य के विषय में किया गया प्रयत्न ही फलदायक होता है।

- महर्षि पतञ्जलि के अनुसार व्याकरणशास्त्र अध्ययन के मुख्य प्रयोजन है–(1) वेदों की रक्षा, (2) विभक्तियों के विपरिणाम, (3) आगम, (4) सुगमता और (5) संशयराहित्य।

8. 'सर्वलघुः' इति को गणः?

(a) जगणः (b) मगणः
(c) नगणः (d) सगणः

उत्तर–(c)

यमाताराजभानसलगा सूत्र के अनुसार–यगण–यमाता, मगण–मातारा, तगण–ताराज, रगण–राजभा, जगण–जभान, भगण–भानस, नगण–नसल, सगण–सलगा। अर्थात् नसल सर्वलघु है इसमें कोई मात्रा नहीं लगी है।

9. 'व्' वर्णः अस्ति

(a) ओष्ठ्यः (b) ऊष्मः
(c) अन्तःस्थः (d) दन्त्यः

उत्तर–(c)

'व्' वर्ण अन्तःस्थ हैं।

1. कादयो भावसानाः स्पर्शाः - क से लेकर म तक के व्यञ्जन स्पर्श कहलाते हैं।
2. शलः ऊष्माणः–शल् प्रत्याहार के वर्ण ऊष्म संज्ञक होते हैं। यथा- श्, ष्, स्, ह्।
3. यणोऽन्तस्थाः–यण् प्रत्याहार का वर्ण अन्तःस्थ कहलाता है, यथा–य्, व्, र्, ल्।

10. 'शुल्बसूत्राणि' केन वेदाङ्गेन सम्बद्धानि?

(a) व्याकरणेन (b) कल्पेन
(c) छन्दसा (d) निरुक्तेन

उत्तर–(b)

वैदिक वाङ्मय के विकास में कल्पसूत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कल्पसूत्र शब्द कल्प और सूत्र इन दो शब्दों के योग से निष्पन्न हुआ है। कल्प शब्द का अर्थ–वेदविहित कर्मों का क्रमपूर्वक करना है। कल्पसूत्र के मुख्यतः चार भेद होते हैं–(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र।

11. 'सत्त्वप्रधानम्' इति मन्यते-

(a) उपसर्गः (b) नाम
(c) आख्यातम् (d) निपातः

उत्तर–(b)

आचार्य यास्ककृत निरुक्त के अनुसार पद के चार विभाग किए गए हैं–(1) नाम (2) आख्यात (क्रिया) (3) उपसर्ग (4) निपात।

नाम–सत्त्वप्रधानानि नामानि–सत्त्व अर्थात् द्रव्य की प्रधानता नाम कहलाता है।

- **भावप्रधानम् आख्यातम्–**क्रिया शब्द इत्यादि की जिसमें प्रधानता होती है, उसे आख्यात कहते हैं।
- **अथ निपाताः–**यास्क के अनुसार निपात तीन प्रकार का होता है–उपमार्थक, कर्मोपसंग्रहार्थक, पादपूरणार्थक।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- भाव की प्रधानता आख्यात कहलाता है, भाव से तात्पर्य क्रिया है। क्रिया की उत्पत्ति से लेकर अवसानपर्यन्त छः भावों को दर्शाते हुए यास्क ने आचार्य वार्ष्यायणि के मत का उल्लेख किया है-
- **षड्भाव विकाराः भवन्ति इति वार्ष्यामणि–** (1) जायते, (2) अस्ति, (3) विपरिणमते, (4) वर्द्धते, (5) अपक्षीयते, (6) विनश्यति।

12. 'पदपाठ' इत्यस्य परमं प्रयोजनम् अस्ति-

(a) पदनिर्माणम् (b) शब्दनिर्माणम्
(c) वेदपाठरक्षणम् (d) मन्त्रगानम्

उत्तर–(c)

वैदिक मन्त्रों के दो प्रकार के मुख्य पाठ उपलब्ध होते हैं–(1) संहिता पाठ (2) पदपाठ।
साहित्य में वेदों को श्रुति भी कहते हैं। श्रुति परम्परा से गुरु वेदों का ज्ञान शिष्यों को दिया करते थे। अतः इनको श्रुति कहा गया था। वेद मन्त्रों को सुरक्षित रखने के लिए ऋषियों ने विभिन्न पाठों का प्रचलन किया था।
संहिता पाठ–इसमें सम्पूर्ण मन्त्रों को रखा जाता है–अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्।
पदपाठ–इसमें मन्त्रों का पदच्छेद किया गया है–अग्निम् ईले पुरःहितम् यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम् होतारम् रत्नऽधातमम्।।

13. प्रायश्चित्तकर्माणि भवन्ति-
(a) हननादीनि (b) सन्ध्यावन्दनादीनि
(c) ज्योतिष्टोमादीनि (d) चान्द्रायणादीनि

उत्तर–(d)

सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत् 'वेदान्तसार' के अधिकारी का निरूपण करते समय काम्यादि कर्मों का उल्लेख किया गया है, जिसका वर्णन निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–
प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि–पापों का क्षय करने के लिए साधन बनाने वाले चान्द्रायण आदि व्रत प्रायश्चित कर्म हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **निषिद्धानि नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि -** नरकादि अनिष्ट के साधनभूत ब्राह्मण हत्या आदि निषिद्ध कर्म हैं।
- **काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि**–स्वर्गादि अभीष्ट के साधन भूत ज्योतिष्टोमादि काम्य कर्म हैं।
- **नित्यान्यकरणे प्रत्यवाय साधनानिसन्ध्यावन्दनादीनि।** (जिसके न करने से भविष्य में दु:ख की सम्भावना हो, ऐसे सन्ध्यावन्दन आदि नित्य कर्म है।
- **नैमित्तिकानि पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि-** पुत्र जन्मादि के अवसर पर किये जाने वाले जातेष्टि यज्ञ आदि नैमित्तिक कर्म है।
- **''उपासनानि सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि -** सगुणब्रह्म को विषय बनाने वाला मानसिक व्यापार ध्यान ही जिनका स्वरूप है उन शाण्डिल्यविद्या आदि को उपासना कर्म कहते हैं।

14. अधोलिखितेषु अनिर्वचनीयं भवति-
(a) जीवस्वरूपम् (b) अज्ञानम्
(c) जगत्स्वरूपम् (d) ईश्वरस्वरूपम्

उत्तर–(b)

वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान का लक्षण है–**अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं।**
अर्थात् अज्ञान से प्रारम्भ होने वाले समस्त जड़ पदार्थों का समूह अवस्तु है। अज्ञान सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञान का विरोधी, भावरूप कुछ है।

15. वेदान्तसारे अज्ञानस्य शक्तिः
(a) द्विविधा (b) त्रिविधा
(c) चतुर्विधा (d) पञ्चविधा

उत्तर–(a)

वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान की दो शक्तियां हैं–
(1) आवरण (2) विक्षेप।
आवरण शक्ति– (प्रमाता के सच्चिदानन्द स्वरूप को जो शक्ति ढक देती है, वह आवरण शक्ति है।) जिस प्रकार बादल छोटा होने पर भी देखने वाले के दृष्टिपथ को ढक लेता है के कारण मानो अनेक योजन वाले सूर्यमण्डल को ढक लेता है। उसी प्रकार प्रमाता भी अज्ञान के कारण असंसारी आत्मा को ढक लेता है। यही आवरण शक्ति है।
विक्षेप शक्ति–(सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत को उत्पन्न करने वाली विक्षेप शक्ति है।) जिस प्रकार रज्जुविषयक अज्ञान अपने द्वारा ढकी हुई रज्जु में, अपनी शक्ति से सर्प इत्यादि की उसी प्रकार अज्ञान अपने द्वारा ढकी हुई आत्मा में अपनी विक्षेप शक्ति के द्वारा आकाशादिकार्यसमूह की उद्भावना कर देता है।

16. वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि-
(a) षोडशावयवानि (b) पञ्चदशावयवानि
(c) सप्तदशावयवानि (d) एकादशावयवानि

उत्तर–(c)

वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर सत्रह अवयवों वाले लिङ्ग शरीर हैं–सूक्ष्मशरीर (17 अवयव)

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ	पञ्चकर्मेन्द्रियां	पञ्चवायु	मन	बुद्धि
चक्षु	वाक्	प्राण		
श्रोत्र	पाणि	अपान		
त्वक्	पाद	व्यान		
घ्राण	पायु	उदान		
रसना	उपस्थ	समान		

वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्मशरीर के 17 एवं सांख्यदर्शन के अनुसार 18 भेद है।

17. साङ्ख्यमतानुसारं सत्त्वगुणः-
(a) सुखात्मकः (b) दु:खात्मकः
(c) अभावात्मकः (d) मोहात्मकः

उत्तर–(a)

सांख्य के अनुसार गुण के त्रिगुणात्मक भेद निम्न हैं–
''प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योऽन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।।''
अर्थात्–सत्त्व, रजस्, तमस् ये तीन गुण क्रमशः प्रीत्यात्मक अर्थात् सुखरूप, अप्रीत्यात्मक अर्थात् दु:खरूप, विषादात्मक अर्थात् मोह रूप होता है। सत्त्वगुण का प्रयोजन प्रकाश करना, रजोगुण का प्रयोजन प्रवृत्ति करना तथा तमोगुण का प्रयोजन नियमन करना होता है।

18. साङ्ख्यमते पङ्गुवद् वर्तते-

(a) प्रधानम् (b) पुरुषः
(c) गुणत्रयम् (d) अन्तःकरणम्

उत्तर–(b)

साङ्ख्यकारिका के अनुसार प्रकृति-पुरुष के संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति होती है–
''पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्याऽर्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।।
अर्थात् पुरुष के द्वारा प्रधान (प्रकृति) का दर्शन तथा प्रकृति (प्रधान) के द्वारा कैवल्य की प्राप्ति के लिए पुरुष और प्रकृति का संयोग अन्धे और लंगड़े के समान होता है और इससे सृष्टि प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

19. त्रैगुण्यविपर्ययात् किं सिद्धम्?

(a) प्रधानम् (b) पुरुषैकत्वम्
(c) पुरुषबहुत्वम् (d) अज्ञानम्

उत्तर–(c)

ईश्वरकृष्ण प्रणीत साङ्ख्यकारिका के अनुसार पुरुषबहुत्त्व की सत्ता सिद्ध करने वाले तीन हेतु हैं-
(1) जननमरणकरणानां (2) अयुगपत्प्रवृत्तेः (3) त्रैगुण्यविपर्ययात्
''जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव।।
अर्थात् प्राणियों के जन्म, मरण और करणों की व्यवस्था होने से सभी प्राणियों की एक साथ प्रवृत्ति न होने से अलग-अलग प्रवृत्ति होने से पुरुषों का अनेकत्व सिद्ध होता है।

- प्रधान को ही प्रकृति कहते हैं।
- पुरुष ही साङ्ख्य की आत्मा है।
- अज्ञान का उल्लेख सांख्य में नहीं होता।

20. साङ्ख्यकारिकायां सर्गस्य कारणम्-

(a) पुरुषः (b) ईश्वरः
(c) प्रधानम् (d) पुरुष-प्रकृति-संयोगः

उत्तर–(d)

साङ्ख्यकारिका के अनुसार प्रकृति-पुरुष के संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति होती है–
''पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्याऽर्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।।
अर्थात् पुरुष के द्वारा प्रधान (प्रकृति) का दर्शन तथा प्रकृति (प्रधान) के द्वारा कैवल्य की प्राप्ति के लिए पुरुष और प्रकृति का संयोग अन्धे और लंगड़े के समान होता है और इससे सृष्टि प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

21. न्यायवैशेषिकमतानुसारं पदार्थाः-

(a) षट् (b) षोडश
(c) नव (d) सप्त

उत्तर–(d)

अन्नमभट्ट प्रणीत तर्कसंग्रह (वैशेषिक दर्शन) के अनुसार सात पदार्थ हैं–
(1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य (5) विशेष (6) समवाय (7) अभाव।

- वेदान्त सार के अनुसार पदार्थों की सङ्ख्या 6 मानी गई है।
- तर्कभाषाकार केशव मिश्र ने अपने तर्कभाषा नामक ग्रन्थ में 16 प्रकार के पदार्थ बताए हैं।
- अन्नमभट्ट ने तर्कसंग्रह में 9 प्रकार के द्रव्य बताए हैं–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।

22. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम्

(a) षड्विधम् (b) सप्तविधम्
(c)अष्टविधम् (d) नवविधम्

उत्तर–(b)

तर्कसङ्ग्रह के अनुसार, ''पृथिव्यां रूपम् सप्तविधम्।'' अर्थात् पृथिवी में सातों प्रकार के रूप रहते हैं। वैशेषिक दर्शनानुसार रूप का लक्षण- ''चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्'' केवल चक्षुरिन्द्रिय से ग्रहण किए जाने वाला गुण 'रूप' है। वह शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश और चित्र (चितकबरा) के भेद से 7 प्रकार का होता है। यह रूप पृथिवी, जल तथा तेज द्रव्यों में रहता है। इनमें से पृथ्वी में पूर्वोक्त सातों रूप रहते हैं तथा न चमकने वाला श्वेत रूप जल में और चमकीला श्वेत रूप तेज में रहता है।

23. तर्कसङ्ग्रहानुसारं 'न्यूनदेशवृत्ति' इति लक्षणम्-

(a) अभावस्य (b) परसामान्यस्य
(c) अपरसामान्यस्य (d) विशेषस्य

उत्तर–(c)

तर्कसङ्ग्रह के अनुसार सामान्य दो प्रकार का होता है–(1) परसामान्य (2) अपरसामान्य।
सामान्य का ही दूसरा नाम जाति है। 'पर' वह है जो अधिक देश में रहे और 'अपर' वह है जो न्यूनदेश में रहे–

''परत्वमधिकदेशवृत्तित्वम् अपरत्वं च न्यूनदेशवृत्तित्रवम्।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- तर्कसङ्ग्रह के अनुसार अभाव चार प्रकार का होता है– (1) प्रागभाव (2) प्रध्वंसाभाव (3) अत्यन्ताभाव (4) अन्योन्याभाव।
- नित्य द्रव्यों में रहने वाले विशेष तो असङ्ख्य या अनेक होते हैं- **''नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका विशेषाः''।**
- ''नित्यमब्धः समवायः'' (नित्य सम्बन्ध को समवाय कहते हैं, समवायस्त्वेक एव'' यह समवाय एक प्रकार का होता है।
- कर्म के पांच भेद है- (1) उत्क्षेपण, (2) अपक्षेपण, (3) आकुञ्चन, (4) प्रसारण, (5) गमन।

24. तर्कसङ्ग्रहानुसारं अनुमानं नाम—

(a) लिङ्गज्ञानम् (b) व्याप्तिः

(c) उदाहरणम् (d) लिङ्गपरामर्शः

उत्तर–(d)

अनुमितिकरणमनुमानम्। परामर्शजन्यं ज्ञानमनुमिति।

अनुमिति के करण को अनुमान कहते है। तथा परामर्श से उत्पन्न होने वाला ज्ञान अनुमिति कहलाता है।

परामर्श- ''व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः। अर्थात् व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मताज्ञान को परामर्श कहते हैं। यथा- वह्निव्याप्यधूमवान् अयं पर्वतः।

अनुमान के दो भेद हैं—(1) स्वार्थानुमान (2) परार्थानुमान।

व्याप्ति–''साहचर्यनियमो व्याप्तिः ''(साहचर्य नियम व्याप्ति है)। यथा- यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र अग्निः''।

25. सर्वनामस्थानसंज्ञकं सूत्रं किम्?

(a) सर्वादीनि सर्वनामानि (b) सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ

(c) सुडनपुंसकस्य (d) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

उत्तर–(c)

''सुडनपुंसकस्य'' सर्वनामस्थान संज्ञक सूत्र है।

नपुंसकलिङ्ग से भिन्न 'सुट्' (सु, औ, जस्, अम्, औट्) प्रत्ययों की 'सर्वनामस्थान' संज्ञा होती है। यथा- राजा (सु), राजानौ (औ), राजानः (जस्), राजानम् (अम्), राजानौ (औट्) ।

- **''सर्वादीनि सर्वनामानि''** अर्थात् 'सर्व' आदि शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है। यथा- सर्वे
- **''स्वादिष्वसर्वनामस्थाने''**- सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्ययों को छोड़कर सु से लेकर कप् प्रत्यय पर्यन्त के प्रत्ययों के परे होने पर पूर्व का शब्दस्वरूप पदसंज्ञक होता है।

26. 'सुप्तिङन्तं पदम्' इति सूत्रम् अतिरिच्य पदसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

(a) पदस्य (b) पदात्

(c)पदान्तस्य (d) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

उत्तर–(d)

सुप्तिङन्तं पदम् के अतिरिक्त **स्वादिष्वसर्वनामस्थाने** सूत्र पदसंज्ञक होता है। अर्थात् सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्ययों को छोड़कर सु से लेकर कप् पर्यन्त प्रत्ययों के परे रहते पूर्व की पदसंज्ञा होती है।

- **''सुप्तिङन्तंपदं''** सुबन्त और तिङन्त प्रत्ययों की पद संज्ञा होती है।
- पदात् पंचमी एकवचन में पद् धातु का रूप बनता है।
- पदान्तस्य सुप् एवं तिङ् के अन्त में सु प्रत्यय का विधान होता है।

27. वीप्सार्थे द्योत्ये का विभक्तिर्गम्यते?

(a) तृतीया (b) पञ्चमी

(c) द्वितीया (d) सप्तमी

उत्तर–(c)

वीप्सा अर्थ द्योतित होने पर ''द्वितीया'' विभक्ति होती है।

''लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः'' अर्थात् प्रति, परि और अनु शब्दों से लक्षण, इत्थम्भूताख्यान, भाग और वीप्सा द्योतित होने पर कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।

यथा- वीप्सा - वृक्षं-वृक्षं प्रति परि अनुवासिञ्चति

नोट- भाग के अतिरिक्त लक्षण, इत्थम्भूताख्यान और वीप्सा अर्थों के द्योतित होने पर अभि की भी कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। यथा- देवं-देवम् अभिसिञ्चति।

28. उपपदसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

(a) कर्मण्यण् (b) उपपदमतिङ्

(c) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (d) कुगतिप्रादयः

उत्तर–(c)

सप्तम्यन्ते पदे कर्मणि इत्यादौ वाच्यत्वेन स्थितं यत् कुम्भादि तद् वाचकं पदम् उपपद् संज्ञंस्यात्।

अर्थात् कर्मण्यम् आदि सूत्रों में सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट कुम्भ आदि क्तवाचक पद की उपपद संज्ञा होती है। यथा- कुम्भकारः (कुम्भं करोतीति)।

- **उपपदमतिङ्—** उपपद सुबन्त का समर्थ के साथ नित्य समास होता है और यह समास अतिङन्त होता है। अर्थात् तिङन्त के साथ नहीं होता है।
- **कुगति प्रादयः—** कु आदि शब्द गति संज्ञक होते हैं और प्र आदि का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है

29. 'शोभनो राजा' इत्यस्य समस्तपदं किम्?

(a) सुराजः (b) सुराजा

(c) सुराजी (d) सुराज्ञी

उत्तर–(b)

सुराजा का लौकिक विग्रह होगा–शोभनो राजा। यहां प्रादि समास हुआ है। **राजाहः सखिभ्यष्टच्** सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय प्राप्त था। प्रशंसावाचक सु से पर होने के कारण प्रकृतसूत्र सूत्र से उसका निषेध हो गया और सु राजा रूप सिद्ध हो गया।

30. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या—

(A) कृञः प्रतियत्ने **(i) योजनं योजने वा**

(B) अभाषितपुंस्काच्च **(ii) गङ्गका, गङ्गिका**

(C) कालात् सप्तमी च वक्तव्या **(iii) कुम्भकारः**

(D) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् **(iv) एधो दकस्योपस्करणम्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

उत्तर–(a)

''कृञः प्रतियत्ने''- प्रतियत्न अर्थ में वर्तमान कृ धातु के शेषत्व की विवक्षा में, कर्मकारक में षष्ठी विभक्ति होती है, यथा- एधोदकस्य उपस्करणम् (ईंधन तथा जल सम्बन्धी दूसरा गुण उत्पन्न कर देना)। यहां कृ धातु का कर्म 'एधोदक' है, इसमें द्वितीया प्राप्त थी किन्तु शेष के रूप में विवक्षित होने के कारण प्रकृतसूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई।

''तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्'' धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत कर्मण्यम् आदि सूत्रों में सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट कुम्भादि तद् वाचक पद की उपपदसंज्ञा होती है। यथा कुम्भकारः (कुम्भं करोतीति)।

''कालात् सप्तमी च वक्तव्या''- कालवाचक शब्द से सप्तमी विभक्ति होती है, यथा- योजनं योजने वा।

31. गुणवाचकास्त्रीलिङ्गे का विभक्तिव्यवस्था?

(a) तृतीया-पञ्चम्यौ (b) द्वितीया-तृतीया-पञ्चम्यः

(c) षष्ठी-सप्तम्यौ (d) द्वितीया-चतुर्थ्यौ

उत्तर–(a)

स्त्रीलिङ्गभिन्न, गुणवाचक हेतु में विकल्प से पञ्चमी विभक्ति होती है। तात्पर्य यह है कि गुणवाचक शब्द को हेतु भी होना चाहिए किन्तु स्त्रीलिङ्ग वाची नहीं होना चाहिए तब उससे विकल्प से पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–**जाड्यात् जाड्येन वा बद्धः**–यहां गुणवाचक जाड्य शब्द नपुंसकलिङ्ग में है तथा हेतु है। अतः **विभाषगुणेऽस्त्रियाम्** सूत्र से पंचमी विभक्ति विकल्प से हुई तथा पक्ष में **हेतौ** सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है।

32. अधस्तनेषु निष्ठा-संज्ञा कस्य भवति?

(a) तव्यत् इत्यस्त (b) तव्य इत्यस्य

(c) क्तवतु इत्यस्य (d) अनीयर् इत्यस्य

उत्तर–(c)

''क्त और क्तवतु'' प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
इन दोनों प्रत्ययों में ककार की ''लशक्वद्धिते'' से और क्तवतु में उकार की 'उपदेशेऽजनु-नासिक इत्' से इत्संज्ञा हो जाती है। त और तवत् शेष रह जाता है।

- तव्यत्तव्यानीयरः- धातु से तव्यत्, तव्य और अनीयर प्रत्यय होता है।

जैसे-एध् + तव्य = एधितव्य
एध् + अनीयर् = एधनीयम्

33. संज्ञार्थप्रयुक्ते 'मामकी' इति पदे ''ङीप्'' इत्यस्य–

(a) नित्यविधिः (b) निषेधः

(c) वैकल्पिक प्रवृत्तिः (d) अशुद्ध-प्रयोग

उत्तर–(a)

केवल-मामक-भागधेय-पापाऽपर-
समानाऽऽर्यकृत-सुमङ्गल- भेषजाच्च''।।

अर्थात् संज्ञा या वेद अर्थ में केवल मामक, भागधेय, पाप, अपर, समान, आर्यकृत, सुमङ्गल और भेषज इन नौ शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में नित्य ङीप् प्रत्यय होता है। अन्यत्र टाप् प्रत्यय होगा।

जैसे- **शब्द**	**वेद या संज्ञा में**	**अन्यत्र**
केवल	केवली	केवला
मामक	मामकी	मामिका
पाप	पापी	पापा
समान	समानी	समाना

34. किं तत्त्वं वियोगात्मक-भाषा-प्रकृति-लक्षणम्?

(a) सङ्ख्या (b) अर्थः

(c) सन्धिः (d) प्रकृति-प्रत्यय-पार्थक्यम्

उत्तर–(d)

विश्वभाषाओं का वर्गीकरण दो आधार पर किया गया है-
(1) आकृतिमूलक (2) पारिवारिक
आकृतिमूलक वर्गीकरण को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया गया है-
(1) अयोगात्मक (2) योगात्मक
पुनः योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया है–
(क) अश्लिष्ट (प्रत्यय-प्रधान) भाषाएं।
(ख) श्लिष्ट (विभक्ति-प्रधान) भाषाएं।
(ग) प्रश्लिष्ट (समास-प्रधान) भाषाएं।

- **श्लिष्ट योगात्मक-** इसमें प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। दोनों इस प्रकार मिले हैं कि प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग बताना सम्भव नहीं होता है।
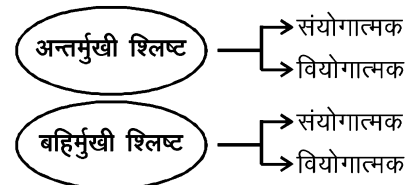
पुनः इसके भी दो भेद हुए-

वियोगात्मक में सम्बन्धतत्त्व प्रकृति से अलग लगाया जाता है। जैसे- हिन्दी में कारक चिह्न, सहायक क्रिया आदि।

35. का भाषा 'केन्टुम्-वर्गेण' असम्बद्धा?

(a) ग्रीक-भाषा (b) इताली

(c) लैटिन-भाषा (d) संस्कृत-भाषा

उत्तर–(d)

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर केन्टुम् और शतम् दो वर्गों में विभाजित किया गया है– इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली को जाता है–

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
प्रथम क्रम–	
(1) भारत-ईरानी	(1) ग्रीक
(2) बाल्टो-स्लाविक	(2) केल्टिक
(3) अर्मीनी	(3) जर्मानिक
(4) अल्बानी	(4) तोखारी
	(5) इटालिक
	(6) हिट्टाइट
द्वितीय क्रम–	
संस्कृत - शतम्	(1) जर्मन - हुन्डर्ट
अवेस्ता - सतम्	(2) फ्रेन्च - सं
फारसी - सद	(3) इटालियन - केन्तो
हिन्दी - सौ	(4) गाथिक - हुन्ड
रूसी - स्तो	(5) तोखारी - कन्ध
लिथुआनियन - स्जिम्तास	(6) केल्टिक - केत्
	(7) ग्रीक - हेक्टोन

36. तुलनात्मक-भाषाशास्त्रस्य अध्ययनस्य आरम्भकाले कयोः भाषयोः मध्ये ध्वनिसाम्यं प्रत्यक्षीकृतम्?

(a) संस्कृत-हिन्दी-मध्ये (b) संस्कृत-लैटिन-मध्ये
(c) संस्कृत-फ़ारसी-मध्ये (d) संस्कृत-फ्रांसीसी-मध्ये

उत्तर–(b)

मुख्यतः भाषा विज्ञान की तीन शाखाएं होती हैं–(1) वर्णनात्मक भाषा विज्ञान (2) ऐतिहासिक भाषा विज्ञान (3) तुलनात्मक भाषा विज्ञान।
संस्कृत, अवेस्ता, लैटिन और ग्रीक की तुलना ने ही इस तुलनात्मक भाषा को जन्म दिया। इसके ही आधार पर तुलनात्मक देवशास्त्र, तुलनात्मक विश्वसंस्कृति आदि अनेक शाखाएं प्रचलित हुईं।

**37. ''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।।'
कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः?**

(a) हर्षचरिते (b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) रघुवंशे (d) कादम्बर्याम्

उत्तर–(a)

**''निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु ।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ।।''**
यह पंक्ति बाणभट्टकृत हर्षचरितम् से उद्धृत है। यह पंक्ति बाणभट्ट ने कालिदास की मधुर सूक्तियों से मुक्त होकर कहा था, जिसका तात्पर्य है कि कालिदास की आम्र मञ्जरियों की तरह सख्त और मधुर सूक्तियों को सुनकर किसके हृदय में आनन्द नहीं पैदा होता? अर्थात् सभी के हृदय में आनन्द पैदा होता है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् 7 अंकों में विभक्त कालिदास कृत नाटक है।
- रघुवंश 19 सर्गों में विभक्त कालिदास कृत महाकाव्य है।
- कादम्बरी बाणभट्ट की रचना है।

**38. ''अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते।''
इत्यादि-श्लोकः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति?**

(a) रत्नावल्याम् (b) शिशुपालवधे
(c) कुमारसम्भवे (d) कादम्बर्याम्

उत्तर–(d)

महाकवि बाणभट्ट प्रणीत् 'कादम्बरी' कथामुखम् के सज्जनदुर्जनयोः स्तुतिनिन्दा पद्धति से प्रस्तुत श्लोक उद्धृत है।
जिसका तात्पर्य है कि अकारण वैर करने के कारण भयंकर दुर्जन व्यक्ति से किसे भय नहीं लगता? जिसके मुख में अत्यन्त दु:सह दुर्वचन महान् सर्प के विष की भांति सदा विद्यमान रहता है। अर्थात् सभी को डर लगता है।

- रत्नावली के प्रणेता हर्ष है। यह 4 अङ्कों की नाटिका है।
- शिशुपालवधम् के लेखक महाकवि माघ हैं। यह 20 सर्गों में विभक्त महाकाव्य है।
- कुमारसम्भवम् महाकवि कालिदास प्रणीत् 17 सर्गों का महाकाव्य है।

39. 'मृच्छकटिकम्' इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(a) समवकारस्य (b) नाटकस्य
(c) प्रकरणस्य (d) भाणस्य

उत्तर–(c)

महाकवि शूद्रक प्रणीत् 'मृच्छकटिकम्' एक 'प्रकरण' ग्रन्थ है। यह 10 अङ्कों में विभक्त है। इसके नायक चारुदत्त तथा नायिका धूता एवं गणिका वसन्तसेना है।
इसके मङ्गलाचरण में शिव की स्तुति की गई है।

- नाटक 5-10 अङ्कों में विभक्त होता है। इसके नायक ब्राह्मण या क्षत्रिय पुरुष होते हैं।
- समवकार 3 अङ्कों में विभक्त होता है।
- भाण 1 अङ्क में विभक्त होता है।

40. दशकुमारचरितस्य कस्मिन् चरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति?

(a) अपहारवर्मचरिते (b) उपहारवर्मचरिते
(c) राजवाहनचरिते (d) पुष्पोद्भवचरिते

उत्तर–(c)

महाकवि दण्डी प्रणीत् दशकुमारचरितम् में प्रमुखतः 10 राजाओं का वर्णन किया गया है तथा सम्पूर्ण गद्यकाव्य 8 उच्छ्वासों में वर्णित है।

प्रथम खण्ड
प्रथम उच्छ्वास–राजहंस वर्णन
द्वितीय उच्छ्वास–राजवाहनदिग्विजय
तृतीय उच्छ्वास–सोमदत्त चरितवर्णन
चतुर्थ उच्छ्वास–पुष्पोद्भवचरितवर्णन
पञ्चम् उच्छ्वास–राजवाहनचरितवर्णन

षष्ठम् उच्छ्वास–मित्रगुप्त
सप्तम् उच्छ्वास–मन्त्रगुप्त
अष्टम् उच्छ्वास–विश्रुतचरितवर्णनारम्भः
उत्तर खण्ड–
(1) अपहारवर्माचरित का वर्णन द्वितीय उच्छ्वास में मिलता है।
(2) उपहारवर्माचरित का वर्णन तृतीय उच्छ्वास में प्राप्त होता है।
(4) पुष्पोद्भवचरित वर्णन चतुर्थ उच्छ्वास में मिलता है।

41. कृतककोपवृत्तान्तः कस्मिन् दृश्यकाव्ये वर्त्तते?
(a) मुद्राराक्षसे (b) मृच्छकटिके
(c) उत्तररामचरिते (d) वेणीसंहारे

उत्तर–(a)

मुद्राराक्षस नाटक महाकवि विशाखदत्त की एकमात्र कृति होते हुए भी संस्कृत जगत् में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। मुद्राराक्षस नाटक में समाज के प्रत्येक स्तर का वर्णन करने की नाटककार ने चेष्टा की है।
मुद्राराक्षस नाटक में कुल 7 अङ्क हैं, जिसके तृतीय अङ्क में कौमुदीमहोत्सव एवं कृतककोपवृत्तान्त का वर्णन किया गया है।
- मृच्छकटिकम् शूद्रक की , उत्तररामचरित भवभूति की तथा वेणीसंहार भट्टनारायण की रचना है।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुतः-
(a) उत्तररामचरितम् **(i) भासः**
(b) बुद्धचरितम् **(ii) भवभूतिः**
(c) वेणीसंहारम् **(iii) भट्टनारायणः**
(d) स्वप्नवासवदत्तम् **(iv) अश्वघोषः**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

उत्तर–(a)

- उत्तररामचरितम् महाकवि भवभूति प्रणीत् सात अङ्कों का नाटक है। इसके नायक राम एवं नायिका सीता हैं। यह नाटक विदूषकविहीन है।
- बुद्धचरित महाकवि अश्वघोष की रचना है। यह एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवनचरित तथा उनके सिद्धान्त का वर्णन है। इस महाकाव्य में मूलरूप से 28 सर्ग हैं।
- वेणीसंहार भट्टनारायण की रचना है। इस नाटक में 6 अङ्क हैं। इसमें भीम के द्वारा द्रौपदी के वेणी संवारने का वर्णन मिलता है।
- स्वप्नवासवदत्तम्, महाकवि भास की रचना है। इस नाटक में 6 अङ्क हैं। इसमें मन्त्री यौगन्धरायण का वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है।

43. दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?
(a) भरतः (b) दौष्यन्तिः
(c) सर्वदमनः (d) गौतमः

उत्तर–(c)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सातवें अङ्क में दुष्यन्त के पुत्र सर्वदमन के नाम का उल्लेख मिलता है–
इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः। (अभि. 7/33)
अर्थात् जीवों को बलात् वश में करने के कारण इसका नाम सर्वदमन पड़ा था।
- मारीच ऋषि ने दुष्यन्त से कहा कि भविष्य में यह संसार का पालन करेगा, अतः इसका नाम भरत पड़ेगा।
- दुष्यन्त का पुत्र होने के कारण इसका नाम 'दौष्यन्तिः' पड़ा।
- गौतम विदूषक है।

44. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम्?
(a) कृष्णनारदसम्भाषणम् (b) नारदावतरणम्
(c) नारदगुणकीर्तनम् (d) कृष्णगुणकीर्तनम्

उत्तर–(a)

महाकवि माघप्रणीत् शिशुपालवधम् 20 सर्गों में विभक्त महाकाव्य है प्रथम सर्ग का नाम कृष्णनारदसंवाद है।
- शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में नारद, इन्द्र का सन्देश लेकर कृष्ण के पास आते हैं तथा शिशुपाल के अत्याचार की कथा कृष्ण से बतलाते हैं।

45. किं नाम अभिधापुच्छभूता भवति?
(a) व्यञ्जना (b) लक्षणा
(c) तात्पर्यम् (d) अर्थापत्तिः

उत्तर–(b)

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में तीन प्रकार की शब्द शक्तियों को बतलाया है–(1) अभिधा (2) लक्षणा (3) व्यञ्जना। व्यङ्ग्यप्रधान काव्य श्रेष्ठ होता है। अभिधा लक्षणा और व्यञ्जना का मूलाधार है। लक्ष्यार्थ सदैव वाच्य से सम्बद्ध होता है इसीलिए लक्षणा को 'अभिधापुच्छभूता' कहा गया है। लक्षणा का लक्षण है–
मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वासौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।
- मीमांसक कुमारिलभट्ट ने इन तीनों शक्तियों में व्यञ्जना की जगह तात्पर्या को माना है।
- हल्ला बोल–अर्थापत्ति का उदाहरण है।

46. विश्वनाथमते सङ्केतः गृह्यते ....

(a) जातौ, गुणे, द्रव्ये, क्रियायाञ्च
(b) केवलं जातिगुणयोः
(c) केवलं द्रव्ये
(d) केवलं क्रियायाम्

उत्तर–(a)

आचार्य विश्वनाथ ने शब्द की तीन शक्तियां बतलायी है-
(1) अभिधा, (2) लक्षणा, (3) व्यञ्जना।
अभिधा का लक्षण देते हुए कहते हैं- ''तत्र संकेतिततात्पर्यास्य बोधनादग्रिमाऽभिधा'' आगे पुनः इसी प्रसङ्ग में कहते है- संकेतोगृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च।'' अर्थात् संकेत ग्रह, द्रव्य, गुण, क्रिया तथा जाति इन चारों में पाया जाता है।
- मीमांसक केवल जाति में संकेतग्रह मानते हैं।

47. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

(a) चतुर्विधम् (b)त्रिविधम्
(c) द्विविधम् (d) षड्विधम्

उत्तर–(d)

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार हास्य रस के छः भेद होते हैं। इसका स्थायी भाव 'हास' है।
''विकृताकारवाग्वेषचेष्टादेः कुहकाद्भवेत्।
हास्योहासस्थायिभावः श्वेः प्रमथदैवतः।।''
अर्थात् विकृत, आकार, वाणी, वेष तथा चेष्टादि के नाट्य से हास्यरस का आविर्भाव होता है।
- हास्य के छः भेद क्रमशः है-
(1) स्मित, (2) हसित, (3) विहसित, (4) अवहसित, (5) अपहसित, (6) अतिहसित ।

48. शृङ्गाररसो भवतिः-

(a) प्रमथदैवतः (b) विष्णुदैवतः
(c) गन्धर्वदैवतः (d) नारायणदैवतः

उत्तर–(b)

रस	देवता	वर्ण
शृङ्गार	विष्णु	श्याम
हास्य	प्रमथ	श्वेत
करुण	यम	कपोत
रौद्र	रुद्र	रक्त
वीर	महेन्द्र	हेम
भयानक	यम	कृष्ण
वीभत्स	महाकाल	नील
अद्भुत्	गन्धर्व	पीत
शान्त	श्रीनारायण	धवल

49. काव्यलक्षणखण्डनविचारे कस्य मतं 'स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्' इति विश्वनाथेन कथितम्?

(a) आनन्दवर्धनस्य (b) वामनस्य
(c) मम्मटस्य (d) व्यक्तिविवेककारस्य

उत्तर–(a)

काव्यस्यात्मा ध्वनिः। अर्थात् ध्वनि ही काव्य की आत्मा है। इस परिभाषा के खण्डन में आचार्य विश्वनाथ कहते हैं कि ''यदि वाक्यमात्र व्यंग्य होने पर काव्यत्व मानने लगेंगे तो राजा देवदत्त गांव को जाता है। इत्यादि वाक्य भी काव्य हो जाएंगे क्योंकि इस काव्य में देवदत्त के भृत्य का पीछे-पीछे जाना ध्वनित हो रहा है। आचार्य विश्वनाथ रसादि ध्वनि को स्वीकार करते हैं लेकिन वस्तु ध्वनि और अलंकार ध्वनि को नहीं। इस प्रकार आचार्य विश्वनाथ द्वारा स्वीकृत रसादि ध्वनि में भिन्न ध्वनि का खण्डन समझना चाहिए।

50. ''श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं ....।'' इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते?

(a) रघुवंशे (b) नैषधीयचरिते
(c) मेघदूते (d) बुद्धचरिते

उत्तर–(c)

प्रस्तुत पंक्ति कालिदास प्रणीत् मेघदूत के उत्तरमेघ के 44वें श्लोक से उद्धृत है–

श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं ।
वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां वर्ह भारेषु केशान्।।

अर्थात् प्रियङ्गु लताओं में शरीर की भयभीत हुई हरिणियों की चितवन हल्की-हल्की मुख की कान्ति की कामना करती है तथा मयूर के पङ्खों के समूहों में केशों की हल्की-हल्की नदियों की तरङ्गों में भ्रूभङ्गों की कल्पना किया करता हूँ।

1. रघुवंशम् कालिदासकृत 19 सर्गों का महाकाव्य है।
2. नैषधीयचरितम् श्रीहर्षकृत 22 सर्गों का महाकाव्य है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2015
संस्कृत
पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'यस्यामापः परिचराः समानी–
रहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।'
मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः?

(a) अग्निसूक्तेन (b) नासदीयसूक्तेन
(c) पृथ्वीसूक्तेन (d) हिरण्यगर्भसूक्तेन

उत्तर–(c)

प्रस्तुत मन्त्र पृथ्वीसूक्त से सम्बद्ध है। इसके ऋषि अथर्वा, देवता-भूमि एवं छन्द त्रिष्टुप् है।
अर्थात् जिस पृथ्वी पर चारों ओर विचरण करने वाला जल दिन-रात समान रूप से निर्बाध प्रवाहित होता है, अनेक धाराओं वाली वह भूमि हमें दुग्ध (जल) प्रदान करें तथा हमें तेज से सींच दें।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। (1.1.1)
- नासदीय सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का 129वां सूक्त है।
- हिरण्यगर्भसूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का 121वां सूक्त है।

2. पुरुषसूक्तेन सम्बद्धा उक्तिः अस्ति–

(a) 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्'
(b) 'यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्'
(c) 'सः भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्'
(d) 'न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि'

उत्तर–(c)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद के दशम मण्डल के 90वें सूक्त 'पुरुषसूक्त' से सम्बद्ध है।
''सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
वह परम पुरुष विराट् परमेश्वर हज़ारों सिर वाला, हज़ारों नेत्रों वाला, हज़ारों पैरों वाला है। वह भूमि को सब ओर से व्याप्त कर दश अङ्गुल प्रमाण में ब्रह्मांड का अतिक्रमण कर अवस्थित हो गया।

1. राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्–मन्त्र अग्निसूक्त से सम्बद्ध है।
2. यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्-मन्त्र इन्द्रसूक्त से सम्बद्ध है।

3. कः अग्निसूक्तस्य ऋषिः?

(a) मधुच्छन्दाः (b) प्रजापतिः
(c) हिरण्यगर्भः (d) विश्वामित्रः

उत्तर–(a)

अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके ऋषि मधुच्छन्दा एवं देवता अग्नि हैं। यह गायत्री छन्द में है।

- प्रजापति हिरण्यगर्भ सूक्त के ऋषि हैं।
- विश्वामित्र तृतीय मण्डल के ऋषि हैं।

4. ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः?

(a) द्वादश (b) षोडश
(c) चत्वारः (d) दश

उत्तर–(d)

शबरस्वामी ने ब्राह्मण ग्रन्थ के दश प्रतिपाद्य विषय बतलाये हैं।
''हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना।।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य तु।।''
यज्ञ का कारण, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधान, कल्पना और उपमान (उपमा या उदाहरण) के माध्यम से वर्ण्य विषय की पुष्टि करना।

5. ''आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा।'' इति उक्तम्–

(a) सायणेन (b) कृष्णद्वैपायनेन
(c) यास्केन (d) मनुना

उत्तर–(b)

'आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा' यह उक्ति कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) से सम्बन्धित है। इसका तात्पर्य है कि जिस प्रकार औषधियों में अमृत है उसी प्रकार वेदों में आरण्यक का महत्व है।
आचार्य सायण ने सर्वप्रथम कृष्ण यजुर्वेद पर भाष्य लिखा।
यास्क, निरुक्त के कर्ता हैं, मनु, मनुस्मृति के लेखक हैं।

6. 'त्रयः स्वराः' इत्यन्तर्गते न गण्यते–

(a) उदात्तः (b) आगमः
(c) स्वरितः (d) अनुदात्तः

उत्तर–(b)

'त्रयः स्वरों के अन्तर्गत 'आगम' की गणना नहीं होती है। स्वर तीन प्रकार का होता है–
1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित
उदात्त–(उच्चैरुदात्त):– यह ऊंचे स्वर से बोला जाता है। इसका कोई चिह्न नहीं होता है।
अनुदात्त–(नीचैरनुदात्त):– यह निम्न स्वर से बोला जाता है। इसमें अक्षर के नीचे पड़ी रेखा होती है।
स्वरित–(समाहार स्वरितः):– जो समान स्वर से बोला जाता है। इसमें अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा होती है।

7. प्रायः वेदेषु एव लभ्यते—

(a) लट्लकारः (b) लृट्लकारः
(c) लिट्लकारः (d) लेट्लकारः

उत्तर—(d)

प्रायः वेदों में लेट्लकार का प्रयोग होता है। लौकिक संस्कृत में 10 लकारों का प्रयोग होता है, परन्तु लेट् लकार का प्रयोग प्रायः भूतकाल में हुआ है। यथा—सविता धर्मं साविषत्, तारिषत्, जोषिषत् आदि।

- लट् लकार का प्रयोग लौकिक संस्कृत में होता है। वर्तमान काल का बोध कराता है। यथा—भवति, भवतः, भवन्ति।
- लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल में होता है। यथा-गमिष्यति।

8. अस्ति बाह्यप्रयत्नः—

(a) नादः (b) ईषत्स्पृष्टम्
(c) स्पृष्टम् (d) विवृतम्

उत्तर—(a)

नाद, बाह्य प्रयत्न है। प्रयत्न दो प्रकार का होता है।, (1) बाह्य (2) आभ्यन्तर, बाह्य प्रयत्न 11 (ग्यारह) प्रकार के होते हैं—(1) विवार (2) संवार (3) श्वास (4) नाद (5) घोष (6) अघोष (7) अल्पप्राण (8) महाप्राण (9) उदात्त (10) अनुदात्त (11) स्वरित।
जबकि पाँच आभ्यन्तर प्रयत्न हैं—(1) स्पृष्ट (2) ईषत्स्पृष्ट (3) ईषद्विवृत (4) विवृत् (5) संवृत्त।

9. ''तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कार्त्स्नर्यम'' इत्यनेन लक्षितम्—

(a) कल्पः (b) छन्दस्
(c) निरुक्तम् (d) ज्योतिष्

उत्तर—(c)

प्रस्तुत सूक्ति यास्क कृत निरुक्त के प्रथम अध्याय के पञ्चम पाद से उद्घृत है। जिसका अभिप्राय यह है कि निरुक्त के होते अध्ययन से दुरूह वैदिक शब्दों को निर्वचन के द्वारा वैदिक मन्त्रों के अर्थ का ज्ञान होता है।

- **कल्प**—कल्प के 4 भेद हैं-
  1. श्रौतसूत्र
  2. गृह्यसूत्र
  3. धर्मसूत्र
  4. शुल्बसूत्र
- **छन्द**—छन्द के प्रवर्तक आचार्य पिङ्गल हैं।
- **ज्योतिष्**—ज्योतिष् के प्रवर्तक आचार्य लगध हैं।

10. द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति—

(a) बृहतीच्छन्दसि (b) पंक्तिच्छन्दसि
(c) जगतीच्छन्दसि (d) अनुष्टुप्

उत्तर—(d)

अनुष्टुप् छन्द में 4 पाद और बत्तीस अक्षर होते हैं।
$8 \times 8 \times 8 \times 8 = 32$
अर्थात् प्रत्येक पाद में 8 अक्षर होते हैं। इस प्रकार अनुष्टुप् छन्द में कुल 32 अक्षर होते हैं।

छन्द	चरण	अक्षर
गायत्री	तीन चरण	24
उष्णिक्	चार चरण	28
अनुष्ठुप्	तीन चरण	32
बृहती	चार चरण	36
पंक्ति	चार चरण	40
त्रिष्टुप्	चार चरण	44
जगती	चार चरण	48

11. पदूपरणार्थकः निपातः अस्ति—

(a) इत् (b) च
(c) ननु (d) इव

उत्तर—(a)

आचार्य यास्क कृत निरुक्त के प्रथम अध्याय में निपात के तीन भेद बताए गए हैं—(1) उपमार्थक (2) कर्मोपसंग्रहार्थक (3) पदपूरणार्थक।

- उपमार्थक निपात— इव, न, चित्, नु।
- कर्मोपसंग्रहार्थक निपात— च, व, ह, ननु।
- पदपूरणार्थक निपात— कम्, ईम्, इत्, उन्।

निरुक्त में परिशिष्ट सहित 14 अध्याय है।

12. 'व्यञ्जनसन्निपातः इति कथ्यते—

(a) प्रगृह्यः (b) अघोषः
(c) संयोगः (d) यमः

उत्तर—(c)

आचार्य शौनक कृत ऋक्प्रातिशाख्य के प्रथम पटल में संयोग का लक्षण बताया गया है—
''द्वयोः व्यञ्जनवर्णयोः सन्निपातः एव संयोगः''
अर्थात् दो व्यंजनवर्णों का सम्बन्ध ही संयोग कहलाता है।
''हलोऽनन्तराः संयोगः - अच् के व्यवधान से रहित हलों की संयोग संज्ञा होती है। जैसे- ज्योत्स्ना-उज्ज्वलः''

- ओकारस्य प्रगृह्यम्—ओकार वर्ण प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।
- अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः, यथा—क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ् प् फ्।
- स्पर्श यमानुनासिकाः स्वान्परेषु स्पर्शेष्वनुनासिकेषु चतुर्विधा।

13. यक्षरूपधारिणः परब्रह्मणः आख्यायिका उपलभ्यते—

(a) ईशावास्योपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

उत्तर—(b)

केनोपनिषद् सामवेद के जैमिनीय ब्राह्मण के अन्तर्गत आता है। ''तलवकार उपनिषद्'' को ही जैमिनीय उपनिषद् कहते हैं। इस उपनिषद् में सबसे पहले 'केन' शब्द आया है। इसी से इसका नाम केनोपनिषद् पड़ा है। यह चार खण्डों में विभाजित है, उसके तृतीय खण्ड में पर ब्रह्म परमेश्वर ने यक्ष का रूप धारण करके अग्नि, वायु आदि देवताओं के अहंकार को नष्ट करने का विवेचन किया गया है।

- ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद के 40वें अध्याय से सम्बद्ध है।
- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीय उपनिषद् से सम्बद्ध है।

14. ''मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं ....'' इति उक्तम्''

(a) मनसा (b) वाचा

(c) नचिकेतसा (d) प्रजापतिना

उत्तर–(d)

''मन एवं त्वच्छ्रेयो मनसो वैत्वं......'' ''यह उक्ति प्रजापति की है।'' शतपथ ब्राह्मण में मन एवं वा-णी के संवाद को अत्यन्त ललित शैली में प्रस्तुत किया गया है, जिसे वाङ्मनस् आख्यान के रूप में जाना जाता है। यहां मन एवं वाणी के विषय में अपनी प्रधानता सिद्ध करने के लिए विवाद निर्णय हेतु प्रजापति के पास जाते हैं-

''स प्रजापतिर्मनस एवानूवाचमन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं कृतानुवर्त्मासि श्रेयसो वै पापीयाङ् कृतानुकरोऽनुवर्त्मा भतीति।

15. 'यद् दूरङ्गता भवति' इति निरुक्तया किम् उपलक्ष्यते?

(a) गौः (b) समुद्रः

(c) नदी (d) मेघः

उत्तर–(a)

आचार्य यास्क कृत निरुक्त के द्वितीय अध्याय में निर्वचन की चर्चा की गई है। यथा–

गौः– (1) गौरिति पृथिव्या नामधेयम्। (2) यद् दूरङ्गता भवति। (3) यच्चास्यां भूतानि गच्छति। समुद्द्रवन्ति अस्मादायः

2. समुद्र– समुद्वन्त्यस्मादयः, समभिद्रवन्त्येनमापः, सम्मोदन्तेऽस्मिन् भूतानि, समुदको भवति, समुत्तीति वा

3. नदी– नदना इमा भवन्ति शब्दवत्यः।

4. मेघ– मेहतीति सिंचत्यसो मेघः।

5. आचार्य– मेहतीति सिंचत्यसो मेघः।

- आचार्यः आचारं ग्रह्यति
- आचिनोत्यर्थान्
- आचिनोति बुद्धिम्

16. 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः'इत्युक्तिः कुतः उद्धृता–

(a) कठोपनिषदः (b) तैत्तिरीयोपनिषदः

(c) पाणिनीयशिक्षातः (d) याज्ञवल्क्यशिक्षातः

उत्तर–(b)

अथ शिक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः, स्वरः, मात्रा, बलम्, साम, संतानः इत्युक्तः शिक्षाध्यायः। (तैत्तिरीय उपनिषद् प्रथम वल्ली द्वितीय अनुवाक)। अर्थात् हम शिक्षा का वर्णन करेंगे। वर्ण, स्वर, मात्रा, प्रयत्न वर्णों का समवृत्ति से उच्चारण अथवा गान करने की रीति, सन्धि, इस प्रकार वेद के उच्चारण को शिक्षाध्याय कहा गया है।

- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद (कठ् शाखा) से सम्बद्ध है।
- आचार्य पाणिनिकृत पाणिनीय शिक्षा एक व्याकरणात्मक ग्रन्थ है।

17. अधोलिखितेषु नित्यकर्म भवति–

(a) ज्योतिष्टोमादि (b) सन्ध्यावन्दनादि

(c) चान्द्रायणादि (d) जातेष्टयादि

उत्तर–(b)

सन्ध्यावन्दनादि नित्य कर्म होते हैं, सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में छः प्रकार के कर्म बताए गए हैं–

(1) काम्यानि–स्वर्गादीष्टसाधनानि, ज्योतिष्टोमादीनि।

(2) निषिद्धानि–नरकादीष्टसाधनानि, ब्राह्मणहननादीनि।

(3) नित्यानि–प्रत्यवायसाधनानि, सन्ध्यावन्दनादीनि।

(4) नैमित्तिकानि–पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातेष्ट्यादीनि।

(5) प्रायश्चित्तानि–पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।

(6) उपासनानि–सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापार रूपाणि शाण्डिल्य विद्यादीनि।

18. अजहल्लक्षणायाः उदाहरणं भवति–

(a) शोणो धावति (b) तत्त्वमसि

(c) गङ्गायां घोषः (d) सोऽयं देवदत्तः

उत्तर–(a)

आचार्य सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत् वेदान्तसार में महावाक्यार्थ के तीन सम्बन्ध बताए गए हैं–(1) समानाधिकरण (2) विशेषणविशेष्य (3) लक्ष्यलक्षण सम्बन्ध।

इसी क्रम में लक्षणा के तीन भेद बताए गए हैं (1) जहल्लक्षणा–गङ्गायांघोषः (2) अजहल्लक्षणा–शोणो धावति (3) जहदजहल्लक्षणा–(भागल-क्षणा) –तत्त्वमसि।

19. अधोलिखितेषु साक्षात्कारोपयोगि भवति–

(a) उपक्रमः (b) अपूर्वता

(c) निदिध्यासनम् (d) फलम्

उत्तर–(c)

वेदान्तसार के अनुसार चैतन्य साक्षात्कार के 4 उपाए हैं–(1) श्रवण (2) मनन (3) निदिध्यासन (4) समाधि।

निदिध्यासन–

''विजातीयदेहादिप्रत्ययरहिताद्वितीयवस्तुसजातीयप्रत्यय प्रवाहो निदिध्यासनम्''।

अर्थात् विजातीय शरीरादि विषयक विचारों से रहित मन में अद्वितीय वस्तु के सजातीय विचारों को प्रवाहित करना ही निदिध्यासन है।

- किसी प्रकरण के प्रतिपाद्य अर्थ का उसके आरम्भ और अन्त में उपादान करना ही उपक्रम कहलाता है।
- प्रकरण प्रतिपाद्य वस्तु का किसी अन्य प्रमाण द्वारा विषय न बनाया जाना ही अपूर्वता है।
- किसी प्रकरण के द्वारा प्रतिपाद्य आत्मज्ञान को प्रतिपादित करना ही फल है।

20. अधस्तनेषु साधनचतुष्टये अन्तर्भवति—

(a) शमदमादिषट्कसम्पत्तिः (b) चन्दनम्
(c) उपक्रमः (d) उपसंहारः

उत्तर—(a)

वेदान्तसार के अनुसार चार प्रकार के साधन चतुष्टय हैं– (1) नित्यानित्यवस्तुविवेक (2) इहामुत्रार्थ फलभोगविराग (3) शमदमादिषट्कसम्पत्तिः (4) मुमुच्छा।
1. शमदमादिषट्कसम्पतिः–के 6 भेद हैं–(1) शम (2) दम (3) उपरति (4) तितिक्षा (5) समाधान (6) श्रद्धा।
उपक्रम, अपूर्वता एवं फल श्रवण के भेद हैं।

21. वेदः कः?

(a) अपौरूषेयं वाक्यम्
(b) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध-बोधकं वाक्यम्
(c) कर्मबोधकं वाक्यम्
(d) समभिव्याव्हारः वाक्यम्

उत्तर—(a)

''अपौरूषेयं वाक्यम् वेदः'' आचार्य लौगाक्षिभास्कर प्रणीत् अर्थसंग्रह में वेद का लक्षण निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–
अपौरुषेयं वाक्यं वेदः— अर्थात् अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं। तत्र धर्मब्रह्मप्रतिपादकमपौरुषेय प्रमाणवाक्य वेदः। अर्थात् धर्म और ब्रह्म के प्रतिपादक अपौरुषेय प्रमाणित वाक्य को वेद कहते हैं।

- अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिः विनियोग विधिः।
  अर्थात् (द्रव्यदेवता आदि) अङ्ग तथा प्रधान (होम आदि) के सम्बन्ध के ज्ञापक विधि को विनियोग विधि कहते है।
- कर्मबोधकं वाक्यम्—कर्म का बोधक वाक्य कहलाता है।
- समभिव्याव्हारः वाक्यम्—समभिव्यावहार अर्थात् सोहोच्चारण को वाक्य कहते हैं।

22. प्रयोगविधेः सहकारिप्रमाणानि—

(a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) चत्वारि

उत्तर—(b)

प्रयोगविधि के सहकारी छः प्रमाण हैं। अर्थसंग्रह के अनुसार प्रयोगविधि का लक्षण है–प्रयोगप्राशुभावबोधकोविधिः प्रयोगविधि– अर्थात् जिस विधिवाक्य में प्रयोग को शीघ्र करने का बोध होता है, उसे प्रयोगविधि कहते हैं। इस विधि के छः सहायक प्रमाण हैं– (1) श्रुति (2) अर्थ (3) पाठ (4) स्थान (5) मुख्य (6) प्रवृत्ति।
अन्य महत्वपूर्ण तथ्य- भावना के दो भेद है- 1. शाब्दी भावना 2. आर्थीभावना
विधि चार प्रकार की होती है-
1. उत्पत्ति विधि 2. विनियोग विधि
3. अधिकार विधि 4. प्रयोग विधि

23. 'तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ' इति कस्य लक्षणं भवति?

(a) अपूर्वविधेः (b) नियमविधेः
(c) अधिकारविधेः (d) परिसङ्ख्यायाः

उत्तर—(d)

'तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ' यह परिसंख्याविधि का लक्षण है।
उभयोश्य युगपत्प्राप्तितर व्यावृत्तिपरो
विधिः परिसंख्याविधिः। अर्थात् दो वैकल्पिक पदार्थों की युगपद्प्राप्ति होने पर एक विशेष पदार्थ की निवृत्ति का बोध कराने वाली विधि परिसंख्या विधि कहलाती है।
उदाहरण–'पञ्चपञ्चनखा भक्ष्याः' इस वाक्य में परिसंख्या विधि है। क्योंकि पांच नाखूनों वाले पांच प्रणाली भक्ष्य होने के साथ अन्य का निषेध हो गया। परिसंख्या का अभिप्राय निषेधपरक होता है।

24. 'विरोधे गुणवादः स्यात्' इति लक्षणम्—

(a) नामधेयस्य (b) गुणविधेः
(c) अर्थवादस्य (d) मन्त्रस्य

उत्तर—(c)

अर्थसंग्रह के अनुसार अर्थवाद का लक्षण है–''प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः'' अर्थात् प्रशंसापरक एवं निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं। अर्थवाद के तीन प्रभेद होते हैं–

1. विरोधे गुणवादः विरोध होने पर गुणवाद होता है।
2. अनुवादः अवधारिते स्थात (विषय के ज्ञान होने पर अनुवाद) यथा- अग्निर्हिमस्य भेषजम्
2. भूतार्थवादस्तद्वानात् (दोनों न होने पर अर्थवाद होता है। यथा- इन्द्रो वृत्राम वज्रमुदयच्छा।)

- नामधेय विजातीय की निवृत्तिपूर्वक विधेयार्थ का निश्चय करता हुआ सार्थक होता है। यथा–उद्भिदा यजेत् पशुकामः।
- जिस विधि में क्रिया के अङ्ग का विधान किया जाए उसे गुणविधि कहते हैं।
- प्रयोग से समवेत अर्थ का जो स्मरण कराते हैं, उन्हें मन्त्र कहते हैं।

25. **समीचीनतालिकां चिनुत–**

(a) घटः पटः न		**(i) प्रागभावः**	
(b) इह घटो भविष्यति		**(ii) अन्योन्याभावः**	
(c) भूतले घटः न		**(iii) प्रध्वंसः**	
(d) घटो ध्वस्तः		**(iv) अत्यन्ताभावः**	

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(2)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(3)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(4)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

उत्तर–(d)

A घटः पटः न–उदाहरण अन्योन्याभाव का है। अर्थात् तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिता जैसे- घट पट नहीं है। अभाव अन्योन्याभाव कहते हैं।

B इह घटो भविष्यति–उदाहरण प्रागभाव का है। अर्थात् जो जिसका आदि नहीं है किन्तु अन्त है ऐसे अभाव को प्रागभाव कहते हैं।

C भूतले घटः न–उदाहरण अत्यन्ताभाव का है। अर्थात् नित्य संसर्ग से अवच्छिन्न प्रतियोगिता वाले अभाव को अत्यन्ताभाव कहते हैं।

D घटोध्वस्तः–उदाहरण प्रध्वंसाभाव का है। अर्थात् जो उत्पत्ति वाला हो परन्तु नाशवाला न हो उसे प्रध्वंसाभाव कहते हैं।

26. **अभावस्य प्रत्यक्षं भवति–**

(a) संयोगसम्बन्धेन
(b) समवायसम्बन्धेन
(c) संयुक्त-समवाय-सन्निकर्षेण
(d) विशेषण-विशेष्य-भावसन्निकर्षेण

उत्तर–(d)

अभाव के प्रत्यक्ष ज्ञान में विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है। घटाभाव वाला भूतल है इस ज्ञान से चक्षु इन्द्रिय से संयुक्त भूतल और घटाभाव विशेषण है।

- चक्षु इन्द्रिय से घट आदि के प्रत्यक्ष ज्ञान में संयोग नामक सन्निकर्ष होता है।
- श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द नामक गुण का प्रत्यक्ष होने पर समवाय नामक सन्निकर्ष होता है।
- चक्षु से रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में संयुक्तसमवेत समवाय नामक सन्निकर्ष होता है।

27. **'आप्तवाक्यं शब्दः' इति लक्षणम्–**

(a) पदस्य (b) वाक्यस्य
(c) शब्दप्रमाणस्य (d) महावाक्यस्य

उत्तर–(c)

आप्त पुरुष के वाक्य को शब्द प्रमाण कहते हैं। जो यथार्थ (सत्य) बोलता है अर्थात् जो वस्तु स्वरूपतः जैसी है उसे ठीक वैसे ही कहने वाले को आप्त कहते हैं। तथा पदों के समूह को वाक्य कहते हैं। जैसे–गाम् आनय। शक्ति से युक्त शब्द को वाक्य कहते हैं। इस प्रकार के ईश्वरीय संकेत को शक्ति कहते हैं।

- **सुप्तिङन्तम् पदम्** सुबन्त एवं तिङन्त की पद संज्ञा होती है।
- **वाक्यं पदसमूहः–** पदों के समूह को वाक्य कहते हैं।
- अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्ट पिण्ड ज्ञानमुपमानम्। (अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ गौ की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान प्रमाण है।)

28. **'एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम्' इति लक्षणं भवति–**

(a) अज्ञानस्य (b) समूहालम्बनज्ञानस्य
(c) संशयस्य (d) शाब्दज्ञानस्य

उत्तर–(c)

अन्नम्भट्ट के अनुसार 'एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम्'– एक धर्मी में परस्पर विरुद्ध अनेक धर्मों के वैशिष्ट्य का अवगाहन करने वाले ज्ञान को संशय कहते हैं। जैसे– (स्थाणुर्वा पुरुषो वा) यह स्थाणु है या पुरुष।

- (मिथ्याज्ञानं विपर्ययः) मिथ्या ज्ञान को विपर्यय कहते हैं।
- (व्याप्यारोपेण व्यापकारोपस्तर्कः) व्याप्य के आरोप के व्यापक के आरोप को 'तर्क' कहते हैं।

29. **'प्रतिविषयाध्यवसायः' इत्यस्य सम्बन्धः केन?**

(a) अनुमानेन (b) आप्तवचनेन
(c) प्रत्यक्षेण (d) उपमानेन

उत्तर–(c)

'प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्ट' आचार्य ईश्वरकृष्ण प्रणीत् साङ्ख्यकारिका के कारिका में प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण वर्णित है–

''प्रतिविषयाऽध्वसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनं तु।।

विषय से सम्बद्ध इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं। अनुमान पूर्ववत्, शेषवत् तथा सामान्यतोदृष्ट रूप से तीन प्रकार का है तथा वह व्याप्य तथा व्यापक के ज्ञान से उत्पन्न होता है। आप्तवचन आगम प्रमाण युक्त श्रुति वाक्य से उत्पन्न अर्थ ज्ञान को कहते हैं।

30. **'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः कस्य?**

(a) प्रकृतेः (b) गुणत्रयस्य
(c) जलस्य (d) तेजसः

उत्तर–(b)

साङ्ख्यकारिका के अनुसार, गुणत्रय का लक्षण है–

''सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चाऽर्थतो वृत्ति;।।''

सत्त्व गुण हल्का अतएव प्रकाशक, रजस् गुण प्रवृत्तिशील (चञ्चल) अतएव उत्तेजक एवं तमस् गुण भारी अतएव अवरोधक माना गया है। एक ही प्रयोजन की सिद्धि के लिए तीनों गुण दीपक के समान मिलकर कार्य करते हैं।

- प्रकृति त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्त्व, रजस् एवं तमो गुण से युक्त है।
- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन ये सप्त पदार्थ हैं।

31. 'ततोऽहङ्कारः' इति अहङ्कारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति?

(a) प्रकृतेः (b) महतः
(c) षोडशगणात् (d) पञ्चभूतेभ्यः

उत्तर–(b)

साङ्ख्यकारिकार के अनुसार–

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः। (सां.का.-3)

मूल प्रकृति किसी का विकार अथवा कार्य नहीं है। महत् इत्यादि सात तत्त्व कारण और कार्य दोनों ही हैं। सोलह तत्त्वों का समुदाय तो केवल कार्य ही है, पुरुष न कारण ही है न कार्य ही।

उत्पत्ति का क्रम क्रमशः प्रकृति, महत्, अहङ्कार, पञ्च ज्ञानेन्द्रियां, पञ्च कर्मेन्द्रियां, पञ्चतन्मात्राएं, मन, पञ्च महाभूत

- प्रकृति केवल प्रकृति है किसी की विकृति नहीं।
- षोडशगण का समूह केवल विकृति है।

32. साङ्ख्यदर्शनानुसारं अध्यवसायात्मकं तत्त्वं किम्?

(a) बुद्धिः (b) चक्षुः
(c) त्वक् (d) कर्णः

उत्तर–(a)

साङ्ख्यदर्शन के अनुसार, बुद्धि का लक्षण है–

''अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्त्विकमेतद् रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्।।

अर्थात् अध्यवसाय अर्थात् निश्चय करना ही बुद्धि है। अध्यवसायकता के धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य इसके चार सात्त्विक रूप हैं। इनके विपरीत अर्थात् अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य तथा अनैश्वर्य इसके चार तामस धर्म हैं।
चक्षु त्वक् ज्ञानेन्द्रिय के भेद हैं।

33. 'स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति' इत्यनेन महाभाष्ये किमभिप्रेतम्?

(a) शब्दशुद्धिः (b) चित्तशुद्धिः
(c) कायशुद्धिः (d) व्यवहारशुद्धिः

उत्तर–(a)

महर्षि पतञ्जलिकृत महाभाष्य के अनुसार व्याकरण के 5 मुख्य एवं 13 गौण प्रयोजन बताए गए हैं। उन्हीं 13 गौण प्रयोजनों में **दुष्टःशब्दः** भी एक प्रयोजन है जिसका उदाहरण है–

''दुष्टः शब्दः स्वरतोवर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराघात्।।''

इसमें शब्द शुद्धि दोष है, क्योंकि इसमें दोष होने के कारण ''इन्द्र का जो शत्रु है उसकी मृत्यु हो जाय'' यह तात्पर्य हुआ। दोषयुक्त शब्द का प्रयोग हम न करें एतदर्थ हमें व्याकरण का अध्ययन करना चाहिए। अतः शब्द की शुद्धि के लिए ही व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

34. 'यागात् स्वर्गो भवति' इत्यत्र भू-धातोः कः अर्थः?

(a) सत्ता (b) यागः (c) स्वर्गः (d) उत्पत्तिः

उत्तर–(d)

'यागात् स्वर्ग कामो भवति' अर्थात् यागादि क्रिया ही स्वर्ग की साधक होती है। यहां पर भू धातु का अर्थ उत्पत्ति का साधक है।

- भू सत्तायाम् सूत्र से भू धातु सत्ता अर्थ में होती है।
- स्वर्ग की साधनभूत याग आदि क्रिया है।

35. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीना तालिका चेतव्या–

(a) झयः	**(i) भृत्यः**
(b) मनोरौवा	**(ii) शताद् बद्धः**
(c) भृञोऽसंज्ञायाम	**(iii) विद्युत्वान्**
(d) अकर्कर्यृणे पञ्चमी	**(iv) मनुः**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

उत्तर–(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-
झयः - विद्युत्वान्
मनोरैवा - मनुः
भृञोऽसंज्ञायाम - भृत्यः
अकर्कर्यृणे पञ्चमी - शताद् बद्धः
झयन्त से परे मनु के मकार को वकार आदेश होता है। जैसे– विद्युत्वान्, ज्ञानवान्, लक्ष्मीवान्।

36. 'सर्पिषो जानीते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?

(a) तङाऽऽनावाऽऽत्मनेपदम्
(b) कर्तरि कर्मव्यतिहारे
(c) अनुदात्तङित आत्मनेपदम्
(d) अकर्मकाच्च

उत्तर–(d)

अकर्मक ज्ञा धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है। जैसे–सर्पिषो जानीते। ज्ञा 'धातु का अर्थ जब ज्ञान न हो तब उसके कारण में षष्ठी होती है। इसलिए अर्थ करते हुए आत्मनेपद का प्रयोग किया गया है।

- क्रिया का विनिमय (अदला-बदली) बोध होने पर कर्ता आत्मनेपद में होता है।
- अनुदात्त प्रत्ययों की आत्मने पद संज्ञा होती है।

37. 'उपरमति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

(a) व्याङ्परिभ्यो रमः (b) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः
(c) अनुपराभ्यां कृञः (d) उपाच्च

उत्तर–(d)

उप उपसर्ग से पर 'रम्' धातु को परस्मैपद होता है। यथा–यज्ञदत्तमुपरमति। यहां उप उपसर्ग पूर्व होने से रम् धातु से परस्मैपद हुआ।

- वि, आङ् और परि उपसर्ग पूर्वक रम् धातु से परस्मैपद होता है। यथा–विरमति।
- अभि, प्रति और अति उपसर्ग से पर क्षिप् धातु से परस्मैपद होता है।
- अनु और परा उपसर्ग पूर्वक कृञ् धातु से कर्तृगामी क्रियाफल में भी परस्मैपद होता है। यथा–अनुकरोति, पराकरोति।

38. ध्वनिस्फोटयोर्मध्ये कः सम्बन्धः?

(a) कार्यकारणभावः (b) शक्तिशक्तिमद्भावः
(c) गुणगुणिभावः (d) क्रियाक्रियावद्भावः

उत्तर–(a)

ध्वनि और स्फोट के मध्य कार्यकारणभाव सम्बन्ध होता है।
स्फोट और नाद का सम्बन्ध है–तरङ्गप्रतिबिम्बवत्।
अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति
छन्दस्यश्छन्दसां योनिमात्मा छन्दोमयी तनुम्।।
ध्वनि और स्फोट का सम्बन्ध–व्यञ्जक व्यङ्ग्यभाव होता है।

39. स्वीकृतं भर्तृहरिमते वाचः–

(a) चातुर्विध्यम् (b) त्रैविध्यम्
(c) द्वैविध्यम् (d) ऐकविध्यम्

उत्तर–(b)

भर्तृहरि के अनुसार वाक्यपदीयम् में तीन प्रकार के वाणी के भेद बताए गए हैं–

(1) वैखरी–वैखरी अन्यों द्वारा अनुभूयमान व्यक्त वाक् है।
(2) मध्यमा–मध्यमा का सम्बन्ध बुद्धि और उच्चारण की प्रयत्नावस्था से है।
(3) पश्यन्ती–पश्यन्ती बुद्धिस्थ शब्द की वह स्थिति है जिसमें शब्द अखण्ड रूप में मन या बुद्धि में स्थित रहता है।

40. तृतीये सवने कीदृशः स्वरः प्रयोज्यः?

(a) गम्भीरः (b) मध्यमः
(c) तारः (d) कम्पः

उत्तर–(c)

महर्षि पाणिनि विरचित पाणिनीय शिक्षा में प्राणवायु कण्ठ-प्रदेश में सञ्चरण करता हुआ मध्यम ध्वनि को उत्पन्न करता है–

कण्ठे माध्यन्दिनयुगं मध्यमं त्रैष्टुभानुगम्
तारं तार्तीयसवनं शीर्षण्यं जगतानुगम्।।

अर्थ–जिस ध्वनि में प्राणवायु शिर प्रदेश में पहुंच कर वहां सञ्चरण करता हुआ तार ध्वनि को उत्पन्न करता है, उस ध्वनि को तार ध्वनि कहते हैं।

41. 'वज्रं पतति मस्तके' इति पद्यांशः कुत्रोक्तः?

(a) महाभाष्ये (b) अष्टाध्याय्याम्
(c) वाक्यपदीये (d) पणिनीशिक्षायाम्

उत्तर–(d)

आचार्य पाणिनि कृत पाणिनीय शिक्षा से प्रस्तुत पंक्ति उद्धृत है–

''अवक्षरमनायुष्यं विस्वरं व्याधिपीड़ितम्।
अक्षता शस्त्ररूपेण वज्रं पतति मस्तके।।

अर्थात्–वेदाक्षर दुष्ट होने पर यजमान की आयु का विनाश करता है और उदात्तादि स्वरों से विहीन होने पर रोगयुक्त बनाता है। इस प्रकार वेदशास्त्र वज्रस्वरूप होकर अप्रतिहत शास्त्र के रूप में यजमान के शिर पर गिरकर उसे विनष्ट कर देता है।

- महाभाष्य, महर्षि पतञ्जलि की
- अष्टाध्यायी, आचार्य पाणिनि की एवं
- वाक्यपदीय, आचार्य भर्तृहरि की रचना है।

42. प्रसिद्धध्वनिनियमेषु अर्वाचीनतमः कः?

(a) वर्नरनियमः (b) ग्रासमाननियमः
(c) ग्रिमनियमः (d) विन्टरनिट्जनियमः

उत्तर–(a)

किसी भाषा विशेष में एवं किसी काल विशेष में कुछ विशेष परिस्थितियों के अन्तर्गत हुए विशेष प्रकार के ध्वनि को परिवर्तनों ध्वनि नियम कहते हैं। ध्वनि नियम- (1) ग्रिम (2) ग्रासमान (3) वर्नर (4) तालव्य (5) मूर्धन्य नियम।

ग्रिम नियम– ग्रिम नियमानुसार मूलभारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियां क्रमशः हो जाती है- प्रथम को द्वितीय क्रमशः क्, त्, प् को ख्, थ्, फ्,
चतुर्थ को तृतीय क्रमशः घ्, ध्, भ् को ग्, द्, ब्,
तृतीय को प्रथम क्रमशः ग्,द्,ब् को क्, त्,प्।

मूलभारोपीय दो अक्षर धातुओं में दो महाप्राण ध्वनियां थी। सामान्यता प्रथम महाप्राण ध्वनि हट जाती है, द्वितीय वर्ण में महाप्राण ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है। जैसे- धधामि > दधामि > भभार > बभार।

43. जिह्वाभागविशेषोच्चारणदृष्ट्या मध्यस्वरोऽस्ति—

(a) अकारः (b) इकारः
(c) उकारः (d) एकारः

उत्तर–(a)

जिह्वाभाग के विशेष उच्चारण करने पर मध्य स्वर में अकार आता है। मुख में हवा गूंजने पर मुख-विवर अनेक रूप धारण करता है और इस कार्य में जिह्वा सहायक होती है। जिह्वा का अग्र, मध्य या पश्च भाग विभिन्न पारिस्थितियों में उठकर इसमें सहायक होता है। इसके आधार पर ही स्वरों को अग्र (इ, ई, ए), पश्च (उ, ऊ, आ), मध्य (अ) कहा जाता है।

44. आकृतिमूलकवर्गीकरणेन असम्बद्धम्—

(a) प्रकृतिः (b) प्रत्ययः
(c) उपसर्गः (d) व्यापारः

उत्तर–(d)

आकृतिमूलक वर्गीकरण को मुख्यत दो वर्गों में विभाजित किया जाता है–(1) अयोगात्मक (2) योगात्मक।

1. **अयोगात्मक**–इसमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व का संयोग नहीं होता। इसमें प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है।
2. **योगात्मक**–इसमें प्रकृति प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व का संयोग रहता है। इसके मुख्यतः तीन वर्ग हैं–(1) अश्लिष्ट–प्रत्यय प्रधान (2) श्लिष्ट–विभक्ति प्रधान (3) प्रश्लिष्ट–समास प्रधान।

45. पारिवारिकवर्गीकरणेन असम्बद्धम्—

(a) फलसाम्यम् (b) ध्वनिसाम्यम्
(c) पदसाम्यम् (d) अर्थसाम्यम्

उत्तर–(a)

पारिवारिक वर्गीकरण में रचनातत्त्व के साथ ही अर्थतत्त्व पर भी ध्यान दिया गया है। पारिवारिक वर्गीकरण–(1) अर्थ प्रधान (2) रचना प्रधान (3) पद प्रधान, भेद से 3 प्रकार का होता है।
पारिवारिक वर्गीकरण को वंशानुक्रम पर आधारित होने से और भूगोल एवं इतिहास पर निर्भर होने से ऐतिहासिक कहते हैं।

46. संस्कृतभाषायाः 'शतम्' इति पदं गॉथिकभाषायाम् 'हुन्द' भवति; इति कस्य मतम्?

(a) ग्रिममहोदयस्य (b) वर्नरमहोदयस्य
(c) ग्रासमानमहोदयस्य (d) थॉम्पसनमहोदयस्य

उत्तर–(b)

मूलभारोपीय क्, त्, प् ध्वनियां मूल भारोपीय शब्द के प्रारम्भ में या उदात्त स्वर के तत्काल बाद आने पर ही गॉथिक (निम्न जर्मन) में ग्रिम नियमानुसार ख्, थ्, फ् में बदल जाती हैं।
जैसे–संस्कृत शब्द 'भ्राता' को गाथिक में 'brother'। इसी प्रकार भारोपीय के स्थानापन्न संस्कृत शब्द 'शतम्' को गाथिक में 'हुन्द' तथा सप्तन् को 'सिबुन' होता है।

47. अर्थपरिवर्तनकारणेष्वन्यतमम्—

(a) सादृश्यम् (b) आगमः
(c) लोपः (d) स्वरभक्तिः

उत्तर–(a)

भाषा में एक प्रयोग को देखकर उसके कारण को जाने बिना ही उसी प्रकार का दूसरा प्रयोग करना भाषा विज्ञान में सादृश्य या मिथ्या सादृश्य कहलाता है। वस्तुतः सादृश्य के मूल में मानव की मानसिक आलस्य की प्रवृत्ति ही कार्य करती है।

- किसी शब्द में पहले से अविद्यमान किसी नई ध्वनि का आकर शब्द के आदि मध्य में जुड़ जाना ही आगम कहलाता है।
- आगम के विपरीत किसी शब्द के आदि, मध्य या अन्त में पहले से विद्यमान ध्वनि का बाद में लुप्त हो जाना ही लोप कहलाता है।
- जो ध्वनियां पहले अनुनासिक नहीं हों किन्तु बाद में अनुनासिक हो जाएं, जैसे– सर्प से सांप।

48. ''हृतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः।''; कस्य वर्णना इयम्?

(a) कुबेरस्य (b) यमवाहनमहिषस्य
(c) इन्द्रस्य (d) वरुणस्य

उत्तर–(b)

माघ कृत 'शिशुपालवधम्' के प्रथम सर्ग से प्रस्तुत सूक्ति उद्धृत है–
''परेतभर्तुर्महिषोऽमुना धनु विधातुमुत्खात विषाणमण्डलः।
हृतेऽपि भारे महतस्त्रपाभरादुवाहदुःखेन भृशानतं शिरः।।
अर्थात्- उस रावण के द्वारा धनुष बनाने के लिए उखाड़े गए सींगों के मण्डल वाला यमराज का भैंसा भार दूर कर दिए जाने पर भी लज्जा के महान् भार से अत्यन्त झुके हुए शिर को कष्ट से ढो पाता था।

- कुबेर धन के राजा को कहा गया है।
- इन्द्र के सन्देशवाहक नारद हैं।
- वरुण इन्द्र का वाहन है।

49. ''मदेकपुत्रा जननी जरातुरा ....'' कस्येयमुक्तिः?

(a) दमयन्त्याः (b) हंसस्य
(c) भीमस्य (d) नलस्य

उत्तर–(b)

प्रस्तुत पंक्ति नैषधीयचरितम् से उद्धृत है–
''मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी।
गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दय न्नहो विधे त्वां करुणा रुणद्धि न।।
हाय माता मैं ही जिसका इकलौता पुत्र हूं वृद्धावस्था से पीड़ित है और हंसी नवीन प्रसव वाली पतिव्रता है। यह उन दोनों का सहारा है। उसे सताते हुए हे विधाता क्या मुझे करुणा नहीं रोकती।

- दमयन्ती नैषधीयचरितम् महाकाव्य की नायिका एवं नल नायक हैं।
- भीम दमयन्ती के पिता हैं।
- नल नैषध के नायक हैं।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(a) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्र-पतिता कृषिः।	**(i) मृच्छकटिकम्**
(b) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः	**(ii) कर्णभारम्**
(c) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्।	**(iii) रघुवंशम्**
(d) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति।	**(iv) मुद्राराक्षसम्**

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

उत्तर–(d)

- चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।
  न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गणमपेक्षते।। यह पंक्ति मुद्राराक्षस में उल्लिखित हैं जिसका तात्पर्य है-
  मूर्ख किसान की भी उर्वरा भूमि में की गई खेती लहलहा उठती है। क्योंकि धान्य का गुच्छी के रूप में उपजना बीज बोने वाले व्यक्ति की अपेक्षा नहीं करता है।
- आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः–रघुवंश-महाकाव्यम्
- आलाने गह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृहयते।
  हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्।। (मृच्छकटिक 1/50)
- शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्-
  सुबद्धमूला निपतन्ति पादपाः।
  जलं जलस्थानगतं च शुष्यति
  हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति।।
  यह पंक्ति महाकवि भास प्रणीत् कर्णभारम् से उद्धृत है।

51. ''न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।'' केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकः?

(a) मन्दाक्रान्ता (b) हरिणी
(c) शिखरिणी (d) स्रग्धरा

उत्तर–(c)

अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तदरूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।
प्रस्तुत पंक्ति में शिखरिणी छन्द है।
शिखरिणी छन्द का लक्षण 'रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।।
स्रग्धरा छन्द का लक्षण– त्रिमुनियतियुतास्रग्धरा कीर्तितेयम्।

52. ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे-'' इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः?

(a) रामः (b) लक्ष्मणः
(c) रावणः (d) भरतः

उत्तर–(a)

प्रस्तुत पंक्ति महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य से सम्बद्ध है। ''वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे'' अर्थात् ऐसा सुनकर वैदेही के पति (राम) का हृदय वैसे की फट गया जैसे घन की चोट से तपाया गया लोहा फट जाता है। यहां वैदेहि बन्धु राम को कहा जाता है।
- लङ्का का राजा एवं मेघनाथ का पिता रावण था।
- लक्ष्मण–राम के छोटे भाई एवं उर्मिला के पति थे।
- भरत–राम के छोटे भाई एवं कैकेयी के पुत्र थे।

53. रत्नावल्यां उदयनस्य कञ्चुकी कः?

(a) बाभ्रव्यः (b) यौगन्धरायणः
(c) वसन्तकः (d) विक्रमबाहुः

उत्तर–(a)

श्रीहर्ष प्रणीत रत्नावली नाटिका में बाभ्रव्य कञ्चुकी एवं विदूषक वसन्तक है।
- यौगन्धरायण, रत्नावली में उदयन का प्रधानमन्त्री है।
- रत्नावली (सागरिका)–सिंहलेश्वर नरेश विक्रमबाहु की पुत्री एवं रत्नावली नाटिका की नायिका हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-
रत्नावली नाटिका 4 अकों में विभक्त है-
1. मदनमहोत्सव 2. कदलीगृहम्
3. सङ्केतक 4. ऐन्द्रजालिक

54. कुरङ्गकेन हर्षचरिते किं कर्म कृतम्?

(a) चिकित्साकर्म (b) पूजाकर्म
(c) वार्ताप्रदानम् (d) भाग्यगणनम्

उत्तर–(c)

बाणभट्ट प्रणीत् हर्षचरितम् के पञ्चम् उच्छ्वास में कुरङ्गक नामक लेखहारक का वर्णन मिलता है–
''बीजमिव फलिष्यतो दुष्कृत शालेरनिमित्त भूतदीर्घा ध्वगं कुरङ्गकनामानमायान्तमद्राक्षीत्।''
अतः कुरङ्गक हर्षचरित का लेखगर्भ (लेखहारक) पत्रवाहक था।

55. ''सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।।'' इत्यादि-श्लोकः कस्य उदाहरणरूपेण ध्वन्यालोके उल्लिखितः?

(a) अक्षेपालङ्कारस्य (b) विशेषाक्त्ययलङ्कारस्य
(c) अविवक्षितवाच्यस्य (d) विवक्षितान्यपरवाच्यस्य

उत्तर–(c)

आनन्दवर्द्धन के अनुसार ध्वनि के दो प्रकार हैं–(1) अविवक्षित वाच्य (लक्षणामूला) (2) विवक्षितवाच्य (अभिधामूला)
(1) अविवक्षितवाच्य–इसे अविवक्षितवाच्य ध्वनि इसलिए कहते हैं क्योंकि इसमें वक्ता को वाच्यार्थ विवक्षित नहीं होता है। इस ध्वनि के मूल में लक्षणा रहती है, अतएव इसे लक्षणामूला ध्वनि कहते हैं–
उदाहरण
''सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्चा कृतविधश्च यश्च जानाति सेवितुम्।।

56. ''नृत्तं ....।'' शून्यं स्थानं पूरयत।

(a) भावाश्रयम् (b) केवलं लयाश्रयम्

(c) केवलं तालाश्रयम् (d) ताललयाश्रयम्

उत्तर–(d)

''नृत्तं ताललयाश्रयम् भवति'' अर्थात् नृत्त ताल और लय पर आश्रित होता है। चञ्चपुट इत्यादि ताल है। द्रुत (मध्यम, विलम्बित इत्यादि) लय है। केवल उन्हीं (ताल, लय) पर आश्रित होने वाला अङ्ग विक्षेप नृत्त कहलाता है। इसमें अभिनय बिल्कुल नहीं होता।

- नृत्य भाव पर आश्रित होता है।
- नाट्य रस पर आश्रित है। किन्तु नृत्य भाव पर आश्रित होता है।

57. प्राप्त्याशा भवति–

(a) फललाभाय औत्सुक्यमात्रम्।

(b) उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्तिसंभवः।

(c) अप्राप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः।

(d) अपायाभावतः प्राप्तिः।

उत्तर–(b)

आचार्य धनञ्जय कृत दशरूपक के प्रथम प्रकाश में 5 प्रकार की कार्यावस्थाएं बताई गई हैं–(1) आरम्भ (2) यत्न (3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति (5) फलागम।

1. औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे–आरम्भ
2. प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः–प्रयत्न
3. उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्ति सम्भवः–प्राप्त्याशा। अर्थात् उपाय के होने तथा विघ्न की शङ्का होने से जो फल प्राप्ति की सम्भावना होती है। वह प्राप्त्याशा कहलाती है।
4. अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता–नियताप्ति
5. समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः–फल

58. ''निःशेषच्युतचन्दनं ....'' इत्यादि-श्लोके 'अत्र तदन्तिकमेव रन्तुं गतासि'' इति व्यङ्ग्यं मम्मटेन कथं निर्धारितम्?

(a) प्राधान्येन 'अधम' पदेन।

(b) प्राधान्येन 'मिथयावादिनि' पदेन।

(c) 'निःशेष' शब्देन।

(d) 'निर्मृष्टरागोऽधरः' इति पदेन।

उत्तर–(a)

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के तीन भेद हैं–(1) उत्तम काव्य (2) मध्यम काव्य (3) अधम/चित्रकाव्य।

चित्रकाव्य का लक्षण है–शब्दचित्रं वाच्य चित्रं व्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।

(1) उत्तमकाव्य का लक्षण है–इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।

उदाहरण–निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो
नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः।
मिथ्यावादिनि दूति बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे
वापीं स्नातुमितो गताऽसि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्।

प्रस्तुत श्लोक में अधम पद के द्वारा व्यङ्ग्यार्थ बोधित होता है।

**59. ''किञ्चित् पृष्टमपृष्टं वा कथितं यत् प्रकल्पते।
तादृगन्यव्यपोहाय .... तु सा स्मृता।।''
रिक्तस्थानं पूरयत।**

(a) उपमा (b) व्याजस्तुतिः

(c) अपह्नुतिः (d) परिसंख्या

उत्तर–(d)

आचार्य मम्मट के अनुसार जहां पूछी गई अथवा न पूछी गई वस्तु शब्द के द्वारा कही जाकर अपने जैसी किसी अन्य वस्तु के व्यवच्छेद में पर्यवसित हो जाती है उसे परिसङ्ख्या अलङ्कार कहते हैं।

- उपमा–आचार्य मम्मट के अनुसार उपमा अलङ्कार का लक्षण है–साधर्म्यमुपमा भेदे।

''प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः'' अर्थात् प्रकृत (उपमेय) का निषेध करके जो अन्य उपमान की सिद्धि की जाती है, वह अपह्नुति अलङ्कार कहलाता है। यह शाब्दी/आर्थी भेद से दो प्रकार का होता है।

60. दशरूपकमते नाटकस्य अङ्कसंख्या भवति–

(a) 5-7 (b) 5-8

(c) 5-10 (d) 7-10

उत्तर–(c)

आचार्य धनञ्जय कृत दशरूपक के अनुसार अवस्था का अनुकरण नाट्य कहलाता है ''अवस्थानुकृतिर्नाट्यं''

नाटक में 5-10 अङ्क ही होते हैं। यदि 5 से कम होगा तो नाटिका तथा ज्यादा होगा तो महाकाव्य हो जाएगा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

दशरूपक में चार प्रकाश है। इन्होंने नाट्य के १० भेद माने हैं- रूपक के वस्तु, नेता और रस तीन भेद माने हैं।

**61. रिक्तं स्थानं पूरयत–
''नाट्याख्यं .... वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।''**

(a) उत्तमम् (b) अपूर्वम्

(c) द्वितीयम् (d) पञ्चमम्

उत्तर–(d)

भरतमुनि प्रणीत् नाट्यशास्त्र को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के अतिरिक्त पञ्चम वेद कहा गया है।

सर्वशास्त्रार्थसपन्नं सर्वशिल्प प्रदर्शकम्।
नाट्यसंज्ञमिमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।।

अर्थात् मैं नाट्य नामक पञ्चम् वेद-रचना करने जा रहा हूं जो इतिहास अर्थात् पूर्वकालीन घटनाओं से युक्त है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

''जग्राह पाठ्यमृग्वेदात समिभ्योगतिमेन।''

अर्थात् ब्रह्मजी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रसों को लेकर नाट्यवेद की रचना की।

62. ''सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः।''—

काव्यप्रकाशकारमते कोऽयम् अलङ्कारः?

(a) निदर्शना (b) प्रतिवस्तूपमा

(c) दृष्टान्तः (d) विशेषोक्तिः

उत्तर–(b)

आचार्य मम्मट के अनुसार, ''प्रतिवस्तूपमा अलङ्कार वह है जहां उपमान तथा उपमेय रूप दो वाक्यों में एक ही साधारण धर्म का दो बार ग्रहण किया जाता है।''

- ''अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः'' जहां पदार्थों या वाक्यार्थों का अनुपपद्यमान सम्बन्ध उपमा की परिकल्पना करे उसे निदर्शना अलंकार कहते हैं।

  ''दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्''
- बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव का होना ही दृष्टान्त कहलाता है।
- विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।

  अर्थात् सम्पूर्ण कारणों के होने पर भी कार्य (के होने) का कथन न करना विशेषोक्ति अलङ्कार होता है।

63. ''स तप्तकार्त्तस्वरभास्वराम्बरः .... '' इति शिशुपालवधस्य श्लोकांशे 'कार्त्तस्वर'-पदस्य कोऽर्थः?

(a) रजतम् (b) ताम्रम्

(c) सुवर्णम् (d) स्फटिकम्

उत्तर–(c)

महाकवि माघ प्रणीत् शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग के 20वें श्लोक से प्रस्तुत पंक्ति उद्धृत है–

''स तप्तकार्त्तस्वरभास्वराम्बरः

कठोरताराधिपलाञ्छनच्छविः।।

विदिद्युते वाडवजातवेदसः

शिखाभिराश्लिष्ट इवाम्भसां निधिः।।

अर्थात्–तपे हुए सोने (सुवर्ण) के समान चमकते हुए वस्त्र वाले और पूर्ण चन्द्र के लांछन की सी कांति वाले वे श्रीकृष्ण वडवाग्नि की ज्वालाओं से व्याप्त समुद्र के समान सुशोभित हुए।

प्रस्तुत श्लोक में कार्त्तस्वर का अर्थ–सुवर्ण अर्थात् सोना से है।

64. कस्य काव्यं 'विद्वदौषधं' कथ्यते?

(a) माघस्य (b) श्रीहर्षस्य

(c) कालिदासस्य (d) अश्वघोषस्य

उत्तर–(b)

''नैषधं विद्वदौषधम्'' श्रीहर्ष के काव्य ''नैषधीयचरितम्'' को विद्वानों के लिए औषधि के रूप में कहा गया है। नैषधीयचरितम् महाकाव्य २२ सर्गों में निबद्ध है। इसकी मूलकथा ''महाभारत के वन पर्व के प्रसिद्ध'' नलोपाख्यान से ग्रहीत की गयी है।

65. ''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।''

इत्याद्युक्तिः केन सम्बद्धा?

(a) वेदलक्षणेन (b) ज्योतिषलक्षणेन

(c) महाकाव्यलक्षणेन (d) पुराणलक्षणेन

उत्तर–(d)

पुराण शब्द का शाब्दिक अर्थ–प्राचीन या पुराना है। पुराण का लक्षण है–

''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर एवं वंशानुचरित, ये पांच प्रकार के पुराण के लक्षण बताए गए हैं।

पुराणों की संख्या 18 एवं उपपुराणों की भी संख्या 18 ही है।

- वेद–अपौरुषेयवाक्यं वेदः।
- ज्योतिष–ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक लगध हैं।
- महाकाव्य का लक्षण है–सर्ग बन्धोमहाकाव्यं तत्रैकोनायकः सुरः।

66. एषु कस्य देशस्य नाम हरिषेणस्य एलाहाबाद-शिलालेखे नास्ति?

(a) समतटः (b) डवाकः

(c) कामरूपः (d) चीनः

उत्तर–(d)

हरिषेणकृत इहालाबाद शिलालेख में चीन का उल्लेख नहीं है।

समुद्रगुप्त का इलाहाबाद शिलालेख–

रचनाकार–हरिषेण

स्थान–इलाहाबाद

भाषा–संस्कृत

लिपि–ब्राह्मी

काल–250 ई.

विषय–समुद्रगुप्त का जीवनवृत्त और उपलब्धियां–यः कुल्यैः स्वैः तसः।

67. अर्थशास्त्रकारमते विद्या कतिविधा?

(a) द्विविधा (b) त्रिविधा

(c) चतुर्विधा (d) पञ्चविधा

उत्तर–(c)

आचार्य कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ में 4 विद्याओं की चर्चा करते हैं–''आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्याः।''

(1) आन्वीक्षिकी–सांख्य, योग, लोकायत ये आन्वीक्षिकी के अन्तर्गत आते हैं।

(2) त्रयी–साम, ऋक् तथा यजुर्वेद, इन तीनों वेदों का समन्वित नाम 'त्रयी' है।

(3) वार्ता–कृषि, पशुपालन और व्यापार, ये वार्ता के विषय हैं।

(4) दण्डनीति–आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति, इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है।

68. अर्थशास्त्रतः रिक्तं स्थान पूरयत–

''कृषिपशुपाल्ये वाणिज्या च ....।''

(a) वार्त्ता (b) आन्वीक्षिकी

(c) त्रयी (d) दण्डनीतिः

उत्तर–(a)

विद्याकृषिपशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता–कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ता विद्या के विषय हैं। यह विद्या धान्य, पशु, हिरण्य, ताम्र आदि खनिज पदार्थ और नौकर-चाकर आदि को देने वाली परम उपकारिणी है। इसी विद्या से उपार्जित कोष और विद्या के बल पर राजा स्वपक्ष को वश में कर लेता है।

69. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति–

(a) रघुवंशस्य (b) भट्टिकाव्यस्य
(c) जानकीहरणस्य (d) किरातार्जुनीयस्य

उत्तर–(d)

महाकवि भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् महाभारत के वनपर्व से उद्धृत है। किरातार्जुनीयम् में कुल 18 सर्ग हैं। किरातार्जुनीयम् का प्रथम तीन अध्याय पाषाणत्रयी के नाम से जाना जाता है।

- रघुवंश, महाकवि कालिदास प्रणीत् 19 सर्गों का महाकाव्य है। यह महाकाव्य वस्तुतः रामायण पर आश्रित है।

70. 'जय' इति कस्य महाकाव्यस्य नामान्तरम्?

(a) रामायणस्य (b) महाभारतस्य
(c) रघुवंशस्य (d) शिशुपालवधस्य

उत्तर–(b)

महाकवि वेदव्यास प्रणीत् महाभारत को–(1) जय (2) भारत एवं (3) महाभारत, इन तीन नामों से जाना जाता है। जय में 8,000 श्लोक, भारत में 24,000 श्लोक एवं महाभारत में 1,00,000 श्लोक हैं। इसको ''शतसाहस्री संहिता'' भी कहा जाता है।
महाभारत के रचयिता वेदव्यास हैं। यह 18 पर्वों में विभक्त है।
रामायण–वाल्मीकि की रचना है।
शिशुपालवध–माघ की रचना है।

71. मनुसंहितायां कस्य दुर्गस्य समाश्रयणं बहुधा प्रशंसितम्?

(a) धन्वदुर्गस्य (b) अब्दुर्गस्य
(c) महीदुर्गस्य (d) गिरिदुर्गस्य

उत्तर–(d)

मनुस्मृति के अनुसार गिरिदुर्ग ही समस्त दुर्गों में श्रेष्ठ है–
धन्वदुर्गं महीदुर्गमब्दुर्गं वार्क्षमेव वा।
गिरिदुर्गं नृदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरम्।।
अर्थात्– धनुदुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वृक्षदुर्ग,नृदुर्ग और गिरिदुर्ग, आदि किलों को बनाकर पुर में वास करें।

- धन्वदुर्ग–जो चारों ओर से मरुस्थल से घिरा हुआ हो उसे धन्वदुर्ग कहते हैं।
- अब्दुर्ग– यह चारों ओर से अगाध जल से घिरा हुआ रहता है।
- महीदुर्गपत्थर अथवा ईंटों का बना हुआ बारह हाथ की ऊंचाई वाला महीदुर्ग कहलाता है।

72. मनुसंहितायां कति क्रोधजानि व्यसनानि?

(a) अष्टौ (b) नव (c) दश (d) सप्त

उत्तर–(a)

आचार्य मनुप्रणीत् मनुस्मृति के सप्तम अध्याय के श्लोक सङ्ख्या 48 में क्रोधज गुण की चर्चा की गई है।
''पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्
वाग्दण्डजं च पारूष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।''
अर्थात्–चुगली, दुःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना, ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न होते हैं।

73. ''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रन्तु वै स्मृतिः।''-इति मनुसंहितायां कस्मिन्नध्याये उपलभ्यते?

(a) प्रथमाध्याये (b) द्वितीयाध्याये
(c) तृतीयाध्याये (d) सप्तमाध्याये

उत्तर–(b)

मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय के 10वें श्लोक से प्रस्तुत सूक्ति उद्धृत् है–
''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ।।
अर्थात्- वेद को श्रुति और धर्मशास्त्र को स्मृति जानना चाहिए। ये दोनों सब विषयों में तर्कना रहित हैं क्योंकि इनसे ही धर्म की उत्पत्ति होती है।

74. अभियोगे साक्ष्ये च दोषत्वेन न गण्यते–

(a) धनविकृतिः (b) कर्मविकृतिः
(c) मनोविकृतिः (d) वाग्विकृतिः

उत्तर–(a)

महर्षि याज्ञवल्क्यप्रणीत् याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय में अभियोग की चर्चा की गई है–
''निह्नवे भावितो दद्याद्धनं राज्ञे च तत्समम्।
मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्धनं वहेत्।।
अर्थात्–अर्थी द्वारा लगाए गए अभियोग के धन को प्रत्यर्थी द्वारा छिपाए जाने की स्थिति में अभियुक्त धन को स्वीकार कराए जाने पर अर्थात् सिद्ध हो जाने पर उस धन के बराबर धन राजा को दण्डस्वरूप दे। मिथ्याभियोग लगाने वाला उस धन के इतना धन वहन करे।

75. साक्षिगुणान्यतमो नास्ति–

(a) तपस्विता (b) सत्यवादिता
(c) कूटसाक्षिता (d) धनान्विता

उत्तर–(c)

तपस्विनो दानशीलाः कुलीनाः सत्यवादिनः।
धर्मप्रधाना ऋजवः पुत्रवन्तो धनान्विताः।।
याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार, ''तपस्वी, दानशील, कुलीन, सत्यवादी, धर्मप्रधान, सरल स्वभाव, पुत्रवान्, धनयुक्त तथा श्रौत-स्मार्त क्रिया में रत कम से कम तीन साक्षी होने चाहिए। ये जाति और वर्ण के अनुसार अथवा सभी जाति और वर्ण के होते हैं।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2015
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'रोदसी'- पदस्य कोऽर्थः?

(a) अन्तरिक्षम् (b) अहोरात्रे
(c) द्यावापृथिवी (d) रुद्रः

उत्तर–(c)

'रोदसी' इति पदस्य अर्थः द्यावापृथिवी अस्ति ।
'रोदसी' पद का अर्थ द्यावापृथिवी है।
रोदसी पद 'इन्द्रसूक्त' के प्रथम मन्त्र में परिलक्षित हुआ है।
''यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत् ।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य महना स जनास इन्द्रः।
अर्थात् हे मनुष्यों ! जो उत्पन्न होते ही समस्त देवताओं में प्रमुख परम मनस्वी हुआ। जो दिव्य गुणों से युक्त होते हुए, जिसने यज्ञ से या वृत्र के वध आदि कर्मों से अन्य देवताओं को अलङ्कृत किया, जिसके शारीरिक बल से द्युलोक, पृथिवी लोक कांपते थे, महती सेना के महत्त्व से युक्त वही इन्द्र है।
इन्द्र सूक्त के ऋषि-गृत्समद, देवता-इन्द्र और इसमें छन्द-त्रिष्टुप् है। यह सूक्त ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का सूक्त है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अहोरात्र पद का अर्थ-दिन और रात्रि होता है।
- विष्णु सूक्त के देवता स्वयं विष्णु और ऋषि-दीर्घतमा हैं।
- अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इस सूक्त के **देवता**-अग्नि और **ऋषि**-विश्वामित्र हैं।

2. अधस्तादुक्तेषु कः वंशमण्डलेन सम्बद्धः नास्ति?

(a) अत्रिः (b) गौतमः
(c) वामदेवः (d) विश्वामित्रः

उत्तर–(b)

ऋषि गौतमः वंशमण्डलेन सम्बद्धः नास्ति।
गौतम ऋषि का सम्बन्ध वंशमण्डल से नहीं है।

- ऋग्वेद के मौलिक अंश मण्डल 2 से 7 तक ही है, इसे ही वंश-मण्डल भी कहा जाता है।
- प्रथम मण्डल के ऋषि- मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य, गौतम, पराशर आदि हैं।
- द्वितीय मण्डल के ऋषि - गृत्समद एवं उनके वंशज हैं।
- तृतीय मण्डल के ऋषि - विश्वामित्र एवं उनके वंशज है।
- चतुर्थ मण्डल के ऋषि - वामदेव एवं उनके वंशज।
- पञ्चम् मण्डल के ऋषि - अत्रि एवं उनके वंशज।
- षष्ठ मण्डल के ऋषि - भरद्वाज एवं उनके वंशज।
- सप्तम् मण्डल के ऋषि -वशिष्ठ एवं उनके वंशज।
- अष्टम् मण्डल के ऋषि -कण्व, भृगु, अंगिरस और उनके वंशज हैं।
- नवम् मण्डल की अपनी विशेषता है। इसमें पवमान सोम से सम्बद्ध सभी मन्त्रों का संकलन है ।
- दशम् मण्डल के ऋषि -त्रित, विमद, इन्द्र, श्रद्धा, कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी आदि हैं।

3. पातञ्जलमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य शाखाः सन्ति-

(a) 5 (b) 100
(c) 21 (d) 9

उत्तर–(d)

पातञ्जलमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य नव शाखाः सन्ति।
पातञ्जलमहाभाष्यानुसार, अथर्ववेद की 9 शाखाएँ हैं।
महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में **''नवधाऽऽथर्वणो वेदः''** कहकर अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है।

- चरणव्यूह, प्रपञ्चहृदय और सायण की अथर्ववेद- भाष्य-भूमिका में भी 9 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
  सायण द्वारा उल्लिखित नौ शाखाएँ क्रमशः 1. पैप्पलाद 2. तौद 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9, चारणवैद्य हैं।
- चरणव्यूह के अनुसार, ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ क्रमशः 1. शाकल, 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शाङ्खायन 5. माण्डूकायन हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएँ- माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व हैं।
- कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएँ- तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ (काठक), कपिष्ठलकठ हैं।
- सामवेद संहिता की शाखाएँ - कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय हैं।
- वैदिक साहित्य को चार भागों में विभाजित किया गया है- 1. वेदों की संहिताएँ 2. ब्राह्मण ग्रन्थ 3. आरण्यक ग्रन्थ 4. उपनिषद्।

4. 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्'। - इति वाक्यं कुत्र वर्तते?

(a) ऋग्वेदे (b) अथर्ववेदे
(c) यजुर्वेदे (d) सामवेदे

उत्तर–(c)

'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' इति वाक्यं यजुर्वेदे वर्तते?
''योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्'' यह वाक्य यजुर्वेद का है।
''ओउम् हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।'
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ओं खं ब्रह्म ।।
अर्थात् सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है, कि हे मनुष्यों! जो मैं यहाँ हूँ, वही अन्यत्र सूर्यादि लोक में भी हूँ। सर्वत्र परिपूर्ण आकाश के तुल्य व्यापक मुझसे भिन्न कोई बड़ा नहीं। मैं ही सबसे बड़ा हूँ, मेरे सुलक्षणों से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणों से प्यारा मेरा निज नाम 'ओउम्' है।

5. सायणाचार्यः सर्वतः प्रथमं कं वेदं व्याख्यातवान् ?
(a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c)सामवेदम् (d) अथर्ववेदम्

उत्तर–(a)

सायणाचार्यः सर्वतः प्रथमं यजुर्वेदं व्याख्यातवान् ।
सायणाचार्य ने सर्वप्रथम यजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता)पर भाष्य लिखा था। इसके पश्चात् ऋग्वेदादि का भाष्य लिखा था।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य **स्कन्दस्वामी** का उपलब्ध है।
- **वेङ्कटमाधव** ने सम्पूर्ण ऋग्वेद पर भाष्य लिखा है। इनका भाष्य डॉ. लक्ष्मणस्वरूप ने संपादित कर 4 भागों में प्रकाशित किया।
- शुक्ल यजुर्वेद के माध्यन्दिन संहिता पर **उव्वट** और **महीधर** का भाष्य प्राप्त होता है।
- काण्व संहिता पर **हलायुध** का **''ब्राह्मणसर्वस्व''** नामक भाष्य मिलता है।
- कुण्डिन, भवस्वामी, गुहदेव, क्षुर, भट्टभाष्कर आदि का कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर भाष्य प्राप्त होता है।
- माधव सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं।

6. द्युस्थानदेवता विद्यते-
(a) इन्द्रः (b) सूर्यः
(c) विष्णुः (d) वायुः

उत्तर–(c)

द्युस्थानीय देवता विष्णुः विद्यते-
द्युस्थानीय देवता विष्णु हैं।
समस्त वैदिक देवताओं को स्थान की दृष्टि से तीन वर्गों में रखा गया है।
(1) पृथिवीस्थानीय देवता - इस वर्ग में बृहस्पति, सोम तथा अग्नि आते हैं, कुछ नदियों को भी देवता के रूप में वर्णित किया गया है, वे भी इसी वर्ग में आती हैं।
(2) अन्तरिक्षस्थानीय देवता - इन्द्र, रुद्र, मरुद्गण, वायु, पर्जन्य, आपः आदि हैं।
(3) द्युस्थानीयदेवता - इस वर्ग में वरुण, मित्र, विष्णु, सविता, पूषा, अश्विन्, उषा आदि हैं।

- **विष्णु के विशेषण-** त्रिविक्रम, उरुक्रम, उरुगाय, भीम, कुचर, गिरिष्ठा, गिरिक्षित, गिरिजा, वृष्ण, मातरिश्वा आदि हैं।

7. 'त्रिष्टुप्'-छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति ?
(a) 28 (b) 36
(c) 44 (d) 48

उत्तर–(c)

'त्रिष्टुप्'-छन्दसि 44 वर्णाः भवन्ति।
त्रिष्टुप् छन्द में 44 वर्ण/ अक्षर हैं।

- त्रिष्टुप् छन्द में 11 अक्षर वाले चार पाद होते हैं।
  प्रमुख छन्द - गायत्री में - 24 वर्ण - 8 वर्ण वाले 3 पाद होते हैं।
  उष्णिक् में - 28 वर्ण - 2 पाद में 8 और 1 पाद में 12 वर्ण।
  अनुष्टुप् में - 32 वर्ण - 8 वर्ण वाले 4 पाद होते हैं।
  बृहती में - 36 वर्ण - किसी पाद में 8 और किसी पाद में 12
  पंक्ति में - 40 वर्ण - इसमें चार-पाँच पाद होते हैं।
  जगती में - 48 अक्षर - 12 अक्षर वाले चार पाद होते हैं।
- 1 अक्षर कम निचृत एवं 1 अक्षर अधिक- भूरिक् कहलाता है।
- 2 अक्षर कम विराट् एवं 2 अक्षर अधिक - स्वराट् कहलाता है।

8. आश्वलायनगृह्यसूत्रम् केन वेदेन सम्बद्धम् विद्यते?
(a) अथर्ववेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर–(c)

आश्वलायनगृह्यसूत्रम् ऋग्वेदेन सम्बद्धम् विद्यते।
'आश्वलायन गृह्यसूत्र' ऋग्वेद से सम्बन्धित है।
कल्पसूत्र- जिन ग्रन्थों में यज्ञ सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है, उन्हें **कल्प** कहते हैं।

- कल्पसूत्रों के चार भेद हैं- 1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र।
- ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र एवं तीन गृह्यसूत्र क्रमशः श्रौत सूत्र- (1) आश्वलायन (2) शाङ्खायन हैं।
- गृह्यसूत्र- 1. आश्वलायन 2. शाङ्खायन 3. कौषीतकि
- **शुक्ल यजुर्वेद का श्रौतसूत्र -** कात्यायन श्रौत सूत्र
- **शुक्ल यजुर्वेद के गृह्यसूक्त—** पारस्कर गृह्यसूत्र
  शुक्ल यजुर्वेद के शुल्बसूत्र - बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशि, वाराह शुल्बसूत्र आदि हैं।
- **कृष्ण यजुर्वेद का श्रौतसूत्र हैं -** बौधायन, वाधूल, मानव (मैत्रायणी), भारद्वाज, आपस्तम्ब, सत्याषाढ़ (हिरण्यकेशी), वाराह, वैखानस श्रौतसूत्र।

- **कृष्ण यजुर्वेद का गृह्यसूत्र हैं -** बौधायन, मानव (मैत्रायणीय), भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि (सत्याषाढ), वाराह, वैखानस आदि ।
- **कृष्ण यजुर्वेद का शुल्बसूत्र हैं -** बौधायन, आपस्तम्ब
शुक्ल यजुर्वेद- सामवेद का शुल्ब सूत्र है कात्यायन शुल्वसूत्र
- **श्रौत सूत्र हैं -** आर्षेय या मशक, क्षुद्र कल्पसूत्र, जैमिनीय,लाट्यायन, द्राह्मायण, श्रौतसूत्र निदान, उपनिदान।
- **सामवेदीय गृह्यसूत्र -** गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्मायण, जैमिनीय आदि हैं।
- **अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र -** वैतानश्रौतसूत्र एवं
अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र - कौशिक गृह्यसूत्र है।

9. वाधूलश्रौतसूत्रम् कस्य वेदस्य वर्तते?

(a) सामवेदस्य (b) कृष्णयजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर–(b)

वाधूलश्रौतसूत्रम् कृष्णयजुर्वेदस्य वर्तते?
'वाधूल श्रौतसूत्र' कृष्ण यजुर्वेद संहिता से सम्बन्धित है।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञसम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है। उन्हें **कल्प** कहते हैं।
- **कल्पसूत्रों के चार भेद हैं-**
1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र।
- **ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र** (1) आश्वलायन (2) शाङ्खायन।
ऋग्वेद के गृह्यसूत्र - (1) आश्वालायन (2) शाङ्खायन (3) कौषीतकि
- **शुक्ल यजुर्वेद का श्रौतसूत्र -** कात्यायन।
शुक्ल यजुर्वेद के गृह्यसूत्र - पारस्कर।
शुक्ल यजुर्वेद के शुल्बसूत्र - कात्यायन
- **कृष्ण यजुर्वेद का श्रौतसूत्र -** बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ़, वाराह, वैखानस श्रौतसूत्र।
- **कृष्ण यजुर्वेद का गृह्यसूत्र -** बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस चारायणीय, बैजवाप गृह्यसूत्र।
- **कृष्ण यजुर्वेद का शुल्ब सूत्र -** बौधायन, अपस्तम्ब, मानव शुल्ब सूत्र
- **सामवेद का श्रौत सूत्र -** आर्षेय या मशक, क्षुद्र कल्पसूत्र, जैमिनीय,लाट्यायन, द्राह्मायण, श्रौतसूत्र निदान, उपनिदान।
- **सामवेदीय गृह्यसूत्र -** गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्मायण, जैमिनीय गृह्यसूत्र।
- **अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र -** वैतानश्रौतसूत्र।
अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र - कौशिक गृह्यसूत्र।

10. श्रोत्रस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति-

(a) निरुक्तम् (b) शिक्षा
(c) कल्पः (d) छन्दः

उत्तर–(a)

श्रोत्रस्थानीयं वेदाङ्गं निरुक्तम् निरुपितमस्ति।
श्रोत्रस्थानीय वेदाङ्ग 'निरुक्त' है।
- पाणिनीय शिक्षा में छः वेदाङ्गों का वेद पुरुष के छः अङ्गों के रूप में वर्णन है।
''छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।
- छन्द वेदपुरुष के पैर हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र हैं, निरुक्त कान हैं, शिक्षा नाक है और व्याकरण मुख है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य
- वेदाङ्गों का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ है।
- वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, उन्हें 'वेदाङ्ग' कहते हैं।

11. कठोपनिषदि नचिकेतसः पिता कं यागमनुष्ठितवान् ?

(a) अश्वमेधयागम् (b) सर्वमेधयागम्
(c) सर्वजिद्यागम् (d) पितृमेधयागम्

उत्तर–(b)

कठोपनिषदि नचिकेतसः पिता सर्वमेधयागम् अनुष्ठितवान्
कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने 'सर्वमेध यज्ञ' (विश्ववेदस्) किया था।
- कठोपनिषद् 'कृष्ण यजुर्वेद' का 'कठशाखा' के अन्तर्गत आता है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में 3-3 वल्लियाँ हैं।
- नचिकेता के पिता वाजश्रवस **'सर्वमेध यज्ञ'** में अपना सर्वस्व दान कर देते हैं।
- अदेय वस्तुओं को दान में देने पर नचिकेता अपने पिता से कहते हैं कि ऐसा करने पर प्राणी पाप का भागी बनते हैं-
''पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ताः ददत् ।।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य
प्रमुख सूक्तियाँ - अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा।
सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः।
- ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
- क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।

12. माध्यन्दिनीयसंहितायां 'शतरुद्रीय होममन्त्राः' कस्मिन् अध्याये समुक्ताः?

(a) अष्टादशे (b) सप्तदशे
(c) पञ्चदशे (d) षोडशे

उत्तर–(b)

माध्यन्दिनीयसंहितायां 'शतरुद्रीय होममन्त्राः' षोडशे अध्याये समुक्ताः।

- यजुर्वेद की प्रथम शाखा शुक्ल यजुर्वेद है।
- माध्यन्दिनसंहिता शुक्ल यजुर्वेदीय शाखा की संहिता है।
- यजुर्वेद चार वेदों में द्वितीयक वेद है।
- **शतरूद्रीय होम मन्त्र** माध्यन्दिन संहिता के 17 वें अध्याय में वर्णित है।
- माध्यन्दिनसंहिता में कुल 40 अध्याय समाहित हैं।
- इसमें 25 अध्याय तक महान् यज्ञों का विधि-विधान है।
- इसमें वैदिक कर्मकाण्डों का विस्तृत वर्णन है।
- माध्यन्दिन संहिता में कुल मन्त्रों की संख्या 1975 हैं।
- इसके 34 वें अध्याय में शिवसंकल्प सूक्त है।

13. 'शतपथब्राह्मणस्य' आङ्ग्लानुवादः कृतो वर्तते-

(a) जी. थीबोमहोदयेन (b) जे. एग्लिङ्गमहोदयेन

(c) एम.विलियम्समहोदयेन (d) डब्ल्यू. कैलेण्डमहोदयेन

उत्तर–(b)

'शतपथब्राह्मणस्य' आङ्ग्लानुवादः जे. एग्लिङ्ग महोदयेन कृतः।

शतपथब्राह्मण का आङ्लानुवाद एग्लिङ्गमहोदय ने किया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- यह वर्ष 1926 में कैलेंड ने शतपथ ब्राह्मण (काण्व शाखीय) अंग्रेजी प्रस्तावना के साथ प्रकाशित हुआ।
- **वेबर ने शतपथ ब्राह्मण का 1855 ई.** में सर्वप्रथम आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित किया।
- जे. एग्लिङ्गमहोदय ने शतपथ ब्राह्मण का अंग्रेज़ी अनुवाद बृहत् भूमिका सहित **''सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट सीरीज में 5 भागों** में प्रकाशित किया गया था।''
- **विल्सन** ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण **ऋग्वेद** का अंग्रेज़ी में अनुवाद 1850 ई. में प्रकाशित किया। यह सायण भाष्य पर आश्रित है।
- **प्रो. गिफिथ** ने सायणभाष्य का समुचित उपयोग करते हुए सम्पूर्ण **ऋग्वेद का अंग्रेज़ी में पद्यानुवाद** किया।
- गास्ट्रा ने गोपथ ब्राह्मण का संस्करण वर्ष 1919 में प्रकाशित किया।
- **रुडोल्फ रोठ** ने जर्मन भाषा में 'वैदिक साहित्य और उसका इतिहास लिखा है।'
- **मैक्डानल** ने **वैदिक व्याकरण** पर दो ग्रन्थ लिखे हैं-

(1) Vedic Grammar

(2) Vedic Grammar for Student

14. विलुप्ता 'मौद' शाखा कस्य वेदस्य वर्तते?

(a) सामवेदस्य (b) ऋग्वेदस्य

(c) अथर्ववेदस्य (d) शुक्लयजुर्वेदस्य

उत्तर–(c)

विलुप्ता 'मौद' शाखा अथर्ववेदस्य वर्तते।

विलुप्त 'मौद' शाखा अथर्ववेद से सम्बन्धित है।

सायण कृत अथर्ववेद भाष्य भूमिका में 9 शाखाओं का उल्लेख मिलता है- 1. पैप्पलाद 2. तौद 3. मौद 4. जाजल 5. शौनकीय 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य।

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में **'नवधाऽऽथर्वणो वेदः'** कहकर अथर्ववेद की नौ शाखाओं का उल्लेख किया है। **शौनकीय, पैप्पलाद शाखाएँ ही उपलब्ध हैं** बाकी सभी विलुप्त हो गई हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्तमान में सामवेद की तीन शाखाएँ ही उपलब्ध हैं- (1) कौथुमीय, (2) राणायनीय, (3) जैमिनीय।
- चरणव्यूह के अनुसार, **ऋग्वेद** की पाँच शाखाएँ हैं - शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शाङ्खायन, माण्डूकायन।

15. निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं विद्यते-

(a) कल्पशास्त्रम् (b) छन्दः शास्त्रम्

(c) शिक्षा (d) निरुक्तम्

उत्तर–(d)

निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं निरुक्तम् विद्यते।

निर्वचनसिद्धान्त ''निरुक्त'' वेदाङ्ग में प्रतिपादित है।

निर्वचन/व्युत्पत्ति 'निरुक्त' का ही अर्थ है। निरुक्त में शब्द के मूल का ज्ञान कराया जाता है।

- **यास्ककृत** निरुक्त में 12 अध्याय तथा 2 परिशिष्ट अध्याय को मिलाकर कुल 14 अध्याय हैं।

  अध्याय 1- निघण्टु, नाम, आख्यात आदि चार पद विभाग हैं।

  अध्याय 2 और 3 - नैघण्टुक काण्ड - निर्वचन और वर्ण परिवर्तन से सम्बद्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।

  अध्याय 4 से 6 - नैगम काण्ड या ऐकपदिक काण्ड।

  अध्याय 7 से 12 - दैवत काण्ड - देवतावाचक शब्दों की विस्तृत व्याख्या है।
- **ऋज्वर्थवृत्ति -** यह टीका दुर्गाचार्य कृत है।
- वररुचि की टीका का नाम **''निरुक्तनिचय''** है।
- निरुक्त के पाँच प्रतिपाद्य विषय है - 1. वर्णागम 2. वर्ण-विपर्यय 3. वर्ण-विकार 4. वर्णनाश 5. धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग।

16. साङ्ख्यदर्शनानुसारं पुरुषस्वरूपेण सम्बद्धा उक्तिः अस्ति-

(a) रुपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना।

(b) पुरुषस्य दर्शनार्थं, कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य ।

(c) तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।

(d) संसरति बद्ध्यते मुच्यते च।

उत्तर–(c)

साङ्ख्यदर्शनानुसारं पुरुषस्वरूपेण सम्बद्धा उक्तिः तद्विपरीतस्तथा च पुमान् अस्ति-
साङ्ख्यदर्शनानुसार पुरुष के स्वरूप से ''तद्विपरीतस्तथा च पुमान्'' सम्बन्धित है।

''त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ।।

अर्थात् व्यक्त और अव्यक्त दोनों त्रिगुणात्मक, अविवेकी, विषयी, सामान्य, अचेतन, प्रसवधर्मी है। पुरुष इन समस्त धर्मों के विपरीत धर्म वाला होता है।

साङ्ख्य दर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद की परिभाषा -
असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाऽभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ।।

साङ्ख्य के त्रिविध गुण -
प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योन्याभिभवाऽऽश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।

पुरुष की सत्ता -
''सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्याऽर्थं प्रवृत्तेश्च ।।

17. अहङ्कारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति?
(a) महतः (b) प्रकृतेः
(c) पञ्चभूतेभ्यः (d) इन्द्रियेभ्यः

उत्तर–(a)

अहङ्कारस्य उत्पत्तिः महतः भवति?
अहङ्कार की उत्पत्ति महत् से होती है।

साङ्ख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि का क्रम -
''प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात्पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि।।

अर्थात् प्रकृति से महत्तत्त्व, महत् से अहङ्कार, अहङ्कार से मन, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियों तथा पञ्चतन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है।

- तमोगुण प्रधान अहङ्कार से पञ्चतन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है।

अणिमा महिमा चैवलघिमा गरिमा तथा ।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः।।

18. साङ्ख्यदर्शनानुसारं प्रमाणानां सङ्ख्या अस्ति-
(a) द्वौ (b) त्रयः
(c) चत्वारः (d) षड्

उत्तर–(b)

साङ्ख्यदर्शनानुसारं प्रमाणानां सङ्ख्या त्रयः अस्ति।
साङ्ख्यदर्शन में तीन प्रमाण स्वीकार्य है।
- त्रिविधं प्रमाणमिष्टम् ।
''दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात् ।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टम् प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि।।

- **प्रतिविषयाऽध्यवसायो दृष्टम्** - विषय से सम्बद्ध इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि-व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।
- **तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् अनुमानम्** - लिङ्ग और लिङ्गी के ज्ञान से जो उत्पन्न होता है, उसे अनुमान प्रमाण कहते हैं।
- **आप्तश्रुतिराप्तवचनम्** - आप्तपुरुष की उक्ति ही शब्द प्रमाण है। शब्द प्रमाण को आगम प्रमाण भी कहा जाता है।
- मूल प्रकृति आदि का ज्ञान सामान्यतोदृष्ट अनुमान से होता है।

19. साङ्ख्यमते 'सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था' भवति-
(a) पुरुषस्य (b) सृष्टेः
(c) प्रकृतेः (d) बुद्धेः

उत्तर–(c)

साङ्ख्यमते 'सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था' प्रकृतेः भवति-
प्रकृति के तीन गुण (सत्त्व, रजस्, तमस्) हैं। इन्हीं तीनों गुणों से सृष्टि की रचना हुई है।

- **सत्त्वं लघु प्रकाशकम्** - सत्त्व गुण हल्का और प्रकाशक होता है।
- **उपष्टम्भकं चलं च रजः** - रजोगुण चञ्चल और उत्तेजक होता है।
- **गुरु वरणकमेव तमः** - तमोगुण भारी अतएव अवरोधक होता है।
- तीनों गुण परस्पर विरोधी स्वभाव वाले होते हुए भी **''प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः''** अर्थात् दीपक के समान व्यवहार करने वाले हैं।
- सत्त्वगुण और तमोगुण दोनों निष्क्रिय होते हैं, रजोगुण ही उन्हें क्रियाशील बनाता है।
- सत्त्व आदि तीनों गुण के कारण अविवेकित्व इत्यादि धर्मों की सत्ता सिद्ध होती है।

20. अनुबन्धचतुष्टये न गण्यते-
(a) सम्बन्धः (b) विषयः
(c) चैतन्यम् (d) प्रयोजनम्

उत्तर–(c)

अनुबन्धचतुष्टये चैतन्यं न गण्यते ।
अनुबन्ध चतुष्टय में चैतन्य की गणना नहीं की जाती है।
वेदान्तसार में अनुबन्ध हैं- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन।
''तत्रानुबन्धो नामाधिकारि विषय सम्बन्ध प्रयोजनानि।''
अधिकारी का लक्षण- अधिकारी तु विधिवदधीत वेदवेदाङ्गत्वेना पाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्ध वर्जन पुरस्सरं नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।
विषय- विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्ध चैतन्यं प्रमेयम् तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात् ।
सम्बन्ध - सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषदप्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः।
प्रयोजन - प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च।

21. वेदान्तसारानुसारम् 'अग्नेः' किम् उत्पद्यते?

(a) आपः (b) पृथिवी

(c) वायुः (d) आकाशः

उत्तर–(c)

वेदान्तसारानुसारम् 'अग्नेः' वायुः उत्पद्यते।

वेदान्तसारानुसार, अग्नि की उत्पत्ति वायु से हुई है। ''आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापोऽद्भ्यः अर्थात् आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल तथा जल से पृथिवी उत्पन्न होती है। तमः प्रधान एवं विक्षेपशक्ति से युक्त अज्ञान से उपहित चैतन्य (ईश्वर) से आकाश उत्पन्न होता है।

सूक्ष्मशरीर के 17 अवयव -

पञ्चज्ञानेन्द्रियां + पञ्चकर्मेन्द्रियां + बुद्धि + मन + पञ्चवायु

चक्षु	वाक्	प्राण
श्रोत्र	पाणि	अपान
त्वक्	पाद	व्यान
घ्राण	पायु	उदान
रसना	उपस्थ	समान

- **स्थूलशरीर-** पञ्चीकृत महाभूतों से स्थूलशरीर उत्पन्न होता है।
- **सूक्ष्मशरीर-** सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं''**लिङ्गानि च तानि शरीराणि इति लिङ्गशरीराणि।**
- **बुद्धि** - बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः।
- **मन-** मनोनाम संकल्पविकल्पात्मिकाऽन्तः करणवृत्तिः।
- **चित्त-** अनुसंधानात्मिकान्तकरणवृत्तिः चित्तम् ।
- **अहङ्कार** - अभिमानात्मिकान्तःकरणवृत्तिरहङ्कारः।

22. 'गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः' किं कथ्यते?

(a) मुमुक्षुत्वम् (b) उपरतिः

(c) श्रद्धा (d) शमः

उत्तर–(c)

'गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः' श्रद्धा कथ्यते?

''गुरुपदिष्ट वेदान्तवाक्य में विश्वास ''श्रद्धा'' कहलाता है।

वेदान्तदर्शन-ज्ञान हेतु प्रवेशार्थ साधन चतुष्टयकी आवश्यकता होती है।

साधनचतुष्टय -

1. नित्यानित्यवस्तुविवेक - नित्य, अनित्य वस्तु का विवेक ।
2. इहामुत्रार्थफलभोगविराग - इह लोक एवं परलोक विषयक फल भोगने के प्रति वैराग्यभाव ।
3. शमादिषट्कसम्पत्ति - **शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान** और **श्रद्धा।**
4. मुमुक्षुत्व - मोक्ष की प्रबल इच्छा का होना।

शमादयस्तु शमदमोपरति तिक्षासामाधानश्रद्धाख्याः।

शम- शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।

दम - दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्त विषयेभ्यो निवर्तनम् ।

उपरति - निवर्तितानामेतेषां तदव्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः अथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः।

तितिक्षा - तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता।

समाधान - निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्

23. 'अज्ञानादिसकलजडसमूहः' इति उच्यते-

(a) वस्तु (b) अवस्तु

(c) अध्यारोपः (d) समष्टिः

उत्तर–(b)

'अज्ञानादिसकलजडसमूहः' अवस्तुः इति उच्यते-

अवस्तु- ''अज्ञानादिसकलजडसमूहः अवस्तुः अर्थात् अज्ञानादि से लेकर सम्पूर्ण जड़प्रपञ्च अवस्तु है।

वस्तु- ''वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्मः अर्थात् सच्चिदानन्द, अनन्त और अद्वैत ब्रह्म वस्तु है।

अज्ञान - अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति।

अज्ञान-भेद-

अज्ञान के दो भेद हैं- समष्टि और व्यष्टि।

इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवह्रियते।

तथाहि यथा वृक्षाणां समष्ट्यभिप्रायेण वनमित्येकत्वव्यपदेशो ।

यथा वा जलानां समष्ट्यभिप्रायेण जलाशय इति।

24. न्यायदर्शनानुसारं किं प्रमाणरूपेण न स्वीक्रियते?

(a) अनुमानम् (b) अर्थापत्तिः

(c) उपमानम् (d) शब्दः

उत्तर–(b)

न्यायदर्शनानुसारं अर्थापत्तिः प्रमाणरूपेण न स्वीक्रियते।

न्यायदर्शन, अर्थापत्ति को प्रमाण नहीं मानता है।

न्यायदर्शन में चार प्रकार का प्रमाण है- **प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि।**

प्रत्यक्ष प्रमाण - साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्; अर्थात् साक्षात्कारिणी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

साक्षात्कारिणी प्रमा दो प्रकार की होती है। 1. सविकल्पक 2. निर्विकल्पक ।

अनुमान प्रमाण - लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम् । (लिङ्ग परामर्श को ही अनुमान कहते हैं।)

लिङ्ग - ''व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्।'' धूम अग्नि का लिङ्ग है।

व्याप्ति - साहचर्यनियमो व्याप्तिः (साहचर्य को व्याप्ति कहते हैं) जैसे- यत्र-यत्र धूमः, तत्र-तत्र वह्निः।

परामर्श - तस्य तृतीयं ज्ञानं परामर्शः (लिङ्ग के तृतीय ज्ञान को परामर्श कहते हैं)।

उपमान प्रमाण - ''अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्य विशिष्टपिण्ड ज्ञानमुपमानम्। अतिदेशवाक्य (जैसी गाय वैसी नीलगाय) के अर्थ का स्मरण करने के साथ 'गौ' की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान प्रमाण' है।
यथागौस्तथा गवयः (जैसी गाय वैसे ही नीलगाय)।
शब्द प्रमाण - ''आप्तवाक्यं शब्दः (आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण है।)

25. 'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं' किम् ?

(a) रसना (b) घ्राणम्
(c) मनः (d) चक्षुः

उत्तर–(c)

'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं' मनः अस्ति।
सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः अर्थात् सुखादि की उपलब्धि का साधन रूपी इन्द्रिय मन है और यह हृदय के भीतर रहता है।
प्रमेय-
न्यायदर्शन में 12 प्रमेय हैं।
1. आत्मा 2. शरीर 3. इन्द्रिय 4. अर्थ 5. बुद्धि 6. मन 7. प्रवृत्ति 8. दोष 9. प्रेत्यभाव, 10. फल 11. दुःख 12.अपवर्ग।
इन्द्रियाँ छः हैं- ''घ्राणरसनचक्षुस्त्वक्श्रोत्रमनांसि''- घ्राण, रसना, चक्षु, त्वक्, श्रोत्र और मन् ये छः इन्द्रियाँ हैं।
घ्राण - गन्धोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं घ्राणम्।
श्रोत्र - शब्दोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं श्रोत्रम्
रसना - रसोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं रसनम्।
मनस् - सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः।
चक्षु- ''रूपोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं चक्षुः।
त्वक् - स्पर्शोपलब्धिसाधनमिन्द्रियं त्वक्।

26. 'शक' इत्यत्र टिसञ्ज्ञा कस्यांशस्य भवति?

(a) 'क' इत्यस्य
(b) 'श' इत्यस्य
(c) ककारोत्तरवर्तिनः अकारस्य
(d) शकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

उत्तर–(c)

'शक' इत्यत्र टिसञ्ज्ञा 'ककारोत्तरवर्तिन अकारस्य भवति?
शक पद में 'ककारोत्तरवर्ती अकार' की टि सञ्ज्ञा हुई है।
अचोऽन्त्यादि टि - अचों के मध्य में जो अन्त्य अच् वह है आदि में जिसके उस समुदाय की ''टि सञ्ज्ञा'' होती है।
जैसे - शक में अ, मनस् में अस्, राजन् में अन् की टिसञ्ज्ञा हुई है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **शि सर्वनामस्थानम्** - ''शि'' की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है- **यथा-** वनानि, दधीनि, मधूनि।
- **सुडनपुंसकस्य** - नपुंसकलिङ्ग से भिन्न ''सुट्'' (सु, औ, जस्, अम्, औट्) की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। **यथा-** राजा, राजानौ, राजानम्।
- **दाधाघ्वदाप** - दा रूप वाले तथा धा रूप वाले धातुओं की ''घु'' संज्ञा होती है।
  'दाप्लवने' और 'दैप् शोधने' धातुओं को छोड़कर।
  तरप्तमपौ घः - तरप् तथा तमप् ये दो प्रत्यय 'घ' सञ्ज्ञक होते हैं। जैसे - कुमारितरा, कुमारितमा।

27. 'सखन्' इत्यत्र उपधासञ्ज्ञा कस्य भवति?

(a) खकारोत्तरवर्तिनः 'अन्' इत्यस्य
(b) सकारस्य
(c) खकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य
(d) सकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

उत्तर–(c)

'सखन्' इत्यत्र उपधासञ्ज्ञा खकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य भवति।
सखन् में खकारोत्तरवर्ती अकार की उपधा सञ्ज्ञा होती है।
- **अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा-** अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की ''उपधा'' सञ्ज्ञा होती है।

जैसे - गम् में अ, मुच् में उ, सखन् में अ, भिद् में इ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **आदिरन्त्येन सहेता** - आदिवर्ण अन्त्य इत्सञ्ज्ञक वर्ण के साथ मिलकर अपने स्वरूप का तथा मध्य में स्थित वर्णो का बोध कराता है। यही प्रत्याहार भी कहलाता है। जैसे- अण्, इक्, अल् आदि।

28. 'दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः' इत्यनेन किं विधीयते?

(a) टच् - प्रत्ययः (b) ञ - प्रत्ययः
(c) पुंवद्भाव (d) एकवद्भावः

उत्तर–(c)

दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः' इत्यनेन ''ञ-प्रत्ययः'' विधीयते?
दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः सूत्र से ञ प्रत्यय होता है।
- दिशावाचक शब्द पूर्व में हो ऐसे प्रातिपदिक से भव आदि शैषिक अर्थो में ञ प्रत्यय होता है ञसञ्ज्ञा में। यथा- पौर्वशालः।
- ञ् तद्धित प्रत्यय है। ञकार की चुटु से इत् सञ्ज्ञा होने के बाद लोप होकर अकार ही शेष रहता है, ञित् का फल तद्धितेष्वचामादेः से वृद्धि होना है। यह प्रत्यय सञ्ज्ञा में नहीं होता है।
- तद्धितेष्वचामादेः ञित् या णित् तद्धित प्रत्ययों के परे होने पर अचों में आदि अच् की वृद्धि होती है।

29. 'रूपवती भार्या यस्य' इत्यस्य समस्तपदं भवति-

(a) रूपवतीभार्यः (b) रूपवतीभार्यम्
(c) रूपवद्भार्यः (d) रूपवद्भार्या

उत्तर–(c)

'रूपवती भार्या यस्य' इत्यस्य समस्तपदं रूपवद्भार्यः भवति-
''रूपवती भार्या यस्य''इसका समस्त पद ''रूपवद्भार्यः'' है। अर्थात् रूपवती स्त्री वाला पुरुष। इसका अलौकिक विग्रह ''रूपवती सु + भार्या सु'' है।

अलौकिक विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे से समास हुआ तथा प्रातिपदिक सञ्ज्ञा और सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से दोनों सु का लोप करके रूपवती + भार्या बना।
रूपवती और भार्या दोनों स्त्रीलिङ्ग है। यह दोनों समानविभक्तिक हैं।
''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' से भार्या शब्द के परे होने पर रूपवती को पुंवत् हुआ। अतः पुल्लिङ्ग की तरह रूपवत् हुआ। रूपवत् + भार्या बना ।भार्या के भकार के परे होने पर झलां जशोऽन्ते से जश्त्व होकर दकार बन गया, रूपवद् + भार्याः वर्णसम्मेलन होकर रूपवद्भार्या बना।

- गोस्त्रियोरूपसजनस्य से भार्या में जो स्त्रीप्रत्यय टाप् वाला अकार है; उसका ह्रस्व होकर -रूपवद्भार्यः बना।

30. 'महांश्च असौ राजा' इत्यस्य समस्तपदं भवति-

(a) महाराजः (b) महाराजम्
(c) महाराजा (d) महद्राजः

उत्तर–(a)

''महांश्च असौ राजा'' इसका समस्तपद महाराजः होता है।

- **महाराजः** - महान या श्रेष्ठ राजा। महान् चासौ राजा लौकिक विग्रह और महत् सु राजन् सु अलौकिक विग्रह में विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से समास हुआ । अर्थात् महत् सु + राजन् सु की समास सञ्ज्ञा हुई। इसके पश्चात् **प्रातिपदिक सञ्ज्ञा,** सुप् का लुक्, प्रथमानिर्दिष्ट महत् की उपसर्जन सञ्ज्ञा और उसी का पूर्व प्रयोग होकर - महत् राजन बना।
''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' से महत् के तकार के स्थान पर आकार आदेश होकर मह + आ में सवर्ण दीर्घ होकर महाराजन् बना ।
अन् की टि संज्ञा करके नस्तद्धिते से लोप हुआ और ''महाराज् + अ बना। वर्णसम्मेलन करके महाराज बना, सु विभक्ति , रूत्वविसर्ग करके महाराजः रूप सिद्ध हुआ।
इसी प्रकार परमराजः, योगिराजः की भी सिद्धि होगी।

31. 'गवाम् अक्षि इव' इत्यत्र समस्तपदमस्ति-

(a) गवाक्षी (b) गवाक्षा
(c) गवाक्षम् (d) गवाक्षः

उत्तर–(d)

- **'गवाम् अक्षि इव'** इसका समस्तपद गवाक्षः होगा।
- **गवाक्षः -** गाय की आँखों जैसी खिड़की, झरोखा। इसमें अलौकिक विग्रह गो आम् + अक्षि सु है तथा षष्ठी से तत्पुरुष समास हुआ है।

अन्य प्रमुख उदाहरण-

- **सुराजा** - अच्छा राजा, लौकिक विग्रह - अतिशयितो राजा अलौकिक विग्रह - अति + राजन् सु - कुगतिप्रादयः से तत्पुरुष समास
- **अर्धर्चः** - ऋचा का आधा भाग - ऋचः अर्धम् - ऋच् ङस अर्धंनपुंसकम्' से समास हुआ है।
- **स्त्रीप्रमाणः** स्त्री जिसके लिए प्रमाण हो, वह पुरुष। स्त्री प्रमाणी यस्य सः।
स्त्री सु + प्रमाणी सु - अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहि समास हुआ है।
- **जलजाक्षी** - कमल की तरह सुन्दर आँख वाली स्त्री। लौकिक विग्रह - जलजे इव अक्षिणी यस्याः। अलौकिक विग्रह - जलजा औ + अक्षि औ।

32. उपकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन्नर्थे द्योत्येऽस्ति-

(a) हीने (b) अधिके
(c) वीप्सायाम् (d) स्वस्वामिभावे

उत्तर–(b)

उपकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी अधिके अर्थे द्योत्येऽस्ति-

- उप शब्द से अधिक तथा हीन अर्थ द्योतित होने पर उप की कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है, लेकिन उप का अर्थ ''हीन'' होने पर द्वितीया विभक्ति तथा ''अधिक'' होने पर सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे - उप हरिः सुराः (देवता हरि से छोटे हैं)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- **पञ्चम्यपाङ्परिभिः -** अप, आङ् तथा परि - इन तीन कर्मप्रवचनीयों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।
जैसे - अप हरेः। परि हरेः संसारः । आ मुक्तेः संसारः
- **अपपरी वर्जने -** अप और परि शब्दों से वर्जन अर्थ द्योतित होने पर कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।
- **पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्** । - पृथक्, विना, नाना, इन तीन अव्यय पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। पक्ष में पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति भी होती है। यथा- पृथक् रामेण, रामाद् रामं वा।

33. अधिकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन्नार्थे द्योत्येऽस्ति?

(a) हीने (b) अधिके
(c) वीप्सायाम् (d) स्वस्वामिभावे

उत्तर–(d)

अधिकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी स्वस्वामिभावे अर्थे द्योत्येऽस्ति।
अधिकर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी स्वस्वामिभाव के अर्थ का द्योतक है।

- आधार होने के कारण अधिकरण कारक सञ्ज्ञा होती है (अधिरीश्वरे)।
- **हीने** - अनु शब्द से न्यूनता अर्थ द्योतित होने पर अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है।
- **उपोऽधिके -** उप शब्द से अधिक तथा हीन अर्थ द्योतित होने पर उप की कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है; किन्तु उप का अर्थ 'हीन' होने पर द्वितीया विभक्ति तथा अधिक होने पर सप्तमी विभक्ति होता है।
- **अतिरतिक्रमणे च** - अति शब्द की अतिक्रमण और पूजा अर्थ में कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा होती है।

34. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या-

(A) कर्तृकर्मणोः कृतिः		(i) युक्तयोगः	
(B) निष्ठा		(ii) शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति	
(C) विभाषोपसर्गे		(iii) वीरपुरुषको ग्रामः	
(D) अनेकमन्यपदार्थे		(iv) जगतः कर्त्ता कृष्णः	

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)

उत्तर–(a)

समीचीनम् युग्माः (व) अन्तर्गते सन्ति ।

कर्तृकर्मणोः कृति - कृत् प्रत्ययान्त के योग में अनभिहित कर्त्ता और कर्म कारक में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे - जगतः कर्त्ता कृष्णः (संसार के सृष्टिकर्त्ता कृष्ण)

- **विभाषोपसर्गे -** द्यूतार्थक अथवा क्रय- विक्रयरूप व्यवहारार्थक दिव् धातु के उपसर्ग युक्त होने पर कर्म में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति।
- **अनेकमन्यपदार्थे -** अन्यपद के अर्थ में वर्तमान एक से अधिक प्रथमान्त पदों का परस्पर विकल्प से समास होता है। यथा- वीरपुरुषको ग्रामः (वीर पुरुष हैं जिस ग्राम के) यहां बहुव्रीहि समास है।
- **संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि-** सम् उपसर्ग पूर्वक ज्ञा धातु के अनभिहित कर्म में विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे - पित्रा पितरं वा सञ्जानीते (पिता को पहचानता है।)

35. भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरः कः?

(a) य (b) श
(c) च (d) ढ़

उत्तर–(a)

भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरः 'य' अस्ति।

भाषाविज्ञान की दृष्टि में अर्धस्वर 'य' को माना जाता है।

व्यञ्जनों का वर्गीकरण - आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर 8 भेद हैं।

1. **स्पर्श व्यञ्जन -** कादयोःमावसानाः स्पर्शाः (क से लेकर म तक स्पर्श ध्वनियाँ हैं) ।
2. **स्पर्शी संघर्षी -** च, छ, ज, झ स्पर्श संघर्षी व्यञ्जन ध्वनियाँ हैं।
3. **संघर्षी -** फ, ब, स, ज, ख, ग, ह।
4. **अर्धस्वर -** य, व।
5. **नासिक्य -** वर्णों के पञ्चम् वर्ण ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।
6. **पार्श्विक -** ल वर्ण।
7. **लुंण्ठित या प्रकम्पित -** र वर्ण।
8. **उत्क्षिप्त -** इसमें जिह्वानोक शीघ्रता से कठोरतालु को केवल एक बार छूती है। ड़् ढ़्।

36. भाषाविज्ञानदृष्ट्या सङ्घर्षी ध्वनिः कः?

(a) ल (b) र
(c) श (d) ट

उत्तर–(c)

भाषाविज्ञानदृष्ट्या सङ्घर्षी ध्वनिः 'श' अस्ति।

भाषा विज्ञान की दृष्टि में संघर्षी ध्वनि श है।

संघर्षी उन ध्वनियों को कहते हैं, जिनके उच्चारण में आन्तरिक वायु का न तो स्पर्श ध्वनियों के तुल्य पूर्णतया अवरोध होता है और न स्वरों के तुल्य अबाध रूप से मुख से बाहर निकलती है। इनकी स्थिति स्पर्श व्यञ्जनों और स्वरों के बीच की है। इनके उच्चारण में भाषणावयव एक-दूसरे के समीप आ जाते हैं, जिससे आन्तरिक वायु दोनों के बीच से रगड़ खाकर निकलती है। इस घर्षण के कारण ही इन ध्वनियों को संघर्षी कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इसे Fricative, Spirant. Durative कहा गया है।

संस्कृत में इसे ऊष्म ध्वनि कहा गया है।

37. धा- धातोः 'दधाति' इति रूपं केन भाषावैज्ञानिक-नियमेन प्रतिपाद्यते?

(a) ग्रासमैन-नियमेन (b) ग्रिम-नियमेन
(c) वर्नर-नियमेन (d) तालव्य-नियमेन

उत्तर–(a)

धा- धातोः 'दधाति' इति रूपं ग्रासमैन- नियमेन प्रतिपाद्यते?

धा- धातोः दधाति' यह रूप भाषावैज्ञानिक ग्रासमैन के नियम के अनुसार है।

मुख्यतः 5 ध्वनि-नियम हैं- ग्रिम, ग्रासमैन,वर्नर, तालव्य, मूर्धन्य।

- **ग्रिम नियमानुसार,** मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियाँ अंग्रेजी और जर्मन में निम्न प्रकार से हो जाती हैं।
  (प्रथम को द्वितीय (क्, त्, प् को ख्, थ्, फ्) , चतुर्थ को तृतीय (घ्, ध्, भ्, को ग्, द्, ब्), तृतीय को प्रथम (ग्, द्, ब् को क्, त्, प्)।
- **ग्रासमैन नियम-** दो महाप्राण ध्वनियों में प्रथम महाप्राण ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है।
- **वर्नर नियम -** यह ग्रिम नियम का संशोधन है।
- तालव्य नियम को कालित्स नियम भी कहते हैं।
- मूर्धन्य नियम का संकेत पाणिनि की अष्टाध्यायी में मिलता है।

38. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) हर्षः	(i) मुद्राराक्षसम्
(B) भवभूतिः	(ii) कणभारम्
(C) विशाखदत्तः	(iii) उत्तररामचरितम्
(D) भासः	(iv) रत्नावली

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(b)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)

उत्तर–(b)

समीचीनम् युग्माः (b) अन्तर्गतेसन्ति ।

श्रीहर्ष कृत **रत्नावली** नाटिका है, इसमें राजा उदयन और सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली के प्रणय और परिणय का वर्णन है। यह चार अङ्कों की नाटिका है।

- **मुद्राराक्षस विशाखदत्त** की कृति है, यह सात अङ्कों का राजनीति विषयक नाटक है, इसमें मुद्रा के द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन है। इसलिए इसका नाम मुद्राराक्षस पड़ा।
- **उत्तररामचरित** भवभूतिकृत करुणरस में नाटक है। इसके सात अङ्कों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
- **भासकृत कर्णभार** एकांकी नाटक है। इसमें कर्ण का ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है। **भास के नाटकों को चार भागों में बांटा गया है।**
- **उदयन-कथा-मूलक** (1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम्।
- **महाभारत - मूलक** (3) ऊरुभंग (4) दूतवाक्य (5) पञ्चरात्र (6) बालचरित (7) दूतघटोत्कच (8) कर्णभार (9) मध्यमव्यायोग
- **रामायण-मूलक -** (10) प्रतिमानाटक (11) अभिषेक नाटक
- **कल्पना-मूलक** (12) अविमारक (13) चारुदत

39. ''अहिणवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ'' इत्यादिसङ्गीतं भवति-

(a) हंसपदिकायाः (b) शकुन्तलायाः
(c) अनसूयायाः (d) प्रियम्वदायाः

उत्तर–(a)

''अहिणवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ'' इत्यादिसङ्गीतं हंसदीपिकायाः भवति-

''अहिणवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ' यह सङ्गीत हंसपदिका का है।

यह पंक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अंक के प्रारम्भ में है।

- यह पंक्ति पालि भाषा में है- इसका संस्कृत अग्रलिखित है- **''अभिनवमधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम् । कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम् ।।** अर्थात् हे भ्रमर! नवीन मधु के इच्छुक तुम आम की मञ्जरी का उस प्रकार रसास्वादन करके कमल में निवासमात्र से संतुष्ट अब उसको क्यूं भूल गए हो।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात अङ्क तथा सम्भोगश्रृंगार रस है।
- इसका उपजीव्य महाभारत का आदिपर्व (शकुन्तलोपाख्यान) है।

40. ''सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते-'' कस्येयमुक्तिः ?

(a) दुष्यन्तस्य (b) शारद्वतस्य
(c) शार्ङ्गरवस्य (d) कण्वस्य

उत्तर–(c)

'सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते-'' शार्ङ्गरवस्य उक्ति :

सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते'' यह उक्ति शार्ङ्गरव की है।

इस उक्ति का तात्पर्य यह है, कि सधवा स्त्री यदि निरन्तर अपने पिता के घर ही रहती है, तो वह भले ही सती-साध्वी हो, लोग उसका उल्टा अर्थ लगाते हैं।

यह पंक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पांचवें अङ्क का सत्रहवाँ श्लोक है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरतवाक्य -

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।।

वैखानस - राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

- **शकुन्तला प्रेम-पत्र लिखती है-**
  ''तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवापि रात्रावपि।
  निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथा या अङ्गानि।।
- **शार्ङ्गरव -** भगवन् ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते।
- **कण्व -** अर्थो हि कन्या परकीय एव।

41. विप्रलम्भश्रृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये-

(a) रघुवंशे (b) मेघदूते
(c) शिशुपालवधे (d) नैषधीयचरिते

उत्तर–(b)

विप्रलम्भश्रृङ्गारः मेघदूते अङ्गीरसः भवति।

विप्रलम्भश्रृङ्गार मेघदूत का अङ्गीरस है।

- **'मेघदूत'** कालिदासकृत खण्डकाव्य/गीतिकाव्य है। इसमें मन्दाक्रान्ता छन्द तथा वैदर्भी रीति है। इसका कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीय रामायण से गृहीत है।
- **मल्लिनाथ** की प्रसिद्ध सञ्जीवनी टीका इसी पर है।
- **डॉ. कीथ** ने मेघदूत को Elegy (शोकगीत) कहा है।

प्रमुख सूक्तियाँ - कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।

- याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।
- रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।
- सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ।
- के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः।
- स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।

42. ''कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम्''- इत्यादि-पद्यं केन सम्बद्धम्?

(a) माघेन (b) कालिदासेन
(c) श्रीहर्षेण (d) भासेन

उत्तर–(a)

'कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम्' यह पद्य महाकवि माघ से सम्बन्धित है।

पंक्ति इस प्रकार है- ''कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम् त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः।''

- महाकवि माघ शिशुपालवधम् नामक महाकाव्य के रचयिता हैं। यह 20 सर्गों का महाकाव्य है।

प्रमुख सूक्तियाँ - ''गृहानुपैतं प्रणयादभीप्सवो
भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।''

- ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं।''
  व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।''
- ''निधिः श्रुतीनां धनसम्पदामिव।''
- ''गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते।''
- ''सदाभिमानैक धना हि मानिनः।''
- ''विपादनीया हि सतामसाधवः।''

43. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' - इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति-

(a) अर्जुनस्य (b) युधिष्ठिरस्य
(c) द्रौपद्याः (d) वनेचरस्य

उत्तर–(c)

''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किरातार्जुनीयम् में यह उक्ति द्रौपदी, युधिष्ठिर से कहती हैं।

- किरातार्जुनीयं - महाकवि भारविकृत 18 सर्गों का महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है। इस पर मल्लिनाथ ने घण्टापथ नामक टीका लिखी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

प्रमुख सूक्तियाँ - हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।
- निरत्ययं साम न दान वर्जितम् ।
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया।
- विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता।
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।
- अहोदुरन्ता बलवद्विरोधिता।

44. 'श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणतत्त्वज्ञः' इति केन् सम्बद्धम्?

(a) भासेन (b) भवभूतिना
(c) श्रीहर्षेण (d) अश्वघोषेण

उत्तर–(b)

''श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणतत्त्वज्ञः'' यह पंक्ति भवभूति से सम्बन्धित है।

- भवभूति का मूलनाम श्रीकण्ठ था। इनकी उपाधि पदवाक्यप्रमाणज्ञ थी।

पद- व्याकरण, वाक्य-मीमांसा, प्रमाण- न्याय।

इनकी तीन रचनाएँ प्रमुख हैं- मालतीमाधवम् , महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्।

- **उत्तररामचरितम्** में भवभूति अपने आपको परिणतप्रज्ञ कहते हैं तथा **महावीरचरितम्** में वश्यवाक् कहा है।
- भवभूति के तीनों नाटकों में विदूषक का अभाव है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

प्रमुख सूक्तियाँ- तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।

- सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम् ।
- अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।
- सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
- करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।
- एकोरसः करुणएव निमित्तभेदाद् भिन्नः।
- गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

45. 'अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनेव चर्चिताः' - इत्युक्तिः कं लक्षयति?

(a) भासम् (b) बाणभट्टम्
(c) शूद्रकम् (d) कालिदासम्

उत्तर–(d)

''अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनेव चर्चिताः'' यह उक्ति कालिदास को लक्षित है।

अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनेव चर्चिताः।
चन्द्रांशुभिरेवोन्मृष्टाः कालिदासस्य सूक्तयः।।

- महाकवि कालिदास की कालक्रम की दृष्टि से रचनाएँ (1) ऋतुसंहार, (2) कुमारसम्भवम् (3) मालविकाग्निमित्रम् (4) विक्रमोर्वशीयम् (5) मेघदूतम् (6) रघुवंशम् (7) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

  अन्य कृतियाँ - कालीस्तोत्र , गङ्गाष्टक, ज्योतिर्विदाभरण, राक्षसकाव्य, श्रुतबोध।

  कालिदास की प्रशस्तियाँ - कविकुलगुरु कालिदासो विलासः - जयदेव प्रसन्नराघवम्।
- निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु - बाणभट्ट (हर्षचरित में) ।
- उपमा कालिदासस्य - उद्भट्।
- मेघे माघे गतं वयः - मल्लिनाथ ।

46. लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।। - उत्तररामचरिते कस्येयमुक्तिः?

(a) अष्टावक्रस्य (b) लक्ष्मणस्य
(c) शम्बूकस्य (d) रामस्य

उत्तर–(d)

''लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।

उत्तररामचरित में यह उक्ति श्रीराम द्वारा कथित है।

'उत्तररामचरितम्' भवभूति द्वारा विरचित 7 अङ्कों का करुण रस प्रधान नाटक है। भवभूति के तीन नाटक प्राप्त होते हैं। रचना-क्रम की दृष्टि से मालतीमाधव, महावीरचरित और उत्तररामचरित हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

महत्वपूर्ण कथन

लक्ष्मण- अपिग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ।

राम - इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयोः।

राम - तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।

राम - सतां केनापिकार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।

तमसा - एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्नः।

अरुन्धती - गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

वनदेवता - सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।

47. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इत्यत्र रसमध्ये कस्य ग्रहणं कृतम् ।

(a) केवलं रसस्य (b) केवलं भावस्य

(c) केवलं रसाभासस्य (d) रस-भाव तदाभासादीनाम्

उत्तर–(d)

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इत्यत्र रसमध्ये
रस-भाव तदाभासादीनाम् ग्रहणं कृतम् ।

''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्''यहां रस के मध्य में - रस- भाव - तदाभास आदि का ग्रहण हुआ है।

आचार्य विश्राप, साहित्यदर्पण में काव्य का लक्षण करते हुए कहते हैं कि - ''वाक्यं रसात्मकं काव्यं''

अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है, यहाँ रस से तात्पर्य 'रस-भाव तदाभासादीनाम्'' है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

साहित्यदर्पणकार के अनुसार, **काव्यप्रयोजन** - ''चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।।

वाक्यस्वरूप - वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः (आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति से युक्त पदसमूह को वाक्य कहते हैं)।

48. साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः स्वीकृताः?

(a) षोडश (b) चतुर्विंशतिः

(c) अशीतिः (d) अष्टचत्वारिंशत्

उत्तर–(c)

आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण में लक्षणा के 80 भेद स्वीकृत है।

साहित्यदर्पण में 10 परिच्छेद हैं। द्वितीय परिच्छेद में लक्षणा का लक्षण वर्णित हैं।

लक्षणा- मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढ़े प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।

अर्थात् मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के बल पर, जिस शब्द शक्ति के द्वारा उस मुख्यार्थ से संयुक्त अर्थ की प्रतीति होती है, वही लक्षणा है। **यथा-** कलिङ्ग, साहसिकः

उपादान लक्षणा- मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा ॥

यथा- श्वेतो धावति, कुन्ताः प्रविशन्ति।

49. 'श्रवणाद्दर्शनाद्वापि मिथः संरूढरागयोः' दशाविशेषो योऽप्राप्तौ... स उच्यते।। रिक्तस्थानं साहित्यदर्पणतः पूरयत।

(a) पूर्वरागः (b) मानः

(c) प्रवासः (d) करुण-विप्रलम्भः

उत्तर–(a)

रिक्तस्थानं पूरकः पदः साहित्यदर्पणतः पूर्वरागः अस्ति ।

श्रवणाद्दर्शनाद्वापि मिथः संरूढरागयोः।
दशाविशेषो योऽप्राप्तौ पूर्वरागः स उच्यते।।

अर्थात् श्रवण से (जो कि दूत, बंदी और सखी आदि के मुख से हो सकता है) अथवा दर्शन (जो कि इन्द्रजाल में, चित्र में साक्षात् अथवा स्वप्न में हो सकता है) से नायक-नायिका में एक-दूसरे के प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया है, किन्तु वह एक-दूसरे से किसी विशेष कारणवश मिलने में असमर्थ रहें ऐसी अवस्था को पूर्वानुराग कहते है।

साहित्यदर्पणानुसार गुण के तीन भेद हैं- माधुर्य, ओज और प्रसाद।

50. साहित्यदर्पणानुसारं फलावाप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः भवति-

(a) आरम्भः (b) नियताप्तिः

(c) प्राप्त्याशा (d) प्रयत्नः

उत्तर–(d)

साहित्यदर्पणानुसारं ''फलावाप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः प्रयत्नः भवति। अर्थात् साहित्य दर्पण के अनुसार फलप्राप्ति हेतु अतिशीघ्र का व्यापार प्रयत्न होता है।

साहित्यदर्पण में 10 परिच्छेद हैं छठें परिच्छेद में पांच कार्यावस्थाएं है-

''अवस्थापञ्चकार्यस्यप्रारब्धस्यफलार्थिभिः
आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमः।

आरम्भ - भवेदारम्भ औत्सुक्यं यन्मुख्यफलसिद्धये (मुख्य फल की सिद्धि के लिए जो औत्सुक्य होता है, उसी को ''आरम्भ'' कहते हैं)।

प्रयत्न - ''प्रयत्नस्तु फलवाप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः (फल प्राप्ति के लिए किए गए अत्यन्त त्वरायुक्त व्यापार को 'यत्न' कहते है)।

प्राप्त्याशा - उपायापायशंकाभ्यां प्राप्त्याशाप्राप्तिसम्भवः । (जहाँ प्राप्ति की आशा, उपाय तथा अपाय की आशंकाओं से घिरी हो; किन्तु प्राप्ति की सम्भावना हो, उसको प्राप्त्याशा कहते हैं)।

नियताप्तिः अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिस्तु निश्चिता (अपाय के दूर हो जाने से प्रधान फल की प्राप्ति का निश्चय ही नियताप्ति कहा जाता है।)

फलागम - सावस्था फलयोगः स्याद्यः समग्रफलोदयः । (जहाँ संपूर्ण की प्राप्ति हो जाए, उस अवस्था को फलागम या फलयोग कहते हैं।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2015
संस्कृत
पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति-
(a) काण्वसंहितायाम् (b) तैत्तिरीयसंहितायाम्
(c) ऋग्वेदसंहितायाम् (d) माध्यन्दिनसंहितायाम्

उत्तर–(c)

''दानस्तुतिसूक्त'' ऋग्वेद संहिता का महत्वपूर्ण सूक्त है। इन सूक्तों में दान की महिमा का गुणगान है। वैदिक वाङ्मय में त्याग एवं दान जैसे गुणों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।
दानस्तुति सूक्त के कुछ महत्त्वपूर्ण मंत्र-
1) उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुः।
2) न भोजा मम्रुर्न न्यर्थमीयुः ।
3) न स सखा यो न ददाति सख्ये ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

ऋग्वेद के अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्त-
(1) नासदीयसूक्त, (2) वाक्सूक्त, (3) श्रद्धा सूक्त, (4) संज्ञान सूक्त, (5) अक्षसूक्त, (6) पुरुषसूक्त, (7) हिरण्यगर्भ सूक्त।

2. ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्तते
(a) भरद्वाजः (b) वामदेवः
(c) वसिष्ठः (d) विश्वामित्रः

उत्तर–(a)

ऋग्वेद प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें कुल 10 मण्डल, 1028 सूक्त तथा 10555 मन्त्र हैं–

मण्डल	मंत्र-द्रष्टा ऋषि
प्रथम मण्डल	मधुच्छन्दा
द्वितीय मण्डल	गृत्समद
तृतीय मण्डल	विश्वामित्र
चतुर्थ मण्डल	वामदेव
पञ्चम् मण्डल	अत्रि
षष्ठ मण्डल	भरद्वाज
सप्तम् मण्डल	वसिष्ठ
अष्टम् मण्डल	कण्व
नवम् मण्डल	सोम/पवमान
दशम् मण्डल	अङ्गिरस (डॉ. कपिलदेव द्विवेदी के अनुसार दशम मण्डल के मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं- त्रित, विमद, इन्द्र, श्रद्धा, कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी आदि।

3. 'बृहदारण्यकम्' कस्य वेदस्य वर्तते?
(a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर–(b)

आरण्यक ब्राह्मण के ही भाग हैं। एकान्त जनशून्य अरण्य में ऋषियों एवं मुनियों ने ब्रह्मचर्य में रत होकर जिस विद्या का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया है वे आरण्यक कहे जाते हैं। आरण्यक निम्न हैं–

- **ऋग्वैदिक आरण्यक ग्रन्थ–**
  (1) ऐतरेय आरण्यक (2) शांखायन आरण्यक
- **शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक ग्रन्थ–**(1) बृहदारण्यक
- **कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक ग्रन्थ–**(1) तैत्तिरीयारण्यक
- **सामवेदीय आरण्यक ग्रन्थ–**(1) छान्दोग्य आरण्यक (2) जैमिनीय आरण्यक।
- अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं प्राप्त होता है।

4. 'आग्नीध्र'-नामा ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते?
(a) ब्रह्मगणस्य (b) अध्वर्युगणस्य
(c) होतृगणस्य (d) उद्गातृगणस्य

उत्तर–(a)

'आग्नीध्र' नामक ऋत्विक् 'ब्रह्मगण' में है।
- **होतृगण-** (1) होता, (2) मैत्रावरुण, (3) ग्रावस्तुत, (4) अच्छावाक
- **अध्वर्युगण-** (1) अध्वर्यु, (2) प्रतिप्रस्थाता, (3) नेष्टा, (4) उन्नेता
- **उद्गातृगण-** (1) उद्गाता, (2) प्रस्तोता, (3) प्रतिहर्ता, (4) सुब्रह्मण्य
- **ब्रह्मगण-** (1) ब्रह्म, (2) ब्राह्मणाच्छंती, (3) आग्नीध्र, (4) पोता

5. 'सुमन्तु'-ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान्?
(a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) अथर्ववेदम् (d) सामवेदम्

उत्तर–(c)

महर्षि व्यास ने सुमन्तु को 'अथर्ववेद' की शिक्षा दी थी।
महर्षि व्यास के पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु- यह चार शिष्य थे। महर्षि व्यास ने पैल को ऋग्वेद, वैशम्यायन को यजुर्वेद, जैमिनि को सामवेद तथा सुमन्तु को अथर्ववेद की शिक्षा दी।

6. दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते-
(a) एकादश (b) पञ्च
(c) त्रयः (d) नव

उत्तर–(b)

दर्शपौर्णमास याग में प्रयाजों की संख्या पांच है।
पञ्च प्रयाज- (1) समिधोयज, (2) तनूनपातं यत्र, (3) इडो यज, (4) बर्हिर्यज, (5) स्वाहाकारंयज
त्रय अनुयाज- (1) बर्हि, (2) नाराशंस, (3) स्विष्टकृत्

- **अन्वाहार्य -** दक्षिणाग्नि में पकाया गया- चार ऋत्विजों के भोजन निमित्त अन्न। (यह दर्शपौर्ण मास की दक्षिणा भी है)।

7. याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः?

(a) चतस्रः (b) तिस्रः
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर–(a)

याज्ञवल्क्यशिक्षानुसार विवृत्ति के चार भेद हैं-

''पिपीलिकापाकवतीतथावत्सानुसारिणी ।
वत्सानुसंसृताचैवचतस्त्रस्तुविवृत्तयः ॥

अर्थात् पिपीलिका, पाकवती, वत्सानुसारिणी तथा वत्सानुसंसृता के भेद से विवृत्ति चार प्रकार की होती है।

पञ्चस्वरभक्ति- (1) करिणी, (2) कुर्विणी, (3) हरिणी, (4) हारिणी, (5) हंसपदा ।

- निषाद गांधार उदात्त हैं, ऋषभ वैवत अनुदात्त हैं, षड्ज-मध्यम-पंचम स्वरित हैं।

8. ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते

(a) आनन्दतीर्थः (b) सायणः
(c) स्कन्दस्वामी (d) वेङ्कटमाधवः

उत्तर–(c)

ऋग्वेद के भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन भाष्यकार हैं। स्कन्दस्वामी ने 600-625 के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा था। इन्होंने यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी है। स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थ अष्टक तक मिलता है। शेष भाग नारायण और उद्गीथ ने किया है।

- आनन्दतीर्थ का ही अपर नाम **मध्व** है। जो द्वैतवादी वैष्णव मध्वाचार्य से अभिन्न थे।
- **वेंकटमाधव** ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य लिखा है। इनके भाष्य को लक्ष्मणस्वरूप ने संपादित कर 4 भागों में प्रकाशित किया है।
- **सायणाचार्य** ने ऋग्वेद सहित 5 वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थों और 2 आरण्यकों पर पाण्डित्यपूर्ण भाष्य लिखा है।

9. वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः?

(a) भट्टोजिदीक्षितः (b) पाणिनिः
(c) पतञ्जलिः (d) कात्यायनः

उत्तर–(a)

वैदिक स्वरप्रक्रिया के वृत्तिकार भट्टोजिदीक्षित हैं। भट्टोजिदीक्षित के अन्य व्याकरण ग्रन्थ हैं–(1) वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (2) प्रौढ़ मनोरमा (3) शब्दकौस्तुभ

- पाणिनि का प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ–अष्टाध्यायी है।
- पतञ्जलि का प्रमुख ग्रन्थ–महाभाष्य है।
- जयादित्य एवं वामन ने काशिका वृति नामक ग्रन्थ की रचना की।
- वरदराजाचार्य ने सरस भाषा में मध्यसिद्धान्तकौमुदी, लघुसिद्धान्त कौमुदी एवं सारसिद्धान्तकौमुदी की रचना की।

10. 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम्?

(a) हरिस्वामिना (b) हलायुधेन
(c)गुणविष्णुना (d) उवटेन

उत्तर–(b)

हलायुध बङ्गाल नरेश लक्ष्मणसेन के दरबार में धर्माधिकारी थे।
हलायुध ने काण्वसंहिता पर ब्राह्मणसर्वस्व नामक भाष्य लिखा है। इसके अतिरिक्त मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व और पण्डितसर्वस्व आदि ग्रन्थ भी हलायुध प्रणीत माने जाते हैं।

- उव्वट ने शुक्लयजुर्वेद के माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य लिखा है।
- गुणविष्णु ने सामवेद की कौथुमशाखा पर भाष्य लिखा है।

11. 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते?

(a) दशमे (b) पञ्चमे
(c) अष्टमे (d) सप्तमे

उत्तर–(a)

वाक्सूक्त ऋग्वेद के दशम् मण्डल में विद्यमान है। इसके ऋषि वाग्आम्भृणी तथा देवता परमात्मा हैं।
इस सूक्त के 8 मन्त्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, शब्दतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है। वाक्सूक्त राष्ट्रनिर्मात्री शक्ति है।
वाक्सूक्त के प्रसिद्ध मंत्र- अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्।

- अहमेव स्वयमिदं वदामि, जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।

12. ऋग्वेदसंहिताया आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते-

(a) एच. विल्सनः (b) ए.ए. मैक्डानलः
(c) आर.टी.एच. ग्रीफिथः (d) विलियम कैलेण्डः

उत्तर–(c)

प्रो. आर.टी.एच. ग्रिफिथ महोदय ने सायणभाष्य का समुचित उपयोग करते हुए सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया है। यह 1889-1892 ई. में प्रकाशित हुआ। चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद का श्रेय ग्रिफिथ महोदय को है। ग्रिफिथ महोदय वाराणसी में संस्कृत विश्वविद्यालय (क्वींस कालेज) के पूर्व प्राचार्य थे।

- विल्सन ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद (1850) ई. प्रकाशित किया, जो सायणभाष्य पर आश्रित था।

13. सामविकाराः परिगणिताः सन्ति-

(a) सप्त (b) चत्वारः
(c) त्रयः (d) षट्

उत्तर–(d)

किसी भी ऋचा को गान का रूप देने के लिए कुछ परिवर्तन किए जाते हैं। इन्हें सामवेद की पारिभाषिक शब्दावली में 'विकार' कहते हैं। ये विकार प्रमुखतः 6 प्रकार के होते हैं–

1. **स्तोभ**–ऋचा को गान का रूप देने के लिए कुछ अतिरिक्त पद मंत्र के साथ जोड़ लेना स्तोभ है। जैसे- औहोवा, हाउ आदि।
2. **विकार**–मंत्र के अक्षर या शब्दों का आवश्यकतानुसार जो परिवर्तन किया जाता है, उसे विकार कहते हैं। जैसे- 'अग्ने' को 'ओग्नायि' बोलना।
2. **विश्लेषण**–एक पद को दो या अधिक खण्डों में विभक्त करना 'विश्लेषण' कहलाता है, जैसे- 'वीतये' को 'वोयि तोयारयि' कहना।
4. **विकर्षण**–स्वर का दीर्घकाल तक उच्चारण विकर्षण कहलाता है। जैसे- दीर्घ, 'प्लुत'
5. **अभ्यास**–किसी पद का दो या अधिक बार उच्चारण करना 'अभ्यास' कहलाता है। जैसे- तो या 2 यि।
6. **विराम**–गान की सुविधा के लिए पद के बीच में रुक जाना 'विराम' कहा जाता है। जैसे- गृणानो हव्यदातये का 'गृणानो है'।
2. सामवेद के अनुसार गान 4 प्रकार का होता है–

- (1) ग्रामगेयगान (2) आरण्यगान (3) ऊहगान (4) उह्यगान

14. 'पदक्रमसदन' - नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते?

(a) वाजसनेय प्रातिशाख्यस्य (b) ऋक्प्रातिशाख्यस्य
(c) अथर्वप्रातिशाख्यस्य (d) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य

उत्तर–(d)

तैत्तिरीय प्रातिशाख्य कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। इस प्रातिशाख्य पर तीन व्याख्याएं उपलब्ध हैं–(1) माहिषेयकृत 'पदक्रमसदन' भाष्य (2) सोमयार्यकृत 'त्रिभाष्यरत्न' और (3) गोपालयज्वाकृत 'वैदिकाभरण'। इसमें पदक्रमसदन प्राचीनतम तथा वैदिकाभरण एवं त्रिभाष्य रत्न की अपेक्षा संक्षिप्त है और वैदिकाभरण सबसे प्राचीन है।

- वाजसनेयि प्रातिशाख्य–शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयि संहिता से सम्बद्ध है।
- ऋक्प्रातिशाख्य–शौनक प्रणीत् ऋग्वेद से सम्बद्ध है।

15. पाणिनीयशिक्षायाम् कति श्लोकाः सन्ति?

(a) चतुः षष्टिः (b) त्रिषष्टिः
(c) षष्टिः (d) सप्ततिः

उत्तर–(c)

आचार्य पाणिनि प्रणीत 'पाणिनीय शिक्षा' में कुल 'षष्टिः' (60) श्लोक हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

पाणिनीय शिक्षानुसार 63 या 64 वर्ण कहे गये हैं–

''त्रिषष्टिश्चतुः षष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा ॥

16. 'मघवा' देवः कः?

(a) इन्द्रः (b) विष्णुः
(c) वरुणः (d) हिरण्यगर्भः

उत्तर–(a)

इन्द्रसूक्त, ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का 12वां सूक्त है। इसके ऋषि गृत्समद, देवता इन्द्र तथा छन्द त्रिष्टुप् है।

- **इन्द्र का विशेषण**–शचीपति, वृत्रहा, सुशिप्र, शक्र, पुरन्दर, वज्री आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- **विष्णु का विशेषण**–त्रिविक्रम्, विक्रम, उरुक्रम, गिरिक्षित, कुचर, उरुगाय आदि।
- **वरुण का विशेषण**– असुर, क्षत्रिय, ऋतस्यगोपा, धृतव्रत, मायावी इत्यादि।
- **हिरण्यगर्भ का विशेषण**–प्रजापति, सुश्रमा इत्यादि।

17. 'यः पृथिवीं व्यथमानामद्रंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्'-अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

(a) विश्वामित्रः (b) मधुच्छन्दा
(c) गृत्समदः (d) इन्द्रः

उत्तर–(c)

प्रस्तुत मन्त्र इन्द्रसूक्त से सम्बद्ध है। इसके ऋषि गृत्समद हैं–

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः॥

अर्थात् जिसने डगमगाती हुई पृथिवी को दृढ़ किया, जिसने विक्षुब्ध पर्वतों को स्थिर किया, जिसने अतिविस्तृत अन्तरिक्ष को नाप लिया, जिसने द्युलोक को थामा हुआ हो, हे लोगों ! वह इन्द्र है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विश्वामित्र तृतीय मण्डल के ऋषि हैं।
- मधुच्छन्दा, अग्निसूक्त के ऋषि हैं।
- इन्द्रसूक्त के ऋषि गृत्समद हैं।

18. ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि?

(a) एकम् (b) द्वे
(c) चत्वारि (d) त्रीणि

उत्तर–(c)

शाकल ऋषि के अनुसार स्वर दो प्रकार का होता है–(1) समानाक्षर (2) सन्ध्यक्षर।

- समानाक्षर आठ हैं–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ ।
- सन्ध्यक्षर 4 हैं- ए, ओ, ऐ, औ ।

चत्वारि सन्ध्यक्षराणि- किन्तु ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार ई, इ को भी स्वर माना गया है। इस प्रकार यह तेरहवां स्वर है और इसकी गणना समानाक्षर स्वर में है।

19. 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थे वेदयति स वेदः'-इति लक्षणं कस्य?

(a) महीधरस्य (b) लौगाक्षिभास्करस्य
(c) सायणस्य (d) पारस्करस्य

उत्तर–(c)

आचार्य सायण ने वेद का लक्षण बतलाते हुए कहा है कि ''इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थे वेदयति स वेदः'' अर्थात् इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार का अलौकिक उपाय बताने वाला ग्रन्थ वेद है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

वेदों के भाष्यकर्त्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सायण ने अनेक विद्वानों की सहायता से चारों वेदों पर प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण भाष्य लिखा है।
सायण ने सर्वप्रथम कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता पर भाष्य लिखा है।

20. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

(a) अथर्ववेदेन (b) सामवेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) यजुर्वेदेन

उत्तर–(d)

शुल्बसूत्र, कल्पसूत्र का प्रमुख अङ्ग है। शुल्ब का अर्थ है–मापने की रस्सी। वस्तुतः सम्प्रति केवल यजुर्वेद से सम्बद्ध शुल्बसूत्र मिलते हैं। शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध केवल एक शुल्बसूत्र है–कात्यायन शुल्बसूत्र ।
कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध छः शुल्बसूत्र हैं–(1) बौधायन शुल्बसूत्र (2) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र (3) मानव शुल्बसूत्र (4) मैत्रायणीय शुल्बसूत्र (5) वाराह शुल्बसूत्र (6) वाधूल शुल्बसूत्र। इनके अतिरिक्त एक हिरण्यकेशी शुल्बसूत्र भी मिलता है।

21. 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति?

(a) विष्णोः (b) वायोः
(c) रुद्रस्य (d) इन्द्रस्य

उत्तर–(c)

'विलोहित' रुद्र का विशेषण है। इसके अतिरिक्त भी रुद्र के विशेषण बताए गए हैं–त्र्यम्बक, नीललोहित, शर्व, भव, कृत्तिवासस, पशुपति, असुर, मरुत्पिता, मरुत्वान् आदि।

- **विष्णु देवता का विशेषण है–**त्रिविक्रम, विक्रम, उरुक्रम, गिरिक्षत, कुचरः, उरुगाय इत्यादि।
- **इन्द्र देवता का विशेषण है–**शचीपति, वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, शक्र, पुरन्दर, वज्री इत्यादि।

22. 'छन्दः सूत्रम्' इति वेदाङ्गग्रन्थस्य प्रणेता विद्यते

(a) हलायुधः (b) पिङ्गलः
(c) लगधः (d) भरतः

उत्तर–(b)

छन्दःशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य 'पिङ्गल' हैं। षड्गुरु शिष्य ने वेदार्थ दीपिका में छन्दःशास्त्र के रचयिता पिङ्गल को पाणिनि का अनुज बताया है।
छन्दोविषयक अन्य ग्रन्थ- (1) ऋक्प्रातिशाख्य (पटल 16 से 18) (2) शांखायन श्रौतसूत्र (केवल 7.27), (3) सामवेद का निदानसूत्र, (4) कात्यायनकृत दो छन्दोऽनुक्रमणियां।

- वेदों में मात्रिक छन्द का अभाव होता है।
- हलायुध ने छन्दःसूत्र के ऊपर मृतसंजीवनी नामक टीका लिखी है।
- लगध, ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक हैं।

23. यास्कीयनिरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यन्ते-

(a) पञ्च (b) त्रीणि
(c) सप्त (d) नव

उत्तर–(b)

आचार्य यास्क कृत 'निरुक्त' तीन काण्डों में विभक्त है–(1) नैघण्टुक काण्ड (2) नैगम काण्ड (3) दैवत काण्ड।
इसमें बारह अध्याय हैं और अन्त में 2 अध्याय परिशिष्ट के रूप में जोड़े गए हैं। इस प्रकार निरुक्त में कुल 14 अध्याय हैं।
निघण्टु में वैदिक शब्दों का संकलन है। इसमें पांच अध्याय है।
यास्क कृत निरुक्त, निघण्टु ग्रन्थ की व्याख्या है।

24. 'भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि' इति पङ्क्तिःकस्मिन् प्रसङ्गे महाभाष्ये उद्धृता?

(a) शब्दपरिभाषाप्रसङ्गे (b) व्याकरणाध्ययनप्रयोजनप्रसङ्गे
(c) शब्दार्थसम्बन्धप्रसङ्गे (d) व्याकरणलक्षणप्रसङ्गे

उत्तर–(b)

महर्षिपतञ्जलि कृत महाभाष्य में मुख्य 5 प्रयोजन तथा 13 गौण प्रयोजन बताए गए हैं। जिसमें सक्तुमिव नामक 10वें प्रयोजन के सन्दर्भ में यह प्रसङ्ग आया है–
''सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीः निहिताऽधिवाचि''।।
अन्य महत्वपूर्ण तथ्य- व्याकरणशास्त्र अध्ययन के मुख्य प्रयोजन-
''रक्षोहागमलध्वसंदेहाः प्रयोजनम्'' अर्थात् वेदों की रक्षा, विभक्तियों के विपरिणाम, आगम, सुगमता एवं संशयराहित्य व्याकरणशास्त्र अध्ययन के प्रमुख प्रयोजन हैं।

25. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रेण अधोलिखितविकल्पमात्रेषु किममिप्रेतम्?

(a) अडागमः (b) आडागमः
(c) ह्यादेशः (d) सलोपः

उत्तर–(d)

''लोटो लङ्वत्'' अर्थात् लोट्लकार लङ्लकार के समान होता है। यह सूत्र तब प्रवृत्त होता है जब ताम् आदि आदेश करना हो अथवा ''नित्यं ङितः'' सूत्र से सलोप करना हो। अन्य की स्थिति में यह प्रवृत्त नहीं होता है।

- लङ्लकार 'ङित्' है जबकि लोट् लकार 'हित्' में ङित् वाले कार्य नहीं हो पा रहे थे। इसीलिए पाणिनि ने इस सूत्र को बनाया।

26. 'इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते?

(a) आम्प्रत्ययः (b) लुक्
(c) सलोपः (d) क्राद्यनुप्रयोगः

उत्तर–(a)

इजादिर्यो धातुर्गुरुमान् ऋच्छत्यन्यः, तत् आम् स्याल्लिटि। अर्थात् ऋच्छ् धातु से भिन्न गुरुवर्ण वाले इजादि धातु से 'आम्' प्रत्यय होता है लिट् के परे होने पर। जैसे- एध् धातु इजादि है तथा गुरुमान भी है और इसके बाद में लिट् भी है अतः सूत्र से आम् प्रत्यय हुआ । आम् से परे लिट्लकार सम्बन्धी तकार का लोप होकर तथा अन्य सूत्रादेश होकर 'एधाञ्चक्रे' रूप बनता है।

27. अधोऽङ्कितयुग्मभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या-

(a) कृत्यानां कर्तरि वा — **(i) दण्डिकः**
(b) उगितश्च — **(ii) मम मया व सेव्यो हरिः**
(c) ईच खनः — **(iii) भवन्ती**
(d) अत इनि-ङनौ — **(iv) खेयम्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(1)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(2)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(3)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(4)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

उत्तर–(a)

- **कृत्यानां कर्तरि वा**–कृत्य प्रत्यय अथवा कर्ता प्रत्यय कर्मवाच्य में होते हैं। जैसे–मम मया वा सेव्यो हरिः।
- **उगितश्च ङीप्**–उगित् प्रत्यय जिस प्रातिपदिक के अन्त में हो उससे स्त्रीबोधन के लिए ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे–भवन्ती।
- **ईच् खनः**–ईकारान्त खन् धातु से यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण–खेयम्।
- **अत इनि ठनौ**–प्रथमान्त अदन्त शब्द से मत्वर्थ में इनि और ठन् दो प्रत्यय होते हैं। उदाहरण–दण्डी, दण्डिकः।

28. 'दन्तुरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?

(a) र (b) अच्
(c) इरच् (d) उरच्

उत्तर–(d)

'दन्त उन्नत उरच्' सूत्र से दन्तुरः में उरच् प्रत्यय हुआ है। प्रथमान्त दन्त शब्द से मत्वर्थ में उरच् प्रत्यय होता है। यथा–दन्तुरः।

दन्तुरः (उन्नता दन्ता सन्ति अस्य)–ऊंचे दांत वाला। यहां प्रथमान्त दन्त शब्द से मत्वर्थ में दांतों की ऊंचाई सूचित करने के लिए प्रकृति सूत्र से 'उरच्' प्रत्यय हुआ है तथा अन्त्य अकार का लोप होकर दन्तुरः रूप बना है।

29. 'सुमुखा शाला' इत्यत्र स्वाङ्गलक्षणङीष् कथं न भवति?

(a) अप्राणिस्थत्वात् (b) अमूर्तत्वात्
(c) विकारजत्वात् (d) द्रवत्वात्

उत्तर–(a)

स्वाङ्गाच् चोपसर्जनाद् –संयोगोपधात् सूत्र से जिसकी उपधा में संयोग नहीं, ऐसा उपसर्जन–गौण स्वाङ्गवाचक जो शब्द, तदन्त अदन्त प्रातिपदिक से ङीष् विकल्प से होता है।

स्वाङ्ग शब्द का यहां अपना अङ्ग यह अर्थ नहीं अपितु पारिभाषिक अर्थ है। उसके तीन लक्षण हैं–

(1) अद्रवं मूर्तिमत् स्वाङ्गं प्राणिस्थम्अविकारजम्
(2) अतत्स्थं तत्र दृष्टं च।
(3) तेन चेत् तत् तथा युतम्

- अप्राणिस्थत्वात्–अर्थ से समुखाशाला में ङीष् की जगह टाप् प्रत्यय हुआ है।
- अविकारजत्वात् से टाप्, प्रत्यय होकर - अतिकेशा बना।

30. 'शत्रुमधिकुरुते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?

(a) वेः शब्दकर्मणः (b) अकर्मकाच्च
(c) अधेः प्रहसने (d) उपपराभ्याम्

उत्तर–(c)

अधि उपसर्ग पूर्व हस् धातु के योग में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा–अधेः प्रहसने।

1. अकर्मकाच्च–अकर्मक ज्ञा धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा–सर्पिषो जानीते।
2. अनु और परा उपसर्ग पूर्वक 'कृञ्' धातु से क्रियाफल में भी परस्मैपद प्रत्यय होता है।

31. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

(a) विभाषाऽकर्मकात्
(b) निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(c) परेर्मृषः
(d) बुध्युधनशजनेङ् प्रद्रुस्रुभ्यो णेः

उत्तर–(d)

बुध्, युध्, नश्, जन्,इङ्, प्र, द्रु तथा स्रु इत्यादि धातुओ से णिजन्त प्रयोग हो ये परस्मैपदी प्रत्यय होता हैं। जैसे–बुध्यते, युध्यते, नश्यति, जनयति, एजते, प्रवहति, द्रुहयति।

1. विभाषाऽकर्मकात् सूत्र से अकर्मक धातु होता है और इसमें आत्मनेपद प्रत्यय होता है।
2. निगरणचलनार्थेश्पश्च सूत्र से निगरण अर्थ में आत्मनेपद प्रत्यय होता है।
3. परिपूर्वक होने से मृष् धातु से परस्मैपद प्रत्यय होता है। जैसे–परिमृषति ।

32. 'एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' इति पङ्क्तिः कुत्र ग्रन्थ उपलभ्यते?

(a) महाभाष्ये (b) वाक्यपदीये
(c) पाणिनिशिक्षायाम् (d) अष्टाध्याय्याम्

उत्तर–(b)

आचार्य भर्तृहरि प्रणीत् व्याकरणदर्शन ग्रन्थ वाक्यपदीयम् से प्रस्तुत पंक्ति उद्धृत है–

''द्वायुपादानशब्देषु शब्दौ शब्दविदो विदु;।
एकोनिमितं शब्दानां अपरोऽर्थे प्रयुज्यते।। वा.प.ब्र.का -4411

अर्थात् उपादान शब्दों में दो प्रकार के शब्दों का अस्तित्व शब्दविद् लोग मानते हैं। इसमें एक शब्द को निमित्तिक शब्द माना गया है और दूसरे को अर्थभावना से प्रयुक्त किया जाता है।

- महाभाष्य, महर्षि पतञ्जलि की रचना है।
- अष्टाध्यायी, आचार्य पाणिनि की रचना है।
- पाणिनीय शिक्षा, आचार्य पाणिनि की रचना है।

33. 'शास्त्रानुपूर्वं तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः' इति पङ्क्तिः कुत्र ग्रन्थ उपलभ्यते?

(a) पाणिनिशिक्षायाम् (b) अष्टाध्याय्याम्
(c) वाक्यपदीये (d) महाभाष्ये

उत्तर–(a)

शिक्षा को वेद के छः अङ्गों में से प्रमुख अङ्ग माना गया है।
पाणिनीय शिक्षा आचार्य पाणिनि की रचना है। यह पद्यात्मक शैली में लिखा गया ग्रन्थ है, जिसमें 63 या 64 वर्ण हैं।
पाणिनीय शिक्षा का प्रथम श्लोक-

''अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा।
शास्त्रानुपूर्वं तद्विद्याद् यथोक्तं लोकवेदयोः।।''

अर्थात् पाणिनि मत के अनुसार शिक्षा नामक उस लोक तथा वेद में कहे हुए के अनुसार तथा शास्त्रों के प्रवर्तक गुरुओं की परम्परा से प्राप्त समझें।

34. संस्कृतभाषाध्वनिसन्दर्भेऽधोलिखितेषु 'अर्धस्वरः' कः?

(a) क (b) ष (c) म (d) व

उत्तर–(d)

अर्धस्वर–इनके उच्चारण में मुख्य द्वार व्यञ्जनों के तुल्य न पूर्णतया बन्द होता है और न स्वरों के तुल्य पूर्णतया खुला रहता है। उदाहरण–य, व।

- क वर्ण स्पर्श संज्ञक होता है। ''कादयोमावसानाः स्पर्शाः।
- ष वर्ण अघोष संघर्षी होता है।
- म वर्ण स्पर्श संज्ञक होता है।

35. अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति-

(a) तैलम् (b) मुग्धः
(c) गौः (d) सभ्यः

उत्तर–(c)

अर्थपरिवर्तन की तीन प्रकार की दिशाएं होती हैं–(1) अर्थविस्तार (2) अर्थसङ्कोच (3) अर्थादेश।

1. अर्थविस्तार–कुछ शब्द मूल रूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके धर्म में विस्तार हो गया। उदाहरण–कुशल, प्रवीण, तैल, गौशाला, महाराज, गोष्ठ, गवेषणा।

2. अर्थसङ्कोच–अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में सङ्कोच हुआ है। यथा–गौ, अश्व, पृथ्वी, मनुष्य इत्यादि।

3. अर्थादेश–अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना अर्थादेश कहलाता है। यथा–असुर, वर, सह, मौन, देवानांप्रियः, साहस, मुख, कर्पट इत्यादि।

36. अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति-

(a) जलदः (b) सभ्यः
(c) मनुष्यः (d) पङ्कजम्

उत्तर–(b)

भाषा विज्ञान के अनुसार अर्थसङ्कोच वह होता है जिसके पूर्व के अर्थों में संकुचन हो गया हो अर्थात् सीमित हो गया हो। जैसे–गौ, अश्व, पृथ्वी, मनुष्य, जगत्, संसार, अम्बुज, सरसिज, सरोज, पंकज, नीरज, जलद, तोयद, अम्बुद, वारि, वारिधि इत्यादि।

- सभ्य अर्थसङ्कोच का उदाहरण नहीं है, बल्कि यह अर्थोत्कर्ष का उदाहरण है। पूर्व में 'सभ्य' पद का प्रयोग केवल सभा में बैठने वालों के लिए था लेकिन अब सुसंस्कृत के लिए है।

37. ध्वनिवैज्ञानिकैः करणत्वेन किं स्वीक्रियते?

(a) मृदुतालु (b) वर्त्सः
(c) ऊर्ध्वैष्ठिः (d) नासिकाविवरः

उत्तर–(a)

- कोमल तालु को ही 'मृदुतालु' कहते हैं यह ध्वनि के निष्पादन में साधन के रूप में प्रयुक्त होता है।
- दांतों से लगे हुए खुरदरा कठोर भाग को भ्रम से वर्त्स कहते हैं।
- कण्ठ एवं तालु के ऊपरी भाग को 'ऊर्ध्व' कहते हैं।
- अनुस्वार का उच्चारण नासिका से होता है।

38. ''सा च त्रिविधा-विधात्री, अभिधात्री विनियोक्त्री च'' इत्यत्र 'सा' का?

(a) वैदिकी समाख्या (b) श्रुतिः

(c) लौकिकी समाख्या (d) शब्दशक्तिः

उत्तर–(b)

लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह के अनुसार श्रुति का लक्षण है–तत्र निरपेक्षो रवः श्रुतिः। सा च त्रिविधा–विधात्री, अभिधात्री विनियोक्त्री च अर्थात् शेषत्व अथवा अङ्गत्व का बोध कराने के लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता से रहित शब्द स्तुति प्रमाण कहलाता है, इनमें से विधात्री 'लिङ्गादि' रूप वाली है। दूसरी व्रीहि आदि श्रुति तथा अन्त में जिस शब्द के सुनने से ही सम्बन्ध प्रतीत होता है वह विनियोक्त्री विधि कहलाती है।

- वेदों का समाधान वैदिकी समाख्या कहलाता है।
- लोक का समाधान लौकिकी समाख्या कहलाता है।
- अभिधा को शब्दशक्ति कहा जाता है।

39. अर्थसङ्ग्रहानुसारं 'शाब्दीभावना' इत्यनेन कः अभिप्रायः?

(a) अपौरुषेयवाक्यम्

(b)समभिव्यवहारः

(c) पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः

(d) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः

उत्तर–(c)

अर्थसंग्रह के अनुसार भावना दो प्रकार की होती है–(1) शाब्दी भावना (2) आर्थी भावना।

1. शाब्दी भावना का लक्षण है–**तत्र पुरुषप्रवृत्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दी भावना।** अर्थात् पुरुष में प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाला व्यापार विशेष शाब्दी भावना है। यह लिङ् अंश के द्वारा कही जाती है।
2. आर्थी भावना का लक्षण है–**प्रयोजनेच्छाजनित क्रियाविषयव्यापार आर्थी भावना।**

   अर्थात् प्रयोजन विषयक इच्छा से उत्पन्न क्रियाविषयक मानसिक व्यापार ही आर्थी भावना है।

- अर्थसंग्रह के अनुसार अपौरुषेय वाक्य को 'वेद' कहते हैं।
- समभिव्याहार 'वाक्य' कहलाता है।

40. अर्थसङ्ग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः-उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः अधिकारविधिः,..........च।

(a) नियमविधिः (b) प्रयोगविधिः

(c) यज्ञविधिः (d) परिसङ्ख्याविधिः

उत्तर–(b)

अर्थसङ्ग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः अर्थात् विधि के चार भेद है। जो इस प्रकार हैं–

(1) उत्पत्तिविधि–कर्मस्वरूप मात्रबोधको विधिरुत्पत्ति विधिः। अर्थात् केवल कर्म के स्वरूप की बोधक विधि उत्पत्ति विधि कही जाती है। जैसे–अग्निहोत्रं जुहोति।

(2) विनियोगविधि–अङ्गप्रधान सम्बन्धबोधको विधिर्विनियोग विधिः। अर्थात् अङ्ग एवं अङ्गी के सम्बन्ध की बोधक विधि विनियोग विधि कही जाती है। जैसे–दध्ना जुहोति।

(3) अधिकारविधि–कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः अर्थात् कर्मजन्य फल के स्वाम्य की बोधक विधि अधिकारविधि कहलाती है। जैसे–यजेत् स्वर्गकामः।

(4) प्रयोगविधि–प्रयोगप्राशुभावबोधकोविधिःप्रयोगविधि–प्रयोगप्राशुभाव की बोधक विधि प्रयोगविधि कहलाती है।

- अनेक साधनों द्वारा साध्य क्रिया के अभिप्रेत साधन को नियमविधि कहते हैं। यथा–दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत्।
- उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितरव्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्याविधिः। अर्थात् दो वैकल्पिक पदार्थों की युगपत् प्राप्ति होने पर एक विशेष पदार्थ की निवृत्ति का बोध कराने वाली विधि परिसंख्याविधि कहलाती है। यथा–पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः।

41. योगदर्शनानुसारं कः 'योगाङ्गैः सह सम्बद्धः न अस्ति?

(a) विकल्पः (b) नियमः

(c) प्रत्याहारः (d) प्राणायामः

उत्तर–(a)

योगदर्शन के अनुसार अष्टाङ्ग योग का लक्षण है–यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्योऽष्टावङ्गानि। अर्थात् योगाङ्ग आठ हैं–(1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान (8) समाधि।

(1) यम के 5 भेद–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
(2) नियम के 5 भेद–शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान।
(3) आसन–स्थिरसुखम् आसनम्।
(4) प्राणायाम–तस्मिन्सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः।
(5) प्रत्याहार–स्वविषयसम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकारइवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।
(6) धारणा–देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।
(7) तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।
(8) तदेवार्थमात्र निर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः।

- चित्त की वृत्तियों के पांच भेद है- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति।

42. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इत्यत्र 'अथ' शब्दः कस्मिन् अर्थे अस्ति?

(a) हेत्वर्थे (b) अधिकारार्थे

(c) अन्वयार्थे (d) आनन्तर्यार्थे

उत्तर–(d)

बादरायण कृत ब्रह्मसूत्र में प्रथम सूत्र '**अथातोब्रह्मजिज्ञासा**' में अथ शब्द अनन्तर का वाचक है तथा अतः शब्द हेत्वर्थक का वाचक है। ब्रह्मजिज्ञासा शब्द का अर्थ ब्रह्मणः जिज्ञासा है।
तत्र अथ शब्दः आनन्तर्यार्थः परिगृह्यते न अधिकारार्थः।
यहां 'अथ' शब्द का आनन्तर्यार्थ किया जाता है। आरम्भ नहीं क्योंकि ब्रह्मजिज्ञासा का आरम्भ नहीं किया जा सकता और मंगल का वाक्यार्थ में समन्वय नहीं होता इसलिए आनन्तर्य अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
नोट– महाभाष्य के अनुसार अथ शब्द अधिकारार्थक होता है।

43. ''व्याप्यस्य पक्षधर्मत्वधीः' इति किम्?

(a) परामर्शः (b) अनुमितिः
(c) पक्षता (d) प्रतिज्ञा

उत्तर–(a)

''व्याप्यस्य पक्षधर्मत्वधीः'' परामर्शः उच्यते अर्थात् व्याप्य का पक्षवृत्तित्व ज्ञान परामर्श कहलाता है।
जैसे- वह्निव्याप्य धूमवानयं पर्वतः इति ज्ञानम् परामर्शः अर्थात् वह्नि की व्याप्ति से विशिष्ट धूम पर्वत में है।
व्याप्ति- हेतुमन्निष्ठ विरहाप्रतियोगिना। साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यं व्याप्तिरुच्यते ।
पक्षधर्मता - सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न तिष्ठति। स पक्षस्तत्रवृत्तित्व ज्ञानादनुमितिर्भवेत् । यथा- पर्वतो धूमवान् ।

44. जैनदर्शनानुसारं 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि ....'।

(a) जीवः (b) मोक्षमार्गः
(c) मनःपर्यायः (d) मोक्षः

उत्तर–(b)

जैन दर्शन के अनुसार मोक्षमार्ग के तीन साधन हैं–सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् चरित्र।
1. सम्यक् दर्शन–जैन तीर्थंकरों, सिद्धान्तों व तत्त्वों के प्रति आस्था रखना ही सम्यक् दर्शन कहलाता है।
2. सम्यक् ज्ञान–जैन सिद्धान्तों तथा आगमों का गहरा ज्ञान प्राप्त करना ही सम्यक् ज्ञान कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है–(1) प्रमाण (2) नय तथा इसके पाँच भेद होते हैं–(1) मति (2) श्रुति (3) अवधि (4) मनःपर्याय (5) केवल।
3. सम्यक् चरित्र–जैन सिद्धान्तों को अपने आचरण में धारण कर लेना ही सम्यक् चरित्र है। यह पांच प्रकार का होता है–(1) अहिंसा (2) सत्य (3) अस्तेय (4) ब्रह्मचर्य (5) अपरिग्रह।

45. 'सर्वं शून्यम्' इति केन बौद्धसम्प्रदायेन स्वीकृतम्?

(a) माध्यमिकेन (b) सौत्रान्तिकेन
(c) योगाचारेण (d) वैभाषिकेन

उत्तर–(a)

बौद्ध दर्शन के चार भेद हैं–भावनाचतुष्टय।
(1) **वैभाषिक**–इनके अनुसार समस्त बाह्य पदार्थ क्षणिक हैं। जैसे–सर्वं क्षणिकं क्षणिकम्।
(2) **योगाचार**–इनके अनुसार बुद्धि ही आकार के साथ है। अर्थात् बुद्धि में ही बाह्यार्थ चले जाते हैं। यह दो प्रकार की सत्ता मानते हैं–(1) पारमार्थिक (2) व्यावहारिक। यथा–सर्वं स्वलक्षणं स्वलक्षणम्।
(3) **सौत्रान्तिक**–ये बाह्यार्थ को अनुमेय मानते हैं। यद्यपि बाह्य जगत् की सत्ता दो स्वीकार करते हैं। यथा–सर्वं दुःख दुःखम्।
(4) **माध्यमिक**–न तो बाह्य पदार्थ है न ही आन्तरिक। विज्ञान शून्यवाद अभाववाद नहीं है बल्कि शून्य से अनिर्वचीय तत्त्व का बोध होता है। जैसे–सर्वं शून्यं सर्वं शून्यम्।

46. तर्कभाषानुसारं 'संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम्' अस्ति-

(a) अनुभवः (b) यथार्थः
(c) स्मृतिः (d) प्रमाणम्

उत्तर–(c)

''संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम् स्मृतिः'' संस्कारमात्र से उत्पन्न ज्ञान को स्मृति कहते हैं। संस्कारजन्य तो संस्कार का ध्वंस अर्थात् विनाश भी है। अतः उसमें लक्षण की अतिव्याप्ति को दूर करने के लिए ज्ञानपद दिया गया है। ज्ञान तो अनुभव भी है। अतः उसमें अतिव्याप्ति हटाने के लिए संस्कारजन्य पद दिया गया है। अनुभव तथा स्मृति दोनों ही ज्ञान हैं। किन्तु अनुभव संस्कार का जनक है, उससे जन्य नहीं। जबकि इसके विपरीत स्मृति संस्कारजन्य होती है–''अनुभवजन्यः संस्कारस्तज्जन्या स्मृतिः।'' यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है।

- स्मृति से भिन्न ज्ञान अनुभव है। तद्भिन्नः अनुभवः ।
- यथार्थ अनुभव ही प्रमा है। यथार्थानुभवः प्रमा ।
- प्रमा का करण प्रमाण कहलाता है। ''प्रमाकरणं प्रमाणं ।

47. तर्कसङ्ग्रहानुसारं शब्दसाक्षात्कारे कः सन्निकर्षः?

(a) समवायः (b) संयोगः
(c) समवेतसमवायः (d) विशेषण-विशेष्यभावः

उत्तर–(a)

तर्कसंग्रह के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है–(1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव।

1. **संयोग**–चक्षुरिन्द्रिय द्वारा घटादि द्रव्य का प्रत्यक्ष ज्ञान होने में संयोग सम्बन्ध होता है–**चक्षुषा घटप्रत्यक्ष जनने संयोग सन्निकर्षः।**
2. **संयुक्तसमवाय**–घटरूप प्रत्यक्षजननेसंयुक्त समवायः– **घट के रूप का प्रत्यक्ष होने में 'संयुक्तसमवायसन्निकर्ष' है।**
3. **संयुक्तसमवेतसमवाय**–चक्षुः संयुक्ते घटे रूपस्य समवयात्– **रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में 'संयुक्तसमवेतसमवाय' सन्निकर्ष हैं।**

4. **समवेतसमवाय**—शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः। अर्थात् शब्दत्व के साक्षात्कार में समवेतसमवाय सन्निकर्ष हैं।
5. **समवाय**—श्रोत्रेण शब्द साक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः। अर्थात् श्रोत्र के द्वारा शब्द का प्रत्यक्ष होने में समवाय सम्बन्ध होता है, क्योंकि कर्णविवरवर्ती आकाश ही श्रोत्रेन्द्रिय है तथा शब्द आकाश का गुण है और गुण-गुणी का सम्बन्ध समवाय ही होता है।

(6) **विशेषणविशेष्यभाव**—अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः। अर्थात् अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषण-विशेष्य-भाव सन्निकर्ष होता है।

48. ''श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्''-इति वार्ता केन सम्बद्धा?

(a) माघेन (b) भारविणा
(c) श्रीहर्षेण (d) भासेन

उत्तर–(c)

महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषध नामक महाकाव्य के अन्त में अपने माता-पिता के नाम का उल्लेख किया है–श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं । श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी चयम्।
अर्थात् कविराज समूह के मुकुट के आभूषणरूपहीरे श्रीहीर तथा मामल्लदेवी ने इन्द्रियों के समूह को जीतने वाले जिस श्रीहर्ष नाम के पुत्र को उत्पन्न किया उसके चिन्तामणि मन्त्र के उपासना के फलस्वरूप शृङ्गाररस की कामना से मनोहर नैषधीयचरित नामक महाकाव्य में प्रथमसर्ग समाप्त हुआ।

- माघ की रचना 'शिशुपालवधम्' 20 सर्गों में विभक्त है।
- भारवि की रचना 'किरातार्जुनीयम्' 18 सर्गों में विभक्त है।
- भास के 13 नाटक हैं।

49. ''नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मागान्मम्''-मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः?

(a) चन्द्रगुप्तस्य (b) चाणक्यस्य
(c) राक्षसस्य (d) चन्दनदासस्य

उत्तर–(b)

प्रस्तुत सूक्ति मुद्राराक्षस के प्रथम अङ्क से सम्बद्ध है–

''ये याताः किमपि प्रधार्य्य हृदये, पूर्वं गता एव ते ये तिष्ठन्ति
भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः।
एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मागान्मम्॥1/26।

अर्थात्–जिन्होंने पूर्व भागने का विचार हृदय में कर लिया था, वे लोग तो चले ही गए। अब जो रह गए हैं, यदि वे भी भागने के इच्छुक हो तो इच्छानुसार चले जाएं, किन्तु कार्य पूर्ण करने में सैकड़ों सेनाओं से भी बढ़कर नन्दवंश का विनाश करने में लगी शक्तिमहिमा वाली मेरी बुद्धि मुझसे अलग न होवे।

- **चन्द्रगुप्त**—मौर्य साम्राज्य का संस्थापक एवं चाणक्य का परमभक्त।
- **राक्षस**—नन्द का माहात्म्य, खलनायक।
- **चन्दनदास**—पाटलिपुत्र का मणिकार, श्रेष्ठी, राक्षस का अनन्य मित्र।

50. समीचीनां तालिकां चिनुत्

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् — **(i) उत्तररामचरितम्**
(b) तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः — **(ii) श्रीहर्षो निपुणः कविः**
(c) रत्नावली — **(iii) हर्षचरितम्**
(d) परिवर्तमानः एकः कालः शैलानिवानन्तः — **(iv) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्।**

	(A)	**(B)**	**(C)**	**(D)**
(a)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

उत्तर–(a)

A **अभिज्ञानशाकुन्तल**—
दिष्ट्या शकुन्तला साध्वी सदपत्यमिदं भवान्।
श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्॥ (अभि. 7/29)

B **उत्तररामचरित**—
उत्पत्तिपरिपूरितायाः किमस्याः पावनान्तरैः।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः॥ (उत्तरराम. 1/13)

C **रत्नावली**— श्री हर्षो निपुणः कविः। रत्नावली के लेखक श्रीहर्ष को 'श्रीहर्षो निपुणः कविः' कहा गया है।

D **हर्षचरितम्**—
पातयति महापुरुषान्सममेव बहूननादरेणैव।
परिवर्तमानः एकः कालः शैलानिवानन्तः॥ पञ्चम उच्छ्वास/2

51. अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति?

(a) प्रवेशकस्य (b) विष्कम्भकस्य
(c) अङ्कावतारस्य (d) प्रस्तावनायाः

उत्तर–(a)

महाकवि कालिदास प्रणीत **'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'** के षष्ठ अङ्क में श्याल के कथन की समाप्ति तक प्रवेशक का प्रयोग होता है–
श्यालः- धीवर महत्तरस्त्वं प्रियवयस्यक इदानीं मे संवृत्तः । कादम्बरीसाक्षिकमस्माकं प्रथमसौहृदमिष्यते तच्छौण्डिकापणमेव गच्छामः। इति प्रवेशकः।
कोतवाल—धीवर तुम अब हमारे बहुत बड़े प्रिय मित्र हो गए हो। हमारी-तुम्हारी पहली मित्रता शराब को साक्षी मान कर होनी चाहिए। अतः हम शराब बेचने वाले की दुकान पर चलते हैं। इस प्रकार के कथन के उपरान्त यहां प्रवेशक का अन्त होता है।

- विष्कम्भक का प्रयोग अङ्क के प्रारम्भ में होता है।
- अङ्कावतार का प्रयोग अङ्क के अन्त में होता है।
- प्रस्तावना का प्रयोग अङ्क के प्रारम्भ में होता है।

52. ''तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः''- केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः?

(a) हरिणी (b) शिखरिणी
(c) मन्दाक्रान्ता (d) मालिनी

उत्तर–(c)

'तीव्राघातप्रतिहततरूस्कन्धलग्नैकदन्तः इस पंक्ति में मन्दाक्रान्ता छन्द है जिसका लक्षण है–**''मन्दाक्रान्ता जलधिषड्गैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्''** अर्थात् इस छन्द में प्रत्येक पाद में 17 अक्षर होते हैं। वे मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु इस क्रम में होते हैं तथा चौथे, छठवें, सातवें अक्षर के बाद यति होती हैं।

- नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणीमता। यह हरिणी छन्द का लक्षण है।
- शिखरिणी छन्द का लक्षण–''रसैः रुद्रैः छिन्नः यमनसभलाग; शिखरिणी।
- मालिनी छन्द का लक्षण–ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।।

53. ''शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्''- शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम्?

(a) नारदस्य (b) श्रीकृष्णस्य
(c) वसुदेवस्य (d) बलरामस्य

उत्तर–(a)

प्रस्तुत पंक्ति शिशुपालवधम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के 26वें श्लोक से सम्बद्ध है। इस पंक्ति में भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से नारदजी के दर्शन का महत्व बतलाया गया है–

''हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः
शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं
व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्। शिशु. 1/26

अर्थात् हे महर्षि नारद! आपका दर्शन शरीर धारण करने वाले मनुष्यों के तीनों कालों की योग्यता को प्रकट करता है। क्योंकि वर्तमानकाल में पापों को नष्ट करता है तथा आने वाले शुभ का कारण है एवं पूर्व समय में किए गये सुकृतों का फल है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य–

- श्रीकृष्ण, शिशुपालवधम् के नायक हैं।
- वसुदेव, कृष्ण के पिता थे।
- बलराम, कृष्ण के अग्रज थे।

**54. ''ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।''
कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?**

(a) रघोः (b) रामस्य
(c) अजस्य (d) दिलीपस्य

उत्तर–(d)

प्रस्तुत श्लोक महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग के 22वें श्लोक से सम्बद्ध है जिसका शाब्दिक अर्थ निम्न रूप से द्रष्टव्य है–

''ज्ञान में मौन, सामर्थ्य में क्षमा, दान में प्रशंसाराहित्य, ये गुण उस दिलीप में अनुरक्त होने के कारण सहोदर जैसे थे।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रघु, राम के पूर्वज थे।
- राम, राजा दशरथ के पुत्र थे।
- अज, दशरथ के पिता थे।

55. ''पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः''-उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति

(a) सीतायाः (b) मुरलायाः
(c) तमसायाः (d) वासन्त्याः

उत्तर–(b)

प्रस्तुत पंक्ति उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में मुरला के कथन से सम्बद्ध है–

**''अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।** (उ. 3/1)

अर्थात् गम्भीरता के कारण अप्रकट एवं अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है।

उत्तररामचरितम् की अन्य महत्वपूर्ण उक्तियां -

- **राम-** लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते ।
- **वासन्ती-** वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
- **तमसा-** करूणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी ।
- **तमसा-** एको रसः करूण एवं निमित्तभेदाद्।

56. रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते?

(a) विष्णोः (b) ब्रह्मणः
(c) शिवस्य (d) गणेशस्य

उत्तर–(c)

महाकवि श्रीहर्ष प्रणीत् 'रत्नावली' के मङ्गलाचरण में शिव की स्तुति की गई है–

**पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां
शम्भोः सस्पृहलोचनत्रयपथं यान्त्या तदाराधने।**

अर्थात् शंकर की आराधना में पैरों के अगले भाग पर खड़ी हुई स्तनों के भार से बार-बार झुकती हुई शंकर के द्वारा अनुरक्त पुष्पांजलि आप लोगों की रक्षा करे।

प्रस्तुत श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- शिशुपालवधम् में विष्णु की आराधना की गई है।
- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये 4 वर्ण हैं।

- गणेश कार्तिकेय के भाई हैं तथा शंकर जी के पुत्र हैं।
- कौशाम्बी नरेश राजा उदयन से सम्बद्ध चार अङ्कों की रत्नावली नाटिका है।
- राजा उदयन धीरललित नायक हैं।

57. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य राजा आसीत् दशकुमारचरिते?

(a) विदर्भस्य (b) वाराणस्याः
(c) गौडस्य (d) मगधस्य

उत्तर–(a)

आचार्य दण्डीकृत दशकुमारचरितम् एक उत्कृष्ट कथाग्रन्थ है। दशकुमारचरितम् का वर्तमान उपलब्ध स्वरूप तीन भागों में विभाजित है–(1) पूर्वपीठिका (2) दशकुमारचरितम् (3) उत्तरपीठिका। **दशकुमारचरितम् में 10 राजकुमारों का वर्णन हैं। इसमें राजहंस नामक एवं मालवा का राजा मानसार प्रतिनायक है।**

- पुण्यवर्मा, विदर्भ देश के राजा थे।
- वाराणसी, उत्तर प्रदेश का एक जिला है।
- गौड़ देश का नाम प्राचीनकाल में लिया जाता था।
- मगध देश, बिहार प्रान्त में है।

58. मम्मटमते कति काव्यगुणाः?

(a) दश (b) पञ्च
(c) त्रयः (d) अष्टौ

उत्तर–(c)

आचार्य मम्मट कृत 'काव्यप्रकाश' में त्रिविध काव्यगुणों की चर्चा की गई है–(1) माधुर्य (2) ओज (3) प्रसाद।

माधुर्य– माधुर्य गुण सामान्यतः सम्भोगशृङ्गार में रहता है। परन्तु करुण, विप्रलम्भ शृङ्गार तथा शान्त रस में वह उत्तरोत्तर अधिक चमत्कारजनक अतिशयान्वित होता है।

ओज– ओज गुण सामान्यतः वीर रस में रहता है। परन्तु वीभत्स और रौद्र रसों में क्रमशः इसका आधिक्य रहता है।

प्रसाद– यह सभी रसों में रहता है।

59. ध्वन्यालोकतः रिक्तं स्थानं पूरयत-''यत्नतः .... तौ शब्दार्थौ महाकवेः।''

(a) अवगन्तव्यौ (b) प्रत्यभिज्ञेयौ
(c) परिहर्त्तव्यौ (d) संस्मरणीयौ

उत्तर–(b)

आचार्य आनन्दवर्द्धनकृत 'ध्वन्यालोक' के प्रथम उद्योत से प्रस्तुत पंक्ति उद्धृत है–

सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन्।
यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः।।

अर्थात्–वह प्रतीयमान अर्थ और उसकी अभिव्यक्ति में समर्थ विशेष शब्द इन दोनों को भली प्रकार पहचानने का प्रयत्न महाकवि को करना चाहिए।

60. दशरूपकानुसारंफलस्याप्राप्तावुपाययोजनादिरूप चेष्टाविशेषः भवति-

(a) आरम्भः (b) प्रयत्नः
(c) प्राप्त्याशा (d) नियताप्तिः

उत्तर–(b)

आचार्यधनञ्जय कृत 'दशरूपक' में कार्यावस्था के पांच प्रकार बताए गए हैं–(1) आरम्भ (2) यत्न/प्रयत्न (3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति (5) फलागम।

(1) **आरम्भ**–औत्सुक्यमात्रारम्भः फललाभाय भूयसे।
फलप्राप्ति के लिए उत्सुकतामात्र होना आरम्भ कहलाता है।

(2) **प्रयत्न–**प्रयत्नस्तु तद् प्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः।
फल के प्राप्त न होने पर उसके लिए उद्योग करना प्रयत्न कहलाता है।

(3) **प्राप्त्याशा–**उपायापायशङ्काभ्या प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः उपाय अथवा विघ्न की आशंका के कारण फलप्राप्ति के विषय में कोई ऐकान्तिक निश्चय नहीं हो पाता।

(4) **नियताप्ति–**उपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता।
विघ्नों के अभाव से फल की निश्चित रूप से प्राप्ति नियताप्ति कहलाती है।

(5) **फलागम–**समग्र फलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः।
पूर्ण रूप से फल की प्राप्ति फलागम है।

61. शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्
.... इति हेतुस्तदुद्भवे।।
काव्यप्रकाशतः रिक्तस्थानं पूरयत।

(a) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः (b) लोकतत्त्वानुशीलनम्
(c) रसभावयोश्चिन्तनम् (d) भावाभासस्य चिन्तनम्

उत्तर–(a)

आचार्य मम्मट कृत काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में काव्य के हेतु की चर्चा की गई है। जिसका विवरण निम्न है–

''शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः इति हेतुस्तदुद्भवे।।''

अर्थात्–काव्य की रचना में तीन कारण होते हैं। वे इस प्रकार हैं–शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास।

शक्तिः– निपुणता लोकव्यवहारशास्त्र तथा काव्यादि के ज्ञान द्वारा उत्पन्न निपुणता, काव्य को जानने वाले गुरु की शिक्षा के अनुसार काव्य के निर्माण का अभ्यास, ये तीनों मिलकर समुचित रूप से काव्य के हेतु कहलाते हैं।

62. **काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः विपर्यासे कोऽलङ्कारः?**

(a) अनन्वयः (b) विभावना

(c) विशेषोक्तिः (d) उपमेयोपमा

उत्तर–(d)

काव्यप्रकाश के दशम् उल्लास में उपमेयोपमा अलङ्कार का लक्षण निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

''उपमानोपमेययोः विपर्यासे उपमेयोपमा अलङ्कारः''

उपमेय एवं उपमान का परिवृत्ति अर्थात् दो वाक्यों में बदलकर रखना ही उपमेयोपमा अलङ्कार कहलाता है। यथा–कमलेव मतिर्मतिरिव कमला तनुरिव विभा विभेव तनुः।

- **अनन्वय अलङ्कार-** उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे अनन्वयः।
- **विभावना अलङ्कार–** क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।
- **विशेषोक्ति अलङ्कार–**विशेषोक्तिरखण्डेषुकारणेषु फलावचः।

63. **कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत**

(a) अप्पयदीक्षितः **(b) भरतः**

(c) आनन्दवर्धनः **(d) दण्डी**

(a) (a), (b), (c), (d) (b) (b), (c), (a), (d)

(c) (c), (a), (b), (d) (d) (b), (d), (c), (a)

उत्तर–(d)

- **अप्पयदीक्षित**–अप्पयदीक्षित का समय 17वीं शताब्दी ई.पू.के लगभग ज्ञात होता है।
- **भरत**–कालिदास से प्राचीनतर होने के कारण भरतमुनि का समय द्वितीय शताब्दी ई.पू. माना गया है।
- **आनन्दवर्द्धन**–आनन्दवर्द्धन का ग्रन्थ ध्वन्यालोक है। आनन्दवर्द्धन का समय नवम् शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना गया है।
- **दण्डी**–दण्डी ने गद्य काव्यों के अतिरिक्त काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ काव्यादर्श भी लिखा है। इनका समय छठवीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है।

64. **''दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्''-दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः?**

(a) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे (b) नृत्यलक्षणप्रसङ्गे

(c) सन्धिभेदप्रसङ्गे (d) प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

उत्तर–(a)

प्रथम प्रकाश	-	वस्तु वर्णन
द्वितीय प्रकाश	-	नायक वर्णन
तृतीय प्रकाश	-	रूपक वर्णन
चतुर्थ प्रकाश	-	रस वर्णन

श्रीधनञ्जय विरचित 'दशरूपक' नाट्शास्त्रीय ग्रन्थ है, यह चार प्रकाश में विभाजित है।

वीथ्यङ्ग/ मृदव का लक्षण- दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्।

सन्धि भेद का लक्षण- मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।

नृत्य का लक्षण- अन्यद्भावाश्रयं नृत्यम् ।

65. **''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।''-इत्यादि-श्लोकः भवति-**

(a) काव्यप्रशंसा (b) गुणप्रशंसा

(c) नाट्यप्रशंसा (d) अलङ्कारप्रशंसा

उत्तर–(c)

आचार्य भरतमुनि प्रणीत 'नाट्यशास्त्र' के प्रथम अध्याय में नाट्य के स्वरूप की चर्चा की गई है–

''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।।''

अर्थात् विश्व में ऐसा कोई भी ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग एवं कर्म नहीं है, जिसका उपयोग नाट्य में न होता हो। यह समस्त ललित एवं उपयोगी कलाओं का आकर ग्रन्थ है।

- माधुर्य, ओज, प्रसाद नामक तीन गुण होता है।
- नाट्यशास्त्र के प्रमुख टीकाकार - उद्भट्, भट्टलोल्लट, श्रीशङ्कुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त ।

66. **''तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।**
अन्तः संज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः।।''
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्?

(a) अण्डजेन प्राणिना (b) उद्भिदा

(c) स्वेदजेन प्राणिना (d) जरायुजेन प्राणिना

उत्तर–(b)

मनु प्रणीत मनुस्मृति के प्रथम अध्याय से प्रस्तुत पंक्ति सम्बद्ध है। जो उद्भिज्जप्राणी का लक्षण है–

तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना–(मनु.)

अर्थात् ये पूर्वजन्म के कर्म के कारण बहुत से तमोगुण से घिरे हुए हैं, सुख-दुःख से युक्त हैं और इनके भीतर चेतना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- **अण्डज–अण्डजाः पक्षिणः सर्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः।**
  यानिचैवं प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च।।
- मनुस्मृति में चार प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति बतायी गयी है– 1- जरायुज, 2- अण्डज, 3- स्वदेज, 4- उद्भिज्वत्

जरायुज- ''पशवश्च मृगाश्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्याश्च जरायजाः ।।

स्वदेज- ''स्वेदजं दंशमशकं यूकामक्षिकमत्कुणम् ।
ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चाऽन्यात्किंचिदीदृशम् ।।

67. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत-

''नृपतौ कोशराष्ट्रे च .... सन्धिविपर्ययौ।''

(a) अमात्ये (b) दूते

(c) सेनापतौ (d) मन्त्रिणि

उत्तर–(b)

प्रस्तुत पंक्ति मनुस्मृतिकृत सप्तम् अध्याय के 65वें श्लोक से सम्बद्ध है

''अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया।

नृपतौ कोशराष्ट्रे च दूते संधिविपर्ययौ।।'8

अर्थात्–दण्ड सेनापति के अधीन, विनय दण्ड के अधीन, कोश और देश–राजा के अधीन और सन्धिविग्रह दूत के अधीन होते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- मनु के राज्य में 7 अङ्ग हैं–(1) राजा (2) अमात्य (3) पुर (4) कोष (5) दण्ड (6) मित्र (7) बल।
- मनुस्मृति के अनुसार दूत के आठ गुण होते हैं।
- सेनापति, राजा का अङ्गरक्षक होता है।

68. कस्मिन् पुराणे 'काशी-खण्डः' समुपलभ्यते?

(a) लिङ्ग पुराणे (b) शिवपुराणे

(c) ब्रह्माण्डपुराणे (d) स्कन्दपुराणे

उत्तर–(d)

प्रमुख पुराणों की संख्या 18 है, जिनमें से स्कन्दपुराण 13वें नम्बर का पुराण है। यह पुराण शिव के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय) के नाम पर है। यह सभी पुराणों में सबसे बड़ा पुराण है। इसमें कुल 81,000 श्लोक हैं। इसमें दो खण्ड तथा पांच संहिताएं हैं। इस पुराण में सात खण्ड हैं–(1) माहेश्वर खण्ड (2) वैष्णव खण्ड (3) ब्रह्मखण्ड (4) काशी खण्ड (5) अवन्ती खण्ड (6) नागर खण्ड (7) प्रभास खण्ड।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- लिङ्गपुराण में शिव की उपासना का वर्णन किया गया है।
- शिवपुराण की चर्चा उपपुराणों में होती है। इसे वायुपुराण भी कहा जाता है।
- ब्रह्मपुराण में 4 पाद हैं–(1) प्रक्रिया (2) अनुषङ्ग (3) उपोद्घात् (4) उपसंहार

69. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्तस्थानं पूरयत

''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।

अर्थशास्त्रात्तु बलवद् .... इति स्थितिः।।

(a) धर्मशास्त्रम् (b) राजादेशः

(c) नृपस्येच्छा (d) नीतिशास्त्रम्

उत्तर–(a)

आचार्य याज्ञवल्क्य कृत याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहार अध्याय से प्रस्तुत श्लोक सम्बद्ध है–

''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।

अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।।2।

दो स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार से किया गया निर्णय बलवान् होता है। किन्तु अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान होता है।

याज्ञवल्क्यस्मृति तीन भागों में विभाजित है-

1- आचाराध्याय, 2. व्यवहाराध्याय , 3. प्रायश्चित्ताध्याय

- याज्ञवल्क्य ने 20 व्यवहार पदों की गणना की है।

70. याज्ञवल्क्यानुसारेण सबन्धके ऋणे मासि-मासि वृद्धिः भवति-

(a) पञ्चाशद्भागः (b) अशीतिभागः

(c) त्रिंशद्भागः (d) विंशोभागः

उत्तर–(b)

याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार ऋणदानप्रकरण में–बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवां भाग ब्याज होता है। अन्य स्थिति में बन्धक न होने पर वर्ण-क्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) दो, तीन, चार और पांच प्रतिशत वृद्धि होती है–

''अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सम्बन्धके।

वर्णक्रमाच्छत द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा। 37

- ''कान्तारगास्तु दशकं सामुद्रा विंशकं शतम् ।

अर्थात् जो सूद पर धन लेकर अधिक प्राप्त करने के लिए जंगल में चले जाएं उनसे दश प्रतिशत तथा जो समुद्र में चले जायें उनसे बीस प्रतिशत ब्याज ले।

71. श्रीमद्भगवद्गीतायाः विश्वरूपदर्शनयोगः अस्ति-

(a) दशमेऽध्याये (b) एकादशेऽध्याये

(c) प्रथमाध्याये (d) त्रयोदशाध्याये

उत्तर–(b)

श्रीमद्भगवद्गीता में कुल 18 अध्याय हैं–

प्रथम अध्याय	–	अर्जुन विषाद योग,
द्वितीय अध्याय	–	साङ्ख्ययोग,
तृतीय अध्याय	–	कर्मयोग,
चतुर्थ अध्याय	–	ज्ञानकर्मयोग,
पञ्चम अध्याय	–	कर्मसंन्यासयोग,

षष्ठ अध्याय	–	आत्मसंयमयोग,
सप्तम अध्याय	–	ज्ञानविज्ञानयोग,
अष्टम् अध्याय	–	अक्षरब्रह्मयोग,
नवम् अध्याय	–	राजविद्याराजगुह्ययोग,
दशम् अध्याय	–	विभूतियोग,
एकादश अध्याय	–	विश्वरूपदर्शनयोग,
द्वादश अध्याय	–	भक्तियोग,
त्रयोदश अध्याय	–	क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग,
चतुर्दश अध्याय	–	गुणत्रयविभागयोग,
पञ्चदश अध्याय	–	पुरुषोत्तमयोग,
षोडश अध्याय	–	दैवासुरसंग्रामयोग,
सप्तदश अध्याय	–	श्रद्धात्रयविभागयोग,
अष्टादश अध्याय	–	मोक्षसंन्यासयोग।

72. 'शतसाहस्रीसंहिता' इति कस्य अपरं नाम?

(a) रामायणस्य (b) भविष्यपुराणस्य
(c) स्कन्दपुराणस्य (d) महाभारतस्य

उत्तर–(d)

महाभारत में एक लाख श्लोक होने के कारण इसको **शतसाहस्रीसंहिता** भी कहा जाता है।

- महाभारत में चतुर्वर्ग के समस्त विषय प्रतिपादित हैं- ''धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ। यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।
- महाभारत के विकास के तीन चरण है- जय, भारत, महाभारत
- महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रामायण को **चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता** के नाम से जाना जाता है।
- भविष्यपुराण में कुल पांच पर्व हैं–ब्रह्मपर्व, विष्णुपर्व, शिवपर्व, सूर्यपर्व, प्रतिसर्गपर्व।
- शिव के पुत्र स्कन्द के नाम पर स्कन्दपुराण नाम रखा गया है।

73. रामायणस्य श्लोकसंख्या भवति

(a) 31000-40000 (b) 22000-25000
(c) 11000-15000 (d) 5000-10000

उत्तर–(b)

संस्कृत साहित्य में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण आदिकाव्य तथा वाल्मीकि आदिकवि माने जाते हैं। इस आदिकाव्य को **'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता'** कहते हैं। इसमें 24,000 श्लोक हैं। प्रत्येक हज़ार श्लोक का पहला अक्षर गायत्री मन्त्र के ही अक्षर से क्रमशः आरम्भ होता है।

रामायण 7 काण्डों में विभक्त है–(1) बालकाण्ड (2) अयोध्या काण्ड (3) अरण्यकाण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) युद्धकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड।

74. हरिषेणविरचिते इलाहाबादशिलालेखे 'कविराज' इत्युपाधिः भवति-

(a) चन्द्रगुप्तसय (b) अशोकस्य
(c) समुद्रगुप्तस्य (d) स्कन्दगुप्तस्य

उत्तर–(c)

गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तर कालीन अभिलेख समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख है। इसके रचनाकार हरिषेण हैं। यह अभिलेख इलाहाबाद (प्रयागराज) उ.प्र. में सुरक्षित है। इसकी भाषा संस्कृत है। इसकी लिपि ब्राह्मी है।

विषय–समुद्रगुप्त का जीवनचरित–यः कुल्यैः स्वैः तसः।

समुद्रगुप्त पर प्रकाश डालने वाली प्रमाणित सामग्री 'प्रयागप्रशस्ति' है। प्रयाग स्तम्भलेख 'रानी का लेख' कहलाता है।

- अशोक का रुम्मिनदेई स्तम्भलेख है।
- स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख है।

75. अर्थशास्त्रे आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति

(a) साम (b) दानम्
(c) भेदः (d) दण्डः

उत्तर–(d)

कौटिल्य के अनुसार आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति, इन सभी विद्याओं की सुख-समृद्धि दण्ड पर निर्भर है। दण्ड शासन को प्रतिपादित करने वाली ही दण्डनीति है। वही अप्राप्त वस्तुओं को प्राप्त कराती है, रक्षित वस्तुओं की वृद्धि करती है और सम्बन्धित वस्तुओं को समुचित कार्यों में लगने का निर्देश देती है। इसी पर इस संसार की लोकयात्रा निर्भर है–अलब्धलाभार्थाः लब्धपरिरक्षणीः रक्षितविवर्धिनी वृद्धेषु, तीर्थेषु प्रतिपादिनी च तस्यामायतां लोकयात्रा।

अन्य–साम, दाम और भेद ये उपाय हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 विषय तथा 6000 श्लोक है।
- कौटिल्य ने चार प्रकार के दुर्गों को बतलाया- (1) औदक दुर्ग, (2) पार्वत दुर्ग, (3) धान्वक दुर्ग, (4) वन दुर्ग।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2014
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. का अन्तरिक्षस्थानीया देवता?

(a) सूर्यः (b) अग्निः (c) समुद्रः (d) इन्द्रः

उत्तर (d)

इन्द्रः अन्तरिक्षस्थानीया देवता

आचार्य यास्क प्रणीत् निरुक्त के तृतीय काण्ड को ''दैवतकाण्ड'' कहते हैं। दैवतकाण्ड में देवताओं की प्रधानतया स्तुति की गयी है। देवता की स्तुति चार प्रकार से होती है–(1) नाम (2) रूप (3) कर्म (4) बन्धु

स्तुति के मन्त्र तीन प्रकार के हैं–

(1) परोक्षकृत (2) प्रत्यक्षकृत (3) आध्यात्मिक

यास्क ने निरुक्त में तीन प्रकार के देवता बताये हैं–

1. पृथ्वी स्थानीय–अग्नि एवं समुद्र देवता

2. अन्तरिक्ष स्थानीय–इन्द्र एवं वायु देवता

3. द्युस्थानीय–सूर्य देवता

2. कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते?

(a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर (d)

आरण्यक ब्राह्मण के ही भाग हैं। एकान्त जनशून्य अरण्य में ऋषियों एवं मुनियों ने ब्रह्म में रत होकर जिस विद्या का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया है वे आरण्यक कहे जाते हैं। आरण्यक निम्न हैं–

1. ऋग्वेद–(1) ऐतरेयारण्यक (2) शांखायन आरण्यक

2. शुक्ल यजुर्वेद–बृहदारण्यक

3. कृष्ण यजुर्वेद–तैत्तिरीयारण्यक

4. सामवेद–(1) छान्दोग्य आरण्यक (2) जैमिनीय आरण्यक

5. अथर्ववेद–कोई भी आरण्यक उपलब्ध नहीं है।

3. काण्वसंहितासम्बद्धब्राह्मणम्-

(a) कठब्राह्मणम् (b) कपिष्ठलब्राह्मणम्
(c) शतपथब्राह्मणम् (d) तांड्यब्राह्मणम्

उत्तर (c)

ब्रह्म का अर्थ है 'यज्ञ'। यज्ञ के विविध विधानों का प्रतिपादन करने के कारण इसे ब्राह्मण कहा जाता है। प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं–

1. ऋग्वेद के ब्राह्मण–(1) ऐतरेय ब्राह्मण (2) कौषीतकि ब्राह्मण

2. शुक्ल यजुर्वेद शाखा के ब्राह्मण–शतपथ ब्राह्मण

3. कृष्ण यजुर्वेद शाखा के ब्राह्मण –(1) तैत्तिरीय ब्राह्मण

4. सामवेद के ब्राह्मण–

(1) ताण्ड्य ब्राह्मण (5) मंत्र या उपनिषद् ब्राह्मण
(2) षड्विंश ब्राह्मण (6) देवताध्याय
(3) सामविधान ब्राह्मण (7) वंश ब्राह्मण
(4) आर्षेय ब्राह्मण (8) संहितोपनिषद् ब्राह्मण

5. अथर्ववेद के ब्राह्मण–गोपथ ब्राह्मण

4. तैत्तिरीयशाखा केन वेदेन सम्बद्धा?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (b)

यजुर्वेद संहिता में याग-विधान से सम्बन्धित कर्मकाण्ड विषयक विविध यजुषों का संग्रह है। इस वेद के दो रूप उपलब्ध हैं–शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद

इनमें शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं–माध्यन्दिन और काण्व

कृष्ण यजुर्वेद की सम्प्रति चार शाखाएँ हैं–

(1) तैत्तिरीय (2) मैत्रायणी (3) कठ (4) कपिष्ठल

- ऋग्वेद की शाखाएं–शौनक के चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ उपलब्ध हैं। (1) शाकल (2) बाष्कल (3) आश्वलायन (4) शांखायन (5) माण्डूकायन
- सामवेद की सम्प्रति तीन शाखाएँ उपलब्ध हैं–
  (1) कौथुम (2) राणायनीय (3) जैमिनीय
- अथर्ववेद की दो शाखाएँ उपलब्ध हैं–
  (1) शौनक (2) पैप्पलाद

5. जगतीछन्दसि कत्यक्षराणि भवन्ति?

(a) दश (b) द्वादश
(c) षोडश (d) अष्ट

उत्तर (b)

छन्दः शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य पिङ्गल हैं।

षड्गुरुशिष्य ने वेदार्थ दीपिका में छन्द:शास्त्र के रचयिता पिङ्गल को पाणिनि का अनुज बताया है।

छन्द मुख्यतः दो प्रकार का होता है।

(1) केवल अक्षरगणनानुसारी तथा (2) पादाक्षरगणनानुसारी प्रथम प्रकार के छन्दों में केवल अक्षरों की गणना की जाती है और द्वितीय प्रकार के छन्दों में पाद में स्थित अक्षरों की गणना की जाती है। वैदिक छन्दों की कुल संख्या छब्बीस है। इनमें प्रारम्भ के पांच छन्द वेद में प्रयुक्त नहीं हैं। शेष इक्कीस छन्दों को तीन सप्तकों में विभाजित करते हैं। प्रथम सप्तक में गायत्री से लेकर जगती तक 7 छन्द हैं–

क्र.	छन्द	अक्षर	पाद1	पाद2	पाद3	पाद4	पाद5
1	गायत्री	24	8	8	8		
2	उष्णिक्	28	8	8	12		
3	अनुष्टुप्	32	8	8	8	8	
4	बृहती	36	8	8	12	8	
5	पंक्ति	40	8	8	8	8	8
6	त्रिष्टुप्	44	11	11	11	11	
7	जगती	48	12	12	12	12	

6. भावप्रधानम् भवति-

(a) व्याख्यानम् (b) आख्यातम्
(c) कारकम् (d) क्रियापदम्

उत्तर (b)

आचार्य यास्क प्रणीत् निरुक्त के प्रथम अध्याय में 4 प्रकार के पद बताये गये हैं।
(1) नाम (2) आख्यात (3) उपसर्ग (4) निपात
- सत्त्व प्रधानानि नामानि–जिसमें सत्त्व की प्रधानता होती है उसे नाम कहते हैं।
- भावप्रधानम् आख्यातम्–जिसमें क्रिया की प्रधानता होती है उसे आख्यात कहते हैं।
- निपात 3 प्रकार का होता है।
(1) उपमार्थक निपात–इव, न, चित्, नु।
(2) कर्मोपसंग्रहार्थक निपात–आ, वा, ह, अह्, च, किल, हि, ननु, खलु, नूनम्।
(3) पादपूरणार्थक निपात–कम, इम, इत, उ, इव, त्व, त्वत।

- कारक–जिसका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं।
- क्रिया–जिसमें भाव की प्रधानता होती है उसे क्रिया कहते हैं।

7. निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते?

(a) नैघण्टुकम् (b) दैवतम्
(c) नैगमम् (d) उत्तरषट्कम्

उत्तर (c)

यास्क कृत निरुक्त तीन काण्डों में विभक्त हैं। इसमें बारह अध्याय हैं और अन्त में दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में जोड़े गये हैं। इस प्रकार निरुक्त में कुल चौदह अध्याय हैं।

- निरुक्त में प्रथम काण्ड को नैघण्टुक काण्ड कहते हैं।
- द्वितीय काण्ड को नैगम काण्ड कहते हैं। इसे एकपदिक भी कहते हैं। नैगम काण्ड में एकपदादि और अनवगत संस्कार पदों का वर्णन किया गया है।
  जैसे–पिता शब्द अनवगत संस्कार है। इसका अर्थ है पाता, पालयिता। इस प्रकार इस काण्ड में एकार्थ में अनेक शब्द और अनेकार्थ में एक शब्द तथा अनवगत शब्दों का संस्कार किया गया है।
- तृतीय काण्ड को दैवत काण्ड कहते हैं। दैवत काण्ड में देवताओं की स्तुति की गयी है।

8. हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यते-

(a) पैप्पलादसंहितायाम् (b) अथर्ववेदे
(c) कृष्णयजुर्वेदे (d) माध्यन्दिनसंहितायाम्

उत्तर–(d)

शुक्लयजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं–
(1) माध्यन्दिन
(2) काण्व
माध्यन्दिन संहिता में 40 अध्याय है तथा 1975 मंत्र हैं।
कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण तो संहिताओं में सम्मिलित हैं। मैत्रायणी संहिता का कोई ब्राह्मण ग्रन्थ नहीं है।

- पैप्पलाद संहिता अथर्ववेद से सम्बद्ध है।
- अथर्ववेद की दो संहिताएँ हैं–
  (1) शौनक संहिता
  (2) पैप्पलाद संहिता
- कृष्णयजुर्वेद की 4 शाखाएँ हैं–
  (1) तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक (या कठ) और कपिष्ठल-कठ

9. ''किं भ्रातासद्यनाथमिति'' कस्मिन् सूक्ते पठ्यते?

(a) नासदीयसूक्ते (b) विश्वामित्रनदीसम्वादसूक्ते
(c) यम-यमीसम्वादसूक्ते (d) पृथिवीसूक्ते

उत्तर–(c)

प्रस्तुत सूक्त यम-यमी संवाद से उद्धृत है–
''कि भ्रातासद्यनाथं भवाति किमु स्वसायन्निऋतिर्निगच्छत्। कामभूता वह्वेतद्रपामि तन्वा में तन्वं सं पिपृग्धि।।
अर्थ–यमी ने कहा–वह कैसा भ्राता है, जिसके रहते भगिनी अनाथ हो जाए और भगिनी ही क्या है, जिसके रहते भ्राता का दु:ख दूर न हो? मैं काममूर्च्छिता होकर नाना प्रकार से बोल रही हूँ। यह विचार करके भली भाँति मेरा सम्भोग करो।

- विश्वामित्र-नदी संवाद ऋग्वेद के तृतीयमण्डल का 33वाँ सूक्त है। इसके ऋषि –विश्वामित्र हैं तथा देवता नदी है।
- पृथ्वी सूक्त अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है।

10. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत-

a. नचिकेतोपाख्यानम्	**1. पुत्रोऽहं पृथिव्याः**
b. सत्यं वद् धर्मं चर	**2. कठोपनिषत्**
c. माता भूमिः	**3. तैत्तिरीयोपनिषत्**
d. शुल्बसूत्रम्	**4. कल्पान्तर्गतम्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	3	4	2
(b)	4	2	3	1
(c)	3	1	4	2
(d)	2	3	1	4

उत्तर–(d)

नचिकेतोपाख्यान कृष्ण यजुर्वेद के कठ शाखा (कठोपनिषद्) से उद्‌धृत है। इसमें यम-नचिकेता के संवाद का वर्णन किया गया है।

- 'सत्यं वद् धर्मं चर्' यह वाक्य तैत्तिरीयोपनिषद् के प्रथम वल्ली के एकादश अनुवाक् से उद्‌धृत है। इसका अर्थ है–तुम सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो।
- माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः
  अर्थात् पृथ्वी ही सम्पूर्ण जगत् के पुत्रों की मां है। उसी धरा पर सब का जन्म होता है।
- कल्प के अन्तर्गत 4 सूत्र आते हैं–
  (1) श्रौत सूत्र (2) गृह्य सूत्र (3) धर्म सूत्र (4) शुल्ब सूत्र

11. निघण्टुशब्देनोच्यते -

(a) वैदिकशब्दकोशः (b) निरुक्तम्
(c) निधानम् (d) कारकम्

उत्तर–(a)

निघण्टु वैदिक शब्दकोश है। इसमें कुल मिलाकर 1883 शब्दों का संग्रह किया गया है। ये शब्द तीन काण्डों तथा पाँच अध्यायों में विभक्त किये गये हैं। पहले तीन अध्याय 'नैघण्टुक-काण्ड' के नाम से जाने जाते हैं। चतुर्थ अध्याय को 'नैगम-काण्ड' तथा पञ्चम् अध्याय को 'दैवतकाण्ड' कहा जाता है।
– नैघण्टुक काण्ड में एक अर्थ के वाचक जितने शब्द वेद में प्रयुक्त हुए हैं, उनका संग्रह किया गया है।
– निरुक्त, आचार्य यास्क की रचना है।
– निधानम्-नि + धा + क्त
– क्रियतेऽनेनेति कारकम्-क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं।

12. आपस्तम्बश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धम्?

(a) शुक्लयजुर्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर–(b)

कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध श्रौत सूत्रों की संख्या आठ हैं। इनके नाम निम्न प्रकार से द्रष्टव्य हैं–
(1) बौधायन श्रौतसूत्र (2) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र (3) सत्यासाढ़ श्रौतसूत्र (4) वैखानस श्रौतसूत्र (5) भारद्वाज श्रौतसूत्र (6) वाधूल श्रौतसूत्र (7) वाराह श्रौतसूत्र (8) मानव श्रौत सूत्र

आपस्तम्ब श्रौतसूत्रः– इस श्रौतसूत्र की कात्यायन श्रौतसूत्र और भारद्वाज कल्प से बहुत समानता है। आपस्तम्ब को बौधायन का शिष्य कहा जाता है। इनका समय 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व माना गया है।

- शुक्ल यजुर्वेद का एकमात्र–कात्यायन श्रौत सूत्र उपलब्ध है।
- सामवेद के श्रौत सूत्रों की संख्या 7 है–
  (1) आर्षेय कल्पसूत्र या मशक कल्पसूत्र
  (2) लाट्यायन श्रौतसूत्र
  (5) क्षुद्र कल्पसूत्र
  (6) निदान श्रौतसूत्र
  (3) द्राह्यायण श्रौतसूत्र
  (7) उपनिदान श्रौतसूत्र
  (4) जैमिनीय श्रौतसूत्र
- अथर्ववेद का एकमात्र–वैतान श्रौतसूत्र ही उपलब्ध है।

13. ''निषसाद् धृतव्रत'' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते?

(a) वाक्सूक्ते (b) वरुणसूक्ते
(c) सूर्यसूक्ते (d) नदीसूक्ते

उत्तर–(b)

वरुण सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 25वां सूक्त है। इसके ऋषि-शुनःशेप हैं। देवता वरुण हैं। इसमें मंत्रों की संख्या-21 है।
निषसाद् धृतव्रतो वरुणः पस्त्या३स्वा।
साम्राज्याय सुक्रतुः।। 10वां मन्त्र।।
अर्थ–अपने स्वीकृत नियमों का पालन करने वाले और श्रेष्ठ कर्मों को करने वाले वरुण देवता प्रजा के साम्राज्य की सिद्धि के लिए दिव्य प्रजाओं में आकर अधिष्ठित हुये हैं।

- वाक्सूक्त, ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 125वां सूक्त है।
- सूर्य सूक्त, ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 115 वाँ सूक्त है।
- नदी सूक्त, ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 33वाँ सूक्त है।

14. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पदार्थाः–

(a) षोडश (b) सप्त (c) षट् (d) दश

उत्तर–(b)

आचार्य अन्नमभट्ट प्रणीत तर्कसंग्रह में 7 पदार्थ हैं-
(1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य
(5) विशेष (6) समवाय (7) अभाव

- तर्कभाषा के अनुसार पदार्थों की संख्या 16 है–(1) प्रमाण, (2) प्रमेय, (3) संशय, (4) प्रयोजन, (5) दृष्टान्त, (6) सिद्धान्त, (7) अवयव, (8) तर्क, (9) निर्णय, (10) वाद, (11) जल्प, (12) वितन्डा, (13) हेत्वाभास, (14) छल, (15) जाति, (16) निग्रहस्थान

- षड्विध सन्निकर्ष-
  (1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्त समवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव
- इन्द्रियां दश प्रकार की होती हैं– पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय

15. तर्कसङ्ग्रहानुसारं विशेषा:-

(a) नित्यद्रव्यवृत्तयः (b) अनित्यद्रव्यवृत्तयः
(c) द्रव्यवृत्तयः (d) गुणवृत्तयः

उत्तर–(a)

तर्कसंग्रह के अनुसार नित्य द्रव्यों में रहने वाले विशेष असंख्य होते हैं।

'नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।

विशेष- पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु इन चार स्थूलभूतों के परमाणु और आकाश, काल, दिक्, आत्मा तथा मन-न्याय वैशेषिक के मत से नित्य द्रव्य हैं। इन्हीं नित्य द्रव्यों के परस्पर भेदक तत्त्वों के रूप में 'विशेष' की कल्पना सर्वप्रथम वैशेषिक सूत्रकार महर्षि कणाद ने की थी जिसके कारण उनके दर्शन का नाम वैशेषिक दर्शन पड़ा।

16. तर्कसङ्ग्रहानुसारं गुणाः–

(a) सप्तदश (b) अष्टचत्वारिंशत्
(c) चतुर्विंशतिः (d) दश

उत्तर–(c)

तर्कसंग्रह के अनुसार गुणों की संख्या- 24 है।
24 गुण– (1) रूप (2) रस (3) गन्ध (4) स्पर्श (5) संख्या (7) परिमाण (8) पृथकत्व (9) संयोग (10) विभाग (11) परत्व (12) अपरत्व (13) गुरुत्व (14) द्रव्यत्व (15) स्नेह (16) शब्द (17) बुद्धि (18) सुख (19) दु:खेच्छा (20) द्वेष (21) प्रयत्न (22) धर्म (23) अधर्म (24) संस्कार

- वेदान्त दर्शन के अनुसार अवयव अर्थात् सूक्ष्म शरीर के 17 भेद हैं।
- इन्द्रियां दश प्रकार की होती हैं।

17. उत्क्षेपणं .... प्रकारः–

(a) गमनस्य (b) भ्रमणस्य (c) कर्मणः (d) करणस्य

उत्तर–(c)

उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।
अर्थात्–उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण तथा गमन के भेद से कर्म पाँच प्रकार के होते हैं।

- भ्रमण, रेचन, स्यन्दन,ऊर्ध्वज्वलन्, तिर्यग्गमन् आदि भी कर्म ही हैं परन्तु ये गमन के भिन्न प्रकार होने के कारण उसी में अन्तर्भूत हो जाते हैं।
- सांख्य दर्शन के अनुसार करण के तेरह भेद हैं।

18. गन्धत्त्वं लक्षणम्–

(a) पृथिव्याः (b) दिशः (c) जलस्य (d) वायोः

उत्तर–(a)

तर्कसङ्ग्रह के अनुसार नौ द्रव्यों में जो द्रव्य गन्ध गुण वाला है, वह पृथ्वी है। पृथिवी नित्य और अनित्य रूप से दो प्रकार की है। परमाणु रूपा पृथिवी नित्य और कार्य रूपा पृथिवी अनित्य है। शरीर, इन्द्रिय और विषय के भेद से अनित्य पृथिवी फिर तीन प्रकार की होती है। हम लोगों के शरीर पृथिवी के हैं। पृथिवी से बनी इन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय है जो पृथिवी से बने विशेष गुण गन्ध को ग्रहण करती है।

- प्राची, प्रतीची, अवाची, उदीची आदि व्यवहार के असाधारण कारण को दिक् कहते हैं।
- शीत स्पर्शवत्यः आपः–जिसमें शीतस्पर्श रहता है उसे जल कहते हैं।
- रूपरहित स्पर्शवान् वायुः–जिसमें रूप का अत्यन्ताभाव तथा समवाय सम्बन्ध में स्पर्श रहता है वह वायु है।

19. उपमितिकरणं किम्?

(a) इन्द्रियम् (b) पदज्ञानम्
(c) व्याप्तिज्ञानम् (d) सादृश्यज्ञानम्

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रह के तृतीय प्रमाण–उपमान का लक्षण देते हुए अन्नम्भट्ट कहते हैं–''उपमितिकरणमुपमानम्'' संज्ञासंज्ञि सम्बन्धज्ञानमुपमितिः''। तत्करणं सादृश्यज्ञानम्।
अर्थात्–उपमिति के करण असाधारण कारण को उपमान प्रमाण कहते हैं। संज्ञा और संज्ञि के सम्बन्ध का ज्ञान उपमिति कहलाता है। इस **उपमिति का** करण है **सादृश्य** ज्ञान, अतः सादृश्य ज्ञान ही उपमान है।

- शक्तं पदम् अर्थात् शक्ति का आश्रय और शक्ति पद है।
- ''व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानंपरामर्शः''।

20. सांख्यमते मूलप्रकृतिर्वर्तते–

(a) विकृतिः (b) अविकृतिः
(c) प्रकृतिविकृतिः (d) नप्रकृतिर्नविकृतिः

उत्तर–(b)

आचार्य ईश्वरकृष्णप्रणीत् सांख्यकारिका में 4 प्रकार के पदार्थ बताए गए हैं–
(1) कोई पदार्थ केवल प्रकृति (अविकृतिः) है।
(2) कोई केवल विकृति है।
(3) कोई प्रकृति-विकृति दोनों है
(4) कोई न प्रकृति न ही विकृति है।
मूल प्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्नविकृतिः पुरुषः।। सां. का. 3
अर्थात्–कारणरूपा प्रकृति किसी की विकृति नहीं है। महत् इत्यादि सात तत्त्व प्रकृति भी है और विकृति भी है। सोलह तत्त्वों का समुदाय केवल विकार है। पुरुष न प्रकृति है और न ही विकृति है।

21. सांख्यमते प्रमाणमिष्टम्–

(a) चतुर्विधम् (b) पञ्चविधम्
(c) त्रिविधम् (d) षड्विधम्

उत्तर–(c)

सांख्य के अनुसार प्रमाण तीन प्रकार का होता है–
(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) शब्द
''दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि''।। सां.का. 4।।
अर्थात्–प्रत्यक्ष, अनुमान, और आप्तवचन ये तीन प्रमाण ही सांख्य को अभीष्ट हैं, क्योंकि सभी प्रमाण इन्हीं तीन प्रमाणों में सिद्ध हो जाते हैं।

- न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण 4 प्रकार का होता है–
(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द

22. सांख्यकारिकायाः कर्त्ता वर्तते–

(a) सदानन्दः (b) ईश्वरकृष्णः
(c) कपिलमुनिः (d) गौतमः

उत्तर–(b)

आचार्य ईश्वरकृष्ण की सर्वप्रमुख रचना सांख्यकारिका है–
''कपिलायमहामुनये मुनयेशिष्याय तस्य चासुरये।
पञ्चशिखाय तथेश्वकृष्णायैते नमस्यामः।।
भारतीय मनीषियों की यह विशेषता है कि वे अपनी आत्मश्लाघा स्वयं नहीं करते थे। आचार्य ईश्वरकृष्ण भी इसी भारतीय मनोवृत्ति के अपवाद नहीं है। उनकी एकमात्र कृति साङ्ख्यकारिका है। इसके अतिरिक्त इनके किसी और ग्रन्थ का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

- सदानन्द की कृति – वेदान्तसार है।
- कपिलमुनि ईश्वरकृष्ण के गुरु थे।
- न्याय दर्शन के कर्त्ता गौतम थे।

23. वेदान्तसारग्रन्थस्य कर्त्ता वर्तते–

(a) ईश्वरकृष्णः (b) सदानन्दः
(c) सुरेश्वरः (d) शङ्कराचार्यः

उत्तर–(b)

सदानन्दयोगीन्द्र का वेदान्तसार अद्वैतवेदान्त का एक संक्षिप्त प्रकरण ग्रन्थ है। ऐसा ग्रन्थकार ने स्वयं कहा है–अस्य वेदान्तप्रकरणत्वात्तदीयैरेवानुबन्धैस्तद्वत्तसिद्धेर्नते पृथगालोचनीयाः।''

- सदानन्दयोगीन्द्र का समय–15वीं शताब्दी ई.पू. माना गया है।
- वेदान्तसार पर नृसिंहसरस्वती ने सुबोधिनी नामक टीका लिखी है।
- ईश्वरकृष्ण के गुरु का नाम सुरेश्वर था।
- वेदान्त उपनिषद् पर शङ्कराचार्य ने ब्रह्मसूत्र एवं शाङ्करभाष्य की रचना की है।

24. अनुबन्धाः सन्ति

(a) द्वौ (b) चत्वारः
(c) त्रयः (d) पञ्च

उत्तर–(b)

वेदान्तसार में चार अनुबन्ध हैं–
(1) अधिकारी (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन
''तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।''
(1) अधिकारी–जिसने इस जन्म में अथवा इससे पूर्व के किसी जन्म में वेद और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन करने के द्वारा समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्य रूप से समझ लिया है तथा काम्य और निषिद्ध कर्मो का परित्याग करके नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासना कर्मो के अनुष्ठान करने से समस्त पापों के दूर हो जाने के कारण, जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया है और जो साधनचतुष्टय से सम्पन्न है, ऐसा प्रमाता इस वेदान्त का अधिकारी होता है।
(2) विषय–जीव और ब्रह्म की एकता ही विषय है।
(३) सम्बन्ध–जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय का और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्य बोधक भाव ही शास्त्र का सम्बन्ध है।
(4) प्रयोजन–जीव और ब्रह्म की एकता रूप प्रमेय के सम्बन्ध में जो अज्ञान है उसकी निवृत्ति होना ही प्रयोजन है।

25. जीवन्मुक्तिः कस्मिन् दर्शने स्वीक्रियते?

(a) जैनदर्शने (b) बौद्धदर्शने
(c) चार्वाकदर्शने (d) वेदान्तदर्शने

उत्तर–(d)

जीवन्मुक्तो नाम स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मज्ञानेन तदज्ञानवाधन द्वारा अर्थात् अपने स्वरूप का भूत अखण्ड ब्रह्म के ज्ञान से ब्रह्मविषयक अज्ञान का बाध होने के द्वारा स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर अज्ञान उसके कार्य, सञ्चित कर्म, संशय और विपर्यय आदि का विनाश हो जाने से समस्त बन्धनों से रहित हुआ ब्रह्मनिष्ठ पुरुष जीवन्मुक्त होता है।

यथा–भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिनदृष्टे परावरे।।65।।

- जैन दर्शन को ही अर्हत् दर्शन कहते हैं।
- बौद्ध दर्शन के प्रणेता महात्मा बुद्ध हैं।

26. व्याकरणशास्त्रानुसारं पद-संज्ञकं भवति-

(a) योग्यताकांक्षासत्तियुक्तम् (b) सुप्तिङन्तम्
(c) तुल्यास्यप्रयत्नम् (d) सर्वनामस्थानम्

उत्तर–(b)

सुबन्त (21 सुप् प्रत्यय), तिङन्त (18 तिङ् प्रत्यय) की पद संज्ञा होती है।
सुप् जिसके अन्त में हो उसे सुबन्त और तिङ् जिसके अन्त में हो उसे तिङन्त कहा जाता है।
सुप् और तिङ् प्रत्यय भी हैं।
उदा.—रामः, भवति इत्यादि का उदाहरण रामः सुबन्त और भवति तिङन्त का उदाहरण है।

- योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति से युक्त पदों का समूह वाक्य कहलाता है।
- तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न ये दोनों जिस जिस वर्ण के समान हों वे वर्ण परस्पर सवर्ण संज्ञक वाले होते हैं।
- सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान परे रहते जाता है।

27. 'अधिहरि' इत्यस्य अलौकिक-विग्रहः भवति

(a) अधि + हरि + सुँ (b) हरि + अधि + ङि
(c) हरि + ङि + अधि (d) हरौ + इति + ङि

उत्तर–(c)

अधिहरि का लैकिक एवं अलौकिक विग्रह इस प्रकार है-
अधिहरि–लौ. विग्रह – हरौ
अलौ. विग्रह – हरि + ङि + अधि
'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ अधिकरण का वर्तमान वाचक है। हरि ङि यह सुबन्त है। इसके साथ अधि अव्यय का अव्ययंविभक्तिसमीप-समृद्धिव्यृद्ध्यर्थाऽभावाऽत्यया संप्रति शब्दप्रादुर्भाव पश्चाद् यथाऽऽनुपूर्व्यायौगपद्य सादृश्य सम्पत्ति साकल्यर्व्यन्त वचनेषु सूत्र से अव्ययीभाव हुआ है।

28. 'विष्णू इमौ' अत्र का संज्ञा प्रवर्त्तते?

(a) घि (b) संयोगः
(c) नदी (d) प्रगृह्यम्

उत्तर–(d)

'विष्णू इमौ' शब्द में अदशो मात् (1/1/12) सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हुई है।

- 'शेषोघ्यसखि' सूत्र से घि संज्ञक हरि शब्द की घि संज्ञा होती है।
- 'हलोऽनन्तराः संयोगः'—हल् के अनन्तर व्यञ्जन की संयोग संज्ञा होती है।
- 'यू स्त्राख्यौ नदी' दीर्घ ईकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की घि संज्ञा होती है।

29. 'वषड्' योगे का विभक्तिर्भवति?

(a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पञ्चमी

उत्तर–(c)

नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च (2/3/6)
नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् इन अव्यय पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
यथा—वषड् इन्द्राय (इन्द्र के लिए हवि त्याग) यहाँ वषड् के योग में नमः.........सूत्र से इन्द्र में चतुर्थी विभक्ति हुई है।

- कर्मणि द्वितीया सूत्र से अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
- कर्तृकरणयोस्तृतीया - अनुक्त कर्त्ता तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।
- ध्रुवमपायेऽपादानम् - अलग होने की क्रिया में जो पदार्थ ध्रुव होता हैं अर्थात् जिससे अलगाव होता है उसकी अपादान कारक संज्ञा होती है।

30. 'कृत्तद्धितसमासाश्च'-इत्यनेन का संज्ञा विधीयते?

(a) नदी-संज्ञा (b) प्रातिपदिक-संज्ञा
(c) गति-संज्ञा (d) सर्वनाम-संज्ञा

उत्तर–(b)

कृत्प्रत्ययान्त, तद्धितयुक्त और समास की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।
उदा.—कृदन्त- कर्ता, हर्ता, कारकः, पाचकः
तद्धित - औपगवः
समास -राजपुरुषः, चित्रगुः

- नित्य स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त और उकारान्त की नदी संज्ञा होती है।
- गतिश्च-प्रादियों की क्रिया के योग में गति संज्ञा होती है।
- सर्वादीनि सर्वनामानि-सर्व, विश्व, उभ उभयादि सर्वादिगण पठित शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है।

31. 'नदीमन्ववसिता सेना' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे कर्म-प्रवचनीयसंज्ञा भवति?

(a) प्रथमार्थे (b) पञ्चम्यर्थे
(c) तृतीयार्थे (d) सप्तम्यर्थे

उत्तर–(c)

'अनु' शब्द से तृतीया का अर्थ द्योतित होने पर अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। (यद्यपि तृतीया विभक्ति के अनेक अर्थ होते हैं किन्तु यहाँ केवल सह अर्थ ही ग्रहण किया जाता है)।
उदा.—नदीम् अनु अवसिता सेना
यहाँ अनु का अर्थ सहित भाव होने के कारण प्रकृत सूत्र में नदी की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।

- प्रातिपदिकार्थ मात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र तथा वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

32. 'हरिहरौ' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम्?

(a) द्वन्द्वे घि (b) अजाद्यन्तम्
(c) अल्पाच्तरम् (d) निष्ठा

उत्तर–(a)

द्वन्द्वे-घि-द्वन्द्व में घि संज्ञक पद पहले प्रयुक्त होता है।
जैसे–हरिहरौ = (हरिश्च हरश्च - विष्णु और शिव)
घि संज्ञक का प्रयोग होने से हरि शब्द का प्रयोग पहले हुआ है।

- **अजाऽऽद्यन्तम्**- अजादि और अदन्त पद का द्वन्द्व में पहले प्रयोग होता है।
  जैसे–ईश-कृष्णौ
- **अल्पाच्तरम्**- जिस पद में अन्य पदों की अपेक्षा थोड़े अच् हों द्वन्द्व समास में उनका पहले प्रयोग होता है।
  जैसे–शिव-केशवौ
- **क्तक्तवतू**- सूत्र से निष्ठा संज्ञा होती है।

33. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासस्य उदाहरणं किम्?

(a) प्राप्तोदको ग्रामः (b) पीताम्बरो हरिः
(c) कण्ठेकालः (d) वीरपुरुषको ग्रामः

उत्तर–(c)

हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम्- सप्तम्यन्त का पूर्व प्रयोग करने से ही सिद्ध होता है कि व्यधिकरण पदों का अर्थात् भिन्न विभक्तिक पदों का भी बहुव्रीहि समास होता है।

जैसे–कण्ठेकालः - कण्ठे कालो यस्य सः
पद्मनाभः - पद्मं नाभौ यस्य सः
शरजन्मा - शरेभ्यो जन्मः यस्य सः

- प्राप्तोदको ग्रामः - (प्राप्तम् उदकं यम्) समानाधिकरण बहुव्रीहि समास।
- पीताम्बरो हरिः (पीतानि अम्बराणि यस्य) षष्ठी बहुव्रीहि समास
- वीरपुरुषको ग्रामः – 'वीराः पुरुषाः यस्मिन्' सप्तमी बहुव्रीहि समास।

34. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' .... अत्र चर्मशब्दे आदौ कतमा विभक्तिः प्राप्ता भवति?

(a) हेतौ तृतीया (b) अपादाने पञ्चमी
(c) कर्मणि द्वितीया (d) सम्प्रदाने चतुर्थी

उत्तर–(a)

'हेतौ तृतीया' सूत्र से चर्म शब्द में तृतीया विभक्ति हुई है।
निमित्तात्कर्मयोगे (वा.) निमित्त शब्दों से सप्तमी विभक्ति होती है, यदि वह निमित्त (फल) कर्म से युक्त हो।
वार्तिक में प्रयुक्त 'निमित्त' शब्द का अर्थ है क्रिया का 'फल'। योग का अर्थ है 'संयोग' तथा समवाय सम्बन्ध। इस प्रकार वार्तिक का अर्थ हुआ–जिस निमित्त (फल की प्राप्ति) के लिये कोई क्रिया की जाती है, उस निमित्त का यदि क्रिया के कर्म के साथ योग हो तो निमित्त में सप्तमी विभक्ति होती है।
उदा.–चर्मणि द्वीपिनं हन्ति–यहां चर्म की प्राप्ति के लिए हनन क्रिया हो रही है अतः हनन क्रिया का निमित्त अथवा फल है-चर्म तथा कर्म है द्वीपी। फलभूत चर्म का द्वीपी के साथ योग (समवाय) सम्बन्ध भी है अतः निमित्त चर्मन् में प्रकृत् वार्तिक से सप्तमी विभक्ति हुई।

- 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।
- 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से कर्म में द्वितीया विभक्ति का विधान होता है।
- 'सम्प्रदाने चतुर्थी' सूत्र से सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति का विधान होता है।

35. अव्ययीभावसमासे सहस्य स केन सूत्रेण विधीयते?

(a) अव्ययीभावश्च (b) अनश्च
(c) अव्ययीभावे चाकाले (d) नस्तद्धिते

उत्तर–(c)

अव्ययीभाव समास में सह को स आदेश होता है। परन्तु काल अर्थ में नहीं।
जैसे–सादृश्यः- लैकिक विग्रह - हरेः सादृश्यम् = सहरि
यहां यथा के अर्थ सादृश्य में वर्तमान सह अव्यय का सुबन्त हरेः के साथ समास हुआ। तब सह को 'अव्ययी भावे चाऽकाले' सूत्र से आदेश होकर सहरि रूप बना।

- अव्ययीभावश्च– अव्ययीभाव समास नपुंसकलिङ्ग में होता है।
- अनश्च–अन्नन्त अव्ययीभाव समास में समासान्त टच् (तद्धित) प्रत्यय का लगता है।
  जैसे–उपराजम्, अध्यात्मम्
- नस्तद्धिते–न से अन्त होने वाले भ संज्ञक टि का तद्धित प्रत्यय परे रहते लोप हो जाता है।

36. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत्-

a. अलोऽन्त्यात्पूर्वः	**1. अध्ययनात् पराजयते**
b. माणवकं पन्थानं पृच्छति	**2. नीलोत्पलम्**
c. पराजेरसोढः	**3. अकथितञ्च**
d. विशेषणं विशेष्येण बहुलम्	**4. उपधा**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	3	2	4	1
(b)	2	1	3	4
(c)	4	3	1	2
(d)	1	4	2	3

उत्तर–(c)

अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा– अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण उपधा संज्ञक होता है।
जैसे–गम्. ग् अ म् यहां अन्त्य अल् मकार है, उससे पूर्व वर्ण अकार है, उसकी उपधा संज्ञा हुई है।

- **अकथितं च** सूत्र से दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, प्रच्छ, रूध्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, हृ, कृष् और वह् धातुओं के गौण कर्म की कर्म संज्ञा होती है।
जैसे–माणवकं पन्थानं पृच्छति
- **पराजेरसोढः-** परा उपसर्ग पूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य पदार्थ की अपादान संज्ञा होती है।
जैसे–अध्ययनात् पराजयते
- **विशेषणं विशेष्येण बहुलम्–** भेदक विशेषण का भेद्य विशेष्य के साथ बहुलता से समानाधिकरण तत्पुरुष समास होता है।
जैसे–नीलोत्पलम्।

37. ध्वनिनियमेषु द्वितीयःको गण्यते?
(a) ग्रासमाननियमः (b) वर्नरनियमः
(c) ग्रिमनियमः (d) कालित्ज़्नियमः

उत्तर–(a)

विशिष्ट ध्वनि नियम– (1) ग्रिम (2) ग्रासमान (3) वर्नर (4) तालव्य (5) मूर्धन्य
1. ग्रिमनियम–इस नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की ये ध्वनियाँ (प्रथम को द्वितीय) क्रमशः क्, त्, प्, को ख्, थ्, फ् (चतुर्थ को तृतीय) क्रमशः घ्, ध्, भ्, को ग्, द् ,ब् (तृतीय को प्रथम) क्रमशः ग् द् ब् को क्, त्, प् हो जाती है।
2. ग्रासमान नियम–दो महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग एक साथ नहीं होता है।
3. वर्नर नियम–यह ग्रिम नियम का संशोधन है।

38. 'ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि'-इत्युक्तिः कुत्रास्ति?
(a) नैषधीयचरिते (b) रघुवंशे
(c) माघकाव्ये (d) भट्टिकाव्ये

उत्तर–(c)

उपर्युक्त सूक्ति माघ काव्य में वर्णित है।
महाकवि माघ का एकमात्र महाकाव्य शिशुपालवधम् है। यह 20 सर्गों में विभक्त है।

- नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष की रचना है। इसमें कुल 22 सर्ग हैं। इस महाकाव्य के नायक नल तथा नायिका दमयन्ती है।
- रघुवंश महाकाव्य महाकवि कालिदास की रचना है। यह 19 सर्गों में विभक्त है।
- भट्टिकाव्य, भट्टि की रचना है।

39. वैशम्पायन-वृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः?
(a) दशकुमारचरिते (b) मृच्छकटिके
(c) कादम्बर्याम् (d) हर्षचरिते

उत्तर–(c)

बाणभट्टप्रणीत् कादम्बरी कथामुखम् में वैशम्पायन के पूर्व जन्म की कथा मिलती है–
वैशम्पायन पूर्व जन्म का पुण्डरीक है। इस जन्म में वह राजा तारापीड के मंत्री शुकनास का पुत्र और राजकुमार चन्द्रापीड का अभिन्न मित्र है। यहां उसके चरित्र की रेखाएँ अत्यन्त धुंधली हैं। केवल उसकी मानसिक दुर्बलता और चञ्चलता का पता हमें तब लगता है जब वह अच्छोद सरोवर से वापस नहीं होता। वहां महाश्वेता के प्रति आसक्त होकर, अधीर एवं कामातुर होकर महाश्वेता से प्रणय का प्रस्ताव रखता है और शापग्रस्त होकर पुनः वैशम्पायन नामक शुक के रूप में प्रकट होता है और राजा शूद्रक के सभाभवन में चाण्डालकन्या के साथ जाकर राजा को अपना दाहिना पैर उठाकर अभिवादन करता है–

''स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरित विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।

- दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है।
- मृच्छकटिकम्-शूद्रक की रचना है।
- हर्षचरित-बाणभट्ट की आख्यायिका नामक द्वितीय रचना है।

40. 'एको रसः करुण एव निमित्त भेदाद् भिन्नः'-इयमुक्तिः कुत्रोपलभ्यते?
(a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) वेणीसंहारे
(c) मुद्राराक्षसे (d) उत्तररामचरिते

उत्तर–(d)

प्रस्तुत सूक्ति महाकवि भवभूति प्रणीत् उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क से सम्बद्ध है–

''एकोरसः करुण एव निमित्त भेदाद्
भिन्नः पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारानम्भो यथा
सलिलमेव हि तत्समस्तम्।। 3/47

अर्थ–एक करूण रस ही कारण भेद से भिन्न होकर पृथक्- पृथक् परिणामों को प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है; जैसे जल ही 'भँवर, बुलबुला, तरंग आदि विकारों को प्राप्त होता है। वस्तुतः वह सब जल ही है।

- अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की रचना है।
- वेणीसंहार, भट्टनारायण की रचना है।
- मुद्राराक्षस, विशाखदत्त की रचना है।

41. मेघदूते यक्षः कुत्र वसतिं चक्रे?
(a) रामगिरौ (b) हिमालये
(c) अलकायाम् (d) मानसरोवरे

उत्तर–(a)

महाकवि कालिदासप्रणीत् मेघदूतम् के मङ्गलाचरण में यक्ष के निवास की चर्चा की गयी है–

''कश्चित्कान्ता विरह गुरुणा, स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा, वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।1।।

अनुवाद–अपने कार्य से असावधान, प्रिया के विरह से दुःसह एक वर्ष तक भोगने वाले, स्वामी के शाप से नष्ट महिमा वाला, कोई यक्ष जनक की पुत्री के स्नान से पवित्र जल वाले एवं घने छाया वाले वृक्षों से युक्त रामगिरि पर्वत के आश्रमों में निवास करता था।

- हिमालय, भगवान् शङ्कर जी का निवास स्थान था।
- अलकापुरी में यक्ष की पत्नी यक्षिणी निवास करती थी।
- मानसरोवर, हंसों का निवास स्थान था।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत

a. मुद्राराक्षसम्	**1. भासः**
b. वेणीसंहारः	**2. विशाखदत्तः**
c. रत्नावली	**3. श्रीहर्षः**
d. स्वप्नवासवदत्तम्	**4. भट्टनारायणः**

	A	B	C	D
(a)	4	2	1	3
(b)	2	4	3	1
(c)	1	2	3	4
(d)	3	1	2	4

उत्तर–(b)

मुद्राराक्षस विशाखदत्त की एक अप्रतिम् रचना है। यह 7 अंकों में विभक्त राजनीति विषयक नाटक है। इसमें मुद्रा के द्वारा राक्षस को वश में करने का वर्णन किया गया है।

वेणीसंहार, भट्टनारायण की रचना है। इस नाटक में 6 अंक हैं। इसमें भीम के द्वारा द्रौपदी के वेणीसंहार (वेणी को सँवारने या बांधने) का वर्णन है।

- रत्नावली हर्ष की रचना है। यह 4 अंकों की नाटिका है। इसमें राजा उदयन और सिंहल देश की राजकुमारी के प्रणय और परिणय का वर्णन है। इसके अतिरिक्त हर्ष की दो रचनाएँ प्रियदर्शिका एवं नागानन्द भी है।
- स्वप्नवासवदत्तम् भास प्रणीत् छः अङ्कों का नाटक है। मन्त्री यौगन्धरायण द्वारा वासवदत्ता अग्नि में जलकर मर गई इस प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

43. किरातार्जुनीये किरातः कः?

(a) युधिष्ठिरः (b) वनेचरः (c) अर्जुनः (d) शिवः

उत्तर–(d)

महाकवि भारवि प्रणीत् किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के मङ्गलाचरण से पता चलता है कि किरात (शिव) का वेश धारण कर वनेचर दुर्योधन का समाचार लेकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आया–

''श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरः द्वैतवने वनेचरः (कि. 1/1)

अनुवाद–कुरुदेश की राजलक्ष्मी को संरक्षित करने वाले राजा दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसको नियुक्त किया था, वह ब्रह्मचारी के वेश को धारण करने वाला किरात, द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आया।

- युधिष्ठिर किरातार्जुनीयम् के नायक अर्जुन के अग्रज हैं।
- वनेचर, दुर्योधन के समस्त वृत्तान्तों को युधिष्ठिर के पास बतलाने वाला पाण्डवों का दूत है।
- अर्जुन किरातार्जुनीयम् का नायक है।

44. 'गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः'-कस्य उक्तिरियम्?

(a) कण्वस्य (b) गौतम्यः
(c) दुष्यन्तस्य (d) शार्ङ्गरवस्य

उत्तर–(c)

प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास प्रणीत् अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त के द्वारा कथित है–

''गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य।।

अर्थ–शकुन्तला का सखियों के साथ जाने पर राजा दुष्यन्त कहते हैं कि- मेरा शरीर आगे की ओर जा रहा है और मेरा मन हवा के विरुद्ध ले जाए जाते हुए ध्वजा के चीनी वस्त्र के तुल्य अपरिचित सा होकर पीछे की ओर दौड़ रहा है।

- कण्व, शकुन्तला के पालक और धर्मपिता हैं।
- गौतमी, कण्व के आश्रम की अध्यक्षा है।
- शार्ङ्गरव, कण्व के शिष्य हैं।

45. त्रयमेतत् बृहत्त्रय्यां गण्यते-

(a) किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्
(b) किरातार्जुनीयम्, रघुवंशः, नैषधीयचरितम्
(c) नैषधीयचरितम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्
(d) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्, रघुवंशः

उत्तर–(a)

महाकवि भारवि का किरातार्जुनीयम् नामक महाकाव्य ही प्राप्त होता है। उदात्त गुणों के कारण ही इसकी गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है।

बृहत्त्रयी में अन्य दो महाकाव्य हैं–माघ रचित–
शिशुपालवधम्, और श्रीहर्षकृत नैषधीयचरित।

लघुत्रयी– रघुवंश महाकाव्यम्, कुमारसम्भव महाकाव्यम्, मेघदूतम्।

46. **'मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय' इति कस्य वर्णनम्?**

(a) पाटलिपुत्रस्य (b) शुद्धोदनपुत्रस्य
(c) उद्यानस्य (d) देवदत्तस्य

उत्तर–(b)

प्रस्तुत सूक्ति महाकवि अश्वघोष प्रणीत् बुद्धचरितम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में उदधृत् है–

'तथागतोत्पादगुणेन तुष्टाः शुद्धाधिवासाश्च विशुद्धसत्वा। देवाः ननन्दुर्विगतेऽपि रागे मग्नस्य दुःखे जगतोहिताय।।

अनुवाद–तथागत के जन्म से प्रसन्न होकर पवित्र अन्तःकरण वाले शुद्धाधिवास देवगण उदासीन होने पर आनन्दित हुए क्योंकि दुःख से पीड़ित विश्व के हित के लिये उनका जन्म हुआ।

47. **'बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती' इत्युक्तम्–**

(a)कालिदासेन (b) माघेन
(c) सोड्ढलेन (d) श्रीहर्षेण

उत्तर–(c)

महाकवि बाण को सोड्ढल ने कवियों में चक्रवर्ती बतलाया है और इसके अतिरिक्त 'बाणं तु सर्वेश्वरमानतोऽस्मि' शब्दसिद्धि, अर्थसिद्धि एवं रससिद्धि के क्षेत्र में भी सर्वोपरि महाकवि बाण को प्रणाम किया है।

महाकवि बाण की अन्य प्रशस्तियाँ–

(1) वाणी बाणो बभूवेति (गोवर्धन)
(2) नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य - (धर्मदास)
(3) बाणस्तु पञ्चाननः (चन्द्रदेव)
(4) हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः (त्रिलोचन)

48. **किरातार्जुनीये प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदमस्ति–**

(a) श्रीः (b) लक्ष्मीः
(c) शिवः (d) कश्चित्

उत्तर–(b)

महाकवि भारवि ने सर्ग के प्रारम्भ में श्री तथा सर्गान्त में लक्ष्मी की स्तुति की है।

विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं
शिथिलवानुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ
दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः।। (किरा. 1/46)

अर्थ–विधाता के द्वारा कालनियोजन के कारण प्रकाश सिमट जाने पर कान्तिहीन, क्षीण किरणों वाले विपत्तिसदृश अथाह समुद्र में डूबे हुए प्रभात काल में शत्रुसदृश अन्धकार का भेदन करके उगते हुए सूर्य के समान अन्धकार सदृश शत्रु को विनष्ट करके ऊपर उठते हुए आपको लक्ष्मी पुनः प्राप्त हों।

- प्रारम्भ में श्री की वन्दना की गयी है।
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शिव की स्तुति की गई है।
- मेघदूतम् का प्रारम्भ कश्चित् से होता है। जो वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

49. **रिक्तस्थानं पूरयत-अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः। आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः .... इति सम्मतः।।**

(a) सात्त्विकः (b) सञ्चारी
(c) स्थायी (d) अनुभावः

उत्तर–(c)

प्रस्तुत सूक्ति वाक्य आचार्य विश्वनाथ प्रणीत् साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद से उदधृत है–

''अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमा।
आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः स्थायीति सम्मतः।।सा. 3/174

अर्थ–स्थायीभाव उस भाव को कहते हैं जो न तो किसी अनुकूल भाव से तिरोहित हुआ करता है और न किसी प्रतिकूल भाव से ही दबा करता है। यह भाव तो अन्त तक अवस्थित रहने वाला भाव है। इसी में रस के अङ्कुर की मूलशक्ति निहित रहा करती है।

- स्थायीभाव (1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) उत्साह (6) भय (7) जुगुप्सा (8) विस्मय (9) शम
- जिसमें सत्त्व गुण की प्रधानता रहती है उसे सात्विक गुण कहते हैं।
- सञ्चारीभाव का ही दूसरा नाम व्यभिचारीभाव है इसकी संख्या 33 है।
- अनुभाव भी भाव का ही भेद है।

50. **'स्वीया' नायिकायाः कति भेदाः?**

(a) एकादश (b) त्रयोदश
(c) चतुर्दश (d) अष्टादश

उत्तर–(b)

आचार्य विश्वनाथ प्रणीत् साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद में वर्णित 16 प्रकार की नायिकाओं में स्वीया नयिका के '13' प्रकार, 'परकीया नायिका के '2' तथा सामान्या नायिका के '9' भेद बताये गये हैं।

13 प्रकार की स्वीया नायिकाओं के अवस्था भेद में आठ-आठ भेद हैं। जैसे–(1) स्वाधीनभर्तृका (2) खण्डिता (3) अभिसारिका (4) कलहान्तरिता (5) विप्रलब्ध (6) प्रोषितभर्तृका (7) वासकसज्जा (8) विरहोत्कण्ठिता

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June -2014
संस्कृत
पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(a) सप्तदश (b) षोडश (c) द्वाविंशतिः (d) अष्टादश

उत्तर-(b)

ऋग्वेद के दशम् मण्डल के 90वें सूक्त में पुरुष सूक्त की चर्चा की गयी है। पुरुष सूक्त के ऋषि नारायण, देवता पुरुष, छन्द-त्रिष्टुप्, अनुष्टुप्।
ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते षोडश मन्त्राः सन्ति।
अर्थात् पुरुष सूक्त में मन्त्रों की संख्या कुल 16 बतायी गयी है।
''सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्
स भूमिम् विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

2. सामवेदस्यारण्यकमस्ति

(a) तलवकार (b) जैमिनीयम् (c) नारदीयम् (d) प्रौष्ठपदीयम्

उत्तर-(a)

आरण्यक ब्राह्मण के ही भाग हैं एकान्त जनशून्य अरण्य में ऋषियों एवं मुनियों ने ब्रह्मचर्य में रत होकर जिस विद्या का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया है उसे आरण्यक कहते हैं। आरण्यक निम्न हैं–

1. ऋग्वेद के आरण्यक — 1. ऐतरेयारण्यक 2. शांखायन
2. शुक्ल यजुर्वेद के आरण्यक — 1. वृहदारण्यक
3. कृष्ण यजुर्वेद के आरण्यक — 1. तैत्तिरीय आरण्यक
4. सामवेद के आरण्यक — 1. तलवकार आरण्यक (जैमिनीयशाखा) 2. छांदोग्य उपनिषद् का कुछ अंश आरण्यक कहा जा सकता है।
5. अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक नहीं उपलब्ध है।

3. कत्यङ्गुलखातावेदिर्भवति?

(a) षडङ्गुला (b) सप्ताङ्गुला
(c) द्वादशाङ्गुला (d) त्र्यङ्गुला

उत्तर-(d)

अग्नि का धर्म है प्रकाशित होना। वह अङ्गारमय है, प्रकाशमय है ऋग्वेद में अग्नि को घृतपृष्ठ, घृत-प्रतीक जाता है।
ऋक्संहिता के प्रथम मन्त्र में अग्नि देवता को सम्बोधित किया गया है। प्रथम पद भी अग्निम् ही है।
याज्ञिय अग्नियाँ तीन प्रकार की होती है–
(1) गार्हपत्य अग्नि (2) अग्नि आहवनीय अग्नि (3) दक्षिण अग्नि

4. ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते

(a) अधः (b) उपरिष्यत्
(c) तिर्यक् (d) परितः

उत्तर-(b)

ऋग्वेद के अनुसार स्वर–3 प्रकार का होता है
(1) उदात्त (2) अनुदात्त
(3) स्वरित
उदात्त-में कोई चिन्ह नहीं होता
अनुदात्त-में अक्षर के नीचे पड़ी रेखा (-)
स्वरित–अक्षर के ऊपर (उपरिष्यत्) खड़ी रेखा (!) होती है।

5. 'देवासः' इति प्रयोगः

(a) लौकिकः (b) कार्मिकः
(c) वैदिकः (d) यादच्छिकः

उत्तर-(c)

वैदिक भाषा में शब्दों के रूप लौकिक संस्कृत की अपेक्षा यद्यपि अधिक भिन्न नहीं है, तथापि वैदिक शब्दों के रूप में लौकिक संस्कृत की अपेक्षा विविधता है।
वैदिक शब्द रूपों की कुछ विशेषतायें निम्न हैं–
(क) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के प्रथमा विभक्ति के द्विवचन में औ को आ उच्चारण करने पर के उदाहरण–60 द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया में स्पष्ट है।
देवा, देवौ दोनों रूप मिलते हैं। बहुवचन में आः और आसः (देवाः, देवासः, जनाः, जनासः मर्त्या, मर्त्यासः) दो प्रकार के रूप बनते हैं। तृतीया विभक्ति एकवचन में देवेने देवेना बनता है।

6. दर्शपूर्णमासयागस्य का दक्षिणा?

(a) पूर्णपात्रम् (b) गौः
(c) अन्वाहार्यम् (d) सुवर्णम्

उत्तर-(c)

यह यज्ञ 30 दिन तक चलता है। यज्ञ श्रौत और स्मार्त के भेद से अनेक प्रकार के हैं।
श्रौत तथा स्मार्त दोनों ही प्रकार के यज्ञ तीन प्रकार के होते हैं–
(1) नित्य (2) काम्य (3) नैमित्तिक
क्रियमाण कर्म की दृष्टि से अग्न्याधान तीन प्रकार का होता है–

(1) होमपूर्व (2) इष्टिपूर्व (3) सोमपूर्व
तीन प्रकार की श्रौताग्नि होती है–
(1) आहवनीय (अन्वाहार्यम्) (2) गार्हपत्य
(3) दक्षिणाग्नि

7. कालसूक्तं पूज्यते

(a) मूलवेदे (b) तूलवेदे
(c) अथर्ववेदे (d) कित्रापि न हि

उत्तर-(c)

कालसूक्त अथर्ववेद के 10वें काण्ड का 53वां सूक्त है।
इस सूक्त के ऋषि–भृगु, देवता–काल, छन्द-त्रिष्टुप् है।
कालसूक्त में मन्त्रों की संख्या–10 है।
कालसूक्त की मुख्य सूक्ति–
(1) कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः, सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
(2) कालः स ईयति।
(3) कालो ह भूतं भव्यं चेषित ह वि तिष्ठते।
(4) कालः प्रजा असृजतः कालो भग्ने प्रजापतिः।

8. शुक्ल यजुर्वेदीये शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(a) षट् (b) सप्त
(c) अष्ट (d) दश

उत्तर-(a)

शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन वाजसनेयसंहिता के 34वें काण्ड को शिवसंकल्पसूक्त कहते हैं।
शिवसंकल्पसूक्त के ऋषि-याज्ञवल्क्य, देवता-मन, तथा छन्द-त्रिष्टुप् है।
शिवसंकल्पसूक्त में मन्त्रों की कुल संख्या = 6 है।
सूक्ति–(1) यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
(2) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु
(3) येनेदं भूतं भुवनं भविष्य
(4) यस्मिन्नृचः साम यजूँषि

9. केनोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

(a) कृष्णयजुर्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर-(b)

ब्राह्मण भाग के ज्ञानकाण्ड को उपनिषद् कहते हैं। आत्मा को ब्रह्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला ज्ञान उपनिषद् नाम से अभिहित किया जाता है।
1. ऋग्वेद के उपनिषद्
(1) ऐतरेयोपनिषद् (2) कौषीतकि उपनिषद्
2. शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद्
(1) ईशोपनिषद् (2) बृहदारण्यकोपनिषद्
3. कृष्णयजुर्वेद के उपनिषद्
(1) तैत्तिरीयोपनिषद् (2) कठोपनिषद्
(3) श्वेताश्वतरोपनिषद्
4. सामवेद के उपनिषद्
(1) छान्दोग्योपनिषद् (2) केनोपनिषद्
5. अथर्ववेद के उपनिषद्
(1) मुण्डकोपनिषद् (2) माण्डूक्योपनिषद्
(3) प्रश्नोपनिषद्

10. कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति?

(a) मनः (b) अव्यक्तम्
(c) पुरुषः (d) आत्मा

उत्तर-(b)

कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित कठोपनिषद् में मुख्यतः दो अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली है–
कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के तृतीय वल्ली में उल्लिष्वित है कि इन्द्रियों से मन श्रेष्ठ है, मन से बुद्धि श्रेष्ठ है।
बुद्धि से उसका स्वामी जीवात्मा ऊंचा है और जीवात्मा से भी अव्यक्त शक्ति उत्तम है
महतः परमण्यक्तमण्यक्यात् पुरुषः परः
पुरुषान्न पर किंचित्सा काष्ठा सा परा गतिः ।3।।11।
A—कठोपनिषद् के अनुसार इन्द्रियों से मन श्रेष्ठ है।
B—कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धि से आत्मा श्रेष्ठ है।

11. ईशावास्यदिशा कथममृतमश्नुते?

(a) एकत्वेन (b) सम्भवात्
(c) सम्भूत्या (d) सत्येन

उत्तर-(c)

ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद काव्यशास्त्रीय संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। मन्त्र-भाग का अंश होने से इसका विशेष महत्व है।
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयँ सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।। (ई॰ 14)
अर्थ– जो मनुष्य उन दोनों को सम्भूति अविनाशी परमेश्वर को और विनाशशील देवादि को भी साथ-साथ यथार्थतः जान लेता है। वह विनाशशील देवादि की उपासना से मृत्यु को पार करके अविनाशी परमेश्वर की उपासना से अमृत को भोगता है। अर्थात् अविनाशी आनन्दमय परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्रत्यक्ष प्राप्त कर लेता है।

12. 'तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते?

(a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि

(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) बृहदारण्यके

उत्तर-(a)

यह उपनिषद् सामवेद के तलवकार ब्राह्मण के अन्तर्गत है। तलवकार को जैमिनीय-उपनिषद् भी कहते हैं–

ब्रह्मविद्या के सुनने मात्र से ही ब्रह्म के स्वरूप का रहस्य समझ में नहीं आता इसके लिए विशेष साधनों की आवश्यकता होती है इसलिए अब उन प्रधान साधनों का वर्णन करते हैं–

''तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्।।के॰4।8।।

अर्थ–उस रहस्यमयी ब्रह्मविद्या के तपस्या मन, इन्द्रियों का नियन्त्रण, कर्तव्यपालन ये तीनों आधार हैं वेद उस विद्या के सम्पूर्ण अङ्ग हैं अर्थात् वेद में उसके अङ्ग प्रत्यङ्गों का सविस्तार वर्णन है, सत्यस्वरूप परमेश्वर उसका अधिष्ठान प्राप्तव्य है।

B. कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बन्धित है।

C. तैत्तिरीयोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित है।

D. बृहदारण्यकोपनिषद् शुक्लयजुर्वेदीय शाखा से सम्बन्धित है।

13. 'योगो हि प्रभवाप्ययौ'–कुत्रेयमुक्तिः?

(a) बृहदारण्यके (b) केनोपनिषदि

(c) भगवद्गीतायाम् (d) कठोपनिषदि

उत्तर-(d)

प्रस्तुत सूक्ति कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय की तृतीय वल्ली से सम्बन्धित है–

''तां योगमिति मन्यते स्थिरामिन्द्रिय धारणाम्।

अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ (कठ. 2/3/11)

अर्थ– उस इन्द्रियों की स्थिर धारणा को ही योग मानते हैं। क्योंकि उस समय साधक प्रमादरहित हो जाता है; योग उदय और अस्त होने वाला है।

व्यास प्रणीत श्रीमद्भगवतगीता में कुल-18 सर्ग हैं।

14. 'उत्तब्धं वागेव गीथोत्त्वगीथा चेति उद्गीथः–कुत्रेयमुक्तिः?

(a) केनोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि

(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर-(d)

शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को बृहदारण्यकोपनिषद् कहते हैं। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों ही मिश्रित हैं। इसलिए इसका नाम 'बृहदारण्यकोपनिषद्, पड़ा। इस उपनिषद् में तीन भाग हैं और प्रत्येक भाग में दो-दो अध्याय है।

प्रथम काण्ड के प्रथम अध्याय में अश्वमेध यज्ञ की रहस्यात्मकता की व्याख्या की गयी है।

प्राण को आत्मा का प्रतीक मानकर ब्रह्म से जगत की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है।

15. विज्ञानमयस्य शिरः किमुच्यते?

(a) श्रद्धा (b) सत्यम्

(c) ऋतम् (d) महः

उत्तर–(a)

तैत्तिरीयोपनिषद् के द्वितीय वल्ली के चतुर्थ अनुवाक में विज्ञानमय कोश के शिरः भाग को श्रद्धा कहा गया है–'विज्ञानमयात्तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुर्षाविधतामन्वयं पुरुषविधः। तस्यैव श्रद्धैवशिरः। ऋतं दक्षिणः पक्षः। सत्यमुत्तर पक्षः। योग आत्मा। मह; पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति।

अर्थ–निश्चय ही उस पहले बताये हुए इस मनोमय पुरुष में अन्य इसके भीतर रहनेवाला आत्मा विज्ञानमय है।

उस विज्ञानमय आत्मा से–मनोमय शरीर व्याप्त है।

यह विज्ञानमय आत्मा ही–पुरुष के आकार का बताया जाता है।

उस विज्ञानमय आत्मा का–श्रद्धा ही सिर है।

सदाचार का निश्चय–दाहिना पंख है।

सत्य भाषण का निश्चय–बांया पंख है।

शरीर का मध्य भाग–महः नाम से प्रसिद्ध है।

16. 'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवा जायते पुनः'– इति केनोक्तम्?

(a) नचिकेतसा (b) वाजश्रवसा

(c) यमेन (d) अग्निना

उत्तर-(a)

प्रस्तुत सूक्ति कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय के प्रथम वल्ली से सम्बद्ध है–

''अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे।

सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः।।

अर्थ–नचिकेता अपने पिता से कहना है–पिताजी अपने पितामह आदि पूर्वजों का आचरण देखिए और इस समय के दूसरे श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण देखिए उनके चरित्र में न कभी पहले असत्य था न अब है। असाधु मनुष्य ही असत्य का आचरण किया करते हैं। परन्तु इस असत्य से कोई अजर अमर नहीं हो सकता। मनुष्य मरण धर्मा है। यह अनाज की भांति जरा जीर्ण होकर मर जाता है।

17. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः?

(a) थ (b) द

(c) प (d) ब

उत्तर-(a)

युग्मौ सोष्माणौ
प्रत्येक वर्ग में सम (even) वर्ण सोष्मन् कहलाता है।
युग्मौ–द्वितीय और चतुर्थवर्ण
सोष्मवर्ण निम्न है–ख, घ, छ झ, ठ ढ, थ ध, फ भ, ष इति सोष्म वर्णो
–प, फ, ब ये तीनों वर्ण स्पर्श संज्ञक हैं

18. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारमघोषवर्णः कः?

(a) त (b) द
(c) ध (d) ब

उत्तर-(a)

ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार 'अन्त्याः सप्त तेषामधषाः' अर्थात् उन ऊष्म वर्णों में अन्तिम सात वर्ण अघोष कहलाते हैं। यथा–श, ष, स, अः, ᳵक, ᳵप, अं
'वर्गे वर्गे च प्रथमावघोषौ' अर्थात् प्रत्येक वर्ण में प्रथम दो वर्ण भी अघोष कहलाते हैं–
यथा–कख, चछ, टठ, तथ, पफ
–द, ध, एवं ब ये तीनों वर्ण सघोष संज्ञक होते हैं।

19. आमन्त्रितज ओकारो भवति

(a) रक्तः (b) प्रगृह्यः
(c) रिफितः (d) यमः

उत्तर-(b)

ऋक्प्रातिसाख्य के अनुसार–''ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः'' अर्थात् संबोधन (आमन्त्रिज) से उत्पन्न ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है।
A. रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः–अनुनासिक वर्ग रक्त संज्ञक होते हैं।
C. ऊष्मा रेकी पञ्चमो नामिपूर्वः–नामि पूर्व में हो तो पञ्चम ऊष्म रेकिन् संज्ञक होता है।
D. अत्र यमोपदेशाः यहाँ पर यमों का निर्देश करना चाहिए यथा चख्नुः

20. आश्वलायनगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम्?

(a) अथर्ववेदेन (b) सामवेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) ऋग्वेदेन

उत्तर-(d)

गृह्यसूत्र गार्हस्थ्य जीवन से सम्बद्ध धार्मिक अनुष्ठानों, आचार-विचारों एवं गृह्य यज्ञों का विवेचन कहते हैं।
ऋग्वेद से सम्बद्ध दो गृह्यसूत्र प्रमुख हैं–
(1) आश्वलायन गृहयसूत्र
(2) शांखायन गृहयसूत्र
यजुर्वेद–(1) शुक्लयजुर्वेद–एकमात्र पारस्कर गृहयसूत्र
(2) कृष्णयजुर्वेद–9 गृह्यसूत्र– (1) बौधायन, (2) भारद्वाज (3) आपस्तम्ब (4) हिरण्यकेशि (सत्याषाढ़) (5) वैखानवस (6) वाधूल, (7) काठक, (8) वाराह गृह्यसूत्र।
सामवेद–सामवेद के 5 गृह्ययूत्र हैं–(1) गोभिल गृह्यसूत्र
(2) खादिर गृह्यसूत्र
(3) जैमिनीय गृह्यसूत्र, (4) द्राह्यायण गृह्यसूत्र, (5) कौथुम गृह्यसूत्र
अथर्ववेद से सम्बद्ध-एकमात्र गृह्यसूत्र–कौशिक गृह्यसूत्र

21. त्रिष्टुप्छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति?

(a) 28 (b) 36
(c) 44 (d) 48

उत्तर-(c)

छन्दशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य पिङ्गल हैं।
वैदिक छन्दों की कुल संख्या 26 है। इनमें से प्रारम्भ के पांच छन्द वेद में प्रयुक्त नहीं है। शेष 21 छन्द तीन सप्तकों में विभक्त है।
प्रथम सप्तक में–गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती
द्वितीय सप्तक में–अतिजगती, शक्वरी, अतिशक्वरी, अष्टि, अत्यष्टि, धृति, अतिधृति
तृतीय सप्तक–कृति, प्रकृति, आकृति, विकृति, संस्कृति, अभिकृति और उत्कृति।
प्रथम सप्तक के छन्दों की वर्णो की संख्या निम्न है–
(1) गायत्री – 24 उष्णिक् – 28
अनुष्टुप् – 32 बृहती – 36
पंक्ति – 40 त्रिष्टुप् – 44
जगती – 48

22. निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः कः?

(a) अस्ति (b) विपरिणमते
(c) अपक्षीयते (d) विनश्यति

उत्तर-(a)

आचार्य यास्क कृत निरुक्त में विकारों की संख्या छः बतायी गयी है।
(1) जायते – उत्पन्न होता है।
(2) अस्ति – रहता है।
(3) विपरिणमते – परिवर्तित होता है।
(4) वर्द्धते – बढ़ता है
(5) अपक्षीयते – वर्धते का विपरीत भाव
(6) विनश्यति – अन्तिम भाव के प्रारम्भ को कहता है।

23. अग्रणीर्भवतीति निरुक्त्या क उच्यते?

(a) वीरः (b) आदित्यः
(c) अश्वः (d) अग्निः

उत्तर-(d)

आचार्य यास्क कृत निरुक्त के द्वितीय अध्याय में शब्दों के निर्वचन की चर्चा की गयी है– यथा–

(1) अग्नि का निर्वचन–

(1) अग्रणीर्भवति (2) अग्रंयज्ञेषु प्रणीयते

(3) अङ्गं नयति सङ्गमानः (4) अक्रोपनो भवति

A. वीर का निर्वचन–

(1) वीरयति अमित्रान (2) वीरयत्तेर्वा स्याद्गतिकर्मणः

(3) वीरयतेर्वा

B. आदित्य का निर्वचन–

(1) आदत्ते रसान् (2) आदत्ते भासं ज्योतिषां

C. अश्व का निर्वचन–

(1) अश्नुतेऽध्वानम् (2) महानसोभवतीति

24. 'वा' इति निपातो वर्तते

(a) उपमार्थे (b) शब्दार्थे

(c) निषेधार्थे (d) समुच्चयार्थे

उत्तर-(d)

आचार्य यास्क के अनुसार निपात के तीन प्रकार हैं

(1) उपमार्थक–इव, न, चित्, नु

(2) कर्मोपसंग्रहार्थक–च, आ, वा, अह, उ, हि, किल, मा, खलु

(3) पादपूरणार्थक–कम्, इम्, इत्, उ

वा निपात विचारणार्थक है। यहाँ पर सन्देह एक प्रकार का अनिश्चय अथवा विकल्प के अर्थ में तथा वापुर वा त्वा मनुर वा त्वा इस मन्त्रांस में समुच्चय के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

A. इव निपात् का प्रयोग उपमा अर्थ में होता है।

B. न, निपात् का प्रयोग वेद में उपमा और निषेध दोनों अर्थों में हुआ है।

25. महाभाष्ये 'कूपरवानकवत्' इत्युदाहरणं कस्मिन् प्रसङ्गे उक्तम्?

(a) शब्दस्य ज्ञाने धर्मः (b) गौरित्यत्र कः शब्दः

(c) किमर्थं वर्णानामुपदेशः (d) सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

उत्तर-(a)

महर्षि पतञ्जलि प्रणीत् महाभाष्य के प्रथम आह्निक में ज्ञान में धर्म है–ज्ञाने धर्म इति चेत्तथाऽधर्मः'' का विवेचन किया गया है।

अथ वा कूपखानकवदेतद्भविष्यति। तद्यथा कूपखानकः कूपं अर्थात् जैसे कुंआ खोदने वाला कुआं खोदता हुआ यद्यपि कीचड़ और धूल से ढक जाता है तो भी वह कुएँ में जल निकल कर आने पर उसी जल से स्वच्छ होता है। और उससे उसका दोष पूर्णता से नष्ट हो जाता है। इतना ही नहीं उसका बहुत उत्कर्ष होता है। यह बात भी उसी प्रकार की है। यद्यपि अपशब्द से अधर्म होता है। तो भी शब्द ज्ञान से धर्म होता है। उस धर्म से अधर्म रूप दोष मूलतः नष्ट होता है। इतना ही नहीं उस मनुष्य का बहुत उत्कर्ष भी होता है।

A. तो गौ में शब्द क्या है? यतत्सास्नालाङ्गूलककुद खुर विषाण्यर्थरूपं शब्दः।

C. वर्णों का उपदेश ही समवाय है।

D. शब्द, अर्थ और सम्बन्ध ये दोनों नित्य हैं।

26. 'तुन्नवत्' इति किमुच्यते?

(a) सक्तुः (b) परिपवनम्

(c) टङ्कारध्वनिः (d) तन्तुशाटिका

उत्तर-(b)

— तनु धातु से तनोतेर्डेउः सन्वच्च इस उणादि सूत्र से यह रूप बनता है।

सक्तुमिव–सक्तु शब्द का अर्थ है सत्तू। सक्तु शब्द सच् धातु से निष्पन्न होता है। सच् का अर्थ है चिपकना। अतः सत्तू का शोधन कठिन कार्य है। अथवा सच् धातु में वर्ण विपर्यय करके सक्तु शब्द बनता है।

इस व्युत्पत्ति के अनुसार विकसित होने वाला अर्थ प्रतीत होता है। जैसे- भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि

27. 'भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते' इत्यत्रात्मनेपद विधायकं किम्?

(a) अकर्मकाच्च (b) वा लिप्सायामिति वक्तव्यम्

(c) उपान्मन्त्रकरणे (d) समप्रविभ्यः स्थः

उत्तर-(b)

A. अकर्मकाच्च–अकर्मक ज्ञा धातु से आत्मने पद प्रत्यय होता है।

जैसे–सर्पिषो जानीते–यहाँ ज्ञा धातु का अर्थ प्रवृत्ति है। इस अर्थ में यह अकर्मक है। इसलिए यहाँ आत्मनेपद प्रकृत सूत्र से हुआ है।

D. समप्रसिभ्यः स्थः सम् अव, प्र, वि उपसर्ग से पर 'स्था' धातु हो तो आत्मनेपद प्रत्यय होता है।

जैसे–संतिष्ठते, वितिष्ठते, प्रतिष्ठते है।

28. 'वीरपत्नी' इति कस्य सूत्रस्योदाहरणे वर्तते

(a) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे (b) नित्यं सपत्न्यादिषु

(c) अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् (d) विभाषा सपूर्वस्य

उत्तर-(b)

वीर पुरुषकः–लौ0वि0–वीराः पुरुषा यस्मिन्

अलौ0 वि0–वीर जस् पुरुष जस्

यहां सप्तमी विभक्ति के अर्थ में वीर और पुरुष इन प्रथमान्त पदों से समास होता है। वीरपुरुष इस स्थिति में शेषाद्विभाषा इस सूत्र से कप् प्रत्यय समासान्त होकर 'वीरपुरुषकः' बना।

नोट– वीरपुरुष की पत्नी ही वीरपत्नी होती है क्योंकि यह नित्यं सपत्न्यादिषु सूत्र से सिद्ध है।

29. तत्पुरुषसमासे देवब्राह्मण इत्युदाहरणे ब्राह्मणो वर्ततेऽभिप्रेतः

(a) देवरूपः (b) देवप्रियः
(c) देवपूजकः (d) देवाधीनः

उत्तर-(c)

शाकपार्थिवाऽदीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्यो पसंख्यानम्–शाक पार्थिव आदि समस्त पदों की सिद्धि के लिए उत्तरपद के लोप का परिगणन होता है।

जैसे– देवब्राह्मणः–लौ0वि0 देव पूजको ब्राह्मणः
यहाँ देवपूजक और ब्राह्मण पदों का समास हुआ है और देवपूजक के उत्तरपद पूजक का लोप होकर = देवब्राह्मणः बना।

30. 'अलं कुमार्यै' इत्यस्य समस्तं रूपं किम्?

(a) अलङ्कुमारी (b) कुमार्यै अलम्
(c) अलङ्कुमारिः (d) अलङ्कुमारिन्

उत्तर-(c)

A. 'प्राप्ताऽऽपन्ने च द्वितीयया'
प्राप्त और आपन्न सुवन्तो का द्वितीयान्त समर्थ के साथ समास होता है।
उदा0–अलङ्कुमारिः–लौ0वि0– अलं कुमार्यै
यहाँ पर पद कुमारी स्त्रीलिङ्ग है। पूर्वसूत्र के द्वारा उसी का लिङ्ग समस्त पद से प्राप्त था प्रकृत वार्तिक से निषेध होने के कारण विशेष्य के अनुसार लिङ्ग हुआ।

31. द्विभाषाशिलालेखः केन सम्बद्धः?

(a) कान्धारः (b) मास्कि
(c) गुजर्रा (d) रुम्मिनदेई

उत्तर-(a)

अशोक कान्धार का द्विभाषी शिलालेख
स्थान–मास्की (रायचूर) कर्नाटक
भाषा–ग्रीक, अरमाइक
लिपि–ग्रीक
काल–260 ई0 पू0
विषय–अहिंसा
B. मास्की शिलालेख–अशोक का है।
C. गुजर्रा शिलालेख–अशोक का है।
D. रुम्मिनदेई शिलालेख–अशोक का है।
ये सब शिलालेख लघु शिलालेख के अन्तर्गत आते हैं।

32. अद्वैतमते जगतः अस्ति?

(a) नित्यत्वम् (b) मिथ्यात्वम्
(c) पारमार्थिकत्वम् (d) ब्रह्मपरिणामात्मकत्वम्

उत्तर-(b)

अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को सत्य एवं जगत को मिथ्या बताया गया है–ब्रह्मसत्यं जगत मिथ्या।

ग्रन्थकार के अनुसार ब्रह्म को अखण्ड कहने पर अनन्तर सत् कहा जाता है। सत् वही हो सकता है जो अनृततः हो और न शून्य हो। सत् त्रिकालाबाधित होता है और सत्ता ही उसका स्वरूप है। ब्रह्म भी यदि अनृत या शून्य हो तो जगत की सृष्टि निराधार होगी। फिर यह प्रश्न भी उठेगा कि शून्य का कोई साक्षी है या नहीं? शून्य को साक्षी की अपेक्षा नहीं है, क्योंकि वह स्वयं प्रकाश है, तब तो ब्रह्म का ही नामान्तर हुआ अतः ब्रह्म अनृत या शून्य नहीं हो सकता।

33. विवर्तस्य उदाहरणमस्ति

(a) गगनकुसुमम् (b) बन्ध्यासुतः
(c) शुक्तिकारजतम् (d) रवपुष्पम्

उत्तर-(c)

वेदान्त सार के अनुसार विवर्त का लक्षण है–
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।।
अर्थात् मिथ्यारूप से अन्यवस्तु के रूप में भासित होता विवर्त कहा जाता है।
किसी वस्तु का अपनी पूर्वावस्था को छोड़कर दूसरी अवस्था को प्राप्त कर लेना उस वस्तु का परिणाम है।
जैसे–दूध का दही बन जाना, मिट्टी का घड़ा बन जाना और सुवर्ण का कुण्डल बन जाना। परन्तु पूर्वावस्था का परित्याग किए बिना ही दूसरी अवस्था का भासित होना विवर्त है।
जैसे–रज्जु में सर्प, शुक्ति में रजत

34. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि सन्ति

(a) षोडश (b) सप्तदश
(c) पञ्चविंशतिः (d) दश

उत्तर-(c)

आचार्य ईश्वरकृष्णप्रणीत् सांख्यकारिका में तत्त्वों की संख्या कुल 25 बताई गयी है–

''मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः''।।3।।

प्रकृति–1 (कारणरूप)
महत–7 (महत्तत्त्व, अहङ्कार तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध पांच तन्मात्रायें) ये 7 तत्त्व प्रकृति भी हैं विकृति भी हैं
विकार–16 मन, 5 ज्ञानेन्द्रिय, 5 कर्मेन्द्रिय, तथा 5 महाभूत) 16 तत्त्वों का समुदाय केवल विकार है।
पुरुष–1–पुरुष न प्रकृति है और न विकृति
9 + 7 + 16 + 1 = 25 तत्त्व

35. पुरुषप्रकृत्योः संसर्गो वर्णितः

(a) जडाजडवत् (b) पङ्ग्वन्धवत्
(c) मूकबधिरवत् (d) अन्धमालावत्

उत्तर-(b)

सांख्य के अनुसार प्रकृति और पुरुष का संयोग पङ्गु अन्धवत् होता है–

पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः। (सां-21 का.)

अर्थ– पुरुष के द्वारा प्रधान के दर्शन अर्थात् भोग के लिए तथा प्रधान के द्वारा पुरुष के कैवल्य के लिए गमन शक्तिविहीन पङ्गु और दर्शनशक्तिविहीन अन्धे के संयोग के समान दोनों प्रधान और पुरुष का भी संयोग होता है, और उस संयोग से सृष्टि होती है।

A–प्रकृति जड़ होती है तथा पुरुष चेतन होता है।

36. अर्थसङ्ग्रहे विशिष्टविधेः उदाहरणमस्ति

(a) दध्ना जुहोति
(b) अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः
(c) सोमेन यजेत
(d) राजा राजसूयेन स्वाराज्यकामो यजेत

उत्तर-(c)

गुण और कर्म–दोनों के प्रमाणान्तर से अप्राप्त रहने पर गुण विशिष्ट कर्म का विधान करने वाली विशिष्ट विधि या गुणविशिष्ट विधि कही जाती है, जैसे–**सोमेन यजेत**

A. दध्नाजुहोति–गुणविधि का उदा0 है।
जिस विधि में क्रिया के अङ्ग का विधान किया गया हो उसे गुणविधि कहते हैं।

B. अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः -उत्पत्ति विधि का उदा0 है।
उत्पत्तिविधि का लक्षण है–''तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः''।

37. विनियोगविधेः सहकारिप्रमाणानि सन्ति

(a) त्रीणि (b) सप्त
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर-(d)

अङ्ग एवं अङ्गी के सम्बन्ध की बोधक विधि विनियोग विधि कही जाती है।

जैसे–'दध्ना जुहोति'

- विनियोग विधि के सहकारी छः प्रमाण–

एतस्य विधेः सहकारि भूतानि षट्प्रमाणानि–

(1) श्रुति (2) लिङ्ग
(3) वाक्य (4) प्रकरण
(5) स्थान (6) समाख्या

A. अर्थवाद के तीन भाग हैं–
(1) गुणवाद, (2) अनुवाद, (3) भूतार्थवाद

38. अर्थसङ्ग्रहानुसारम् आख्यातेन किमुच्यते?

(a) कर्ता (b) भावना
(c) कर्म (d) करणम्

उत्तर-(b)

उत्पन्न होने वाली वस्तु आदि की उत्पत्ति में उत्पादक का जो मानसिक व्यापार विशेष कारण होता है। वही भावना है। ''भावनानाम भवितुर्भवनानुकूलो भावायितुर्व्यापारविशेषः

भावना दो प्रकार की होती है–
(1) शाब्दी भावना
(2) आर्थी भावना

शाब्दी एवं आर्थी दोनों भावनाओं के तीन अंश होते हैं–
(1) साध्य, (2) साधन, (3) इतिकर्त्तव्यता

A. **स्वतन्त्रः कर्त्ता**–क्रिया के निष्पादन में कर्त्ता स्वतन्त्र होता है।

B. **कतुरीप्सिततयं कर्म**–कर्त्ता का जो ईप्सितम् होता है उसे कर्म कहते हैं।

C. **साधकतम् करणम्**–क्रिया का जो सहायक होता है उसे करण कारक कहते हैं।

39. अर्थवादस्य लक्षणं किम्?

(a) स्तुति-निन्दान्यतरपरं वाक्यम्।
(b) समभिव्याहारो वाक्यम्।
(c) अपौरुषेयं वाक्यम्।
(d) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध बोधकं वाक्यम्।

उत्तर-(a)

विधेय की प्रशंसा और निषेध की निन्दा करने वाले वाक्य को अर्थवाद कहते हैं–

''प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः''

अर्थवाद वाक्य स्वयं में एक प्रकार का अधूरा ही होता है। प्रशंसापरक अर्थवाद को विधिवाक्य की और निन्दापरक अर्थवाद को निषेध वाक्य की आवश्यकता रहती है। इसी आधार पर इसके दो भाग हैं–

(1) विधि शेष (2) निषेध शेष

अर्थवाद के तीन भाग हैं–
(1) गुणवाद (2) अनुवाद (3) भूतार्थवाद

C. अपौरुषेय वाक्यम् वेदः–अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं।

D. अङ्ग प्रधान सम्बन्ध बोधकं वाक्यम् विधिः
अङ्ग एवं अङ्गी के सम्बन्ध की बोधक विधि विनियोग विधि कही जाती है। जैसे–दध्ना जुहोति

40. चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' का उच्यते?

(a) रामायणम् (b) महाभारतम्
(c) विष्णुपुराणम् (d) श्रीमद्भागवतम्

उत्तर-(a)

संस्कृत साहित्य में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण आदिकाव्य समझा जाता है तथा वाल्मीकि आदिकवि माने जाते हैं।

इस आदिकाव्य को चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता कहते हैं। अर्थात् इसमें 24 हजार श्लोक हैं। ठीक उतने ही हजार जितने 'गायत्री' के अक्षर हैं।
प्रत्येक हजार श्लोक का पहला अक्षर गायत्री मन्त्र के ही अक्षर से क्रमशः आरम्भ होता है।

41. 'विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' कुत्र वर्तते?

(a) श्रीमद्भागवते (b) रामायण
(c) ब्रह्माण्डपुराणे (d) महाभारते

उत्तर-(d)

महाभारत के अनुशासन पर्व के 17वें अध्याय में शिवसहस्त्रनामस्तोत्र और 149वें अध्याय में विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र' है। जिसका पाठ आस्थावान लोग आज भी करते हैं।

अनुशासन पर्व मुख्य रूप से धर्मशास्त्रीय उपदेश हैं।
जो भीष्म द्वारा अपने समक्ष उपस्थित युधिष्ठिर आदि को दिये गये हैं।

A. श्रीमदभागवत पुराण, पुराण साहित्य का सर्वाधिक प्रचलित कृति है। इस पुराण में कृष्ण की स्तुति की गई है।
B. वाल्मीकि प्रणीत् रामायण में कुल 7 काण्ड एवं 24000 श्लोक हैं।

42. महाभारतस्य द्वितीयं पर्व किम्?

(a) वनपर्व (b) सभापर्व
(c) भीष्मपर्व (d) विराटपर्व

उत्तर-(b)

वर्तमान महाभारत एक लाख से अधिक श्लोकों का ग्रन्थ हैं। इसलिए इसे शतशाहस्त्री संहिता की कहते हैं।

महाभारत के 18 पर्वों के नाम इस प्रकार हैं–

(1) आदि (2) सभा
(3) वन (4) विराट
(5) उद्योग (6) भीष्म
(7) द्रोण (8) कर्ण
(9) शल्य (10) सौप्तिक
(11) स्त्री (12) शान्ति
(13) अनुशासन (14) आश्वमेधिक
(15) आश्रमवासिक (16) मौसल
(17) महाप्रस्थानिक (18) स्वर्गारोहण

43. ब्रह्मवैवर्तपुराणं निबद्धं वर्तते

(a) खण्डेषु (b) पर्वसु
(c) काण्डेषु (d) स्कन्धेषु

उत्तर-(a)

यह ब्रह्मवैवर्तपुराण वैष्णव पुराण है जिसमें श्रीकृष्ण के चरित का वर्णन करते हुए वैष्णव धर्म का विवरण दिया गया है। पुराण के अनुसार इसके श्लोकों की संख्या 18 सहस्त्र है।

ब्रह्म पुराण 4 खण्डों में विभक्त है–
(1) प्रकृति खण्ड (2) ब्रह्म खण्ड
(3) गणेश खण्ड (4) श्रीकृष्ण जन्म खण्ड
(b) सम्पूर्ण महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है।
(c) सम्पूर्ण रामायण 17 काण्डों में विभक्त है।
(d) भागवतपुराण 12 स्कन्दों में विभक्त है।

44. महापुराणेषु न गण्यते–

(a) कालिकापुराणम् (b) स्कन्दपुराणम्
(c) विष्णुपुराणम् (d) अग्निपुराणम्

उत्तर-(a)

पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है।
(1) महापुराण (2) उपपपुराण
महापुराणों–की संख्या 18 है–
(1) ब्रह्मपुराण (2) पद्म
(3) विष्णु (4) वायु
(5) भागवत (6) नारद
(7) मार्कण्डेय (8) अग्निपुराण
(9) भविष्य (10) ब्रह्मवैवर्त
(11) वराह (12) स्कन्द
(13) कूर्म (14) वामनपुराण
(15) कूर्म (16) मत्स्य
(17) गरुड़ (18) ब्रह्माण्डपुराण

45. श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य ज्येष्ठपुत्रस्य किं नाम?

(a) साम्बः (b) प्रद्युम्नः
(c) सङ्कर्षणः (d) अनिरुद्धः

उत्तर-(b)

श्रीमद्भागवतपुराण पुराण साहित्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह पुराण 12 स्कन्दों में विभक्त है।
प्रथम स्कन्द–में पुराणों की उत्पत्ति की कथा
द्वितीय–विराट पुरुष की कथा
तृतीय–उद्धव का विदुर को कृष्णलीलाओं का वर्णन सुनना
चतुर्थ–स्वायम्भुव मनु की कन्याओं का वंश परम्परा
पञ्चम्–गद्य प्रयोग
षष्ठ स्कन्द–अजामिल

सप्तम्–में प्रहलाद की कथा दश अध्यायों में वर्णित है।
अष्टम् स्कन्द–विभिन्न मन्वन्तरों की कथा
नवम् स्कन्द–सूर्य तथा चन्द्रवंश की कथा
दशम् स्कन्द–पुराण का बृहत्तम भाग, देवीभागवत
एकादश स्कन्द–यादवों के विनाश
द्वादश स्कन्ध–में कलियुग के राजाओं तथा इस युग के धर्मो का वर्णन।

46. 'रासपञ्चाध्यायी' कुत्र वर्तते?

(a) महाभारते (b) रामायणे
(c) अग्निपुराणे (d) श्रीमद्भागवते

उत्तर-(d)

रासपञ्चाध्यायी भागवतपुराण के भक्तिरस का आधारग्रन्थ और धर्म का रसमय स्वरूप होने के कारण इसे अनुपम प्रसिद्धि प्राप्त है।
अन्य पुराणों की अपेक्षा इसकी भाषा शैली अत्यधिक परिष्कृत, लालित्यपूर्ण कवित्वमय एवं प्रौढ़ है। शिक्षित ब्राह्मणों के घर में वेद या अन्य पुराण भले ही न मिले किन्तु भागवत् पुराण अवश्य मिलता है।
रासपञ्चाध्यायी में निगमकल्पतरोर्गलितं कलम् विधावतां भागवते परीक्षा यहां श्रीकृष्ण को ब्रह्म या परमात्मा कहा गया है।

47. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थाधिकरणं वर्तते

(a) कण्टकशोधनम् (b) षाड्गुण्यम्
(c) धर्मस्थीयम् (d) विनयाधिकारिकम्

उत्तर-(a)

आचार्य कौटिल्य प्रणीत् अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण है जिनका विवरण निम्न प्रकार से दृष्टव्य है।

प्रथम अधिकरण–विनयाधिकरण
द्वितीय – अध्यक्षप्रचार
तृतीय – धर्मस्थानीय
चतुर्थ – कण्टकशोधन
पंचम् – योगवृत्त
षष्ठ – मण्डलयोनि
सप्तम् – षाड्गुण्य
अष्टम् – व्यसनाधिकारिक
नवम् – अभियास्त्यत्कर्म
दशम् – साङ्ग्रामिक
एकादश – वृत्तसंघ
द्वादश – आलीयस
त्रयोदश – दुर्गलम्बोपाय
चतुर्दश – औपनिषदिक
पञ्चदश – तन्त्रयुक्ति

48. सन्धिकर्म कुत्रोपदिष्टम्?

(a) धर्मस्थीये (b) अध्यक्षप्रचारे
(c) योगवृत्ते (d) षाड्गुण्ये

उत्तर-(d)

अर्थशास्त्र के सप्तम्अधिकरण में संधि की चर्चा की गयी है।
संयुक्त युद्ध यात्रा में मित्र हिरण्य और भूमि इन लाभों में उत्तरोत्तर लाभ श्रेष्ठ है।
क्योंकि भूमिलाभ से शेष दोनों लाभ प्राप्त हो सकते हैं और हिरण्य लाभ से मित्र लाभ श्रेष्ठ है।
तुम दोनों और हम दोनों मिलकर मित्र को लाभ पहुंचाएँ इस प्रकार की गयी सन्धि का समसन्धि कहते हैं।
इन्हीं दोनों में आपस में विरोध होने पर विषम सन्धि होती है।
इन दोनों संधियों में पूर्व लिखित लाभ से अधिक लाभ हो तो वह अतिसंधि कहलाता है।

49. सामवेदः सम्प्राप्तः

(a) रवेः (b) अग्नेः
(c) वायोः (d) वरुणात्

उत्तर-(a)

मनुप्रणीत मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में सामवेद के उत्पत्ति की चर्चा की गयी है–

''अग्निवायुरविभ्यस्त त्रयं ब्रह्मा सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।।23।।

ब्रह्मा ने यज्ञ की सिद्धि के लिए ऋक्, यजु और साम इन सनातन वेदों को अग्नि, पवन और सूर्य से क्रमपूर्वक प्रकट किया।। मनु01/
उत्पत्ति–ऋग्वेद से–अग्नि की उत्पत्ति
यजुर्वेद से–पवन (वायु) की उत्पत्ति
सामवेद से–रवि (सूर्य) की उत्पत्ति बताई गई है।

50. मनुना अन्नप्राशनस्य काल उक्तः

(a) द्वितीये मासे (b) चतुर्थे मासे
(c) षष्ठे मासे (d) अष्टमे मासे

उत्तर-(c)

मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में अन्नप्राशन की चर्चा की गयी है–
''चतुर्थे मसि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहाता
षष्ठेऽन्नप्राशनं मसि यद्वेष्टं मङ्गलं कुले।। मनु02/34
अर्थ–चौथे मास में लड़के को घर से बाहर निकालना चाहिए। छठे मास में अन्नप्राशन व जो मंगल कार्य करना हो उसे अपने कुल की रीति के अनुसार करना चाहिए।
A. चतुर्थेमसि – शिशोर्निष्क्रमणं
षष्ठेमसि – अन्नप्राशनं

51. याज्ञवल्क्यदिशा वस्त्रस्य वृद्धिरुक्ता

(a) द्विगुणा (b) त्रिगुणा
(c) चतुर्गुणा (d) पञ्चगुणा

उत्तर-(c)

याज्ञवल्क्यप्रणीत् –याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहार अध्याय प्रकरण में वस्त्र वृद्धि की चर्चा की गई है।

'रसस्याष्टगुणा परा।
वस्त्रधान्यहिरण्यानां चतुस्त्रिद्विगुणा परा। याज्ञ. व्यवहार, 39

अर्थ–रस आदि की वृद्धि स्वीकृति वृद्धि से अधिकतम् आठगुनी होती है। वस्त्र, धान्य और स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि चौगुनी, तिगुनी या दोगुनी होती है।

रस = 8 गुना B. धान्य = 3 गुना
वस्त्र = 4 गुना A. स्वर्ण = 2 गुना

52. राजा निधिं लब्ध्वा ततः कियन्तं गृह्णीयात्?

(a) अर्धम् (b) षष्ठांशम्
(c) दशांशम् (d) सर्वम्

उत्तर-(a)

प्रस्तुत सूक्ति याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहार अध्याय से उदधृत है–

''राजा लब्ध्वा निधिं दद्याद्विजेभ्योऽर्धं द्विजः।
विद्वानशेषमादद्यात्स सर्वस्य प्रभुर्यतः।। याज्ञ. 34।।

राजा ऐसा धन प्राप्त कर आधा ब्राह्मण को दे और यदि विद्वान् ब्राह्मण ऐसी निधि प्राप्त करे तो सम्पूर्ण ले लेवे क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत का स्वामी है।

(b) इतरेण निधौ लब्धे राजा षष्ठांश माहरेत्।
अर्थात् इसके अतिरिक्त अन्य के द्वारा ऐसी निधि का प्राप्त करने पर राजा षष्ठांश प्राप्त करने या लाने वाले को दे।

53. ईर्ष्या गण्यते

(a) कामजगणे (b) लोभजगणे
(c) मोहजगणे (d) क्रोधजगणे

उत्तर-(d)

मनुस्मृति के 7वें अध्याय में 8 दोष क्रोध के उत्पन्न होने पर बताए गए हैं–

''पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधोऽपि गणोऽष्टकः।। (मनु. 7/48)

अर्थ– चुगली, दःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न हैं।

(a) काम से उत्पन्न होने वाले दोष 10 प्रकार के होते हैं–
मृगया, अक्ष, दिवा स्वप्नः, परिवादो स्त्रियो मदः।
तौर्यात्रिकं वृथाटया च कामजो दशको गणः।

54. 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे– इत्यत्र रथाङ्गपाणिः कः?

(a) नारदः (b) रावणः
(c) कृष्णः (d) शिशुपालः

उत्तर-(c)

शिशुपालधम् महाकाव्य महाकवि माघ की एकमात्र अप्रतिम कृति है यह महाकाव्य-20 सर्गों में विभक्त है।

इस श्लोक में नारद जी के कान्ति की हरि के श्यामल किरणों से मिश्रित होने का वर्णन है।

रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषा
मृषित्विषः संविलिता विरेजिरे
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरो
स्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंझवः।। शिशु. 1/21

अर्थ– चक्रपाणि श्रीकृष्ण के कान्ति पुञ्ज से मिली हुई मुनि की किरणें रात्रि में हिलते-डुलते पत्तों के बीच में पड़ने वाली चन्द किरणों की तरह शुशोभित हुई।

टिप्पणी–रथाङ्गपाणिः = कृष्ण
तुषारमूर्तेः = चन्द्रमा
नक्तं = रात्रि

(a) नारद कृष्ण के पास रावण (शिशु.) का सन्देश लेकर आते हैं।
(b) रावण हिरण्यकशिपु का अवतार है।
(d) शिशुपाल इस महाकाव्य का प्रतिनायक है।

**55. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां,
मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।' - सम्प्रति कस्येयमुक्तिः?**

(a) हंसं प्रति नलस्य (b) नलं प्रति हंसस्य
(c) दमयन्तीं प्रति नलस्य (d) नलं प्रति दमयन्त्याः

उत्तर-(b)

नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग में हंस अपने वृतान्त को महाराजा नल से बताते हुए कहता है–

''फलेन मूलेन च वारि भूरुहां
मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।
त्वयाद्य तस्मिन्नपि दण्डधारिणा
कथं न पत्या धरणी ह्रणीयते।। (नै0 1/133)

अर्थ– जिस मेरी मुनि के समान जल भूमि में उत्पन्न अर्थात् कमलों के फल तथा मूल इस प्रकार जीविका होती है उसके ऊपर भी दण्ड धारण करने वाले तुम्हारे ऐसे पति के आज पृथ्वी क्यों नहीं लज्जित होती?

56. लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः।
मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव।।
—इयमुक्तिः कामुद्दिश्य कथिता?

(a) शकुन्तलाम् (b) द्रौपदीम्
(c) महाश्वेताम् (d) सागरिकाम्

उत्तर-(d)

महाकवि हर्षदेव प्रणीत्-रत्नावली के द्वितीय अङ्क में राजा सागरिका को लक्ष्य करके कहते हैं–

अपने विलास से लक्ष्मी को तिरस्कृत करने वाली अपनी लीलीपूर्वक चाल से कमलों को कम्पित करने वाली चित्रांकित यह कौन हमारे प्रति अधिक पक्षपात प्रकट करती हुई राजहंसी की तरह मन में प्रवेश कर रही है।

(a) अभिज्ञानशाकुन्तल की नायिका–शकुन्तला है।
(b) वेणीसंहार की नायिका–द्रौपदी है।
(d) कादम्बरी की परिचायिका–महाश्वेता, है।

57. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

a. विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः — 1. उत्तररामचरितम्
b. पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः — 2. हर्षचरितम्
c. तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः — 3. किरातार्जुनीयम्
d. लोके हि लोहेभ्यः कठिनतरा खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः — 4. शिशुपालवधम्

	A	B	C	D
(a)	4	2	3	1
(b)	1	3	4	2
(c)	2	1	3	4
(d)	3	4	1	2

उत्तर-(d)

(a) इमामहं वेद न तावकी धियं
विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां
रूजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः।। (कि. 1/37)

(b) गतं तिरश्चीन मनूरूसारथे;
प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः
पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः
किमेतदित्याकुल मीक्षितं जनैः (शिशु. 1/2)

(c) उत्पत्तिपरिपूतायः किमस्याः पावनान्तेरेः।
तीर्थोदकं च वहिनश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।। (उ. 1/13)

(d) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतयाः स्नेहमया बन्धुपाशाः यदाकृष्टा स्तिर्यञ्चोऽप्येवमाचरन्ति इति। (हर्षचरित 5 उच्छ्वास)

58. अवान्तरार्थविच्छेदे किमच्छेदकारणम्?

(a) बीजम् (b) बिन्दुः
(c) पताका (d) प्रकरी

उत्तर-(b)

धनञ्जयविरचित दशरूपक में अर्थप्रकृतियां पांच बतायी गयी है–

(1) बीज (2) बिन्दु
(3) पताका (4) प्रकरी
(5) कार्य

(a) बीज–स्वल्पोदिष्टस्तु तद्धेतुर्बीजं विस्तर्यनेकधा
अर्थ–उस फल का निमित्त बीज कहलाता है, जिसका आरम्भ में सूक्ष्म रूप से संकेत किया जाता है ओर आगे चलकर अनेक प्रकार से विस्तार होता है।

(b) बिन्दु–अवान्तरार्थ विच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्।
अर्थ–अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु के प्रयोजन में विच्छेद प्राप्त हो जाने पर जो उसके अविच्छेद का कारण होता है, वह बिन्दु कहलाता है।

59. 'अभवन्वस्तुसंबन्ध उपमापरिकल्पकः'—कस्यालङ्कारस्य लक्षणमिदम्?

(a) उपमा (b) अपह्नुतिः
(c) निदर्शना (d) उत्प्रेक्षा

उत्तर-(c)

जहाँ पदार्थों या वाक्यार्थो का अनुपपद्यमान सम्बन्ध उपमा की कल्पना कर लेता है उसे निदर्शना अलंकार कहते हैं।

(a) उपमा का लक्षण–साधर्म्यमुपमा भेदे
(b) अपह्नुति का लक्षण–प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्येत सा अपह्नुति
(d) उत्प्रेक्षा का लक्षण–सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।

60. वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः संक्षेपार्थः मध्यपात्रप्रयोजितः—कः?

(a) अङ्कास्यम् (b) अङ्कावतारः
(c) प्रवेशकः (d) विष्कम्भकः

उत्तर-(d)

दशरूपक के प्रथम प्रकाश में अर्थोक्षेपकों की संख्या पांच बताई गयी है–

(1) विष्कम्भक (2) चूलिका
(3) अङ्कास्य (4) अङ्कावतार
(5) प्रवेशक

बीते हुए और आगे होने वाले कथा भाग की सूचक संक्षिप्त अर्थ वाले तथा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त जो अर्थोपक्षेपक है वह विष्कम्भक कहलाता है।

जवनिका के भीतर स्थित पात्रों के द्वारा किसी अर्थ की सूचना देना चूलिका है।
अङ्क के अन्त में आने वाले पात्रों के द्वारा असम्बद्ध अग्रिम अङ्क के अर्थ की सूचना देने के कारण यह अङ्कास्य कहलाता है।
जहाँ अङ्क का अन्त हो जाने पर अङ्क का अभिन्न रूप से अवतरण हो जाता है वह अङ्कावतार कहलाता है।
उसी प्रकार नीच पात्रों द्वारा अनुदात्त उक्तियों से प्रयुक्त, दो अङ्कों के बीच में स्थित तथा शेष अर्थ का सूचक प्रवेशक कहलाता है।

61. हर्षचरिते रसायनः कः?

(a) व्याधिः (b) औषधिः
(c) वैद्यकुमारकः (d) राजसूनुः

उत्तर-(c)

हर्षचरित–बाणभट्ट की रचना है।
हर्षचरित 8 उच्छ्वासों में विभक्त है।
हर्षचरित के पञ्चम उच्छ्वास में सुषेण नाम के वैद्यकुमार की चर्चा की गई है।
सुषेण हर्षवर्द्धन के पिता के उपचारक थे।
हर्षवर्धन के पूछने पर सुषेण ने पिता जी की स्वास्थ्य में कुछ सुधार है ऐसा उत्तर दिया।

62. रावणभयात् हेमाद्रिगुहागृहान्तरं कः दिवसानि निनाय?

(a) कृष्णः (b) कौशिकः
(c) नारदः (d) वसुदेवः

उत्तर-(b)

रावण से भयभीत होकर इन्द्र ने सुमेरु पर्वत की शरण ली कौशिक शब्द के श्लेष से उनके समपापन का वर्णन किया जा रहा है–

''अशक्नुवत् सोढुमधीरलोचनः
सहस्त्ररश्मेरिव 'यस्य दर्शनम्
प्रविश्य हेमाद्रि गुहागृहान्तर
निनाय बिभ्यद्दिवासनानि कौशिक (शिशु. 1/53)

अर्थ–अधीर नेत्रों वाले इन्द्र ने सूर्य के सदृश जिस रावण का दर्शन सहन करने में असमर्थ होते हुए सुमेरु पर्वत की गुफा रूपी घर के भीतर घुसकर डरते हुए दिन बिताये।
(a) कृष्ण शिशुपाल के वध कर्ता हैं।
(c) नारद इन्द्र के सन्देशवाहक हैं।
(d) वसुदेव ही कृष्ण के नामान्तर हैं।

63. विबुधसद्मनि अप्सरसां कति कुलानि कादम्बर्याम् उक्तानि?

(a) द्वादश (b) त्रयोदश
(c) चतुर्दश (d) पञ्चदश

उत्तर-(c)

कादम्बरी का कथानक कल्पित है और हर्षचरित का ऐतिहासिक
कादम्बरी में प्रारम्भ में देव स्तुतिं, खल निन्दा और कविवंश वर्णन है। इसी आधार पर बाण ने स्वयं कादम्बरी को कथा कहा है–
''धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।''
कादम्बरी गद्य शैली में लिखी गई है।
कादम्बरी की कथा कल्पित है तथा इसका आधार ग्रन्थ वृहत्कथा है।
अर्थात् बाण ने वृहत्कथा को कादम्बरी का आधार बनाया है।

64. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः।' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) सन्देहः (d) अर्थान्तरन्यासः

उत्तर-(d)

इस सूक्ति में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु
प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः।। (अभि0 1/22)

अर्थ–यह अवश्य ही क्षत्रिय के द्वारा पत्नी के रूप में स्वीकार करने योग्य है, क्योंकि मेरा श्रेष्ठ मन इसको चाहता है। सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियां ही प्रमाण होती है।

65. 'अन्यदेवसहृदयलोचनामृतं तत्त्वान्तरे तद्वदेव सोऽर्थः' ध्वन्यालोककारमते 'सोऽर्थः' इत्यस्य कः आशयः?

(a) अभिधेयार्थः (b) प्रतीयमानार्थः
(c) लक्ष्यार्थः (d) सर्वार्थः

उत्तर-(b)

आचार्य आनन्दवर्द्धन प्रणीत ध्वन्यालोक ग्रन्थ 4 उद्योत में विभक्त है।

''योऽर्थः सहृदयश्लाघ्यः काव्यात्मेति व्यवस्थितः।
वाच्यप्रतीपमानाश्त्यौ तस्य भेदावुभौ स्मृतौ।। (ध्व0 2 का0)

अर्थ–सहृदयों द्वारा प्रसंशित जो अर्थ काव्य के आत्मा रूप में प्रतिष्ठित है।
उसके वाच्य और प्रतीयमान दो भेद कहे गये हैं।
यहाँ पर योऽर्थ शब्द प्रतीयमान के लिए आया है।
(a) अभिधा के द्वारा जो अर्थ बोधित होता है उसे अभिधेयार्थ कहते हैं।
(c) लक्षणा के द्वारा जो अर्थ बोधित होता है उसे लक्ष्यार्थ कहते हैं।

66. अङ्गिनो रसस्य अचलस्थितयो धर्माः के?

(a) गुणाः (b) रीतयः
(c) अलङ्काराः (d) रसाः

उत्तर-(a)

आचार्य मम्मट प्रणीत् काव्यप्रकाश के अष्टम् उल्लास में गुण तथा अलंकारों के भेद का निरूपण किया गया है–''ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।

उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः।। 66
जिस प्रकार शूरता इत्यादि आत्मा के धर्म हैं, उसी प्रकार के जो काव्य में प्रधानतया स्थित रस के धर्म हैं तथा नियत स्थिति वाले हैं, ऐसे रसोत्कर्ष के हेतु धर्म गुण कहलाते हैं।

(b) आचार्य वामन रीति को आत्मा का धर्म मानते हैं।

(c) जो अङ्ग अर्थात् अङ्गभूत शब्द और अर्थ के द्वारा विद्यमान होने वाले उस रस का हार इत्यादि के समान कभी उपकार करते हैं। ये अनुप्रास तथा उपमा इत्यादि अलंकार कहलाते हैं।

रस–गुण रस के धर्म होते हैं।

67. मण्डपसन्निवेशेषु नाट्यशास्त्रे न गण्यते?

(a) चतुरस्रः (b) त्र्यस्रः

(c) वर्तुलः (d) विकृष्टः

उत्तर-(c)

आचार्य भरतमुनि प्रणीत् नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय में प्रेक्षागृहों के विधि का निरूपण किया गया है–

''प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिप्रकारो विधिः प्रमृतः।
विकृष्टश्चतुरात्रश्च त्र्यस्त्रश्चैव प्रयोक्तृभिः।।
अर्थ–प्रयोक्ताओं के द्वारा सभी प्रेक्षागृहों की विधि तीन प्रकार की कही गई है–

(1) विकृष्ट (आयताकार) (2) चतुरस्त्र (वर्गाकृति)
(3) त्र्यस्त्र = त्रिभुजाकृति
आकार की दृष्टि से नाट्यगृह के तीन प्रकार बताए गए हैं–
(1) विकृष्टि (2) चतुरात्र (3) त्र्यस्त्र
माप की दृष्टि से भी ये तीन होते हैं–
(1) ज्येष्ठ (2) मध्यम (3) कनीय

68. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः
शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।'–
इत्युक्त्या कः प्रेरितः?

(a) अर्जुनः (b) युधिष्ठिरः

(c) वनेचरः (d) सुयोधनः

उत्तर-(b)

महाकवि भारवि प्रणीत् किरातार्जुयम् के प्रथम सर्ग में युधिष्ठिर की दीन हीन दशा देखकर द्रौपदी कहती है–

–भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते
विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः
शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।। (किरा. 1/32
अर्थ– राजन् इस समय 'वीर पुरुषों द्वारा निन्दित मार्ग पर स्थित आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध क्यों नहीं उद्दीप्त करता?

69. 'यत्किञ्चिल्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं- नाट्यशास्त्रे तत् केनोपमीयते?

(a) हास्येन (b) शृङ्गारेण

(c) शान्तेन (d) वीरेण

उत्तर-(b)

नाट्यशास्त्र के अनुसार कुल आठ रस बताए गये हैं–

(1) शृङ्गार (2) वीर
(3) हास्य (4) रौद्र
(5) बीभत्स (6) करुण
(7) भयानक (8) अद्भुत्
रसों में शृङ्गार प्रधान है क्योंकि वही काम का फल है तथा उसका संवाद सभी लोगों के हृदय में होता है। यह रति नामक स्थायी भाव से उत्पन्न होता है। यह उज्ज्वलवेषात्मक है। इस लोक में जो भी शुचि अर्थात् स्वच्छ, मेध्य अर्थात् पवित्र उज्ज्वल दीप्तिमान दर्शनीय तथा आकर्षक है।

70. तर्कसङ्ग्रहानुसारं शीतस्पर्शवत्त्वं कस्य लक्षणम्?

(a) पृथिव्याः (b) जलस्य

(c) वायोः (d) परदुःखस्य

उत्तर-(b)

अन्नमभट्टप्रणीत् तर्कसंग्रह के अनुसार जल का लक्षण है–शीतस्पर्शवत्य आपः।

अर्थात् जिसमें शीतस्पर्श रहता है, उसे जल कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है–(1) नित्य, (2) अनित्य
नित्यजल–परमाणुरूप होता है।
अनित्यजल–कार्य रूप होता है।
अनित्यजल पुनः तीन प्रकार का होता है।
(1) शरीर (2) इन्द्रिय (3) विषय
शरीर आदित्य लोक में प्रसिद्ध है।

इन्द्रिय रूप ग्राहकं।
A. पृथ्वी का लक्षण है–गन्धवती पृथ्वी।
C. वायु का लक्षण है–रूपरहित स्पर्शवान वायुः।

71. तर्कसङ्ग्रहानुसारं तैजसविषयः कतिविधः?

(a) त्रिविधः (b) द्विविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(c)

तर्कसंग्रह के अनुसार तेज का लक्षण है–

'उष्ण स्पर्शवत् तेजः–अर्थात् उष्ण स्पर्श जिसमें हो वह तेज है। यह दो प्रकार का होता है।

(1) नित्य (2) अनित्य

परमाणु रूप नित्य, कार्यरूप अनित्य होता है।
पुनः शरीर इन्द्रिय विषय के भेद से अनित्य तेज ३ प्रकार का होता है।
विषय रूप तेज 4 प्रकार का होता है–
(1) भौम (2) दिव्य (3) उर्दय (4) अकारज

72. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम्........

(a) चतुर्विधम् (b) त्रिविधम्
(c) पञ्चविधम् (d) सप्तविधम्

उत्तर-(d)

केवल चक्षुरिन्द्रिय से ग्रहण किये जाने वाला गुण रूप है। वह शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, के भेद से 7 (सात) प्रकार का होता है। यह रूप पृथ्वी, जल, तथा तेजस् द्रव्यों में रहता है। इनमें से पृथ्वी में पूर्वोक्त सातों रूप रहते हैं। न चमकने वाला श्वेत रूप जल में और चमकीला श्वेत रूप तेजस् में रहता है।

73. शुक्ताविदं रजतमिति ज्ञानम् अस्ति......

(a) प्रमा (b) उपमितिः
(c) यथार्थानुभवः (d) अप्रमा

उत्तर-(d)

तर्कसंग्रह के अनुसार–मिथ्याज्ञानं विपर्ययः
यथा–शुक्तौ रजतमिति।
मिथ्याज्ञान को विपर्यप या भ्रम कहते हैं जैसे–शुक्ति में यह रजत है। इस प्रकार का ज्ञान
(a) यथार्थ अनुभव को प्रमा कहते हैं।
(b) संज्ञा संज्ञी के सम्बन्ध का ज्ञान ही उपमिति है।
(c) यथार्थानुभवः प्रमा-यथार्थ अनुभव को प्रमा कहते हैं।

74. पञ्चावयवप्रयोग एव.........

(a) स्वार्थानुमानम् (b) निगमनम्
(c) उदाहरणम् (d) परार्थानुमानम्

उत्तर-(d)

अनुमान दो प्रकार का होता है।
(1) स्वार्थानुमान–स्वयमेव भूयोदर्शनेन
(2) परार्थानुमान
परार्थानुमान–यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमायं परं प्रति बोधयितुम् पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्येत तत् परार्थानुमानम्
जो स्वयं धूम से अग्नि का अनुमिति ज्ञान करके दूसरे को भी उसका ज्ञान कराने के लिए पांच अवयवों वाले वाक्य का प्रयोग किया जाता है वह परार्थानुमान है। यह पाँच प्रकार का होता है–
(1) प्रतिज्ञा (2) हेतु (3) उदाहरण (4) उपनय (5) निगमन

75. अधोलिखितयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

a. अर्थाबाधो **1. अप्रमाणम्**
b. गौरश्वः पुरुष इति **2. योग्यता**
c. प्रहरे प्रहरे उच्चरितपदानि **3. योग्यताभाववत्**
d. अग्निना सिञ्चति **4. सन्निधि-अभाववन्ति**

	A	**B**	**C**	**D**
(a)	2	1	4	3
(b)	1	3	2	4
(c)	3	2	4	1
(d)	2	3	4	1

उत्तर-(a)

(a) अर्थाभावो–योग्यता, अर्थ का बाध न होना योग्यता कहलाता है।
जैसे–वह्निना सिञ्चति
(b) गौरश्वः पुरुष इति–'अप्रमाणम्' गौरश्वः पुरुषों हस्ती यह वाक्य पदों का समूह होने पर भी प्रमाण नहीं है। अर्थात् यह अप्रमाण है।
(c) प्रहरे-प्रहरे उच्चरित पदानि–सन्निधि अभाववन्ति
एक प्रहार में 'गाम्' और दूसरे प्रहर में आनय इस प्रकार विलम्ब से पृथक-पृथक उच्चारित पद भी प्रामाणिक वाक्य नहीं है, क्योंकि उनमें परस्पर सन्निधि या सन्निकता नहीं है।
(d) अग्निना सिञ्चति–योग्यताभाववत्
वाहिनना सिंञ्चति यह वाक्य प्रमाण नहीं है
क्योंकि वहिन सेञ्शन क्रिया की योग्यता नहीं है। अर्थात् योग्यता का अभाव है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2014

संस्कृत

पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।'' यह इति सूक्ति केन वेदेन सम्बद्धा?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन (c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर-(b)

यह मंत्र ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेदकाण्वशाखीय संहिता के 40 वें अध्याय से उद्धृत है।

- कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः।
  एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। (ईशा. 2)
  अर्थात्– इस जगत् में शास्त्रनियत कर्मों को करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार किये जाने वाले कर्म मनुष्य में लिप्त नहीं होंगे, इससे भिन्न अन्य कोई प्रकार अर्थात् मार्ग नहीं है जिससे कि मनुष्य कर्म बन्धन से मुक्त हो सके।
- ऋग्वेद के उपनिषद् ग्रन्थ (1) ऐतरेयोपनिषद् (2) कौषीतकि उपनिषद्
- सामवेद के उपनिषद् ग्रन्थ (1) केनोपनिषद् (2) छान्दोग्योपनिषद्
- अथर्ववेद के उपनिषद् ग्रन्थ (1) मुण्डकोपनिषद् (2) प्रश्नोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्।

2. नासत्यौ इति कयोः नाम?

(a) द्यावापृथिव्योः (b) इन्द्रावरुणयोः
(c) अग्नीषोमयोः (d) अश्विनोः

उत्तर (d)

अश्विनोः देवता सदैव युगल रूप में उपस्थित होते हैं तथा अश्विनौ का द्विवचन में प्रयोग किया जाता है। इन्द्र, अग्नि, सोम के अनन्तर इसका महत्व सबसे अधिक है। इसकी स्तुति 50 सूक्तों में की गयी है। अश्विन देवता दो अलग-अलग भाई हैं। सुनहरी चमक, सौन्दर्य और कमल की मालाओं से वे सदा विभूषित हैं। इनका मार्ग स्वर्गमय है। इनको दंस्त्र (आश्चर्यपूर्ण) तथा नासत्य (सत्य से पूर्ण) कहा गया है।

- अश्विन देवताओं के लिए निचेतास, मधुयुवा, स्यूमगभास्ति आदि विशेषणों का प्रयोग किया गया है।
- अश्विनौ सूक्त ऋग्वेद सप्तम् मण्डल का 71 वाँ सूक्त है। इसके ऋषि वशिष्ठ तथा देवता युगल अश्विनौ हैं।
- द्यावापृथ्वी ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 160 वाँ सूक्त है। इसके ऋषि-दीर्घतमस्, देवता-द्यावापृथ्वी हैं।
- इन्द्रावरुण, ऋग्वेद के सप्तम् मण्डल का 83 वाँ सूक्त है। इसके ऋषि-वसिष्ठ तथा देवता इन्द्रावरुणौ हैं।

3. काण्वशाखा कस्य वेदस्य?

(a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

उत्तर (b)

काण्वशाखा, यजुर्वेद का भेद है।
यजुर्वेद की मुख्य रूप से दो शाखाएँ हैं
1. शुक्लयजुर्वेद 2. कृष्णयजुर्वेद

- शुक्लयजुर्वेद के दो भेद–वाजसनेयि या माध्यन्दिन शाखा तथा काण्व शाखा है।
- कृष्णयजुर्वेद के चार भेद–तैत्तिरीय शाखा, मैत्रायणी शाखा, कठ शाखा, कपिष्ठल शाखा है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएं हैं किन्तु इसमें केवल पांच शाखाएं ही महत्वपूर्ण हैं–शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन।
- सामवेद की तीन शाखाएं हैं-
  1. कौथुम
  2. राणायनीय
  3. जैमिनीय
- अथर्ववेद की नौ शाखाएँ उपलब्ध है–नवधाऽऽथर्वणो वेदः।

4. समीचीनम् उत्तरं चिनुतः

a. प्रश्नोपनिषद् 1.शुक्लयजुर्वेदः
b. शिक्षावल्ली 2.अथर्ववेदस्य पैप्पलादशाखा
c. ईशावास्योपनिषद् 3.कृष्णयजुर्वेदः
d. श्वेताश्वतरोपनिषद् 4. तैत्तिरीयोपनिषद्

	A	B	C	D
(a)	1	2	4	3
(b)	2	4	1	3
(c)	2	4	3	1
(d)	1	4	2	3

उत्तर (b)

प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेदीय उपनिषद् ग्रन्थ है। यह छः खण्डों में विभक्त है। इसमें छः ऋषि ज्ञान प्राप्ति के लिए महर्षि पैप्पलादि के समीप जाते हैं और अध्यात्म सम्बन्धी उत्तर पूछते हैं।

- शिक्षावल्ली, यजुर्वेद के तैत्तिरीयोपनिषद् में उपलब्ध है। इसके 7 वें, 8 वें एवं 9 वें अध्यायों को तैत्तिरीयोपनिषद् कहते हैं। 7 वें अध्याय को शिक्षावल्ली के रूप में जाना जाता है। इसके 6 भेद हैं-

  1. वर्ण   2. स्वर
  3. मात्रा   4. बल
  5. साम   6. सन्तान
- ईशावास्योपनिषद्, शुक्लयजुर्वेद का माध्यन्दिन शाखा पर प्राप्त सबसे महत्वपूर्ण उपनिषद् है। इसमें 18 मंत्र हैं।
- श्वेताश्वतरोपनिषद्, कृष्णयजुर्वेदीय उपनिषद् है। इसमें सांख्य, योग तथा वेदान्त का विवेचन किया गया है।

5. सामवेदेन सम्बद्धा अस्ति

(a) छान्दोग्योपनिषत्   (b) कठोपनिषत्
(c) ईशावास्योपनिषत्   (d) ऐतरेयोपनिषत्

उत्तर (a)

छान्दोग्योपनिषद् में आठ अध्याय या प्रपाठक हैं। प्रथम तथा द्वितीय अध्याय में साम एवं उद्गीथ की धार्मिक व्याख्या की गयी है। ''सर्व खल्विदं ब्रह्म'' का सिद्धान्त इसी उपनिषद् में वर्णित है।

- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद के कठशाखा से सम्बन्धित है। इसमें दो अध्याय है तथा प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्ली हैं।
- ईशावास्योपनिषद्, शुक्लयजुर्वेद का उपनिषद् है।
- ऐतरेय उपनिषद्, ऋग्वेद से सम्बन्धित है। इसमें तीन अध्याय हैं। जिनमें सृष्टिवाद, आदर्शवाद, आत्मवाद पर विचार किया गया है।

6. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इति कुत्र विद्यते?

(a) ऋग्वेदे   (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) अथर्ववेदे   (d) ऐतरेयोपनिषदि

उत्तर (b)

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' बृहदारण्यकोपनिषदि से उद्धृत है। यह शतपथ ब्राह्मण के 14 वें काण्ड का अन्तिम भाग है। शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित है।
''ऊँ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृत गमय।।''
अर्थात् मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

7. वरुणस्य विशेषणम् अस्ति-

(a) उरुचक्षाः   (b) वज्रहस्तः
(c) गोपाः   (d) बलदाः

उत्तर (a)

वरूण सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 25 वाँ सूक्त है। इसके ऋषि शुनःशेप, देवता-वरूण हैं। ''कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरूणं करामहे। मृलीकायोरुचक्षसम्'' अर्थात्–शासकीय शक्ति से शोभायमान होने वाले, संसार में सबको देखने वाले त्रिकालदर्शी और सबका नेतृत्व करने वाले वरूण देवता को हम सुख को प्राप्त करने के लिये कब बुलावेंगे अर्थात् उनके आगमन से कब हमारे कर्मों की पूर्णता होगी और हमें सुख मिलेगा।

उरूचक्षसम्- उरुः चक्षः यस्य तम् अथवा उरु चष्टे तम्।

- वज्रहस्तः शब्द इन्द्र का विशेषण है।
- गोपाः शब्द अग्नि का विशेषण है।
- आत्मदा शब्द मित्रावरूण का विशेषण है।

8. 'ज्योतिषम्' इति वैदिककालनिर्धारणस्य आधारः केन प्रतिपादितः?

(a) मैक्समूलरेण   (b) कीथमहोदयेन
(c) बालगङ्गाधरतिलकेन   (d) विण्टरनित्ज़महोदयेन

उत्तर (c)

श्री बालगङ्गाधर तिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल छः हजार ई.पू. से चार हजार ई.पू. माना है। इन्होंने विभिन्न नक्षत्रों में वसन्त संपात के आधार पर यह तिथि निर्धारित की है–

1. अदिति काल–6000-4000 ई. पू.
2. मृगशिरा काल–4000-2500 ई. पू.
3. कृत्तिका काल–2500-1400 ई. पू.
4. सूत्र काल–1400-500 ई. पू.

- मैक्समूलर ने वैदिक काल निर्धारण में गौतम बुद्ध के अविर्भाव को आधार माना है।
- श्री विन्टरनित्स के अनुसार वेदों का रचनाकाल 2500 ई. पू. है।

9. याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा?

(a) ऋग्वेदेन   (b) अथर्ववेदेन
(c) यजुर्वेदेन   (d) सामवेदेन

उत्तर (c)

यजुर्वेद शिक्षा के अन्तर्गत दो शिक्षाएँ आती हैं–
1. भरद्वाज शिक्षा   2. याज्ञवल्क्य शिक्षा
याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं। इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है। वर्णों के भेद, स्वरूप, परस्पर साम्य-वैषम्य लोप, आगम, विकार, प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

- ऋग्वेदीय शिक्षा–1. पाणिनीय शिक्षा 2. ऋक्प्रातिशाख्य शिक्षा
- सामवेदीय शिक्षा का एकमात्र- नारदीय शिक्षा उपलब्ध है।
- अथर्ववेदीय शिक्षा–माण्डव्य शिक्षा

10. भाव-काल-कारक-सङ्ख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः भवन्ति-

(a) नाम्नः (b) निपातस्य
(c) उपसर्गस्य (d) आख्यातस्य

उत्तर (d)

आचार्य यास्ककृत निरूक्त में चार प्रकार के पद प्रसिद्ध हैं- 1. नाम 2. आख्यात 3. उपसर्ग 4. निपात
आख्यात का लक्षण–'भावप्रधानम् आख्यातम्' अर्थात् जिसमें भाव की प्रधानता होती है उसे आख्यात कहते हैं। किन्तु दूसरे लोग इसकी व्याख्या अन्य प्रकार से भी करते हैं।
उनका कथन है–भाव, काल, कारक, संख्या ये चार आख्यातार्थ होते हैं। इन चारों में से भाव सबसे प्रधान अर्थ है। इसलिए आख्यात को 'भावप्रधानम् आख्यातम्' कहा गया है।

- 'सत्त्वप्रधानानि नामानि' अर्थात जिसमें सत्त्व की प्रधानता होती है। उसे नाम कहते हैं।
- उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति निपाताः- भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध कराने वाले को निपात कहते हैं।

11. वैदिकशब्दानां सविस्तरं विवेचनं कुत्र उपलभ्यते?

(a) व्याकरणे (b) कल्पे
(c) निरुक्ते (d) शिक्षायाम्

उत्तर (c)

वेद के छः अङ्गों में निरुक्त का महत्वपूर्ण स्थान है। निरूक्त निघण्टु की टीका है। निघण्टु में वेद के कठिन शब्दों का क्रमबद्ध रूप में संकलन है। यास्क ने निघण्टु पर निरुक्त नामक भाष्य लिखा।
वेदमन्त्रों के अर्थज्ञान के लिए व्युत्पत्ति का ज्ञान आवश्यक है और वेदमन्त्रों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति निरुक्त करता है, अतः उसके अर्थज्ञान के लिए निरुक्त का अध्ययन आवश्यक है।

- व्याकरण भी वेदाङ्ग का मुख्य अङ्ग है। जिसे महाभाष्यकार ने प्रधान अङ्ग माना है–'मुखं व्याकरणम् स्मृतम्'
- कल्प एवं शिक्षा वेदाङ्ग के अङ्ग है।
- कल्प भी वेदाङ्ग का एक अङ्ग है।
- शिक्षा वेदाङ्ग का प्रथम अङ्ग है

12. अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत्

(a) निरुक्तम् (b) व्याकरणम्
(c) छन्दस् (d) ज्योतिषम्

उत्तर (a)

आचार्य सायण नें निरुक्त शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि अर्थज्ञान के लिए दूसरे की सहायता बिना निरपेक्ष रूप से पदों का जहाँ पर कथन हो उसे निरुक्त कहते हैं–**''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्।''**

- दुर्गाचार्य का कथन है कि अर्थ का ज्ञान कराने के कारण ही यह वेदाङ्गों में प्रधान है क्योंकि व्याकरण तो शब्दों पर ही विचार करता है और कल्प मन्त्रों का विनियोग बतलाता है। किन्तु निरुक्त शब्द और अर्थ के निर्वचन का ज्ञान कराता है।
  व्याकरण, छन्द एवं ज्योतिष वेदाङ्ग के अङ्ग हैं।

13. वैदिकमन्त्रोच्चारणप्रयोजनार्थ कस्य वेदाङ्गस्य अध्ययनम् अनिवार्यम्?

(a) छन्दसः (b) कल्पस्य
(c) ज्योतिषस्य (d) निरुक्तस्य

उत्तर (a)

वेद के छः अङ्गों में छन्द को वेद का पाद कहा गया है। (छन्दः पादौ तु वेदस्य) अर्थात् वेद में छन्दः शास्त्र का वही स्थान है जो शरीर में पैरों का। जिस प्रकार पैर के बिना मनुष्य चलने में असमर्थ होता है, उसी प्रकार छन्दों के ज्ञान के बिना वेद पङ्गु है। भाव यह है कि छन्दों के सम्यक् ज्ञान के बिना वैदिक मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण नहीं हो सकता। यास्क ने छन्दः शब्द की व्युत्पत्ति 'छद्' (छदि) धातु से बतायी है जिसका अर्थ होता है आच्छादित करना। आच्छादित करने के कारण इसे छन्द कहते हैं–'छन्दांसि छादनात्'

14. 'छन्दः सूत्रम्' इत्यस्य रचयिता कः?

(a) दुर्गाचार्यः (b) यास्काचार्यः
(c) पिङ्गलाचार्यः (d)माधवाचार्यः

उत्तर (c)

छन्दः शास्त्र के प्रवर्त्तक आचार्य पिङ्गल है। षड्गुरू शिष्य ने वेदार्थ–दीपिका में छन्दः शास्त्र के रचयिता पिङ्गल को पाणिनि का अनुज बताया है। इनके द्वारा रचित छन्दः शास्त्र वैदिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के प्रतिपादन की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। इस ग्रन्थ में कुल आठ अध्याय हैं। प्रथम से चतुर्थ अध्याय के 7 वें सूत्र तक वैदिक छन्दों का प्रतिपादन है। तत्पश्चात् लौकिक छन्दों का वर्णन है।
हलायुध नें इसके ऊपर 'मृतसंजीवनी' नामक टीका लिखी है।

- दुर्गाचार्य ने निरुक्त पर 'ऋज्वर्थ वृत्ति' नामक टीका लिखी है।
- यास्क आचार्य का ग्रन्थ–निरुक्त है।
- माधवाचार्य ने यजुर्वेद पर भाष्य लिखा था।

15. प्रत्ययसर्गः कतिविधः?

(a) द्विविधः (B) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (D) पञ्चविधः

उत्तर (c)

ईश्वरकृष्ण प्रणीत् सांख्यकारिका में प्रत्ययसर्ग के चार भेद बतलाये गये हैं।
''एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाशक्ति तुष्टिसिद्धयाख्यः।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत्।। (सांख्य का. 46)
बुद्धि के परिणाम से होने वाली यह सृष्टि ४ प्रकार की होती है जिनके नाम हैं–विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि और सिद्धि। इसके पचास भेद होते हैं। जिनका हेतु है, गुणों में न्यूनता और अधिकता रूप वैषम्य के कारण उनका एक दूसरे के द्वारा दमन किया जाना।

- सांख्य के अनुसार प्रमाण तीन प्रकार का होता है-प्रत्यक्ष अनुमान तथा शब्द।
- विपर्यय पाँच प्रकार का होता है–अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश।

16. साङ्ख्यानुसारं सृष्टिकारणं किम्?

(a) पुरुषः (b) प्रकृतिः

(c) ब्रह्म (d) प्रकृति-पुरुषसंयोगः

उत्तर (d)

सांख्य के अनुसार, सृष्टि की उत्पत्ति प्रकृति-पुरुष के संयोग से ही होती है। उसके बिना सम्भव नहीं है।

''पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्याऽर्थं तथा प्रधानस्य।

पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।। (सां. का. 21)

अर्थ–पुरूष के द्वारा प्रधान का दर्शन अर्थात् भोग के लिए तथा पुरूष के कैवल्य के लिए गमनशक्ति विहीन पङ्गु और दर्शनशक्तिविहीन अन्धे के संयोग के समान दोनों प्रधान और पुरुष का भी संयोग होता है और उस संयोग से सृष्टि होती है।

- सांख्य के अनुसार पुरूष न कारण है और न ही कार्य है। अर्थात् 'पुरूषः न प्रकृतिः न विकृतिः'
- सांख्य के अनुसार प्रकृति केवल कारण है।
- सांख्य में पुरूष को ही ब्रह्म मान लिया गया है वही आत्मा है वही ब्रह्म है।

17. साङ्ख्यैः कति तत्त्वानि स्वीकृतानि?

(a) त्रयोदश (b) पञ्चदश

(c) चतुर्विंशतिः (d) पञ्चविंशतिः

उत्तर (d)

सांख्य के अनुसार कुल 25 तत्त्वों की गणना की गयी है।

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।

षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।। सां. का. 3

कारण रूपा प्रकृति किसी की विकृति नहीं है। महत् इत्यादि सात तत्त्व प्रकृति भी है और विकृति भी है। सोलह तत्त्वों का समुदाय केवल विकार है। पुरूष न प्रकृति है और न विकृति है।

25 तत्त्व–

प्रकृति = केवल कारण

महत् = 7 तत्त्व (महत्तत्त्व, अहङ्कार तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध,

विकृति = 16 (मन + 5 ज्ञानेन्द्रियां + 5 कर्मेन्द्रियां + 5 महाभूत)

पुरुष = न प्रकृति और न ही विकृति है।

करण के 13 भेद होते है।

18. उपमितिः नाम

(a) संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्धज्ञानम् (b) संज्ञा-ज्ञानम्

(c) संज्ञिज्ञानम् (d) सादृश्यज्ञानम्

उत्तर (a)

आचार्य केशवमिश्र प्रणीत् तर्कभाषा के तृतीय प्रमाण उपमान के प्रसंग में उपमिति की चर्चा की गयी है-

''संज्ञा संज्ञिसम्बन्ध प्रतीतिः'' अर्थात् किसी वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं। यहाँ गवय (नीलगाय) शब्द संज्ञा है। जिस वस्तु का नाम होता है वह संज्ञी है। यहाँ जो पशुविशेष वन में भेजा गया है वही संज्ञी है।

इन दोनों का सम्बन्ध इस प्रकार जाना जाता है–इस पशुविशेष को गवय कहते हैं (= पिण्डविशेष की गवय संज्ञा है) अथवा गवय शब्द इस पशुविशेष का वाचक है। संज्ञा तथा संज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति ही उपमान का फल है और यही उपमिति प्रमा है।

- किसी वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे- नीलगाय
- जिस वस्तु का नाम होता है वह संज्ञि है।
- सादृश्य ज्ञान ही उपमिति का करण है।

19. शब्दज्ञानं नाम-

(a) अक्षरज्ञानम् (b) शब्दज्ञानम्

(c) शक्तिज्ञानम् (d) वाक्यार्थज्ञानम्

उत्तर (d)

आचार्य केशवमिश्र प्रणीत् तर्कभाषा के चतुर्थ प्रमाण (शब्द प्रमाण) में शब्द के फल का विवेचन किया गया है।

शब्द प्रमाण का फल 'आप्तवाक्यं शब्दः' इस शब्द प्रमाण के 'आप्त' तथा 'वाक्य' शब्द की व्याख्या करने के उपरान्त फल के विषय में बदलाते हैं-

इस प्रकार यह वाक्य आप्तपुरुष के द्वारा प्रयुक्त होकर शब्द नामक प्रमाण कहलाता है। इसका फल है वाक्य के अर्थ का ज्ञान। वह शब्द नामक प्रमाण लोक तथा वेद में समान रूप से होता है। किन्तु लोक में अन्तर यह है कुछ व्यक्ति आप्त होते हैं और कुछ नहीं। कुछ ही परन्तु वेद में तो सभी वाक्य परमात्मा रचित हैं अतः सभी प्रमाण हैं क्योंकि सभी आप्तवाक्य हैं।

20. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः?

(a) पञ्चविधः (b) चतुर्विधः

(c) षड्विधः (d) त्रिविधः

उत्तर (c)

इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष प्रत्यक्ष ज्ञान का निमित्त होता है, वह 6 प्रकार का होता है–

इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्राहेतुः स षड्विध एव।

यथा 1. संयोग 2. संयुक्त समवाय

3. संयुक्तसमवेतसमवाय 4. समवाय

5. समवेत समवाय 6. विशेषण विशेष्य भाव

1. **संयोग**–यदा चक्षुषा घटविषयं ज्ञानं जन्यते तदा चक्षुरिन्द्रियं घटोऽर्थः। अर्थात् जब चक्षु द्वारा घट आदि विषय का ज्ञान होता है तब चक्षु इन्द्रिय है, घट विषय है। इन दोनों का सम्बन्ध संयोग होता है।
2. **संयुक्तसमवाय**–जब चक्षु आदि से घट में रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है उसे संयुक्त समवाय कहते हैं।
3. **संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष**–जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूपत्व आदि का ग्रहण होता है। उसे संयुक्त समवायसन्निकर्ष कहते हैं।
4. **समवाय सन्निकर्ष**–जब श्रोत्रेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण होता है तब श्रोत्र, इन्द्रिय हैं। शब्द अर्थ है, इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय है।
5. **समवेतसमवाय सन्निकर्ष**–जब शब्द में समवेत शब्दत्व आदि जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है उसे समवेत समवायसन्निकर्ष कहते हैं।
6. **विशेषण विशेष्य भाव सन्निकर्ष**–जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर यहाँ 'भूतल पर घट नहीं है' इस प्रकार घट के अभाव का ग्रहण होता है तब उसे विशेषण-विशेष्य-भाव सन्निकर्ष कहते हैं।

तर्कभाषाकार के अनुसार-

हेत्वाभास के पांच भेद- 1. प्रतिज्ञा 2. हेतु 3. उदाहरण 4. उपनय 5. निगमन

प्रमाण के चार भेद- 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द

अलौकिक सन्निकर्ष के तीन भेद- 1. सामान्य लक्षण 2. ज्ञानलक्षण 3. योगज

21. नित्यद्रव्यवृत्तिः विशेषास्तु–एव।

(a) अनन्ता (b) पञ्च
(c) षट् (d) चत्वारः

उत्तर (a)

- नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव। अर्थात्–जो नित्य द्रव्यों में रहता है उसे विशेष कहते हैं और वह अनन्त होता है।

आचार्य अन्नंभट्ट प्रणीत् तर्कसंग्रह ग्रन्थ में-

पदार्थ के सात भेद- 1. द्रव्य 2. गुण 3. कर्म 4. सामान्य 5. विशेष 6. समवाय 7. अभाव

अभाव के चार भेद- 1. प्राग्भाव 2. प्रध्वंसाभाव 3. अत्यन्ताभाव 4. अन्योन्याभाव

कर्म के पांच भेद- 1. उत्पेक्षपण 2. अवक्षेपण 3. प्रसारण 4. आकुंचन 5. गमन

22. वेदान्तसारानुसारम् अधिकारी भवति-

(a) ब्रह्मचारी (b) गृहस्थः
(c) साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता (d) अज्ञः

उत्तर (c)

आचार्य सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत् वेदान्तसार में साधनचतुष्टयसम्पन्न प्रमाता ही अधिकारी होता है।

अनुबन्ध चतुष्टय

1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध 4. प्रयोजन

साधन चतुष्टय

1. नित्यानित्यवस्तुविवेक 2. इहामुत्रार्थफलभोगविराग
3. शमादिषट्कसम्पत्ति 4. मुमुक्षुत्व

अधिकारी–जिसने इस जन्म में अथवा इससे पूर्व किसी जन्म में वेदों और वेदाङ्गों का विधिपूर्वक अध्ययन के द्वारा समस्त वेदान्त के अर्थ को समझ लिया है तथा काम्य, निषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित और उपासना कर्मों के अनुष्ठान से समस्त कल्मषों के दूर हो जाने के कारण जिनका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया और जो साधनचतुष्टय से सम्पन्न है, ऐसा प्रमाता इसका अधिकारी है।

23. वेदान्तसारानुसारं कर्माणि

(a) त्रिविधानि (b) पञ्चविधानि
(c) षड्विधानि (d) चतुर्विधानि

उत्तर (c)

वेदान्तसार के अनुसार कर्म के छः भेद हैं। वे क्रम इसके प्रकार हैं।

1. **शम**– श्रवण, मनन और निदिध्यासन को छोड़कर उनसे भिन्न विषयों से मन को हटा लेना ही शम कहलाता है।
2. **दम**– बाहय इन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाना ही दम है।
3. **उपरति**– अन्तरिन्द्रिय मन और श्रोत्रादि बाह्य इन्द्रियों का अपने-अपने विषय से निवृत्त कर लेने पर श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से उपरत होना ही उपरति है।
4. **तितिक्षा**– शीत, उष्ण, मान-अपमान जय-पराजय, लाभ-हानि आदि द्वन्द्वों को सहन करना ही तितिक्षा है।
5. **समाधान**– निगृहीत चित्त का श्रवणादि में तथा श्रवणादि के अनुकूल विषयों में स्थिर होना समाधान है।
6. **श्रद्धा**– गुरु के वचनों और वेदान्त वाक्यों में विश्वास करना ही श्रद्धा है।

24. वेदान्तसारानुसारं शरीराणि-

(a) चतुर्विधानि (b) पञ्चविधानि
(c) त्रिविधानि (d) षड्विधानि

उत्तर-(a)

वस्तुतः वेदान्त में शरीर अकेले की चर्चा कहीं पर नहीं की गयी है बल्कि इसके स्थान पर सूक्ष्म शरीर अथवा स्थूलशरीर की चर्चा की गयी है। जिसमे सूक्ष्म शरीर के 17 भेद एवं स्थूल शरीर के चार भेद हैं।

स्थूल शरीर– 1. जरायुज 2. अण्डज 3. स्वेदज 4. उद्भिज

- गर्भाशय से उत्पन्न होने वाले मनुष्य और पशु जरायुज हैं।
- अण्डे से उत्पन्न होने वाले पक्षी और सर्प आदि अण्डज हैं।
- धरती को फोड़कर उत्पन्न होने वाले तृण और वृक्ष आदि उद्भिज हैं।
- पसीने से पैदा होने वाले जुएँ और मच्छर आदि स्वेदज हैं।

25. वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि वर्णितानि-

(a) षोडशावयवानि (b) सप्तदशावयवानि
(c) एकादशावयवानि (d) द्वादशावयवानि

उत्तर (b)

वेदान्तसार के अनुसार सूक्ष्म शरीर सत्रह अवयवों वाले लिङ्ग शरीर हैं–

सूक्ष्मशरीर- पञ्च ज्ञानेन्द्रियां (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण)

पञ्चवायु कर्मेन्द्रियां = वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ।

पञ्च वायु = प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान,।

बुद्धि + मन = 2

5 + 5 + 5 + 2 = 17

इस प्रकार 17 अवयवों से सूक्ष्मशरीर की उत्पत्ति होती है।

- तर्कभाषा के अनुसार 16 पदार्थ हैं।
- सांख्य दर्शन के अनुसार एकादश इन्द्रियाँ हैं।

26. विभाषा-संज्ञाविधायकं सूत्रं किम् ?

(a) विभाषा चेः (b) विभाषा ङिश्योः
(c) विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ
(d) न वेति विभाषा

उत्तर (d)

विभाषा- संज्ञाविधायकं सूत्रं

न वेति विभाषा- अस्ति अर्थात्

जहाँ विकल्प से होने और न होने दोनों की स्थिति बनी रहती है वहाँ विभाषा संज्ञा होती है।

- विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ–सर्वनाम संज्ञा सूत्र/बहुव्रीहि समास में जो दिक्समास आता है, उसमें सर्वनाम संज्ञा विकल्प से होती है।
- बहुव्रीहि समास के प्रकरण में आने वाले दिङ्नामान्यन्तराले सूत्र से किया गया समास दिक् समास कहा जाता है।

27. 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रे 'अल्' इत्यनेन किं गृह्यते?

(a) वर्णाः (b) धातवः
(c) स्वराः (d) प्रातिपदिकम्

उत्तर (a)

एक अल् रूप जो प्रत्यय हो, वह अपृक्तसंज्ञक हो अर्थात् उसकी अपृक्त संज्ञा होती है। यहाँ पर एक अल् का तात्पर्य वर्ण से है।

जैसे–सखान् स् यहाँ 'स्' यह प्रत्यय है और एक अल् रूप भी है अतः इसकी अपृक्त संज्ञा हुई है।

भुवादयो धातवः–भू आदि प्रत्ययों की क्रिया के योग में धातु संज्ञा होती है।

स्वराः स्वयं राजन्ते (स्वर का स्वतंत्र उच्चारण होता है।)

धातु; प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् सार्थक शब्द स्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

28. भावलक्षणविषये का विभक्तिः?

(a) सप्तमी (b) षष्ठी
(c) पञ्चमी (d) चतुर्थी

उत्तर (A)

*यस्य च भावेन भावलक्षणम् (2-3-37) अर्थात् जिसकी क्रिया में कोई दूसरी क्रिया लक्षित होती है, उस क्रियावान में सप्तमी विभक्ति होती है।

उदा.–गोषु दुह्यमानासु गतः–यहाँ गाय में रहने वाली दोहन रूप क्रिया से किसी व्यक्ति की गमन क्रिया लक्षित की जा रही है। अतः प्रकृत सूत्र से गोषु दुह्यमानासु में सप्तमी विभक्ति हुई।

- षष्ठी शेषे सूत्र से सम्बन्ध को बताने वाली क्रिया को षष्ठी विभक्ति कहते हैं।

29. कारकप्रकरणे ण्यन्ताण्यन्तविचारः अधस्तनेषु कस्मिन् सूत्रे कृतः?

(a) गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ
(b) अणुदित् सवर्णस्य (c) णेरनिटि
(d) णो नः

उत्तर (a)

गति, बुद्धि (जानना), प्रत्यवसान (खाना) अर्थ वाली धातुएं, जिनका कर्म कोई शब्द हो ऐसी धातुएँ यथा पठ्, उच्चर् तथा अकर्मक धातुओं का जो अणिजन्त अवस्था का कर्ता है,वह णिजन्त अवस्था में कर्मसंज्ञक हो जाता है।

जैसे–अणिजन्त–णिजन्त

1. गत्यर्थक–शत्रून् अगमयत् स्वर्गम्–शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्

2. बुद्धयर्थक–वेदार्थम् स्वान् अवेदयत्–स्वे वेदार्थम् अविदुः

3. प्रत्यय–आशयत् च अमृतं देवान्–देवा अमृतम् आश्नन्

4. शब्दकर्म–वेदम् अध्यापयद् विधिम्–विधिः वेदम् अध्यैत

- अण् प्रत्यय जब उदित् होता है तब उसकी सवर्ण संज्ञा होती है।
- णेरनिटि सूत्र से ण को अनिट् आदेश होता है।
- णो नः सूत्र से ण को न आदेश होता है।

30. 'पञ्चमी' विना सार्वविभक्तिकः 'अम्' भावः कस्मिन् समासे विधीयते?

(a) तत्पुरुषे (b) बहुव्रीहौ (c) द्वन्द्वे (d) अव्ययीभावे

उत्तर (d)

नाऽव्ययीभावाद् अतोऽम् त्वपञ्चम्याः। (3-4-83)
अदन्त अव्ययीभाव में पञ्चमी विभक्ति को छोड़कर पर सुप् का लोप न हो, उसके स्थान में अम् आदेश हो।

A. तत्पुरुषः (अधिकारसूत्र) है। इस सूत्र से पहले तक अर्थात् बहुव्रीहि के पूर्व समास विधान करने वाले सूत्रों में इसका अधिकार है।
B. शेषो बहुव्रीहिः—शेष समास को बहुव्रीहि समास कहते हैं।
C. चार्थे द्वन्दः—च के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का समास होता है और उसकी द्वन्द्व संज्ञा होती है।

31. 'द्वयङ्गुलम्' इत्यत्र को लौकिकविग्रहः?

(a) द्वयोः अङ्गुल्योः समाहारः
(b) द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य (c) द्वे अङ्गुली यस्य
(d) द्वि च अङ्गुलिश्च

उत्तर (b)

'तत्पुरुषस्याऽङ्गुलेः संख्याऽव्ययाऽऽदेः' (5-4-86) संख्यावाचक और अव्यय जिसके आदि में और अङ्गुलि शब्द अन्त में हो उस तत्पुरुष को समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

जैसे—**द्वयङ्गुलम्** (द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य)
लौकिक विग्रह—द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य
अलौ. विग्रह—द्वि औ अङ्गुलि औ

इस अलौकिक विग्रह में तद्धितार्थ प्रमाण में 'तद्धितार्थोत्तर पद समाहारे च' से समास हुआ। प्रमाणार्थ में आये 'मात्रच्' प्रत्यय के 'द्विगोर्लुग् अनपत्ये' इस सूत्र से लोप होने पर प्रातिपदिक के अवयव होने से सुप् + औ दोनों का लोप हुआ। तब 'द्वि अङ्गुलि' इस स्थिति में संख्यापूर्वक तत्पुरुष होने पर प्रकृत सूत्र से अच् समासान्त प्रत्यय हुआ। अङ्गुलि के इकार का 'यस्येति च' से लोप होने पर 'द्वयङ्गुल' यह अकारान्त शब्द बना नपुंसकलिङ्ग प्रथमा के एकवचन में यह रूप सिद्ध हुआ।

32. अधस्तनयुग्मानां तालिकां चिनुत-

a. रात्राह्नहाः पुंसि — 1. उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्
b. अक्ष्णोऽदर्शनात् अनुवाकोऽधीतः — 2. अह्ना क्रोशेन वा
c. नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः — 3. अहोरात्रः
d. अपवर्गे तृतीया — 4. गवाक्षः

	A	B	C	D
(a)	4	3	2	1
(b)	3	4	1	2
(c)	2	1	4	3
(d)	1	4	3	2

उत्तर (b)

● रात्राह्नाहाः पुंसि (2-4-29),
रात्र, अहन् और अह ये जिनके अन्त में हों वे द्वन्द्व और तुतपुरुष पुल्लिङ्ग में होते हैं।
उदा.—अहोरात्रः—लौ. विग्रह—अह्नश्च रात्रिश्च तयोः समाहारः

● **अक्ष्णोऽदर्शनात् (5-4-76)**
नेत्र वाचक से भिन्न अक्षि शब्द को समासान्त अच् प्रत्यय होता है।
उदा.—गवाक्षः— लौ. विग्रह—गवाम् अक्षि इव

● **नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः—**
नियत रूप से उपस्थित होने वाला पदार्थ किसी शब्द के उच्चारण से जो अर्थ नियमपूर्वक होता है, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। उदा.—उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

● अपवर्ग का अर्थ है क्रिया की समाप्ति होने पर फल की प्राप्ति। अपवर्ग द्योतित होने पर काल और मार्गवाची शब्दों में अत्यन्त संयोग गम्यमान होने पर तृतीया विभक्ति होती है।

33. सामान्यतया 'घि' इति संज्ञा कस्य भवति?

(a) पुल्लिङ्ग-शब्दस्य (b) स्त्रीलिङ्ग-शब्दस्य
(c) नपुंसकलिङ्ग-शब्दस्य (d) अलिङ्ग-शब्दस्य

उत्तर (a)

शेषो घ्यसखि।
जिनकी नदी संज्ञा नहीं है ऐसे ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्दों की घि संज्ञा होती है, ''सखि शब्द को छोड़कर''।
जैसे—रवि, कवि, मुनि, ऋषि, भानु, शम्भु, विष्णु और कृशानु आदि शब्द हैं। ये शब्द ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त है। इनकी नदी संज्ञा नहीं होती और ये पुल्लिंङ्ग से बने हुए शब्द हैं, अतः इन सबकी घि संज्ञा हुयी है।

● **'यू स्त्राख्यौ नदी'**—दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिंङ्ग शब्द नदी संज्ञक होते हैं।
● **अव्ययीभावश्च**—अव्ययीभावसमास नित्यनपुंसकलिङ्ग होता है।

34. निर्धारणविषये कीदृशी विभक्तिव्यवस्था?

(a) तृतीया-पञ्चम्यौ (b) चतुर्थी-पञ्चम्यौ
(c) पञ्चमी-षष्ठ्यौ (d) षष्ठी-सप्तम्यौ

उत्तर (d)

जाति, गुण, क्रिया और संज्ञा (नाम) के द्वारा किसी समुदाय से एक देश को पृथक् करना निर्धारण कहलाता है। जिससे निर्धारण होता है उसमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे— **गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा**—(गायों में काली गाय बहुत दूध देने वाली है, यहाँ गो समुदाय से उसके एकदेश भूत काली गाय को गुण के आधार पर पृथक् किया गया है। अतः यतश्च निर्धारणम् से गो में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है।

35. 'चोराद् भयम्' चोरभयम् इत्यत्र पञ्चमीविभक्तिः केन सूत्रेण?

(a) पराजेरसोढः (b) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(c) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (d) हेतौ

उत्तर (b)

भीत्रार्थानां भयहेतुः— भय और त्राण अर्थों वाली धातुओं के योग में भय के कारण अर्थात् जिससे भय लगता है उसकी अपादान संज्ञा होती है।

जैसे—चोराद् भयम् = चोरभयम्

- पराजेरसोढः—परा उपसर्ग पूर्वक जि धातु से असह्य पदार्थ हो तो उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे- अध्ययनात् पराजयते
- रूच्यर्थ अर्थात् अभिलाषार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे- हरये रोचते भक्तिः।
- हेतु अर्थ के वाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- दण्डेन घटः।

36. अघोषध्वनिः अस्ति

(a) ज् (b) ध्
(c) त् (d) अ

उत्तर (c)

उच्चारण में गूँज न होने को अघोष कहते हैं। जिन वर्णों के उच्चारण में घोष नहीं होता, उन्हें अघोष वर्ण कहा जाता है।

जैसे—खरो विवाराः श्वासा: अघोषाश्च

उदा. खर् प्रत्याहार के वर्ण- क्, ख्, श्

च्, इ्, ष्

ट्, ठ्, स्, त्, थ्

प्, क्

- ज् वर्ण घोष प्रत्याहार के अन्तर्गत आता है।
- ध् वर्ण महाप्राण के अन्तर्गत आता है।
- अ वर्ण उदात्त, अनुदात्त, स्वरित के अन्तर्गत आता है।

37. समीचीनम् उत्तरं चिनुत-

a. यणः 1. स्पर्शाः
b. शलः 2. प्रातिपदिकम्
c. कादयो मावसानाः 3. अन्तःस्थाः
d. अर्थवदधातुरप्रत्ययः 4.ऊष्माणः

	A	B	C	D
(a)	4	3	1	2
(b)	3	4	1	2
(c)	2	3	1	4
(d)	1	3	4	2

उत्तर (b)

A. यणः—यणोऽन्तःस्थाः—यण् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं। अन्तःस्थ का मतलब बीच में रहने वाला।
जैसे—य्, व्, र्, ल् ये 4 वर्ण स्वर और व्यञ्जन के बीच में हैं।

- शल् ऊष्माणः—शलों का ऊष्म नाम भी सार्थक है। क्योंकि इनके उच्चारण में जोर अधिक पड़ता है।
  जैसे—ष्, श्, स्, ह।
- कादयो मावसानाः स्पर्शाः—क् से लेकर म् तक के वर्ण स्पर्श ध्वनि हैं।
- अर्थवदधातुरप्रत्ययः—धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

38. ''निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।'' इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?

(a) दुष्यन्तस्य (b) नलस्य
(c) रघोः (d) रामचन्द्रस्य

उत्तर (b)

प्रस्तुत श्लोक श्रीहर्षप्रणीत् नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग का पहला श्लोक है—

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां
तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः
स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः।।।।

अर्थात् जिस भूपति की कथा का आस्वाद लेकर देवता अमृत का भी वैसा आदर नहीं करते (जैसे उसकी कथा का करते हैं), यशमण्डल को श्वेत छत्र बनाये, तेजों का पुञ्ज और उत्सवों से देदीत्यमान वह भूपति नल था।
अतः प्रस्तुत श्लोक में नल की कथा का वर्णन किया गया है।

- अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के नायक दुष्यन्त थे।
- राम के पूर्वज रघु थे।
- उत्तररामचरितम नाटक के नायक पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र थे।

39. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी कः?

(a) विनयन्धरः (b) जयन्धरः
(c) रुधिरप्रियः (d) सुन्दरकः

उत्तर (a)

आचार्य भट्टनारायण प्रणीत् वेणीसंहार 6 अङ्कों का नाटक है। इसमें कुल 209 श्लोक हैं।
यह वीर रस में निबद्ध है।
गुण एवं रीति—ओज गुण, गौणी रीति है।
अलंकार— उपमा, रूपक आदि अलंकार है।
प्रमुखपात्र— भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन, दुर्योधन, अश्वत्थामा, कृष्ण, सहदेव आदि हैं।
गौणपात्र— जयन्धर (युधिष्ठिर का अन्तःपुर सेवक (कञ्चुकी) विनयन्धर (दुर्योधन का अन्तःपुर सेवक (कञ्चुकी)
चार्वाक (दुर्योधन का सखा कपटमुनि, राक्षस)

40. 'मनोरथा नाम तटप्रपाताः' इयम् उक्तिः उपलभ्यते-

(a) रत्नावल्याम् (b) वेणीसंहारे
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) मृच्छकटिके

उत्तर (c)

प्रस्तुति सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अंक से उद्धृत है।

स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु
क्लिष्टं नु तावफलमेव पुण्यम्।
असन्निवृत्यै तदतीतमेते
मनोरथा नाम तटप्रपाताः।। (अभि. 6-10)

अर्थ—मित्र वह (शकुन्तला का मिलन) स्वप्न था? क्या वह माया थी? क्या वह मेरी बुद्धि का भ्रम था? क्या वह उतने ही फल वाला मेरा अत्यल्प पुण्य था? वह कभी न लौटने के लिए चला गया। ये मेरे मनोरथ नदी के किनारे के पतन के तुल्य हैं।

A. रत्नावली हर्ष की रचना है।
B. मृच्छकटिकम् राजा शूद्रक की कृति है।

41. 'लक्ष्मीचाञ्चल्यम्' अस्मिन्नुपवर्णितमस्ति-

(a) नैषधचरिते (b) रघुवंशे
(c) दशकुमारचरिते (d) कादम्बर्याम्

उत्तर (d)

महाकवि बाणभट्ट प्रणीत् कादम्बरी कथामुखम् गद्यकाव्य है। कादम्बरी गन्धर्वराज की पुत्री है। उसको उद्देश्य करके रची गई कथा कादम्बरी कहलाती है। क्योंकि 'कादम्बरीमधिकृत्य कृता कथा' इस अर्थ में कादम्बरी शब्द से अण् प्रत्यय होता है तथा स्त्रीलिङ्ग में 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होकर (कादम्बरी बना जिसका शाब्दिक अर्थ **मदिरा** होता है।

कादम्बरी के प्रमुख पात्र—

विदिशा, शूद्रक, चाण्डालकन्या, वैशम्पायन शुक, विन्ध्याटवी हारीत, जाबालि, उज्जयिनी के राजा तारापीड, विलासवती, चन्द्रापीड, शुकनाश, वैशम्पायन, इन्द्रायुध, हंस, गौरी, महाश्वेता, चित्ररथ, कादम्बरी, केयूरक।

Note—पुण्डरीक की माता का नाम—लक्ष्मी था।

- नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष कृत 22 सर्गों का महाकाव्य है। इसमें नल-दमयन्ती की कथा का वर्णन किया गया है।
- रघुंवश महाकाव्य महाकवि कालिदास कृत 19 सर्गों में निबद्ध है। राजा दिलीप एवं सुदक्षिणा के द्वारा नन्दिनी गाय की सेवा का वर्णन है।
- दशकुमारचरितम्—दण्डी कृत गद्यकाव्य है।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

a. रत्नावली	1.अश्वघोषः
b. वेणीसंहारम्	2.हर्षः
c. बालचरितम्	3.भट्टनारायणः
d. बुद्धचरितम्	4. भासः

	A	B	C	D
(a)	4	3	2	1
(b)	3	2	4	1
(c)	2	3	4	1
(d)	2	4	1	3

उत्तर (c)

रत्नावली हर्ष कृत 4 अकों की नाटिका है। इसमें राजा उदयन और सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका) के प्रणय और परिणय का वर्णन है। हर्ष की अन्य कृतियां- प्रियदर्शिका एवं नागानन्द है।

- भट्टनारायण का एक मात्र ग्रन्थ 'वेणीसंहार' (नाटक) प्राप्त होता है। शास्त्रीय दृष्टि से रत्नावली के बाद इसी का अत्यधिक महत्त्व है। अधिकांश नाट्याचार्यों ने आलोचना के लिए वेणीसंहार को आदर्श ग्रन्थ माना है।
- विशाखदत्त की प्रमुख कृति मुद्राराक्षस है।
- भास के 13 नाटकों को कथा स्रोत की दृष्टि से चार भागों में बाँटा जा सकता है—**(क) उदयनकथामूलक—** (1) प्रतिज्ञा यौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्ता **(ख) महाभारतमूलक** —(1) ऊरुभंग (2) दूतवाक्य (3) पञ्चरात्र (4) बालचरित (5) दूतघटोत्कच (8) कर्णभार (9) मध्यम व्यायोग
  (ग)—रामायण मूलक— (1) प्रतिमानाटक (2) अभिषेकनाटक
  (घ)—कल्पनामूलक— (1) अविमारक (2) चारुदत्त
- अश्वघोष के विषय में विस्तृत परिचय उपलब्ध नहीं है। अश्वघोष ने बुद्धचरित, सौन्दरानन्द और शारिपुत्रप्रकरण की पुष्पिका में जो निर्देश किया है उससे ज्ञात होता है कि साकेत के निवासी थे तथा इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था।

43. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायको भवति-

(a) राजहंसः (b) मानसारः
(c) राजवाहनः (d) पुष्पोद्भवः

उत्तर (b)

दशकुमारचरितम्, दण्डी की कृति है। इसमें आठ उच्छ्वास हैं। जिनमें क्रमशः ८ कुमारों का चरित वर्णित हैं—1. राजवाहन चरित, 2. अपहारवर्मा चरित, 3. उपहारवर्मा चरित, 4. अर्थपाल चरित, 5. प्रमति चरित, 6. मित्रगुप्त चरित, 7. मन्त्रगुप्त चरित, 8. विश्रुत चरित

- प्रथम उच्छ्वास 'राजवाहन चरित' में राजवाहन नायक एवं मानसार प्रतिनायक है।
- प्रमुख वर्णन—पुष्पपुर, इन्द्रजाल, काममञ्जरी वृत्तान्त, विदेह कल्पसुन्दरी, विकटवर्मा वृत्तान्त, श्रावस्ती, नवमल्लिका कुन्दुवती वृत्तान्त, कलिंग देश कनकलेखा, मंजुवादिनी आदि से सम्बद्ध वर्णन है।

44. रत्नावल्यां द्वितीयाङ्कस्य नाम

(a)मदनमहोत्सवः (b) कदलीगृहम्
(c) सङ्केतः (d) इन्द्रजालिकम्

उत्तर (b)

रत्नावली नाटिका के द्वितीयाङ्क का नाम कदलीगृहम् है।
रत्नीवली नाटिका हषकृत है। इसमें चार अङ्क है-
(1) मदन महोत्सव (2) कदलीगृहम् (3) संकेत (4) ऐन्द्रजालिक
हर्ष की अन्य रचनाएं- प्रियदर्शिका एवं नागानन्द है।

45. कस्य काव्यं नारिकेलफलसम्मितम्?

(a) भारवेः (b) कालिदासस्य
(c) माघस्य (d) बाणस्य

उत्तर (a)

महाकवि भारवि के काव्य को नारिकेन फल के सदृश बतलाया गया है। जैसे नागरिक अन्दर से कोमल बाहर से कठोर होता है। उसी प्रकार महाकवि भारवि का काव्य है। इन्होंने 18 सर्गों में निबद्ध किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की रचना की। वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, नीति,राजनीति, ज्योतिष, भूगोल, कृषि और कामशास्त्र आदि से संबद्ध वर्णन भारवि के अगाध पाण्डित्य के सूचक हैं। **भारवेरर्थगौरवम् भारवेरिव, भारवेः। 'प्रकतिमधुरा भारविगिरः'** आदि सूक्तियाँ वस्तुतः कवि की गरिमा को प्रकट करती हैं।

46. ''सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।'' अयं पद्यांशः कुत्र अस्ति?

(a) नैषधचरिते (b) रघुवंशे
(c) शिशुपालवधे (d) मेघदूते

उत्तर (c)

प्रस्तुत सूक्ति शिशुपालवधम् के प्रथमसर्ग से उद्धृत है–
''बलावलेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाध्यते तेन जगज्जिगीषुणा।
सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।
अनुवाद–जय की इच्छा करने वाला वह (शिशुपाल) बल के अभिमान से इस समय भी पूर्व जन्म की भांति संसार को पीड़ित कर रहा है। अत्यन्त स्थिर स्वभाव पतिव्रता नारी की तरह दूसरे जन्मों में भी पुरुष को प्राप्त होता है।

- नैषधीयचरितम्, श्रीहर्ष कृत 22 सर्गों का महाकाव्य है।।
- रघुवंश कालिदास कृत 19 सर्गों का महाकाव्य है।।
- मेघदूत कालिदास कृत खण्डकाव्य है।

47. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' इत्यत्र रसमध्ये ग्रहणं कृतम्

(a) केवलं रसस्य (b) केवलं भावस्य
(c) केवलं रसाभासस्य (d) रस-भाव-तदाभासादीनाम्

उत्तर (d)

''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' यहां रस के मध्य ''रस-भाव तथा उसके आभास'' आदि का ग्रहण किया गया है।
आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्यदर्पण में रस का लक्षण इस प्रकार दिया है–
'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। तथा काव्य लक्षण में रस को परिभाषित करते हुए कहते हैं–
''रसभावौ तदाभासौ भावस्य प्रशमोदयौ।
सन्धिः शबलता चेति सर्वेऽपि रसनाद्रसाः।। (सा. 3. 238)
रसक्षमता के कारण रस के साथ भावादि भी रस ही कहे जाते हैं–सर्वेऽपि रसनाद्रसाः।

48. साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः?

(a) षोडश (b) चतुर्विंशतिः
(c) अशीतिः (d) द्वादश

उत्तर (c)

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने लक्षणा के 80 भेद बतलाये हैं। रूढि में आठ तथा प्रयोजन में बत्तीस इस प्रकार 40 भेद पुनश्च पद तथा वाक्यगत होने के कारण उन चालीसों में से प्रत्येक के दो भेद होते हैं। इस प्रकार कुल 80 भेद होते हैं।

49. उत्साहः कस्य रसस्य स्थायिभावः?

(a) रौद्रस्य (b) करुणस्य
(c) वीरस्य (d) वीभत्सस्य

उत्तर (c)

'उत्साह' वीर रस का स्थायीभाव है। आचार्य विश्वनाथ कुल नव रसों की चर्चा अपने साहित्यदर्पण नामक ग्रन्थ में किये हैं, जो इस प्रकार द्रष्टव्य हैं-

रस	स्थायीभाव
श्रृंगार	रति
हास्य	हास
रौद्र	क्रोध
वीर	उत्साह
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा
शान्त	शम

50. विश्वनाथमते काव्यशरीरे रसस्य का स्थितिर्वर्तते?

(a)अलङ्कारवत् (b) आत्मवत्
(c) गुणवत् (d) रीतिवत्

उत्तर (b)

आचार्य विश्वनाथ प्रणीत् 'साहित्य दर्पण' के प्रथम परिच्छेद में रस की सामान्य रूप में चर्चा की गयी है।
वाक्यं रसात्मकं काव्यं–अर्थात् रस काव्य की आत्मा है।
जो आस्वादित किया जाता है। वही रस होता है। जैसे–शून्यं वासगृहं विलोक्य ...... हसता बाला चिरं चुम्बिता।। इस उदाहरण में काव्य के शरीररूपी आत्मा का उदाहरण है।

- अलंकार काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं।
- गुण काव्य की शौर्यता को बढाते हैं।
- आचार्य वामन के अनुसार रीति ही काव्य की आत्मा है- ''रीतिरात्मा काव्यस्य''

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2014
संस्कृत
पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. ऋक्सामच्छन्दोयजूंषि कस्मात् समुत्पन्नानि?

(a) पुरुषविशेषात् (b) यज्ञ-विशेषात्

(c) वाचः (d) पृथिव्याः

उत्तर–(b)

प्रस्तुत मन्त्र ऋग्वेद दशम् मण्डल पुरुष सूक्त से उद्धृत है–

''तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥9॥

अर्थ–जिसमें सभी कुछ होम कर दिया गया ऐसे उस यज्ञ से ऋचाएं (ऋग्वेद के मन्त्र) तथा साम (सामवेद के मन्त्र) उत्पन्न हुए। इससे गायत्री आदि छन्द उत्पन्न हुए और इससे ही यजुष् (यजुर्वेद के मन्त्र) उत्पन्न हुए।

विशेष–सर्वहुतः–जिसमें सभी कुछ हवन कर दिया गया है, ऐसे उससे, **यज्ञात्** = यज्ञ से, जज्ञिरे- लिट्लकार प्र.पु. बहु. वचन

2. ऋग्वैदिकसूक्तिविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः?

(a) प्रतिदिनम् (b) रात्रिन्दिवा

(c) अन्धकारः (d) अन्धकारनाशकः

उत्तर–(b)

प्रस्तुत सूक्त ऋग्वेद के अग्निसूक्त से सम्बन्धित है–

''उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।

नमो भरन्त एमसि॥''7'' अग्निसूक्त

अर्थ–हे रात्रि को प्रकाशित करने वाले अग्नि! हम लोग प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हुए तुम्हारे समीप आते हैं

विशेष–दोषावस्तः- दोषा च वस्तः च दोषावस्तम् ।

समाहार द्वन्द्व समास,

दोषा-रात्रि, वस्तः - दिन

भरन्त: = $\sqrt{\text{भृ}}$ + शतृ = भरत् + प्र. बहु.

- दिवेदिवे का अर्थ होता है–प्रतिदिनम्

3. पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकदेवः?

(a) इन्द्रः (b) अग्निः

(c) पूषन् (d) वरुणः

उत्तर–(a)

प्रस्तुत सूक्तिवाक्य ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के इन्द्र सूक्त का बारहवां सूक्त है–

''यः शश्वतो मह्येनो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान।

यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः॥''

(इन्द्रसूक्त 2/10)

अर्थ–जिसने अत्यधिक पाप को धारण करने वाले तथा अवज्ञा करने वाले बहुत से व्यक्तियों को वज्र से मार डाला, जो दर्पयुक्त के दर्प को सहन नहीं करता है, जो असुर का वध करने वाला है, हे मनुष्यों! वही इन्द्र है।

- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त अग्निसूक्त के नाम से जाना जाता है।

4. ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य का देवता?

(a) अग्निः (b) इन्द्रः (c) प्रजापतिः (d) वरुणः

उत्तर–(c)

ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य देवता प्रजापतिः अस्ति।

हिरण्यगर्भ सूक्त ऋग्वेद दशम मण्डल का 121वां सूक्त है। इसके ऋषि हिरण्यगर्भ तथा देवता क संज्ञक प्रजापति हैं। छन्द-त्रिष्टुप् है।

- अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके देवता–अग्नि, ऋषि–मधुच्छन्दा तथा छन्द गायत्री है।
- इन्द्रसूक्त ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का बारहवां सूक्त है। इसके देवता–इन्द्र, ऋषि–गृत्समद् तथा छन्द-त्रिष्टुप् है।

5. छान्दोग्यब्राह्मणं केन सम्बद्धम्?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन

(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर–(c)

छान्दोग्य ब्राह्मण, सामवेद के तलवकार शाखा से सम्बद्ध है। इस ब्राह्मण में दस अध्याय हैं। प्रारम्भ के दो अध्यायों को छोड़कर शेष आठ अध्यायों को 'छान्दोग्योपनिषद्' कहते हैं।

इसके अतिरिक्त एक अन्य उपनिषद् सामवेद में उपलब्ध है, जिसका नाम केनोपनिषद् है।

- सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध तलवकारोपनिषद् है। इसी को केनोपनिषद् और जैमिनीयोपनिषद् भी कहते हैं।
- ऋग्वेद के दो उपनिषद् उपलब्ध हैं–(1) ऐतरेयोपनिषद् (2) कौषीतकि उपनिषद्।
- यजुर्वेद के दो भाग हैं–(1) शुक्ल यजुर्वेद (2) कृष्ण यजुर्वेद।
- शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद्– (1) ईशोपनिषद् (2) बृहदारण्यकोपनिषद्।
- कृष्णयजुर्वेद के उपनिषद्–(1) तैत्तिरीयोपनिषद् (2) कठोपनिषद् (3) श्वेताश्वतरोपनिषद् (4) मैत्रायणी, (5) महानारायणोपनिषद्।
- अथर्ववेद के तीन उपनिषद् हैं–(1) मुण्डकोपनिषद् (2) माण्डूक्योपनिषद् (3) प्रश्नोपनिषद्।

6. 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते
(a) नासदीयसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) पृथिवीसूक्ते (d) कालसूक्ते

उत्तर–(a)

नासदीयसूक्त ऋग्वेद के 10 वें मण्डल का 129वां सूक्त है। इसके ऋषि-परमेष्ठी प्रजापति, देवता–सृष्टिस्थितिप्रलयकर्ता परमात्मा, छन्द–त्रिष्टुप् है।

''नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्।।

सृष्टि उत्पत्ति से पहले प्रलय-दशा में असत् तत्त्व नहीं था तथा सत्तात्मक तत्त्व भी नहीं था। रजः अर्थात् पृथिवी से लेकर पाताल पर्यन्त लोक नहीं थे। अन्तरिक्ष नहीं था तथा अन्तरिक्ष से परे भी जो कुछ है वह भी नहीं था। पुनः आवरण करने वाला तत्त्व क्या था? वह आवरण तत्त्व कहां था तथा किसकी संरक्षा में था? उस समय दुष्प्रवेश्य एवं अत्यन्त गहरा जल क्या था? अर्थात् वे सब नहीं थे।

- इन्द्रसूक्त ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का 12वां सूक्त है। इसके ऋषि-गृत्समद, छन्द-त्रिष्टुप् है।
- पृथ्वीसूक्त, अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है।
- कालसूक्त, अथर्ववेद के 10वें काण्ड का 135वां सूक्त है।

7. कठोपनिषत् केन वेदेन सम्बद्धा?
(a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर–(d)

कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से कठोपनिषद् सम्बद्ध है। इसमें कुल दो अध्याय और छः वल्लियां हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका प्रथम अध्याय ही मूल उपनिषद् है,दूसरा अध्याय बाद में जोड़ा गया है। क्योंकि इसमें योगसम्बन्धी विकसित विचारों एवं भौतिक पदार्थों की असत्यता सम्बन्धी विचारों के कारण परवर्ती सन्निवेश जान पड़ता है। प्रथम अध्याय में यम और नचिकेता का उपाख्यान तथा आत्मा और ब्रह्म की व्याख्या की गई है।

8. कृष्णयजुर्वेदस्य आरण्यकम् अस्ति
(a) छान्दोग्यारण्यकम् (b) ऐतरेयारण्यकम्
(c) शांखायनारण्यकम् (d) तैत्तिरीयारण्यकम्

उत्तर–(d)

आरण्यक ब्राह्मण के ही भाग हैं। एकान्त जनशून्य अरण्य में ऋषियों एवं मुनियों ने ब्रह्मचर्य में रत होकर जिस विद्या का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया है वे 'आरण्यक' कहलाते हैं। अरण्य में पढ़े जाने के कारण उन्हें 'आरण्यक' कहा जाता है। आरण्यक निम्न हैं–

1. ऋग्वेद के आरण्यक ग्रन्थ–(1) ऐतरेय आरण्यक (2) शांखायन आरण्यक
2. शुक्लयजुर्वेद का आरण्यक ग्रन्थ–(1) वृहदारण्यक
3. कृष्णयजुर्वेद का आरण्यक ग्रन्थ–(i) तैत्तिरीयारण्यक, (ii) मैत्रायणीय आरण्यक
4. सामवेद का आरण्यक ग्रन्थ (छान्दोग्य) तलवकार आरण्यक, जैमिनीय आरण्यक
5. अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक उपलब्ध नहीं है।

9. कः वेदानां भाष्यकारः न अस्ति?
(a) माधवाचार्यः (b) सायणाचार्यः
(c) मल्लिनाथः (d) यास्काचार्यः

उत्तर–(c)

मल्लिनाथ वेद के भाष्यकार नहीं हैं। ये वस्तुतः साहित्य के भाष्यकार हैं। आचार्य मल्लिनाथ ने साहित्य महाकाव्य किरातार्जुनीयम् पर **घण्टापथ** नामक टीका लिखा है।

- **सायण**–वेदों के भाष्यकर्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आचार्य सायण ने चारों वेदों पर प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण भाष्य लिखा है। उन्होंने सर्वप्रथम कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर भाष्य लिखा है।
- **माधवाचार्य**–माधव सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। सामवेद के दोनों भाग पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक पर उन्होंने भाष्य की रचना की है।
- **यास्काचार्य**–आचार्य यास्क निरुक्त के रचनाकार हैं। आचार्य यास्क ने वेदों के शब्दों को चुन-चुन कर निरुक्त की रचना की है।

10. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण स्वराणां .... सन्ति।
(a) त्रिविधभेदाः (b) चतुर्विधभेदाः
(c) पञ्चविधभेदाः (d) नवविधभेदाः

उत्तर–(a)

ऋक्प्रातिशाख्यानुसार स्वरों के तीन भेद हैं– (1) ह्रस्व, (2) दीर्घ , (3) प्लुत् ।

(1) **ह्रस्व-** ह्रस्व स्वरस्य उच्चारणकालः मात्रा ह्रस्वः (ह्रस्व स्वर का उच्चारण काल एक मात्रा काल वाला होता है) जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ।
(2) **दीर्घ-** दीर्घस्वरस्य उच्चारणकालः - द्वे दीर्घः । दीर्घस्वर वर्ण दो मात्रा वाला कहा जाता है। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ओ, ॠ, ऐ, औ ।
(3) **प्लुत् -** प्लुतस्य स्वरसंज्ञा उच्चारणकालः तिस्त्रः प्लुत उच्यते स्वरः । प्लुत स्वर वर्ण तीन मात्रा वाला कहा जाता है।

* **रक्त संज्ञा-** रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः। अनुनासिक वर्ण रक्त संज्ञक है।

11. ''आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्'' इति उक्तिः अस्ति
(a) ईशावास्योपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर–(b)

प्रस्तुत मन्त्र केनोपनिषद् के द्वितीय खण्ड से सम्बद्ध है–

प्रतिबोधविदितं मममृतत्वं हि विन्दते।

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्।। (केन. 2/4)

अर्थ–उपर्युक्त प्रतिबोध से उत्पन्न ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है, क्योंकि अमृतस्वरूप परमात्मा को मनुष्य प्राप्त करता है, अन्तर्यामी परमात्मा से परमात्मा को जानने की शक्ति प्राप्त करता है और उस विद्या ज्ञान से अमृतरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त होता है।

- ईशावास्योपनिषद्, शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है।
- कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इस उपनिषद् में यम-नचिकेता के सम्वाद का वर्णन किया गया है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी सम्वाद का वर्णन किया गया है।

12. नैरुक्त्यंयत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव …….. तदिहोच्यते।। इति पूरयत

(a) आरण्यकम् (b) पुराणम्
(c) ब्राह्मणम् (d) सूक्तम्

उत्तर–(c)

ब्राह्मणों का प्रतिपाद्य विषय तीन वर्गों में विभजित है–विधि, अर्थवाद और उपनिषद्। इनमें विधि भाग यज्ञ विषय प्रयोगात्मक नियमों का प्रतिपादन करता है। अर्थवाद में उपाख्यानों एवं प्रशंसात्मक कथाओं द्वारा प्रयोग विधान को सूक्ष्मता से समझाया गया है। उपनिषद् भाग में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारों का विवेचन है।

वाचस्पति मिश्र ने मन्त्रों का विनियोग, निर्वचन, प्रयोजन, अर्थवाद तथा विधि को ब्राह्मणों का प्रतिपाद्य बताया है–

''नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगःप्रयोजनम्।

प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।।''

- अरण्य में पढ़े जाने वाले वेद मन्त्रों को आरण्यक कहते हैं।
- आचार्य वेदव्यास प्रणीत् पुराणों की संख्या 18 है।
- ऋग्वेद में 10 मण्डल 1028 सूक्त 10555 मन्त्रों का वर्णन मिलता है।

13. आरण्यकानि सम्बद्धानि सन्ति

(a) ब्रह्मचर्याश्रमेण (b) गृहस्थाश्रमेण
(c) वानप्रस्थाश्रमेण (d) संन्यासाश्रमेण

उत्तर–(c)

एकान्त जनशून्य अरण्य में ब्रह्मचर्य में रत होकर ऋषियों ने जिस गम्भीर और चिन्तनपूर्ण विद्या का अध्ययन किया, उसे 'आरण्यक' कहते हैं। सायण ने ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य में लिखा है कि ''एकान्त अरण्य में रहने वाले को वानप्रस्थ कहते हैं।''

आरण्यकों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ब्रह्मविद्या का विवेचन तथा यज्ञों के गूढ़ रहस्य का प्रतिपादन करना है।

- **ब्रह्मचर्याश्रमेण**–ऋग्वेद में ब्रह्मचारी के अन्तर्गत महती शक्ति का प्रतिपादन किया गया है।
- **गृहस्थ आश्रम**–वेदों में गृहस्थ आश्रम को सब प्रकार के शारीरिक और मानसिक उन्नति का साधन बताया गया है।
- **संन्यासाश्रमेण**–संन्यास आश्रम में मनुष्य घर-बार छोड़कर संन्यासी बन जाता है।

14. ''उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहार स्वरितः'' इति सूत्राणां सूत्रकारः कः?

(a) पतञ्जलिः (b) पाणिनिः
(c) सायणः (d) यास्कः

उत्तर–(b)

उच्चैरुदात्तः–कण्ठ तालु आदि सखण्ड स्थानों के ऊपर के भाग से जिस अच् की उत्पत्ति होती है उसको उदात्त कहते हैं।

नीचैरनुदात्तः–कण्ठ तालु आदि सखण्ड स्थानों के नीचे के भाग से जिस अच् का उच्चारण होता है वह अनुदात्त होता है।

समाहार स्वरितः–उदात्तत्व और अनुदात्तत्व दोनों धर्मों का मेल जिस वर्ण में हो वह स्वरित होता है। अर्थात् तालु आदि स्थानों के मध्यभाग से जिस अच् का उच्चारण होता है, उसे स्वरित कहते हैं।

- महाभाष्य के रचनाकार महर्षि पतञ्जलि हैं।
- वेद भाष्यकार आचार्य सायण हैं।
- निरुक्त के रचनाकार आचार्य यास्क हैं।

15. कः पाठः अष्टविधः?

(a) क्रमपाठः (b) पदपाठः
(c) विकृतिपाठः (d) संहितापाठः

उत्तर–(c)

जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन-पाठ के भेद विकृतियों पाठों के आठ भेद बताए गए हैं–

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।

अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः।।

- वाजसनेयि प्रातिशाख्य के अनुसार अपृक्त आदि विशेष स्थलों को छोड़कर अवसानपर्यन्त क्रमपाठ कहलाता है।
- पद को परिभाषित करते हुए महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में लिखा है–**सुप्तिङन्तं पदम्।**
- **परः सन्निकर्षः संहिता**-वर्णों के अत्यन्त सन्निकटता को संहिता कहते हैं।

16. पाणिनीयशिक्षानुसारं 'वेदस्य श्रोत्रम्' अस्ति

(a) छन्दः (b) निरुक्तम्
(c) शिक्षा (d) व्याकरणम्

उत्तर–(b)

आचार्य पाणिनि ने अपने पाणिनीय शिक्षा नामक-ग्रन्थ में वेद के 6 अङ्गों का विभाजन निम्न प्रकार से किया है–

''छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।42।।

अर्थ–वेदशास्त्ररूपी पुरुष के चरण छन्द:शास्त्र तथा पिङ्गलमुनि प्रणीत् वृत्तशास्त्र को हाथ कहा गया है। इसी प्रकार उस पुरुष के नेत्र ग्रन्थ नक्षत्र आदि की गतिके ज्ञापक ज्योतिषशास्त्र को और कर्ण निरुक्त को माना गया है। वेदरूपी पुरुष की नासिका शिक्षाशास्त्र को पढ़कर तथा व्याकरण को मुख जानकर ही मनुष्य ब्रह्मलोक में सम्मानित होता है।

17. 'कल्पसूत्रम्' इति पारिभाषिकी संज्ञा अस्ति

(a) श्रौतसूत्राणाम् (b) गृह्यसूत्राम्
(c) धर्मसूत्राणाम् (d) श्रौत-गृह्य-धर्मसूत्राणाम्

उत्तर–(d)

वेद में विहित कार्यों को क्रमशः विसर्ग व्यवस्थित करने वाला शास्त्र कल्प कहलाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित याग-विधान के नियमों को संक्षेप में प्रतिपादित करने की दृष्टि से कल्पसूत्रों का निर्माण किया गया है। कल्पसूत्र के चार भाग हैं–(1) श्रौत्र सूत्र (2) गृह्य सूत्र (3) धर्म सूत्र (4) शुल्ब सूत्र।

18. 'छन्दः' इति वेदाङ्गस्य प्रतिनिधिग्रन्थः 'छन्दःसूत्रम्' केन रचितः?

(a) पाणिनिना (b) पतञ्जलिना
(c) व्याडिमुनिना (d) पिङ्गलेन

उत्तर–(d)

वेद के छः अङ्गों में छन्द को वेद का पाद कहा गया है (छन्दः पादौ तु वेदस्य) अर्थात् छन्द:शास्त्र का वही स्थान है जो शरीर में पैरों का।
छन्द:शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य पिङ्गल हैं। षड्गुरुशिष्य ने वेदार्थ-दीपिका में 'छन्द:शास्त्र' के रचयिता पिङ्गल को पाणिनि का अनुज बताया है।

- आचार्य पाणिनि अष्टाध्यायी के रचनाकार हैं। आचार्य पाणिनि ने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी को 8 अध्यायों में बांटा है।
- महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना की है। महाभाष्य पर कैय्यट ने प्रदीप नाम्नी टीका लिखी है।

19. 'निघण्टु' इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति

(a) छन्दः सूत्रम् (b) महाभाष्यम्
(c) निरुक्तम् (d) शिक्षासूत्राणि

उत्तर–(c)

निरुक्त एक प्रकार से निघण्टु का भाष्य है और निघण्टु वैदिक शब्दकोश के नाम से प्रसिद्ध है। सायण ने ऋग्वेद भाष्य के उपोद्घात में निघण्टु को भी निरुक्त कहा है। किन्तु निरुक्त निघण्टु से अलग है। निरुक्त एक वेदाङ्ग है और निघण्टु उसकी व्याख्या है।

यास्क के निघण्टु में वैदिक शब्दों का संग्रह किया गया है।

- छन्द:सूत्र, आचार्य पिङ्गल की रचना है।
- महाभाष्य, आचार्य महर्षि पतञ्जलि की रचना है।
- षड् वेदाङ्गों में शिक्षा वेदाङ्ग भी प्रथम वेदाङ्ग सूत्र के अन्तर्गत आता है।

षड् वेदाङ्ग निम्न हैं–(1) शिक्षा (2) कल्प (3)व्याकरण (4) निरुक्त (5) छन्द (6) ज्योतिष।

20. समीचीनम् उत्तरं चिनुत

a. रक्तसंज्ञः **1. व्यञ्जनसन्निपातः**
b. ईदूदेद्विवचनम् **2. समानाक्षराण्यादितः**
c. संयोगस्तु **3. अनुनासिकः**
d. अष्टौ **4. प्रगृह्यम्**

	A	B	C	D
(a)	4	2	3	1
(b)	3	4	1	2
(c)	1	2	3	4
(d)	3	2	4	1

उत्तर–(b)

- ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार, अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक होते हैं–

  ''रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः।''
- दीर्घ ईकारान्त, दीर्घ ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। उदाहरण–(1) हरी एतौ (2) विष्णू इमौ।
- अचों के व्यवधान से रहित हलों की संयोग संज्ञा होती हैं अर्थात् जिन दो व्यञ्जनों के बीच में स्वर न हो, उन दोनों की मिलकर संयोग संज्ञा होती है।
- जिन स्वरों के उच्चारण में समरूपता होती है उन्हें समानाक्षर स्वर कहते हैं। इनकी संख्या 8 है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ।

21. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन सम्बद्धम्?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर–(c)

यह सामवेद की राणायनीय शाखा से सम्बद्ध है। इसमें तीन-प्रश्न और 28 अध्याय हैं। प्रथम व द्वितीय प्रश्न में नौ-नौ अध्याय तथा तृतीय प्रश्न में दस अध्याय हैं। इसमें प्रथम एवं द्वितीय अध्याय में ब्रह्मचर्य एवं उपनयन का वर्णन है।

- ऋग्वेद का केवल वासिष्ठ धर्मसूत्र है।
- यजुर्वेद का बौधायन धर्मसूत्र, आपस्तम्ब धर्मसूत्र, हिरण्यकेशि धर्मसूत्र, विष्णु धर्मसूत्र, वैखानस धर्मसूत्र, हारीत धर्मसूत्र है।
- अथर्ववेद का कोई धर्मसूत्र नहीं है।

22. 'उनत्तीति' निरुक्ता अभिधीयते

(a) उदक् (b) उषस्
(c)आदित्यः (d) अग्निः

उत्तर–(a)

प्रस्तुत पद आचार्य यास्क प्रणीत् निरुक्त के द्वितीय अध्याय निर्वचन प्रकरण से सम्बन्धित है।
उदक् शब्द का निर्वचन है–**उदकं कस्मात् उनत्तीति सतः।** अर्थात् जो गीला करे वही उदक् है।

- उषस् का निर्वचन–**उच्छतीति सत्या रात्रेरपरः कालः।**

23. कति भावविकाराः?

(a) पञ्च (b) षड्
(c) सप्त (d) नव

उत्तर–(b)

आचार्य यास्क ने निरुक्त मे 6 प्रकार की क्रियाओं का वर्णन किया है–(1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति।

षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।

(1) **जायते**–उत्पन्न होता है।
(2) **अस्ति**–रहता है।
(3) **विपरिणमते**–परिवर्तित होता है।
(4) **वर्धते**–बढ़ता है।
(5) **अपक्षीयते**–क्षीण होता है।
(6) **विनश्यति**–नष्ट होता है।

24. वर्णलोपस्य उदाहरणम् अस्ति

(a) आस्थत् (b) ज्योतिः
(c) गतम् (d) द्वारः

उत्तर–(c)

आचार्य यास्क ने निरुक्त के द्वितीय अध्याय में अर्थ के अनुसार विभक्तियों में परिवर्तन किए हैं, जैसे–

(क) प्रत्तम, अवत्तम् आदि प्रयोगों में धातु के आदि भाग ही शेष रह जाते हैं।
(ख) स्तः सन्ति में आदिलोप का प्रयोग होता है।
(ग) गत्वा, गतम् इत्यादि उदाहरण वर्णलोप/अन्त्यलोप के अन्तर्गत आता है।
(घ) जग्मतु, जग्मुः इत्यादि उदाहरण उपधालोप का है।
(ङ) राजा, दण्डी इत्यादि उदाहरण उपधाविकार का है।
(च) तत्त्वा, इत्यादि उदाहरण वर्णलोप का है।
(छ) तृच् इत्यादि उदाहरण द्विवर्णलोप का है।
(ज) ज्यति, घन, बिन्दु इत्यादि उदाहरण विपर्यय का है।

25. ''अथ गौरित्यत्र कः शब्दः'' इत्यनेन किं प्रतिपाद्यते?

(a) ध्वनिः (b) स्फोटः
(c) मात्रा (d) स्वरः

उत्तर–(a)

आचार्य पतञ्जलि प्रणीत् महाभाष्य में कुछ विद्वानों का आक्षेप ध्वनि को शब्द मानने पर है।
प्रश्न यह उठता है कि गौः (गाय) यह जो ज्ञान है, उसमें शब्द किसे समझा जाए?
प्रश्न का उपपादन करने वाला उक्त ज्ञान में विषय रूप से आने वाले व्यक्ति आदि का क्रमशः निर्देश करता हुआ पुनः प्रश्न ही करता है कि वह जो गलकम्बल पूंछ, ककुद, खुर और सींगवाला पदार्थ अर्थात् पशु विशेष है वही शब्द है क्या?
इस पर तटस्थ पूर्व भाष्य के खण्डन करने वाले सिद्धान्ती के उत्तर का अनुवाद करता हुआ कहता है कि शब्द नहीं, वह तो द्रव्य है। इसी प्रकार क्रिया, गुण, आकृति इत्यादि को भी ध्वनि नहीं माना गया बल्कि–
'येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः।' अर्थात् जिसके उच्चारित किए जाने पर गलकम्बल, पूंछ, ककुद, खुर और सींगवाले पशु विशेष का ज्ञान होता है, वह तो शब्द है ।
अथवा ''प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्द इत्युच्यते ।''
अथवा लोक में व्यवहार करने वालों में पदार्थ के बोधक रूप से प्रसिद्ध वर्णरूप जो ध्वनिसमुदाय है, वही शब्द है।

- वाक्यपदीय के अनुसार शब्द को स्फोट माना गया है।
- मात्रा का प्रयोग परिमाण अर्थ में लिया गया है।
- स्वर तीन प्रकार का होता है–(1) ह्रस्व (2) दीर्घ (3) प्लुत।

26. 'आनि लोट्' इत्यनेन किं विधीयते?

(a) णत्वम् (b) षत्वम्
(c) कुत्वम् (d) मत्वम्

उत्तर–(a)

प्रस्तुत सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी के भ्वादिगण प्रकरण से सम्बन्धित है।
उपसर्ग में स्थित निमित्त से परे लोट् के स्थान में हुए आदेश 'आनि' के नकार को णकार होता है। जैसे–
प्रभवाणि–प्रभवानि यहां णत्व का निमित्त रकार प्र उपसर्ग में है। उससे पर आनि के नकार को णकार होकर प्रभवाणि रूप बनता हैं।

27. **अधोऽङ्कितानां युग्मानां शुद्धां तालिकां चिनुत**

a. टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मात्रच्तय पृठक्ठञ्कञ्क्वरपः		**1. ईद्यति**
b. लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः		**2. ऐधिषत**
c. आत्मनेपदेष्वनतः		**3. यादृशी**
d. ग्लेयम्		**4. पिच्छिलः**

	A	B	C	D
(a)	4	2	1	3
(b)	1	3	4	2
(c)	4	3	2	1
(d)	3	4	2	1

उत्तर–(d)

- अनुपसर्जन अकारान्त टिदन्त और ढ, अण्, द्वयसच्, दध्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ् और क्वरप् इनप्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे– **कुरुचरी, नदी, देवी, सौपर्णेयी, ऐन्द्री, औत्सी, ऊरुद्वयसी, उरुमात्री, पञ्चतयी, आक्षिकी, प्रास्थिकी, लावणिकी, यादृशी, इत्वरी।**
- लोम आदि तथा पिच्छ शन् एवं लच् धातु से तद्धित प्रत्यय होता है। जैसे–पिच्छलः।
- **आत्मनेपदेष्वनतः**–एध् धातु से पर इन् को अत् आदेश होगा क्योंकि यहां वह अकार से पर नहीं है। इस प्रकार **एधिषत** रूप बना।
- ग्लै धातु आदि वृद्धि होकर **ईद्यति** बना

28. **'धर्ममुच्चरते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?**

(a) उदश्चरः सकर्मकात् (b)अकर्मकाच्च
(c) पूर्ववत्सनः (d) समस्तृतीयायुक्तात्

उत्तर–(a)

उद् उपसर्ग पूर्वक सकर्मक चर् धातु से आत्मनेपद होता है। चर् धातु परस्मैपदी है। इससे उद् उपसर्ग के योग में सकर्मक होते हुए आत्मनेपद का नियम किया गया है। जैसे–
धर्ममुच्चरते–उद्उपसर्गपूर्वक चर् धातु सकर्मक है, इसलिए धर्ममुच्चरते में आत्मनेपद प्रत्यय का प्रयोग हुआ है।

- अकर्मक ज्ञा धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है। जैसे– **सर्पिषो जानीते।**
- सन् प्रत्यय आने से पूर्व जो धातु है उसके समान सन्नन्त से भी आत्मनेपद प्रत्यय होता है। जैसे–एधिषते।
- सम् उपसर्ग पूर्वक तृतीयान्त से युक्त चर् धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है, जैसे–**रथेन संचरते।**

29. **'अनुकरोति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?**

(a) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः (b) अनुपराभ्यां कृञः
(c) परेर्मृषः (d) व्याङ्परिभ्यो रमः

उत्तर–(b)

अनु और परा उपसर्ग पूर्वक कृत्तृ धातु से कतृगामी क्रियाफल में भी और गन्धनादि अर्थों में भी परस्मैपद होता है।
उदाहरण–**अनुकरोति, पराकरोति**–यहाँ अनु और परापूर्वक कृ धातु से परस्मैपद हुआ।

- अभि, प्रति और अति उपसर्ग से पर 'क्षिप् प्रेरणे' धातु से परस्मैपद प्रत्यय होता है। जैसे–**अभिक्षिपति।**
- परिपूर्वक मृष् धातु से परस्मैपद होता है। जैसे–**परिमृषति।**
- वि, आङ् और परि उपसर्ग पूर्वक रम् धातु से परस्मैपद प्रत्यय होता है। जैसे–**विरमति।**

30. **वाक्यपदीयकारेण स्फोटग्रहणाय कीदृशो ध्वनिर्निर्दिष्टः?**

(a) नित्यः (b) अनित्यः
(c) प्राकृत (d) वैकृतः

उत्तर–(c)

वर्णस्य ग्रहणे हेतुः प्राकृतोः ध्वनिरिष्यते।
स्थितिभेदनिमित्तत्वं वैकृतः प्रतिपद्यते।।

अर्थात् उच्चरित वर्ण मात्र के ग्रहण में हेतु ध्वनि को प्राकृत ध्वनि के नाम से जाना जाता है। जबकि इस भिन्न स्थिति में उसके ग्रहण में हेतुभूत तत्त्व को वैकृत ध्वनि कहा जाता है। यह ध्वनि प्राकृत ध्वनि से भिन्न होती है। अतः प्राकृत एवं वैकृत के भेद से ध्वनि दो प्रकार की होती है।

31. **रङ्गवर्णे कति मात्रा निर्दिष्टाः?**

(a) एका मात्रा (b) द्वे मात्रे
(c) तिस्रो मात्राः (d) बह्वयो मात्राः

उत्तर–(b)

पाणिनीय शिक्षा के अनुसार रङ्ग वर्ण की दो मात्रा होती है–
''हृदये चैकमात्रस्त्वर्द्धमात्रस्तु मूर्धनि।
नासिकायां तथार्द्ध च रङ्गस्यैवं द्विमात्रता।।28।।
अर्थात्–रङ्ग वर्ण की एक मात्रा हृदय में, अर्द्धमात्रा मूर्धा में तथा अर्द्धमात्रा नासिका में समुच्चारित होती है। इस प्रकार रङ्ग वर्ण की दो मात्राएं होती हैं। $\left(01+\frac{1}{2}+\frac{1}{2}=02 \text{ मात्राएं}\right)$

32. **'ग्रासमान-नियमः' केन सम्बद्धः अस्ति?**

(a) अर्थतत्वेन (b) ध्वनितत्त्वेन
(c) वाक्यतत्त्वेन (d) साहित्येन

उत्तर–(b)

विभिन्न भाषाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनमें समय-समय पर कुछ परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन भाषा की परिवर्तनशीलता के कारण होते हैं। कुछ परिवर्तन ऐसे हैं जो निम्न रूप से द्रष्टव्य हैं–
(1) ग्रिम नियम (2) ग्रासमान नियम (3) वर्नर नियम (4) तालव्य नियम (5) मूर्धन्य नियम

- ग्रासमान नियम मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण (ह्) ध्वनियां थीं। सामान्यतया प्रथम महाप्राण (ह्) ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण (ह्) हटाने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है।
- अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग सभी भाषाओं में एक प्रकार का नहीं है। उपर्युक्त उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए इनके तीन प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं।
- वाक्यों की रचना, वाक्यों के प्रकार, वाक्यों में परिवर्तन, वाक्यों में पदक्रम ही वाक्य का स्वरूप है।

33. का भारोपीया भाषा अस्ति?
(a) ग्रीक (b) कन्नड
(c) तेलुगू (d) मलयालम

उत्तर–(a)

भारोपीय परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बांटा जाता है–

शतम्-वर्ग		केन्टुम् वर्ग	
1.	भारत-ईरानी (आर्य)	6.	केल्टिक
2.	बाल्टो-स्लाविक	7.	जर्मानिक
3.	आर्मीनी	8.	इटालिक
4.	अल्बानी	9.	हिट्टाइट
5.	ग्रीक	10.	तोखारी

तेलगू, कन्नड़ और मलयालम् तीनों द्रविड़ परिवार की भाषाएं हैं।

34. समुद्रगुप्तस्य भारतदिग्विजयः कस्मिन् शिलालेखे अस्ति?
(a) मन्दसोरशिलालेखे (b) एलाहाबादशिलालेखे
(c) गिरनारशिलालेखे (d) आईहोलशिलालेखे

उत्तर–(b)

समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भलेख में भारत विजय का वर्णन है।
रचनाकार–हरिषेण
स्थान–इलाहाबाद (प्रयाग) उ.प्र.
भाषा–संस्कृत
लिपि–ब्राह्मी

- **यशोधर्मन का–मन्दसौर अभिलेख :** रचनाकार–वत्सभट्टि, भाषा–संस्कृत
- **रुद्रदामन का–गिरनार शिलालेख :** भाषा–संस्कृत, लिपि–ब्राह्मी
- **पुलकेशिन द्वितीय का–एहोल शिलालेख :** भाषा–संस्कृत, लिपि–दक्षिणी ब्राह्मी।

35. पृथिव्यां कतिविधं रूपमस्ति?
(a) द्विविधम् (b) सप्तविधम्
(c) षड्विधम् (d) पञ्चविधम्

उत्तर–(a)

आचार्य अन्नमभट्ट प्रणीत् तर्कसंग्रह के नौ द्रव्यों में प्रथम द्रव्य पृथ्वी का लक्षण देते हुए कहते हैं कि–
''तत्र गन्धवती पृथिवी''–उन नौ द्रव्यों में जो द्रव्य गन्ध गुण वाला है, वह पृथ्वी है। यह पृथ्वी नित्य और अनित्य रूप से दो प्रकार की है। परमाणु रूप पृथ्वी नित्य और कार्य रूप पृथ्वी अनित्य होती है। शरीर, इन्द्रिय और विषय के भेद से अनित्य पृथ्वी फिर तीन प्रकार की होती है। हम लोगों के शरीर पृथ्वी के हैं। पृथ्वी से बनी इन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय है, जो पृथिवी के विशेष गुण गन्ध को ग्रहण करती है। नित्या (परमाणुरूपा) एवं अनित्या (कार्यरूपा) के भेद से पृथिवी दो प्रकार की होती है।

- तर्कसंग्रह के अनुसार रस के षड् भेद होते हैं। मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय, तिक्त।
- तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म पांच प्रकार का होता है। उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन।

36. गुणविधेः उदाहरणमस्ति-
(a) सोमेन यजेन (b) दध्ना जुहोति
(c) राजा राजसूयेन
(d) दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत्

उत्तर–(b)

प्रस्तुत उदाहरण लौगाक्षिभास्कर प्रणीत् अर्थसंग्रह से लिया गया है। जिस विधि में क्रिया के अङ्ग का विधान किया गया हो, उसे गुणविधि कहते हैं। गुणविधि स्थल में क्रिया का विधान अन्य वाक्य से हुआ रहता है। उदाहरण के लिए–**दध्नाजुहोति।**
यहां होम क्रिया का विधान तो जुहुयात् वाक्य से ही हो चुका है।

- **'सोमेन यजेत्'** विशिष्ट विधि का उदाहरण है। गुण और कर्म दोनों के प्रमाणान्तर से अप्राप्त रहने पर गुण विशिष्ट कर्म का विधान करने वाली विशिष्ट विधि कहलाती है।
- **'दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत्'** उदाहरण प्रयोगविधि का है। प्रयोग प्राशुभाव की बोधक विधि प्रयोगविधि कही जाती है।

37. प्रयोगविधेः सहकारिकारणानि भवन्ति
(a) पञ्च (b) षट् (c) सप्त (d) नव

उत्तर–(b)

प्रयोगप्राशुभावबोधक विधि प्रयोगविधि है। यह अङ्गों के साथ एकवाक्यता को प्राप्त प्रधान विधि ही है–**प्रयोगप्राशुभावबोधकोविधिः प्रयोगविधिः।** श्रुति, अर्थ, पाठ, स्थान, मुख्य और प्रवृत्ति के भेद से प्रयोगविधि के छः सहकारि कारण हैं। इन्हीं छः सहकारि कारण को अर्थसंग्रह में छः प्रमाण कहते हैं।

- अर्थसंग्रह के अनुसार वेद को पांच विभागों में बांटा गया है– (1) विधि (2) मन्त्र (3) नामधेय (4) निषेध (5) अर्थवाद।

38. वेदान्तशास्त्रे प्रमेयं किं भवति?

(a) ईश्वरः (b) जीवः
(c) विराट् (d) तुरीयचैतन्यम्

उत्तर–(d)

इदमेव तुरीयं शुद्धचैतन्यमज्ञानादितदुपहितचैतन्याभ्यां।, अर्थात् अज्ञान की समष्टि और व्यष्टि तथा अज्ञान से उपहित चैतन्य (ईश्वर और प्राज्ञ) का आधारभूत जो अनुपहित चैतन्य होता है, उसको तुरीय चतुर्थ कहा जाता है।

- अद्वैतवेदान्त के अनुसार ब्रह्म को ही ईश्वर कहा गया है।
- वेदान्त के अनुसार जगत् को मिथ्या बताते हुए जीव को नश्वर बताया गया है।
- वेदान्त के अनुसार–व्यष्टि ज्ञान से उपहित चैतन्य को प्राज्ञ कहा गया है।

39. तत्वसाक्षात्कारोपायेष्वन्यतमः-

(a) उपक्रमः (b) उपसंहारः
(c) अभ्यासः (d) निदिध्यासनम्

उत्तर–(d)

सदानन्द प्रणीत् वेदान्तसार में 6 प्रकार के लिङ्गों का निश्चय करना ही श्रवण है।
लिङ्ग है–उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद और उपपत्ति।

(1) किसी प्रकरण के द्वारा प्रतिपाद्य अर्थ का उस प्रकरण के प्रारम्भ में और अन्त में उपपादन करना उपक्रम और उपसंहार है।
(2) प्रकरण प्रतिपाद्य वस्तु का उस प्रकरण के मध्य में पुनः-पुनः प्रतिपादन करना अभ्यास है।
(3) प्रकरणप्रतिपाद्य वस्तु का किसी अन्यप्रमाण के द्वारा विषय न बनाया जाना अपूर्वता है।
(4) किसी प्रकरण के द्वारा प्रतिपाद्य आत्मज्ञान का अथवा आत्मज्ञान के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान का जो प्रयोजन उस प्रकरण में वर्णित होता है, वही फल कहलाता है।
(5) प्रकरण के प्रतिपाद्य विषय की उस प्रकरण में स्थान पर प्रशंसा करना ही अर्थवाद है।

40. प्रकृतिः कतिभिः रूपैरात्मानं बध्नाति?

(a) सप्तभिः (b) अष्टभिः
(c) पञ्चभिः (d) चतुर्भिः

उत्तर–(a)

ईश्वरकृष्ण प्रणीत् सांख्यकारिका में प्रकृति को सात रूपों में बांधा गया है–

''रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना प्रकृतिः।
सैव च पुरुषार्थं प्रति विमोचयत्येकरूपेण।। सांख्य.का. 63।।

अर्थ–प्रकृति (भोग रूप) पुरुषार्थ के लिए सात (धर्म, अधर्म, अज्ञान, वैराग्य, राग, ऐश्वर्य और अनैश्वर्य) रूपों के द्वारा स्वयं अपने को ही बन्धन में डालती है और फिर वही प्रकृति (मोक्षरूप) पुरुषार्थ के लिए, केवल एक तत्त्वज्ञानात्मक रूप से अपने को बन्धनमुक्त भी कर लेती है।

- सांख्य में पुरुष की सिद्धि आठ रूपों से होती है।
- सांख्य के अनुसार विपर्यय के पांच भेद हैं।
- सांख्य के अनुसार प्रत्ययसर्ग के 4 भेद हैं–विपर्यय, अशक्ति तुष्टि, सिद्धि।

41. सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।
श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान्?

(a) कुम्भकर्णः (b) सुग्रीवः
(c) विभीषणः (d) मारीचः

उत्तर–(d)

संस्कृत साहित्य में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण आदिकाव्य समझा जाता है तथा वाल्मीकि आदिकवि माने जाते हैं।
उपर्युक्त श्लोक मारीच- रावण सम्वाद के समय कथित है जिसका तात्पर्य है कि प्रिय वचन बोलने वाले तो सुलभता से मिल जाते हैं किन्तु अप्रिय एवं हितकर बात कहने वाले लोग बड़े दुर्लभ होते है।
वाल्मीकि अनुष्टुप् छन्द के आविष्कारक माने जाते हैं।
वाल्मीकि रामायण 7 काण्डों में विभक्त है–(1) बालकाण्ड (2) अयोध्याकाण्ड (3) अरण्यकाण्ड (4) किष्किन्धाकाण्ड (5) सुन्दरकाण्ड (6) युद्धकाण्ड (7) उत्तरकाण्ड

42. रामायणे कस्मिन् काण्डे अहल्याशाप-विमोचन-वृत्तान्तोऽस्ति?

(a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) बालकाण्डे (d) सुन्दरकाण्डे

उत्तर–(c)

बालकाण्ड के आरम्भ के चार सर्गों में रामायण की रचना की पूर्वपीठिका दी गई है।
बालकाण्ड में क्रमशः निम्न वृत्तान्त इस प्रकार हैं–अयोध्या में दशरथ द्वारा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान, देवताओं की प्रार्थना, रामावतार, राम की बाल्यावस्था, विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण को ले जाने की याचना, बला-अतिबला विद्याओं की प्राप्ति, ताड़का वध, अहल्या उद्धार, शिव-धनुष का वृत्तान्त आदि।

- जटायु की रावण द्वारा हत्या, सीता-राम संवाद, पम्पा सरोवर आदि का वर्णन अरण्यकाण्ड में किया गया है।
- अयोध्याकाण्ड–राम का वन-गमन, कौशल्या का स्वस्ति वाचन, जाबालि का नास्तिक मत एवं राम द्वारा खण्डन आदि वर्णन।
- सुन्दरकाण्ड में 68 सर्ग हैं। इसमें अशोक वन में अन्वेषण, सीता-दर्शन, हनुमान का सीता को परिचय देना, राम की दी हुई अंगूठी देना इत्यादि का वर्णन सुन्दरकाण्ड में मिलता है।

43. भगवद्गीतायां तृतीयाध्यायस्य नाम-

(a) ज्ञानयोगः (b) कर्मयोगः
(c) साङ्ख्ययोगः (d) भक्तियोगः

उत्तर–(b)

व्यास प्रणीत् श्रीमद्भगवदगीता में कुल 18 अध्याय हैं–प्रथम अध्याय–अर्जुन विषाद योग, द्वितीय अध्याय–सांख्ययोग, तृतीय अध्याय–कर्मयोग, चतुर्थ अध्याय–ज्ञानकर्मसंन्यासयोग, पञ्चम अध्याय–कर्मसंन्यासयोग, षष्ठ अध्याय–आत्मसंयम योग, सप्तम अध्याय–ज्ञानविज्ञानयोग, अष्टम् अध्याय–अक्षरब्रह्मयोग, नवम् अध्याय–राजविद्याराजगुह्ययोग, दशम अध्याय–विभूति योग, एकादश अध्याय–विश्वरूपदर्शनयोग, द्वादश अध्याय–भक्तियोग, त्रयोदश अध्याय–क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग, चतुर्दश अध्याय–गुणत्रयविभागयोग, पञ्चदश अध्याय–पुरुषोत्तमयोग, षोडश अध्याय–दैवासुरसम्पदविभागयोग, सप्तदश अध्याय–श्रद्धात्रयविभागयोग, अष्टादश अध्याय–मोक्षसंन्यासयोग।

44. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते?

(a) मत्स्यपुराणे (b) शिवपुराणे
(c) विष्णुधर्मोत्तरपुराणे (d) अग्निपुराणे

उत्तर–(d)

पुराणों की संख्या 18 है। इसमें अग्नि के द्वारा वसिष्ठ को उपदेश दिए जाने के कारण इसे अग्निपुराण कहा गया है। यह भारतीय संस्कृति तथा विद्याओं का महाकोश है।
अग्निपुराण में 383 अध्याय तथा प्रायः साढ़े ग्यारह सहस्र श्लोक हैं। पुराणों में भूगोल, गणित और फलित ज्योतिष, विवाह और मृत्यु की धार्मिक क्रियाएं, शकुन विद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्य, व्याकरण, कोशनिर्माण आदि नाना विषयों पर प्रकाश डाला गया है। विश्वकोशात्मकता पुराण की विशिष्टता है।

- प्राचीनता तथा वर्ण्यविषय के विस्तार की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण पुराण है। जलप्रलय का वर्णन, प्रयाग माहात्म्य, काशीमाहात्म्य, नर्मदामाहात्म्य इत्यादि का वर्णन किया गया है।
- वायुपुराण को **'शिवपुराण'** भी कहा जाता है, इसमें 112 अध्याय एवं 10 सहस्र श्लोक हैं।
- विष्णुपुराण में पुराण के **'पुराणं पञ्चलक्षणम्'** प्राचीन स्वरूप की चर्चा की गई है।

45. शतसाहस्री इति कस्याभिधानमस्ति?

(a) शब्दकल्पद्रुमस्य (b) रामायणस्य
(c) महाभारतस्य (d) वराहपुराणस्य

उत्तर–(c)

वर्तमान महाभारत एक लाख से अधिक श्लोकों का ग्रन्थ है। इसलिए इसे **'शतसाहस्री संहिता'** भी कहते हैं। इसे अठारह पर्वों में विभक्त किया गया है, जो पुनः अनेक उपपर्वों तथा अध्यायों में विभक्त हैं।
महाभारत के अट्ठारह पर्व हैं–(1) आदिपर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराटपर्व (5) उद्योगपर्व (6) भीष्मपर्व (7) द्रोणपर्व (8) कर्णपर्व (9) शल्यपर्व (10) सौप्तिकपर्व (11) स्त्रीपर्व (12) शान्तिपर्व (13) अनुशासनपर्व (14) आश्वमेधिकपर्व (15) आश्रमवासिकपर्व (16) मौसलपर्व (17) महाप्रस्थानिकपर्व (18) स्वर्गारोहणपर्व। इनके परिशिष्ट के रूप में हरिवंश-पर्व है।

- रामायण में 24000 श्लोक हैं।
- वराहपुराण में विष्णु के वराह अवतार का वर्णन किया गया है। इसमें कुल 24 सहस्र श्लोक हैं।

46. पुराणमिदमष्टादश-महापुराणेषु न गण्येत।

(a) नृसिंहपुराणम् (b) विष्णुपुराणम्
(c) ब्रह्मपुराणम् (d) कूर्मपुराणम्

उत्तर–(a)

पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है–महापुराण तथा उपपुराण।
महापुराणों की संख्या 18 है–(1) ब्रह्मपुराण (2) पद्मपुराण (3) विष्णु पुराण (4) वायुपुराण (5) भागवतपुराण (6) नारदपुराण (7) मार्कण्डेयपुराण (8) अग्निपुराण (9) भविष्यपुराण (10) ब्रह्मवैवर्तपुराण (11) लिङ्गपुराण (12) वराहपुराण (13) स्कन्दपुराण (14) वामन पुराण (15) कूर्मपुराण (16) मत्स्यपुराण (17) गरुड़पुराण (18) ब्रह्माण्ड पुराण।
उपपुराणों की संख्या भी 18 है–(1) सनत्कुमार, (2) नारसिंह, (3) स्कान्द, (4) शिवधर्म, (5) आश्चर्यपुराण, (6) नारदीय, (7) कापिल, (8) औशनस, (9) वारुण, (10) कल्कि, (11) कालिका, (12) माहेश्वर, (13) साम्ब, (14) सौर, (15) पाराशर, (16) मारीच, (17) भार्गव, (18) नन्द।

47. 'जय' इति कस्य नामान्तरम्?

(a) रामायणस्य (b) महाभारतस्य
(c) रघुवंशस्य (d) किरातार्जुनीयस्य

उत्तर–(b)

महाभारत के सूक्ष्म परीक्षण से यह ज्ञात होता है कि यह एक काल में की गई रचना नहीं है। पहले मूलकथा संक्षिप्त रूप में थी, वह क्रमशः विकसित होती गई। अन्त में शतसाहस्री संहिता के वर्तमान रूप में आई।
महाभारत का विकास क्रमशः जय, भारत तथा महाभारत के रूप में हुआ है।
जय–जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा। (महा. 1/62/20)
महाभारत के मङ्गलश्लोक में नारायण, नर और सरस्वती को नमस्कार करके 'जय' नामक ग्रन्थ के पाठ का स्पष्ट निर्देश है–

''नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वती न्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।''

व्यास के इस ग्रन्थ में 8800 श्लोक थे–

''अष्टौ श्लोकसहस्राणि अष्टौ श्लोक शतानि च।
अहं बोधि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा।।''

- रामायण, महर्षि वाल्मीकि की रचना है।
- रघुवंश महाकाव्य, कालिदास की रचना है।
- किरातार्जुनीयम्, भारवि की रचना है।

48. ''ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह'' इति कुतः उद्धृतः?

(a) ऋग्वेदात् (b) अथर्ववेदात्

(c) रामायणात् (d) महाभारतात्

उत्तर–(b)

पुराण शब्द प्राचीन धार्मिक साहित्य के अर्थ में वैदिक युग से ही प्रचलित है। धर्म का अङ्ग बनाकर प्राचीन कथाओं, वंशावलियों, इतिहास-भूगोल के तथ्यों एवं सामान्यतः ज्ञान-विज्ञान के सभी विषयों को पुराणों में कालक्रम से समाविष्ट कर दिया गया। महाभारत के समान 'पुराण' भी विकासशील साहित्य रहा है। जिसका अन्तिम सम्पादन व्यास ने ही किया था। अथर्ववेद के अनुसार पुराण का आविर्भाव ऋक्, साम, छन्द, यजुस् के साथ ही हुआ था।

''ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।'' (11/7/24)

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, तथा 10555 मन्त्र हैं।

49. धर्मशास्त्रीय-व्यवहारस्य को विषयः?

(a) स्मृत्याचारनिन्दा

(b) स्मृत्याचारविरुद्ध-परपीडा

(c) स्मृत्याचारप्रयुक्ता रूग्णता

(d) स्मृत्याचारप्रयुक्ता निर्धनता

उत्तर–(b)

''स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेवाऽऽधर्षितः परैः। अर्थात् दूसरों द्वारा स्मृति (धर्मशास्त्र) तथा आचार के विरूद्ध घर्षित होने पर पीड़ित व्यक्ति राजा से निवेदन करे तो वह व्यवहार (वाद) का विषय होता है।

50. मनुस्मृत्यनुसारं सर्वव्यसनमूलं किम्?

(a) कामः (b) क्रोधः (c) लोभः (d) मोहः

उत्तर–(c)

मनु प्रणीत् मनुस्मृति में सभी व्यसनों का मूल लोभ बतलाया गया है–

''द्वयोरप्येतयोर्मूलं पं सर्वे कवयोविदुः ।
तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ ।।

अर्थात् पण्डित जन कहते हैं कि काम एवं क्रोध गणों का मूल कारण लोभ है, इसलिए राजाओं को यत्नपूर्वक लोभ छोड़ देना चाहिए क्योंकि ये दोनों (दोष) गण लोभ से ही होते हैं।

51. मनुमते साक्षाद्धर्मस्य लक्षणं कतिविधम्?

(a) एकविधम् (b) द्विविधम्

(c) त्रिविधम् (d) चतुर्विधम्

उत्तर–(d)

मनुस्मृति के अनुसार साक्षाद्धर्म का लक्षण है–

''वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।2.12।।

अर्थात् वेद, स्मृति, सत्पुरुषो का आचार तथा जिस आचरण को करने से अपना मन प्रसन्न हो वह ऋषियों ने यह चार प्रकार का धर्म का साक्षात् लक्षण कहा है।

52. अमात्यपरीक्षोपायेषु नास्ति-

(a) धर्मोपधा (b) अर्थोपधा

(c) कामोपधा (d) मोक्षोपधा

उत्तर–(d)

अर्थशास्त्र के अनुसार सामान्य पदों पर अमात्यों की नियुक्ति करके मन्त्री और पुरोहित के सहयोग से राजा गुप्त उपायों के द्वारा उनके आचरणों की परीक्षा करें।

अमात्य परीक्षा के उपाय–

- **धर्मोपधा**–धर्मोपधा में राजा पुरोहित को किसी नीच जाति के यहां यज्ञ करने तथा पढ़ने के लिए नियुक्त करे।
- **अर्थोपधा**–अर्थोपधा से राजा किसी निन्दनीय या अपूज्य व्यक्ति का सत्कार करने के लिए सेनापति को आदेश दें।
- **कामोपधा**–कामोपधा से राजा किसी संन्यासिनी का वेष धारण करने वाली विशेष गुप्तचर को अन्तःपुर जाने की आज्ञा दें।
- **भयोपधा**–भयोपधा से नौका-विहार के लिए एक अमात्य दूसरे अमात्य को बुलावे।

53. अधोलिखितेषु को गूढपुरुषो न भवति?

(a) मन्त्री (b) स्त्री

(c) तीक्ष्णः (d) रसदः

उत्तर–(a)

''कापटिकोदास्थितगृहपतिवेदेहकतापसव्यञ्जनान्
सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च। कापटिक उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद तथा भिक्षुकी आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं।

- विद्या, वशीकरण, इन्द्रजाल, धर्मशास्त्र, शकुनशास्त्र, परीक्षाशास्त्र, कामशास्त्र तथा तत्सम्बन्धी नाचने-गाने की कला में निपुण हो उसे **सत्री** कहते हैं।
- द्रव्य के लिए अपनी प्राण की परवाह किए बिना हाथी, बाघ इत्यादि से भिड़ते हैं उन्हें **तीक्ष्ण** कहते हैं।
- अपने भाई-बन्धुओं से भी स्नेह न रखने वाले, क्रूर प्रकृति और आलसी स्वभाव वाले व्यक्ति **रसद** कहलाते हैं।

54. अमात्यपरीक्षायाः कतिविध उपायः?

(a) द्विविधः (b) त्रिविधः

(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर–(c)

अर्थशास्त्र के अनुसार अमात्यों की परीक्षा में 4 प्रकार के उपाय बताए गए हैं–(1) धर्मोपधा (2) अर्थोपधा (3) कामोपधा (4) भयोपधा

55. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वमानुषीषु सन्दृश्यते' इति उक्तिः कुत्र?

(a) उत्तररामचरिते (b) मालतीमाधवे

(c) मुद्राराक्षसे (d) अभिज्ञानशाकुन्तले

उत्तर–(d)

प्रस्तुत सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम् अंक से सम्बन्धित है–

स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वमानुषीषु
संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः।
प्रागन्तरिक्षगमनात् स्वमपत्यजात
मन्यैर्द्विजैःपरभृता खलु पोषयन्ति।।अभि. 5/22।।

अर्थात्–स्त्रियों में जो मनुष्य जाति से भिन्न स्त्रियां हैं, उनमें बिना शिक्षा के ही चतुरता देखी जाती है। जो ज्ञान सम्पन्न हैं, उनका तो कहना ही क्या? कोयल आकाश में उड़ने की सामर्थ्य होने तक अपने बच्चों का अन्य पक्षियों से ही पालन करवाती है।

- उत्तररामचरितम् भवभूति की रचना है।
- मालतीमाधवम् भवभूति की रचना है।
- मुद्राराक्षस विशाखदत्त की रचना है।

56. रत्नावल्यां प्रधानरसः कः?

(a) वीररसः (b) रौद्ररसः
(c) शान्तरसः (d) शृङ्गाररसः

उत्तर–(d)

रत्नावली का प्रधान रस शृङ्गार है। शृङ्गार का प्रभेद सम्भोग ही इसका सार है।
चित्रस्थ सागरिका के सौन्दर्य-वर्णन में शृङ्गार का परिपाक है। आलम्बनविभाव रूप में नायिका का वर्णन है–

''विधायापूर्वपूर्णेन्दुमस्या मुखम् भूद्ध्रुवम् ।
धाता निजा सनाम्भोजविनिमीलनदुःस्थितः।।

57. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

a. चलापाङ्गा दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं — **1. किरातार्जुनीयम्**
b. गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया — **2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
c. क्षणमिह मम कण्ठे बाहुपाशं विधेहि — **3. शिशुपालवधम्**
d. पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः — **4. रत्नावली**

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	4	3
(c)	3	2	1	4
(d)	4	3	2	1

उत्तर–(b)

- **चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं**
  रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः।
  करौ व्याधुन्वत्याः पिवसि रतिसर्वस्वमधरं
  वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलुकृती।।
  (अभिज्ञानशाकुन्तल 1/24)
- **निरत्ययं साम न दानवर्जितं**
  न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्।
  प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनीं
  गुणानुरोधेन बिना न सत्क्रिया।। (किरातार्जुनीयम् 1/12)
- **अलमलमतिमात्रं साहसेनामुना ते ।**
  त्वरितमयि विमुञ्च त्वं लतापाशमेतम् ।।
  चलितमपि निशेद्धं जीवितं जीवितेशे ।
  क्षणमिह मम कण्ठे बाहुपाशं विधेहि।। (रत्नावली 3/17)
- **उदासितारं निगृहीतमानसै**
  र्गृहीतमध्यात्मदृशा कथञ्चन।
  बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः
  पुरातनं त्वां पुरुषंपुराविदः।। (शिशुपालवधम् 1/33)

58. 'वियति विसारिणि शष्पपङ्क्तिमिव आरचयन्तः' इत्यत्र कः अलङ्कारः?

(a) उपमा (b) अर्थान्तरन्यासः
(c) उत्प्रेक्षा (d) विरोधाभासः

उत्तर–(c)

उत्प्रेक्षा का लक्षण–**सम्भावनमथोत्प्रेक्षाप्रकृतस्य समेन यत्।**
प्रकृत अर्थात् वर्ण्य उपमेय की सम उपमान के साथ सम्भावना उत्प्रेक्षा कहलाती है। जैसे–

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिरविफलता गता।।

- **विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः।**

वास्तव में विरोध होने पर भी विरोध की प्रतीत कराने वाले विरुद्ध रूप से जो वर्णन करना यह विरोध या विरोधाभास अलंकार कहलाता है। विरोधाभास अलंकार के 10 भेद होते हैं।

59. 'कादम्बरी' इति शब्दस्य कोऽर्थः?

(a) भीरुस्त्री (b) अप्सरा
(c) मदिरा (d) परिचारिका

उत्तर–(c)

कादम्बरी बाणभट्ट की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसके दो खण्ड हैं– पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध पूरे ग्रन्थ का दो-तिहाई भाग है तथा यह बाण की रचना है। उत्तरार्द्ध पूरी कादम्बरी का केवल तृतीयांश है और पुलिन्द भट्ट की कृति है। कादम्बरी संस्कृत के गद्य-साहित्य का समुज्ज्वल हीरक है।
भाषा तथा भाव के परस्पर सम्पर्क में कल्पना तथा वर्णन के अनुरूप संघटन में 'कादम्बरी' संस्कृत साहित्य में अनुपम एवं अद्वितीय है। कादम्बरी रसिक हृदयों को मत्त कर देने वाली सच्ची 'कादम्बरी' मीठी मदिरा है।

60. शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।।
अत्र कोऽलङ्कारः?

(a) उपमा (b) अर्थान्तरन्यासः
(c) रूपकम् (d) विभावना

उत्तर–(b)

प्रस्तुत श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में दुष्यन्त के द्वारा कथित है–

- यह आश्रम की भूमि शान्त है और मेरी दाहिनीभुजा फड़क रही है। यहां पर इसकी सफलता कहां। अथवा भावी होनहार घटनाओं के लिए सर्वत्र ही द्वार मार्ग हो जाते हैं। (अभि. 1/16)

  इस श्लोक में परिकर तथा अर्थान्तरन्यास अलंकार का विवेचन किया गया है।

- **''अर्थान्तरन्यास''-**

  ''सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।

  यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ॥

जहाँ विशेष द्वारा सामान्य को अथवा सामान्य द्वारा विशेष का कारण द्वारा कार्य का अथवा कार्य द्वारा कारण का- साधर्म्य अथवा वैधर्म्य के माध्यम से समर्थन किया जाता है वहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है।

61. कति अर्थप्रकृतयः?

(a) षट् (b) पञ्च

(c) सप्त (d) दश

उत्तर–(b)

श्री धनञ्जय प्रणीत् दशरूपक के अनुसार अर्थप्रकृतियां पांच प्रकार की होती हैं–

''बीजबिन्दुपताकाप्रकरीकार्यलक्षणः।

अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः॥ (दश. 1/18)॥

बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य नामक ये पांच अर्थप्रकृतियां कही गई हैं।

- दशरूपक के अनुसार प्रयोजन 6 प्रकार का होता है–(1) इष्ट अर्थ की रचना, (2) गोपनीय को गुप्त रखना, (3) प्रकाशन, (4) अभिनय में राग, (5) वैचित्र्य, (6) इतिवृत्त का विच्छिन्न।
- दशरूपक के अनुसार रूपकों की संख्या 10 है–नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अङ्क, ईहामृग।

62. दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति

(a) प्रतिमुखसन्धिः (b) मुखसन्धिः

(c) निर्वहणसन्धिः (d) गर्भसन्धिः

उत्तर–(d)

दशरूपक के अनुसार सन्धि के पांच मुख्य भेद–(1) मुखसन्धि (2) प्रतिमुख सन्धि (3) गर्भ सन्धि (4) अवमर्श सन्धि (5)उपसंहृति सन्धि

गर्भसन्धि का लक्षण–

गर्भस्तु दृष्टनस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः।

द्वादशाङ्गः पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्तिसम्भवः॥ (दश. 1/36)

अर्थात् जहां दिखलाई देकर खोए गए बीज का बार-बार अन्वेषण किया जाता है, वह गर्भसन्धि है। इसमें पताका नामक अर्थप्रकृति कहीं होती है, कहीं नहीं। किन्तु प्राप्त्याशा नाम की कार्यावस्था होती ही है। इसके बारह अङ्ग होते हैं।

(1) बीज + प्रारम्भ = मुखसन्धि

(2) बिन्दु + प्रयत्न = प्रतिमुखसन्धि

(3) पताका + प्राप्त्याशा = गर्भसन्धि

(4) प्रकरी + नियताप्ति = अवमर्श

(5) कार्य + फलागम = उपसंहृति

63. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' काव्यनिर्माणविषये कस्य मतमेतत्?

(a) जगन्नाथस्य (b) हेमचन्द्रस्य

(c) मम्मटस्य (d) वाग्भटस्य

उत्तर–(c)

आचार्य मम्मट प्रणीत् काव्यप्रकाश के अनुसार काव्यहेतु का लक्षण निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है–

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।

काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥3॥

अर्थ–काव्य-रचना की शक्ति, लोक-जीवन शास्त्र तथा काव्य इत्यादि के निरीक्षण एवं अनुशीलन से होने वाली निपुणता और काव्यज्ञों से शिक्षा प्राप्त करके अभ्यास करना। ये तीनों मिलकर उसके उद्भव का कारण हैं।

- पं. राज जगन्नाथ केवल 'प्रतिभा' को ही काव्य का हेतु मानते हैं।
- हेमचन्द्र का ग्रन्थ 'शब्दानुशासन' है।

64. क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः ....।

(a) विशेषोक्तिः (b) समासोक्तिः

(c) विभावना (d) निदर्शना

उत्तर–(c)

काव्यप्रकाश के अनुसार विभावना अलंकार का लक्षण है–**क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।**

अर्थात् विभावना अलंकार वह है जहां कारण का प्रतिषेध होने पर भी फल का कथन किया जाता है।

''विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः''

- **विशेषोक्ति–**विशेषोक्ति वह अलंकार है जहां प्रसिद्ध कारणों के मिलने पर भी कार्य का कथन नहीं किया जाता।
- **समासोक्ति**–परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः। जिस वाक्य में 'सम' अर्थात् प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत में समान रूप से अन्वित होने वाले कार्य लिङ्ग और विशेषणों द्वारा प्रस्तुत में अप्रस्तुत के व्यवहार का आरोप किया जाय, वहां समासोक्ति अलङ्कार होता है।
- **निदर्शना–** अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमा परिकल्पकः। जहां वस्तु का असम्भव या अनुपद्यमान सम्बन्ध उपमा का पर्याय होता है उसे निदर्शना कहते हैं।

65. 'ध्वन्यालोकः' इत्यस्मिन् ग्रन्थे कति उद्योताः सन्ति?

(a) चत्वारः (b) पञ्च
(c) षट् (d) सप्त

उत्तर–(a)

आचार्य आनन्दवर्धन का नाम साहित्यशास्त्र में अमर है। ध्वन्यालोक उनकी अमरकीर्ति है।
ध्वन्यालोक के अतिरिक्त अर्जुनचरित, विषमबाणलीला, देवीशतक तथा तत्त्वालोक भी आनन्दवर्धन की रचनाएं हैं।
ध्वन्यालोक नामक ग्रन्थ में चार उद्योत हैं। प्रथम उद्योत में ध्वनिविरोधी दृष्टिकोणों (अभाववाद, भक्तिवाद, अनिर्वचनीयतावाद) का उल्लेख करके उनका निराकरण किया गया है। द्वितीय एवं तृतीय उद्योत में ध्वनि के प्रकारों का विशद् विवेचन किया गया है तथा चतुर्थ उद्योत में ध्वनि की उपयोगिता का विवेचन किया गया है।

66. नाट्यशास्त्रस्य 'अभिनवभारती' व्याख्यायाः कर्ता कः?

(a) आनन्दवर्धनः (b) अभिनवगुप्तः
(c) धनञ्जयः (d) भरतः

उत्तर–(b)

मध्यकालीन साहित्यसेवियों में अभिनवगुप्त का स्थान अत्यन्त ऊंचा है। परातिंशिका की टीका के अन्त में तथा ईश्वरप्रत्ययभिज्ञाविवृतिविमर्शिणी के अन्त में अभिनवगुप्त ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया है।
अभिनवगुप्त कश्मीर के निवासी थे। उनका समय दशम शताब्दी के लगभग निर्धारित किया गया है।
अभिनवगुप्त का साहित्यशास्त्र में केवल दो ग्रन्थ ही विशेष विख्यात हैं–(1) भरतनाट्यशास्त्र की टीका अभिनवभारती (2) ध्वन्यालोक की लोचन टीका।

- आनन्दवर्धन के ग्रन्थ का नाम ध्वन्यालोक है।
- धनञ्जय के ग्रन्थ का नाम दशरूपक है।
- भरत के ग्रन्थ का नाम नाट्यशास्त्र है।

67. कालानुसारेण कस्तावत् अर्वाचीनः?

(a) भरतः (b) जगन्नाथः
(c) विश्वनाथः (d) भामहः

उत्तर–(b)

- साहित्यशास्त्र का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ भरतमुनि प्रणीत् नाट्यशास्त्र ही माना गया है। इसका समय प्रथम शताब्दी ई.पू. माना गया है।
- **भामह**–भामहाचार्य अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। उनका काव्यालंकार ही अलंकारशास्त्र की प्रथम स्वतन्त्र तथा व्यवस्थित रचना है। इनका समय द्वितीय शताब्दी (700 ई. से 1050 ई.) माना गया है।
- विश्वनाथ कविराज की रचना साहित्यदर्पण है। ये तृतीय युग अर्थात् 14वीं शताब्दी के मध्य इनका समय निश्चित किया गया है।
- पं. राजजगन्नाथ का ग्रन्थ रसगङ्गाधर है। इनका समय 17वीं शताब्दी का मध्यभाग है।

68. काव्यप्रकाशस्य मङ्गलश्लोके कस्याः प्रशंसा कृता?

(a) सरस्वत्याः (b) पार्वत्याः
(c) कविभारत्याः (d) दुर्गायाः

उत्तर–(c)

काव्यप्रकाश के अनुसार ग्रन्थ के प्रारम्भ में कविभारती की वन्दना की गई है–

''नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।

जो नियति विरचित नियमों से रहित केवल आनन्दमयी कविभारती से अन्य समवायी आदि कारण की अधीनता से विमुक्त नवरसों से रमणीय काव्यसृष्टि को प्रकट करती है वह कवि की वाग्देवी सबसे उत्कृष्ट है।

- आचार्य विश्वनाथ प्रणीत् साहित्यदर्पण के मंगलाचरण में सरस्वती की वन्दना की गई है।

69. यत्रार्थःशब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ व्यङ्क्तः काव्यविशेषो भवति–

(a) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (b) ध्वनिः
(c) अलङ्कारध्वनिः (d) चित्रकाव्यम्

उत्तर–(b)

आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार ध्वनि का लक्षण है–

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरभिः कथितः।।

(ध्वन्यालोक 1/13)

जहां अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्य विशेष को विद्वान लोग ध्वनि कहते हैं।

- जहां वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक चमत्कारी होता है उसे गुणीभूत व्यंग्यकाव्य कहते हैं।
- ध्वन्यालोक के अनुसार ध्वनि के तीन भेद हैं–(1) वस्तु ध्वनि (2) अलंकार ध्वनि (3) रस ध्वनि।
- मम्मट के अनुसार अधमकाव्य के दो भेद हैं–शब्दचित्र तथा अर्थचित्र

70. तर्कसङ्ग्रहानुसारं कति द्रव्याणि?

(a) पञ्च (b) सप्त
(c) नव (d) एकादश

उत्तर–(c)

आचार्य अन्नमभट्ट प्रणीत् तर्कसंग्रह में द्रव्यों की संख्या नव बताई गई है।
तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव।
इन सप्त पदार्थों में द्रव्य नामक पदार्थ नौ प्रकार का होता है–
(1) पृथ्वी, (2) जल, (3) तेज, (4) वायु, (5) आकाश, (6) काल, (7) दिक्, (8) आत्मा, और (9) मन ये नौ ही द्रव्य हैं।

- तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म पांच प्रकार का होता है–उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन।
- तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थ सात प्रकार का होता है–द्रव्य, गुण, कर्म,सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

71. वाक्यार्थज्ञाने हेतुः अस्ति

(a) निगमनम् (b) प्रतिज्ञा
(c) हेतुः (d) सन्निधिः

उत्तर–(d)

आकाङ्क्षायोग्यता सन्निधिश्च वाक्यार्थज्ञाने हेतुः' आकाङ्क्षा, योग्यता तथा सन्निधि–ये तीन वाक्यार्थ ज्ञान के हेतु अर्थात् सहकारी कारण हैं। एक पद का दूसरे के बिना अन्वय-बोध न कराना आकांक्षा है।

- अर्थ का बाध न होना 'योग्यता' है।
- पदों का अविलम्ब उच्चारण करना 'सन्निधि' है।

आकांक्षा, योग्यता तथा सन्निधि से रहित वाक्य प्रमाण नहीं हो सकता।

जैसे–गौरश्वः पुरुषो हस्ती यह वाक्य पदों का समूह होने पर भी प्रमाण नहीं है।

- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन ये परार्थानुमान के पांच भेद हैं।

72. 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाःइति-

(a) गुणाः (b) अपवादाः
(c) पदार्थाः (d) स्पर्शाः

उत्तर–(c)

अन्नमभट्ट प्रणीत् तर्कसंग्रह में पदार्थों की संख्या सात बताई गई है–(1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य (5) विशेष (6) समवाय (7) अभाव।
इन सप्त पदार्थों में द्रव्य नामक पदार्थ के 9 भेद, गुण नामक पदार्थ के 24 भेद, कर्म नामक पदार्थ के 5 भेद, सामान्य नामक पदार्थ के 2 भेद, विशेष नामक पदार्थ के अनन्त, समवाय नामक पदार्थ का 1 भेद, अभाव नामक पदार्थ के 4 भेद होते हैं।

73. तर्कसङ्ग्रहानुसारं प्रमाणानि सन्ति -

(a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर–(b)

तर्कसंग्रह के अनुसार प्रमाण के 4 भेद बताए गए हैं–प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति तथा शब्द।
इन 4 प्रमाणों में से केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही यथार्थानुभव प्रमा है। यह चार्वाकों की मान्यता है। अनुमिति भी प्रमा है, यह वैशेषिक एवं बौद्धों की मान्यता है।
सांख्य दार्शनिक तथा नैयायिक शब्द को भी प्रमा मानते हैं। कुछ को छोड़कर अधिकांशतः नैय्यायिक उपमिति को भी प्रमा मानते हैं।
अन्नमभट्ट नैयायिक हैं। अतः उनके प्रस्तुत ग्रन्थ तर्कसंग्रह में न्यायानुसार चार ही प्रमाएं (प्रमाण) बताई गई हैं।

- तर्कसंग्रह के अनुसार कारण 3 हैं–(1) समवायि (2) असमवायि (3) निमित्त कारण।
- तर्कसंग्रह के अनुसार कर्म के पांच भेद हैं–(1) उत्क्षेपण (2) अपक्षेपण (3) आकुञ्चन (4) प्रसारण (5) गमन।
- तर्कसंग्रह के अनुसार इन्द्रियां 6 हैं–(1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्त समवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेषण विशेष्य भाव।

74. 'प्रमा' इत्युच्यमाने अधोलिखितेषु कस्य निरसनं भवति?

(a) प्रमितिः (b) अनुमितिः
(c) स्मृतिः (d) उपमितिः

उत्तर–(c)

आचार्य केशव मिश्र प्रणीत् तर्कभाषा में प्रमा का लक्षण है–**यथार्थानुभवः प्रमा**–अर्थात् यथार्थ अनुभव प्रमा है। यहां यथार्थ इस पद से संशय, भ्रान्ति तथा तर्क इन-अयथार्थ अनुभवों का निराकरण किया गया है।
अनुभव–इस पद के द्वारा स्मृति का निराकरण किया गया है। स्मृति वह ज्ञान है, जिसका विषय पहले ही ज्ञात होता है। स्मृति से भिन्न ज्ञान अनुभव है।

- अनुमिति के असाधारण कारण को अनुमान कहते हैं तथा परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं।
- उपमिति का करण उपमान कहलाता है तथा संज्ञा एवं संज्ञी के सम्बन्ध का ज्ञान उपमिति कहलाता है।

75. प्रमायाः करणं किम्?

(a) प्रमाता (b) प्रमेयः
(c) प्रमाणम् (d) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः

उत्तर–(c)

आचार्य केशव मिश्र के अनुसार प्रमाण का लक्षण है–**प्रमाकरणं प्रमाणम्।**
अर्थात् प्रमा का करण प्रमाण कहलाता है। इसमें प्रमाण पद लक्ष्य है, प्रमा का करण लक्षण है।
प्रमा- 'यथार्थानुभवः प्रमा' यथार्थ अनुभव प्रभा है।
करण- 'साधकतमं करणम्' साधकतम को करण कहते हैं।
कारण- 'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्' अर्थात् जिसकी सत्ता कार्य से पूर्व निश्चित हो और जो अन्यथासिद्ध न हो उसे कारण कहते है। कारण के तीन भेद हैं- समवायि, असमवायि, निमित्त कारण।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June 2013
संस्कृत
पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते-

(a) पुरुषसूक्ते (b) अग्निसूक्ते
(c) इन्द्रसूक्ते (d) पृथिवीसूक्ते

उत्तर–(a)

सृष्टि उत्पत्ति विषयक विवेचन पुरुषसूक्त में है

''सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

अर्थात् यह परमपुरुष विराट् परमेश्वर हजारों सिर वाला, हजारों आँखों एवं पैरों वाला है। यह भूमि को चारों ओर से व्याप्त करके दस अङ्गुल प्रमाण में ब्रह्माण्ड को पार करके स्थित है।

यह समस्त दृश्यमान जगत् पुरुष ही है, भूतकाल और भविष्यत्कालीन् जगत् भी पुरुष ही है तथा यह पुरुष अमरत्व का स्वामी है।

- पुरुषसूक्त 10 वें मण्डल का 90 वां सूक्त है, इसके ऋषि नारायण एवं देवता पुरुष हैं।
- पुरुष सूक्त से ही चारों वेदों की उत्पत्ति एवं चतुर्वर्ण व्यवस्था का उल्लेख है।

''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥''

2. ''ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः'' .... अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति ।

(a) मधुच्छन्दाः (b) अजीगर्तः
(c) कण्वः (d) नारायणः

उत्तर–(d)

''यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥''

उपर्युक्त मन्त्र पुरुषसूक्त का 16 वां मन्त्र है, इसके ऋषि-नारायण हैं।

- पुरुषसूक्त से ही समस्त विश्व की सृष्टि का वर्णन है।

''चन्द्रमा मनसो जातश् चक्षोः सूर्यो अजायत् ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥

अर्थात् इस प्रजापति रूप पुरुष के मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ आँख से सूर्य उत्पन्न हुआ मुख से इन्द्र तथा अग्नि उत्पन्न हुए एवं प्राण से वायु उत्पन्न हुआ।

- अग्निसूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा, इन्द्र सूक्त के ऋषि गृत्समद एवं वरुणसूक्त के ऋषि शुनःशेष हैं।

3. वाक् सूक्तस्य (ऋग्वेदे 10.125) का देवता?

(a) **वाक् (परमात्मा)** (b) **आत्मा**
(c) **वेनो भार्गवः** (d) **वागाम्भृणी**

उत्तर–(a)

वाक्सूक्त के देवता वाक् (परमात्मा) हैं।
यह सूक्त दशवें मण्डल का 125 वां सूक्त है। यह राष्ट्रनिर्मात्री शक्ति है। इस सूक्त के 8 मंत्रों में वाक्तत्त्व, शब्दब्रह्म, शब्दतत्त्व या वाग्देवी का ब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है।

वाक्सूक्त के प्रमुख मन्त्र-

- अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
- **अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।**
  यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥
- अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
- अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ।

4. ''यज्ञस्य देवम्'' इत्यत्र ''देवम्'' पदस्य स्वरोऽस्ति

(a) देवम् (b) देवम्
(c) दे वम् (d) देवम्

उत्तर–(d)

संहितापाठ अग्निमीले पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥

पदपाठ- इसमें मन्त्र के प्रत्येक पद को पृथक् - पृथक् करके पढ़ा जाता है। प्रत्येक पद स्वतंत्र रूप में रहता है तथा संधियों को अलग कर दिया जाता है। **जैसे-** संहिता पाठ में पदों को कखगघ पढ़ेगें तो पदपाठ में उसको क ख ग घ पढ़ेगें।

पदपाठ- अग्निम् । ई ले । पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् । **ऋत्विजम्** ।
होतारम् । रत्नऽधातमम् ॥

वेदों के संरक्षण हेतु अष्ट-विकृतियां थीं–

''जटा माला शिखा रेखा, ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः, क्रमपूर्वा महर्षिभिः ॥''

5. ''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते -

(a) पृथिवीसूक्ते (b) वाक्सूक्ते
(c) पुरुषसूक्ते (d) हिरण्यगर्भसूक्ते

उत्तर–(a)

''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् ।
अभीषाऽस्मि विश्वाषाऽशामाशां विषासहिः॥''
अर्थात् मैं सहनशील हूं अतः पृथिवी पर उत्कृष्ट रूप से प्रसिद्ध हूं। शत्रु सेना के सम्मुख आने पर भी मैं सहनशील बना रहता हूं तथा प्रत्येक दिशा में मैं विशेष रूप से सहनशील प्रसिद्ध हूं। मैं अपनी मातृभूमि के लिए सभी प्रकार के कष्ट भोगने हेतु तैयार हूं।
उपर्युक्त मन्त्र अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त (मन्त्र 54) से उद्धृत है।

6. शुनःशेप - आख्याने उल्लेखो नास्ति-
(a) वरुणस्य (b) वसिष्ठस्य
(c) बादरायणस्य (d) अजीगर्तस्य

उत्तर–(c)

शुनःशेप- आख्यान में 'बादरायण' का उल्लेख नहीं है।
यह आख्यान ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण की सातवीं पञ्चिका के तृतीय अध्याय में वर्णित है। इसे 'हरिश्चन्द्रोपाख्यान' भी कहा जाता है। इसी आख्यान में ''चरैवेति- चरैवेति'' उपदेश भी है। जिसे इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप रखकर रोहित को सुनाया।
शुनःशेप आख्यान में वरुण, वसिष्ठ, अजीगर्त का उल्लेख है किन्तु बादरायण का कहीं भी नाम नहीं उल्लिखित है।

7. आध्यात्मिकव्याख्यापद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य अग्नि शब्दस्य अयमर्थः-
(a) श्रौताग्निः (b) विद्युत्
(c) परमात्मा (d) स्मार्ताग्निः

उत्तर–(c)

आध्यात्मिक व्याख्या पद्धति में वेद में प्रयुक्त अग्नि पद का अर्थ 'परमात्मा' है।
वेदमन्त्रों की व्याख्या के लिए विभिन्न पद्धतियां अपनायी गयीं– यथा- (1) भारतीय पद्धति, (2) आध्यात्मिक पद्धति, (3) पाश्चात्य पद्धति। इसके अतिरिक्त आचार्य कौत्स और यास्क महोदय का भी सिद्धान्त है। वेद में प्रयुक्त सभी शब्द यौगिक और योगरूढ़ हैं। इन्द्र, अग्नि, वरुणादि देवता वाचक शब्द है। सभी यौगिकत्व से परमात्मा के पर्यायवाची हैं।
ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित है- एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति, अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः (**ऋग्वेद सं- 1/164/46**)। निरुक्तकर्त्ता भी इसी बात को स्पष्ट करते हैं- ''महाभाग्यात् देवतायाः एक आत्मा बहुधा स्तूयते। एकस्यात्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति''। (जितने देव हैं वे सभी एक ही महान देव परमेश्वर के विशिष्ट शक्ति के प्रतीक स्वरूप हैं ।)

8. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(a) अग्निः सूर्य आपो विश्वे देवाश्च सं ददुः	**1. शतपथब्राह्मणम्**
(b) सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद	**2. अथर्ववेदः**
(c) सा यन्मम त्वं कृतानुकराऽनु वर्त्मासि	**3. ऐतरेयब्राह्मणम्**
(d) भीम एव सौयवसिः शासेन विशिशासिषुः	**4. ऋग्वेदे**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	4	3	1
(b)	2	4	1	3
(c)	3	1	4	2
(d)	3	1	2	4

उत्तर–(b)

मन्त्र	मन्त्र का स्रोत
• अग्निः सूर्य आपो विश्वे देवाश्च सं ददुः	- अथर्ववेदः
• सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद	- ऋग्वेदे (नासदीय सूक्त)
• सा यन्मम त्वं कृतानुकराऽनु वर्त्मासि	- शतपथब्राह्मणम्
• भीम एव सौयवसिः शासेन विशिशासिषुः	- ऐतरेयब्राह्मणम्

9. 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' इत्यस्य कुत्रोपदेशः?
(a) ईशोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) श्रीमद्भागवते (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर–(a)

''तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यत :'' ।।5।। ईशावास्योपनिषद्
अर्थात् वह आत्मतत्त्व गति करता है और गति नहीं भी करता है, वह दूर है तथा पास भी है, वह सबके भीतर एवं बाहर भी है। ईशावास्योपनिषद् , शुक्ल यजुर्वेदीय शाखा का उपनिषद् है । इसमें कुल 18 मंत्र हैं।

ईशावास्योपनिषद् की प्रमुख सूक्तियां -
- ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
- कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
- कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः ।
- अन्धतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
- विद्ययाऽमृतमश्नुते ।

10. 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' कुत्रेयमुक्तिः ?
(a) ईशोपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) भगवद्गीतायाम्

उत्तर–(b)

''यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम् ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते'' ।। 2/5।। केनोपनिषद्
वह जो 'मन' के द्वारा मनन नहीं करता, 'वह' जिसके द्वारा मन स्वयं मनन का विषय बन जाता है, उसे ही 'ब्रह्म' जानो, न कि इसे जिसकी मनुष्य यहां उपासना करते हैं।
- केनोपनिषद् को 'तलवकार उपनिषद्' भी कहते हैं, इसमें 4 खण्ड हैं, प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक एवं शेष दो खण्ड गद्यात्मक है, यह सामवेद से सम्बन्धित है।

11. 'अन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' – इयमुक्तिः कुत्रास्ति?

(a) कठोपनिषदि (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

उत्तर–(d)

''अन्नाद् भूतानि जायन्ते । जातान्यन्नेन वर्धन्ते'' अर्थात् समस्त प्राणी अन्न से ही उत्पन्न होते हैं तथा अन्न से ही वृद्धि को प्राप्त करते हैं।
उपर्युक्त मन्त्र 'तैत्तिरीयोपनिषद्' से उद्धृत है। तैत्तिरीय उपनिषद् में तीन वल्ली हैं- (1) शिक्षा वल्ली, (2) ब्रह्मानन्दवल्ली, (3) भृगुवल्ली ।
तैत्तिरीयोपनिषद के महत्वपूर्ण मन्त्र-
- 'ओंखं ब्रह्म' (ब्रह्म का स्वरूप आकाश है)।
- सत्यं वद। धर्मंचर । स्वाध्यायात् मा प्रमदः। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव ।
- 'अन्नं ब्रह्म-उपासते' (अन्न से प्रजा उत्पन्न होती है, अन्न से ही जीवित रहते हैं)।
- 'रसो वै सः' (ब्रह्म का स्वरूप ही रस या आनन्द है)।

12. 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा' - इयमुक्तिः कुत्रास्ति ?

(a) ईशोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) केनोपनिषदि

उत्तर–(c)

''अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदय सन्निविष्टः।''
तं स्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकां धैर्येण ।
तं विद्याच्छु क्रममृतं तं विद्याच्छु क्रममृतमिति।।
अर्थात् 'पुरुष' 'अन्तरात्मा' जो अङ्गुष्ठमात्र है, वह सदा प्राणियों के हृदय में आसीन है। 'उसे' अपने शरीर से उसी प्रकार धैर्यपूर्वक पृथक् करना चाहिए जैसे कोई मूंज से उसकी सीक को पृथक् करता है। 'उसे तुम तेजोमय अमृत-तत्त्व' जानो, हां, उसी को 'तेजोयोमय' 'अमृततत्त्व' जानो।
उपर्युक्त मन्त्र कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा से सम्बद्ध 'कठोपनिषद्' से उद्धृत है। कठोपनिषद् में 2 अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में तीन वल्ली हैं।
कठोपनिषद् के महत्वपूर्ण मन्त्र -
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत् ।
- न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।
- न जायते म्रियते वा विपश्चित् ।
- श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते, प्रेयो मन्दो योगक्षेमौ वृणीते।

13. 'न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति' – कस्येयमुक्तिः?

(a) कात्यायन्याः (b) मैत्रेय्याः
(c) याज्ञवल्क्यस्य (d) गार्ग्यस्य

उत्तर–(c)

महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश देते हुए कहते हैं-
''न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति।
आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति ।।2।।
अर्थात् न ही पति को पत्नी, पत्नी की कामना के लिए प्रिय होती है।, अपितु अपनी कामना के लिए ही पत्नी प्रिय होती है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयी का संवाद विद्यमान है। यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है तथा यह शतपथ ब्राह्मण के 14 वें कांड का अन्तिम भाग है।

बृहदारण्यकोपनिषद् के प्रमुख मन्त्र-
- असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्माऽमृतं गमय।
- आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति ।
- आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः, श्रोतव्यो, मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो।

14. 'वाचं धेनुमुपासीत'– इति कुत्र उपदिश्यते?

(a) श्रीमद्भागवते (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) ईशोपनिषदि

उत्तर–(b)

''वाचं धेनुमुपासीत, तस्याश्चत्वारः स्तनाः - स्वाकारो वषट्कारो, हन्तकारः स्वधाकारः'' अर्थात गाय के सदृश वाणी (वेदों) का ध्यान करना चाहिए, उसके चार स्तन हैं - स्वाहा, वषट्, हंता तथा स्वधा।
उपर्युक्त पंक्ति का संदर्भ ''बृहदारण्यकोपनिषद्'' में 'वाक्कामधेनु के चार स्तन' के प्रकरण में उल्लिखित है।
इस उपनिषद् में तीन भाग है और प्रत्येक भाग में दो-दो अध्याय है। इनमें प्रथम भाग को मधुकाण्ड, द्वितीय भाग को याज्ञवल्क्यकाण्ड एवं तृतीय भाग को खिलकाण्ड कहते हैं।
- गार्ग्य- अजातशत्रु संवाद, याज्ञवल्क्य- मैत्रेयी संवाद, याज्ञवल्क्य- गार्गी संवाद तथा जनक-याज्ञवल्क्य संवाद इसी उपनिषद् में है।

15. अधस्तनानां समीचीनमुत्तरं चिनुत

A. सामवेदः **1. कठोपनिषद्**
B. कृष्णयजुर्वेदः **2. बृहदारण्यकोपनिषद्**
C. शुक्लयजुर्वेदः **3. तैत्तिरीयोपनिषद्**
D. एष आदेशः, एष उपदेशः, एषा वेदोपनिषद् **4. केनोपनिषद्**

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	1	2	3
(b)	4	2	1	3
(c)	1	2	3	4
(d)	3	2	1	4

उत्तर–(a)

- कठोपनिषद्; कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा के अन्तर्गत आता है। इस उपनिषद् को 'नचिकेतोपाख्यान' भी कहा जाता है। इसमें दो अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में 3-3 बल्लियां हैं।
- बृहदारण्यकोपनिषद्; शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा के वाजसनेयिब्राह्मण के अन्तर्गत आता है।
- केनोपनिषद्, सामवेदीय उपनिषद् है। इसमें 4 खंड हैं। प्रथम दो खंड पद्यात्मक तथा अन्य दो खंड गद्यात्मक है।
- एष आदेशः, एष उपदेशः, एषा वेदोपनिषद् मन्त्र तैत्तिरीयोपनिषद् से सम्बद्ध है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

उपनिषद्	वेद
ईशावास्योपनिषद्	यजुर्वेद
तैत्तिरीयोपनिषद्	यजुर्वेद
छान्दोग्योपनिषद्	सामवेद
श्वेताश्वतरोपनिषद्	यजुर्वेद
मुण्डकोपनिषद्	अथर्ववेद

16. बृहती-छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति?

(a) 44 (b) 40
(c) 36 (d) 38

उत्तर–(c)

वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए कुछ सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, जिन्हें 'वेदाङ्ग' कहते हैं। पाणिनीय शिक्षा में छः वेदाङ्गों को वेद पुरुष के छः अङ्गों के रूप में बतलाया गया है- छन्द-पैर, कल्प-हाथ, ज्योतिष-नेत्र, निरुक्त श्रोत्र, शिक्षा-घ्राण, व्याकरण-मुख।

''छन्दः पादौ तु वेदस्य'' जिस प्रकार पैर शरीर को स्थिरता प्रदान करते हैं, उसी प्रकार छन्द साहित्य को स्थिरता प्रदान करते हैं।

प्रमुख छन्द-

छन्द	वर्ण
गायत्री	24
उष्णिक्	28
अनुष्टुप्	32
बृहती	36
पंक्ति	40
त्रिष्टुप्	44
जगती	48

17. चातुर्मास्ययागे वर्तते

(a) अग्निहोत्रम् (b) आग्रयणम्
(c) सौत्रामणी (d) साकमेधीयम्

उत्तर–(d)

चातुर्मास्य यज्ञ चार माह में होने वाला वैदिक यज्ञ है। कात्यायन श्रौत सूत्र में इसके महत्व के विषय में बतलाया गया है। इसमें चार पर्व हैं-

(1) वैश्वदेवपर्व, (2) वरुणप्रघासपर्व, (3) साकमेधपर्व, (4) शुनासारीयपर्व

- कार्तिक माह की पूर्णिमा को साकमेधपर्व का अनुष्ठान किया जाता है। चतुर्दशी से इसका अनुष्ठान प्रारम्भ होता है, यह दो दिनों में पूर्ण होता है। इसमें अनीकवतीष्टि, सान्तपनीयेष्टि, गृहमेधीयेष्टि, दर्वी होम, क्रीऽनीयेष्टि, अदितीष्टि, महाहवि, पित्र्येष्टि तथा त्र्यम्बकेष्टि आदि अनुष्ठान किए जाते हैं। घर में विवाह योग्य कन्याओं के लिए इस पर्व का अनुष्ठान किया जाता है। अग्नि, मरुत, अदिति, ऐन्द्राग्नि, विश्वकर्मा, त्र्यम्बक तथा पितर आदि देवता इस पर्व में होते हैं। इनके लिए चरु, सान्नाय्य, आज्य, धना आदि की आहुति दी जाती है।

18. नारदीयशिक्षा सम्बद्धा वर्तते

(a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) कृष्णयजुर्वेदेन (d) शुक्लयजुर्वेदेन

उत्तर–(a)

सामवेद के स्वरों का विस्तृत विवेचन नारदीय शिक्षा में है।

''शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य''- शिक्षा को वेद-पुरुष का नाक बतलाया है।

''स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा'' (सायण ऋ-भाष्य पृष्ठ-4) अर्थात् जिसमें स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे 'शिक्षा' कहते हैं।

'शिक्षा के प्रमुखतः छः अङ्ग हैं- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, संतान। वेदों में 52 एवं पाणिनीय शिक्षा में 63-64 वर्ण स्वीकार किए गये हैं।

स्वर के तीन भेद- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित एवं मात्रा के भी तीन भेद हैं- ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत ।

प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ - पाणिनीय शिक्षा, भरद्वाज शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा, माण्डव्य शिक्षा, पाराशरी शिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा आदि।

19. समानाक्षराणि कति?

(a) 9 (b) 12
(c) 8 (d) 10

उत्तर–(c)

''अष्टौ समानाक्षराण्यादितः'' अर्थात् आठ अक्षर समानाक्षर हैं- **जैसे-** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ

संध्यक्षर - ''चत्वारि संध्यक्षराण्युत्तराणि'' (चार अक्षर संध्यक्षर है)। यथा- ए, ओ, ऐ, औ ।

अनुनासिक वर्ण - ''रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः (अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक है)। यथा- ङञणनमाः

प्रगृह्य संज्ञा - ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः (सम्बोधन आमन्त्रित से उत्पन्न ओकार प्रगृह्य संज्ञक होता है)। यथा-ओकारः।

20. अन्तरिक्षस्थानीय देवता अस्ति

(a) अश्विनौ (b) सोमः

(c) सूर्यः (d) वायुः

उत्तर–(d)

वायु	अन्तरिक्ष स्थानीय
अग्नि	पृथिवीस्थानीय
सोम	पृथिवी स्थानीय
अश्विनौ	द्युस्थानीय (युगलदेवता)
उषस्	द्युस्थानीय
वरुण	द्युस्थानीय
रुद्र	अन्तरिक्ष स्थानीय
इन्द्र	अन्तरिक्ष स्थानीय
विष्णु	द्युस्थानीय
सवितृ	द्युस्थानीय

21. यास्कीयनिरुक्तानुसारम् अस्य पदत्वेन स्वीकारः नास्ति

(a) नाम्नः (b) उपसर्गस्य

(c) आख्यातस्य (d) प्रत्ययस्य

उत्तर–(d)

''चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्ग निपाताश्चनामानि भवन्ति'' भाषा में चार प्रकार के पद प्रसिद्ध हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।

नाम- सत्त्वप्रधानानि नामानि (सत्त्व की प्रधानता 'नाम' कहलाता है)

आख्यात- भावप्रधानम् आख्यातम् (पदों में भाव की प्रधानता 'आख्यात' कहलाता है)

उपसर्ग - 'न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान् निराहु' इति शाकटायनः। अर्थात् शाकटायन के अनुसार स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त उपसर्ग निश्चय ही अर्थों को नहीं कहते अपितु 'नाम' तथा 'तिङन्त' पद के अर्थ संबंध के द्योतक मात्र होते हैं।

परन्तु इसके विपरीत गार्ग्य का मत यह है कि उपसर्ग विभिन्न अर्थों वाले होते हैं, ''उच्चावचाः पदार्था भवन्ति''।

निपात- ''उच्चावचेष्वर्थेषुनिपतन्ति'' (निपात विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं)। कुछ उपमा अर्थ में, कुछ समुच्चय एवं पूर्ति के लिए प्रयुक्त होते हैं।

22. आचिनोत्यर्थान् इति आचार्यपदनिर्वचने कः धातुः?

(a) चिञ् (b) आ + चिन्

(c) चिन् (d) आ + चि

उत्तर–(d)

''आचिनोत्यर्थान्'' इस आचार्य पद के निर्वचन में आङ् उपसर्ग चि धातु है अर्थात् जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म, निगूढ़ तत्त्वों का 'संचय करता है वह आचार्य कहलाता है।

- **आचिनोति बुद्धिमिति वा -** आचार्य, विद्यार्थियों में बुद्धि का संचय करता है एवं उसकी बुद्धि बढ़ाता है।
- **आचार्य आचारं ग्राह्यति-** आचार्य विद्यार्थियों को आचार-व्यवहार सिखाता है।

उषस्	उच्छतीति
मेघ	मेहतीति सतः
उदक्	उनत्तीति सतः
वीर	वीरः, वीरयति अमित्रान्, वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणः, वीरयतेर्वा
अश्वः	अश्नुतेऽध्वानम्, महाशनो भवतीति वा।

23. कस्य किम् मतम्?

(A) अनर्थकाः हि मन्त्राः	**1. नैरुक्तसमयः ।**
(B) सर्वाणि नामानि आख्यातजानि	**2. वार्ष्यायणिः ।**
(C) षड्भावविकाराः	**3. कौत्सः ।**
(D) सर्वाणि नामानि आख्यातजानि न	**4. गार्ग्यः ।**

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	3	1	2	4
(b)	1	2	4	3
(c)	3	2	1	4
(d)	4	1	2	3

उत्तर–(a)

- षड्भावविकाराः भवन्तीति वार्ष्यायणि। जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति । छः भावविकार होते हैं- (1) उत्पन्न, (2) होना, (3) परिवर्तित होना, (4) बढ़ना, (5) घटना तथा (6) नष्ट होना यह वार्ष्यायणि का मत है।
- सर्वाणि नामान्याख्यातजानि इति शाकटायनः नैरुक्तसमयश्च''। वैयाकरणों में शाकटायन तथा निरुक्त के आचार्य सभी नाम को धातु से उत्पन्न हुआ मानते हैं।
- 'सर्वाणि नामानि आख्यातजानि न इति गार्ग्यो वैयाकरणानां चैके'। (गार्ग्य तथा कुछ वैयाकरण का मत है कि सभी नाम धातु से उत्पन्न नहीं है।
- 'अनर्थका हि मन्त्राः'। मन्त्र अनर्थक हैं यह कौत्स का मत है।

24. लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यग् वेदान् परिपालयिष्यतीत्यत्र - लोपागमस्य उदाहरणम् अस्ति।

(a) देवा अदुह । (b) उद्ग्राभम् ।

(c) देवा अदुहत । (d) देवै दुह्यते ।

उत्तर–(a)

महाभाष्य में व्याकरणशास्त्र अध्ययन के पांच मुख्य प्रयोजन बतलाये गए हैं- ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'' अर्थात् वेदों की रक्षा, विभक्तियों के विपरिणाम, आगम, सुगमता तथा संशयराहित्य। ''रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्। लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यग् वेदान् परिपालयिष्यतीति। लोपागमयोरुदाहरणं- देवा अदुह्। रक्षा पदार्थ का निरूपण करते हुए कहते हैं कि वेदों की रक्षा के लिए व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि जिस व्यक्ति को लोप, आगम एवं वर्णों के विकारों का ज्ञान है, वह वेदों की रक्षा भलीभांति करेगा। जैसे-देवा अदुह्। यहाँ उदाहरण में कैयट ने 'अदुह्' इस वैदिक प्रयोग का उल्लेख किया है।

25. महाभाष्यानुसारम् सिद्धान्ततः व्याकरणशब्दस्य कोऽर्थः ?

(a) सूत्रम्। (b) शब्दः।
(c) लक्ष्यम्। (d) लक्ष्य-लक्षणे।

उत्तर–(d)

''लक्ष्यं च लक्षणं चैतत्समुदितं व्याकरणं भवति। अत्र शब्दो लक्ष्यः, सूत्रं लक्षणम्।'' लक्ष्य और लक्षण का समुदाय व्याकरण है, यहां शब्द लक्ष्य एवं सूत्र लक्षण है।
''सूत्रे व्याकरणे षष्ठ्यर्थोऽनुपपन्नः''। व्याकरण का सूत्र अर्थ मानने पर षष्ठी का अर्थ नहीं बनता है।
''शब्दे ल्युट्ऽर्थः''। व्याकरण का अर्थ शब्द मानने पर ल्युट् का अर्थ नहीं बनता है।
''वृत्तिसमवायार्थ उपदेशः''। वर्णों के उपदेश का प्रयोजन वृत्ति समवाय है।

26. 'भू + शप् > अ + अन्ति' इति स्थिते द्वयोः अकारयोः केन सूत्रेण किम् भवति ?

(a) अतो गुणे। - इत्यनेन पूर्वरूपत्वम्।
(b) अतो गुणे। - इत्यनेन पररूपत्वम्।
(c) अतो गुणे। - इत्यनेन गुणादेशत्वम्।
(d) आद् गुणः। - इत्यनेन गुणादेशत्वम्।

उत्तर–(b)

''भू + शप् + अ + अन्ति'' यहाँ दोनों अकार के मध्य ''अतो गुण'' सूत्र से पररूप होता है।

''अतो गुणे'' - अपदान्त अकार से गुण (अ, ए, ओ) के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। यह सूत्र 'वृद्धिरेचि' एवं 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र का अपवाद है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

ओऽन्तः- प्रत्यय के अवयव अकार के स्थान पर अन्त् आदेश होता है। जैसे- भवन्ति - यहां सर्वप्रथम भू धातु से प्रथमपुरुष का बहुवचन 'झि' आया, यहां अकार की इत्संज्ञा प्राप्त थी, इसे बांधकर 'झोऽन्तः' से अन्त् आदेश हुआ, भू + अन्त् + इ बना। अन्त् + इ = अन्ति इसके पश्चात् सार्वधातुक संज्ञा, शप्, अनुबंधलोप, पुनः शप् की सार्वधातुकसंज्ञा, गुण, अव् आदेश, वर्णसम्मेलन होने के बाद भव + अन्ति बना। इसके पश्चात् 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप हो जाने के बाद भवन्ति रूप सिद्ध होता है।

27. धातोः विधीयमानः तव्यत्प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे भवति ?

(a) कर्तरि। (b) भावे।
(c) भावे कर्मणि च। (d) कर्मणि।

उत्तर–(c)

''तव्यत्तव्यानीयरः'' धातु से तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होता है।
''तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः' के नियम से तव्यत्, तव्य और अनीयर्, प्रत्यय अकर्मक धातु से भाव और कर्म (भावे कर्मणि च) अर्थ में होते हैं। भाव अर्थ में नपुसंकलिङ्ग एकवचन होता है।
भावे 3/3/18 - सिद्धावस्था रूप में प्राप्त धातु का अर्थ वाच्य होने पर धातु से घञ् प्रत्यय होता है। यथा- पाकः

28. द्वेस्तीयः [– पा.सू. 5.2.54] इत्यनेन कः प्रत्ययः विधीयते कश्च तस्य अर्थः ?

(a) तीय-प्रत्ययः, पूरणे अर्थेः ?
(b) तीय-प्रत्ययः, संख्यायाम् अर्थे।
(c) स्तीय-प्रत्ययः, पूरणे अर्थे।
(d) द्वेस्तीय-प्रत्ययः मत्वर्थे।

उत्तर–(a)

द्वेस्तीयः सूत्र से तीय प्रत्यय, पूरण अर्थ में होता है।

29. 'गोपस्य स्त्री गोपी' — इत्यत्र स्त्रियाम् केन सूत्रेण कः प्रत्ययो भवति?

(a) ऋन्नेभ्यो ङीप्। - इति ङीप्।
(b) पुंयोगादाख्यायाम्। - इति ङीष्।
(c) उगितश्च। - इति ङीष्।
(d) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे। - इति ङीप्।

उत्तर–(b)

गोपस्य स्त्री गोपी- गोप की स्त्री / पत्नी।

यहां गोप पद अदन्त है तथा स्त्रीत्व की विवक्षा में पुरुष के साथ संबंध जोड़कर बोला जा रहा है।

पुंयोगादाख्यायाम् - पुरुष के साथ संबंध के कारण जब पुंवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है तब उस अदन्त शब्द से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे- गोप से ङीष् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, तदनन्तर भंसज्ञक अकार का लोप होकर गोप् + ई = गोपी रूप बना।
''उगितश्च''- उक् अर्थात् उ, ऋ, ऌ की इत्संज्ञा होने पर प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे- भवती, पचन्ती, दीव्यन्ती।
''अजाद्यतष्टाप्''- अजादि गण में पढ़े गये शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है। जैसे- अजा, अश्वा, एडका, चटका, मूषिका, होडा आदि।

30. वर्गस्य प्रथमवर्णस्य परिवर्तनम् केवलम् असंयुक्तध्वनिषु एव भवति, न तु संयुक्तध्वनिषु। - इति अपवादनियमः केन प्रदत्तः?

(a) ग्रिममहोदयेन। (b) ग्रासमानमहोदयेन।
(c) बर्नरमहोदयेन। (d) आचार्येण भोलाशङ्करेण।

उत्तर–(a)

वर्ग के प्रथम वर्ण का परिवर्तन केवल असंयुक्तध्वनियों में होता है, संयुक्त ध्वनियों में नहीं। यह नियम प्रो. याकोब ग्रिम का है। ग्रिम नियम दो भागों में विभक्त है–

(1) प्रथम वर्ण परिवर्तन का क्रम-
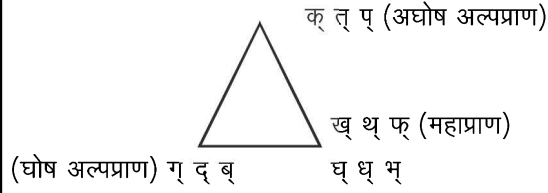
(2) द्वितीय वर्ण परिवर्तन केवल जर्मन भाषा के ही दो रूपों- उच्च एवं निम्न में हुआ।

- **ग्रासमान नियम** के अनुसार संस्कृत और ग्रीक भाषाओं में दो अव्यवहित सोष्म ध्वनियों में से सामान्यतः प्रथम ऊष्म ध्वनि निकल जाती है। जहां पर द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलती है, वहां पर प्रथम वर्ण में ऊष्म ध्वनि आ जाती है। जैसे- धधामि- दधामि, भभार-बभार।
- **वर्नर नियम** के अनुसार मूल भारोपीय भाषा के शब्दों के क् त् प् को जर्मानिक भाषाओं में ख् थ् फ् तभी होता है जब मूलभाषा में अव्यवहित पूर्व कोई उदान्त् स्वर होता है। यदि उदात्त स्वर क् त् प् के बाद होगा तो इनके स्थान पर क्रमशः ग् द् ब् होते हैं।

31. उत्तपते। वितपते। - इत्यनयोः क्रियापदयोः कोऽर्थः ?

(a) विलापयतीत्यर्थः। (b) संतापयतीत्यर्थः।
(c) 'दीप्यते' - इत्यर्थः। (d) उष्णम् करोतीत्यर्थः।

उत्तर–(c)

उत्तपते। वितपते। - इन दोनों क्रिया पद का 'दीप्यते' अर्थ है। अकर्मकातिति वर्तते। उत् वि इत्येवं पूर्वात् तपटेरकर्मकत्रियावचनाद। - त्मनेपदं भवति। उत्तपते। वितपते। दीप्यते इत्यर्थः। अकर्मकातित्येव। उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः। वितपति पृथ्वीं सविता।

स्वाङ्गकर्मकाच् च इति वक्तव्यम्। उत्तपते पाणिम्, उत्तपते पृष्ठम्। वितपते पाणिम्, वितपते पृष्ठम्।

32. समुद्रगुप्तस्य प्रयागप्रशस्तेः कः रचयिता ?

(a) वासुलः। (b) वत्सभट्टिः।
(c) हरिषेणः। (d) वीरसेनः।

उत्तर–(c)

समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के लेखक 'हरिषेण' है। प्रयागस्तम्भ लेख मूलतः कौशाम्बी में था, वहां से इलाहाबाद किले में लाया गया।

इसमें समुद्रगुप्त का जीवनचरित वर्णित है, इसकी भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी थी।

भारत के अन्य प्राचीन अभिलेख-

1) खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख।
2) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख।
3) स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ लेख।
4) पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख।
5) यशोवर्मन का मंदसौर अभिलेख।
6) मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख।
7) अशोक का मास्की एवं गुर्जरा अभिलेख।

33. ब्रह्मसूत्राणां भगवत्पादशङ्कराचार्यस्य व्याख्यायाः केन नाम्ना व्यवहारः?

(a) श्रीभाष्यम् (b) जयः
(c) शारीरकमीमांसाभाष्यम् (d) द्वादशलक्षणी

उत्तर–(c)

महर्षि बादरायण-व्यास प्रणीत् 'ब्रह्मसूत्र' प्रस्थानत्री में सूत्र प्रस्थान के नाम से विश्वविश्रुत है। इसमें चार अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्यायों में चार पाद है।

ब्रह्मसूत्र के प्रसिद्ध भाष्यकार-

भाष्यकार	भाष्यनाम	मत
भगवत्पादशङ्कराचार्य	शारीरकभाष्य	केवलाद्वैत
भास्कर	भास्करभाष्य	भेदाभेद
रामानुज	श्रीभाष्य	विशिष्टाद्वैत
मध्व	पूर्णप्रज्ञभाष्य	द्वैत
निम्बार्क	वेदान्तपारिजात	द्वैताद्वैत
श्रीकण्ठ	शैवभाष्य	शैवविशिष्टाद्वैत
श्रीपति	श्रीकरभाष्य	वीरशैवविशिष्टाद्वैत
वल्लभ	अणुभाष्य	शुद्धाद्वैत
विज्ञानभिक्षु	विज्ञानामृत	अविभागाद्वैत

34. 'तत्त्वमसि' इति वाक्यसमन्वये वेदान्ताभिमत लक्षणा वर्तते।

(a) जहल्लक्षणा (b) जहदजहल्लक्षणा
(c) अजहल्लक्षणा (d) उपादानलक्षणा

उत्तर–(b)

'तत्त्वमसि' इस महावाक्य में वेदान्तमतानुसार 'जहदजहल्लक्षणा' है।

- अनुपहित शुद्धचैतन्य 'तत् एवं त्वम्' इन दोनों पदों का लक्ष्यार्थ है। इसीलिए 'तत् एवं त्वम्' दोनों पद यहां लक्षण है तथा शुद्ध चैतन्य लक्ष्य है।

- तत्त्वमसि (वह तू है) इत्यादि वाक्य तीन संबंधों समानाधिकरण्य, विशेषणविशेष्यभाव एवं लक्ष्यलक्षणभाव से अखण्ड अर्थ का बोध कराने वाला है। यही लक्ष्यलक्षण संबंध ''भागलक्षणा'' के नाम से भी जानी जाती है।
- 'तत्त्वमसि' वाक्य उपदेशवाक्य है। 'अहं ब्रह्मास्मि' अनुभववाक्य है।

वेद	उपनिषद्	महावाक्य
ऋग्वेद	ऐतरेयोपनिषद्	प्रज्ञानं ब्रह्म
यजुर्वेद	बृहदारण्यकोपनिषद्	अहं ब्रह्मास्मि
सामवेद	छान्दोग्योपनिषद्	तत्त्वमसि
अथर्ववेद	माण्डूक्योपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्

35. षड्विधलिङ्गैः समुपेतं किम् ?

(a) श्रवणम् (b) मननम्
(c) निदिध्यासनम् (d) अध्यासः

उत्तर–(a)

''श्रवणं नाम षड्विधलिङ्गैरशेषवेदान्तानामद्वितीये वस्तुनि तात्पर्यावधारणम्'' अर्थात् सम्पूर्ण वेदान्तसूत्रों का अद्वितीय ब्रह्म रूप वस्तु में तात्पर्य है, इसका छः प्रकार के लिङ्गों से निश्चय करना 'श्रवण' है।

षड्लिङ्ग- लिङ्गानि तूपक्रमोपसंहाराभ्यासापूर्वताफलार्थवादोपपत्त्याख्यानि''।

उपक्रम एवं उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद तथा उपपत्ति नामक छः लिङ्ग हैं।
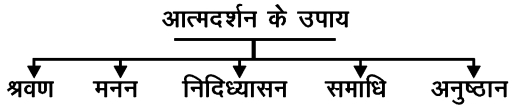
36. सांख्ये अन्तःकरणं कतिविधं भवति ?

(a) त्रिविधम् (b) चतुर्विधम्
(c) षड्विधम् (d) दशविधम्

उत्तर–(a)

अन्तःकरण तीन प्रकार एवं बाह्यकरण दस प्रकार के हैं;

अन्तःकरण- बुद्धि, अहङ्कार, मन

बाह्यकरण- पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां।

सांख्यदर्शन के अनुसार करण के तेरह भेद हैं- 'करणं त्रयोदशविधम्'

''अन्तःकरणं त्रिविधं दशधा बाह्यं त्रयस्य विषयाख्यम्।
साम्प्रतकालं बाह्यं त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम् ।।''

- ज्ञानेन्द्रियां बाह्य विषयों को ग्रहण करके अन्तःकरणत्रय के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। आभ्यन्तरकरण तीनों कालों में प्रभावी होता है, जबकि बाह्यकरण केवल वर्तमानकाल के विषयों में प्रभावी होता है।
- **अन्तःकरणों के कार्य-** बुद्धि - निश्चय करना
  अहंकार - अभिमान करना
  मन - संकल्प-विकल्पात्मक

37. सांख्याभिमतख्यातिः का ?

(a) अनिर्वचनीयख्यातिः (b) अन्यथाख्यातिः
(c) विवेकख्यातिः (d) असत्ख्यातिः

उत्तर–(c)

''सांख्याभिमत विवेकख्यातिः''

''धर्मेण गमनमूर्द्ध्वं गमनमधस्ताद् भवत्यधर्मेण।
ज्ञानेन चाऽपवर्गो विपर्ययादिष्यते बन्धः।।44।।''

अर्थात् प्राणियों का धर्म से ऊर्ध्व लोक में गति होती है, अधर्म से अधोलोक की ओर गमन होता है। विवेकख्यातिरूप तत्त्वज्ञान से अपवर्ग होता है तथा इसके विपरीत अज्ञान से बन्धन की प्राप्ति होती है।

''वैराग्यात् प्रकृतिलयः संसारो भवति राजसाद् रागात्।
ऐश्वर्यादविघातो विपर्ययात् तद्विपर्यासः ।।45।।

वैराग्य से प्रकृतिलय होता है, रजोमय राग से संसरण होता है, ऐश्वर्य से इच्छा की सफलता होती है तथा इसके विपरीत अनैश्वर्य से इच्छा का सर्वत्र विघात होता है।

- अनिर्वचनीयख्याति- अद्वैत, अन्यथाख्याति-न्याय, असत्ख्याति - बौद्ध दर्शन से संबंधित है।

38. सांख्यानुसारं पुरुषबहुत्वप्रस्थापने कारणं भवति

(a) जननमरणकरणानां प्रतिनियमात्
(b) शरीराकारभेदात्
(c) इन्द्रियसंख्याभेदात्
(d) प्रतिपुरुषं ज्ञानभेदात्

उत्तर–(a)

''जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ।।

जन्म, मरण तथा इन्द्रियों की व्यवस्था होने से और एकसाथ प्रवृत्ति का अभाव होने से तथा तीनों गुणों के भेद के कारण पुरुष बहुत्व की सत्ता सिद्ध होती है। इस प्रकार पुरुषबहुत्व की सत्ता सिद्ध करने वाले तीन हेतु परिलक्षित होते हैं- (i) जननमरणकरणानां, (ii) अयुगपत्प्रवृत्तेः, (iii) त्रैगुण्यविपर्ययात्।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

पुरुष की सत्ता सिद्धि की कारिका-

''संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृतेश्च।।''

अव्यक्त (मूलप्रकृति) की सत्ता सिद्ध की कारिका-

**''भेदानां परिमाणात् समन्वयाच्छक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य ।।**

39. अङ्गानां क्रमबोधको विधिर्वर्तते

(a) विनियोगविधिः (b) नियमविधिः
(c) परिसंख्याविधिः (d) प्रयोगविधिः

उत्तर–(d)

''तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः''। अज्ञान अर्थ को ज्ञापित कराने वाले वेदभाग को 'विधि' कहते हैं।

''विधिश्चतुर्विधः - उत्पत्ति विधि, विनियोग विधि, अधिकारविधि, प्रयोगविधि।

(1) **उत्पत्ति विधि-** 'तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः।' कर्मस्वरूप मात्र का बोधक विधि 'उत्पत्तिविधि' कहलाता है, यथा- अग्निहोत्रं जुहोति।

(2) **विनियोग विधि-** "अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः'' (अङ्गों के साथ सम्बन्धबोधक विधि को 'विनियोग विधि' कहते हैं। यथा-दध्ना जुहोति।

(3) **अधिकार विधि-** ''कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः। (कर्मजन्य फल की स्वाम्यबोधक विधि अधिकार विधि है।

(4) **प्रयोग विधि-** ''प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः''। (जिस विधिवाक्य से प्रयोग को शीघ्र करने का बोध होता है उसे प्रयोग विधि कहते हैं। जैसे- दध्ना जुहोति।

- ''अङ्गानां क्रमबोधको विधिः प्रयोगविधिः'' (अङ्गों के क्रम का बोध कराने वाली विधि को प्रयोग विधि कहते हैं।

40. अधोनिर्दिष्टेषु कुत्र गुणवादो दृश्यते

(a) अग्निर्हिमस्य भेषजम्

(b) आदित्यो यूपः

(c) इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्

(d) बर्हिषि रजतं न देयम्

उत्तर–(b)

वेद के पांच भेद हैं- विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद।

विधि- तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेद भागो विधिः ।

मन्त्र- प्रयोगसमवेतार्थस्मारका मन्त्राः।

नामधेय- नामधेयानां च विधेयार्थपरिच्छेदकतयार्थवत्वम् ।

निषेध - पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः ।

अर्थवाद - प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः।

(प्रशंसा अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं)

अर्थवाद के दो भेद- (1) विधिशेष, (2) निषेधशेष ।

पुनः प्रकारान्तर के भेद से अर्थवाद के तीन भेद हुए-

(1) गुणवाद, (2) अनुवाद, (3) भूतार्थवाद ।

- ''**विरोधे गुणवादः''** (कथित विषय का प्रमाणान्तर से विरोध होने पर 'गुणवाद' होता है, जैसे- आदित्यो यूपः ।
- ''प्रमाणान्तरावगतार्थबोधकोऽर्थवादोऽनुवाद'' (दूसरे प्रमाण से ज्ञात पदार्थ का ज्ञापक अर्थवाद 'अनुवाद' कहलाता है। जैसे- अग्निर्हिमस्य भेषजम् ।
- ''प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थबोधकोऽर्थवादो भूतार्थवादः'' (दूसरे प्रमाण से होने वाले बाध और बोध दोनों से रहित विषय का ज्ञापक अर्थवाद 'भूतार्थवाद' कहलाता है। जैसे- इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत् ।

41. रामायणमाश्रित्य यस्य कथास्ति

(a) कुन्दमाला (b) रत्नावली

(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) पञ्चरात्रम्

उत्तर–(a)

'कुंदमाला' रामायण पर आश्रित रूपक ग्रन्थ है। दिङ्नागकृत कुंदमाला में राम के उत्तर जीवन का वर्णन है।

रामायण आधारित रूपक ग्रन्थ		**रामायण आधारित महाकाव्य**	
रघुवंशम्	कालिदास	भास	प्रतिमानटक
रावणवध	भट्टिकवि	भवभूति	महावीरचरित, उत्तररामचरित
जानकीहरण	कुमारदास	मुरारि	अनर्घराघव
सेतुबंध	प्रवरसेन	जयदेव	प्रसन्नराघव
रामायणमंजरी	क्षेमेन्द्र	दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक
राघवपाण्डवीय	माधवभट्ट	रामभद्र	जानकीपरिणय
रघुनाथाभ्युदय	वामनभट्ट बाण	राजशेखर	बालरामायण

42. यं ग्रन्थमधिकृत्य शङ्कराचार्येण भाष्यं न रचितम्

(a) ब्रह्मसूत्रम् (b) श्रीमद्भागवतम्

(c) ईशावास्योपनिषद् (d) श्रीमद्भगवद्गीता

उत्तर–(b)

आचार्य शङ्कराचार्य ने 'श्रीमद्भागवत्' पर कोई भी भाष्य नहीं लिखा है।

- शङ्कराचार्यकृत भाष्य निम्नलिखित ग्रन्थों पर प्राप्त होते हैं-
- ब्रह्मसूत्र पर शारीरकभाष्य
- समस्त प्रमुख उपनिषदों पर आदि शङ्कराचार्य के भाष्य प्राप्य हैं।
- भगवत्गीता (महाभारत)
- सहस्रनाम (महाभारत)
- विष्णु सहस्रनाम (महाभारत)
- सानत्सुजातिय (महाभारत)

आदि शङ्कराचार्य ने सांख्य दर्शन के प्रधानकारणवाद और मीमांसादर्शन के ज्ञान-कर्म समुच्चयवाद का खण्डन किया। इन्होंने भारत के चार कोनों में चार मठों की स्थापना की थी जो आज भी पवित्र और प्रसिद्ध हैं। शङ्कराचार्य के विचारोपदेश आत्मा एवं परमात्मा की एकरूपता पर आधारित हैं।

43. जटायुरावणयुद्धं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे?

(a) अरण्यकाण्डे (b) सुन्दरकाण्डे

(c) किष्किन्धाकाण्डे (d) बालकाण्डे

उत्तर–(a)

जटायु और रावण का युद्ध रामायण के 'अरण्यकाण्ड' में है। रामायण, महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें सात काण्ड हैं- (1) बालकाण्ड, (2) अयोध्याकाण्ड, (3) अरण्यकाण्ड, (4) किष्किन्धाकाण्ड, (5) सुन्दरकाण्ड, (6) युद्धकाण्ड, (7) उत्तरकाण्ड

रामायण में 24 हजार श्लोक हैं, इसीलिए इसको 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहते हैं।

- किष्किन्धा काण्ड में हनुमान और राम का मिलन होता है। बालि वध तथा हनुमान द्वारा लंका की ओर प्रस्थान इसी काण्ड में होता है।
- सुन्दरकाण्ड में हनुमान लंका में सीता माता से भेंट करके वापस आते हैं तथा नल और नील के द्वारा लंका तक पुल बनाने का वर्णन है।
- वाल्मीकिकृत 'रामायण' आदिकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है, इसमें मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द हैं।
- ऋषि वाल्मीकि द्वारा विरचित होने के कारण इसे 'आर्षकाव्य' भी कहा जाता है।

44. रामायणे हनुमतः अङ्गुलीयकप्रदानवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते?

(a) सुन्दरकाण्डे (b) युद्धकाण्डे
(c) किष्किन्धाकाण्डे (d) उत्तरकाण्डे

उत्तर–(a)

रामायण में हनुमान जी द्वारा लङ्का पहुंचकर सीताजी को अंगूठी देने का वृत्तान्त 'सुन्दरकाण्ड' में वर्णित है।

- सुन्दरकाण्ड, रामायण का एकमात्र ऐसा काण्ड है; जिसमें मुख्यपात्र राम नहीं, अपितु हनुमान जी हैं।

लंका में हनुमान जी, सीता को खोज रहे होते हैं तो वह अशोक वाटिका में दिखती हैं। अशोकवाटिका में ,सीता को रावण से शादी करने के लिए रावण और उसकी राक्षसी मालकिनों द्वारा लुभाया और धमकाया जाता है, उसी समय हनुमान; सीताजी को रामजी की मुहर वाली अंगूठी सद्भावना के संकेत के रूप में देकर उन्हें आश्वस्त करते हैं, वह सीताजी को वापस राम के पास ले चलने का प्रस्ताव रखते हैं, लेकिन सीताजी मना करते हुए कहती हैं कि रामजी को स्वयं आना चाहिए और अपहरण के अपमान का बदला लेकर हमको वापस ले चलें।

45. पुराणपञ्चलक्षणे नास्ति

(a) वंशः (b) सर्गः
(c) उत्सर्गः (d) प्रतिसर्गः

उत्तर–(c)

विष्णुपुराण आदि में प्रतिपाद्य विषयों के आधार पर पुराण का **लक्षण-** ''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥''

अर्थात् पुराण में पांच बातें होनी चाहिए–

(1) **सर्ग -** सृष्टि की उत्पत्ति का विवेचन,
(2) **प्रतिसर्ग-** प्रलय एवं सृष्टि का पुनः प्रादुर्भाव,
(3) **वंश-** देवों एवं ऋषियों की वंशावली,
(4) **मन्वन्तर-** प्रत्येक मनु का काल तथा उस समय की घटनाएं,
(5) **वंशानुचरित-** सूर्य एवं चन्द्रवंशी राजाओं का जीवन चरित ।

- **पुराणों के 18 भेद हैं-**

(1) मत्स्य, (2) मार्कण्डेय, (3) भविष्य, (4) भागवत्, (5) ब्रह्माण्ड, (6) ब्रह्मवैवर्त, (7) ब्रह्म, (8) वामन, (9) वराह, (10) विष्णु, (11) वायु, (12) अग्नि, (13) नारद, (14) पद्म, (15) लिङ्ग, (16) गरुड़, (17) कूर्म, (18) स्कन्द ।

46. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते?

(a) मत्स्यपुराणे (b) शिवपुराणे
(c) विष्णु धर्मोत्तर पुराणे (d) अग्निपुराणे

उत्तर–(d)

विविध शास्त्रों से संबंधित विषय 'अग्नि पुराण' में है। प्राचीन भारत की परा एवं अपरा विधाओं का तथा नाना भौतिक शास्त्रों का व्यवस्थित वर्णन अग्नि पुराण में किया गया है। इसी उपयोगिता के कारण इसको 'विश्वकोश' कहा जाता है।

'आग्नेय हि पुराणेऽस्मिन् सर्वा विद्याः प्रदर्शिताः।'

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

भागवत पुराण- वैष्णवों का यह प्रिय पुराण है, इसमें 12 स्कन्ध तथा 18 हजार श्लोक हैं। इसमें कृष्ण की रास-लीला एवं क्रीड़ाओं का विस्तृत वर्णन है।

मत्स्य पुराण- इस पुराण में आन्ध्र राजाओं की प्रामाणिक वंशावली दी गयी है। इसमें दक्षिण भारत की मूर्तिकला, वास्तु-कला, एवं स्थापत्य-कला का सुन्दर वर्णन है।

शिवपुराण- वायुपुराण को ही शिवपुराण कहा जाता है, इसमें 112 अध्याय तथा 10 हजार श्लोक हैं।

47. बालिवधस्य वर्णनमस्ति रामायणस्य

(a) सुन्दरकाण्डे (b) किष्किन्धाकाण्डे
(c) अरण्यकाण्डे (d) बालकाण्डे

उत्तर–(b)

रामायण में 'बालिवध' का वर्णन 'किष्किन्धाकाण्ड' में है।

किष्किन्धाकाण्ड के प्रमुख प्रसङ्ग-

1) श्रीरामजी से हनुमान का मिलन तथा श्रीराम-सुग्रीव की मित्रता।
2) बालि-सुग्रीव युद्ध, बालि उद्धार, तारा का विलाप।
3) तारा को श्रीराम जी द्वारा उपदेश, सुग्रीव का राज्याभिषेक एवं अंगद को युवराज पद।
4) सुग्रीव-राम संवाद तथा सीताजी की खोज के लिए बंदरों का प्रस्थान।
5) सम्पाती से भेंट।
6) समुद्र लांघने का परामर्श, जाम्बवन्त का हनुमानजी को बल याद दिलाकर उत्साहित करना, श्रीरामजी के गुणों का माहात्म्य।

48. अमात्यानां शौचाशौचज्ञानार्थं कौटिल्येन उपधासु या न निर्दिष्टा

(a) कामोपधा (b) अर्थोपधा
(c) मोक्षोपधा (d) धर्मोपधा

उत्तर–(c)

कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र के विनयाधिक प्रकरण में अमात्यों के आचरणों की परीक्षा हेतु शौचाशौच नियम का परिपालन किया गया।

आचरणों के परीक्षण हेतु धर्मोपधा, कामोपधा, अर्थोपधा तथा भयोपधा नामक परीक्षा अमात्यों की ली गयी, किन्तु मोक्षोपधा नामक कोई भी परीक्षा का उल्लेख नहीं है।

धर्मोपधा- गुप्त धार्मिक उपायों द्वारा अमात्य के हृदय की पवित्रता की परीक्षा को 'धर्मोपधा' कहते हैं।

अर्थोपधा- गुप्त आर्थिक उपायों द्वारा अमात्य के हृदय की परीक्षा 'अर्थोपधा' कहलाती है।

कामोपधा- गुप्त कामसंबंधी उपायों द्वारा अमात्य के हृदय की पवित्रता की परीक्षा को 'कामोपधा' कहते है।

भयोपधा- गुप्त भयसंबंधी उपायों द्वारा अमात्य की शुचिता की परीक्षा, 'भयोपधा' कहलाती है।

इन परीक्षाओं में सफल होने पर धर्मपरीक्षा वाले को धर्मस्थानीय तथा कण्टकशोधन कार्यों में, अर्थपरीक्षा वाले को समाहर्ता तथा सन्निधाता के पद पर, कामोपधा में उत्तीर्ण होने पर विलास-स्थानों तथा अन्त:पुर की रक्षा का कार्य तथा भयोपधा में उत्तीर्ण अमात्यों को राजा अपना अङ्गरक्षक नियुक्त करता था।

49. 'मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान्कुर्वीत' इति कस्य मान्यता?

(a) बार्हस्पत्यानाम् (b) कौटिल्यस्य
(c) औशनसाम् (d) मानवानाम्

उत्तर–(d)

''मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान् कुर्वीत् इति मानवाः'' मनु के अनुयायी अर्थशास्त्रविदों का मानना था कि मन्त्रिपरिषद् में बारह अमात्यों की नियुक्ति की जानी चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **षोडशेति बार्हस्पत्या:-** बृहस्पति के अनुयामी विद्वान सोलह मंत्रियों' के पक्ष में है।
- **विशंतिमित्यौशनसा :** शुक्राचार्य के अनुयायी आचार्य 20 मंत्रियों के रखने के पक्ष में है।
- **यथासामर्थ्यमिति कौटिल्य:** (आचार्य कौटिल्य का मानना है कि 'कार्य करने वाले पुरुषों के सामर्थ्य के अनुसार ही मंत्रियों की संख्या नियत होनी चाहिए।

50. देवानां दिनं भवति

(a) कृष्णपक्षः (b) शुक्लपक्षः
(c) उत्तरायणम् (d) दक्षिणायनम्

उत्तर–(c)

देवानां दिनं उत्तरायणम् भवति ।

दैवे रात्र्यहनी वर्षे प्रविभागस्तयोः पुनः।
अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद्दक्षिणायनम् ।।

अर्थात् मनुष्यों का एक वर्ष, देवताओं का रात्रि-दिन होता है। रात्रि दिन का विभाग इस प्रकार है कि उत्तरायण देवताओं का दिन एवं दक्षिणायन रात है।

ब्रह्म का रात-दिन एवं युग -

चत्वार्याहुः सहस्त्राणि वर्षाणां तत्कृतं युगम् ।
तस्य तावच्छती संध्या संध्यांशश्च तथाविधः ।

चार हजार वर्ष का सतयुग कहा गया है, उसकी चार सौ वर्ष की संध्या और चार सौ वर्ष का संध्यांश (युग का अंत) होता है।

''दैविकानां युगानां तु सहस्त्र परिसंख्यया ।
ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावतीं रात्रिमेव च ।।

देवताओं के एक हजार युगों के परिमाण के बराबर ब्रह्मा का एक दिन तथा उतनी ही रात होती है।

51. अङ्गुलिमूले किं तीर्थं भवति?

(a) ब्राह्मम् (b) कायम्
(c) दैवम् (d) पित्र्यम्

उत्तर–(b)

अङ्गुलिमूले कायम् (प्रजापति) तीर्थं भवति ।

''अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्षते ।
कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः।

अर्थात् अंगूठे की जड़ के नीचे ब्राह्म तीर्थ, अङ्गुली के मूल में कायम् (प्रजापति) तीर्थ, अंगुलियों के अग्रभाग में दैव तीर्थ तथा अंगूठे और प्रदेशिनी के मध्य में पित्र्य तीर्थ होता है।

कामज व्यसन- ''मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः ।
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।।''

मृगया, जुआ खेलना, दिन में सोना, पराया दोष कहना, स्त्रियों में आशक्ति, मद्यपान, बजाना, नाचना, गाना तथा वृथा घूमना आदि दस दोष काम से उत्पन्न होते हैं।

52. मनुना राजा स्वराष्ट्रे कीदृशोऽभिप्रेतः ?

(a) भृशदण्डः (b) अजिह्नः
(c) क्षमान्वितः (d) न्यायवृत्तः

उत्तर–(d)

मनु के अनुसार राजा को अपने राष्ट्र में न्याय के अनुसार दण्ड विधान करना चाहिए।

''स्वराष्ट्रे न्यायवृत्तः स्याद् भृशदण्डश्च शत्रुषु ।
सुहृत्स्वजिह्मः स्निग्धेषु ब्राह्मणेषु क्षमान्वितः ।।''

राजा का अपने राज्य में न्यायानुसार दंड विधान करना, शत्रुओं का तीक्ष्ण दंड से दमन करना, प्रीतियुक्त मित्रों के साथ निष्कपट होकर व्यवहार करना तथा ब्राह्मणों पर क्षमा करना उचित है।

''पैशुन्यं साहसं ईर्ष्यासूयार्थैदूषणम् ।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः ।।''

चुगली, दु:साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना तथा अनुचित दंड देना, ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न होते हैं।

53. श्रुतार्थस्योत्तरं कुत्र लेख्यम् ?

(a) नृपसन्निधौ (b) पूर्वावेदकसन्निधौ

(c) सभासदसन्निधौ (d) ब्राह्मणसन्निधौ

उत्तर–(b)

''श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं पूर्वावेदकसन्निधौ''।
वादी के वाद को सुनने के बाद प्रतिवादी द्वारा सुने गये विषय-अभियोग का उत्तर पहले के वादी के सामने लिखना चाहिए।

''ततोऽर्थी लेखयेत्सद्यः प्रतिज्ञातार्थसाधनम्''।
प्रतिवादी का उत्तर सुनने के बाद वादी तत्काल प्रतिज्ञात अर्थ लगाये गये अभियोग का प्रमाण लिखावे।

''चतुष्पाद व्यवहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः''
विवादों में चतुष्पाद व्यवहार बताया गया है।

54. अभियोगस्यापह्नवे कियद् धनं राज्ञे दद्यात् ?

(a) द्विगुणम् (b) त्रिगुणम्

(c) चतुर्गुणम् (d) अभियोगसमम्

उत्तर–(d)

''निह्नवे भावितो दद्याद्धनं राज्ञे च तत्समम् ।
मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्धनं वहेत् ।।
अर्थात् अर्थी द्वारा लगाये गए अभियोग के धन को प्रत्यर्थी द्वारा छिपाये जाने की स्थिति में अभियुक्त धन को साक्ष्यादि द्वारा प्रत्यर्थी को स्वीकार कराये जाने पर अर्थात् सिद्ध हो जाने पर प्रत्यर्थी छिपाने के अपराध में उस धन के बराबर धन राजा को दण्डस्वरूप दे तथा अभियोग में सिद्ध हुए धन को अभियोक्ता को दे तथा मिथ्याभियोग लगाने वाला उस धन के दूना धन दण्डस्वरूप दे ।

- ''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः'' (दो स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार से किया गया निर्णय बलवान् होता है।)
- ''अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः'' (अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है)।

55. 'तवाभिधानाद्व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः' — इत्यत्र नताननः कः ?

(a) सुयोधनः (b) धर्मराजः

(c) वनेचूरः (d) भीमसेनः

उत्तर–(a)

''कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रयः ।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः ।।24।।
सर्पविद्या को जानने वाले श्रेष्ठ विषवैद्यों के द्वारा उच्चारित गरुड़ एवं वासुकि के नाम वाले अत्यन्त दुःसह मन्त्रपदों से विष्णु के पक्षी गरुड़ के पादप्रहार का स्मरण करके फण नीचे किये हुए सर्प के समान पारस्परिक वार्तालाप के प्रसङ्ग में लोगों के द्वारा उच्चरित आप (युधिष्ठिर) के नाम से इन्द्र-पुत्र अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके दुर्योधन नीचे मुंह करके दुःखी हो जाता है।
यहां 'नताननः' पद 'सुयोधन' के लिए प्रयुक्त है।
नताननः- नतम् आननं यस्य सः (बहुब्रीहि समास)

- भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। इसका उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है। मल्लिनाथ ने किरातार्जुनीयम् पर 'घण्टापथ' नामक टीका लिखी।

56. रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेतोः कुत्र गतः ?

(a) उद्याने (b) वने

(c) धवलगृहे (d) स्नानगृहे

उत्तर–(c)

रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेतोः धवलगृहे गतः ।
अर्थात् रुग्ण प्रभाकरवर्धन को उपचार के लिए धवलगृह में ले जाया गया। हर्षचरितम् के पंचम् उल्लास के कथानक में राजा प्रभाकर ने कुमार राज्यवर्धन को हूणों को परास्त करने के लिए उत्तरी सीमा पर भेजा है, हर्षवर्धन भी कुछ दूर तक उनका अनुगमन करते हैं किन्तु बाद में आखेट के लिए रुक जाते हैं, एक रात हर्षवर्धन ने दुःस्वप्न देखा तथा अगले ही दिन पिता की गम्भीर रुग्णावस्था का संदेश प्राप्त हुआ। वे वहां से तत्काल वापस आये तथा पिता की दशा देखकर संतप्त हो गये।
आचार्य बाणभट्ट की पांच कृतियां प्रसिद्ध हैं- (1) हर्षचरितम्, (2) कादम्बरी, (3) पार्वतीपरिणय, (4) चण्डीशतक, (5) मुकुटताडितक ।

- हर्षचरितम् आठ उच्छ्वासों में विभक्त एक आख्यायिका ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में स्वयं बाण ने अपने वंश का विशद् वर्णन किया है।

57. रत्नावलीनाटिकायाः प्रथमाङ्कस्य नाम किम्?

(a) संकेतः (b) मदन-महोत्सवः

(c) कदलीगृहः (d) ऐन्द्रजालिकः

उत्तर–(b)

रत्नावली 4 अङ्कों की नाटिका है–
प्रथम अङ्क - मदनमहोत्सव, **द्वितीय अङ्क -** कदलीगृह
तृतीय अङ्क - संकेत, **चतुर्थ अङ्क -** ऐन्द्रजालिक
हर्षवर्धन की तीन रचनाएं हैं- (1) रत्नावली, (2) प्रियदर्शिका, (3) नागानन्द । रत्नावली का नायक उदयन (धीरललित) तथा नायिका सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका) हैं।

- रत्नावली का उपजीव्य गुणाढ्य कृत बृहत्कथा को माना जाता है।
- प्रथम अङ्क में वसन्तोत्सव का रमणीय वर्णन है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रत्नावली में 'वसन्तक' विदूषक है।
- रत्नावली के मङ्गलाचरण में काव्यलिङ्ग अलंकार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है।
- वासवदत्ता कामदेव की पूजा मकरन्द उद्यान में सम्पन्न करती है।
- कमण्वान, उदयन का सेनापति था।

58. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

A. प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः	**1. किरातार्जुनीयम्**
B. अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम्	**2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्**
C. अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता	**3. शिशुपालवधम्**
D. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्	**4. रत्नावली**

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	3	4	1
(b)	4	2	1	3
(c)	3	4	1	2
(d)	1	3	2	4

उत्तर–(c)

- ''गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः, प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।
  पतत्यधो-धाम विसारि सर्वतः, किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः।।2।।
  यह पंक्ति शिशुपालवधम् से उद्धृत है।
- प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति, प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
  स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो, दुरन्ता बलवद्विरोधिता ।।23।।
  उपर्युक्त पंक्ति भारवि रचित किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है।
- सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
  मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
  इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
  किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।।1/20।। यह श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् से उद्धृत है। इसमें सात अंक हैं।
- अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् ।
  यदनेन न सम्प्राप्तः पाणिस्पर्शोत्सवस्तव ।।
  यह पंक्ति रत्नावली से उद्धृत है।

59. 'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति' - इति कस्य लक्षणम् ?

(a) मुखस्य (b) निर्वहणस्य
(c) बीजस्य (d) पताकायाः

उत्तर–(c)

बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः ।
अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः।।
बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य नामक पांच अर्थप्रकृतियां हैं।

बीज- ''स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतुर्बीजं विस्तर्थानेकधा''। (उस फल का कारण ही बीज है। आरम्भ में स्वल्प संकेत किया जाता है, किन्तु आगे चलकर यह अनेक प्रकार से पल्लवित होता है।)

बिन्दु- ''अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्''। (अवान्तर अर्थ से मुख्य कथा-वस्तु के विच्छिन्न हो जाने पर, जो उसे जोड़ने तथा आगे बढ़ाने का कारण होता है, वह 'बिन्दु' कहलाता है।)

- फल की इच्छा वाले व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य की पांच अवस्थाएं होती हैं- (1) आरम्भ, (2) यत्न, (3) प्राप्त्याशा, (4) नियताप्ति, (5) फलागम।
- पांच सन्धियां हैं- (1) मुख, (2) प्रतिमुख, (3) गर्भ, (4) सावमर्श, (5) उपसंहृति ।
- पांच अर्थोपक्षेपक हैं- (1) विष्कम्भक, (2) चूलिका, (3) अंकास्य, (4) अंकावतार, (5) प्रवेशक ।

60. ''आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ।'' कोऽत्रालङ्कारः?

(a) उपमा (b) दृष्टान्तः
(c) निदर्शना (d) अर्थान्तरन्यासः

उत्तर–(d)

''आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम् ।
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ।।''
आशा का बन्धन ही प्रेम से ओत-प्रोत, पुष्प के समान कोमल तथा वियोग से शीघ्र टूटने वाले अबलाओं के हृदय को प्रायः रोके रहता है।
उपर्युक्त श्लोक मेघदूतम् से उद्धृत है, इसमें अर्थान्तरन्यास अलंकार तथा मन्दाक्रान्ता छन्द है।

अर्थान्तरन्यास अलंकार-

''सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते ।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा'' ।।काव्यप्रकाश।।
जहां विशेष द्वारा सामान्य का अथवा सामान्य द्वारा विशेष का, कारण द्वारा कार्य का अथवा कार्य द्वारा कारण का- साधर्म्य अथवा वैधर्म्य के माध्यम से समर्थन किया जाता है वहाँ 'अर्थान्तरन्यास' अलंकार होता है।

61. फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यावस्थाः कति सन्ति?

(a) षट् (b) पञ्च
(c) सप्त (d) दश

उत्तर–(b)

''अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः ।
आरम्भयत्नाप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमः।।''
फल की इच्छा वाले व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य की पांच अवस्थाएं होती हैं– (1) आरम्भ, (2) यत्न, (3) प्राप्त्याशा, (4) नियताप्ति, (5) फलागम।

आरम्भ- ''औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे''। (महान् फल की प्राप्ति के लिए केवल उत्सुकता का होना ही 'आरम्भ' कहा गया है।)

प्रयत्न- ''प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः''। (फल के प्राप्त न होने पर उसके लिए अत्यन्त वेग के साथ कार्य प्रारम्भ कर देना ही 'प्रयत्न' है।)

प्राप्याशा- ''उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः''। (फल प्राप्ति के उपाय तथा विघ्न की शङ्का दोनों की उपस्थिति से जो फल-प्राप्ति की सम्भावनामात्र होती है वह 'प्राप्त्याशा' नामक अवस्था होती है।)
नियताप्ति- ''अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता''। (विघ्नों के अभाव के कारण (जबकि फल की प्राप्ति पूर्ण निश्चित हो जाती है, 'नियताप्ति' अवस्था कहलाती है।)
फलागम- ''समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः''। (समस्त फल की प्राप्ति 'फलागम' कहलाता है।)

62. 'न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति' — इति कुत्र वर्तते?
(a) वेणीसंहारे (b) रत्नावल्याम्
(c) मध्यमव्यायोगे (d) मुद्राराक्षसे

उत्तर–(d)

''न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति'' (सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं)। उपर्युक्त पंक्ति मुद्राराक्षस से उद्धृत है।
मुद्राराक्षस, विशाखदत्तकृत संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है। इसमें चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त मौर्य संबंधी ख्यातवृत्त के आधार पर चाणक्य की राजनीतिक सफलताओं का अपूर्व विश्लेषण मिलता है। मुद्राराक्षस में नायिका एवं विदूषक का अभाव है।
- वेणीसंहार- भट्टनारायण, रत्नावली-हर्षदेव एवं मध्यमव्यायोग-भासकृत नाटक गन्थ हैं।

63. वासवदत्तया कुसुमायुधस्य पूजा कुत्र संपादिता ?
(a) बकुलपादपतले (b) रक्ताशोकपादपतले
(c) सहकारवृक्षतले (d) दाडिमवृक्षतले

उत्तर–(b)

वासवदत्ता—काञ्चनमाले ! अथ कियद्दूरे स रक्ताशोक पादपो यत्र मया भगवतः कुसुमायुधस्य पूजा निर्वर्तयितव्या। वासवदत्ता कहती है कि- सखी काञ्चनमाला ! अब कितनी दूर वह लाल अशोक का पेड़ है, जहां मुझे भगवान् कन्दर्प का पूजन करना है।
रत्नावली के प्रमुख कथन-
सूत्रधार- द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात्।
सूत्रधार- आनीय अटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।
यौगन्धरायण- कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः ।
सुसङ्गता- न कमलाकरमुज्झित्वा राजहंस्यन्यत्राभिरमते।
विदूषक - ईदृशं रूपं मनुष्य लोके न पुनर्दृश्यते ।
राजा - अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः।
राजा - दुरवगाहा गतिर्दैवस्य ।

64. वचो भारवेः
(a) कदलीफलसम्मितम् (b) द्राक्षाफुलसम्मितम्
(c) दाडिमफलसम्मितम् (d) नारिकेलफलसम्मितम्

उत्तर–(d)

कवि भारवि की रचना 'किरातार्जुनीयम्' के लिए टीकाकार मल्लिनाथ ने ''नारिकेलफलसम्मितम् वचः'' कहा। अर्थात् नारियल के सदृश वाणी। जिस प्रकार नारियल बाहर से दिखने में अत्यन्त कठोर एवं अन्दर से अत्यन्त कोमल तथा सरस होता है; उसी प्रकार भारवि की वाणी भी देखने में कठोर लेकिन उसके अर्थ अत्यन्त सरल एवं गम्भीरता से परिपूर्ण हैं।
भारवि की प्रशंसा में उक्त सूक्तियां- (1) भारवेरर्थगौरवम्।
(2) प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।
(3) स्फुटता न पदैरपाकृता।
- किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में 'लक्ष्मी' पद का प्रयोग हुआ है।

65. 'कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च' — कस्य विषये आयाति ?
(a) रसस्वरूपविषये (b) वस्तुस्वरूपविषये
(c) ध्वनिविषये (d) अलङ्कार विषये

उत्तर–(a)

रस स्वरूप- ''कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥''
''विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः ।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः॥''
अर्थात् लोक में रति आदि स्थायी भावों के जो कारण, कार्य और सहकारी हैं, वे यदि नाट्य और काव्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव कहे जाते हैं और उन विभावादि से व्यक्त वह स्थायीभाव रस कहा गया है।
आचार्य भरत के अनुसार-
''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पन्तिः''।
अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारिभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।
प्रमुख रस सिद्धान्त → भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद।
→ श्रीशंकुक का अनुमितिवाद।
→ भट्टनायक का भुक्तिवाद।
→ अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद।

66. अश्वघोषः कस्य धर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि अलिखत्?
(a) जैनधर्मस्य (b) बौद्धधर्मस्य
(c) सिखधर्मस्य (d) ख्रिष्टधर्मस्य

उत्तर–(b)

अश्वघोष ने 'बौद्धधर्म' के प्रचारार्थ काव्यों को लिखा।
अश्वघोष ने बुद्धचरित, सौन्दरानन्द तथा शारिपुत्रप्रकरण की पुष्पिका में निर्देशित किया है कि वह बौद्ध भिक्षु तथा साकेत (अयोध्या) का निवासी था। अश्वघोष कनिष्क के समय में आयोजित चतुर्थ बौद्ध-महासमिति का संचालक एवं कार्याध्यक्ष था। उसने अभिधम्म की 'विभाषा' नामक व्याख्या की है।
- बुद्धचरित में 28 सर्ग हैं तथा इसमें सम्राट अशोक का उल्लेख है। इसीलिए अश्वघोष का समय अशोक के बाद माना जाता है।
- बुद्धचरित में महात्मा बुद्ध का जीवन-चरित एवं उनके सिद्धान्त वर्णित हैं। दूसरे महाकाव्य सौन्दरानन्द में 18 सर्ग हैं।

67. विश्वनाथानुसारं शाब्दी व्यञ्जना कतिधा ?
(a) चतुर्धा (b) द्विधा
(c) त्रिधा (d) पञ्चधा

उत्तर–(b)

विश्वनाथ के अनुसार शाब्दी व्यञ्जना के दो भेद हैं–

(1) अभिधामूला, (2) लक्षणामूला

''अभिधालक्षणामूला शब्दस्य व्यञ्जना द्विधा।''

व्यञ्जना- ''विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः ।

सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च ।''

अभिधा आदि के विरत हो जाने पर जिस शब्दशक्ति के द्वारा अन्य अर्थ का बोध कराया जाता है उस शब्द एवं अर्थादि की वृत्ति को व्यञ्जना कहते हैं।

अभिधामूला व्यञ्जना- ''अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते।

एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यञ्जना साऽभिधाश्रया।।''

अनेक अर्थ वाले शब्द के किसी एक अर्थ में, संयोगादि से नियन्त्रित हो जाने पर अन्य अर्थ का बोध जिस शब्दशक्ति से होता है, वह अभिधामूला व्यञ्जना कहलाती है।

लक्षणामूला व्यञ्जना- ''लक्षणोपास्यते यस्य कृते तन्तु प्रयोजनम्।

यथा प्रत्याय्यते सा स्याद् व्यञ्जना लक्षणाश्रया ।।''

अर्थात् जिसके लिए लक्षणा का आश्रय लिया जाता है, वह प्रयोजन रूप अर्थ जिस शक्ति के द्वारा प्रतीत कराया जाता है वह लक्षणाश्रया व्यञ्जना कहलाती है।

68. 'वत्से ! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीया संवृत्ता' - कस्येयमुक्तिः?

(a) दुष्यन्तस्य (b) गौतम्याः

(c) कण्वस्य (d) शकुन्तलायाः

उत्तर–(c)

''दिष्ट्या धूमाकुलित दृष्टेरपि पावक एवाहुतिः पतिता। वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।'' यह विचार महर्षि कण्व का है कि सौभाग्य से धुएं से व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी। प्रिय पुत्री शकुन्तला तुम योग्य शिष्य को दी गयी विद्या की तरह अशोचनीय हो गयी हो।

उपर्युक्त पंक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में कण्व द्वारा कहा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण कथन- प्रियंवदा- अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।

अनसूया एवं प्रियम्वदा- सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्।

काश्यप- ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।

शकुन्तला- को नु खल्वेष निवसने में सज्जते ।

69. 'रसो मुख्यतया अनुकार्ये रामादावेव भवति' — इति कस्य मतम्?

(a) भट्टलोल्लटस्य (b) शङ्कुकस्य

(c) भट्टनायकस्य (d) अभिनवगुप्तस्य

उत्तर–(a)

आचार्य भट्टलोल्लट का रससूत्र विषयक मत 'उत्पत्तिवाद' कहलाता है। इनके मतानुसार अनुकार्य राम-सीतादि में रस की उत्पत्ति होती है। ''विभावैर्ललनोधानादिभिरालम्बनोद्दीवनकारणैः रत्यादिको भावो जनितः, अनुभावै कटाक्षभुजाक्षेपप्रभृतिभिः कार्यैः प्रतीतियोग्यः कृतः, व्यभिचारिभिर्निर्वेदादिभिः सहकारिभिरूपचितो मुख्यया वृत्त्या रामादावनुकार्ये तद्रूपतानुसन्धानान्नर्त्तकेऽपि प्रतीयमानो रस इति भट्टलोल्लटप्रभृतयः''। भट्टलोल्लट द्वारा दी गयी रससूत्र की व्याख्या मीमांसा-सिद्धान्तानुसार है।

आचार्य शंकुक- नैयायिक शंकुक ने रस की अनुभूति को अनुमान का विषय प्रतिपादित किया है। इसीलिए इनका मत अनुमितिवाद कहलाता है। 'चित्रतुरगन्याय' इन्हीं का मत है।

भट्टनायक- भुक्तिवाद के प्रवर्तक सांख्यमतानुयानी आचार्य भट्टनायक के मत में वास्तविक रसानुभूति सामाजिकों को होती है।

अभिनवगुप्त- इन्होंने पूर्ववर्ती अलंकारशास्त्र के प्रमुख ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्धन के आधार पर 'अभिव्यक्तिवाद सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया।

70. 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' – इति कस्य लक्षणम्?

(a) प्रमायाः (b) प्रत्यक्षस्य

(c) प्रमाणस्य (d) लक्षणस्य

उत्तर–(c)

प्रमाण- 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' (प्रभा का करण प्रमाण कहलाता है)।

प्रमा- 'यथार्थानुभवः प्रमा' (यथार्थ अनुभव प्रमा है)।

करण- 'साधकतमं करणम् (साधकतम को करण कहते हैं)।

प्रमाण के चार भेद हैं- (1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान, (3) उपमान, (4) शब्द।

प्रत्यक्ष प्रमाण- ''साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्''(साक्षात्कारिणी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं)।

अनुमान प्रमाण- ''लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'' (लिङ्ग परामर्श को अनुमान कहते हैं)।

लिङ्ग - ''व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम्'' (व्याप्ति के आधार पर अर्थ का बोधक लिङ्ग कहलाता है)।

उपमान प्रमाण- "अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्य विशिष्टपिण्डज्ञानमनुमानम्'' । (अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ ''गौ'' की समानता से युक्त पिण्ड (आकृति) का ज्ञान 'उपमान प्रमाण' है। जैसे- यथा गौस्तथा गवयः - जैसी गाय वैसे ही नीलगाय)।

शब्द प्रमाण- ''आप्तवाक्यं शब्दः' (आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण है)।

71. 'गौरश्वः पुरुषो हस्तीति' कस्माद् हेतोर्न प्रमाणम् ?

(a) पदत्वात् (b) सन्निधेरभावात्

(c) परस्पराकाङ्क्षाविरहात् (d) योग्यताविरहात्

उत्तर–(c)

''आकाङ्क्षा,योग्यता सन्निधिश्च वाक्यार्थज्ञाने हेतुः।''

आकाङ्क्षा,योग्यता तथा सन्निधि ये तीन वाक्यार्थ- ज्ञान के हेतु अर्थात् सहकारी कारण हैं। (इनके बिना वाक्यार्थ-बोध नहीं हो सकता है)।

आकाङ्क्षा- ''पदस्य पदान्तरव्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वमाकाङ्क्षा ।

एक पद का दूसरे के बिना अन्वय-बोध न कराना 'आकाङ्क्षा' है।

योग्यता- ''अर्थाबाधो योग्यता'', (अर्थ का बाध न होना' योग्यता' है)।

सन्निधि- ''पदानामविलम्बेनोच्चारणं सन्निधिः''। (पदों का अविलम्ब उच्चारण करना 'सन्निधि' है।)

''आकाङ्क्षादिरहितं वाक्यमप्रमाणम् । यथा गौरश्वः पुरूषो हस्तीति न प्रमाणम्; आकाङ्क्षाविरहात्''। अर्थात् आकाङ्क्षा, योग्यता तथा सन्निधि से रहित वाक्य प्रमाण नहीं हो सकता। जैसे- 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' यह वाक्य पदों का समूह होने पर भी प्रमाण नहीं है, क्योंकि इसमें प्रयुक्त पदों की परस्पर कोई आकाङ्क्षा नहीं है (वाक्यार्थ बोध कराने के लिए क्रियापद को कारक-पद की और कारक-पद को क्रियापद की परस्पर आकाङ्क्षा होती है। लेकिन उक्त वाक्य में सभी कारक-पद ही हैं, क्रियापद कोई भी नहीं। इसलिए चारों पद परस्पर निराकाङ्क्ष हैं तथा इसी कारण से यह वाक्य प्रमाजनक न होने से प्रमाण नहीं है)।

72. 'पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्' इत्यत्र दोषो वर्तते

(a) साध्याभाववद्वृत्तिः (b) दृष्टान्तरहितत्वम्
(c) साध्याभावव्याप्तिः (d) आश्रयासिद्धित्वम्

उत्तर–(a)

हेत्वाभास के पांच भेद हैं- (1) सव्यभिचार, (2) विरुद्ध, (3) सत्प्रतिपक्ष, (4) असिद्ध, (5) बाधित ।

''सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः । सः त्रिविधः, साधारणासाधारणानुपसंहारिभेदात्'। अनैकान्तिक हेतु को 'सव्यभिचार हेत्वाभास' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं-

(1) साधारण, (2) असाधारण, (3) अनुपसंहारी

''तत्र साध्याभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः। यथा पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वादिति। अत्र प्रमेयत्वस्य वह्न्यभाववति ह्रदे विद्यमानत्वात् ।।'' अर्थात् जो हेतु साध्याभाव वाले पदार्थ में रहता है, उसे 'साधारण अनैकान्तिक' कहते हैं; जैसे- 'पर्वतों वह्निमान् प्रमेयत्वात् 'अनुमान में दिया गया 'प्रमेयत्व' हेतु साध्य वह्नि से रहित ह्रद में रहता है, अतः व्यभिचारी अथवा अनैकान्तिक होने से यह साधारण हेत्वाभास हो गया।

73. तर्कसङ्ग्रहदिशा परिमाणं कतिविधम् ?

(a) द्विविधम् (b) पञ्चविधम्
(c) चतुर्विधम् (d) षड्विधम्

उत्तर–(c)

''मानव्यवहारासाधारणं कारणं परिमाणम्, नवद्रव्यवृत्ति। तच्चतुर्विधम् - अणु, महत्, दीर्घं, ह्रस्वं चेति।''

मान (नाप-तौल, माप) के व्यवहार के असाधारण कारण को 'परिमाण' कहते हैं। यह नव द्रव्यों में रहता है।

परिमाण के चार भेद हैं- (1) अणु (छोटा), (2) महत् (बड़ा), (3) दीर्घ (लम्बा), (4) ह्रस्व (नाटा) ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'रसनाग्राह्यो गुणों रसः । स च मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्तभेदात् षड्विधः'। अर्थात् रसना इन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण 'रस' है। यह मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, कसैला तथा तीखा के भेद से छः प्रकार का होता है।
- ''घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः । स द्विधः, सुरभिरसुरभिश्च ।'' घ्राण से ग्रहण किया जाने वाला गुण 'गन्ध' है। यह दो प्रकार का होता है- सुगन्ध तथा दुर्गन्ध ।

74. पटं प्रति तुरीवेमादिकं कीदृशं कारणं भवति ?

(a) समवायिकारणम् (b) असमवायिकारणम्
(c) स्वरूपकारणम् (d) निमित्तकारणम्

उत्तर–(d)

''कार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम्''(कार्य से निश्चित रूप से पूर्ववर्ती पदार्थ को 'कारण' कहते हैं)।

- ''कारणं त्रिविधं समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्त' (कारण के तीन भेद हैं– (1) समवायिकारण, (2) असमवायिकारण, (3) निमित्तकारण।)

समवायिकारण- ''यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत् समवायिकारणम्' । जिसमें समवाय संबंध से रहकर कार्य उत्पन्न होता है, उसे समवायिकारण कहते हैं। जैसे- तन्तु अपने में समवेत होकर उत्पन्न हुये पट का समवायिकारण है।

असमवायिकारण- ''कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन् अर्थे समवेतं सत् कारणमसमवायिकारणम्'' । कार्य अथवा कारण के साथ एक पदार्थ में समवाय संबंध से रहता हुआ कारण असमवायिकारण है। जैसे- तन्तुसंयोग पट का तथा तन्तुरूप पटरूप का असमवायिकारण है।

निमित्त कारण- "यन्न समवायिकारणं, नाप्यसमवायिकारणं, अथ च कारणं तन्निमित्तकारणम्'' जो न समवायिकारण और न ही असमवायिकारण हो, फिर भी कार्य का कारण अवश्य हो, वह निमित्तकारण है। जैसे- तुरी और वेमा इत्यादि पट के निमित्त कारण हैं।

75. 'पृथिवी इतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात' – अत्र साध्यः कः?

(a) पृथिवी (b) गन्धवत्त्वम् (c) इतरभेदः (d) गन्धत्वम्

उत्तर–(c)

लिङ्ग तीन प्रकार का होता है- (1) अन्वयव्यतिरेकि, (2) केवलान्वयि, (3) केवलव्यतिरेकि ।

1. **अन्वयव्यतिरेकि -** ''अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमदन्वयव्यतिरेकि, यथा वह्नौ साध्ये धूमवत्त्वम्'' । अन्वय तथा व्यतिरेक, दोनों से जिसकी व्याप्ति हो, उसे अन्वयव्यतिरेकि लिङ्ग कहते हैं। जैसे- साध्य वह्नि की सिद्धि में 'धूमवत्त्व' हेतु 'अन्वयव्यतिरेकी' है।
2. **केवलान्वयि -** ''अन्वयंमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि । यथा, घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् पटवत्'' । जिस लिङ्ग की केवल अन्वयव्याप्ति ही होती है, उसे 'केवलान्वयि' कहते हैं। जैसे- घट अभिधेय है; प्रमेय होने से, पट की तरह।
3. **केवलव्यतिरेकि -** ''व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि''। यथा, 'पृथिवी इतरेभ्योभिद्यते गन्धवत्त्वात्, यदितरेभ्यो न भिद्यते न तद् गन्धवद् यथा जलं, न चेयं तथा, तस्मान्न तथा' इति। अत्र यद् गन्धवत् तदितरभिन्न- मित्यन्वयदृष्टान्तो नास्ति, पृथिवीमात्रस्य पक्षत्वात् '। अर्थात् जिस लिङ्ग की केवल व्यतिरेकव्याप्ति ही होती है, उसे 'केवलव्यतिरेकि' कहते हैं। जैसे-पृथ्वी गन्धवती होने से अन्यों से भिन्न है, जो अन्यों से भिन्न नहीं है वह गन्ध वाला नहीं है, जैसे- जल, यह पृथिवी जल के समान गन्धरहित नहीं है, इसीलिए यह गन्धहीन नहीं अपितु गन्धवती है। यहाँ पर जो गन्धवती है वह इतर-भिन्न हैं', इसमें कोई दृष्टान्त नहीं है क्योंकि गन्धवती समस्त पृथिवी ही पक्ष है, इसके अतिरिक्त तो कोई गन्धवत् द्रव्य है नहीं, जो दृष्टान्त बने। इसी दृष्टान्ताभाव से ' गन्धवत्त्व' हेतु केवलव्यतिरेकी हेतु है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2012
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते?

(a) अग्निः (b) यमः
(c) विष्णुः (d) वरुणः

उत्तर-(a)

ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते अग्निः स्तूयते। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथमसूक्त में अग्नि की स्तुति की गयी है। वैदिक देवताओं में अग्नि अत्यन्त महत्वपूर्ण देवता है। ऋग्वेद के लगभग 200 सूक्तों में अग्नि की स्तुति की गयी है। अग्नि का तात्पर्य 'वह देव जो यज्ञ में प्रदान की गयी हवि को देवताओं तक पहुँचाता है।' वैदिक मन्त्रों में अग्नि की तीन प्रमुख विशेषताएँ बतलायी गयी हैं-

(i) नेतृत्व शक्ति में सम्पन्न होना।
(ii) यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करना।
(iii) तेज और प्रकाश का अधिष्ठाता होना।

ऋग्वेद के मन्त्रों में अग्नि का विशेष सम्बन्ध यज्ञ की अग्नि से है, अतः इसको 'घृतपृष्ठ' (घी की पीठ वाला) शोचिषकेश (ज्वालाओं के बालों वाला) गृहपति, विश्वपति, दमूनस इत्यादि नामों से जाना जाता है।

2. पवमानः क उच्यते?

(a) इन्द्रः (b) बृहस्पतिः
(c) विष्णुः (d) सोमः

उत्तर-(d)

पवमानः सोमः उच्यते। सोम ऋग्वेद का प्रमुख देवता है। ऋग्वेद का सम्पूर्ण नवम मण्डल सोम की स्तुति व विशिष्टता से पूर्ण है, इसकी स्तुति 120 सूक्तों में की गयी है। ऋग्वेद के अनुसार सोम एक वनस्पति का नाम है जो मुञ्जवान पर्वत पर पैदा होती थी। इसका रस अत्यधिक शक्तिवर्धक एवं स्फूर्तिदायक था। विशिष्ट यज्ञों के अवसरों पर देवताओं को अर्पित करके इसका पान किया जाता था। सोम का एक नाम 'पवमान' होने से इस मण्डल का नाम 'पवमान-मण्डल' भी है।

3. शांखायनशाखा कस्य वेदस्य?

(a) कृष्णयजुर्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर-(c)

शांखायनशाखा ऋग्वेद की शाखा है। महर्षि पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है। 'एकविंशतिधावाहवृच्यम्' (महाभाष्य आह्निक 1) इनमें से केवल पाँच शाखाओं का ही मुख्यतया उल्लेख मिलता है। चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की 5 शाखाएँ हैं-

1. शाकल 2. वाष्कल
3. आश्वलायन 4. शांखायन
5. माण्डूकायन

4. छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति?

(a) मैक्समूलरः (b) वेबरः
(c) बालगङ्गाधरतिलकः (d) विन्टरनित्सः

उत्तर-(a)

छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः मैक्समूलरः प्रतिपादयति। अर्थात् छन्दों के कालादि नामों का उल्लेख वेदों के रचना काल में सर्वप्रथम जर्मन विद्वान् फ्रेडरिक मैक्समूलर ने प्रतिपादित किया। सन् 1559 ई. में प्रकाशित 'ए हिस्ट्री आफ एंशियन्ट संस्कृत लिटरेचर' नामक अपने ग्रन्थ में मैक्समूलर ने सर्वप्रथम् भारतीय तिथिक्रम पर विचार किया। उनके मतानुसार भारतीय इतिहास में दो ही प्राचीन तिथियाँ हैं-

A. सिकन्दर का भारत पर आक्रमण (326 ई.पू.)
B. बौद्ध धर्म का आविर्भाव (छठीं शताब्दी ई.पू.)

बुद्ध के आविर्भाव से पूर्व के वैदिक साहित्य को तीन चरणों में विभाजित में किया गया है-

1. छन्दः काल (1200 ई.पू. – 1000 ई.पू.)
2. मन्त्रकाल (1000 ई.पू. – 800 ई.पू.)
3. ब्राह्मणकाल (800 ई.पू. – 600 ई.पू.)

उपर्युक्त तिथिक्रम को मैक्समूलर ने प्रस्तावित किया था कि घोर अनिश्चय के अन्धकार में कल्पना का प्रकाश पड़ सके। भाषाशास्त्र के आधार पर वेदों के काल निर्णय का यह प्रथम प्रयास था।

5. नैघण्टुकं काण्डं वर्तते-

(a) निघण्टुग्रन्थे (b) शुल्बसूत्रे
(c) छन्दः सूत्रे (d) निरुक्ते

उत्तर-(d)

वैदिक शब्दों का निर्वचन् अर्थात् अर्थ का निर्णय करने वाला वेदाङ्ग 'निरूक्त' (निस् + वच् + क्त) कहलाता है। यास्क ने निरूक्त के प्रथम से तृतीय अध्याय तक समानार्थक शब्दों की सोदाहरण व्याख्या की है। इसीलिए निरूक्त के प्रथम तीन अध्यायों को 'नैघण्टुक काण्ड' कहा जाता है।
नैघण्टुक काण्ड में 3 अध्याय हैं जिनमें पर्याय (समानार्थक) शब्दों का संग्रह है- जैसे पृथ्वीवाचक 21 शब्द, मेघवाचक 30 शब्द इत्यादि। निरूक्त की रचना का मुख्य उद्देश्य वेदमन्त्रों की निर्वचनपरक व्याख्या व देवताओं के स्वरूप को स्पष्ट करना था। यास्क ने इन उद्देश्यों का निर्देश इस प्रकार किया है-
(i) अथापीदमन्तरेण मन्त्रेवर्थप्रत्ययो न विद्यते
(ii) अथापि याज्ञे दैवतेन बहवः प्रदेशा
भवन्ति, तदेतेनोपेक्षितव्यम्

6. वेदाङ्गेषु छन्दः उपभीयते-

(a) पादत्वेन (b) हस्तत्वेन
(c) घ्राणत्वेन (d) नेत्रत्वेन

उत्तर-(a)

पाणिनीय शिक्षा में षड् वेदांगों का वेद-पुरूष के षड् अंगो के रूप में वर्णन है, जैसे-छन्द वेद पुरूष के पैर है, कल्प हाथ है, ज्योतिष नेत्र है, निरूक्त कान है, शिक्षा नाक है और व्याकरण मुख है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्यात्र साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

7. अर्थप्रधानम् वर्तते-

(a) निरुक्तम् (b) छन्दः
(c) शिक्षा (d) कल्पः

उत्तर-(a)

निरूक्त शास्त्र का पहला सिद्धान्त अर्थप्राधान्यवाद है। किसी भी शब्द का निर्वचन करते समय निरूक्त शास्त्र के आचार्य शब्द के अर्थ पर ध्यान देते हैं। जिस ढंग से शब्द के अर्थ का प्रकाशन अधिक से अधिक सुन्दरता और पूर्णता के साथ हो सके, उसी ढंग से उस शब्द का निर्वचन करना चाहिए। यह उनके 'अर्थप्राधान्यवाद' का अभिप्राय है। अर्थाभिव्यक्ति के सामने वे व्याकरण के संस्कार को महत्व नहीं देते हैं। निर्वचन की प्रक्रिया वर्णन के सम्बन्ध में यास्काचार्य स्वयं लिखते हैं कि-

''अर्थनित्यः परीक्षेत्', न संस्कारमाद्रियते।''

8. विश्वामित्रनदीसम्वादः कस्मिन् मण्डले वर्तते?

(a) प्रथममण्डले (b) तृतीयमण्डले
(c) दशममण्डले (d) पञ्चममण्डले

उत्तर-(b)

विश्वामित्र-नदी- सम्वाद सूक्त ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 33वाँ सूक्त है। इसके ऋषि विश्वामित्र और देवता नदी है। इसमें विपाशा और शुतुद्री नदियों का वर्णन आया है। विश्वामित्र नदी सम्वाद सूक्त उष्णिक् और त्रिष्टुप् छन्द हैं।

9. मैत्रायणीसंहिता केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते

(a) सामवेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर-(d)

कृष्णयजुर्वेद की केवल चार शाखाएं ही उपलब्ध हैं। जिनमें से एक मैत्रायणी संहिता भी है, अन्य तीन तैत्तिरीय, काठक (कठ) और कपिष्ठल हैं।
मैत्रायणी संहिता कृष्ण यजुर्वेदीय मैत्रायणी शाखा की संहिता है मैत्रायणी संहिता की सात शाखाओं का उल्लेख 'चरणव्यूह' में मिलता है। ये शाखाएं हैं मानव, दुन्दुभ, ऐकेय, वाराह्व, द्वारिद्रवेय, श्याम, श्यामायनीय। पं. भगवद् दत्त और श्री सातवलेकर ने इस शाखा के प्रवर्तक का नाम हरिवंश पुराण के एक श्लोक के आधार पर मैत्रायण या मैत्रेय माना है।

ज्ञान बिंदु-

- सामवेद वेदों का सार है। शतपथ और गोपथ ब्राह्मण का कथन है कि सारे वेदों का रस या सार सामवेद है। सामवेद उपासना का वेद है।
- अथर्ववेद वैदिक दर्शन का सबसे पुष्ट एवं प्रामाणिक स्रोत है। आरण्यक उपनिषद् आदि में प्राप्य दार्शनिक चिन्तन एवं विचार अथर्ववेद का ही विकसित रूप है।
- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं।

(i) माध्यन्दिन या वाजसनेयि-संहिता-इसमें 40 अध्याय 1975 मंत्र।
(ii) काण्व संहिता- इसमें भी 40 अध्याय और 2086 मंत्र हैं

10. आरण्यकं केनाश्रमेण सम्बद्धम्?

(a) गृहस्थाश्रमेण (b) वानप्रस्थाश्रमेण
(c) ब्रह्मचर्याश्रमेण (d) लोकाश्रमेण

उत्तर-(b)

आरण्यक का सम्बन्ध वानप्रस्थ आश्रम से है। आरण्यक शब्द का अर्थ है- अरण्य में होने वाला (अरण्ये भवम् आरण्यकम्)। अरण्य में होने वाले अध्ययन-अध्यापन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा और आध्यात्मिक विवेचन आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं।
डा. राधाकृष्णन् ने आरण्यकों के महत्व के विषय में कहा है कि ये वानप्रस्थ और संन्यासियों के लिए आवश्यक अध्यात्म की सामग्री देते हैं।

ज्ञान बिंदु

- गृहस्थ आश्रम 25 से 50 वर्ष तक वेदानुसार माना जाता है, जिसमें व्यक्ति विवाहोपरान्त दैनिक कार्यों को करता हुआ, जिम्मेदारी पूर्वक ग्रहस्थ के कार्यों में लिप्त रहता है।
- ब्रह्मचर्य आश्रम 25 वर्ष तक की आयु तक मानी जाती है, जिसमें अध्ययन, गुरू सेवा तथा जीवन के महत्व एवं अनेक विद्याओं को गुरू के समीप रहकर सीखता है।

11. अधोडङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(a) पूर्णमदः पूर्णमिदम् 1. निरुक्तम्।
(b) मा गृधः कस्य स्विद्धनम् 2. अथर्ववेदीया।
(c) समाम्नायः समाम्नातः 3. ईशावास्योपनिषद्।
(d) पैप्पलादसंहिता 4. बृहदारण्यकम्।

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	3	1	2
(b)	3	2	1	4
(c)	2	3	4	1
(d)	1	2	3	4

उत्तर-(a)

पूर्णमदः पूर्णमिदं	–	बृहदारण्यकोपनिषद्
मा गृधः कस्य स्विद्धनम्	–	ईशावास्योपनिषद्
समान्नायः समाम्नातः	–	निरूक्त
पैप्पलाद संहिता	–	अथर्ववेद

ज्ञान बिंदु-

- पूर्णमदः पूर्णमिदं...... मंत्र वृहदारण्यकोपनिषद् के पाँचवें अध्याय के प्रथम ब्राह्मण की प्रथम कण्डिका का पूर्वार्द्ध रूप है।
- या गृधः कस्य स्विद्धनम् अर्थात् किसी भी प्रकार के धन पर आसक्त नहीं होना चाहिए यह सूक्ति कथन ईशावास्योपनिषद् का है।
- 'सामाम्नाय समाम्नातः' यह निरूक्त से सम्बन्धित है, जिसका तात्पर्य है कि गो शब्द से लेकर देवपत्नी शब्द पर्यन्त 1773 शब्दों का वैदिक शब्दकोष बनाया जा चुका है। निरूक्त यास्क रचित ग्रन्थ है।
- अथर्ववेद की दो शाखा हैं
  (i) शौनक (ii) पैप्पलाद

12. ''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' इति पठ्यते-

(a) अग्निसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) सवितृसूक्ते (d) उषस्सूक्ते

उत्तर-(c)

''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' अर्थात् वे (सूर्य) कार्य करने वाले मनुष्यों की क्रियाओं के बीच में ही अर्थात् उनके कार्य समाप्त होने के पहले ही अपने फैले हुये किरणों के जाल को समेट लेते हैं। यह वैदिक श्लोक सवितृ (सूर्य) सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का सूक्त है। ऋषि- कुत्स हैं एवं देवता सूर्य हैं। यह सूक्त त्रिष्टुप् छन्द में है। सूर्य के पिता द्यौ एवं माता अदिति हैं।

ज्ञान बिंदु-

- अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके ऋषि विश्वामित्र, देवता अग्नि एवं छन्द गायत्री है।
- इन्द्र सूक्त द्वितीय मण्डल का 12वाँ सूक्त है। इसके ऋषि गृत्समद, देवता इन्द्र एवं छन्द त्रिष्टुप् है।
- उषस् सूक्त तृतीय मण्डल का 62वाँ सूक्त है। इसके ऋषि विश्वामित्र एवं छन्द त्रिष्टुप् है।

13. कतिलक्षणयुक्तो ग्रन्थवाचको ब्राह्मणशब्दः?

(a) नव (b) दश
(c) द्वादश (d) पंचदश

उत्तर-(b)

मीमांसा दर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषयों की संख्या दस बतायी है।

''हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयोविधिः।
पर क्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना।
उपमानं दर्शेते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै।।''

ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है- यज्ञ एवं यज्ञ प्रक्रिया का सर्वाङ्गपूर्ण विवेचन। यज्ञ मीमांसा के दो मुख्य भाग हैं- विधि एवं अर्थवाद। विधि का अभिप्राय है- यज्ञ प्रक्रिया का विशद निरूपण तथा अर्थवाद का अभिप्राय है- स्तुति या निन्दापरक विविध विषय। ब्राह्मण ग्रन्थों में विधि एवं अर्थवाद के अतिरिक्त 'उपनिषद्' का भी प्रतिपादन किया गया है।

14. अर्थापत्तेः कस्मिन् प्रमाणेऽन्तर्भावः भवितुमर्हति?

(a) प्रत्यक्षे (b) अनुमाने
(c) शब्दे (d) उपमितौ

उत्तर-(b)

अर्थापत्ति को मीमांसक पृथक् प्रमाण मानते हैं, किन्तु नैयायिक इसका अन्तर्भाव अनुमान प्रमाण में करते हैं।
''अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तर कल्पनम् अर्थापत्तिः।''
अनुपपद्यमान अर्थ के अवलोकन के अनन्तर उसके उपपादक अर्थान्तर की कल्पना को अर्थापत्ति कहते हैं।
जैसे- ''पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते'' अर्थात् देवदत्त दिन में भोजन नहीं करता है। यानि दिन में भोजन न करने से यह अनुमान का विषय है। कि वह रात्रि में भोजन करता होगा, इस प्रकार केवल व्यतिरेकानुमान से रात्रि भोजन ज्ञात होता है, इसलिए अर्थापत्तिरूप अतिरिक्त प्रमाण की कल्पना में कोई युक्ति नहीं अर्थात् अर्थापत्ति का अन्तर्भाव अनुमान प्रमाण में निहित है।

15. सादृश्यज्ञानकरणं ज्ञानं किमस्ति?

(a) प्रत्यक्षम् (b) अनुमितिः
(c) शाब्दबोधः (d) उपमितिः

उत्तर-(d)

''संज्ञा संज्ञि सम्बन्ध ज्ञानमुपमितिः तत्करणं सादृश्यज्ञानम्'' अर्थात् संज्ञा-संज्ञि अर्थात् पद और अर्थ इन दोनों का जो शक्ति रूप सम्बन्ध है, उसका ज्ञान उपमिति है और उस उपमिति का कारण सादृश्य ज्ञान है। जैसे-कोई ग्रामीण जो 'गवय' शब्द का अर्थ जानता न था, किसी जंगली पुरूष के मुख से ''गोसदृशो गवयः'' अर्थात गवय गाय की तरह एक जंगली जानवर होता है ऐसा सुनकर और स्मरण कर वह जैसे ही गाय के समान किसी जन्तु को देखता है, तब 'यह जन्तु 'गवय' शब्द वाच्य है, ऐसी 'उपमिति' उसे होती है।

ज्ञान बिंदु-

- 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्' अर्थात् जो ज्ञान नेत्र आदि इन्द्रियों के और घट-पट आदि विषयों के सन्निकर्ष (सम्बन्ध) से होता है।
- परामर्शजन्यं ज्ञानमनुमितिः अर्थात् परामर्श ज्ञान से जन्य जो ज्ञान होता है, वह अनुमिति कहलाती है।

16. विवर्तो _______ विद्यते?

(a) कारणस्य कार्यावस्था
(b) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(c) कारणगुणात्मा कार्योत्पत्तिः
(d) अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा

उत्तर-(d)

सतत्त्वतोऽन्यथा विकारः इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथा विवर्तः इत्युदाहृतः।।

अर्थात् किसी वस्तु का वस्तुतः अन्यरूप से प्रसिद्ध होना 'विकार' कहा जाता है और मिथ्या रूप से अन्य वस्तु के रूप में भासित होना 'विवर्त' कहा गया है।

किसी वस्तु का अन्यथा भाव दो प्रकार से होता है- परिणाम भाव और विवर्त भाव।

विद्यारण्य स्वामी के अनुसार- किसी वस्तु का अपनी पूर्वावस्था को छोड़कर दूसरी अवस्था को प्राप्त कर लेना उस वस्तु का परिणाम है, जैसे- दूध का दही बन जाना, मिट्टी का घड़ा बन जाना आदि। परन्तु पूर्वावस्था का परित्याग किये बिना ही दूसरी अवस्था का भासित होना उस वस्तु का विवर्त है, जैसे- रज्जु का रज्जु रूप में रहने पर भी सर्प रूप में भासित होना।

17. 'सतः सत् जायते' इति कस्य मतम्?

(a) सांख्यस्य (b) बौद्धस्य
(c) वेदान्तिनः (d) नैयायिकस्य

उत्तर-(a)

असदकरणादुपादान ग्रहणाद् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्यशक्य करणात् कारणभावाच्च सत् कार्यम्।।

अर्थात् कारण व्यापार से पहले भी कार्य सत् होता है यानि कारण में वर्तमान होता है, क्योंकि-

1. जो असत् है, उसे उत्पन्न नहीं किया जा सकता है।
2. कार्य को उत्पन्न करने के लिए उससे सम्बद्ध उपादान कारण का ही ग्रहण किया जाता है।
3. सभी कार्य सभी कारणों से उत्पन्न नहीं होते अर्थात् कारण-विशेष से सम्बद्ध कार्य ही उत्पन्न होता है।
4. जिस कार्य को उत्पन्न करने में जो कारण शक्त (समर्थ) है, उसी शक्त कारण से शक्य कार्य की उत्पत्ति होती है।
5. कार्य कारण से अभिन्न होता है।
   वस्तुतः जो वस्तु पहले से 'सत्' होती है, उसी की अभिव्यक्ति होना युक्तिसंगत है, असत् की नहीं।
   जैसे- तिलों में पहले से विद्यमान तेल, पेरने से अभिव्यक्त हो जाता है।

18. कतिविधिः बुद्धिसर्गः?

(a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) पञ्चधा (d) सप्तधा

उत्तर-(b)

एष प्रत्ययसर्गो विपर्यया शक्ति तुष्टि सिद्ध्याख्यः।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत्।।

बुद्धि के परिणाम से होने वाली यह सृष्टि चार प्रकार की होती है, जिनके नाम हैं- विर्पयय, अशक्ति, तुष्टि और सिद्धि। विस्तार से इनके पचास भेद होते हैं, जिनका हेतु है, गुणों में न्यूनता और अधिकतारूप वैषम्य के कारण उनका एक-दूसरे के द्वारा विमर्द किया जाना।

विपर्यय के पाँच भेद हैं, अशक्ति के 28 भेद, तुष्टि नौ प्रकार की एवं सिद्धि आठ प्रकार की, इस प्रकार बुद्धि के पचास भेद हैं।

जिसके द्वारा विषयों की प्रतीति होती है वह प्रत्यय अर्थात् बुद्धि है। विपर्यय से तात्पर्य अज्ञान या अविद्या से है, जो बुद्धि का धर्म है। इन्द्रिय विकार से उत्पन्न अशक्ति भी बुद्धि का धर्म है। तुष्टि और सिद्धि भी बुद्धि के ही धर्म हैं।

19. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि कति?

(a) त्रयोदश (b) पञ्चदश
(c) विंशतिः (d) पञ्चविंशतिः

उत्तर-(d)

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।

कारणरूपा प्रकृति किसी की विकृति नहीं है। महत् इत्यादि सात तत्त्व (महत्त्व), अहंकार तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध पाँच

तन्मात्रायें) प्रकृति भी है, विकृति भी हैं अर्थात् किसी के कारण भी हैं और कार्य भी हैं।
(मन, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्चमहाभूत) इन सोलह तत्त्वों का समुदाय केवल विकार हैं अर्थात् यह किसी का कारण नहीं हैं, पुरूष न प्रकृति है और न ही विकृति अर्थात् न किसी का कारण न किसी का कार्य।

स्वरूप	तत्त्व	संख्या
केवल प्रकृति	प्रकृति	1
प्रकृति-विकृति	- महत् = बुद्धि, अहंकार	7
	शब्द	
	स्पर्श	
	रूप	
	रस	
	गन्ध	
केवल विकृति	- मन	16
	चक्षु, घ्राण, रसना, श्रोत्र, त्वक् - पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ	
	वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपास्थ- पञ्च कर्मेन्द्रियाँ	
	पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश- पञ्च महाभूत	
न प्रकृति न विकृति	(पुरूष)	1
	कुलतत्त्व =	25

20. तदभाववति तत्प्रकारकं ज्ञानं कीदृशम्?

(a) प्रमा (b) अप्रमा
(c) स्मृतिः (d) विपर्ययः

उत्तर-(b)

तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः।
यथा शुक्तौ इदं रजतम् ज्ञानम्। सैवाप्रभा इति उच्यते।
अर्थात् जिसमें जिस धर्म की विद्यमानता नहीं है, उसमें उस धर्म का अनुभव होना अयथार्थानुभाव कहलाता है।
जैसे- सीपी में रजत की प्रतीति होना।
यही ज्ञान अप्रमा है।

ज्ञान बिंदु-

- तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः यथा रजते 'इदं-रजतम्' इति ज्ञानम्। सैव प्रभा उच्यते।
  अर्थात् जिसमें जो धर्म विद्यमान है, उसमें उसी धर्म का अनुभव होना ही प्रमा है। जैसे- रजत में यह रजत ही है, ऐसी प्रतिति।
- स्मृति दो प्रकार की होती है-
  (1) जो यथार्थ ज्ञान से उत्पन्न हो वह यथार्थ स्मृति और जो अयथार्थ ज्ञान से उत्पन्न हो वह अयथार्थ स्मृति कहलाती है।
- विपर्यय मिथ्या ज्ञान होता है (मिथ्याज्ञानं विपर्ययः। यथा शुक्तौ 'रजतम्' इति) जैसे- सीप में यह चाँदी है ऐसा ज्ञान।

21. कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वं भवति ________ ?

(a) कारणत्वम् (b) करणत्वम्
(c) कार्यत्वम् (d) अकारणत्वम्

उत्तर-(a)

कार्य से जो निश्चित रूप से पूर्ववृत्ति है, उसे कारण कहते हैं। अर्थात् निश्चित रूप से जो पूर्ववर्ती (पूर्वक्षण में वर्तमान) हो उसे कारण कहा जाता हैं। यदि लक्षण में 'नियत' पद न जोड़ा जाता और केवल 'कार्यपूर्ववृत्ति कारणम्' ऐसा क्षण किया जाता तो कार्य उत्पत्ति से पूर्व आकस्मिक रूप से आने वाली सभी वस्तुएँ उस कार्य का कारण कहलाती।
जैसे- यदि पट की उत्पत्ति के पूर्व गर्दभ संयोगवश आ जाये तो वह गर्दभ भी पट का कारण माना जायेगा, किन्तु उसे पट का कारण नहीं मानते। अतः इस अतिव्याप्ति के निराकरण हेतु लक्षण में 'नियत' पद जोड़ा गया है 'नियत' पद की विद्यमानता से लक्षण का अर्थ हुआ- ''जो वस्तु कार्य की उत्पत्ति के पूर्व नियमपूर्वक रहती है अर्थात् अनिवार्य रूप से रहती है, उसे कारण कहते हैं।

22. वेदान्तो नाम ________ वर्तते?

(a) उपनिषत्प्रमाणम् (b) अनुमानगम्यत्
(c) आप्तोपदेशः (d) उपासनादिकम

उत्तर-(a)

वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणम् तदुपकारीणि शारीरिक सूत्रादीनि च। अर्थात् प्रमा रूप ब्रह्मविद्या प्रमाण रूप उपनिषदें ही मुख्यरूप से वेदान्त है, और उनके उपकारक (उनके अर्थ का अनुवर्तन करने वाले। शारीरक सूत्र आदि भी वेदान्त है।
मुख्य रूप से 'उपनिषद्' शब्द का प्रयोग ब्रह्मविद्या या आत्मविद्या के लिये होता है, परन्तु इस विद्या के प्रमाणभूत ग्रन्थों को भी गौणीवृत्ति से उपनिषद् कहा जाता है। शारीरक से तात्पर्य कुत्सित शरीर में निवास करने वाले 'जीवात्मा' से है। वेदान्त दर्शन में उपनिषदों के पश्चात् दूसरा स्थान शारीरक सूत्र का ही आता है।

23. अज्ञानस्य शक्तिः ________ उच्यते?

(a) आवरणावस्था
(b) विशेषरूपा
(c) आवरणविक्षेपनामकं शक्तिद्वयम्
(d) शून्यरूपा

उत्तर-(c)

अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।
आवरण शक्ति- जिस प्रकार बादल छोटा होने पर भी देखने वाले के दृष्टिपथ को ढक लेने के कारण, मानो अनेक योजनों के विस्तार वाले सूर्यमण्डल को ढक लेता है उसी प्रकार अज्ञान परिच्छिन्न होने पर भी प्रमाता की बुद्धि को ढक लेने के कारण,

मानो अपरिच्छिन्न और असंसारी आत्मा को ढक लेता है। यही आवरण-शक्ति है।
विक्षेप शक्ति- जिस प्रकार रज्जुविषयक अज्ञान अपने द्वारा ढकी हुई रज्जु में, अपनी शक्ति से सर्प इत्यादि की उद्भावना कर देता है, उसी प्रकार अज्ञान, अपने द्वारा ढकी हुई आत्मा में अपनी विक्षेप शक्ति के द्वारा आकाशादि कार्य समूह की उद्भावना कर देता है। यही अज्ञान की विक्षेप शक्ति है।

24. विशेषः ________ नित्यद्रव्यवृत्तिः ?
(a) अनित्यः (b) नित्यः
(c) कारणात्मकः (d) स्मृतिरूपः

उत्तर-(b)

''निःसामान्यत्वे सति एकमात्र समवेतत्वम्''
अर्थात् जो पदार्थ जाति रूप सामान्य से रहित हो तथा एक व्यक्ति मात्र में समवेत हो उसे विशेष कहते हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु इन चार भूतों में जितने परमाणु हैं सब में यह विशेष रहता है। वे द्रव्य निरवयव है। अतः इन द्रव्यों में विशेष समवेत माना जाता है। प्रत्येक निरवयव नित्य द्रव्य विशेष के कारण एक नित्य द्रव्य से भिन्न होता है। विशेष नित्य है। क्योंकि जिन आकाशादि द्रव्यों में रहता है, वे नित्य हैं। विशेष असंख्य हैं। विशेष स्वतः पहचाने जाते हैं, इसीलिये-स्वतोव्यावर्तकत्वं विशेषत्वम्'' लक्षण भी किया जा सकता है।

25. बुद्धेः का प्रकृतिः?
(a) अहङ्कारः (b) पुरुषः
(c) मूलप्रकृतिः (d) तन्मात्राणि

उत्तर-(c)

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि।।
अर्थात् प्रकृति से महत्तत्त्व (अर्थत् बुद्धि) उस (महत्तत्त्व) से अहङ्कार और उस अहंकार से (मन, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय और पञ्च तन्मात्रा) सोलह तत्त्वों का समुदाय उत्पन्न होता है। फिर उन सोलह तत्त्वों के समुदाय में पञ्चतन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत उत्पन्न होते हैं।

ज्ञान बिंदु-
- पुरूष, प्रकृति और महत् आदि से भिन्न एवं विपरीत है। पुरूष, अभिगुणात्मक, विवेकी, अविषयी, असामान्य, चेतन तथा परिणामी है।
- सांख्यानुसार, प्रकृति सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। यही संसार का मूलकारण है। प्रकृति त्रिगुणात्मिका, अविवेकी, विषयी, सामान्य, अचेतन तथा प्रसवधर्मी है।
- पञ्चतन्मात्र (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) से पञ्चमहाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) की उत्पत्ति होती है।

26. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?
(a) वृद्धिरेचि (b) वृद्धिरादैच्
(c) इको यणचि (d) आद्गुणः

उत्तर-(b)

बृद्धिसंज्ञा विधायकं सूत्र 'बृद्धिरादैच्'
आत् और ऐच् (ऐ, औ) वृद्धिसंज्ञक होते हैं।
आत् से तात्पर्य दीर्घ आकार से है और ऐच् प्रत्याहार अर्थात् ऐ, औ। इस तरह आ, ऐ, औ ये तीनों वर्ण वृद्धिसंज्ञक कहलाते हैं। जहाँ पर अन्य सूत्र वृद्धि का विधान करते हैं, वहाँ आ, ऐ, औ, ये तीन आदेश के रूप में उपस्थित हो जाते हैं अर्थात् जहाँ भी वृद्धि शब्द का उच्चारण होगा, उससे आ, ऐ, औ ही समझे जायेंगे। पाणिनीय अष्टाध्यायी का यह प्रथम सूत्र है। सूत्रों में सर्वप्रथम उच्चारित शब्द वृद्धि होने के कारण यह मंगलार्थक भी माना जाता है।

27. घि-संज्ञा केन सूत्रेण भवति?
(a) यू स्त्र्याख्यौ नदी (b) अचोऽन्त्यादि टि
(c) परः संन्निकर्षः संहिता (d) शेषो घ्यसखि

उत्तर-(d)

'घि' संज्ञा उन्हीं ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की होगी, जिनकी नदी संज्ञा न हुई हो। क्योंकि नदी संज्ञा, घि संज्ञा की बाधिका है।
जैसे- रवि, कवि, मुनि, ऋषि, भानु, ये शब्द ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त हैं, इनकी नदी संज्ञा नहीं होती, इसलिये इनकी घि संज्ञा हुई।

ज्ञान बिंदु-
- यू स्त्र्याख्यौ नदीः दीर्घ ईकारान्त और उकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।
  जैसे- गौरी
- अचोऽन्त्यादि टि = अचों में जो अन्त्य है, वह है आदि में जिसके, उस समुदाय की 'टि' संज्ञा हो।
  जैसे- मनस् (म्, अ, न्, अ स्) में अन्तिम अच् 'अस्' की टि संज्ञा होगी।

28. हेत्वर्थे का विभक्तिः?
(a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पञ्चमी

उत्तर-(b)

हेतु अर्थ के वाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। हेतुत्व द्रव्य आदि अर्थात् द्रव्य, गुण, क्रिया के लिये साधारण है। अर्थात् द्रव्य, गुण तथा क्रिया रूप जो कार्य है, उन कार्यों के कारणों में वर्तमान रहता है तथा व्यापार-रहित कारणों में भी वर्तमान रहता है। परन्तु 'कारणत्व' केवल क्रिया-विषयक है तथा केवल व्यापारवान् कारण में ही वर्तमान रहता है।

29. 'पाणिपादम्' - अस्मिन् पदे समासविग्रहः भवति-

(a) पाणी च पादौ च (b) पाणिः च पादम् च

(c) पाणिना च पादेन च (d) पाणिं च पादौ च

उत्तर-(a)

'पाणिपादम्' इस पद में द्वन्द्व समास है। पाणिपादम् पद में समास ''द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'' इस विधिसूत्र से द्वन्द्व समास एक वचन हुआ है। सूत्रानुसार ''प्राणी के अंग, वाद्य के अंग और सेना के अंगों में यदि समास हो तो उनमें समाहार द्वन्द्व एकवचन ही हो।

30. ध्रुवमपाये _______ इत्यत्र किं कारकम्?

(a) करणम् (b) अपादानम्

(c) सम्प्रदानम् (d)कर्म

उत्तर-(b)

ध्रुवमपाये अपादान कारकम्।

अर्थात् अपाय (अलग) होने में जो ध्रुव (निश्चित) है, उसकी अपादान संज्ञा होती है।

ध्रुव से तात्पर्य अटल या अचल से नहीं है, बल्कि उसका तात्पर्य केवल वियोग जिससे होता है।

जैसे- धावतो अश्वात् पतति में पतन क्रिया चलते हुये घोड़े से होने पर घोड़े की अपादान संज्ञा हुयी। इस प्रकार अलग होने में जो ध्रुव है उसकी अपादान संज्ञा इस सूत्र से हो जाती है।

ज्ञान बिंदु-

- साधकतम करणम्- क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त सहायक कारक की करण संज्ञा होती है।
- कर्मणा यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्- कर्ता, दान आदि कर्म के द्वारा जिससे सम्बन्ध करना चाहता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।
- कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्ता को जो सर्वाधिक अभीष्ट होता है, वही कर्म कहलाता है।

31. 'कुक्कुटमयूर्यौ' — इत्यस्य पदस्य लौकिकविग्रहः भवति-

(a) कुक्कुटश्च मयूरी च (b) कुक्कुटञ्च मयूरञ्च

(c) कुक्कुटस्य च मयूर्याश्च (d) कुक्कुटौ च मयूर्यौ च

उत्तर-(a)

कुक्कुटमयूर्यौ- इत्यस्य पदस्य लौकिक विग्रहः 'कुक्कुटश्च मयूरी च' भवति।

अर्थात् कुक्कुटमयूर्यौ इस पद का लौकिक विग्रह 'कुक्कुटश्च मयूरी च होगा।

प्रस्तुत पद में इतरेतर द्वन्द्व समास है। इतरेतर द्वन्द्व से तात्पर्य जब पदार्थ परस्पर मिलकर आगे अन्वित होते हैं तब वह इतरेतर द्वन्द्व कहलाता है, इसमें दोनों पद अलग-अलग द्योतित होते हैं। इतरेतर योग में समास होने के बाद अन्तिम शब्द के अनुसार लिङ्ग और वचन की व्यवस्था होती है।

32. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत -

(a) अभिनिविशश्च 1. तुल्यास्यप्रयत्नम्

(b) अपृक्त 2. बहुव्रीहिः

(c) चित्रगुः 3. कर्म संज्ञा

(d) सवर्णम् 4. एकाल् प्रत्ययः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	3	4
(B)	1	2	4	3
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	1	2

उत्तर-(c)

अभिनिविशश्च	–	कर्म संज्ञा
अपृक्त	–	एकाल प्रत्ययः
चित्रगुः	–	बहुव्रीहिः
सवर्णम्	–	तुल्यास्यप्रयत्नं

1. अभि और नि उपसर्ग पूर्वक विश् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है।
   जैसे- सन्मार्गम् अभिनिवशते मनः।
2. अपृक्त एकाल् प्रत्ययः अर्थात् एक अल् रूप जो प्रत्यय हो, उसकी अपृक्त संज्ञा हो।
3. चित्रगुः में स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी प्रियादिषु'' से बहुव्रीहि समास का विधान हुआ है।
4. ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' अर्थात् कष्ठ, तालु आदि स्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों के समान हों, वे वर्ण परस्पर सवर्ण-संज्ञक होते हैं।

33. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः किं संज्ञकः स्यात्?

(a) उदात्तः (b) अनुदात्तः

(c) स्वरितः (d) संहिता

उत्तर-(d)

वर्णानाम अतिशयितः सन्निधिः संहिता संज्ञा स्यात्। अर्थात् वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता संज्ञा कहते हैं।

संहिता संज्ञा वहीं होगी जहाँ सन्धि किये जाने वाले वर्ण आपस में अत्यन्त नजदीक बैठे हों।

जैसे- राम + अवतार में राम के म् के बाद जो 'अ' है वह 'अवतार' के आदि 'अ' के अत्यन्त समीप है। अतः दोनों अकारों की आपस में संहिता संज्ञा हो गई।

ज्ञान बिंदु-

- उच्चैरुदातः = जिन स्वरों की उत्पत्ति अपने उच्चारण स्थान के ऊपरी भाग से होती है, उनकी उदात्त संज्ञा होती है।

- नीचैरनुदात्तः = जिन स्वरों की उत्पत्ति अपने निर्धारित स्थान के नीचे के भाग से होती है, उनकी अनुदात्त संज्ञा होती है।
- समाहारः स्वरितः = समाहार 'स्वरित' कहलाता है। अर्थात् उदात्त और अनुदात्त इन दोनों धर्मों का जहाँ एक जगह समाहार (संयोग) हो, वह स्वरित कहा जायेगा।

34. 'चोराद् बिभेति'' इत्यत्र अपादानं केन सूत्रेण विधीयते?

(a) पराजेरसोढः (b) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(c) वारणार्थानामीप्सितः (d) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्

उत्तर-(b)

''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' सूत्र अपादान कारक का विधान करने वाला सूत्र है। सूत्रानुसार जिससे डर मालूम हो अथवा प्रकट हो या जिसके डर के कारण रक्षा करनी हो, ऐसी भयार्थक और भीत्रार्थक (रक्षार्थक) धातु में अपादान कारक का विधान होता है। जैसे- 'चोराद् विभेति' में डर का कारण चोर है, इसलिये चोर में अपादान कारक का विधान हुआ है।

ज्ञान बिंदु-

- पराजेरसोढ़ = 'परा' पूर्वक 'जि' धातु के प्रयोग में जो असह्य (कठिन) हो, उसकी अपादान संज्ञा होती है-
  जैसे- अध्ययनात् पराजयते।
- वारणार्थनामीप्सितः = जिससे कोई वस्तु या पुरूष दूर किया जाता है या मना किया जाता है, वह अपादान कारक होता है।
  जैसे- मित्रं पापात् निवारयति।
- विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् = हेतु या गुण प्रकट करने वाले गुणवाचक अस्त्रीलिङ्ग शब्द विकल्प से तृतीया या पञ्चमी में रखे जाते हैं।
  जैसे- जाड्येन जाड्यात् वा बद्धः।

35. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' - इत्युदाहरणं कस्य भवति?

(a) निमित्तात् कर्मयोगे (b) साध्वसाधु प्रयोग च
(c) षष्ठी चानादरे (d) यतश्च निर्धारणम्

उत्तर-(a)

'निमित्तात् कर्मयोगे' वार्तिक के अनुसार जिस निमित्त से अर्थात् जिस फल की प्राप्ति के लिये कोई क्रिया की जाती है, वह निमित्त या फल यदि उस क्रिया के कर्म से युक्त हो अथवा समवेत हो तो उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।
जैसे- 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' में द्वीपी (बाध) कर्म के साथ उसके चर्म का योग या सम्बन्ध है और फलभूत चर्म की प्राप्ति के लिये ही वध-व्यापार होता है।
इसलिये 'चर्म' में सप्तमी हुई है।

ज्ञान बिंदु-

- **साध्वसाधु प्रयोगे च-** साधु (हित) और असाधु (अहित) इन दो शब्दों का प्रयोग होने पर जिसका हित या अहित किया जाता है, उसके वाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे- साधुः कृष्णो मातरि-कृष्ण अपनी माता के लिए बहुत अच्छे थे।
- **षष्ठी चानादरे-** अधिक अनादर गम्यमान होने पर जिसकी क्रिया से किसी अन्य की क्रिया लक्षित होती है, उसके वाचक शब्द में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ हों।
  जैसे- रुदत्रः पुत्रस्य रुदति पुत्रे वा वनं प्राव्राजीत- रोते हुए पुत्र का तिरस्कार करके वह संन्यासी हो गया।
- **यतश्च निर्धारणम् -** जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा (नाम) इनमें से किसी एक के द्वारा जिस समुदाय से उसके एक देश का पृथक्करण हो, उस समुदाय वाचक शब्द में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति हो।
  जैसे- नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः - मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।

36. भाषापरिवर्तनस्य कति बाह्यकारणानि?

(a) चत्वारि (b) षट्
(c) अष्टौ (d) दश

उत्तर-(c)

जो भाषा को बाहर से प्रभावित करते हैं उन्हें बाह्य कारण कहा जाता है। बाह्य कारण आठ प्रकार के होते हैं।

1. भौगोलिक प्रभाव	2. ऐतिहासिक प्रभाव
3. सांस्कृतिक प्रभाव (धार्मिक प्रभाव)	4. वैयक्तिक प्रभाव
5. सामाजिक प्रभाव	6. साहित्यिक प्रभाव
7. वैज्ञानिक प्रभाव	8. सभ्यता का प्रभाव

37. भारोपीयभाषापरिवारे केन्टुमवर्गस्य कति प्रमुखभेदाः?

(a) चत्वारः (b) सप्त
(c) नव (d) एकादश

उत्तर-(b)

भारोपीय भाषा परिवार को केन्टुम और शतम् वर्ग के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है। केन्टुम वर्ग के प्रमुख सात भेद हैं, जबकि शतम् वर्ग के चार प्रमुख भेद हैं- ''ईरानी-भारती चैव बाल्टी-सुस्लाविकी तथा।
आर्मीनी अल्बनी चैताः, शतम-वर्गे समाश्रिताः।।
इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक केल्टिकी तथा
हित्ती तोखारिकी चैताः केन्टुक वर्गे प्रकीर्तिताः।।

38. नायिकारहितं नाटकमिदम्

(a) उत्तररामचरितम् (b) रत्नावली
(c) मुद्राराक्षसम् (d) वेणीसंहारम्

उत्तर-(c)

मुद्राराक्षस, विशाखदत्त द्वारा रचित नाटक है। मुद्राराक्षस में कुल 29 पात्र हैं, जिसमें एकमात्र स्त्रीपात्र चन्दन दास की पत्नी है, जो सप्तम अंक में चन्दनदास के मृत्युदण्ड दृश्य में करूण-रस का उद्भावन करती है। शेष सभी पात्र अपनी-अपनी विशिष्टता रखते हुये भी चाणक्य अथवा राक्षस के हाँथों की कठपुतली हैं। मुद्राराक्षस नाटक में नायिका को स्थान न देकर प्रतीकात्मक नायिका चाणक्य की बुद्धि का प्रयोग किया गया है।

ज्ञान बिंदु-

- भवभूति- उत्तररामचरितम् = नायक - राम, नायिका - सीता। हर्ष - रत्नावली = नायक - उदयन, नायिका - रत्नावली। भट्टनारायण - वेणीसंहार = नायक - भीम, नायिका - द्रौपदी।

39. ''व्रजन्ति से मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम्?

(a) शिशुपालवधे (b) किरातार्जुनीये
(c) भट्टिकाव्ये (d) कुमारसम्भवे

उत्तर-(b)

उपरोक्त सूक्ति वाक्य भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के 30वें पद्य से उद्धृत है। सूक्ति का अभिप्राय यह है कि- ''जो लोग दुष्ट के साथ दुष्टता नहीं करते वे मूर्ख लोग पराजय को प्राप्त होते हैं।'' यह सूक्ति वाक्य द्रौपदी का युधिष्ठिर के प्रति कथित है। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। यह बृहत्त्रयी का प्रथम ग्रन्थ है।

ज्ञान बिंदु-

- शिशुपालबध महाकाव्य माघ द्वारा रचित है, इसमें 20 सर्ग है। यह वीररस प्रधान महाकाव्य है। इसमें कुल 1650 श्लोक हैं। उसका उपजीव्य ग्रन्थ महाभारत का सभापर्व है।
- भट्टिकाव्य, भट्टि की कृति है। इस ग्रन्थ का अपरनाम रावणवध है। इसमें 22 सर्ग तथा लगभग 1624 श्लोक है।
- कुमारसम्भव, महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य है। यह 17 सर्गों में है। इसके नायक शिव तथा नायिका पार्वती हैं।

40. विश्रुतस्य वृत्तान्तमत्रोपवर्णितम्-

(a) कादम्बरी (b) दशकुमारचरितम्
(c) हर्षचरितम् (d) चम्पूरामायणम्

उत्तर-(b)

विश्रुत का वृत्तान्त दशकुमारचरितम् के अष्टम् उच्छ्वास में वर्णित है। यह दण्डी की कृति है। इसके नायक राजहंस तथा नायिका विलासवती है। इस ग्रन्थ में दस राजकुमारों का वर्णन है। ये दसों राजकुमार बड़े होकर दिग्विजय के लिये निकले और अपने अभियान के समय सभी एक-दूसरे से अलग हो गये। अन्त में ये सभी कुमार एक-एक करके राजवाहन को मिलते गये और अपनी साहसिक विजय-गाथा सुनाते रहे। इन्हीं दस-कुमारों की साहसिक विजय गाथा का संग्रह दशकुमारचरितम् है।

ज्ञान बिंदु-

- कादम्बरी बाणभट्ट द्वारा रचित कथा-ग्रन्थ है। इस कथा ग्रन्थ में तीन जन्मों का वर्णन है। इसके नायक चन्द्रापीड और नायिका कादम्बरी हैं।
- हर्षचरितम् भी बाणभट्ट की कृति है। यह आख्यायिका ग्रन्थ है। इसके प्रथम तीन उच्छ्वासों में बाणभट्ट ने अपने वंश का वर्णन किया है। शेष 5 उच्छ्वासों में राजा हर्ष का वर्णन है।
- चम्पूरामायण भोजराज की कृति हैं। भोजराज ने चम्पू रामायण की रचना किष्किन्धाकाण्ड तक ही की, जिसकी पूर्ति लक्ष्मणभट्ट ने युद्धकाण्ड तक की। बाद में वेंकटराज ने इसे उत्तरकाण्ड तक बढ़ाया।

41. ''सुभाषितं हारि विशत्यधोगलान्न दुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्'' इति केन कविनोक्तम्?

(a) वेदव्यासेन (b) कालिदासेन
(c) महाकविबाण (d) भासेन

उत्तर-(c)

उपर्युक्त सूक्ति महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी कथा ग्रन्थ से उद्धृत है। सूक्ति का पर्याय है कि- ''मनोहर सुभाषित भी राहु के अमृत की तरह दुर्जन के गले के नीचे नहीं उतरता' अर्थात् दुर्जनों को सुन्दर वचन बिल्कुल भी पसन्द नहीं होते।

ज्ञान बिंदु-

- वेदव्यास को महाभारत का रचयिता कहा जाता है। ये पराशर ऋषि के पुत्र थे। इनकी माता का नाम सत्यवती था।
- कालिदास कविरूप की अपेक्षा नाटककार के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। इन्हें उपमा सम्राट भी कहा जाता है। इन्होंने तीन नाटक मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञान शाकुन्तलम् लिखे। इसके अतिरिक्त ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसम्भव और रघुवंश महाकाव्य भी लिखे।
- भास के तेरह नाटक प्राप्त हैं, जिनमें दो उदयन कथामूलक, दो रामायणमूलक, दो लोककथामूलक एवं सात महाभारत मूलक हैं। इन तेरह रूपकों की खोज टी. गणपति शास्त्री ने की।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) मृच्छकटिकम् 1. अश्वघोषः
(b) वेणीसंहारम् 2. शूद्रकः
(c) बालचरितम् 3. भट्टनारायणः
(d) बुद्धचरितम् 4. भासः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	4	1	3

उत्तर-(c)

रचना		**रचनाकार**
मृच्छकटिकम्	–	शूद्रक
वेणीसंहार	–	भट्टनारायण
बालचरित	–	भास
बुद्धचरित	–	अश्वघोष

- मृच्छकटिकम् शूद्रक द्वारा रचित प्रकरण रूपक है। इसमें 10 अंक है। इस प्रकरण का नायक चारुदत्त तथा नायिका वसन्तसेना है।
- वेणीसंहार भट्टनारायण द्वारा रचित छः अंकों का नाटक है। यह वीर रस प्रधान नाटक है। इसके नायक भीम और नायिका द्रौपदी हैं।। भट्टनारायण वंग निवासी हैं तथा अपनी शैली के लिये विख्यात हैं।
- बालचरित महाकवि भास द्वारा रचित 5 अंकों का नाटक है इसमें भी कृष्ण जन्म से लेकर कंस के मारे जाने तक का प्रसंग वर्णित है।
- बुद्धचरित अश्वघोष कृत 28 सर्गों का महाकाव्य है। बुद्धचरित संस्कृत में उपलब्ध प्रथम महाकाव्य है, जिसमें बुद्ध का जीवन अंकित है।

43. 'तत्र श्लोकचतुष्टय'' - मिति कं दृश्यकाव्यमुद्दिश्योद्घोषितम् ?

(a) विक्रमोर्वशीयम् (b) शाकुन्तलम्
(c) स्वप्नवासवदत्तम् (d) मृच्छकटिकम्

उत्तर-(b)

महाकवि कालिदास द्वारा रचित सर्वश्रेष्ठ नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सात अंक है। जिसमें चतुर्थ अंक के चार श्लोक अपने भाव, कल्पना, कवित्व और अर्थोदात्तता के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है। एक श्लोक में पुत्री की विदाई का मार्मिक वर्णन है, दूसरे में पुत्री को पतिग्रह के लिये आदर्श शिक्षा दी गई है, तीसरे में शकुन्तला की सुकुमार भावनाओं का चित्रण है और चौथे में कण्व का राजा के लिये आदर्श सन्देश है।।

श्लोक चतुष्टय-

(i) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति ....(4/6)
(ii) पातुं न प्रथमं ....(4/9)
(iii) अस्मान् साधु ....(4/17)
(iv) शुश्रूषस्व गुरून् ....(4/18)

ज्ञान बिंदु-

- विक्रमोर्वशीयम् महाकवि कालिदास रचित 5 अंकों का त्रोटक है। इसके नायक पुरवा और नायिका उर्वशी हैं।
- स्वप्नवासवदत्तम् भासकृत 6 अंकों का नाटक है। इस ग्रन्थ के नायक उदयन एवं नायिका वासवदत्ता हैं।
- मृच्छकटिकम् शूद्रक कृत 10 अंकों का प्रकरण ग्रन्थ है। इसके नायक चारूदत्त एवं नायिका वसन्तसेना है।

44. रघुवंशे कति सर्गेषु श्रीरामकथा वर्णिता कालिदासेन

(a) अष्टसु (b) चतुर्दशसु
(c) षट्त्सु (d) अष्टादशसु

उत्तर-(c)

महाकवि कालिदास द्वारा रचित रघुवंश 19 सर्गों का महाकाव्य है। इस महाकाव्य में मनु से 31 सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन है। इनमें दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम के जीवन का विशद एवं विस्तृत वर्णन है। रघुवंश महाकाव्य के सम्पूर्ण 19 सर्गों में सर्ग दश पुत्रेष्टि यज्ञ और राम आदि 4 पुत्रों के जन्म से लेकर पञ्चदश सर्ग कुश-लव जन्म और राम का स्वर्गा रोहण पर्यन्त छः सर्गों में श्रीराम कथा का वर्णन है। रघुवंश महाकाव्य वीर-रस प्रधान है।

45. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायक भवति

(a) राजहंसः (b) मानसारः
(c) राजवाहनः (d) पुष्पोद्भवः

उत्तर-(b)

दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है। इस ग्रन्थ में प्रतिनायक मालवनरेश मानसार है एवं नायक मगध नरेश राजहंस हैं। मगधदेश की राजधानी पुष्पपुरी (वर्तमान पटना) पर राजहंस का शासन था।

दशकुमारचरितम् पूर्वपीठिका एवं उत्तरपीठिका तथा मध्यभाग के रूप में विभक्त है। दशकुमारचरितम् मध्यभाग को ही कहा जाता है, जिसमें 8 उच्छ्वास है। उत्तर पीठिका को ग्रन्थ का उपसंहार कहा गया है।

46. रसनिष्पत्तिविषये साधारणीकरणं प्रथमतया केन प्रतिपादितम्?

(a) शङ्कुकेन (b) भट्टलोल्लटेन
(c) भट्टनायकेन (d) भरतेन

उत्तर-(c)

भट्टनायक रससूत्र के तीसरे व्याख्याकार हैं भट्टनायक रस के सम्बन्ध में 'भुक्तिवादी' सिद्धान्त के पोषक हैं। वे काव्य में भावकत्व और भोजकत्व दो व्यापारों की कल्पना करते हैं। इस पर भट्टनायक संयोगात् का अर्थ 'भाव्यभावक' सम्बन्ध मानते हैं। निष्पत्ति से उनका तात्पर्य 'भुक्ति' (आस्वाद) से है। भट्टनायक रस की

स्थिति सहृदय में पूर्णतः सिद्ध करते हैं। वे ही 'साधारणीकरण' के सिद्धान्त के सर्वप्रथम प्रवर्तक हैं, जिसका विस्तार अभिनवगुप्त ने किया है।

ज्ञान बिंदु-

- शङ्कुक-की भरत सूत्र पर व्याख्या 'अनुमितिवाद' के नाम से प्रसिद्ध है। शङ्कुक नैयायिका थे तथा उन्होंने विभावादि साधनों एवं रसरूप साध्य में अनुमाप्य- अनुमापक भाव की कल्पना की है।
- भट्टलोल्लट ने ही सर्वप्रथम भरत के रसपरक सिद्धान्त की व्याख्या की। भरत के प्रसिद्ध सूत्र- ''विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद् रस निष्पत्ति'' की व्याख्या में इन्होंने संयोगाद् से कार्य कारण भावरूप सम्बन्ध तथा निष्पत्ति से उत्पत्ति अर्थ लिया है।
- भरत का 'नाट्यशास्त्र' नाट्यशास्त्र पर सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। यह 36 अध्यायों का ग्रन्थ है।

47. नाटके इतिवृत्तं कीदृशम्?

(a) प्रसिद्धम् (b) कल्पितम्
(c) अप्रसिद्धम् (d) मिश्रम्

उत्तर-(a)

''प्रख्यातोत्पाद्यमिश्रत्व भेदात्त्रेधापि तत्त्रिधा।
प्रख्यातमितिहासादेस्त्पाद्यं कवि कल्पितम्।।
मिश्रं च सङ्करात्ताभ्यां दिव्याभर्त्यादित भेदतः।''

अर्थात् इतिवृत्त तीन तरह का प्रख्यात, उत्पाद्य तथा मिश्र प्रकार का होता है।

1. प्रख्यात कथावस्तु इतिहास पुराण आदि से ग्रहीत होता है।
2. उत्पाद्य कवि की स्वयं की कल्पना होती है।
3. मिश्र कथावस्तु में दोनों की खिचड़ी रहती है। साथ ही यह वृत्त दिव्य, मर्त्य दिव्य तथा दिष्यादिव्य होता है।

48. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना स्थापनेत्युच्यते?

(a) कालिदासस्य (b) भवभूतेः
(c) श्रीहर्षस्य (d) भासस्य

उत्तर-(d)

भास के रूपकों में प्रस्तावना (भूमिका) के लिये 'स्थापना' शब्द का प्रयोग हुआ है। स्थापना अधिक बृहद् न होकर अत्यन्त छोटी है। भासकृत 13 रूपक प्राप्त हुये हैं, जिनमें **दो उदयन-कथामूलक** है

(i) प्रतिज्ञायौग गन्धरायण (ii) स्वरनवासवदत्तम्

दो रामायणमूलक है-

(i) अभिषेकनाटक (ii) प्रतिमा नाटक

दो कल्पनामूलक है-

(i) अविमारक
(ii) चारूदत्त तथा सात महाभारत मूलक है-
(i) उरूभंग (ii) दूतवाक्य
(iii) पञ्चरात्र (iv) बालचरित
(iv) दूतघटोत्कच (v) कर्णभार
(vii) मध्यमव्यायोग

भास को संस्कृत साहित्य का सबसे प्राचीन नाटककार माना जाता है इनकी शैली वैदर्भी है तथा उनके नाटकों में प्रसाद, माधुर्य एवं ओज ये तीनों गुण विद्यमान हैं।

ज्ञान बिंदु-

- कालिदास संस्कृत साहित्य के उपमा सम्राट हैं। इनकी प्रसिद्ध सात रचनायें हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् इनका विश्व प्रसिद्ध नाटक है। इनकी पत्नी विद्योत्तमा तथा श्वसुर शारदानन्द थे।
- भवभूति कृष्णयजुर्वेदी तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नीलकण्ठ तथा माता जतुकर्णी थी। इनके तीन नाटक मालतीमाधव, महावीरचरित एवं उत्तररामचरित है।
- श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर एवं माता मामल्लदेवी थी। राजा जयचन्द्र के ये राजकवि थे। इनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ नैषधीयचरितम् 22 सवर्गों में उल्लिखित है।

49. आनन्दवर्धनमते मधुरतम रसःकः?

(a) करुणरसः (b) विप्रलम्भशृङ्गारः
(c) सम्भोगशृङ्गारः (d) हास्यः

उत्तर-(a)

काव्यस्यात्मा स एवार्थस्तथाचादिकवे पुरा।
क्रौञ्च द्वन्द्व वियोगात्थः शोकः श्लोकत्व मागतः।।

अर्थात् काव्य की आत्मा वही (प्रतीयमानस्य) अर्थ है। इसी से प्राचीन काल में क्रौञ्च पक्षी के जोड़े के वियोग से उत्पन्न आदि कवि वाल्मीकि का शोक (करूण रस का स्थायी भाव) श्लोक (काव्य) रूप में परिणत हुआ।
ध्वनिकार आनन्दवर्धन इसीलिये प्रतीयमान रस करूण को मधुरतम रस के रूप में स्थापित करते हैं।

50. करुणरसस्य वर्णः कः?

(a) श्यामः (b) रक्तः
(c) कपोतः (d) कृष्णः

उत्तर-(c)

करुण रस का वर्ण कपोत अर्थात् चितकबरा होता है। करुण के लिये कपोत वर्ण का विधान सम्भवतः इसलिये हुआ है कि यह वर्ण आँखों को चुभता नहीं है और कबूतर के समान ही लोगों में दयाभाव की सृष्टि करता है।

ज्ञान बिंदु-

- शृङ्गार रस का वर्ण श्याम (सॉवला) होता है। जो गौर और कृष्ण का मिश्रण होता है।
- रौद्र रस को रक्त वर्ण का कहा गया है।
- भयानक रस कृष्ण वर्ण वाला कहा गया है। क्योंकि भय का संचार अंधकार में ही होता है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2012
संस्कृत
पेपर-3
व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'राजन्तमध्वराणामिति' पठ्यते-

(a) पृथिवीसूक्ते (b) अग्निसूक्ते
(c) विष्णुसूक्ते (d) वाक्सूक्ते

उत्तर-(b)

वैदिक देवताओं में अग्नि अत्यन्त महत्वपूर्ण देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। प्रभाव और विस्तार की दृष्टि से अग्नि को ऋग्वेद में दूसरा स्थान प्राप्त है। प्रायः ऋग्वेद के सभी मण्डलों में प्रारम्भिक सूक्त अग्नि को ही सम्बोधित है।
'राजन्तमध्वराणां' उपर्युक्त मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का 8वाँ मन्त्र है। जिसका शाब्दिक अर्थ है- देदीप्यमान (प्रकाशित होते हुए) हिंसारहित यज्ञों के रक्षक अग्नि का धर्म है प्रकाशित होना। वह अङ्गारमय है, प्रकाशमय है (अङ्गिरा राजन्तम्)। अग्निसूक्त के ऋषि-मधुच्छन्दा, देवता- अग्नि व छन्द-गायत्री है। वैदिक युग में ऋषियों के समक्ष अग्नि की उपादेयता सर्वाधिक सिद्ध हुई, इसलिए वैदिक ऋषि अग्निदेव से अपने उन्नति एवं कल्याण की प्रार्थना करता है।
व्याकरणात्मक टिप्पणी- राजन्तम् राज् (प्रकाशित होना) + शतृ प्रत्यय, द्वितीया विभक्ति, एकवचन।

2. कति लक्षणयुक्तो ग्रन्थवाचको ब्राह्मणशब्दः?

(a) द्वादश (b) पञ्चदश
(c) दश (d) अष्ट

उत्तर-(c)

ग्रन्थवाचक ब्राह्मण शब्द दश लक्षणों से युक्त होता है। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मन् से निष्पन्न है। ब्रह्मन्- शब्द के अनेक अर्थ हैं- मन्त्र, यज्ञ, रहस्य तथा परमसत्ता। ब्राह्मण का अर्थ है- यज्ञकर्म का भौतिक रूप से बतलाने के साथ-साथ उसका आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक रहस्य उदघाटित करने वाला ग्रन्थ।
भट्टभास्कर ने तैत्तिरीय संहिता (1/5/1) के भाष्य में ब्राह्मण शब्द का निर्वचन इस प्रकार किया है- ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थः।
आचार्य शबर स्वामी ने ब्राह्मणों के प्रतिपाद्य विषयों के दस प्रकार बतलाए हैं-

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्यवै

मीमांसासूत्रभाष्य (2/7/33)

तदनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों के हेतु, विचार, निर्वचन (शब्दों की निरूक्ति बताना) निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि (कर्म प्रेरक वाक्य), परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधारण कल्पना (सन्देह की स्थिति में समुचित निर्णय लेना) तथा उपमान (दृष्टान्त के द्वारा विषय का स्पष्टीकरण करना) ये दश लक्षण समाहित हैं।

3. पौर्णमासेष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति?

(a) सप्त (b) दश
(c) अष्ट (d) पञ्च

उत्तर-(d)

पौर्णमासेष्टौ पञ्च-प्रयाजाः भवन्ति। वेदों में यज्ञ का विशेष महत्व है। यह वह विधि है जिसके द्वारा प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। अथर्वा ऋषि यज्ञ के प्रवर्तक माने जाते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण में समस्त श्रौतयज्ञों को पाँच भागों में विभक्त किया गया है-

(i) अग्निहोत्र (ii) दर्शपूर्णमास
(iii) चातुर्मास्य (iv) पशुयाग
(v) सोमयाग

4. पञ्चमहायज्ञाः किमर्थमनुष्ठीयन्ते?

(a) ज्वरशान्तये (b) वास्तुदोषविनिवृत्तये
(c) पञ्चसूनादोषनाशाय (d) धनलाभाय

उत्तर-(c)

पञ्चमहायज्ञाः पञ्चसूनादोषनाशाय अनुष्ठीयन्ते। अर्थात् पांचवधस्थानों में होने वाले पापों से छुटकारा पाने के लिए पांच महायज्ञों की व्यवस्था महर्षियों द्वारा की गयी है-

(i) अध्ययन और अध्यापन के लिए ब्रह्मयज्ञ
(ii) तर्पण के लिए पितृयज्ञ
(iii) अग्नि में दिए जाने वाले हवि को देवयज्ञ
(iv) प्राणियों के लिए दी जाने वाली बलि (बलि वैश्वदेव) को भूतयज्ञ
(v) अतिथि सत्कार के लिए नृयज्ञ

जो मनुष्य इन पञ्चमहायज्ञों का यथाशक्ति परित्याग नहीं करता, वह गृह में निवास करता हुआ भी इन पञ्चस्थानीय हिंसाओं के पाप से लिप्त नहीं होता।

'अध्यापनं ब्रह्मज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमौ दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोअतिथिपूजनम्।।

5. शुनःशेपाख्याने प्राधान्येन स्तुतः देवः कः?

(a) कुबेरः (b) इन्द्रः

(c) विष्णुः (d) वरुणः

उत्तर-(d)

ऋग्वेदीय शुनःशेप आख्यान में वरूण देव की स्तुति की गयी है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण की सप्तम् पञ्चिका के तीन अध्यायों में प्रसिद्ध शुनःशेप का आख्यान है। जो 'चरैवेति चरैवेति' गाथाओं के कारण विश्वविश्रुत है। यह ऋग्वेद का सबसे प्रसिद्ध ब्राह्मण है इसके रचयिता महिदास ऐतरेय माने जाते हैं। शुनःशेपोपाख्यान में पुत्र और भ्रमण का माहात्म्य वर्णित है। ऐतरेय ब्राह्मण पर आचार्य सायण ने संस्कृत भाष्य लिखा।

6. मन्त्रेषु अनुदात्तस्वराङ्कनं क्रियते

(a) मध्ये (b) उपरिष्टात्

(c) अधः (d) वामतः

उत्तर-(c)

स्वर तीन हैं- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

तीन स्वरों के चिह्न-

1. **उदात्त-** उदात्त वर्ण पर कोई चिह्न नहीं होता। जैसे- क
2. **अनुदात्त-** अनुदात्त वर्ण पर नीचे पड़ी लकीर खींची जाती हैं। जैसे- क
3. **स्वरित-** स्वरित वर्ण पर ऊपर खड़ी लकीर खींची जाती है। जैसे- **क क्व**

पाश्चात्य पद्धति में केवल उदात्त वर्ण पर ऊपर टेढ़ी लकीर बाईं ओर झुकी हुई लगाई जाती है। जैसे इंग्लिश शब्दों पर बलाघात के लिए ∠ चिह्न लगाया जाता है। अनुदात्त और स्वरित पर कोई चिह्न नहीं लगाते। केवल स्वतन्त्र स्वरित पर दाहिनी ओर झुकी हुई टेढ़ी लकीरे ऊपर लगाते हैं।

7. यज्ञविधिमधिकृत्य मन्त्रव्याख्यानं क्रियते

(a) अरविन्देन (b) विन्टरनिल्सेन

(c) दयानन्देन (d) सायणेन

उत्तर-(d)

यज्ञविधि को आधार मानकर मन्त्रों की व्याख्या आचार्य सायण महोदय ने किया। आचार्य सायण सभी भाष्यकारों के शिरोमणि हुए जिन्होंने विजयनगर-साम्राज्य के संस्थापक हरिहर के गुरू तथा अपने अग्रज माधवाचार्य की प्रेरणा से वेदों, ब्राह्मणों और आरण्यकों का भाष्य लिखे। वेदानुशीलन के इतिहास में सायण का नाम सर्वोपरि है वैदिक साहित्य पर एकमात्र सायण ने ही सर्वाधिक भाष्य लिखे थे।

इनके भाष्यों का नाम 'वेदार्थ प्रकाश' है।

सायण मतानुसार- 'वेद का अर्थ- ज्ञान केवल यज्ञानुष्ठान के लिए होता है।' सायण का दृढ़ विश्वास था कि वेदों का परम्परागत अर्थ यज्ञपरक ही था। सायण ने लगभग 18 वैदिक ग्रन्थों पर भाष्य लिखा जो इस प्रकार है-

(1) तैत्तिरीय संहिता, (2) ऋग्वेद, (3) सामवेद, (4) काण्वसंहिता, (5) अथर्ववेद, (6/7) तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा आरण्यक, (8/9) ऐतरेय ब्राह्मण तथा आरण्यक, (10/17) सामवेदीय ब्राह्मण, (18) शतपथ ब्राह्मण।

8. एषु अर्वाचीनो वेदभाष्यकारो न वर्तते

(a) मैक्समूलरः (b) वेबरः

(c) अरविन्दः (d) सायणः

उत्तर-(d)

अर्वाचीन वेदभाष्यकारों में आचार्य सायण की गणना नहीं की जाती। जबकि अरविन्द, मेक्समूलर व वेबर अर्वाचीन भाष्यकारों की श्रेणी में शामिल हैं। सायण प्राचीनतम वेदभाष्यकार हैं। सायण ने अपने भाष्य को 'माधवीय वेदार्थप्रकाश' के नाम से अभिहित किया।

तेन मायणपुत्रेण सामणेन मनीषिणा।
आस्यया माधवीयेयं धातुवृत्तिर्विरिच्यते।।

अर्वाचीन भाष्यकारों के अन्तर्गत मैक्समूलर ने सर्वप्रथम सायण भाष्य सहित सम्पूर्ण ऋग्वेद का संपादन किया। पाश्चात्य विद्वानों में यह संस्करण बहुत प्रचलित है। जबकि विल्सन ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद 1850 ई. में प्रकाशित किया। यह सायण- भाष्य पर आश्रित है।

9. ईशावास्योपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

(a) ऋग्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन

(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर-(c)

ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद (वाजसनेयि संहिता) का अंतिम 40 वाँ अध्याय है। ज्ञातव्य है कि एकमात्र यही उपनिषद् है जो वैदिक संहिता का भाग है। शेष सभी उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थों के भाग हैं। इसके रचयिता ऋषि दध्यङ् आथर्वण थे। शुक्लयजुर्वेद की दो शाखायें हैं-

(1) काण्व (2) माध्यन्दिन

ईशोपनिषद् में कुल 18 मन्त्र है। प्रथम मन्त्र 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' से आरम्भ होता है अतएव इसका नाम 'ईशावास्योपनिषद्' है। इस लघुकाय उपनिषद् में त्यागपूर्वक भोग, कर्म की निष्कामता, आत्मा का महत्व, एकत्व भावना का फल, विद्या और अविद्या का सम्बन्ध एवं परमात्मा का स्वरूप इत्यादि विषय वर्णित है। आत्म- कल्याण के लिए ज्ञान और कर्म दोनों के अनुष्ठान को आवश्यक बताया गया है-

'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा, विद्ययाऽमृतमश्नुते।

10. **'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' कुत्रेयमुक्तिः?**

(a) भगवद्गीतायाम् (b) ईशावास्योपनिषदि

(c) कठोपनिषदि (d) श्रीमद्भागवते

उत्तर-(b)

'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' अर्थात् वह ब्रह्म सर्वज्ञ (ज्ञानी) सर्वोपरि स्थित एवं स्वयंसिद्ध है। यह उक्ति 'ईशावास्योपनिषद्' से ली गई है। यह शुक्लयजुर्वेद संहिता (काण्व तथा वाजसनेयि) के 40वें अध्याय के रूप में है। अतएव यह अत्यन्त प्राचीनतम् उपनिषद् है। आत्मकल्याण के लिए ज्ञान और कर्म दोनों के अनुष्ठान को आवश्यक बताया गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी- मनीषी- मनसः ईषा मनीषा, 'शकन्ध्वादिषु पररुप वाच्यम् तच्चटेः' इति वार्तिकेन मनस् शब्दस्य अस् इत्यस्य स्थाने 'ईषा' इत्यस्य ईकारः एवं च 'मनीषा' सिद्धयति।

11. **एतेषु सारथिः कः उच्यते?**

(a) आत्मा (b) शरीरम्

(c) मनः (d) बुद्धिः

उत्तर-(d)

यद्यपि ब्रह्मा अद्वैत है, तथापि अनादि अविद्या के कारण वह विभिन्न रूपों में उद्भाषित होता है। साधक रूप में जीवात्मा तथा साधन रूप में 'ब्रह्म' की कल्पना की जाती है। अज्ञान के कारण जीवात्मा को यह बोध नहीं हो पाता कि मैं वही (अद्धय निर्गुण ब्रह्म) हूं, इसलिए वह निरन्तर भवसागर में जन्म-मृत्युरूपी लहरों के थपेड़े खाता रहता है। समस्या यह आती है कि जीवात्मा किस साधन से ब्रह्म प्राप्ति करे? इसका समाधान यह है कि वही शरीर, बुद्धि, इन्द्रिय आदि उसके साधन हैं जिसका समुचित उपयोग करके वह जन्म और मृत्यु को आत्यन्तिक रूप से पार कर सकता है। परन्तु यह तथ्य (कि वही शरीर आदि ब्रह्मप्राप्ति के साधन हैं) आसानी से समझ में नहीं आ सकता, इस कारण रथ के रूपक द्वारा उसे स्पष्ट करते हैं-

'आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

जीवात्मा आदि में रथी आदि की कल्पना करके इन्द्रिय रूप अश्वों को वश में रख पाने या न रख पाने का उत्तरादायित्व सारथि पर डालते हुए कहते हैं-

यस्वत्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दृष्टाश्वा इव सारथेः।।

अर्थात् रथ के माध्यम से जीवात्मा को (शरीर आदि को साधन बनाकर) ब्रह्मप्रप्ति का ज्ञान आसानी से हो जाता है। यही रथरूपक का सार है।

12. **अश्वस्य मेध्यस्य लोमानि कानि उच्यन्ते?**

(a) ऋतवः (b) दिशः

(c) नक्षत्राणि (d) ओषधयश्च वनस्पतयश्च

उत्तर-(d)

शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्यायों को 'वृहदारण्यकोपनिषद्' कहते हैं। आरण्यक तथा उपनिषद् से मिश्रित होने के कारण इसका नाम 'बृहदारण्यकोपनिषद्' पड़ा। यह विशालकाय गद्यात्मक उपनिषद् है। आधुनिक विद्वानों के अनुसार यह प्राचीनतम् पाँच उपनिषदों में है जिनमें गद्यात्मक ब्राह्मण शैली है। इसे दो-दो अध्यायों के तीन काण्डों में विभक्त किया गया है। इन काण्डों को क्रमशः कहते हैं। पूरे ग्रन्थ में 47 ब्राह्मण है। प्रथमाध्याय (छः ब्राह्मण) में अश्वमेघयज्ञ, आत्मा (ब्रह्म) से जगत की उत्पत्ति, प्राण की श्रेष्ठता और आत्मा की व्यापकता का विवेचन मिलता है।

13. **'विद्यया विन्दतेऽमृतम्' इति कुत्रोपदिष्टम्?**

(a) ईशावास्योपनिषदि (b) केनोपनिषदि

(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) कठोपनिषदि

उत्तर-(b)

केनोपनिषद् सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है, इसे तलवकार या जैमिनीय उपनिषद्, भी कहते हैं। 'केनेषितं पतति प्रेषितं मनः' के आधार पर इसका नाम केनोपनिषद् रखा गया है। यह अत्यन्त लघुकाय उपनिषद् है, चार खण्डों में विभक्त है। जिसमें कुल 34 मन्त्र हैं। दो खण्ड (13 मन्त्र) पद्यात्मक और दो खण्ड गद्यात्मक हैं। इसके प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म का निर्गुण ब्रह्म से अन्तर बताया गया है तथा द्वितीय खण्ड में ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का वर्णन है। इस प्रसङ्ग में कहा गया है-

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्।
(केनोपनिषद् 2/2/4)

मन्त्रविद्या से अमृतरूप परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

14. **'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत' इति कुत्रोपदिश्यते?**

(a) भगवद्गीतायाम् (b) श्रीमद्भागवते

(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर-(c)

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा में विकसित उपनिषद् है। आरम्भ के कुछ मन्त्रों को छोड़कर यह पूर्णतः पद्यात्मक है। इसमें दो अध्याय हैं जो तीन-तीन बल्लियों में विभक्त है। यह मन्त्र कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय की तृतीय वल्ली में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करके तथा उसकी प्राप्ति का महत्व और साधन बतलाकर मनुष्यों को सावधान करता हुआ कहता है-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं
पथस्तत्कवयो वदन्ति।।
(कठोपनिषद् 1/3/14)

हे मनुष्यों ! तुम जन्म- जन्मान्तर से अज्ञाननिद्रा में सो रहे हो अब तुम्हें परमात्मा की दया से यह दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है इसे पाकर अब एक क्षण भी प्रमाद में मत खोओ। शीघ्र सावधान हो जाओ। श्रेष्ठ महापुरूषों के पास जाकर उनके उपदेश द्वारा अपने कल्याण का मार्ग और परमात्मा का रहस्य जान लो।

15. 'युवा स्यात् साधुयुवा' इति कुत्रोपदिश्यते?

(a) तैत्तिरीयोपनिषदि (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) केनोपनिषदि

उत्तर-(a)

तैत्तिरीयोपनिषद् में आनन्द का विचार आरम्भ करने की सूचना देकर सर्वप्रथम मनुष्यलोक के भोगों से मिल सकने वाले बड़े से बड़े आनन्द की कल्पना की गयी है। भाव यह है कि एक मनुष्य युवा हो, वह भी ऐसा- वैसा मामूली युवक नहीं- सदाचारी, अच्छे स्वभाववाला, अच्छे कुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ पुरुष हो, उसे सम्पूर्ण वेदों की शिक्षा मिली हो तथा शासन में ब्रह्मचारियों को सदाचार की शिक्षा देने में अत्यन्त कुशल हो, उसके सम्पूर्ण अङ्ग और इन्द्रियां रोगरहित, समर्थ और सुदृढ़ हों और वह सब प्रकार के बल से सम्पन्न हो, फिर धन सम्पत्ति से भरी यह सम्पूर्ण पृथ्वी उसके अधिकार में आ जाय तो यह मनुष्य का एक बड़े से बड़ा सुख है। वह मानव लोक का सबसे महान् आनन्द है।

16. सन्ध्यक्षराणि कति?

(a) त्रीणि (b) चत्वारि (c) अष्टौ (d) द्वादश

उत्तर-(b)

समानाक्षर के बाद वाले चार वर्णों को सन्ध्यक्षर कहा जाता है- ''ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि।'' इस दृष्टि से ए, ओ, ऐ, औ- ये वर्ण सन्ध्यक्षर होते हैं। वह भाष्य के अनुसार- ''समानाक्षरेभ्यः उत्तराणि चत्वारि सन्ध्यक्षर संज्ञकानि भवन्ति। अकारस्य इकारेण उकारेण एकारेण ओकारेण च सह सन्धौ यान्यक्षराणि निष्पद्यन्ते तानि तथोच्यन्ते। आचार्य उव्वट इसके प्रयोजन के सम्बन्ध में कहते हैं- ''सन्ध्यानि सन्ध्यक्ष-राष्याहुरेके।'

17. ह्रस्वस्वरभक्तेरुच्चारणकालो भवति

(a) त्रिमात्राकालः (b) द्विमात्राकालः
(c) एकमात्राकालः (d) अर्धमात्राकालः

उत्तर-(c)

ह्रस्व स्वर का उच्चारणकाल एकमात्रा काल है।
स्वरों के विचार से उदात्त, अनुदात्त और स्वरित-ये तीन भेद अच् के होते हैं। काल के विचार से भी ये अच् तीन ही प्रकार के होते हैं। ह्रस्व (एक मात्रिक), दीर्घ (द्विमात्रिक) और प्लुत (त्रिमात्रिक)।
उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः।
ह्रस्वो दीर्घः प्लुत इति कालतो नियमा अचि।।

18. राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्तं कस्यां शाखायां विद्यते?

(a) शाकलशाखायाम् (b) काण्वशाखायाम्
(c)जैमिनीयशाखायाम् (d) शौनकशाखायाम्

उत्तर-(d)

राष्ट्रभिवर्द्धनसूक्त का वर्णन शौनकशाखा में किया गया है।
अथर्ववेद में वर्णित विषयों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि यह वेद गागर में सागर है। वैदिक काल का ऐसा कोई विषय इसमें नहीं छूटा है, जिसका तत्कालीन किसी वेद आदि में उल्लेख हो। यद्यपि कुछ विषयों पर विस्तृत विवेचन नहीं है, तथापि उनका सूत्ररूप में वर्णन है। अतः अथर्ववेद को संक्षिप्त वैदिक विश्वकोश की संज्ञा दी जा सकती है। अथर्ववेद में वर्णित दार्शनिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विषय तथा शिक्षा, विज्ञान, आयुर्वेद आदि के कतिपय सन्दर्भ निम्नवत् हैं-

(1) दार्शनिक वर्णन- विराट् ब्रह्म (अथर्ववेद 8.9)
ब्रह्म, वाक्तत्त्व, ब्रह्म और माया मनोविज्ञान, स्वप्न विज्ञान
(2) राजनीतिक वर्णन- राष्ट्र (12.1)
(13.1),
राष्ट्र में समानाधिकार (12.1.15),
राष्ट्रीय एकता (3.8.3),
देशरक्षा (12.1.7)

19. अग्निष्टोमयागो वर्तते

(a) पाकयज्ञः (b) हविर्यज्ञः
(c) सोमयज्ञः (d) स्मार्तयज्ञः

उत्तर-(c)

'यज्ञयज्ञा वो अग्नेय'
इस ऋचा पर सामगान 'अग्निष्टोम' कहलाता है। यह सामगान अन्त में होता है, अतः इसे 'अग्निष्टोम-संस्था' कहते हैं। संस्था का अर्थ है- अन्त या समापन। मन्त्र में 'अग्नये' (अग्नि) है, अतः यह अग्निष्टोम कहलाता है। स्तोम का अर्थ है- स्तुति। अतः अग्निष्टोम-अग्नि की स्तुति या अग्नि का स्तोत्र है। यह पाँच दिन तक चलता है। यह सोमयागों का प्रकृतियाग है, अतः सभी सोमयागों में यह अग्निष्टोम रहता है। सोमयाग के 7 भेद होते हैं-

(1) अग्निष्टोम (ज्योतिष्टोम) (2) उक्थ
(3) षोडशी (4) अतिरात्र
(5) अर्त्याग्निष्टोम, (6) वाजपेय
(7) आप्तोर्याम

20. गायत्रीच्छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति?

(a) 20 (b) 24 (c) 28 (d) 32

उत्तर-(b)

छन्दस् (छन्द) शब्द छद् (ढकना) धातु से निष्पन्न है। आचार्य यास्क ने निरुक्त में छन्दस् का निर्वचन इस प्रकार दिया है- 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है। कात्यायन ने सर्वानुक्रमणी (12/6) में छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है 'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः' अर्थात् जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है उसे छन्द कहते हैं। ऋग्वेद में कुल 20 छन्दों का प्रयोग हुआ है। इनमें से केवल 7 छन्द ही मुख्य रूप से प्रयुक्त है। गायत्री छन्द में वर्णों की संख्या 24 होती है।

1. गायत्री (24 अक्षर)
2. उष्णिक् (28 अक्षर)
3. अनुष्टुप् (32 अक्षर)
4. बृहती (36 अक्षर)
5. पङ्क्ति (40 अक्षर)
6. त्रिष्टुप् (44 अक्षर)
7. जगती (48 अक्षर)

21. निरुक्तानुसारं पञ्चमो भावविकारः कः?

(a) जायते (b) अपक्षीयते
(c) वर्धते (d) विनश्यति

उत्तर-(b)

आचार्य वार्ष्यायणि ने 'भाव' के छः भेद माने हैं। बृहद् देवता (2/1/20), महाभाष्य तथा वाक्पदीय में भी छः भाव-भेदों की चर्चा मिलती है। वार्ष्यायणि के अनुसार उत्पन्न होने वाले सभी पदार्थों में ये छः विकार देखे जाते हैं। निरूक्त के अनुसार पञ्चम् भाव-विकार है- 'अपक्षीयते' अर्थात् 'ह्रास' अथवा 'अपक्षय'। यह 'ह्रास' भी 'वृद्धि' के समान दो प्रकार का हो सकता है-

(1) शरीर का ह्रास
(2) अपने से युक्त या सम्बद्ध पदार्थों का ह्रास

पहले का उदाहरण है- 'अपक्षीयते शरीरेण'
दूसरे का उदाहरण है- 'अपक्षीयते अपजयेन'
इत्यादि। इसीलिए यास्क ने यहाँ केवल ''अपक्षीयते इत्येतेनैव व्याख्यातः प्रतिलोमम्'' इतना कहना ही पर्याप्त समझा।

22. समुद्रवन्त्यस्मादाप इत्यनेन को निर्दिश्यते?

(a) मेघः (b) ह्रदः
(c) समुद्रः (d) नदी

उत्तर-(c)

समुद्रवन्ति अस्मात् आपः, समभिद्रवन्ति एनम् आपः, सम्मोदन्ते अस्मिन् भूतानि, समुदको भवति, समुनत्तीति वा (इससे जल निकलता है, सम्, उत्, द्रु अथवा जल इसी में जाता है, सम् अभि, द्रु अथवा इसमें जीव मोद मानते हैं, युद्ध अथवा जलयुक्त है अथवा भिगो डालता है, उन्द्र)।

मेघः- मेहतीति (मिह् - सींचना से) उपर या उपल को मेघ कहा जाता है। जिसमें बादल गतिहीन हो जाते हैं। (उप रम्) अथवा जिसमें जल निष्क्रिय होता है (उप नम्)।

नदी- नदनाः भवन्ति = शब्दवत्यः अर्थात् नाद करने वाली शब्दयुक्त।

ह्रदः- ह्रादतेः शब्दकर्मणः (शब्द करना अथवा आवाज करना)

23. 'चित्' इति निपातो वर्तते

(a) निषेधार्थे (b) उपमार्थे
(c) शब्दार्थे (d) प्रयोगार्थे

उत्तर-(b)

'चित्' यह (निपात) अनेक अर्थ वाला है। जैसे- 'आचार्यश्' चिद् इदं ब्रूयात् (केवल आचार्य ही इस अभिप्राय को बता सकते हैं) यहाँ (चिद् का प्रयोग) पूजा या आदर के अर्थ में हुआ है। आचार्य शब्द कैसे बना? आचार्य (विद्यार्थी में) आचार (सदाचार) को धारण करता है, अर्थो (शास्त्रों के अभिप्रायों का संग्रह करता है तथा शिष्य में बुद्धि (ज्ञान-विज्ञान) का चयन (संग्रह) करता है।
'दधिचित् (दहि के समान) यहाँ (चित्) उपमा, अर्थ वाला है। कुलमाषांश चिद् आहर' (कुल्माषों को ही लाओ, और अधिक क्या ला सकते हो)। यहाँ चिद् निन्दा अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'कुल्माष' कुलों में नष्ट होते हैं या निकृष्ट माने जाते हैं।

24. माङ्गलिक आचार्यो महतो शास्त्रौधस्य मङ्गलार्थमादितः किं प्रयुङ्क्ते?

(a) काव्यम् (b) नित्यशब्दम्
(c) अनित्यशब्दम् (d) सिद्धशब्दम्

उत्तर-(d)

समाधाता उत्तर देता है कि (सिद्ध शब्द का प्रयोग) मङ्गल के लिए उत्सुक आचार्य (वार्तिककार अपने इस) महान वार्तिक समुदायरूप शास्त्र के प्रारम्भ में अभीष्ट अर्थ के सिद्ध रूप मङ्गल के लिए सिद्ध शब्द का प्रयोग करते हैं। जिन शास्त्रों का प्रारम्भ मङ्गल करके किया जाता है वे प्रसिद्ध होते हैं। उनके अध्ययन करने वाले वीर होते हैं, दीर्घायु होते हैं। उनके पढ़ने वाले छात्रों के कुछ मनोरथ पूर्ण होते हैं।

25. ''इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः'' इति सूत्रेण किं विधीयते?

(a) आम् (b) इट्
(c) वृद्धिः (d) गुणः

उत्तर-(a)

ऋच्छ् धातु से भिन्न इजादि जो गुरुवर्ण से युक्त धातु, उससे पर आम् प्रत्यय होता है, लिट् के परे होने पर।
इच् एक प्रत्याहार है, वह आदि में है जिस धातु के वह धातु इजादि हुआ। दीर्घवर्ण और संयोगपरक ह्रस्व-वर्ण की गुरुसंज्ञा होती है।

अतः जिस धातु में दीर्घ वर्ण या संयोग हो वह धातु गुरुमान् अर्थात् गुरुसंज्ञक वर्ण वाला होता है। ऋच्छ् धातु में च् छ् का संयोग है, अतः यह भी गुरुमान हुआ। ऋच्छ् धातु से आम् प्रत्यय अभीष्ट नहीं था, इसलिए निषेध करने के लिए सूत्र में 'अनृच्छः' पढ़ा गया। आम् के मकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। अतः पूरा आम् धातु से परे होता है। लिट् परे रहते विहित होने से धातु और लिट् के बीच में बैठ जाता है।

26. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः

A प्राचां ष्फ — 1. क्रियातिपत्तौ
B लिङ्निमित्ते लृङ्. — 2. तृतीयान्यतरस्याम्
C प्रेष्यब्रुवोर्हविषो — 3. तद्धितः
D तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां — 4. देवतासम्प्रदाने

	A	B	C	D
(a)	2	3	1	4
(b)	3	2	4	1
(c)	3	1	4	2
(d)	4	2	3	1

उत्तर-(c)

प्राचां ष्फ - तद्धितः
लिङ्निमित्ते लृङ् - क्रियातिपत्तौ
प्रेष्यबुवोर्हविषो - देवतासम्प्रदाने
तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां - तृतीयान्यतरस्याम्

(i) **प्राचां ष्फ तद्धितः -** यञ् प्रत्ययान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व विवक्षा में विकल्प से तद्धितसंज्ञक ष्फ प्रत्यय होता है।
(ii) **लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ -** लिङ्ग के निमित्त जो हेतु-हेतुमद्भाव आदि, उसमें क्रिया का भविष्यत्काल में होना (प्रकट करना) हो तो धातु से लृङ् लकार होता है क्रिया की असिद्धि गम्यमान होने पर।
(iii) **प्रेष्यबुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने -** देवता के सम्प्रदान कारक होने पर प्र-पूर्वक दिवादिगणी इष् धातु और ब्रू धातु के हवि विशेष के वाचक कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।
(iv) **तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्-** तुला और उपमा शब्दों को छोड़कर अन्य सभी तुल्य अर्थ वाले शब्दों के योग में विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है। पक्ष में षष्ठी होती है।

27. ''आख्यातोपयोगे'' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्?

(a) मातुर्निलीयते कृष्णः (b) नटस्य गाथां श्रृणोति
(c) उपाध्यायादधीते (d) हिमवतो गङ्गा प्रभवति

उत्तर-(c)

नियमपूर्वकविद्यास्वीकारे वक्ता प्राक्संज्ञः स्यात्)।
जिस गुरु या अध्यापक या मनुष्य से कोई चीज नियमपूर्वक पढ़ी जाती है, अथवा मालूम की जाती है, वह गुरु या अध्यापक या अन्य मनुष्य अपादान संज्ञक होता है।
जैसे- (i) उपाध्यायाद् अधीते- (उपाध्याय से पढ़ता है)।
(ii) अध्यापकाद् गणितं पठति- (अध्यापक से गणित पढ़ता है)।

28. 'केशकः' इत्यत्र कन् प्रत्ययः केन सूत्रेण विधीयते?

(a) विमुक्तादिभ्योऽण् (b) वाड़ प्रसिते
(c) कुल्माषादञ् (d) पूर्वादिनिः

उत्तर-(b)

'केशवः' इत्यत्र कन् प्रत्ययः 'वाड़ प्रसिते' सूत्रेण विधीयते अर्थात् 'केशवः' शब्द में प्रयुक्त कन् प्रत्यय का विधान 'स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते' सूत्र से हुआ है। 'कन्' प्रत्यय में केवल 'क' ही शेष रहता है।

29. पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति?

(a) उत्तमः (b) उत्तमोत्तमः
(c) अधमः (d) श्रेष्ठः

उत्तर-(c)

पाणिनीयशिक्षा के अनुसार लिखितपाठक अधम होता है। पाणिनीय शिक्षा में लिखितपाठक के लक्षण दृष्टव्य हैं-

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः

(पाणिनीय शिक्षा) श्लोक 32

अर्थात् गानपूर्वक, त्वरा से, शिर कँपाते हुए, स्वलिखित, अर्थज्ञान रहित और अनभ्यस्त पाठ को पढ़ने वाले- ये छः पाठक अधम होते हैं।

30. पारिवारिक वर्गीकरणस्य कति प्रमुखभेदाः?

(a) चतुर्दश (b) षोडश
(c) अष्टादश (d) विंशतिः

उत्तर-(c)

विश्व की भाषाओं के परिवारों की संख्या के विषय में पर्याप्त मतभेद है। जर्मन विद्वान् विल्हेल्म फॉन हुम्बोल्ट ने इनकी संख्या 13 मानी है। फ्रीड्रिश म्यूलर आदि विद्वान् इनकी संख्या 100 के लगभग मानते हैं। भारतीय विद्वान् इनकी संख्या 10 से 18 तक मानते हैं। निर्विवाद रूप से स्वीकृत प्रमुख 18 भाषा-परिवारों का उल्लेख किया गया है जो इस प्रकार हैं-

(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया) भूखण्ड)
(1) भारोपीय (भारत-यूरोपीय) परिवार
(2) द्राविड़ परिवार
(3) बुरुशस्की परिवार

(4) काकेशी परिवार
(5) यूराल-अल्ताई परिवार
(6) चीनी परिवार
(7) जापानी-कोरियाई परिवार
(8) अन्यत्तरी (हाइपरबोरी परिवार)
(9) बास्क परिवार
(10) सामी-हामी परिवार (यह अफ्रीका महाद्वीप में पाया जाता है)

(ख) अफ्रीका भूखण्ड-
(11) सूडानी परिवार
(12) बान्तू परिवार
(13) बुशमैनी परिवार

(ग) प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड-
(14) मलय-पोलेनेशियाई परिवार
(15) पापुई परिवार
(16) आस्ट्रेलियन परिवार
(17) दक्षिण-पूर्व एशियाई परिवार

(घ) अमेरिका भूखण्ड
(18) अमेरिकी परिवार

31. भारोपीयपरिवारे भारत-ईरानीवर्गः कस्मिन् वर्गे?

(a) केंटुमवर्गः (b) शतंवर्गः
(c) चीनीपरिवारः (d) आर्मीनीपरिवारः

उत्तर-(b)

भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है। यह Indo-European का अनुवाद है। भारोपीय में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है।

(1) केन्टुम्
(2) शतम् (सतम्)

इस विभाजन का श्रेय प्रो. अस्कोली को है। उन्होंने 1870 ई. में यह मत प्रस्तुत किया कि मूल भारोपीय भाषा की कण्ठ्य (कंठ तालव्य) ध्वनियाँ कुछ भाषाओं में कण्ठ्य रह गई हैं और कुछ भाषाओं में संघर्षी (ऊष्म, शसज) हो गई हैं। इसको स्पष्ट करने के लिए दो प्रतिनिधि भाषाएँ लैटिन और अवेस्ता ली गईं। लैटिन में सौ को (Centum) कहते हैं तथा अवेस्ता में 'सतम्' और संस्कृत में शतम्। भारोपीय-परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर इस प्रकार बांटा गया है-

शतम् वर्ग

(i) भारत-ईरानी (आर्य) (ii) बाल्टो-स्लाविक
(iii) आर्मीनी (iv) अल्बानी (इलीरी)

केन्टुम वर्ग

(i) ग्रीक (ii) केल्टिक
(iii) जर्मानिक (iv) इटालिक
(v) हिट्टाइट (vi) तोखारी

32. रुद्रदाम्नः गिरनारशिलालेखे सुदर्शनतडागस्य कः पुनर्निर्माता?

(a) पुष्पगुप्तः (b) तुषास्फः
(c) चक्रपालितः (d) सुविशाखः

उत्तर-(d)

रुद्रदामन का जूनागढ़ गिरनार शिलालेख-
स्थान - जूनागढ़ गुजरात
भाषा - संस्कृत
लिपि - ब्राह्मी
काल - रुद्रदामन के राजत्वकालान्तर्गत 72वाँ वर्ष
विषय - रुद्रदमान के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शनतालाब का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रूद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियों का विवरण।

33. 'शोणो धावति' इत्यत्र का लक्षणा?

(a) भागलक्षणा (b) जहल्लक्षणा
(c) अजहल्लक्षणा (d) जहदजहदल्लक्षणा

उत्तर-(c)

'तत्त्वमसि' महावाक्य के अर्थबोध में अजहल्लक्षणा की असङ्गति को प्रदर्शित किया गया है।
'शोणो धावति' वाक्य में शोण पद का वाक्यार्थ है लाल रंग, वह जड़ होने के कारण दौड़ नहीं सकता है। क्रिया का आश्रय द्रव्य होता है, गुण नहीं, अतः शोणगुण 'धावति' क्रिया का आश्रय नहीं बन सकता। इसलिए इस वाक्य का मुख्यार्थ बाधित होता है। अब यदि शोणगुण का परित्याग न करके उसके आश्रयभूत अश्वादि को लक्षणावृत्ति के द्वारा ग्रहण किया जाय, तो मुख्यार्थगत विरोध का परिहार हो जाता है। अतः शोणपद के वाक्यार्थ का परित्याग न करने के कारण यहाँ अजहल्लक्षण सङ्गत होती है।

34. वेदान्तानुसारं कतिविधः समाधिः?

(a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(a)

समाधिर्द्विविधः सविकल्पको निर्विकल्पकश्चेति।
वेदान्तसार के अनुसार समाधि के मुख्यतः 2 प्रकार हैं-
(i) सविकल्पक (ii) निर्विकल्पक
इनमें ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का जो विभाग है उसके विलय की अपेक्षा न करके अद्वितीय वस्तु के आकार को धारण करने वाली चित्तवृत्ति का अद्वितीय वस्तु में स्थिर हो जाना सविकल्पक समाधि

है। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का जो विभाग है उसके विलीन हो जाने की अपेक्षा से (अर्थात् त्रिपुटी का विलय हो जाने पर) अद्वैताकार चित्तवृत्ति का अद्वितीय वस्तु में अत्यन्त एकीभाव से स्थित हो जाना निर्विकल्पक समाधिक है। उस समय अद्वितीय वस्तु के आकार को धारण करने वाली चित्तवृत्ति का भान न होकर केवल अद्वितीय वस्तु का भान होता है। जिस प्रकार (पानी में घुलकर) जल का आकार धारण कर लेने वाले नमक का भान न होकर जलमान का ही भान होता है।

35. 'वेदान्त' शब्दस्य पर्यायः कः?

(a) न्यायदर्शनम् (b) पूर्वमीमांसा

(c) उत्तरमीमांसा (d) सांख्यादर्शनम्

उत्तर-(c)

लोक में 'वेदान्त' शब्द का प्रयोग उपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा शङ्कराचार्यप्रभृति विद्वानों के द्वारा रचे गये ग्रन्थों के लिए समान रूप से किया जाता है (प्रमारूप ब्रह्मविद्या की) प्रमाणरूप उनके उपकारक (उनके अर्थ का अनुवर्तन करने वाले) शारीरिक सूत्र (ब्रह्मसूत्र) या वेदानतसूत्र) आदि भी उपचार से वेदान्त है। 'वेदानाम् अन्तः इति वेदान्तः' इस व्युत्पत्ति से 'वेदान्त' शब्द का व्यवहार मुख्य रूप से वेदों के अन्तिम भाग उपनिषदों के लिए होता है, और उपचार से शारीरकसूत्र श्रीमद्भगवद्गीता आदि के लिए भी होता हैं उत्तर मीमांसा में उपनिषत्प्रतिपाद्य जीव और ब्रह्मा के स्वरूप का विवेचन हैं वेद के सबसे अन्तिम भाग (उपनिषद्) में इसके प्रतिपाद्य का निरूपण होने से, तथा वेद (ज्ञान) का अन्त अर्थात् चरमोत्कर्ष (पराकाष्ठा) होने के कारण उत्तरमीमांसा को 'वेदान्त' भी कहा जाता है।

36. सांख्यदर्शने कति प्रमाणानि स्वकृतानि?

(a) एकः (b) द्वौ

(c) त्रीणि (d) चत्वारि

उत्तर-(c)

सांख्यदर्शन में तीन प्रमाण स्वीकार किये गये हैं-

(i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान

(iii) शब्द (iv) (आप्तवचन)

प्रमाणों का यह त्रैविध्य, साधारण जनों के लिए उपयोगी प्रमाणों के अभिप्राय से है। क्योंकि शास्त्र साधारण लौकिक जनों को समझाने के लिए ही प्रवृत्त होता हैं। और इस सांख्य शास्त्र में लौकिक प्रमाणों का ही अधिकार है अर्थात् लौकिक प्रमाण ही यहाँ निरूपित किए जाने के योग्य हैं।

'प्रमीयतेऽनेनेति' अर्थात् जिसके द्वारा प्रमारूप यथार्थज्ञान हो, इस निर्वचन से प्रमाण का प्रमा के प्रति करण होना ज्ञात होता है। असन्दिग्ध (संशय से रहित) अविपरीत विपर्यय और विकल्प से रहित) तथा अज्ञात (स्मृति रहित) वस्तु को विषय बनाने वाली चित्तवृत्ति प्रमा है, और इस चित्तवृत्ति का जो फल है, वह परूषवर्ती बोध भी प्रमा है, उन दोनों का जो साधन बनता है वह प्रमाण कहलाता है।

37. सांख्यदर्शने सूक्ष्मशरीरं कति तत्त्वात्मकम्?

(a) एकादश (b) द्वादश

(c) अष्टादश (d) पञ्चविंशतिः

उत्तर-(c)

सांख्य दर्शन के अनुसार महत् से लेकर सूक्ष्म पंचतन्मात्राओं तक कुल 18 तत्त्व (अवयव) रहते हैं।

जो इस प्रकार है- बुद्धि + अहंकार + 5 ज्ञानेन्द्रियाँ + मन + 5 कर्मोन्द्रियाँ + 5 तन्मात्रायें = 18 तत्त्व)

यह लिङ्गशरीर (सूक्ष्मशरीर) पूर्व में उत्पन्न होता है, इसकी गति अव्याहत (अकुष्ठित) होती है प्रत्येक पुरूष के साथ नियत रूप से रहता है, महत् तत्त्व से प्रारम्भ करके सूक्ष्म तन्मात्र पर्यन्त अठारह अवयवों वाला होता है, स्थूल शरीर के बिना भोग प्रदान करने में असमर्थ होता है बुद्धिगत धर्माधर्मादि भावों की वासना से अधिवासित होता है, इसीलिए संसरण (जन्ममरण रूप चक्र में भ्रमण) करता है तथा महाप्रलय में अपने कारण में लय को प्राप्त हो जाने से लिङ्ग शरीर कहा जाता है।

पूर्वोत्पन्नमसक्तं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरुपभोगं भावैराधिवासितं लिङ्गम्।।

38. पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यम् उच्यते

(a) विधिः (b) मन्त्रः

(c) निषेधः (d) अर्थवादः

उत्तर-(c)

पुरूषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः, निषेधावाक्यनामर्थ हेतु क्रिया निवृत्ति जनकत्वेनैवार्थवत्वात्।

पुरूष के निवर्तक वाक्य को निषेध कहते है, क्योंकि अनर्थ की कारण भूत क्रिया के निवृत्ति जनक होने के कारण ही निषेध वाक्य सप्रोजन होते हैं। जिस प्रकार प्रवृत्ति का प्रतिपादन करती हुई विधि अपनी प्रवृत्ति जनकता प्रवृत्ति का प्रतिपादन करती हुई विधि अपनी प्रवृत्ति जनकता के निर्वाह के लिए विधेय याग आदि की इष्ट साधनता का निश्चय करती हुई पुरूष को उसमें प्रवृत्त करती है, उसी प्रकार 'न कलञ्जं भक्षयेत्' इत्यादि निषेधवाक्य भी निवृत्त का प्रतिपादन करता हुआ अपनी निवृत्ति जनकता के निर्वाह के लिए निषेध्य कलञ्जभक्षण की अत्यधिक अनिष्ट साधनता का निश्चय करता हुआ पुरूष को उससे निवृत्त करता है।

39. **अर्थसंग्रहस्य कः प्रणेता?**

(a) लौगाक्षिभास्करः (b) कुमारिलभट्टः
(c) शम्भुभट्टः (d) आपदेवः

उत्तर-(a)

अर्थसंग्रह के प्रणेता लौगाक्षिभास्कर हैं। इनका असली नाम 'भास्कर या भास्कर शर्मा' था। लोगाक्ष इनका गोत्र था। इसी गोत्र में उत्पन्न होने के कारण इन्हें लौगाक्षि कहा जाता है। यह गोत्र बहुत प्राचीन है। कात्यायन श्रौतसूत्र तक में 'लौगाक्षि' का उल्लेख पाया जाता है। इस गोत्र से ही प्रतीत होता है कि भास्कर दाक्षिणात्य थे। इनके पिता मुद्गल तथा पितामह रुद्र थे। लौगाक्षिभास्कर वासुदेव तथा रमा के उपासक थे। इन्होंने मणिकर्णिका (काशी) का उल्लेख किया है इससे प्रतीत होता है कि इन्होंने अपने जीवन में सम्भवतः अन्तिम समय में काशीवास अवश्य किया होगा। इनके स्थितिकाल के विषय के दो मत हैं। विद्वानों का एक वर्ग 13वीं शताब्दी तथा दूसरा वर्ग 17वीं शताब्दी में उत्पन्न मानते हैं, दोनों ही वर्गों ने अपने-अपने तर्क का आधार आपदेव के 'मीमांसान्यास प्रकाश' को बनाया। प्रथम वर्ग के विद्वानों का कहना है कि लौगाक्षिभास्कर के अर्थ संग्रह को आधार बनाकर आपदेव ने अपने ग्रन्थ की रचना की थी।

40. **विनियोगविधेः सहकारिभूतानि प्रमाणानि कति?**

(a) पञ्च (b) षट्
(c) दश (d) एकादश

उत्तर-(b)

अङ्गप्रधानसम्बन्ध बोधको विधिर्विनियोगविधिः
यथा- दध्ना जुहोतीति।
अंग (गुण) के प्रधान अङ्गी, होम आदि के साथ सम्बन्ध का बोध कराने वाली विधि विनियोग विधि होती है।
जैसे- 'दध्ना जुहोति'।
विनियोग विधि के सहकारी छः प्रमाण - एतस्त विधेः सहकारि भूतानि षट्प्रमाणानि - श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या रूपाणि।

41. **''सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।**
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।''
-श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान्?

(a) कुम्भकर्णः (b) सुग्रीवः
(c) विभीषणः (d) मारीचः

उत्तर-(d)

प्रस्तुत श्लोक में रावण से इस प्रकार मारीच ऋषि बोले हे राजन्! सदैव प्रिय बोलने वाले व्यक्ति तो यूं ही मिल जाते हैं। परन्तु अप्रिय हित को कहने वाला, व सुनने वाला - दोनों का ही मिलना कठिन है।

42. **लोके अतिप्रसिद्धा 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारतस्य कस्मिन् पर्वण्युपनिबद्धा?**

(a) अरण्यपर्वणि (b) भीष्मपर्वणि
(c) शान्तिपर्वणि (d) विराटपर्वणि

उत्तर-(b)

'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारत के 'भीष्म पर्व' से अवतरित की गयी है। महाभारत युद्ध के आरम्भ में कृष्णार्जुन संवाद के रूप में 18 अध्यायों का एक अंश है, जिसे 'भगवद्गीता' कहते हैं। इसमें कृष्ण ने अर्जुन को उत्साहित करने वाले आध्यात्मिक उपदेश दिये हैं। इस श्रीमद्भगवद्गीता में 700 श्लोक हैं।
गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक् - पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेद व्यास ने कहा है-

''गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्याद्विनिःसृता।।''

गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् गीता को भली भांति पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तःकरण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् विष्णु के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार का क्या प्रयोजन।

43. **रावणासुरात् सीतायाः विमुक्तिः अनया स्वप्ने दृष्टा**

(a) मन्दोदर्या (b) तारया
(c) त्रिजटया (d) कैकेय्या

उत्तर-(c)

असुर रावण से सीता को विमुक्ति होने का स्वप्न त्रिजटा ने देखा-

''आष्मानं खादतानार्या न सीतां भक्षयिष्यथ।
जनकस्य सुतामिष्टां स्नुषां दशरथस्य च।।

अरी दुष्टाओं! तुम अपने आप को खाओ तो भले ही खा डालो, पर जनक की दुलारी और महाराज दशरथ की बहू सीता को, तुम नहीं खा पाओगी।

''स्वप्नो ह्यद्य मया दृष्टो दारूणो रोमहर्षणः।
राक्षसानामभावाय भर्तुरस्या जियाय च।

क्योंकि आज मैंने एक बड़ा भयंकर और रोमाञ्चकारी स्वप्न देखा है। जिसका फल है, राक्षसों का नाश और उनके पति (राम) की विजय।

44. **कीचकस्य वधं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वण्युपवर्णितम्?**

(a) उद्योगपर्वणि (b) विराटपर्वणि
(c) शल्यपर्वणि (d) द्रोणपर्वणि

उत्तर-(b)

विराटपर्व महाभारत के 18 पर्वों में चौथा पर्व है। इसमें पाण्डवों के अज्ञातवास की घटनाओं का वर्णन है। पाण्डव वेश बदलकर मत्स्यराज विराट के राजप्रसाद में अज्ञात रूप से रहते हैं। यहीं द्रौपदी के प्रति आसक्त कीचक का भीम द्वारा वध होता है। इसी पर्व में ही विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु के साथ होता है।

उद्योग पर्व- श्रीकृष्ण द्वारा सन्धि का प्रयत्न, अम्बोपाख्यान की पूर्व कथा, अम्बा अपहरण।

द्रोण पर्व- अभिमन्यु और द्रोण का वध, अश्वत्थामा का नारायणास्त्र प्रयोग।

शल्य पर्व- शल्य का वध, दुर्योधन का गदायुद्ध और ऊरुभङ्ग इस पर्व की मुख्य कथाएँ हैं।

45. कस्मिन् पुराणे काव्यशास्त्रसम्बन्धिविषयाः सर्वे उट्टङ्किताः वर्तन्ते?

(a) ब्रह्मपुराणे (b) ब्रह्माण्डपुराणे
(c) नारदपुराणे (d) अग्निपुराणे

उत्तर-(d)

अग्निपुराण उपयोगिता की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण पुराण है। इसे विश्वकोश कहा जा सकता है। इसमें उस समय प्रचलित सभी विद्याओं का संकलन है। यह महाभारत के तुल्य संकलन ग्रन्थ है। इसमें काव्यशास्त्र, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, कोश ग्रन्थ, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, स्थापत्यकला, नाट्यशास्त्र, वैदिक कर्मकाण्ड आदि विषयों का समावेश है।

ब्रह्म पुराण- इसको 'आदि पुराण' भी कहते हैं। इसमें उड़ीसा के तीर्थों का महत्व वर्णित है। इसमें सूर्य को 'शिव' कहा है।

ब्रह्माण्ड पुराण- इसमें तीर्थ-माहात्म्य और उपाख्यानों का संग्रह है। इसमें सात खण्डों में अध्यात्म रामायण दी हुई है।

नारद पुराण- इसको बृहन्नारदीय पुराण भी कहा जाता है। इसमें उत्सवों, पर्वों, समाधि एवं ईश्वर-भक्ति से मोक्ष-प्राप्ति का वर्णन है।

46. मौर्यवंशराजानां चरितं कस्मिन् पुराणे वर्णितम्?

(a) वायुपुराणे (b) वराहपुराणे
(c) वामनपुराणे (d) विष्णुपुराणे

उत्तर-(d)

विष्णुपुराण यह वैष्णवों का इष्ट पुराण है। इसमें विष्णु को अवतार मानकर उनकी उपासना का वर्णन है। यही एक पुराण है, जिसमें पुराण के सभी लक्षण घटते हैं। इसमें मौर्य राजाओं की प्रामाणिक वंशावली दी गई है। शंकराचार्य ने केवल इसी पुराण से उद्धरण दिये हैं, अन्य किसी से नहीं। प्रामाणिकता और प्राचीनता की दृष्टि से यह सबसे प्रमुख है।

वामन पुराण- इसमें विष्णु के वामन अवतार का वर्णन है।

वराह पुराण- इसमें विष्णु के वराहावतार का मुख्य रूप से वर्णन है। इसमें नचिकेता का उपाख्यान तथा मथुरा-माहात्म्य का वर्णन है।

वायु पुराण- इसे 'शिव पुराण' भी कहते हैं। एक समय यह मगध क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय था। इसमें 'गया माहात्म्य' नामक अंश का वर्णन मिलता है।

47. ऋष्यशृङ्गमुनेः चरितं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितम्?

(a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) सुन्दरकाण्डे (d) बालकाण्डे

उत्तर-(d)

ऋष्यशृङ्गमुनि का वर्णन बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में मिलता है। इन्होंने राजा दशरथ के पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराया था। वह विभाण्डक ऋषि के पुत्र तथा कश्यप ऋषि के पौत्र बताये जाते हैं। उनके नाम को लेकर यह उल्लेख है कि उनके माथे पर सींग (ऋंग) जैसा उभार होने की वजह से उनका नाम शृङ्गी पड़ा था। उनका विवाह अंगदेश के राजा रोमपाद की दत्तक पुत्री शान्ता से सम्पन्न हुआ जो कि वास्तव में दशरथ की पुत्री थी शान्ता। ऋष्यशृङ्ग के यज्ञ के फलस्वरूप राजा (दशरथ) चौथेपन में भगवान राम सहित चार प्रतापी पुत्र प्राप्त हुए। ऋष्यशृङ्ग ने यह यज्ञ मखभूमि में किया था। जहाँ से रविवार को 84 कोसी परिक्रमा शुरू हुई।
यज्ञ के बाद ऋषि यहाँ आकर समाधि में लीन हो गये। सरयू के इस मनोरम तट पर आज भी आश्रम का स्वरूप विद्यमान है।

48. अर्थशास्त्रस्य द्वितीयाधिकरणं वर्तते

(a) विनयाधिकारिकम् (b) धर्मस्थीयम्
(c) अध्यक्षप्रचारः (d) कण्टकशोधनम्

उत्तर-(c)

अर्थशास्त्र की रचना 300 ई.पू. में कौटिल्य के द्वारा की गयी थी। इसका विभाजन 15 अधिकरणों में हुआ है, पुनः ये अधिकरण 150 अध्यायों तथा 180 प्रकरणों में विभक्त है। सामान्यतः यह गद्य में है किन्तु कहीं-कहीं श्लोक भी है। श्लोकों की संख्या कुल 340 है। पूरा ग्रन्थ अपनी व्यवस्थित विषय वस्तु के कारण एक ही व्यक्ति का लिखा हुआ लगता है। यह प्राचीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक जीवन पर मूल्यवान् प्रकाश डालता है।
इसकी विषय वस्तु का क्रम इस प्रकार है-

(1) विनयाधिकारिक (2) अध्यक्षप्रचार
(3) धर्मस्थानीय (4) कण्टक-शोधन
(5) योगवृत्त (6) मण्डलयोनि
(7) षाड्गुण्य (8) व्यसनाधिकारिक
(9) अभियास्यत्कर्म (10) सांग्रामिक
(11) संघवृत्त (12) आबलीयस
(13) दुर्गलम्भोपाय (14) औपनिषदिक
(15) तन्त्रयुक्ति।

49. अमात्योत्पत्तिः कुत्र उपदिष्टा?

(a) कण्टकशोधने (b) धर्मस्थीये
(c) षाड्गुण्ये (d) विनयाधिकारिके

उत्तर-(d)

अमात्यों की उत्पत्ति का वर्णन कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विनयाधिकारिक नामक प्रसंग में मिलता है-
कौटिल्य कहते हैं कि जिस प्रकार एक पहिये की गाड़ी नहीं चल सकती उसी प्रकार मंत्रिपरिषद् के बिना राजकाज नहीं चल सकता। अतः राजा को सुयोग्य अमात्यों के परामर्श से राजकाज को चलाना चाहिए।

''सहायसाध्य राजत्वं चक्रमेकं न वर्तते।
कुर्वीत सचिवांस्तस्मात्तेषां च शृणुयामतम्।।''

कौटिल्य ने मंत्रियों की इस सभा को 'मंत्रिपरिषद्' ही कहा है। इससे पहले जातक ग्रन्थों में, महावस्तु और अशोक के शिला लेखों में इस मंत्रिपरिषद् को 'परिसा' कहा गया है।
मंत्रियों की योग्यता के विषय में कौटिल्य कहते हैं कि मन्त्री- स्वदेशोत्पन्न, कुलीन, अवगुणशून्य, निपुण सवार एवं ललित कलाओं का ज्ञाता, अर्थशास्त्र का विद्वान्, चतुर, वाक्पटु, धैर्यवान, निरभिमानी, स्थिरप्रकृति, प्रियदर्शी और द्वेषवृत्तिरहित पुरूष प्रधान अमात्य पद के लिए योग्य हो। कौटिल्य ने मंत्रिपरिषद् के प्रमुख चार सदस्य मंत्री, पुरोहित, सेनापति तथा युवराज बताये है।

50. कृतयुगस्य कालावधिः उक्तः

(a) 1000 वर्षात्मकः (b) 2000 वर्षात्मकः
(c) 3000 वर्षात्मकः (d) 4000 वर्षात्मकः

उत्तर-(d)

कृत युग को सत युग के नाम से भी जानते हैं। ऋषियों का कृत युग, देवताओं के चार सहस्र (4000 हजार) वर्षों का होता है। उसकी सन्ध्या जैसा ही सन्ध्यांश चार वर्षों का है।
प्रत्येक युग का पूर्वभाग सन्ध्या तथा उत्तरभाग सन्ध्यांश कहलाता है।

''चत्वार्य्याहुः सहस्राणि वर्षाणान्तु कृत युगम्।
तस्य तावच्छती संध्या सन्ध्यांसश्च तथाविधः।।

51. निष्क्रमणसंस्कारः कर्तव्यः

(a) प्रथमे मासि (b) द्वितीये मासि
(c) तृतीये मासि (d) चतुर्थे मासि

उत्तर-(d)

बालक का निष्क्रमण संस्कार चौथे महीने में करें अर्थात् उसे घर से बाहर ले जाकर पूर्णिमा को चन्द्रदर्शन तथा शुभ दिन देखकर सूर्य दर्शन करायें। छठें महीनें में अन्नप्राशन करें तथा अपने कुल की परम्परा अनुसार शंकर, विष्णु आदि देवताओं की पूजा, अर्चनादि शुभ कर्म करें।

''चतुर्थे मासि कर्त्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्।
षष्ठे अन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मङ्गलं कुले।।''

52. मृगया गण्यते

(a) कामजगणे (b) क्रोधजगणे
(c) लोभजगणे (d) मोहजगणे

उत्तर-(a)

कामोत्पन्न हुए 10 व्यसन तथा क्रोधोत्पन्न हुए आठ व्यसन परिणाम में दुःखदायी हैं, अतएव राजा उन्हें प्रयत्न करके त्याग करें। कामोत्पन्न व्यसनों में आसक्ति से राजा धन तथा धर्म से हीन हो जाता है। शिकार करना, जुआ खेलना, दिन में सोना, दूसरे की निंदा करना, स्त्रीसेवन, नशा करना, नाचना, गाना, बजाना तथा निष्प्रयोजन घूमना फिरना- ये दश कामोत्पन्न व्यसन हैं।

''मृगयांक्षो दिवास्वप्नः परीवादः स्त्रियो दमः।
तौर्यत्रिकं वृथाय्या च कामजो दशको गणः।।''

53. विवादेषूपदर्शितो व्यवहारो वर्तते

(a) एकपात् (b) द्विपाद्
(c) त्रिपात् (d) चतुष्पाद्

उत्तर-(d)

उस प्रमाण के सिद्ध हो जाने पर उसे विजय प्राप्त होता है, अन्यथा वह परास्त हो जाता है। यह व्यवहार चतुष्पाद् हुआ करता है, जो ऋणदानादि विवादों में प्रदर्शित किया गया हो।

''तत्सिद्धौ सिद्धिमाप्नोति विपरीतमतोऽन्यथा।
चतुष्पाद्व्यवहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः।।'

54. स्मृत्योर्विरोधे कः बलवान्?

(a) व्यवहारः (b) न्यायः
(c) राजा (d) न्यायाधीः

उत्तर-(b)

जब दो स्मृति ग्रन्थों में परस्पर विरोध देखे जाने पर व्यवहार से दिया गया न्याय बलवान (अधिक पुष्ट) होता है। धर्मशास्त्र (स्मृति) का प्रमाण अर्थशास्त्र के प्रमाण से अपेक्षाकृत अधिक सबल होता है- इस तरह की व्यवस्था है, ऐसे स्थिति है।

''स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः।
अर्थशास्त्रास्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।।

55. 'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः' - कस्येयमुक्तिः?

(a) कामधेनोः (b) नन्दिन्याः
(c) दिलीपस्य (d) वसिष्ठस्य

उत्तर-(d)

प्रस्तुत सूक्ति रघुवंश महाकाव्यम् के प्रथम सर्ग से ली गयी है। कुलगुरु वसिष्ठ जी राजा दिलीप से कहते हैं- ''चूंकि कामधेनु तुम्हारे द्वारा तिरस्कृत हुई है, अतः उसके शाप से सन्तानोत्पत्ति में बाधा पहुँच रही है। क्योंकि जो व्यक्ति अपने श्रेष्ठजन का आदर नहीं करते, उसे दुःख उठाना ही पड़ता है।''

''ईप्सितं तदवज्ञानाद्विद्धि सार्गलमात्मनः।
प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।।''

56. 'नमुचिद्विषा' - इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

(a) नारदेन (b) इन्द्रेण

(c) रावणेन (d) माघेन

उत्तर-(b)

'नमुचिद्विषा' इस पद का अर्थ- इन्द्र है। 'नमुचि' नामक एक राक्षस था जिसका संहार इन्द्र ने किया था इसी कारण इन्द्र को 'नमुचिद्विषा' कहा जाने लगा।

''पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं
मुषाण रत्नानि हरामराङ्गना।
विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली
य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः।।''

जिस बली रावण ने इन्द्र के साथ वैर ठानकर अमरावती को घेर लिया, नन्दन वन को काट डाला, रत्नों को लूट लिया और देव-स्त्रियों का अपहरण किया, इस प्रकार प्रतिदिन स्वर्ग में उपद्रव मचाया।

57. 'सर्वथा न च कंचन स्पृशन्ति शरीरधर्माणमुपतापाः' - कस्माद् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धृतम्

(a) दशकुमारचरितम् (b) हर्षचरितम्

(c) नैषधीयचरितम् (d) कादम्बरी

उत्तर-(d)

प्रश्नानुसार उपर्युक्त वाक्य कादम्बरी (महाश्वेता वृत्तान्त) से उद्धृत किया गया है-

चन्द्रापीडस्तत्क्षणमचिन्तयत् - 'अहो दुर्निवारता व्यसनोपातानाम्' यदीदृशीमप्याकृतिमन भिभवनीयामात्मीयां कुर्वन्ति। सर्वथा न च कंचन स्पृशन्ति शरीर धर्माणमुपतापाः, बलवती हि द्वंद्वानां प्रवृत्ति।

चन्द्रपीड ने (मन) में इस प्रकार सोचा- ''अहो! दुःखों का आ पड़ना कितना अपरिहार्य है। (दुःखों के आने को रोकना कितना कठिन है) क्योंकि वे (दुःख) ऐसी अनाक्रम्य (कठिनता से आक्रम्य) आकृति को भी अपना कर लेते हैं। निश्चय ही यह बात नहीं है कि दुःख किसी शरीरधारी को न छूते हों (दुःख तो सभी शरीरधारियों को अवश्य सताते हैं) इस संसार में सुख दुःखादि द्वन्द्वों का प्रवर्तन, निश्चय ही शक्तिशाली है।

58. श्रीकृष्णस्य संमुखम् गौरवर्णः नारदः कस्याभिरामताम् अचोरयत्?

(a) सूर्यस्य (b) कृष्णस्य

(c) चन्द्रमसः (d) बलदेवस्य

उत्तर-(c)

विशाल इन्द्रनीलमणि की सी कान्ति वाले श्रीकृष्ण के सामने ऊंचे आसन पर बैठे हुए गौरवर्ण नारदजी ने सायंकाल के सम्मुख उदयाचल पर आरूढ़ चन्द्रमा की शोभा चुरा ली।

''महामहानीलशिलारुचः पुरो, निशेदिवान् कंसकृषः स विष्टरे।
क्षितोदयाद्रेरभिसायमुच्चकैरचूचुरच्चन्द्रमसोऽभिरामताम्।।''

59. इति हेतुस्तदुद्भवे इति कस्य मतम्?

(a) जगन्नाथस्य (b) हेमचन्द्रस्य

(c) वाग्भटस्य (d) मम्मटस्य

उत्तर-(d)

प्रश्नानुसार प्रस्तुत कारिका आचार्य मम्मट द्वारा कही गयी है-

''शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।''

अर्थात् शक्ति, लोकशास्त्र तथा काव्य इत्यादि के निरीक्षण एवं अनुशीलन से होने वाली निपुणता (व्युत्पत्ति) और काव्यज्ञों (कवि एवं समीक्षकों से शिक्षा प्राप्त करके अभ्यास करना यह (तीनों मिलकर) उसके उद्भव के कारण हैं।

60. उपमानोपमेययोः बिम्बप्रतिबिम्बत्वं चेत् कस्तत्रालङ्कारः?

(a) निदर्शनालङ्कारः (b) दीपकालङ्कारः

(c) व्यतिरेकालङ्कारः (d) दृष्टान्तालङ्कारः

उत्तर-(d)

''दृष्टान्तःपुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्।''

दृष्टान्त अलङ्कार वह है जहाँ साधारण धर्म आदि का बिम्बप्रतिबिम्ब भाव होता है।

अर्थात् जहाँ साधारण धर्म (उपमेय का उपमान) आदि का प्रमाण निश्चय गृहीत हो जाता हैं। जैसे-

''त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्।
अलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुत्यां।।''

उस नायिका का कामदेव से संतप्त मन तुम्हारे दर्शन से ही शान्त हो जाता है। कुमुदिनी का कुसुम शीतकर (चन्द्र) के दर्शन से ही विकसित है।

61. ध्वनिप्रभेदेषु उत्कृष्टः कः?

(a) अलङ्कारध्वनिः (b) भावध्वनिः

(c) रसध्वनिः (d) वस्तुध्वनिः

उत्तर-(c)

ध्वनि वादियों ने काव्य के तीन भेद किये हैं- उत्तम, मध्यम और अधम। इस वर्णक्रम का आधार स्पष्टतः ध्वनि अथवा व्यङ्ग्य की सापेक्षित प्रधनता हैं उत्तम काव्य में व्यङ्ग्य की प्रधानता रहती है। अर्थात् उसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ प्रधान रहता है, उसी को ध्वनि कहा गया हैं। ध्वनि के भी अर्थात् उत्तमकाव्य के भी तीन भेदक्रम हैं- रस ध्वनि, अलङ्कार ध्वनि और वस्तु ध्वनि। इसमें रस ध्वनि सर्वश्रेष्ठ ध्वनि है।

इस प्रकार ध्वनि के अनुसार काव्य का उत्तम रूप है ध्वनि और ध्वनि में भी सर्वोत्तम हैं- रस ध्वनि। पण्डितराज जगन्नाथ ने इसे उत्तमोत्तम भेद कहा है, अर्थात् रस या रस ध्वनि में काव्य का सर्वोत्तम रूप है। दूसरे शब्दों में रस ही काव्य का सर्वश्रेष्ठ तत्त्व है। शास्त्रीय दृष्टि से रस और ध्वनि का यही सम्बन्ध एवं तारतम्य है।

62. **''हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः'' इति कुत्र वर्तते?**

(a) उरुभङ्गे (b) दूतकाव्ये
(c) कर्णभारे (d) मध्यमव्यायोगे

उत्तर-(c)

प्रस्तुत सूक्ति भास कृत एकांकी नाटक 'कर्णभारम्' से ली गयी है-

''हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः।
उभे बहुमते लोके नास्ति निष्फलता रणे।।''

भावार्थ यह है कि गुरु परशुराम के द्वारा समयविशेष पर अस्त्र निष्फलता रूप शाप को जानने पर शल्य, जो कर्ण के सारथी हैं, दुःखी हो जाते हैं, परन्तु कर्ण उन्हें युद्ध से होने वाले लाभों को बताते हैं-
युद्ध भूमि में व्यक्ति यदि मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तब भी उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है, फिर यदि वह विजयी हो तब उसकी प्रतिष्ठा होती है, उसका यश बढ़ता है अब चाहे स्वर्ग हो अथवा यश- दोनों ही आदरणीय है। अतएव कहा जायेगा कि युद्ध में निरर्थकता की बात ही नहीं हैं। अभिप्राय यह है कि उक्त दोनों अवस्थाओं में युद्ध सार्थक ही है।

63. **''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया'' कस्य वचनमिदम्?**

(a) दुष्यन्तस्य (b) कण्वस्य
(c) शारद्वतस्य (d) गौतम्याः

उत्तर-(b)

''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्ति कलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः।।

कण्व ऋषि कहते हैं- कि आज शकुन्तला विदा होगी, इसलिए मेरा हृदय दुःख से भर रहा है। आसुओं के बहने को रोकने से (मेरा) गला भर आया है। मेरी दृष्टि चिन्ता के कारण निश्चेष्ट हो गयी है। जंगल में रहने वाले मुझको (शकुन्तला के प्रति) प्रेम के कारण इस प्रकार का दुःख हो रहा है तो गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितने अधिक दुःखित होते होंगे?

64. **''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जड़े'' इत्युक्तिः कस्मिन् नाटके आयाति?**

(a) महावीरचरिते (b) मालतीमाधवे
(c) मालविकाग्निमित्रे (d) उत्तररामचरिते

उत्तर-(d)

''वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे नरे,
न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।
भवति हि पुनर्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा,
प्रभवति सुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः।।

आत्रेयी- गुरु जिस प्रकार व्युत्पन्न शिष्य को उसी प्रकार मन्द-बुद्धि शिष्य को भी विद्या देता है। वह उन दोनों (शिष्यो) के ज्ञान में न तो सामर्थ्य की वृद्धि करता है और न सामर्थ्य को नष्ट ही करता है। परन्तु (विद्या) फल में बहुत अधिक अन्तर होता है, जैसे स्वच्छ मणि प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने में समर्थ होती है, मिट्टी आदि पदार्थ नहीं।

65. **मुखसन्धेः अङ्गानि कति?**

(a) द्वादश (b) त्रयोदश
(c) चतुर्दश (d) एकादश

उत्तर-(a)

नाट्यशास्त्र में पाँच अर्थ प्रकृतियाँ, पाँच अवस्थाएँ एवं पाँच सन्धियाँ पायी जाती हैं। जब पाँच अर्थ प्रकृतियों का पाँच अवस्थाओं से यथाक्रम समन्वित होने पर ही मुखादि पाँच सन्धियों की उत्पत्ति होती है।

मुख सन्धि- ''मुखंबीज समुत्पत्तिर्नानार्थ रस सम्भवा।
अंगानि द्वादशैस्तस्य बीजारम्भसमन्वयात्।।''

जहां पर अनेकानेक प्रयोजन और रस को उत्पन्न करने वाली बीजोत्पति हुआ करती है, वहाँ ही मुख सन्धि कहलाती है। बीज नामक अर्थ प्रकृति और आरम्भ नामक कार्यावस्था के सामंजस्य से इसके बारह अंग-प्रत्यंग होते हैं, जो इस प्रकार है-

(1) उपक्षेय (2) परिकर
(3) परिन्यास (4) विलोभन
(5) युक्ति (6) प्राप्ति
(7) समाधान (8) विधान
(9) परिभावना (10) उद्भेद्
(11) परियोग (12) करण।

66. **मुद्राराक्षसनाटके मुद्रा केन सम्बद्धा भवति?**

(a) मलयकेतुना (b) चाणक्येन
(c) चन्द्रगुप्तेन (d) राक्षसेन

उत्तर-(d)

विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस सात अंकों का राजनीतिक नाटक है। मुद्रा (राक्षस की अंगूठी) के द्वारा राक्षस को वश में करने का मुख्य कथानक होने से इसे 'मुद्राराक्षस' (मुद्रया गृहीतो राक्षसो मुद्राराक्षसः, तमधिकृत्य कृतं नाटकं मुद्राराक्षसम्) कहते हैं। कूटनीति- विशारद् चाणक्य (कौटिल्य) नन्दवंश का नाश, अपनी प्रतिज्ञा का अनुकरण,

करके मौर्यवंश के तरुण चन्द्रगुप्त को राजा बना चुका है। अपनी कूटनीति के बल पर नन्दवंश के स्वामिभक्त अमात्य राक्षस को वश में करके वह चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनने के लिए विवश कर देता है। इस कार्य में चाणक्य की गुप्तचर व्यवस्था तथा राक्षस की मुद्रा से अंकित एक कूटलेख की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राक्षस की ऋजुनीति एवं कौटिल्य की शाठ्यनीति के परस्पर संघर्षों से यह नाटक भरा पड़ा है जिसमें शाठ्यनीति की विजय होती है।

67. नाट्यशास्त्रस्य अभिनवभारती इति व्याख्याताः कर्त्ता कः?

(a) आनन्दवर्धनः (b) भरतः
(c) अभिनवगुप्तः (d) धनञ्जयः

उत्तर-(c)

काव्य के मूल तत्त्वों का शास्त्रीय निरूपण सर्वप्रथम हमें भरतमुनि (200 ई.पू.) के 'नाट्शास्त्र' में उपलब्ध होता है, यद्यपि इससे पूर्व वेद-वेदांगों और व्याकरण ग्रन्थों में भी इन तत्त्वों के पर्याप्त किन्तु अस्पष्ट उल्लेख मिलते रहे हैं। यद्यपि भरत का यह ग्रन्थ मूलतः नाट्य से सम्बन्धित है, किन्तु नाट्य भी दृश्य के रूप में काव्य का ही एक भेद होने से 'नाट्शास्त्र' काव्यतत्त्वों का भी अवानतर रूप से निरूपण करता पाया जाता है। भरतमुनि ने प्रथम बार इस निष्पत्ति की प्रक्रिया को सूचित करने वाला सूत्र लिखा-
''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पतिः'' जो कि आगे चलकर काव्यशास्त्र में रससिद्धान्त की आधार पीठिका बना। उन्होंने अपने नाट्यशास्त्र में कुल 4 अलंकारों उपमा, रूपक, दीपक और यमक तथा 10 गुणों और 10 दोषों का वर्णन किया, उनके इस ग्रन्थ पर कश्मीर के प्रसिद्ध विद्वान् श्री अभिनवगुप्त ने 10-11 वीं शताब्दी में 'अभिनवभारती' नाम की टीका लिखी। इसके अतिरिक्त भट्टोद्भव, भट्टलोल्लट, भट्टशङ्कुक और भट्टनायक ये चार और 'नाट्शास्त्र' के प्रसिद्ध टीकाकार हुए। जिनके चार विभिन्न मतों का उल्लेख भरतमुनि के रससूत्र के सन्दर्भ में अभिनवभारतीकार तथा काव्यप्रकाशकार ने किया है।

68. सात्त्विकभावानां संख्या भवति

(a) त्रयस्त्रिंशत् (b) नव
(c) अष्टौ (d) अष्टादश

उत्तर-(c)

भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में सात्त्विक भावों की संख्या आठ मानी है जो इस प्रकार है- स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु तथा प्रलय।

''स्तम्भः स्वेदोऽथः रोमाञ्चः स्वरङ्गमोयोथ वेपथुः।
वैवर्ण्यमश्रु प्रलयः इत्यष्टौ सात्त्विका स्मृता।।''

69. पण्डितराजजगन्नाथानुसारं सामान्यवस्तुध्वनिः गुणीभूत-व्यंग्यप्रकाराश्च कस्मिन् काव्य प्रभेदेऽन्तर्भवन्ति?

(a) उत्तमोत्तमकाव्ये (b) उत्तमकाव्ये
(c) मध्यमकाव्ये (d) अधमकाव्ये

उत्तर-(b)

पण्डितराजजगन्नाथ काव्य के चार भेद मानते हैं।

(1) उत्तमोत्तम (2) उत्तम
(3) मध्यम (4) अधम।

उत्तम काव्य का लक्षण- जहाँ व्यङ्ग्य की अप्रधनता ही रहे, परन्तु वह चमत्कार का कारण हो। अर्थात् जिस काव्य में व्यङ्ग्य वाच्य की अपेक्षा तथा अन्य व्यङ्ग्यार्थ की अपेक्षा भी गौण हो- किसी भी दृष्टि से प्रधान नहीं हो, परन्तु फिर भी चमत्कार उत्पन्न करता हो, तो उसे उत्तम काव्य से संज्ञापित किया जाता है-

''यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद् द्वितीयम्''
वाच्यापेक्षा प्रधानीभूतं व्यङ्ग्यानतरमादाय गुणीभूतं व्यङ्गमादायति-व्याप्तिवारणायाव धारणम्। तेन तस्य ध्वनित्वमेव।

उदा- राघवविरह ज्वाला- सन्तापित सह्यशैल शिखरेषु।
शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुव्यन्ति पवन तनयाय।।
अर्थात- ''श्रीरामचन्द्र के विरह की ज्वालाओं से तप्त बनाये गये सह्य नामक पर्वत के शिखरों पर, शीतकाल में, सुखपूर्वक सोने वाले बन्दर पवन तनय हनुमान पर कुछ होते हैं।

70. तर्कसंग्रहे कति द्रव्याणि?

(a) चत्वारि (b) सप्त
(c) नव (d) षट्

उत्तर-(c)

अन्नम्भट्ट कृत तर्कसंग्रह के अनुसार द्रव्यों की संख्या नव है-
''तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्म मनांसि नवैव।''
अर्थात् सात पदार्थों में द्रव्य नामक पदार्थ नौ प्रकार का होता है- पृथ्वी, जल, तेजस, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा तथा मन- ये नौ ही द्रव्य हैं।
द्रव्य का लक्षण- 'समवायेन गुणवत्त्वं क्रियावत्त्वं वा द्रव्यत्त्वम्' अर्थात् जो समवाय सम्बन्ध से गुण अथवा कर्म का आश्रय हो, वह द्रव्य कहा जाता है।

71. तर्कसंग्रहे अभावस्य कति भेदाः?

(a) द्वौ (b) चत्वारः
(c) षट् (d) अष्टौ

उत्तर-(d)

अभाव नामक अन्तिम पदार्थ चार प्रकार का होता है-

प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव एवं अन्योन्याभाव।

(i) प्रागभाव- अनादिः सान्तः प्रागभावः।
जिसका आदि नहीं है किन्तु अन्त है। उसे प्रागभाव कहते हैं। यह कार्य की उत्पत्ति के पहले रहता है।

(ii) प्रध्वंसाभाव- 'सादिरन्तः प्रध्वंसः'- जिसका आदि है और अन्त नहीं है वह प्रध्वंसाभाव कहलाता है। यह कार्य की उत्पत्ति के बाद होता है।

(iii) अत्यन्ताभाव- त्रैकालिकसंसर्गासवच्छिन्न प्रतियोगिता को अत्यन्ताभावः- जिसका तीनों कालों में अभाव होता है उसे अत्यन्ताभाव कहते हैं।
यथा- भूतलेः घटः नास्ति।

(iv) अन्योन्यामावः तादात्म्सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिता को-
अन्योन्याभावः। यथा-घटः पटो नेति।
तादात्म्य सम्बन्ध से अवच्छिन्न या युक्त
प्रतियोगिता वाले अभाव का 'अन्योन्याभाव'

72. न्यायस्य अवयवाः कति सन्ति?

(a) त्रयः (b) पञ्च
(c) सप्त (d) नव

उत्तर-(b)

जब कोई स्वयं धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे को उसका बोध कराने के लिए पाँच अवयव वाले अनुमान वाक्य का प्रयोग करता है, वह परार्थानुमान है। जैसे- यह पर्वत अग्निमान् है (प्रतिज्ञा), धूमवान् होने से (हेतु), जो जो धूमवान् होता है, वह वह अग्निमान् होता है, जैसे 'पाकशाला' (उदाहरण), उसी प्रकार (अर्थात् वह्नि व्याप्य- धूमवान्) यह (पर्वत) भी है (उपनय), इसीलिए यह (पर्वत) भी वैसा अर्थात् अग्निमान् है (निगमन)। इस प्रकार प्रतिज्ञा आदि से युक्त वाक्य के द्वारा प्रतिपादित (पक्षधर्मत्व) पांच रूपों से युक्त लिङ्ग (हेतु) से दूसरा (व्यक्ति) भी अग्नि को जान लेता है। अतः यह परार्थानुमान है। अर्थात् प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन पाँच प्रकार का अवयव परार्थानुमान होता है।

''यत्तु कश्चित् स्वयं धूमादाग्निमनुमाय परं बोधयितुं
पञ्चावयवमनुमान वाक्यं प्रयुङ्क्ते तत् परार्थानुमानम्।''

73. तर्कसंग्रहे गुणाः सन्ति

(a) द्वादश (b) पञ्चदश
(c) अष्टादश (d) चतुर्विंशतिः

उत्तर-(d)

तर्कसंग्रह के अनुसार गुणों की संख्या 24 है- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, सङ्ख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म तथा संस्कार। वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थो में 'गुण' नामक दूसरा पदार्थ है। सात पदार्थ इस प्रकार- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव।

74. कतिविधः रसः तर्कसंग्रहानुसारम्?

(a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षट्विधः (d) अष्टविधः

Ans-(c)

तर्कसंग्रह के अनुसार रस 6 प्रकार का होता है।

रसनाग्राह्यो गुणो रसः। स च मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्त भेदात् षड्विधः। पृथिवीजलमात्रवृत्तिः। तत्र पृथिव्यां षड्विधः।
जले मधुर एव।
अर्थात् रसना इन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण 'रस' है। मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, कसैला तथा तिक्त (तीखा) के भेद से यह 6 प्रकार का होता है। यह इस केवल पृथिवी एवं जल द्रव्यों में रहता है। इसमें पृथिवी में छहों रस पाये जाते हैं, किन्तु जल में केवल मधुर अर्थात् मीठा ही पाया जाता है।

75. कति सन्ति हेत्वाभासाः?

(a) त्रयः (b) पञ्च
(c) नव (d) द्वादश

उत्तर-(b)

हेत्वाभास पाँच प्रकार का होता है- सव्यभिचार, विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध और बाधित।

(1) सव्यभिचार- जो हेतु अनैकान्तिक होता है, वह सत्यभिचार है। वह तीन प्रकार का होता है-
(i) साधारण (ii) असाधरण (iii) अनुपसंहारी।

(2) विरुद्ध- साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरूद्धः। यथा- शब्दो नित्यः कृतकत्वात्।

(3) सत्प्रतिपक्ष- साध्याभावसाधकं हेत्वनतरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः। **यथा-** शब्दो नित्यो श्रावणत्वाच्छब्दः त्ववत्। शब्दोऽनित्यः कार्यत्वाद् घटवत् इति।

(4) असिद्ध- तीन प्रकार का होता है-
(i) आश्रयसिद्ध- यथा- गगनारविन्दं सुरभि।
(ii) स्वरूपासिद्ध- यथा- अनित्यः शब्दः चाक्षुषत्वात् घटवत्।
(iii) व्याव्यत्वासिद्ध- यथा- शब्दः क्षणिकः सत्त्वात्।

(5) बाधित- यस्य साध्यभावः प्रमाणोनतरेण निश्चितः स बाधितः। यथा- वह्निर द्रव्यत्वात्।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2012
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. नासत्यौ इति कस्य नाम?

(a) द्यावापृथिव्योः (b) इन्द्रावरुणयोः
(c) अश्विनोः (d) इन्द्राग्न्योः

उत्तर-(c)

चारों वेदों के अनेक मंत्रों में अश्विनी कुमारों का वर्णन है। ऋग्वेद के 50 से अधिक सूक्तों में अश्विनों की स्तुति की गई हैं इन्हें युगल देवता कहा गया है।
यजुर्वेदानुसार- रात्रि और उषा के समन्वित रूप को अश्विनौ कहते हैं। अश्विनौ दो भिन्न गुण कार्यों वाले तत्त्वों का समन्वित रूप हैं इनमें एक प्रकाश रूप है, दूसरा अंधकार रूप, एक धनात्मक है, दूसरा ऋणात्मक, एक शुक्ल है, दूसरा कृष्ण, एक में अग्नि की प्रधानता है, दूसरे में सोम की। ये दोनों तत्त्व संसार के प्रत्येक पदार्थ में व्याप्त हैं, अतः इन्हें ''नासत्यौ'' अर्थात् 'शाश्वत-सत्य, कहा गया है।

2. चन्द्ररथा का वर्तते?

(a) नदी (b) उर्वशी
(c) उषाः (d) यमी

उत्तर-(c)

चन्द्ररथा 'उषाः' वर्तते।
उषो देव्यमर्त्या वि-भाहि-चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।
आ-त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये।।
अर्थात् हे उषा देवी! दिव्य गुणयुवक्त, सुवर्णयम रथ पर आरूढ़ प्रिय और सत्य वाणी से युक्त, अत्यधिक बलशाली अच्छी प्रकार से नियन्त्रित जो तुम्हारे अरूण वर्ण घोड़े हैं, वे स्वर्ण के समान दीप्तिमान् तुमको हमारे सम्मुख लायें।
यह सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 61वां सूक्त 'उषस्' सूक्त है। इसके ऋषि-विश्वामित्र, देवता-उषस् एवं छन्द-त्रिष्टुप् है।

3. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति?

(a) नव (b) विंशतिः
(c) दश (d) द्वादश

उत्तर-(c)

सम्पूर्ण ऋग्वेद को ऋषि और देवता के अनुसार 10 मण्डलों में विभक्त किया गया है। इसमें बालखिल्य के 11 सूक्तों के 80 मंत्रों को सम्मिलित करते हुए 85 अनुवाक, 1028 सूक्त और 10552 मंत्र हैं। इस विभाजन में संदर्भ निर्देश में अनुवाकों की संख्या छोड़ दी जाती है।
ऋग्वेद-संहिता का विभाजन दो प्रकार से किया गया है-
1. अष्टक, अध्याय, वर्ग और मंत्र
2. मण्डल, अनुवाक, सूक्त और मंत्र

4. कपर्दी देवः कः?

(a) अग्निः (b) वरुणः
(c) रुद्रः (d) बृहस्पतिः

उत्तर-(c)

रुद्र को कपर्दी (जटाजूट वाले) देव कहा गया है।
ऋग्वेद, अथर्ववेद तथा यजुर्वेद के अनेक सूक्तों में रूद्र का वर्णन है। रुद्र का सबसे अधिक वर्णन यजुर्वेद के 16वें अध्याय (रूद्राध्याय) में हुआ है। रुद्र को रूद्र कहने का अभिप्राय यह है कि रूद्र 11 हैं, 10 इन्द्रियां और एक मन। ये जब शरीर छोड़कर बाहर निकलते हैं तो ये मृतक के परिजनों को रुलाते हैं, अतः इन्हें रुद्र कहा जाता है।
अथर्ववेद में रुद्र को- भव, शर्व, यम, मृत्यु, वभ्रु, नीलकण्ठ एवं पशुपति आदि नामों से अभिहित किया गया है।
यजुर्वेद में रूद्र को गिरीश, नीलग्रीव, सहस्रा, पशुपति, जगत्पति, क्षेमपति, वनस्पति, वृक्षपति, सेनानी, शितिकण्ठ आदि कहा गया है।

5. जैमिनीयशाखा कस्य वेदस्य?

(a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर-(c)

सामवेद की जैमिनीय शाखा भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी संहिता डा. रघुवीर ने लाहौर से प्रकाशित की थी। श्री सातवलेकर ने सामवेद संहिता के परिशिष्ट में जैमिनीय शाखा के पाठ-भेदों का पूरा विवरण दिया है। कौथुम शाखा में 1875 मंत्र और जैमिनीय में 1687 मंत्र हैं।

जैमिनीय शाखा के उत्तरार्चिक में अनेक मंत्र ऐसे हैं, जो कौथुमीय शाखा में उपलब्ध नहीं हैं। जैमिनीय शाखा की संहिता, ब्राह्मण, श्रौत सूत्र और गृह्य सूत्र सभी उपलब्ध हैं इसकी एक अवांतर शाखा तलवकार है, जिससे सम्बद्ध प्रसिद्ध केन उपनिषद् है तलवकार श्री जैमिनि के शिष्य माने जाते हैं।

6. नक्षत्रसम्पातगणनया केन वेदकालो निर्धार्यते?

(a) मैक्समूलरः (b) वेबरः

(c) बालगंगाधरतिलकः (d) जैकोबी

उत्तर-(c)

नक्षत्रों वसन्त में सम्पात गणना के आधार पर 'श्रीबालगंगाधरतिलक' ने वेदों का समय निर्धारित किया है।

श्रीतिलक ने ज्योतिष-गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6 हजार ई.पू. से 4 हजार ई.पू. माना है। उन्होंने वैदिक काल को 4 भागों में विभक्त किया है।

	काल	ई.पू. समय	दृष्ट या प्रणीत ग्रन्थ
1.	अदिति काल	6000-4000	निविद् मंत्र (गद्य-पद्यात्मक, यज्ञिय विधिवाक्ययुक्त)
2.	मृगशिरा काल	4000-2500	ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त
3.	कृत्तिका काल	2500-1400	चारों वेदों का संकलन, तैत्तिरीय संहिता और कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ।
4.	सूत्रकाल (अन्तिम काल)	1400-500	सूत्र ग्रन्थ और दर्शन-ग्रन्थ

7. निरुक्तग्रन्थे काण्डसंख्या वर्तते-

(a) चतुर्दश (b) द्वादश

(c) पंच (d) त्रीणि

उत्तर-(d)

निरुक्त ग्रन्थ में काण्डों की संख्या तीन है।

निरुक्त 'निघण्टु' का व्याख्या ग्रन्थ है। मूल ग्रन्थ 'निघण्टु' कहलाता है। यह मुख्यतः ऋग्वेद के शब्दों का संग्रह रूप वैदिक-शब्दकोश है उपलब्ध निरुक्त में 14 अध्याय हैं। इनमें से बाद के दो अध्यायों को परिशिष्ट माना जाता है।

1. निरुक्त के अध्याय 2 और 3 को 'नैघण्टुक-काण्ड' कहा जाता है।
2. अध्याय 4 से 6 को 'नैगम-काण्ड' कहते हैं।
3. निरुक्त के 7 से 12 अध्याय को 'दैवत-काण्ड' कहते हैं। अध्याय 13 एवं 14 में अग्नि स्तुति और ब्रह्मस्तुति हैं, जो कि परिशिष्ट भाग हैं।

8. ''आ घा ता गच्छा'' इति पठ्यते-

(a) इन्द्रसूक्ते (b) वरुणसूक्ते

(c) विश्वमित्रनदी सम्वादे (d) यमयमीसम्वादे

उत्तर-(d)

''आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि,
यम जामयः कृणवन्नजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय,
बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्।।

अर्थात् यम ने यमी से कहा कि- ''भविष्य में ऐसा युग आयेगा, जिसमें भगिनियां अपने बन्धुत्वविहीन भ्राता को पति वनावेंगी। अतः हे यमी मेरे अतिरिक्त किसी दूसरे को पति बनाओ।

9. ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' इति कुत्र विद्यते?

(a) ऋग्वेदे (b) बृहदारण्यके

(c) अथर्ववेदे (d) सामविधाने

उत्तर-(b)

'तमसो या ज्योतिर्गमय' यह वैदिक सूक्तिपरक वाक्य 'वृहदारण्यक' उपनिषद् का है।

बृहदारण्यक उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है। यह शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अंतिम भाग है, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् तीनों में इसकी चर्चा होती है। यह आकार में ही विशालकाय नहीं है अपितु तत्त्वज्ञान में भी अग्रगण्य हैं, इसके विवेचन गंभीर, उदात्त और प्रामाणिक हैं। यह अध्यात्म शिक्षा से ओत-प्रोत है इसमें छः अध्याय हैं और यह उपखण्डों में विभक्त है।

गार्ग्य और काशिराज अजातशत्रु का सम्वाद, गार्गी और याज्ञवल्क्य के प्रश्नोत्तर, याज्ञवल्क्य का जनक को ब्रह्मविद्या का उपदेश, मैत्रेयी को ब्रह्मविद्या का उपदेश, ऋषि प्रवाहण जैबलि और श्वेतकेतु का दार्शनिक सम्वाद, पञ्चाग्नि-मीमांसा ये सभी प्रसंग इसी में वर्णित हैं।

10. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत-

A.	सरमा-पणि	1.	बृहदारण्यकोपनिषद्
B.	स्वाध्यायान्मा प्रमदः	2.	ऋग्वेदस्य दशममण्डले
C.	कल्पः	3.	तैत्तिरीयोपनिषत्
D.	आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति	4.	हस्तः

	A	B	C	D
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	3	1
(c)	2	3	4	1
(d)	3	2	1	4

उत्तर-(c)

1.	सरमा-पणि संवाद	(i) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
2.	स्वाध्यायान्मा प्रमदः	(ii) तैत्तिरीयोपनिषद्
3.	कल्पः	(iii) हस्त
4.	आत्मनस्त कामाय सर्वं प्रियं भवति	(iv) वृहदारण्यकोपनिषद्

- सरमा-पणि सम्वाद ऋग्वेद के दशम मण्डल का 108वां सूक्त है इसमें पणि नामक व्यापारी इन्द्र की गायों की चोरी करता है। इन्द्र दूत के रूप में सरमा को भेजते हैं। सरमा गायों की पता लगा लेती है। सरमा (कुतिया) और पणि का सम्वाद जो कि गायों को छुड़ाने से सम्बन्धित है ऋग्वेद में वर्णित है।

11. श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते-

(a) गंगा (b) गोदावरी
(c) विष्णुः (d) वरुणः

उत्तर-(c)

श्रुतियों में 'विष्णु' की स्तुति यज्ञ के रूप में की गई है।
ब्राह्मण ग्रन्थों में 'यज्ञो वै विष्णुः' कहा गया है। यज्ञ विष्णु (परमात्मा) का रूप है। मानव के हृदय में एक आत्म-ज्योति प्रसुप्त रूप में विद्यमान है, उस यज्ञाग्नि को उद्बुद्ध करना यज्ञ का उद्देश्य है उससे देह शुद्धि, इन्द्रिय-शुद्धि, चित्त-शुद्धि और आत्मा की शुद्धि होती है। यज्ञ के दो मुख्य कार्य हैं-
(1) स्वाहा और 'इंद न मम' की भावना जागृत करना। स्वाहा का अर्थ है- स्व अर्थात् स्वार्थ बुद्धि को, आ- पूर्णतया, हा- छोड़ना अर्थात् स्वार्थ-भावना का पूर्णतया परित्याग। 'इदं न मम' अर्थात् इसमें मेरा कुछ नहीं है।
(2) आत्मसमर्पण- परमात्मा के चरणों में स्वयं का समर्पण

12. अथर्ववेदस्य ब्राह्मणम् विद्यते-

(a) शतपथब्राह्मणम् (b) गोपथब्राह्मणम्
(c) ताड्यब्राह्मणम् (d) ऐतरेयब्राह्मणम्

उत्तर-(b)

अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रन्थ 'गोपथ' ब्राह्मण है।
गोपथ ब्राह्मण-ग्रन्थ अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से सम्बन्धित है। गोपथ ब्राह्मण में उल्लिखित है कि अथर्ववेद का पाठ 'शं नो देवीरभिष्टय०....' इस मंत्र से प्रारम्भ होता है। गोपथ 'गुप्' धातु से बना है जिसका अर्थ 'रक्षक' है।
गोपथ ब्राह्मण दो भागों में विभक्त है- पूर्वभाग और उत्तर भाग। पूर्वभाग में पांच प्रपाठक और उत्तर भाग में छः प्रपाठक, इस प्रकार कुल 11 प्रपाठक हैं। इनका विभाजन कंडिकाओं में हुआ है। पर्वभाग में 135 कंडिकाएं हैं और उत्तर भाग में 123 कंडिकाएं, इस प्रकार से कुल 258 कंडिकाएं हैं।

13. कृष्णयजुर्वेदेन सम्बद्धास्ति-

(a) छान्दोग्योपनिषद् (b) कठोपनिषद्
(c) ऐतरेयोपनिषद् (d) ईशावास्योपनिषद्

उत्तर-(b)

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है।
कठोपनिषद् दो अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में तीन वल्ली हैं। इसमें काव्यात्मक मनोरम शैली में गूढ दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन है। इसमें सुप्रसिद्ध यम- नचिकेता की कथा वर्णित है।
कृष्ण यजुर्वेद का सम्बन्ध ब्रह्म सम्प्रदाय से है। इसमें मंत्रो के साथ ही व्याख्या और विनियोग वाला अंश भी मिश्रित है। अतः इसे कृष्ण यजुर्वेद कहते हैं।
बिन्दु-
(i) छान्दोग्योपनिषद् सामवेदीय उपनिषद् हैं इसमें 8 अध्याय या प्रपाठक है।
(ii) एतरेयोपनिषद्, ऐतरेय आरण्यक का ही अंश हैं उसके द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है। इसमें तीन अध्याय हैं।
(iii) ईशावास्योपनिषद् मुख्यतः सम्पूर्ण उपनिषदों का सार भाग है। यह मूल रूप से यजुर्वेद का 40वां अध्याय हैं इसमें 18 मंत्र हैं।

14. तर्कभाषानुसारं कारणं त्रिविधम्-

(a) समवायि - असमवायि - निमित्तभेदात्
(b) समवायि - संयुक्तसमवायि - निमित्तभेदात्
(c) संयोग - संयुक्ततादात्म्य - निमित्तभेदात्
(d) सहकारि - तादात्म्य - समवायिभेदात्

उत्तर-(a)

तर्कभाषानुसार कारण तीन प्रकार के होते हैं-
समवायि, असमवायि और निमित्तकारण
जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, वह समवायि कारण होता है।
जैसे- तन्तु पट का और कपालद्वय घट का समवायिकारण है।
जो समवायिकारण में प्रत्यासन्न हो तथा जिसकी कारणता निश्चित हो उसे असमवायिकारण कहते हैं।
जैसे- तन्तु संयोग पट का असमवायिकारण है।
कारण रहने पर भी जिसमें उस कार्य की समवायिकारणता या असमवायिकारणता नहीं रहती है वह निमित्तकारण है।
जैसे- पट का निमित्तकारण तुरी वेमादि और घटादि के दण्डादि निमित्त कारण हैं।

15. ....वाक्यम् भवति-

(a) ध्वनिसमूहः (b) साकांक्षपद समूहः

(c) शब्दसमूहः (d) वर्णसमूहः

उत्तर-(b)

साकांक्षपदसमूहःवाक्यं भवित।

अर्थात् जो साकांक्ष योग्यता युक्त सन्निहित पद हैं वे ही वाक्य हैं।

जैसे-

(i) 'ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत्' अर्थात् स्वर्ग कामना वाला ज्योतिष्टोम नामक यज्ञ को करें।

(ii) नदी तीरे पञ्च फलानि सन्ति।

आकांक्षा पदों में नहीं होती परन्तु फलादिक का तीर अधिकरण होने से अर्थों की परस्पर आकांक्षा है। अधिक सोचने से यह स्पष्ट होगा कि अर्थ जड़ होने से चेतन का धर्म आकांक्षा अर्थ में भी कैसे होगा, समाधान यह है कि ''अर्थ स्ववाचक पदों को श्रवण करने वाले व्यक्ति में अन्योन्य विषयक आकांक्षाजनक होने से आकांक्षारहित भी अर्थ साकांक्ष कहे जाते हैं। अर्थ के द्वारा उसके प्रतिपादक पद भी साकांक्ष है, इसलिए उसमें गौड़ प्रयोग होता है।

16. कीदृशः तर्कभाषासम्मतः अपवर्गः?

(a) दुःखस्यात्यन्तिकी निवृत्तिः

(b) दुःखस्यैकान्तिकी निवृत्तिः

(c) ब्राह्मसायुज्यम्

(d) स्वर्गात्मकः।

उत्तर-(a)

अर्थात् अपवर्ग यानि मोक्ष इक्कीस प्रकार के दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति है। दुःखजनक होने से दुःख के साधन में दुःख शब्द का गौड़ प्रयोग होता है। इक्कीस प्रकार के वे दुःख- शरीर, छः चक्षुरादि ज्ञानेन्द्रियां, छः उनके रूपादि विषय, छः चाक्षुषादि ज्ञान, सुख तथा दुःखरूप है।

विषसम्मिलित मिष्ट पदार्थ जैसे- परिणाम में विनाशकारक विष है, वैसे ही दुःख के साथ जिसका अविनाभाव है अर्थात् दुःख से सदा सम्बद्ध, दुःख संमिश्रित सुख भी दुःख स्वरूप ही है। इसलिए सुख का भी दुःख में अंतर्भाव किया गया है।

17. उपमितिज्ञानं कथं जायते?

(a) व्याप्तिज्ञानात् (b) इंद्रियसन्निकर्षात्

(c) सादृश्यात् (d) पदज्ञानात्

उत्तर-(c)

उपमितिज्ञानं सादृश्यात् जायते अर्थात्

''उपमिति का कारण सादृश्य ज्ञान है।

जैसे- 'गवय' पद के अर्थ को न जानने वाला कोई पुरुष, किसी वनवासी पुरुष से 'गवय' गाय के सदृश होता है- ऐसा सुनकर वन में गया और गाय के सदृश पिण्ड को देखता है। उसके बाद उसे यह (पशु) गाय शब्द का वाच्य है- ऐसी उपमिति उत्पन्न होती है। उपमिति का स्वरूप है- ''संज्ञासंज्ञि सम्बन्ध प्रतीतिः''। अर्थात् किसी वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं, यहां 'गवय' शब्द संज्ञा है, जिस वस्तु का नाम होता है, वह संज्ञी कहलाती है।

18. तर्कभाषानुसारं किमस्ति नवं द्रव्यम्?

(a) जीवः (b) जगत्

(c) दिक् (d) मन

उत्तर-(d)

तर्कभाषानुसार मनः अस्ति नवं द्रव्यम्।

''तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाश काल दिगात्मा मनांसि नवैव।''

अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और 'मन' नामक नौवां द्रव्य है। ग्रन्थकार ने द्रव्यादि नवैव इसलिए कहा है क्योंकि मीमांसक तथा कुछ वैशेषिक भी 'तमस' को दशम् द्रव्य मानते हैं।

इसलिए किसी भी प्रकार का मतभेद एवं सन्देह न उत्पन्न हो इसी कारण से ग्रन्थकार 'द्रष्याणि नवैव' कहकर यह स्पष्ट किया है कि द्रव्य नौ ही हैं।

19. तर्कभाषायां कति प्रमाणानि?

(a) द्वौ (b) त्रीणि

(c) चत्वारि (d) सप्त

उत्तर-(c)

तर्कभाषायां चत्वारि प्रमाणानि।

तर्कभाषानुसार प्रमाणों की संख्या चार हैं-

1. **प्रत्यक्ष प्रमाण-** ''साक्षात्कारि प्रमाकरणं प्रत्यक्षम्'' अर्थात् साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाता है।
2. **अनुमान प्रमाण-** ''लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्'' अर्थात् लिङ्गपरामर्श ही अनुमान है।
3. **उपमान प्रमाण-** ''अतिदेश वाक्यार्थस्मरण सहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्ड ज्ञानमुपमानम्''। अर्थात् अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ, गौ की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान ही उपमान प्रमाण है।
4. **शब्द प्रमाण-** ''आप्तवाक्यं शब्दः'' अर्थात् आप्त का वाक्य शब्द-प्रमाण कहलाता है।

20. सांख्यकारिकायां कीदृशा गुणाः?

(a) इष्टानिष्टोभयात्मकाः (b) प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः

(c) सुख-दुःख- रागात्मकाः (d) विषादात्मकाः

उत्तर-(b)

सांख्यकारिकायां गुणाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।

प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।

अन्योन्याभिभवाश्रय जनन मिथुनवृत्तयश्च च गुणाः।।

प्रकाश प्रवृत्तिनियमार्थाः- इसके द्वारा तीनों गुणों के प्रयोजन पर प्रकाश डाला गया है। इस समस्त पद के अंत में आया हुआ 'अर्थ' पद प्रयोजन का वाचक है और इसका सम्बन्ध प्रकाश, प्रवृत्ति तथा नियम प्रत्येक के साथ है-

– प्रकाशः अर्थः प्रयोजनं यस्य सः प्रकाशार्थः सत्त्वगुणः अर्थात् सत्त्वगुण का प्रयोजन है अर्थ को प्रकाशित करना-
– प्रवृत्तिः, अर्थः प्रयोजनं यस्य सः प्रवृत्यर्थः रजोगुणः अर्थात् रजोगुण का प्रयोजन प्रवर्तन और प्रवर्तकत्व दोनों है।
– नियमः अर्थः प्रयोजनं यस्य-सः नियमार्थः तमोगुणः अर्थात् तमोगुण का प्रयोजन है नियंत्रित करना।

21. सांख्यकारिकायां कीदृशं कैवल्यम्?

(a) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

(b) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः

(c) सुखाभिव्यक्तिः

(d) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

उत्तर-(d)

सांख्यकारिकायां ऐकान्तिकात्यन्तिक दुःखनिवृत्तिः।

प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ।

ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति।।

अर्थात् प्रारब्ध कर्मों का भोग पूरा हो जाने पर दोनों शरीरों का वियोग अर्थात् मृत्यु प्राप्त होने पर, प्रकृति अपना भोगापवर्ग रूप प्रयोजन पूरा कर लेने, कृतकृत्य होकर जब निवृत्त हो जाती है, तो उसके निवृत्त होते ही यह तत्त्वज्ञ पुरुष ऐकान्तिक और आत्यन्तिक दोनों प्रकार के कैवल्य स्वरूपावस्थान को प्राप्त कर लेता है। ऐकान्तिक अर्थात् अवश्यम्भावी तथा आत्यन्तिक अर्थात् अविनाशी दोनों विशेषताओं वाले कैवल्य को अर्थात् दुःखमय के विनाश को प्राप्त करता है।

22. सांख्यकारिकायां ज्ञानं कस्य धर्मः?

(a) अहङ्कारस्य (b) प्रकृतेः

(c) पुरुषस्य (d) बुद्धेः

उत्तर-(d)

सांख्यकारिकायां ज्ञानं बुद्धेः धर्मः।

सांख्यकारिकानुसार ज्ञान बुद्धि का सात्विक धर्म है।

अध्यवसायो बुद्धिधर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।

सात्विकमेतद् रूपं तामसमस्माद् विपर्यस्तम्।।

बुद्धि अध्यवसाय निश्चयरूपा है। धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य ये चार इस बुद्धि के सात्विक धर्म है।

इसके विपरीत अधर्म, अज्ञान, राग और अनैश्वर्य बुद्धि के तामस धर्म है।

धर्म अभ्युदय (लौकिक स्मृद्धि) और निःश्रेयस् (कैवल्य) की प्राप्ति का निमित्त कारण है।

23. वेदान्तसारे अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिः?

(a) द्विविधा (b) त्रिविधा

(c) चतुर्धा (d) पचञ्धा

उत्तर-(a)

'वेदान्तसारे' अज्ञानस्य द्विविधा शक्तिः।

अर्थात् वेदान्तसार में अज्ञान की दो प्रकार की शक्तियां बताई गई हैं। अज्ञानस्य आवरण विक्षेप नामकमस्ति शक्तिद्वयम् अर्थात् अज्ञान की आवरण और विक्षेप नामक दो शक्तियां है।

जैसे- अज्ञान के कारण ढकी हुई रस्सी में सर्प की प्रतीति होने की संभावना होती है, वैसे ही अज्ञान की इस आवरण शक्ति से आच्छन्न हुए आत्मा में कर्ता होने, भोक्ता होने और सुख, दुःख, मोह रूप तुच्छ संसार से युक्त होने की भावना भी सम्भव हो जाती है।

विक्षेप शक्ति में रज्जुविषयक अज्ञान अपने द्वारा ढकी हुई रज्जु में अपनी शक्ति से सर्प इत्यादि की उद्‌भावना होना।

विक्षेप शक्ति सूक्ष्म शरीर से प्रारंभ करके स्थूल ब्रह्माण्ड पर्यन्त समस्त जगत् की सृष्टि कर देती है।

24. वेदान्तसारे अनिर्वचनीयं किम्?

(a) ईश्वरः (b) जीवः

(c) जगत् (d) ब्रह्म

उत्तर-(d)

वेदान्तसारे अनिर्वचनीयं ब्रह्म।

वेदान्तसार में ब्रह्म को अनिर्वचनीय माना गया है। अर्थात् ब्रह्म का निर्वचन नहीं किया जा सकता।

ब्रह्म की अनिर्वचनीयता से तात्पर्य है, वह सद् तथा असद् से परे होता है। माया ब्रह्म की एक अति शक्तिशाली, स्वाभाविक एवं अनिर्वचनीय शक्ति है।

ज्ञान बिंदु-

- उपाधियुक्त सगुण सविशेष ब्रह्म 'ईश्वर' संज्ञा द्वारा सम्बोधित किया जाता है।
- जीव वेदान्त की द्वितीय व्यावहारिक सत्ता है। ईश्वर के समान जीव का भी यथार्थ रूप ब्रह्म ही है।
- जगत् के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का विचार है कि ''जगत् हितैषी अथवा द्वेषी का मौजी देवताओं की लीला नहीं है।''

25. वेदान्तसारे लिङ्गशरीरस्य कति अवयवाः?

(a) त्रयोदश (b) पञ्चदश
(c) सप्तदश (d) एकोनविंशतिः

उत्तर-(c)

वेदान्तसारे लिङ्गशरीरस्य सप्तदश अवयवाः।
अर्थात् वेदान्तसार में लिङ्गशरीर के 17 अवयव कहे गए हैं।
सूक्ष्म शरीर सत्रह अवयव वाले लिङ्गशरीर हैं। ये अवयव है-
पञ्च ज्ञानेन्द्रियां श्रोत्र, (कान), त्वक् (त्वचा), चक्षु (आँख), जिह्वा (रसना) और घ्राण (नासिका)
पञ्च कर्मेन्द्रियां- वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा), और उपास्थ (जननेन्द्रिय)
पञ्च वायु- प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान इसके अतिरिक्त मन और बुद्धि अन्तःकरण की निश्चयात्मिका वृत्ति बुद्धि कहलाती है। और अन्तःकरण की सङ्कल्पविकल्पात्मिका वृत्ति को मन कहते है।

26. कर्मणा यमभिप्रैति........इत्यत्र किम् कारकम्?

(a) कर्म (b) करणम्
(c) सम्प्रदानम् (d) अधिकरणम्

उत्तर-(c)

'कर्मणा यमभिप्रैति' .... इत्यत्र सम्प्रदानम् कारकम्।
कर्ता दान क्रिया के कर्म द्वारा जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।
जैसे- ब्राह्मणाय गां ददति।
यहां 'गोदान कर्म द्वारा ब्राह्मण' को सन्तुष्ट करना ही ब्राह्मण को ईष्ट है।

ज्ञान बिंदु-

- **कर्तुरीप्सिततमं कर्म-** अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहे, उसकी कर्म संज्ञा होती है। जैसे- देवदत्तः ओदनं पचति।
- **साधकतमं करणम्-** अर्थात् क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट रूप से उपकारक 'करण' कहलाता है।
- **आधारोऽधिकरणम्-** अर्थात् कर्ता तथा कर्म के द्वारा उन कर्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया का आधारभूत कारक अधिकरण संज्ञक होता है।

27. 'निर्मक्षिकम्' - अस्य पदस्य लौकिकविग्रहः भवति-

(a) निर् + मक्षिका + अम् (b) मक्षिका + टा + निर्
(c) मक्षिक + सुँ + निर् (d) मक्षिका + आम् + निर्

उत्तर-(d)

'निर्मच्छिकम्' पदस्य लौकिक विग्रहः मच्छिका आम् निर् अस्ति।
''अव्ययंविभक्ति समीप.............।'' सूत्र से अभाव अर्थ में 'निर्' अव्यय का 'मक्षिका आम्' सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ। निर्मक्षिकम् का लौकिक विग्रह- मक्षिकाणाम् अभावः होगा।

28. पाणिनिमते मुनिशब्दस्य का संज्ञा भवति?

(a) नदी (b) घि
(c) टि (d) अपृक्त

उत्तर-(b)

पाणिनिमते मुनि शब्दस्य 'घि' संज्ञा भवति।
शेषोघ्यसखि अर्थात् नदी संज्ञा से भिन्न ह्रस्व जो इकार और उकार तदन्त सखि शब्द को छोड़कर, घि संज्ञक हो।
जैसे- रवि, कवि, मुनि, भानु, शम्भु, विष्णु आदि घि संज्ञक हैं।

ज्ञान बिंदु-

- **'यू स्त्राख्यौ नदी'** अर्थात् दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्द नदी संज्ञक होते है। जैसे- गौरी, देवी आदि।
- **अचोऽन्त्यादि 'टि'** अर्थात् अचों में जो अन्त्य है, वह है आदि में जिसके उस समुदाय की टि संज्ञा हो- जैसे- मनस् से अस् की टि संज्ञा।
- **अपृक्त एकाल प्रत्ययः** अर्थात् एक अल् रूप जो प्रत्यय, वह अपृक्त संज्ञक हो- जैसे- 'सखना 'स' में स की अपृक्त संज्ञा

29. समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं किं भवति?

(a) उपसर्गः (b) अव्ययम्
(c) उपसर्जनम् (d) प्रातिपदिकम्

उत्तर-(c)

समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं उपसर्जनम् भवति।
समासशास्त्र में अर्थात् समास करने वाले सूत्र में जो पद प्रथमान्त पड़ा हो, उसके द्वारा विग्रह वाक्य में स्थित जिस पद का बोध हो वह उपसर्जन संज्ञक हो।
जैसे- 'हरि ङि अधि' इस अलौकिक विग्रह वाक्य में स्थित 'अधि' पद प्रथमान्त होने से इसकी उपसर्जन संज्ञा हुई और समास में जिसकी उपसर्जन संज्ञा होती है, उसका पूर्व पद में प्रयोग होता है, अतः अधि पहले रखा गया और 'अधिहरि' यह पद बना।

30. गुण संज्ञा विधायकं सूत्रं किम्?

(a) वृद्धिरेचि (b) अकः सवर्णे दीर्घः

(c) आद्गुणः (d) अदेङ् गुणः

उत्तर-(d)

गुण संज्ञा विधायकं सूत्रं 'अदेङ्गुणः' अस्ति।
व्याकरण शास्त्र में 'गुण' पारिभाषिक शब्द है यहां 'गुण' से तात्पर्य 'अ, ए, ओ से है अर्थात् 'अ, ए, ओ' इसकी 'गुण संज्ञा होती है प्रस्तुत सूत्र से यही बात ज्ञात होती है।
सूत्र में अत् का अर्थ- ह्रस्व 'अ'।
एङ् प्रत्याहार है, जिसके अन्तर्गत 'ए, ओ, आते हैं।
अर्थात् 'अ, ए, ओ'- इन तीनों में से प्रत्येक की गुण संज्ञा होगी।

ज्ञान बिंदु-

- वृद्धिरेचि- यह वृद्धि-सन्धि विधायक सूत्र है।
- अकः सवर्णे दीर्घः- यह सूत्र दीर्घ सन्धि का विधान करता है।
- आद् गुणः- यह गुण सन्धि का विधान करने वाला सूत्र है। सूत्र से तात्पर्य है कि 'अ' वर्ण के पश्चात् स्वर हो तो पूर्व एवं पर दोनों के स्थान पर एक गुण (अ, ए, ओ) आदेश हो जाता है।
  जैसे- उप + इन्द्र
  उप् अ + इन्द्र
  उप् ए न्द्र = उपेन्द्र

31. 'ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति' - इत्यत्र द्वितीयाविधायकं सूत्रं किम्?

(a) अकथितञ्च (b) स्पृहेरीप्सितः

(c) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (d) तथायुक्तं चानीप्सितम्

उत्तर-(d)

'ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति' इत्यय द्वितीया विधायकं सूत्रं 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' अस्ति।
''तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्रानुसार 'ईप्सिततम् के सदृश क्रिया से युक्त अर्थात् क्रिया-जन्य फल से युक्त अनीप्सित की भी कर्म संज्ञा होती है।
जैसे- ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति में 'तृण' अनीप्सित है, किन्तु ग्रामं की तरह वह भी क्रिया से युक्त है, अतः अनीप्सित होते हुए भी 'तृण' की कर्म संज्ञा हुई।

ज्ञान बिंदु-

- **अकथितञ्च-** अर्थात् जब कारक की अपादान इत्यादि विशेष संज्ञा न करना हो, जब उसकी कर्म संज्ञा होती है और ये कर्म 'अकथित-कर्म' कहे जाते हैं।
- **कर्तुरीप्सिततमं कर्म-** अर्थात् कर्ता अपनी-दान-क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहे, उस कारक की कर्म संज्ञा होती है।
- **स्पृहेरीप्सितः** अर्थात् 'स्पृह्' धातु के प्रयोग में ईप्सित अर्थात् चाहा गया पदार्थ सम्प्रदान कहलाता है।
  जैसे- बालकः पुष्पेभ्यः स्पृह्यति।

32. 'द्वियमुनम्' इत्यत्र कः समासः?

(a) द्विगुः (b) द्वन्द्वः

(c) अव्ययीभावः (d) तत्पुरुषः

उत्तर-(c)

'द्वियमुनम्' इत्यत्र अव्ययीभावः समासः।
द्वयोः यमुनयोः समाहारः इस लौकिक विग्रह तथा द्वि ओस् यमुना ओस् इस अलौकिक विग्रह में द्वि ओस् सुबन्त का यमुना ओस् सुबन्त के साथ समाहार अर्थ में 'समाहार चायमिष्यते' इस वार्तिक के नियमानुसार 'नदीभिश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।

ज्ञान बिंदु-

- **संख्यापूर्वो द्विगुः-** जिसमें प्रथम पद संख्यावाची तथा दूसरा पद संज्ञा हो उसे द्विगु समास कहते है।
  जैसे- 'यतुर्युगम्'
- **चार्थे द्वन्द्वः-** यदि दो या दो से अधिक संज्ञाएं 'च' से जोड़ी जाएं तो वहां द्वन्द्व समास होता है।
  जैसे रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ
- **तत्पुरूषः-** तत्पुरूष समास में प्रथम शब्द विशेषण का कार्य करता है, द्वितीय शब्द विशेष्य होता है और यही पद प्रधान होता है।
  जैसे- राजपुरूषः

33. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

A. हलोऽनन्तराः 1. केवलसमासः

B. विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः 2. संयोगः

C. प्रायेणान्यपदार्थ प्रधानः 3. इत्थंभूतलक्षणे

D. जटाभिस्तापसः 4. बहुव्रीहिः

	A	B	C	D
(a)	3	4	2	1
(b)	1	2	3	4
(c)	2	1	4	3
(d)	4	3	1	2

उत्तर-(c)

हलोऽनन्तराः	–	संयोगः
विशेष संज्ञा विनिर्मुक्तः	–	केवल समासः
प्रायेणान्यपदार्थ प्रधानः	–	बहुव्रीहिः
जटाभिस्तापसः	–	इत्थंभूतलक्षणे

- **हलोऽनन्तराः संयोगः-** अर्थात् जिन दो व्यञ्जनों के बीच में स्वरों का व्यवधान न हो उन हलों की संयोग संज्ञा होती है जैसे- भव्य, कात्स्न्र्य, माहात्म्य
- **'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवल समासः-'** अर्थात् जिस समास का कोई विशेष संज्ञा नहीं कहा गया है, उसे केवल समास कहते हैं।
  जैसे- भूतपूर्वः
- **प्रायेणान्यपदार्थ प्रधानो बहुव्रीहिः-** अर्थात् जिसमें अन्य पदार्थ की प्रधानता हो वह बहुव्रीहि समास होता है।
  जैसे- पीताम्बरः
- **इत्थंभूतलक्षणे-** अर्थात् किसी विशेष प्रकार की वेश भूषा या लक्षण से युक्त होने की स्थिति में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- जटाभिस्तापसः (जटाओं से तपस्वी लगता है।)

34. 'भूतबलिः' इत्यत्र समासः केन सूत्रेण विधीयते?

(a) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(b) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः
(c) पञ्चमी भयेन
(d) सप्तमी शौण्डैः

उत्तर-(b)

'भूतबलिः' इत्यय समासः 'चतुर्थी तदर्थार्थबालिहितसुखरक्षितैः 'सूत्रेण विधीयते।
चतुर्थ्यन्त अर्थ के लिए जो है, तद्वाचक जो समर्थ सुबन्त उसके और बलि,हित, सुख, रक्षित समर्थ सुबन्तों के साथ चतुर्थ्यन्त समास हो विकल्प से।

ज्ञान बिंदु-

- **'कर्तृकरणे कृता बहुलम्-** 'अर्थात्' कर्ता और करण में जो तृतीया होती है, उस तृतीयान्त सुबन्त का कृदन्त के साथ विकल्प के समास हो।
- **'पञ्चमी भयेन-** अर्थात् पञ्चम्यन्त सुबन्त का भय प्रकृतिक सुबन्त के साथ समास होता है विकल्प से
- **सप्तमी शौण्डैः-** अर्थात् सप्तम्यन्त सुबन्त का शौण्डादि समर्थ सुबन्तों के साथ विकल्प के समास हो।

35. क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थ कः स्यात्?

(a) कर्म (b) करणम्
(c) कर्ता (d) अधिकरणम्

उत्तर-(c)

क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात्।
क्रिया के सम्पादन में स्वतंत्र रूप से विवक्षित अर्थ कर्ता हो- कारिका में आये हुये स्वातन्त्र्य पद का अर्थ 'प्राधान्य' है, जबकि विवक्षा के अनुसार सब कारक होते है।

ज्ञान बिंदु-

- **साधकतंम करणम्'** अर्थात् क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट रूप से उपकारक 'करण' कहलाता है।
- **कर्तुरीप्सिततमं कर्म** अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहे, उस कारक की कर्म संज्ञा हो।
- **आधारोऽधिकरणम्** अर्थात् कर्ता तथा कर्म के द्वारा उन कर्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया का आधारभूत कारक अधिकरण संज्ञक होता है।

36. भाषाविज्ञाने बलाघातस्य भेदाः सन्ति-

(a) चत्वारः (b) सप्त
(c) दश (d) द्वादश

उत्तर-(a)

भाषाविज्ञाने बलाघातस्य चत्वारः भेदाः सन्ति।
संस्कृत और हिन्दी में बलाघात पाया जाता है। बलाघात फेफड़ों से आने वाले वायु-प्रवाह की तीव्रता पर निर्भर होता है। अधिक या कम तीव्रता के आधार पर इसके चार भेद किए जाते हैं-
1. तीव्र (Acute Accent) 2. मन्द (Grave)
3. संश्लिष्ट (Circumflex) 4. हीन (Weak)

37. अर्थबोधस्य कति प्रमुखसाधनानि?

(a) सप्त (b) नव/अष्टौ
(c) एकादश (d) त्रयोदश

उत्तर-(b)

अर्थबोधस्य अष्टौ प्रमुख साधनानि?
आचार्य जगदीश ने 'शब्द शक्ति प्रकाशिका' में अर्थबोध (संकेत ग्रह) के आठ प्रमुख साधन माने हैं-
शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान- कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सांनिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः।।

अर्थात् व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्य शेष, विवृत्ति और प्रसिद्ध पद का सानिध्य, ये आठ अर्थबोध के प्रमुख साधन माने गए हैं।

38. अतादृशिगुणीभूतव्यङ्ग्ये किं काव्यम्?

(a) उत्तमोत्तमम् (b) उत्तमम्

(c) मध्यमम् (d) अधमम्

उत्तर-(c)

अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

उस प्रकार के अर्थात् वाच्य से अधिक चमत्कारी व्यङ्ग्य अर्थ न होने पर गुणीभूत व्यङ्ग्य नामक दूसरे प्रकार का काव्य होता है, जिसे मध्यम काव्य कहा जाता है।

जैसे- ''वेतस-वृक्ष की ताजी तोड़ी हुई मञ्जरी को हाँथ में लिये हुये ग्राम के नवयुवक को देख-देखकर तरूणी के मुख की क्रान्ति मलिन होती जा रही है।''

यह गुणीभूतव्यङ्ग्य का उदाहरण है।

ज्ञान बिंदु-

- वाच्य (अर्थ) की अपेक्षा व्यङ्ग्य के अधिक चमत्कार युक्त होने पर काव्य 'उत्तम' होता है और इसे ध्वनि काव्य कहा जाता है।
- व्यङ्ग्य से रहित 'शब्द चित्र' तथा 'अर्थ-चित्र' नामक दो प्रकार का अधम काव्य कहा गया है।

39. अधोनिर्दिष्टेषु साध्यवसानालक्षणायाः उदाहरणं किं भवति?

(a) गङ्गायां घोषः (b) कुन्ताः प्रविशन्ति

(c) गौरेवायम् (d) गौर्वाहीकः

उत्तर-(a)

अधोनिर्दिष्टेषु साध्यावसानलक्षणायाः उदाहरणं गङ्गयाः घोषः भवति।

साध्यावसाना से तात्पर्य है- ''निगीर्णस्येति'' अर्थात् पूर्वोक्त विषय का अन्य विषयी के साथ अभेद ज्ञान कराने वाली लक्षणा साध्यावसाना लक्षणा कहलाती है।

प्रयोजनवती साध्यावसाना लक्षण-लक्षणा का उदाहरण ''गङ्गायां घोषः'' है।

ज्ञान बिंदु-

- ''कुन्ताः प्रविशन्ति'' यह रूढ़ि में साध्यावसाना उपादान लक्षणा का उदाहरण है।
- ''गौर्वाहीक'' यह रूढ़ि में प्रयोजनवती गौड़ी लक्षणा का उदाहरण है।

40. व्यायोगे नायकः कीदृशः?

(a) धीरोदात्तः (b) धीरशान्तः

(c) धीरोद्धतः (d) धीरललितः

उत्तर-(c)

व्यायोगे नायकः धीरोद्धतः।

व्यायोग नामक रूपक का नायक धीरोद्धत होता है। इसकी कथा इतिहास-प्रसिद्ध होती है। स्त्रियां थोड़ी होती है। गर्भ और विमर्श सन्धियां नहीं होती और पुरूष पात्रों पर यह रूपक आश्रित होता है इसमें अङ्क एक ही होता है और युद्ध का कारण स्त्री नहीं होती। इसमें कैशिकी वृत्ति का अभाव होता है नायक प्रख्यात धीरोद्धत राजर्षि अथवा द्विव्य पुरुष होता है। शान्त, शृङ्गार और हास्य के अतिरिक्त अन्य कोई भी रस प्रधान होता है व्यायोग का उदाहरण 'सौगन्धिकाहरण' है।

41. मृच्छकटिकम् कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

(a) नाटकस्य (b) प्रकरणस्य

(c) डिमस्य (d) वीथ्याः

उत्तर-(b)

मृच्छकटिकम् प्रकरणस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति।

'मृच्छकटिकम्' रूपक का प्रकरण नामक भेद है। इस प्रकरण ग्रन्थ में 10 अंक है। इसमें एक निर्धन ब्राह्मण चारूदत्त का वसन्तसेना नामक गणिका से प्रेम वर्णन है। चारूदत्त और वसन्तसेना का प्रेम अन्त में सफल होता है और दोनों का विवाह होता है। साथ ही इस प्रकरण में 'पालक' नामक राजा को मारकर 'आर्यक' के राजा होने का वर्णन है। इसके दस अंकों का नाम इस प्रकार है।

1. अलंकार न्यास	2. द्यूतकर-संवाहक
3. सन्धिच्छेद	4.मदनिका-शर्विलक
5. दुर्दिन	6. प्रवहण-विपर्यय
7. आर्यकापहरण	8. वसन्तसेना-मोटन
9. व्यवहार	10. संहार

42. रौद्ररसस्य स्थायिभावः कः?

(a) उत्साहः (b) भयम्

(c) जुगुप्सा (d) क्रोधः

उत्तर-(d)

रौद्ररसस्य स्थायिभावः क्रोधः।

रौद्र रस का स्थायी भाव 'क्रोध' है। इसका वर्ण लाल और देवता रूद्र है। इसमें 'आलम्बन' शत्रु होता है और चेष्टायें उद्दीपन होती हैं।

ज्ञान बिंदु-

- 'उत्साह' वीर रस का स्थायी भाव होता है, इसका देवता महेन्द्र और रंग सुवर्णवत् होता है।
- 'भय' भयानक रस का स्थायी भाव होता है। इसका वर्ण कृष्ण (काला) और देवता 'काल' है।
- 'जुगुप्सा' वीभत्स रस का स्थायी भाव होता है। इसका वर्ण नील तथा देवता महाकाल है।

43. भट्टनायकस्य भुक्तिवादः कस्य मतस्यानुकूलम्?

(a) मीमांसामतस्य (b) सांख्यमतस्य
(c) न्यायमतस्य (d) वेदान्तमतस्य

उत्तर-(b)

भट्टनायकस्य भुक्तिवादः सांख्यमतस्यानुकूलम्।
भट्टनायक के इस 'भुक्तिवाद' को व्याख्याकारों ने 'सांख्यमतानुयायी' माना है। इस सिद्धान्त को सांख्य सिद्धान्त का अनुगामी इस रूप में कहा जा सकता है, जैसे सांख्य में सुख-दुःख आदि वस्तुतः अन्तः करण के धर्म हैं, आत्मा के धर्म नहीं, परन्तु पुरूष का अन्तः करण के साथ सम्बन्ध होने से पुरुष में उनकी औपाधिक प्रतीति होती है, उसी प्रकार सामाजिक में न रहने वाले रस का भोग उसको होता है, उस सादृश्य के आधार पर ही इस सिद्धांत को सांख्य-सिद्धान्त का अनुगामी कहा जा सकता है।

44. मल्लिनाथेन काव्यस्यास्याष्टमसर्गपर्यन्तमेव व्याख्यानं रचितम्-

(a) रघुवंशस्य (b) किरातार्जुनीयस्य
(c) कुमारसम्भवस्य (d) नैषधस्य

उत्तर-(c)

मल्लिनाथेन काव्यस्याष्टमेव सर्गपर्यन्तं ''कुमारसम्भवम्'' व्याख्यानं रचितम्।
कुमारसम्भवम् महाकाव्य महाकवि कालिदास द्वारा रचित है। यह महाकाव्य 17 सर्गों में विभक्त है। इस महाकाव्य में हिमालय सुता पार्वती द्वारा घोर तपस्या के फलस्वरूप 'वर रूप में शिव को प्राप्त करने तथा उनसे कार्तिकेय (स्कन्द, कुमार) की उत्पत्ति का वर्णन है। कुछ विद्वान केवल 8 सर्ग तक ही कालिदास की रचना मानते है। व्याख्याकार मल्लिनाथ के द्वारा भी आठ सर्गों पर ही 'कुमार-सम्भवम्' की टीका मिलती है। अष्टम सर्ग के आगे नवम् सर्ग से भाव, भाषा, शैली, व्याकरण और छन्द सम्बन्धी दोष एवं पाद पूर्त्यर्थक शब्द प्रयोग इसके कारण बताये गये है।

45. लक्ष्मीचाञ्चल्यमस्मिन्नुपवर्णितमस्ति-

(a) शाकुन्तले (b) कादम्बर्याम्
(c) हर्षचरिते (d) रघुवंशे

उत्तर-(b)

लक्ष्मीचाञ्चल्यम् कादम्बर्याम् उपवर्णित मस्ति।
महाकवि बाणभट्ट प्रणीत गद्यकाव्य 'कादम्बरी' का एक अंश 'शुकनासोपदेश' है। इसमें उज्जयिनी के राजा तारापीड के मंत्री शुकनास द्वारा राजकुमार चन्द्रापीड को लोक व्यवहार के लिये उपयोगी उपदेश दिया गया है। मंत्री शुकनास, चन्द्रापीड को उपदेश देते हुए यह कहते हैं कि हे वत्स, यौवन का गहन अन्धकार, लक्ष्मी का मद, ऐश्वर्य का तिमिरान्धत्व, विषयोपभोग की अभिलाषा आदि मनुष्य को घोर संकट में डालने में समर्थ हैं, अतः मै आपको प्रथमतः लक्ष्मी के दोष तथा चञ्चलता के विषय में अवगत कराता हूं।

46. वीररसप्रधानं नाटकमिदम्-

(a) स्वप्नवासवदत्तम् (b) वेणीसंहारम्
(c) मालतीमाधवम् (d) नागानन्दम्

उत्तर-(b)

वीररस प्रधानं नाटकं वेणीसंहारम्।
वेणीसंहार, भट्टनारायण द्वारा रचित वीर रस प्रधान नाटक है। इस नाटक में छः अंक है। इस नाटक में भीम (नायक) द्वारा द्रोपदी (नायिका) के वेणीसंहार (वेणी को संवारने या बांधने) का वर्णन है। भट्टनारायण मुख्यतः गौड़ी रीति के कवि हैं।

ज्ञान बिंदु-

- 'स्वप्नवासवदत्तम्' भासकृत छः अंको का नाटक है, यह शृङ्गार प्रधान नाटक है।
- 'मालतीमाधवम्' भवभूतिकृत 10 अंकों का प्रकरण नाटक है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है। यह शृङ्गार रस प्रधान प्रकरण नाटक है।

- नागानन्द पाँच अंको का नाटक है। इसमें जीमूतवाहन नामक विद्याधर राजकुमार का अपनी बलि देकर शंख चूड़ नामक सर्प को गरुण से बचाने का वर्णन है। यह शान्त रस प्रधान नाटक है।

47. एनं ''कवीनामिह चक्रवर्ती'' इति वदन्ति विपश्चितः-

(a) कालिदासः (b) श्रीहर्षः

(c) वाल्मीकिः (d) बाणः

उत्तर-(d)

''बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती'' इति वदन्ति विपश्चितः।

भाषा पर ऐसा अधिकार जो छोटे और बड़े सभी वाक्यों को समान रूप से संभाल ले, भावों के अनुसार शब्दों की योजना तथा उनमें लयात्मकता का निवेश, ये ऐसे गुण हैं जो बाण को 'कविचक्रवर्ती' के पद पर आसीन करते हैं (बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती)। भाषा का आश्चर्यजनक आकर्षण एवं अप्रस्तुत योजना की सजीवता बाण की साहित्यिक विभूति है, कल्पना के साथ अनुभूतियों का सामंजस्य उनकी कला का आधार है।

ज्ञान बिंदु-

- श्रीहर्ष नैषधीयचरित महाकाव्य के रचयिता हैं। इनके पिता का नाम श्रीहीर एवं माता मामल्ल देवी है।
- वाल्मीकि संस्कृत रामायण के प्रसिद्ध रचयिता हैं, जो आदि कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- कालिदास संस्कृत भाषा के महान् कवि और नाटककार हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् इनकी सुप्रसिद्ध रचना है।

48. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

A. द्वाविंशतिसर्गात्मकम् 1. शिशुपालवधम्

B. विंशतिसर्गात्मकम् 2. रघुवंशमहाकाव्यम्

C. एकोनविंशति-सर्गात्मकम् 3. किरातार्जुनीयम्

D. अष्टादशसर्गात्मकम् 4. नैषधमहाकाव्यम्

	A	B	C	D
(a)	3	1	4	2
(b)	2	3	1	4
(c)	1	4	3	2
(d)	4	1	2	3

उत्तर-(d)

उचित तालिका इस प्रकार है-

A. द्वाविंशतिसर्गात्मकम् 1. नैषधमहाकाव्यम्

B. विंशतिसर्गात्मकम् 2. शिशुपालवधम्

C. एकोनविंशति-सर्गात्मकम् 3. रघुवंशमहाकाव्यम्

D. अष्टादशसर्गात्मकम् 4. किरातार्जुनीयम्

A. नैषध महाकाव्य श्रीहर्ष द्वारा रचित 22 सर्गों में है। इसमें नल दमयन्ती के प्रणय से लेकर परिणय तक का सांगोपांग वर्णन है।

B. शिशुपालवधम् महाकवि मघ द्वारा रचित 20 सर्गों का महाकाव्य हैं। यह महाकाव्य बृहत्त्रयी का द्वितीय रत्न है।

C. रघुवंश महाकाव्य, महाकवि कालिदास द्वारा रचित 19 सर्गों में निबद्ध वीर रस प्रधान महाकाव्य है।

D. किरातार्जुनीयम्, महाकवि भारवि द्वारा रचित अठारह सर्गों का महाकाव्य है।

49. भवभूतिमहाकवेरिमां ''निरर्गलतरङ्गिणी' ति वदन्ति-

(a) स्रग्धरा (b) मन्दाक्रान्ता

(c) शिखरिणी (d) वसन्ततिलका

उत्तर-(c)

भवभूतिमहाकवेः शिखरिखी 'निरर्गलतरङ्गिणी' इति वदन्ति।

महाकवि क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक' नामक छन्दोविषयक ग्रन्थ में भवभूति प्रयुक्त शिखरिणी छन्द की प्रशंसा की है, कि यह शिखरिणी अबाध गति से बहने वाली नदी के समान है तथा धन के सन्दर्भ में मयूरी के समान चकित होकर नृत्य करती है-

''भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
चकिता घन सन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति।।

50. ''सरस्वती श्रुति महती महीयतां'' मिति केनोक्तम्

(a) वाल्मीकिना (b) भवभूतिना

(c) कालिदासेन (d) श्रीहर्षेण

उत्तर-(c)

''सरस्वती श्रुति महती महीयतां'' इति कालिदासेनोक्तम्।

उपरोक्त सूक्ति कथन महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' ग्रन्थ के सप्तम् अंक का अन्तिम श्लोक है। यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरत-वाक्य है। सूक्ति से तात्पर्य है कि- ''ज्ञान गरिष्ठ कवियों की वाणी (या कृति) का पूर्ण सत्कार होना चाहिए।''

भरत-वाक्य के रूप में कालिदास द्वारा रचित यह श्लोक मंगल-परक भावना हेतु लिखा गया है, महाकवि लोकमंगल हेतु ज्ञान-गरिष्ठ कवियों को पूर्ण सम्मान देने की बात कह रहे हैं।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2012
संस्कृत
पेपर-3

व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'हिरण्यगर्भ' इति पदेनाभिधीयते—

(a) रुद्रः (b) वरुणः
(c) इन्द्रः (d) प्रजापतिः

उत्तर–(d)

'हिरण्यगर्भ' इति पदेन अभिधीयते प्रजापतिः।
वेदों में पुरुष से हिरण्यगर्भ की उत्पत्ति प्रदर्शित की गई है। पुरुष में जो 'विराट' उत्पन्न होता है वही हिरण्यगर्भ है। हिरण्यगर्भ को प्रजापति भी कहा गया है। पुराणों में इसी को ब्रह्मा कहा गया है। हिरण्यगर्भ और प्रजापति कहीं तो पर्यायवाची हैं, कहीं हिरण्यगर्भ को प्रजापति से और कहीं प्रजापति को हिरण्यगर्भ से श्रेष्ठ बताया गया है। वास्तव में दोनों एक ही है। हिरण्यगर्भ सूक्त में इन दोनों की स्तुति की गई है।
हिरण्यगर्भ-सूक्त में 10 मंत्र हैं। 9 मंत्रों की समाप्ति **'कस्मै देवाय हविषा विधेम'** से हुई है तथा दसवें मंत्र **''प्रजापते न त्वदेतानि''** में इसका उत्तर दिया गया है।
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
इन्द्र—इन्द्र ऋग्वेद का सबसे महान् देवता है। इन्द्र की स्तुति 1027 सूक्तों में की गई है। अपने गुणों के कारण इन्द्र आर्यों का जातीय और राष्ट्रीय देवता बन गया तथा वह सभी देवों का राजा हुआ। इन्द्र युद्ध का भी देवता है।
वरुण—इन्द्र और अग्नि के बाद देवताओं में वरुण का महत्त्व है। वरुण की स्तुति 12 सूक्तों में की गई है। ऋग्वेद में वरुण का मुख्य रूप शासक का है।
रुद्र—ऋग्वेद में रुद्र देवता का वर्णन बहुत अधिक नहीं किया गया और उसका वर्णन कुछ ही ऋचाओं में है तथापि रुद्र को अत्यधिक शक्तिशाली एवं भयंकर रूप में चित्रित किया गया है।

2. विधिभागरूपेण स्वीक्रियते—

(a) ब्राह्मणग्रन्थः (b) उपनिषद्ग्रन्थः
(c) धर्मशास्त्रम् (d) आरण्यकम्

उत्तर–(a)

विधिभाग रूपेण ब्राह्मणग्रन्थः स्वीक्रियते।
ब्राह्मण ग्रंथों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है—यज्ञ एवं यज्ञप्रक्रिया का सर्वाङ्गीण विवेचन। यज्ञ मीमांसा के दो मुख्य भाग हैं : विधि और अर्थवाद
विधि का अभिप्राय है—यज्ञ प्रक्रिया का विशद निरूपण, जैसे यज्ञ कब, कहाँ, कैसे किया जाय। यज्ञ के लिए कितने ऋत्विज् चाहिए, प्रत्येक के क्या कर्तव्य हैं, यज्ञ के लिए क्या-क्या सामान चाहिए, यज्ञशाला का निर्माण आदि।
अर्थात् यज्ञ और उससे संबद्ध कार्यकलाप का विस्तृत विवरण बताना। यज्ञ कब, कहाँ, कैसे किया जाएगा। किस यज्ञ के लिए क्या सामग्री अपेक्षित है तथा कौन-सा ऋत्विज् क्या काम करेगा, आदि का विशद वर्णन करना।
नैरुक्त्यं यत्र मंत्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।।
उपनिषद् ग्रंथ—उप और नि उपसर्गपूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है। इसका अर्थ—उप-समीप, नि-निश्चय से या निष्ठापूर्वक, सद् = बैठना अर्थात् तत्त्वज्ञान के लिए गुरु के पास सविनय बैठना। श्री शंकराचार्य ने 10 उपनिषद् ग्रंथों को प्रामाणिक और प्राचीन माना है।
आरण्यकम्—आरण्यक शब्द का अर्थ है अरण्य में होने वाला (अरण्ये भवम् आरण्यकम्)। अरण्य (वन) में होने वाले अध्ययन–अध्यापन, मनन, चिंतन, शास्त्रीय चर्चा और अध्यात्मक-विवेचन आरण्यक के अंतर्गत आते हैं। इन विषयों के संकलनात्मक ग्रंथों को आरण्यक कहते हैं।

3. दर्शयागः कदानुष्ठीयते?

(a) चतुर्दश्याम् (b) प्रतिपदि
(c) अष्टभ्याम् (d) पूर्णिमायाम्

उत्तर–(b)

''दर्शयागः'' प्रतिपदि अनुष्ठीयते।
वैदिक यज्ञों के 7 प्रमुख हविर्यज्ञों में से तीसरा यज्ञ है—दर्शपौर्णमास यज्ञ। दर्शयाग होता है—अमावस्या को, पौर्णमास यज्ञ होता है—पूर्णिमा को। दर्शपौर्णमास छः यागों का समुच्चय है। 'दर्शयागों' का समूह है तीन, 'पूर्णमास' यागों का समूह है तीन। यज्ञों में अग्नि का आधान क्रमशः अमावस्या एवं पूर्णिमा को होता है। तथापि पूर्णिमा तथा अमावस्या के दिन केवल अग्न्यावधान तथा नियमों का अनुष्ठान होता है, याग तो प्रतिपदा में ही होता है।

4. कस्याहुतिः मनसा दीयते?

(a) विष्णोः (b) इन्द्रस्य

(c) प्रजापतेः (d) रुद्रस्य

उत्तर–(c)

प्रजापतेः आहुतिः मनसा दीयते।

वाङ्मनस-संवाद शतपथ-ब्राह्मण के 1.4.5.8-13 = इन छः मंत्रों में पाया जाता है। यहाँ मन और वाणी के संवाद को अति मनोहर व ललित व मसृण शैली में प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है–एक बार मन और वाणी के मध्य अपने-अपने महत्त्व को प्रदर्शित करने के लिए विवाद होने लगा। मन ने कहा कि मैं तुमसे बड़ा हूँ। वाणी ने कहा मैं तुमसे बड़ी हूँ। दोनों इस विवाद का निपटारा करने के लिए प्रजापति के पास गए। प्रजापति ने मन के ही अनुकूल निर्णय दिया। निर्णय सुनकर वाणी क्रोधित हो गई और उसने प्रजापति के लिए हवि न ले जाने का निश्चय किया। अतएव यज्ञ में जो कुछ भी प्रजापति के लिए किया जाता है वह सब मनसा (निम्नस्वर) से किया जाता है।

इन्द्र–इन्द्र ऋग्वेद का सबसे महान देवता है। इन्द्र की स्तुति 1027 सूक्तों में की गयी है।

रुद्र–ऋग्वेद में रुद्र देवता का वर्णन बहुत अधिक नहीं किया गया और उसका वर्णन कुछ ही ऋचाओं में है तथापि रुद्र को अत्यधिक शक्तिशाली एवं भयंकर रूप में चित्रित किया गया है।

विष्णो–ऋग्वेद के पहले मण्डल के 154 सूक्त में विष्णु की स्तुति की गई है। सर्वानुक्रमणी के अनुसार 6 ऋचाओं में विष्णु की स्तुति है।

विष्णु शब्द **'विष्लृ व्यापतौ'** धातु से बनता है जिसका अर्थ है व्यापनशील होना।

5. संहितापाठानन्तरं क्रियते–

(a) सन्धिपाठः (b) समासपाठः

(c) पदपाठः (d) यमपाठः

उत्तर–(c)

संहितापाठानन्तरं पदपाठः क्रियते।

वेद के मंत्रों के उच्चारण में तथा उनकी सुरक्षा में कोई अन्तर न आने पाए, इसके लिए अनेक उपाय अपनाए गए थे। इन उपायों को विकृतियाँ कहते थे। इनमें मंत्रों के पदों को घुमा-फिरा कर अनेक प्रकार से उच्चारण किया जाता था। ये विकृतियाँ 8 हैं–इनके नाम हैं–(1) जटा-पाठ, (2) माला, (3) शिखा, (4) रेखा, (5) ध्वज, (6) दण्ड, (7) रथ, (8) घन पाठ

जटा माला शिखा रेखा, ध्वजो दण्डो रथो घनः।

अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः, क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥

आठ विकृतियों के अतिरिक्त तीन पाठ और हैं–**संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ।**

पदपाठ–इसमें मंत्र के प्रत्येक पद को पृथक् करके पढ़ा जाता है। यदि कोई संधि है तो उस संधि को तोड़ दिया जाता है। प्रत्येक पद अपने स्वतंत्र रूप में रहेगा। यदि संहिता पाठ के चार पदों को 'कखगघ' कहेंगे तो पदपाठ में इन्हें क, ख, ग, घ कहेंगे।

6. 'देवासः' इति प्रयोगः–

(a) तान्त्रिकः (b) वार्तिकः

(c) छान्दसः (d) ऐतिहासिकः

उत्तर–(c)

'देवासः' छान्दसः प्रयोगः–

वेदों के अर्थ में इन शब्दों का भी प्रयोग होता है।

श्रुति, निगम, आगम, त्रयी, छन्दस्, आम्नाय, स्वाध्याय।

चारों वेदों के लिए छन्दस् शब्द का प्रयोग होता है। पाणिनि ने **'बहुलं छन्दसि'** सूत्रों के द्वारा वेदों को छन्दस् कहा है। छन्दस् शब्द **'छदि संवरणे'** चुरादिगणी से बनता है। इसका अर्थ है–ढकना या आच्छादित करना। अपने मनोभावों या विचारों को एक क्रमबद्ध रूप से पद्य में बद्ध किया जाता है। अतः पद्यात्मक रचना को 'छन्द' कहा जाता है। इसी अभिप्राय से यास्क ने निरुक्त में **'छन्दांसि छादनात्'** कहा है। देवासः शब्द प्रायः वैदिक ग्रंथ में मिलता है। इसलिए वेद को 'छान्दसः' भी कहा गया है।

7. एषु प्राचीन वेदभाष्यकारो न वर्तते–

(a) सायणः (b) स्कन्दस्वामी

(c) अरविन्दः (d) गुणविष्णुः

उत्तर–(c)

प्राचीनवेदभाव्यकारो अरविन्दः न वर्तते।

वैदिक काल में मानव का मस्तिष्क जितना उर्वर एवं विकसित रहा है उतना परवर्तीकाल में नहीं रहा है। वेदों पर संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि भागों पर हजारों वर्षों से कितने भाष्य लिखे गये और कितनी टीकाएँ रची गयी परंतु अभी वेद जैसे गूढ़ विषयों का अर्थावबोध उनके लिये कठिन होता गया।

इस प्रकार समस्त संहिताओं, ब्राह्मणों एवं उपनिषदों पर अनेक भाष्य लिखे गये। वेद भाष्यकर्ताओं में **स्कन्दस्वामी, सायण, गुणविष्णु, वेङ्कटमाधव, आनन्दतीर्थ** आदि प्रमुख हैं।

स्कन्दस्वामी–ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है। ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था।

सायण–ये विजयनगर के संस्थापक महाराज बुक्का और महाराज हरिहर के अमात्य एवं सेनानी थे। 24 वर्ष तक दोनों राजाओं के सान्निध्य में रहकर इन्होंने अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार

वेदभाष्य किया। सायण ने ऋग्वेद सहित 5 वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थों और 2 आरण्यकों पर पांडित्यपूर्ण भाष्य लिखा।
गुणविष्णु—इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर 'छान्दोग्य–मंत्रभाष्य' लिखा है। यह प्रकाशित हो चुका है। सायण ने भी इनके भाष्य से सहायता ली है। इनके दो अन्य ग्रंथ भी प्राप्त होते हैं–
(क) मंत्र ब्राह्मण-भाष्य
(ख) पारस्कर गृह्यसूत्र-भाष्य।

8. यास्केन कतिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः?
(a) त्रिविधः (b) पञ्चविधः
(c) चतुर्विधः (d) अष्टविधः

उत्तर–(a)

'यास्केन' त्रिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः।
आचार्य यास्क प्रथम आचार्य हैं। जिन्होंने वेदों की व्याख्या के लिए आवश्यक नियमों का निर्देश किया है। प्रायः सभी परवर्ती आचार्यों ने यास्क के निर्देशों का पालन किया।
(क) मंत्रों की व्याख्या प्रकरण के अनुसार ही करनी चाहिए, पृथक् से नहीं।
(ख) मंत्रों की व्याख्या परंपरागत पद्धति के ज्ञान से करनी चाहिए।
(ग) मंत्रों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं–1. आधिभौतिक (प्राकृतिक), 2. आधिदैविक (देवविशेष से संबद्ध), 3. आध्यात्मिक (परमात्मा या जीवात्मा)
आचार्य यास्क (लगभग 700 ई.पू.) ने अपने समय में प्रचलित सभी व्याख्या पद्धतियों का उल्लेख किया है।
इनमें वैयाकरण (इति वैयाकरणाः, व्याकरण के अनुसार व्याख्या करने वाले), याज्ञिक (यज्ञप्रक्रिया वाले), ऐतिहासिक (इतिहास मानने वाले), नैरुक्त (निरुक्त प्रक्रिया वाले, आधिदैवत अर्थ मुख्यतः मानने वाले), आध्यात्मिक व्याख्या वाले (परिव्राजक) आदि मुख्य हैं। इनकी व्याख्या के केंद्र में प्रधानरूप से यज्ञिय-प्रक्रिया रही है।
इस प्रकार यास्क ने वेदों की ऋचाओं का तीन व्याख्या विधि की है–
(1) परोक्षकृताः, (2) प्रत्यक्षकृताः, (3) आध्यात्मिक्यश्च

9. 'पर्जन्यः पिता' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते?
(a) पृथिवीसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) हिरण्यगर्भसूक्ते (d) पुरुषसूक्ते

उत्तर–(a)

'पर्जन्यः पिता' इति पृथिवी सूक्ते प्रतिपाद्यते।
ऋग्वेद में पर्जन्य को साधारण देवता माना गया है। पर्जन्य की स्तुति के केवल तीन सूक्त हैं। पर्जन्य का अर्थ है–जल को बरसाने वाला मेघ। मेघ को जल भरने का एक बड़ा पात्र कहा गया है, जिसे दृति कहते हैं। पर्जन्य औषधियों को उत्पन्न करने वाला देवता है। इसकी उपमा वृषभ से दी गई है, जिसकी सवारी जल से भरे हुए मेघ हैं। यह अङ्कुरों को उत्पन्न करता है और पृथिवी को विस्तृत बनाता है। पर्जन्य को दिव्य जलों का पिता कहा गया है। पर्जन्य को औषधियों, तृणों और अङ्कुरों का जन्मदाता कहा गया है। यह गौओं, घोड़ियों और अन्य मादा जातियों में गर्भाधान की सामर्थ्य को उत्पन्न करता है। एक स्थान पर पर्जन्य को **द्युलोक एवं पृथिवीलोक का पिता** कहा गया है। दूसरे स्थान पर द्युलोक को इसका पिता तथा पृथिवी को पत्नी कहा गया है।
तासु नो धेह्यभिः नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।।

10. कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?
(a) ऋग्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर–(b)

कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेदेन सम्बद्धा।
कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा से संबद्ध है। इसमें नचिकेता और यम के संवादरूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें 2 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में 3-3 वल्लियां है।
ऋग्वेद—चारों वेदों ऋग्वेद सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आदरणीय माना जाता है। ऋग्वेद सबसे प्राचीन है। भारतीय और पाश्चात्य सभी विद्वान इसको विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ मानते हैं। भाव, भाषा और छन्द की दृष्टि से यह सबसे प्राचीन है।
यजुर्वेद की दो शाखाएँ प्राप्त होती हैं—(1) शुक्ल यजुर्वेद, (2) कृष्ण यजुर्वेद
फिर शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं–**(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता, (2) काण्व संहिता**
शुक्ल यजुर्वेद कर्मकांड का वेद है। इसमें विभिन्न यज्ञों की विधियों और उनमें पाठ्य मंत्रों का संकलन है। यज्ञ करने वाले ऋत्विज् को अध्वर्यु कहते हैं।
अथर्ववेद—चारों वेदों में चौथा व अंतिम वेद अथर्ववेद है। अथर्ववेद में विभिन्न ऋषियों के दृष्ट मंत्र हैं। अथर्वन् (अथर्वा) ऋषि के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। इसमें अथर्वा ऋषि एवं उनके वंशजों द्वारा दृष्ट मंत्रों की संख्या सबसे अधिक है। इन मंत्रों की संख्या 1772 है।

11. 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' कुत्रेयमुक्तिः?
(a) भगवद्गीतायाम् (b) श्रीमद्भागवते
(c) ईशावास्योपनिषदि (d) कठोपनिषदि

उत्तर–(c)

'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' इति ईशावास्योपनिषदि उक्तिः।

ईशावास्योपनिषद् के इस मंत्र में आत्मतत्त्व का पुनः कथन किया गया है और कहा गया है कि–वह आत्म तत्त्व चलता है, वह नहीं चलता है। वह दूर है, वह समीप भी है। वह इस सबके अंतर्गत है; वह ही इस सबके बाहर भी है। ईशावास्य के ऋषि ने आत्मा की विलक्षणताएँ प्रस्तुत करते हुए उसे एक ही काल में परस्पर विरोधी गुणों से संयोजित किया है। वह आत्मतत्त्व, जो यहां विषयरूप है, चलता है और वही स्वयं नहीं चलता है अर्थात् स्वयं अचल रहकर भी चलायमान सा प्रतीत होता है। वह दूर है, दूर होने के कारण सैकड़ों करोड़ों वर्षों में भी अज्ञानी पुरुषों द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यह मंत्र ईशावास्योपनिषद् का 5वां मंत्र है।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।।

कठोपनिषदि—कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह यजुर्वेद की कृष्ण शाखा के कठ भाग के अंतर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवादरूप में परमात्मा के रहस्यरूप तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें 2 अध्याय है और प्रत्येक अध्याय में 3-3 वल्लियां है।

श्रीमद्भगवद्गीतायाम्—श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व में उल्लिखित व उद्धृत है। इस ग्रंथ में श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद कुरुक्षेत्र युद्ध में महाभारत के रूप में प्रसिद्ध है।

श्रीमद्भागवते—18 पुराणों में श्रीमद्भागवत पुराण की गिनती की जाती है। इसका मुख्य वर्ण्य विषय भक्ति योग है जिसमें कृष्ण को सभी देवों का देव या स्वयं भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। इस पुराण के रचयिता वेद व्यास को माना जाता है।

12. कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसमग्निम् अदात्?

(a) प्रथमवरे (b) द्वितीयवरे
(c) तृतीयवरे (d) चतुर्थवरे

उत्तर–(b)

द्वितीयवरे यमस्त्रिणाचिकेतसमग्निम् अदात्।

स त्वमग्निँ, स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो

प्रब्रूहि त्वँ, श्रछधानाय मह्यम्।

स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त

एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण।।

हे मृत्युदेव वे आप उपर्युक्त स्वर्ग की प्राप्ति के साधनरूप अग्नि को जानते हैं अतः आप मुझ श्रद्धालु को वह अग्निविद्या भली भाँति समझाकर कहिये स्वर्गलोक के निवासी अमरत्व को प्राप्त होते हैं। यह दूसरे वर के रूप में माँगता हूँ।

कठोपनिषद उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है। यह कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा के अंतर्गत है। इसमें नचिकेता और यम के संवाद रूप में परमात्मा के रहस्यमय तत्त्व का बड़ा ही उपयोगी और विशद वर्णन है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में 3-3 वल्लियाँ है। कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय के प्रथम वल्ली के 13वें मंत्र में द्वितीय वर के बारे में विशद वर्णन है।

प्रथम वर—शान्त संकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ।। 1 ।।

तृतीय वर—येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये।
ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः।। 20 ।।

13. अश्वस्य मेध्यस्य पर्वाणि कानि उच्यन्ते?

(a) ऋतवः (b) अहोरात्राणि
(c) नक्षत्राणि (d) मासाश्चार्धमासाश्च

उत्तर–(d)

अश्वस्य मेध्यस्य पर्वाणि मासाश्चार्धमासाश्च उच्यन्ते।

अर्थात् यज्ञ संबंधी अश्व का मास और अर्द्धमास पर्व (संधि स्थान) है। बृहदारण्यकोपनिषद् में यज्ञ संबंधी अश्व के विवेचन में उसके अनेक स्थानों तथा रूप को दृष्टिगत किया गया है। जैसे- उषा यज्ञसंबंधी अश्व का सिर है, वायु प्राण है, वैश्वानर अग्नि खुला हुआ मुख है। अवान्तर दिशायें पसलियाँ है, ऋतुयें अङ्ग हैं, आदि।

14. 'असद् वा इदमग्र आसीत्' — अयं विचारः कुत्र निर्दिष्टः?

(a) ईशावास्योपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर–(b)

'असद् वा इदमग्र आसीत्' — अयं विचारः तैत्तिरीयोपनिषद् निर्दिष्टः।

व्याख्या—प्रकट होने से पहले यह जड़-चेतनात्मक जगत् अव्यक्तरूप में ही था।

सूक्ष्म और स्थूल रूप में प्रकट होने से पहले यह जड़-चेतनमय संपूर्ण जगत् असत्-अर्थात् अव्यक्तरूप में ही था; उस अव्यक्तावस्था से ही यह सत् अर्थात् नामरूपमय प्रत्यक्ष जड़-चेतनात्मक जगत् उत्पन्न हुआ है। परमात्मा ने अपने को स्वयं ही इस जड़-चेतनात्मक जगत् के रूप में बनाया है।

यजुर्वेद की कृष्ण यजुर्वेद शाखा के तैत्तिरीय संहिता से तैत्तिरीय उपनिषद् प्राप्त होता है। तैत्तिरीय आरण्यक के ही तीन प्रपाठकों को तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। यह उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अंतर्गत तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। तैत्तिरीय आरण्यक के दस अध्याय हैं। उनमें से सातवें, आठवें और नवें अध्यायों को ही तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। इसमें सातवें

अध्याय को 'शिक्षावल्ली', 8वें अध्याय को ब्रह्मानन्द वल्ली, 9वें अध्याय को भृगुवल्ली नाम दिया गया है। इसमें तीन प्रपाठकों के स्थान पर तीन वल्ली (अध्याय) हैं।

शिक्षा वल्ली—शिक्षा शास्त्र, आत्मा का निवास, ओम्-ब्रह्म की व्याख्या, सत्य, तप और स्वाध्याय का महत्त्व, दीक्षान्त उपदेश वर्णित विषय है।

ब्रह्मानन्द वल्ली—अन्न, प्राण, मन, विज्ञान और आनन्दमय इन 5 कोशों का वर्णन, ब्रह्म रसरूप है, सूर्य और पुरुष दोनों में एक ही शक्ति है।

भृगुवल्ली—पंचकोशों का वर्णन, अन्न का स्वरूप, अन्न का विराट् रूप।

15. 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' इति कुत्रस्थाउक्तिरियम्—

(a) कठोपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

उत्तर–(a)

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः इति कठोपनिषदि उक्तिरियम्।

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः॥ 10

व्याख्या—क्योंकि इन्द्रियों से शब्दादि विषय बलवान हैं और शब्दादि विषयों से मन पर प्रबल है और मन से भी बुद्धि पर (बलवती) है तथा बुद्धि से महान आत्मा उन सबका स्वामी होने के कारण अत्यंत श्रेष्ठ और बलवान है।

यह मंत्र कठोपनिषद् के पहले अध्याय के तीसरे वल्ली का 10वां मंत्र है।

केनोपनिषद्—यह उपनिषद् सामवेद के **'तलवकार ब्राह्मण'** के अंतर्गत है। तलवकार को जैमिनीय-उपनिषद् भी कहते हैं। इस उपनिषद् में सबसे पहले **'केन'** शब्द आया है। इसी से इसका **'केनोपनिषद्'** नाम पड़ गया। इसे **'तलवकार-उपनिषद्'** और **'ब्राह्मणोपनिषद्'** भी कहते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद्—यजुर्वेद की कृष्ण यजुर्वेद शाखा के तैत्तिरीय संहिता से तैत्तिरीय उपनिषद् प्राप्त होता है। तैत्तिरीय आरण्यक के ही तीन प्रपाठकों को तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है।

बृहदारण्यकोपनिषद्—यह यजुर्वेद के शुक्ल यजुर्वेद संहिता के माध्यन्दिन (वाजसनेयि) व काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अंतिम भाग है। यह आकार में ही विशालकाय नहीं है, अपितु तत्त्वज्ञान में भी अग्रगण्य है। बृहदारण्यक उपनिषद् में छः अध्याय है।

16. उमा हैमवती कस्यामुपनिषदि निर्दिष्टा?

(a) कठोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) ईशावास्योपनिषदि

उत्तर–(c)

उमा-हैमवती-आख्यानं केनोपनिषदि निर्दिष्टा।

सा ब्रह्मेति होवाच। ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वमिति, ततो हैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति॥ 1 ॥ चतुर्थ खण्ड ॥

व्याख्या—उस भगवती उमा देवी ने स्पष्ट उत्तर दिया कि वें तो परब्रह्म परमात्मा हैं, उन परमात्मा की ही इस विजय में तुम अपनी महिमा मानने लगे थे। उमा के इस कथन से ही निश्चयपूर्वक इन्द्र ने समझ लिया कि यह ब्रह्म हैं।

यह उपनिषद् सामवेद की जैमिनीय शाखा से संबन्धित है। इसे 'तलवकारोपनिषद्' भी कहते हैं। इसमें 4 खंड हैं—प्रथम दो खंड पद्यात्मक हैं और शेष दो गद्यात्मक।

1. पद्यमय भाग—यह वेदांत के विकास काल की रचना प्रतीत होती है।
2. गद्यमय भाग—यह भाग अत्यंत प्राचीन है।

प्रथम खंड में उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अंतर बताया गया है। द्वितीय खंड में ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन है।

तृतीय और चतुर्थ खंडों में **'उमा हैमवती के आख्यान'** द्वारा परब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता का विवेचन है। इस उपनिषद् में सबसे पहले **'केन'** शब्द आया है, इसी से इसका **'केनोपनिषद'** नाम पड़ गया। इसे **'तलवकार-उपनिषद्'** और **'ब्राह्मणोपनिषद्'** भी कहते हैं। तलवकार ब्राह्मण का यह नवम अध्याय है। इस उपनिषद् का प्रतिपाद्य विषय परब्रह्म-तत्त्व बहुत ही गहन है। अतएव उसको भली-भांति समझाने के लिए गुरु-शिष्य-संवाद के रूप में तत्त्व का विवेचन किया गया है।

17. शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टाः

(a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर–(d)

शिक्षाङ्गस्य विषयाः षट् उपदिष्टाः।

वैदिक साहित्य का वेदाङ्ग विभाग वेदों से घनिष्ठ संबंध रखने के कारण ही 'वेदाङ्ग' कहलाता है। मंत्र-संहिताओं और ब्राह्मण ग्रंथों को वेद कहा जाता है और उनके अध्ययन में सहायक शास्त्र-**शिक्षा, निरुक्त, कल्प, व्याकरण, छन्दस् और ज्योतिष को वेदाङ्ग** कहा जाता है। वेद का मूल पाठ अत्यधिक पवित्र है, उसमें परिवर्तन न हो, उच्चारण शुद्ध बना रहे और वे मंत्रों के अर्थ का ज्ञान ठीक-ठीक हो जाय—इसके लिये वेदाङ्ग-साहित्य का आविर्भाव हुआ है। वेदाङ्ग-साहित्य में प्रायः सूत्रशैली को अपनाया गया है। अतः कुछ विद्वानों ने इसे **''सूत्र साहित्य''** भी कहा है।

शिक्षा—वेदाङ्गों में शिक्षा वेदाङ्ग का स्थान महत्वपूर्ण है। पुरुष के

अङ्गों से तुलना करते हुए शिक्षा वेदाङ्ग को वेदरूपी पुरुष की घ्राणेन्द्रिय (नासिका) कहा गया है। "**शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य**"
तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा का और उसके छः अंगों का उल्लेख है।
"**शिक्षा व्याख्यास्यामः—वर्णः, स्वरः, मात्रा, बलम्, साम, सन्तानः इत्युक्तः शिक्षाध्यायः।**"
अर्थात् जिस वेदाङ्ग में स्वर और वर्ण आदि के उच्चारण की रीति का उपदेश दिया जाता है, वह शिक्षा वेदाङ्ग है।

18. समानाक्षराणि कियन्ति?

(a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) षट् (d) अष्टौ

उत्तर–(d)

समानाक्षराणि अष्टौ
'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः'
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ये आठ अक्षर समानाक्षर हैं। वर्णमाला के प्रारंभ (आदि) से लेकर आठ अक्षर तक समानाक्षर कहे जाते हैं
चत्वारि—'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि' यह है सन्ध्यक्षर। समानाक्षर के बाद आने वाले चार वर्ण सन्ध्यक्षर कहलाते हैं। ए, ओ, ऐ, औ ये चार वर्ण हैं—सन्ध्यक्षर।

19. सोष्मसञ्ज्ञो वर्णः कः?

(a) क (b) ख
(c) ग (d) ङ

उत्तर–(b)

सोष्मसञ्ज्ञो वर्णः ख।
'युग्मौ सोष्माणौ' यह है सोष्म
वर्गे—वर्गे च द्वितीय—चतुर्थौ यह है—सोष्मवर्ण।
प्रत्येक वर्ग का द्वितीय तथा चतुर्थ वर्ण है—सोष्म वर्ण।
ख, छ, ठ, थ, फ, घ, झ, ढ, ध, भ
क—क वर्ण अघोष वर्ण है।
वर्गे वर्गे च प्रथमावघोषौ
ग—गँ, जँ, डँ, दँ, बँ वर्ण सघोष महाप्राण है।
ङ्—रक्त संज्ञकाः भवन्ति—
अनुनासिक वर्णों की होती है—रक्त संज्ञा।
रक्त संज्ञा होती है—अनुनासिक
प्रत्येक वर्ण का 5वां (अन्तिम) वर्ण होता है—अनुनासिक
ङ्, ञ्, ण्, न्, म् वर्ण हैं—अनुनासिक।

20. शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायामुपदिष्टम्?

(a) शाकलशाखायाम् (b) माध्यन्दिनीयशाखायाम्
(c) शौनकशाखायाम् (d) राणायनीयशाखायाम्

उत्तर–(b)

शिवसङ्कल्पसूक्तं माध्यन्दिनीयशाखायाम् उपदिष्टम्।
शुक्ल यजुर्वेद के माध्यन्दिन—वाजसनेयिसंहिता का 34वां अध्याय शिवसंकल्प सूक्त है। शिवसंकल्पसूक्त के ऋषि याज्ञवल्क्य हैं। शिवसंकल्प सूक्त के देवता मन है। शिवसंकल्पसूक्त का छन्द त्रिष्टुप्। शिवसंकल्प सूक्त के प्रत्येक मंत्र के अंत में आता है—**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।** शिवसंकल्प सूक्त में कुल मंत्र 6 है।
यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। 6
इनमें **'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'** दिया गया है अर्थात् हमारा मन शुभ विचारों से युक्त हो। यह सूक्त मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसमें मन का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। मन जागते और सोते समय दूर तक जाता है। यह अतितीव्रगामी है। यह सर्वोत्तम ज्योति है। इसके द्वारा ही संसार के सारे कर्म किए जाते हैं। यह समस्त ज्ञान और बुद्धि का आश्रय स्थान है। यह विश्व की समस्त चेतना का आधार है।

21. अग्निहोत्रम् अनुष्ठीयते—

(a) प्रतिमासम् (b) प्रतिवर्षम्
(c) प्रतिदिनम् (d) प्रतिपक्षम्

उत्तर–(c)

'अग्निहोत्रम्' प्रतिदिनम् अनुष्ठीयते। अग्निहोत्र प्रतिदिन प्रायः और सायं किया जाने वाला यज्ञ है।
प्रधानतया यज्ञ दो प्रकार के होते है—1. श्रौत, 2. स्मार्त
श्रुति प्रतिपादित यज्ञों को श्रौत यज्ञ, स्मृति प्रतिपादित यज्ञों को स्मार्त यज्ञ कहते हैं। श्रौत यज्ञ में केवल श्रुतिप्रतिपादित मंत्रों का प्रयोग होता है। अग्निहोत्र-श्रौत यज्ञ है।
ऐतरेय ब्राह्मण में यज्ञ के पाँच प्रकार बताये गये हैं।
स एष यज्ञः पञ्चविधः, अग्निहोत्रम् दर्शपूर्णमासौ चातुर्मास्यानि, पशुः सोमः।।
और कहीं 21 यज्ञों का वर्णन मिलता है।
सात पाक यज्ञ (ये गृह्ययाग हैं), सात हविर्यज्ञ और सात सोम याग (ये श्रौतयाग हैं)
सात हविर्यज्ञ में पहला ही यज्ञ अग्निहोत्र यज्ञ है। अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास आदि श्रौत कर्म (श्रौत यज्ञ) है।

- अग्निहोत्र में मुख्य द्रव्य दुग्ध, घृत, सामग्री, चावल, जौ- आदि की आहुति दी जाती है।
- अग्निहोत्र में 'अग्नि' मुख्य देवता है, प्रजापति अङ्ग देवता है।
- प्रातःकाल सूर्य मुख्य देवता है और प्रजापति अङ्ग देवता है।
- अग्निहोत्र श्रौत कर्म ही है।
- अग्निहोत्र कर्म का यथासंभव यजमान को स्वयं अनुष्ठान करना चाहिए।

22. निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः कः?

(a) अस्ति (b) वर्धते
(c) विनश्यति (d) विपरिणमते

उत्तर–(d)

निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः विपरिणमते।
मुख्य रूप से छः प्रकार के क्रियाओं के भेद विकार होते हैं। यह वार्ष्यायणि आचार्य का मत है। **1. 'जायते'** उत्पन्न होता है, **2. 'अस्ति'** रहता है, **3. 'विपरिणमते'** परिवर्तित होता है, **4. 'वर्धते'** बढ़ता है, **5. 'अपक्षीयते'** क्षीण होता है और **6. 'विनश्यति'** नष्ट होता है।
इनमें से 1. उत्पन्न होना वस्तु के प्रथम आविर्भाव के आरंभ को सूचित करता है, बाद की क्रियाओं/अवस्थाओं को न कहता है और न निषेध करता है। 2. यह उत्पन्न हुए पदार्थ की स्थिति को कहता है। 3. विपरिणाम तत्त्व का नाश हुए बिना उसमें होने वाले परिवर्तन को कहता है। 4. वृद्धि अपने शरीर की वृद्धि अथवा सांयोगिक बाहरी पदार्थों के शरीर से बढ़ रहा है और विजय से बढ़ रहा है। 5. इसी को उल्टा कर देने से क्षीण होने की व्याख्या भी समझ लेनी चाहिए। 6. विनाश अंतिम क्रिया के आरंभ को कहता है, पूर्व क्रिया को न कहता है, न उसका निषेध करता है। मुख्य रूप से ये छः ही क्रियाओं के भेद होते हैं।
षड् भावविकाराः भवन्तीति वार्ष्यायणिः। जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति।।

23. अक्नोपनः कः भवति?

(a) आदित्यः (b) अश्वः
(c) अग्निः (d) आचार्यः

उत्तर–(c)

अक्नोपनः अग्निः भवति।
निरूक्तकार यास्क आचार्य ने अग्नि शब्द का निर्वचन करते हुए लिखते हैं कि–
अग्निः – अग्रणीः भवति, अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते, अङ्गं नयति सन्नममानः। अक्नोपनः भवति – इति स्थौलाष्ठीविः।
अतः अग्नि **'अगुआ'** होता है अथवा यज्ञों में सर्वप्रथम ले जाया जाता है, अथवा कोई भी वस्तु यथा तृण, काष्ठादि दी जाने पर उसे अपना अंग बना लेते हैं, अतः अग्नि कहलाता है। स्थौलाष्ठीवि आचार्य के मतानुसार अग्नि अक्नोपन होता है। अक्नोपन का अर्थ अस्नेहन विरुक्षीकरण है। अग्नि सब रसों को सूखा कर देता है, भिगाता नहीं है, स्निग्ध नहीं करता है। अतः अग्नि कहलाता है।
अश्व–''अश्नुतेऽध्वानम्। महाशनो भवतीति वा'' यह अश्व मार्ग को व्याप्त कर लेता है अथवा बहुत खाने वाला होता है, अतः उसे अश्व कहते है।
आदित्य–आदत्ते रसान, आदत्ते भासं ज्योतिषाम्, आदीप्तो भासेति वा। अतः यह रसों को लाता है, प्रकाश से आदीप्त है, अदिति का पुत्र है, अतः आदित्य कहलाता है। ज्योतिपुंजों का प्रकाश लाता है।

24. 'चित्' इति निपातो वर्तते–

(a) कुत्सार्थे (b) निषेधार्थे
(c) अभावार्थे (d) विकल्पार्थे

उत्तर–(a)

'चित्' इति निपातो कुत्सार्थे वर्तते।
निरूक्त के प्रथम अध्याय के प्रथम खंड में पदों के नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात रूप के चार विभाग किये थे।
अथ निपाताः। उच्चावचेष्वर्थेषु नियतन्ति। अव्युपमार्थे अपि कर्मोपसंग्रहार्थे, अपि पदपूरणाः।।
निपात भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध कराते हैं इसलिए 'निपात' कहलाते हैं। उन निपातों के तीन भेद हैं। कुछ निपात उपमार्थक होते हैं, कुछ 2 अर्थों का संग्रह कराने वाले [कर्मोपसंग्रहार्थक] भी होते है और कुछ केवल पदपूरक भी होते है।
'चित्' यह निपात अनेकार्थक है।
'दधिचित्' इत्युपमार्थे। कुल्माषांश्चिदाहर इत्यवकुत्सिते। कुल्माषाः कुलेषु सीदन्ति।
'दधिचित्' दही के समान (शुभ्र) यह उपमार्थ में चित् का लौकिक प्रयोग है। और तो तू क्या खिलावेगा, जा कुल्माष (निकृष्ट धान्य) ही ले आ। यह निन्दा (अवकुत्सित) अर्थ में चित् का प्रयोग है। कुल्माष कुलों में रहते हैं।
निषेधार्थे–'मा' इति प्रतिषेधे। 'मा कार्षीः मा हार्षीः' इति च।
'मा' यह निपात प्रतिषेध अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे–'मत करो', 'मत ले जाओ'। यहां मा निषेधार्थ में आया है।

25. वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च केषां उपदेशः भवति?

(a) प्रत्ययानाम् (b) धातूनाम्
(c) सन्धीनाम् (d) वर्णानाम्

उत्तर–(d)

वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च वर्णानाम् उपदेशः भवति।
अनुबन्धकरणार्थश्च वर्णानामुपदेशः अनुबन्धानासङ्क्ष्यामीति। स एष वर्णानामुपदेशो वृत्तिसमवायार्थश्चानुबन्धकरणार्थश्च। वृत्ति-समवायश्चानुबन्धकरणं च प्रत्याहारार्थम्।
कि अब अनुबन्ध लगाने के लिए वर्णों का उपदेश करना चाहिए क्योंकि आचार्य का यह निश्चय है कि मैं अनुबन्ध लगाऊँगा। तो बिना वर्णों का उपदेश किये अनुबन्ध का लगाना संभव नहीं।

इसलिए यह जो वर्णों का उपदेश है, सो एक तो शास्त्र की प्रवृत्ति के लिए किसी विशेष क्रम से वर्णों के बोधन के लिए है और दूसरे अनुबन्धों के लगाने के लिए है। शास्त्र की प्रवृत्ति के लिए जो समवाय (विशेष क्रम से वर्णों का पढ़ा जाना) और अनुबन्ध का लगाना है सो दोनों बातें प्रत्याहार के लिए उपयोगी होती हैं।

इष्टबुध्यर्थश्च वर्णानामुपदेशः।

कि और वैयाकरणों को जैसा वर्णोच्चारण अभिलषित है वैसे ही उच्चारण वाले वर्णों के बोधन के लिए वर्णों का उपदेश कर्तव्य है।

26. अनुदात्तेत उपदेशे यो ङित् तदन्ताच्च धातोः लस्य स्थाने किं स्यात्?

(a) परस्मैपदम्	(b) आत्मनेपदम्
(c) प्रातिपदिकम्	(d) आर्धधातुकम्

उत्तर–(b)

अनुदात्तेत उपदेशे यो ङित् तदन्ताच्च धातोः लस्य स्थाने आत्मनेपदम् स्यात्। निम्नलिखित स्थानों पर अनुदात्त स्वर होता है–

– क्रियापद (तिङन्त) यदि वाक्य या पद के प्रारम्भ में नहीं है तो वह अनुदात्त होगा।
– संबोधन यदि वाक्य के प्रारम्भ में नहीं है, तो अनुदात्त होगा।

27. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(A) दूरान्तिकार्थैः	**(1) डारौरसः**
(B) वयसि	**(2) षष्ठ्यन्यतरस्याम्**
(C) लुटः प्रथमस्य	**(3) लिटि**
(D) कृञ्चानुप्रयुज्यते	**(4) प्रथमे**

	A	B	C	D
(a)	3	4	1	2
(b)	2	4	1	3
(c)	2	3	4	1
(d)	4	3	2	1

उत्तर–(b)

(अ) दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्।

दूरवाची तथा समीपवाची शब्दों के योग में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है तथा पक्ष में पञ्चमी होती है।

उदा.–ग्रामाद् दूरम्, ग्रामस्य दूरम्, ग्रामाद् अन्तिकम्, ग्रामस्य अन्तिकम्।

(ब) वयसि प्रथमे।

प्रथम अवस्था वाच्य होने पर मुख्य अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् होता है।

उदा.–कुमार व किशोर आदि शब्द प्रथमाऽवस्था के वाचक हैं। कुमारी / किशोरी।

(स) लुट : प्रथमस्य डारौरसः।

लुट् के प्रथम पुरुष में (तिप् आदि के स्थान पर) क्रमशः डा, रौ तथा रस् आदेश होते है।

प्रथम पुरुष में तीन प्रत्यय होते हैं और आदेश भी तीन होते हैं। अतः यथा-संख्य नियम के द्वारा एकवचन में 'डा', द्विवचन में 'रौ' तथा बहुवचन में 'रस्' होता है।

उदा.–कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तारः।

अध्येता, अध्येतारौ, अध्येतारः।

(द) कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि।

आम् प्रत्यय के पश्चात् कृञ् का भी प्रयोग किया जाता है, लिट् प्रत्यय परे रहते।

उदाहरण–पाचयाञ्चकार, पाचयाम्बभूव, पाचयामास

28. ''कृत्यल्युटो बहुलम्'' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्?

(a) प्रयाणीयम्	(b) स्नानीयं चूर्णम्
(c) प्रभव्यम्	(d) प्रयाम्यम्

उत्तर–(b)

''कृत्यल्युटो बहुलम्'' इति सूत्रस्योदाहरणं स्नानीयं चूर्णम्।

कृत्यसंज्ञक प्रत्यय तथा ल्युट् प्रत्यय बहुलता से (विभिन्न अर्थों में) होते हैं।

उदा.–स्नानीयम्। दानीयः।

(1) स्नात्यनेनेति–इस विग्रह के अनुसार करण अर्थ में अनीयर् हुआ। 'तयोरेवकृत्य॰' से भाव तथा कर्म में ही कृत्यसंज्ञक प्रत्यय प्राप्त था। 'बहुलम्' के द्वारा करण अर्थ में हुआ।

(2) दीयतेऽस्मै–दानीयो (ब्राह्मणः)–सम्प्रदान में अनीयर् हुआ।

29. ''प्राङ्मुखी'' इत्यत्र ङीप् केन सूत्रेण विधीयते?

(a) नखमुखात्संज्ञायाम्	(b) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
(c) क्रीतात्करणपूर्वात्	(d) दिक्पूर्वपदान्ङीप्

उत्तर–(d)

''प्राङ्मुखी'' इत्यत्र 'ङीप् दिक्पूर्वपदान्ङीप् सूत्रेण विधीयते।

दिक्वाची शब्द है पूर्व पद में जिसके, ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीप् होता है।

दिक्पूर्वपदान्ङीप् सूत्र में **'स्वाङ्गाच्चोप॰'** इत्यादि सूत्रों के द्वारा प्राप्त विधि व निषेध सभी की अपेक्षा है।

उदा.–प्राङ्मुखी, प्राङ्मुखा–यहाँ ङीप् व पक्ष में टाप् हुआ है।

इसी प्रकार–**प्राङ्नासिकी, प्राङ्नासिका।**

30. शब्दस्याभिव्यक्तेः ऊर्ध्वं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ध्वनयः समुपोहन्ते, तैः कः न भिद्यते?

(a) जीवात्मा	(b) स्फोटात्मा
(c) परमात्मा	(d) काव्यात्मा

उत्तर–(b)

शब्दस्याभिव्यक्तेः ऊर्ध्वं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ध्वनयः समुपोहन्ते, तैः स्फोटात्मा न भिद्यते।
प्राकृत-ध्वनियों के द्वारा शब्द (स्फोट) की अभिव्यक्ति हो जाने पर कुछ अतिरिक्त काल तक जो वैकृत-ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं, उनसे वृत्तियों में ही भेद पड़ता है, स्फोटात्मक शब्द में कोई अंतर नहीं आता। प्राकृत-ध्वनियों का काल कृत भेद स्फोट में औपचारिक रूप से मान लिया जाता है, क्योंकि उसके बिना तो स्फोट की अभिव्यक्ति ही नहीं होती। स्फोट और प्राकृत-ध्वनि अत्यधिक संसृष्ट होते हैं परंतु वैकृत-ध्वनियों की स्थिति ऐसी नहीं है। जैसे प्रकाश अपनी उत्पत्ति या उपस्थिति के पहले क्षण में कमरे में रखी हुई छोटी-बड़ी वस्तुओं को प्रकाशित कर देता है। वस्तुएँ छोटी-बड़ी रंग बिरंगी जैसी भी हैं; वह सब पहले ही क्षण में स्पष्ट हो जाता है।
शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्तेर्वृत्तिभेदं तु वैकृताः।
ध्वनयः समुपोहन्ते स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते।। 77 ।।

31. प्रयागे समुद्रगुप्तस्य स्तम्भ — अभिलेख रचयिता कः?
(a) तिलभट्टकः (b) हरिषेणः
(c) ध्रुवभूतिः (d) रविकीर्तिः
उत्तर–(b)

प्रयागे समुद्रगुप्तस्य स्तम्भ-अभिलेख रचयिता हरिषेणः अर्थात् प्रयाग समुद्रगुप्त स्तम्भ-अभिलेख के रचयिता हरिषेण हैं।

32. अध्यारोपः ……….. उच्यते?
(a) वस्तुनि अवस्त्वारोपः (b) स्मृतिरूपः
(c) लोकानुभवः (d) अवस्तुनि वस्त्वारोपः
उत्तर–(a)

अध्यारोपः वस्तुनि अवस्त्वारोपः उच्यते।
(कभी भी) सर्वभाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान, वस्तु पर अवस्तु का आरोप करना ही अध्यारोप है। वस्तु है, सच्चिदानन्द अद्वितीय ब्रह्म और अज्ञान से प्रारंभ होने वाले समस्त जड़-पदार्थों का समूह अवस्तु है। अज्ञात् सत् या असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक ज्ञान का विरोधी, भावरूप कुछ है, ऐसा (वृद्धजन) कहते हैं। मैं अज्ञानी हूँ इत्यादि अनुभव और (उन ब्रह्मवेत्ताओं ने ध्यान योग में स्थित होकर) अपने सत्त्वादि गुणों से आलिङ्गित, स्वयं प्रकाश आत्मा की (माया) शक्ति (का साक्षात्कार किया) (श्वेताश्वतर 113) इत्यादि श्रुति इसमें प्रमाण है।
असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद् वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।

33. स्थूलशरीराणि कतिविधानि वेदान्तमते?
(a) द्विविधानि (b) चतुर्विधानि
(c) पञ्चविधानि (d) विविधानि
उत्तर–(b)

स्थूलशरीराणि चतुर्विधानि वेदान्तमते
इन पञ्चीकृत भूतों से क्रमशः ऊपर-ऊपर विद्यमान भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्—इन नामों वाले (ऊपर के) लोक तथा क्रमशः नीचे-नीचे विद्यमान अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल—इन नामों वाले (नीचे के) लोक, समस्त ब्रह्माण्ड उसके भीतर रहने वाले चतुर्विध स्थूल शरीर और उनके (निर्वाहक) योग्य भोजन-पान उत्पन्न होते है।
चार प्रकार के स्थूल शरीर हैं—जरायुज, अण्डज, उद्भिज्ज और स्वेदज। जरायु अर्थात् गर्भाशय से उत्पन्न होने वाले मनुष्य और पशु आदि जरायुज हैं। अण्डों से उत्पन्न होने वाले पक्षी और सर्प आदि अण्डज हैं। धरती को फोड़कर उत्पन्न होने वाले तृण और वृक्ष आदि उद्भिज्ज हैं तथा पसीने से पैदा होने वाले जुएँ और मच्छर आदि स्वेदज हैं।
एतेभ्यः पञ्चीकृतेभ्यो भूतेभ्यो भूर्भुवः रचर्महर्जनस्तपः सत्यमित्ये तन्नामकानामुपर्युपरि विधमानानामतत्रवितलं सुतलरसातलतलातलमहातल पताल नामकानामधोऽधो विद्यमानानां लोकानां ब्रह्माण्डस्य तदन्तर्वर्तिचतुर्विधस्थूल शरीराणां तदुचितानामन्नपानादीनां चोत्पत्तिर्भवति।

34. 'व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्' इत्यत्र 'ज्ञ' शब्देन कः बोद्धव्यः?
(a) प्रकृतिः (b) सूक्ष्मशरीरम्
(c) अहङ्कारः (d) पुरुषः
उत्तर–(d)

'व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्' इत्यत्र 'ज्ञ' शब्देन पुरुषः बोद्धव्यः।
वैदिक उपाय भी दृष्ट उपाय के समान है, क्योंकि वह अविशुद्ध दोष, क्षयदोष और अतिशयदोष से युक्त होता है। अतः (दुःखनाशक) वैदिक उपायों की अपेक्षा उससे विपरीत उपाय प्रशस्यतर है, क्योंकि वह व्यक्त अव्यक्त (मूलप्रकृति) और ज्ञ (पुरुष) के विज्ञान से होता है।
दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।
तद्विपरीतः श्रेयान् अव्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्।। 2 ।।

35. एकादशेन्द्रियाणि कस्मात् समुद्भूतानि सांख्यमते?
(a) अहङ्कारात् (b) आकाशात्
(c) पुरुषात् (d) पञ्चमहाभूतात्
उत्तर–(a)

एकादशेन्द्रियाणि अहङ्कारात् समुद्भूतानि सांख्यमते।
अभिमान, अहंकार उस (अहंकार) से ही ग्यारह का समूह (5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ तथा मन) तथा पञ्चतन्मात्राएँ (शब्द, स्पर्श रूप, रस और गन्ध) दो प्रकार की सृष्टि उत्पन्न होती है।
अहंकार से उत्पन्न होने वाली दो प्रकार की सृष्टि—**'सात्त्विक'**

और '**तामस**' का उल्लेख किया गया है इसी दो प्रकार की सृष्टि में सत्त्वगुण प्रधान अहंकार से ग्यारह इन्द्रियों का समूह उत्पन्न होता है। जिनकी संख्या कुल मिलाकर ग्यारह है। इसी का कथन करने के लिए ग्रन्थकार ने कहा—एकादशकश्च गणः (प्रवर्तते)।
प्रकृति—भेदों का मूल कारण प्रकृति (अव्यक्त) है क्योंकि (सृष्टि के समय) कार्य का आविर्भाव कारण से होता है और (प्रलय में) विश्वरूप कार्य का अपने कारण में तिरोभाव (विलय) हो जाता है, क्योंकि कार्य की प्रवृत्ति (उत्पत्ति) कारण की शक्ति से होती है, क्योंकि कार्य परिमित होता है, क्योंकि कार्य में सुखदुःखमोहरूपता का समानरूप से समन्वय होता है।
सूक्ष्म शरीर—यह लिङ्ग (शरीर) पूर्व में (सृष्टि के आदि में) उत्पन्न होता है, इसकी गति अव्याहत अकुण्ठित होती है, प्रत्येक पुरुष के साथ नियत रूप से रहता है, महत् तत्त्व से प्रारंभ करके सूक्ष्म तन्मात्रपर्यंत अठारह अवयवों वाला होता है, स्थूल शरीर बिना भोग प्रदान करने में असमर्थ होता है, भावों की वासना से अधिवासित होता है, इसीलिए संसरण करता है तथा लिङ्ग (शरीर) कहा जाता है।

36. पूर्वमीमांसामते धर्मः कः?
(a) सदाचारः (b) यागादिः
(c) अपवर्गः (d) अभ्युदयप्राप्तिः

उत्तर–(b)

पूर्वमीमांसामते धर्मः यागादिः।
लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह पूर्व मीमांसा ग्रन्थ में धर्म का लक्षण देते हुए कहते हैं कि—**यागादिरेव धर्मः।** याग, यज्ञ आदि क्रियाएं ही धर्म हैं। **तल्लक्षणं वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म इति।** उसका लक्षण है—जो वेद द्वारा प्रतिपाद्य हो, प्रयोजन वाला हो और सार्थक इष्टसाधक हो वह धर्म है।
अपवर्ग—भारतीय दर्शन में अपवर्ग को ही कैवल्य कहते हैं और कैवल्य को मोक्ष की संज्ञा दी गयी है।
ईश्वरकृष्णकृत सांख्यकारिका में श्लोक के माध्यम से कैवल्य को व्याख्यायित किया है।
प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ।
ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति।। 68 ।।
शरीर-पात होने पर, भोग एवं अपवर्ग-दोनों ही प्रयोजनों (पुरुषार्थों) के पूर्व से ही सिद्ध रहने के कारण प्रकृति के निवृत्त हो जाने से पुरुष ऐकान्तिक और आत्यन्तिक (मोक्ष/मुक्ति) प्राप्त कर लेता है।

37. अर्थसंग्रहमते वेदभागः कतिविधः?
(a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर–(d)

अर्थसंग्रहमते 'वेदभागः' पञ्चविधः।
लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह पूर्वमीमांसा ग्रन्थ में वेदभाग का भेद करते हुये बताते हैं—
अपौरुषेयं वाक्यं वेदः—अपौरुषेय वाक्य वेद है।
स च विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेध-अर्थवाद भेदात् पञ्चविधः।
और वह विधि, मंत्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद के भेद से पाँच प्रकार का होता है।
द्विविध—तर्कसंग्रह के अनुसार अनुमान के दो भेद हैं—(1) परार्थानुमान, (2) स्वार्थानुमान
इसी अनुसार, गंधवती पृथ्वी के भी दो भेद हैं—(1) नित्य, (2) अनित्य
त्रिविध कारण—तर्कसंग्रह में कारण के तीन भेदों को बताया है—(1) समवाय, (2) असमवाय, (3) निमित्त
चतुर्विध—तर्कसंग्रह ग्रंथ के अनुसार यथार्थानुभव के चार भेद होते हैं—**प्रत्यक्ष-अनुमिति-उपमिति-शाब्द**
इसी अनुसार, यथार्थानुभव के करण भी चार प्रकार के होता हैं—(1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान, (3) उपमान, (4) शब्द

38. कीदृशो भवति प्रयोगविधिः?
(a) अङ्गप्रधाननिबन्धबोधकः (b) कर्मस्वरूपमात्रबोधकः
(c) प्रयोगप्राशुभावबोधकः (d) कर्मजन्मफलस्वाम्यबोधकः

उत्तर–(c)

प्रयोगप्राशुभावबोधकः भवति प्रयोग विधिः।
अर्थसंग्रहकार लौगाक्षिभास्कर ने विधि के चार भेद बताये हैं—**उत्पत्ति, विनियोग, अधिकार, प्रयोगविधि**
इसमें उन्होंने प्रयोग विधि का लक्षण देते हुये कहते हैं कि—**प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः।**
अनुष्ठान की शीघ्रता का बोध कराने वाली विधि प्रयोग विधि है।
कर्म स्वरूपमात्रबोधक—तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधि उत्पत्ति विधि।
अर्थसंग्रहकार लौगाक्षिभास्कर कहते हैं कि—उन में केवल कर्म के स्वरूप का बोध कराने वाली विधि उत्पत्ति विधि है। जैसे—अग्निहोत्रं जुहोति।
कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधक—कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधि अधिकार विधिः।
कर्मजन्य फल की स्वाम्यबोधक विधि 'अधिकार विधि' है।
कर्मजन्यफलस्वाम्य का अर्थ है—'**कर्मजन्यफलभोक्तृता**'
जैसे—'**यजेत् स्वर्गकामः**'

39. परिसंख्याविधेरुदाहरणं किम्?
(a) यजेत स्वर्गकामः (b) दध्ना जुहोति
(c) व्रीहीन् अवहन्ति (d) पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः

उत्तर–(d)

परिसंख्याविधेरुदाहरणं पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः।
अर्थसंग्रहकार लौगाक्षिभास्कर विधि के तीसरे विभाजन का भेद बताता है–**(1) अपूर्व विधि, (2) नियम विधि, (3) परिसंख्याविधि**
(3) परिसंख्याविधि का लक्षण—उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितरव्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्याविधि।
यथा—पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या।
दो पदार्थों की एक साथ प्राप्ति होने पर दूसरे की व्यावृत्ति (निवृत्ति) परक-विधि परिसंख्या विधि कहलाती है।
जैसे–**पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या ब्रह्मक्षत्रेण राघव।**
शशकः शल्लकी गोधा खड्गी कूर्मोऽथपञ्चमाः।।
हे राघव! खरगोश, सिंही, गोह, गैंडा और कछुआ–ये पांच पञ्चनख प्राणी ब्राह्मण और क्षत्रिय के द्वारा भक्ष्य है।
यजेत् स्वर्गकाम—कर्मजन्यफल की स्वाम्यबोधक विधि 'अधिकार विधि' है।
जैसे–**यजेत् स्वर्गकामः।**
दध्ना जुहोति—यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन गुण मात्रं विधत्ते। यथा—दध्ना जुहोति।
जहाँ पर कर्म (यागादि) दूसरे प्रमाण से प्राप्त हो, वहाँ पर विधि उस कर्म को उद्दिष्ट करके गुणमात्र का विधान करती है।
जैसा–दध्ना जुहोति, दधि (दही) के द्वारा होम का सम्पादन करें।।

40. श्रीरामचन्द्रः एनं व्याकरणशास्त्रज्ञ इति प्रशंसति—
(a) सुग्रीवम् (b) भरतम्
(c) लक्ष्मणम् (d) हनूमन्तम्
उत्तर–(d)

श्रीरामचन्द्रः हनूमन्तम् व्याकरणशास्त्रज्ञं प्रशंसति।
श्रीराम ने कहा–सुमित्रानन्दन! ये महामनस्वी वानरराज सुग्रीव के सचिव हैं और उन्हीं के हित की इच्छा से यहाँ मेरे पास आये हैं। लक्ष्मण! इन शत्रुदमन सुग्रीव सचिव कपिवर हनुमान् से, जो बात के मर्म को समझने वाले हैं, तुम स्नेहपूर्वक मीठी वाणी में बातचीत करो।
जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया था जो सामवेद विद्वान् नहीं है वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता।
निश्चय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है, क्योंकि बहुत-सी बातें बोल जाने पर भी इनके मुँह से कोई अशुद्धि नहीं निकली
इस प्रकार श्रीरामचन्द्र जी ने वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धाकाण्ड के तीसरे सर्ग में 25-35 के बीच के श्लोकों में हनुमान के व्याकरण शास्त्र ज्ञान की प्रशंसा की है।
सुग्रीवम्—सुग्रीव रामायण के एक प्रमुख पात्र हैं। वह बालि के अनुज हैं। हनुमान के कारण भगवान श्री रामचन्द्र जी से उनकी मित्रता हुई। वाल्मीकि रामायण एवं श्रीरामचरितमानस दोनों में ही सुग्रीव जी का वर्णन वानरराज के रूप में किया गया है।
लक्ष्मणम्—लक्ष्मण रामायण के एक आदर्श पात्र हैं। इनको शेषनाग का अवतार माना जाता है। रामायण के अनुसार, लक्ष्मण राजा दशरथ के तीसरे पुत्र थे, उनकी माता सुमित्रा थीं। वे राम के भाई/अनुज थे।
भरत—भरत रामायण के अनुसार, राजा दशरथ के दूसरे पुत्र थे, उनकी माता कैकेयी थी। वे राम जी के भाई थे। लक्ष्मण और शत्रुघ्न इनके अन्य भाई थे।

41. एनं 'शतसाहस्रीसंहिता' इति ब्रुवन्ति विपश्चितः—
(a) श्रीमद्रामायणम् (b) महाभारतम्
(c) विष्णुपुराणम् (d) श्रीमद्भागवतम्
उत्तर–(b)

महाभारतम् 'शतसाहस्रीसंहिता' इति ब्रुवन्ति विपश्चितः—
गुप्त-काल के एक शिलालेख (442 ई.) में महाभारत को 'शतसाहस्री संहिता' कहा है। 450 से 500 ई. के दानपत्रों में महाभारत को 'शतसाहस्रामां–
संहिताया वेदव्यासेनोक्तम्' कहा गया है। कम्बोडिया के 600 ई. के एक शिलालेख में महाभारत का उल्लेख है।
रामायण—रामायण काव्य का आदिरूप है जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। वाल्मीकि को भी 'आदिकवि' कहा गया है। रामायण सात काण्डों में विभक्त है। वंशस्थ आदि सुन्दर–गेयात्मक छन्दों में निबद्ध है। सर्वाधिक संख्या अनुष्टुप् छन्द की है जिसे 'श्लोक' भी कहा जाता है। संपूर्ण ग्रन्थ में 24 सहस्र पद्य या श्लोक हैं। इसीलिए इसे 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' कहते हैं।
श्रीमद्भागवतपुराण—18 पुराणों में श्रीमद्भागवतपुराण की गिनती की जाती है। इसका मुख्य वर्ण्य विषय भक्तियोग है जिसमें कृष्ण को सभी देवों का देव या स्वयं भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। इस पुराण के रचयिता वेद व्यास को माना जाता है।

42. ''अहल्याशापविमोचनम्'' कस्मिन् काण्डे वर्णितम्—
(a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) बालकाण्डे (d) सुन्दरकाण्डे
उत्तर–(c)

''अहल्याशापविमोचनम्'' बालकाण्डे वर्णितम्।
रामायण के बालकाण्ड में वर्णित कथा के अनुसार राम और लक्ष्मण ऋषि विश्वामित्र के साथ मिथिलापुरी के वन उपवन आदि देखने के लिये निकले तो उन्होंने एक उपवन में एक निर्जन स्थान देखा। राम बोले ''भगवन्! यह स्थान देखने में तो आश्रम जैसा

दिखाई देता है, किंतु क्या कारण है कि यहाँ कोई ऋषि या मुनि दिखाई नहीं देते?'' विश्वामित्र जी ने बताया, यह स्थान कभी महर्षि गौतम का आश्रम था। वे अपनी पत्नी के साथ यहाँ रहकर तपस्या करते थे। एक दिन जब गौतम ऋषि आश्रम के बाहर गये हुये थे तो उनकी अनुपस्थिति में इन्द्र ने गौतम ऋषि के वेश में आकर अहल्या से प्रणय याचना की। अहल्या ने इन्द्र को पहचान लिया और स्वीकृति नहीं दी। जब इन्द्र अपने लोक लौट रहे थे तभी अपने आश्रम को वापस आते हुए गौतम ऋषि की दृष्टि इन्द्र पर पड़ी जो उन्हीं का वेश धारण किये हुए था। क्रोधवश उन्होंने इन्द्र को शाप दे दिया। इसके बाद उन्होंने अपनी पत्नी को शाप दिया कि तू हजारों वर्षों तक केवल हवा पीकर कष्ट उठाती हुई यहाँ राख में पड़ी रहे। जब राम इस वन में प्रवेश करेंगे तभी उनकी कृपा से तेरा उद्धार होगा। तभी तू अपना पूर्व शरीर धारण करके मेरे पास आ सकेगी।

43. अक्षुद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान्।
कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते।
इत्यस्मिन् श्लोके प्रस्तुतीकृतः 'कार्ष्णः वेदः' कः?

(a) भगवद्गीता (b) जानकीहरणम्
(c) श्रीमद्रामायणम् (d) महाभारतम्

उत्तर–(d)

इत्यस्मिन् श्लोके प्रस्तुतीकृतः—'कार्ष्णवेदः महाभारतम्।
अक्षुद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान्।
कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते।।
महाभारतम्

विष्णुपुराण—'पुराणं पञ्चलक्षणम्' के प्राचीन स्वरूप की इसमें रक्षा की गयी है। रामानुज ने इसे प्रमाण ग्रन्थ के रूप में उद्धृत किया है। इसमें विष्णु को परमदेवता के रूप में निरूपित किया गया है। यह पुराण छह खण्डों में विभक्त है, अध्यायों की संख्या 126 है। यद्यपि पुराणों में इसकी श्लोक संख्या 23 या 24 सहस्र कही गयी है किन्तु इसके मुद्रित संस्करणों में प्रायः 6000 ही श्लोक मिलते हैं।

44. भगवतः श्रीकृष्णस्य बृहच्चरित्रं कस्मिन् पुराणे वर्णितम्?

(a) विष्णुपुराणे (b) भागवतपुराणे
(c) वामनपुराणे (d) देवीभागवते

उत्तर–(b)

भगवतः श्रीकृष्णस्य बृहच्चरित्रं भागवतपुराणे वर्णितम्।

विष्णुपुराण—'पुराण पञ्चलक्षणम्' के प्राचीन स्वरूप की इसमें रक्षा की गयी है। रामानुज ने इसे प्रमाण-ग्रन्थ के रूप में उद्धृत किया है। इसमें विष्णु को परमदेवता के रूप में निरूपित किया गया है। यह पुराण छह खण्डों में विभक्त है।

भागवतपुराण—18 पुराणों में श्रीमद्भागवतपुराण की गिनती की जाती है। इसका मुख्य वर्ण्य विषय भक्ति योग है जिसमें कृष्ण को सभी देवों का देव या स्वयं भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। इस पुराण के रचयिता वेद व्यास को माना जाता है।

वामनपुराण—इसमें विष्णु के वामनावतार के वर्णन से ग्रन्थारम्भ होता है तथा कई अध्यायों में (24-32) विष्णु के अवतारों का सामान्य वर्णन है। किन्तु इसका एक बड़ा भाग शिवलिङ्ग की पूजा, गणेश-कार्तिकेय के आख्यान तथा शिव-पार्वती के विवाह से संबद्ध है। अतएव यह पुराण अपने मूल रूप में नहीं मिलता है।

45. पुराणमिदमष्टादशमहापुराणेष्वन्यतमं न भवति—

(a) भागवतमहापुराणम् (b) विष्णुपुराणम्
(c) नृसिंहपुराणम् (d) ब्रह्माण्डपुराणम्

उत्तर–(c)

पुराणमिदमष्टादशमहापुराणेष्वन्यतमं न भवति-नृसिंहपुराणम्।
नृहसिंहपुराण 18 उपपुराणों में आता है।

भागवतमहापुराणम्—18 पुराणों में श्रीमद्भागवतपुराण की गिनती की जाती है। इसका मुख्य वर्ण्य विषय भक्ति योग है, जिसमें कृष्ण को सभी देवों का देव या स्वयं भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। इस पुराण के रचयिता वेदव्यास को माना जाता है।

विष्णुपुराण—'पुराण पञ्चलक्षणम्' के प्राचीन स्वरूप की इसमें रक्षा की गयी है। रामानुज ने इसे प्रमाण ग्रन्थ के रूप में उद्धृत किया है। इसमें विष्णु को परम देवता के रूप में निरूपित किया गया है। यह पुराण छः खण्डों में विभक्त है। अध्यायों की संख्या 126 है। यद्यपि पुराणों में इसकी श्लोक संख्या 23 या 24 सहस्र कही गयी है किन्तु इसके मुद्रण संस्करणों में प्रायः 6000 ही श्लोक मिलते हैं।

ब्रह्माण्डपुराण—नारद पुराण तथा मत्स्यपुराण में इसकी विषय सूची दी गयी है जिससे ज्ञात होता है कि इसमें 109 अध्याय तथा 12 सहस्र श्लोक हैं। मत्स्यपुराण के अनुसार ब्रह्माण्ड के महत्व का वर्णन करने के लिए ब्रह्मा ने जिस पुराण का उपदेश दिया और जिसमें भविष्य एवं कल्पों का वृतान्त विस्तार से दिया गया वह **'ब्रह्माण्डपुराण'** है। **'अध्यात्मरामायण'** को ब्रह्माण्डपुराण का अंश माना जाता है किन्तु किसी प्रतिलिपि में यह उपलब्ध नहीं है, अपितु एक पृथक् ग्रन्थ ही है।

46. महाभारतस्याष्टादशसु पर्वसु इदं द्वादशतमं भवति—

(a) आनुशासनिक पर्व (b) सौप्तिकपर्व
(c) शान्तिपर्व (d) स्त्रीपर्व

उत्तर–(c)

महाभारतस्य अष्टादशसु पर्वसु शान्तिपर्व द्वादशतमं भवति।
महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत की कथा 18 पर्वों में संकलित है जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. आदि पर्व, 2. सभा पर्व, 3. वनपर्व, 4. विराट पर्व, 5. उद्योगपर्व, 6. भीष्मपर्व, 7. द्रोणपर्व, 8. कर्णपर्व, 9. शल्यपर्व, 10. सौप्तिकपर्व, 11. स्त्रीपर्व, 12. शान्तिपर्व, 13. अनुशासनपर्व, 14. आश्वमेधिकपर्व, 15. आश्रमवासिक पर्व, 16. मौसल पर्व, 17. महाप्रस्थानिक पर्व, 18. स्वर्गारोहण पर्व।
अनुशासन पर्व—महाभारत के 18 पर्वों में तेरहवाँ पर्व अनुशासन पर्व है। जिसमें धर्म और नीति की कथाएँ, भीष्म का स्वर्गारोहण का वर्णन है।
सौप्तिक पर्व—महाभारत के 18 पर्वों में दसवाँ पर्व सौप्तिकपर्व है। जिसमें सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध का वर्णन है।
स्त्रीपर्व—महाभारत के 18 पर्वों में ग्यारहवां पर्व स्त्री पर्व है। जिसमें शोकाकुल स्त्रियों का विलाप है।

47. अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं वर्तते—
(a) विनयाधिकारिकम् (b) अध्यक्षप्रचारः
(c) योगवृत्तम् (d) धर्मस्थीयम्

उत्तर–(d)

अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं धर्मस्थीयम् वर्तते।
अर्थाशास्त्र, कौटिल्य या चाणक्य (चौथी शती ईसा पूर्व) द्वारा रचित संस्कृत का एक ग्रन्थ है। इसमें राजव्यवस्था, कृषि, न्याय एवं राजनीति आदि के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। (राज्य-प्रबन्धन विषयक) यह प्राचीनतम ग्रन्थ है। यह प्राचीन भारतीय राजनीति का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 उप विभाग तथा 6000 श्लोक है। इसका पहला अधिकरण—**विनयाधिकरण**, दूसरा अधिकरण—**अध्यक्ष प्रचार,** तीसरा अधिकरण—**धर्मस्थीयाधिकरण** है।
विनयाधिकारिकम्—यह अर्थशास्त्र का प्रथम अधिकरणम् है। इसमें प्रकरणाधिकरण समुद्देशः। विद्यासमुद्देशः। वृद्धसंयोगः। इन्द्रियजयः। अमात्योत्पत्ति का वर्णन है।
अध्यक्ष प्रचार—यह अर्थशास्त्र का द्वितीय अधिकरणम् है। इसमें जनपदों की स्थापना, भूमि को उपयोगी बनाने का विधान, दुर्गो का निर्माण, दुर्गविनिवेश, रथसेना का अध्यक्ष, पशुओं का अध्यक्ष, पैदलसेना का अध्यक्ष, चारागाह के अध्यक्ष का विशद वर्णन है।

48. दुर्गविनिवेशः कुत्र उपदिष्टः?
(a) विनयाधिकारिके (b) धर्मस्थीये
(c) अध्यक्षप्रचारे (d) कण्टकशोधने

उत्तर–(c)

'दुर्गविनिवेशः' अध्यक्षप्रचारे उपदिष्टः।
अर्थशास्त्र, कौटिल्य या चाणक्य (चौथी शती. ईसा पूर्व) द्वारा रचित संस्कृत का एक ग्रन्थ है। इसमें राजव्यवस्था, कृषि, न्याय एवं राजनीति आदि के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। (राज्य-प्रबन्धक विषयक) यह प्राचीनतम ग्रन्थ है। यह प्राचीन भारतीय राजनीति का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमें 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 उप विभाग तथा 6000 श्लोक है। इसका पहला अधिकरण—**विनयाधिकरण,** दूसरा अधिकरण—**अध्यक्ष प्रचार** है।
दूसरा अधिकरण—अध्यक्षों का निरूपण
इसमें जनपद विनिवेश, भूमिच्छिद्रविधानम्, दुर्गविधानम्, दुर्गविनिवेशः सन्निधातृनिचयकर्म, सूत्राध्यक्षः, सीताध्यक्षः, शुल्काध्यक्ष, गोऽध्यक्ष, रथाध्यक्षः, पत्यध्यक्षः, मुद्राध्यक्ष का विशद वर्णन है।
विनयाधिकरण—यह अर्थशास्त्र का प्रथम अधिकरणम है। इसमें प्रकरणाधिकरणसमुद्देशः। विद्या समुद्देशः। वृद्धसंयोगः। इन्द्रियजयः। अमात्योत्पत्ति का वर्णन है।
धर्मस्थीय अधिकरण—यह अर्थशास्त्र का तीसरा अधिकरणम् है। इसमें व्यवहार की स्थापना, विवाद पदों का विचार, विवाह सम्बन्धी विचार, दाय-विभाग, वास्तुक, समय, ऋण लेना आदि का वर्णन है।

49. यजुर्वेदः सम्प्राप्तः—
(a) अग्नेः (b) वायोः
(c) इन्द्रात् (d) वरुणात्

उत्तर–(b)

यजुर्वेदः सम्प्राप्तः वायोः।
ब्रह्मा ने यज्ञ की सिद्धि के लिये **ऋक्, यजु** और **साम** इन सनातन वेदों को अग्नि, पवन और सूर्य से क्रमपूर्वक प्रकट किया।
यह उद्धरण मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के 23वें श्लोक के रूप में व्याख्या करता है कि ब्रह्मा ने अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और सूर्य से सामवेद को दुहा।
इसका तात्पर्य यह है कि—महाप्रलय के पश्चात् सृष्टि के प्रारम्भ में विराट पुरुष अण्ड में से उत्पन्न होता है और अपने ही आप शरीर में से अग्नि, वायु और सूर्य रूप से प्रकट होता है और उनको अपने में बीज रूप से स्थित वेद पढ़ाता है और उन तीनों के द्वारा तीन वेद इस लोक में ऋषियों को मिलते हैं। अतः उन देवताओं से वेदों की उत्पत्ति कही है अथवा ऋग्वेद के आदि में अग्नि के मंत्र, यजुर्वेद के आदि में वायु के मंत्र होने से और सामवेद आदित्य की स्तुति करने से उन्हें अग्नि आदि से दुहा गया है।

50. उपनयनसंस्कारे राज्ञः दण्डो भवति—
(a) केशान्तिकः (b) ललाट सम्मितः
(c) नासान्तिकः (d) कर्णान्तिकः

उत्तर–(b)

'उपनयनसंस्कारे' राज्ञः दण्डो ललाटसम्मितः भवति।
ब्राह्मण का केश तक, क्षत्रिय का ललाट (मस्तक) तक और वैश्य का नासिका तक प्रमाण से दण्ड बनाना चाहिए।
केशान्तिक—मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में कहा गया है कि ब्राह्मण का दण्ड केश तक प्रमाण होना चाहिए।
नासिकान्तिक—मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में कहा गया है कि वैश्य का दण्ड नासिका तक प्रमाण होना चाहिए।

51. अर्थदूषणं वर्तते—
(a) कामजगणे (b) क्रोधजगणे
(c) लोभजगणे (d) मोहजगणे

उत्तर–(b)

अर्थदूषणं क्रोधजगणे वर्तते
चुगली, दुःसाहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया (गुणों में दोष का आरोपण करना) दूसरे की वस्तु हरना, कठोर वचन बोलना और अनुचित दण्ड देना ये आठ दोष क्रोध से उत्पन्न हैं।
मनुस्मृति में मनुजी सप्तम अध्याय में क्रोध से उत्पन्न होने वाले आठ दोषों का वर्णन करते हैं कि—**पैशुन्यं, साहसं, ईर्ष्यासूया, अर्थदूषणम्, वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।।**

52. मिथ्यामियोगी कतिगुणं धनं दद्यात्?
(a) द्विगुणम् (b) त्रिगुणम्
(c) चतुर्गुणम् (d) पञ्चगुणम्

उत्तर–(a)

मिथ्याभियोगी द्विगुणम् धनं दद्यात्।
मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्धनं वहेत्।
अर्थात् अर्थी द्वारा लगाये गये अभियोग के धन को प्रत्यर्थी द्वारा छिपाये जाने की स्थिति में अभियुक्त धन को साक्ष्यादि द्वारा प्रत्यर्थी को स्वीकार कराये जाने पर अर्थात् सिद्ध हो जाने पर प्रत्यर्थी छिपाने के अपराध में उस धन के बराबर धन राजा को दण्डस्वरूप दें तथा अभियोग में सिद्ध हुये धन को अभियोक्ता को दे। **मिथ्या अभियोग लगाने वाला उस धन के दूना धन दण्डस्वरूप वहन करें।**
त्रिगुणम्—मनुस्मृति के अनुसार ऋणादानप्रकरण में कहा गया है कि धान्य की वृद्धि अधिकतम त्रिगुणी होती है।
चतुर्गुर्णम्—मनुस्मृति के अनुसार ऋणादानप्रकरण में कहा गया है कि वस्त्र की वृद्धि अधिकतम चौगुनी होती है।

53. रसस्य वृद्धिः उक्ता—
(a) द्विगुणा (b) चतुर्गुणा
(c) षड्गुणा (d) अष्टगुणा

उत्तर–(d)

रसस्य वृद्धिः अष्टगुणा उक्ता।
रसस्याष्टगुणा परा।
वस्त्रधान्यहिरण्यानां चतुस्त्रिद्विगुणा परा।।
रस (तेल-धृत) आदि की वृद्धि स्वीकृत वृद्धि से अधिकतम आठगुनी हो सकती है। वस्त्र, धान्य और स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि क्रमशः चौगुनी, त्रिगुनी या द्विगुनी हो सकती है।
द्विगुणा—याज्ञवल्क्यस्मृति में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि द्विगुनी हो सकती है।
चतुर्गुणा—याज्ञवल्क्य स्मृति में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि वस्त्र की अधिकतम वृद्धि चौगुनी हो सकती है।

54. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः'— इत्यत्र कः अलङ्कारः?
(a) निदर्शना (b) उपमा
(c) उत्प्रेक्षा (d) दृष्टान्तः

उत्तर–(b)

''मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति में गतिः'' इत्यत्र उपमा अलङ्कारः।
अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्वसूरिभिः।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः।। 4 ।।
अर्थात् वाल्मीकि आदि पहले के कवियों के रामायण आदि प्रबन्धरूप द्वार वाले इस रघुवंश में यन्त्र से विद्ध मणि में सूत्र के समान मेरी गति है। इसमें उपमा अलङ्कार व अनुष्टुप् छन्द है।
उत्प्रेक्षा—किसी प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा कहते है।
भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।
निदर्शना—जहाँ वस्तुओं का परस्पर सम्बन्ध सम्भव अथवा असम्भव होकर उसके बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव का बोधन करे वहाँ निदर्शना अलङ्कार होता है।
अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः।।
दृष्टान्त—दो वाक्यों में धर्म सहित वस्तु अर्थात् उपमानोपमेय के प्रतिबिम्ब को दृष्टान्त अलङ्कार कहते है।
दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।।

55. नारदमुनेः स्वागतार्थं को जवेन पीठादुदतिष्ठत्?
(a) बलदेवः (b) शिशुपालः
(c) हिरण्यकशिपुः (d) अच्युतः

उत्तर–(d)

नारदमुनेः स्वागतार्थं अच्युतः पीठादुदतिष्ठत्।
गिरते हुए सूर्य जैसे तेजस्वी तपोनिधि नारद इनके सामने भूमि पर ज्योंही उतरे त्योंही, भगवान कृष्ण पहाड़ पर से मेघ की तरह ऊँचे आसन से वेग से उतर पड़े।

पतप्ततङ्गप्रतिमस्तपोनिधिः पुरोडस्य यावन्न भुवित्यलीयत।
गिरेस्तडित्वानिव तावदुच्चकैर्जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः॥

बलदेव–पीली मूँज की मेखला धारण किये हुए सफेद कान्तिवाले तथा काजल जैसे काले मृगचर्म को पहने हुए सुनहरी करधनी से बँधे नीले अधोवस्त्र वाली बलदेव की देह का अनुकरण करते हुए से नारद जी हैं ऐसे पहिचाना।

पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविं वसानमेणाजिनमञ्जनद्युति।
सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बरां विडम्बयन्तंशितिवासस्तनुम्॥ 6॥

शिशुपाल–वह शिशुपाल जब बालक था तब उसके चार हाथ, पूर्णचन्द्रमा मुख और तीन नेत्र थे। इस समय तो वह युवावस्था में है जो विभिन्न प्रकार के करों से राजाओं को आक्रान्त करके निःसन्देह अपनी किरणों द्वारा पर्वतों को आक्रान्त करते हुए सूर्य सा प्रतीत होता है।

स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भजोमुखेनपूर्णेन्दुनिभस्त्रिलोचनः।
युवा कराक्रान्तमहीभृदुच्चकैरसंशयंसम्पति तेजसा रविः॥

56. 'त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्'.... इयमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थादुधृता?

(a) शिशुपालवधात् (b) किरातार्जुनीयात्
(c) नैषधीयचरितात् (d) रघुवंशात्

उत्तर–(c)

'त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्' इयम् उक्तिः नैषधीयचरितात् ग्रन्थात् उद्धृता॥

स्मरोपतप्तोऽपि भृशं न स प्रभुः
विदर्भराजं तनयामयाचत।
त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं
त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्॥

नैषधमहाकाव्यम् में श्रीहर्ष ने इस श्लोक में विदर्भराज भीम के पास दमयन्ती से विवाह करने का प्रस्ताव नल द्वारा न भेजे जाने का वर्णन है–

''अत्यधिक काम से पीड़ित होने पर भी उस सर्वविध समर्थ राजा ने विदर्भ प्रदेश के राजा भीम से (उसकी) पुत्री दमयन्ती को माँगा नहीं, याचना नहीं की, क्योंकि मानी लोग सुख को एवं प्राणों को भले ही सुखपूर्वक छोड़ देते हैं, किन्तु अपने एक कभी न मांगने के व्रत को नहीं छोड़ते।''

शिशुपालवध–शिशुपालवध महाकाव्य महाकवि माघ की रचना है। यह रचना बृहत्त्रयी में गिनी जाती है। यह 20 सर्गों में निबन्धित रचना है।

किरातार्जुनीयात्–किरातार्जुनीय महाकाव्य महाकवि भारवि की कृति है। यह कृति भी बृहत्त्रयी में गिनी जाती है। यह 18 सर्गों में निबन्धित कृति है।

रघुवंशात्–रघुवंश महाकाव्य उपमा सम्राट महाकवि कालिदास द्वारा विरचित काव्य है। यह महाकाव्य लघुत्रयी में रखा गया है। इस महाकाव्य में 19 सर्ग हैं।

57. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत–

(A) पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्	**(1) रघुवंशः**
(B) अथवा श्रेयसि केन तृप्यते	**(2) कादम्बरी**
(C) सहस्त्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः	**(3) शिशुपालवधम्**
(D) न हि क्षुद्रनिघति-पाताभिहता चलति वसुधा	**(4) किरातार्जुनीयम्**

	A	B	C	D
(a)	3	1	2	4
(b)	4	3	1	2
(c)	2	4	3	1
(d)	1	2	4	3

उत्तर–(b)

(अ) पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्–किरातार्जुनीयम्

द्विषन्निमित्ता यदियं दशा ततः
समूलमुन्मूलयतीव मे मनः।
परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां
पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्॥ (1/41)

महाकवि भारवि द्रौपदी से कहलवाते हैं कि सम्पदा और विपत्ति तो आती जाती रहती हैं, अतः इनका रोना क्यों रोया जाय? इस तर्क को मन में रखकर द्रौपदी कहती हैं–

''चूँकि आपकी यह दुर्दशा शत्रुओं के कारण हुई है, इसीलिये मेरा मन समूल (जड़सहित) उखड़ा सा जा रहा है। क्योंकि शत्रुओं के द्वारा **विनष्ट न की गयी पराक्रमरूपी सम्पत्ति वाले स्वाभिमानियों की पराजय भी उत्सवरूप ही है।**

(ब) अथवा श्रेयसि केन तृप्यते–शिशुपालवधम्

विलोकनेनैव तवामुना मुने! कृतः कृतार्थोऽस्मि निवर्हितांऽहसा।
तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसीर्गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते॥

श्री कृष्ण जी नारद मुनि से कहते हैं कि–हे मुने! पापों का निवारक आपका यह दर्शन ही मुझे कृतार्थ कर दिया है फिर भी आपकी गौरवपूर्ण वाणी सुनने की इच्छा हो रही है। क्योंकि उत्तरोत्तर कल्याणकारक कार्यों से कौन तृप्त होता है।

(स) सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः–रघुवंशम्

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥ (1/18)

महाकवि कालिदास रघुवंश महाकाव्य में राजा दिलीप का वर्णन करते हुए कहते हैं–महाराजा दिलीप ने प्रजाओं की वृद्धि के लिए ही उनसे कर लिया। जैसे कि सूर्य हजार गुना जल बरसाने के लिए ही जल को ग्रहण करता है।

(द) न हि क्षुद्रनिघति-पाताभिहता चलति वसुधा–कादम्बरी।

58. वाच्यवाचकचारूत्वहेतूनां विविधात्मनां रसादिपरता यत्र सः विषयः कस्य?

(a) रीतेः (b) रसवदलङ्कारस्य

(c) गुणीभूतव्यंग्यस्य (d) ध्वनेः

उत्तर–(d)

वाच्यवाचकचारूत्वहेतूनां विविधात्मनां रसादिपरता यत्र सः विषयः ध्वनेः।।

यत्रार्थो वाच्यविशेषः वाचक विशेषः शब्दो वा, तमर्थं व्यङ्क्तः, स काव्य विशेषो ध्वनिरिति। अनेन वाच्यवाचक चारूत्वहेतुभ्य उपमादिभ्योऽनुप्रासादिभ्यश्च विभक्त एव ध्वनेर्विषय इति दर्शितम्।।

ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन कहते है कि–''जहाँ अर्थ वाच्यविशेष अथवा वाचक विशेष शब्द, उस प्रतीयमान अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्य विशेष को **'ध्वनिकाव्य'** कहते हैं। इससे वाच्यवाचक के चारुत्वहेतु उपमादि और अनुप्रासादि से अलग की ध्वनि का विषय है यह दिखलाया।

गुणीभूतव्यंग्यस्य–अतादृशि गुणीभूत व्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु-मध्यमम्।

काव्यप्रकाशकार मम्मट गुणीभूतव्यङ्ग्य मध्यमकाव्य का लक्षण देते हुए कहते हैं कि–वाच्य से अधिक चमत्कारी व्यङ्ग्य अर्थ न होने पर गुणीभूत व्यङ्ग्य नामक दूसरे प्रकार का काव्य होता है जो मध्यम काव्य कहा जाता है।

59. मम्मटानुसारम् अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः कतिविधः?

(a) द्विविधः (b) पञ्चविधः

(c) चतुर्विधः (d) दशविधः

उत्तर–(b)

मम्मटानुसारम् अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः पञ्चविधः।

अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया ।। 98 ।।

काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार का लक्षण देते हुए कहते हैं कि–''प्रस्तुत अर्थ की प्रतीति कराने वाली जो अप्रस्तुत अर्थ की प्रशंसा वह ही अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार है।''

अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत के आक्षेप के यह 5 प्रकार का हो सकता है–

(1) कार्य के प्रस्तुत होने पर कारण का

(2) कारण के प्रस्तुत होने पर उससे भिन्न कार्य का

(3) सामान्य प्रस्तुत होने पर विशेष का

(4) विशेष के प्रस्तुत होने पर सामान्य का

(5) तुल्य के प्रस्तुत होने पर अतुल्य का

द्विविध–काव्यप्रकाशकार मम्मट कहते हैं कि–अधम काव्य दो प्रकार का होता है–(1) शब्द चित्र, (2) अर्थ चित्र

चतुर्विध–रसगङ्गाधरकार पण्डितराज जगन्नाथ काव्य के चार भेद बताते हैं–(1) उत्तमोत्तम, (2) उत्तम, (3) मध्यम, (4) अधमकाव्य।

60. शान्तरसस्य स्थायिभावः कः?

(a) उत्साहः (b) शमः

(c) हासः (d) शोकः

उत्तर–(b)

शान्तरसस्य स्थायिभावः शमः।

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथजी शान्त रस का लक्षण देते हुए कहते है–**शान्तः शमस्थायिभाव उत्तमप्रकृतिर्मतः।**

कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः श्री नारायणदैवतः।।

''शान्त रस का स्थायीभाव शम, आश्रय उत्तमपात्र, वर्ण कुन्दपुष्प तथा चन्द्रमा आदि के समान सुन्दर, शुक्ल और देवता भगवान लक्ष्मीनारायण है।

उत्साह–साहित्यदर्पणकार विश्वनाथजी वीर रस का लक्षण देते हुये कहते हैं–

उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः।

महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः।।

उत्तम पात्र (रामादि) में आश्रित वीररस होता है। इसका स्थायीभाव-उत्साह, देवता-महेन्द्र और रंग-सुवर्ण के सदृश होता है।

शोक–साहित्यदर्पणकार विश्वनाथजी करुण रस का लक्षण देते हुये कहते हैं–

इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करुणाख्ये रसो भवेत्।

धीरैः कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः।।

इष्ट के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से करुणरस आविर्भूत होता है। यह कपोतवर्ण होता है। इसके देवता यमराज हैं। इसमें स्थायी भाव शोक होता है।

61. ''चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्''– कः सः?

(a) दुष्यन्तः (b) अर्जुनः

(c) नलः (d) कृष्णः

उत्तर–(c)

''चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं, न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्''– नलः सः।

अधीतिबोधाऽऽचरणप्रचारणैः

दशाश्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः।

चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं

न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्।।

महाकवि माघ प्रस्तुत श्लोक में नल के गुणों का व्याख्यान करते हुए कहते हैं–''अधीति, बोध, आचरण और प्रचारण इन चार प्रकारों से चतुर्दशता उपस्थित करते हुए इस राजा नल ने चौदह विद्याओं में स्वयं चतुर्दशत्व संख्यावत्व कैसे उत्पन्न किया'' उसे मैं नहीं जानता, क्योंकि 14 को चार भेदों में विभक्त करने पर प्रत्येक

भेद 14 प्रकार का होगा–जो संख्या $14 \times 4 = 56$ होगी, यही विरोधाभास है।
दुष्यन्त—महाकवि कालिदास द्वारा रचित नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पात्र का नाम राजा दुष्यन्त है। जो शाकुन्तला से गान्धर्व विवाह करते हैं।
कृष्ण—महाभारत के भीष्मपर्व से लिया गया श्रीमद्भगवद्गीता को अर्जुन को श्रीकृष्ण ने ही सुनाया था।

62. ''मां शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति'' अत्र कः शशाप?
(a) कर्णः (b) जमदग्निः
(c) शल्यः (d) शक्रः
उत्तर–(b)

''मां च शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति'' अत्र जमदग्निः शशाप।
कृत्ते वज्रमुखेन नाम कृमिणा दवान्ममोरुद्वये
निद्राच्छेदभयादसह्यत गुरोर्धैर्यात्तदा वेदना।
उत्थाय क्षतजाप्लुतः स सहसा रोषानलोद्दीपितो
बुद्ध्वा मां च शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति।।
प्रस्तुत श्लोक में भास स्वरचित नाटक कर्णभारम् में कर्ण के द्वारा अपने ऊपर दिये गए शाप का वर्णन करते हुए कहते हैं–''मेरे अभाग्यवश वज्रमुख नामक कीड़े ने मेरे जंघों में काट लिया पर (उस पर) सोए हुए गुरु के निद्राभंग के भय से मैंने उस पीड़ा को धैर्यपूर्वक सह लिया, रक्त से भीगे हुए वें उठकर बैठ गये तथा उनकी क्रोधाग्नि धधक उठी और क्रुद्ध होकर उन्होंने मुझे शाप दिया कि ''युद्धकाल में तुम्हारे अस्त्र विफल हो जाय''।।
(A) कर्ण—भास द्वारा विरचित कर्णभारम् एकांकी नाटक में कर्ण एक पात्र के रूप में उल्लिखित हैं। इस उत्सृष्टिकांक में कर्ण का ब्राह्मणवेशधारी इन्द्र को अपना कवच-कुण्डल देना वर्णित है। इस नाटक कर्णभारम् में कर्ण के उज्ज्वल चरित्र एवं दान-शीलता का प्रभावशाली निरूपण किया गया है।
(c) शल्य—भास द्वारा विरचित कर्णभारम् एकांकी नाटक में शल्य एक पात्र के रूप में उल्लिखित है, जो कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में कर्ण के सारथी रहते हैं जिसमें कर्ण अपने परशुराम द्वारा व ब्राह्मण द्वारा शाप के बारे में शल्यराज से बताते हैं।
हिरण्यकशिपुः—शत्रुओं से उत्पन्न होने वाली भीतियों का जिस पर कोई असर नहीं होता, ऐसा सूर्य सा दीप्तिमान् दैत्य हुआ। इन्द्र-शब्द के परमैश्वर्यवाची अर्थ को नष्ट करने वाले जिस दैत्य का नाम हिरण्यकशिपु था।

63. उत्तररामचरितनाटकस्य कः अङ्कः छाया इति अभिधीयते?
(a) प्रथमाङ्कः (b) द्वितीयाङ्कः
(c) तृतीयाङ्कः (d) चतुर्थाङ्कः
उत्तर–(c)

उत्तररामचरितनाटकस्य तृतीयाङ्कः छाया इति अभिधीयते—इसमें राम पञ्चवटी में पुनः आकर चिरपरिचित दृश्यों को देखते हैं। सीता भी गंगा के प्रसाद से अदृश्यरूपा बनकर राम के विभिन्न मनोभावों और कारुणिक व्यापारों का सद्यः अनुभव करती है। उसे संतोष होता है तथा राम के प्रति मन में बना कलुष निकल जाता है। राम दो बार मूर्च्छित भी हो जाते हैं। सीता का स्पर्श ही उन्हें पुनर्जीवन देता है। छाया-रूप सीता की उपस्थिति के कारण इस अङ्क को छायाङ्क कहा जाता है।
प्रथम अङ्क—प्रथम अङ्क का नाम चित्रदर्शन है। गुरु वशिष्ठ का संदेश जब राजकर्त्तव्य के पालन के सम्बन्ध में राम को मिलता है तो वे कह उठते है,
स्नेह दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।

64. उन्मत्तराघवं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?
(a) अङ्कस्य (b) वीथेः
(c) डिमस्य (d) समवकारस्य
उत्तर–(a)

'उन्मत्तराघवं' अङ्कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति।
उन्मत्त राघव भास्कर कवि द्वारा रचित रूपक है। इसके नायक राम हैं। इस ग्रन्थ में सीता के पूर्वानुराग का चित्रण है। राग-रागिनी, नायक-नायिकाओं का चित्रण, पादप पत्रों आदि का चित्रण के साथ ही उन्मत्त राघव एकांकी लिखी गयी।

65. ब्रह्मा कस्माद् वेदात् अभिनयं स्वीकृतवान्—
(a) यजुर्वेदात् (b) ऋग्वेदात्
(c) सामवेदात् (d) अथर्ववेदात्
उत्तर–(a)

ब्रह्मा यजुर्वेदात् अभिनयं स्वीकृतवान्।
जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।
भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में नाट्य में सर्वप्रथम कथावस्तु आवश्यक होती है। इसके लिए ऋग्वेद के उपाख्यान काम आए। फिर संगीत की बारी आयी तो सामवेद मानो इसके लिए पूर्वनिर्मित बैठा था। अभिनय यजुर्वेद के यज्ञ-यागादि के संवादों एवं क्रिया-कलापों से गृहीत हुए। शेष चतुर्थ तत्त्व रस को किसी प्रकार अथर्ववेद से निकाला गया। पाठ्य, गीत, अभिनय और रस ये नाट्य के मूल तत्त्व हैं।
(1) ऋग्वेदात्—नाट्य में ऋग्वेद से पाठ्य लिया गया है।
(2) सामवेदात्—नाट्य में सामवेद से गीतों/संगीत को लिया गया है।
(3) अथर्ववेदात्—नाट्य में अथर्ववेद से रसों को लिया गया है।

66. ''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' इत्यत्र किं छन्दः?

(a) अनुष्टुप् (b) वसन्ततिलका
(c) शिखरिणी (d) पुष्पिताग्रा

उत्तर–(a)

''वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि'' इति अत्र अनुष्टुप् छन्दः।
वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति॥

करुणकार महाकविभवभूति उत्तररामचरित ग्रन्थ के द्वितीय अङ्क में वासन्ती से सत्पुरुषों के व्यवहार के रूप में बताते हैं–
''वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल महापुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है।''
प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप्/श्लोक छन्द है व विषमोऽप्रस्तुतप्रशंसाऽर्थापत्तिश्चालंकार है।

वसन्ततिलका–उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः॥
वसन्ततिलका उसे कहते हैं जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः **तगण, भगण, जगण,** जगण तथा दो गुरु वर्ण आयें।

शिखरिणी–रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी॥
रस (6) तथा रुद्र (11) संख्यक अक्षरों के बाद यति वाली तथा क्रमशः **यगण, मगण, नगण, सगण, भगण,** एक लघु तथा एक गुरु वर्ण से युक्त छन्द शिखरिणी होती है।

पुष्पिताग्रा–अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा॥
जिस छन्द के प्रथम एवं तृतीय चरण में क्रमशः नगण, नगण, रगण तथा यगण आयें और द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में क्रमशः नगण, जगण, जगण, रगण तथा एक गुरु वर्ण आयें, उसे पुष्पिताग्रा कहते हैं।

67. कः प्रेक्षागृहाणां प्रमाणं लक्षणञ्च निर्दिशति?

(a) आदित्यः (b) रुद्रः
(c) विश्वकर्मा (d) यमः

उत्तर–(c)

विश्वकर्मा प्रेक्षागृहाणां प्रमाणं लक्षणञ्च निर्दिशति।
इह प्रेक्षागृहायां तु धीमता विश्वकर्मणा।
त्रिविधः सन्निवेशश्च शास्त्रतः परिकल्पितः॥

भरत मुनि नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में विश्वकर्मा का वर्णन करते हैं कि– विश्वकर्मा देवशिल्पी हैं तथा वे शिल्पशास्त्र के आचार्य हैं, अतः प्रेक्षागृह के निर्माणविषयक विचार करने में समर्थ हैं। शिल्पशास्त्र में बताए गए नियमों के अनुरूप विधिपूर्वक प्रेक्षागृह निर्माण की विविध परिकल्पना की है अर्थात् प्रेक्षागृह शास्त्रानुसार तीन प्रकार का होना चाहिए।

रुद्र–शिवपुराण में एकादश/ग्यारह रुद्रों का नाम दिया है–**कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शम्भु, चण्ड और भव।**

आदित्य–ऋषि कश्यप की पत्नी अदिति से जन्मे पुत्रों को आदित्य कहा गया है। वेदों में जहां अदिति के पुत्रों को आदित्य कहा गया है, वहीं सूर्य को भी आदित्य कहा गया है। आदित्य संख्या में 12 (बारह) हैं।

यम–मृत्यु का देवता यम है। यमराज को ''मार्कण्डेय पुराण'' के अनुसार दक्षिण दिशा के दिक्पाल और मृत्यु का देवता कहा गया है। पुराणों के अनुसार 14 यम माने गए हैं।

68. रत्नावली कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणं भवति?

(a) तोटकस्य (b) नाटिकायाः
(c) भाणिकायाः (d) संवृकस्य

उत्तर–(b)

'रत्नावली' नाटिकायाः उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणं भवति।
नाटक के दस भेद या रूपक होते हैं।
नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश॥
नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी, प्रहसन ये दस रूपक हैं।
नाटक के 18 उपरूपक भेद होते हैं–1. नाटिका, 2. त्रोटक, 3. गोष्ठी, 4. सट्टक, 5. नाट्यरासक, 6. प्रस्थान, 7. उल्लाप्य, 8. काव्य, 9. प्रेङ्खण, 10. रासक, 11. संलापक, 12. श्रीगदित, 13. शिल्पक, 14. विलासिका, 15. दुर्मल्लिका, 16. प्रकरणी, 17. हल्लीश, 18. भाणिका।
ये अट्ठारह प्रकार के उपरूपक मनीषियों ने बताये हैं। जहाँ तक रत्नावली का प्रश्न है, वह उपरूपकों के प्रथम भेद नाटिका की कोटि में आती है।
त्रोटकस्य–18 उपरूपकों में त्रोटक दूसरे स्थान का उपरूपक है।
भाणस्य–10 रूपकों में भाण तीसरे स्थान का रूपक है।
सट्टकस्य–18 उपरूपकों में सट्टक चौथे स्थान का उपरूपक है।

69. कुन्तकानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति?

(a) अष्टौ (b) सप्त
(c) षट् (d) पञ्च

उत्तर–(c)

'कुन्तकानुसारं' कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः षट्।
वक्रोक्तिकार आचार्य कुन्तक कवियों के व्यापार (काव्य) की वक्रता का व्याख्यान करते हैं। सर्वप्रथम वक्रता के छः (षट्) भेद आचार्य ने माने हैं–
1. वर्णविन्यासवक्रता, 2. पदपूर्वार्द्धवक्रता, 3. प्रत्ययाश्रितवक्रता, 4. वाक्यवक्रता, 5. प्रकरणवक्रता, 6. प्रबन्धवक्रता
आचार्य कुन्तक ने यह कविव्यापार वक्रत्व प्रकार/भेदों का वर्णन वक्रोतिजीवितम् ग्रन्थ के प्रथम उन्मेष में किया है।
सप्त–तर्कसंग्रह ग्रन्थ के कर्ता अन्नमभट्ट के अनुसार पदार्थों की संख्या सप्त है। **द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।**
पञ्च–तर्कसंग्रह के कर्ता अन्नमभट्ट के अनुसार अनुमान प्रमाण के दो भेद–**स्वार्थं, परार्थं च।**
परार्थं अनुमान के पञ्च अवयव होते है–**1. प्रतिज्ञा, 2. हेतु, 3. उदाहरण, 4. उपनय, 5. निगमन**

70. यथार्थानुभवः कतिविधः?
(a) चतुर्विधः (b) पञ्चविधः
(c) सप्तविधः (d) नवधा
उत्तर–(a)

यथार्थानुभवः चतुर्विधः भवति।
जो धर्म जिसमें है, उसका वैसा ही अनुभव करना यथार्थानुभव है।
'तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः।'
यथार्थानुभव के करण भी चार प्रकार के हैं। जैसे–प्रत्यक्ष का करण प्रत्यक्ष, अनुमिति का अनुमान, उपमिति का उपमान और शब्द का करण शब्द है।
पञ्चविधः–वाणी, हाथ, पैर, गुदा और उपस्थ–ये पञ्च कर्मेन्द्रियाँ हैं। कर्मेन्द्रियाणि वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ आख्याति।
सप्तविधः–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ हैं।
नवविधः–पृथिवी, जल, वायु, तेज, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन ये नौ द्रव्य हैं।
प्रथम अङ्क–सीता इस समय पूर्णगर्भा है, उसके साथ राम चित्रवीथी के दर्शनार्थ जाते हैं। इस चित्रवीथी में राम के जीवन से सम्बद्ध चित्रों को प्रदर्शित किया गया है।
द्वितीयअङ्क–इस अङ्क का नाम पञ्चवटी प्रवेश है। यह प्रथम अंक के सीतानिर्वासन के बारह वर्षों के बाद की है। सीता के दो पुत्रों (लव-कुश) को वाल्मीकि के आश्रम में शिक्षा मिलती है। इसी बीच राम ने अश्वमेध-यज्ञ आरम्भ किया है। सीता की स्वर्णप्रतिमा बनाकर सहधर्मिणी के रूप में रखी। राम शम्बूक नामक शूद्रमुनि के वध के लिए दण्डकारण्य जाते हैं, उसे मरने पर दिव्य पुरुष का रूप मिलता है।
चतुर्थअङ्क–चतुर्थ अंक में वाल्मीकि आश्रम का दृश्य है जहाँ वसिष्ठ, अरुन्धती, कौसल्या, जनक आदि का आगमन होता है। लव को कौसल्या विस्मयपूर्वक देखती है। वह वाल्मीकिकृत रामायण-कथा का परिचय देता है।

71. द्रव्यप्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः भवति–
(a) समवायः (b) तादात्म्यम्
(c) संयोगः (d) संयुक्तसमवायः
उत्तर–(c)

द्रव्यप्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः भवति–संयोगः
चक्षुरिन्द्रिय से घट का प्रत्यक्ष ज्ञान में संयोग सन्निकर्ष होता है। अतः इन्द्रियों द्वारा जहाँ किसी द्रव्य का प्रत्यक्ष होता है वही संयोग सन्निकर्ष होता है।
चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः।
समवाय–समवाय एक नित्य सम्बन्ध है।
''नित्यसम्बन्धत्व समवायत्वम्'' यह समवाय का लक्षण है। समवाय वह सम्बन्ध है जिसके कारण दो पदार्थ एक दूसरे में आश्रित रहते हैं। यह संबंध अयुतसिद्ध वस्तुओं के बीच होता है।
संयुक्तसमवाय–''घटरूप प्रत्यक्षजनने संयुक्तः समवाय सन्निकर्षः चक्षु संयुक्ते घटेरूपस्य समवायात्'' अर्थात् चक्षुरिन्द्रिय द्वारा घट रूप के प्रत्यक्ष में संयुक्त समवाय सन्निकर्ष होता है।

72. सन्निकर्षः कतिविधः?
(a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) अष्टविधः
उत्तर–(c)

सन्निकर्षः षड्विधः
1. संयोगसन्निकर्षः–''चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः''–ज्यों ही आँख का संयोग घट के साथ होता है त्यों ही घट का प्रत्यक्ष ज्ञान लगता है।
2. संयुक्तसमवायसन्निकर्षः–''घटरूप प्रत्यक्षजनने संयुक्तः समवाय सन्निकर्षः। चक्षु संयुक्ते घटे रूपस्य समवायात्'' अर्थात् चक्षुरिन्द्रिय द्वारा घट रूप के प्रत्यक्ष में संयुक्त समवाय सन्निकर्ष होता है।
3. संयुक्त-समवेत-समवाय सन्निकर्ष–''रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्त समवेत समवायः सन्निकर्षः। चक्षुः संयुक्ते घटे रूपं समवेत तत्र

रूपत्वस्य समवायात्।'' चक्षुरिन्द्रिय से रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष होता है।

4. समवायःसन्निकर्षः—श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्ष होता है।

कर्णविवरवर्त्याकाशस्य श्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाश गुणत्वात् गुणगुणिनोश्च समवायात्।

श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा शब्द के प्रत्यक्ष में समवाय सन्निकर्ष होता है। कर्ण-छिद्र ही आकाश है एवं शब्द आकाश का गुण है। अतः गुण-गुणी का सम्बन्ध समवाय हुआ।

5. समवेत समवाय सन्निकर्षः—शब्दत्व साक्षात्कारे समवेत-समवायः सन्निकर्षः है। श्रोत्रसमवेते शब्दे शब्दत्वस्य समवायात्। श्रोत्रेन्द्रिय द्वारा शब्दत्व जाति के प्रत्यक्ष में समवेत समवाय सन्निकर्ष होता है।

6. विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्षः—अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषण-विशेष्य भाव सन्निकर्ष है। 'घटाभाववत् भूतलम्' अर्थात् घट का अभाव वाला भूतल है। इस ज्ञान में चक्षुरिन्द्रिय से युक्त भूतल में घटाभाव विशेषण है।

73. अनुमापकस्य हेतवः कति सन्ति?

(a) त्रयः (b) पञ्च

(c) अष्टौ (d) एकादश

उत्तर–(b)

अनुमापकस्य हेतवः पञ्च सन्ति।

अनुमान दो प्रकार का होता है–**स्वार्थानुमान, परार्थानुमान।**

उन दो अनुमानों के बीच में स्वयं को होने वाली अनुभिति के हेतु को स्वार्थानुमान कहते हैं। जैसे–स्वयं ही बार-बार धूम एवं अग्नि का साहचर्य देखने से जहाँ-जहाँ धूम है, वहाँ-वहाँ अग्नि है। इस प्रकार महानस (रसोईघर) आदि में व्याप्ति को जानकर पर्वत के समीप गया। जो स्वयम् धूम से अग्नि का अनुमान करके दूसरे को समझाने के लिए पाँच अवयवों वाले वाक्य का प्रयोग किया जाता है, वह परार्थानुमान है।

प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय तथा **निगमन** ये पाँच अवयव हैं–

1. पर्वत वह्निमान है, यह प्रतिज्ञा है।
2. धूमवाला होने से, यह हेतु है।
3. जो-जो धूमवाला है, यही उदाहरण है।
4. वैसे ही यह पर्वत धूमवाला है, यह उपनय है।
5. इस कारण वैसा (यह पर्वत वह्निवाला) है, यह निगमन है।

74. तर्कसंग्रहे कर्माणि कति सन्ति?

(a) पञ्च (b) सप्त

(c) नव (d) द्वादश

उत्तर–(a)

तर्कसंग्रहे पञ्च कर्माणि सन्ति।

उत्क्षेपण (ऊपर की ओर फेंकना), अपक्षेपण (नीचे की ओर फेंकना), आकुञ्चन (समेंटना), प्रसारण (फैलाना) एवं गमन से 5 कर्म हैं।

उत्क्षेपणाऽपेक्षापणाऽकुञ्चन-प्रसारण-गमनानि पञ्च कर्माणि।

सप्त—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ हैं।

नव—पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन ये नव द्रव्य हैं।

प्रमेय—आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख, अपवर्ग ये 12 प्रमेय हैं।

75. तर्कसंग्रहे साहचर्यनियमशब्देन किमुच्यते?

(a) उपाधिः (b) सन्निकर्षः

(c) अपवर्गः (d) व्याप्तिः

उत्तर–(d)

तर्कसंग्रहे साहचर्यनियमशब्देन व्याप्तिःउच्यते।

जहाँ-जहाँ धूम होता है वहाँ-वहाँ वह्नि होती है। इस प्रकार के साहचर्य नियम को व्याप्ति कहते हैं–''साहचर्य नियमों व्याप्तिः'' सह चरतीति सहचरः अर्थात् जो साथ चलता है वह सहचर है सहचर के भाव को साहचर्य करते हैं।

''यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः इति साहचर्यनियमोव्याप्तिः।''

उपाधिः—साध्य के व्यापक होने पर साधन की अव्यापकता उपाधि है–

'साध्यव्यापकत्वे सति साधन-अव्यापकत्वम्-उपाधिः'

सन्निकर्ष—''इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्''

अर्थात् चक्षुरादि इन्द्रिय तथा घटादि विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान को भी प्रत्यक्ष कहते हैं। अथवा जिस ज्ञान में अन्य ज्ञान करण न हो वह प्रत्यक्ष है।

अपवर्ग—''मोक्षोऽपवर्गः'' मोक्ष को अपवर्ग कहते हैं। मोक्ष का अर्थ है–इक्कीस प्रकार के दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति।

दुःखों के इक्कीस भेद–शरीर, षट्इन्द्रिय, षट्विषय, षट्ज्ञान (बुद्धि), सुख, दुःख।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2011
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. विष्णुसूक्तस्य ऋषिरस्ति।

(a) दीर्घतमा (b) हिरण्यस्तूपः
(c) गृत्समदः (d) हिरण्यगर्भः

उत्तर–(a)

विष्णुसूक्त के ऋषि- दीर्घतमा हैं तथा देवता- विष्णु हैं। विष्णु द्युस्थानीय देवता हैं।

विष्णु के विशेषण–त्रिविक्रम, उरुक्रम, उरुगाय, भीम, कुचर, गिरिष्ठा, गिरिक्षत, गिरिजा, सहीयान्, मातरिश्वा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अग्नि पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि मधुच्छन्दा हैं। **अग्नि के विशेषण**–जातवेदस्, घृतपृष्ठ, गृहपति, विश्वपति, दमूनस, पुरोहित, नेता, अङ्गिरा, कविक्रतु, सत्यधर्मा, जज्ञान।
- इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि गृत्समद हैं।
- **इन्द्र के विशेषण**–वज्री, वज्रिन, वज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, मरुत्वान्, मघवा, वृत्रहा, दस्योर्हन्ता, सुशिप्र, मनस्वान्, सोमपा, पुरन्दर, वसुपति।
- वरुण द्युस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि- शुनःशेप एवं वसिष्ठ हैं। **वरुण के विशेषण**–क्षत्रिय, स्वराट्, मायावी, उरुशंस, उरुचक्षस्, धृतव्रतः, इषिरः।
- उषस् द्युस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि- वामदेव हैं। **उषस् के विशेषण**–मघोनी, विश्ववारा, प्रचेताः, मघवती, रेवती, सुभगाः, ऋतावरी।

2. ''त्रेधा निदधे पदम्'' इति केन सह सम्बध्यते?

(a) इन्द्रसूक्तेन (b) रुद्रसूक्तेन
(c) विष्णुसूक्तेन (d) उषस्सूक्तेन

उत्तर–(c)

''त्रेधा निदधे पदम्... यह विष्णुसूक्त का मन्त्र है।

''इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पांसुरे स्वाहा।। इस मन्त्र में विष्णु की चर्चा की गई है।
जिस प्रकार धूल वाले वातावरण में वस्तु स्पष्ट दिखाई नहीं देती उसी प्रकार विष्णु के तीन पाद भी रजकणों में छिपी वस्तु की भांति अस्पष्ट एवं अविज्ञात ही है।

- विष्णुसूक्त के ऋषि-दीर्घतमा और देवता-विष्णु हैं। **विष्णुसूक्त के अन्य मन्त्र**–(1) विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः। (2) यः पार्थिवानि विममे रजांसि। (3) प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षत उरुगायाय वृष्णे। (4) भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। (5) यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि।

3. ''चरैवेति'' इति वाक्यांशोऽस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति।

(A) शतपथब्राह्मणे (b) गोपथब्राह्मणे
(c) तैत्तिरीयब्राह्मणे (d) ऐतरेयब्राह्मणे

उत्तर–(d)

''चरैवेति'' वाक्यांश ऐतरेय ब्राह्मण की सबसे प्रमुख शिक्षा है।
''चरैवेति- चरैवेति।'' चर-एव-इति अर्थात् चलते रहो, चलते रहो। सदा कर्म करते रहो, सदा उद्योगशील रहो, निरन्तर कर्मठ बने रहो। कर्मनिष्ठ जीवन ही जीवन है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- शुनःशेप आख्यान भी ऐतरेय ब्राह्मण से सम्बन्धित है। इस आख्यान को हरिश्चन्द्र-उपाख्यान भी कहते हैं। इसका चरैवेति गान विश्व-विश्रुत है।
- शुनःशेप ऋषि, ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 7 सूक्तों के द्रष्टा हैं।
- चरैवेति का उपदेश रोहित को इन्द्र ने दिया।
- शतपथ ब्राह्मण के आख्यान–मनु एवं श्रद्धा, जलप्लावन की कथा, पुरुरवा-उर्वशी आदि हैं।
- गोपथ ब्राह्मण में ओम् का महत्व है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में यज्ञ का ब्रह्मरूप में वर्णन है तथा यज्ञ ही विष्णु है।

4. अधोऽङ्कितानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) ब्रह्मचारीसूक्तम् **1. घ्राणम्**
(b) मैत्रायणी आरण्यकम् **2. अथर्ववेदः**
(c) अथेदं भस्मान्तं शरीरं **3. कृष्णयजुर्वेदः**
(d) शिक्षा **4. ईशावास्योपनिषद्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	4	1	3
(b)	3	2	1	4
(c)	3	2	4	1
(d)	2	3	4	1

उत्तर–(d)

पाणिनीय शिक्षा में शिक्षा को घ्राण कहा गया है।

''छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।''

- वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त शरीरम्। यह मन्त्र शुक्लयजुर्वेद के 40वें अध्याय ईशोपनिषद् में उद्धृत किया गया है।
- तैत्तिरीय और मैत्रायणी आरण्यक कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है तथा ब्रह्मचारी सूक्त भी कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **ईशावास्योपनिषद् के मन्त्र**–कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत् समाः।
- अन्धंतमः प्रविशन्ति ये अविद्यामुपासते।
- अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् ।
- विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
- **कठोपनिषद् के मन्त्र**–अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ताः ददत्।
- श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः, तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
  क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

5. अधोऽङ्कितानां युग्मानां तालिकां विचिनुत।

(a) मातृदेवो भव	**1. बृहदारण्यकोपनिषत्**
(b) असतो मा सद् गमय	**2. तैत्तिरीयोपनिषत्**
(c) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया	**3. छान्दोग्योपनिषत्**
(d) तत्त्वमसि	**4. मुण्डकोपनिषत्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	1	4	3
(b)	1	2	3	4
(c)	4	2	3	1
(d)	1	3	2	4

उत्तर–(a)

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते। यह मन्त्र मुण्डकोपनिषद् का है।

मातृदेवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। यह मन्त्र कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीयोपनिषद् से उद्धृत है।

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। यह सोमयज्ञ की स्तुति में गाया जाता है। यह बृहदारण्यकोपनिषद् का मन्त्र है।

तत्त्वमसि (वह ब्रह्म तू ही है) यह महावाक्य छान्दोग्योपनिषद् से उद्धृत है।

अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूं) - बृहदारण्यकोपनिषद् का है।

- अयमात्मा ब्रह्म (यह आत्मा ब्रह्म है)–माण्डूक्योपनिषद्।
- प्रज्ञानं ब्रह्म (प्रज्ञान ही ब्रह्म है)–ऐतरेयोपनिषद्।
- सर्वं खल्विदं ब्रह्म (सब ब्रह्म ही है)–छान्दोग्योपनिषद्।
- सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः - मुण्डकोपनिषद्

6. महर्षि दयानन्दोऽस्य भाष्यकारोऽस्ति।

(a) अथर्ववेदस्य। (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य। (d) शतपथब्राह्मणस्य।

उत्तर–(c)

महर्षि दयानन्द यजुर्वेद के भाष्यकार हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं। इन्होंने नैरुक्त प्रक्रिया का आश्रय लेकर वेदों की नई व्याख्या प्रस्तुत की। सम्पूर्ण यजुर्वेद का संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या किया। इन्होंने वेदों को अपौरुषेय बताया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य यास्क ने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए आवश्यक नियमों का उल्लेख किया। इन्होंने मन्त्रों के तीन प्रकार के अर्थ बतलाए।
- आचार्य सायण वेदों की व्याख्या करने वाले आचार्यों में अग्रगण्य हैं। सायण ने यज्ञ-प्रक्रिया को सर्वत्र प्रधानता दी है।
- श्री सातवलेकर आधुनिक युग के सायण माने जाते हैं।
- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का प्राप्त होता है।

7. वेदस्य मुखं किमस्ति?

(a) निरुक्तम् (b) शिक्षा
(c) व्याकरणम् (d) साहित्यम्

उत्तर–(c)

वेद का मुख व्याकरण है।

व्याकरण का अर्थ–''व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्।
छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणम् स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।
अर्थात् छन्द वेदरूपी पुरुष के पैर हैं, कल्प उसके दो हाथ है, ज्योतिष दो नेत्र हैं, निरुक्त दो कान हैं, शिक्षा नासिका है और व्याकरण मुख है। अतः अङ्गों सहित वेद का अध्ययन करके ही मनुष्य ब्रह्मलोक में महिमा को प्राप्त होता है।

8. किं सत्यमस्ति?

(a) श्रीमद्भगवद्गीता अस्ति - ऋग्वेदस्य आदिम सूक्तस्य व्याख्या
(b) प्रातिशाख्यस्य लेखकोऽस्ति - पाणिनिः।
(c) यजुर्वेदे सन्ति - विंशति अध्यायाः।
(d) वेदभाष्यकारोऽस्ति - आचार्यः सायणः।

उत्तर–(d)

आचार्य सायण प्राचीन वेदभाष्यकार हैं। इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का परम्परागत ढंग से संस्कृत में भाष्य किया।

सायण ने ऋग्वेद सहित 5 वैदिक संहिताओं, 11 ब्राह्मण ग्रन्थों और 2 आरण्यकों पर भाष्य लिखा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **वेंकट माधव**—सम्पूर्ण ऋग्वेद का सरल एवं संक्षिप्त भाष्य संस्कृत में किया।
- **स्वामी दयानन्द** ने नैरुक्त प्रक्रिया विधि से ऋग्वेद के सात मण्डलों का संस्कृत और हिन्दी में भाष्य किया है।
- **उव्वट** और **महीधर** ने शुक्ल यजुर्वेद का संस्कृत में भाष्य लिखा है।
- **सायण** ने काण्वसंहिता तथा तैत्तिरीय संहिता का भाष्य लिखा है।
- **दुर्गादास लाहिणी** ने सायण-भाष्य सहित अथर्ववेद को 5 भागों में प्रकाशित किया है।
- **प्रो. ग्रिफिथ** ने सायण भाष्य का समुचित उपयोग करते हुए सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया है।
- **मैक्समूलर** ने सर्वप्रथम सायण-भाष्य सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया।

9. ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' इति वचनमस्ति

(a) ऋग्वेदे (b) सामवेदे
(c) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (d) अथर्ववेदे

उत्तर–(d)

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' यह वचन अथर्ववेद से सम्बन्धित है। अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सं गच्छध्वम् सं वदध्वम् (ऋग्वेद)—साथ चलें, मिलकर बोलें, उसी सनातन मार्ग का अनुसरण करें जिस पर पूर्वज चले हैं।
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।। यह कठोपनिषद् का मन्त्र है, जिसका तात्पर्य है—हे मनुष्यों उठो, जागो, श्रेष्ठ पुरुषों को प्राप्त करके ज्ञान प्राप्त करो।
- असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय। ईश्वर असत्य से सत्य की ओर ले चलें। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलें।
- शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्—शरीर ही सभी धर्मों को पूरा करने का साधन है।

10. किं. सत्यमस्ति?

(a) शुनःशेप-आख्यानमस्ति - कौषीतकिब्राह्मणे
(b) नचिकेतसः कथा अस्ति - ऋग्वेद
(c) कर्मकाण्डं चर्चितम् - आरण्यकेषु
(d) ऋग्वेदस्य प्रथमशब्दोऽस्ति - 'अग्निम्'

उत्तर–(d)

ऋग्वेद का प्रथम शब्द अग्नि है। अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का पहला ही सूक्त है। इसके ऋषि विश्वामित्र हैं। ''अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।''

- शुनःशेप आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण से सम्बन्धित है। इस आख्यान को हरिश्चन्द्र उपाख्यान भी कहा जाता है। इसका चरैवेति गान विश्वविश्रुत है।
- नचिकेता-यम का संवाद कृष्णयजुर्वेद के कठोपनिषद् में उद्धृत है।
- कर्मकाण्ड और मन्त्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को 'ब्राह्मण' कहते हैं। ''ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थः।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अरण्य में होने वाले अध्ययन-अध्यापन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा आदि आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं।
- उपनिषद् शब्द उप + नि + सद् + क्विप् अर्थात् तत्त्वज्ञान के लिए गुरु के पास सविनय बैठना।

  होता—ऋग्वेद के मन्त्रों का, **उद्गाता**—सामवेद के, अध्वर्यु—यजुर्वेद और **ब्रह्म**— अथर्ववेद का प्रतिनिधित्व करता है। यह यज्ञ का अधिष्ठाता और संचालक होता है।

11. ''ऊहः खल्वपि'' इति प्रयोजनमस्ति

(a) कल्पवेदाङ्गस्य (b) ज्योतिषवेदाङ्गस्य
(c) निरुक्तवेदाङ्गस्य (d) व्याकरणवेदाङ्गस्य

उत्तर–(d)

''ऊहः खल्वपि'' यह व्याकरण का प्रयोजन है।

वेदाङ्ग की संख्या छः है।—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त। पतञ्जलि कृत के महाभाष्य में व्याकरण के 5 प्रयोजन वर्णित हैं—

''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्''

रक्षा—वेदों की रक्षा, **ऊह**—यथास्थान विभक्ति-परिवर्तन, वाच्य-परिवर्तन आदि।

आगम—ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए।

लघु—सरल ढंग से शब्द-ज्ञान के लिए, **असन्देह**—शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भर्तृहरि का 'वाक्यपदीय' व्याकरणदर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।
- जयादित्य—वामन की काशिका, कैय्यट का 'प्रदीप' प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ है।

12. वेदकालस्य निर्धारणे भारतीय ज्योतिष परम्परा परिपालिता।

(a) बालगङ्गाधरतिलकमहोदयेन (b) महर्षिदयानन्देन
(c) एम्.विन्टरनिट्जमहोदयेन (d) महर्षिरमणेन

उत्तर–(a)

वेदों का रचनाकाल विभिन्न दार्शनिकों के द्वारा निर्धारित किया गया। ज्योतिष के आधार पर काल-निर्धारण श्री बालगङ्गाधर तिलक ने किया।

मत-प्रतिपादक	आधार	रचना-काल
स्वामी दयानन्द सरस्वती	वेद-मन्त्र	सृष्टि का आरम्भ
अविनाश चन्द्र दास	भूगर्भ	25 हजार वर्ष ई.पू.
बाल गंगाधर तिलक	ज्योतिष	छः हजार वर्ष ई.पू.
डॉ. आर.जी. भण्डारकर	वेदमन्त्र	छः हजार वर्ष ई.पू.
शंकर बालकृष्ण दीक्षित	ज्योतिष	3500 ई.पू.
एच. याकोबी	ज्योतिष	4500 से 2500 ई.पू.
विन्टरनित्स	मितानी शिलालेख	2500 ई.पू.
मैक्समूलर	बौद्ध साहित्य	1200 ई.पू.

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद और इससे ही अथर्ववेद का भी प्रादुर्भाव स्वीकार किया है।
- बालगङ्गाधर तिलक ने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया–(1) अदिति काल (2) मृगशिरा काल (3) कृत्तिका काल (4) सूत्र काल (अन्तिम काल)।

13. किं सत्यमस्ति?

(a) महर्षि दयानन्दः-अथर्ववेदभाष्यकारः।

(b) महर्षि रमणः-ताण्ड्यमहाब्राह्मणकारः।

(c) यास्कः-प्रातिशाख्यकारः।

(d) पिङ्गलः-छन्दशास्त्रकारः।

उत्तर–(d)

छन्दशास्त्रकार पिङ्गल हैं। षड् वेदाङ्गों में छन्द भी शामिल है– **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।**

छन्दस् शब्द छद् धातु से बना है–''छन्दांसि छादनात्।''

कात्यायन ने छन्द का लक्षण किया''यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- छन्दोविषयक प्रमुख ग्रन्थ–ऋक्प्रातिशाख्य, शांखायन श्रौतसूत्र, सामवेद निदानसूत्र, कात्यायन कृत दो छन्दोऽनुक्रमणियां।

वैदिक छन्द–

(1) गायत्री (24 वर्ण–8, 8। 8)

(2) उष्णिक् (28 वर्ण 8, 8।12)

(3) अनुष्टुप् (32 अक्षर 8, 8। 8, 8)

(4) बृहती (36 अक्षर 8, 8। 12.8)

(5) पंक्ति (40 अक्षर 8.8। 8, 8, 8)

(6) त्रिष्टुप् (44 अक्षर 11, 11, 11, 11)

(7) जगती (48 अक्षर 12, 12, 12, 12)

- छन्द में 1 अक्षर कम निचृत् तथा 1 अक्षर अधिक भूरिक्। दो अक्षर कम विराट् तथा 2 अक्षर अधिक स्वराट् कहलाता है।

14. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत।

(a) प्रभाकरः	**1. अन्यथाख्यातिः**
(b) शङ्करः	**2 अख्यातिः**
(c) कुमारिलः	**3. अनिर्वचनीयरुयातिः**
(d) गौतमः	**4. विपरीतख्यातिः**

	(A)	**(B)**	**(C)**	**(D)**
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	3	4	2	1
(d)	4	2	3	1

उत्तर–(b)

भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदायों में अपने भत्म सिद्धान्त प्रचलित हैं। अद्वैत वेदान्त के प्राचीन ग्रन्थों में पञ्चख्याति का उल्लेख है।

''आत्मख्यातिरसत्ख्यातिरख्यातिः ख्यातिरन्यथा।

तथाऽनिर्वचनीयख्यातिरेतत्ख्याति पञ्चकम्।।''

अख्याति–मीमांसक प्रभाकर का मत है।

अनिर्वचनीयख्याति–अद्वैतवेदान्त (शङ्कर) आदि का मत है।

अन्यथाख्याति–गौतम का मत है

विपरीतख्याति–कुमारिल का मत है।

आत्मख्याति–विज्ञानवादी बौद्धों का मत है।

असत्ख्याति–शून्यवादी बौद्धों का मत है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अद्वैतवेदान्त में अध्यास का विनियोग अनिर्वचनीय ख्याति में ही है।
- परवर्ती काल में रामानुज का सत्ख्यातिवाद तथा मध्व का असत्ख्यातिवाद प्रसिद्ध हुआ।

15. कारणैकार्थपत्यासत्या को जनकः?

(a) घटं प्रति कपालः

(b) घटं प्रति दण्डः

(c) घटरूपं प्रति कपालरूपम्

(d) घटं प्रति कपालम्

उत्तर–(c)

''कारणैकार्थ पत्त्यासत्या घटरूपं प्रति कपालरूपम् जनकः।''

''व्यापारवदसाधारणं कारणं करणं।''

कार्यजनकः कार्यनियतपूर्ववृत्तिपदार्थ कारणम्। यथा घटं प्रति 'दण्ड-चक्र-चीवर कुलालादि'। यह समवायि, असमवायि, निमित्त के भेद से तीन प्रकार होता है।

- समवायसम्बन्धेन यत्र कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा घटं प्रति कपालद्वयम्।
- समवायिकारणे विद्यमानं गुणकर्म रूपमसमवायिकारणम्। यथा घटं प्रति कपालद्वयसंयोगः।
''घटरूपं प्रति कपालरूपम्।''
इससे दोनों से भिन्न निमित्त कारण है, जैसे–घट के प्रति दण्ड-चक्रादि।

16. सांख्ये सर्गः कति विधो भवति?

(a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) अष्टविधः

उत्तर–(a)

सांख्य के अनुसार सृष्टि दो प्रकार की होती है–भौतिक और बौद्धिक।

''एष प्रत्यय (सर्गो विपर्ययाऽशक्तितुष्टिसिद्ध्याख्यः।
गुणवैषम्यविमर्दात् तस्य च भेदास्तु पञ्चाशत्।''

- बुद्धि के चार प्रमुख परिणाम हैं–विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि। बुद्धिसर्ग को प्रत्ययसर्ग भी कहते हैं।
- प्रत्यय सर्ग के कुल 50 भेद हैं–5 विपर्यय + 28 अशक्ति + 9 तुष्टि + 8 सिद्धि।
भौतिक सर्ग के तीन भेद हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पुरुष का भोग-अपवर्ग रूप प्रयोजन ही पुरुषार्थ है।
- सांख्य में ज्ञान से मोक्ष होता है–''ज्ञानेन चापवर्गः''
- अज्ञान से बन्धन की प्राप्ति होती है–''विपर्ययादिष्यते बन्धः।''
- सूक्ष्म शरीर 18 तत्त्वों से निर्मित है। इसे लिङ्गशरीर भी कहते हैं।
- पुरुष के संयोग से जड़ प्रकृति चेतन के समान प्रतीत होती है।

17. ज्ञाततापदार्थः केन स्वीकृतः?

(a) नैयायिकेन (b) वैशेषिकेण
(c) भाट्टमीमांसकेन (d) प्राभाकरमीमांसकेन

उत्तर–(c)

ज्ञातता पदार्थ को भाट्टमीमांसक स्वीकार करते हैं। भाट्टमत में ''अयं घटः'' ऐसा ज्ञान जब उत्पन्न होता है तब ही ज्ञान के विषय में 'ज्ञातता' नामक पदार्थ की उत्पत्ति होती है। ''ज्ञातो घटः'' यह प्रतीति ज्ञातता की साधक है। यह ज्ञातता ज्ञान के प्रामाण्य का निश्चय करवाती है।

मीमांसक अप्रामाण्यग्रह को परतः मानते हैं। शुक्ति में रजत का ज्ञान अन्य ज्ञान से बाधित हो तब ही उसके अप्रमाण्य का निश्चय होता है। भ्रमात्मक ज्ञान के विषय में मीमांसकों का स्वतन्त्र मत है। प्रभाकर मिश्र की मान्यतानुसार प्रत्येक ज्ञान प्रमात्मक ही होता है। भ्रम का अस्तित्व ही नहीं है। शुक्ति में रजत के ज्ञान को भ्रमात्मक कहा जाता है। वह सत्य नहीं है। भ्रमस्थान पर चाकचिक्य इत्यादि रजत के धर्मों को देखकर रजत की स्मृति होती है और शुक्ति का तथा रजत का भेद पकड़ा नहीं जाता है। यही भ्रम की प्रक्रिया है।

18. असमवायिकारणनाशात् कस्य नाशो भवति?

(a) द्रव्यस्य (b) गुणस्य
(c) कर्मणः (d) न कस्यापि

उत्तर–(a)

असमवायिकारणनाशात् द्रव्यस्य नाशो भवति।

असमवायिकारण के नष्ट होने पर द्रव्य का नाश होता है।

असमवायिकारणनाशरूपकारणाभावेन द्वितीयक्षणे द्रव्य नाशासम्भवात्।

कारणं त्रिविधं–समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्।

- यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत् समवायिकारणम्। यथा–तन्तवः पटस्य पटश्च स्वगतरूपादेः।
- कार्येण कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतं सत् कारणसमवायिकारणम्। यथा- तन्तु संयोगः पटस्य, तन्तुरूपं पटरूपस्य।
- तदुभयभिन्नकारणं निमित्तकारणम्। यथा तुरीवेमादिकं पटस्य।
- इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

प्रत्यक्ष ज्ञान का कारण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है–(1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव।

19. त्रिवृत्तकरणं केषां भूतानां प्रतिपादितम्?

(a) पृथ्वीजल तेजसाम्। (b) आकाशवायु तेजसाम्।
(c) जलतेजवायूनाम। (d) पृथ्वीजलवायूनाम्।

उत्तर–(b)

त्रिवृत्तकरणं आकाशवायु तेजसाम् भूतानां प्रतिपादितम्।

कारण शरीर

मनोमय - (मन + पञ्च - ज्ञानेद्रियां)-कर्तृरूप + ज्ञानशक्ति सम्पन्न

विज्ञानमय - (बुद्धि + पञ्चज्ञानेन्द्रियां)- करण रूप + इच्छा शक्ति सम्पन्न

प्राणमय - (पञ्चकर्मेन्द्रियां + पञ्चप्राण)- कार्यरूप + क्रिया शक्ति सम्पन्न।

- **पञ्चकोश–**(1) अन्नमय (2) प्राणमय (3) मनोमय (4) विज्ञानमय (5) आनन्दमय
- **स्थूल शरीर–जरायुज :** मनुष्य, पशु आदि। **अण्डज :** पक्षी, सर्प आदि। **स्वेदजः** यूका, मच्छर आदि। **उद्‌भिज्ः** तृण्, वृक्षादि।

20. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत।

(a) आरम्भवादः	**1. सांख्यानाम्**
(b) परिणामवादः	**2. नैयायिकानाम्**
(c) विवर्तवादः	**3. अद्वैतवेदान्तिनाम्**
(d) विज्ञानवादः	**4. बौद्धानाम्**

	(A)	**(B)**	**(C)**	**(D)**
(a)	3	2	1	4
(b)	2	1	3	4
(c)	2	4	3	1
(d)	1	2	3	4

उत्तर–(b)

आरम्भवाद, नैयायिकों का कार्यसम्बन्धी सिद्धान्त है। कारणों से कार्य की उत्पत्ति होती है। उत्पत्ति के पूर्व कार्य नहीं होता।

- सत्कार्यवाद, सांख्यदर्शन का मुख्य आधार है। सत्कार्यवाद के दो भेद हैं- परिणामवाद तथा विवर्तवाद।
  परिणामवाद से तात्पर्य है कि कारण वास्तविक रूप में कार्य में परिवर्तित हो जाता है। जैसे- दूध, दही के रूप में रूपान्तरित होता है।
- विर्तवाद, अद्वैतवेदान्तियों का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म को सृष्टि का हेतु और संसार को माया मानते है।
- विज्ञानवाद, बौद्ध आचार्यों का मत है। इस सिद्धान्त के अनुसार संसार के समस्त पदार्थ असत्य होने पर भी विज्ञान या चित्त की दृष्टि से सत्य ही हैं।

21. ज्ञानस्य प्रत्यक्षत्वं को न स्वीकरोति?

(a) नैयायिकः (b) प्रभाकरमीमांसकः

(c) भट्टमीमांसकः (d) मुरारीमिश्रः

उत्तर–(a)

ज्ञानस्य प्रत्यक्षत्वं नैयायिकः न स्वीकरोति।

ज्ञान के प्रत्यक्षत्व को नैयायिक नहीं स्वीकार करते हैं।

न्यायदर्शन के प्रणेता गौतममुनि हैं। इनको अक्षपाद के नाम से भी जाना जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं। इन्हें काश्यप, उलूक, पैलुक एवं औलूकाय भी कहा जाता है। इनका प्रमुख सिद्धान्त–परमाणुकारणवाद है। इसमें सात पदार्थ–द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय-अभाव हैं।
- शून्यवादी बौद्ध किसी प्रमाण को स्वीकार नहीं करते है।
- प्रभाकर मीमांसक के अनुसार प्रमाण (प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द-अर्थापत्ति) है।

22. न्यायमते पदार्थत्वं किमस्ति?

(a) जातिः। (b) अखण्डोपाधिः।

(c) सखण्डोपाधिः। (d) पदार्थान्तरम्।

उत्तर–(b)

न्यायमत में पदार्थ अखण्ड उपाधि वाला है।

जिससे जाति का बोध होता है वह उपाधि है। यह उपाधि दो प्रकार की होती है–सखण्डोपाधि, अखण्डोपाधि।

सखण्ड नित्य और अनित्य दो प्रकार का होता है, जैसे–शरीरत्त्व आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **समवाय**–गुण-गुणी, क्रिया-क्रियावान्, जाति और व्यक्ति के बीच होने वाला सम्बन्ध।
- **समवेत्**–जो समवाय-सम्बन्ध से कहीं रहता हो या जिसमें कोई धर्म समवाय सम्बन्ध से रहता हो।
- **सत्कारणवाद**–जगत् के मूलकारण को सत् मानने का सिद्धान्त है।
- **सत्ख्यातिवाद**–समस्त भत्मस्थलों में सत्पदार्थ का ही आभास मानने का सिद्धान्त।
- **अव्यप्रतिपक्ष**–जिस हेतु का प्रतिपक्ष हेतु वर्तमान हो।
- **व्यधिकरण**–एक अधिकरण में न रहने वाला।

23. ''उपरतिः'' इत्यस्य कोऽर्थः?

(a) इन्द्रियाणां निग्रहः

(b) मनसो निग्रहः

(c) निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ स्थिरता।

(d) निगृहीतानां इन्द्रियाणां विषयाकर्षणाभावः।

उत्तर–(d)

निग्रहीतानां इन्द्रियाणां विषयाकर्षणाभावः।

साधन चतुष्टय–नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रार्थफलभोगविराग, शमादिषट्कसम्पत्ति और मुमुक्षुत्व।

- आत्मा या ब्रह्म ही नित्य-वस्तु है, शेष अन्य प्रतीयमान् प्रपञ्च समूह अनित्य है। यही नित्यानित्यवस्तुविवेक कहलाता है।
- नश्वर वस्तुओं से विरत होना 'इहामुत्रार्थफलभोगविराग' कहलाता है।
- शमादि छः हैं–शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा।
  शम—शमस्तावच्छ्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः।
  दम—दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम्।
  उपरति—निर्वर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः।
  तितिक्षा—शीतोष्णद्वन्द्वसहिष्णुता।
  श्रद्धा—गुरुपदिष्टवेदान्तवाक्येषुविश्वासः श्रद्धाः।
  समाधान—निग्रहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्।
- मुमुक्षुत्वं मोक्षेच्छा।

24. कः जीवन्मुक्तिं न स्वीकरोति?

(a) नैयायिकः (b) मीमांसकः
(c) सांख्यः (d) अद्वैतवेदान्ती

उत्तर–(b)

मीमांसकः जीवन्मुक्तिं न स्वीकारोति। मीमांसक जीवन्मुक्ति को स्वीकार नहीं करते हैं।

मीमांसासूत्र के रचयिता महर्षि जैमिनि हैं। इसे पूर्वमीमांसासूत्र भी कहते हैं।

- ज्ञान उपलब्धि के छः साधन–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि हैं।
- मीमांसा दर्शन के अनुसार वेद अपौरुषेय, नित्य एवं सर्वोपरि है। इसमें आत्मा, ब्रह्म, जगत् आदि का विवेचन नहीं है। ये शब्द को नित्य मानते हैं।
- मीमांसासूत्र पर कुमारिलभट्ट ने 'कातंत्रवार्तिक' और 'श्लोक वार्तिक' भाष्य लिखा है।
- वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणाद हैं। यह दर्शन, न्यायदर्शन से बहुत साम्य रखता है।

25. अधोनिर्दिष्टेषु किम्असत्यमस्ति?

(a) जीवन्मुक्तिरेव विदेहमुक्तिः।
(b) इच्छाशक्तिमान् करणरूपः मनोमयकोशः।
(c) सांख्यमते दशेन्द्रियाणि भवन्ति।
(d) वस्तुनि अवस्तुन आरोपः अध्यारोपः।

उत्तर–(c)

सांख्यमत के अनुसार 11 इन्द्रिय, बुद्धि और अहङ्कार कुल तेरह करण हैं।

''करणं त्रयोदशविधं तदाहरणधारणप्रकाशकरम्।
कार्यं च तस्य दशधाहार्यं धार्यं प्रकाश्यं च।।''

त्रयोदशकरण में–आभ्यन्तरकरण : बुद्धि, अहङ्कार, मन। **बाह्यकरण :** पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां।

- प्रकृति और पुरुष के सूक्ष्म भेद को बुद्धि प्रकट करती है। ''प्रधानपुरुषान्तरं सूक्ष्मम्-बुद्धिम्।
- सूक्ष्म शरीर नित्य होता है तथा इसकी गति सर्वत्र होती है। सूक्ष्म शरीर के 18 अवयव हैं। रजस् और वीर्य के मिश्रण को कलल् कहा जाता है।
- विवेकख्याति सांख्यशास्त्र के द्वारा सम्भव है।
- वैराग्यात् प्रकृतिलयः। वैराग्य से प्रकृतिलय होता है।
- संसारों भवति राजसाद्रागात्। रजोमय राग से संसरण होता है।
- ऐश्वर्यादविघातः–ऐश्वर्य से इच्छा की सफलता होती है।

26. अस्य प्रातिपदिकसंज्ञा भवितुमर्हति-

(a) कृष्ण + अम् + श्रित + सु
(b) भू + अ + ति
(c) हरि + ङि
(d) यज्

उत्तर–(c)

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्–धातु रहित, प्रत्यय या प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। जैसे–राम, लता, कृष्ण, हरि।

- **कृत्तद्धितसमासाश्च–**कृत प्रत्ययान्त, तद्धित प्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं। जैसे–कारकः, शालीयः, राजपुरुषः।
- **अपृक्तएकालप्रत्ययः–**जो प्रत्यय एक वर्णरूप हो उसकी अपृक्त संज्ञा होती है।–''वाच् सु'' अनुबन्ध लोप होकर स् एक वर्णरूप प्रत्यय है।
- **भूवादयो धातवः–**क्रिया के वाचक 'भू' आदि तथा 'वा' के प्रकार वाले शब्दों की धातुसंज्ञा होती है। जैसे–भू, पठ्, गम् वा आदि।
- **उपदेशेऽजनुनासिक इत्–**उपदेश अवस्था में अनुनासिक अच् वर्ण की इत् संज्ञा होती है।–एंधँ में धकारोत्तरवर्ती अकार अनुनासिक होने से इत्संज्ञक है।

27. 'अग्निचित्' इत्यत्र उपधासंज्ञा अस्ति

(a) 'इत्' समुदायस्य (b) 'चित्' समुदायस्य
(c) 'त' वर्णस्य (d) 'चि' वर्णस्य

उत्तर–(a)

अग्निचित् में ''इत्' उपधा संज्ञक है।

''अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा''–अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है–गम् में अ, राम् में अ, मुच् में उ, भिद् में इ की उपधा संज्ञा होती है।

अचोऽन्त्यादि टि–अचों के मध्य में जो अन्त्य अच् आदि में जिसके आता है उस समुदाय की 'टिसंज्ञा' होती है–राजन् में अन् की टिसंज्ञा हुयी है।

''शि सर्वनामस्थानम्''–शि की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है–जैसे वनानि, मधूनि।

''वृद्धिरादैच्''–आ, ऐ, औ इन तीन वर्णों की वृद्धि संज्ञा होती है। **जैसे-** सदैव में–ऐ की।

''अदेङ्गुणः''–अ, ए, ओ इन तीन वर्णों की गुण संज्ञा होती है। **जैसे-** रमेशः में ए की।

''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्–दो या दो से अधिक वर्णों के पारस्परिक उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न समान होने पर ''सवर्णसंज्ञक'' होते हैं। जैसे-अ-अ, इ-ई, उ-ऊ।

28. 'पशुना रुद्रं यजते' इत्यत्र 'पशुना' पदे या तृतीया, सा कस्मिन् कारकेऽस्ति

(a) करणकारके (b) सम्प्रदानकारके
(c) कर्मकारके (d) कर्तृकारके

उत्तर–(a)

''यजेः कर्मणः करणसञ्ज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसञ्ज्ञा'' (वार्तिक)। जैसे–पशुना रुद्रं यजते। यज् धातु के कर्म कारक की करण कारक संज्ञा तथा सम्प्रदान कारक की कर्म कारक संज्ञा होती है। यहाँ पशु वस्तुतः कर्म है किन्तु प्रकृति वार्तिक से उसकी करण संज्ञा हुई और कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से इसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।

● **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वार्तिक)।** अकर्मक क्रिया के द्वारा कर्त्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी भी सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे–पत्ये शेते।

● **''मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु''**– अनादर भाव गम्यमान होने पर दिवादिगणी मन् धातु के कर्म में, यदि वह प्राणीवाचक न हो तो विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है–न त्वां तृणं मन्ये, तृणाय वा।

29. 'पुष्पाणि स्पृहयन्ति'–इत्यत्र 'पुष्पाणि' इत्यस्य कर्मसंज्ञा भवति

(a) ईप्सितत्वात् (b) ईप्सितमत्वात्
(c) स्पृह्धातोः प्रयोगात् (d) प्रकर्षाभावात्

उत्तर–(b)

'पुष्पाणि स्पृहयन्ति' यहां पुष्पाणि में ईप्सितमत्वात् से कर्म संज्ञा हुई है।

सामान्य रूप से ईप्सित होने पर इच्छित पदार्थ की सम्प्रदान संज्ञा होती है।

सर्वाधिक ईप्सिततम होने पर 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म'से कर्म संज्ञा होती है।

- **स्पृहेरीप्सितः–**स्पृह धातु के योग में ईप्सित पदार्थ की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे–''पुष्पेभ्यः स्पृहयति'' में चतुर्थी विभक्ति है।
- **''धारेरुत्तमर्णः**–णिजन्त धृ धातु के योग में ऋण देने वाले की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे–भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।
- **''राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः**–राध् और ईक्ष् धातुओं के योग में जिसके बारे में नाना प्रकार के प्रश्न हों उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है–कृष्णाय राध्यति ईक्षते वा।

30. अव्ययीभावसंज्ञायाः फलं किम्?

(a) अव्ययसंज्ञा (b) प्रातिपदिकसंज्ञा
(c) सुपःलुक् (d) सुप्प्रत्ययानां प्राप्तिः

उत्तर–(a)

अव्ययीभाव संज्ञा की अव्यय संज्ञा फल है।

अव्ययीभावः–यह अधिकारसूत्र है। अव्ययीभाव समास होने के बाद सिद्ध शब्द नपुंसकलिङ्ग वाला हो जाता है।

- **''अर्थवदधातुरप्रत्ययः''**–धातुरहित, प्रत्यय व प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है–राम, लता, कृष्ण।
- **''अव्ययीभावे चाकाले''**–यदि काल का वाचक शब्द उत्तर पद में न हो तो अव्ययीभाव समास में सह के स्थान पर स आदेश होता है।–सहरि, सचक्रम।
- **''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः''**–शरत् आदि शब्दों से समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है। जैसे-उपशरदम्, प्रतिविपाशम्।
- **''नदीभिश्च''**–संख्यावाचक सुबन्त शब्द का नदीवाचक सुबन्त शब्दों के साथ समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

31. 'सुमद्रम्' अत्र 'सु' अव्ययः कस्मिन्नर्थे वर्तते?

(a) 'सुन्दरम्' इत्यस्मिन् अर्थे
(b) 'सुष्ठु' इत्यस्मिन् अर्थे
(c) 'समृद्धिः' इत्यस्मिन् अर्थे
(d) 'समीपम्' इत्यस्मिन् अर्थे

उत्तर–(c)

सुमद्रम् में सु अव्यय 'समृद्धि' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

''अव्ययंविभक्ति–समीप-समृद्धि-व्यृद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्द प्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्त-वचनेषु।''

उपर्युक्त सभी अर्थों में अव्ययीभाव समास होता है।

- अव्ययीभाव समास सदैव नपुंसकलिङ्ग में होता है।
- ''सुमद्रम्''–मद्रदेशवासियों की समृद्धि (मद्राणां समृद्धिः'।
- 'दुर्यवनम्–यवनों की समृद्धि का अभाव (यवनानां व्यृद्धिः'।
- ''निर्मक्षिकम्''–मक्खियों का अभाव (अभाव अर्थ में)।
- ''अतिहिमम्''–हिम का अत्यय (अत्ययार्थ में)।
- ''प्रत्यर्थम्''–प्रत्येक अर्थ के प्रति (अर्थंमर्थं प्रति)।
- **तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन–**शङ्कुलया खण्डः-शङ्कुलाखण्डः।
- **कर्तृकरणे कृता बहुलम्–**हरिणा त्रातो-हरित्रातः, नखैर्भिन्नो-नखभिन्नः।

32. 'स नपुंसकम्' इत्यनेन सूत्रेण नपुंसकत्वं भवति

(a) अव्ययीभावसमासे (b) बहुव्रीहिसमासे
(c) कर्मधारयसमासे (d) समाहार द्विगुसमासे

उत्तर–(b)

''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास में नपुंसकत्व होता है। बहुव्रीहि समास का भेद द्वन्द्व समास है।

''पाणिपादम्''–हाथ और पैर का समूह। पाणी च पादौ च तेषां समाहारद्वन्द्वः। यहाँ चार्थे द्वन्द्वः समास करने के बाद द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् से एकवचन का विधान हुआ। सु विभक्ति, समाहार होने के कारण ''स नपुंसकम्'' से नपुंसक हुआ। अमादेश, पूर्वरूप होकर पाणिपादम् रूप सिद्ध हुआ।

''**अल्पाच्तरम्**''—द्वन्द्व समास के सभी शब्दों में जो शब्द अत्यन्त कम अच् वाला हो, उसका ही पूर्वप्रयोग होता है।
शिवकेशवौ—शिवश्च केशवश्च। अलौकिक विग्रह—शिव सु + केशव सु।
''पिता माता''—मातृ शब्द के साथ उच्चरित पितृ शब्द का विकल्प से शेष होता है। यथा पितरौ, माता पितरौ च।

- ''**द्वन्द्वे घि**''— द्वन्द्व समास में घिसंज्ञक शब्द पूर्व में प्रयुक्त होता है। यथा हरिहरौ।

33. विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तं समासः नाम-

(a) नित्यसमासः (b) केवलसमासः
(c) तत्पुरुषसमासः (d) अनित्यसमासः

उत्तर—(b)

विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तं केवलसमासः।
समास के पाँच भेद होते हैं—केवल समास, अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास।

- **केवल समास**—इसमें समासविशेष की संज्ञा नहीं होती है, इसलिए इसे केवल समास कहा जाता है। जैसे—भूतपूर्व, वागर्थाविव।
- **अव्ययीभाव समास**—इस समास में प्रायः पूर्वपद अव्यय होता है। इस समास में पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है। जैसे—उपकृष्णम्।
- **तत्पुरुष समास**—इसमें उत्तरपद प्रधान होता है। जैसे—राजपुरुषः।
- **बहुव्रीहि समास**—इसमें अन्य पद प्रधान होता है, जैसे—पीताम्बरः।
- **द्वन्द्व समास**—उभयपदार्थ प्रधान द्वन्द्व समास होता है। जैसे—रामकृष्णौ।
- **द्विगु समास**—इसमें प्रथम पद संख्यावाचक एवं द्वितीय पद संज्ञा शब्द होता है तथा समस्त पद समूह का बोध करवाता है। **जैसे-** सप्तदिनम्
- **कर्मधारय समास** —इसमें प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। **जैसे-** नीलकमल

34. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

(a) उपधा — **1. सम्प्रदानम्**
(b) रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे — **2. अलोऽन्त्यात् पूर्वः**
(c) अक्ष्णा काणः — **3. कर्मकारकम्**
(d) अधिशीङ् योगे — **4. येनाङ्गविकारः**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	3	4	2
(b)	3	1	2	4
(c)	2	4	1	3
(d)	2	1	4	3

उत्तर—(d)

अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा''—अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है। गम् में अ, रम् में अ, मुच् में उ की उपधा संज्ञा है।

- **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः**''—रुच्यर्थ धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण व्यक्ति की सम्प्रदान संज्ञा होती है, जैसे—हरये रोचते भक्तिः।
- ''**येनाङ्गविकारः**''—जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्ग का विकार लक्षित हो उस अवयववाची शरीर के विकार में तृतीया विभक्ति होती है-अक्ष्णा काणः।
- ''**अधिशीङ्स्थासां कर्म**''—शी, स्था, आस् धातुओं के पहले अधि लगने पर क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। जैसे—अधिशेते वैकुण्ठं हरिः।
- ''**अभिनिविशश्च**''—विश् धातु के पूर्व अभि और नि इन दोनों उपसर्गों के क्रमशः लगने पर क्रिया के आधार की कर्मसंज्ञा होती है। जैसे-अभिनिविशते सन्मार्गम्।

35. कादयो मावसाना वर्णाः भवन्ति-

(a) अन्तस्थाः (b) स्पर्शाः
(c) ऊष्माणः (d) जिह्वामूलीयाः

उत्तर—(b)

''कादयो मावसानाः स्पर्शाः (क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श ध्वनि है)।
प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं—आभ्यन्तर और बाह्य। आभ्यन्तर प्रयत्न के पाँच भेद—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषतविवृत, विवृत, संवृत।

- क से म तक के वर्ण स्पृष्ट संज्ञक हैं। (स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्)
- अन्तःस्थ संज्ञक (य्, र्, ल्, व् वर्ण) ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न है।
- ऊष्मसंज्ञक वर्ण (श् ष् स् ह्) ईषद्विवृत प्रयत्न हैं।
- स्वरसंज्ञक वर्ण—विवृत प्रयत्न है।
- ह्रस्व अ संवृत है (ह्रस्वस्यावर्णस्य प्रयोगे संवृत्तम्)।
  बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
- खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च। हशः संवारा नादा घोषाश्च।

36. एते वर्णास्तालुस्थानीयाः सन्ति-

(a) इ उ ऋ ऌ (b) अ क ह विसर्ग
(c) इ च य श (d) ऋ ट र ष

उत्तर—(c)

तालु स्थानीय, इ च य श है (इचुयशानां तालु)।

- अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः (अकार, कवर्ग, हकार और विसर्ग का ऊच्चारणस्थान कण्ठ है)।
- इचुयशानां तालुः—इकार, चवर्ग, यकार और शकार तालु स्थानीय हैं।)
- ऋटुरषाणां मूर्धा—(ऋटवर्ग, रकार, षकार मूर्धा स्थानीय हैं)।

- उपूपध्मानीयानामोष्ठौ–(पवर्ग, उपध्मानीय, विसर्ग, ओष्ठस्थानीय है)।
- ञमङणानां नासिका च–ञ्, म्, ङ्, ण्, न् नासिकास्थानीय हैं।
- एदैतोः कण्ठतालु–ए, ऐ का उच्चारण कण्ठ और तालु से होता है।
- ओदौतोः कण्ठोष्ठम्–ओ, औ का उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ है।
- जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्।–नासिकाऽनुस्वारस्य। (अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है)।

37. अयोगात्मक भाषासु न भवन्ति-

(a) उपसर्गाः (b) क्रियाः
(c) कारकाणि (d) लिङ्गानि

उत्तर–(c)

अयोगात्मक भाषा में कारक आदि नहीं होते हैं।

विश्वभाषाओं का दो प्रकार से वर्गीकरण किया गया है–आकृतिमूलक और पारिवारिक।

- आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार पद और वाक्य रचना है।
- पारिवारिक वर्गीकरण में रचनातत्त्व के साथ अर्थतत्त्व पर भी ध्यान दिया जाता है।

आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भाग–(1) अयोगात्मक (2) योगात्मक है।

अयोगात्मक भाषाओं में प्रकृति, प्रत्यय और अर्थतत्त्व तथा सम्बन्धतत्त्व का संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। चीनी आदि भाषाएं इसी में हैं।

योगात्मक भाषाओं में प्रकृति, प्रत्ययादि का संयोग रहता है। **योगात्मक** भाषाओं का तीन प्रकार से वर्गीकरण किया गया है–(1) अश्लिष्ट (प्रत्यय) प्रधान (2) श्लिष्ट (विभक्ति) प्रधान (3) प्रश्लिष्ट (समास प्रधान)।

अश्लिष्ट प्रधान भाषाओं की तुर्की प्रतिनिधि भाषा है। **श्लिष्ट** भाषा बहुत उन्नत भाषा है। श्लिष्ट भाषा में ही संस्कृत और हिन्दी परिगणित होती है।

प्रश्लिष्ट भाषाओं में द. अमेरिका की चेरोकी और बास्क आदि बोली समाहित है।

38. रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता?

(a) प्रथमे (b) द्वितीये
(c) तृतीये (d) चतुर्थे

उत्तर–(b)

रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में राजा दिलीप और सुदक्षिणा द्वारा गोसेवा किया गया है।

रघुवंश महाकाव्य कालिदासकृत महाकाव्य है। इसमें 19 सर्ग हैं। रघुवंश में इक्ष्वाकुवंशी महाप्रतापी राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक 28 राजाओं का आदर्शमय वर्णन है। इसका मूल वाल्मीकि रामायण है।

कालिदास की सात रचनाएं हैं–**नाट्यग्रन्थ–**अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्।

महाकाव्यग्रन्थ–रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।

गीतिकाव्य–मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्।

रघुवंश महाकाव्य का मङ्गलाचरण–

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

महत्वपूर्ण सूक्तियां–क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
- प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।
- स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।
- सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः।
- न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।

39. रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार?

(a) राजसूयम् (b) विश्वजित्
(c) अश्वमेधः (d) पुत्रेष्टिः

उत्तर–(c)

रघु ने अश्वमेध यज्ञ किया।

रघुवंश की कथा में राजा दिलीप और सुदक्षिणा वसिष्ठ की गाय नन्दिनी की सेवा करते हैं।

रघु अत्यन्त पराक्रमी थे। इनके पराक्रम के कारण ही इस वंश को रघुवंशम् कहा गया। रघु के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर छोड़े गए घोड़े को इन्द्र ने चुरा लिया था। जिसके परिणामस्वरूप रघु ने उनसे युद्ध कर छुड़ा कर लाए।

रघुवंश महाकाव्यम् में 19 सर्ग हैं। इसमें राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक 28 राजाओं का वर्णन है। यह महाकाव्य सर्गबन्ध है। इस महाकाव्य का प्रधान रस शृङ्गार है।

महाकवि कालिदास की अन्य गौण कृतियां–(1) कालीस्तोत्र (2) गङ्गाष्टक (3) ज्योतिर्विदाभरण (4) राक्षसकाव्य (5) श्रुतबोध।
- निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु–बाणभट्ट ने हर्षचरितम् में कहा है।
- कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः–जयदेव ने प्रसन्नराघवम् में कालिदास के लिए यह उक्ति कही है।

40. खण्डकाव्यमस्ति-

(a) दशकुमारचरितम् (b) नलचम्पू
(c) मेघदूतम् (d) किरातार्जुनीयम्

उत्तर–(c)

मेघदूतम् कालिदास कृत खण्डकाव्य है।

मेघदूत के दो भाग हैं–(1) पूर्वमेघ (2) उत्तरमेघ।

मेघदूत में प्रधान रस विप्रलम्भ है तथा छन्द- मन्दाक्रान्ता है।

यह गीतिकाव्य है। इसमें यक्ष का विरह वर्णित है। इस पर मल्लिनाथ की सञ्जीवनी टीका प्रसिद्ध है। डॉ. कीथ ने मेघदूत को शोकगीत (Elegy) कहा है।

मेघदूतम् की प्रमुख सूक्तियां– कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।

याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः।

आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्।

के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः।

आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानाम्।

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय।

नीचैर्गच्छति उपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

41. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदं भवति-

(a) लक्ष्मीः (b) विभुः

(c) शिवः (d) श्रीः

उत्तर–(a)

भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में 'लक्ष्मी' पद का प्रयोग हुआ है। इसीलिए भारवि के काव्य को 'लक्ष्मीपदाङ्क' कहा जाता है। इनके काव्य को 'विचित्रमार्ग' भी कहा जाता है।

आचार्य मल्लिनाथ ने किरातार्जुनीयम् पर 'घण्टापथ' नाम की टीका लिखी तथा इसकी तुलना 'नारिकेलफल' से किया।

''नारिकेलफलसम्मितः वचो भारवेः''–मल्लिनाथ।

भारवेरर्थगौरवम्–उद्भट। प्रकृतिमधुरा भारविगिरः–श्रीधरदास।

किरातार्जुनीयम् की प्रमुख सूक्तियां–

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।

गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया।

न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।

अहो दुरन्ताबलवद्विरोधिता।

विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तयः।

निराश्रया हन्त हता मनस्विता।

सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।

42. 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः' इयमुक्तिर्वर्तते-

(a) किरातार्जुनीये (b) शिशुपालवधे

(c) नैषधीयचरिते (d) कुमारसम्भवे

उत्तर–(b)

''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'' यह उक्ति शिशुपालवध की है।

शिशुपालवध सर्गबन्ध 20 सर्गों में है। यह माघ कृत महाकाव्य है। इस महाकाव्य का प्रारम्भ और अन्त दोनों 'श्री' शब्द से होता है।

''श्रियः पतिः श्रीमति शासितुम्'' सूक्ति में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है।

शिशुपालवधम् का उपजीव्य महाभारत का सभापर्व है।

शिशुपाल की प्रमुख सूक्तियां–

- गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।
- सदाभिमानैक धना हि मानिनः।
- सतीव योषित्प्रकृतिश्सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।
- ऋतेरवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः।
- गृहीतुमर्थान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः।
- शुभेतराचारविपक्त्रिमापदो निपातनीया हि सतामसाधवः।
- महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।
- सर्व प्रियः खलु भवत्यनुरूपचेष्टः।

43. सत्यं किमस्ति?

(a) हर्षचरितं कथा वर्तते।

(b) हर्षचरितम् आख्यायिका वर्तते।

(c) हर्षचरितं चम्पू वर्तते।

(d) हर्षचरितं महाकाव्यं वर्तते।

उत्तर–(b)

हर्षचरितम् संस्कृत साहित्य में सबसे प्राचीन उपलब्ध आख्यायिका है।

यह गद्य की प्रौढ़ रचना है। महाराजा हर्षवर्धन का चरित्र इसमें वर्णित है।

- बाणभट्ट की प्रमुख रचनाएं–कादम्बरी, हर्षचरितम्, चण्डीशतकम्, मुकुटताडितक, पार्वतीपरिणय।
- राजा हर्ष ने बाणभट्ट को ''महानयं भुजङ्ग'' कहा है।
- वष्यवाणी चक्रवर्ती–हर्षवर्धन
- कविताकामिनीकौतुक–जयदेव
- बाणस्तु पञ्चाननः–श्रीचन्द्रदेव,
- गद्यसमतट–बलदेव उपाध्याय
- पञ्चबाणस्तु बाणः–जयदेव,
- वाणी बाणो बभूव–गोवर्धनाचार्य
- कविताकानन केसरी–चन्द्रदेव
- हर्षचरितम् आठ उच्छ्वासों में विभक्त है।

प्रमुख सूक्तियां

- लोके हि लोहितेभ्यः कठिनतरा खलु स्नेहमया बन्धुपाशाः।
- मातापितृसहस्त्राणि पुत्रदारशतानि च।
- अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी।
- प्रजाभिस्तु बन्धुमतो राजानः, न ज्ञातिभिः
- कामं स्वयं न भवति न तु श्रावयत्यप्रियं वचनमरतिकरमितर इवाभिजातो जनः।

44. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः कः?

(a) वसन्तकः (b) माढव्यः
(c) मैत्रेयः (d) माणवकः

उत्तर–(b)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में माढव्य विदूषक है। इस नाटक में सात अङ्क है। इसका उपजीव्य महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान है।

- शाप का प्रभाव अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अङ्क में दिखता है। **अभिज्ञानशाकुन्तलम् भरतवाक्य**–प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
- राजा दुष्यन्त की दो रानियां–वसुमती और हंसपदिका हैं।
- राजा का कञ्चुकी वातायन है।
- सेनापति भद्रसेन तथा पुरोहित सोमरात है।

प्रमुख सूक्तियां–

- ''किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।''
- न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।
- भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।
- अहोकामी स्वतां पश्यति।
- सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः।
- सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति।
- अतिस्नेहः पापशङ्की।
- को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।
- कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।
- न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।
- अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्।

45. स्वप्न नाटके 'भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा' कस्य वचनमिदम्?

(a) ब्रह्मचारिणः (b) यौगन्धरायणस्य
(c) विदूषकस्य (d) उदयनस्य

उत्तर–(a)

स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में ''भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा'' यह वचन ब्रह्मचारी का है।

''धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्त्ता। भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा।।

स्वप्नवासवदत्तम् छः अङ्कों में विभक्त भास का प्रसिद्ध नाटक है।

प्रमुख सूक्तियां–

- एवमनिर्ज्ञातानि दैवतान्यप्यवधूयन्ते।
- तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति यथाऽयं परिभवः।
- अनतिक्रमणीयो हि विधिः।
- दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।
- अयुक्तं परपुरुषसंकीर्तनम्।
- अनिर्ज्ञातानि दैवतान्यवधूयन्ते।
- कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले।
- दत्तं वेतनं परिखेदस्य।
- सर्वजनसाधारणमाश्रमपदं नाम।
- तपोवनानि नामातिथिजनस्य स्वगेहम्।
- प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।
- सविज्ञानमस्य दर्शनम्।
- स्त्रीस्वभावस्तु कातरः।

46. शोको हि .... रसस्थायि भावः।

(a) श‍ृङ्गारः (b) वीरः
(c) करुणः (d) भयानकः

उत्तर–(c)

शोको हि करुणरसस्थायिभावः।

रस का व्युत्पत्तिपरक अर्थ–आस्वाद (रस्यते आस्वाद्यते इति रसः) है। रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य 'भरतमुनि' हैं। ''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''।

भरतमुनि ने आठ रसों का उल्लेख किया है–

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. श‍ृङ्गार रस	रति	श्यामवर्ण	कामदेव/विष्णु
2. हास्य रस	हास	श्वेतवर्ण	शिवगण
3. करुण रस	शोक	कपोतवर्ण	यम
4. वीर रस	उत्साह	हेमवर्ण	महेन्द्र
5. रौद्र रस	क्रोध	लालवर्ण	रुद्र
6. भयानक रस	भय	कृष्णवर्ण	काल
7. अद्भुत रस	विस्मय	पीतवर्ण	गन्धर्व
8. वीभत्स रस	जुगुप्सा	नीलवर्ण	महाकाल
9. शान्त रस	निर्वेद (शम)	धवलवर्ण	लक्ष्मीनारायण

47. 'अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्यत् भिक्षाभाजनम्' - कस्या उक्तिः?

(a) कादम्बर्याः (b) महाश्वेतायाः
(c) पत्रलेखायाः (d) मदलेखायाः

उत्तर–(b)

''अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्यत् भिक्षाभाजनम्'' यह उक्ति महाश्वेता की है।

कादम्बरी कथामुख बाणभट्ट का गद्यकाव्य है। महाश्वेतावृत्तान्त इसी का भाग है।

बाणभट्ट शोणनदी के पास प्रीतिकूट नामक स्थान पर निवास करते थे। इनके पिता का नाम चित्रभानु तथा माता का नाम राजदेवी था। इनके गुरु भर्वु थे।

कादम्बरी कथामुख में तीन जन्मों की कथा है–

चन्द्रमा–पुण्डरीक–रोहिणी–कपिञ्जल–लक्ष्मी

चन्द्रापीड–वैशम्पायन–पत्रलेखा–इन्द्रायुध

शूद्रक–शुक–कपिञ्जल–चाण्डालकन्या

कादम्बरी का नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त नायक है।

कादम्बरी के मङ्गलाचरण में त्रिगुणस्वरूप अजन्मा परब्रह्म को नमस्कार किया गया है।

कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ 'मदिरा' है।

कादम्बरी की प्रमुख सूक्तियां–

अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।

विह्वला हि राजप्रकृतिः।

अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।

चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः।

इयमनार्या लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।

48. व्यभिचार्यञ्जितः को भवति?

(a) भावध्वनिः (b) रसः
(c) अलंकारः (d) रसाभासः

उत्तर–(b)

''व्यभिचार्यञ्जितः रसः भवति।''

भरतमुनि के अनुसार-''विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्तिः।''

विभाव–सहृदय के हृदय में स्थित स्थायी भावों को आस्वादन योग्य बनाने वाले उपादानों को विभाव कहते हैं। विभाव के दो भेद हैं–आलम्बन और उद्दीपन।

अनुभाव–शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं। इसके भी दो भेद हैं–सात्त्विक और कायिक।

व्यभिचारि/संचारी भाव–जो रसों में नाना रूपों में विचरण करते हैं और रसों को पुष्ट करके आस्वादन योग्य बनाते हैं उन्हें व्यभिचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 33 मानी गई है।

- भट्टलोल्लट का सिद्धान्त उत्पत्तिवाद और दार्शनिक मत मीमांसा है।
- श्रीशंकुक का सिद्धान्त अनुमितिवाद और दार्शनिक मत न्यायदर्शन है।
- भट्टनायक का सिद्धान्त भुक्तिवाद और दार्शनिक मत सांख्य दर्शन है।
- अभिनवगुप्त का सिद्धान्त अभिव्यक्तिवाद और मत शैव दर्शन है।

49. अधोविन्यस्तानां कालानुसारिक्रमं चिनुत

(a) कालिदासः। भासः। बाणभट्टः। भवभूतिः।
(b) भासः। कालिदासः।बाणभट्टः। भवभूतिः।
(c) भवभूतिः। कालिदासः। भासः। बाणभट्टः
(d) बाणभट्टः। भासः। भवभूतिः। कालिदासः।

उत्तर–(b)

भास का समय लगभग द्वितीय शताब्दी ई.पू. के आस-पास माना जाता है।

महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् की प्रस्तावना में 'प्रथितयशसां भाससौमिल्ल' कथन के द्वारा भास को स्मरण किया है, जिससे यह पता चलता है कि कालिदास से पूर्ववर्ती भास थे।

- **भास के तेरह नाटक–**(1) प्रतिज्ञा यौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम् (3) उरुभङ्गः (4) दूतवाक्यम् (5) पञ्चरात्रम् (6) बालचरितम् (7) दूतघटोत्कचम् (8) कर्णभारम् (9) मध्यमव्यायोग (10) प्रतिमानाटकम् (11) अभिषेकनाटकम् (12) अविमारकम् (13) चारुदत्त।
- कालिदास का समय ई.पू. प्रथम शताब्दी माना जाता है।
- बाणभट्ट समतट् हर्ष के सभापण्डित थे अतः बाण का समय लगभग सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध माना जाता है।
  बाणभट्ट ने हर्षचरित के प्रारम्भ में अपने पूर्ववर्ती प्रसिद्ध कवियों और नाटककारों का उल्लेख किया है किन्तु उसमें भवभूति का उल्लेख नहीं है। अतः सिद्ध होता है कि भवभूति बाण के परवर्ती ही थे। भवभूति का समय लगभग 680 ई. से 750 ई. तक माना जाता है।
- अश्वघोष प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। ये समतट् कनिष्क के राजगुरु और आश्रित कवि थे।
- दण्डी का समय 600 ई. के लगभग माना जाता है।
- विशाखदत्त चन्द्रगुप्त द्वितीय के समकालीन थे।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत

(a) नाटकम्	**1. निन्दनीयः पुरुषः**
(b) प्रकरणम्	**2. विटः**
(c) भाणः	**3. धीरप्रशान्तः**
(d) प्रहसनम्	**4. धीरोदात्तः**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	3	2	1
(b)	1	2	4	3
(c)	3	4	2	1
(d)	1	2	3	4

उत्तर–(a)

नाटक–''प्रख्यातवंशो राजर्षिर्दिव्यो वा यत्र नायकः।

तत्प्रख्यातं विधातव्यं वृत्तमत्राधिकारिकम्।

- नाटक इतिहासप्रसिद्ध, मनोहर गुणों से युक्त, धीरोदात्त, यश का अभिलाषी, उत्साहयुक्त, वेदों का रक्षक, पृथ्वी का पालक, प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न कोई राजर्षि अथवा देवता नायक होता है।
- प्रकरण का इतिवृत्त कविकल्पित, सामान्यवर्ग की जनता पर आधारित, नायक, मन्त्री, ब्राह्मण, वणिक् होता है, जो धीरप्रशान्त, धर्म-अर्थ-काम में तत्पर हुआ करता है। नाटक के कार्य विघ्नों से भरे होते हैं।
- भाण में कोई चतुर तथा बुद्धिमान विट अपने द्वारा अनुभूत अथवा किसी दूसरे के द्वारा अनुभूत धूर्त चरित का वर्णन करता है। वह विट आकाशभाषित के द्वारा सम्बोधन तथा उत्तर-प्रत्युत्तर करता है।
- नाटिका में प्रकरण से वस्तु ली जाती है। राजा प्रख्यात एवं धीरललित होता है तथा शृङ्गारप्रधान रस से युक्त होता है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec-2011

संस्कृत

पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. 'मघवन्' कस्या देवताया उपाधिर्वर्तते?

(a) इन्द्रस्य (b) सवितुः
(c) उषसः (d) रुद्रस्य

उत्तर–(a)

''मघवन्'' इन्द्र देवता की उपाधि है।
इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि गृत्समद हैं।
इन्द्र के प्रमुख विशेषण–वज्री, वज्रिन, वज्रबाहु, शचीपति, शतक्रतु, मरुत्वान्, मघवा, वृत्रहा, दस्योर्हन्ता, निचित, हरिदश्व, मनस्वान्, सोमपा, पुरन्दर, वसुपति।

- अग्नि पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि मधुच्छन्दा हैं। यह ऋग्वेद का प्रथम सूक्त है।
- **अग्नि के विशेषण**–ऋत्विक्, जातवेदाः, घृतपृष्ठ, शोचितकेष, रक्तश्मश्रु, तीक्ष्णदंष्ट्र, रुक्मदन्त, गृहपति, विश्वपति, दमूना, पुरोहित, धूमकेतु, सहसपुत्र, यविष्ठ्य, मेध्य, नेता, कविशस्त, वैश्वानर, नाराशंस, घृतमुख, सत्यधर्मा, जज्ञान, त्र्यम्बक, कविक्रतु।
- वरुण द्युस्थानीय देवता हैं। इसके ऋषि शुनःशेप एवं वशिष्ठ हैं।
  वरुण के विशेषण–क्षत्रिय, स्वराट्, मायावी, उरुशंस, उरुचक्षस्, ऋतावधौ, चिकित्वान्, धृतव्रतः, इषिरः, सत्यौजा, आदित्य, मेधिर।

2. यास्काचार्येण कतिविधा देवताः स्वीकृताः?

(a) चतस्त्रः (b) तिस्त्रः
(c) द्वे (d) त्रयस्त्रिंशत्

उत्तर–(b)

आचार्य यास्क तीन प्रकार के देवता मानते हैं (तिस्त्रः एव देवता)–(1) द्युस्थानीय, (2) अन्तरिक्षस्थानीय (3) पृथ्वीस्थानीय।
द्युस्थानीय– सवितृ, विष्णु, अश्विन्, वरुण, उषस् हैं।
अन्तरिक्षस्थानीय–इन्द्र, रुद्र।
पृथ्वीस्थानीय–अग्नि, बृहस्पति, सोम।
- निरुक्त में 14 अध्याय हैं। 12 + 2 परिशिष्ट।
- चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्च।
- भावप्रधानम् आख्यातम्। सत्त्व प्रधानानि नामानि।
- न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति शाकटायनः।
- षड्भावविकाराः भवन्ति इति वार्ष्यायणिः–जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।
- उच्चावचाः पदार्थाभवन्तीति गार्ग्यः।
- निपात–उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति इति निपाताः।
- उपमार्थक निपात–इव, न्, चित्, नु।
- कर्मोपसंग्रहार्थक निपात–च, वा, अह, आ, ह, किल, हि, ननु, खलु, शश्वतम्, नूनम्।
- पादपूरणार्थक निपात–कम्, इम्, इत, उ, इव, त्व, त्वत्।
- निरुक्त के पांच प्रतिपाद्य विषय हैं–वर्णागम, वर्ण विपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातुओं का अनेक अर्थों में प्रयोग।

3. याज्ञवल्क्यः कया उपनिषदा सह सम्बद्धः?

(a) ईशावास्योपनिषदा (b) छान्दोग्योपनिषदा
(c) बृहदारण्यकोपनिषदा (d) श्वेताश्वतरोपनिषदा

उत्तर–(c)

याज्ञवल्क्य का सम्बन्ध बृहदारण्यकोपनिषद् से है।
बृहदारण्यक उपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है। बृहदारण्यकोपनिषद् में ही याज्ञवल्क्य का अपनी दोनों पत्नियों मैत्रेयी और कात्यायनी से संवाद है। दोनों पत्नियों में सम्पत्ति का विभाजन करते समय मैत्रेयी सम्पत्ति लेने से मना करती है और याज्ञवल्क्य से ब्रह्मविद्या का उपदेश प्राप्त करती है। इसी में अभिमानी गार्ग्य और काशिराज अजातशत्रु का भी संवाद है।

- कठोपनिषद् में नचिकेता और यमराज का संवाद है।
- प्रश्नोपनिषद् में छः ऋषि महर्षि पिप्पलाद के पास ब्रह्मविद्या के लिए आते हैं।
- माण्डूक्योपनिषद् में बताया गया है कि यह सारा संसार, वर्तमान, भूत और भविष्यत् सबकुछ 'ओम्' की ही व्याख्या है।
- छान्दोग्योपनिषद् में महर्षि आरुणि द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को अद्वैतवाद का उपदेश दिया गया है।

4. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) पुरुरवा-उर्वशीसंवादः	**1. अथर्ववेदः।**
(b) शिवसंकल्पसूक्तम्	**2. ऋग्वेदः**
(c) त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः	**3. शुक्लयजुर्वेदः**
(d) भूमिसूक्तम्	**4. पाणिनीयशिक्षा**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	3	4	2
(b)	2	3	4	1
(c)	4	3	2	1
(d)	3	2	1	4

उत्तर–(b)

पुरुरवा + उर्वशी संवाद ऋग्वेद का मुख्य संवाद सूक्त है। इस सूक्त में राजा पुरुरवा और उर्वशी नामक अप्सरा के प्रणय-सम्बन्ध का वर्णन है।

- ''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति, सालावृकानां हृदयान्येता।''
  यम + यमी संवाद–ऋग्वेद (10.10)
  सरमा + पणि संवाद–ऋग्वेद (10.108)
  विश्वामित्र + नदी संवाद–ऋग्वेद (3.33)
- 63-64 वर्ण–पाणिनीय शिक्षा में बतलाए गए हैं।

- शिवसंकल्पसूक्त–शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है।
- पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, हिरण्यगर्भसूक्त, वाक्सूक्त, संज्ञानसूक्त, दानस्तुति सूक्त, विवाह सूक्त ऋग्वेद से सम्बन्धित हैं।
- भूमि सूक्त अथर्ववेद से सम्बन्धित है।
- अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्–वाक्सूक्त।
- सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्–संज्ञान सूक्त।
- द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया-अस्यवामीय सूक्त।
- या आत्मदा बलदा–हिरण्यगर्भसूक्त।
- पुरुष एवेदं सर्व यद् भूतं यच्च भव्यम्–पुरुषसूक्त।

5. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a) यास्कः — 1. ऋग्वेदः
(b) यम-यमी — 2. सामवेदः
(c) तैत्तिरीयब्राह्मणम् — 3. निरुक्तम्
(d) तलवकार-आरण्यकम् — 4. कृष्णयजुर्वेदः

	(A)	**(B)**	**(C)**	**(D)**
(a)	3	4	2	1
(b)	1	3	4	2
(c)	3	1	4	2
(d)	3	2	1	4

उत्तर–(c)

निरुक्त यास्क कृत है। इसमें 12 अध्याय और 2 परिशिष्ट अध्याय मिलाकर कुल 14 अध्याय हैं।
अध्याय-1–निघण्टु, अध्याय-2 और 3–नैघण्टुक काण्ड, अध्याय-4 से 6–नैगम काण्ड, अध्याय-7 से 12–दैवत काण्ड, अध्याय-13 से 14–निर्वचन प्रक्रिया, सृष्टि-उत्पत्ति।
यास्क सभी नामों को धातुज मानते हैं।
- यम-यमी (10.10)–यम-यमी भाई-बहन हैं। यमी यम से सृष्टि के लिए प्रणय-याचना करती है। यम इसे अनैतिक और अनुचित बताकर प्रार्थना को अस्वीकार कर देता है।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण–कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है। इसके रचयिता आचार्य तित्तिरि हैं।
- तलवकार आरण्यक– यह सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बन्धित है। इसको जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं। इसमें चार अध्याय हैं। ओम और गायत्री का महत्व इसी आरण्यक में है। गायत्री से ही प्रजापति और देवों ने अमरत्व की प्राप्ति की थी।

6. यज्ञे यजुर्वेदसम्बद्धोऽस्ति–

(a) होता (b) अध्वर्यु
(c) उद्गाता (d) ब्रह्मा

उत्तर–(b)

यज्ञ में यजुर्वेद का सम्बन्ध अध्वर्यु से है।
चारों वेदों के प्रतिनिधि के रूप में चार ऋत्विज् होते हैं।
(1) होता– ऋग्वेद का प्रतिनिधि है। यह यज्ञों में ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करता है।
(2) अध्वर्यु– इसका सम्बन्ध यजुर्वेद से है। यह यज्ञों के विविध कर्मों का सम्पादन करता है। यज्ञ में घृत की आहुति देना आदि इसका ही कार्य है।
(3) उद्गाता– यह सामवेद का प्रतिनिधि है। यह यज्ञ में देवस्तुति में सामवेद के मंत्रों का गान करता है।
(4) ब्रह्मा– यह अथर्ववेद का प्रतिनिधित्व करता है। यह यज्ञ का अधिष्ठाता और संचालक होता है। यह चतुर्वेदविद् होता है।

- ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से किया गया है–(1) अष्टक, अध्याय, वर्ग और मन्त्र (2) मण्डल, अनुवाक, सूक्त और मन्त्र

- ऋग्वेद का नवम् मण्डल पवमान सोम से सम्बन्धित है।

7. त्रिष्टुप् छन्दसि अक्षराणि भवन्ति-

(a) 37 (b) 40
(c) 32 (d) 44

उत्तर–(d)

त्रिष्टुप् छन्द में 44 अक्षर होते हैं। इसमें 11 अक्षर वाले 4 पाद होते हैं। छन्द शब्द छद् (ढकना) धातु से बना है (छन्दांसि छादनात्)। छन्दः पादौ तु वेदस्य–जिस प्रकार पैर शरीर को स्थिरता प्रदान करता हैं उसी प्रकार छन्द साहित्य को स्थिरता प्रदान करता है।
कतिपय मुख्य छन्द–(1) गायत्री (24 वर्ण)–इसमें आठ वर्णों वाले 3 पाद होते हैं।
(2) उष्णिक् (28 अक्षर)–इसमें तीन पाद होते हैं। 2 पाद में पाद 8 और 1 पाद में 12 वर्ण होते हैं।
(3) अनुष्टुप् (32 अक्षर)-इसमें 8 अक्षर वाले 4 पाद होते हैं।
(4) बृहती (36 अक्षर)-इसमें चारों पादों में 32 अक्षर होते हैं।
(5) पंक्ति (40 अक्षर)–इसके 4-5 पाद होते हैं। कुल 40 अक्षर होते हैं।
(6) त्रिष्टुप् (44 अक्षर)–इसमें 44 अक्षर हैं। इसमें 11 अक्षरवाले 4 पाद हैं।
(7) जगती (48 अक्षर)–इसमें 48 अक्षर होते हैं। 12 अक्षर वाले 4 पाद होते हैं।

8. **ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य असौ वेदानां कालनिर्धारण मकरोत्**

(a) मैक्समूलरः (b) लोकमान्यतिलकः
(c) मैक्डॉनलः (d) सायणाचार्यः

उत्तर–(b)

ज्योतिषविज्ञान को आधार मानकर लोकमान्य तिलक ने वेद का काल निर्धारित किया।

प्रतिपादक	आधार	रचना-काल
स्वामी दयानन्द सरस्वती	वेद-मन्त्र	सृष्टि का प्रारम्भ
अविनाश चन्द्र दास	भूगर्भ	25 हजार वर्ष ई.पू.
दीनानाथ शास्त्री चुलेट	ज्योतिष	वर्तमान से 3 लाख वर्ष पूर्व
बाल गङ्गाधर तिलक	ज्योतिष	छः हजार वर्ष ई.पू.
डॉ. आर.जी. भण्डारकर	वेदमन्त्र	छः हजार वर्ष ई.पू.
शंकर बालकृष्ण दीक्षित	ज्योतिष	3500 ई.पू.
एच. याकोबी	ज्योतिष	4500 से 2500 ई.पू.
विण्टरनित्स	मितानी शिलालेख	2500 ई.पू.
मैक्समूलर	बौद्ध साहित्य	1200 ई.पू.

- स्वामी दयानन्द के अनुसार अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और सूर्य से सामवेद तथा इससे ही अथर्ववेद भी प्रकट हुआ।

9. **किं सत्यमस्ति?**

(a) कालिदासो वेद भाष्यमकरोत्।
(b) दाराशिकोहः उपनिषदां अनुवादं कृतवान्।
(c) मम्मटो व्याकरणग्रन्थान् विरचितवान्।
(d) निरुक्तस्य प्रणेताऽस्ति पिङ्गलः।

उत्तर–(b)

दाराशिकोह ने 50 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद 'सिर्र-ए-अकबर' (महान रहस्य) के नाम से 1657 ई. में किया। उनका कहना था कि कुरान में ''किताबिम मक्नुनिन' का उल्लेख है और यह छिपी हुई किताबें उपनिषदें हैं।

मुंशी महेष प्रसाद ने 50 उपनिषदों में से 45 उपनिषदों के नाम खोज निकाल रखे हैं।

- **शांकर-भाष्य–** उपनिषदों के प्राचीन भाष्यों में श्री शङ्कराचार्य के भाष्य सर्वाधिक प्रमाणिक हैं। शङ्कराचार्य ने 10 उपनिषदों पर भाष्य लिखा है।
- दाराशिकोह के फारसी अनुवाद से आंकतिल दु पेरो (Anquetil du perron) नामक फ्रेन्च विद्वान् ने 1802 में इसका फ्रेन्च और लैटिन में Dupnekhat नाम से अनुवाद किया। लैटिन अनुवाद ही बाद में प्रकाशित हुआ। इसके आधार पर ही जर्मन दार्शनिकों ने उपनिषदों को ''मानवीय वैदुष्य की सर्वोत्तम कृति'' बताया था।

10. **'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्'' इति कथनमस्ति–**

(a) यास्काचार्यस्य (b) पाणिनेः
(c) पतञ्जलेः (d) दयानन्दस्य

उत्तर–(c)

''रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्'' इसको महर्षि पतञ्जलि ने व्याकरण महाभाष्य में व्याकरणशास्त्र के अध्ययन के प्रयोजन में बतलाया है। व्याकरणशास्त्र अध्ययन के 5 प्रयोजन–''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्।''

रक्षा–रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्। (वेदों की रक्षा के लिए व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए)।

ऊह (तर्क) :–यथोचित रीति से वाच्य, लिङ्ग और विभक्तियों को विपरिणमित करना।

आगमः-''ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोध्येयो ज्ञेयश्च।

लघु–'लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम्''ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः।''

असन्देह–असन्देहार्थं चाध्येयं व्याकरणम्।

- **शब्द**–येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः।

  व्याकरणास्त्र के गौण प्रयोजन–तेऽसुरा, दुष्टः शब्दः, यदधीतम्, यस्तु प्रयुङ्क्ते, अविद्वांसः, विभक्ति कुर्वन्ति, यो वा इमाम्, चत्वारि, उतत्वः, सक्तुमिव, सारस्वतीम्, दशम्यां पुत्रस्य, सुदेवो असि वरुण।

11. **कल्पसाहित्ये न परिगण्यते**

(a) पारस्करगृह्यसूत्रम् (b) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(c) बौधायनशुल्बसूत्रम् (d) कात्यायनप्रणीतं वार्तिकम्

उत्तर–(d)

कात्यायन प्रणीत वार्तिक कल्पसूत्र के अन्तर्गत परिगणित नहीं होता है।

ऋग्वेद संहिता के कल्पसूत्र–श्रौतसूत्र–आश्वलायन, शांखायन; गृह्यसूत्र–आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि।

शुक्लयजुर्वेद के कल्पसूत्र–श्रौतसूत्र-कात्यायन श्रौतसूत्र। गृह्यसूत्र–पारस्कर गृह्यसूत्र, बैजवाप। शुल्बसूत्र–बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेषि, वाराह शुल्बसूत्र।

कृष्णयजुर्वेद के कल्पसूत्र–श्रौतसूत्र-बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ, वाराह, वैखानस।

गृह्यसूत्र–बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस।

सामवेद के कल्पसूत्र–श्रौतसूत्र-आर्षेय या मशक, क्षुद्र, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान, उपनिदान।

गृह्यसूत्र–गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र–श्रौतसूत्र–वैतान। गृह्यसूत्र–कौशिक।

12. **किं सत्यमस्ति**

(a) महर्षि दयानन्दः - अथर्ववेद भाष्यकारः

(b) महर्षि रमणः - ताण्ड्यमहाब्राह्मणकारः

(c) यास्कः - ऋग्वेदप्रातिशाख्यकारः

(d) पिङ्गलः - छन्दःशास्त्रकारः

उत्तर–(d)

पिङ्गल छन्दः शास्त्रकार हैं।
कात्यायन के अनुसार छन्द का लक्षण–''यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः''।
प्रमुख छन्दोविषयक ग्रन्थ– ऋक्प्रातिशाख्य, शांखायन श्रौतसूत्र, सामवेदीय निदान सूत्र।
कात्यायन कृत दो छन्दोऽनुक्रमणियां–पिङ्गल प्रणीत छन्दसूत्र।
वैदिक छन्दों में मात्रिक छन्दों का अभाव है। इसमें वृत्तात्मक छन्द है।
''छन्दः पादौ तु वेदस्य''–छन्द वेद का पैर है।
प्रमुख छन्द–गायत्री (24 अक्षर), उष्णिक् (28 अक्षर), अनुष्टुप् (32 अक्षर), बृहती (36 अक्षर), पंक्ति (40 अक्षर), त्रिष्टुप् (44 अक्षर), जगती (48 अक्षर)।
-1 अक्षर कम–निचृत् तथा 1 अक्षर अधिक होने पर भूरिक् होता है।
- 2 अक्षर कम–विराट् तथा 2 अक्षर अधिक स्वराट् कहलाता है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण शुक्ल यजुर्वेद की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की है।
- यास्क ने व्युत्पत्ति निर्वचनशास्त्र निरुक्त की रचना की है।

13. **महर्षिपतञ्जल्यनुसारेण ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति**

(a) 22 (b) 21

(c) 11 (d) 25

उत्तर–(b)

महर्षि पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएं हैं।
- चार वेद हैं और चारों वेदों की शाखाएं, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् हैं।
- पतञ्जलि ने महाभाष्य के प्रथम आह्निक में उल्लेख किया है–''एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्''। इन 21 शाखाओं में केवल 5 शाखाओं का उल्लेख मिलता है–चरणव्यूह के अनुसार 5 शाखाएं–शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन
- शुक्ल यजुर्वेद संहिता की शाखाएं–माध्यन्दिन (वाजसनेयी), काण्व।
- कृष्ण यजुर्वेद संहिता की शाखाएं–तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल।
- सामवेद संहिता की शाखाएं–कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय।
- अथर्ववेद संहिता की शाखाएं–शौनक और पैप्पलाद।
- ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्तों सहित 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2024 वर्ग, 1028 सूक्त और 10552 मन्त्र हैं।

14. **सांख्यमते सूक्ष्मशरीरे कति अवयवाः सन्ति?**

(a) पञ्चदश (b) षोडश

(c) सप्तदश (d) अष्टादश

उत्तर–(d)

सांख्यमत में सूक्ष्मशरीर के 18 अवयव हैं। इसे लिङ्गशरीर भी कहते हैं।
''पूर्वोत्पन्नं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरुपभोगं भावैरधिवासितं लिङ्गम्।।''
सांख्यदर्शन के दो प्रमुख सिद्धान्त–सत्कार्यवाद और पुरुषबहुत्व हैं।
- सांख्य के अनुसार तीन प्रमाण हैं–दृष्टमनुमानमाप्तवचनम्।
''प्रतिविषयाध्यावसायो दृष्टम्।
''तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् अनुमानम्। इसके दो भेद हैं– वीतानुमान और अवीतानुमान्।
वीतानुमान के दो भेद–पूर्ववत्, सामान्यतोदृष्ट तथा अवीतानुमान का भेद शेषवत् है।
- सूक्ष्म होने के कारण प्रकृति की उपलब्धि नहीं होती है। (सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात्)।

- **व्यक्त**–हेतुमान्, अनित्य, अव्यापी, सक्रिय, अनेक, अवयवयुक्त, परतन्त्र है।
- **अव्यक्त**–अहेतुमान्, नित्य, निष्क्रिय, एक, अनाश्रित और स्वतन्त्र है।

तीनों गुण दीपक के समान व्यवहार करते हैं।

15. **अधोनिर्दिष्टेषु अवैदिकं शास्त्रं किमस्ति?**

(a) न्यायशास्त्रम् (b) योगशास्त्रम्

(c) वैशेषिकम् (d) जैनदर्शनम्

उत्तर–(d)

जैनदर्शन अवैदिक दर्शन है।
सांख्य-योग-न्याय-वैशेषिक-पूर्वमीमांसा-उत्तरमीमांसा वैदिक दर्शन है। जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं उन्हें आस्तिक या वैदिक दर्शन कहते हैं।
- जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते उन्हें नास्तिक दर्शन कहते हैं। नास्तिक दर्शनों में जैन, बौद्ध और चार्वाक प्रमुख रूप से हैं।
* सांख्य के प्रवर्तक कपिल/पूर्वमीमांसा-जैमिनि
* योग–पतञ्जलि * उत्तरमीमांसा–बादरायण
* न्याय–गौतम * चार्वाक–बृहस्पति
* वैशेषिक–कणाद * बौद्ध–महात्मा बुद्ध
जैन–महावीर स्वामी
- चार्वाक दर्शन को लोकायत नाम से भी जाना जाता है।
- सांख्य ईश्वर की सत्ता नहीं स्वीकारता इसीलिए सांख्य को निरीश्वर सांख्य कहते हैं।
- वैशेषिक दर्शन को औलूक्य दर्शन भी कहते हैं।

16. तत्त्वमसीत्यत्र कीदृशी लक्षणा?

(a) जहल्लक्षणा (b) अजहल्लक्षणा

(c) जहदजहल्लक्षणा (d) लक्षितलक्षणा

उत्तर–(c)

तत्त्वमसि इस महावाक्य में जहदजहल्लक्षणा या भाग लक्षणा है। चार महावाक्य सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं–(1) ऐतरेय आरण्यक का महावाक्य–प्रज्ञानं ब्रह्म। (2) बृहदारण्यक का अहं ब्रह्मास्मि। (3) सामवेदीय छान्दोग्य उपनिषद् का तत्त्वमसि (4) माण्डूक्योपनिषद् का अयमात्मा ब्रह्म।

- लक्षणा के तीन भेद हैं– जहल्लक्षणा, अजहल्लक्षणा, जहदजहल्लक्षणा।

– जहत्लक्षणा– यह मूलार्थ को त्यागकर दूसरा अर्थ ग्रहण कर लेता है– जैसे- गङ्गायां घोषः।

अजहल्लक्षणा–जो अपने अर्थ का त्याग नहीं करता उसे उपादान या अजहल्लक्षणा कहते हैं। जैसे–शोणो धावति।

जहदजहल्लक्षणा– जो अपने मूल अर्थ को त्यागकर एक अंश का बोध कराए उसे जहदजहल्लक्षणा या भागलक्षणा कहते हैं, जैसे–तत्त्वमसि।

तत्वमसि उपदेशवाक्य है। अहं ब्रह्मास्मि अनुभववाक्य है।

17. परमाणुविशेषयोः कः सम्बन्धः?

(a) संयोगः (b) स्वरूपसम्बन्धः

(c) समवायः (d) तादात्म्यम्

उत्तर–(c)

परमाणु विशेषयोः समवायः सम्बन्धः।

द्विविधः सम्बन्धः संयोग समवायश्चेति।

तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः। (दो वस्तुओं में अयुतसिद्ध सम्बन्ध समवाय कहलाता है।)

– अनुमान प्रमाण के दो भेद–स्वार्थानुमान और परार्थानुमान।

परार्थानुमान के पांच अवयव हैं–(1) प्रतिज्ञा–पर्वतोऽग्निमान् (2) हेतु–धूमत्वात् (3) उदाहरण–यो-यो धूमवान् सोऽग्निमान (4) उपनय- - तथाचाऽयम् (5) निगमन-तस्मात् तथा।

हेत्वाभास की संख्या पांच है–(1) असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद हैं– **आश्रयासिद्ध हेत्वाभास–** गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् **स्वरूपासिद्ध–** अनित्या शब्दः चाक्षुषत्वात् घटवत्। **व्याप्यत्वासिद्ध।** (2) विरुद्ध हेत्वाभास

(3) अनैकान्तिक हेत्वाभास (4) प्रकरणसम हेत्वाभास (5) बाधितविषय या कालात्ययापदिष्ट

18. अधोनिर्दिष्टेषु अलौकिकसन्निकर्षः केन न स्वीकृतः?

(a) विश्वनाथ महाचार्येण (b) अन्नंभट्टेन

(c) केशवमिश्रेण (d) जगदीशेन

उत्तर–(c)

आचार्य केशव मिश्र अलौकिक सन्निकर्ष को स्वीकार नहीं करते हैं। सन्निकर्ष दो प्रकार का होता है–लौकिक और अलौकिक। — लौकिक सन्निकर्ष के छः भेद हैं (षोढ़ा सन्निकर्षः)–(1) संयोग (2) संयुक्त समवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव।

अलौकिक सन्निकर्ष के तीन भेद हैं–(1) सामान्य लक्षण (2) ज्ञान लक्षण (3) योगज।

सन्निकर्ष	इन्द्रिय	विषय
1. संयोग	चक्षु	घट
2. संयुक्त समवाय	चक्षु	घटरूप
3. संयुक्तसमवेतसमवाय	चक्षु	घटरूपत्व जाति
4. समवाय	श्रोत्र	शब्द
5. समवेत समवाय	श्रोत्र	शब्दत्व
6. विशेषण-विशेष्य भाव	श्रोत्र	भूतलेघटाभाव

19. केवलान्वयित्वं किमस्ति?

(a) स्वभाववद्वृत्तित्वम्

(b) उभयवृत्तित्वम्

(c) अत्यन्ताभावाप्रतियोगित्वम्

(d) आवृत्तित्वम्

उत्तर–(c)

वृत्तिमान् अत्यन्ताभाव का जो प्रतियोगी नहीं है वह केवलान्वयी कहलाता है।

केवलान्वयी सद्हेतु के लिए 'विपक्षसत्व' से अतिरिक्त चार रूपों से ही सम्पन्न होना अपेक्षित रहता है।

नव्य नैयायिकों ने अन्य प्रकार से इसके तीन प्रकार बतलायें हैं–(1) केवलान्वयी (2) केवल-व्यतिरेकी (3)अन्वय व्यतिरेकी।

केवलान्वयी हेतु सर्वदा साध्य के साथ रहता है। उनका अभाव सम्भव नहीं है।

- तर्कसंग्रह वैशेषिक दर्शन है, क्योंकि यह विशेष नामक पदार्थ को स्वीकार करता है।

- वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ हैं–द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय–अभाव।

- द्रव्य के नौ भेद हैं–पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश-काल-दिक्-आत्मा-मन।

'गन्धवती पृथ्वी', शीतस्पर्शवत्यः आपः, उष्णस्पर्शवत्तेजः, रूपरहितस्पर्शवान् वायु, शब्दगुणकमाकाशम्, अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः, प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्, ज्ञानाधिकरणात्मा, सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः।

20. अधो निर्दिष्टेषु किं सत्यमस्ति?

(a) न्यायमते अप्रामाण्यं स्वतोग्राह्यम्

(b) न्यायमते शब्दो विशेषगुणः

(c) वैशेषिकमते प्रमाणं त्रिविधम्

(d) न्यायमते मनसो विभुत्वमस्ति

उत्तर–(a)

न्यायमते अप्रामाण्यं स्वतोग्राह्यम्।
न्यायमत में शब्द को विशेष गुण नहीं माना गया है। केवल वैशेषिक दर्शन में ही शब्द को गुण माना गया है। अन्य दर्शनों में शब्द को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है।
न्यायमत में मन अणु और महत् परिमाणस्वरूप वाला है।
वैशेषिक मत केवल दो प्रमाण स्वीकार करता है–प्रत्यक्ष और अनुमान।

- बुद्धि–''अर्थप्रकाशो बुद्धिः''–बुद्धि के दो भेद हैं–अनुभव और स्मरण।
- अनुभव–यथार्थ और अयथार्थ अनुभव के भेद से दो प्रकार का होता है।

— यथार्थ अनुभव–''यथार्थोऽविसंवादी (अर्थ के विपरीत न होने वाला यथार्थ अनुभव है)।
— अयथार्थ अनुभव–''अयथार्थस्तु अर्थव्यभिचारी, अप्रमाणज्ञः।''
अयथार्थ अनुभव के तीन भेद हैं–संशय, तर्क, विपर्यय।

21. सांख्यमते अहंकारः कतिविधः

(a) एकविधः (b) द्विविधः
(c) त्रिविधः (d) चतुर्विधः

उत्तर–(c)

सांख्यमतानुसार अहंकार के तीन भेद हैं।
बुद्धि की सहायता से ही प्रकृति तथा पुरुष का विभेद स्थापित होता है। बुद्धि से अहंकार का जन्म होता है। बुद्धि में 'मैं' का भाव ही अहङ्कार है। पुरुष भ्रमवश इसके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है तथा अपने को कर्त्ता, भोक्ता, कामी, स्वामी आदि मानने लगता है।
अहङ्कार के तीन भेद सात्त्विक, तामस् और राजस् हैं।

- सांख्यदर्शन में करण के तेरह भेद हैं–''करणं त्रयोदशविधम्।''–11 इन्द्रिय + बुद्धि और अहंकार।

— बाह्यकरण–पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां हैं।
— अन्तःकरण–बुद्धि, मन और अहङ्कार।
— अध्यवसायो बुद्धिः। अभिमानोऽहंकारः
— मन उभयेन्द्रिय है- ''उभयात्मकम (मनः संकल्पविकल्पमिन्द्रियं च)।

22. न्यायमते पदार्थयोः सम्बन्धनियामकः कः?

(a) योग्यता (b) आसत्तिः
(c) आकांक्षा (d) लक्षणा

उत्तर–(c)

न्यायमत में पदार्थों में सम्बन्ध नियामक आकांक्षा है।
तर्कभाषाकार चार प्रमाण स्वीकार करते हैं–प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द।
आप्तवाक्यं शब्दः (आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण कहलाता है)।
वाक्य–आकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः वाक्यं।
आकांक्षा–जैसे–गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती ये पदसमूह वाक्य नहीं हैं, क्योंकि इसमें पदसमूहों में सम्बन्ध नहीं है। अर्थात् आकांक्षा का अभाव है।
योग्यता–जैसे–अग्नि से सिंचन करना। इसमें योग्यता का अभाव है, क्योंकि अग्नि में सिंचन की योग्यता नहीं होती। इसका गुण जलाना होता है।
सन्निधि–जैसे-किसी पद को प्रहर-प्रहर में कहना। जैसे–एक प्रहर में गाय और दूसरे प्रहर में लाओ। यहां हम देखते हैं कि योग्यता, आकाङ्क्षा दोनों यहां हैं, लेकिन सन्निधि का अभाव है।

23. मङ्गलं कतिविधं भवति?

(a) एकविधम् (b) द्विविधम्
(c) त्रिविधम् (d) चतुर्विधम्

उत्तर–(c)

मङ्गल तीन प्रकार का होता है।
निर्विघ्नतापूर्वक ग्रन्थ की समाप्ति–इस पर नव्यनैयायिकों का मानना था कि मङ्गल का फल केवल विघ्नों का ध्वंस है,समाप्ति तो बुद्धि प्रतिभा पर आश्रित है।
मङ्गललक्षण–विघ्नभिन्नत्वे सति विघ्नध्वंसप्रतिबन्धकाऽभिन्नत्वे सति–प्रारीप्सितविघ्नध्वंसाऽसाधारणकारणं मङ्गलम्।
(1) नमस्कारात्मक (2) वस्तुनिर्देशात्मक (3) आशीर्वादात्मक
1. नमस्कारात्मक–ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि द्वारा अपने इष्टदेव को नमस्कार करते हुए स्तुति करना नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है। जैसे-उत्तररामचरितम् में।
2. आशीर्वादात्मक–ग्रन्थ के प्रारम्भ में इष्टदेव को नमस्कार करते हुए निर्विघ्न ग्रन्थ की समाप्ति के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है। जैसे अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
3. वस्तुनिर्देशात्मक–देवताओं की स्तुति के साथ विषय-वस्तु की ओर भी संकेत करना वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण कहलाता है। जैसे-शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्।

24. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) माठरवृत्तिः **1. वैशेषिकसूत्रम्**
(b) भारद्वाजवृत्तिः **2. न्यायसूत्रम्**
(c) विश्वनाथवृत्तिः **3. सांख्यसूत्रम्**
(d) भोजवृत्तिः **4. योगसूत्रम्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	2	3	4
(b)	3	1	2	4
(c)	2	1	3	4
(d)	4	3	1	2

उत्तर–(b)

सांख्यकारिका की प्रमुख टीकाएं-गौड़पादभाष्य, माठरवृत्ति, जयमङ्गला, युक्तिदीपिका, सांख्यतत्त्वकौमुदी आदि हैं। माठरवृत्ति के रचयिता आचार्य माठर हैं। उदयवीर शास्त्री के अनुसार माठरवृत्ति सांख्यकारिका की प्राचीनतम टीका है।
न्यायसूत्रवृत्ति के ग्रन्थकार विश्वनाथ हैं।
न्यायभाष्य–वात्स्यायन, न्यायालङ्कार–श्रीकण्ठ
न्यायवार्तिक–उद्योतकर, न्यायसिद्धान्तमाला–जयराम
न्यायवार्तिक-तात्पर्यटीका–वाचस्पति मिश्र। न्यायसूत्रोद्धार–वाचस्पति मिश्र।
न्यायमञ्जरी–जयन्तभट्ट
– योगसूत्र–भोजवृत्ति की है। योग को सेश्वर सांख्य भी कहा जाता है।
– वाचस्पति मिश्र ने योगसूत्र पर ''तत्त्ववैशारदी' नामक टीका लिखी।
– विज्ञानभिक्षु ने योगसूत्र पर योगवार्तिक टीका लिखी।
– वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं।

25. अधोनिर्दिष्टेषु किं सत्यमस्ति?

(a) वस्तुनः तत्समसत्ताकः अन्यथाभावः विवर्तः
(b) कारणाभिन्नं कार्यं विवर्तः
(c) अतत्त्वतोऽन्यथाभावः विवर्तः
(d) उपादानसमसत्ताकं कार्यं विवर्तः

उत्तर–(c)

अपवाद–''अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तु विवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्।'' (रस्सी में भ्रान्तिवश प्रतीत होने वाले सर्प की पुनः रस्सी मात्र के रूप में प्रतीति के समान ब्रह्मरूप वस्तु में मिथ्याप्रतीति के कारण अवस्तुरूप अज्ञानादिप्रपञ्च में पुनः ब्रह्मरूपसत्यवस्तु का भान होना ही अपवाद है।
''सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।''
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त्त इत्युदाहृतः।।
अपने मूलरूप का परित्याग करके अन्यरूप को ग्रहण करना ही **विकार** है तथा अपने रूप को बिना छोड़े अन्य वस्तु की मिथ्याप्रतीति **विवर्त** कहलाता है।
- दूध का दही रूप में परिवर्तित होना **विकार** है।
- रस्सी में मिथ्या प्रतीत होने वाला सर्प रस्सी का **विवर्त** है।
- स्थूल शरीर के चार भेद हैं–(1) जरायुज (2) अण्डज (3) उद्भिज (4) स्वेदज।
- विज्ञानमयकोश, मनोमयकोश और प्राणमयकोश मिलकर सूक्ष्मशरीर कहलाते हैं।

26. गुणसंज्ञाविधायकं सूत्रमिदं वर्तते -

(a) इको गुणवृद्धी। (b) अदेङ्गुणः।
(c) आद्गुणः। (d) स्थानेऽन्तरतमः।

उत्तर–(b)

''अदेङ्गुणः'' गुणसंज्ञाविधायक सूत्र है।
अ, ए, ओ, इन तीन वर्णो की गुणसंज्ञा होती है, जैसे–रमेशः–ए, सूर्योदय में ओ की गुणसंज्ञा।
''हलोऽनन्तराः संयोगः–(अच्) के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों की संयोग संज्ञा होती है, जैसे–माध्व में ध्व की संयोग संज्ञा हुई है।
''वृद्धिरादैच्''–आ, ऐ, औ इन तीन वर्णों की वृद्धि संज्ञा होती है। जैसे सदैव में ऐ, महैश्वर्यम् में ऐ, एकैक में ऐ, गङ्गौघः में औ वृद्धिसंज्ञक है।
''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'– दो या दो से अधिक वर्णों के पारस्परिक उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न समान होने पर दोनों सवर्णसंज्ञक होते हैं। जैसे–अ +आ, इ + ई, उ + उ = भानूदय आदि।
''अदर्शनं लोपः''–विद्यमान के अदर्शन की लोप संज्ञा होती है, जैसे–शाला + छ = शालीयः। यहां आकार की लोपसंज्ञा 'यस्येति च'से हुआ है।

27. अपृक्तसंज्ञा वर्तते–

(a) प्रत्ययस्य। (b) धातोः।
(c) प्रातिपदिकस्य। (d) यस्य कस्यापि।

उत्तर–(a)

अपृक्त एकाल् प्रत्ययः–जो प्रत्यय एक वर्णरूप हो गया हो उसकी अपृक्त संज्ञा होती है, जैसे–सु प्रत्यय में स् तथा दो अल् है, उ की इत्संज्ञा और लोप हो जाने के कारण केवल स् बचता है। अतः सु का सकार एकमात्र अल् है अतः इसकी अपृक्त संज्ञा हो जाती है।
– षः प्रत्ययस्य (उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित षकार की इत्संज्ञा होती है। त्रि, टु तथा डु इत्संज्ञक हैं।
– ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' (समास विधायक सूत्र में प्रथमा से निर्दिष्ट जो पद उसके द्वारा बोध्य शब्द की उपसर्जन संज्ञा होती है। जैसे- उपकृष्णम् में उप की हुई है।
– ''अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्– धातुरहित, प्रत्यय व प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, जैसे–राम, कृष्ण, लता आदि।
– ''हलन्त्यम्''– (उपदेश में अन्तिम हल् इत्संज्ञक होता है, अइउण् में णकार इत्संज्ञक है।

28. नदी संज्ञकः शब्दः नास्ति

(a) नदी (b) वधू
(c) सरित् (d) बहुश्रेयसी

उत्तर–(c)

सरित् नदी संज्ञक शब्द नहीं है।

''यू स्त्र्याख्यौ नदी''–(यू = इ + उ) का तात्पर्य ईकारान्त + ऊकारान्त से है।

ईदन्त तथा ऊदन्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की 'नदी संज्ञा' होती है, जैसे–वधू, नदी।

''प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च वार्तिक''–जो शब्द प्रारम्भ में नित्यस्त्रीलिङ्ग हो तथा बाद में समास की दशा में गौण होकर अन्य लिङ्ग में चला गया हो, उसकी भी पहले के स्त्रीलिङ्ग के आधार पर 'नदी संज्ञा' हो जाती है। जैसे–बहुश्रेयसी।

''अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा''–अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

जैसे–गम् में अ, सरित् में इ की उपधा संज्ञा हुई है।

''अचोऽन्त्यादि टि''–अन्त्य अच् की टि संज्ञा होती है। जैसे–मनस् में अस् की टि संज्ञा हुई है।

''शि सर्वनामस्थानम्''–शि की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है, जैसे–मधूनि, वनानि आदि।

29. ईदूदेदन्तस्य द्विवचनस्य शब्दस्य भवति–

(a) प्रगृह्यसंज्ञा (b) प्रकृति भावः
(c) प्लुतसंज्ञा (d) टिसंज्ञा

उत्तर–(a)

- **''ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्''**–दीर्घ ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की ''प्रगृह्यसंज्ञा' होती है। जैसे–हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू।
- **''अदसो मात्''**–अदस् शब्द के मकार से परे 'ईत्' तथा 'ऊत्' प्रगृह्य संज्ञक होता है, जैसे–अमी ईशाः, अमी अश्वाः, अमू आसाते।
- **''शे''**–शे इस सुबादेश की प्रगृह्य संज्ञा होती है, जैसे–त्वे इति, युष्मे इति।
- **''निपात एकाजनाङ्''**–आङ् को छोड़कर एक अन्य स्वरूप निपात की ''प्रगृह्यसंज्ञा'' होती है। अ अपेहि, इ इन्द्रम, उ उत्तिष्ठ।
- **''ओत्''** ओकारान्त निपात की प्रगृह्यसंज्ञा होती है। अहो ईशाः, विष्णो इति।
- **''ईदूतौ च सप्तम्यर्थे इति प्रगृह्यम्''**–सप्तमी के अर्थ में ईकारान्त व ऊकारान्त की प्रगृह्य संज्ञा होती है। जैसे–तनु इति, गौरी अधिश्रितः।
- **''स्वादिष्वसर्वनामस्थाने''**–सर्वनाम स्थान भिन्न सु आदि प्रत्ययों के परे रहते पूर्व शब्दसमुदाय की पदसंज्ञा होती है। राजन् + भ्याम्–यहां राजन् की पदसंज्ञा हुई है।

30. 'गां दोग्धि पयः'-इत्यत्र 'गाम्' पदे कर्मसंज्ञा केन सूत्रेण भवति?

(a) कर्मणि द्वितीया। (b) अकथितं च।
(c) तथायुक्तं चानीप्सितम्। (d) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

उत्तर–(b)

''गां दोग्धि पयः'' यहां गाम् पद में 'अकथितं च' सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है।

अकथितं च–अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्।

जहां अपादानादि कारक विशेष अविवक्षित होते हैं, वहां कर्मकारक संज्ञा होती है।

16 धातुएं ऐसी हैं जिनमें वक्ता स्वतन्त्र है, वह चाहे तो अपादानादि का प्रयोग करे अथवा इसके स्थान पर कर्म का प्रयोग करे। ये 16 धातुएं द्विकर्मक हैं–दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, पृच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, दृ, कृष् और वह्।

'गां दोग्धि पयः'–वह गाय से दूध दुहता है। यहां गो अपादान कारक है, पर उसकी विवक्षा न होने से प्रकृत सूत्र (अकथितं च) से कर्म संज्ञा हुई तथा 'कर्मणि द्वितीया' से उस अनभिहित कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' कर्ता के द्वारा न चाहा जाने वाला पदार्थ भी जब क्रिया के साथ युक्त हो उसकी भी कर्म संज्ञा होती है। जैसे–ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति–यहां गांव जाना ईप्सित है, तृण का स्पर्श नहीं। गमन क्रिया से समीप होने के कारण इसकी भी कर्म संज्ञा हो जाती है।

31. 'कटे आस्ते'-इत्यत्र कीदृशं आधारो वर्तते?

(a) औपश्लेषिकः (b) वैषयिकः
(c) अभिव्यापकः (d) व्यापकः

उत्तर–(a)

'कटे आस्ते' में 'औपश्लेषिक' आधार है।

''आधारोऽधिकरणम्''–कर्त्ता और कर्म के द्वारा उनमें रहने वाली क्रिया का आधार संज्ञा और अधिकरण कारक होता है। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। आधार तीन प्रकार का होता है–(1) औपश्लेषिक आधार (2) वैषयिक आधार (3) अभिव्यापक आधार।

- जहाँ आधार का आधेय के साथ संयोग आदि सम्बन्ध हो वहाँ औपश्लेषिक आधार होता है, जैसे–कटे आस्ते। यहाँ बैठना क्रिया का साक्षात् आश्रय कर्त्ता है। उस कर्त्ता का आधार चटाई है, अतः औपश्लेषिक आधार हुआ।
- विषयता के आधार पर सम्बन्ध की आधार संज्ञा वैषयिक होता है।–मोक्षे इच्छास्ति।

- जिस आधार के सम्पूर्ण अवयवों में आधेय व्याप्त रहता है उसे अभिव्यापक आधार कहते हैं, जैसे–सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति। यहां आधेय आत्मा और सर्व अभिव्यापक है। अतः यहां ''आधारोऽधिकरणम्'सूत्र से सर्व की अभिव्यापक आधार संज्ञा हुई और 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई।

32. द्वितीया-चतुर्थ्यौ भवतः

(a) अधि-शी-धातोः प्रयोगे। (b) 'विना' शब्दस्य योगे।

(c) नमः योगे। (d) गत्यर्थकर्मणि।

उत्तर–(d)

''**गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि।**'' –गत्यर्थक धातुओं के कर्म में द्वितीया और चतुर्थी विभक्ति होती है। यदि शारीरिक चेष्टा करनी पड़े और कर्म-मार्ग-वाची न हो। जैसे-ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति।यहां गम् धातु गत्यर्थक है और उसका कर्म ग्राम है। ग्राम मार्गवाची शब्द न होकर स्थानवाची है। ग्राम जाने के लिए शारीरिक चेष्टा करनी पड़ती है। अतः कर्म ग्राम में प्रकृत सूत्र से द्वितीया व चतुर्थी विभक्ति हुई।

''**तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वार्तिक)**–तादर्थ्य में चतुर्थी विभक्ति होती है–जैसे- मुक्तये हरिं भजति।

''**उत्पातेन ज्ञापिते च (वार्तिक)**–भौतिक उत्पातों से जो बात जानी जाए उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है, जैसे–वाताय कपिला विद्युत्।

''**हितयोगे च (वार्तिक)**''–हित शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–ब्राह्मणाय हितम्।

''**क्लृपि सम्पद्यमाने च**'' (वा.)–क्लृप् (जब कोई कार्य किसी अन्य परिणाम की प्राप्ति के लिए किया जाय तो उस परिणाम में चतुर्थी विभक्ति होती है।) अर्थ वाली धातुओं के योग में सम्पद्यमान अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते सम्पद्यते जायते वा।

33. 'नीलोत्पलम्' इत्यत्र नपुंसकत्वं केन सूत्रेण भवति?

(a) स नपुंसकम्। (b) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः।

(c) अव्ययीभावश्च। (d) ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य।

उत्तर–(a)

समाहार में द्विगु और द्वन्द्व समास नपुंसक लिंग में होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्–समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है। जैसे-

''नीलोत्पलम्''–नीलकमलम्, निर्मलगुणाः, कृष्णचतुर्दशी।

- **द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। जैसे–कृष्णश्रितः, अरण्यातीतः, कूपपतितः, ग्रामगतः, दुःखापन्नः।

- **तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास होता है। जैसे–शङ्कुलाखण्डः,

- **चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः** सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है।

जैसे–यूपदारु, द्विजार्थः, भूतबलिः, गोहितम्।

- पञ्चमी भयेन सूत्र से भयवाचक पद में पञ्चमी होगी। जैसे–चोरभयम्।

34. 'भूतपूर्वः' इत्यत्र भूतशब्दस्य पूर्वप्रयोगः कस्मात् भवति?

(a) आचार्याणाम् आचरात्।

(b) 'उपसर्जनं पूर्वम्' इति सूत्रात्।

(c) केवलसमासत्वात्।

(d) लोकतः।

उत्तर–(b)

''प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' समास विधायक सूत्र में प्रथमा से निर्दिष्ट जो पद, उसके द्वारा बोध्य शब्द की उपसर्जन संज्ञा होती है। जैसे–उपकृष्णम् में उप की तथा भूतपूर्व में भूत की उपसर्जन संज्ञा हुई।

समास के पांच भेद हैं–''समासः पञ्चधा''–(1) केवल समास (2) अव्ययीभाव समास (3) तत्पुरुष समास (4) बहुव्रीहि समास (5) द्वन्द्व समास।

1. केवल समास–विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः। (जिस समास की कोई विशेष संज्ञा नहीं होती है, उसे केवल समास कहते हैं। जैसे–भूतपूर्वः, वागर्थाविव।

भूतपूर्व अर्थात् जो पहले हुआ हो–लौकिक विग्रह–पूर्वं भूतः। अलौकिक विग्रह-पूर्व अम् भूत सु। इसमें समास विधायक ''**सह सुपा**'' सूत्र है।

– तत्पुरुष भेदः कर्मधारयः–तत्पुरुष का भेद कर्मधारय है–कृष्णसर्पः, नीलोत्पलम्।

– कर्मधारयभेदो द्विगुः–द्विगु समास कर्मधारय का भेद है, जैसे–त्रिलोकी, पञ्चगवम्।

35. अधस्तनानां समीचीनां तालिकां चिनुत–

(a) पूर्वपदार्थप्रधानः	**1. हरौ इति।**
(b) अस्वपदविग्रहः	**2. अव्ययीभावः**
(c) नदीभिश्च	**3. पञ्चगङ्गम्।**
(d) अलौकिकविग्रहः	**4. प्राप्त + सु उदक + सु**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	3	4	2
(b)	2	3	1	4
(c)	2	1	3	4
(d)	3	1	4	2

उत्तर–(c)

पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभाव : (अव्ययीभावसमास में पूर्व पदार्थ की प्रधानता होती है।)
इस समास का प्रथम पद अव्यय और द्वितीय पद संज्ञा होता है। अव्ययीभाव समास नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में प्रयुक्त होता है।
— **''नदीभिश्च''**—संख्यावाचक सुबन्त शब्द का नदीवाचक सुबन्त शब्दों के साथ समास होता है। यह अव्ययीभाव समास कहलाता है। यह समास समाहार अर्थ में इष्ट होता है—पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्।
— अलौकिक विग्रह—प्राप्त + सु + उदक + सु। लौकिक विग्रह—प्राप्तमं उदकं यं ग्रामम्। इसमें अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहि समास हुआ है।
— ऊढ़रथः का लौकिक विग्रह ऊढ़ रथः येन और अलौकिक विग्रह ऊढ़ सु + रथ सु है।
- कण्ठेकालः का लौकिक विग्रह 'कण्ठे कालो यस्य सः' है। अस्वपद विग्रहः हरौ इति है।

36. केन्तुम्-वर्गस्य भाषा अस्ति—
(a) लेटिन् भाषा (b) संस्कृतभाषा
(c) पारसी भाषा (d) अवेस्ता

उत्तर—(a)

लैटिन भाषा केन्टुम् वर्ग की भाषा है। भारोपीय भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है—शतम् और केन्टुम्। (इसके वर्गीकरण का श्रेय प्रो. अस्कोली महोदय को जाता है)।

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत—शतम्	लैटिन—केन्टुम्
अवेस्ता—सतम्	ग्रीक—हेकटोन
फारसी—सद्	केल्टिक —केत्
हिन्दी—सौ	तोखारी—कन्ध
रूसी—स्तो	गाथिक—हुण्ड
लिथुआनियन—स्जिम्तास	जर्मन—हुण्डर्ट
फ्रेन्च—सं	इटालियन—केन्तो

भारोपीय परिवार की भाषाएं श्लिष्ट योगात्मक हैं।

37. संस्कृत भाषायाः घ्, ध्, भ् वर्णाः जर्मनिक् भाषायां भवन्ति—
(a) ग् द् ब् (b) क् द् प्
(c) ग् द् फ् (d) ट् द् ब्

उत्तर—(a)

घ्, ध्, भ् वर्णों का जर्मनिक भाषा में ग्, द्, ब् हो जाता है।
किसी भाषा-विशेष में, किसी काल विशेष में कुछ विशेष परिस्थितियों के अन्तर्गत हुए विशेष प्रकार के ध्वनि परिवर्तनों को ध्वनि-नियम कहते हैं।
ध्वनि नियम—(1) ग्रिम नियम (2) ग्रासमान नियम (3) वर्नर नियम (4) तालव्य नियम (5) मूर्धन्य नियम

1. ग्रिम नियम—इस नियमानुसार मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियां अंग्रेज़ी और जर्मन भाषा में अग्रलिखित प्रकार की होती है—प्रथम को द्वितीय (क्, त्, प् को ख्, थ्, फ्), चतुर्थ को तृतीय (घ्, ध्, भ् को ग्, द्, ब्), तृतीय को प्रथम (ग्, द्, ब् को क्, त्, प्)।
2. ग्रासमान नियम—मूल भारोपीय दो अक्षरों वाली धातुओं में दो महाप्राण ध्वनियां थीं। सामान्यतया प्रथम महाप्राण ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि आ जाती है।
3. वर्नर नियम—यह ग्रिम नियम का संशोधन है।
4. तालव्य नियम—तालव्य नियम को कालित्स नियम भी कहते हैं।
5. मूर्धन्य नियम—र् और ष् के बाद न् को ण् होता है।
- मूर्धन्य नियम का प्रयोग पाणिनि के अष्टाध्यायी में प्राप्त होता है।

38. ''सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ ………'' इयमुक्तिः रघुवंशस्य अधोलिखिते कथाप्रसंगे वर्णिता अस्ति।
(a) सीतापरित्यागे (b) इन्दुमतीस्वयंवरे
(c) 'विश्वजित्' यज्ञे (d) राज्याभिषेके

उत्तर—(b)

''संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः।।
- कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य के इन्दुमती-स्वयंवर वर्णन में इन्दुमती की उपमा संचारिणी दीपशिखा से की है। इसी उपमा से कालिदास ''दीपशिखा कालिदास'' कहलाए।
- रघुवंश महाकाव्य में 19 सर्ग हैं। इसमें मनु से लेकर सूर्यवंशी 31 राजाओं का वर्णन है।
- रघुवंश महाकाव्य की प्रमुख सूक्तियां—''स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।''
- हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा।
- प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।
- न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।
- सहस्रम्गुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।
- भवो हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्।
- तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।

39. मेघदूते यक्षाणां वसतिः कुत्र वर्तते?
(a) मानसरोवरे (b) हिमालये (c) मालवभूमौ (d) अलकायाम्

उत्तर—(d)

मेघदूत में यक्ष अलकापुरी में रहता था तथा शापवश वह रामगिरि पर्वत पर निवास करता है।
''यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु, – स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।''
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।

- मेघदूत खण्डकाव्य/गीतिकाव्य है। यह दो भागों/खण्डों में पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभाजित है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को शोकगीत (Elegy) कहा है।
- मेघदूत का मङ्गलाचरण वस्तुनिर्देशात्मक है। इसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है।
- मेघ पुष्कर और आवर्तक वंश में उत्पन्न हुआ तथा यह इन्द्र का प्रमुख व्यक्ति है।
- मेघ (धुआं, अग्नि, जल, वायु) से निर्मित है। यक्ष कुटज के पुष्पों से मेघ को अर्घ्य देता है।
- मेघ की यात्रा का पहला पर्वत आम्रकूट और नदी नर्मदा (रेवा) है।
- ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः– यह गम्भीरा नदी के वर्णन में आया है।
- उज्जयिनी को देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा कहा गया है।
- गंगा का नाम जह्नुकन्या है।
- महाराज रन्तिदेव का यशरूप चर्मण्वती (चम्बल) नदी है।
- लाङ्गली बलराम का नाम है।

40. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' इयमुक्तिः केन सम्बद्धा?

(a) कुबेरेण (b) मेघेन
(c) यक्षेण (d) यक्षिण्या

उत्तर–(b)

''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' यह मेघ के विषय में बतलाया है।
- आन्तरिक बल से रहित होकर सभी हल्के होते हैं और पूर्णता गौरव प्रदान करती है।
- यक्ष के शाप का अन्त हरिबोधनी या देवोत्थान एकादशी के दिन होता है।

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियां–

- ''कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।
- याञ्चामोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।
– के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नः।
- आपत्तिप्रशमनफला सम्पदो ह्युत्तमानाम्।
- स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।
- सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्।
- न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय।
- प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः कि पुनर्यस्तथोच्चैः।।

41. किरातार्जुनीये 'किरात' इति कस्य बोधकः?

(a) वनेचरस्य (b) किरीटधारिणः
(c) शङ्करस्य (d) कार्तिकेयस्य

उत्तर–(c)

किरातार्जुनीयम् में किरात् 'शङ्कर' का बोधक है।
किरातार्जुनीयम् में 18 सर्ग हैं तथा यह भारविकृत महाकाव्य है।
– भारवि अलङ्कृतकाव्यशैली या रीतिशैली के जन्मदाता हैं, इनके काव्य को विचित्रमार्ग कहा जाता है।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के किरातार्जुनीयम् पर घण्टापथ नाम की टीका लिखी तथा 'नारिकेलफलसम्मितं वचः' नारिकेलफल से उपमा दी।
- किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ श्री शब्द से तथा समाप्ति लक्ष्मी पद से होता है।
- 'प्रसन्नगम्भीरपदासरस्वती' और 'स्फुटता न पादैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' यह दोनों वाक्य किरातार्जुनीयम् से सम्बन्धित है।

किरातार्जुनीयम् की प्रमुख सूक्तियां–

- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
- न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।
- वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।
- गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया।
- अहो दुरन्ताबलवद्विरोधिता।
- निराश्रया हन्त हता मनस्विता।
- निरत्ययं साम न दानवर्जितम्।

42. रैवतकपर्वतस्य वर्णनं कस्मिन् काव्ये वर्तते?

(a) उत्तररामचरिते (b) कुमारसम्भवे
(c) शिशुपालवधे (d) कादम्बर्याम्

उत्तर–(c)

रैवतक पर्वत का वर्णन शिशुपालवधम् में आया है।
शिशुपालवधम् महाकवि माघ की कृति है। यह 20 सर्गों में विभाजित है।

शिशुपालवधम् की प्रमुख सूक्तियां–

- सदाभिमानैक धना हि मानिनः।
- गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।
- सतीवयोषित्प्रकृतिः सुनिश्चिला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।
- ऋतेरवे क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः।
- गृहीतुमर्थान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः।
- शुभेतराचारविपक्तिमापदो निपातनीया हि सतामसाधवः।
- क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेवरूपं रमणीयतायाः।
- महीयांशः प्रकृत्या मितभाषिणः।
- सर्वः प्रियः खलु भवत्यनुरूपचेष्टः।

43. सत्यं किमस्ति–

(a) दशकुमारचरिते पञ्चोच्छ्वासाः सन्ति
(b) दशकुमारचरिते सप्तोच्छ्वासाः सन्ति
(c) दशकुमारचरिते अष्टोच्छ्वासाः सन्ति
(d) दशकुमारचरिते द्वादशोच्छ्वासाः सन्ति

उत्तर–(c)

दशकुमारचरित में 8 उच्छ्वास है।
दशकुमारचरितम् दण्डी कृत गद्यकाव्य है। दण्डी कृत एक अन्य काव्य काव्यादर्श है।
- दशकुमारचरितम् में दशकुमारों के चरित्र का संकलन है। दण्डी वैदर्भी शैली के आचार्य हैं।
- इसमें चार प्रकार की राजविद्याएं हैं–त्रयी, वार्ता, आन्वीक्षिकी, दण्डनीति।
- हर्षचरितम् उपलब्ध सर्वाधिक प्राचीन आख्यायिका है। यह बाणभट्ट द्वारा रचित है।
- शिवराजविजयम् प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है जिसके प्रणेता अम्बिकादत्त व्यास हैं।
इसमें तीन विराम और 12 निःवास हैं। यह वीररस प्रधान है।
- दण्डी की अन्य कृतियां–काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचित, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य हैं।
- उत्तररामचरितम् भवभूतिकृत सात अङ्कों का करुण रस में विभक्त एक नाटक है।
- क्षेमेन्द्र ने भवभूति को 'निरर्गलततरङ्गिणी' कहा है। भवभूति की रीति गौणी है।
- नीतिशतकम् भर्तृहरिकृत मुक्तक काव्य है। इनकी अन्य रचनाएं–वाक्यपदीयम्, शृंगारशतकम्, वैराग्यशतकम् हैं।

44. ''आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः''-इयमुक्तिः कस्य ग्रन्थस्य?

(a) नैषधीयचरितस्य (b) शिशुपालवधस्य
(c) किरातार्जुनीयस्य (d) कुमारसम्भवस्य

उत्तर–(a)

''आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।''यह सूक्ति नैषधीयचरितम् ग्रन्थ की है। नैषधीयचरिम् शृंगार रस में विभक्त 22 सर्गों का महाकाव्य है।
नैषधीयचरितम् की सूक्तियां–निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।
- रसै : कथा यस्य सुधावधीरणी।
- अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी।
- शशाङ्क शङ्के स न लङ्घितुं नलः।
- अहो अहोभिर्महिमा हिमागमे।
● श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतं,
● श्रीहरिः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्।।
- क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभागजनः।
- अदृष्टमप्यर्थंदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनाऽतिथिम्।
- विगर्हितं धर्मधनैर्निर्वहणं विशिष्य विश्वास जुषां द्विषामपि।
- दुर्जया हि विषया विदुषाऽपि।

45. 'तस्य अशेषत्रिभुवनसुन्दरं अतिशयितनलकूबरं रूपमासीत्' कस्य?

(a) पुण्डरीकस्य (b) कपिञ्जलस्य
(c) श्वेतकेतोः (d) चन्द्रापीडस्य

उत्तर–(c)

''तस्य अशेषत्रिभुवनसुन्दरं अतिशयितनलकूबरं रूप श्वेतकेतोः आसीत्। अर्थात् श्वेतकेतु का शारीरिक सौन्दर्य सम्पूर्ण तीनों भुवनों की सुन्दरता से अधिक सुन्दर तथा कुबेर के पुत्र नलकूबर के रूप से भी बढ़ा हुआ था। यह महाश्वेतावृत्तान्त से उद्धृत है, जो कादम्बरी का ही भाग है। इसके लेखक बाणभट्ट हैं। इनकी शैली पांचाली थी।
कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।
कादम्बरी की प्रमुख सूक्तियां–अतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।
- अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।
- त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः।
- बाणभट्ट सम्राट हर्षवर्धन के सभापण्डित थे। इनका समय सातवीं शताब्दी का पूर्वाद्ध है।
- शुक राजा की प्रशंसा में आर्या छन्द पढ़ता है–
''स्तनयुगमश्रुस्नातं समीतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिवभवतो रिपुस्त्रीणाम्।।''
- महाश्वेतागन्धर्वराज हंस और गौरी की पुत्री है।
- गन्धर्वराज चित्ररथ और मदिरा की पुत्री कादम्बरी है।

46. कस्य रूपकेषु 'आमुखं' स्थापनेत्युच्यते?

(a) शूद्रकस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) विशाखदत्तस्य (d) भासस्य

उत्तर–(d)

भास के रूपकों में आमुख की स्थापना हुई।
महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् की प्रस्तावना में (प्रथितयशसां भाससौमिल्ल) के द्वारा भास को सादर स्मरण किया है जिससे यह द्योतित होता है कि वह कालिदास से पूर्ववर्ती थे। भास के तेरह नाटक प्राप्त होते हैं–
1. रामायणमूलक–प्रतिमा नाटक, अभिषेक नाटक।
2. महाभारतमूलक–उरुभंग, दूतवाक्य, पञ्चरात्र, बालचरित, दूतघटोत्कच, कर्णभार, मध्यमव्यायोग।
3. उदयनकथामूलक–प्रातिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्।
4. कल्पनामूलक–अविमारक, चारुदत्त।
समस्त नाटकों की एक प्रमुख विशेषता सूत्रधार से प्रारम्भ होना है।
– विशाखदत्त की कृति मुद्राराक्षस है। यह 7 अङ्कों का राजनीति विषयक नाटक है।

47. अभिधा पुच्छभूता का भवति?

(a) लक्षणा (b) व्यञ्जना
(c) तात्पर्यम् (d) अर्थापत्तिः

उत्तर–(a)

अभिधा पुच्छभूता लक्षणा भवति।
- साहित्यदर्पणकार के अनुसार, अभिधा का लक्षण–''संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा।'' यहां संकेत से जाति-द्रव्य-गुण-क्रिया अर्थ गृहीत होता है।

- मीमांसक केवल जाति में संकेतग्रह मानते हैं। न्यायवैशेषिक जातिविशिष्ट व्यक्तिमात्र में, बौद्ध दर्शन अपोह में तथा व्याकरणशास्त्र सभी में संकेतग्रह मानता है।
लक्षणा–मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते। रूढ़े प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।। जैसे–कलिङ्ग साहसिकः और गङ्गायां घोषः। आचार्य विश्वनाथ लक्षणा के 80 भेद मानते हैं।
व्यञ्जना–''विरतास्वभिदद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः। सा वृत्तिर्व्यञ्जना नामशब्दस्यार्थादिकस्य च।''
विश्वनाथ के अनुसार- काव्य का लक्षण–'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' है।

48. श्रीशङ्कुकमते कीदृशः स्थायी रसो भवति?

(a) भावितः (b) अनुमितिः
(c) उत्पन्नः (d) अभिव्यक्तः

उत्तर–(b)

श्रीशङ्कुक के मतानुसार अनुमिति स्थायी रस है।
भरतमुनि के अनुसार–''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिषत्तिः''। भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ने भारतमुनि के रससूत्र की व्याख्या की। **भट्टलोल्लट** उत्पत्तिवाद को मानते हैं। इनके मतानुसार विभाव-अनुभाव आदि के संयोग से अनुकार्य रामादि में रस की उत्पत्ति होती है।

- श्रीशङ्कुक–न्यायसिद्धान्त के अनुयायी शङ्कुक ने सामाजिक के साथ रस का सम्बन्ध दिखलाया है। इनके सिद्धान्त को 'चित्रतुरगन्याय' भी कहा जाता है। शङ्कुक नट में रस को अनुमेय मानते हैं।
- **भट्टनायक** के सिद्धान्त को भुक्तिवाद कहा जाता है। इनके अनुसार वास्तविक रसानुभूति सामाजिक को होती है। अनुकार्य और अनुकर्त्ता तटस्थ हैं।
- **अभिनवगुप्त** ने 'अभिव्यक्तिवाद' की स्थापना की। अभिव्यक्तिवाद की स्थापना ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्धन के आधार पर किया। इनके अनुसार सामाजिकगत स्थायिभाव ही रसानुभूति का निमित्त होता है।

49. कालक्रमानुसृतां तालिकां चिनुत।

(a) भामहः। दण्डी। वामनः। विश्वनाथः।
(b) वामनः। भामहः। विश्वनाथः। दण्डी।
(c) भामहः। विश्वनाथः। दण्डी। वामनः।
(d) भामहः। वामनः। दण्डी। विश्वनाथः।

उत्तर–(a)

भरतमुनि के बाद भामह का समय षष्ठ शतक का पूर्वार्द्ध माना गया है। भामह की कृति काव्यालङ्कार है। भामह के बाद दण्डी अलङ्कारशास्त्र पर स्वतन्त्र रचना की। इनकी प्रसिद्ध कृति 'काव्यादर्श' और 'दशकुमारचरितम्' है।
- अलङ्कारशास्त्र के आचार्यों में उद्भट्ट के बाद वामन का स्थान आता है। वामन रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं। ''रीतिरात्मा काव्यस्य' रीति काव्य की आत्मा है। इस सिद्धान्त के कारण इनका अत्यधिक महत्व है। वामन का समय आठवीं शताब्दी के अन्तिम और नवम् शताब्दी का प्रारम्भ माना है। इनका एकमात्र ग्रन्थ 'काव्यालङ्कारसूत्र' है। वामन के बाद रुद्रट का समय आता है। इनका अन्य नाम शतानन्द था। साहित्यशास्त्र में आनन्दवर्धन ध्वनिवादी आचार्य के रूपमें प्रसिद्ध हैं। आनन्दवर्धन की प्रमुख रचनाएं–ध्वन्यालोक, विषमबाणलीला, अर्जुनचरित, देवीशतक, तत्त्वालोक आदि हैं।
- शारदातनय अलङ्कारशास्त्र के नही अपितु नाट्यशास्त्र के आचार्य थे।
- अप्पयदीक्षित के बाद पं.राज जगन्नाथ का समय आता है।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **1. भाणः**
(b) त्रिपुरदाहः **2. प्रहसनम्**
(c) कन्दर्पकेलिः **3. डिमः**
(d) लीलामधुकरम् **4. नाटकम्**

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	2	3	4
(b)	3	4	2	1
(c)	4	3	2	1
(d)	1	2	4	3

उत्तर–(c)

प्रख्यातवंशो राजर्षिर्दिव्यो वा यत्र नायकः।
तत्प्रख्यातं विधातव्यं वृत्तमत्राधिकारिकम्।।
यह लक्षण अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में परिलक्षित होता है।
भाण–''भाणस्तु धूर्तचरितं स्वानुभूतं परेण वा। यत्रोपवर्णयेदेको निपुणः पण्डितो विटः।। सम्बोधनोक्तिप्रत्युक्ती कर्यादाकाश भाषितैः। सूचयेदवीर शृंगारौ शौर्यसौभाग्यसंस्तवैः। भूयसा भारती वृत्तिरेकाङ्कं वस्तुकल्पितम्। मुखनिर्वहणे साङ्गे लास्याङ्गानि दशापि च।''
लीलामधुरकरम् कृति में भाण के लक्षण परिलक्षित होते हैं।
प्रहसन–तद्वत्प्रहसनं त्रेधा शुद्धवैकृतसङ्करैः।
प्रहसन भी भाण की तरह ही होता है। इसके तीन भेद हैं–शुद्ध, वैकृत और सङ्कर।
डिमे वस्तु प्रसिद्धं स्याद्वत्तयः कैशिकीं विना। नेतारो देवगन्धर्व यक्षरक्षोभहोरगाः।। भूतप्रेतपिशाचाद्याः षोडशात्यन्तमुद्धताः। रसैरहास्यशृङ्गारैः षड्भिर्दीप्तैः समन्वितः।। मायेन्द्रजालसंग्रामक्राधोद् भ्रान्तादिचेष्टितैः। चन्द्रसूर्योपरागैश्च न्यायो रौद्ररसेऽङ्गिनि।। चतुरङ्कश्चतुरसन्धिनिर्विमर्शो डिमः स्मृतः।
उपर्युक्त लक्षण से युक्त त्रिपुरदाह कृति है।

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-June-2010
संस्कृत
पेपर-2

व्याख्यात्मक हल सहित

1. दशतयीति शब्देन विधीयते

(a) यजुर्वेदः (b) सामवेदः
(c) ऋग्वेदः (d) सामविधानम्

उत्तर-(c)

दशतयी शब्द के द्वारा ऋग्वेद का विधान किया जाता है। ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या दस है। अतः इसे 'दशतयी' कहा जाता है। ऋग्वेद को दशतयी कहना व्युत्पत्तिपरक है। अतः दशतयी शब्द की व्युत्पत्ति निम्न रीति से होती है- ''दश अवयवाः (मण्डलरूपाः) अस्याः इति दशतयी = ऋक्संहिता''। 'दश अवयव हैं इसके इस अर्थ में ''संख्या अवयवे तयप्'' सूत्र के द्वारा तद्वितीय तयप् प्रत्यय होता है तथा ''टिड्ढाणञ.......'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होकर 'दशतयी' शब्द सिद्ध होता।

स्मरणीय- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 85 अनुवाक तथा 1028 सूक्त हैं। इसमें मन्त्रों की संख्या 10580 है।

2. का अन्तरिक्षदेवता?

(a) विष्णुः (b) इन्द्रः
(c) वरुणः (d) रुद्रः

उत्तर-(b)

अन्तरिक्ष-स्थानीय देवता इन्द्र हैं। अन्तरिक्ष स्थान वाले देवता निम्न हैं- इन्द्र, अपान्नपात्, रूद्र, मरूद्गण, वायु, पर्जन्य, आपः आदि। अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओं में इन्द्र सर्वप्रमुख हैं। इन्द्र ऋग्वेद का भी सर्वाधिक लोकप्रिय और महत्पूर्ण देवता है। ऋग्वेद के 250 सूक्तों में इन्द्र की स्तुति स्वतंत्र रूप से की गयी है।

स्मरणीय

1. **पृथ्वीस्थानीय देवता-** पृथ्वी, सोम और अग्नि।
2. **अन्तरिक्षस्थानीय देवता-** इन्द्र, रूद्र, वायु, मरुद्गण और पर्जन्य।
3. **द्युस्थानीय देवता-** मित्र, विष्णु, सविता, पूषा और अश्विनौ।

3. ईशोपनिषत् केन सह सम्बद्धा वर्तते?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदन

उत्तर-(b)

ईशोपनिषत् यजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषत् है। यह मूलरूप से यजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है।
यजुर्वेद मुख्यरूप से दो भागों में विभक्त है।

1. शुक्लयजुर्वेद 2. कृष्णयजुर्वेद।

शुक्लयजुर्वेद की भी दो शाखाएँ हैं।

1. माध्यन्दिन या वाजसनेयि- संहिता
2. काण्व संहिता

1. **माध्यन्दिनसंहिता-** इसमें 40 अध्याय और 1975 मन्त्र हैं।
2. **काण्वसंहिता-** इसमें 40 अध्याय 2086 मन्त्र हैं।

कृष्णयजुर्वेद की चार शाखाएँ हैं-

1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी
3. काठक 4. कपिष्ठल

4. पुरूरवा-उर्वशी-सम्वादः कस्मिन् मण्डले वर्तते:?

(a) सप्तममण्डले (b) दशममण्डले
(c) नवममण्डले (d) तृतीयमण्डले

उत्तर-(b)

पुरूरवा-उर्वशी संवाद ऋग्वेद के दशममण्डल में वर्णित है, जिसमें राजा पुरूरवा और उर्वशी अप्सरा के प्रणय सम्बन्ध का वर्णन है।

ऋग्वेद के प्रमुख संवाद सूक्त निम्न हैं-

1. पुरूरवा- उर्वशी संवाद (ऋग्वेद 10/95)
2. यम-यमी संवाद (ऋग्वेद 10/10)
3. सरमा-पणि संवाद (ऋग्वेद 10/108)
4. विश्वामित्र-नदी संवाद (ऋग्वेद 3/33)
5. इन्द्र-मरुत् संवाद (ऋग्वेद 1/165)
6. अगस्त्य-लोपमुद्रा संवाद (ऋग्वेद 1/79)
7. इन्द्र-इन्द्राणी वृषाकपि संवाद (ऋग्वेद 10/86)

5. वेदस्यापौरुषेयत्वं न स्वीकरोति

(a) विन्टरनिट्ज (b) सायणः
(c) माधवः (d) दयानन्दः

उत्तर-(a)

'वेद किसी व्यक्ति के द्वारा लिखा गया नही अपितु ईश्वरीय कृति है। इस बात को विटरनिट्ज स्वीकार नहीं करता। वेद के विषय में प्रायः भारतीय विद्वानों का मत है कि वेद अपौरूषेय हैं। किन्तु

मैक्समूलर, विन्टरनिट्ज आदि पाश्चात्य विद्वान् कुछ तर्कों के द्वारा वेदों के पौरूषेय होने को सिद्ध करते हैं।
विन्टरनिट्ज (M. Winternitz) ने मितानी शिलालेखों के आधार पर 2500 ई.पू. में वेदों के रचना-समय को सिद्ध किया है। विन्टरनिट्ज ने तीन भागों में 'हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिट्रेचर' पुस्तक को भी लिखा है जो मूल रूप से जर्मन भाषा में है।

6. कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते?

(a) वैशम्पायनप्रणीतत्वात् (b) मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्
(c) दक्षिणदेशे प्रसिद्धत्वात् (d) पाठभेदात्

उत्तर-(b)

चारों वेदों में से यजुर्वेद दो प्रकार का मिलता है। इसके दो नामों का कारण यह है कि शुक्ल यजुर्वेद में केवल मन्त्र भाग है, परन्तु कृष्ण यजुर्वेद में विनियोग, मन्त्रव्याख्यादि का मिश्रण है, अतः इसे मिश्रित होने के कारण कृष्णयजुर्वेद कहा जाता है। इस कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ उपलब्ध है-

1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी
3. काठक (कठ) 4. कपिष्ठल

7. कति विकृतयः?

(a) पञ्च (b) सप्त
(c) अष्ट (d) दश

उत्तर-(c)

वेदों की अष्ट विकृतियाँ होती है। इस प्रकार की विकृतियों द्वारा अर्थात् मन्त्रपाठ की प्रक्रिया में भेद के द्वारा वेदों को अत्यधिक पुष्ट और सुदृढ़ बनाकर संरक्षित किया जाता है। इसमें मन्त्रों के पदों को घुमा फिरा कर अनेक प्रकार से उच्चारण किया जाता है। ये विकृतियाँ निम्न आठ प्रकार की होती हैं-

1. जटापाठ 2. मालापाठ
3. शिखापाठ 4. रेखापाठ
5. ध्वजपाठ 6. दण्डपाठ
7. रथपाठ 8. घनपाठ

यथा- जटा माला शिक्षा रेखा, ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतियः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः।।

8. ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम्

(a) ऐतरेय ब्राह्मणम् (b) तैत्तिरीय ब्राह्मणम्
(c) आर्षेय ब्राह्मणम् (d) गोपथ ब्राह्मणम्

उत्तर-(a)

ऋग्वेद का ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण है। ऋग्वेद से सम्बन्धित दो ब्राह्मणों का उल्लेख है।
1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण

1. **ऐतरेय ब्राह्मण-** इसमें 40 अध्याय, 8 पंचिकाएँ तथा 285 खण्ड हैं।
2. **शांखायन ब्राह्मण-** इसमें 30 अध्याय तथा 266 खण्ड हैं। इसके रचयिता शांखायन ऋषि हैं।

9. कः कल्पसूत्रविषयः?

(a) यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम् (b) शब्दार्थनिरूपणम्
(c) वेदार्थनिरूपणम् (d) पाठभेदनिरूपणम्

उत्तर-(a)

कल्पसूत्र का विषय 'यागप्रयोगक्रमप्रतिपादन' है। कल्पसूत्रों में यज्ञ से सम्बन्धित विविध प्रकार की विधियों का प्रतिपादन किया जाता है। इन कल्पसूत्रों के द्वारा सभी यज्ञों के सर्वांगपूर्ण विधि- विधान का प्रतिपादन किया जाता है। आचार्य सायण ने कल्प की व्याख्या निम्न प्रकार से की है-
'कल्प्यते = समर्थ्यते यागप्रयोगोऽत्र इति कल्पः।
कल्पसूत्र निम्न चार प्रकार के होते है-

1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र
3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र

10. 'अहेडमानः' इति वर्तते

(a) वरुणसूक्ते (b) रुद्रसूक्ते
(c) विष्णुसूक्ते (d) बृहस्पतिसूक्ते

उत्तर-(a)

'अहेडमानः' यह पद वरूण सूक्त से लिया गया है। सम्पूर्ण मन्त्र निम्नलिखित है-
तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरूणेह बोध्युरूशं स मा न आयुः प्रमोषीः।।

11. लोकमान्यतिलकमते वेदस्य कालः

(a) त्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम् (b) सार्धत्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(c) पञ्चसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम् (d) दशसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्

उत्तर-(c)

लोकमान्य तिलक के मत में वेदों का रचनाकाल 5000 ई.पू. है। तिलकजी ने ज्योतिषीय गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6000 ई.पू. से 4000 ई.पू. तक माना है।
वेदों के रचनाकाल के विषय में कुछ प्रमुख मत निम्न हैं-

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती – सृष्टि का प्रारम्भ
2. दीनानाथ शास्त्री – 3 लाख वर्ष पूर्व
3. अविनाशचन्द्र चन्द्र दास – 25000 वर्ष ई.पूर्व.
4. बालगंगाधर तिलक – 6000 से 4000 वर्ष ई.पू.
5. डॉ आर.जी. भंडारकार – 6000 वर्ष ई.पू.
6. एच. याकोबी – साढ़े चार से ढ़ाई हजार ई.पू.
7. विन्टरनित्ज – 2500 ई.पू. 8. मैक्समूलर – 1200 ई.पू.

12. कः कोशः कारणशरीरम्?

(a) मनोमयकोशः (b) आनन्दमयकोशः

(c) विज्ञानमयकोशः (d) प्राणमयकोशः

उत्तर-(a)

मनोमयकोशः कारणशरीरम् । अर्थात् मनोमयकोश कारण शरीर है।
''मनोमय इच्छाशक्तिमान् कारणरूपः'' अर्थात् मनोमय कोश इच्छा-शक्तिसम्पन्न है, अतः विवेक का कारण (साधन) कहलाता है। सत्त्व गुणांशो से उत्पन्न होने के कारण सत्त्वगुणप्रधान मन, चक्षु, श्रोत इत्यादि ज्ञानेन्द्रियों के सहित मनोमयकोश कहलाता है। प्राणमयकोश क्रिया-शक्ति से युक्त और कार्यरूप है।
''प्राणमयः क्रियाशक्तिमान कार्यरूपः।''

13. न्यायमते कति प्रमाणानि?

(a) त्रीणि (b) चत्वारि

(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर-(b)

न्यायशास्त्र के मत में चार प्रकार के प्रमाण स्वीकृत हैं-
1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. उपमान, 4. शब्द
इन चारों प्रमाणों से उत्पन्न ज्ञान भी क्रमशः चार प्रकार के होते हैं-
1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमिति, 3. उपमिति, 4. शब्द
कुछ प्रमुख भारतीय दार्शनिकों के प्रमा सम्बन्धी मत निम्न है
चार्वाक - प्रत्यक्ष (1)
वैशेषिक – प्रत्यक्ष, अनुमिति (2)
नैयायिक – प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, शाब्द (4)
प्रभाकर – प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, शाब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि (6) पौराणिक – सम्भविक, ऐतिह्य को और जोड़कर आठ प्रमाण।
तान्त्रिक – चैष्टिक को और मिलाकर नौ प्रमाण

14. शब्दो न प्रमाणमिति कस्य मतम्?

(a) सांख्यस्य (b) योगस्य

(c) वैशैषिकस्य (d) जैनस्य

उत्तर-(c)

वैशैषिक दर्शन में शब्द को प्रमाण नहीं माना जाता है। वैशेषिकों के मत में मात्र प्रत्यक्ष ओर अनुमान के भेद से दो प्रमाण स्वीकृत हैं। कुछ प्रमुख दर्शन और उनके द्वारा स्वीकृत प्रमाणों की संख्या अधोलिखित है

चार्वाक – एक प्रमाण
वैशेषिक – दो प्रमाण
न्याय – चार प्रमाण
प्राभाकर – पाँच प्रमाण
भाट्ट और वेदान्ती – छः प्रमाण
पौराणिक – आठ प्रमाण
तान्त्रिक – नौ प्रमाण

15. अनिर्वचनीयशब्दार्थः कः ?

(a) सद्भिन्नत्वम् (b) असद्भिन्नत्वम्

(c) सदसद्भिन्नत्वम् (d) अन्यद् वा किञ्चित्

उत्तर-(c)

अनिर्वचनीयशब्दार्थ सत्-असत् से भिन्न होता है तथा उसे ही अज्ञान कहते हैं। अज्ञान सत् और असत् से न कहा जा सकने वाला होता है तथा त्रिगुणात्मक और ज्ञान का विरोधी, भाव रूप होता है। जैसा कि विद्वद्वर सदानन्द ने लिखा है-
''अज्ञानं तु सत् असद्भ्याम् अनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चित इति।''

16. वेदान्तमते लिङ्गशरीरघटकाः कति?

(a) पञ्चदश (b) षोडश

(c) सप्तदश (d) अष्टादश

उत्तर-(c)

वेदान्तदर्शन के मत में लिंग शरीर के सत्रह घटक (अवयव) होते हैं। वे सत्रह अवयव निम्न हैं-
पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण)
बुद्धि
मन
पाँच कर्मेन्द्रियाँ- (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ)
पाँच वायु- (प्राण, अयान, समान, उदान, व्यान)
लिङ्गशरीर को ही सूक्ष्मशरीर कहा जाता है। अन्तःकरण की निश्चयात्मिका वृत्ति को बुद्धि कहते हैं। तथा अन्तःकरण की संकल्प-विकल्पात्मक रूप वृत्ति को मन कहते हैं।

17. ज्ञानेन्द्रियाणां कस्माद् भूतांशादुत्पत्तिः?

(a) राजसात् (b) सात्त्विकात्

(c) तामसात् (d) सम्मिलितात्

उत्तर-(b)

इन पञ्च ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति आकाशादि के व्यस्त =अन्य से न मिले हुए सात्त्विक अंशो से होती है।
कुछ अवयव और उनकी उत्पत्ति का विवेचन निम्न प्रकार से है-
ज्ञानेन्द्रियों की – आकाशादि के व्यस्त सात्त्विक अंशो से।
बुद्धि और मन की – आकाशादि के मिलित सात्त्विक अंशो से।
कर्मेन्द्रियों की – आकाशादि सूक्ष्म भूतों के व्यस्त राजस् अंशों से।
प्राणादि पञ्च वायु की – आकाशादि के मिलित रजोगुण से।

18. सत्कार्यवादसाधकाः कति हेतवः?

(a) त्रयः (b) चत्वारः

(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर-(c)

सत्कार्यवाद को सिद्ध करने वाले कारण पाँच होते हैं। ईश्वरकृष्ण विरचित सांख्यकारिका में उन हेतुओं को क्रमशः निम्नलिखित रूप से कहा गया है।

1. असदकरणात् 2. उपादानग्रहणात्
3. सर्वसम्भवाभावात् 4. शक्तशस्य शक्यकरणात्
5. कारणभावात्

इस विषय की कारिका इस प्रकार है-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्चसत्कार्यम्।।

19. शब्दःकस्य विशेषगुणः?

(a) वायोः (b) आकाशस्य
(c) आत्मनः (d) कालस्य

उत्तर-(b)

शब्द आकाश का विशेष गुण है। समवाय सम्बन्ध से जिसमें शब्द रहे उसे आकाश कहते हैं। आकाश एक ही होता है। वह नित्य होता है तथा विभु होता है जैसा कि अन्नभट्ट ने तर्कसंग्रह में लिखा- ''शब्दगुणकमाकाशं तच्चैकं विभु नित्यं च।''
विभु का लक्षण है- 'सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वं विभुत्वम्' अर्थात् जो सभी मूर्त द्रव्यों से जुड़ा हो। चूँकि आकाश सर्वत्र व्याप्त है इसलिए सभी मूर्त (साकार) द्रव्यों से जुड़ा भी है।

20. संस्कारः कस्मिन् पदार्थे अन्तर्भवति?

(a) द्रव्ये (b) गुणे
(c) कर्मणि (d) अभावे

उत्तर-(b)

संस्कार गुणपदार्थ में अन्तर्भूत होता है। गुण चौबीस होते हैं जिसमें एक गुण संस्कार भी है।
चौबीस गुण क्रमशः निम्न प्रकार के हैं-

1. रूप 2. रस
3. गन्ध 4. स्पर्श
5. संख्या 6. परिमाण
7. पृथक्त्व 8. संयोग
9. विभाग 10. परत्व
11. अपरत्व 12. गुरुत्व
13. द्रवत्व 14. स्नेह
15. शब्द 16. बुद्धि
17. सुख 18. दुःख
19. इच्छा 20. द्वेष
21. प्रयत्न 22. धर्म
23. अधर्म 24. संस्कार।

संस्कार भी वेग, भावना और स्थितिस्थापक के भेद के तीन प्रकार का होता है।

21. सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था किं कथ्यते?

(a) मूलप्रकृतिः (b) बुद्धिः
(c) अहङ्कारः (d) कैवल्यम्

उत्तर-(a)

सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की साम्यावस्था प्रकृति कहलाती है तथा प्रकृति को ही मूलप्रकृति कहा जाता है। तीनों गुणों से युक्त होने के कारण ही प्रकृति को त्रिगुणात्मिका कहा जाता है। सांख्यसूत्र के पहले अध्याय के इकसठवें सूत्र में लिखा है-
''सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः
ये तीनों गुण क्रमशः सुख, दुःख और मोह को उत्पन्न करने वाले होते हैं।

22. अकुहविसर्जनीयानामुच्चारणस्थानं किम्?

(a) मूर्धा (b) दन्ताः
(c) कण्ठः (d) तालु

उत्तर-(c)

अकुहविसर्जनीयानामुच्चारणस्थानं कण्ठः भवति अर्थात् अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्जनीय का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है। ये सभी वर्ण अपने सभी भेदों के साथ कण्ठ उच्चारण स्थान वाले होते हैं। विसर्जनीय अर्थात् विसर्ग का कण्ठ उच्चारण स्थान तभी होता है जब वह अकाराश्रित होता है। फलतः ''हरिः'' में विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ न होकर तालु होता है, क्योंकि यहाँ विसर्ग इकाराश्रित है। यथा- पाणिनीय शिक्षा में लिखा है-
''अयोगवाहा विज्ञेया आश्रयस्थानभागिनः''।

23. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

(a) वृद्धिरादैच् (b) वृद्धिरेचि
(c) अदेङ्.गुणः (d) एचोऽयवायावः

उत्तर-(a)

वृद्धिसंज्ञा का विधान करने वाला सूत्र ''वृद्धिरादैच'' है। इस सूत्र के द्वारा आ, ऐ और औ की वृद्धि संज्ञा की जाती है। व्याकरण शास्त्र में यदि कहीं वृद्धि की बात आती है तो इन्हीं तीनों को समझा जाता है। सूत्र निम्न प्रकार से है-

वृद्धिरादैच्- आदैच्य वृद्धिसंज्ञः स्यात्। अर्थात्
आत् = आ, ऐत् = ऐ, औ वृद्धि संज्ञक होते हैं।

24. 'दम्पती' - अस्मिन् पदे समास-विग्रहः भवति

(a) पिता च भ्राता च (b) पिता च पतिश्च
(c) पिता च पुत्रश्च (d) जाया च पतिश्च

उत्तर-(d)

दम्पती शब्द का समास विग्रह ''जाया च पतिश्च'' होता है। जाया च पतिश्च ऐसा समास विग्रह करने के बाद जाया शब्द का पूर्व निपात किया जाता है तथा उसे दम् आदेश किया जाता है तब प्रयोग बनता है- दम्पती। दम्पती शब्द का अर्थ पति-पत्नी होता है। दम्पती शब्द राजदन्तादिगण पठित है। अतः ''राजदन्तादिषु परम्'' सूत्र से पूर्व प्रयोगार्ह शब्द का परनिपात होता है। जैसे पति शब्द पूर्व प्रयोगार्ह है परन्तु उक्त सूत्र के द्वारा पति शब्द का पर निपात होकर समास करके दम्पती बन गया।

25. स्पर्शवर्णाः के?

(a) यणः (b) स्वराः
(c) कादयोमावसानाः (d) अण्

उत्तर-(c)

क से लेकर म पर्यन्त वर्ण स्पर्श संज्ञक होते हैं। अर्थात् क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म 25 वर्ण स्पर्श नाम से व्याकरण शास्त्र में जाने जाते हैं। स्पर्शादिसंज्ञा के द्वारा शास्त्र-प्रक्रिया में विविध प्रकार के कार्यों का सम्पादन होता है। शेष बचे वर्णों की निम्न संज्ञाएँ होती हैं।

यण् (य व र ल) की — अन्तःस्थ संज्ञा
शल् (श ष स ह) की — ऊष्म संज्ञा
अच् (अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ) की — स्वरसंज्ञा
अं की — अनुस्वार संज्ञा
अः की — विसर्ग संज्ञा

26. संहितासंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

(a) उच्चैः...... (b) नीचैः.......
(c) समाहार...... (d) परः सन्निकर्षः........

उत्तर-(d)

संहिता संज्ञा का विधान करने वाला सूत्र ''परः सन्निकर्षः संहिता'' है। इस सूत्र के द्वारा जो वर्णों की अत्यन्त समीपता होती है उसको संहिता नाम दिया जाता है। जैसा कि आचार्य वरदराज ने लिखा है 'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहिता-संज्ञा स्युः।' अर्थात् जब दो हल वर्णो के मध्य अर्ध मात्रा का ही व्यवधान होगा (एक मात्रा या उससे अधिक का व्यवधान नहीं होगा) तब उक्त सूत्र के द्वारा संहिता संज्ञा की जाती है।

27. 'क्तक्तवतू....' इति सूत्रेण का संज्ञा विधीयते?

(a) गतिः (b) निष्ठा
(c) उपधा (d) सवर्णम्

उत्तर-(b)

क्तक्तवतू निष्ठा सूत्र के द्वारा क्त प्रत्यय तथा क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है। अतः यत्र यत्र निष्ठा शब्दोच्चारण होगा तत्र तत्र क्त तथा क्तवतु प्रत्ययों का ही ग्रहण किया जायेगा। आचार्य वरदराज ने भी लिखा-
क्त-क्तवतू निष्ठा-एतौ निष्ठासंज्ञौ स्तः।

28. भीधातुप्रयोगे भयहेतौ का विभक्तिः?

(a) तृतीया (b) षष्ठी
(c) पञ्चमी (d) सप्तमी

उत्तर-(c)

भी धातु के प्रयोग होने पर जो भय का हेतु = कारण उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। वस्तुतः 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र के द्वारा भय के हेतु की अपादान संज्ञा होती है और 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र के द्वारा उस हेतु में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसा कि सिद्धान्तकौमुदी में लिखा- ''भयार्थानां त्राणार्थानां च प्रयोगे भयहेतुरपादानं स्यात्'' अर्थात् भय अर्थ वाली और रक्षा अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में भय हेतु कारक की अपादान संज्ञा होती है।

29. पुष्पेभ्यः स्पृहयति - इत्यत्र चतुर्थीविधायकं सूत्रं किम्?

(a) अकथितञ्च (b) दिवः कर्म च
(c) स्पृहेरीप्सितः (d) आख्यातोपयोगे

उत्तर-(c)

'पुष्पेभ्यो स्पृह्यति' इस प्रयोग में चतुर्थी का विधान करने वाला सूत्र 'स्पृहेरीप्सितः' है। उक्त सूत्र के द्वारा स्पृह् धातु के प्रयोग में इप्सित = अभिलषित की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसा सिद्धान्तकौमुदीकार ने भी लिखा है- ''स्पृहयतेः प्रयोगे इष्टः सम्प्रदानं स्यात्''।

30. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः

(a) सवर्णम् 1. सुप्तिङन्तम्
(b) उदात्तः 2. यू स्त्र्याख्यौ
(c) पदम् 3. तुल्यास्यप्रयत्नम्
(d) नदी 4. उच्चैः........

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	1	4	3
(b)	2	3	1	4
(c)	4	2	3	1
(d)	3	4	1	2

उत्तर-(d)

समीचीन युग्म निम्न प्रकार से होंगे।
सवर्णम् == तुल्यास्यप्रयत्नम्
उदात्तः == उच्चैः
पदम् == सुप्तिङन्तम्
नदी == यू स्त्र्याख्यौ

उपरोक्त युग्म पाणिनि के सूत्र हैं जिन्हे खण्डित करके प्रश्न रूपेण दिया गया है। सम्पूर्ण सूत्र क्रमशः इस प्रकार से हैं।

a. तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्। b. उच्चैरूदात्तः।

c. सुप्तिङन्तं पदम् d. यू स्त्र्याख्यौ नदी।

31. कस्तावत् अर्धस्वर इति निर्दिश्यताम्

(a) अ (b) ई

(c) ह (d) य्

उत्तर-(d)

य् अर्ध स्वर वाला अक्षर है, क्योंकि व्यञ्जन सभी वर्ण अर्धमात्रिक होते हैं। जैसा कि कहा भी गया है-

एकमात्रो भवेध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घमुच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं त्वर्धमात्रकम्।।

अर्थात् ह्रस्व वर्ण एक मात्रा वाले होते हैं तथा दीर्घ वर्ण दो मात्रा वाले होते हैं एवं प्लुत वर्ण तीन मात्रा वाले होते हैं किन्तु व्यञ्जन आधी मात्रा का ही होता है।

32. कः सन्ध्यक्षरः?

(a) अ (b) ओ

(c) ऌ (d) ई

उत्तर-(b)

प्रदत्त विकल्पों में से मात्र 'ओ' ही सन्धि से उत्पाद्य अक्षर है। आद्गुणः सूत्र के द्वारा अ या आ तथा उ या ऊ के संयोग से ओ अक्षर बनता है। अतः 'ओ' सन्ध्यक्षर है।

जैसे- गङ्गा + उदकम्

= गङ्ग् आ + उदकम् यहाँ पर आ तथा उ का योग हुआ तब-

गङ्ग् ओ दकम् = गङ्गोदकम् इस प्रकार

ओ की उत्पत्ति से प्रयोग सिद्ध होता है।

इसी प्रकार

अ + इ = ए, जैसे रमेशः। अतः ए भी सन्ध्यक्षर है।

33. 'हितं मनोहरि च दुर्लभं वचः' इत्यस्ति

(a) शिशुपालवधे (b) नैषधीये

(c) माघे (d) किरातार्जुनीये

उत्तर-(d)

'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में चौथे क्रमाङ्क पर वर्णित है। जिसका अर्थ है कि ''हितकारी और प्रिय वाणी दुर्लभ होती है।'

सम्पूर्ण श्लोक निम्न प्रकार से है-

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो

न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।

अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।

34. उत्तररामचरिते अङ्गीरसः कः?

(a) वीरः (b) शृङ्गारः

(c) करुणः (d) हास्यः

उत्तर-(c)

उत्तररामचरितम् में अंगीरस करुण है। कुछ लोगों को करुण विप्रलम्भ और करुण में शंका है किन्तु यह शंका स्वयं भवभूति के द्वारा लिखित निम्न श्लोक से निर्मूल हो जाती है और यह सिद्ध हो जाता है कि उक्त नाटक का अङ्गीरस करूण ही है-

एको रसः करुण एव निमित भेदात्

भिन्न पृथक्प्रथगिवाश्रयते विवर्तान्।

आवर्तबुद्बुद्तरङ्गमयान्विकारान्

अम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समग्रम्।।

35. कस्तावत् पदस्य मुख्यार्थः?

(a) लक्ष्यार्थः (b) व्यंग्यार्थः

(c) वाच्यार्थः (d) तात्पर्यार्थः

उत्तर-(c)

पद का 'मुख्यार्थ' 'वाच्यार्थ' होता है। जैसा कि आचार्य मम्मट ने काव्य प्रकाश ग्रन्थ के द्वितीय उल्लास के आठवें सूत्र में लिखा है-

'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।।

अर्थात् साक्षात् संकेतित अर्थ ही मुख्यार्थ कहलाता है और उसका बोध कराने में इस शब्द का जो व्यापार होता है वह अभिधा शक्ति कहलाता है। वाच्यार्थ को ही मुख्यार्थ कहा जाता है।

36. नाटके इतिवृत्तं किम्?

(a) कल्पितम् (b) प्रसिद्धम्

(c) अप्रसिद्धम् (d) मिश्रम्

उत्तर-(b)

नाटक में इतिवृत्त (कथानक) प्रसिद्ध (विख्यात) होना चाहिए। जैसा कि आचार्य विश्वनाथ ने नाटक के लक्षण में लिखा है-

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्

विलासर्ध्यादिगुणवद्युक्तं नाना विभूतिभिः।।

नाटक कुछ लक्षण अधोलिखित हैं-

1. कथावस्तु लोक-विख्यात होनी चाहिए।
2. पाँच से लेकर दस तक अङ्क होने चाहिए।
3. विख्यात वंश का धीरोदात्त नायक हो।
4. शृङ्गार या वीर अंगीरस हो।
5. चार अथवा पाँच मुख्य पात्र हों

37. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना स्थापनेत्युच्यते?

(a) शूद्रकस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) भासस्य (d) भट्टनारायणस्य

उत्तर-(c)

भास के नाटकों में प्रस्तावना के स्थान पर स्थापना शब्द का प्रयोग हुआ है जबकि कालिदास, भवभूति आदि रूपककारों ने प्रस्तावना का ही प्रयोग किया है। भास के तेरह नाटक प्राप्त होते हैं जिन्हें महामहोपाध्याय टी. गणपतिशास्त्री ने सन् 1912 में अनन्तशयन ग्रन्थमाला त्रिवेन्द्रम से प्रामाणिक रूप से प्रकाशित कराया। भास द्वारा लिखित रूपक निम्न हैं-

1. स्वप्नवासवदत्तम् 2. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
3. उरुभङ्गम् 4. दूतवाक्यम्
5. पञ्चरात्रम् 6. दूतघटोत्कचम्
7. कर्णभारम् 8. मध्यमव्यायोगः
9. प्रतिमानाटकम् 10. अभिषेकनाटकम्
11. अविमारकम् 12. चारुदत्तम्
13. बालचरितम्।

38. कस्मिन् सन्ति त्रयो गुणाः?

(a) माघे (b) रघुवंशे
(c) नैषधीये (d) शिशुपालवधे

उत्तर-(a)

महाकवि माघ में उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य के गुणों की कुशलता मानी गयी है। जैसा कि प्रसिद्ध श्लोक है-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

महाकवि माघ ने शिशुपालवध में रैवतक पर्वत की हाथी से और हाथी के बँधे घंटे की तुलना नहीं, बल्कि रैवतक पर्वत के दोनों ओर जो सूर्य और चन्द्रमा हैं उनकी तुलना स्वर्ण और रजत निर्मित घन्टे से की है अतः माघ कवि को ''घंटामाघ'' कहा जाता है।

39. भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि दृश्यते?

(a) कर्णपर्वणि (b) शल्यपर्वणि
(c) भीष्मपर्वणि (d) द्रोणपर्वणि

उत्तर-(c)

भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गयी है।
महाभारत में कथानकों के विशेष पात्रों, कार्यों और स्थानों के आधार पर पर्वों का विभाजन किया गया है। पर्वों की संख्या निम्नलिखित अठारह है-

1. आदि 2. सभा
3. वन 4. विराट
5. उद्योग 6. भीष्म
7. द्रोण 8. कर्ण
9. शल्य 10. सौप्तिक
11. स्त्री 12. शान्ति
13. अनुशासन 14. अश्वमेध
15. आश्रमवासिक 16. मौसल
17. महाप्रस्थानिक 18. स्वर्गारोहण।

उपरोक्त पर्वों में से महाभारत युद्ध के जितने दिनो तक भीष्म सेनापति थे लगभग उतने भाग का नाम भीष्म पर्व है उसी में भगवान कृष्ण के द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश दिया गया था। गीता में 18 अध्याय तथा 700 श्लोक हैं।

40. स्थायिभावाः कति?

(a) अष्ट (b) पञ्च
(c) दश (d) सप्त

उत्तर-(a)

स्थायी भावों की संख्या आठ है। कुछ लोग ''निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः'' कहकर नवम् स्थायिभाव को मानते है। परन्तु आचार्य मम्मट स्पष्ट रूप से आठ रस और आठ स्थायी भावों को मानते हैं जो निम्न अंकित हैं-

अथ भावाः-

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्तितताः।।

अथ रसाः

शृङ्गार-हास्य-करूण-रौद्र-वीर-भयानकाः।
बीभत्साद्भुत्सञ्ज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।

41. रत्नावली कस्मिन् काव्यप्रभेदे अन्तर्भवति?

(a) नाटिकायाम् (b) भाणिकायाम्
(c) प्रकरणिकायाम् (d) रासके

उत्तर-(a)

रत्नावली 'नाटिका' नामक काव्य प्रभेद के अन्तर्गत समाविष्ट है, क्योंकि इसमें मात्र 4 अंक है और जिसमें 5 अंक से कम रहे वह नाटिका कहा जाता है। 5 से 10 अंक जिसमें रहे वह नाटक कहलाता है।
रत्नावली नाटिका कश्मीर के कवि हर्ष द्वारा लिखित है जिसमें चार अंक है तथा प्रधान रस शृङ्गार है। इसका नायक उदयन धीरललित तथा नायिका वासवदत्ता मुग्धा कोटि की हैं इसमें श्री

हर्ष ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है। श्रीहर्ष के निम्न 3 रूपक प्रसिद्ध हैं।
1. प्रियदर्शिका 2. रत्नावली 3. नागानन्द

42. अभिधापुच्छभूता का?

(a) स्थापना (b) लक्षणा
(c) तात्पर्या (d) भावना

उत्तर-(b)

अभिधा शब्दशक्ति के पुच्छ के सदृश लक्षणावृत्ति होती है क्योंकि जब अभिधा वृत्ति के द्वारा यथेष्ट अर्थ की उत्पत्ति नहीं हो रही होती है अपितु उस अभिधार्थ (मुख्यार्थ) का बाध होकर तत्सम्बन्धी ही किसी अन्यार्थ की उपस्थिति होती है तब उसे लक्षणा के नाम से जानते हैं।
जो लक्षणावृत्ति है वह अभिधा से ही सम्बद्ध होने के कारण ही अभिधापुच्छभूता कही जाती है।
किसी शब्द के उच्चारण करने पर किसी अर्थ की प्रतीति भी होती है। वह अर्थ वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यङ्ग्यार्थ के भेद से तीन प्रकार का होता है तथा उसके प्रतिपादक शब्दों को क्रमशः वाचक, लक्षक और व्यंजक कहते हैं।

43. भाणे नायकः कः?

(a) चेटः (b) विदूषकः
(c) विटः (d) शकारः

उत्तर-(c)

भाण का नायक विट होता है। विट शब्द का अर्थ धूर्त लोलुप या कामी होता है।
रूपकों के नायक निम्नलिखित प्रकार से होते हैं-
1. नाटक — धीरोदात्त नायक।
2. प्रकरण — धीरप्रशान्त नायक।
3. भाण — कोविट नायक।
4. व्यायोग — धीरोध्दत नायक।
5. समवकार — उदार प्रकृति वाले देव और दानव कुल बारह नायक।
6. डिम — उद्धत प्रकृति वाले देव, गन्धर्व एवं राक्षस कुल सोलह नायक।
7. ईहामृग — धीरोद्धत मनुष्य अथवा देवता नायक।
8. अङ्क — साधारण मनुष्य नायक होता है।
9. वीथी — उत्तम, मध्यम अथवा अधम कोई भी नायक।
10. प्रहसन — धूर्त, विप्र, कामुक आदि पात्र।

44. शान्तरसस्य स्थायी भावः कः?

(a) शोकः (b) निर्वेदः
(c) भयम् (d) उत्साहः

उत्तर-(b)

शान्त रस का स्थायी भाव निर्वेद होता है जैसा कि कहा भी है-
''निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः''
वस्तुतः आचार्य मम्मट ने आठ रस और आठ स्थायी भावों को माना है किन्तु कुछ आचार्यों का मत है कि नवम रस 'शान्तरस' है जिसका स्थायी भाव निर्वेद है।

45. केवलरसप्रस्थानस्य प्रवर्त्तकः कः?

(a) भामहः (b) भरतः
(c) विश्वनाथः (d) वामनः

उत्तर-(c)

केवल रस प्रस्थान के प्रवर्तक आचार्य विश्वनाथ है। आचार्य विश्वनाथ ने रस को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करते हुए लिखा है- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसजनक वाक्य ही काव्य होता है। विश्वनाथ के द्वारा भरतमुनि से संकेतित इस सम्प्रदाय की स्थापना की गयी। विश्वनाथ ने वामन, मम्मट और आनन्दवर्धन के मतों का पर्याप्त खण्डन किया गया है। विश्वनाथ को 'कविराज' की उपाधि प्राप्त है।
कविराज आचार्य विश्वनाथ की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-
1. राघवविलास
2. पार्वती परिणयम्
3. साहित्यदर्पण
4. काव्यप्रकाशदर्पण (काव्य प्रकाश की टीका)

46. सन्देशकाव्यप्रस्थानं केन समारब्धम्?

(a) अश्वघोषेण (b) कालिदासेन
(c) कुन्तकेन (d) वामनेन

उत्तर-(b)

सन्देशकाव्यप्रस्थानं कविकुलगुरूणा कालिदासेन समारब्धम्' महाकवि कालिदास के द्वारा रचित 'मेघदूतम्' नाम का खण्डकाव्य विश्वसाहित्य में दूतकाव्य अथवा सन्देशकाव्य के नाम से प्रसिद्ध है। कालिदास ने इस सन्देशकाव्य में 'हेममाली' नामक यक्ष के माध्यम से मेघ द्वारा अपनी पत्नी 'विशालाक्षी' नामक यक्षिणी के लिए अत्यन्त प्रणयपूर्वक सन्देश प्रेषित किया है। इस सम्पूर्ण काव्य में मात्र 'मन्दाक्रान्ता' नामक छन्द का ही प्रयोग हुआ है।
कालिदास ने कुल 7 ग्रन्थों की रचना की जो निम्नांकित हैं-

नाट्यग्रन्थ-
(i) मालविकाग्निमित्र (ii) विक्रमोर्वशीय
(iii) अभिज्ञानशाकुन्तल
काव्यग्रन्थ-
(i) कुमारसम्भव (ii) रघुवंश
खण्डकाव्य-
(i) ऋतुसंहार (ii) मेघदूत

47. नाटके अर्थप्रकृतयः कति?
(a) तिस्रः (b) पञ्च
(c) सप्त (d) दश

उत्तर-(b)

नाटक में अर्थ प्रकृतियाँ पाँच होती हैं। पाँच अर्थ प्रकृतियाँ निम्न हैं-
1. बीज 2. बिन्दु
3. पताका 4. प्रकरी
5. कार्य

नाटक में पाँच कार्य अवस्थाएँ तथा पञ्चसन्धियाँ होती हैं। पाँच अर्थप्रकृतियों तथा पाँच कार्य अवस्थाओं के योग से पाँच सन्धियाँ बनती हैं-

कार्य की पाँच अवस्थाएँ-
1. आरम्भ 2. यत्न
3. प्राप्त्याशा 4. नियताप्ति
5. फलागम

कथावस्तु की पाँच सन्धियाँ
1. मुख 2. प्रतिमुख
3. गर्भ 4. विमर्श या अवमर्श
5. निर्वहण

48. स्वप्नवासवदत्ते कति अङ्काः सन्ति?
(a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) अष्ट

उत्तर-(b)

स्वप्नवासवदत्त में छः अंक हैं। इसमें प्रतिज्ञायौगन्धरायण में वर्णित कथा से आगे की कथा वर्णन है। इसका नायक उदयन तथा नायिका वासवदत्ता क्रमशः धीरोदात्त तथा स्वीया प्रकृति के नायक-नायिका हैं।

भास रचित रूपकों में अकों की संख्या निम्न प्रकार से है-
1. स्वप्नवासवदत्तम् – 6 अंक
2. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् – 5 अंक
3. उरुभङ्गम् – 1 अंक
4. दूतवाक्यम् – 1 अंक
5. पञ्चरात्रम् – 3 अंक
6. दूतघटोत्कचम् – 1 अंक
7. कर्णभारम् – 1 अंक
8. मध्यमव्यायोग – 1 अंक
9. प्रतिमानाटकम् – 7 अंक
10. अभिषेकनाटकम् – 6 अंक
11. अविमारकम् – 6 अंक
12. चारूदत्तम् – 4 अंक
13. बालचरितम् – 5 अंक

49. का कृतिः भासविरचिता नास्ति?
(a) प्रतिमानाटकम् (b) उरुभङ्गम्
(c) स्वप्नवासवदत्तम् (d) वासवदत्ता

उत्तर-(d)

'वासदत्ता' नामक नाटक भास द्वारा विरचित नहीं है। यह रचना 'सुबन्धु' की है। सुबन्धु लगभग छठी शताब्दी ईसवी के दाक्षिणात्य विद्वान हैं। इनके द्वारा रचित एकमात्र रचना वासवदत्ता ही है।
भास के द्वारा रचित निम्न 13 रचनाएँ संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध है। जिन्हें 1912 ई. में वित्रेन्द्रम से गणपति शास्त्री द्वारा प्रकाशित कराये गये।
1. स्वप्नवासवदत्तम् 2. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
3. दरिद्रचारुदत्तम् 4. अविमारकम्
5. प्रतिमानटकम् 6. अभिषेकनाटकम्
7. बालचरितम् 8. पञ्चरात्रम्
9. मध्यमव्यायोगः 10. दूतवाक्यम्
11. दूतघटोत्कचम् 12. कर्णभारम्
13. उरुभङ्गम्

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः
(a) नागानन्दम् विष्णुशर्मा
(b) गीतगोविन्दम् बाणभट्टः
(c) पञ्चतन्त्रम् जयदेवः
(d) हर्षचरितम् श्रीहर्षः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	3	2	4	1
(b)	4	3	1	2
(c)	1	2	3	4
(d)	1	3	2	4

उत्तर-(b)

उपयुक्त तालिका इस प्रकार है-
नागानन्द — श्रीहर्षः
गीतगोविन्दम् — जयदेव
पञ्चतन्त्रम् — विष्णुशर्मा
हर्षचरितम् — बाणभट्टः

यू.जी.सी. नेट परीक्षा-Dec.-2010
संस्कृत
पेपर-2
व्याख्यात्मक हल सहित

1. का द्युस्थानदेवता?

(a) सविता (b) चन्द्रमा
(c) वायुः (d) बृहस्पतिः

उत्तर-(a)

द्युस्थान के देवता सविता हैं। ऋग्वेद के द्युस्थानीय देवों में सविता का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है ऋग्वेद के ग्यारह सूक्तों में इनकी स्तुतियाँ विविध रूपों में की गयी है।
वैदिक देवताओं का वर्गीकरण कई प्रकार से हुआ है इनमें चार प्रकार मुख्य हैं-

1. स्थान के क्रम से 2. परिवार के क्रम से
3. वर्ग क्रमानुसार 4. समूह क्रमानुसार

1. स्थान क्रम से वर्णित देवता- इनको निम्न तीन प्रकार से विभाजित कर सकते हैं।

(i) द्युस्थानीय अर्थात ऊपरी आकाश में निवास करने वाले।
(ii) मध्यस्थानीय अर्थात् अन्तरिक्ष में निवास करने वाले।
(iii) पृथ्वीस्थानीय अर्थात् पृथ्वी पर रहने वाले देवता।

2. सामवेदस्य ब्राह्मणानि-

(a) अष्टौ (b) दश
(c) चत्वारि (d) नव

उत्तर-(a)

सामवेद का उपलब्ध ब्राह्मण आठ है। अन्य वेदों की तुलना में सामवेदीय ब्राह्मण अधिक हैं। सायण ने इस प्रकार इनका विवेचन किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं बाह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्।।
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः।।

अतः सायण के उपरोक्त श्लोकों से निम्न आठ बाह्मण ग्रन्थ पुष्ट होते हैं-

1. तांड्य ब्राह्मण 2. षड्विंश बाह्मण
3. सामविधान ब्राह्मण 4. आर्षेय ब्राह्मण
5. देवताध्याय ब्राह्मण 6. उपनिषद् ब्राह्मण
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण

3. मैत्रायणीसंहिता कस्य वेदस्य?

(a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर-(b)

मैत्रायणी संहिता यजुर्वेद (कृष्ण यजुर्वेद) की है। सम्प्रति कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ मात्र प्राप्य हैं।
जो निम्न हैं-

1. तैत्तरीय 2. मैत्रायणी
3. काठक (कठ) 4. कपिष्ठल

2. मैत्रायणी- इस शाखा में 4 काण्ड, 54 प्रपाठक तथा 3144 मंत्र हैं। इन मत्रों में से 1701 ऋचाएँ ऋग्वेद में भी प्राप्त होती हैं।

4. छान्दोग्योपनिषत् कस्य वेदस्य?

(a) सामवेदस्य (b) ऋग्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) यजुर्वेदस्य

उत्तर-(a)

'छान्दोग्योपनिषत्' सामवेद का उपनिषद् है। इस उपनिषद् में आठ अध्याय अथवा प्रपाठक हैं।
इन अध्यायों में वर्णित विषय अति संक्षेप में इस प्रकार है-

अध्याय-1- ओम् की उपासना।
अध्याय-2- त्रयी विद्या, धर्म के तीन स्कन्द।
अध्याय-3- गायत्री का महत्त्व, घोर आंगिरस द्वारा देवकी पुत्र कृष्ण को शिक्षा।
अध्याय-4- सत्यकाम जाबालि की कथा, बह्म के चार पाद।
अध्याय-5- प्राण की श्रेष्ठता।
अध्याय-6- तत्त्वमसि का विस्तृत प्रतिपादन।
अध्याय-7- ऋषि सनत्कुमार का नारद को उपदेश।
अध्याय-8- इन्द्र और विरोचन को प्रजापति द्वारा आत्मज्ञान की शिक्षा।

5. विश्वामित्र-नदीसंवादः कस्मिन् मण्डले वर्तते?

(a) दशममण्डले (b) अष्टममण्डले
(c) तृतीयमण्डले (d) षष्ठमण्डले

उत्तर-(c)

विश्वामित्र-नदीसंवाद ऋग्वेद के तृतीयमण्डल का तैंतीसवाँ सूक्त है। इसमें 13 मन्त्र हैं। इसमें त्रिष्टुप् छन्द है। जिनमें पञ्चनद प्रदेश की विपाशा (व्यास) और शुतुद्रि (सतलज) नदियों का मानवीकरण करते हुए विश्वामित्र के साथ उनकी बात-चीत दिखाई गयी है।

6. जगतीछन्दसि कत्यक्षराणि भवन्ति?

(a) दश (b) षोडश
(c) अष्ट (d) द्वादश

उत्तर-(d)

जगती छन्द के प्रत्येक पाद में 12 अक्षर होते हैं। यह एक वैदिक छन्द है। एक मन्त्र में चार पाद होते हैं इस तरह कुल मिलाकर 48 वर्ण इस छन्द में हो जाते हैं। ऋग्वेद के दशम मडलस्थ 53 ऋचाओं में इस छन्द का प्रयोग प्राप्त होता है। वैदिक छन्दों में अनुष्टुप्, गायत्री, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती आदि छन्द प्रमुख हैं।

7. कति भावविकाराः?

(a) पञ्च (b) सप्त
(c) नव (d) षट्

उत्तर-(d)

भाव विकार छः होते हैं जो अधोलिखित हैं-

1. जायते (पैदा होना) 2. अस्ति (सत्तावान दीखना)
3. विपरिणमते (बदलना) 4. वर्द्धते (बढ़ना)
5. अपक्षीयते (घटना) 6. विनश्यति (नष्ट होना)

8. बाष्कलसंहिता वर्तते-

(a) शुक्लयजुर्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) कृष्णयजुषः

उत्तर-(c)

वाष्कलसंहिता ऋग्वेद की साखा है पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया है, किन्तु सभी प्राप्य नहीं हैं। उपर्युक्त 21 शाखाओं में मात्र 5 शाखाओं का मुख्य रूप से उल्लेख मिलता है-

1. शाकल 2. बाष्कल
3. आश्वलायन 4. शांखायन
5. माण्डूकायन

2. **बाष्कल-** बाष्कल शाखा में 9025 सूक्त थे किन्तु आठ सूक्तों को शाकल शाखा में सम्मिलित कर लिया गया है।

9. संहिताध्ययनान्तरं कः पाठः विधीयतेः?

(a) क्रमपाठः (b) पदपाठः
(c) जटापाठः (d) घनपाठः

उत्तर-(b)

संहिताध्ययन के बाद पदपाठ किया जाता है। पदपाठ के कुछ प्रमुख नियम निम्न है-

1. इसमें सभी सन्धियों का विच्छेद किया जाता है।
2. समासविग्रह करके दोनों पदों के मध्य अवग्रह (ऽ) का चिह्न लगाया जाता है।
3. प्रगह्य संज्ञा वाले द्विवचन के रूप (ई, ऊ, ए) अन्त वाले के बाद 'इति' लगाया जायेगा।

याज्ञवल्क्य शिक्षा में पद पाठ को साक्षात् सरस्वती कह गया है- 'पदमुक्ता सरस्वती'।

10. वेदस्य नासिकात्वेनोपमीयते-

(a) निरुक्तम् (b) छन्दः
(c) शिक्षा (d) कल्पः

उत्तर-(c)

वेद का घ्राण (नासिका) शिक्षा को कहा जाता है। इस विषय में निम्न श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध है-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव बह्मलोके महीयते।।

वेद के विभिन्न अङ्गों के रूप में विभिन्न शास्त्रों को दर्शाया गया है।

जैसे-

पैर – छन्द
हाथ – कल्प
आँख – ज्योतिष
कान – निरुक्त
नाक – शिक्षा
मुख – व्याकरण

अतः वेद का घ्राण (नाक) शिक्षा को कहा जाता है।

11. याज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवादः प्राप्यते-

(a) बृहदारण्यकोपनिषदि (b) छान्दोग्योपनिषदि
(c) जाबालोपनिषदि (d) ऐतरेयोपनिषदि

उत्तर-(a)

याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है। महर्षि याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ मैत्रेयी और कात्यायनी थीं। महर्षि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के मध्य अनश्वरता पर हुए प्रसिद्ध संवाद का उल्लेख 'बृहदारण्यकोपनिषद्' में प्राप्त होता है।
यह उपनिषद् शतपथ बाह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है। यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध उपनिषद् है।

12. अथर्ववेद कति काण्डानि सन्ति?

(a) पञ्चविंशतिः (b) विंशतिः
(c) एकोनविंशतिः (d) अष्टादश

उत्तर-(b)

अथर्ववेद में 20 काण्ड प्राप्त होते हैं अथर्वन् शब्द का अर्थ गतिहीन या स्थिर होता है। अथर्ववेद को आङ्गिरस वेद भी का जाता है। अथर्ववेद की नौ शाखाएँ हैं।

1. पैप्पलाद	2. तौद	3. मौद
4. शौनकीय	5. जाजल	6. जलद
7. ब्रह्मवद	8. देवदर्श	9. चारणवैद्य

13. निष्प्रकारकं ज्ञानं किम्?

(a) स्मृतिः (b) अनुमितिः

(c) प्रत्यभिज्ञा (d) निर्विकल्पकम्

उत्तर-(d)

इन्द्रिय और पदार्थ के सन्निकर्ष (सम्बन्ध) से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं। वह प्रत्यक्ष ज्ञान 'निर्विकल्प' और 'सविकल्पक' के भेद से दो प्रकार का होता है। इन दोनों प्रकार के प्रत्यक्षों को निम्न प्रकार से व्याख्यायित किया गया है-

1. **निर्विकल्पक-**
''तत्र निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्'' अर्थात् जिस ज्ञान में कोई प्रकार (विशेषण) न हो वह ज्ञान निर्विकल्पक कहा जाता हैं। अतः जो विशेषण-विशेष्य का विषय न बना हो ऐसा ज्ञान निर्विकल्पक कहलाता है। जैसे किसी पदार्थ के प्रथम दर्शन में या अल्प अन्धकार में देखने पर ''यह कुछ है'' इस प्रकार का सामान्य-ज्ञान होता है। यह निर्विकल्पक ज्ञान है।
2. **सविकल्पक-**
''सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्'' अर्थात् जिस ज्ञान में कोई प्रकारीभूत = विशेषणीभूत कोई धर्म हो उस ज्ञान को सविकल्पक ज्ञान कहते हैं। जैसे- ''ब्राह्मणोऽयम्'' (यह ब्राह्मण है) यहाँ पर ब्राह्मणत्व प्रकार है और ब्राह्मण विशेष्य है अतः ''ब्राह्मणोऽयम्'' ''डिथ्थोडयम्'' ''श्यामोऽयम्'' ये सब ज्ञान सविकल्पक ज्ञान के उदाहरण हैं।

14. उपमानं प्रमाणं किम्?

(a) इन्द्रियम् (b) व्याप्तिज्ञानम्

(c) सादृश्यज्ञानम् (d) शक्तिज्ञानम्

उत्तर-(c)

न्याय दर्शन में चार प्रमाण स्वीकृत हैं।

1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
3. उपमान 4. शब्द

1. **प्रत्यक्ष-** षड्विध इन्द्रियों (घ्राण, रसना, चक्षु, त्वक्, श्रोत्र और मन) का अपने-अपने विषयों (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द और सुख-दुःख आदि) का (क्रमशः) ग्रहण करना ही प्रत्यक्ष कहलाता है।
2. **अनुमान-** परामर्श (व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान) से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं तथा अनुमिति के करण (असाधारणकारण) को ही अनुमान कहते हैं।
3. **उपमान-** उपमिति के करण (असाधारणकारण) को उपमान कहते हैं। संज्ञा (पद) संज्ञी (पदार्थ) के सम्बन्धज्ञान को उपमिति कहते है। उपमिति का करण सादृश्यज्ञान होता है। अतः उपमान प्रमाण सादृश्यज्ञान ही होता है।
4. **शब्द-** आप्तों के वाक्य को शब्द प्रमाण कहते हैं। जो जैसा है उसे वैसा ही जो कहता हो अर्थात् सत्य ही बोलता हो उसे आप्त कहते है।

15. शब्दशक्तिः कुत्र न्यायमते?

(a) जातौ (b) व्यक्तौ

(c) आकृतौ (d) जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ

उत्तर-(d)

अस्मात्पदादयमर्थो बोधव्य : इतीश्वर-संकेतः शक्तिः'' अर्थात् इस पद (घट पद) से अयमर्थो कम्बु ग्रीवादिमान पदार्थः) बोधव्यः = जानना चाहिए इस प्रकार के ईश्वर संकेत को शक्ति कहते है। शक्ति के विषय में मीमांसकों ने भी अपना मत प्रकट किया है किन्तु मीमांसकों के पक्ष में गौरव होने के कारण तथा केवल जाति, या आकृति (अवयवसंस्थान), या व्यक्ति मात्र में शक्ति मानने से उन-उन गोत्वादि जातियों अथवा शृंगसास्नादि अवयव संस्थान विशिष्टों अथवा गो आदि व्यक्तियों के बोध की अनुपपत्ति होने से बुद्धिपूर्वक शक्ति की कल्पना करने पर वह शक्ति जात्याकृतिशिष्ट व्यक्ति में ही विश्राम पाती है। अतः नैयायिकगण जात्याकृतिविशिष्ट व्यक्ति में ही शब्दशक्ति को स्वीकार करते हैं।

16. वेदान्तमते कतिविधं शरीरम्?

(a) त्रिविधम् (b) द्विविधम्

(c) एकविधम् (d) चतुर्विधम्

उत्तर-(b)

छः आस्तिक दर्शनों (साख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त) में वेदान्त दर्शन सर्वाधिक प्रचलित दर्शन है। वेदान्त दर्शन के मूल महर्षि बादरायण के सिद्धान्त हैं जिनसे प्रामुख्येन आदि शङ्कराचार्य ने वेदान्त दर्शन का प्रणयन किया। ''वेदान्त के मत में सूक्ष्मशरीर और स्थूलशरीर के भेद से शरीर दो प्रकार का होता है।''

1. **सूक्ष्मशरीर-** सत्रह अवयव वाले सूक्ष्मशरीर को लिंग-शरीर कहा जाता है। वे 17 अवयव निम्न हैं।
पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ- श्रोत्र (कान) त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण (नाक)। बुद्धि और मन। पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ- वाक्, पाणि, पाद, पायु (मलत्याग का स्थान), उपस्थ (मूत्रत्याग का स्थान)। इनकी उत्पत्ति आकाशादि के व्यस्त-अन्य से असम्पृक्त सात्त्विक अंशो से होती है।

2. **स्थूलशरीर-** स्थूलभूत शरीर पञ्चीकृत होते हैं, पञ्चीकरण का अर्थ है आकाशादि पाँचों सूक्ष्मभूतों में प्रत्येक के दो-दो समान भाग कर दश भाग बना देना, फिर उन दश भागों में पहले पाँच भागों के प्रत्येक के चार समान भाग बनाकर उन चार भागों में एक एक भाग को अपने अपने दूसरे अर्ध भाग को छोड़कर अन्य चार भूतों के दूसरे अर्ध भाग में मिला देना। जैसे कि कहा भी है-
''द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतर द्वितीयांशैर्योजानात्पञ्च पञ्च ते।।'' (61201) पञ्चदशी

17. पञ्चप्राणादिवायूनां कुत उत्पत्तिः वेदान्तमते?
(a) तामसाद् भूतांशात्　　(b) व्यस्ताद् राजसादंशात्
(c) समस्ताद् राजसादंशात्　　(d) सात्विकादंशात्

उत्तर-(c)

स्थान और कार्य के भेद से वायु मुख्यतः पाँच प्रकार का होता है। जैसे कि कहा है-
हृदि प्राणो गुदेडयानः समानो नाभि मण्डले।
उदानः कण्ठदेशस्तु व्यानः सर्वशरीरगः।
अतः उक्त प्राण आदि पाँच वायु आकाशादि के मिलित रजोगुण से उत्पन्न होते हैं। प्राणदि पाँचो वायु कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश का निर्माण करते हैं यह क्रियात्मक होने के कारण रजोभाग का कार्य है। जैसा कि वेदान्तसार में कहा गया है-
''एतत् प्राणदिपञ्चकमाकाशादिगतरजोंशेभ्यो मिलितेभ्यः उत्पद्यते''।।

18. सांख्यमते माध्यस्थ्यं कस्य स्वरूपम्?
(a) पुरुषस्य　　(b) प्रधानस्य
(c) बुद्धेः　　(d) अहङ्कारस्य

उत्तर-(a)

महर्षि कपिल के द्वारा प्रणीत सांख्य दर्शन सर्वाधिक प्राचीन दर्शन है। सांख्यशास्त्र का नाम ''सांख्य'' इस प्रकार से होने का कारण यह है कि इसमें 25 तत्वों (पुरूष, प्रकृति, महत, अहंकार, एकादशेन्द्रियाँ तथा पञ्चतन्मात्राओं) का निश्चि संख्या के रूप में प्रदर्शन किया गया हैं उनमें सभी तत्वों के कुछ न कुछ धर्म (कार्य) हैं। अतः पुरूष के भी अनेक धर्म हैं। साक्षित्व, केवलत्व (कैवल्य) मध्यस्थत्व (माध्यस्थ्य), द्रष्ट्रत्व तथा अकर्तृत्व धर्म पुरूष के हैं। जैसा कि सांख्याकारिका की उन्नीसवीं कारिका में कहा है-
तस्माच्च विपर्यासात् सिद्धं साक्षित्वमस्य पुरूषस्य।
कैवल्यं माध्यस्थयं द्रष्ट्रत्वमकर्तृभावश्च।।19।
अतः साख्यमते माध्यस्थ्यं पुरूषस्य स्वरूपमस्ति इति सिद्धं भवति।

19. सांख्यमते कार्यकारणसिद्धान्तः कः?
(a) आरम्भवादः　　(b) परिणामवादः
(c) संघातवादः　　(d) विवर्तवादः

उत्तर-(b)

सांख्यदर्शन परिणामवाद का समर्थक है। कार्य अपने कारण में विद्यमान रहता है। सत्कार्यवाद के दो विभेद हैं- परिणामवाद तथा विवर्तवाद। परिणामवाद से तात्पर्य यह है कि कारण वास्तविक रूप में कार्य में बदल जाता है जैसे- तिल तेल में तथा दूध का दही में रूपान्तरण हो जाता है। विवर्तवाद के अनुसार परिवर्तन वास्तविक न होकर आभासमात्र होता है। जैसे रज्जु (रस्सी) में सर्प का आभास होना। विवर्तवाद के समर्थक अद्वैत वेदान्ती है।
विशषः- अत्र कार्योत्पत्तिप्रकारो मतभेदेन प्रसरति।
1. असतः सज्जायते इति सौगताः (बौद्धाः) संगिरन्ते।
2. सतोऽसज्जायते इति नैयायिकादयः।
3. सतो विवर्ते (अधिष्ठानज्ञानेन निवर्त्यम्) कार्यजातं न वस्तु सदिति। मायावादिनो वेदान्तिनः।
4. सतः सज्जायते इति सांख्याः।

20. कैवल्यं सांख्यमते कतिविधम्?
(a) द्विविधम्　　(b) त्रिविधम्
(c) एकविधम्　　(d) बहुविधम्

उत्तर-(a)

सांख्यमत में कैवल्य (मोक्ष) जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति के भेद से दो प्रकार की कही जाती है।
1. **जीवन्मुक्ति-** जिस प्रकार अग्नि से दग्ध बीज की अंकुरोत्पादक शक्ति नष्ट हो जाती है उसी प्रकार विवेकाग्नि से धर्माधर्मादि की सृष्टिरूप अंकुर को उत्पन्न करने का सामर्थ्य दग्ध किया जाता हैं यह धर्माधर्मविशिष्ट समूह वह कर्माशय प्रचय है जो अनादि और अनिश्चित काल से चित्तभूमि में पड़ा रहता है और कालान्तर में न जाने कितने असंख्य जन्मों को प्रदान करता है। तत्वज्ञान का फल आगामी जन्म जन्मान्तर के असंख्य देहधारणों से साधक को मुक्त करना है इस प्रकार की मुक्ति शास्त्र में जीवन्मुक्ति नाम से कही गयी है।
2. **विदेह मुक्ति-** जिस प्रकार कुलाल (कुम्हार) चाक पर मिट्टी को रखकर दण्ड के सहारे चक्र को जोर से घुमाता है और घट बन जाने के बाद उसे चाक से उतार लेता है और अपने व्यापार से निवृत्त हो जाता है किन्तु चक्र पूर्व वेगाख्य संस्कार के कारण घूमता रहता है। वेगाख्य संस्कार के क्षीण होते ही वह भी भ्रमण क्रिया से मुक्त हो जाता है। उसी प्रकार ज्ञानी पुरूष भी वर्तमान काल में सुख-दुःख का भोग कराने वाले धर्माधर्मरूप संस्कारों का क्षय होने तक शरीर धारण करता है। अतः प्रारब्ध कर्म का भोग द्वारा क्षय होते ही ज्ञानी शरीर बन्धन से सर्वदा के लिए छूट जाता है अर्थात् मुक्त हो जाता हैं शास्त्र में इस मुक्ति को विदेहमुक्ति कहा गया है। तात्पर्य यह हैं कि तत्त्वज्ञान का साक्षात् फल अनागत शरीर धारण से मुक्ति (जीवन्मुक्ति) दिलाना है और प्रारब्धकर्म के क्षयरूप मध्यवर्ती व्यापार द्वारा परम्परया पूर्णतः मुक्ति (विदेहमुक्ति) दिलाना है।

21. साध्याभावव्याप्तो हेत्वाभासः कः?

(a) बाधितविषयः (b) सत्प्रतिपक्षः

(c) साधारणः (d) विरुद्धः

उत्तर-(d)

हेतु की तरह जो आभासित हो परन्तु हेतु न हो उन्हे हेत्वाभास कहा जाता है। जैसा कि न्यायबोधिनीकार ने लिखा ''हेतुवदाभासन्ते इति हेत्वाभासा, दुष्ट हेतवः इत्यर्थः''। ये दुष्टहेतु (हेत्वाभास) पाँच प्रकार के होते हैं।

1. सव्यभिचार 2. विरुद्ध
3. सत्प्रतिपक्ष 4. असिद्ध
5. बाधित

1. **सव्यभिचार-** सव्यभिचार को अनैकान्तिक भी कहा जाता है वह तीन प्रकार का होता है।
   1. साधारण सव्यभिचार
   2. असाधारण सव्यभिचार
   3. अनुपसंहारि सव्यभिचार
2. **विरुद्ध-** साध्य के अभाव में व्याप्त हेतु को विरुद्ध हेत्वाभास कहा जाता है। ''साध्याभावव्याप्तो हेतुः विरुद्धः''।
3. **सत्प्रतिपक्ष-** जिसके साध्याभाव का साधक दूसरा हेतु विद्यमान रहता है उस हेतु (असद्धेतु) को सत्प्रतिपक्ष कहते हैं।
4. **असिद्ध-** असिद्ध हेत्वाभास 3 प्रकार का होता है-
   1. आश्रयासिद्ध
   2. स्वरूपासिद्ध
   3. व्याप्यत्वासिद्ध
5. **बाधित-** जिस हेतु का साध्याभाव अन्य प्रमाण से पक्ष में निश्चित है उसे बाधित कहते हैं।

22. अज्ञानं किंरूपम्?

(a) भावरूपम् (b) अभावरूपम्

(c) भावाऽभावरूपम् (d) अनुभयरूपम्

उत्तर-(a)

बह्मनिष्ठ गुरू की शरण में जाने पर मोक्षार्थी को गुरु अध्यारोप और अपवाद के माध्यम से मोक्ष ज्ञान देता है। अध्यारोप का अर्थ है वस्तु में अवस्तु का आरोप। जैसे- जो सर्प नहीं है उस रज्जु/रस्सी में सर्प का अरोप करना।

सत् चित् आनन्द अनन्त अद्वय बह्म ही वस्तु है।

अज्ञानादि समग्र जड़ समूह अवस्तु है। अज्ञान तो सत्-असत् रूप से अनिर्वचनीय, त्रिगुणात्मक, ज्ञानविरोधी, भावरूप कुछ है ऐसा कहते हैं। यह बात अहमज्ञः =''मै अज्ञानवान् हूँ'' इस अनुभव से तथा ''देवभूत आत्मा की अपने सत्त्वादि गुणों से वेष्टित शक्ति को ध्यान योग के द्वारा उन समाधिनिष्ठ योगिकों ने देखा'' इस श्रुति वाक्य (देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढ़ां-श्वेत उ 9.3) से स्पष्ट है। जैसा कि वेदान्तसार ग्रन्थ में कहा गया है-''अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति''। अतः अज्ञान भावरूप होता है विकल्प ''A भारूपम्'' सत्य है।

23. उपधा-संज्ञा केन सूत्रेण?

(a) परःसन्निकर्षः (b) हलोऽनन्तराः

(c) कृत्तद्धितसमासाश्च (d) अलोऽन्त्यात् पूर्व.....

उत्तर-(d)

उपधासंज्ञा ''अलोऽन्त्यापूर्व उपधा ।1/1/64'' सूत्र से होती हैं अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा का अर्थ है- अन्तिम में रहने वाले अल् प्रत्याहार (सभी वर्ण) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है। जैसा कि कौमुदी में कहा गया है- अन्त्यादलः पूर्वो वर्ण उपधा संज्ञा स्यात्। जैसे सखा शब्द की सिद्धि के प्रसंग में सखन् + स रहता है और तब उक्त सूत्र के द्वारा 'न' से पूर्व खकारोत्तरवर्ती अकार की उपधा संज्ञा होती है और ''सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ'' सूत्र से नान्त सखन् के उपधा को दीर्घ होता है तो सखान् बनता है तथा 'न लोप प्रातिपदिकान्तस्य'' सूत्र से नकार का लोप होकर सखा शब्द सिद्ध होता है।

24. हलोऽनन्तराः .... इति सूत्रेण का संज्ञा?

(a) संहिता (b) उपसर्गः

(c) लघुसंज्ञा (d) संयोगः

उत्तर-(d)

''हलोऽनन्तराः संयोगः''।1/1/17 इस पाणिनीय सूत्र से अचों के व्यवधान से रहित हलों की 'संयोग' संज्ञा होती है। जैसा कि लघुसिद्धान्त कौमुदी के संज्ञा प्रकरण में कहा- ''अज्भिरण्यवहिता हलः संयोग-संज्ञाः स्युः'' अर्थात अचों के (अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ) व्यवधान से रहित हल की (हल् प्रत्याहारस्थ वर्णो की) संयोग संज्ञा होती हैं जैसे- सु ध् ध् य् + उपास्य में ध् ध् य् इस वर्ण समुदाय की संयोग संज्ञा उक्त सूत्र से होती है तथा ''संयोगान्तस्य लोपः'' सूत्र से इन तीनों का लोप प्राप्त होता है। अतः ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' सूत्र से संयोग संज्ञा होती है।

25. कर्मधारयसमासविधायकं सूत्रं किम्?

(a) सह सुपा (b) अनेकमन्यपदार्थे

(c) विशेषणं विशेष्येण........ (d) अर्धं नपुसंकम्

उत्तर-(c)

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''2/1/57 सूत्र के द्वारा कर्मधारय समास होता है जैसा कि कौमुदी में कहा गया है- भेदकं सामानाधिकरणेन भेद्योन बहुलं प्राग्वत्। नीलमुत्पलं नीलोत्पलम्। बहुलग्रहणात्क्वचिन्नित्यम्- कृष्णसर्पः।

क्वचिन्न-रामो जामदग्न्यः। अर्थात् भेदक = विशेषण का समानाधिकरण भेद्य = विशेष्य के साथ बहुलता 'विकल्प' से समास होता हैं। सूत्र में बहुलग्रहण के कारण यह समास कहीं नित्य होता है कहीं अनित्य होता है।

विशेषण विशेष्य के विषय में निम्न श्लोक स्मरणीय है-
''भेद्यं विशेष्यमित्याहुर्भेदकं तु विशेषणम्।
प्रधानं तु विशेष्यं स्यादप्रधानं विशेषणम्।
पदार्थ स्वार्थनिरपेक्षादप्रधानं विशेषणम्।
विशेष्यं तु प्रधानं स्यात्स्वार्थस्यैव समर्पणात्।।''

26. वीरपुरुषको ग्रामः इत्यत्र कः समासः?

(a) अव्ययीभाव : (b) बहुव्रीहिः
(c) तत्पुरुषः (d) द्वन्द्वः

उत्तर-(b)

''वीरपुरूषको ग्रामः'' इसमें बहुव्रीहि समास होगा।
वीराः पुरूषा यस्मिन् स वीर पुरुषको गामः (वीर पुरुषों वाला गाँव) इस प्रकार का लौकिक विग्रह किया जाता है तथा अलौकिक विग्रह- वीर जस् + पुरूष जस् है। यहाँ दोनों प्रथमान्त पद अन्यपद (ग्राम) को विशिष्ट करते हैं अतः अन्य पदार्थ में वर्तमान इन पदों का अनेकमन्देयपदा- 2/2/24 से बहुव्रीहि समास, विशेषण का पूर्वनिपात, समास की प्रातिपादिक संज्ञा तथा सब्लुक् करने पर- ''वीरपुरूष'' इस प्रकार प्रयोग बनता हैं। अब शेषाद्विभाषा सूत्र द्वारा विकल्प से समासान्त कप् (क) करने पर- वीरपुरूषक प्रयोग बनता है। विशेष्य (ग्राम) के अनुसार लिङ्ग, विभक्ति और वचन लाने से प्रथमा विभक्ति एकवचन में ''वीरपुरूषकः'' प्रयोग सिद्ध होता है।
''अनेकमन्यपदार्थे'' सूत्र से किया गया समास बहुव्रीहि संज्ञक होता है अतः वीरपुरुषको ग्रामः में भी बहुव्रीहि समास है।

27. 'श्रीः' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे प्रथमा?

(a) प्रातिपदिकार्थमात्रे (b) परिमाणमात्रे
(c) लिङ्गमात्रे (d) वचनमात्रे

उत्तर-(a)

श्रीः शब्द में प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।'' **प्रातिपदिकार्थ लिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''- 2/3/46** सूत्र के द्वारा जिसका लिङ्ग नहीं होता तथा जिसका लिङ्ग निश्चित है वे प्रातिपादिकार्थमात्र के उदाहरण होते हैं। अतः श्री शब्द नित्य स्त्रीलिंग का ही वाचक होने के कारण प्रातिपादिकार्थमात्र का ही उदाहरण बनेगें। 'सिद्धान्तकौमुदी'' में भी कहा गया है- उच्चैः/ नीचैः। कृष्णः। श्रीः। ज्ञानम्।
''अलिङ्गानियतलिङ्गाश्च प्रातिपादिकार्थमात्र इत्यस्योदाहरणम्''। अनियतलिङ्गास्तु लिंगमात्राधिक्यस्य।

28. अनुक्ते कर्मणि का विभक्तिः?

(a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) प्रथमा (d) चतुर्थी

उत्तर-(a)

अनुक्त कर्म में ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है। ''कर्तुरीप्सिततमं कर्मादि'' सूत्रों के द्वारा कर्म संज्ञा का विधान किया जाता है जिनकी कर्म संज्ञा होती अगर वे अनुक्त रहें तो ऐसे कर्म से द्वितीया विभक्ति का विधान ''कर्मणि द्वितीया'' 2/3/2 सूत्र के द्वारा किया जाता है। उक्त अर्थ होता है अभिहित का तथा अनभिहित का अर्थ होता है अनुक्त (न कहा गया)। उक्त जो कर्मादि कारक हैं उन सभी में प्रथमा विभक्ति होती है। अभिधान (कहना) प्रायः तिङ्.(प्रत्यय) के द्वारा कृत् (प्रत्यय) के द्वारा, तद्धित (प्रत्यय) के द्वारा और समास के द्वारा किया जाता है।

29. 'आख्यातोपयोगे' इत्यनेन किं विधीयते?

(a) अपादानसंज्ञा (b) सम्प्रदानसंज्ञा
(c) अधिकरणसंज्ञा (d) कर्मसंज्ञा

उत्तर-(a)

''आख्यातोपयोगे'' इस सूत्र के द्वारा नियम पूर्वक विद्याध्ययन में पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होती हैं 'नियमपूर्वकपूर्वक अध्ययन करना' अर्थ में 'उपयोग' शब्द रूढ़ है। आख्याता का अर्थ है- उपदेष्टा, वक्ता, अध्यापयिता (पढ़ाने वाला)। तदनुसार ''नियमपूर्वक विद्याध्ययन करने में 'पढ़ाने वाले की' अपादान संज्ञा होती है। उदाहरण- 'उपाध्यायात्' अधीते (गुरू से पढ़ता हैं)। अपादान संज्ञा होने के फलस्वरूप उपाध्याय से पञ्चमी विभक्ति हुई- 'उपाध्यायात्'। जिसकी अपादान संज्ञा होती है उसमें ''अपादाने पञ्चमी'' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति हो जाती है।

30. स्वाहा-शब्दयोगे का विभक्तिः?

(a) पञ्चमी (b) चतुर्थी
(c) सप्तमी (d) तृतीया

उत्तर-(b)

स्वाहा शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति
''नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट्-योगाच्च''
सूत्र के द्वारा होती है अब क्रमशः उदाहरणों का विवेचन इस प्रकार है-
नमः के योग में — हरये नमः (हरि को नमस्कार है)
स्वति के योग में — प्रजाभ्यः स्वस्ति (प्रजा का कल्याण हो)
स्वाहा के योग में — अग्नये स्वाहा (अग्नि को आहुति है)
स्वधा के योग में — पितृभ्यः स्वधा (पितरों के लिए अन्नादि है)
अलम् के योग में — ''अलम्'' यह पर्याप्त के अर्थ का बोधक है। (अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्) उदा.- दैत्येभ्यो हरिरलं प्रभुः, समर्थः, शक्त इत्यादि। (दैत्यों को मारने में हरि समर्थ हैं) वषट् के योग में- इन्द्राय वषट् (इन्द्र को हविर्दान)।

31. 'कर्तृकर्मणोः कृति' इति सूत्रेण किं विधीयते?

(a) चतुर्थी (b) पञ्चमी
(c) सप्तमी (d) षष्ठी

उत्तर-(d)

'कर्तृकर्मणोः कृति' इस सूत्र के द्वारा षष्ठी विभक्ति का विधान किया जाता है। कृत् प्रत्यय जिनके अन्त में लगे हों ऐसे शब्दों के योग में उनके (कृत्प्रप्रत्ययान्त शब्दों के) कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे-

1. कृष्णस्य कृतिः (कृष्ण की रचना)
2. जगतः कर्ता कृष्णः (संसार को बनाने वाले कृष्ण)

32. आधारः कतिविधः?

(a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) पञ्चविधः (d) षड्विधः

उत्तर-(a)

कर्ता और कर्म के द्वारा तन्निष्ठ क्रिया (कर्ता और कर्म में रहने वाली क्रिया) के आधारभूत कारक की अधिकरण संज्ञा होती है तथा अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। वह आधार औपश्लेषिक, वैषयिक तथा अभिव्यापक के भेद से तीन प्रकार का होता है।

1. **औपश्लेषिक-** उप = समीपे श्लेषः संयोगादि संबन्धः उपश्लेषः उपश्लेषकृत औपश्लेषिकः। अर्थात् जहाँ आधार का आधेय के साथ संयोगादि सम्बन्ध हो वहाँ औपश्लेषिक आधार होता है यथा-कटे आस्ते। यहाँ कट का (चटाई का) बैठने वाले के साथ संयोग सम्बन्ध है। अतः कट औपश्लेषिक आधार है।
2. **वैषयिक आधार-** विषयकृतो वैषयिक;। अर्थात् विषयता सम्बन्ध से जब किसी को आधार माना जाता है तब वह वैषयिक आधार होता है। यह आधार बौद्धिक होता है यथा-मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष के विषय में इच्छा है) यहाँ इच्छा का विषय मोक्ष है।
3. **अभिव्यापक आधार-** जहाँ आधार के प्रत्येक अवयव में आधेय की सत्ता विद्यमान हो वहाँ अभिव्यापक आधार समझना चाहिए। यथा- तिलेषु तैलम् (तिलों में तेल है)। तिलों के प्रत्येक अवयव में तेल की सत्ता विद्यमान होने से यहाँ तिल अभिव्यापक आधार है। इसी प्रकार-सर्वस्मिन्नात्मास्ति (सभी में आत्मा है) को भी समझना चाहिए।

33. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' इति कस्य मतम्?

(a) रुद्रटस्य (b) भामहस्य
(c) वामनस्य (d) उद्भटस्य

उत्तर-(c)

रीति सम्प्रदाय के प्रधान प्रवर्तक आचार्य वामन माने जाते है। इन्होंने अपने 'काव्यादर्श' ग्रन्थ में 'वैदर्भी' तथा 'गौड़ी' इन दो रीतियों का वर्णन किया हैं। इन्होंने दण्डी से आगे बढ़कर 'पाञ्चाली' रीति का निर्देश कर अपनी मौलिकता स्थापित की। वामन रीति को मात्र शैली ही नहीं मानते अपितु काव्य का सारभूत तत्त्व (आत्मा) भी इसे स्वीकार करते हैं। उन्होने अपने तीन सूत्रों में स्पष्ट किया है ''रीतिरात्मा काव्यास्थ'' अतः रीति क्या है? ऐसा प्रश्न होने पर 'विशिष्टपदरचना रीतिः'' तथा वैशिष्ट्य क्या है? तो विशेषो गुणात्मा कहा है। अतः रीतिरात्मा काव्यस्थ यह आचार्य वामन का मत हैं कुछ महत्वपूर्ण सम्प्रदाय एवं उनके आचार्य निम्न है-

1. अलंकार सम्प्रदाय — भामह, उद्भट, रुद्रट, जगन्नाथ
2. रीति सम्प्रदाय — दण्डी, वामन
3. रस सम्प्रदाय — लोल्लट, शङ्कुक और भट्टनायकादि
4. ध्वनि सम्प्रदाय — आनन्दवर्धन, मम्मट, रुय्यक आदि
5. वक्रोक्ति सम्प्रदाय — कुन्तक
6. औचित्य सम्प्रदाय — क्षेमेन्द्र

34. 'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता' इति केनोक्तम्?

(a) भट्टतौतेन (b) अभिनवगुप्तेन
(c) भट्टनायकेन (d) महिमभट्टेन

उत्तर-(a)

काव्य के मुख्यतः तीन हेतु माने जाते हैं- प्रतिभा, व्यत्पत्ति (निपुणता) और अभ्यास। भट्टतौत कवि 'नवोन्मेषशालिनी बुद्धि' को प्रतिभा कहते हैं। वे कहते हैं- ''प्रज्ञा नवोन्मेषशालिनी ''प्रतिभा मता''- (भट्टतौत काव्यकौतुक, पृष्ठ- 212)
अभिनवगुप्त के अनुसार अपूर्व वस्तु के निर्माण में सक्षम बुद्धि ही प्रतिभा है- ''प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माण- क्षमा प्रज्ञा'' (अभिनवगुप्त ध्वन्यालोक लोचन पृष्ठ-29)। इसके कारण कवि नवीन अर्थ से युक्त प्रसन्न पदावली की रचना करता है।

35. आनन्दवर्धनः कस्य सभापण्डित आसीत्?

(a) अशोकस्य (b) शाह जहानस्य
(c) अवन्तिवर्मणः (d) औसफ् अलेः

उत्तर-(c)

आनन्दवर्धनाचार्य साहित्यशास्त्र के प्रमुख ध्वनिसम्प्रदाय के प्रतिष्ठापकाचार्य होने के नाते साहित्यशास्त्र के अत्यन्त प्रसिद्ध एवं प्रमुखतम व्यक्ति हैं। ये कश्मीर के निवासी हैं। राजतरङ्गिणीकार ने इन्हे काश्मीराधिपति ''अवन्तिवर्मा'' का समकालीन बताया है जिससे अवन्तिवर्मा के सभापण्डित होने की बात पुष्ट होती है जैसा कि-

मुक्ताकणः शिवस्वामी कविरानन्दवर्धनः।
प्रथां रत्नाकरश्चागात् साम्राज्येऽवन्तिवर्मणः।।

कश्मीरनरेश अवन्तिवर्मा का समय 855-884 ई. तक है इसलिए आनन्दवर्धनाचार्य का समय नवम शताब्दी अनुमित होता है।
आनन्दवर्धन की प्रमुख रचनाएँ-

1. विषमबाणलीला 2. अर्जुनचरित
3. देवीशतक 4. तत्त्वलोक
5. ध्वन्यालोक

36. कविकुलगुरुः कः?

(a) माघः (b) कालिदासः

(c) अश्वघोषः (d) भारविः

उत्तर-(b)

कालिदास संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं जिनसे सम्पूर्ण साहित्याकाश चमत्कृत है। कालिदास की प्रतिभा सर्वतोमुखी हैं कालिदास का रघुवंश महाकाव्य भारतीय टीकाकारों ने सर्वोत्कृष्ट माना है इस काव्य के कारण उन्हें कविकुलगुरू की उपाधि प्राप्त हुई अपितु टीकाकार उन्हें रघुकार कहना पसन्द करते हैं- **''क इह रघुकारे न रमते''**

स्मरणीय तथ्य

जन्मसमय- कालिदास का जन्म समय यद्यपि विवादित है यथापि प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व सर्वाधिक तथ्यात्मक है।

जन्मस्थान- कालिदास का जन्मस्थान भी विवादित है तथापि सर्वाधिक विद्वान् उज्जैन को जन्मस्थान सिद्ध करते हैं।

रचनाएँ नाट्यग्रन्थ-

1. मालविकाग्निमित्रम् 2. विक्रमोर्वशीयम्
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

काव्यग्रन्थ- 1. कुमारसम्भवम् 2. रघुवंशम्

खण्डकाव्य- 1. ऋतुसंहारम् 2. मेघदूतम्

रीति- वैदर्भी रीति

37. लोचनं कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यानम् अस्ति?

(a) नाटयशास्त्रस्य (b) काव्यादर्शस्य

(c) ध्वन्यालोकस्य (d) काव्यालङ्कारस्य

उत्तर-(c)

'लोचन' टीका आनन्दवर्धनाचार्य द्वारा विरचित ''ध्वन्यालोक'' नामक ग्रन्थ पर लिखित अभिनवगुप्त पादाचार्य की टीका है आनन्दवर्धानाचार्य के ''ध्वन्यालोक'' पर दो टीकाओं का पता चलता है।

1. अभिनवगुप्त की लोचन टीका।
2. चद्रिका टीका- इसके निर्माता अभिनव गुप्त के कोई पूर्व वंशज ही थे।

चन्द्रिका टीका होने पर भी अभिनव गुप्त ने जो लोचन टीका लिखी है उसका कारण दिखलाते हुए लोचनकार ने लिखा है-

'कि लोचनं विनालोको भाति चन्द्रिकयापि हि।
अतोऽभिनवगुपतोऽत्र लोचनोन्मीलानं व्यधात्।।''

अमिनवगुप्त का समय- अभिनवगुप्तपादाचार्य का समय इदमित्थरूपेण नहीं कहा जा सकता। तथापि अनेक सुसंगत तर्कों द्वारा अभिनवगुप्त काल दशम शताब्दी का अन्तिमभाग तथा ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में था।

38. नाटके कति सन्धयः सन्ति?

(a) द्वौ (b) त्रयः

(c) नव (d) पञ्च

उत्तर-(d)

नाट्य (=रूपक) की परिभाषा- 'नटस्येदमिति नाट्यम्'' होती है (नट् +ञ्य प्रत्यय =नट से सम्बन्धित) नाट्य अर्थात् रूपक दश प्रकार का होता है-

''नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकार डिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति- रूपकाणि दश।।'

नाटक- आचार्य विश्वनाथ ने नाटक के निम्न लक्षण बताए हैं-

'नाटकं ख्यातवृत्तस्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासर्ध्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः।
सुख-दुःख समुद्भूतिः नानारसनिरन्तरम्।
पञ्चादिकादशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिकाः।।

अतः नाटक में 5 सन्धियाँ होती है जिसका उपस्थापन विशिष्ट रूप से नीचे किया जा रहा है-

नाटक की पाँच सन्धियाँ

	पाँच अर्थप्रकृतियाँ	**कार्य की पाँच अवस्थाएँ**	**कथावस्तु की पाँच सन्धियाँ**
1.	बीज	+1. आरम्भ	=1.मुखसन्धि
2.	बिन्दु	+2. यत्न	=2. प्रतिमुखसन्धि
3.	पताका	+3. प्राप्त्याशा	=3. गर्भसन्धि
4.	प्रकरी	+4. नियताप्ति	=4. विमर्श या अवमर्श सन्धि
5.	कार्य	+5. फलागम	=5. निर्वहण सन्धि

5 अर्थप्रकृतियों और 5 कार्य की अवस्थाओं के योग से 5 सन्धियाँ बनती हैं।

39. माधुर्यगुणस्य कस्मिन् रसे प्रकर्षः वर्त्तते?

(a) शृङ्गारे (b) करुणे

(c) हास्ये (d) वीरे

उत्तर-(a)

माधुर्य गुण का प्रकर्ष शृङ्गार रस में होता है। मम्मटाचार्य ने अपने काव्यप्रकाश गन्थ के अष्टम उल्लास के नवासिवें (89) सूत्र में इसका स्पष्ट निर्देश किया है-

''अहलादकत्वं माधुर्यं शृंगारे द्रुतिकारणम्'' अर्थात् शृंगार में जो अह्लादकत्व है वही माधुर्य गुण कहलाता है। मम्मट ने वामन-प्रतिपादित दश गुणों का खण्डन करते हुए तीन गुणों की स्थापना की है- ''माधुर्यौजः प्रसादाख्यात्रयस्ते न पुर्न दश'' अर्थात

(i) माधुर्यगुण (ii) ओजगुण

(iii) प्रसादगुण के भेद से गुण तीन ही प्रकार के होते हैं।

40. बीभत्सरसस्य स्थायिभावः कः?

(a) भयम् (b) जुगुप्सा

(c) उत्साहः (d) विस्मयः

उत्तर-(b)

बीभत्स रस का स्थायीभाव जुगुप्सा होता है। भरतमुनि ने ''विभावानुभावसंचारी भावसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'' सूत्र के द्वारा रसोत्पत्ति का निर्देश किया है। वे रस आठ प्रकार के होते हैं जैसा कि आचार्य मम्मट ने काव्य प्रकाश में लिखा है-

''शृङ्गार-हास्य-करूण-रौद्र-वीर-भयानकाः।

बीभत्साद्भुसञ्ज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।

इन रसों के स्थायिभावों का भी उल्लेख मम्मट ने निम्न प्रकार से किया है-

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।

जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावा प्रकीर्तिताः।।

इस प्रकार आठ स्थायी भाव भी हैं-

रस	स्थायीभाव
शृङ्गार	रति
हास्य	हास
करूण	शोक
रौद्र	क्रोध
वीर	उत्साह
भयानक	भय
विभत्स	जुगुप्सा
अद्भुत	विस्मय

नोट- कुछ लोग शान्त रस को भी स्वीकार करते हैं जिसका स्थायी भाव निर्वेद है।

''निर्वेद स्थायिभावोऽस्ति नवमो रसः।। का.प्र. 4/47।।

41. 'स वाक्य एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्' इत्यत्र 'सः' इत्यस्य कोऽर्थः?

(a) निदर्शना (b) समासोक्ति

(c) श्लेषः (d) रूपकम्

उत्तर-(c)

प्रश्नोक्त वाक्य में सः शब्द (सर्वनाम) का अर्थ श्लेष होता हैं पूर्ण लक्षण इस प्रकार है- 'श्लेषः स वाक्ये एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत' अर्थात् जहाँ पर एक ही वाक्य में अनेक अर्थ होते है वहाँ श्लेष (अलंकार) होता है। उपरोक्त लक्षण आचार्य मम्मटोक्त है। इस लक्षण को साहित्यदर्पणकार निम्न प्रकार से कहते है-

''श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।'' अर्थात् जहाँ पर श्लेषयुक्त (अनेकार्थवाचक) पदो के द्वारा अनेक अर्थों का कथन होता है वहाँ श्लेषालंकार होता है।

यथा- पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।

विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम्।।

42. 'अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्ताम्' अत्र छन्दः किम्?

(a) विद्युन्माला (b) मन्दाक्रान्ता

(c) अनुष्टुप् (d) शिखरिणी

उत्तर-(b)

प्रस्तुत पङ्क्ति में 'मन्दाक्रान्ता' नामक छन्द है। यह पङ्क्ति कालिदासविरचित 'मेघदूतम' ग्रन्थ की है जिसके सम्पूर्ण श्लोक मन्द्राक्रान्ता छन्द में ही लिखे गये हैं। पूरा श्लोक इस प्रकार है-

तामायुष्मन्मम च वचनादात्मनश्चोपकर्तुं

ब्रूया एवं तव सहचरो रामगिर्याश्रामस्थः

अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तां

भूतानां हि क्षयिषु करणेष्वद्यमाश्वास्यमेतत्।।

मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण इस प्रकार है- 'मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौतौगयुग्मम्' अर्थात् जिस छन्द में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और अन्त में दो गुरू अक्षरों का विन्यास हो वह मन्दाक्रान्ता छन्द कहलाता हैं इसके प्रत्येक चरण के चतुर्थ, षष्ठ और सप्तम् अक्षरों के बाद यति होती है तथा प्रत्येक चरण में 17 अक्षर होते हैं।

43. लोके यानि कारणानि तानि काव्ये नाटके च केन नाम्ना व्यपदिश्यन्ते?

(a) भावाः (b) अनुभावाः

(c) सञ्चारिणः (d) विभावाः

उत्तर-(d)

लोक में जो कारण होते है वे कारण काव्य और नाटक में विभाव के नाम से व्यवहरित होते हैं।

अतः काव्यप्रकाश में लिखा है- ''लोके प्रमदादिभिः स्थाय्यनुमानेऽभ्यासपाटववतां काव्ये नाटके च तैरेव कारणत्वादि-परिहारेण विभावनादिव्यापारवत्वादलौकिक विभावादिशब्द व्यावहार्य्यैर्ममैवेते''। विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से ही रस की निष्पत्ति होती है। अतः भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में लिखा है- विभावानुभावसंचारी भावसयोगाद्ररनिष्पत्तिः।

44. नाटके न्यूनतमाः अङ्काः कति?

(a) षट् (b) सप्त

(c) अष्ट (d) नव

उत्तर-(*)

नाटक में न्यूनतम पाँच अंक होने चाहिए।

इसका निर्देश साहित्यदर्पण ग्रन्थ में इस प्रकार किया गया है- 'पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्का परिकीर्तिताः''। परन्तु विकल्पों में पाँच नही है अतः षट् विकल्प सर्वाधिक समीपस्थ इसलिए वही सत्य है।

नाटक की प्रमुख विशेषतायें निम्न हैं
कथानक- लोक विख्यात कथावस्तु होनी चाहिए।
अंकयोजना- पाँच से लेकर दस तक अंक होने चाहिए।
नायक- प्रख्यातवंश का धीरोदात्त हो।
रस- शृंगार या वीर अंगीरस हो।
पात्र- चार या पाँच पात्र ही प्रधान रूप से कार्यरत हों।

45. 'सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः' इत्यत्र 'सा' का?
(a) निपुणता (b) अभ्यासः
(c) भावना (d) प्रतिभा

उत्तर-(d)

प्रश्नगत ''सा'' शब्द से 'प्रतिभा' को कहा गया है 'प्रतिभा' को आचार्यों ने अलग अलग रूप से व्याख्यायित किया है। पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्यनिर्माण के कारणों पर विचार करते हुए प्रतिभा को ही विशेष माना है। उनके अनुसार काव्यनिर्माण में अनुकूल शब्दार्थ का प्रयोग कराने वाली शक्ति ही प्रतिभा है-
तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा।
सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः।।

46. काव्ये येऽङ्गिनमर्थमवलम्बवन्ते ते के?
(a) संघटनाः (b) गुणाः
(c) अलङ्काराः (d) भावाः

उत्तर-(d)

काव्य में जो अङ्गी के अर्थ का अवलम्बन करते हैं वे भाव होते हैं। भरतमुनि ने भाव की व्युत्पत्ति 'भवन्तीति भावाः तथा भावयन्ति ति भावाः' दो प्रकार से की है। उसका लक्षण इस प्रकार किया है-
विभावैराहृतो योऽर्थो ह्यनुभावस्तु गम्यते।
वागङ्गसत्वाभिनयैः स भावः इति संज्ञितः।।
वागङ्गमुखरागेण सत्तवेनाभिनेय च।
कवेश्चान्तर्गतं भावं भावयन् भाव उच्चते।।

47. उरुभङ्गे नायकः कः?
(a) दुर्योधनः (b) भीमः
(c) धृतराष्ट्रः (d) श्रीकृष्णः

उत्तर-(b)

उरुभङ्ग में नायक भीम है। इस नाटिका में मात्र एक ही अंक है। इसमें भीम के प्रतिज्ञा निर्वाह की दृढ़ता का अत्यन्त भयावह और वीरतापूर्ण वर्णन है। भीम और दुर्योधन के मध्य हुये गदायुद्ध का वर्णन इसमें किया गया है। जिसमें भीम गदायुद्ध के नियमों का पालन न करते हुए दुर्योधन की जङ्घा तोड़ डाली। संस्कृत की नाट्य परम्परा में एक मात्र यही दुःखान्त नाटिका है।

48. 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' इति कुत्र वर्त्तते?
(a) रघुवंशे (b) शाकुन्तले
(c) मेघदूते (d) कुमारसम्भवे

उत्तर-(d)

'शरीमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'' यह युक्ति 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य की है। कुमारसम्भवम् महाकवि कालिदास द्वारा विरचित एक महाकाव्य है जिसमें 17 सर्ग है। प्रश्नगत श्लोकांश जिस श्लोक से उद्धृत है वह इस प्रकार है-
अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं
जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते।
अपि स्वशक्तया तपसि प्रर्वतसे
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।।

49. करुणरसस्य स्थायिभावः कः ?
(a) क्रोधः (b) भयम्
(c) शोकः (d) शमः

उत्तर-(c)

करूण रस का स्थायी भाव शोक होता है। मुख्य रूप से रसों की संख्या आठ मानी जाती है परन्तु कुछ लोग शान्त और वात्सल्य के रूप में दो रसों की और सत्ता स्वीकारते हैं जिससे रसों कि संख्या 10 हो जाती है। रस और उनके स्थायी भाव क्रमशः अधोलिखित हैं।
रस-
शृङ्गार- हास्य- करूण- रौद्र- वीर- भयानकाः।
बीभत्साद्भुत्सञ्ज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।
स्थायीभाव
रति-हार्सश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।
जुगुप्सा विश्मयश्चेति स्थायिभावा प्रकीर्तिताः।।

50. काव्यप्रकाशे कति उल्लासाः सन्तिः
(a) सप्त (b) दश
(c) एकादश (d) पञ्च

उत्तर-(b)

काव्यप्रकाश में कुल दश उल्लास हैं जिनमें काव्य से सम्बन्धित सिद्धान्तों का प्रतिपादन खण्डन-मण्डन प्रक्रिया के साथ किया गया है। दशों उल्लासों वर्णित विषय वस्तु निम्न प्रकार से है
प्रथम उल्लास - काव्य प्रयोजन- कारण- स्वरूप निर्णय।
द्वितीय उल्लास - शब्दार्थ-स्वरूप निर्णय
तृतीय उल्लास - अर्थव्यंजकता निर्णय
चतुर्थ उल्लास - ध्वनि निर्णय
पञ्चम उल्लास - ध्वनिगुणीभूतव्यङ्गसंकीर्ण-भेदनिर्णय
षष्ठ उल्लास - शब्दार्थचित्र-निरूपण
सप्तम उल्लास - दोषदर्शन
अष्टम उल्लास - गुणालंकारभेद-निर्णय
नवम उल्लास - शब्दालंकार-निर्णय
दशम उल्लास - अर्थालंकार-निर्णय